हिन्दी-शब्द-कल्पद्रुम

हिन्दी भाषा का अपूर्व वृहत् कोश

इसमें संस्कृत, फ़ारसी, उर्दू और अंग्रेज़ी के शब्द तथा प्राचीन और नवीन साहित्य के प्रयोग के शब्द मिलेंगे। सूरदास, मलिक मुहम्मद जायसी, केशव, बिहारी और तुलसी आदि के द्वारा प्रयुक्त शब्द इसमें मौजूद हैं।

सम्पादक

पंडित रामनरेश त्रिपाठी

संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण

प्रकाशक

रायसाहब रामदयाल अगरवाला

बुकसेलर व पब्लिशर, इलाहाबाद

सन् १९२९ ई०

भूमिका

—:०:—

कोश का पूर्ण होना भी अपूर्णता ही है। कोश के स्वामी की कभी यह इच्छा नहीं होती कि मेरे कोश में वे सब वस्तुएँ आ गयीं जो आनी चाहिएँ। कोश भरा पूरा है फिर भी उसमें और अनेक वस्तुओं के आने की आवश्यकता बनी ही रहती है। यही बात शब्द-कोश के लिये भी है। शब्द-कोश कभी पूरा नहीं होता, प्रतिदिन नये नये शब्दों की सृष्टि हो रही है; नित्य होने वाली घटनाएँ, आविष्कार और प्रकृति के स्वाभाविक परिवर्तन अनेक शब्द रोज़ गढ़ा करते हैं। उन सब शब्दों का कोश में आना आवश्यक है। यह तो वर्तमान की कठिनता हुई, भूत की कठिनता भी कुछ कम नहीं। कितने ही शब्द जिनका पहले व्यवहार होता था आज लोगों की स्मृति के ओझल हो गये। कितने ही ग्रन्थ लुप्त हो गये, ऐसी दशा में कोश की पूर्णता पर कैसे विश्वास किया जा सकता है? भविष्य की तो बात ही जाने दीजिए।

हिन्दी-भाषा में कोशों की कमी नहीं। अच्छे अच्छे कोश बन गये और बनते जा रहे हैं। काशी नागरी प्रचारिणी सभा का शब्द-सागर बहुत बड़ा और उत्तम कोश तैयार हुआ है, जिसका अधिक अंश छप गया है। इसके अतिरिक्त और भी कोश हैं। यह कोश भी उन्हीं की श्रेणी में जाने के लिये तैयार हुआ है।

हिन्दी-कोश-कारों के भिन्न भिन्न उद्देश्य रहे हैं। कुछ भारतीय कोशकार तो संस्कृत के अधिक शब्दों को और प्रचलित देशी शब्दों को अपने कोश में स्थान देने के पक्षपाती हैं, कुछ का यह क्रम देखा गया है कि वे हिन्दी उर्दू के प्रचलित और विशेष कर ग्रामीण शब्दों को अपने कोश में स्थान देना अच्छा समझते हैं। हमने इस कोश में संस्कृत के या अन्य भाषाओं के वे सब शब्द ले लिए हैं, जिनका व्यवहार हिन्दी के प्राचीन और नवीन ग्रन्थकारों ने किया है; तथा जिनका आज कल भी व्यवहार होता है और जो पारिभाषिक हैं। इस रीति से संस्कृत, फ़ारसी और उर्दू के भी शब्द इस कोश में आ गये हैं। हिन्दी के वे शब्द जिनको प्राचीन और नवीन साहित्यकार प्रयोग के योग्य समझते हैं इस कोश में मिलेंगे। सूर, जायसी, केशव, बिहारी और तुलसी आदि के द्वारा प्रयुक्त शब्द इस कोश में मिलेंगे, उच्चारण-वैषम्य से एक ही प्रकृति के और एक ही अर्थ वाचक शब्द में जो भ्रमपूर्ण भेद-बुद्धि हो गयी है उसे दूर करने का प्रयत्न किया गया है। हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थी इस कोश की सहायता से साहित्य के नगर में प्रवेश कर सकें, इसके लिए उन्हें उचित सामग्री दी जाय, इस बात का ध्यान रखकर यह कोश सङ्कलन किया गया है। इसी वासना से प्रेरित होकर हमने इस कोश में शब्दों का विन्यास किया है। पर हम पूर्णता का अहङ्कार नहीं करते और वैसा करना भी न चाहिए। इस कोश के प्रूफ़ आदि देखने में नार्मल स्कूल प्रयाग के टीचर लाला मनसुखराय ने बड़ी सहायता दी है। हम उन्हें कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करते हैं।

रामनरेश त्रिपाठी

संकेताकारों का पूरा नाम

(सं० पु०) संज्ञा पुंलिङ्ग ।
(सं० स्त्री०) संज्ञा स्त्रीलिङ्ग ।
(क्रि० अ०) क्रिया अकर्मक ।
(क्रि० स०) क्रिया सकर्मक ।
(क्रि० वि०) क्रिया-विशेषण ।
(वि०) विशेषण ।

(सर्व०) सर्वनाम ।
(अव्य०) अव्यय ।
(अं०) अंग्रेज़ी
(अ०) अर्बी ।
(फ़ा०) फ़ारसी ।
(मुहा०) मुहाविरे ।

हिन्दी-शब्द-कल्पद्रुम

———:o:———

अ

अ (अ) यह नागरी वर्ण का पहिला अक्षर है, अतएव यह प्रधान समझा जाता है। समस्त ह्रस्व व्यंजनों का उच्चारण इसी के योग से होता है। बिना स्वर के योग के व्यंजन का उच्चारण नहीं होता, अतएव समस्त ह्रस्व व्यञ्जनों के उच्चारण में "अ" की ही सहायता ली जाती है। यही समझ कर अपनी सर्व व्यापकता बतलाने की इच्छा से भगवान श्रीकृष्ण ने अपने को अक्षरों में "अ" बतलाया है। इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है, यद्यपि अन्य वर्ण भी कण्ठ से ही उत्पन्न होते हैं, पर इसके उच्चारण में कण्ठ की प्रधानता है। कण्ठ से उच्चरित होने वाले वर्ण कण्ठ्य कहे जाते हैं, इसलिये यह भी कण्ठ्य है। यह निषेधार्थक "न" का संक्षिप्त रूप है। जिन शब्दों के आदि अक्षर व्यञ्जन होते हैं उनका "न" के साथ समास होने पर इसका रूप "अ" हो जाता है और जिन शब्दों का आदि अक्षर स्वर होता है उनका "न" के साथ समास होने पर यह "अन्" हो जाता है। यथा–अब्राह्मण, अनश्व। सादृश्य, अभाव, अभेद, अल्पता, अप्राशस्त्य और विरोध, ये छः अर्थ "अ" के होते हैं। (सं० पु०) विष्णु, दया, एक संख्या का वाचक।

अंक (सं० पु०) चिह्न, निशान, लेख, संख्या का चिह्न १ से ९ तक, भाग्य, धब्बा।

अंकोर (सं० पु०) देखो अकोर।

अंश (सं० पु०) हिस्सा, टुकड़ा, किसी समूह का हिस्सा, हक़, दिन, भू-मण्डल का तीन सौ साठवाँ भाग, पितृधन का भाग।

अंशक (सं० पु०) बांटने वाला, हिस्सादार, साझी, भाग कराने वाला, भाग, दिन।

अंशल (सं० पु०) चाणक्य मुनि, दन्त्य सकार के अंसल शब्द का अर्थ है बलवान।

अंशसुता (सं० पु०) यमुना नदी। [वस्त्र।

अंशु (सं० पु०) किरण, प्रभा, तागा, सूक्ष्म भाग, पतला

अंशुक (सं० पु०) रेशमी वस्त्र, किरण समूह, वस्त्र, कपड़ा, सूक्ष्म वस्त्र।

अंशुजाल (सं० पु०) किरण समूह। [दीपक।

अंशुधर (सं० पु०) सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा, ब्रह्मा, देवता,

अंशुमान (सं० पु०) सूर्यवंशी एक राजा का नाम। इनके पितामह का नाम राजा सगर था और पिता का नाम असमञ्जस। सगर के साठ हज़ार पुत्र महर्षि कपिल के शाप से भस्म हो गये थे; इन्होंने महर्षि को प्रसन्न कर उनका उद्धार किया था।

अंशुमाली (सं० पु०) सूर्य, अग्नि, अंशुओं की माला धारण करने वाला।

अंसकूट (सं० पु०) कूबड़, सांड़ के कंधे पर की मौर।

अंसुआ (सं० पु०) आंसू, अश्रु, आंखों का जल, इसका पद्य में प्रयोग होता है। [आंसू डबडबा आना।

अंसुवाना (क्रि० अ०) आंसू आना, आँसू से भर जाना,

अंह (सं० पु०) पाप, कुकर्म, विघ्न, बाधा।

अंहति (सं० पु०) दान, त्याग, परित्याग, रोग।

अंहस् (सं० पु०) पाप, दुष्कर्म, बुरा काम, स्वधर्म त्याग, दोष, दुःख, घबड़ाहट, बाधा, विघ्न, कल्मष, अघ।

अंहुडी (सं० स्त्री०) लता विशेष, इसके फल छोटे और

गोल पेटे के होते हैं, इसके फलों की तरकारी खायी जाती है और बीज दवा के काम आते हैं, बाकला।

अउ (अव्य०) और, तथा।

अउघड़ (सं० पु०) देखो औघड़।

अउठा (सं० पु०) एक नापने की लकड़ी जो दो हाथ लम्बी होती है, इसे जुलाहे रक्खा करते हैं।

अउर (अव्य०) और। [अपुत्र, मूर्ख, कारा।

अऊत (सं० पु०) जिसके सन्तान न हो, सन्तान हीन,

अऊलना (क्रि० अ०) गरम होना, जलना, गरमी पड़ना, क्रोध करना।

अएरना (क्रि० स०) स्वीकार करना, अंगीकार करना।

अक (सं० पु०) पाप, पातक, दुःख।

अकउआ (सं० पु०) मदार।

अकच (वि०) जिसके बाल न हों, बिना बाल वाला, बाल रहित, (सं० पु०) केतु ग्रह।

अकच्छ (वि०) नग्न, नङ्गा, व्यभिचारी, लम्पट, परस्त्री-गामी, दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के साधु जिनको निर्ग्रन्थ भी कहते हैं। [अहंकार।

अकड़ (सं० स्त्री०) ऐंठ, तनाव, मरोड़, बल, घमंड,

अकड़ तकड़ (सं० पु०) ऐंठन, तेज़ी, अभिमान।

अकड़ना (क्रि० अ०) ऐंठना, टेढ़ा होना, दुःख होना, पीड़ा होना। [जकड़ जाना।

अकड़बाई (सं० स्त्री०) ऐंठन, नसों का दर्द के साथ

अकड़बाज (वि०) अभिमानी, अहंकारी, घमंडी।

अकड़ा (सं० पु०) रोग विशेष, यह चौपायों को होता है, जो चौपाये बहुत दिनों तक तराई में चरते हैं और सहसा किसी उपजाऊ धरती की घास चरते हैं, उन्हीं को होता है।

अकड़ाव (सं० पु०) खिंचाव, ऐंठन, अंगों का तनाव, वायु के कारण अंगों का सिकुड़ना।

अकड़ैत (वि०) छैला, बाँका।

अकण्टक (वि०) निरुपाधि, चैन से, शत्रु हीन।

अकत (वि०) सम्पूर्ण, पूरा, समूचा, सारा।

अकथ (वि०) जो कहा न जा सके, न कहने योग्य, कहने की सामर्थ्य के बाहर, अनिर्वचनीय, अवर्ण-नीय, जिसका वर्णन न हो सके, अनुपम, निन्दित।

अकथनीय (वि०) न कहने योग्य।

अक़द (अ० सं० पु०) प्रतिज्ञा, वचन बद्धता, वादा।

अक़द्बन्दी (अ० सं० स्त्री०) प्रतिज्ञापत्र, इक़रारनामा।

अकधक (सं० पु०) आगा पीछा, सोच विचार, भय, डर, आशंका, खटका। [चुपचाप सुनना।

अकनना (क्रि० स०) ध्यान देकर सुनना, आहट लेना,

अकनी (क्रि० वि०) सुन कर।

अकपट (वि०) कपट रहित, सरल, सीधा।

अकम्पन (वि०) कम्प रहित, दृढ़, मज़बूत, (सं०पु०) रावण के सेनापति का नाम, इसका वध हनुमान ने किया था।

अकबक (सं०पु०) अंडबंड, अनापशनाप, निरर्थक, जो कुछ मन में आवे वही बकना, प्रलाप। [चकित होना।

अकबकाना (क्रि० अ०) घबड़ाना, भौचक रहना,

अक़बाल (अ०सं०पु०) इक़बाल, प्रताप, पराक्रम।

अकर (वि०) न करने योग्य, असाध्य, दुष्कर, कठिन, विकट, बिना हाथ वाला, हाथ हीन, जिसका महसूल न लगता हो, कर मुक्त।

अकरकरा (सं० पु०) औषध विशेष, यह एक प्रकार का पौधा है, अफ्रिका के उत्तर अलजीरिया में यह बहुत पैदा होता है, इसकी जड़ पुष्ट और काम को बढ़ाने वाली औषधि है। इसको मुंह में रखने से थूक आता है और दाँतों का दर्द शान्त होता है।

अकरखना (क्रि० स०) चढ़ना, तानना, खींचना।

अकरण (सं० पु०)कर्म का अभाव, कर्म का फल रहित होना, इन्द्रियों से रहित, ईश्वर, परमात्मा।

अकरणीय (वि०) न करने योग्य।

अकरा (वि०) जो मोल न लिया जा सके, बहुमूल्य, अमूल्य, उत्तम, श्रेष्ठ, खरा। [अड़चन।

अकरास (सं० पु०) देह टूटना, अंगड़ाई, आलस्य, सुस्ती,

अकरुण (वि०) दयाहीन, करुणा रहित, निर्दयी, निठुर।

अकर्ण (वि०) कानरहित, जिसके कान नहीं, बूचा, सांप, सर्प। [कुकर्म।

अकर्म (सं० पु०) पाप, बुरा कर्म, अधर्म, अपराध,

अकर्मक (वि०) जिस क्रिया में कर्म न हो, कर्म रहित क्रिया।

अकर्मण्य (वि०) आलसी, निकम्मा।

अकर्मा (वि०) बेकाम।

अकर्मी (त्रि०) अपराधी, चाण्डाल ।

अकल (वि०) अवयवरहित, अङ्गहीन, अखण्ड, निराकार, परमात्मा, सिख सम्प्रदाय के परमात्मा का नाम ।

अकल्पन (वि०) सत्य, प्रकृत । [चक, अनायास ।

अकल्पित (वि०) सत्य, कल्पना रहित, सच्चा, अचान

अकल्याण (वि०) अशुभ, अमङ्गल, अहित, अकुशल, मन्द, बुरा ।

अकवार (सं० पु०) कांख, गोदी, कुक्ष । [भीतरी द्वेष ।

अकस (सं०पु०) शत्रुता, बैर, डाह, द्वेष, लाग, विरोध,

अकसर (क्रि० वि०) अकेला, प्रायः, बहुधा ।

अकसीर (सं०पु०) वह रस जो धातु को सोना, चांदी बना दे, रसायन, कीमिया (वि०) अव्यर्थ, अत्यन्त गुण करने वाला, अत्यन्त लाभदायक ।

अकस्मात् (क्रि० वि०) सहसा, हठात्, औचक, दैवात्, अचानक, अकारण, अचानचक । [अनिर्वचनीय ।

अकह (वि०) न कहने योग्य, अवर्णनीय, अकथनीय,

अकहुआ (वि०) जो कहा न जा सके, अकथनीय ।

अका (वि०) मूर्ख, निर्बोध, जड़, पागल ।

अकाउंट (अं० सं० पु०) हिसाब किताब, लेखा, हिसाब ।

अकाउंट बुक (अं० सं० पु०) बही खाता, लेखा, हिसाब की किताब ।

अकाउंटेंट (अं० सं० पु०) हिसाब किताब रखने वाला ।

अकाण्ड (वि०) बिना डाली या शाखा के, (क्रि० वि०) हठात्, अकस्मात् ।

अकाण्ड ताण्डव (सं० पु०) व्यर्थ की उछल कूद, वितंडावाद, व्यर्थ की बकवाद ।

अकाण्डपात् (वि०) होते ही मर जाने वाला, जन्मते ही मर जाने वाला ।

अकाज (सं० पु०) विघ्न, बिगाड़, हिंसा, व्यर्थ ।

अकाजी (वि०) बाधा देने वाला, बाधक, कार्य की हानि करने वाला ।

अकाट्य (वि०) जो काटा न जा सके, जिसका खण्ड न हो, न काटने योग्य, दृढ़, मज़बूत, अटल ।

अकादर (वि०) जो कायर न हो, साहसी, शूरवीर ।

अकाम (वि०) बिना इच्छा का, कामना हीन, निस्पृह, बिना चाह का, (क्रि० वि०) बिना काम का, व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।

अकाम निर्जरा (सं० स्त्री०) जैन मतानुसार तपस्या करने से जो कर्म का नाश होता है, उसके दो भेदों में से एक, यह निर्जरा या कर्म सभी जीवों में रहती है क्योंकि उनको अनेक कष्टों को विवश हो कर भोगना पड़ता है ।

अकामी (वि०) जिसको किसी बात की चाह न हो, इच्छा रहित, निस्पृह, कामनाहीन, निःस्वार्थ ।

अकाय (वि०) बिना शरीर वाला, शरीर रहित, जन्म न लेने वाला, जो शरीर न धारण करे, रूपहीन, निराकार ।

अकार (सं० पु०) स्वरूप, आकृति, रूप, सूरत, शकल, बनावट, संगठन, निशान, चिह्न, आकार, "अ" अक्षर ।

अकारज (सं० पु०) कार्य की हानि, हानि, नुक़सान, बुरा काम, अकार्य । [वजह ।

अकारण (वि०) व्यर्थ, हेतु रहित, कारण हीन, बिना

अकारथ (वि०) निष्फल, निष्प्रयोजन, व्यर्थ, अनुपयोगी ।

अक़ारन (वि०) देखो अकारण ।

अकार्य्य (सं० पु०) कार्याभाव, कार्य का न होना, हानि, बुरा काम, कुकर्म, दुष्कर्म ।

अकाल (सं० पु०) असमय, अनुपयुक्त समय, दुर्भिक्ष, कुसमय, ठीक समय नहीं, अनवसर, अनियमित समय ।

अकाल कुसुम (सं० पु०) असमय का फूल, अनऋतु का पुष्प, बिना समय या ऋतु में खिला हुआ फूल, अनवसर की बात ।

अकाल जलद (सं० पु०) असमय का मेघ, असमय का बादल, संस्कृत में एक कवि का नाम । [नाम ।

अकाल पुरुष (सं० पु०) सिखों के ग्रन्थों में ईश्वर का

अकाल मृत्यु (सं० स्त्री०) असामयिक मृत्यु, असमय की मृत्यु, अल्पावस्था में मरना, थोड़े समय में मरना, अपमृत्यु, समय के पहले मृत्यु ।

अकाल वृष्टि (सं० स्त्री०) असमय की वर्षा, कुसमय की वर्षा । [मौक़ा ।

अकालिक (वि०) बिना समय का, असामयिक, बे

अकाली (सं० पु०) नानक पंथ वाले एक दल के साधु, ये चक्र के साथ सिर में काले रंग की पगड़ी बांधते हैं ।

अकाव (सं०पु०) वृक्ष विशेष, आक, मदार ।

अकास (सं० पु०) आकाश, गगन, नभ, शून्य, अन्तरिक्ष, आसमान।

अकासदीया (सं० पु०) वह दीया या लालटेन जो बांस पर लटका कर अकाश में जलाया जाता है, यह दीया कार्तिक महीना भर जलाया जाता है।

अकाशवाणी (सं० स्त्री०) देववाणी, वह वाक्य या शब्द जो देवता लोग आकाश से बोलते हैं, आकाशवाणी, अदृश्यवाणी।

अकिञ्चन (वि०) जिसके पास कुछ न हो, ग़रीब, निर्धन, दीन, दरिद्र, कंगाल, धनहीन, परिग्रह-त्यागी, आवश्यकता से अधिक धन एकत्रित न करने वाला, जिसके भोगने से कोई कर्म बच न गया हो, कर्महीन, कर्मशून्य। [परिग्रह का त्याग।

अकिञ्चनता (सं० स्त्री०) ग़रीबी, निर्धनता, दरिद्रता,

अकिञ्चनत्व (सं० पु०) दीनता, दरिद्रता।

अकिञ्चित्कर (वि०) जो कुछ करने योग्य न हो, अशक्त, असमर्थ, सामर्थ्यहीन, तुच्छ।

अकिल (सं० स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान,प्रज्ञा, अक़्ल।

अकिल बहार (सं० पु०) बैजयन्ती का दाना या पौधा।

अकीरति / अकीर्ति (सं० स्त्री०) अयश, कलङ्क, दुर्नाम, बदनामी, अपयश।

अकीर्तिकर (वि०) जिससे कीर्ति का नाश हो, बदनामी करने वाला, अकीर्ति करने वाला, (सं० पु०) प्रायः बुरे काम। [तीव्र, खरा।

अकुण्ठ (वि०) जो कुंठित न हो, तेज, तीक्ष्ण, चोखा,

अकुताना (क्रि० अ०) ऊबना, घबड़ाना, उतावली करना।

अकुताहीं (क्रि० अ०) ऊबै, घबड़ावै।

अकुतोभय (वि०) निर्भय, अभय, निडर, निःशङ्क, शङ्का रहित, साहसी। [हीन, नीच।

अकुल (वि०) जिसके वंश में कोई न हो, परिवार-

अकुलाना (क्रि० अ०) ऊबना, जल्दी करना, व्याकुल होना, घबड़ाना, व्यग्र होना, दुखी होना, बेचैन होना, आवेग में आना, मग्न होना।

अकुलीन (वि०) कुलहीन, बुरे कुल का, सङ्कर, कुजाति, कमीना, क्षुद्र।

अकुशल (सं० पु०) अशुभ, अमंगल, अहित, बुराई, (वि०) जो निपुण न हो, अनिपुण, अनाड़ी, जो दक्ष न हो।

अकूत (वि०) जो कूता न जा सके, जिसकी गिनती या परिमाण न हो सके, अगणित, अपरिमित।

अकूपार (सं० पु०) सागर, समुद्र, कछुआ, वह कछुआ जो पृथ्वी का आधार माना जाता है, पत्थर, चट्टान।

अकूहल (वि०) असंख्य, बहुत, अत्यधिक, अधिक।

अकृत (वि०) जो किया हुआ न हो, बिगाड़ा हुआ, असंपादित,नित्य, स्वयंभू, जिसे किसी ने न बनाया हो, प्राकृतिक, बेकाम, कर्मरहित, मंद, (सं० पु०) कारण, स्वभाव, प्रकृति, मोक्ष।

अकृतज्ञ (वि०) किये हुए उपकार को न मानने वाला, कृतघ्न, अधम, नीच।

अकृताभ्यागम (सं० पु०) न किये हुए कर्म की फल प्राप्ति, शास्त्रार्थ का एक दोष।

अकृतार्थ (वि०) जिसका काम पूरा न हुआ हो, अकृत-कार्य, फलहीन, फल से वञ्चित, असफल।

अकृती (वि०) अयोग्य, जो काम करने योग्य न हो, निकम्मा, पापी।

अकृत्रिम (वि०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, बे बनावटी, स्वयं उत्पन्न, सच्चा, यथार्थ, हार्दिक, आंतरिक।

अकृपा (सं० स्त्री०) कोप, क्रोध, कृपा का अभाव।

अकेल (वि०) बिना साथी का, तनहा, एकाकी, इकला, एकही, अद्वितीय, निराला, (सं० पु०) निर्जन स्थान, शून्य स्थान।

अकेला (वि०) देखो अकेल। [तनहा, केवल।

अकेले (क्रि० वि०) आप ही आप, बिना साथी का,

अकेहरा (वि०) एकहरा, एक परत का।

अकैया (सं० पु०) गोन, कजावा, खुरजी, लादने के लिए थैला या टोकरा। [जो पानी कम सोखती है।

अकोढई (सं० स्त्री०) वह भूमि जिसमें पानी ठहरता है,

अकोतर सौ (वि०) एक सौ एक, सौ के ऊपर एक।

अकोर (सं० पु०) गोद, छाती, अंक, भेंट, घूस।

अकोरना (क्रि० स०) तलना, भूनना।

अकोसना (क्रि० स०) कोसना, गालियां देना, बुरा भला कहना। [कौआ।

अकौवा (सं० पु०) आक, मदार, अर्क, घंटी, ललरी,

अक्के दुक्के (क्रि० वि०) अकेला दुकेला।

अर्क (सं० पु०) मदार, अकवन।

अक्खड़ (वि०) उद्धत, उद्दण्ड, उजड्डु, उग्र, न मुड़ने वाला, किसी का कहना न मानने वाला, बिगड़ैल, झगड़ालू, निडर, असभ्य, शिष्ट रहित, अनगढ़ मूर्ख, सङ्कोचहीन, खरा, स्पष्ट कहने वाला।

अक्खर (सं० पु०) अक्षर, वर्ण।

अक्खो मक्खो (सं० पु०) दीपक की लौ तक हाथ ले जा कर बच्चे के मुंह पर फेरना।

अक्त (सं० पु०) व्याप्त, युक्त, संयुक्त, सफल, गीला, भीगा, लीपा, रंगा हुआ, भरा हुआ।

अक्तूबर (सं० पु०) अंग्रेज़ी वर्ष का दसवां महीना, जो प्रायः कुआर में पड़ता है। [बे तरतीब।

अक्रम (वि०) क्रम रहित, उलटा सीधा, अंडबंड,

अक्रम संन्यास (सं० पु०) एक प्रकार का संन्यास, यह ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, और वानप्रस्थ के पीछे नहीं लिया जाता, किन्तु बीच में ही ले लिया जाता है।

अक्रमातिशयोक्ति (सं० स्त्री०) यह एक अतिशयोक्ति अलंकार का भेद है, इसमें कारण के साथ ही कार्य रहता है।

अक्रूर (वि०) जो क्रूर न हो, कोमल, सुशील, अक्रोधी, दयालु, (सं० पु०) एक यादव का नाम, ये श्रीकृष्ण के चाचा थे। इनके पिता का नाम स्वफल्क और माता का नाम गान्धिनी था। इन्हीं के सलाह से शतधन्वा ने सत्राजित को मार डाला था और उनकी स्यमन्तक मणि ले ली थी, श्रीकृष्ण के डराने पर वह स्यमन्तक मणि लेकर अक्रूर को देखकर भागा, पर पकड़ा गया और मार डाला गया।

अक्ल (सं० स्त्री०) देखो अकल। [बुद्धिमान।

अक्लमंद (सं० पु०) चतुर, विज्ञ, समझदार, सयाना,

अक्लमंदी (सं० स्त्री०) चतुराई, बुद्धिमानी, दक्षता, सयानापन।

अक्लिष्ट (वि०) दुःख रहित, कष्ट हीन, बिना क्लेश वाला, सरल, सीधा, सुगम, सहज।

अक्ष (सं० पु०) चौसर, पासों का खेल, खेलने का पासा, पहिया, कील, धुरी, गाड़ी का जुआ, गाड़ी, रथ, वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतरी केन्द्र से होती हुई उसके आर पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिस पर पृथ्वी घूमती मालूम देती है, तराजू की डंडी, व्यवहार, मामला, तूतिया, सोहागा, बहेड़ा, रुद्राक्ष, सर्प गरुड़, आत्मा सोने की तोल का बाट विशेष, यह सोलह मासे का होता है, जन्मांध, रावण का पुत्र, इसको हनुमान ने लङ्का उजाड़ते समय मारा था।

अक्षकुमार (सं० पु०) रावण का पुत्र, लङ्का के प्रमोद वन को उजाड़ते समय हनुमान जी ने इसको मारा था।

अक्षकूट (सं० पु०) आंख की पुतली।

अक्षक्रीड़ा (सं० स्त्री०) पासे का खेल, चौपड़, चौसर।

अक्षत (वि०) समूचा, अखण्डित, जो टूटा न हो, (सं० पु०) बिना टूटा हुआ चावल जो पूजा के काम आता है, धान का लावा, जौ।

अक्षतयोनि (वि०) वह स्त्री जिसका पति से संसर्ग न हुआ हो।

अक्षपाद (सं० पु०) पदार्थवादी, नैयायिक, तार्किक, एक ऋषि का नाम, इनका दूसरा नाम गौतम है। ये प्रसिद्ध हिन्दू दार्शनिक थे। न्याय शास्त्र के प्रवर्तक ये ही हैं, इनके मत का व्यास ने खण्डन किया था, इससे इन्होंने व्यास का मुख न देखने की प्रतिज्ञा की थी, पर व्यास ने इनको पीछे प्रसन्न किया, तब इन्होंने अपने पैरों में नेत्र किया और इनको देखा अर्थात् अपना पैर उनको दिखाया, इसीसे इनका नाम अक्षपाद पड़ा।

अक्षम (वि०) क्षमता रहित, अशक्त, लाचार, असमर्थ।

अक्षय (वि०) अविनाशी, अनश्वर, जिसका क्षय न हो, नाश न होने वाला, अमर, स्थिर।

अक्षयकुमार (सं० पु०) देखो अक्षकुमार।

अक्षयतृतीया (सं० स्त्री०) आखा तीज, वैशाख शुक्ल की तृतीया, इस दिन लोग गंगा स्नान करते हैं, दान पुण्य करते हैं, सतयुग का प्रारंभ इसी तिथि से माना जाता है, इस तिथि को कृतिका या रोहिणी नक्षत्र पड़े तो वह बहुत उत्तम समझी जाती है।

अक्षयनवमी (सं० स्त्री०) कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की नवमी, इस दिन लोग गंगा स्नान दान पुण्य करते हैं, और आंवले के पेड़ तले भोजन करते हैं, इस तिथि से त्रेता युग का आरम्भ माना जाता है।

अक्षयवट (सं० पु०) बरगद का पूज्य वृक्ष, गया और प्रयाग में एक बरगद का पेड़, पौराणिकों का मत है कि प्रलय काल में भी इसका नाश नहीं हुआ, इसीसे यह अक्षय कहलाता है।

अक्षर (वि०) नित्य, अविनाशी, स्थिर, अच्युत, (सं०पु०) शिव, विष्णु, ब्रह्मा, ब्रह्म, मोक्ष, धर्म, गगन, तपस्या, अपामार्ग (चिचड़ा) जल, अकारादि वर्ण।
अक्षरमाला (सं०स्त्री०) वर्णमाला।
अक्षरविन्यास (सं० पु०) लेख, लिपि।
अक्षरशः (क्रि० वि०) अक्षर अक्षर, सत्य सत्य।
अक्षरौटी (स० स्त्री०) वर्णमाला, स्वर का मेल, लिपि का ढंग, सितार पर गीत निकालने की क्रिया।
अक्षवार (सं० पु०) जुआ खेलने की जगह, जुआखाना, अखाड़ा, कुश्ती लड़ने की जगह।
अक्षांश (सं० पु०) भूगोल की ऊपर की कल्पित रेखा, पृथ्वी की धुरी, पृथ्वी के उत्तर या दक्षिण केन्द्र के ६० अंश पर जो रेखा है।
अक्षि (सं० स्त्री०) आंख, नेत्र, नयन।
अक्षिगत (वि०) आंख पर चढ़ा हुआ (शत्रु)।
अक्षिविक्षेप (सं० पु०) कटाक्षपात।
अक्षिविभ्रम (क्रि०) आंख घुमाना। [हुआ।
अक्षुण्ण (वि०) सम्पूर्ण, अविकृत, अछूत, बिना टूटा
अक्षौहिणी (सं० स्त्री०) एक बड़ी सेना, चतुरंगिणी सेना, सेना की एक नियमित संख्या, इसमें १०६५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० हाथी और २१८७० रथ होते थे।
अक्स (सं०पु०) छाया, परछाईं, प्रतिविम्ब, चित्र।
अखंड (वि०) खण्ड रहित, सम्पूर्ण, पूरा, सब।
अखंडनीय (वि०) जिसका खण्ड न हो सके, जिसके टुकड़े न हो सकें, जो काटा न जा सके, अकाट्य, मज़बूत, पुष्ट।
अखंडित (वि०) भाग रहित, जिसका भाग न हो सके, जिसका खण्ड न हो, पूरा, सम्पूर्ण, सब।
अखगरिया (सं०पु०) जिस घोड़े के बदन से मलते वक्त चिनगारी निकले। यह घोड़ा ऐबी समझा जाता है।
अखड़ (वि०) गँवार, अनारी, अनसिखा, जंगली, अखाड़ा।
अखड़ा (सं० पु०) ताल के बीच का गड्ढा जिसमें मछलियां पकड़ी जाती हैं, चँदवा।
अखड़ैत (सं० पु०) बलवान पुरुष, मल्ल, पहलवान।
अखतीज (सं० स्त्री०) अक्षय तृतीया।
अख़नी (सं० स्त्री०) मांस का रस, शोरबा।
अख़बार (सं० पु०) समाचार पत्र, सम्बाद पत्र, सामयिक पत्र, ख़बर का काग़ज़।
अखय (वि०) अविनाशी, स्थिर, नित्य, न छीजनेवाला, जिसका क्षय न हो।
अखरना (क्रि० स०) अनुचित मालूम होना, बुरा लगना, कष्ट होना, खलना।
अखरोट (सं० पु०) वृक्ष और फल विशेष।
अखा (सं० पु०) एक प्रकार की चलनी, अंघिया, आंघी, (वि०) कुल, पूरा।
अखाड़ा (सं० पु०) मल्लयुद्ध करने का स्थान, साधुओं की साम्प्रदायिक मण्डली, जमायत, दल।
अखाद्य (वि०) अभक्ष्य, न खाने योग्य।
अखानी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की लकड़ी, यह टेढ़ी बनी रहती है, गल्ला दाँवते समय डंठलों को बीच में इससे ले जाते हैं, पचखा।
अखिल (वि०) सब, पूरा, संपूर्ण, समग्र, अखंड।
अखीर (सं० पु०) अन्त, छोर, समाप्ति।
अखूट (वि०) जिसका खण्ड न हो सके, अखण्ड, अक्षय, जो घटे न बढ़े, बहुत, अधिक।
अखेट (सं० पु०) अहेर, शिकार, मृगया, आखेट।
अखेटक (सं० पु०) शिकारी, अहेरी।
अखोह (सं० पु०) ऊभड़ खाबड़ भूमि, असम पृथ्वी, ऊंची नीची ज़मीन।
अख़्तावर (सं०पु०) वह घोड़ा जिसके जन्म से ही अंडकोश की कौड़ी न हो, यह घोड़ा ऐबी समझा जाता है।
अख़्तियार (सं० पु०) स्वत्व, अधिकार, प्रभुत्व।
अख्याति (सं० स्त्री०) बदनामी, अयश, अपकीर्ति।
अख्यायिका (सं० स्त्री०) कथा, कहानी, क़िस्सा।
अग (वि०) न चलने वाला, अचर, स्थावर, टेढ़ा चलने वाला, (सं० पु०) सर्प, सूर्य, वृक्ष, पर्वत। [चढ़ा।
अगड़धत्ता (वि०) लम्बा तड़ंगा, ऊंचा, श्रेष्ठ, बढ़ा
अगड़ बगड़ (वि०) बे सिर पैर का, पचमेल, अंडबंड, प्रलाप, बिना काम का काम।
अगणित (वि०) अनगिनत, असंख्य, अपार, अनेक, बहुत। [तुच्छ, असार
अगण्य (वि०) न गिनने योग्य, असंख्य, सामान्य,
अगत (क्रि०) आगे चलो, हाथी को आगे बढ़ाने के लिए महावत "अगत" "अगत" कहते हैं।

अगति (सं० स्त्री०) दुर्गति, दुर्दशा, नरक, अकालमृत्यु, आश्रय रहित।

अगतिक गति (सं० स्त्री०) विवश होकर स्वीकार करना।

अगत्या (क्रि० वि०) भविष्य में, आगे से, आगे चल कर, अन्त में, पीछे से, अकस्मात्।

अगद (वि०) निरोग, चंगा, (सं० पु०) औषधि, दवा।

अगन (सं० स्त्री०) देखो अग्नि।

अगनित (वि०) देखो अगणित।

अगनू (सं० स्त्री०) अग्निकोण।

अगनेत (सं० पु०) अग्निकोण, आग्नेय दिशा।

अगम (वि०) न जानने योग्य, अगम्य, जहां कोई जा न सके, दुर्गम, पहुँच के बाहर, दुर्घट, अवघट, अथाह, बहुत गहरा, अपार, असंख्य।

अगमानी (सं०स्त्री०) अगुवायी, अगवानी, आगे जाकर स्वागत, (सं० पु०) अगुआ, नेता, सरदार।

अगम्य (वि०) बुद्धि के बाहर, अज्ञेय, दुर्बोध, पहुँच के बाहर, न जाने योग्य, गहन, विकट, कठिन, अपार, असंख्य।

अगम्या (सं० स्त्री०) न गमन करने योग्य।

अगर (सं०पु०) सुगन्धित वृक्ष विशेष, यह वृक्ष आसाम, पूर्वी-बङ्गाल, भूटान, खासिया, और मर्तबान की पहाड़ियों में होता है, इसकी ऊंचाई ६० से १०० फ़ीट तक होती है, और चौड़ाई ५ से ६ फ़ीट तक, इसी की लकड़ी का बूरा दशाङ्ग आदि में पड़ता है, इसका इत्र भी बनता है, चोवा नामक सुगन्धित द्रव्य इसी से बनती है। [रंग का।

अगरई (वि०) सांवलापन लिए हुए सुनहली संदली

अगरचे (अव्य०) यद्यपि, गोकि। [बत्ती।

अगरबत्ती (सं० स्त्री०) एक प्रकार की सुगन्धित सींक की

अगरवाला (सं०पु०) वैश्य वर्ण की एक शाखा, दिल्ली के पश्चिम अगरोहा के ये आदि निवासी कहे जाते हैं, अगरोहा के निवासी होने से अगरवाला कहे जाते हैं।

अगरसार (सं० पु०) देखो अगर।

अगरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की घास, किल्ली, ब्योंडा, अंडबंड बात, बुरी बात।

अगरू (सं० पु०) अगर लकड़ी, ऊद।

अगल बगल (क्रि० वि०) आस पास, इधर उधर, दोनों ओर।

अगलहिया (सं० स्त्री०) एक चिड़िया।

अगला (वि०) आगे का, सामने का, प्रथम, पहिले का, प्राचीन, पुराना, आगामी, आने वाला, (सं० पु०) अगुआ, प्रधान, मुख्य, अग्रसर, अग्रगण्य।

अगवा (सं० पु०) दूत, अगवानी। [ले आना।

अगवाई (सं० स्त्री०) अगवानी, अभ्यर्थना, आगे से जाकर

अगवाड़ा (सं० पु०) घर के आगे का मैदान, घर के सामने की भूमि।

अगवान (सं० पु०) आगे जाकर स्वागत करने वाला, आगे जाकर ले आने वाला, अगवानी करने वाला, अभ्यर्थना करने वाला बरात में कन्या पक्षवाले आगे से जाकर वर पक्ष वाले को ले आते हैं।

अगवानी (सं०स्त्री०) देखो अगमानी।

अगवार (सं० पु०) अन्न का वह भाग जो खलिहान में राशि से निकाल कर हलवाहे आदि के लिये निकाल दिया जाता है, ओसाने में जो हल्का अन्न भूसे के साथ आगे चला जाता है, गांव का चमार।

अगवाही(सं० स्त्री०) अग्निदाह। [एक तारा।

अगस्तिया (सं० पु०) वृक्ष विशेष, एक ऋषिका नाम,

अगस्त्य (सं० पु०) वृक्षविशेष, यह ऊंचा और घेरेदार होता है, इसके पत्ते सिरिस के समान होते हैं, उसके फूल अर्द्धचन्द्राकार टेढ़े, लाल और सफ़ेद होते हैं, शीतल और ज्वर में इसके छिलके का काढ़ा दिया जाता है, इसकी पत्तियां रेचक हैं, इसके फूल और पत्ते के रस का नास लेने से ज्वर, सिर का दर्द, विनास फूटना अच्छा होता है। एक तारे का नाम, यह भादों में सिंह के सूर्य के १७ अंश पर उदय होता है, इसके उदय होते ही जल निर्मल हो जाता है। इसके उदय होने पर ही राजा लोग विजय यात्रा किया करते थे और पितृतर्पण प्रारम्भ किया जाता है। एक ऋषि का नाम। ये मित्रावरुण के पुत्र थे, ऋग्वेद में लिखा है कि मित्रावरुण उर्वशी को देख काम पीड़ित हो गये और उनका वीर्यपात हो गया। इसी से अगस्त्य की उत्पत्ति हुई। सायणाचार्य ने अपने भाष्य में लिखा है कि वे एक घड़े से उत्पन्न हुए। इसी से ये मैत्रावरुणि, और्वशेय, कुम्भज, घटोद्भव, कुम्भसम्भव कहे जाते हैं। इन्होंने विन्ध्याचल पर्वत को लेटा दिया था इससे इनका नाम अगस्त्य पड़ा। वे एक

चुल्लू में समुद्र पी गये थे, इससे इनका नाम पीताब्धि और समुद्रचुलुक भी पड़ा है, पुराणों में इनको पुलस्त्य का पुत्र भी लिखा हुआ है। ऋग्वेद में इनकी ऋचायें भी हैं।

अगस्त्यकूट (सं० पु०) इस नाम का दक्षिण मद्रास प्रान्त में एक पर्वत है, जहाँ से ताम्रपर्णी नदी निकली है।

अगहन (सं०पु०) प्राचीन वैदिक क्रमानुसार वर्ष का पहिला महीना, गुजरात आदि प्रान्तों में यह क्रम अभी तक है, उत्तरी भारत में चैत से वर्षारम्भ होता है, इससे यह नवां महीना पड़ता है, अगहन, मगसिर, मार्गशीर्ष, अग्रहायण।

अगहनिया (वि०) अगहन में होने वाला धान।

अगहनी (वि०) अगहन में तैयार होने वाला, (सं० स्त्री०) वह फ़सल जो अगहन में काटी जाती है।

अगहर (क्रि० वि०) प्रथम, आगे, पहले।

अगहाट (सं०पु०) जो भूमि बहुत दिन से किसी के अधिकार में हो और उसे वह अलग न कर सके।

अगहुँड़ (वि०) अगुआ, आगे चलने वाला, पहले पहल, आगे, अगला।

अगाऊ (वि०) अग्रिम, पेशगी, अगाड़ी, आगे।

अगाड़ी (क्रि० वि०) आगे, भविष्य, पूर्व, पहले, सामने, (सं०स्त्री०) घोड़ा बांधने की आगेवाली रस्सी, घोड़े का गरदांव, जो उसके गरदन में बांध कर दोनों ओर खूंटे में बांधा जाता है, सेना का पहला धावा।

अगात्र (वि०) शरीर रहित।

अगाध (वि०) अथाह, बहुत गहरा, अपार, असीम, न समझने योग्य, (सं० पु०) छेद, गड्ढा।

अगासी (सं० स्त्री०) पगड़ी, बरान्दा।

अगिन (सं०पु०) आंच, आग, वह्नि।

अगिया (सं०स्त्री०) एक प्रकार की घास जो खेतोंमें उत्पन्न होकर कोदो और ज्वार को जला देती है। एक प्रकार की घास, इसमें नीबू के समान गंध होता है, इससे तेल बनता है, यह दवा के काम भी आती है, अगिया घास, यज्ञ कुश, नीली चाय।

अगिया बैताल (सं०पु०) मुँहसे लपट या लूक निकालने वाला भूत, जिस भूत के मुँह से आग निकले, ज्वाला मुख भूत, विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक का नाम।

अगिला (वि०) देखो अगला।

अगीत पछीत (क्रि० वि०) आगे पीछे, आगे की ओर, [पीछे की ओर।

अगुण (वि०) जिसमें गुण न हो, निर्गुण, गुणरहित।

अगुवा (सं० पु०) आगे चलने वाला, मार्ग दिखाने वाला, पथ-प्रदर्शक, एक पक्षी या कीड़ा विशेष, देवता विशेष।

अगेन्द्र (सं० पु०) सुमेरु, हिमालय, पर्वतों का राजा।

अगोचर (वि०) इन्द्रियातीत, इन्द्रियों की गति के परे, इन्द्रियों के द्वारा अनुभव न होने वाला, अप्रत्यक्ष, अप्रकट।

अगोरना (क्रि० स०) रखवाना, रखवाली करना, पहरा देना, राह देखना, बाट जोहना, रोकना, छेकना।

अगोरा (सं० पु०) देखने वाला, रखवाला।

अगोरिया (सं० पु०) रखवाला, खेत की रखवाली करने [वाला।

अगौनी (सं० स्त्री०) अगवानी, मिलने के लिये आगे जाना (क्रि० वि०) आगे।

अगौहैं (क्रि० वि०) आगे, आगे की ओर, अगाड़ी।

अग्नि (सं० पु०) आग, उष्णता, पृथ्वी, जल, वायु आदि पञ्च भूतों में से एक भूत।

वैद्यक मतानुसार अग्नि तीन प्रकार का है--

(१) भौम, जो लकड़ी आदि के जलने से पैदा होता है।

(२) दिव्य, जो आकाश में बिजली से उत्पन्न होता है।

(३) उदर या जठर, जो नाभि के ऊपर और हृदय के नीचे रहकर भोजन को पचाता है।

कर्मकाण्ड में छः प्रकार का अग्नि माना गया है—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि। इनमें प्रथम तीन प्रधान हैं। वेद के प्रधान देवताओं में से एक। ऋग्वेद की उत्पत्ति इसी से मानी जाती है, अग्नि के मंत्र वेद में अधिक हैं। अग्नि की सात जीभें मानी गयी हैं—काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता, ये दक्षिण पूर्व कोण के स्वामी हैं। पुराणों में अग्नि को वसु से उत्पन्न धर्म का पुत्र कहा गया है। इसकी स्त्री का नाम स्वाहा है, इसी से तीन पुत्र उत्पन्न हुए, पावक, पवमान और शुचि, इन तीनों पुत्र से पैंतालीस पुत्र हुए इस प्रकार सब मिलकर ४९ अग्नि हुए।

अग्निकुण्ड (सं० पु०) आग जलाने का गड्ढा विशेष।

अग्निकुमार (सं० पु०) षड़ानन, कार्तिकेय, क्षुधा बढ़ाने वाली औषध विशेष ।

अग्निकोण (सं० पु०) पूर्व और दक्षिण का कोना ।

अग्निक्रिया (सं० स्त्री०) शव जलाना, मुर्दा जलाना ।

अग्निक्रीड़ा (सं० स्त्री०) आतिशबाज़ी । [धव या पेड़ ।

अग्निज्वाला (सं० स्त्री०) आग की लपट, अग्नि शिखा,

अग्निपरीक्षा (सं० स्त्री०) अग्नि द्वारा सच झूठ की परीक्षा करना, प्राचीन समय में किसी पर किसी अपराध का सन्देह होने पर यथार्थ बात जानने के लिये उसको आग पर चलाया जाता था, सोना चांदी आदि धातुओं को आग में तपाकर परखना ।

अग्निपुराण (सं० पु०) अठारह पुराणों में से एक पुराण, अग्नि ने वशिष्ट जी को यह पुराण पहले पहल सुनाया था इससे इसका नाम अग्निपुराण पड़ा । इसमें कोई १४, कोई १५ और कोई १६ हज़ार श्लोक मानते हैं, इसमें शिव माहात्म्य का वर्णन प्रधान है, फिर भी राजनीति, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, आयुर्वेद, छन्दशास्त्र, अलंकार, व्याकरण, आदि फुटकर बातें भी हैं ।

अग्निबाण (सं० पु०) अस्त्र विशेष, एक प्रकार का बाण, इसके चलाने से आग की वर्षा होती है, वह बाण जिससे आग की लपट निकलती हो ।

अग्निमांद्य (सं०पु०) मंदाग्नि, अपच, अजीर्ण, भूख न लगना, भूख की कमी, पाचन शक्ति का अभाव ।

अग्निवेश (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम, ये आयुर्वेद के आचार्य और अग्नि के पुत्र कहे जाते हैं ।

अग्निष्टोम (सं० पु०) यज्ञ विशेष, यह स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा से किया जाता है, इसका समय वसन्त ऋतु है, इसका द्रव्य है सोम और देवता इन्द्र, वायु आदि हैं । इसमें ऋत्विजों की संख्या सोलह होती है, यह पाँचदिन में पूर्ण होता है, इस यज्ञ को करने का अधिकारी अग्निहोत्री ब्राह्मण होता है ।

अग्निसंस्कार (सं० पु०) शव-दाह, दग्धक्रिया, दाह-कर्म, तपाना, जलाना ।

अग्निहोत्री (सं० पु०) अग्निहोत्र करने वाला, सुबह शाम आग में वेदोक्त विधि से हवन करने वाला ।

अग्न्याधान (सं० पु०) अग्निहोत्र, श्रुतिविहित अग्नि-संस्कार ।

अग्न्युत्पात (सं० पु०) आग लगना, आकाश से आग वर्षना, उल्कापात, धूम्रकेतु-दर्शन ।

अग्यारी (सं० स्त्री०) आग में धूप देना ।

अग्र (सं० पु०) आगा, नोक, सिरा, किसी कार्य का नेता, आगे, ऊपर का भाग, प्रथम, आदि, (वि०) अगला, श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान ।

अग्रगण्य (सं० पु०) अगुआ, मुखिया, नेता जिसकी गिनती आगे हो, श्रेष्ठ । [व्यक्ति ।

अग्रगामी (सं० पु०) आगे चलने वाला, नेता, प्रधान

अग्रज (सं० पु०) बड़ा भाई, ज्येष्ठ भ्राता, नायक, नेता, ब्राह्मण ।

अग्रजन्मा (सं०पु०) बड़ा भाई, ब्राह्मण, ब्रह्मा, पुरोहित ।

अग्रणी (सं० पु०) आगे चलने वाला, मुखिया, अगुआ ।

अग्रपश्चात् (सं० पु०) आगा पीछा ।

अग्रभाग (सं० पु०) पहला हिस्सा, आगे का भाग, छोर, नोक । [दूरदर्शी ।

अग्रशोची (सं० पु०) आगे से सोचने वाला, दूरंदेश,

अग्रसर (सं० पु०) आगे जाने वाला, मुखिया, प्रधान ।

अग्रह (सं० पु०) वानप्रस्थ, वह पुरुष जो गार्हस्थ को न धारण करे ।

अग्रहण
अग्रहायण } (सं० पु०) देखो अगहन ।

अग्रहार (सं० पु०) देवता या ब्राह्मण को अर्पित सम्पत्ति, वह भूमि या गांव जो देवता या ब्राह्मण को दान दिया जाता है ।

अग्राशन (सं० पु०) भोजन का वह भाग जो भोजन करने के पहले देवता को निकाल दिया जाता है । यह गौ और संन्यासियों को दिया जाता है । [तुच्छ ।

अग्राह्य (सं० पु०) शिवनिर्माल्य, न लेने योग्य, त्याज्य,

अग्रिम (वि०) अगाऊ, पेशगी, आगामी ।

अघ (सं० पु०) पाप, पातक, अधर्म, दोष, अपराध, व्यसन, कंस के सेनापति का नाम । इसके बड़े भाई का नाम बकासुर था, और पूतना इसकी बड़ी बहिन थी । इसको श्रीकृष्ण ने मारा था ।

अघखानि (वि०) पाप समूह, पाप का भण्डार ।

अघट (वि०) न होने वाला, जो न घटे, जो कार्य्य में परिणत न हो, जो ठीक न हो । [अनुचित, अनहोनी ।

अघटित (वि०) असम्भव, जो न हुआ हो, अयोग्य,

अघनाशक (वि०) पाप का नाश करने वाला, मन्त्रादि का जप करना, जिससे पाप दूर हो।

अघमर्षण (वि०) पापनाशक।

अघवाना (क्रि० स०) तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, ठूस ठूस कर खिलाना।

अघाई (सं० स्त्री०) सन्तुष्टी, तृप्ति, पेट भराव, अफराई।

अघाना (क्रि० अ०) पेट भरना, सन्तुष्ट होना, तृप्त होना, परिपूर्ण, इच्छा पूर्ण होना, भोजन से तृप्त होना, छकना।

अघासुर (सं० पु०) राक्षस विशेष।

अघोर (वि०) सुन्दर, सुहावना, सौम्य, प्रिय दर्शन, (पु०) शिव, सम्प्रदाय विशेष। इस सम्प्रदाय वाले अघोरी या अघोरपन्थी कहे जाते हैं, इस मत वाले मल मूत्र, मांस, सभी कुछ खाते हैं, इनके लिए अभक्ष्य कुछ भी नहीं है, इनके धर्म का मूल घृणा को जीत लेना ही है।

अघोरपन्थ (सं० पु०) अघोरियों का मत।

अघोरी (सं० पु०) अघोरपन्थी।

अङ्क (सं० पु०) निशान, अङ्क, चिह्न, छाप, दाम, संख्या, रेखा, अक्षर, लिखावट, नौ की संख्या, नाटक का एक अंश, गोद, कोरा, शरीर, अङ्ग, सार, पाप।

अङ्कगणित (सं० पु०) संख्याओं का हिसाब, गणित विद्या का एक भाग।

अङ्कड़ा (सं० पु०) कंकड़ पत्थर के बारीक टुकड़े, कंकड़ का छोटा टुकड़ा।

अङ्कना (क्रि० स०) सङ्केत करना, चिह्न करना, छापना, लिखना, मोल भाव करना।

अङ्कपरिवर्तन (सं० पु०) करवट बदलना, करवट फेरना, एक तरफ से दूसरी तरफ पीठ करना।

अङ्कमुहा (क्रि० स०) गले लगाना, आलिङ्गन करना, भेंटना, देना।

अङ्करा (सं० पु०) एक प्रकार का कुधान्य। यह जौ गेहूं चना आदि के खेतों में पैदा होता है, इसका दाना मूंग के दाने के समान काला और छोटा होता है।

अङ्कवार (सं० स्त्री०) छाती, गोद, कांख।

अङ्कविद्या (सं० स्त्री०) अङ्कगणित।

अङ्काई (सं० स्त्री०) अटकल, कूत, आंक।

अङ्काना (क्रि० स०) निर्ख ठहराना, कुतवाना, परखवाना, मूल्य निश्चित करना, अन्दाज़ा लगाना, जांचना।

अङ्काव (सं० पु०) आंकने का काम, कुताई, निर्ख।

अङ्कित (वि०) चिन्हित, चिन्ह किया हुआ, जांचा हुआ, परख किया हुआ, वर्णित, खचित।

अङ्कुर (सं० पु०) अंखुआ, फुनगी, कोपल, डाभ, गाभ, गांसी।

अङ्कुरित (वि०) अङ्कुर निकला हुआ, अंखुवाया हुआ।

अङ्कुरितयौवना (वि०) वह स्त्री जिसके युवावस्था के चिन्ह कुच आदि उठ आये हों, वह स्त्री जिसकी जवानी उमड़ती हो।

अङ्कुश (सं० पु०) एक प्रकार का लोहे का हथियार, जिससे हाथी चलाये जाते हैं, आंकड़ी।

अङ्कुशग्रह (सं० पु०) हाथीवान, महावत, हाथी चलाने वाला।

अङ्कुशधारी (सं० पु०) देखो अङ्कुशग्रह।

अङ्कोर (सं० पु०) अंकवार, गोद, छाती, भेंट, घूस, खेत में काम करने वालों का कलेवा, छाक, जलपान, दुपहरिया।

अङ्कोरना (क्रि० स०) भूंजना, गरम करना, घूस लेना।

अंखिया (सं० स्त्री०) लोहे का कलम, या ठप्पा जिससे हथौड़ी के द्वारा ठोंक कर बर्तन पर नक्क़ाशी करते हैं, आंख।

अङ्खुवा (सं० पु०) अङ्कुर, बीज से फूटकर निकली हुई नोक, कोपल कला, फुनगी।

अङ्खुवाना, (क्रि० अ०) अङ्कुरित होना, अङ्कुर निकलना, फुनगा निकलना।

अङ्ग (सं० पु०) अवयव, गात्र, शरीर, भाग, खण्ड, भेद, प्रकार, सहायक, सुहृद, मित्र, एक संबोधन, प्रिय, ध्रुववंशी एक राजा, एक भक्त का नाम, शास्त्र विशेष, जैन शास्त्र विशेष, वेदाङ्ग, बलि राजा का क्षेत्रज पुत्र, जन्मान्ध महर्षि दीर्घतमा से बलि की पत्नी सुदेष्णा के गर्भ से यह पैदा हुआ था, इससे शासित देश अङ्ग देश कहा जाता है, गङ्गा-सरयू के बीच वाला देश अङ्ग देश कहलाता है।

अङ्गचालन (सं० पु०) हाथ पैर हिलाना अङ्ग डोलाना।

अङ्गजन्मा (सं० पु०) सन्तान, काम, मद, मोह, रोग, केश, कामदेव, पसीना।

अङ्गड़ खङ्गड़ (वि०) टूटा फूटा, बचा खुचा, गिरा पड़ा, इधर उधर का।

अङ्गड़ाई (सं० स्त्री०) जम्हाई, देह टूटना, मरोड़ना।

अङ्गद (सं० पु०) बाजूबन्द, विजायठ, बाहु पर पहिनने का गहना, वानरराज, बालि का पुत्र।

अङ्गना (सं० स्त्री०) स्त्री, कामिनी, सुन्दरी, (पु०) आंगन, सहन।

अङ्गन्यास (सं० पु०) वैदिक और तान्त्रिक उपासनाओं में मन्त्रों द्वारा अङ्ग स्पर्श ।

अङ्ग भङ्ग (सं० पु०) किसी अङ्ग का टूट जाना, किसी अवयव का नाश ।

अङ्ग भङ्गी (सं० पु०) स्त्रियों का कटाक्ष, स्त्रियों की मोहित करने की चेष्टा ।

अङ्गभूत (सं० पु०) पुत्र, लड़का, (वि०) शरीर से पैदा, देह से उत्पन्न, भीतर, अन्तर्गत ।

अङ्गमर्दन (सं० पु०) हाथ पैर दबाना, अङ्गों की मालिश ।

अङ्गरखा (सं० पु०) चपकन, पहिनने का सिला हुआ कपड़ा ।

अङ्गराग (सं० पु०) उबटन, केसर कस्तूरी कपूर आदि सुगंधित द्रव्यों से मिला हुआ चन्दन, सुगंधित द्रव्य विशेष ।

अङ्गरी (सं० स्त्री०) कवच, बख़्तर, झिलम ।

अङ्गरेज़ (अं० सं० पु०) इंगलैण्ड का रहने वाला ।

अङ्गरेज़ी (अं० वि०) विलायती, अंग्रेज़ों की ।

अङ्गविक्षेप (सं० पु०) चमकाना, मटकाना, अंग हिलाना, नाचते, गाते, बजाते, बोलते समय अङ्गों का हिलाना, नाच, नृत्य ।

अङ्गविद्या (सं० स्त्री०) सामुद्रिक विद्या, हाथ पैर के रेखाओं की देख, जीवन की घटनाओं को बताने वाली विद्या, शरीर के रेखाओं को देख शुभाशुभ फल बताने वाली विद्या ।

अङ्गविभ्रम (सं० पु०) रोग विशेष, इस रोग में रोगी अपने अङ्गों को और का और समझता है, अङ्गभ्रान्ति ।

अङ्गसिहरी (सं० स्त्री०) जूड़ी, कंप, ज्वर आने के पहले शरीर की कँपकँपी ।

अङ्गहीन (वि०) अङ्गरहित, जिसका एक अङ्ग न हो, लूला, लङ्गड़ा, काना, बूचा, कामदेव ।

अङ्गाङ्गिभाव (सं० पु०) अवयव और अवयवी का परस्पर संबन्ध, गौण और मुख्य का सम्बन्ध, उपकारक उपकार्य संबन्ध ।

अङ्गा (सं० पु०) चपकन, अङ्गरखा ।

अङ्गाकड़ी (सं० स्त्री०) अङ्गारे पर सेंकी हुई मोटी रोटी, लिट्टी, बाटी ।

अङ्गार (सं० पु०) कोयला, चिनगारी, बिना धुएँ की आग निर्धुय अग्नि, जली लकड़ी ।

अङ्गारक (सं० पु०) जलता हुआ कोयला, दहकता हुआ आग का टुकड़ा, मंगलग्रह, भंगरैया, कटसरैया का वृक्ष, पियाबासा, कुरंटक ।

अङ्गारा (सं० पु०) देखो अङ्गार ।

अङ्गारी (सं० स्त्री०) बोरसी, अँगेठी, आग रखने का बर्तन, चिनगारी, दहकता हुआ कोयले का छोटा टुकड़ा ।

अङ्गिया (सं० स्त्री०) चोली, स्त्रियों की छोटी कुर्ती, कंचुकी ।

अङ्गिरस (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम, दस प्रजा पतियों में से एक यह भी हैं, इन्होंने, अथर्ववेद का प्रादुर्भाव किया है इससे इनका दूसरा नाम अथर्वा भी है । बृहस्पति का नाम, छठवें सम्वत्सर का नाम, कतीरा, कटीला ।

अङ्गिरा (सं० पु०) तारा, ब्रह्मा के मानसपुत्र, इन्होंने अङ्गिरा संहिता नामक ग्रन्थ बनाया है, बृहस्पति इनके ही पुत्र हैं ।

अङ्गी (सं० पु०) शरीर धारण करने वाला, शरीरधारी शरीरवाला, प्रधान, किसी सम्प्रदाय का मुखिया ।

अङ्गीकार (सं०पु०) स्वीकार, ग्रहण करना, सहना, प्रतिज्ञा, सम्मति ।

अङ्गीकृत (वि०) स्वीकार किया हुआ, स्वीकृत, अपनाया हुआ, लिया हुआ, माना हुआ ।

अङ्गीठी (सं० स्त्री०) बोरसी, आग रखने का पात्र ।

अङ्गुरी (सं० स्त्री०) उँगली ।

अङ्गुल (सं० पु०) नाप विशेष । आठ जव के बराबर परिमाण, एक गिरह का तीसरा भाग ।

अङ्गुलत्राण (सं० पु०) अङ्गुलियों की रक्षा करने वाला, गोह के चमड़े का दस्ताना । यह बाण चलाते समय अङ्गुलियों की रक्षा के लिए पहना जाता था ।

अङ्गुली (सं० स्त्री०) अङ्गुरी, उङ्गली, एक नदी का नाम, हाथी के सूण्ड का अग्रभाग ।

अङ्गुल्यानिर्देश (सं० पु०) कलंक, बदनामी, दोषारोपण, लांछन ।

अङ्गुष्ठ (सं० पु०) अङ्गूठा, मोटी अंगुरी ।

अङ्गूठा (सं० पु०) अङ्गुष्ट, हाथ पैर की सब से मोटी अङ्गुली ।

अङ्गूठी (सं० स्त्री०) छल्ला, मुद्रिका, मुन्दरी, अङ्गुलियों में पहिनने का गहना ।

अङ्गूर (सं० पु०) फल विशेष, दाख, द्राक्षा, मेवा ।

अङ्गूरी (वि०) अङ्गूर के रंग का, अङ्गूर से बना हुआ ।

अङ्गेजना (क्रि० स०) सहना, बरदाश्त करना, स्वीकार करना, अंगीकार करना।
अङ्गेट (सं० स्त्री०) डौल, आकृति, आकार।
अङ्गेठी (सं० स्त्री०) देखो अङ्गीठी।
अङ्गोछना (क्रि० अ०) भीगे कपड़े से देह पोंछना, भीगी तौलिया से शरीर पोछना।
अङ्गोछा (सं० पु०) तौलिया, गमछा, अङ्गवछा, देह पोंछने का कपड़ा, उपरना। [छोटी धोती।
अङ्गोछी (सं० स्त्री०) शरीर पोंछने के लिए छोटा वस्त्र,
अङ्गोरा (सं० पु०) मसा, मच्छर, भुनगा। [हिस्सा।
अङ्घ्रि (सं० पु०) पैर, चरण, वृक्षों की जड़, चौथा
अङ्घ्रिप (सं० पु०) वृक्ष, पेड़।
अच् (सं० पु०) संज्ञा विशेष, स्वर वर्ण, छिपा कर करना।
अचक (वि०) बहुत, पूरा, भरपूर, (अव्य०) हठात्, अकस्मात्, अचानक, (सं० पु०) घबराहट, विस्मय, आश्चर्य।
अचकन (सं० पु०) अङ्गरखा पांच कलियों का लम्बा अङ्गा। [खिलाड़पन।
अचकरी (सं० स्त्री०) अत्याचार, लम्पटता, धींगा धींगी,
अचका (क्रि० वि०) एकाएक, सहसा, अचानक।
अचक्का (वि०) अनजान, अपरिचित।
अचञ्चल (वि०) धीर, गम्भीर, स्थिर, बिना घबड़ाया हुआ, चंचलता हीन।
अचञ्चलता (सं० स्त्री०) धीरता, गम्भीरता, स्थिरता।
अचण्ड (वि०) शान्त, सुशील, धीर, सरल स्वभाव वाला, सौम्य।
अचम्भा (सं० पु०) आश्चर्य, विस्मय, अचरज, चमत्कार।
अचम्भा करना (क्रि० अ०) आश्चर्य करना, विस्मित होना।
अचम्भित (वि०) चकित, विस्मित, आश्चर्यान्वित।
अचर (वि०) न चलने वाला, स्थावर, अटल, अचल।
अचरज (सं० पु०) आश्चर्य, विस्मय, अचम्भा।
अचरा (सं० पु०) साड़ी का वह छोर जो छाती पर रहता है, अञ्चल।
अचल (वि०) निश्चल, जो न चले, धीर, अटल, स्थिर। (सं० पु०) जैनियों का पहला तीर्थङ्कर, पर्वत, पहाड़।
अचला (वि०) न चलने वाली, (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती।
अचला सप्तमी (सं० स्त्री०) माघ शुक्ला सप्तमी, इस दिन का किया हुआ शुभ कर्म अचल होता है, इसी से इसका नाम अचला सप्तमी पड़ा।
अचवन (सं० पु०) भोजनान्त हाथ मुँह धोकर कुल्ला करना, कुल्ला करने की क्रिया, आचमन, पीने की क्रिया।
अचवाना (क्रि० स०) भोजन के बाद हाथ मुंह धुलाना और कुल्ला करना, आचमन करना, पिलाना।
अचाञ्चक (क्रि० वि०) अकस्मात्, हठात्, सहसा।
अचानक (क्रि० वि०) सहसा, एकाएक, बिना कारण, दैव योग से, हठात्, अकस्मात्।
अचार (सं० पु०) आम निम्बू आदि के फलों में मसाले मिला कर प्रस्तुत किया हुआ खाद्य वस्तु विशेष, चाल चलन, व्यवहार।
अचारज (सं० पु०) आचार्य।
अचारी (वि०) आचार करने वाला, अचार विचार से रहने वाला (सं० स्त्री०) एक प्रकार के आम का अचार।
अचाही (वि०) इच्छा रहित, निष्काम, निस्पृह, किसी बात की आकांक्षा न रखने वाला।
अचिकित्स्य (वि०) असाध्य, जिसका इलाज न हो सके, जिसकी दवा न हो सके। [निर्बुध।
अचिन्त (वि०) चिन्ता हीन, निश्चिन्त, बेसुध,
अचिन्तनीय (वि०) जो ध्यान में न आवे, जिसका चिंतन न हो सके, अज्ञेय, ज्ञान के परे।
अचिन्त्य (वि०) जिसका चिन्तन न हो सके, कल्पनातीत, बोधगम्य, अज्ञेय, बिना सोचा विचारा, आकस्मिक।
अचिर (क्रि० वि०) शीघ्र, जल्दी, वेग, तुरन्त।
अचिरात् (क्रि० वि०) शीघ्र, तुरन्त।
अचूक (वि०) ठीक, जो न चूके, निर्भ्रान्त, जिसमें भूल न हो, जो अवश्य फलदायक हो, अवश्य, निश्चय।
अचेत (वि०) मूर्च्छित, ज्ञानशून्य, चेतनाहीन, विकल, विह्वल, असावधान, नासमझ, मूर्ख, जड़।
अचैतन्य (वि०) ज्ञानशून्य, चेतनाहीन, अज्ञान, जड़।
अचैन (सं० पु०) विकलता, व्याकुलता, दुःख।
अचोना (सं० पु०) आचमन करने का पात्र, कटोरा, पीने का बर्तन।
अच्छत (क्रि० अ०) जीवित रहना, वर्तमान रहना (सं० पु०) बिना टूटा चावल जो पूजा के काम में आता है।
अच्छर (सं० पु०) वर्ण, अक्षर।

अच्छरा (सं० स्त्री०) देवाङ्गना, अप्सरा, स्वर्ग की वेश्या।
अच्छा (वि०) उत्तम, भला, चोखा, खरा, बढ़िया, (सं० पु०) बड़ा आदमी, श्रेष्ठ पुरुष, गुरुजन, बाप दादा, (अव्य०) स्वीकारार्थक अव्यय।
अच्छाई (सं० स्त्री०) सुघराई, सुन्दरता, उत्तमता।
अच्छिन्न (वि०) अखण्डित, सम्पूर्ण, साबित, न कटा हुआ, छिद्रहीन।
अच्छोहिनी (सं० स्त्री०) देखो अक्षौहिणी।
अच्युत (सं० पु०) नित्य, अविनाशी, जिसका नाश न हो, सदा रहने वाला, अमर, स्थिर, न विचलित होने वाला, त्रुटि न करने वाला, विष्णु।
अच्युतानंद (सं० पु०) ईश्वर, आनन्द स्वरूप, नित्यानन्द, जिसका आनन्द नित्य हो।
अछत (क्रि० अ०) जीवित रहना, वर्तमान रहना, उपस्थित रहना।
अछत्र (सं० पु०) असहाय, राज्यच्युत, राज्यहीन, छत्र [रहित।
अछताना पछताना (क्रि० अ०) खेद करना, पश्चात्ताप करना, पछताना।
अछरा (सं० स्त्री०) स्वर्ग की वेश्या, अप्सरा।
अछरौटी (सं० स्त्री०) वर्ण माला।
अछवानी (सं० स्त्री०) मसाला विशेष, अजवाइन, सोंठ मेवा आदि घी में पका कर प्रसूता स्त्रियों को दिया जाता है, औषधि।
अछूत (वि०) न छुआ हुआ, अस्पृष्ट, नया, कोरा, पवित्र।
अछूता (वि०) नवीन, पवित्र, नया, बिना छुआ हुआ।
अछेह (वि०) लगातार, बहुत अधिक, अखंडित।
अछोभ (वि०) गम्भीर, स्थिर, शान्त, अचंचल, अचपल, क्षोभहीन।
अज (वि०) जन्म रहित, स्वयंभू, अजन्मा, जिसका जन्म न हो, (सं० पु०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव, सूर्यवंशी एक राजा। ये दशरथ के पिता और रघु के पुत्र थे। ये बड़े वीर थे, गंधर्वराज के पुत्र से इनको सम्मोहनास्त्र मिला था। बकरा, मेष, भेंड़ा, स्त्री, माया, शक्ति, प्रकृति, अविद्या।
अजगर (सं० पु०) बकरी निगलने वाला सांप, निकम्मा, निरुद्यमी, आलसी।
अजगव (सं० पु०) पिनाक, शिव का धनुष।
अजगुत (सं० पु०) आश्चर्य, अद्भुत, बिना देखी सुनी बात, अचम्भे की बात, अप्राकृतिक घटना।
अजगैब (सं० पु०) अलक्षित स्थान, अदृष्ट स्थान।
अजदहा (सं०पु०) अजगर, बड़ा मोटा सांप।
अजनबी (फा० वि०) अज्ञात, अपरिचिति, बिना जान पहचान का, विदेशी, नया।
अजपा (वि०) जिसका उच्चारण न किया जाय, (सं० पु०) गड़रिया, बकरी पालने वाला।
अजब (वि०) अनूठा, विचित्र, अनोखा, विलक्षण, विचित्र।
अज़माइश (सं० स्त्री०) जांच, परख, परीक्षा।
अज़माना (क्रि० स०) परखना, परीक्षा करना, जाँच [करना।
अजमोद (सं० पु०) औषधि विशेष।
अजय (सं० पु०) हार, पराजय, (वि०) अजेय, जो जीता न जा सके, अपराजित, पराजय रहित।
अजया (सं० स्त्री०) भाँग, विजया।
अजर (वि०) जो कभी बूढ़ा न हो, जरा रहित, अमर, जवान, युवा, यौवन।
अजवाइन (सं० स्त्री०) अजवायन, मसाला विशेष।
अजस (सं० पु०) अपयश, बदनामी, अपकीर्ति।
अजसी (वि०) यशहीन, बदनाम, अपयशी।
अजस्र (क्रि० वि०) सदा, नित्य, निरंतर, प्रतिक्षण।
अजहत्स्वार्था (सं० स्त्री०) उपादान लक्षण, अलङ्कार शास्त्र का एक लक्षण, जिसमें लक्षण शब्द अपने वाच्यार्थ को न छोड़ कर भिन्न अर्थ बतलाता है।
अज़हद (क्रि० वि०) जिसका हद न हो, अपरिमित, बहुत अधिक।
अजहूँ (अव्य०) आज भी, अब तक।
अजा (सं० स्त्री०) जन्म रहित, बकरी, माया, शक्ति, [दुर्गा।
अजाचक (सं० पु०) सम्पन्न मनुष्य, जिसको मांगने की आवश्यकता न हो, (वि०) न मांगने वाला, अयाची, सम्पन्न।
अजाची (सं० पु०) सम्पन्न व्यक्ति, न मांगने वाला (वि०) भरा पूरा, सम्पन्न, जो न मांगे, जिसे मांगने की आवश्यकता न हो।
अजाड़ (सं० पु०) सनिया टाट।
अजातशत्रु (वि०) शत्रु रहित, जिसका कोई शत्रु न हो, (सं०पु०) राजा युधिष्ठिर, ये किसी को अपना शत्रु नहीं समझते थे इससे इनका नाम अजातशत्रु पड़ा।

शिव, उपनिषद् में वर्णित एक राजा का नाम, यह राजा बड़ा ब्रह्मज्ञानी था, महर्षि गार्ग्य ने इससे कुछ उपदेश लिया था। मगध के एक राजा का नाम, यह बिम्बसार का पुत्र था। ४८९ खीष्टाब्द के पहले मगध का शासन यह करता था।

अजाति (वि०) जाति-च्युत, जाति से निकाला हुआ, पतित, विजाति, त्याज्य।

अजान (वि० अज्ञानु निर्बोध, विवेक रहित, मूढ़, अपरिचित, अज्ञात, (सं० पु०) अनभिज्ञता, अविवेकता, अज्ञानता।

अजामिल (सं० पु०) एक पापी ब्राह्मण का नाम, यह अपनी पहली अवस्था में सच्चरित्र था, पर कुसङ्ग में पड़ कर यह चरित्रहीन हो गया, दासी के गर्भ से इसके दस लड़के हुए, उनमें से एक का नाम नारायण था। मरते समय इसने अपने पुत्र नारायण को गोहराया, इससे विष्णु के दूत आकर इसको विष्णु लोक में ले गये।

अजायब (अ० सं० पु०) अद्भुत वस्तु, विचित्र पदार्थ।

अजायबखाना (सं० पु०) अद्भुत वस्तु संग्रहालय, वह घर जहां पर अद्भुत पदार्थ रक्खे जाते हैं।

अजायब घर (सं० पु०) देखो अजायबख़ाना।

अजिऔरा (सं० पु०) आजी या दादी के पिता का घर।

अजित (वि०) जो जीता न गया हो, अपराजित, जिसका पराजय न हुआ हो, (सं० पु०) शिव, विष्णु, बुद्ध।

अजिन (सं० पु०) मृगछाला, हरिण या बाघ का खाल जिस पर ब्रह्मचारी आदि धार्मिक लोग पूजा पाठ करते हैं।

अजिर (सं० पु०) आंगन, चौक, चबूतरा, सहन, हवा, शरीर, इन्द्रियों का विषय, मेढक।

अजी (अव्य०) सम्बोधनार्थक शब्द। [के पिता थे।

अजीगर्त (सं० पु०) एक ऋषि का नाम, ये शुनःशैफ

अज़ीज़ (अ० वि०) प्यारा, प्रिय, (सं० पु०) सम्बन्धी, मित्र। [विचित्र।

अजीब (अ० वि०) अनूठा, अनोखा, आश्चर्यजनक,

अजीरन (सं० पु०) देखो अजीर्ण।

अजीर्ण (सं० पु०) अपच, बदहज़मी, जो पचा न हो। भूख का न लगना, अत्यधिक, बहुतायत।

अजीव (सं० पु०) अचेतन, चेतना रहित, (वि०) मृत, बिना जीव का।

अजो (क्रि० वि०) आज तक, अभी तक, अब तक।

अजौं (क्रि० वि०) अबतक, अद्यापि, अभीतक।

अज्ञ (वि०) नादान, अज्ञानी, जड़, मूर्ख, नासमझ, (सं० पु०) जड़ पुरुष, मूर्ख मनुष्य।

अज्ञता (सं०स्त्री०) मूर्खता, नादानी, अनाड़ीपन, जड़ता।

अज्ञात (वि०) अविदित, अपरिचित, न जाना हुआ, अप्रकट।

अज्ञातनाम (वि०) जिसका नाम न मालूम हो, जिसका नाम न प्रकट हो, अविख्यात, तुच्छ।

अज्ञातवास (सं० पु०) छिप कर रहना, गुप्तवास।

अज्ञात यौवना (सं० स्त्री०) मुग्धा नायिका का एक भेद, जिसको अपनी जवानी के आने का ज्ञान न हो।

अज्ञान (सं० पु०) अविद्या, मूर्खता, जड़ता, मोह, अजानपन।

अज्ञानता (सं० स्त्री०) मूर्खता, नादानी, अविद्या।

अज्ञानतः (क्रि० वि०) बेसमझी से, अनजाने।

अज्ञानी (वि०) अनाड़ी, अबोध, नादान, मूर्ख, जड़, ज्ञानहीन। [योग्य।

अज्ञेय (वि०) बुद्धि के परे, ज्ञानातीत, न समझने

अञ्चल (सं० पु०) देखो अचरा।

अञ्जन (सं० पु०) काजल, सुरमा, आंखमें लगाने का द्रव्य, धान्य विशेष।

अञ्जना (सं० स्त्री०) एक वानरी का नाम, इसके पिता का नाम कुंजर था और पति का केशरी, यह हनुमान की माता थी, रोग विशेष, बिलनी।

अञ्जनाद्रि (सं० पु०) पर्वत विशेष, इसका वर्णन संस्कृत ग्रन्थों में पाया जाता है, यह पश्चिम दिशा में माना गया है।

अञ्जनानन्दन (सं० पु०) हनुमान।

अञ्जनी (सं० स्त्री०) हनुमान की माता, चन्दन लगाये हुई स्त्री, माया, कुटकी, बिलनी।

अञ्जरपञ्जर (सं० पु०) ठठरी, शरीर का जोड़, पसली।

अञ्जली (सं० स्त्री०) दोनों हथेलियों को जोड़ कर बनाया हुआ संपुट, अञ्जुरी।

अञ्जसा (क्रि० वि०) शीघ्रता से, जल्दी से। [वाली।

अञ्जही (सं० स्त्री०) अनाज की मण्डी, (वि०) अनाज

अञ्जीर (सं० पु०) फल और वृक्ष विशेष।

अञ्जुरी (सं० स्त्री०) अञ्जलि।

अआर (सं० पु०) प्रकाश, चांदनी, उजेला।
अआेरा (वि०) उजेला, प्रकाशमान।
अझा (सं० पु०) छुट्टी, अनध्याय, अवकाश, नाग़ा।
अटक (सं० पु०) विघ्न, बाधा, रोक, रुकावट, वारण, भारतवर्ष के पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त के एक नगर का नाम, सिन्धु नदी को भी अटक कहा जाता है, क्योंकि उसके प्रबल वेग के कारण वहां पर लोग रुक जाते हैं।
अटकना (क्रि० अ०) रुकना, ठहरना, उलझना, फँसना, लगा रहना, झगड़ना, बकवाद करना।
अटकर (सं० स्त्री०) देखो अटकल।
अटकरना (क्रि० स०) अनुमान करना, अन्दाज़ा करना।
अटकल (सं० स्त्री०) अन्दाज़ा, अनुमान, कल्पना, कूत।
अटकलपच्चू (सं० पु०) अनुमान, कपोल कल्पना, अनिश्चित, बिना ठौर ठिकाने का।
अटका (सं० पु०) जगन्नाथ जी को भोग लगाया हुआ भात, यह सुखा कर यात्रियों को प्रसाद के तौर मिलता है।
अटकाना (क्रि० स०) ठहराना, रोकना, छेकना, उलझाना, अड़ाना, फंसाना, किसी काम में बाधा डालना।
अटकाव (सं० पु०) बाधा, विघ्न, रुकावट, प्रतिबंध, रोक।
अटखट (वि०) गड़बड़। [खिलाड़ी।
अटखेल (वि०) बहुत खेलने वाला, चञ्चल, चपल,
अटखेली (सं० स्त्री०) चपलता, चञ्चलता, मस्तानी चाल, मतवाली चाल, कल्लोल।
अटट (वि०) पोढ़ा, मज़बूत, दृढ़, मोटा।
अटन (सं० पु०) घूमना, यात्रा, भ्रमण, चलना, फिरना।
अटना (क्रि० अ०) घूमना, चलना, फिरना, भ्रमण करना, समाना, भर जाना, पड़ना, ओट करना।
अटपट (वि०) विकट, कठिन, टेढ़ा, बांका, टर्रा, गहिरा, अनोखा, अंडबंड, उलटा सीधा। [ढंगी।
अटपटी (सं० स्त्री०) नटखटी, तिरछी, अनरीति, बे-
अटम्बर (सं०पु०) आडम्बर, दर्प, कुटुम्ब, परिवार, ख़ान्दान।
अटम (सं० पु०) ढेर, राशि।
अटल (वि०) अचल, पोढ़, निश्चल, स्थिर, जो न चले, न टलने वाला, गुसाइयों के एक अखाड़े का नाम।
अटवी (सं० स्त्री०) वन, कानन, जंगल, हिंस्र जीवों के रहने का स्थान। [या छत।
अटा (सं० स्त्री०) अटारी, कोठा, घर के ऊपर की कोठरी
अटाटूट (वि०) नितान्त, बिल्कुल।
अटारी (सं० स्त्री०) देखो अटा।
अटाल (सं० पु०) धरहरा, बुर्ज।
अटाला (सं० पु०) राशि, ढेर, सामान, सामग्री।
अटिया (सं० स्त्री०) पर्णकुटी, झोपड़ी, छोटा मकान।
अटूट (वि०) न टूटने वाला, अखण्डनीय, जिसका खण्डन न हो, पोढ़ा, दृढ़, पूरा, अमुक्त, अखण्ड, लगातार। [रहित।
अटेक (वि०) टेक रहित, उद्देश्यशून्य, निराश्रय, आश्रय
अटेर (सं० पु०) एक गांव का नाम।
अटेरन (सं० पु०) फेटी, आयेना, चरखी, घोड़े को देने की एक रीति। [सूतकी आंटी बनाना।
अटेरना (क्रि० स०) फेटा बनाना, मोड़ना, अटेरन से
अट्टहास (सं० पु०) ठठाकर हँसना, खिलखिला कर हँसना, क़हक़हा मारना, बड़े ज़ोर से हँसना।
अट्टालिका (सं० स्त्री०) अटारी, कोठा, राजगृह, हर्म्य, बड़ा मकान। [की आठ बूटियां बनी रहती हैं।
अट्ठा (सं० पु०) तास का एक पत्ता, जिस पर किसी रंग
अट्ठाईस (वि०) संख्या विशेष, बीस और आठ, २८।
अट्ठानबे (वि०) संख्या विशेष, नब्बे और आठ, ९८।
अट्ठावन (वि०) संख्या विशेष, पचास और आठ, ५८।
अठइसी (सं० स्त्री०) अट्ठाईस पञ्जा, फलों की बिक्री में १४० का सैकड़ा माना जाता है।
अठकौसल (सं० पु०) पंचायत, गोष्ठी, मन्त्रणा, सलाह।
अठन्नी (सं० स्त्री०) चांदी का सिक्का विशेष, आधा रुपया, धेली।
अठमासा (सं० पु०) वह खेत जो आठ मास तक आषाढ़ से माघ तक समय समय तक जोता जाय और उसमें ऊख बोयी जाय।
अठल (सं० पु०) संस्कार विशेष।
अठलाना (क्रि० अ०) इतराना, ठसक दिखाना, ऐंठ दिखाना, गर्व जनाना, नख़रा करना, मदोन्मत्त होना।
अठवारा (सं० पु०) आठवां दिन, सप्ताह।
अठवांस (सं० पु०) अठपहली वस्तु (वि०) अठपहल।
अठवासा (वि०) आठ महीने में उत्पन्न होने वाला गर्भ।
अठहत्तर (वि०) संख्या विशेष, सत्तर और आठ, ७८।
अठान (सं० पु०) न ठानने योग्य कर्म, अयोग्य कार्य, बैर, शत्रुता, (क्रि० स०) सताना, पीड़ित करना।

अठारह (वि०) संख्या विशेष, दस और आठ, १८।
अठासी (वि०) संख्या विशेष, अस्सी और आठ, ८८।
अठिलाना (क्रि० अ०) देखो अठलाना। [स्थिर, दृढ़।
अठेल (वि०) ठेला न जाने योग्य, बलवान, यथेष्ट, प्रचुर,
अठोठ (सं० पु०) आडम्बर, पाखण्ड।
अठोतरसो (वि०) एक सौ आठ, १०८। [की माला।
अठोतरी (सं० स्त्री०) एक सौ आठ दाने की जप करने
अड़ (सं० स्त्री०) टेक, हठ, झगड़ा, विरोध।
अड़ङ्ग (सं० पु०) हाट, बाजार, मण्डी।
अड़ङ्गा (सं० पु०) अड़चन, बाधा, रुकावट।
अड़गोड़ा (सं० पु०) एक लकड़ी, यह नटखट जानवरों के गले में बांधा जाता है, जिस से भागते समय उनके पैर में लगता है और वे बहुत तेज़ी से भाग नहीं सकते, ठेकुर, डेंगना। [अंडस।
अड़चन (सं० स्त्री०) रुकावट, बाधा, विघ्न, आपत्ति,
अड़ड़पोपो (सं० पु०) पाखंडी, धूर्त, जो लोगों का हाथ देख कर ठगता है, बकवादी, गप्पी, गप्प हांकने वाला। [बहाना।
अड़तल (सं० पु०) आड़, ओट, आश्रय, शरण, हीला,
अड़तला (सं० पु०) शरण, आश्रय।
अड़तालीस (वि०) संख्या विशेष, चालीस और आठ, ४८।
अड़तीस (वि०) संख्या विशेष, तीस और आठ, ३८।
अड़ना (क्रि० अ०) रुकना, टेक बाँधना, हठ करना, ठानना, ठहरना, अटकना।
अड़बंग (सं० पु०) ऊंचा नीचा, अटपट, अड़बड़, टेढ़ा मेढ़ा, दुर्गम, कठिन, विकट।
अड़बंगा (सं० पु०) देखो अड़बङ्ग।
अड़बड़ (सं० पु०) प्रलाप, व्यर्थ बकना, गाली देना।
अड़बन्ध (सं० पु०) कोपीन, कटिबन्ध।
अड़वल (वि०) अड़ जाने वाला, रुकने वाला।
अड़सठ (वि०) संख्या विशेष, साठ और आठ, ६८।
अड़हुल (सं० पु०) पुष्प विशेष, देवी फूल, जवा पुष्प।
अड़ाड़ा (सं० पु०) ढोंग। [जगह, ठहरने का स्थान।
अड़ान (सं० पु०) पड़ाव, पथिकों के विश्राम लेने की
अड़ाना (क्रि० स०) टिकाना, रोकना, ठहराना, उलझाना, फँसाना, टेकना, डाट लगाना, गिराना, ढरकाना, भरना, ठूसना।

अड़ानी (सं०स्त्री०) बड़ा पंखा, छाता रोकने वाला, कुश्ती का एक पेंच।
अडिग (वि०) न हिलने डुलने वाला, स्थिर, निश्चल।
अड़ियल (वि०) चलते चलते रुक जाने वाला, अड़ कर चलने वाला, सुस्त, हठी। [तकिया, फेंटी।
अड़िया (सं० स्त्री०) साधुओं की कुबड़ी, साधुओं की
अड़ी (सं०स्त्री०) आग्रह, हठ, अड़ान, रोक। [दिया जाता है।
अड़ूसा (सं०पु०) वृक्ष विशेष, कफ, श्वांस क्षयी में इसको
अड़ेयाना (क्रि०स०) आश्रय देना, रक्षा करना।
अड़ैच (सं० स्त्री०) द्वेष, शत्रुता। [स्तब्ध।
अड़ोल (वि०) न हिलने डोलने वाला, अचल, स्थिर,
अड़ोस पड़ोस (सं० पु०) आस पास, समीप, क़रीब।
अड़ोसी पड़ोसी (सं० पु०) आस पास का रहने वाला, अगल बगल का रहने वाला।
अड्डा (सं० पु०) ठहरने का स्थान, छावनी, डेरा, सेना रहने की जगह, गुण्डों के बैठने उठने का स्थान।
अढ़तिया (सं० पु०) आढ़त करने वाला, आढ़त का व्यापार करने वाला, दलाल। [देना।
अढ़वना (क्रि० स०) अरहवना, काम में लगाना, आज्ञा
अढ़ाई (वि०) संख्या विशेष, दो और आधा।
अढ़िया (सं० स्त्री०) लकड़ी या पत्थर का छोटा बर्तन, गारा ढोने के लिये काठ या लोहे का बर्तन।
अढुकना (क्रि० अ०) ठोकर लगना, ठेस लगना, टेकना, सहारा लेना।
अढुकि (क्रि० वि०) उठक कर, सहारा ले कर।
अढ़ैया (सं० स्त्री०) तौल विशेष, पंसेरी का आधा, काम कराने वाला।
अणद (सं० पु०) आनन्द, प्रसन्नता।
अणि (सं० स्त्री०) नोक, धार, बाढ़, धार, सीमा, धुरी की कील, मेड़, किनारा, बहुत छोटा।
अणिमा (सं० स्त्री०) आठ सिद्धियों में से पहिली सिद्धि, इसके द्वारा योगी लोग अणु के बराबर सूक्ष्म रूप धर लेते हैं।
अणीय (वि०) अति सूक्ष्म, बारीक।
अणु (सं० पु०) कण के साठवें भाग को अणु कहते हैं, परमाणु, सूक्ष्म कण, रज-कण, अत्यन्त सूक्ष्म।
अणुमात्र (वि०) थोड़ा सा।
अणुवाद (सं० पु०) जिस दर्शन या सिद्धान्त में जीव

और आत्मा को अणु माना गया हो वह दर्शन या सिद्धान्त, वैशेषिक दर्शन, वल्लभाचार्य का मत।

अणुवादी (सं० पु०) नैयायिक, वैशेषिक दर्शन को मानने वाला, वल्लभाचार्य मतानुयायी वैष्णव।

अणुवीक्षण (सं० पु०) सूक्ष्मदर्शकयंत्र, छिद्रान्वेषण।

अणोरणीयान् (सं० पु०) उपनिषद् का मन्त्र विशेष, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, छोटे से छोटा।

अणटा (सं० पु०) बड़ी गोली।

अणटागुड़गुड़ (वि०) बेहोश, नशे में चूर, अचेत, बेसुध।

अणटाघर (सं० पु०) गोली खेलने का घर। [उतान।

अणटाचित (क्रि०वि०) चित पड़ा हुआ, बेलाग गिरा हुआ,

अणटाबंधू (सं० पु०) जुआ खेलने की कौड़ी। [गट्ठा।

अणटिया (सं० स्त्री०) घास का छोटा गट्ठर, पूला, छोटा

अणटियाना (क्रि० स०) घास का छोटा पूला बांधना, हथेली में छिपा लेना, अंगुलियों में छिपाना, अंगुलियों में लपेट कर डोरी की पिंडी बनाना।

अणटी (सं० स्त्री०) अंगुलियों के मध्य का स्थान, गांठ, धोती का वह भाग जो कमर पर लपेटा रहता है।

अणठई (सं० स्त्री०) किलनी, चिचड़ी, छोटे कीड़े जो जानवरों के अङ्ग में लपटे रहते हैं। [अंठली, गिलटी।

अणठी (सं० स्त्री०) गुठली, बीज, चीयाँ, गांठ, गिरह,

अणड (सं० पु०) अण्डा, अण्डकोश, वीर्य, कस्तूरी, मृगनाभि, विश्व, संसार, कामदेव।

अणडकटाह (सं० पु०) विश्व, ब्रह्माण्ड, सार, जगत्।

अणडकोश (सं०पु०) थैली, मुष्क, आण्ड, खुसिया, वृषण।

अणडज (सं० पु०) अण्डे से उत्पन्न होने वाले जीव, पक्षी, सर्प, मछली, गोह, गिरगट आदि। [बकबक।

अणडबणड (सं० स्त्री०) प्रलाप, बे सिर पैर की बात,

अणडस (सं० स्त्री०) कठिनता, असुविधा, संकट।

अणडा (सं० पु०) पक्षियों आदि के पैदा होने का स्थान, गोलाकार।

अणडी (सं० स्त्री०) रेशमी वस्त्र विशेष, यह रद्दी रेशम और छाल आदि से बनाया जाता है, अधिकतर यह ओढ़ने के काम आता है, रेंडी, एरंड।

अणडुआ (सं० पु०) बिना बधिया किया हुआ पशु, आंडू।

अणडुआ बैल (सं० पु०) बिना बधिया किया हुआ बैल, सांड, वह मनुष्य जिसका पोता बहुत बड़ा हो, आलसी मनुष्य।

अणडैल (वि०) अण्डावाली, जिसके पेट में अण्डा हो।

अतः (क्रि० वि०) इसलिए, इस हेतु, इसी कारण, इससे।

अतएव (क्रि० वि०) इसी लिए, इसी कारण।

अतथ्य (वि०) असत्य, झूठ, अयथार्थ, अन्यथा, असमान।

अतद्गुण (सं० पु०) अलंकार विशेष, इसमें एक वस्तु का किसी ऐसी अन्य वस्तु के गुणों को न ग्रहण करना दिखलाया जाता है जिसके वह अत्यन्त सन्निकट हो। [बिना देह वाला।

अतनु (सं० पु०) अनंग, कामदेव (वि०) शरीर रहित,

अतन्द्रित (वि०) आलस्य हीन, निद्रा रहित, बिना आलस्य का, चपल, चंचल।

अतर (सं० पु०) पुष्पसार, इत्र।

अतरदान (सं० पु०) सोने चांदी गिलट आदि का फूलदान के समान बना हुआ पात्र जिसमें इतर से तर रुई रख कर महफिलों में सत्कारार्थ सब के सामने रक्खा जाता है। [की क्रिया।

अतरंग (सं० पु०) लङ्गर, ज़मीन से उखाड़ कर रखने

अतरसों (क्रि० वि०) परसों के आगे का आने वाला दिन, वर्तमान दिन से आने वाला तीसरा दिन।

अतर्कित (वि०) बिना सोचा विचारा, आकस्मिक, जिसका पहले से अनुमान न किया गया हो, जिसका विचार न किया गया हो।

अतर्क्य (वि०) अविवेचनीय, जिस पर विवेचना न हो सके, अचिंत्य, अनिर्वचनीय।

अतल (वि०) बिना पेंदे का, जिसमें तल न हो, (सं०पु०) सात पातालों में से दूसरा पाताल।

अतलस (अ० सं० स्त्री०) रेशमी वस्त्र विशेष, यह बहुत मुलायम होता है।

अतलस्पर्शी (वि०) अथाह, बहुत गहरा।

अतवार (सं० पु०) रविवार।

अता (सं० स्त्री०) अनुग्रह, दान।

अतसी (सं० स्त्री०) तीसी, अलसी।

अताई (वि०) प्रवीण, कुशल, धूर्त, चालाक, अशिक्षित, (सं० पु०) गवैया, बजवैया।

अति (वि०) अत्यन्त, अधिक, बहुत, (सं० स्त्री०) अधिकता, सीमा का उल्लंघन।

अति उक्ति (सं० स्त्री०) बढ़ा चढ़ा कर किसी बात को कहना, असम्भव, प्रशंसा, अत्युक्ति।

अतिकाय (वि०) दीर्घकाय, बड़ा शरीर वाला, मोटा, स्थूल, (सं० पु०) एक राक्षस का नाम, यह रावण का पुत्र था, इसने तपस्या कर ब्रह्मा को प्रसन्न किया था, ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर इसको एक अभेद्य कवच दिया था, जिसको पाकर यह अजेय हो गया था, लक्ष्मण ने इसको युद्ध में मारा था।

अतिकाल (सं० पु०) देर, विलम्ब, कुसमय।

अतिकृच्छ्र (सं० पु०) बहुत कष्ट, व्रत विशेष, पाप दूर करने के लिए यह व्रत किया जाता है, यह छः दिन में पूरा होता है, इसमें पहले दिन प्रातःकाल एक ग्रास, दूसरे दिन सायंकाल एक ग्रास और तीसरे दिन यदि बिना मांगे मिले तो एक ग्रास खा ले, शेष तीन दिन बिना अहार के बितावे।

अतिक्रम (सं० पु०) पार होना, नियम का उल्लंघन, क्रम का भङ्ग करना, मर्यादा का उल्लंघन करना।

अतिक्रान्त (वि०) व्यतीत, बीता हुआ, सीमा का पार किया हुआ, गया हुआ, बढ़ा हुआ।

अतितीव्र (सं० पु०) संगीत का वह स्वर जो तीव्र से भी थोड़ा अधिक ऊँचा हो।

अतिथि (सं० पु०) जिसके आने की तिथि नियत न हो, साधु, पाहुन, अभ्यागत, किसी स्थान में एक दिन से अधिक न ठहरने वाला साधु, अयोध्या के एक राजा का नाम, इनका दूसरा नाम सुहोत्र था, ये राम के पौत्र और कुश के पुत्र थे। वह जो यज्ञ में सोम लता लाता है।

अतिपन्थ (सं० पु०) राज मार्ग, बड़ा रास्ता, सड़क।

अतिपर (सं० पु०) प्रतिद्वन्दी, भारी शत्रु।

अति पराक्रम (सं० पु०) बड़ा तेज, महान् प्रताप।

अतिपात (सं०पु०) बाधा, विघ्न,उपद्रव, उत्पात, अन्याय।

अतिपातक (सं० पु०) भारी पाप, शास्त्रोक्त नौ पापों में से सब से बड़ा पाप, माता, पुत्री, और पुत्रवधू के साथ गमन करना पुरुषों के लिए महा पाप है, और पुत्र, पिता और श्वसुर के साथ गमन करना स्त्रियों के लिए। [त्तता।

अतिपान (सं० पु०) अधिक पीना, पीने की लत, उन्म-

अतिपार्श्व (सं० पु०) निकट, पास, समीप, नज़दीक।

अतिप्रसंग (सं० पु०) पुनरुक्ति, अधिक मेल, बहुत विस्तार, व्यभिचार।

अतिवरवै (सं० पु०) छन्द विशेष, इसके प्रथम और तृतीय चरणों में बारह और द्वितीय और चतुर्थ चरणों में नौ मात्राएँ होती हैं, इसके विषम पदों के आदि में जगण नहीं आता और अन्त का वर्ण लघु होता है।

अतिबल (वि०) बली, प्रचण्ड, प्रबल।

अतिबला (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष, बरियार का पेड़, युद्ध विद्या विशेष, यह विद्या सीखने से थकावट, ज्वर आदि का डर नहीं रहता था, और बल की वृद्धि होती थी, विश्वामित्र ने राम को यह विद्या सिखाई थी।

अतिमात्र (वि०) बहुत, अधिक, अतिशय।

अतियोग (सं० पु०) अधिक मिलाव, किसी वस्तु में किसी वस्तु का नियत मात्रा से अधिक मिलाव।

अतिरथी (सं० पु०) रथ पर चढ़ कर युद्ध करने वाला, वह योद्धा जो अकेले बहुतों के साथ लड़ता है।

अतिरिक्त (क्रि० वि०) भिन्न, न्यारा, अधिक, अतिशय, अनेक।

अतिरेक (वि०) अतिशय, आधिक्य।

अतिरोग (सं० पु०) राजयक्ष्मा, क्षयी।

अतिवाहिक (सं० पु०) लिङ्ग शरीर, पाताल निवासी।

अतिविषा (सं० स्त्री०) औषधि विशेष, अतीस।

अतिवेल (वि०) असीम, अत्यन्त, बेहद।

अतिव्याप्ति (सं० स्त्री०) न्याय में एक लक्षण दोष, जहाँ लक्षण लक्ष्य के अतिरिक्त, दूसरे वस्तु पर भी घट सके।

अतिशय (वि०) अत्यन्त, अधिक, बहुत।

अतिशयोक्ति (सं० स्त्री०) असम्भव प्रशंसा, काव्यालङ्कार विशेष, जिसमें लोक सीमा का उल्लंघन कर प्रधान रूप से दर्शाया जाय। [क्रमश।

अतिसंधान (सं० पु०) धोखा, विश्वासघात, अति-

अतिसार (सं० पु०) रोग विशेष, संग्रहणी, जठर व्याधि।

अतिहसित (सं० पु०) हास्य का एक भेद, इसमें हँसने वाला ताली बजाता है, बीच बीच में अस्पष्ट वाक्य बोलता है, उसका शरीर कांपता है, और आंख से आंसू निकल पड़ते हैं।

अतीन्द्रिय (वि०) इन्द्रियों द्वारा अनुभव न होने योग्य, इन्द्रिय-ज्ञान के परे, अगोचर, अप्रत्यक्ष।

अतीत-(वि०) व्यतीत, गत, भूत, बीता हुआ, पृथक्, अलग, निर्लेप, मृत, मरा हुआ, (सं० पु०) वैरागी, विरक्त, साधु, यति, संन्यासी ।
अतीतकाल (सं० पु०) बीता हुआ समय ।
अतीथ (सं० पु०) संन्यासी विशेष ।
अतीव (वि०) अधिक, अतिशय, बहुत, अत्यन्त, ज्यादा ।
अतीस (सं० पु०) औषध विशेष ।
अतीसार (सं० पु०) देखो अतिसार ।
अतुराना (क्रि० अ०) घबड़ाना, अकुलाना, हड़बड़ाना ।
अतुल (वि०) अपार, अमित, असीम, तिल का वृक्ष ।
अतुलनीय (वि०) अद्वितीय, अपार, अपरिमित ।
अतुलित (वि०) अद्वितीय, असंख्य, अपार, अपरिमित ।
अतूथ (वि०) अपूर्व, विचित्र । [हो, भूखा ।
अतृप्त (वि०) असन्तुष्ट, असन्तोषी, जो सन्तुष्ट न
अतृष्ण (वि०) कांक्षाहीन, निर्लोभ, तृष्णाहीन, निस्पृह ।
अतेज (वि०) हतश्री,प्रतापशून्य,क्षीण, तेजविहीन,धुँधला ।
अतोल (वि०) जो तौला न जा सके, जिसका तौल न हो सके, अपरिमाण, अकूता हुआ, अतुल्य, अनुपम ।
अत्ता (सं० स्त्री०) मा, बड़ी बहिन, सास, मौसी, (सं० पु०) ईश्वर । [और बनाने वाला ।
अत्तार (सं० पु०) गंधी, इत्र फ़रोश, यूनानी दवा बेचने
अत्तिका (सं० स्त्री०) देखो अत्ता ।
अत्यन्त (वि०) अतिशय, अत्यधिक, बेहद, अतीव ।
अत्यन्त कोपन (वि०) बहुत क्रोधी, चण्ड ।
अत्यन्तगामी (वि०) वेगवान्, शीघ्र चलने वाला ।
अत्यन्तवासी (वि०) एकान्तवासी, नैष्ठिक ब्रह्मचारी ।
अत्यन्ताभाव (सं० पु०) नितान्त अभाव, जिसकी सत्ता बिलकुल न हो, जिसका भाव त्रिकाल में भी न हो ।
अत्यय (सं० पु०) मृत्यु, नाश, विनाश, दोष, कष्ट, दण्ड, अति क्रम, राजाज्ञा का उल्लंघन ।
अत्यर्थ (सं०पु०) विस्तार, अधिक ।
अत्यष्टि (सं० स्त्री०) छन्द विशेष, वह छन्द जिसमें अठारह वर्ण और चार पाद होते हैं ।
अत्याचार (सं० पु०) अन्याय, विरुद्धाचरण, जुल्म, निठुराई, दुराचार, पाप, पाखंड, आडम्बर ।
अत्याचारी (वि०) अन्यायी, दुराचारी, अत्याचार करने वाला, निठुर, कुकर्मी, पापी ।

अत्याज्य (वि०) न त्यागने योग्य, जो कभी त्यागा न जा सके । [जिसकी आवश्यकता अधिक हो ।
अत्यावश्यक (सं० पु०) बहुत जरूरत, अति प्रयोजनीय,
अत्युक्ति (सं० स्त्री०) बढ़ा चढ़ा कर वर्णन करना, असम्भव वर्णन, काव्यालङ्कार विशेष ।
अत्युक्था (सं० स्त्री०) छन्द विशेष, यह छन्द चार पद और बारह अक्षर वाला होता है ।
अत्युत्कट (वि०) अत्यन्त कठिन ।
अत्युत्कण्ठा (सं० स्त्री०) प्रबल आकाङ्क्षा, मनस्ताप, अधिक चिन्ता ।
अत्युत्कृष्ट (वि०) बहुत अच्छा ।
अत्युत्तम (सं० पु०) अति रमणीय, अति शोभनीय, उत्कृष्ट । [पाश्चात्य ।
अत्युत्तर (सं० पु०) सिद्धान्त, मीमांसा निश्चित करना,
अत्र (क्रि० वि०) इस स्थान पर, यहाँ, इस ठौर ।
अत्रत्य (वि०) यहाँ का, इसी ठौर का ।
अत्रप (सं० पु०) बेशर्म, लज्जाहीन, निर्लज्ज ।
अत्रभवान (सं० पु०) पूज्य, श्रेष्ठ, माननीय ।
अत्रस्थ (वि०) इस ठौर का रहने वाला, यहीं का ।
अत्रि (सं० पु०) एक ऋषि का नाम, इनकी गणना सप्त ऋषियों में है, ये ब्रह्मा के मानस-पुत्र कहे जाते हैं, इनकी स्त्री का नाम अनुसूया है, इनके पुत्र दत्तात्रेय, दुर्वासा और चन्द्र हैं, मनु के दस प्रजापतियों में भी इनका नाम है ।
अत्रिजात (सं० पु०) अत्रि के पुत्र, चन्द्र, दिग्गज, नेत्रप्रसूत, निशाकर, सुधांशु ।
अथ (अव्य०) मंगल सूचक शब्द, अब,अनन्तर, तदनन्तर, पश्चात्, विकल्प, प्रश्न, अधिकार, संशय ।
अथऊ (सं० पु०) जैनियों का भोजन जो सूर्यास्त के पहिले करते हैं ।
अथक (वि०) अश्रान्त, जो न थके, अक्लान्त ।
अथच (अव्य०) और,और भी ।
अथयउ (वि०) अस्त हो गया, डूब गया, अस्तमित ।
अथरा (सं० पु०) एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन, इसमें रंगरेज़ कपड़ा रंगते हैं, जुलाहे सूत भिगोते हैं
अथरी (सं० स्त्री०) छोटा अथरा, मिट्टी का बर्तन जिसमें दही जमाया जाता है ।
अथर्व (सं० पु०) चौथा वेद, इसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के उत्तर

वाले मुख से मानी जाती है। इसकी नौ शाखायें और पाँच कल्प हैं। यह बीस काण्डों में समाप्त हुआ है। इसका प्रधान ब्राह्मण गोपथ है, इसमें शान्ति, अभिचार,पौष्टिक आदि का प्रयोग अधिकता से पाया जाता है। इसमें यज्ञ कर्मों का विधान बहुत कम है।
अथर्वण (सं० पु०) शिव, महादेव। [का ज्ञाता।
अथर्वणी (सं० पु०) कर्मकाण्डी, पुरोहित, अथर्ववेद
अथर्व शिखामणि (सं० पु०) उपनिषद-भेद।
अथल (सं० पु०) भूमि विशेष, जो भूमि लगान पर जोतने बोने को दी जाती है।
अथवना (क्रि० अ०) डूबना, अस्त होना, चला जाना, लुप्त होना, नष्ट होना, गुप्त होना। [अव्यय।
अथवा (अव्य०) या, वा, किम्बा, पक्षान्तर, वियोजक
अथाई (सं० स्त्री०) इष्ट मित्रों के एकत्रित होने का स्थान, चौपाल, बैठक, सभा, मण्डली, गोष्ठी।
अथान (सं० पु०) अचार, खटाई।
अथाना (क्रि० अ०) देखो अथवना। [जलाशय,समुद्र।
अथाह (वि०) अगाध, गहिरा, गम्भीर, गूढ़, (सं० पु०)
अथोर (वि०) अधिक, बहुत, पूरा।
अदकचा (सं० पु०) बेठन।
अदग्ध (वि०) बिना जला हुआ,अपक्क,कच्चा, अप्रज्वलित।
अदण्डनीय (वि०) जो दण्ड के योग्य न हो, जिसको दण्ड न दिया जाय, दण्डमुक्त, सदाचारी, महात्मा, अदंड्य।
अदण्ड्य (वि०) दण्डमुक्त, दण्ड न पाने योग्य।
अदत्त (वि०) बिना दिया हुआ,असमर्पित, अदान।
अदत्ता (वि०) न दी हुई (सं० स्त्री०) कुंआरी, अविवाहिता, अनूढ़ा।
अदद (अ० सं० पु०) गिनती, संख्या, संख्या का चिह्न।
अदन (सं० पु०) भक्षण, भोजन,खाना, अहार।
अदना (अ० वि०) तुच्छ, सामान्य, छोटा, नीच।
अदनीय (वि०) भक्षणीय, भोज्य, खाने योग्य।
अदब (अ०सं० पु०) क़ायदा, शिष्टाचार,बड़ों का सम्मान।
अदबदाकर (क्रि० वि०) अवश्य, टेक बाँध कर, हठ करके।
अदभ्र (वि०) पूरा, प्रचुर, अधिक, यथेष्ट।
अद्भुत (वि०) विचित्र, विलक्षण, अनोखा।
अदमपैरवी (फा० सं० स्त्री०) अभियोग में पक्ष का प्रतिपादन न करना,मुक़द्दमें में ज़रूरी कार्रवाई न करना।
अदमसबूत (अ० सं० पु०) प्रमाणाभाव अभियोग में प्रमाण का न होना, मुक़द्दमें में सबूत का न होना।
अदमहाज़िरी (अ०सं०स्त्री०) अनुपस्थिति, ग़ैरहाज़िरी।
अदम्य (वि०) प्रचण्ड, अजेय,प्रबल,जो न दबे।
अदरक (सं० पु०) आदी, हरी सोंठ, आर्द्रक।
अदरसा (सं० पु०) मिठाई विशेष।
अदरा (सं० पु०) देखो आर्द्रा।
अदराना (क्रि० अ०) इतराना, फूलना।
अदर्शन (सं० पु०) लोप, विनाश, असाक्षात्।
अदर्शनीय (वि०) न देखने योग्य, भद्दा, कुरूप।
अदल (अ० सं० पु०) न्याय, (वि०) बिना पत्ते का, पत्रहीन, सेनाहीन, बिना फौज का।
अदलबदल (सं० पु०) परिवर्तन, हेर फेर।
अदवायन (सं० स्त्री०) खाट की रस्सी, ओरचन।
अदहन (सं० पु०) खौला हुआ पानी, भात, दाल या खिचड़ी बनाने के लिए खौला हुआ पानी।
अदा (अ० वि०) चुकता, सफाई, बेबाक, (सं० स्त्री०) हाव भाव, कटाक्ष, ढंग, नख़रा।
अदाता (सं० पु०) कृपण, सूम, कंजूस।
अदाया (सं० स्त्री०) कठोरता, निष्ठुरता, निर्दयता।
अदालत (अ० सं० स्त्री०) न्यायालय, वह स्थान जहाँ अधिकार संबन्धी झगड़ों और अपराधों का विचार हो।
अदालती (वि०) न्यायालय से संबन्ध रखने वाला, मुक़द्दमाबाज़।
अदावत (अ० सं० स्त्री०) विरोध, शत्रुता, वैर, लाग।
अदिति (सं० स्त्री०) देवताओं की माता, दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप ऋषि की पत्नी थी। इनसे सूर्य आदि तैंतीस देवता उत्पन्न हुए थे, प्रकृति, पृथ्वी, माता, पिता, पुत्र, अन्तरिक्ष, द्युलोक, विश्वेदेवा, पञ्चजन, प्रजापति, वाणी उत्पन्न करने की शक्ति।
अदितिनन्दन (सं० पु०) देवता, सूर्य। [दिन।
अदिन (सं० पु०) बुरा दिन, कुसमय, अभाग्य, खोटे
अदिष्ट (सं० पु०) विपत्ति, भाग्य, प्रारब्ध।
अदीठ (वि०) अनदेखा, अप्रत्यक्ष, गुप्त।
अदीह (वि०) सूक्ष्म, छोटा।
अदूर (क्रि० वि०) समीप, पास, सन्निकट, नज़दीक।
अदूरदर्शी (वि०) जो दूर तक न विचारे, अग्रसोची नहीं, अविचारी, मोटी समझ वाला, नासमझ

अदृश्य (वि०) अलख, अगोचर, परोक्ष, लुप्त, अंतर्द्धान।
अदृष्ट (वि०) अनदेखा, अगोचर, (सं० पु०) दुर्भाग्य, भाग्य, प्रारब्ध, प्राकृतिक। [वाला।
अदृष्ट पुरुष (सं० पु०) किसी कार्य में स्वयं कूद पड़ने
अदृष्टपूर्व (वि०) अद्भुत, विलक्षण, पहले न देखा हुआ।
अदृष्टफल (सं० पु०) सुख दुःख, पूर्व कर्मों का फल।
अदृष्टवाद (सं० पु०) सिद्धान्त विशेष, जिसमें परलोक आदि परोक्ष बातों पर बिना तर्क वितर्क के ही शास्त्र के आधार पर विश्वास किया जाय।
अदेय (वि०) न देने योग्य, जो न दिया जाय।
अदेस (सं० पु०) आज्ञा, शिक्षा, प्रणाम, दण्डवत।
अदोख (वि०) देखो अदोष।
अदोखिल (वि०) निर्दोष, निष्कलंक।
अदोष (वि०) निरपराध, निष्कलंक, निर्दोष।
अदौरी (सं० स्त्री०) उर्द की सुखाई हुई बरी, बड़ी मथौड़ी। [एक छोटी नाव।
अद्धा (सं० पु०) अर्द्ध, आधा, किसी वस्तु का आधा,
अद्धी (सं० स्त्री०) बराबर भाग, दमड़ी, आधी, महीन, सूती वस्त्र, तनज़ेब।
अद्भुत (वि०) विचित्र, विलक्षण, आश्चर्यजनक, अनोखा, अलौकिक, अनूठा, (सं० पु०) काव्य का एक रस विशेष।
अद्भुतोपमा (सं० स्त्री०) उपमालङ्कार विशेष, जिसमें उपमान के ऐसे गुणों का वर्णन किया जाय जिनका उपमेय में होना असम्भव हो।
अद्य (क्रि० वि०) आज, अब, अभी।
अद्यतन (वि०) वर्तमान, आज का, (सं० पु०) गत अर्द्ध रात्रि से लेकर आगामी अर्द्धरात्रि तक का समय।
अद्यापि (क्रि० वि०) अब तक, अब भी, आजतक।
अद्यावधि (क्रि० वि०) आज तक, इस समय तक।
अद्रक (सं० स्त्री०) आदी, अदरक।
अद्रि (सं० पु०) पर्वत, शैल, पहाड़।
अद्रिकीला (सं० स्त्री०) पृथ्वी, ज़मीन।
अद्रिज (सं० पु०) शिलाजीत, गेरू।
अद्रिजा (सं० स्त्री०) गंगा, पार्वती।
अद्रितनया (सं० स्त्री०) पार्वती।
अद्रिपति (सं० पु०) हिमालय।
अद्रिभिद (सं० पु०) वज्र, इन्द्र।
अद्रिवह्नि (सं० स्त्री०) पर्वत से उत्पन्न अग्नि।
अद्वितीय (वि०) विचित्र, अनुपम, अकेला, एक।
अद्वैत (सं० पु०) ब्रह्म, ईश्वर, शङ्करमत, (वि०) निराला, अकेला।
अद्वैतवाद (सं० पु०) सिद्धान्त विशेष, ब्रह्ममय जगत।
अद्वैतवादी (सं० पु०) एक ब्रह्मवादी, अद्वैत मतानुयायी।
अधः (अव्य०) तले, नीचे। [क्षय, नाश।
अधःपतन (सं० पु०) अवनति, अधःपात, पतन, दुर्दशा,
अधःपात (सं० पु०) देखो अधःपतन।
अधकछार (सं० पु०) पहाड़ी भूमि जो हरी भरी और उपजाऊ होती है। [का दर्द, आधा सीसी।
अधकपारी (सं० स्त्री०) रोग विशेष, सूर्यावर्त्त, आधे सिर
अधखिला (वि०) अर्द्ध विकसित, आधा खिला हुआ।
अधगो (सं० पु०) गुदा आदि नीचे की इन्द्रियां।
अधन (वि०) ग़रीब, कंगाल, दीन, धनहीन, भिक्षुक।
अधपई (सं० स्त्री०) आधपाव, दो छटांक, एक सेर का आठवां भाग, दस तोला। [दो पैसे का सिक्का।
अधन्ना (सं० पु०) सिक्का विशेष, एक आने का आधा,
अधबर (सं० पु०) अर्द्ध मार्ग, आधा रास्ता, अधड़, मध्य।
अधबुध (वि०) अर्द्ध शिक्षित, जिसकी शिक्षा पूर्ण न हुई हो।
अधम (वि०) दुष्ट, नीच, पापी, बुरा, निकृष्ट, (सं० पु०) उपपति, दूसरों की निंदा करनेवाला कवि।
अधमता (सं० स्त्री०) नीचता, दुष्टता, अधमपना।
अधमरा (वि०) आधा मरा हुआ, अर्द्धमृत, मृतप्राय।
अधमा (सं० स्त्री०) नायिका विशेष।
अधमाई (सं० स्त्री०) नीचता, दुष्टता, अधमता।
अधमाधम (वि०) नीचातिनीच, महानीच।
अधमुआ (वि०) देखो अधमरा। [शून्य।
अधर (सं० पु०) तले का ओठ, नीचेवाला ओठ, पाताल,
अधर बुद्धि (वि०) नादान, नासमझ। [वदनामृत।
अधरामृत (सं० पु०) अधर-रस, होठों का मीठापन,
अधर्म (सं० पु०) पातक, पाप, वेद-विरुद्ध काम, अन्याय, धर्म-द्वेषी, दुराचार, अंधेर। [पातकी।
अधर्मात्मा (वि०) अन्यायी, दुराचारी, पापी,

अधर्मिष्ठ (वि०) पापिष्ठ, दुराचारी।
अधर्मी (सं०पु०) अधर्म करनेवाला, पापी, दुराचारी, दुष्ट।
अधवन (वि०) आधा, बराबर का हिस्सा।
अधवाड़ (सं० स्त्री०) आधा थान, अधाई, आधा परिवार।
अधसेरा (सं० पु०) बांट विशेष, एक सेर का आधा, ४० तोला।
अधाधुन्ध (क्रि० वि०) अन्धाधुन्ध।
अधान (सं० पु०) तेल आदि।
अधार (सं० पु०) आश्रय, सहारा, कलेवा।
अधार्मिक (सं० पु०) नास्तिक।
अधि (अव्य०) उपसर्ग, यह जिन शब्दों के पहले जोड़ा जाता है उनका अर्थ यह होता है—ऊंचा, ऊपर, प्रधान, स्वामी, अधिक, सम्बन्धद्योतक।
अधिक (वि०) विशेष, बहुत, अतिरिक्त।
अधिकता (सं० स्त्री०) बहुतायत, बढ़ती, वृद्धि, विशेषता।
अधिकमास (सं० पु०) मलमास, अधिक महीना।
अधिकरण (सं० पु०) सहारा, अधार, सप्तमी कारक, सातवां कारक। [विपुलता।
अधिकाई (सं० स्त्री०) अधिकता, बहुतायत, वृद्धि,
अधिकाधिक (वि०) अधिक से अधिक।
अधिकाना (क्रि० अ०) बढ़ना, बढ़ती होना, वृद्धि होना। [बपौती, आधिपत्य।
अधिकार (सं० पु०) प्रभुता, कार्य का भार, प्रधानता,
अधिकारी (सं० पु०) स्वामी, अधिपति, प्रभु, पुजारी।
अधिकृत (वि०) हस्तगत, प्राप्त, (सं० पु०) अध्यक्ष, प्रभु, निरीक्षक, जांचने वाला।
अधिक्रम (सं० पु०) चढ़ाई, आरोहण, चढ़ाव।
अधिगत (वि०) प्राप्त, अवगत, जाना बूझा, पठित।
अधिज्य (वि०) धनुष पर रोदा चढ़ाये हुए।
अधित्यका (सं० स्त्री०) पहाड़ी समतल भूमि, पर्वत के ऊपर की भूमि, कोह, टीला, तराई।
अधिदेव (सं० पु०) कुलदेव, इष्टदेव। [पुरुष।
अधिदैवत (सं० पु०) ब्रह्मदेवता, मुख्यदेवता, चिन्तनीय
अधिप (सं० पु०) राजा, मालिक, स्वामी, प्रधान, मुखिया। [अधिकारी, अधीश।
अधिपति (सं० पु०) स्वामी, राजा, सरदार, मालिक,
अधिमास (सं० पु०) अधिक मास, मलमास।
अधिमांस (सं० पु०) आंख का फोड़ा।
अधियाना (क्रि० स०) बराबर भाग करना, आधा करना। [स्वामी।
अधियारी (सं० पु०) आधे का अधिकारी, आधे का
अधिरथ (सं० पु०) रथ पर बैठा हुआ सारथी, रथ हाँकने वाला, रथवान्, एक सारथी का नाम जिसने कर्ण को पाला था।
अधिराज (सं० पु०) चक्रवर्ती राजा, महाराजा, सम्राट्, बादशाह। [स्थल।
अधिवास (सं० पु०) रहने का स्थान, वासस्थान, निवास-
अधिवेदन (सं० पु०) संस्कार विशेष।
अधिवेशन (सं० पु०) बैठक, जमाव।
अधिष्ठाता (सं० पु०) संस्थापक, प्रधान, अध्यक्ष।
अधिष्ठात्री (सं० स्त्री०) अधिदेवता, पालनेवाली।
अधिष्ठान (सं० पु०) प्रभाव चक्र, अवस्थान।
अधिष्ठित (वि०) स्थापित, नियुक्त।
अधीत (वि०) पठित, पढ़ा हुआ।
अधीन (वि०) आश्रित, आज्ञाकारी, दास, सेवक, वशीभूत।
अधीनता (सं० स्त्री०) दीनता, अविवशता, दासत्व, परतन्त्रता। [आतुर, हड़बड़िया, सन्तोषरहित।
अधीर (वि०) धैर्यच्युत, व्यग्र, विह्वल, चपल, कातर,
अधीरज (सं० पु०) व्याकुल, धैर्यरहित, अधैर्य, चपल।
अधीरा (सं० स्त्री०) न धीर धरनेवाली, चञ्चला, विद्युत, मध्यनायिका-भेद-विशेष।
अधीरता (सं० स्त्री०) व्याकुलता, घबड़ाहट, चञ्चलता।
अधीश (सं० पु०) प्रभु, मालिक, राजा। [पति।
अधीश्वर (सं० पु०) स्वामी, राजा, अधिपति, अध्यक्ष,
अधुना (क्रि० वि०) अभी, अब, इस समय, सम्प्रति, आजकल।
अधुनातन (वि०) साम्प्रतिक, इस समय का, अभी का।
अधूरा (वि०) अपूर्ण, असमाप्त, अधबना, अनबना, खंडित। [अवस्था का, ढलती अवस्थावाली।
अधेड़ (वि०) उतरती जवानी का, अधवैसा, आधी
अधेन (सं० पु०) अध्ययन।
अधेला (सं० पु०) एक पैसे का आधा, आधा पैसा।
अधेली (सं० स्त्री०) अठन्नी, रुपये का आधा।
अधैर्य (वि०) धैर्य रहित, चंचल, व्याकुल, (सं० पु०) व्याकुलता, चंचलता, उद्विग्नता, घबड़ाहट।

अधैर्यवान् (वि०) धैर्यहीन, आतुर, व्यग्र, उतावला।
अधो (सं० पु०) नरक, नीचे, तले। [नति, दुर्दशा।
अधोगति (सं० स्त्री०) गिराव, अधःपतन, पतन, अव-
अधोगामी (वि०) बुरी दशा को प्राप्त होनेवाला, अधः पतन की ओर जानेवाला, अवनति की ओर लुढ़कनेवाला। [मोटा कपड़ा।
अधोतर (सं० पु०) एक प्रकार का देशी मोटा वस्त्र,
अधोदेश (सं० पु०) नीचे का स्थान।
अधोधम (सं० पु०) अति नीच।
अधोमुख (वि०) नीचे मुख वाला, मुंह नीचा किये हुए, मुंह लटकाये हुये, उलटा, औंधा, मुँह के बल।
अधोलोक (सं० पु०) पाताल।
अधोवायु (सं० पु०) पाद, अपानवायु।
अध्यक्ष (सं० पु०) प्रभु, स्वामी, प्रधान, अधिकारी।
अध्ययन (सं० पु०) पठन-पाठन, पाठ, पढ़ाई।
अध्यवसाय (सं० पु०) निरन्तर उद्योग, अथक परिश्रम, उत्साह, उद्योग, उपाय, उद्यम।
अध्यवसायी (वि०) उद्यमी, उत्साही, परिश्रमी।
अध्यशन (सं० पु०) अपच, अजीर्ण, अधिक भोजन करना। [विचार।
अध्यात्म (सं० पु०) आत्मा विषयक, आत्मज्ञान, ब्रह्म-
अध्यात्मद्रष्टा (सं० पु०) ऋषि मुनि। [ब्रह्मविद्या।
अध्यात्मविद्या (सं० स्त्री०) आत्मज्ञान संबन्धी शास्त्र,
अध्यापक (सं० पु०) गुरु, शिक्षक, उपाध्याय, मुदर्रिस।
अध्यापकी (सं० स्त्री०) पढ़ाई, मुदर्रिसी। [सिखाना।
अध्यापन (सं० पु०) विद्यादान, शिक्षण, शिक्षा देना,
अध्यापिका (सं० स्त्री०) गुरुआनी, पढ़ानेवाली स्त्री।
अध्याय (सं० पु०) काण्ड, परिच्छेद, सर्ग, पर्व्व, प्रकरण, सर्ग, पाठ।
अध्यारोप (सं० पु०) दुराग्रह, झूठ कलंक, आक्षेप।
अध्यारोहण (सं० पु०) चढ़ना।
अध्यारोही (सं० पु०) चढ़ने वाला।
अध्यास (सं० पु०) आरोप।
अध्याहरण (सं० पु०) कल्पना करना, तर्क करना।
अध्याहार (सं० पु०) वाद विवाद, तर्क वितर्क, वाक्य पूर्ति करना, अस्पष्ट वाक्य को स्पष्ट करने के लिए वाक्य योजना करना।
अध्यूषित (वि०) बसा हुआ।
अध्यूढा (सं० स्त्री०) विवाहिता स्त्री, परिणीता।
अध्येता (सं० पु०) विद्यार्थी, छात्र, पढ़ने वाला।
अध्येषण (सं० स्त्री०) मांगना, याचना।
अध्रुव (वि०) अनिश्चल, क्षणभंगुर, चलायमान, चल।
अध्व (सं० पु०) राह, मार्ग, रास्ता, पथ।
अध्वग (सं० पु०) यात्री, बटोही, पथिक, ऊँट, सूर्य, खेचर।
अध्वगा (सं० स्त्री०) गङ्गा, भागीरथी।
अध्वनीन
अध्वन्य } (सं० पु०) पथिक।
अध्वर (सं० पु०) याग, यज्ञ, सावधान।
अध्वर्यु (सं० पु०) होमकर्त्ता, यजुर्वेदज्ञ।
अध्वान्तर (सं० पु०) सन्ध्या काल। [बिना।
अन् (अव्य०) निषेधवाचक अव्यय, नहीं, न, ना, रहित,
अनंश (वि०) पैतृक सम्पत्ति का अनधिकारी, पैतृक सम्पति पाने के अयोग्य। [विधवापन।
अनअहिवात (सं० पु०) रण्डापा, वैधव्य, असौभाग्य,
अनऋतु (सं० पु०) असमय, कुसमय, अनुपयुक्त ऋतु।
अनइस (सं० पु०) व्यर्थ, बुराई।
अनक (सं० पु०) मृदङ्ग, नगारा, भेरी, बड़ा ढोल।
अनक़रीब (अ० क्रि० वि०) प्रायः, लगभग।
अनकहा (वि०) अनुक्त, अकथित। [वैर, झुंझलाहट।
अनख (सं० पु०) कोप, क्रोध, रिस, कुढ़न, ईर्षा, द्वेष,
अनखगार (सं० पु०) क्रोध युक्त, गाली।
अनखाना (क्रि० अ०) क्रोधित होना, क्रोध करना, कुपित होना, चिढ़ना।
अनगढ़ (वि०) बेढंगा, अनाड़ी, अस्वाभाविक, अंडबंड, बेतुका, अनबना, अशिक्षित, बिना गढ़ा हुआ।
अनगिनत (वि०) असंख्य, अपार, अगणित।
अनगिना (वि०) न गिना हुआ, जो न गिना हो, असंख्य, अगणित। [शुद्ध।
अनघ (वि०) पाप रहित, निष्पाप, निर्दोष, पवित्र,
अनङ्ग (सं० पु०) कामदेव, मन्मथ, मदन, आकाश, मन, (वि०) अङ्ग रहित, अङ्गहीन।
अनङ्गभीम (सं० पु०) उड़ीसा का एक राजा, इसने जगन्नाथ जी के मन्दिर का निर्माण कराया था, यह बड़ा यशस्वी और पुण्यात्मा था।
अनचाहत (वि०) इच्छाहीन, अप्रेमी, न चाहनेवाला।
अनचीन्हा (वि०) अज्ञात, अपरिचित, अनजान।

अनजान (वि०) अपरिचित, अज्ञात, नादान, अज्ञानी, बेजाना पहिचाना, अनचीन्हा।
अनजामा (वि०) उत्पादक शक्ति शून्य, बांझ, मरु।
अनजीवत (वि०) मुर्दा, शव।
अनट (सं० स्त्री०) गिरह, गांठ, विरुद्ध, विपरीत।
अनड्वान (सं० पु०) सांड, वृषभ, बैल।
अनत (क्रि० वि०) अन्य स्थान में, और कहीं, अन्यत्र।
अनदेखा (वि०) न देखा हुआ, अदृश्य, गुप्त।
अनधन (सं० पु०) सम्पत्ति, धनधान्य, ऐश्वर्य।
अनधिकार (सं० पु०) अधिकार का अभाव, प्रभुत्व का न होना, सत्वाभाव।
अनधिकारी (वि०) अयोग्य, अधिकारहीन।
अनध्याय (सं० पु०) शास्त्रानुसार पठन-पाठन कार्य न करने का दिन, वह दिन जिस दिन पठन-पाठन का निषेध हो।
अनन्त (वि०) अन्तरहित, जिसका अन्त न हो, असीम, अपार, (सं० पु०) अविनाशी, नित्य, जिसका नाश न हो, व्रत विशेष, यह व्रत भादों शुक्ल चौदश को किया जाता है, बांह में पहनने का गहना, सूत का एक गंडा जो अनन्त के दिन पहना जाता है, विष्णु, बलराम, लक्ष्मण, शेषनाग, एक राजा का नाम, यह काश्मीर का राजा था, इसके पिता का नाम संग्रामराज था, बचपन ही से इसकी वीरता झलकती थी, कई एक युद्धों में यह विजयी हुआ था, अन्तिम अवस्था में यह स्त्री के प्रेम में फँस गया, राज-काज पुत्र को सौंप दिया, राज्य पाकर इसका पुत्र दुराचारी हो गया, वह पिता के विरुद्ध जालसाज़ी करने लगा, यह देख मन्त्रियों के कहने से इस राजा ने पुनः राज्य अपने अधिकार में ले लिया।
अनन्त चतुर्दशी (सं० स्त्री०) भादों सुदी चौदश, इस दिन हिन्दू अनन्त भगवान का व्रत करते हैं।
अनन्तर (क्रि० वि०) बाद, उपरान्त, पीछे, लगातार, (वि०) अव्यवहित, समीप, पास, नज़दीक।
अनन्तरज (सं० पु०) जिस व्यक्ति के पिता का वर्ण माता के वर्ण से एक वर्ण ऊंचा हो, ब्राह्मण से क्षत्रिया में उत्पन्न, क्षत्रिय से वैश्या में उत्पन्न व्यक्ति।
अनन्त विजय (सं०पु०) युधिष्ठिर का शंख। [पार न हो।
अनन्तवीर्य (वि०) अपार शक्ति वाला, जिसके पौरुष का
अनन्तव्रत (सं० पु०) अनन्त भगवान का व्रत, यह भादों सुदी चौदस को किया जाता है। [जवासा।
अनन्ता (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती, पार्वती, पीपर, दूब,
अनन्नास (सं० पु०) फल विशेष। [अभिन्न।
अनन्य (वि०) एक ही में मग्न, एकनिष्ठ, एक भाव,
अनन्यगति (वि०) जिसकी दूसरी गति न हो, जिसको और कुछ सहारा न हो।
अनन्यचित्त (वि०) एक चित, एकाग्रचित।
अनन्यता (सं० स्त्री०) एकनिष्ठा, एकही में लीन।
अनपच (सं० पु०) अजीर्ण, अपच।
अनपढ़ (वि०) अपठित, अशिक्षित, मूर्ख।
अनपत्य (वि०) सन्तानहीन, निस्सन्तान।
अनपराध (वि०) निर्दोष, अपराधहीन।
अनपराधी (वि०) निर्दोष, निरपराधी।
अनपाय (वि०) अनश्वर, चिरस्थाई (सं० पु०) अलंकृत।
अनपायिनी
अनपायी } (वि०) नित्य, नाशरहित।
अनपेक्ष (वि०) स्वतन्त्र, निरपेक्ष, स्वाधीन।
अनपेक्षित (वि०) अनिच्छित, अनचाहित।
अनबन (सं० पु०) फूट, विरोध, बिगाड़, टंटा, खटपट।
अनबनाव (सं० पु०) बिगाड़।
अनबिधा (वि०) बिना छेद किया हुआ, अछेदित।
अनबूझ (वि०) असमझ, निर्बोध, अज्ञानी, नादान।
अनबोल (वि०) जो न बोले, न बोलनेवाला, गूँगा, पशु।
अनबोलता (वि०) अबोला, गूंगा, पशु।
अनब्याहा (वि०) जिसका ब्याह न हुआ हो, अविवाहित, क्वांरा, बिनब्याहा।
अनभल (सं० पु०) अहित, बुराई, खोटा। [अपरिचित।
अनभिज्ञ (वि०) अज्ञान, निर्बोध, गँवार, अनाड़ी,
अनभिज्ञता (सं० स्त्री०) अज्ञानता, मूर्खता, अपरिचिता।
अनभिप्रेत (वि०) अनभिमत, अभिप्रायविरुद्ध, अनिष्ट।
अनभिमत (वि०) मत-विरुद्ध, अनभीष्ट।
अनभिव्यक्त (वि०) अव्यक्त, अप्रकाश, अस्पष्ट।
अनभ्यस्त (वि०) अपठित, अनभ्यास्त, जिसका अभ्यास न किया गया हो। [अनभ्ययन।
अनभ्यास (वि०) अभ्यास न करनेवाला, साधनाहीन,
अनमना (वि०) खिन्न, उदास, सुस्त।
अनमिल (वि०) असंबद्ध, बेजोड़, बेमेल।

अनमोल (वि०) अमूल्य, मूल्यवान, उत्तम, सुन्दर।
अनम्र (वि०) उद्दण्ड, अविनयी, उद्धत।
अनय (सं० पु०) अनीति, अन्याय।
अनरस (सं० पु०) रस शून्यता, शुष्कता, मान, कोप, मनमोटाव, विरोध, बिगाड़, मनोमालिन्य।
अनरसा (वि०) रोगी, बीमार, अनमना, (सं० पु०) मिठाई विशेष।
अनरीति (सं० स्त्री०) कुचाल, कुप्रथा, कुरीति, कुढंग।
अनर्गल (वि०) बेरोक, बेटोक, अबाध, व्यर्थ, अंडबंड।
अनर्घ्य (वि०) अपूज्य, अमूल्य, अमोल।
अनर्जित (वि०) बिना कमाया हुआ, अनुपार्जित।
अनर्थ (वि०) व्यर्थ, अनुचित, निष्फल। [योजन।
अनर्थक (वि०) निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, वृथा, अप्र-
अनर्थकारी (वि०) हानिकारी, उपद्रवी, उत्पाती।
अनर्ह (वि०) अयोग्य, अनुपयुक्त, अपात्र।
अनल (सं० पु०) आग, अग्नि, भिलावाँ, चित्रक, तीन की संख्या, एक राक्षस का नाम, इसके पिता का नाम माली था और यह विभीषण का मन्त्री था।
अनलपक्ष (सं० पु०) एक प्रकार का पक्षी, यह आकाश में रहती है और आकाश ही में अण्डा देती है, इसका अण्डा पृथ्वी पर आने के पहले ही फूट जाता है, और बच्चा निकल कर उड़ने लगता है।
अनलस (वि०) आलस्यहीन, उद्योगी, परिश्रमी।
अनलेख (वि०) अदृश्य, अगोचर।
अनल्प (वि०) अधिक,बहुत।
अनवकाश (सं० पु०) अवसर रहित,अवकाश का अभाव।
अनवट (सं० पु०) छल्ला, बिछिया।
अनवद्य (वि०) निर्दोष, अनिंद्य।
अनवद्याङ्ग (वि०) सुन्दर, सुडौल, सुन्दर अङ्ग वाला।
अनवधान (सं० पु०) मनोयोग का अभाव, असावधानी।
अनवधानता (सं० स्त्री०) असावधानता; अमनोयोगता।
अनवरत (वि०) सदा, निरन्तर।
अनवस्था (सं० स्त्री०) अव्यवस्था, स्थिति हीनता, व्याकुलता, अधीरता, न्याय में एक प्रकार का दोष, यह दोष तब पड़ता है जब तर्क वितर्क करता जाय, और उसका अन्त न हो।
अनवस्थित (वि०) चञ्चल।
अनवसर (सं० पु०) असमय, कुसमय, अनवकाश।
अनवासना (क्रि०स०) नये बर्तन को पहले काम में लाना।
अनशन (सं० पु०) निराहार, उपवास।
अनशनव्रत (सं० पु०) उपवास करने का व्रत।
अनश्वर (वि०)अटल,स्थिर,जो नष्ट न हो। [हुआ भोजन।
अनसखरी (सं० स्त्री०) पक्की रसोई, निखरी, घृत में पका
अनसमझा (वि०) न समझा हुआ, अज्ञात।
अनसाना (क्रि० अ०) देखो अनखाना।
अनसिखा (वि०) अशिक्षित, अज्ञान, अनपढ़।
अनसुनी (वि०) न सुनी हुई, बिना सुनी।
अनसूया (सं० स्त्री०) दूसरे के गुण में दोष न देखना, एक ऋषि-कन्या का नाम, ये दक्ष प्रजापति की कन्या थीं और इनका ब्याह अत्रि ऋषि से हुआ था।
अनहद नाद (सं० पु०) योग का एक साधन विशेष, वह शब्द जो कानों को बन्द करने पर सुनाई देता है।
अनहित (सं० पु०) अशुभ, अमंगल, अनहित, बुराई, अशुभचिन्तक, शत्रु, वैरी।
अनहोनी (वि०) असम्भव,अचंभा, अलौकिक, (सं०स्त्री०) असम्भव बात, अचम्भे की घटना।
अन्होरी (सं० स्त्री०) फुंसी विशेष, जो गर्मी के दिनों में छोटी छोटी फुंसियां निकल आती हैं।
अनाकानी (सं० स्त्री०) सुन कर भी न सुनना, बहँटियाना, टालमटोल करना, सुनी अनसुनी करना।
अनागत (वि०) भावी, होनहार, भविष्य, अनुपस्थित।
अनाचार (सं० पु०) कुप्रथा,दुराचार,कुरीति, कुव्यवहार।
अनाचारी (वि०) आचारभ्रष्ट, पतित, दुराचारी।
अनाज (सं० पु०) अन्न, ग़ल्ला, शस्य।
अनाड़ी (वि०) नासमझ, नादान, गँवार।
अनाढ्य (वि०) दरिद्र।
अनातप (सं० पु०) छाया, घाम का अभाव।
अनातपत्र (सं० पु०) छत्रहीन।
अनात्मवान् (वि०) अपने मन को वश में न रखनेवाला।
अनात्म्य (वि०) अपना नहीं, दूसरा।
अनाथ (वि०) प्रभु रहित, बिना स्वामी, नाथहीन, मां-बापहीन, निराश्रय, दीन, दुःखी। [ताजख़ाना।
अनाथालय (सं० पु०) अनाथाश्रम, यतीमख़ाना, मुह
अनाथिनी (सं० स्त्री०) पतिहीना, दुःखिनी, विधवा।
अनादर (सं० पु०) आदर का अभाव, अप्रतिष्ठा, अपमान, निरादर, अवज्ञा, तिरस्कार।

अनादरणीय (वि०) अपमाननीय, निरादरणीय, निंद्य।
अनादि (वि०) जिसका आदि न हो, आदि रहित, उत्पत्ति हीन, नित्य, ब्रह्म, ईश्वर, जो सर्वदा से वर्तमान है।
अनादिष्ट (वि०) बिना आज्ञा का।
अनादृत (वि०) अपमानित, जिसका आदर न हुआ हो।
अनाना (क्रि० स०) मँगाना। [अटपट, ऊटपटांग।
अनापशनाप (सं० पु०) निरर्थक प्रलाप, अंडबंड,
अनाप्त (वि०) अनाड़ी, अविश्वासी, अदत्त, असत्य।
अनामक (सं० पु०) अर्श, बवासीर।
अनामय (सं०पु०) नीरोग,स्वस्थता।[बीच वाली अंगुली।
अनामा (सं० स्त्री०) अनामिका, कनिष्ठा और मध्यमा के
अनामिका (सं० स्त्री०) देखो अनामा।
अनायास (क्रि० वि०) अपरिश्रम, अप्रयास, सौकर्य।
अनार (फ़ा० सं० पु०) वृक्ष और फल विशेष, दाड़िम।
अनार्य (सं० पु०) आर्य से इतर, म्लेच्छ।
अनावश्यक (वि०) जिसकी ज़रूरत न हो, अप्रयोजनीय।
अनावश्यकता(सं०स्त्री०)ज़रूरत न होना, अप्रयोजनीयता।
अनाविल (वि०) स्वच्छ, निर्मल, परिष्कृत, साफ़।
अनावृत (वि०) बिन ढका, बिना आवरण का, खुला।
अनावृष्टि (सं० स्त्री०) वर्षा का न होना, सूखा, वर्षा का अभाव।
अनाहार (सं० पु०) उपवास, लंघन, भूखा।
अनाहूत (वि०) अनिमन्त्रित, बिन बुलाया हुआ।
अनिकेत (वि०) गृहरहित, बिना स्थान का, परिव्राजक, संन्यासी, अनियमित स्थान में रहनेवाला।
अनिगीर्ण (सं० पु०) न छिपा हुआ, स्पष्ट, प्रस्तुत।
अनित्य (वि०) नश्वर, क्षणभङ्गुर, विनाशी।
अनिन्दनीय (वि०) निष्कलङ्क, निर्दोष।
अनिन्दित (वि०) निर्दोष,अकलङ्कित, श्रेष्ठ।
अनिंद्य (वि०) प्रशंसनीय, निर्दोष, अच्छा।
अनिमित्तक (वि०) अकारण, बिना हेतु, व्यर्थ।
अनिमिष (सं० पु०) देवता, मछली, (वि०) स्थिर दृष्टि, टकटकी लगाये, (क्रि०वि०) एक टक, लगातार।
अनिमिषाचार्य्य (सं० पु०) वृहस्पति,देव गुरु।[असीम।
अनियत (वि०) नियत नहीं, अनिश्चित, अनिर्दिष्ट, अस्थिर
अनियन्त्रित (वि०) स्वेच्छाचारी।
अनियम (सं० पु०) अव्यवस्था, व्यतिक्रम।
अनियमित (वि०) अनियत, अव्यवस्थित।
अनिरुद्ध (वि०) बेरोक, अबाध, बाधा रहित, (सं० पु०) श्रीकृष्ण का पोता, प्रद्युम्न के पुत्र, इनका ब्याह ऊषा से हुआ था।
अनिर्णय (सं० पु०) अनिश्चय।
अनिर्णीत (वि०) अनिश्चित।
अनिर्दिष्ट (वि०) अनियत, अनिर्धारित, अनिश्चित।
अनिर्देश्य (वि०) जिसके विषय में निश्चित रूप से कुछ कहा न जा सके।
अनिर्लोचित (वि०) ज्ञानशून्य।[त्तम,वर्णनरहित।
अनिर्वचनीय (वि०) अकथनीय, अवर्णनीय, अत्यु-
अनिल (सं० पु०) वायु, पवन, हवा।
अनिलात्मज (सं० पु०) हनुमान, पवनकुमार।
अनिलाशी (वि०) वायु पीकर रहनेवाला सांप।
अनिवारित (वि०) बाधारहित।[अवश्यम्भावि,अवारणीय।
अनिवार्य (वि०) जिसका निवारण न हो सके, अटल,
अनिश्चित (वि०) अनिर्दिष्ट, अनियत।
अनिष्ट (सं० पु०) अशुभ, अमंगल, हानि, अहित, (वि०) इच्छाविरुद्ध, अनभिलषित।
अनिष्टकर (वि०) अहितकर, अशुभकर, अमंगलप्रद।
अनिष्ठुर (वि०) अनिठुर, सरल चित, अनिर्दय।
अनिश (क्रि० वि०) सदा, (वि०) रात्रिरहित। [धार।
अनी (सं० पु०) पैना नोक, सिरा, छोर, तीक्ष्ण, तीखी-
अनीक (सं० पु०) कटक, सेना, फौज, सैन्य, योद्धा, संग्राम।
अनीकिनी (सं० स्त्री०) अक्षौहिणी सेना का दशांश, पद्मिनी, कमलिनी।
अनीति (सं०स्त्री०) अन्याय, अनरीति, अत्याचार, दुर्नीति।
अनीश (वि०) ईश्वर रहित, बिना स्वामी का, असमर्थ, (पु०) ईश्वर से भिन्न पदार्थ, माया, जीव।
अनीश्वर (वि०) ईश्वर से भिन्न, नास्तिक।
अनीश्वरवाद (सं०पु०) नास्तिकता, जिस मत में ईश्वर का अस्तित्व न माना गया हो।
अनीश्वरवादी (वि०) नास्तिक, मीमांसक, ईश्वर का न मानने वाला, जो ईश्वर को न माने।
अनीह (वि०) निश्चेष्ट, चेष्टारहित, निस्पृह।
अनु (अव्य०) पीछे, सदृश, साथ, सह, प्रत्येक, बार बार।
अनुकथन (सं० पु०) बात चीत,वार्तालाप, कथोपकथन।
अनुकम्पा (सं० स्त्री०) दया, स्नेह, कृपा, अनुग्रह, सहानुभूति।

अनुकम्पित (वि०) अनुगृहीत, कृपापात्र।
अनुकरण (सं० पु०) नक़ल, अनुरूप, देखा देखी करना।
अनुकरणीय (वि०) अनुकरण करने के योग्य।
अनुकर्षण (सं० पु०) खिँचाव, आकर्षण, आह्वान।
अनुकूल (वि०) अप्रतिकूल, अविरुद्धाचरण, (क्रि० वि०) ओर, (सं० पु०) एक ही विवाहिता स्त्री में रत रहने वाला नायक, काव्यालङ्कार विशेष, जिसमें प्रतिकूल वस्तु से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखायी जाती है।
अनुकूलता (सं०स्त्री०) सहायता, प्रसन्नता, अप्रतिकूलता।
अनुक्त (वि०) अकथित, अव्यक्त, दृष्टान्त।
अनुक्रम (सं० पु०) परिपाटी, शैली, यथाक्रम, क्रम, सिलसिला। [प्रबन्ध, मुखबन्ध।
अनुक्रमणिका (सं० स्त्री०) सूची, क्रम, सिलसिला.
अनुक्रोश (सं० पु०) दया, स्नेह, कृपा।
अनुक्षण (क्रि० वि०) प्रतिक्षण, निरन्तर, लगातार।
अनुखाल (क्रि० वि०) खाड़ी, नाला, खाई।
अनुग (वि०) अनुयायी, अनुगामी, पीछे चलनेवाला (सं०पु०) भृत्य, नौकर, दास, सेवक।
अनुगत (वि०) अनुकूल, अनुयायी, अनुगामी, (सं०पु०) चाकर, नौकर, दास, भृत्य। [अर्थ वाला।
अनुगतार्थ (वि०) सादृश्य अर्थ रखनेवाला, समान
अनुगमन (सं० पु०) सहगमन, साथ चलना, अनुकरण, सहवास।
अनुगामी (सं० पु०) सहचर, साथी, सेवक।
अनुगुण (सं० पु०) काव्यालङ्कार विशेष, वह अलङ्कार जिसमें किसी वस्तु का गुण किसी वस्तु के संसर्ग से बढ़कर दिखाया जाय। [हो, आश्वासित, कृतज्ञ।
अनुगृहीत (वि०) उपकृत, जिस पर उपकार किया गया
अनुग्रह (सं० पु०) दया, करुणा, अनुकम्पा। [दयावान।
अनुग्राहक (वि०) दयालु, कृपालु, उपकारी, सहायक,
अनुचर (सं० पु०) दास, भृत्य, सेवक, नौकर, चाकर।
अनुचित (वि०) उचित नहीं, अयोग्य, अनुपयुक्त।
अनुच्छ्रित (वि०) उन्नतिरहित, ऊंचा नहीं।
अनुज (सं० पु०) छोटा भाई, लहुरा, कनिष्ठ, लघुभ्राता।
अनुजीवी (सं० पु०) भृत्य, सेवक, दास, (वि०) आश्रित, पराधीन।
अनुज्झित (वि०) नहीं छोड़ा हुआ, अत्यक्त।
अनुज्ञा (सं० स्त्री०) अनुमति, आज्ञा, आदेश, हुक्म।
अनुज्ञापन (सं० पु०) आदेश करना, आज्ञा देना, जताना।
अनुतप्त (वि०) खिन्न, दुःखी, गर्म। [पछतावा।
अनुताप (सं० पु०) जलन, पश्चात्ताप, खेद, दुःख, शोक,
अनुतारा (सं० स्त्री०) उपग्रह। [उत्कण्ठा-रहित।
अनुत्कण्ठा (वि०) लालसा-रहित, अनभिलषित,
अनुत्तर (वि०) उत्तरहीन, बिना उत्तर, चुपका, श्रेष्ठ।
अनुदय (सं० पु०) सबेरा, भोर। [छोटा, तुच्छ।
अनुदात्त (वि०) स्वर का एक भेद, उच्चाशय रहित, नीचा,
अनुदार (वि०) दाता नहीं, कृपण, स्त्री के वशवर्ती।
अनुदिन (क्रि० वि०) प्रत्यह, प्रतिदिन, नित्यप्रति।
अनुद्यमी (सं० पु०) बिना उद्यम के, आलसी, सुस्त।
अनुद्वाह (सं० पु०) कुँआरापन, अनुद्विग्न (वि०) स्वस्थ।
अनुद्वेग (वि०) निश्चिंत।
अनुनय (सं० पु०) विनती, विनय, स्तुति, प्रार्थना।
अनुनाद (सं० पु०) प्रतिध्वनि, गुंजार, प्रतिशब्द।
अनुनासिक (वि०) सानुनासिक, (सं० पु०) वे वर्ण जिनका उच्चारण मुंह और नाक से किया जाय, यथा—ङ, ञ, ण, न, म, और अनुस्वार।
अनुप (वि०) उपमा रहित।
अनुपकार (सं० पु०) बुराई, हानि। [करनेवाला।
अनुपकारी (वि०) भलाई न करनेवाला, बुराई
अनुपम (वि०) उपमा रहित, अनूप, जिसकी समानता और में न हो, अतुलनीय। [दृश।
अनुपमेय (वि०) जिसकी उपमा न हो, अनुपम, अस-
अनुपयुक्त (वि०) जो उपयुक्त न हो, अयोग्य, अनुचित, अन्याय। [दुर्व्यवहार।
अनुपयोग (सं० पु०) काम में न लाना, अपव्यवहार,
अनुपयोगी (वि०) व्यर्थ, बेकाम, फ़ज़ूल।
अनुपल (सं० पु०) पल का साठवां भाग।
अनुपलब्ध (वि०) अप्राप्त। [हाज़िर।
अनुपस्थित (वि०) अवर्तमान, अविद्यमान, ग़ैर-
अनुपस्थिति (सं० स्त्री०) अविद्यमानता, ग़ैरहाज़िरी।
अनुपात (सं० पु०) सम, समान रूप से गिरना, बराबर सम्बन्ध, त्रैराशिक।
अनुपातक (सं० पु०) महापाप, ब्रह्महत्या के समान पाप।
अनुपान (सं० पु०) औषधि के साथ सेवन करनेवाली वस्तु। [होना।
अनुप्राशन (सं० पु०) खाना, भक्षण, (क्रि०) करना, देना,

अनुप्रास (सं० पु०) अलङ्कार विशेष, वर्णवृत्ति, वर्णमैत्री, समान वर्ण विन्यास, जिसमें एक वर्ण वाले शब्द बार बार आकर उसकी शोभा और बढ़ाते हैं, उसको अनुप्रास कहते हैं।
अनुबन्ध (सं० पु०) लगाव, बंधन, सुहृद, मित्र, आरम्भ।
अनुभव (सं०पु०) यथार्थज्ञना, बोध, उपलब्धि, सोच, विचार।
अनुभवी (वि०) जानकार, अनुभव रखनेवाला।
अनुभाव (सं० पु०) महिमा, बड़ाई, प्रभाव।
अनुभूत (वि०) अनुभव किया हुआ, परीक्षित, निश्चित।
अनुमत (वि०) स्वीकृत, सहमत, एक मत।
अनुमति (सं० स्त्री०) आज्ञा, आदेश, सम्मति, अपूर्ण चन्द्रकलायुक्त पूर्णिमा।
अनुमती (सं० स्त्री०) एक मत वाली, उपगामिनी।
अनुमरण (सं० पु०) सती होना, पति के साथ विधवा का जलना।
अनुमान (सं० पु०) अटकल, हेतु द्वारा निर्धारित करना, प्रत्यक्ष वस्तु के द्वारा अप्रत्यक्ष वस्तु की भावना।
अनुमायक (सं० पु०) निर्णायक।
अनुमेय (सं० पु०) अनुमान योग्य।
अनुमोदन (सं० पु०) समर्थन, आनन्द सहित सम्मति प्रदर्शन, सहर्ष स्वीकार, सन्तोष प्रकट करना।
अनुमोदित (वि०) समर्थित, आनन्दित।
अनुयायी (वि०) अनुगामी, अनुवर्ती, अनुसरण करने वाला, पीछे चलनेवाला। [शिक्षा, उपदेश।
अनुयोग (सं० पु०) प्रश्न, पूछ ताछ, आक्षेप, घुड़की,
अनुयोजक (सं० पु०) अनुयोग करनेवाला।
अनुयोजन (सं० पु०) पूछ ताछ, प्रश्न।
अनुयोज्य (वि०) निन्दायोग्य।
अनुरक्त (वि०) आसक्त, लीन, प्रीति, रत।
अनुरत (सं०) अनुरक्त, लीन, आसक्त।
अनुराग (सं० पु०) प्यार, प्रेम, प्रीति, आसक्ति।
अनुरागी (वि०) प्रेमी, प्यार करनेवाला।
अनुराधा (सं० स्त्री०) एक नक्षत्र, यह सत्रहवां नक्षत्र है, यह शुभ और मांगलिक नक्षत्र समझा जाता है।
अनुरूप (वि०) योग्य, उपयुक्त, अनुकूल, समान, सदृश।
अनुरोध (सं० पु०) आग्रह, प्रेरणा, उत्तेजना, बाधा।
अनुलाप (सं०पु०) बार बार कहना।
अनुलिप्त (वि०) अभिषिक्त, लिप्त।
अनुलेप (सं० पु०) लेप, पोत, लेपन, उबटन।
अनुलोम (वि०) सीधा, क्रम से। [उत्पन्न पुत्र।
अनुलोमज (सं० पु०) ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता से
अनुलोमन (सं० पु०) दस्त लानेवाली दवा।
अनुवर्तन (सं० पु०) अनुकरण, अनुगमन, अनुसरण, अनुसार चलन।
अनुवर्ती (वि०) अनुयायी, अनुगामी।
अनुवाक (सं० पु०) ग्रन्थ-विभाग।
अनुवाद (सं० पु०) भाषान्तर, उल्था, पुनर्कथन।
अनुवादक (वि०) भाषान्तर करनेवाला। [हुआ।
अनुवादित (वि०) भाषन्तर किया हुआ, अनुवाद किया
अनुवृत्ति (वि०) उपजीविका।
अनुवेदना (सं० स्त्री०) सहानुभूति।
अनुशय (सं० पु०) पश्चात्ताप, अनुताप, झगड़ा, शत्रुता।
अनुशयी (वि०) पश्चात्तापी, बैरी।
अनुशासक (सं० पु०) शासन करने वाला, प्रबन्धक, देश या राज्य का प्रबन्ध करने वाला, आदेश देने वाला। [महाभारत का एक पर्व विशेष।
अनुशासन (सं० पु०) आज्ञा, आदेश, विवरण, उपदेश,
अनुशास्ता (सं० पु०) शिक्षक। [आवृत्ति, आलोचन।
अनुशीलन (सं० पु०) मनन, चिन्तन, बार बार विचारना,
अनुशोक (सं० पु०) खेद, पछतावा।
अनुशोचन (सं० पु०) पछतावा करना।
अनुषङ्ग (सं० पु०) दया, करुणा, मिलन, प्रणय, संग।
अनुष्टुप (सं० पु०) एक प्रकार का छन्द, इस छन्द में चार पाद होते हैं और एक पाद में आठ अक्षर
अनुष्ठान (सं० पु०) पुरश्चरण, प्रयोग, उपक्रम, आरम्भ।
अनुष्ठित (वि०) किया हुआ।
अनुष्ठेय (वि०) करने योग्य। [प्रयत्न, चेष्टा।
अनुसंधान (सं० पु०) अन्वेषण, जाँच पड़ताल, खोज,
अनुसरण (सं० पु०) अनुकरण, साथ साथ जाना, पीछे चलना। [अनुकरण करना।
अनुसरना (क्रि० अ०) साथ साथ चलना, पीछे चलना,
अनुसरहिं (क्रि० अ०) पीछे पीछे चलते हैं।
अनुसार (सं० वि०) समान, अनुकूल, सदृश।
अनुसत्य (वि०) कई, समान।
अनुस्वार (सं० पु०) स्वर के ऊपर का एक विन्दु, वर्ण जिसका चिन्ह (ं) यह है।

अनुहार (वि०) समान, सदृश, अनुकरण।
अनूठा (वि०) अनोखा, विलक्षण, विचित्र, अपूर्व, सुन्दर, अद्भुत। [अनोखापन।
अनूठापन (सं० पु०) विलक्षणता, विचित्रता, विशेषता,
अनूढ़ा (सं० स्त्री०) बिनब्याही स्त्री, क्वारी।
अनूप (सं० पु०) जलप्लावित देश, जलमग्न देश, जल प्राय देश, वह देश जहाँ जल अधिक हो, उपमारहित, अद्वितीय, सुन्दर।
अनूपम (वि०) उपमारहित, अनोखा, विलक्षण।
अनृत (वि०) असत्य, झूठ, मिथ्या। [बहुत।
अनेक (वि०) एक से अधिक, असंख्य, अनगिनत,
अनेकशः (अव्य०) बहु प्रकार।
अनेरे (क्रि० वि०) झूठमूठ, व्यर्थ।
अनैक्य (सं० पु०) एकता का अभाव, फूट, मतभेद, विरोध।
अनैस (सं० पु०) अहित, बुराई, अमङ्गल।
अनैसे (क्रि०वि०) बुरी निगाह से, कुदृष्टि से। [सुन्दर, सुघर।
अनोखा (वि०) विलक्षण, विचित्र, अनूठा, अद्भुत, नया,
अनोखापन (सं० पु०) विचित्रता, विलक्षणता, अनूठापन
अनोना (वि०) नमकहीन, बिना नोन का।
अनौचित्य (सं० पु०) अनुपयुक्तता, अनुचित।
अन्त (सं० पु०) सीमा, शेष, अवसान, समाप्ति, नाश, (वि०) पास, निकट, समीप।
अन्तःकरण (सं० पु०) मन, हृदय, चित्त।
अन्तक (सं० पु०) नाश करनेवाला, यम, काल।
अन्तकर (सं० पु०) नाशक।
अन्तकाल (सं० पु०) मृत्यु समय, मरने का समय।
अन्तकृत (सं० पु०) यमराज।
अन्तक्रिया (सं० पु०) मृतक क्रिया, मृतक की दग्धादि पिण्ड दानादि क्रिया, अन्त्येष्टि कर्म।
अन्तज (सं० पु०) नीच जाति, शूद्र, अन्त्यज।
अन्तड़ी (सं० स्त्री०) आंत, नाड़ी।
अन्तर (सं० पु०) अलगाव, भेद, फ़र्क, दूरी, अवकाश, मध्य, मध्यवर्ती समय, दो घटनाओं का मध्यवर्ती समय, छिद्र, आत्मीय, अन्तर्द्धान, (वि०) भीतर, गुप्त, गायब, (सं० पु०) हृदय।
अन्तरङ्ग (सं० पु०) स्वजन, सुहृद, आत्मीय, संबन्धी।
अन्तरछाल (सं० स्त्री०) छाल के भीतर की छाल, छाल के भीतर का कोमल भाग।

अन्तरजामी (सं० पु०) दिल का हाल जाननेवाला, हृदय की बात जाननेवाला, ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा।
अन्तरज्ञ (वि०) भीतरी बात जाननेवाला, हृदय की बात जाननेवाला, अन्तर्यामी, ईश्वर, परमात्मा।
अन्तरस्थ (वि०) भीतरी, भीतर वाला।
अन्तरा (क्रि० वि०) मध्य, बीच, निकट, बिना, चरण, मध्य का पद। (सं० पु०) नागा, झंझा, अन्तर, बीच।
अन्तरात्मा (सं० स्त्री०) जीवात्मा, प्राण, जीव, आत्मा।
अन्तराना (क्रि० स०) दूर करना, अलग करना, भीतर करना।
अन्तरापत्य (सं० स्त्री०) गर्भवती, गर्भिणी
अन्तराय (सं० पु०) विघ्न, बाधा। [बीच।
अन्तराल (सं० पु०) घेरा, फांक, मण्डल, भेद, मध्य,
अन्तरिक्ष (सं० पु०) आकाश, गगन, शून्य, नभ।
अन्तरिच्छ (सं० पु०) देखो अन्तरिक्ष।
अन्तरित (वि०) भीतरी, भीतर किया हुआ, छिपाया हुआ, गोपित।
अन्तरीप (सं० पु०) द्वीप, टापू, पृथ्वी का वह भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो।
अन्तरीय (वि०) भीतरी, मध्य का।
अन्तरीया (सं० स्त्री०) तीसरे दिन आनेवाला ज्वर, अन्तरा, तिजारी। [वस्त्र, सटना।
अन्तरौटा (सं० पु०) महीन साड़ी के भीतर पहनने का
अन्तर्गत (वि०) मन में पैठा हुआ, सम्मिलित, पैठा, मध्यस्थ, अन्तःकरण-स्थित।
अन्तर्गति (सं० स्त्री०) भावना, चित्त-वृत्ति।
अन्तर्दशा (सं० स्त्री०) फलित ज्योतिष के अनुसार सूर्यादि ग्रहों का जो भोग काल है, उसको अन्तर्दशा कहते हैं, ग्रह-दशा।
अन्तर्दाह (सं० पु०) हृदय की जलन, शरीर का दाह।
अन्तर्दृष्टि (सं० पु०) प्राज्ञा, ज्ञान-चक्षु।
अन्तर्द्धान (सं० पु०) अदर्शन, लोप, तिरोधान, लुकाव, (वि०) गुप्त, अप्रकट, अलक्ष, लुप्त।
अन्तर्ध्यान (सं० पु०) मानसिक ध्यान।
अन्तर्पट (सं० पु०) पर्दा, ओट।
अन्तर्भूत (वि०) अन्तर्गत, मध्यगत।
अन्तर्यामी (वि०) घट घट का जाननेवाला, हृदय

की बातों का ज्ञान रखनेवाला, (सं० पु०) ईश्वर, परमात्मा। [ब्रह्मावर्त।
अन्तर्वेद (सं० पु०) गङ्गा यमुना के मध्य का देश,
अन्तर्हित (वि०) अन्तर्द्धान, अलख, गुप्त, तिरोहित, छिपा हुआ। [मृत्यु।
अन्तशय्या (सं० स्त्री०) मृत्युशय्या, श्मशान, मरघट,
अन्तसमय (सं० पु०) मृत्युकाल, मरण समय।
अन्तिम (वि०) अन्तवाला, शेष, चरम, अवसान, आख़िरी। [महाप्रस्थान।
अन्तिम यात्रा (सं० पु०) मृत्यु, मरण, अन्तकाल,
अन्तेवासी (सं० पु०) गुरु के पास रहनेवाला विद्यार्थी, शिष्य, चेला। [नीच।
अन्त्य (वि०) अन्तिम, आख़िरी, शेष, अन्त का, अधम,
अन्त्यकर्म (सं० पु०) अन्त्येष्टि क्रिया, प्रेत-कर्म।
अन्त्यज (सं० पु०) शूद्र, अस्पृश्य जाति, यथा—डोम, चमार, धोबी, पासी आदि।
अन्त्यस्थ (सं०पु०) य, र, ल, व ये चार वर्ण।
अन्त्याक्षरी (सं० स्त्री०) किसी श्लोक के अन्तिम अक्षर से आरम्भ होनेवाले दूसरे श्लोक का कहना।
अन्त्येष्टि (सं० पु०) क्रिया कर्म, मृतक व्यक्ति का शव-दाह और पिण्ड-दानादि कर्म।
अन्त्र (सं० स्त्री०) आन्त, अन्तड़ी। [बीमारी।
अन्त्र-वृद्धि (सं० स्त्री०) अण्डकोश-वृद्धि, अण्ड बढ़ने की
अन्दर (अव्य०) भीतर।
अन्दरूनी (फा० वि०) भीतरी, आभ्यन्तरिक।
अन्दाज़ (फा० सं० पु०) अटकल, कूत, नाप।
अन्दाज़न (क्रि० वि०) अन्दाज़ से, अटकल से, लगभग।
अन्देशा (सं० पु०) सन्देह, सोच, चिन्ता, संशय, फ़िक्र।
अन्दोर (सं० पु०) कोलाहल, शोर ग़ुल, हो हल्ला, हलचल, हुल्लड़।
अन्ध (वि०) अन्धा, नेत्रहीन, बिना आँख वाला, जो न देख सके (सं० पु०) एक मुनि का नाम, ये जाति के वैश्य थे, इन्होंने अपना ब्याह एक शूद्रा कन्या से किया था, ये अयोध्या में, सरयू नदी के तट पर वास करते थे, राजा दशरथ ने हाथी के भ्रम से शब्द-वेधी बाण से इनके पुत्र को मार डाला था, पुत्र को मरा देख माता पिता ने भी अपना प्राण-त्याग दिया, इन्होंने राजा को शाप दिया कि पुत्र-वियोग में तुम्हारा भी प्राण जायगा।
अन्धक (सं० पु०) अन्धा, नेत्रहीन व्यक्ति, दैत्य विशेष, यह कश्यप का पुत्र था और अदिति के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, इसके हजार सिर, दो हजार नेत्र, दो हजार बाहें, और दो हजार चरण थे, यह मद के मारे अंधों के समान चलता था, इसी से इसका नाम अंधक पड़ा, शिव के द्वारा यह मारा गया था। एक ऋषि का नाम, इनके पिता का नाम उतथ्य ऋषि था जो वृहस्पति के बड़े भाई थे। इनका दूसरा नाम था महा-तपा और इनकी माता का नाम था ममता, एक राजा का नाम, ये क्रोष्टी नामक यादव के पौत्र और युद्धजित के पुत्र थे, अन्धक नामक यादवों की शाखा इनसे ही चली, इनके बड़े भाई का नाम वृष्णि ऋषि था, वृष्णि वंशी यादवों की उत्पत्ति, इन्हीं से हुई, कृष्ण का जन्म भी इसी वंश में था।
अन्धकरिपु (सं० पु०) शिव, महादेव।
अन्धकार (सं० पु०) अन्धेरा, तम।
अन्धड़ (सं०पु०) आँधी, तूफान।
अन्धरा (सं० पु०) अन्धा, अन्ध, नेत्ररहित, दृष्टिहीन।
अन्धविश्वास (सं० पु०) विवेकशून्य धारणा।
अन्धस (सं० पु०) भात, पका हुआ चावल। [शून्य।
अन्धा (वि०) बिना आँख का, नेत्रहीन, अविवेकी, विचार-
अन्धाधुन्ध (सं० पु०) घोर अन्धकार, अन्धेर, अन्याय, गड़बड़, धींगा-धींगी, कुप्रबन्ध, अविचार (वि०) बेठिकाना, बहुतायत, विचारशून्य, अविवेक।
अन्धार (सं० पु०) अन्धकार, अन्धेरा, तम।
अन्धारी (सं० पु०) आंधी, तूफान। [शून्य।
अन्धियर (सं० पु०) अन्धकार, तम, (वि०) प्रकाश
अन्धियारा (सं० पु०) अन्धकार, अन्धेरा, तम, (वि०) धुंधला, प्रकाश-रहित, उदास, सूना।
अन्धियारी कोठरी (सं० स्त्री०) छोटी कोठरी जिसमें अन्धेरा हो, कोख, उदर, गर्भस्थान।
अन्धु (सं० पु०) कूंआ।
अन्धेर (सं० पु०) अत्याचार, अन्याय, ज़ुल्म, उपद्रव, अनर्थ।
अन्धेरखाता (सं० पु०) हिसाब किताब में गड़बड़ी, व्यवहार में गड़बड़ी, व्यतिक्रम, अन्याय, कुप्रबन्ध, अविचार।

अन्धेरना (क्रि०) अन्धेर करना, अन्धकार करना ।
अन्धेरा (सं०पु०) अन्धियारा,अन्धकार,तम,धुंध, तिमिर ।
अन्धेरिया (सं० स्त्री०) अन्धेरा, अन्धेरी रात्रि, अन्धेरा पाख, ऊख की पहली गोड़ाई ।
अन्धेरी (सं० स्त्री०) तम,अन्धकार,आंधी, घोड़ा या बैलों की आँख पर बांधने की पट्टी । [की पट्टी या परदा ।
अन्धोटी (सं० स्त्री०) घोड़े या बैल की आंख पर बांधने
अन्ध्यार (सं० पु०) अन्धेरा, तम, तिमिर ।
अन्ध्यारी (सं० पु०) अन्धियारी ।
अन्ध्र (सं० पु०) शिकारी, बहेलिया, व्याध, जाति विशेष, यह जाति वैदिहिक से कारावर के गर्भ से उत्पन्न हुई थी, यह नगर के बाहर रहती थी और शिकार कर अपना पेट पालती थी । दक्षिण प्रान्त का एक देश विशेष, इसको अब तिलंगाना कहते हैं । एक राजवंश, एक शूद्र दास ने अपने स्वामी कन्व वंश के मगध के अन्तिम राजा को मार डाला था और आप शासक बन बैठा । [ओदन ।
अन्न (सं० पु०) अनाज, खाद्य वस्तु, धान्य, गल्ला, भात,
अन्नकूट (सं० पु०) अन्न का पर्वत, एक पर्व, यह कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को होता है, उस दिन नाना प्रकार के भोजन बनते हैं, और भगवान को भोग लगाया जाता है । [दिया जाता है ।
अन्नछेत्र (सं० पु०) वह स्थान जहाँ भूखों को भोजन
अन्नजल (सं० पु०) दाना पानी, जीविका ।
अन्नदाता (सं० पु०) रक्षक, प्रतिपालक, पोषक ।
अन्नपूर्णा (सं० स्त्री०) अन्न की अधिष्ठात्री देवी, ये काशी की प्रधान देवी हैं ।
अन्नप्राशन (सं० पु०) पहले पहल बच्चे को अन्न चटाना ।
अन्नसत्र (सं० पु०) वह स्थान जहाँ भूखों को भोजन मिले । [वाली ।
अन्ना (सं० स्त्री०) धाय, धात्री, उपमाता, दूध पिलाने
अन्य (वि०) दूसरा, और कोई, भिन्न ।
अन्यच्च (क्रि० वि०) और भी ।
अन्यतः (वि०) स्थानान्तर, किसी और स्थान से ।
अन्यत्र (वि०) और कहीं, दूसरे स्थान ।
अन्यथा (वि०) विरुद्ध,उल्टा, विपरीत,(अव्य०)नहीं तो ।
अन्यथाचरण (सं० पु०) विपरीत, विरुद्धाचरण ।
अन्यथासिद्धि (सं० स्त्री०) न्याय में एक दोष विशेष, जिसमें असत्य युक्तियों से किसी विषय को सिद्ध किया जाय । [देशवासी ।
अन्यदेशी (सं० पु०) दूसरे देश का रहनेवाला, भिन्न
अन्यदेशीय (सं० पु०) विदेशी, दूसरे देश का ।
अन्य पुरुष (सं० पु०) अन्य नर, दूसरा आदमी, व्याकरण में तीसरा पुरुष, मैं और तू को छोड़ वह, कोई ।
अन्यमनस्क (वि०) उदास, अनमना, चिंतित ।
अन्यान्य (वि०) भिन्न भिन्न, दूसरे दूसरे, और और ।
अन्याय (सं० पु०) ज़ुल्म, अत्याचार, अनीति ।
अन्यायी (वि०) दुराचारी, अन्यथाचारी, ज़ालिम, बेइंसाफ़ी । [में कहकर अन्य वस्तु पर घटाया जाय ।
अन्योक्ति (सं० स्त्री०) वह कथन जो अन्य वस्तु के विषय
अन्योन्य (सर्व०) परस्पर, आपस में ।
अन्योन्याश्रय (सं० पु०) सापेक्ष, परस्पर का सहारा, एक वस्तु के ज्ञान से दूसरी वस्तु का ज्ञान ।
अन्वय (सं० पु०) वंश, सन्तति, कुल,परिच्छेद तारतम्य, संयोग, परस्पर संबन्ध, कार्य कारण संबन्ध ।
अन्वयी (वि०) एक वंशीय, संबद्ध, संबन्ध ।
अन्वह (क्रि० वि०) नित्य, प्रति दिन ।
अन्वित (वि०) युक्त, पूरा, सम्बन्धित ।
अन्वीक्षण (सं० पु०) अनुसंधान, गौर से देखना ।
अन्वेषण (सं० पु०) अनुसंधान, पता लगाना, ढूँढ़ना ।
अन्हवाना (क्रि० स०) नहलाना, धुलाना, स्नान कराना ।
अन्हाना (क्रि० अ०) नहाना,स्नान करना ।
अप् (सं० पु०) पानी,जल,वारि । (उपसर्ग) अधम, नीच, बुरा,अंस,अपूर्ण,यह शब्दों के पहले लगने से इन अर्थों को प्रकट करता है, निषेध,दूषण, विकृति, विशेषता ।
अपकर्म (सं० पु०) नीच काम, खोटा काम, पाप, कुकर्म ।
अपकर्ष (सं० पु०) अपमान, नीचता, जघन्यता, घटाव, कमी, उतार ।
अपकाजी (वि०) स्वार्थी, मतलबी । [बुराई, क्षति ।
अपकार (सं० पु०) अहित, अनिष्ट, अनुपकार, द्वेष,
अपकारक (वि०) बुराई करनेवाला, हानिकारी, द्वेषी, विरोधी । [विरोधी ।
अपकारी (वि०) अपकार करनेवाला, हानिकारक,
अपकीर्ति (सं० स्त्री०) अयश, बदनामी, अपयश, निंदा ।
अपकृत (वि०) बदनाम, अपमानित, जिसका अपकार हुआ हो ।

अपकृति (सं० स्त्री०) बुराई, हानि, निन्दा, बदनामी।
अपकृष्ट (वि०) पतित, अधम, नीच, भ्रष्ट, निंद्य।
अपकृष्टता (सं० स्त्री०) नीचता, अधमता, भ्रष्टता।
अपक्रम (सं० पु०) क्रमभंग, उलट पलट, अनियम।
अपक्व (वि०) पका नहीं, कच्चा, अनभ्यस्त।
अपक्षपात (सं० पु०) पक्षपात रहित होना, खरापन, न्याय।
अपक्षपाती (वि०) न्यायी, खरा, बिना पक्षपात का।
अपगत (वि०) भागा हुआ, चला गया हुआ, दूरी भूत, गत, मृत, नष्ट, मरा हुआ।
अपगा (सं० स्त्री०) नदी।
अपघात (सं० पु०) विश्वासघात, धोखा, हिंसा।
अपघातक (वि०) विश्वासघात करनेवाला, घातक।
अपच (सं० पु०) बदहज़मी, अजीर्ण।
अपच्छरा (सं० स्त्री०) अप्सरा। [जाति विशेष।
अपछरा (सं० स्त्री०) असरा, भारत में वेश्यायों की एक
अपजय (सं० स्त्री०) हार, पराजय।
अपजस (सं० पु०) बदनामी, अयश, अपयश।
अपजसी (वि०) बदनाम।
अपटन (सं० पु०) उबटन।
अपटु (वि०) अनिपुण, अचतुर, अकुशल।
अपठ (वि०) अशिक्षित, अपढ़, मूर्ख।
अपठित (वि०) अशिक्षित।
अपड (वि०) दृढ़, स्थायी।
अपडर (सं० पु०) भय, शंका, डर।
अपडरना (क्रि० अ०) भयभीत होना, डरना।
अपढ़ (वि०) बिना पढ़ा हुआ, मूर्ख, अनाड़ी।
अपत (वि०) पातहीन, पत्ररहित, बिना छाजन का, नंगा, निर्लज्ज, पापी, अधम, (सं० पु०) दुःख, विपत्ति।
अपति (वि०) विधवा, बिना पति का।
अपतियारा (वि०) कपटी, विश्वासघाती।
अपत्य (सं० पु०) लड़का लड़की, पुत्र, कन्या, संतान।
अपत्यशत्रु (सं० पु०) केकड़ा, कर्कट।
अपत्यस्नेह (सं० पु०) सन्तान के प्रति स्वाभाविक मोह।
अपत्रप (वि०) लज्जाहीन, निर्लज्ज।
अपथ (वि०) कुपथ, कुमार्ग, विकट मार्ग।
अपथ्य (वि०) अस्वास्थ्यकर, अहितकर, जो पथ्य न हो।
अपद (सं० पु०) बिना पैर वाला, साँप, जोंक, आदि।
अपदस्थ (वि०) पद से हटाया, पदच्युत।
अपदारथ (सं० पु०) अयोग्य वस्तु।
अपदेवता (सं० पु०) दुष्ट देवता, राक्षस, दैत्य।
अपदेश (सं० पु०) छल, कपट।
अपध्वंस (सं० पु०) अधःपात, नाश, क्षय, अपमान, निरादर।
अपध्वस्त (सं० पु०) परास्त, पराजित, अपमानित।
अपनयन (सं० पु०) खण्डन, दूरीकरण। [आत्मीय।
अपना (सर्व०) स्व, स्वकीय, निज की, (सं० पु०) स्वजन,
अपनाना (क्रि० स०) अपना बनाना, अपने अनुकूल बनाना, अपने में मिलाना, अपनी ओर ले आना।
अपनापन (सं० पु०) आत्मीयता, स्वजनता।
अपनाम (सं० पु०) बदनामी, निंदा।
अपनायत (सं० पु०) सम्बंध, नाता। [निकाला हुआ।
अपनीत (वि०) अलग किया हुआ, दूर किया हुआ,
अपभय (सं० पु०) डर, भय, निर्भय, भयरहित, व्यर्थ भय।
अपभाषा (सं० स्त्री०) कुवाच्य, गंवारी बोली।
अपभ्रंश (सं० पु०) पात, पतन, अपशब्द, विकृत शब्द, व्याकरण-विरुद्ध शब्द, अशुद्ध शब्द।
अपमान (सं० पु०) निरादर, अनादर, अवज्ञा, तिरस्कार।
अपमानित (वि०) तिरस्कारित, निरादृत, निंदित।
अपमृत्यु (सं० पु०) अकाल मृत्यु, कुसमय मृत्यु, बिना रोग की मृत्यु।
अपयश (सं० पु०) बदनामी, कलङ्क, लांछन, अपकीर्ति।
अपर (सं० पु०) अन्य, पर, भिन्न, इतर, दूसरा।
अपरञ्च (अव्य०) और भी, फिर भी, पुनः, पुनरपि।
अपरना (सं० स्त्री०) पार्वती, शिवा, भवानी।
अपरम्पार (सं० पु०) अनन्त, अपार, बेहद, असीम।
अपरलोक (सं० पु०) स्वर्ग, परलोक। [रोग विशेष।
अपरस (वि०) न छूने योग्य, अस्पृश्य, (सं० पु०) चर्म
अपरा (सं० स्त्री०) पदार्थ विद्या, लौकिक विद्या, पश्चिम दिशा, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की एकादशी, (वि०) दूसरी।
अपराजय (सं० पु०) अपराभव, अजीत, जीत।
अपराजित (वि०) अजेय, जो जीता न जा सके, (सं० पु०) विष्णु, शिव।
अपराजिता (सं० स्त्री०) दुर्गा, विष्णु क्रान्ता लता, जयन्ती वृक्ष, अशन पर्णी, कौवा ठोंठी, कोयल, शमी भेद, शङ्खिनी, इसी नाम की लता विशेष, धूप विशेष, एक वृत। यह चौदह अक्षर का होता है, इसके प्रत्येक चरण में दो नगण, एक रगण, एक सगण, एक लघु

और एक गुरु होता है।
अपराध (सं० पु०) दोष, अधर्म, पाप, भूल चूक।
अपराधी (वि०) दोषी, अन्यायी, पापी, अधर्मी।
अपराह्ण (सं० पु०) तीसरा पहर, दिन का शेष भाग, दिन का पिछला भाग। [मोहत्याग।
अपरिग्रह (सं० पु०) अस्वीकार, त्याग, विराग, संगत्याग,
अपरिचय (सं० पु०) अनजान, अज्ञात। [चान का।
अपरिचित (वि०) अज्ञात, अनजान, बे जान पह-
अपरिच्छद (वि०) वस्त्रहीन, आच्छादनहीन, नंगा, दरिद्र।
अपरिच्छिन्न (वि०) अभेद्य, खुला, मिला हुआ।
अपरिणत (वि०) ज्यों का त्यों, कच्चा, अपरिपक्व।
अपरिपक्व (वि०) जो पक्का न हो, कच्चा, ढेसर, अधकचरा, अव्युत्पन्न, अप्रौढ़, अपटु।
अपरिमित (वि०) अगणित, असंख्य, प्रचुर, असीम, अनन्त। [शोधन, अस्पष्ट।
अपरिष्कार (सं० पु०) अस्वच्छ, मैलपन, अशुद्ध, असं-
अपरीक्षित (वि०) जिसकी जांच न की गयी हो, जो परखा न गया हो, जिसकी परीक्षा न हुई हो।
अपरूप (वि०) कुरूप, बेडौल, भद्दा, अपूर्व, अद्भुत।
अपरोक्ष (वि०) समक्ष, सामने, प्रत्यक्ष।
अपर्णा (वि०) पार्वती, दुर्गा।
अपर्याप्त (वि०) थोड़ा, अल्प, अपूर्ण।
अपलज्ज (वि०) बेहया, निर्लज्ज।
अपलक्षण (सं० पु०) कुलक्षण, दोष, बुरे लक्षण।
अपलाप (सं० पु०) अपवाद, मिथ्या कथन, असत्य।
अपलोक (सं० पु०) अपयश, बदनामी, अपवाद।
अपवर्ग (सं० पु०) मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण, जन्म-मरण रहित। [लेन देन।
अपवर्तन (सं० पु०) परिवर्तन, कांट छांट, उलट फेर,
अपवश (सं०पु०) स्वाधीन, सन्मुख। [खण्डन, प्रतिवाद।
अपवाद (सं० पु०) दोष, कलङ्क, निन्दा, प्रवाद, विरोध,
अपवादक (वि०) निन्दा करने वाला, विरोधी, बाधक।
अपवादित (वि०) निन्दित, विरोधित।
अपवादी (वि०) निन्दक, विरोधी, बाधक।
अपवारण (सं० पु०) रोक, व्यवधान, ओट, आच्छादन।
अपवाहन (सं० पु०) स्थानान्तरित करना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना, भगा देना, फुसलाना।
अपवित्र (वि०) अशुद्ध, दूषित, नापाक।
अपवित्रता (सं० स्त्री०) अशुद्धता, अशौच।
अपविद्ध (वि०) त्यक्त, चूर्णित, छोड़ा हुआ, बारह प्रकार के पुत्रों में से वह पुत्र जिसको मा बाप ने त्याग दिया हो और उसका किसी दूसरे ने पुत्र के समान पालन किया हो। [में ख़र्च करना।
अपव्यय (सं० पु०) फ़ज़ूल ख़र्ची, निरर्थक व्यय, कुकर्मों
अपव्ययी (वि०) फ़ज़ूल ख़र्च करनेवाला, अधिक व्यय करनेवाला, बुरे कामों में ख़र्च करनेवाला।
अपशकुन (सं० पु०) अशुभ सूचक चिन्ह, असगुन।
अपशब्द (सं० पु०) अशुद्ध शब्द, कुवाच्य, गाली गलौज, पाद, अपान वायु।
अपसगुन (सं० पु०) बुरे सगुन, अपशकुन। [भाग जाना।
अपसना (क्रि० अ०) खसकना, सरकना, चम्पत होना,
अपसर (वि०) अपने मन का, मनमाना।
अपसव्य (वि०) दहिना, उलटा, विरुद्ध।
अपसोस (सं० पु०) सोच, चिन्ता, दुःख, फ़िक्र।
अपस्मार (सं० पु०) रोग विशेष, मृगी, मूर्च्छा।
अपस्वार्थी (वि०) मतलबी, अपना मतलब साधने वाला, खुदगरज़।
अपहरई (क्रि०) छीनता है।
अपहरण (सं० पु०) हर लेना, छीनना, चोरी, लूटपाट।
अपहरना (क्रि० स०) छीन लेना, हर लेना, चुरा लेना, लूट लेना। [लूटनेवाला।
अपहर्ता (सं० पु०) हरनेवाला, छीननेवाला, चोर,
अपहार (सं०पु०) चोरी, लूट, हरण, छिपाव, अपचय, हानि।
अपहारक (सं० पु०) चोर, हरनेवाला।
अपहारित (वि०) हरण किया हुआ, छिना हुआ, छिनाया हुआ, चोरी किया हुआ।
अपहास (सं० पु०) उपहास, ठट्ठा उड़ाना।
अपहृत (वि०) चोराया हुआ, छीना हुआ।
अपह्नव (सं० पु०) छिपाव, गोपन, बहाना, मिस, दुराव।
अपह्नुति (सं० स्त्री०) अर्थालङ्कार विशेष, कपट, नकार, गोपन, छिपाव।
अपाउ (सं० पु०) नटखटी।
अपाक (सं० पु०) अपच, अजीर्ण।
अपाकरण (सं० पु०) अलग करना, दूर करना, हटाना, अदा करना, चुकता करना।

अपाङ्ग (सं० पु०) आंख का कोन, नेत्रकोण, कटाक्ष, अङ्ग भङ्ग, अङ्गहीन ।
अपाङ्गदर्शन (सं० पु०) तिरछी निगाह से देखना ।
अपाटव (सं० पु०) अपटुता, मूर्खता, अकुशलता,अनाड़ीपन, बीमारी, मद्य, बदशक्ल (वि०) कुरूप, बीमार ।
अपात्र (वि०) कुपात्र, असत्पात्र, अयोग्य, अनारी, मूर्ख ।
अपादान (सं०पु०) विभाग,हटाव,अलगाव, पञ्चमीकारक ।
अपान (सं० पु०) गुदास्थवायु, अपान वायु, पाद ।
अपानवायु (सं० पु०) पाँच प्रकार के वायुओं में से एक वायु, पाद । [पुण्य, सुकृत ।
अपाप (सं० पु०) निष्पाप, पापरहित, अधर्मी, निर्दोष,
अपामार्ग (सं० पु०) चिचड़ी, चिचड़ा, लटजीरा, अंझाझारा, ऊंगा । [रीति, अनाचार, उपद्रव ।
अपाय (सं० पु०) क्षय, नाश, विश्लेष, अलगाव, अन-
अपायी (वि०) नश्वर, अनित्य, अस्थिर,मृत ।
अपार (वि०) पार-रहित, असीम, अनन्त, बेहद, असंख्य, अगणित, बहुत, अधिक ।
अपार्थक्य (सं०पु०) एकत्व,अभिन्नता ।
अपावन (वि०) अपवित्र, अशुद्ध, मलिन, अशुचि ।
अपाश्रय (पु०) अनाथ,दीन ।[मुक्त ,त्यागी,विरागी,विरक्त ।
अपाश्रित (वि०) एकान्तसेवी, सांसारिक वासनाओं से
अपाहिज (वि०) लूला, लङ्गड़ा, आलसी ।
अपि (अव्य०) भी, ही, निश्चय ।
अपिच (अव्य०) पुनश्च, और भी, बल्कि ।
अपितु (अव्य०) किन्तु ।
अपिधान (सं० पु०) आवरण, आच्छादन, पिहान ।
अपीन (वि०) क्षीण कृश ।
अपील (अ० सं० स्त्री०) पुनर्विचारारार्थं प्रार्थना, निवेदन, नीची अदालत के फैसला के विरुद्ध ऊंची अदालत में पुनः विचारार्थ प्रार्थना करना ।
अपीलान्ट (अं० सं० पु०) वह व्यक्ति जो अपील करे ।
अपुत्र (वि०) निःसन्तान, निर्वंश, निपूता ।
अपुनपो (सं०पु०) अपौती,अपनापन,आत्मीयता,संबन्ध ।
अपूर्ण (वि०) जो पूरा न हो,अधभरा,अधूरा,कम,असमाप्त ।
अपूर्णता (सं० स्त्री०) अधूरापन, न्यूनता ।
अपूर्णभूत (सं० पु०) क्रिया का वह भूत काल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पायी जाय । [उत्तम ।
अपूर्व (वि०) विचित्र,अद्भुत, अनोखा, अलौकिक, अनुपम,
अपूर्वता (सं० स्त्री०) विचित्रता,विलक्षणता, अनोखापन ।
अपेक्षा (सं० स्त्री०) अभिलाषा, आकांक्षा, इच्छा, चाह, आशा, आवश्यकता, भरोसा, आश्रय, तुलना ।
अपेक्षित (वि०) इच्छित, वाञ्छित, आवश्यक, ज़रूरी ।
अपेक्ष (वि०) अलक्ष, अदृष्ट, बिना देखा हुआ, अदृश्य ।
अपेच्छा (सं० स्त्री०) देखो अपेक्षा ।
अपेय (वि०) पीने के अयोग्य, जो पीने लायक़ न हो ।
अपेल (वि०) जो न टले, जो न हटे, अटल, अचल ।
अपोशान (सं० पु०) आचमन कर्म विशेष ।
अपोहन (पु०) तर्क द्वारा बुद्धि को परिमार्जित करना ।
अपौरुष (सं० पु०) कायरता, कापुरुषत्व ।
अप्रकाश (सं० पु०) अंधकार, प्रकाशाभाव ।
अप्रकाशित (वि०) जो प्रकट न हो, अंधेरा, गुप्त, छिपा, जो जनता के सामने न उपस्थित किया गया हो, जो प्रचारित न हुआ हो । [गोपनीय ।
अप्रकाश्य (वि०) जो प्रकट करने के लायक़ न हो,
अप्रकृत (वि०) कृत्रिम, बनावटी, अस्वाभाविक ।
अप्रगल्भ (वि०) अप्रौढ़, अपरिपुष्ट, निरुत्साही, आलसी, सुस्त । [न हो ।
अप्रचलित (वि०) अव्यवहृत, अप्रयुक्त, जिसका चलन
अप्रच्छन्न (वि०) अनावृत, स्पष्ट, खुला हुआ ।
अप्रणय (सं०पु०) अप्रीति, प्रेमरहित ।
अप्रताप (सं०पु०) तेजहीन । [अतुल्य ।
अप्रतिम (वि०) अद्वितीय, अनुपम, बेजोड़, असादृश्य,
अप्रतिष्ठा (सं०स्त्री०) अयश, अनादर, अपमान, अकीर्ति ।
अप्रतिष्ठित (वि०) अनादृत, अपमानित, तिरस्कृत ।
अप्रतिह (सं० पु०) अव्यतिक्रम, अनाघात ।
अप्रतीत (वि०) अविश्वासी, अज्ञान ।
अप्रत्यक्ष (वि०) आंख के ओट, परोक्ष, छिपा, अदृश्य ।
अप्रधान (वि०) गौण, कनिष्ट, साधारण, सामान्य, क्षुद्र ।
अप्रसन्न (वि०) दुःखी, उदास, असन्तुष्ट, खिन्न ।
अप्रसन्नता (सं० स्त्री०) नाराज़गी, असंतोष, उदासी, रोष, क्रोध ।
अप्रसाद (पु०) असम्मति ।
अप्रसिद्ध (वि०) अविख्यात, अप्रकट, गुप्त । [संगिक ।
अप्रस्तुत (वि०) अनुपस्थित, गौण, अप्रधान, अप्रा-
अप्रस्तुत प्रशंसा (सं० पु०) अर्थालङ्कार विशेष, इसमें अप्रस्तुत के द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाता है ।

अप्राकृत (वि०) असाधारण, अस्वाभाविक।
अप्राप्त (वि०) अलभ्य, दुर्लभ, अप्रत्यक्ष, अनागत।
अप्राप्य (वि०) न मिलने योग्य, अलभ्य।
अप्रामाणिक (वि०) प्रमाण रहित, अविश्वसनीय।
अप्रासङ्गिक (वि०) प्रसङ्ग-विरुद्ध।
अप्रिय (वि०) अनिच्छित, अनचाहा, अनभीष्ट, अहित, (सं० पु०) शत्रु, दुश्मन। [वैर।
अप्रीति (सं० स्त्री०) स्नेहशून्य, अप्रणय, अप्रेम, अरुचि,
अप्रीतिकर (सं० पु०) अरुचिकर, कठोर, निठुर।
अप्रेल (सं० पु०) अंग्रेज़ी चौथे महीने का नाम, प्रायः यह चैत्र में पड़ा करता है।
अप्रैलफूल (सं० पु०) अंग्रेज़ों का एक त्योहार।
अप्रौढ़ (वि०) अपुष्ट, कमज़ोर, छोटी अवस्था का।
अप्सरा (सं० स्त्री०) परी, स्वर्ग की वेश्या, देवांगना।
अफ़गान (अ० पु०) काबुली, अफ़गानिस्तान का निवासी।
अफ़ताब (फ़ा० सं० पु०) सूर्य।
अफ़्यून (सं० स्त्री०) अफ़ीम, अहिफेन।
अफ़्यूनी (वि०) अफ़ीमची, अफ़ीम खानेवाला। [फूलना।
अफरना (क्रि० अ०) अघाना, तृप्त होना, ऊबना, पेट
अफरा (सं० पु०) पेट फूलना, फूलना।
अफराई (सं० स्त्री०) परितृप्ति, अघाना, अफरना।
अफराना (क्रि० अ०) अघाना, तृप्त होना।
अफ़रीदी (अ० सं० पु०) पठानों की जाति विशेष।
अफल (वि०) विफल, निष्फल, फलहीन, व्यर्थ, बंध्या, बांझ।
अफला (सं० स्त्री०) आमलकी, घीकुवार, घृतकुमारी।
अफ़वाह (फ़ा० सं० स्त्री०) किंवदंती, गप्प, उड़ती ख़बर।
अफ़सर (फ़ा० सं० पु०) अधिकारी, प्रधान, हाकिम, मुखिया।
अफ़सरी (फ़ा० सं० स्त्री०) शासन, अधिकार, प्रधानता।
अफ़सोस (फ़ा० सं० स्त्री०) शोक, पश्चात्ताप, पछतावा, खेद, दुःख।
अफ़ीडेविट् (अं०सं०स्त्री०) शपथ, हलफ़नामा।
अफ़ीम (सं० स्त्री०) अहिफेन, अफू।
अफ़ीमची (सं० पु०) अफ़ीम खानेवाला।
अफुल्ल (वि०) बेखिला, अविकसित, उदास, पुष्पहीन।
अफेड़ा (सं० पु०) अहङ्कारी, मनमौजी।
अफेन (वि०) फेन रहित, बिना झाग का।
अफैलावट (सं०पु०) अविस्तार संकीर्णता।

अब (क्रि० वि०) इस समय, अभी, इस घड़ी।
अबकर्तन (पु०) चरखा, सूत्र यंत्र। [आदि का लेप
अबटन (सं० पु०) देह में लगाने के लिए सरसों, चिरौंजी
अबतईं (अव्य०) अबलों, अब तक।
अबतक (अव्य०) तुरन्त, अभी।
अबतें (अव्य०) आज तें, अभी तें।
अबतोंड़ी (अ०) इस समय तक।
अबद्ध (वि०) बिना बँधा, मुक्त, स्वच्छन्द, असंबद्ध।
अबधू (वि०) अज्ञानी, अनाड़ी, मूर्ख, (सं०पु०) साधु, संन्यासी, त्यागी।
अबधूत (सं० पु०) संन्यासी, साधु, महात्मा, योगी।
अबध्य (वि०) न मारने योग्य, जिसको मारने की व्यवस्था न हो, अपराधी होने पर भी शास्त्रानुसार जिसे प्रा[ण] दण्ड न दिया जाय, यथा गुरु, ब्राह्मण, स्त्री, बाल[क] आदि।
अबन्धित (वि०) बन्धनमुक्त, स्वेच्छाचारी, स्वच्छन्द।
अबनी (सं० स्त्री०) धरती, पृथ्वी।
अबरक (सं० पु०) एक प्रकार का धातु विशेष।
अबरख (सं० पु०) अबरक।
अबरन (वि०) अकथनीय, जिसका वर्णन न हो सके।
अबरा (फा० सं० पु०) उपल्ला, दो पल्ले, वस्त्रों के ऊप[र] का वस्त्र।
अबरी (फा० सं० स्त्री०) काग़ज़ विशेष, इस पर बाद[ल] सी धारियां बनी रहती हैं और पुस्तकों की दफ़्ती प[र] लगाया जाता है। पीले रंग का पत्थर विशेष, [य]ह जैसलमेर में होता है और इस पर पच्चीकारी क[ा] काम होता है। रंग बिरंगे बादलों के समान ए[क] प्रकार की लाह की रंगाई।
अबल (वि०) निर्बल, कमज़ोर, दुर्बल, कृश, बलहीन।
अबलख (वि०) दोरंगा, कबरा।
अबलखा (सं० स्त्री०) पत्ती विशेष।
अबला (सं० स्त्री०) स्त्री, नारी।
अबवाब (सं० पु०) कर विशेष, अधिक कर जो सरका[र] मालगुज़ारी पर लगाती है, जो अधिक कर असामि[यों] से ज़मींदार लेते हैं, घरद्वारी, पजरवट, भिटौरी।
अबाध (वि०) बे रोक, निर्विघ्न, बाधा-रहित।
अबाधित (सं० वि०) स्वतन्त्र, स्वच्छन्द, बाधाहीन।
अबाध्य (वि०) अनिवार्य, बे रोक।

अबार (सं० स्त्री०) देर, विलम्ब ।

अबीर (सं० पु०) रङ्ग विशेष । यह लाल होता है, होली पर यह लोगों के ऊपर फेंका जाता है, और मुँह में मला जाता है ।

अबुध (वि०) नासमझ, नादान, अबोध, अज्ञानी, मूर्ख ।

अबूझ (वि०) नादान, अबोध, अनारी ।

अबे (अव्य०) संबोधनार्थक अव्यय, हे, अरे ।

अबेध (वि०) जो बेधा न हो, बिना छिदा ।

अबेर (सं० स्त्री०) देर, देरी, विलम्ब, कुसमय, अतिकाल ।

अबोध (सं० पु०) अज्ञान, मूर्ख ।

अबोल (वि०) मौन, अवाक्, चुपचाप ।

अब्ज (सं० पु०) कमल, शंख, चंद्रमा, धन्वन्तरि, कर्पूर, संख्या विशेष, अरब ।

अब्जा (सं० स्त्री०) लक्ष्मी ।

अब्द (सं० पु०) संवत्सर, बर्ष, साल, बादल, आकाश, कपूर, नागरमोथा, पर्वत विशेष ।

अब्धि (सं० पु०) सागर, समुद्र, सिन्धु, अर्णव, ताल, सरोवर, सात की संख्या, ७ ।

अब्धिनगरी (सं० पु०) द्वारकापुरी । [अब्रह्मनिष्ठ ।

अब्रह्मण्य (सं० पु०) ब्राह्मणों के न करने योग्य कर्म,

अभक्त (वि०) भक्ति शून्य, श्रद्धा हीन, जो बटा न हो, जो अलग न किया गया हो, सम्पूर्ण, समूचा ।

अभक्ष (वि०) देखो अभक्ष्य ।

अभक्ष्य (वि०) न खाने योग्य, अखाद्य, अभोज्य ।

अभङ्ग (वि०) अटूट, अखण्ड, पूरा, समूचा, नाश रहित ।

अभङ्गपद (सं० पु०) श्लेषालङ्कार विशेष, इस श्लेष में अक्षरों को इधर उधर नहीं करना पड़ता और शब्दों से अन्यान्य अर्थ निकल आते हैं ।

अभय (वि०) बेडर, निर्भय, निडर, त्रासरहित ।

अभयदान (सं०पु०) भय से मुक्त करना, वचनबद्ध हो कर निर्भय करना, आश्रय देना, रक्षा करना, शरण देना ।

अभयवचन (सं० पु०) भय से रक्षा करने के लिए वचन बद्ध, भय से त्राण करना, शरण देना ।

अभया (सं० स्त्री०) निर्भया, निडर, बिना डर ।

अभरन (सं० पु०) गहना, भूषण, आभरण, अलङ्कार ।

अभरम (वि०) अचूक, अभ्रान्त, निडर, निःशङ्क ।

अभल (वि०) भला नहीं, बुरा, ख़राब ।

अभाऊ (वि०) अरुचिकर, जो अच्छा न लगे, जो न रुचे ।

अभाग (सं० पु०) बुरा भाग्य, मन्द भाग्य ।

अभागा (वि०) बदक़िस्मत, भाग्य हीन, प्रारब्ध हीन ।

अभागी (वि०) भाग्यहीन, जो सम्पत्ति के भाग का अधिकारी न हो, जिसको कुछ हिस्सा न मिले ।

अभाग्य (सं० पु०) दुर्दैव, प्रारब्धहीनता, खोटे दिन ।

अभाजन (सं० पु०) अयोग्य, अपात्र, कुपात्र, अविश्वासी ।

अभार (वि०) हल्का, लघु । [नास्ति, ध्वंस ।

अभाव (सं० पु०) अविद्यमानता, असत्त, अनस्तित्व,

अभावनीय (वि०) अचिन्तनीय, अतर्क्य ।

अभास (सं० पु०) प्रतिबिम्ब, छाया ।

अभि (उप०) उपसर्ग, यह शब्दों के पहले जोड़ा जाता है, यह निम्न लिखित अर्थों में संयुक्त होता है, सामने, समीप, बुरा, अच्छा, दूर, ऊपर, बार बार, अच्छी तरह ।

अभिक (वि०) कामुक, विषयी, लम्पट, लुच्चा, कामी ।

अभिख्या (सं० स्त्री०) कीर्ति, यश, शोभा, नाम ।

अभिगमन (सं० पु०) समीप आना, सहवास, सम्भोग, देव-स्थान को लीप पोत साफ़ सुथरा करना ।

अभिगामी (वि०) सन्निकट जानेवाला, सहवास करने वाला, सम्भोग करने वाला ।

अभिग्रह (सं० पु०) स्वीकार, ग्रहण, आक्रमण, चढ़ाई, धावा, अभियोग, गौरव, लड़ाई, झगड़ा, चोरी, लूट ।

अभिघात (सं० पु०) मार, ताड़न, प्रहार, आघात ।

अभिचार (सं० पु०) मारण, मोहन, उच्चाटन आदि उपपातक, हिंसा कर्म, मारण मन्त्र यन्त्र ।

अभिचारक (सं० पु०) यन्त्र मन्त्रादि द्वारा मारण, उच्चाटन कर्म, (वि०) मन्त्र यन्त्र द्वारा मारण मोहन आदि कर्म करनेवाला ।

अभिचारी (वि०) मारणादि कर्म करनेवाला ।

अभिजन (सं० पु०) वंश, कुल, परिवार, पूर्व पुरुषों का वास-स्थान ।

अभिजात (वि०) कुलीन, सत्कुलोत्पन्न, सद्वंशजात, उत्तम कुल में उत्पन्न, बुद्धिमान्, योग्य, मान्य, मनोहर, सुन्दर ।

अभिजित (वि०) विजयी, जेता, (सं०पु०) दिन का आठवां मुहूर्त, नक्षत्र विशेष, इसमें तीन नक्षत्र होते हैं, मुहूर्त विशेष ।

अभिज्ञ (वि) ज्ञाता, जानकार, विज्ञ, पण्डित, दक्ष, कुशल ।

अभिज्ञता (सं० स्त्री०) पाण्डित्य, नैपुण्य, विज्ञता, दक्षता ।

अभिज्ञान(सं०पु०)स्मृति,चिह्न,परिचायक,स्मरणार्थक चिह्न
अभिधा (सं० स्त्री०) शब्द की शक्ति विशेष, शब्द की वह शक्ति जिससे वह अपने यथार्थ अर्थ को निकाले ।
अभिधान (सं० पु०) संज्ञा, नाम, शब्दकोश ।
अभिधेय (सं० पु०) नाम, (वि०) वाच्य, प्रतिपाद्य, अर्थ।
अभिनन्दन (सं० पु०) सन्तोष, आनन्द, प्रशंसा, उत्तेजना, नम्र निवेदन ।
अभिनन्दन-पत्र (सं० पु०) प्रतिष्ठासूचक पत्र, सम्मान और आदरसूचक पत्र जो महान् पुरुषों के आगमन पर हर्ष और सन्तोष-प्रकाशनार्थ दिया जाता है ।
अभिनन्दनीय (वि०) प्रशंसनीय, वंदनीय ।
अभिनय (सं० पु०) स्वांग, नकल, नाट्य-क्रिया, नर्तन, नाटक का खेल, शारीरिक चेष्टा द्वारा हृदय का भाव प्रकट करना ।
अभिनव (वि०) नवीन, नया, नूतन ।
अभिनवगुप्त (सं० पु०) एक संस्कृत विद्वान का नाम, ये अलङ्कार शास्त्र के धुरंधर विद्वान थे, ये शैव-मतावलम्बी थे,संस्कृत में आठ ग्रन्थों की रचना इन्होंने की है।
अभिनिविष्ट (वि०) उपविष्ट, बैठा हुआ, लगा हुआ, धंसा हुआ, पैठा हुआ, मनोयोगी, अनुरक्त, एक चित्त लगना, मग्न ।
अभिनिवेश (सं० पु०) मनोयोग, प्रणिधान, लीनता, अनुरक्ति, प्रवेश, गति, संकल्प, तत्परता ।
अभिनेता (सं० पु०) नाटक का पात्र, स्वांगी, वह जो अभिनय करे । [योग्य नाटक ।
अभिनेय (वि०) अभिनव करने के लायक, खेलने
अभिन्न (वि०) मिला हुआ, अलग नहीं, एक, अपृथक्, संयुक्त।
अभिन्नता (सं० स्त्री०) अपृथता । [अर्थ, प्रयोजन ।
अभिप्राय (सं० पु०) मनोरथ, मतलब, आशय, तात्पर्य,
अभिप्रेत (वि०) इच्छित, अभिलषित, ईप्सित, वांछित, इष्ट, अभीष्ट । [हेठा दिखाना ।
अभिभव (सं० पु०) हार, पराजय, परास्त होना पराभव,
अभिभावक (वि०) परास्त करनेवाला, चकित करने वाला, वश में करनेवाला, संरक्षक,सहायक ।
अभिभावकता (सं० स्त्री०) सहायता, संरक्षण ।
अभिभूत (वि०) परास्त, पराजित, वशीभूत, व्याकुलित पीड़ित, अचैतन्य, विह्वल, अज्ञान ।

अभिमत (वि०) मनोनीत, इष्ट, सम्मत, अनुमत, वांछित, (सं०पु०) सम्मति, मत, राय, विचार इच्छित वस्तु । [आवाहन किया हुआ ।
अभिमन्त्रित (वि०) मन्त्र से पवित्र किया हुआ,
अभिमन्यु (सं० पु०) अर्जुन का पुत्र, इसका जन्म श्रीकृष्ण की बहिन सुभद्रा के गर्भ से हुआ था । कुरुक्षेत्र के युद्ध में इस षोडश-वर्षीय वीर बालक ने अद्भुत पराक्रम दिखाया था । इस वीर बालक के पराक्रम से कौरव सेना त्रस्त हो गयी थी, सात महारथियों ने मिलकर इस वीर को वध किया, इसी अत्याचार से कौरवों का संहार हुआ । काश्मीर के एक राजा का नाम, ईसा से दो हज़ार वर्ष पहले यह काश्मीर का शासक था,इसके शासन-समय में बौद्ध-धर्म का विस्तार काश्मीर में फैला हुआ था, काश्मीर में इसने अपने नाम से एक नगर बसाया था ।
अभिमर्षण (सं०पु०) मनन,चिन्तन,पर-स्त्री-गमन ।
अभिमान (सं० पु) गर्व,अहङ्कार,घमण्ड, मद ।
अभिमानी (वि०) घमंडी, अहङ्कारी, गर्वयुत ।
अभिमानजनक (वि०) गर्वयुक्त ।
अभिमुख (क्रि० वि०) सामने, समक्ष, सम्मुख, आगे ।
अभियुक्त (वि०) अपराधी, प्रतिवादी, जिस पर अभियोग लगाया गया हो, जिस पर मुक़द्दमा चला हो । [योग करनेवाला ।
अभियोक्ता (वि०) वादी, मुद्दई, फ़रियादी, अभि-
अभियोग (सं०पु०) किसी के विरुद्ध न्यायालय में आवेदन करना, अपराध की योजना, मुक़द्दमा, नालिश ।
अभियोगी (वि०) फ़रियादी, नालिश करनेवाला ।
अभिराम (वि०) सुन्दर, मनोहर, रम्य, प्रिय, रमणीय । [आस्वाद ।
अभिरुचि (सं० स्त्री०) चाह, प्रवृत्ति, तुष्टि, रसज्ञान,
अभिरूप (वि०)योग्य, सुन्दर, मनोहर, (सं० पु०) विष्णु, शिव, चन्द्रमा, पण्डित, कामदेव ।
अभिलषणीय (वि०) वांछनीय, सुन्दर ।
अभिलषित (वि०) इच्छित, वाञ्छित, इष्ट, ईप्सित ।
अभिलाख (सं० पु०) अभिलाषा, आकाङ्क्षा ।
अभिलाखना (क्रि० स०) चाहना, अभिलाषा करना, इच्छा करना ।
अभिलाखा (सं० पु०) अभिलाषा, इच्छा ।

अभिलाखी (वि०) अभिलाषी, अभिलाषा करनेवाला।
अभिलाष (सं० पु०) इच्छा, आकाङ्क्षा, चाह, मनोरथ।
अभिलाषा (सं० स्त्री०) इच्छा, चाह, आकाङ्क्षा, कामना।
अभिलाषी (वि०) आकाङ्क्षी, इच्छुक।
अभिलाषुक (वि०) चाहनेवाला, इच्छा करनेवाला।
अभिलास (सं० पु०) देखो अभिलाष।
अभिलासा (सं० स्त्री०) देखो अभिलाषा।
अभिवाद (सं० पु०) गाली, दुर्वचन।
अभिवादन (सं० पु०) नमस्कार, प्रणाम, वंदना, स्तुति।
अभिवादनीय (वि०) प्रणम्य, प्रणाम करने योग्य, स्तुत्य, (सं० पु०) गुरुजन, अदृश्य अवस्था को छोड़कर दृश्य अवस्था में प्राप्त।
अभिव्यक्त (वि०) प्रकटित, विज्ञापित, प्रकाशित। [करण।
अभिव्यक्ता (सं० स्त्री०) प्रकट करना, प्रकाशन, स्पष्टी-
अभिव्यक्ति (सं० स्त्री०) विज्ञापन।
अभिशाप (सं० पु०) शाप, बददुआ, अनिष्ट प्रार्थना, झूठ मूठ का दोष लगाना।
अभिषङ्ग (सं० पु०) पराजय, निन्दा, कोसना, आलिङ्गन, शपथ, भूत प्रेत का आवेग, दुःख, शोक। [रसपान।
अभिषव (सं०पु०) यज्ञस्नान, मद्य निकालना, यज्ञ, सोम-
अभिषिक्त (वि०) जिसका अभिषेक हुआ हो, मंत्रपूर्वक कुशादि से जल छिड़कना, मन्त्रित जल से स्नान, नियुक्ति, राज्यपद पर निर्वाचित।
अभिषेक (सं० पु०) सिञ्चन, छिड़काव, स्नान, कर्म में नियुक्ति, अभिमन्त्रित जल से स्नान।
अभिसम्पात (सं० पु०) क्रोध, रिस, संग्राम। [अनुचर।
अभिसर (सं० पु०) सहचर, संगी, साथी, सहायक,
अभिसार (सं० पु०) नायक या नायिका का साङ्केतिक स्थान में मिलने के लिए जाना, सहारा, बल, साधन, युद्ध।
अभिसारिका (सं० स्त्री०) नायिका का भेद विशेष, वह नायिका जो सङ्केत-स्थान में नायक से सहवास के लिए स्वयं जाय या उसको बुलाये, इसके दो भेद हैं कृष्णाभिसारिका और शुक्लाभिसारिका, जो श्वेत वस्त्र धारण करनेवाली नायिका चांदनी रात में गमन करे वह शुक्लाभिसारिका कही जाती है और जो काले वस्त्र वाली अंधियारी रात में गमन करे वह कृष्णाभिसारिका कही जाती है।
अभिसेख (सं० पु०) देखो अभिषेक।
अभिहित (वि०) कथित, उक्त, व्यक्त, प्रकाशित।
अभी (क्रि० वि०) इसी समय, इसी क्षण।
अभीक्ष्ण (सं० पु०) पुनः पुनः, बार बार।
अभीत (वि०) निर्भय, निडर।
अभीप्सित (वि०) अभिलषित, वांछित, आकांक्षित।
अभीर (सं०पु०) अहीर, ग्वाला, गोप, छन्द विशेष, इसके प्रत्येक चरण में ११ मात्राएँ होती हैं और अन्त में जगण होता है।
अभीरु (वि०) निर्भय (सं० पु०) शिव, भैरव।
अभीष्ट (वि०) अभिलषित, वांछित, इच्छित।
अभुआना (क्रि० अ०) ज़ोर से हाथ पैर और सिर हिलाना, जिससे यह मालूम हो कि कोई देव देवी आयी हैं।
अभुक्त (वि०) जो खाया हुआ न हो, जिसका व्यवहार न किया गया हो, अव्यवहृत।
अभू (अव्य०) अभी, अब, आज ही, अब ही।
अभूखन (सं० पु०) गहना, अलङ्कार, आभूषण।
अभूत (वि०) जो न हुआ हो, वर्तमान, अनोखा, अपूर्व।
अभूतपूर्व (वि०) जो प्रथम न हुआ हो, विलक्षण, अपूर्व, विचित्र, अनोखा, अद्भुत, आश्चर्य।
अभूतरिपु (सं० पु०) शत्रुहीन।
अभेद (सं० पु०) एकत्व, अभिन्नता, समानता, रूपक अलङ्कार विशेष, जिसमें उपमा और उपमेय का अभेद बिना निषेध के कहा जाय।
अभेदनीय (वि०) जो छेदा न जा सके, जिसका भेद न हो सके, अभेद्य, अखण्डनीय, (सं० पु०) हीरा।
अभेदवादी (वि०) अद्वैतवादी, जीवात्मा और परमात्मा का भेद न माननेवाला।
अभेद्य (वि०) जिसका भेद न हो, जो छेदा न जा सके, जिसमें कोई वस्तु प्रवेश न कर सके, जिसका खण्ड न हो, अभेद, अखण्डनीय।
अभेरा (सं०पु०) धक्का, प्रतिघात।
अभोज (वि०) न खाने योग्य, अभोज्य, अभक्ष्य।
अभोजन (सं० पु०) अनाहार, बिना खाए।
अभोजी (सं० पु०) अभोगी, न खानेवाला।
अभ्यङ्ग (सं० पु०) सिर से पैर तक तेल लगाना, तैलमर्दन, तेल लगाना।

अभ्यञ्जन (सं० पु०) तैल, उबटन, तैल-लेपन ।
अभ्यन्तर (सं० पु०) बीच, मध्य, हृदय, अन्तःकरण, (क्रि० वि०) भीतर, अन्दर ।
अभ्यन्तरवर्ती (सं०पु०) मध्य-वासी ।
अभ्यर्थना (सं० स्त्री०) सम्मान, आदर, विनय, सम्भाषण।
अभ्यस्त (वि०) अभ्यास किया हुआ, वह जिसने अभ्यास किया हो, निपुण, दक्ष ।
अभ्यागत (सं० पु०) अतिथि, पाहुन, मेहमान।
अभ्यास (सं० पु०) भजन, चिन्तन, साधन, आकृति, टेव, आदत ।
अभ्यासी (वि०) अभ्यास करनेवाला, साधक, चिन्तक।
अभ्युत्थान (सं० पु०) समृद्धि, उन्नति, बढ़ती, गौरव, उत्पत्ति, उदय, किसी के आने पर सम्मानार्थ उठकर खड़ा होना ।
अभ्युदय (सं० पु०) सूर्यादि ग्रहों का उदय, उन्नति, वृद्धि, बढ़ती, प्रादुर्भाव, इष्ट-सिद्धि, मनोरथ की पूर्ति ।
अभ्र (सं० पु०) मेघ, बादल, आकाश, अभ्रक, सोना ।
अभ्रक (सं० पु०) अबरक़, भोडर।
अभ्रान्त (वि०) भ्रम-शून्य, भ्रमरहित ।
अभ्रान्ति (सं० स्त्री०) भ्रम का न होना, अचंचलता, स्थिरता ।
अम (सं० पु०) आंव, रोग, (वि०) अल्प, शीघ्रता ।
अमका ढमका (वि०) अमुक, अज्ञात, गोपनीय व्यक्ति का नाम-बोधक । [ल्याण ।
अमङ्गल (वि०) मङ्गल न हो, अशुभ, दुर्लक्षण, अक-
अमङ्गलजनक (वि०) अशुभजनक, अनिष्टसूचक ।
अमचूर (सं० पु०) सुखाये आम का चूर्ण, खटाई, चूर्ण किया हुआ अमहर ।
अमड़ा (सं० पु०) वृक्ष और फल विशेष, अमारी ।
अमत (सं० पु०) मताभाव, असम्मत, रोग, मृत्यु, काल।
अमत्सर (सं० पु०) ईर्षाशून्य, मत्सर का अभाव, द्वेष का अभाव ।
अमन (अ० सं० पु०) चैन, आराम, शान्ति। [उदासीन ।
अमनाक (वि०) मन या इच्छाशून्य, अनमना,
अमनिया (वि०) पवित्र, शुद्ध, अछूत, (सं० स्त्री०) कच्ची रसोई की सामग्री, सीधा ।
अमनैक (सं०पु०) अवध-प्रान्तीय एक प्रकार के काश्त-कार जिनको वंश-परम्परा से लगान के सम्बन्ध में कुछ विशेष अधिकार मिले हैं, अधिकारी, हक़दार, सरदार ।
अमनोज (वि०) घिनौना, कुरूप ।
अमनोयोग (वि०) इच्छा के विपरीत ।
अमर (वि०) मृत्युरहित, चिरञ्जीवि, (सं० पु०) देवता, पारा, कुलिश, हड़जोड़ का वृक्ष, अस्थि-संहारक वृक्ष ।
अमरकण्टक (सं० पु०) विन्ध्य पर्वत पर एक स्थान, जहां से सोन और नर्मदा नदी निकली हुई हैं, यह हिन्दुओं का तीर्थ-स्थान है, यहां प्रतिवर्ष धूम-धाम से मेला लगता है और शिवजी की पूजा करने के लिये लोग आते हैं ।
अमरज (सं० पु०) देवता से उत्पन्न ।
अमरत्व (सं० पु०) अमरता, देवत्व, चिरजीवन ।
अमरदारु (सं० पु०) देवदार का वृक्ष
अमरद्विज (सं० पु०) पुजारी ।
अमरनाथ (सं० पु०) इन्द्र, काश्मीर में हिन्दुओं का एक तीर्थस्थान । यह श्रीनगर से ६, ७ दिन के रास्ते पर है, श्रावणी पूर्णिमा के बर्फ़-निर्मित शिवलिङ्ग का यहाँ पूजन होता है ।
अमरपख (सं० पु०) पितृपक्ष ।
अमरपति (सं० पु०) देवताओं का राजा, इन्द्र ।
अमरपद (सं० पु०) मोक्ष, मुक्ति । [स्वर्ग ।
अमरपुर (सं० पु०) देवताओं का नगर, अमरावती,
अमरबेल (सं० स्त्री०) अंबरबेल, अकाशबौंर ।
अमरलोक (सं० पु०) इन्द्रपुरी ।
अमरस (सं० पु०) अमावट ।
अमरसिंह (सं० पु०) क्षत्रिय वीर, विक्रमादित्य के नवरत्नों में थे। इन्होंने अमरकोश नामक एक छन्दोबद्ध संस्कृत कोश की रचना की है, गोरखा सेनापति १८१४—१५ ईस्वी में नैपाल के युद्ध में इसने अंगरेज़ों के दांत खट्टे कर दिये थे, बिलासपुर के राजा ने अंगरेज़ों की सहायता की, उस समय ये नैपाल की राजधानी को लौट गये और युद्ध की पूर्णाहुति हुई ।
अमरा (सं० स्त्री०) गुर्च, गिलोय, दूब, थूहर, सेहुंड नीली कोयल, बड़ा नील वृक्ष, चमड़े की झिल्ली जो गर्भ के शिशु के बदन में लिपटी रहती है, इन्द्रायण, घीकार, बरियारा ।

अमराई (सं० स्त्री०) आमबन, आम का बाग़।

अमरावती (सं० स्त्री०) इन्द्रपुरी, देवताओं की नगरी।

अमरु (सं० पु०) एक राजा का नाम, ये कवि भी थे, इन्होंने "अमरुशतक" नामक एक शृङ्गार रस के ग्रन्थ की रचना की है। [बनता है।

अमरू (सं० पु०) एक रेशमी वस्त्र विशेष जो काशी में

अमरूद (सं० पु०) फल विशेष।

अमरेश (सं० पु०) देवताओं के राजा, इन्द्र।

अमरेश्वर (सं० पु०) इंद्र, देवताओं का राजा।

अमरैया (सं० स्त्री०) देखो अमराई।

अमर्याद (वि०) मर्यादा के विरुद्ध, अप्रतिष्ठित।

अमर्यादा (सं० पु०) अप्रतिष्ठा, असम्मान, बेइज़्ज़ती।

अमर्ष (सं० पु०) क्रोध, कोप, रिस, असहिष्णुता, अक्षमा।

अमर्षण (वि०) क्रोधी, कुपित। [अमुक।

अमल (वि०) निर्मल, स्वच्छ, पवित्र, निर्दोष, (सं० पु०)

अमल (अ० सं० पु०) कार्य, व्यवहार, साधन, आचरण, नशा, मादक वस्तु, शासन, अधिकार, लत, टेव, व्यसन, समय, प्रभाव, असर।

अमलतास (सं० पु०) औषध विशेष।

अमलदारी (अ० सं० स्त्री०) अधिकार।

अमलपट्टा (सं० पु०) अधिकार-पत्र, जो प्रतिनिधि को किसी कार्य में नियुक्ति के लिए दिया जाता है।

अमलवेत (सं० पु०) लता विशेष।

अमला (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, सातला वृक्ष, पनाल आंवला, (पु०) आंवला।

अमला (अ० सं० पु०) कर्मचारी, कार्यकर्ता, दफ़्तर या कचहरी में काम करनेवाले।

अमली (अ० वि०) व्यवहारिक, काम में लानेवाला, कर्मण्य, नशेबाज़, (सं० स्त्री०) इमली, गौरुवटी, करमई।

अमहर (सं० स्त्री०) अमचूर, आम की खटाई।

अमात्य (सं० पु०) प्रधान मंत्री, दीवान, वज़ीर।

अमान (वि०) अहङ्कारशून्य, निरभिमान, सीधा सादा, अपरिमित, परिमाणरहित, अप्रतिष्ठित, अनादृत, (अ० सं० पु०) पनाह, शरण, रक्षा।

अमानत (अ० सं० स्त्री०) थाती, धरोहर।

अमानतदार (अ० सं० पु०) थाती रखनेवाला, जिसके पास धरोहर रक्खी जाय।

अमाना (क्रि० अ०) अँटना, समाना, भरना, खपना, फूलना, उभड़ना।

अमानुष (वि०) मनुष्य-शक्ति के परे, मनुष्य के सामर्थ्य के बाहर, पैशाचिक, पाशविक। [पैशाचिक।

अमानुषी (वि०) मनुष्य की शक्ति के परे, पाशविक,

अमान्य (वि०) त्याज्य, अस्वीकृत।

अमाय (वि०) निष्कपट, यथार्थ, मायाशून्य।

अमाया (वि०) निश्छल, निष्कपट निःस्वार्थ, मायारहित।

अमावट (सं० स्त्री०) आम का सूखा हुआ रस, आम का सत, आम के गूदे और रस की सुखाई रोटी।

अमावस (सं० स्त्री०) कृष्णपक्ष की अंतिम तिथि, वह तिथि जिसमें चंद्र सूर्य एक ही राशि पर हों।

अमावस्या (सं० स्त्री०) देखो अमावस।

अमावास्या (सं० स्त्री०) देखो अमावस।

अमिउ (सं० पु०) अमृत, सुधा। [स्थिर, दृढ़।

अमिट (वि०) न मिटने योग्य, न टलने योग्य, अटल,

अमित (वि०) अपरिमित, असंख्य, प्रचुर, अधिक।

अमित्र (वि०) शत्रु, बैरी, दुश्मन, जो मित्र न हो, जिसके मित्र न हों।

अमित्रभूत (सं० पु०) वैरी, शत्रु।

अमितौजा (सं० पु०) सर्वशक्तिमान।

अमिय (सं० पु०) अमृत, सुधा।

अमियमूरी (सं० स्त्री०) संजीवनी बूटी, अमृत बूटी, प्राण लानेवाली बूटी, वह बूटी जिससे व्यक्ति जी जाय।

अमिरती (सं० स्त्री०) इमरती, एक प्रकार की मिठाई।

अमिल (वि०) अप्राप्य, न पाने योग्य, बेमेल, असंबद्ध, अनमिल, जिससे हेलमेल न हो, ऊंची नीची, ऊभड़ खाभड़।

अमिश्रराशि (सं० स्त्री०) वह राशि जो इकाई द्वारा प्रकट की जाय, १ से ले कर ९ तक के अङ्क।

अमी (सं० पु०) अमृत, पीयूष।

अमीत (वि०) शत्रु, वैरी।

अमीन (अ० सं० पु०) अदालती कर्मचारी, जिसके ज़िम्मे बटवारा करना, ज़मीन नापना, डिगरी का अमल बरामद करना आदि काम रहते हैं।

अमीर (अ० सं० पु०) अफ़ग़ानिस्तान के राजा की उपाधि, उदार, धनाढ्य, कार्याधिकारी, सरदार।

अमीराना (अ० वि०) अमीरी ठाट बाट। [मंदी।
अमीरी (अ० सं० स्त्री०) उदारता, धनाढ्यता, दौलत-
अमुक (वि०) कोई, वह, फलां।
अमुक्त (वि०) जो मुक्त न हुआ हो, जो बंधनरहित न हो, अमोक्ष।
अमुग्ध (वि०) जितेन्द्रिय, जो मोहित न हो, चतुर।
अमुत्र (सं० पु०) जन्मान्तर, परलोक।
अमूर्त (वि०) निराकार, निरवयव।
अमूर्ति (वि०) निराकार, मूर्तिरहित।
अमूर्तिमान (वि०) निराकार, अगोचर।
अमूल (वि०) बेजड़वाला, निर्मूल, मूलरहित।
अमूलक (वि०) निर्मूल, मिथ्या, असत्य।
अमूल्य (वि०) अनमोल, बहुमूल्य, श्रेष्ठ, उत्तम।
अमृत (सं० पु०) समुद्र-मथन से उत्पन्न एक द्रव्य विशेष, पीयूष, सुधा, अन्न, जल, घी, दूध, यज्ञ-समाप्ति के बाद बची हुई चीज़ें, मुक्ति, औषध, विष, बछनाग, पारा, अयाचित द्रव्य, मधुर वस्तु, हृद्य, मीठी वस्तु।
अमृतकर (सं० पु०) चन्द्रमा, निशाकर।
अमृतकुण्डली (सं० स्त्री०) एक प्रकार का बाजा, एक छन्द विशेष।
अमृतजटा (सं० स्त्री०) जटामासी।
अमृतदीधिति (सं० पु०) चन्द्रमा।
अमृतधारा (सं० स्त्री०) वर्णवृत्त विशेष, इसके प्रथम चरण में २०, द्वितीय में १२, तृतीय में १६ और चतुर्थ में ८ अक्षर होते है।
अमृतध्वनि (सं० स्त्री०) एक यौगिक छन्द, यह २४ मात्राओं का होता है, इसके आदि में एक दोहा रहता है, दोहासहित इसके छः चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में द्वित्व सहित तीन यमक रहते हैं।
अमृतफल (सं० पु०) परवर, नाशपाती। [मुनक्का।
अमृतफला (सं० स्त्री०) आंवला, अङ्गूर, दाख, द्राक्ष,
अमृतवल्ली (सं० स्त्री०) गुर्च, गुडूची लता, गिलोय।
अमृतवान (सं० पु०) एक मिट्टी का पात्र विशेष, इस पर लाह का रोगन किया रहता है, इसमें घी अचार आदि रक्खा जाता है।
अमृतविंदु (सं० पु०) अथर्ववेदीय उपनिषद्।
अमृतरसा (सं० स्त्री०) अंगूर।
अमृतलता (सं० स्त्री०) गुर्च, गिलोय, गुडूची।
अमृतसम्भवा (सं० स्त्री०) गुर्च, गिलोय।
अमृतसार (सं० पु०) मक्खन, घी, नवनीत।
अमृतस्रवा (सं० स्त्री०) केला, लता विशेष।
अमृतांधस (सं० पु०) देवता।
अमृतांशु (सं० पु०) चन्द्रमा। [हड़, पीपल, निसोत, मद्य।
अमृता (सं० स्त्री०) गुर्च, दूब, इंद्रायण, तुलसी, आंवला
अमृती (सं० स्त्री०) लुटिया, मिठाई विशेष।
अमृष्य (वि०) असह्य, असन्तव्य।
अमेठना (क्रि० स०) ऐंठना, उमेठना।
अमेधा (वि०) मूर्ख, अज्ञान, निर्बुद्धि।
अमेध्य (वि०) अपवित्र, दुष्ट।
अमोघ (सं० पु०) अव्यर्थ, अचूक, निष्फल न होनेवाला
अमोघवीर्य (सं० पु०) अखण्ड तेज।
अमोरी (सं० स्त्री०) अंबिया, आम के टिकोरे।
अमोल (वि०) अमूल्य।
अमोलक (वि०) अमूल्य, बहुमूल्य।
अमोला (सं० पु०) आम का नया उत्पन्न पौधा।
अमौआ (सं० पु०) आम के रङ्ग का, यह कई प्रकार का होता है, सोनहला, पीला, किशमिशी मूँगिया, माशी आदि, रंगा कपड़ा। [मिथ्या, अयथार्थ।
अमौलिक (वि०) निर्मूल, बेजड़, बिना आधार का,
अम्बक (सं० पु०) नेत्र, नयन, ताँबा, पिता।
अम्बत (सं० पु०) खट्टा, अम्ल, खटाई।
अम्बर (सं० पु०) आकाश, वस्त्र, कपास।
अम्बरीष (सं० पु०) शिव, सूर्य, राजा विशेष।
अम्बल (वि०) खट्टा।
अम्बा (सं० स्त्री०) मा, माता, जननी, दुर्गा।
अम्बारी (सं० स्त्री०) हौदा।
अम्बालिका (सं० स्त्री०) माता, काशिराज की स्त्री।
अम्बिया (सं० पु०) टिकोरा, छोटा आम।
अम्बु (सं० पु०) जल, पानी।
अम्बुकण (सं० पु०) ओस, शीत।
अम्बुज (सं० पु०) कमल, पद्म, सरोज।
अम्बुजन्म (सं० पु०) कमल, पद्म अम्भोज,।
अम्बुद (सं० पु०) मेघ, बादल।
अम्बुधर (सं० पु०) बादल।
अम्बुधि (सं० पु०) समुद्र, सागर।
अम्बुनिधि (सं० पु०) समुद्र।

अम्बुवाह (सं० पु०) मेघ बादल।
अम्भस् (सं० पु०) जल, पानी।
अम्भसोज (सं० पु०) कमल, चन्द्रमा, सारस पक्षी।
अम्भसोद (सं० पु०) बादल, जलद, मेघ।
अम्भसोधर (सं० पु०) मेघ, बादल।
अम्भसोधि (सं० पु०) समुद्र, सागर।
अम्भसोनिधि (सं० पु०) समुद्र, जलधि।
अम्मा (सं० स्त्री०) माता, मा, जननी।
अम्मारी (सं० स्त्री०) हाथी का हौदा, अम्बारी।
अम्ल (सं० पु०) खटाई, खट्टा, तुर्श।
अम्लपित्त (सं० पु०) एक प्रकार का रोग विशेष।
अम्लवेत (सं० पु०) देखो अमलवेत। [निर्मल, साफ़।
अम्लान (वि०) जो मलिन न हो, प्रसन्न, हृष्ट, ताज़ा,
अम्ली (सं० स्त्री०) इमली।
अम्हौरी (सं०स्त्री०) छोटी छोटी फुन्सियां जो गर्मी के दिन में निकल आती हैं, अन्धौरी।
अयं (सर्व०) यह।
अयःपिण्ड (सं० पु०) लोहे का गोला।
अयत्न (सं० पु०) यत्नरहित, औदास्य, निरुद्योग।
अयथार्थ (वि०) यथार्थ नहीं, मिथ्या, असत्य, झूठा, अनुचित, अंधेर, अन्याय।
अयन (सं० पु०) साल का आधा भाग, सूर्य का उत्तरायण और दक्षिणायण होना, गमन, गति, मार्ग, आश्रय। [अयनभाग।
अयनांश (सं० पु०) सूर्य की गति विशेष का काल भाग,
अयश (सं० पु०) कलङ्क, निंदा, अकीर्ति, अपयश।
अयशकर (सं० पु०) बदनामी करनेवाला।
अयशस्वी (पु०) अप्रसिद्ध।
अयशी (वि०) बदनाम, अकीर्तिमान्।
अयस (सं० पु०) लोहा।
अयस्कान्त (सं० पु०) चुंबक। [काम, सन्तुष्ट।
अयाचक (वि०) न मांगनेवाला, अयाची, पूर्ण-
अयाचित (वि०) बिना मांगा, अप्रार्थित। [धनी।
अयाची (वि०) न मांगनेवाला, अयाचक, सम्पन्न,
अयान (वि०) अबूझ, नासमझ, नादान।
अयानप (सं० पु०) अनजानपन, लड़कपन, अज्ञानपन।
अयाना (वि०) मूर्ख, अबोध। [गर्दन पर का बाल।
अयाल (फा० सं० पु०) सिंह घोड़े आदि जानवरों के
अयुक्त (वि०) अयोग्य, अनुचित, असङ्गत, अनमन।
अयुत (सं० पु०) दस सहस्रवां, दस हज़ारवां।
अयुध (सं० पु०) अस्त्र शस्त्र, हथियार।
अये (सं० पु०) क्रोध, मद, भयादि-द्योतक अव्यय।
अयोग (सं० पु०) योग का अभाव, कुसमय, कठिनाई। अप्राप्ति, फूट, अनैक्य।
अयोगव (सं० पु०) वर्ण सङ्करी, जाति विशेष, वह जाति जो वेश्या के गर्भ से शूद्र से उत्पन्न हुई हो।
अयोग्य (वि०) अनुपयुक्त, नालायक़, बेकाम, अकुशल, अपात्र, अनुचित।
अयोध्या (सं० पु०) सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी, वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि इस नगर के अधिष्ठाता वैवस्वत मनु थे, इस नगर में भगवान श्री रामचंद्र ने जन्म लिया था।
अयोनि (वि०) जो उत्पन्न न हुआ हो, नित्य, अजन्मा।
अरई (सं० स्त्री०) बैल हांकने की छड़ी, पैना।
अरकना बरकना (क्रि० अ०) ऐंचातानी करना, इधर उधर करना।
अरक्षित (वि०) जिसकी रक्षा न की गई हो।
अरगजा (सं० पु०) एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, यह चन्दन, कपूर, केसर आदि से बनता है, और अङ्गों में लगाया जाता है।
अरगनी (सं० स्त्री०) रस्सी, बांस या लकड़ी जो कपड़े रखने के लिए किसी स्थान पर बांधी या लटकायी जाय।
अरघ (सं० पु०) षोडसोपचार में से एक उपचार, फूल, दूध, या जल, जो किसी देवता के सामने गिराया जाय, अर्घ्य। [निकालने का एक यन्त्र।
अरघट्ट (सं० पु०) अरहट, रेहटा, पानी का चरखा, पानी
अरघा (सं० पु०) अरघ देने का पात्र।
अरचन (सं० पु०) पूजन।
अरचना (क्रि० स०) पूजा करना। [चौड़ाई।
अरज़ (अ० सं० स्त्री०) विनती, प्रार्थना, निवेदन,
अरज़ी (अ० सं० स्त्री०) आवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र, निवेदन-पत्र। [किया जाता है।
अरज़ीदावा (सं०पु०) प्रार्थना-पत्र जो अदालत में पेश
अरजुन (सं० पु०) देखो अर्जुन।
अरझना (क्रि० अ०) उलझना, बझना, फँसना।

अरणि (सं० स्त्री०) काष्ठ विशेष जिसमें से रगड़कर आग निकाली जाती है, और वही आग यज्ञ के काम आती है।
अरण्ड (सं० पु०) रेंड, अण्डीवृक्ष।
अरण्य (सं० पु०) बन, जंगल, कानन।
अरण्यरोदन (सं० पु०) ऐसी पुकार जिसका कोई सुनने वाला न हो, ऐसी रुलाई जिसका सुननेवाला न हो, ऐसी बात जिस पर कोई ध्यान न दे।
अरदास (सं० स्त्री०) निवेदन सहित भेंट, शुभ कर्म में देवता की प्रार्थना कर उसके निमित्त कुछ भेंट निकालना, शुभ कर्म में नानक-पंथियों की प्रार्थना।
अरपन (सं० पु०) अर्पण, चढ़ाव, भेंट। [देना।
अरपना (क्रि० स०) अर्पण करना, चढ़ाना, भेंट करना,
अरब (सं० पु०) सौ करोड़, इन्द्र, घोड़ा।
अरबराना (क्रि० अ०) घबड़ाना, हड़बड़ाना।
अरमान (सं० पु०) इच्छा, अभिलाषा, चाह।
अरर (अव्य०) घबड़ाहट और अचम्भे में यह शब्द एकाएक मुंह से निकल आता है।
अररना दररना (क्रि० स०) मलना, दलना, पीसना।
अरराना (क्रि० स०) अरर शब्द करना।
अरवल (सं० पु०) घोड़े के कान की जड़ में गर्दन की ओर की भौंरी, दोनों ओर होने से यह शुभ और एक ओर होने से अशुभ समझी जाती है।
अरवा (सं० पु०) बिना भूने और उबाले धान से निकाला हुआ चावल।
अरविन्द (सं० पु०) कमल, पङ्कज।
अरवी (सं० स्त्री०) घुइयां, बंडा।
अरस (वि०) निरस, फीका, गंवार।
अरसट्टा (सं० पु०) निरख, परख, आँकाव।
अरसन परसन (सं० पु०) देखो अरस परस।
अरसना परसना (क्रि० स०) भेंटना, मिलना, छूना, आलिङ्गन करना।
अरस परस (सं० पु०) एक प्रकार के लड़कों का खेल, आंखमुदौवल, आंखमिचौनी, छूआ छूई, देखना, दर्शन, स्पर्शन।
अरसा (अ० सं० पु०) समय, अतीतकाल, देर, विलम्ब।
अरसात (सं० पु०) एक प्रकार का वृत्त इसमें २४ अक्षर, सात भगण और एक रगण होता है।
अरसाना (क्रि० अ०) निद्राग्रस्त होना, अलसाना।
अरसिक (वि०) जो कविता का मर्म न समझे, अरसज्ञ।
अरसी (सं० स्त्री०) तीसी, अलसी।
अरसीला (वि०) आलस्य से परिपूर्ण।
अरसौंहा (वि०) आलस्यपूर्ण, आलस्य से भरा।
अरहट (सं०पु०) देखो अरघट्ट।
अरहन (सं० पु०) साग आदि पकाते समय जो बेसन या आटा मिलाया जाय।
अरहना (सं० स्त्री०) पूजा, अर्घा। [तुअर।
अरहर (सं० स्त्री०) अन्न विशेष, इसकी दाल होती है,
अराजक (वि०) राजाशून्य, राजाहीन।
अराजकता (सं० स्त्री०) राजा का अभाव, हलचल, उत्पात, अंधेर, अशान्ति।
अराति (सं० पु०) शत्रु, वैरी, ६ की संख्या, अर्चना करना।
अराधना (क्रि० स०) उपासना करना, पूजा करना,
अरारा (सं० पु०) दानेदार, दरदरा।
अरि (सं० पु०) शत्रु, वैरी, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, चक्र, विट, खदिर। [वाला।
अरिन्दम (वि०) विजयी, जयी, शत्रु को परास्त करने
अरियाना (क्रि० स०) तिरस्कार करना, अरे कहना।
अरिल्ल (सं० पु०) छन्द विशेष, इसमें सोलह मात्रायें, दो लघु या एक यगण होता है।
अरिष्ट (सं० पु०) सौरी, सूतिका-गृहतक्र, छाछ, क्लेश, दुःख, विपत्ति, अमङ्गल, अशुभ लक्षण, मरणात्मक योग, लहसुन, नीम, काक, कौआ, गिद्ध, मद्य विशेष, काढ़ा, रीठे का वृक्ष, लङ्का के समीप एक पर्वत, एक ऋषि का नाम, एक राक्षस का नाम, इसका बध श्रीकृष्ण ने किया था, वृषभासुर।
अरिष्टनेमि (सं० पु०) कश्यप प्रजापति का नाम, सगर राजा के श्वशुर का नाम, सोलहवाँ प्रजापति।
अरी (अव्य०) सम्बोधनार्थक अव्यय, इसका प्रयोग स्त्रियों के लिए होता है।
अरीठा (सं० पु०) रीठा।
अरु (अव्य०) और, फिर, पुनः।
अरुई (सं०स्त्री०) देखो अरवी। [अग्निमांद्य रोग।
अरुचि (सं० स्त्री०) अनिच्छा, अश्रद्धा, जी मचलाना,
अरुचिकर (वि०) रुचिकर नहीं, जो अच्छा न लगे।
अरुझना (क्रि० अ०) फँसना, उलझना।
अरुझाना (क्रि० स०) फंसाना, उलझाना।

अरुण (वि०) लाल, रक्त (सं० पु०) सन्ध्या समय की ललाई, सूर्य, वृक्ष, कुष्ट रोग, पुन्नाग वृक्ष, एक दानव का नाम, एक आचार्य का नाम, ये उद्दालक ऋषि के पिता थे, एक झील का नाम, यह झील हिमालय के इस पार है, एक प्रकार के पुच्छल तारे। सूर्य का सारथी जो गरुड़ का बड़ा भाई था, यह विनता के गर्भ से कश्यप से उत्पन्न हुआ था, इसकी स्त्री का नाम श्येनी था इसके दो पुत्र थे सम्पाति और जटायु।

अरुणकमल (सं० पु०) लाल कमल।

अरुणलोचन (सं० पु०) लाल नेत्र, कबूतर, भोजन।

अरुणशिखा (सं० पु०) मुर्ग़ा, कुक्कुट।

अरुणाई (सं० स्त्री०) लाल रंग, ललाई, रक्तता।

अरुणसारथी (सं० पु०) सूर्य का सारथी।

अरुणोदय (सं० पु०) वह समय जब प्रातःकाल के सूर्योदय की ललाई पूर्व में दीख पड़े, उषा काल, भोर, ब्राह्म मुहूर्त।

अरुन्तुद (सं० पु०) नाशक अपथ्य।

अरुन्धति (सं० स्त्री०) दक्ष की एक कन्या, इसका व्याह धर्म से हुआ था, वशिष्ट मुनि की स्त्री, एक छोटा तारा, यह सप्तर्षि मण्डल में वशिष्ट के पास उगता है। मरने के छः महीने पहले पहल यह तारा दिखायी नहीं पड़ता।

अरे (अव्य०) सम्बोधनार्थक अव्यय।

अरेब (सं० पु०) पाप, दोष,

अरोक (वि०) अबाध्य, न रुकनेवाला।

अरोग (वि०) निरोग, रोगरहित, चङ्गा।

अरोचक (सं० पु०) एक प्रकार का अरुचि रोग।

अरोड़ा (सं० पु०) खत्रियों की एक जाति विशेष।

अर्क (सं० पु०) आदित्य, सूर्य, इन्द्र, ताम्र, ताम्बा, विष्णु, स्फटिक, आक, मदार, पण्डित, बड़ा भाई, रविवार, रांग, बारह की संख्या, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र, किसी वस्तु का सार।

अर्कट (सं० स्त्री०) सावधानी।

अर्कतनय (सं०पु०) कर्णराज, सावर्णि, यम, शनि, मनु।

अर्कव्रत (सं० पु०) व्रत विशेष, यह माघ शुक्ल सप्तमी को पड़ता है, सूर्य के जल लेने के समान राजा का प्रजा से कर लेकर उनकी वृद्धि में उसे लगाना।

अर्गनि (सं० पु०) देखो अरगनि।

अर्गजा (सं० पु०) देखो अरगजा।

अर्गल (सं०पु०) किवाड़े में ओट देने के लिए एक लकड़ी, अरगल, व्योंडा, अवरोध, किवाड़, खील, हुक, कल्लोल, रंग विरंगे बादल जो सूर्योदय और सुर्यास्त के समय पूर्व या पश्चिम में दिखायी देते हैं।

अर्गला (सं० स्त्री०) किल्ली, सिटकनी, अरगल, सीकड़, सांकल जिसमें हाथी बांधा जाता है, एक स्तोत्र जिसका पाठ दुर्गा सप्तशती के पाठ के पहले किया जाता है, मत्स्यसूक्त, बाधक, अवरोधक।

अर्गली (सं० स्त्री०) भेड़ की एक जाति विशेष, यह मिश्र स्याम आदि देशों में पायी जाती हैं।

अर्घ (सं० पु०) जलदान, अर्घ देने की सामग्री, पूजा का उपहार, पूजा में जल देना, भेंट। [पात्र, जलहरी।

अर्घा (सं० पु०) अर्घ देने का पात्र, तर्पण करने का

अर्घ्य (वि०) पूजनीय, भेंट, उपहार, पूजा में देने योग्य (जल, फूल आदि,) उत्तम, बहुमूल्य। [वाला।

अर्चक (वि०) पूजक, पूजा करनेवाला, अर्चना करने

अर्चन (सं० पु०) पूजन, पूजा, सत्कार, आदर।

अर्चना (क्रि० स०) पूजा करना, आदर सत्कार करना।

अर्चनीय (वि०) पूजनीय, आदरणीय।

अर्चा (सं० स्त्री०) अराधना, पूजा, प्रतिमा।

अर्चि (सं० स्त्री०) आँच, ज्योति।

अर्चित (वि०) पूजित, आदृत, (सं० पु०) विष्णु।

अर्चिरादि-मार्ग (सं० पु०) उत्तर मार्ग, देवयान, जिस मार्ग से मुक्त जीव भगवान के पास पयान करते हैं।

अर्चिष्मान (सं० पु०) सूर्य, अग्नि (वि०) दीप्तिमान।

अर्च्य (वि०)पूजनीय।

अर्ज़ (अ० सं० पु०) विनय, प्रार्थना, चौड़ाई।

अर्जक (सं० पु०)कमानेवाला।

अर्ज़दाश्त (फ़ा० सं० स्त्री०) प्रार्थना-पत्र, आवेदन-पत्र।

अर्जन (सं० पु०) उपार्जन, कमाना, संग्रह। [पाने योग्य।

अर्जनीय (वि०) उपार्जनीय, संग्रहणीय, लेने योग्य,

अर्जित (वि०) उपार्जित, संगृहीत, कमाया हुआ।

अर्ज़ी (अ० सं० स्त्री०) प्रार्थना-पत्र, निवेदन-पत्र।

अर्ज़ीदावा (अ० सं० स्त्री०) वह प्रार्थना-पत्र जो अदालत दीवानी या माल में पेश किया जाय।

अर्जुन (सं० पु०) एक वृक्ष विशेष, तृतीय पाण्डव, ये पाण्डु के क्षेत्रज पुत्र थे, कुन्ती के गर्भ से इन्द्र से इन

की उत्पत्ति हुई थी। ये अपने समय के धुरन्धर धनुर्विद्या के ज्ञाता थे। इनके जोड़ का उस समय और कोई न था; स्वयं श्रीकृष्ण भगवान् इनके सारथी थे। शिव को प्रसन्न कर इन्होंने पाशुपतास्त्र पाया था। इन्द्र के पास स्वर्ग में जाकर इन्होंने अस्त्र-विद्या सीखी थी। द्रौपदी, सुभद्रा, और चित्राङ्गदा ये तीन इनकी स्त्रियाँ थीं। इन्होंने उल्लूपि नामक नाग-कन्या से भी अपना विवाह किया था। हैहयवंशी एक राजा, सहस्रार्जुन, मोर, सफ़ेद कनैल, एकलौता पुत्र।

अर्णव (सं० पु०) सागर, समुद्र, इन्द्र, सूर्य, अन्तरिक्ष, चार की संख्या, दण्डक वृत्त का भेदविशेष, इसके प्रत्येक चरण में २ नगण और ६ रगण होते हैं।

अर्णवपोत (सं० पु०) जहाज़, बड़ी नाव।

अर्णवयान (सं० पु०) जहाज़।

अर्थ (सं० पु०) अभिप्राय, तात्पर्य, मतलब, माने, शब्दाभिप्राय, शब्द का बोध्य, शब्द-शक्ति, धन।

अर्थकर (वि०) लाभकारी, जिससे धन उपार्जित हो।

अर्थगौरव (सं० पु०) किसी शब्द में अर्थ की गम्भीरता।

अर्थज्ञ (सं० पु०) मर्मज्ञ।

अर्थज्ञान (सं० पु०) तात्पर्य, धन, बोध (अव्य०) फलतः।

अर्थदण्ड (सं० पु०) जुर्माना, किसी अपराध में धन का दण्ड।

अर्थपति (सं० पु०) कुबेर, राजा, धनवान्।

अर्थपर (सं० पु०) कृपण, शङ्कित।

अर्थपिशाच (वि०) धन-लोलुप, धन-संग्रह में कर्तव्याकर्तव्य का विचार न करनेवाला।

अर्थवाद (सं० पु०) काल्पनिक, स्तुति, प्रशंसा। [जानना।

अर्थविज्ञान (सं० पु०) सम्पत्तिशास्त्र, अर्थशास्त्र, अर्थ

अर्थशाली (वि०) धनवान।

अर्थशास्त्र (सं० पु०) जिस शास्त्र में अर्थ की प्राप्ति, वृद्धि और रक्षा की व्यवस्था हो, सम्पत्ति-शास्त्र।

अर्थात् (अव्य०) वस्तुतः, फलतः, यानी।

अर्थान्तर (सं० पु०) अन्यार्थ, भिन्न अर्थ, दूसरा मतलब।

अर्थान्तरन्यास (सं० पु०) काव्यालङ्कार विशेष, इसमें विशेष से सामान्य और सामान्य से विशेष का वैधर्म्य या साधर्म्य द्वारा समर्थन किया जाता है।

अर्थापत्ति (सं० पु०) एक प्रकार का प्रमाण जिसमें एक बात के कहने से अन्य बात की सिद्धि स्वयं हो जाय।

अर्थालङ्कार (सं० पु०) अर्थालङ्कार विशेष, जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखलाया जाय।

अर्थी (सं० पु०) धनी, याचक, इच्छा रखनेवाला, वादी, सेवक, रथी, मृत व्यक्ति को श्मशान में ले जाने की खाट।

अर्दावा (सं० पु०) घोड़े आदि जानवरों के खिलाने के लिये मोटा दरा हुआ अन्न, दलिया, मोटा आटा।

अर्दित (वि०) दलित, पीड़ित, याचित, गत।

अर्द्ध (वि०) आधा, सम दो भाग, बराबर दो भाग।

अर्द्धचन्द्र (सं०पु०) अर्द्धेन्दु, आधा चाँद, अष्टमी का चाँद, पुच्छस्थ, मयूर, नखक्षत, गलहस्त, चन्द्रबिन्दु (ँ)।

अर्द्धनारीश (सं० पु०) महादेव, हरगौरी।

अर्द्धनिमेष (सं० पु०) आधा क्षण।

अर्द्धमागधी (सं० स्त्री०) प्राकृत का एक भेद, पटना और मथुरा के मध्य वाले देशों की प्राचीन भाषा।

अर्द्धवृत्त (सं० पु०) वृत्त का आधा भाग, व्यास और परिधि के आधे भाग से घिरा हुआ वृत्त का भाग।

अर्द्धरात्र (सं० स्त्री०) आधी रात, महानिशा।

अर्द्धसमवृत्त (सं० पु०) वह वृत्त जिसका प्रथम चरण तृतीय के और द्वितीय चतुर्थ के बराबर हो।

अर्द्धाङ्ग (सं० पु०) आधा अङ्ग, पक्षाघात, लकवा।

अर्द्धाङ्गिनी (सं० स्त्री०) स्त्री।

अर्द्धाङ्गी (सं० पु०) शिव, महादेव।

अर्पण (सं० पु०) समर्पण, भेंट, दान, नज़र।

अर्पना (क्रि० स०) देना, समर्पण करना, दान करना।

अर्ब (सं० पु०) दश कोटि।

अर्बखर्ब (सं० पु०) असंख्यात्, असंख्य।

अर्बदर्ब (सं० पु०) धनदौलत, धन, सम्पत्ति।

अर्वाक (अव्य०) नीचे, आगे।

अर्बुद (सं० पु०) दस करोड़, आबू पहाड़, एक दैत्य का नाम, कद्रुपुत्र एक साँप, बादल, मेघ, दो महीने का गर्भ, रोगविशेष।

अर्भ (सं० पु०) शिशु, शिशिर ऋतु, सागपात, शिष्य।

अर्भक (सं० पु०) शिशु, थोड़ा, छोटा, पतला, दुबला, अनाड़ी, मूर्ख। [उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र।

अर्यमा (सं० पु०) सूर्य, मदार, पितरों में सर्वश्रेष्ठ,

अर्राटा (सं० पु०) एक ही समय गिरना।

अर्राना (क्रि० अ०) एकबारगी गिरना।

अर्रारा (सं० पु०) अकस्मात् गिरना, अररा कर गिरना।

अर्वाचीन (वि०) नवीन, आधुनिक, नया।
अर्श (सं० पु०) बवासीर।
अर्शपर्श (सं० पु०) छुआछूत।
अर्ह (वि०) पूजनीय, उपयुक्त, योग्य, श्रेष्ठ, उत्तम।
अर्हन्त (सं०पु०) जिन, जैनियों के एक तीर्थङ्कर का नाम।
अल (सं० पु०) आभरण, गहना, बहुतायत, पर्याप्त, व्यर्थ बिच्छू का डंक, विष। [बाल, बाल।
अलक (सं० पु०) अँगुठिया बाल, घुघुराले केश, लच्छेदार-
अलक़तरा (अ० सं० पु०) पत्थर के कोयले को गलाकर उसमें से निकाला हुआ एक तरल गाढ़ा पदार्थ।
अलकनन्दा (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम, यह हिमालय से निकली है, गंगा के धारा में आकर मिल गयी है।
अलकलड़ैता (वि०) प्यारा, लाड़ला।
अलका (सं० स्त्री०) कुबेर का नगर।
अलकापति (सं० पु०) कुबेर, धनवान्।
अलकावली (सं० स्त्री०) केशपुंज, बालों की लटें।
अलक्त (सं० पु०) लाह, लाख, महावर।
अलक्षण (सं० पु०) अशुभ लक्षण, कुलक्षण।
अलक्ष्य (वि०) दृष्टि के परे, अदृश्य, अगोचर।
अलख (वि०) अगोचर, अनदेखा।
अलखनामी (सं० पु०) एक साधुओं का सम्प्रदाय विशेष; ये गोरखनाथ के अनुयायी होते हैं, गेरुवा वस्त्र पहनते हैं, अलख-अलख कहकर भिक्षा माँगते हैं, भिक्षा के लिए ये कहीं रुकते नहीं।
अलग (वि०) पृथक्, भिन्न, जुदा।
अलगनी (सं० स्त्री०) देखो अरगनी। [न हो।
अलग़रज़ (अ० वि०) लापरवाह, जिसको कुछ परवाह
अलग़रज़ी (वि०) लापरवाही, बेमतलब। [करना।
अलगाना (क्रि० स०) पृथक् करना, हटाना, छाँटना, दूर
अलगोजा (सं० पु०) एक तरह की बाँसुरी।
अलङ्कार (सं० पु०) गहना, भूषण, ज़ेवर।
अलङ्कृत (वि०) आभूषित, सुशोभित।
अलङ्ग (सं० पु०) ओर, तरफ़, पार।
अलतनी (सं० स्त्री०) हाथी का बागडोर।
अलता (सं० पु०) आलता, लाख, लाह, महावर।
अलबत्ता (अव्य०) निःसन्देह।
अलबेला (सं० पु०) बाँका, छैला, गुंडा।
अलभ्य (वि०) जो न मिले, अप्राप्य, दुर्लभ।
अलम् (अव्य०) पूरा, परिपूर्ण, यथेष्ट। [बेख़बर, बेहोश।
अलमस्त (फ़ा० वि०) मतवाला, मदमाता, निश्चिन्त,
अलमारी (सं० स्त्री०) बड़ा-खड़ा सन्दूक़, जिसमें पोथी-पत्रा या खाने-पीने की चीज़ें रक्खी जाती हैं।
अलर्क (सं० पु०) पगला कुत्ता, श्वेत अर्क, सफ़ेद मदार, एक पुराने ज़माने का राजा, इसने अपनी दोनों आंखें एक अन्धे ब्राह्मण को दे दी थीं।
अललटप्पू (वि०) अंडबंड, अटकलपच्चू।
अललबछेड़ा (सं० पु०) घोड़े का बच्चा, जो जवानी पर हो, नादान आदमी।
अलवान (सं० पु०) ओढ़ने के लिए ऊनी चादर
अलस (वि०) आलसी, निरुद्यमी।
अलसती (सं० स्त्री०) आलस्य, सुस्ती, शैथिल्य।
अलसाना (क्रि० अ०) औंघाना, झपकी लेना।
अलसी (सं० स्त्री०) तीसी, अरसी।
अलसेट (सं० पु०) भुलावा, चमका, टालमटोल, बाधा।
अलसेटिया (वि०) टालमटोल करनेवाला, बाधक।
अलहदा (अ० वि०) अलग, पृथक्।
अलान (सं० पु०) हाथी बाँधने का खूँटा।
अलाप (सं० पु०) राग, स्वर।
अलापना (क्रि० स०) तान मारना, गाना, बोलना।
अलाव (सं० पु०) धूनी, कौड़ा।
अलि (सं० पु०) बिच्छू, भँवरा, मद्य, सखी।
अली (सं० स्त्री०) संगिनी, साथिनी, सहचरी।
अलीक (वि०) झूठ, मिथ्या, बेतुकी।
अलील (अ० वि०) रोगी, बीमार।
अलेख (वि०) लिखने के अयोग्य।
अलेखी (वि०) अन्यायी, बेढब।
अलैक पलवा (सं० पु०) व्यर्थ प्रलाप, बकवाद।
अलैया बलैया (सं० स्त्री०) न्योछावर।
अलोकना (क्रि० स०) देखना, ताकना।
अलोना (वि०) अनोना, लवणरहित, स्वादहीन।
अलोप (वि०) गुप्त, लुप्त, प्रकट, नष्ट, बिगाड़ा।
अलोल (वि०) अचल, स्थिर, अटल। [अजीब।
अलौकिक (वि०) लोकातीत, लोकोत्तर, विलक्षण, अनोखा,
अल्प (वि०) किञ्चित, थोड़ा, कुछ, छोटा, न्यून, काव्यालङ्कार विशेष, जिसमें आधेय से आधार की अल्पता हो।

अल्पप्राण (सं० पु०) जिन वर्णों के उच्चारण में प्राण-वायु का उपयोग कम किया जाय, व्यञ्जन वर्ग का प्रथम, तृतीय, पञ्चम और य, र, ल, व, ये अल्पप्राण कहे जाते हैं।
अल्पबुद्धि (वि०) नासमझ, कमसमझ।
अल्पायु (वि०) जल्दी मरनेवाला, जिसकी उम्र थोड़ी हो, चन्द रोज़ जीनेवाला।
अल्पाहार (सं० पु०) थोड़ा खाना।
अल्लमगल्लम (सं० पु०) प्रलाप, अंडबंड, अगड़-बगड़।
अल्लाना (क्रि० अ०) ख़ूब ज़ोर से चिल्लाना।
अल्हड़ (वि०) कच्ची उम्र वाला, थोड़ी अवस्था वाला, अनारी, अदक्ष, अचतुर।
अव (उप०) यह उपसर्ग शब्दों के पहले जोड़ा जाता है, नीचे लिखे अर्थों में यह प्रयुक्त होता है—अवज्ञा, व्याप्ति, अनादर, अल्पता, निश्चय।
अवकथन (सं० पु०) स्तुति, उपासना।
अवकर्तन (सं० पु०) चरखा, सूत कातने का यन्त्र।
अवकर्षण (सं० पु०) उद्धार, बाहर खींचना। [अवसर।
अवकाश (सं० पु०) सावकाश, छुट्टी, समय, सुभीता,
अवकीर्ण (वि०) विक्षिप्त, बिखेरा हुआ।
अवकीर्णी (सं० स्त्री०) व्रतभ्रष्ट।
अवकुञ्चन (क्रि० स०) टेढ़ा करना।
अवकुण्ठन (सं० पु०) साहसरहित होना, लज्जित होना।
अवक्तव्य (वि०) अकथनीय।
अवकेशी (वि०) वन्ध्या, बाँझ।
अवक्रन्दन (सं० पु०) ख़ूब ज़ोर से रोना।
अवक्रुष्ट (वि०) निन्दित।
अवखण्डन (क्रि० स०) खनना, गोड़ना। [जाना हुआ।
अवगत (वि०) परिचित, विदित, ज्ञात, पहिचाना हुआ,
अवगतना (क्रि० स०) पहले से सोचना, विचारना।
अवगति (सं० स्त्री०) समझ, बुद्धि, धारणा।
अवगाढ़ (वि०) निमग्न, प्रविष्ट, घुसा, निमज्जित।
अवगाह (सं० पु०) निमज्जन, स्नान। [छानबीन, थाह लगाना।
अवगाहन (सं० पु०) जल में पैठकर नहाना, पैठना,
अवगुण (सं० पु०) दोष, दुर्गुण, खोटे गुण।
अवगूहन (सं० पु०) प्रेमालिङ्गन, अङ्गस्पर्श।
अवग्रह (सं० पु०) शाप-ग्रहण।
अवघट (वि०) कुघाट, ऊँचा नीचा, अंडबंड, अटपट।
अवघात (सं० पु०) चोट, प्रहार, घात। [कठिनाई, संकट।
अवचट (सं० पु०) अचक्का, औचक, अंडस, असमञ्जस,
अवचर (क्रि० वि०) औचक, अचानक, एकबारगी।
अवचेष्टा (सं० स्त्री०) अनाड़ीपन, मन्द चेष्टा।
अवच्छिन्न (वि०) पृथक्, सीमाबद्ध, विशेषणयुक्त।
अवज्ञा (सं० स्त्री०) अपमान, अवहेलना, अनादर, तिरस्कार।
अवज्ञात (वि०) अपमानित, तिरस्कृत। [पकाना।
अवटना (क्रि० स०) तरल पदार्थ को आग पर चुराना,
अवडेरि (क्रि० वि०) धोका देकर, बहकाकर।
अवढर (वि०) नीच पर भी दया करनेवाला। [टीका।
अवतंस (सं० पु०) कनफूल, कर्णफूल, मुकुट, गहना,
अवतरण (सं० पु०) उतरना, जन्म लेना, पार होना, नक़ल, स्वाँग, उद्धरण, अनुवाद, प्रादुर्भाव, घाट, सीढ़ी।
अवतरणिका (सं० स्त्री०) भूमिका, वक्तव्य।
अवतरना (क्रि० अ०) प्रकट होना, उत्पन्न होना, पैदा होना, उपजना, जन्म लेना, उतरना, प्रकटित होना।
अवतार (सं० पु०) देवता का मनुष्य-शरीर में उत्पन्न होना, शरीरान्तर धारण करना, चौबीस अवतार माने जाते हैं, उनमें दस प्रधान अवतार ये हैं—मत्स्य कूर्म, बाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि। [लिया हुआ, उत्तीर्ण, उपस्थित।
अवतीर्ण (वि०) आविर्भूत, उत्पन्न, जन्मा हुआ, अवतार
अवदात (वि०) शुभ्र, श्वेत, स्वच्छ, गौर।
अवदान (सं० पु०) शुद्धाचरण, पवित्र कर्म, बल, शक्ति निर्मल। [एक जाति।
अवदीच (सं० पु०) गुजरात के रहनेवाले ब्राह्मणों की
अवध (सं० पु०) एक प्रान्त, इसकी राजधानी अयोध्या थी, कोशल, अवधि, सीमा। [समाधि, ध्यान।
अवधान (सं० पु०) मनोयोग, सावधानी, चौकसी,
अवधारण (सं० पु०) निर्णय, निश्चय, निर्धारण।
अवधि (सं० पु०) सीमा, निर्दिष्ट काल, (अव्य०) तक, से, पर्यन्त। [नष्ट, विनष्ट।
अवधूत (सं० पु०) योगी, साधु, संन्यासी, तप, कंपित,
अवनत (वि०) पतित, अधोगत, विनीत, नम्र।
अवनति (सं० स्त्री०) अधःपात, दुर्गति, विनय, नम्रता।
अवनि (सं० स्त्री०) धरती, पृथ्वी।
अवनी (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती।
अवन्ति (सं० स्त्री०) वर्तमान उज्जैन का प्राचीन नाम,

इसकी गणना सप्त पुरियों में है, महाराज विक्रमादित्य की यहीं राजधानी थी।
अवन्द्य (वि०) वन्दन के योग्य नहीं, अप्रणम्य, अपूज्य।
अवभास (सं० पु०) प्रकाश, ज्ञान, माया, प्रपन्च।
अवभृथ (सं० पु०) यज्ञ विशेष।
अवमत (वि०) तिरस्कृत, अपमानित, निन्दित।
अवमान (सं० पु०) बदनामी, दुर्नाम अपमान, अयश।
अवमानना (सं० स्त्री०) अनादर, तिरस्कार, बदनाम।
अवमानित (वि०) तिरस्कृत, अनादृत।
अवमूर्द्ध (सं० पु०) अधोमस्तक, अधः शिर।
अवयव (सं० पु०) शरीर का अंग, भाग, हिस्सा, एक [अंग।
अवर (वि०) अन्य, और, अधम, मन्द, नीच, छुद्र।
अवराधक (वि०) पूजक, सेवक, उपासना करनेवाला, ध्यानी।
अवराधना (क्रि० स०) पूजा करना, उपासना करना, [सेवा करना।
अवरि (क्रि० वि०) चक्कर खाकर।
अवरुद्ध (वि०) बन्द, रुका, छिपा, गुप्त।
अवरेख (सं० पु०) लेख, लकीर, रेखा, प्रतिज्ञा।
अवरेखना (क्रि० स०) लिखना, चित्रित करना।
अवरेव (सं० पु०) देखो औरेब।
अवरोध (सं० पु०) बाधा, अड़चन, रुकावट, घेर, छेक, बंद, अनुरोध, रनवास, अन्तःपुर।
अवर्तमान (वि०) अनुपस्थित, ग़ैरहाज़िर, अभाव।
अवलम्ब (सं० पु०) सहारा, अधार, शरण, आश्रय।
अवलम्बन (सं० पु०) अधार, सहारा, शरण।
अवलम्बनीय (वि०) अवलम्बन योग्य।
अवलम्बित (वि०) निर्भर, आश्रित, सहारे पर स्थित, [ठहरा, टिका हुआ।
अवलम्बी (वि०) सहारा लेनेवाला, आश्रय लेनेवाला।
अवली (सं० स्त्री०) समूह, पाँति, कतार, पंक्ति।
अवलेह (सं० पु०) चाटनेवाली वस्तु, चटनी, वह औषधि जो घोरी जाय।
अवलेहन (सं० पु०) चाटना, चीखना, जीभ से स्वाद [लेना, चटनी।
अवलोकन (सं० पु०) ताकना, देखना, दर्शन, निरीक्षण, जाँच, परीक्षण।
अवलोकना (क्रि० स०) ताकना, देखना।
अवलोकिय (क्रि० स०) देखिये।
अवश (वि०) लाचार, परवश।
अवशिष्ट (वि०) शेष, बाकी, बचा-खुचा।
अवशेष (वि०) शेष, (सं० पु०) अन्त, समाप्ति।
अवशेषित (क्रि० वि०) बचा हुआ।
अवश्य (क्रि० वि०) निश्चय, ज़रूर, निस्सन्देह।
अवश्यमेव (क्रि० वि०) निश्चय, अवश्य।
अवश्यम्भावी (वि०) निश्चय होनेवाला, ध्रुव।
अवसन्न (वि०) नाशमान, विषादयुक्त, खिन्न।
अवसर (सं० पु०) काल, समय, सावकाश।
अवसान (सं० पु०) विराम, सीमा, अन्त, मृत्यु, सन्ध्या।
अवसि (क्रि०वि०) देखो अवश्य।
अवसेर (सं० स्त्री०) विलम्ब, देर, रुकावट, उलझन, [हैरानी, बेचैनी, दुःख।
अवस्था (सं० स्त्री०) दशा, गति, समय, काल, आयु, स्थिति।
अवस्थात्रय (सं० पु०) जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति ये तीन अवस्थायें।
अवस्थान (सं० पु०) स्थान, वास, सत्ता, स्थिति।
अवस्थापन (सं० पु०) प्रतिष्ठित करना, स्थापना करना।
अवस्थान्तर (सं० पु०) दूसरी अवस्था।
अवस्थित (वि०) विद्यमान, वर्तमान, उपस्थित।
अवहित (वि०) एकचित्त, सावधान।
अवहित्था (सं० स्त्री०) चतुराई से अपने को छिपाना, [गोपन करना, छद्मवेष।
अवहेला (सं० स्त्री०) निरादर, तिरस्कार।
अवाई (सं० स्त्री०) आगमन।
अवाक् (वि०) स्तम्भित, चकित, स्तब्ध, चुप, मौन।
अवाङ्मुख (वि०) अधोमुख, लज्जित, नीचे मुख किए हुये।
अवाची (सं० स्त्री०) दक्षिण दिशा।
अवाच्य (वि०) कुवाच्य, न कहने योग्य बात।
अवाज़ (सं० स्त्री०) शब्द, ध्वनि।
अवाधी (वि०) बाधाहीन।
अवाध्य (सं० पु०) अतर्क्य।
अवां (सं० पु०) पजावा, कजावा, आँवाँ।
अवांर (सं० स्त्री०) विलम्ब, अत्याचार।
अवारा (वि०) इधर उधर घूमनेवाला, लम्पट।
अवास (सं० पु०) वास, निवास स्थान, घर।
अविकल (वि०) शान्त, ज्यों का त्यों, पूर्ण, यथार्थ।
अविकल्प (वि०) निःसन्देह, असंदिग्ध।
अविकार (वि०) विकारशून्य, दोषरहित।
अविकारी (वि०) बिना विकार का, निर्विकारी।
अविचल (वि०) अटल, अचल, स्थिर।
अविचार (सं० पु०) अविवेक, अत्याचार, अन्याय, [विचाररहित।
अविचारित (वि०) अविवेकित, बिना विचारा।

अविचारी (वि०) अविवेकी, विचारशून्य। [अटूट।
अविच्छिन्न (वि०) जो छिन्न न हुआ हो, बराबर,
अविज्ञ (वि०) विज्ञ नहीं, अनभिज्ञ, अप्रवीण।
अविज्ञता (सं० स्त्री०) अप्रवीणता, अनभिज्ञता।
अवितर्कित (वि०) बिना तर्क का, निश्चय, निस्सन्देह।
अविदित (वि०) बिना विदित, अज्ञात, अजान, अख्यात, गुप्त।
अविद्य वि०) नष्ट, अनभिज्ञ। [असत्य, मिथ्या, असत्।
अविद्यमान (वि०) विद्यमानता का अभाव, अनुपस्थित,
अविद्या (सं० स्त्री०) मोह, माया, मूर्खता, अज्ञानता।
अविनय (सं० पु०) विनयशून्य, उद्दण्डता, धृष्टता।
अविनश्वर (वि०) नाश न होनेवाला, स्थायी, सदा रहनेवाला।
अविनाशी (वि०) अविनश्वर, अक्षय, नित्य।
अविनासी (वि०) अक्षय, शाश्वत, नित्य।
अविनीत (वि०) उच्छृङ्खल, अन्यायी, ढीठ, चपल, दुष्ट।
अविमुक्त (वि०) मुक्तिरहित, अव्यक्त। [निरन्तर।
अविरत (वि०) निरन्तर, विरामशून्य। (क्रि०वि०) लगातार,
अविरल (वि०) सघन, घना, अविच्छिन्न।
अविरोध (सं० पु०) अनुकूलता, समानता, द्वेषशून्य।
अविरोधी (सं० पु०) हेली-मेली, मित्र, हित।
अविलम्ब (सं० पु०) तत्क्षण, शीघ्र, तुरन्त।
अविवेक (सं० पु०) विवेकरहित, अज्ञान, अविचार।
अविवेकी (वि०) अविचारी, अज्ञानी, मूर्ख, अनारी।
अविशेष (सं० पु०) विशेषशून्य, सदृश, सामान्य।
अविश्वास (सं० पु०) विश्वासरहित, अप्रतीति।
अविश्वासी (वि०) विश्वास न करने योग्य।
अवैतनिक (वि०) बिना वेतन पर काम करनेवाला।
अव्यक्त (वि०) जो स्पष्ट न हो, अगोचर।
अव्यक्तराग (वि०) फीका लाल, अरुण, हलका लाल, श्वेत, सफ़ेद, गौर।
अव्यय (सं० पु०) शिव, विष्णु, परमात्मा, वे शब्द जो सदा एक समान रहते हैं, विभक्ति, वचन, लिङ्ग आदि से उनमें विकार नहीं होता। (वि०) अनश्वर, विकार रहित, सत्, नित्य।
अव्ययीभाव (सं० पु०) समास का एक भेद, वह समास जिसमें अव्यय के साथ उत्तर पद समस्त हो।
अव्यग्र (वि०) घबराहट-रहित।
अव्यर्थ (वि०) व्यर्थ न होनेवाला, अमोघ, अचूक।
अव्यवस्था (सं० स्त्री०) स्थिति का अभाव, नियमाभाव, शास्त्र-अविहित व्यवस्था, विधिविहीन।
अव्यवस्थित (वि०) अनियमित, चंचल।
अव्याप्ति (सं० स्त्री०) व्याप्तिशून्य, न्याय-शास्त्र में एक लक्षण-दोष-भेद, लक्षण का लक्ष्य पर न घटना।
अव्याहत (सं० पु०) बेरोक, बिना बाधा।
अव्वल (वि०) मुख्य, प्रथम, उत्तम।
अशकुन (सं० पु०) कुसगुन, सगुन, अशुभ लक्षण।
अशक्त (वि०) दुर्बल, असमर्थ, निर्बल।
अशक्ति (सं० स्त्री०) दुर्बलता, क्षीणता, निर्बलता।
अशक्य (वि०) शक्ति के परे, असाध्य।
अशङ्क (वि०) निडर, निर्भय, शङ्करहित, निःशङ्क।
अशन (सं० पु०) आहार, भोजन, खाना, अन्न।
अशनि (सं० पु०) वज्र, विद्युत।
अशम (सं० पु०) क्षुब्ध, अशान्ति।
अशम्बल (वि०) बिना राह ख़र्च के।
अशम्य (वि०) विराम अयोग्य, विश्रामाभाव, अविश्रान्ति।
अशरण (वि०) निरावलम्ब, अवलम्बहीन, अनाश्रय।
अशरफ़ी (फ़ा० सं०स्त्री०) मोहर, सोने का सिक्का विशेष
अशराफ़ (फ़ा० वि०) भलामानुस, भला आदमी, श्रेष्ठ।
अशरीर (सं० पु०) शरीर-रहित, कामदेव।
अशान्त (वि०) अधीर, चंचल, असन्तुष्ट, उत्पाती।
अशान्ति (सं० स्त्री०) असन्तोष, हलचल, उत्पात।
अशावरी (स्त्री०) रागिनी विशेष।
अशासित (वि०) शासनरहित।
अशास्त्र (वि०) शास्त्र-विरुद्ध।
अशास्त्रीय (वि०) वेद-विरुद्ध।
अशिक्षित (वि०) अनपढ़, गँवार, बिना पढ़ा-लिखा, अनभिज्ञ।
अशिर (सं० पु०) हीरा, सूर्य, अग्नि, राक्षस।
अशिरस्क (सं० पु०) मस्तकरहित, कबन्ध।
अशिव (वि०) अशुभ, अमङ्गल।
अशिशिर (वि०) उष्ण, ग्रीष्म।
अशिश्विका (सं० स्त्री०) अनपत्य, पुत्र-कन्यारहित स्त्री।
अशिष्ट (वि०) असभ्य, गँवार, अनारी।
अशिष्टता (सं० स्त्री०) उद्दण्डता, असभ्यता, असाधुता।
अशुचि (वि०) अपवित्र।
अशुद्ध (वि०) अपवित्र, अपरिष्कृत, ग़लत, त्रुटियुक्त।

अशुद्धि (सं० स्त्री०) अशौच, अपवित्रता, ग़लती ।
अशुभ (सं० पु०) अमंगल, अनिष्ट, अहित, पाप ।
अशुभ चिन्ता (सं० स्त्री०) बुरा चिन्तन ।
अशुभ दर्शन (सं० पु०) अमङ्गल दर्शन, मन्द लक्षण ।
अशून्यशयनव्रत (सं० पु०) विष्णु का व्रत विशेष, यह व्रत सावन वदी दूज को होता है ।
अशेष (वि०) पूर्ण, पूरा, समग्र, सम्पूर्ण, सब ।
अशेषज्ञ (वि०) सब जाननेवाला ।
अशेषतः (क्रि० वि०) सब तरह से ।
अशेष विशेष (क्रि० वि०) सर्व प्रकार ।
अशोक (वि०) शोकहीना (सं० पु०) वृक्ष विशेष, भारत के प्रसिद्ध मौर्यवंशी चक्रवर्ती राजा, ये बिन्दुसार के पुत्र थे और चन्द्रगुप्त के पौत्र, इनका दूसरा नाम था पियदरशी या प्रियदर्शी, ये पचीस वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठे, पहले ये हिन्दू-धर्मावलम्बी और बौद्धों के कट्टर विरोधी थे, बुद्धगया के बोधिद्रुम को इन्होंने कटवा डाला था, पर अन्त में ये बौद्ध-धर्मावलम्बी हो गये, बौद्ध-धर्म का प्रचार इन्होंने ख़ूब किया, बौद्ध-सभा का दूसरा अधिवेशन इनके ही समय में हुआ था, इन्होंने धर्मप्रचार के लिए बड़े-बड़े नगरों में स्तम्भ पर अपनी आज्ञायें खोदवाकर गड़वा दी थीं ।
अशोच (सं० पु०) शान्ति, अशुद्धता ।
अशोचनीय, अशोच्य (वि०) शोक के अयोग्य।
अशोभन (वि०) मन्द कुदृश्य ।
अशोभनीय (वि०) बुरा ।
अशोभा (सं० स्त्री०) कुरूप, असुन्दरता ।
अशौच (सं० पु०) अशुद्ध, अपवित्रता ।
अशौर्य (वि०) भीरु, डरपोक ।
अश्म (सं० पु०) पर्वत, पत्थर, बादल । [वस्तु ।
अश्मज (सं० पु०) शिलाजीत, लोहा, पर्वत से उत्पन्न
अश्मरी (सं० स्त्री०) पथरी, मूत्रकृच्छ्र ।
अश्रद्धा (सं० स्त्री०) श्रद्धारहित, अभक्ति, घृणा ।
अश्रद्धेय (वि०) अविश्वासी, घृणित ।
अश्रान्त (वि०) अथक, स्वस्थ, निरन्तर ।
अश्राव्य (वि०) कर्णकटु, सुनने के अयोग्य ।
अश्रि (सं० स्त्री०) धार, नोक, तीक्ष्णता ।
अश्रु (सं० पु०) आँसू ।
अश्रुत (वि०) अनसुना, अज्ञात । [विचित्र ।
अश्रुतपूर्व (वि०) पहले नहीं सुना हुआ, अद्भुत, अनोखा,
अश्रुपात (सं० पु०) आँसू बहाना, रोना ।
अश्लील (वि०) लज्जास्पद, फूहड़ ग्राम्य भाषा, काव्य का एक दोष, काव्य में ऐसे शब्दों को लाना जिनको सुन कर, लज्जा, घृणा या अमङ्गल सूचित हो, इसके तीन भेद हैं—लज्जा-व्यञ्जक, घृणा-व्यञ्जक और अमङ्गल-व्यञ्जक । [नक्षत्रों से बना है ।
अश्लेषा (सं० स्त्री०) राशिचक्र का नवाँ नक्षत्र, यह छः
अश्लेषाभव (सं० पु०) केतु ग्रह ।
अश्व (सं० पु०) घोड़ा, तुरङ्ग ।
अश्वगंध (सं० स्त्री०) असगंध ।
अश्वतर (सं० पु०) खच्चर, सर्प विशेष, नागराज ।
अश्वत्थ (सं० पु०) पीपल ।
अश्वत्थामा (सं० पु०) द्रोणाचार्य का पुत्र, मालवराज इन्द्रवर्मा के हाथी का नाम ।
अश्वपति (सं० पु०) घोड़ों का स्वामी, घुड़सवार ।
अश्वमेध (सं० पु०) एक प्रकार का यज्ञ, इस यज्ञ में घोड़े की चर्बी से हवन किया जाता था, घोड़े के सिर पर विजय-पत्र बाँधकर घोड़ा छोड़ दिया जाता था, और उसके साथ सेना जाती थी, यज्ञ करनेवाले की जो अधीनता नहीं मानते थे, वे इस घोड़े को बाँध लेते थे, घोड़े के साथ वाली सेना उनको परास्त कर घोड़ा छुड़ा लेती थी, इस प्रकार समस्त भूमण्डल में घोड़ा अपनी इच्छानुसार घूम कर आता था, तब यज्ञ होता था ।
अश्ववार (सं० पु०) घोड़े का चढ़वइया, घुड़सवार।
अश्वशाला (सं० स्त्री०) अस्तबल, घुड़साल ।
अश्वसेन (सं० पु०) तक्षक का पुत्र, नाग विशेष सनत्कुमार ।
अश्वारूढ़ (सं० पु०) असवार, घुड़चढ़ा । [हुआ ।
अश्वारोही (सं० पु०) घुड़सवार, सवार, घोड़े पर चढ़ा
अश्विनी (सं० स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में का प्रथम नक्षत्र, इसमें तीन नक्षत्र होते हैं, इसका रूप घोड़े के मुख के समान होता है, घोड़ी ।
अश्विनीकुमार (सं० पु०) देवताओं के वैद्य, इनकी माता का नाम प्रभा था, प्रभा सूर्य का तेज न सह सकी, वह वहाँ से भागकर घोड़ी का रूप धर तप करने लगी।

जब यह बात सूर्य को मालूम हुई तो वे घोड़ा का रूप धर कर उसके पास गये, उससे भोग किया, इससे दो अश्विनीकुमार उत्पन्न हुए। [नक्षत्र में पड़े।

अषाढ़(सं०पु०)असाढ़,वह महीना जिसकी पूर्णिमा पूर्वाषाढ़

अष्ट (सं० पु०) आठ।

अष्टक (सं० पु०) अष्ट पदार्थों का संग्रह।

अष्टका (सं० पु०) अष्टमी, अगहन, पूस, माघ और फागुन, इन महीनों के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, इन दिनों में श्राद्ध करने से पितर बहुत सन्तुष्ट होते हैं।

अष्टधातु (सं० स्त्री०) आठ धातु, सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, पारा, ये आठ धातु हैं।

अष्टप्रहर (सं० पु०) आठ पहर।

अष्टवसु (सं० पु०) आठ देव विशेष,आप,ध्रुव, सोम,धव, अनिल, अनल, प्रत्यूष,प्रभास।

अष्टमी (सं० स्त्री०) आठवीं तिथि।

अष्टमूर्ति (सं० स्त्री०) शिव की अष्ट विधि मूर्ति विशेष।

अष्टसिद्धि (सं० स्त्री०) योग की आठ सिद्धियाँ।

अष्टाङ्ग (सं० पु०) आठ अङ्ग।

अष्टादश (वि०) संख्या विशेष, अठारह, १८।

अष्टादशधान्य (सं० पु०) अठारह प्रकार के अन्न; यथा-यव, गोधूम, धान्य, तिल, गंगु, कुलित्थ, माष, मृद्ग, मसूर, निष्पाव, श्याम, सर्षप, गवेधुक, नीवार, अरहर, तीना, चना, चीनी।

अष्टादशपुराण (सं० पु०) अठारह पुराण; यथा—ब्राह्म, पाद्म, विष्णु, शैव, भागवत, नारदीय, मार्कण्डेय, आग्नेय, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिङ्ग, बाराह, स्कन्द, वामन, कौर्म, मात्स्य, गारुड़ और ब्रह्माण्ड।

अष्टादश विद्या (सं० पु०) अठारह विद्या; यथा—छः अङ्ग, चार वेद, मीमांसा, न्याय, पुराण, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व और अर्थशास्त्र।

अष्टादश स्मृतिकार (सं० पु०) अठारह स्मृतियों के बनाने वाले; यथा—विष्णु, पराशर, दक्ष, संवर्त, व्यास हरीत, शातातप, वशिष्ठ, यम, आपस्तम्ब, गौतम, देवल, शङ्ख, लिखित, भारद्वाज, उशना, अत्रि और याज्ञवल्क्य। [बनी हुई पाचन की गोलियाँ।

अष्टादशाङ्ग (सं० पु०) अठारह औषधियों के मिलने से

अष्टादशोपचार (सं० पु०) पूजा की अठारह सामग्रियाँ।

अष्टादशोपपुराण (सं० पु०) अठारह उपपुराण; यथा—(१) सनत्कुमार (२) नारसिंह (३) नारदीय (४) शिव (५) दुर्वासा (६) कपिल (७) मानव (८) औशनस (९) वरुण (१०) कालिक (११) शांब (१२) नन्दा (१३) सौर (१४) पराशर (१५) आदित्य (१६) माहेश्वर (१७) भार्गव(१८) वासिष्ठ।

अष्टि (सं० स्त्री०) गुठली, बीज।

असंख्य (वि०) अनगिनत, अपार, अपरिमित।

असङ्गत (वि०) अयुक्त, अनुचित।

असङ्ग्रह (सं० पु०) सञ्चयहीन।

असंयोग (वि०) अनमेल, भिन्न।

असंलग्न (वि०) अमिल, असङ्गत।

असंशय (वि०) निःसन्देह।

अस (क्रि० वि०) ऐसा, इस प्रकार से, इस ढंग से।

असकत (सं० स्त्री०) आलस्य।

असकताना (क्रि० अ०) आलस्य करना।

असकती (वि०) आलसी।

असकृत (अव्य०) पुनः पुनः, बार बार।

असगंध (सं० पु०) अश्वगंध।

असज्जन (सं० पु०) दुष्ट, खल, कुपात्र, दुर्जन।

असती (सं० स्त्री०) दुराचारिणी, कुलटा।

असत् (वि०) अस्तित्वरहित, सत्ताहीन, अधर्मी, खोटा, दुर्जन, दुष्टजन। [असम्मान।

असत्कार (सं० पु०) निरादर, अपमान, अप्रतिष्ठा,

असत्य (वि०) झूठ, मिथ्या।

असत्यवादी (वि०) झूठा, झूठ बोलनेवाला।

असन्तुष्ट (वि०) अतृप्त, अप्रसन्न।

असन्तोष (सं० पु०) सन्तोषरहित, अपरितोष।

असबाब (सं० पु०) सामान, सामग्री।

असभ्य (वि०) उजड्ड, अशिष्ट, गँवार, अपात्र, नीच।

असभ्यता (सं० स्त्री०) गँवारपन, अशिष्टता, दुष्टता।

असम (वि०) विषम, अतुल्य, ऊभड़-खाबड़।

असमक्ष (वि०) आँख से परे, अगोचर, परोक्ष।

असमग्र (वि०) अपूर्ण, अल्प, अधूरा।

असमञ्जस (वि०) अड़चन, दुविधा, असङ्गत, आगा-पीछा।

असमय (सं० पु०) दुःखका समय, (क्रि० वि०) अनवसर, कुअवसर, अकाल, दुर्भिक्ष।

असमर्थ (वि०) दुर्बल, क्षीण, निर्बल।

असमवायि कारण (सं० पु०) न्यायदर्शनानुसार वह

कारण जो द्रव्य न हो, गुण या कर्म हो, वैशेषिक के अनुसार वह कारण जिसका कर्म से नित्य सम्बन्ध न हो किन्तु आकस्मिक हो।
असमसाहस (सं० पु०) दुःसाहस, शक्ति से बाहर साहस।
असमाधि (सं० स्त्री०) अचिन्ता।
असमान (वि०) समान नहीं, अतुल्य, (सं० पु०) अवकाश।
असमापिका क्रिया (सं० स्त्री०) जिस क्रिया से वाक्य पूरा न हो।
असमाप्त (वि०) अपूर्ण, अधूरा।
असम्बद्ध (वि०) बेमेल, अनमेल।
असम्भव (सं० पु०) सम्भव नहीं, अनहोनी।
असम्मत (वि०) विरुद्ध, असहमत।
असम्मान (सं० पु०) अनादर, असत्कार।
असयाना (वि०) सीधा सादा, भोला।
असर (सं० पु०) दबाव, प्रभाव।
असल (अ० वि०) ख़ालिस, सच्चा, खरा, श्रेष्ठ, शुद्ध।
असलियत (अ० सं० स्त्री०) सार, तत्व, तथ्य।
असली (वि०) खरा, सच्चा।
असवार (सं० पु०) अश्ववार, घुड़सवार।
असवारी (सं० स्त्री०) सवारी।
असहन (वि०) असह्य, असहिष्णु, (सं० पु०) वैरी, शत्रु।
असहनशील (वि०) असहिष्णु।
असहनशीलता (सं० स्त्री०) असहिष्णुता।
असहाय (वि०) निरावलम्ब, बिना आश्रय का।
असहिष्णु (वि०) असहनशील।
असहिष्णुता (सं० स्त्री०) असहनशीलता।
असही (वि०) द्वेषी।
असह्य (वि०) जो सहने योग्य न हो।
असाढ़ (सं० पु०) वर्ष का चौथा मास, अषाढ़।
असाधारण (वि०) असामान्य।
असाधु (वि०) खल, दुष्ट, अधर्मी, पापी।
असाध्य (वि०) दुष्कर, कठिन, दुष्प्राप्य। [बे समय।
असामयिक (वि०) अनियत, समय पर न होने वाला,
असामर्थ्य (सं० पु०) निर्बलता, कमज़ोरी।
असामी (सं० पु०) अभियुक्त, काश्तकार, देनदार।
असार (वि०) निःसार, तत्वरहित, शून्य, तुच्छ, खाली।
असावधान (वि०) अचेत, अनिश्चिन्त।
असावधानी (वि०) लापरवाही, बेख़बरी।
असावरी (सं० स्त्री०) रागिनी विशेष।
असि (सं० स्त्री०) तलवार, खड्ग।
असिद्ध (वि०) अधूरा, अपूर्ण, अनबना।
असीम (वि०) अगाध, अपार।
असील (वि०) असल, अव्वल, सच्चा, खरा।
असीस (सं० स्त्री०) आशीर्वाद।
असु (सं० पु०) प्राण, जीवात्मा।
असुर (सं० पु०) राक्षस, दानव, दैत्य।
असुस्थ (वि०) रोगी।
असूझ (वि०) भूल, अन्धकार, अदृश्य।
असूया (सं० स्त्री०) ईर्षा, पराये गुण में दोष लगाना।
असूर्यम्पश्या (सं० स्त्री०) पर्देनशीन, जिसको सूर्य भी न देखे, पर्दे में रहनेवाली।
असृक् (सं० पु०) रक्त, रुधिर।
असेसर (अं० सं० पु०) वह व्यक्ति जो फ़ौजदारी के मामलों में न्यायाधीश को फ़ैसले में सलाह देने के लिए चुना जाता है।
असैली (वि०) शैली-विरुद्ध।
असौं (सं० पु०) इस वर्ष, इम्साल।
असोच (वि०) सोच-विहीन, निश्चिन्त।
असोज (सं० पु०) कुआर, आश्विन।
अस्त (वि०) तिरोहित, लुप्त, छिपा हुआ, डूबा हुआ, नष्ट, अस्ताचल, अदर्शन, तिरोधान, मृत्यु।
अस्तगिरि (सं० पु०) पर्वत विशेष, अस्ताचल। [वस्त्र।
अस्तर (सं० पु०) नीचे का पल्ला, दोहरे वस्त्र में नीचे का
अस्तरकारी (सं० स्त्री०) सफ़ेदी, पलास्तर। [विक्षिप्त।
अस्तव्यस्त (वि०) छिन्नभिन्न, तितर-बितर, व्याकुल,
अस्ताचल (सं० पु०) पर्वत विशेष।
अस्त्र (सं० पु०) हथियार, शस्त्र, आयुध।
अस्त्रचिकित्सक (सं० पु०) अस्त्र के द्वारा रोग दूर करने वाला, फोड़ा आदि चीर-फाड़ करनेवाला, जर्राह।
अस्त्रविद्या (सं० स्त्री०) अस्त्र चलाने की विद्या, धनुर्वेद।
अस्थायी (वि०) स्थायी नहीं, अल्पकाल रहनेवाला, चन्द रोज़ के लिए।
अस्थि (सं० पु०) हाड़, हड्डी।
अस्थिर (वि०) चपल, चंचल, अस्थायी।
अस्थिरता (सं० स्त्री०) चपलता, चञ्चलता, अनिश्चय।
अस्थिरमना (वि०) डावाँडोल चित्तवाला, चंचल चित्त का।

अस्थैर्य (सं० पु०) अनिश्चय, चञ्चलता ।
अस्मरण (सं० पु०) भूल, विस्मृति ।
अस्र (सं० पु०) कोण, नोक, एक देश, रुधिर, जल, आँसू।
अस्व (सं० पु०) निर्धन, कङ्गाल, दरिद्र ।
अस्वथ (वि०) रोगी, बीमार । [निन्दित स्वर, बे स्वर ।
अस्वर (सं० पु०) विना स्वर का, हलन्त व्यञ्जन,बुरा स्वर,
अस्वाभाविक (वि०) कृत्रिम, बनावटी ।
अस्वास्थ्य (सं० पु०) रोग, बीमारी।
अस्वीकार (सं० पु०) नाहीं, नामंज़ूरी ।
अस्वीकृत (वि०) नामंज़ूर ।
अस्वीकृति (सं० स्त्री०) नामंज़ूरी ।
अस्सी (वि०) एक संख्या, ८० ।
अहङ्कार (सं० पु०) अभिमान, घमण्ड, दम्भ ।
अहङ्कारी (वि०) अभिमानी, घमण्डी ।
अहंमति (वि०) घमण्डी ।
अहद (अ० सं० पु०) प्रतिज्ञा, वादा ।
अहदनामा (अ० सं० पु०) संधिपत्र, प्रतिज्ञापत्र ।
अहदी (वि०) आलसी, अकर्मण्य ।
अहदीखाना (सं० पु०) अहदियों के रहने का स्थान ।
अहमक़ (अ० वि०) मूर्ख, बेवक़ूफ़, नादान ।
अहर (सं० पु०) पोखरा, पानी का गड्ढा।
अहरह (क्रि० वि०) प्रतिदिन ।
अहरा (सं० पु०) जाड़े में तापने का स्थान ।
अहर्निश (क्रि० वि०) दिन-रात, आठो पहर ।
अहर्मुख (सं० पु०) सबेरा, प्रातःकाल, भोर ।
अहर्षित (वि०) अप्रसन्न, मलिन । [स्त्री ।
अहल्या (सं० स्त्री०) बिना जोती भूमि, गौतम ऋषि की
अहवान (सं० पु०) बुलाना, गोहराना, आवाहन ।
अहसान (अ० सं० पु०) उपकार, अनुग्रह, कृपा ।
अहह (अव्य०) खेद, आश्चर्य या दुःख प्रकाश करने के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है ।
अहहिं (क्रि०) है, विद्यमान है ।
अहा (अव्य०) प्रसन्नता या प्रशंसा-सूचक अव्यय ।
अहार (सं० पु०) भोजन, खाना, मांडी, लेई ।
अहाहा (अव्य०) हर्ष-सूचक अव्यय ।
अहिंसक (वि०) हिंसा न करनेवाला ।
अहिंसा (सं० स्त्री०) वध न करना, कष्ट न देना ।
अहि (सं० पु०) सर्प, नाग, साँप ।
अहिगति (सं० स्त्री०) साँपकी चाल, टेढ़ी चाल ।
अहिछार (सं० पु०) साँप का विष ।
अहित (सं० पु०) शत्रु, वैरी, दुश्मन, अपकारक ।
अहितकारी (सं० पु०) बुराई चाहनेवाला, शत्रु ।
अहितुण्डिक (सं० पु०) सपेरा, साँप को वश में करनेवाला ।
अहिनकुलता (सं० स्त्री०) स्वाभाविक शत्रुता ।
अहिनाह (सं० पु०) शेष नाग ।
अहिनी (सं० स्त्री०) सर्पिणी, साँपिन ।
अहिपति (सं० पु०) वासुकी, सर्पराज।
अहिफेन (सं० पु०) अफ़ीम ।
अहिभुक् (सं० पु०) मयूर, मोर । [के लक्षण ।
अहिवात (सं० पु०) सोहागभाग, सौभाग्य, सधवा होने
अहिवाती (वि०) सोहागिन, सधवा ।
अहीर (सं० पु०) ग्वाला, गोपाल ।
अहीरिन } (सं० स्त्री०) ग्वालिन ।
अहीरिनी }
अहीश (सं० पु०) शेषनाग, लक्ष्मण, बलराम ।
अहे (अव्य०) सम्बोधनार्थक अव्यय, हे ।
अहेतु (वि०) अकारण, व्यर्थ ।
अहेतुक (वि०) व्यर्थ, अकारण ।
अहेर (सं० स्त्री०) आखेट, शिकार ।
अहेरिया (सं० पु०) बहेलिया ।
अहेरी (सं० पु०) शिकारी, चिड़ीमार, बहेलिया ।
अहो (अव्य०) सम्बोधनार्थक अव्यय, हर्ष, विस्मय, करुणा, खेद प्रशंसा-सूचक अव्यय ।
अहोरात्र (क्रि० वि०) दिन-रात, अहर्निश ।
अहोरा बहोरा (सं० पु०) हेरा-फेरी, विवाह की एक प्रथा, इसमें जिस दिन दुलहिन ससुराल जाती है उसी दिन अपने मैके लौट आती है, (क्रि० वि०) आ आकर, बारबार ।

आ

आ यह हिन्दी वर्णमाला के प्रथम वर्ण "अ" का दीर्घ रूप है।

आ (सं०पु०) ब्रह्मा, शिव, वाक्य, (अव्य०) सीमा, तक, पर्यन्त, अभिव्याप्ति, स्मृति, ईषदर्थ, स्वीकार, क्रोध, कष्ट, अनुकम्पा, निषेध, अतिक्रमण।

आः (अव्य०) खेद-प्रकाशक शब्द।

आइन्दा (फ़ा० वि०) भविष्य, आनेवाला, आगामी, (सं० पु०) आगामी समय, भविष्य काल, आनेवाला समय, (क्रि० वि०) आगे।

आई (सं० स्त्री०) अवस्था, आयु, जीवन, वय, मृत्यु, मौत, (क्रि० वि०) आकर। [क़ायदा, राज-नियम।

आईन (फ़ा० सं० पु०) विधि, व्यवस्था, नियम, क़ानून,

आईना (फ़ा०सं०पु०) दर्पन, मुंह देखने का शीशा, आरसी।

आँक (सं० पु०) अङ्क, चिह्न, अदद, संख्या, अक्षर, निश्चित सिद्धान्त, बात, अंश, भाग, गोदी, गोद, अकवार।

आँकड़ी (सं० स्त्री०) साँकड़, ज़ञ्जीर, आँकुश, कांटा।

आँकना (क्रि० स०) परखना, कूतना, जांचना, निरखना, अङ्कित करना, दागना, चिह्न लगाना, निशान करना, दाम लगाना।

आँकरो (सं० स्त्री०) बाणकण, अङ्कुश।

आँकुश (सं० पु०) अङ्कुश।

आँख (सं०स्त्री०) लोचन, नेत्र, नयन, चक्षु, विलोचन, दृष्टि।

मुहा०—आँख लाल करना = क्रोध करना। आँख से गिरना = दृष्टि में तुच्छ ठहरना। आँख लगना = नींद आना, प्रीति होना। आँख में चुभना = पसंद आना, नज़रों में बुरा लगना। आँख मिलाना = सामने होना, मुँह दिखाना। आँख भर लाना = आँसू भर लाना, रोआँसा होना। आँख भौं टेढ़ी करना = क्रोध की दृष्टि से देखना। आँख बिछाना = प्रेम से स्वागत करना। आँखें बदल जाना = पहले का सा व्यवहार न रह जाना। आँख बन्द होना = मृत्यु होना। आँख फैलाना = दूर तक देखना, नज़र दौड़ाना। आँखों पर बिठाना = बहुत आदर करना। आँखों पर परदा पड़ना = भ्रम होना। आँख पथराना = पलक का नियमित क्रम से न गिरना, नेत्रस्तब्ध होना। आँख नीची होना = अप्रतिष्ठा होना। आँखें तरेना = क्रोधित होकर देखना। आँख का अंधा गाँठ का पूरा = मूर्ख, धनवान। आँख चुराना = सामने न होना। आँख का तारा = बहुत प्यारा।

आँखफोड़ा (सं० पु०) एक प्रकार का पतङ्गा, टिड्डा।

आँखमिचौनी (सं० स्त्री०) लड़कों का एक खेल।

आँग (सं० पु०) शरीर, देह, अवयव, अङ्ग।

आँगन (सं० पु०) सहन, चौक, आँगनाई।

आंगिक (वि०) अवयव-संबन्धी, शारीरिक, (सं०पु०) नाटक के अभिनय-भेद विशेष, हृदय का भाव प्रकाशित करने का प्रयत्न।

आंगिरस (सं० पु०) वृहस्पति।

आँघी (सं० स्त्री०) महीन चलनी, मैदा चालने की चलनी।

आँच (सं० स्त्री०) दाह, ताप, ज्वाला।

आँचल (सं० पु०) छोर, अँचला, किनारा, पल्ला, वस्त्र का आगे का भाग।

आंजन (सं० पु०) काजल, सुरमा।

आँजला (सं० पु०) अंजली, पसर।

आँजि (क्रि०) अंजन लगा कर, काजल लगा कर।

आँभू (सं० पु०) आँसू, आँख का जल, अश्रु।

आँट (सं० पु०) गांठ, पूला, गिरह, दांव, वश, वैर, विरोध, लाग-डाट।

आँटना (क्रि०अ०) भरना, समाना, पैठना, पहुँचना, पूरा पड़ना।

आँट साँट (सं० स्त्री०) मेल-जोल, साझा। [लच्छा।

आँटी (सं० स्त्री०) पूला, घास-फूस का छोटा गट्ठर, सूत का

आँठी (सं० स्त्री०) गुठली।

आँत (सं० स्त्री०) अंतड़ी।

मुहा०—आंतें कुलकुलाना = बहुत भूख लगना। आँतों का बल खुलना = भोजन से तृप्ति होना। आँतें सूखना = भूख से व्याकुल होना। आँतें गले में आना = तंग होना, जंजाल में फँसना।

आँधर (वि०) अंधा, नेत्रहीन।

आँधी (सं० स्त्री०) अंधड़, बड़े ज़ोर की हवा।

मुहा०—आँधी उठाना = हलचल मचाना। आँधी होना = अति वेग से चलना। [बक बक।

आँय बाँय (सं० पु०) टांय टांय, अनाप-शनाप, प्रलाप,

आँवठ (सं० पु०) धोती का किनारा, छोर, किनारा।

आँवरा (सं० पु०) आँवला, आम्लक, फल विशेष।
आँवला (सं० पु०) आँवरा, फल विशेष।
आँवलासार गंधक (सं० स्त्री०) वह गंधक जो बिलकुल साफ़ की हुई हो।
आँवा (सं० पु०) गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बर्तन [पकाता है।
आँस (सं० स्त्री०) सूत, रेशा।
आंशिक (वि०) हिस्सेदार, विभागी, अंश-विषयक।
आँसू (सं० पु०) अश्रु, नेत्र-जल।
मुहा०—आँसू पीकर रह जाना=भीतर ही भीतर रह जाना, अपना दुःख प्रकट न करना। आँसू गिराना=रोना। आँसू पुँछना=ढाढ़स बँधना। आँसू से मुँह धोना=अत्यन्त रोना।
आँहड़ (सं० पु०) बासन, बर्तन।
आँ हाँ (अव्य०) नहीं।
आउज (सं० पु०) तासा, वाद्य विशेष।
आक (सं० पु०) मदार, अकवन।
आकम्पन (सं० पु०) कम्पन, थरथराना।
आकम्पित (वि०) काँपता हुआ, थर्राता हुआ।
आक़बत (अ०सं०स्त्री०) मृत्यु के पश्चात् की दशा, परलोक।
आकर (सं० पु०) वह स्थान जहां से कोई वस्तु बहुतायत से निकलती हो, खानि, भण्डार, (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, चतुर, व्युत्पन्न, दक्ष।
आकर्ण (वि०) कर्ण पर्यन्त, कान तक।
आकर्ष (सं० पु०) खिंचाव, तनाव, चुम्बक, कसौटी, पासा, पासे का खेल, चौपड़।
आकर्षक (वि०) खींचनेवाला, आकर्षण करनेवाला, चुम्बक।
आकर्षण (सं० पु०) बलपूर्वक खींचना, खिंचाव।
आकर्षणशक्ति (सं० स्त्री०) वह शक्ति जिससे एक पदार्थ दूसरे को आपस में खींचे रहते हैं।
आकलन (सं० पु०) संग्रह, सम्पादन, बटोरना, संचय, अनुसंधान, जांच-पड़ताल, गिनना, गणना करना।
आकलित (वि०) संग्रहित, ग्रथित, पकड़ा हुआ, अनुष्ठित, सम्पादित, परीक्षित।
आकला (वि०) जल्दीबाज़, उच्छृङ्खल, उतावला। [आकुलता।
आकली (सं० स्त्री०) घबराहट, बेचैनी, व्याकुलता,
आकस्मिक (वि०) सहसा, अचानक, अकारण होनेवाला।
आकाङ्क्षा (सं० स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा, चाह, वाञ्छा, मनोभिलाष।
आकार (सं० पु०) आकृति, रूप, स्वरूप, डील-डौल, मूर्ति, चेहरा, सूरत, शक्ल, संगठन, बनावट, चिह्न, इङ्गित, चेष्टा।
आकारतः (अव्य०) स्वरूपतः। [हो जैसे गोपा, विश्वपा।
आकारान्त (वि०) वे शब्द, जिनके अन्त में "आ"
आकारादि (वि०) वे शब्द जिनके पहले "आ" हो।
आकाल (सं० पु०) दुर्भिक्ष, महँगी, क़हत, काल।
आकालिक (वि०) असमय में उत्पन्न। [व्योम, नभ, शून्य।
आकाश (सं० पु०) आसमान, गगन, अन्तरिक्ष, अम्बर, द्यौ,
आकाशगङ्गा (सं० स्त्री०) छोटे तारों का समूह जो उत्तर दक्षिण फैला रहता है, स्वर्ग-गङ्गा, मन्दाकिनी।
आकाशगामी (वि०) आकाशचारी, आकाश में चलने वाला, (सं० पु०) पक्षी, सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह, वायु, देवता, राक्षस।
आकाशचारी (वि०) देखो आकाशगामी।
आकाशदीप (सं० पु०) वह दिया जो कार्तिक मास में बांस पर लटका कर जलाया जाता है।
आकाशबेल (सं० स्त्री०) अमरबेल।
आकाशवाणी (सं० स्त्री०) देववाणी, वह शब्द जो आकाश में देवादि बोलते हैं।
आकाशवृत्ति (सं० स्त्री०) अनियमित वृत्ति, ऐसी जीविका जिसकी आय नियमित न हो, दरिद्रता, ग़रीबी।
आकिञ्चन (सं० पु०) दीनता, ग़रीबी, प्रयास।
आकीर्ण (वि०) विस्तृत, प्राप्त, समाकुल, सङ्कुल, भरा हुआ।
आकुञ्चन (सं० पु०) वैशेषिक के अनुसार पञ्च कर्मों में से एक कर्म विशेष, सङ्कोचन, सिकुड़न, सिमटना, बटुरना, वक्रता।
आकुञ्चित (वि०) बटुरा हुआ, सिमटा हुआ, सङ्कुचित, टेढ़ा, तिरछा, वक्र। [अवाक्।
आकुण्ठित (वि०) लज्जित, शर्मिन्दा, जड़, स्तब्ध,
आकुल (वि०) व्यग्र, विह्वल, आर्त्त, उद्विग्न, व्याकुल, व्यस्त, घबराया हुआ, व्याप्त, विस्तृत, समाकुल, सङ्कुल।
आकुलित (वि०) व्यग्र, विह्वल, कातर, व्याप्त, व्यस्त।
आकूत (सं० पु०) अभिप्राय, आशय, मतलब।
आकूति (सं० पु०) उत्साह, सदाचार, अध्यवसाय, आशय, मतलब, (सं० स्त्री०) मनु की तीन कन्याओं में से एक, इसका विवाह रुचि प्रजापति से हुआ था।

आकृति (सं० स्त्री०) गठन, बनावट, डीलडौल, स्वरूप, रूप, आकार, अवयव चेष्टा, मूर्ति, शरीर, देह, आकार। [आकर्षित।
आकृष्ट (वि०) खींचा हुआ, आकर्षण किया हुआ,
आक्रन्द (सं० पु०) चिल्लाहट, रोदन, गोहराव, पुकार, भाई, बन्धु, मित्र, शब्द, विकट युद्ध।
आक्रन्दन (सं० पु०) रोना, चिल्लाना।
आक्रम (सं० पु०) पराक्रम, चढ़ाई, क्रान्ति।
आक्रमण (सं० पु०) छापा मारना, चढ़ाई, धावा, डाका डालना, छापा पड़ना, निन्दा करना, आक्षेप करना।
आक्रमित (वि०) जिस पर धावा किया गया हो, जो घिर गया हो, जिस पर आक्रमण हुआ हो, विवश, परास्त।
आक्रीड़ (सं० पु०) राजभवन के पास का बाग, राजाओं का मामूली वन, राजा के भवन के पास का उपवन।
आक्रीड़न (सं० पु०) आखेट, शिकार।
आक्रोश (सं० पु०) शाप, कोसना, क्रोध, कोप, आक्षेप, क्रोध के आवेश में आकर कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान न रखना।
आक्रोशन (सं० पु०) भर्त्सना, कटूक्ति, अभिशाप।
आक्लान्त (वि०) सना हुआ, लिपटा हुआ, अवसन्न, खिन्न, थका-माँदा, श्रान्त।
आक्षेप (सं० पु०) कटुक्ति, निन्दा, ताना, दोषारोपण, व्यङ्ग, फेंकना, गिराना। [अखण्ड।
आखण्ड (वि०) समूचा, सम्पूर्ण, पूरा, खण्डरहित,
आखण्डल (सं० पु०) इन्द्र, शचीपति, देवराज।
आखत (सं० पु०) अक्षत, वह अन्न जो गृहस्थों के यहां धोबी कपड़ा धोकर लाता है तब दिया जाता है, वह अन्न जो सन्तानोत्पत्ति विवाहादि के समय पवनियों को किसी शुभ कार्यारम्भ करने के पहले दिया जाता है।
आख़ता (फ़ा० वि०) बधिया, वे जानवर जिनके अण्ड-कोश निकाल लिये गये हों।
आखा (सं० पु०) बोरा, आंघी, चलनी, गठिया।
आखातीज (सं० स्त्री०) वैशाख शुक्ल तृतीया, इस दिन हिन्दुओं के यहां पूजनादि कर ब्राह्मणों को दानादि दिया जाता है।

आखानवमी (सं० स्त्री०) कार्तिक सुदी नवमी, अक्षय नवमी, इस दिन गङ्गा-स्नान दानादि होता है, और आंवले के नीचे ब्राह्मणों को भोजन करा कर भोजन किया जाता है।[(सं० पु०) फल, परिणाम, अन्त।
आख़िर (फ़ा० वि०) पिछला, अन्तिम, समाप्त
आख़िरकार (फ़ा० क्रि० वि०) अन्त में।
आख़िरी (फ़ा० वि०) पिछला, अन्तिम।
आखु (सं० पु०) मूषिक, चूहा, मूसा।
आखेट (सं० पु०) शिकार, मृगया, अहेर।
आखेटक (सं० पु०) व्याधा, बहेलिया, अहेर (वि०) शिकारी, अहेरी। [विवरण।
आख्या (सं० स्त्री०) नाम, संज्ञा, यश, कीर्ति, व्याख्या,
आख्यात (वि०) प्रसिद्ध, विख्यात, कथित, उक्त।
आख्यान (सं० पु०) वृत्तान्त, वर्णन, कथा, कहानी, उपन्यास, इतिहास, उपन्यास। [कथा।
आख्यानक (सं० पु०) वृत्तान्त, वर्णन, क़िस्सा, कहानी,
आख्यायिका (सं० स्त्री०) कथा, उपकथा, कहानी, क़िस्सा, इतिहास, उपन्यास।
आग (सं० स्त्री०) अनल, अग्नि, ताप, तेज, गरमी।
मुहा०—आग उठाना = झगड़ा करना। आग का पुतला = क्रोधी। आग खाना अंगार हगना = जैसा करना वैसा पाना। आग देना = दाह-कर्म करना। आग पानी का बैर = जन्म की शत्रुता। आग फाँकना = झूठी शेखी हाँकना। आग बगूला होना = बहुत क्रोध करना। आग बरसना = बहुत गरमी पड़ना। आग में पानी डालना = झगड़ा मिटाना। आग लगाकर तमाशा देखना = झगड़ा कराके प्रसन्न होना। पेट की आग = भूख।
आगत (वि०) आया हुआ, (सं० पु०) पाहुन, अतिथि।
आगत स्वागत (सं० पु०) आवभगत, आदर-सत्कार।
आग पीछ (सं० पु०) आगा-पीछा, सोच-विचार, हिचक।
आगन्तुक (सं० पु०) अभ्यागत, अतिथि।
आगन्तुकज्वर (सं० पु०) आकस्मिक ज्वर।
आगम (सं० पु०) अवाई, आमद, सम्भावना, भवितव्यता, भविष्य काल, आय, आमदनी, संगम, समागम, उत्पत्ति, तन्त्र-शास्त्र, नीति-शास्त्र, वेद, व्याकरणा-नुसार प्रकृति प्रत्यय के मध्य में होनेवाले काम, (वि०) आगामी, आनेवाला।

आगमजानी (वि०) भविष्यज्ञाता, आगम-ज्ञानी, आगम जाननेवाला।

आगमज्ञानी (वि०) देखो आगमजानी।

आगमन (सं० पु०) अवाई, आगम, आना, आमद।

आगमवक्ता (वि०) भविष्यवक्ता, भविष्य बतानेवाला, ज्योतिषी। [दूरदर्शी।

आगमसोची (वि०) आगे सोचनेवाला, अग्रसोची,

आगर (सं० पु०) समूह, खान, ढेर, भण्डार, ख़ज़ाना, चतुर, दल, होशियार, श्रेष्ठ, उत्तम, घर, भवन, गृह, मकान, छाजन।

आगा (सं० पु०) अगाड़ी, अग्र, आगे, मकान के आगे का भाग, सामना, अगवासा।

मुहा०—आगा भारी होना=गर्भ रहना। आगा रोकना=आक्रमण रोकना, मोहड़ा संभालना। आगा रुकना=भावी उन्नति में बाधा पड़ना। आगा संभालना=किसी बड़े कार्य का प्रबन्ध करना।

आग़ा (सं० पु०) काबुली, अफ़ग़ान सरदार।

आगापीछा (सं० पु०) देखो आग पीछ।

आगामी (वि०) आनेवाला, होनहार, भविष्य। [भण्डार।

आगार (सं० पु०) भवन, गृह, घर, मकान, मन्दिर,

आगाह (फा० वि०) जानकार, सचेत।

आगाही (फ़ा० सं० स्त्री०) जानकारी, सचेतता।

आगिल (वि०) अगला, भविष्य, आगेवाला, आगामी, होनहार, अग्रगामी, अग्रसर।

आगी (सं० स्त्री०) देखो आग।

आँगुल्फ (वि०) टेहुनी तक।

आगू (क्रि० वि०) आगे, अगाऊ, सामने, सम्मुख।

आगे (क्रि० वि०) बढ़कर, फिर, तब, सामने, पहिले, पश्चात्, अनन्तर, अधिक, गोदी में।

मुहा०—आगे करना=अगुआ बनाना। आगे आगे=थोड़े दिनों बाद। आगे का क़दम पीछे पड़ना=घटती होना। आगे का कपड़ा खींचना=घूंघट काढ़ना। आगे दौड़ पीछे चौड़=आगे बढ़ते जाना पीछे का भूलते जाना। आगे रखना=अर्पण करना। आगे से=आइन्दा से।

आग्नीध्र (सं० पु०) यज्ञ-मण्डप, अग्नि रखने का स्थान, अग्निहोत्र करनेवाला व्यक्ति, होता का घर, ऋत्विक विशेष जिसका वरण धन देकर किया जाता है।

आग्नेय (सं० पु०) सोना, स्वर्ण, रुधिर, रक्त, कृत्तिका नक्षत्र, प्रतिपदा, अग्निपुत्र कार्तिकेय, ज्वालामुखी पहाड़, दीपन औषधि, अगस्त्य मुनि, आग भड़क उठनेवाली वस्तु, ब्राह्मण, अग्निकोण, अग्निपुराण, (वि०) अग्नि-विषयक।

आग्नेयास्त्र (सं० पु०) अग्न्यस्त्र, वे अस्त्र जिनके छोड़ने से आग निकले या आग की वर्षा हो।

आग्नेयी (सं० स्त्री०) अग्नि की स्त्री स्वाहा, अग्निकोण, अग्नि को दीप्त करनेवाली औषधि विशेष।

आग्रह (सं० पु०) अनुरोध, अनुग्रह, हठ, तत्परता, आक्रमण, आसक्ति, उपकार, साहस, आवेश। [नक्षत्र।

आग्रहायण (सं० पु०) अगहन, मार्गशीर्ष मास, मृगशिरा

आग्रही (वि०) ज़िद करनेवाला, हठी।

आघात (सं० पु०) आक्रमण, प्रहार, मार, चोट, ठोकर, धक्का, वध-स्थान, क़साईखाना, क्रोध।

आघार (सं० पु०) धूप, घृत, छिड़काव, हवि।

आघूर्णन (सं० पु०) चाक के समान घूमना, चक्र की तरह घूमना, चकराना, चक्कर खाना, घूमना, फिरना। [हुआ।

आघूर्णित (वि०) घूमता हुआ, चकराता हुआ, घुमाया

आघोषण (सं० पु०) प्रचारन, प्रकाशन, प्रकटन, घोषणा।

आघ्राण (सं० पु०) गंध लेना, वास लेना, महकना, सूंघना, तृप्त होना, अघाना।

आघ्रात (वि०) वास लिया हुआ, सूंघा हुआ।

आघ्रेय (वि०) सूंघने योग्य, वास लेने योग्य।

आचका (अव्य०) हठात्, अचानक, अकस्मात्, असंख्य।

आचमन (सं० पु०) मुख-शुद्धि के लिए मुंह में जल लेना, धर्म-विषयक कार्यों के आरम्भ में दहिने हाथ से या आचमनी से मुंह में जल डालना, भोजन करके उठने पर मुंह धोना।

आचमनी (सं० स्त्री०) एक छोटा पात्र विशेष, यह कलछी के समान होता है, पूजनादि में इससे जल लेकर मुंह में डाला जाता है।

आचरण (सं० पु०) चालचलन, व्यवहार, रीति, वर्ताव, अनुष्ठान, लक्षण, चिह्न, लौकिक कर्म।

आचरणीय (वि०) व्यवहार करने योग्य, आचार योग्य, अनुष्ठान योग्य, वर्तनीय।

आचरित (वि०) व्यवहृत, वर्तित, आचरण किया हुआ।

आचर्य (वि०) करने योग्य, करणीय, आचरणीय, व्यवहार्य ।

आचार (सं० पु०) चालचलन, रीति, व्यवहार, वर्ताव, चाल-ढाल, रहन-सहन, चरित्र, शील, वृत्ति, शुद्धि ।

आचारी (वि०) शास्त्रानुसार चलनेवाला, चरित्रवान्, शुद्धाचरण वाला, (सं० पु०) वैष्णव, रामानुज-मतावलम्बी वैष्णव ।

आचार्य (सं० पु०) वेद पढ़ानेवाला, वेदोपदेष्टा, शिक्षा देनेवाला, धर्म की शिक्षा देनेवाला, यज्ञोपवीत में गायत्री मन्त्र की दीक्षा देनेवाला, पूजनीय, गुरु, अध्यापक, पुरोहित ।

आचार्या (सं० स्त्री०) उपदेशदात्री, मन्त्र-व्याख्यात्री, मन्त्रों की व्याख्या करनेवाली । [पुरोहितानी ।

आचार्याणी (सं० स्त्री०) गुरुपत्नी, आचार्य की पत्नी,

आच्छन्न (वि०) छिपा, ढका, वेष्टित, आवृत, तिरोहित, रक्षित, आच्छादित ।

आच्छा(अव्य०) स्वीकारार्थक अव्यय । [छिपाने वाला ।

आच्छादक (सं० पु०) आच्छादित करनेवाला, ढकनेवाला,

आच्छादन (सं० पु०) कपड़ा, वस्त्र, परिधान, ढकना, आवरण, छाजन ।

आच्छादित (वि०) ढका हुआ, छिपाया हुआ, आवृत ।

आच्छाद्य (वि०) आवृत करने योग्य, छाने योग्य, ढकने लायक ।

आच्छिन्न (वि०) छेद करना, काटना । [रहते हुए ।

आछत (क्रि० वि०) उपस्थिति में, विद्यमानता में, सामने

आछना (क्रि० अ०) होना, रहना ।

आछी (वि०) भली, उत्तम, अच्छी ।

आज (क्रि० वि०) वर्तमान दिन, अद्य, अब ।

आजकल (क्रि० वि०) इस समय, इन दिनों में ।

मुहा०—आजकल में=थोड़े दिनों में। आजकल करना=टाल-मटोल करना ।

आजन्म (क्रि० वि०) जीवन पर्यन्त, आजीवन, जीवन भर, जन्मावधि, जब तक जीवित रहे तबतक ।

आज़माइश (फ़ा०सं० स्त्री०) परख, निरख, जांच, परीक्षा ।

आज़माना (फ़ा० क्रि० स०) परीक्षा करना, जांचना ।

आज़मूदा (फ़ा० वि०) परीक्षित ।

आजा (सं० पु०) बाप का बाप, पितामह, बाबा, दादा ।

आज़ादी (फ़ा० सं० स्त्री०) स्वतन्त्रता ।

आज़ाद (फ़ा० वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्र, मुक्त, निःशङ्क, निर्भय, अकिञ्चन, निस्पृह ।

आजाना (वि०) अकस्मात आ पहुँचना, एकाएक आना ।

आजानु (वि०) घुटने तक, जानु तक, जांघ तक ।

आजानुबाहु (वि०) जिसकी बांहें घुटने तक लम्बी हों, आजानुबाहु होना एक शुभ लक्षण है । [आक्षेप ।

आजि (सं० पु०) समर, रण, संग्राम, लड़ाई, युद्ध, गमन,

आजीव (सं० पु०) वृत्ति, जीविका, जीवन-मार्ग, बन्धन ।

आजीवन (क्रि० वि०) जन्मपर्यन्त, जीवन भर ।

आजीविका सं० स्त्री०) वृत्ति, जीविका, रोज़ी, जीवन निर्वाह का उपाय ।

आजीवी (वि०) उपजीवक, उपजीवी ।

आजु (क्रि० वि०) आज, वर्तमान दिन । [वाला ।

आजू (सं० पु०) बेगार, अवैतनिक, मुफ़्त में काम करने

आज्ञप्त (वि०) आदेश पाया हुआ, अनुमति पाया हुआ ।

आज्ञप्ति (सं० स्त्री०) आज्ञा, आदेश । [अनुमति ।

आज्ञा (सं० स्त्री०) अरहवना, आदेश, अनुमति, स्वीकृति,

आज्ञाकारी (वि०) आज्ञा पालनेवाला, आदेशानुसार कार्य करनेवाला, आज्ञापालक, अनुमति माननेवाला । [अभ्यन्तर का छठां चक्र ।

आज्ञाचक्र (सं० पु०) योग-शास्त्र में कथित शरीर के

आज्ञापक (वि०) आज्ञा देनेवाला, मालिक, स्वामी ।

आज्ञापत्र (सं०पु०)वह लेख जिसमें किसी बात या विषय को करने या प्रचार करने की आज्ञा हो, हुकुमनामा ।

आज्ञापन (सं० पु०) अनुमति, सूचना ।

आज्ञापालक (वि०) आज्ञा माननेवाला, आज्ञाकारी ।

आज्ञापालन (सं० पु०) आज्ञानुसार काम करना।

आज्ञाभङ्ग (सं० पु०) आज्ञा का उल्लङ्घन, आज्ञा न मानना ।

आज्य (सं० पु०) घी, हवि ।

आज्यप (सं० पु०) घी भोजन करनेवाला, पितृलोक ।

आञ्जनेय (सं० पु०) अञ्जनी का पुत्र, हनुमान ।

आटा (सं० स्त्री०) पिसान, किसी अन्न का महीन चूर्ण ।

मुहा०—मँहगी में आटा गीला होना=धन की कमी के समय कुछ और जाता रहना। आटा दाल का भाव मालूम होना=सांसारिक व्यवहारों से परिचित होना। आटे की आपा=सीधी सादी स्त्री ।

आटोप (सं० पु०) अहङ्कार, घमण्ड, दर्प, आडम्बर, आच्छादन, पेट का गुड़गुड़ाना (वि०) घिरा हुआ ।

आठ (सं० पु०) अष्ट, चार का दूना, ८।
आठपहर (सं० पु०) दिन-रात, अष्टयाम।
आठवां (वि०) अष्टम।
आठों (सं० स्त्री०) अष्टमी तिथि। [आश्रय, सहारा।
आड़ (सं० स्त्री०) परदा, ओट, रोक, ओझल, रक्षा,
आड़ना (क्रि० स०) रोकना, छेकना, थामना, गिरवी रखना, बांधना।
आड़बन्द (सं० पु०) फ़क़ीर या पहलवानों की लङ्गोटी।
आडम्बर (सं० पु०) ढोंग, खटराग, कपट, टीम-टाम, तड़क-भड़क, चिकना-चुपड़ा, घटा, गम्भीर नाद, हाथी का चिग्घार, घोड़े की हिनहिनाहट।
आडम्बरी (वि०) कपटी, पाखण्डी, दम्भी, धूर्त, अहङ्कारी। [वस्त्र, शहतीर।
आड़ा (वि०) बांका, टेढ़ा, तिरछा, (सं० पु०) धारीदार
आड़ी (वि०) सहायक, ओर, अपने दल का, एक प्रकार का ताल। [रक्षा करना, बचाना।
आड़ेआना (क्रि० स०) बीच-बिचाव करना, बाधा देना,
आढ़क (सं० पु०) चार सेर के बराबर का परिमाण, अरहर।
आढ़त (सं० स्त्री०) वह व्यवसाय जिसमें दूसरे व्यापारी का माल बेचने पर कुछ कमीशन मिलता है, आढ़त का माल रखने का स्थान।
आढ़तिया (सं० पु०) आढ़त का माल बिक्री करनेवाला, वह व्यापारी जो दूसरे का माल कुछ आढ़त या कमीशन लेकर खरीदवाये या बेचवाये, दलाल।
आणि (सं० पु०) सीमा, अस्ति, कोन [प्रताप, रोब।
आतङ्क (सं० पु०) भय, आशङ्का, डर, रोग, पीड़ा,
आतत (वि०) विस्तृत, आरोपित।
आततायी (सं० पु०) हानि करनेवाला, वधोद्यत, शस्त्रधारी, लुटेरा, जहर देनेवाला, धन हरण करने वाला, स्त्री हरण करनेवाला, पृथ्वी हरनेवाला, डाकू, हत्यारा। [ज्वर, बुख़ार।
आतप (सं० पु०) ताप, गर्मी, उष्णता, सूर्य का तेज,
आतपत्र (सं० पु०) छतरी, छाता।
आतपोदक (सं० पु०) मरीचिका, मृगतृष्णा।
आतपन (सं० पु०) शिव।
आतर्पण (सं० पु०) ऐपन, मङ्गला-लेपन, प्रीणन।
आतसक (फ़ा० सं० स्त्री०) उपदंश, गर्मी।

आतशबाज़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) अग्निक्रीड़ा।
आता (सं० पु०) सीताफल, शरीफ़ा।
आतायी (वि०) धूर्त, शठ, (सं० पु०) चील।
आतायीपन (सं० पु०) शठता, धूर्तता।
आतिथेय (सं० पु०) अतिथि की सेवा के लिए सामग्रियां, अतिथि-सेवक, अतिथि की सेवा करनेवाला मनुष्य, अतिथि का सम्मान करनेवाला मनुष्य, अभ्यागत का सत्कार करनेवाला व्यक्ति।
आतिथ्य (सं० पु०) अतिथि-सेवा, अभ्यागत-शुश्रूषा, अतिथि के देने योग्य वस्तु।
आतिशय्य (सं० पु०) अधिकता, अधिकाई, अतिरेक।
आतीपाती (सं० स्त्री०) बच्चों का खेल।
आतुर (वि०) व्यग्र, व्याकुल, बेचैन, कातर, अस्थिर, उत्सुक, रोगी, दुःखी, पीड़ित, (क्रि० वि०) शीघ्र।
आतुरता (सं० स्त्री०) व्याकुलता, व्यग्रता, बेचैनी, घबराहट, शीघ्रता।
आतुरताई (सं० स्त्री०) व्यग्रता, व्याकुलता, शीघ्रता।
आतू (सं० स्त्री०) पण्डिताइन, गुरुआइन।
आतोद्य (सं० पु०) मुरज, वीणा, वाद्य, वंशी का शब्द।
आत्त (सं० पु०) प्राप्त, गृहीत, ग्रहण किया हुआ।
आत्तगर्व (सं० पु०) खण्डिताहङ्कार, भग्नदर्प।
आत्म (वि०) स्वकीय, अपना, जीव।
आत्मकलह (सं०पु०) गृह-कलह, घर का झगड़ा। [साधन।
आत्म-कल्याण (सं० पु०) अपनी भलाई, अपना हित-
आत्मकार्य (सं० पु०) अपना काम, गुप्त कार्य।
आत्मगरिमा (सं० स्त्री०) आत्मश्लाघा, अहंकार।
आत्मगौरव (सं० पु०) अपना बड़प्पन, अपनी प्रतिष्ठा।
आत्मग्राही (वि०) स्वार्थी।
आत्मघात (सं०पु०) अपने आप मरना, आत्महत्या।
आत्मज (सं० पु०) सन्तान, पुत्र, कन्या, कामदेव।
आत्मजन्मा (सं० पु०) पुत्र, सन्तान, तनय।
आत्मजा (सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री, बेटी, बुद्धि।
आत्मज्ञान (सं० पु०) ब्रह्म-सम्बन्धी ज्ञान, आत्म-विषयक ज्ञान, अपना अनुभव।
आत्मज्ञानी (वि०) ब्रह्मज्ञानी।
आत्मता (सं० स्त्री०) प्रणय, प्रेम, बन्धुता।
आत्मत्याग (सं० पु०) परोपकार में अपना त्याग, परस्वार्थ में अपना स्वार्थ समर्पण करनेवाला।

आत्मद्रोही (वि०) अपनी ही बुराई करनेवाला, अपने आप अपने हानि पहुंचानेवाला। [वाला प्रत्यय।
आत्मनेपद (सं० पु०) संस्कृत की क्रियाओं में लगने
आत्मप्रशंसा (सं० स्त्री०) अपने मुंह अपनी बड़ाई करना, अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना।
आत्मयोनि (सं० पु०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव।
आत्मरक्षा (सं० स्त्री०) अपना बचाव, अपनी रक्षा।
आत्मवत् (वि०) अपने समान।
आत्मवश (वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्र।
आत्मवंचक (सं० पु०) नास्तिक, पापी, कृपण
आत्मश्लाघा (सं० पु०) अपनी प्रशंसा, आत्म-गर्व।
आत्म-सम्भव (वि०) अपने शरीर से उत्पन्न (सं० पु०) पुत्र, (स्त्री०) कन्या।
आत्मसंयम (सं०पु०) अपनी इन्द्रियों को वश में रखना, अपनी इच्छाओं को रोकना, अपना मन अपने वश में रखना।
आत्मसात् (वि०) अपने हाथ में कर लेना, स्वहस्तगत।
आत्महत्या(सं०स्त्री०)आत्मघाती, अपने को मारनेवाला।
आत्महा (सं० पु०) आत्मघाती। [मारना।
आत्महिंसा (सं० स्त्री०) आत्महत्या, अपने आप को
आत्मा (सं० स्त्री०) जीव, ब्रह्म, धृति, यत्न, स्वभाव, मन, बुद्धि, देह, पुत्र, अर्क, वायु, हुताशन, चित्त, सूर्य, धर्म। संस्कृत में यह शब्द पुंलिङ्ग है, हिन्दी में इसका प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में किया जाता है, पर दर्शन या किसी खास अभिप्राय में यह आता है तो पुंलिङ्ग ही होता है।
आत्मावलम्बी (सं० पु०) जो किसी कार्य में दूसरे की सहायता की आशा न रक्खे, जो अपने भरोसे सब काम करे।
आत्मिक (वि०) मानसिक, अपना, मन का, प्यारा।
आत्मीय (वि०) स्वकीय, अपना, स्वजन, अन्तरङ्ग।
आत्मीयता (सं०स्त्री०)अपनापन, प्रणय, बन्धुत्व।[श्रेष्ठता।
आत्मोत्कर्ष (सं० पु०) अपनी प्रभुता, स्वप्रभुत्व, अपनी
आत्मोत्सर्ग (सं० पु०) आत्मत्याग, पर स्वार्थ में अपना बलिदान करना, पर-स्वार्थ के लिए अपना स्वार्थ त्यागना। [तन्मय होना।
आत्मोद्धार (सं० पु०) अपना उद्धार, मोक्ष, ब्रह्म, में
आत्मोद्भवा (सं० स्त्री०) पुत्री, दुहिता, बेटी, बुद्धि।

आत्मोन्नति (सं० स्त्री०) अपनी उन्नति, अपनी बढ़ती, आत्मा की उन्नति। [हो, बिना ओर-छोर का।
आत्यन्तिक (वि०) प्रचुर, अतिशय, जिसका आर-पार न
आत्रेय (वि०) अत्रि-विषयक, अत्रि-गोत्रज, (सं० पु०) अत्रिपुत्र, दुर्वासा, चन्द्रमा।
आत्रेयी (सं० स्त्री०) एक ऋषि-पत्नी, ये वेदान्त में बड़ी निपुण थीं, एक नदी का नाम, रजस्वला स्त्री।
आथर्वण (सं० पु०) अथर्ववेद-ज्ञाता ब्राह्मण, अथर्वा ऋषि का पुत्र, अथर्ववेदोक्त कर्म, अथर्वगोत्रोत्पन्न पुरुष।
आदत (अ० सं०स्त्री०) टेव, बान, स्वभाव, प्रकृति, अभ्यास।
आदमियत (अ० सं०स्त्री०) मनुष्यत्व, सभ्यता। [चाकर।
आदमी (अ० सं० पु०) मानव-सन्तान, मनुष्य, नौकर-
आदर (सं० पु०) प्रतिष्ठा, सम्मान, सत्कार, मर्यादा।
आदरणीय (वि०) सम्माननीय, मान्य।
आदरभाव (सं० पु०) सम्मान, सत्कार, प्रतिष्ठा।
आदर्श (सं० पु०) दर्पण, आइना, शीशा, मुकुर, व्याख्या, टीका, नमूना, वह जिसका चरित्र अनुकरणीय हो।
आदा (सं० पु०) अदरक, आर्दी, अद्रक।
आदान (सं० पु०) लेना, स्वीकार।
आदान-प्रदान (सं० पु०) लेन-देन।
आदि (वि०) पहिला, प्रथम, आरम्भिक, (सं० पु०) आरम्भ, मूल, बुनियाद, उत्पत्ति-स्थान (अव्य०) वगैरह।
आदिक (अव्य०) आदि, वगैरह, इत्यादि।
आदिकवि (सं० पु०) वाल्मीकि, सबसे प्रथम इन्होंने ही काव्य की रचना की थी, इसीसे ये आदि कवि कहे जाते हैं।
आदि कारण (सं० पु०) मूल कारण, आद्य हेतु, प्रथम कारण, निदान। [मदार का पेड़।
आदित्य (सं० पु०) देवता, सूर्य, वामन, वसु, इन्द्र,
आदित्यवार (सं० पु०) रविवार, एक बार।
आदिदेव (सं० पु०) विष्णु।
आदिम (वि०) प्रथम, पहिला, आदि का। [प्राप्त।
आदिष्ट (वि०) आज्ञापित, आदेशित, कथित, आज्ञा-
आदिशूर (सं० पु०) सेनवंशी राज का प्रथम राजा, इनका नाम था वीरसेन, पर इस वंश का प्रथम राजा होने से ये आदिशूर भी कहे जाते हैं, इन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था, उस समय बङ्गाल में बौद्ध-धर्म का

खूब प्रभाव था, यह इस बात से मालूम होता है कि इन्होंने कन्नौज से वेदज्ञ ब्राह्मणों को यज्ञ कराने के लिए बुलाया था।
आर्द्री (वि०) अभ्यस्त, (सं० स्त्री०) अदरक।
आदृत (वि०) सम्मानित, अर्चित, पूजित।
आदेय (वि०) लेने योग्य, ग्रहणीय।
आदेश (सं० पु०) आज्ञा, अनुमति, उपदेश, ज्योतिष-शास्त्र में ग्रहों का फल, व्याकरण में एक वर्ण के स्थान में दूसरे वर्ण का आना, वर्ण-परिवर्तन।
आदौ (अव्य०) आदि, आगे, पहिले। [भोजनीय।
आद्य (वि०) पहला, अगला, आरम्भिक, खाने योग्य,
आद्यन्त (क्रि० वि०) आद्योपान्त, आदि से अन्त तक।
आद्योपान्त (क्रि० वि०) आद्यन्त, आदि से अन्त पर्यन्त।
आर्द्रा (सं० स्त्री०) एक नक्षत्र विशेष, इस नक्षत्र में धान बोया जाता है, इस नक्षत्र में बरसा हुआ पानी किसानों के लिये लाभदायक होता है।
आधा (वि०) अर्द्ध, किसी वस्तु का दो बराबर भाग।
मुहा०—आधा तीतर आधा बटेर = बेमेल, बेजोड़। आधा होना = दुबला होना। आधे पेट रहना = तृप्त होकर न खाना। आधी बात न पूछना = कुछ ध्यान न देना।
आधाकपाली (सं० स्त्री०) आधे सिर में दर्द।
आधा झारा (सं० पु०) अपामार्ग, चिचिड़ी।
आधान (सं० पु०) स्थापन, धारण, गर्भ।
आधानिक (सं० पु०) गर्भाधान-संस्कार।
आधार (सं० पु०) अवलम्ब, सहारा, आश्रय, अधिकरण कारक, पात्र, नीव, मूल, थाला, आलबाल, आश्रय-दाता, पालक। [दर्द।
आधासीसी (सं० स्त्री०) अधकपाली, आधे सिर का
आधि (सं० स्त्री०) शोच, चिन्ता, मनः व्यथा, व्यसन, बंधक, रेहन, गिरवी। [बहुतायत।
आधिक्य (सं० पु०) अधिकता, अतिशय, प्रचुरता,
आधिदैविक (वि०) देवकृत, देवाधीन, देवताओं से होनेवाला।
आधिपत्य (सं० पु०) स्वामित्व।
आधिभौतिक (वि०) व्याघ्र सर्पादि जीवों से किया हुआ, भूत तन्मात्रादि सम्बन्ध से उत्पन्न।
आधिवेदनिक (वि०) वह धन जो दूसरा विवाह करने के लिए पहली स्त्री को दिया जाता है।

आधीन (वि०) वश, नम्र, वशवर्ती, आज्ञाकारी।
आधीनता (सं० स्त्री०) वशीभूत, वशवर्ती।
आर्धरात (सं० स्त्री०) वह समय जब रात का आधा भाग व्यतीत हो गया हो।
आधुनिक (वि०) टटका, नया, इस समय का, वर्तमान काल का, साम्प्रतिक, हाल का, अभी का।
आधूत (वि०) कांपता हुआ, कम्पित, व्याकुल, पागल।
आधेआधे (सं० पु०) सम भाग। [एक भाग।
आधेक (क्रि० वि०) आधा भाग, सम दो भागों में से
आधेय (वि०) आधार पर रहनेवाली वस्तु, किसी के सहारे से स्थित वस्तु, स्थापनीय, रेहन रखने योग्य, बंधकी रखने लायक। [पीलवान।
आधोरण (सं० पु०) महावत, हाथीवान, हस्तिपक,
आध्मान (सं० पु०) वायु रोग विशेष, अफरा, पेट फूलना।
आध्यात्मिक (वि०) मन-विषयक, आत्मा-संबन्धी, आत्मा-विषयक।
आध्यान (सं० पु०) स्मरण, चिन्ता, ध्यान दुर्भावन।
आध्यायका (सं० पु०) पाठ, गुरु, शिक्षक।
आध्वनीन (सं० पु०) पथिक, मार्ग-व्यय।
आन (वि०) अन्य, और, दूसरा, (सं० स्त्री०) सौगंध, मर्यादा, दुहाई, जय-घोष, ढंग, अदा, क्षण, लहमा, ऐंठ, ठसक, अकड़, अदब, लज्जा, हया, भय, शङ्का, प्रण, टेक, हठ।
आनक (सं० पु०) दुंदुभी, भेरी, डंका, मृदंग, नगाड़ा, गर्जता हुआ मेघ। [बड़ा नगाड़ा।
आनकदुंदुभि (सं० पु०) श्रीकृष्ण के पिता, वासुदेव,
आनत (वि०) बहुत झुका हुआ, नम्र, विनीत।
आनतान (सं० स्त्री०) ऊटपटांग बात, बे सिर-पैर की बात, ठसक, टेक, मर्यादा।
आनद्ध (सं० वि०) मढ़ा हुआ, बँधा हुआ, कसा हुआ, चमड़े से मढ़ा हुआ बाजा, ढोल, नगाड़ा, मिश्रित, जोड़ा हुआ, वेश, रचना।
आनन (सं० पु०) मुंह, मुख, चेहरा, बदन।
आननफानन (अ० क्रि० वि०) बात की बात में, झट-पट, चट से, बहुत शीघ्र।
आनन्द (सं० पु०) प्रसन्नता, हर्ष, आह्लाद, सुख, मोद।
आनन्दकर (सं० पु०) आनन्द देनेवाला।
आनन्दकानन (सं० पु०) आनन्द देनेवाला वन, बाराणसी, काशी।

आनन्दपट (सं० पु०) नवविवाहिता का वस्त्र।
आनन्द-बधाई (सं० स्त्री०) मंगलोत्सव। [दिया जाता है।
आनन्द-भैरव (सं० पु०) एक रस विशेष, जो ज्वर में
आनन्दवर्द्धन (सं० पु०) एक संस्कृत कवि, ये काश्मीर के रहनेवाले थे, ये अलङ्कार-शास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे। इनसे बनाये हुए संस्कृत के ग्रन्थ ये हैं, काव्यालोक, ध्वन्यालोक, सहृदयालोक।
आनन्दित (सं० पु०) हर्षित, आह्लादित।
आनन्दी (वि०) प्रसन्न, हर्षित।
आनना (क्रि० स०) ले आना, लाना।
आन-बान (सं० स्त्री०) चमक-दमक, सजधज, चटक-मटक, तड़क-भड़क, बनावट, ऐंठ, ठसक।
आनयन (सं० पु०) ले आना, लाना, उपनयन संस्कार।
आनर्त (सं० पु०) नाचघर, नृत्यशाला, जल, युद्ध, एक देश विशेष, द्वारका, आनर्त देश का रहनेवाला।
आनर्तित (वि०) नाचता हुआ, नृत्यविशिष्ट, कम्पित, कांपता हुआ।
आनवी (क्रि० स०) लेते आइये। [उपस्थित करो।
आनहु (क्रि० स०) ले आओ, लेते आओ, हाज़िर करो,
आना (सं० पु०) किसी वस्तु के सोलहवें हिस्से का एक हिस्सा, रुपये का सोलहवां भाग। (क्रि० अ०) पास पहुँचना, पहुँचना, जाकर लौटना, फलना-फूलना, मन में कोई भाव उत्पन्न होना।
मुहा०—आ धमकना = अचानक आ पहुँचना। आता जाता = आने-जानेवाला। आ लेना = पकड़ लेना।
आनाकानी (सं० स्त्री०) हीला-हवाला, टाल-मटोल, बहाना-बाज़ी, सुनी अनसुनी करना, इधर-उधर करना।
आना जाना (क्रि० अ०) आवागमन।
आनिहौं (क्रि० स०) ले आऊंगा, लाऊंगा।
आनीत (वि०) ले आना, आनना।
आनुकूल्य (सं० पु०) अनुकूलता।
आनुपूर्व (सं० स्त्री०) क्रमागत, क्रमिक, पर्याय।
आनुपूर्वी (सं० स्त्री०) क्रमानुसार, क्रमागत, एक के बाद एक, परिपाटी, शैली, शृङ्खला। [अनुमान-सिद्ध।
आनुमानिक (वि०) अनुमान-विषयक, अनुमान-सम्बन्धी,
आनुश्राविक (वि०) जिसको परम्परा से सुनते चले आते हों। [प्रासङ्गिक, जो एक प्रसङ्ग में होता आया हो।
आनुसङ्गिक (वि०) गौण, साथ-साथ होनेवाला,
आनृशंस्य (सं० पु०) दया, स्नेह, निष्ठुरताशून्य, अनिठुर।
आनेता (सं० पु०) ले आनेवाला व्यक्ति, हरणकर्ता।
आन्तरिक (वि०) अन्तःकरण-विषयक, मानसिक, मनोगत।
आन्दू (सं० पु०) हाथी बांधने का सांकल।
आन्दोलन (सं० पु०) कम्पन, अनुशीलन, इधर-उधर जाना, बार-बार हिलाना, बार-बार कहना, हलचल, धूम, उथल-पुथल करनेवाला प्रयत्न, किसी कुरीतियों या बुराइयों को पलट देनेवाला प्रयत्न।
आन्न (क्रि० स०) ले आना, आनना, अनायन करना।
आन्वीक्षिकी (सं० स्त्री०) न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र, आत्मविद्या।
आप (सं० पु०) जल, पानी।
आप (सर्व०) स्वयं, खुद, अपना, स्व।
मुहा०—आप आप करना = खुशामद करना।
आप आप में = आपस में, परस्पर। आप ही आप = स्वयं
आपकाज (सं० पु०) स्वार्थ, मतलब।
आपकाजी (वि०) स्वार्थी, मतलबी।
आपगा (सं० स्त्री०) नदी, सरित।
आपण (सं० पु०) हाट, बाजार, दूकान, वह द्रव्य या कर जो बाज़ार में प्राप्त हो।
आपणिक (सं० पु०) व्यापारी, बनिया।
आपत (सं० स्त्री०) आपद, दुःख, कष्ट, विपत्ति।
आपत्काल (सं० पु०) कुसमय, दुःख का समय, दुर्दिन, विपत्ति। [जनक।
आपज्जनक (वि०) अनिष्टकारी, दुःखदायी, विपद-
आपत्ति (सं० स्त्री०) आपत्ति, विघ्न, क्लेश, दुःख, संकट, दोषारोपण, बाधा।
आपद् (सं० स्त्री०) आपत्ति, विपत्ति, विघ्न, बाधा क्लेश, दुःख। [फंसा हुआ, विपन्न।
आपद्ग्रस्त (वि०) विपत्ति में पड़ा हुआ, आपत्ति में
आपदा (सं० स्त्री०) देखो आपद्।
आपन (सर्व०) अपना।
आपनिक (सं० स्त्री०) पन्ना, पन्नग, इन्द्र, नीलमणि।
आपन्न (वि०) विपद्ग्रस्त, आपद में फंसा हुआ, दुःखी, अभागा।
आपन्नसत्वा (सं० स्त्री०) गर्भवती।
आपमित्यक (सं० पु०) गृहीत वस्तु, परिवर्तन किया हुआ, बदले में मिला हुआ द्रव्य।
आपरूप (वि०) स्वयं, साक्षात्, आप, भगवान, ईश्वर।

आपस (सं० स्त्री०) परस्पर, संबन्ध, नाता-गोता, आप सब, स्वयं। [आपस में = परस्पर।
मुहा०—आपस का = अपने भाई-बन्धु के बीच का।
आपसा (सं० स्त्री०) आप के समान, अपने जैसा।
आपा (सं० स्त्री०) अपना अस्तित्व, स्वसत्ता, बड़ी बहिन, अहङ्कार, गर्व, सुध-बुध, (पु०) बड़ा भाई।
मुहा०—आपा खोना = अहङ्कार त्यागना। आपा डालना = घमंड छोड़ना। आपा तजना = अपने को मिटाना। आपा बिसरना = सुध-बुध भूलना। आपे में आना = होश में होना। आपे में न रहना = बेक़ाबू होना। आपा मिटना = घमंड दूर होना। आपा संभालना = चेतना। आपे से बाहर होना = वश में न रहना।
आपाक् (सं० पु०) वह स्थान जहाँ कुम्हार वर्तन पकाते हैं, आँवा, पजावा।
आपाततः (अव्य०) अधुना, सम्प्रति, इस समय।
आपाद पर्यन्त (अव्य०) पैर से सिर तक, आपादमस्तक।
आपाद मस्तक (सं० पु०) पैर से सिर तक, चरण से मस्तक पर्यन्त।
आपाधापी (सं० स्त्री०) अपनी तुमड़ी अपना राग, अपने ही काम का ध्यान, अपनी-अपनी धुन, लाग-डाट, खैंचातानी।
आपान (सं० पु०) मद्यपानालय, मद्य पीने का स्थान, मद्य पीने वालों का गिरोह, शराब पीने की गोष्ठी।
आपामर साधारण (सं० पु०) सर्वसाधारण।
आपिञ्जर (सं० पु०) स्वर्ण, सुवरण, सोना, हेम, काञ्चन।
आपीड (सं० पु०) सिर पर पहनने का भूषण, शिरोभूषण, पगड़ी, वेनी, सिरपेंच, मुकुट, कलंगी।
आपीन् (सं० पु०) गाय का थन, बहुत मोटा, स्थूल, कठिन, कड़ा, मोटा, बड़ा।
आपु (सर्व०) अपना।
आपुस (सर्व०) परस्पर, आपस में।
आपूर्ति (सं० स्त्री०) पूर्ण, सम्यक्।
आपृच्छा (सं० स्त्री०) प्रश्न, जिज्ञासा, भाषण, आलाप, किसी बात को ज्ञान के लिए पूछना।
आप्त (वि०) लब्ध, प्राप्त, सत्य, अभ्रान्त, सच्चा, विश्वसित, कुशल, निपुण, दक्ष, होशियार, चालाक, (सं० पु०) बन्धु, ऋषि, योग शास्त्रानुसार शब्द-प्रभाव।
आप्तकाम (वि०) पूर्णकाम, जिसकी सब कामनायें पूर्ण हो गई हों, जिसकी सब वासनाओं की पूर्ति हो गई हो।
आप्तकारी (सं० पु०) विश्वासी, विश्वासनीय व्यक्ति।
आप्तगर्व (वि०) दाम्भिक, पाखण्डी, गर्वी।
आप्तग्राही (सं० वि०) स्वार्थी, लोभी, स्वार्थपर।
आप्तवर्ग (सं० पु०) आत्मीय जन, स्वजन, बन्धुबांधव, इष्ट मित्र।
आप्तसार (सं० पु०) आत्मगोपन, आत्मरक्षण। [वाक्य।
आप्तोक्ति (सं० स्त्री०) विश्वस्त पुरुष का कथन, आप्त
आप्यायित (वि०) सन्तुष्ट, तृप्त, प्रसन्न, आनन्दित, वर्द्धित, बढ़ा हुआ, तर, आर्द्र।
आप्रच्छन्न (सं० पु०) आवागमन के समय मित्रों में आपस के कुशल प्रश्न से उत्पन्न आनन्द।
आप्लव (सं० पु०) स्नान, नहाना, जलमय, अवगाहन।
आप्लवव्रती (सं० पु०) देखो आप्लुतव्रती।
आप्लुत (वि०) नहाया हुआ, स्नान किया हुआ, भीगा हुआ, (सं० पु०) भीगा, स्नातक।
आप्लुत व्रती (सं० पु०) ब्रह्मचर्य के बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाला व्यक्ति, स्नातक ब्राह्मण।
आफत (अ० सं० स्त्री०) आपत्ति, बला, दुःख, कष्ट, मुसीबत।
आफ़ (सं० स्त्री०) अफ़ीम, अफ़्यून, नशा।
आब (फ़ा० सं० स्त्री०) पानी, द्युति, कान्ति, चमक-दमक, तड़क-भड़क, झलक, उत्कर्ष, प्रतिष्ठा, महिमा, गुण, शोभा, छवि। [= जलवायु।
मुहा०—आब आब करना = पानी माँगना। आब हवा
आबकारी (फ़ा० सं० स्त्री०) कलवरिया, हौली, भट्टी, मद्यालय, सरकारी मुहकमा जिसका सम्बन्ध मादक वस्तुओं से हो।
आबख़ोरा (फ़ा० सं० पु०) कटोरा, प्याला, गिलास।
आबजोश (फ़ा० सं० पु०) गरम पानी में उबाला हुआ मुनक्का। [चमक-दमक।
आबताब (फ़ा० सं० स्त्री०) प्रभा, कान्ति, शोभा, छटा,
आबदस्त (फ़ा० सं० पु०) सौंचना, पानी छूना।
आबदाना (फ़ा० सं०पु०) अन्न-जल, दाना-पानी, जीविका।
मुहा०—आबदाना उठना = जीविका न रहना।
आबदार (फ़ा० वि०) चमकीला, भड़कीला, द्युतिमान।
आबनूस (सं० पु०) वृक्ष विशेष।

आबपाशी (फ़ा० सं० पु०) सिंचाई।
आबरू (फ़ा० सं० पु०) मान, प्रतिष्ठा इज़्ज़त।
मुहा०—आबरू में बट्टा लगना=बदनामी होना।
आबहवा (फ़ा० सं० पु०) जलवायु।
आबाद (फ़ा० वि०) बसा हुआ, सकुशल, प्रसन्न।
आबादी (सं० पु०) बस्ती, जन संख्या।
आबाधा (सं० पु०) लम्ब, रेखा विशेष।
आबू (सं० पु०) अरावली पहाड़ पर एक स्थान विशेष।
आब्दिक (वि०) सालाना वार्षिक।
आभ (सं० पु०) द्युति, शोभा, दीप्ति, आभा।
आभरण (सं०पु०) गहना, भूषण, अलङ्कार, आभूषण।
आभा (सं० पु०) द्युति, दीप्ति, आभा, प्रभा, चमक-दमक, प्रतिबिम्ब, छाया, भड़क, शोभा।
आभार (सं० पु०) बोझ, गृहस्थी के देख-रेख का उत्तर-दायित्व, गृहस्थी का भार, उपकार, निहोरा।
आभारी (वि०) उपकृत, उपकार मानने वाला।
आभाष (सं० पु०) उपक्रमणिका, भूमिका, प्राक्कथन, सम्भाषण। [आलाप।
आभाषण (सं० पु०) सम्भाषण, कथन, वार्तालाप,
आभास (सं० पु०) छाया, प्रतिबिम्ब, झलक, पता, मिथ्या ज्ञान, अभिप्राय, संकेत, अवतरणिका।
आभास्वर (सं० पु०) गण देवता, चौसठ संख्या विषयक।
आभिचारक (सं० पु०) अभिचार कर्ता, अभिचार करने वाला, हिंसात्मक प्रयोग करनेवाला।
आभिजात्य (सं० पु०) कुल सम्बन्धी, वंश विषयक, कुलीनता, पाण्डित्य, सदृशता। [कथित।
आभिधानिक (वि०) अभिधानवेत्ता, कोशोक्त, कोश में
आभिमुख्य (सं० पु०) सम्बोधन, आमना सामना, सामना, अभिमुख करना, सम्मुखी-करण।
आभीर (सं० पु०) अहीर, ग्वाला, गोप।
आभीरपल्ली (सं० पु०) अहीरों का गांव, गोप-ग्राम।
आभूषण (सं० पु०) गहना, ज़ेवर, अलङ्कार, भूषण।
आभ्यन्तर (वि०) भीतरी, अन्दरूनी, अन्दर का।
आभ्यन्तरिक (वि०) भीतरी, अन्तरङ्ग।
आभ्यासिक (वि०) अभ्यास करनेवाला, अभ्यासी।
आभ्युदयिक (वि०) अभ्युदय-विषयक, अभ्युदययुक्त, भाग्यवान, शोभान्वित, एक श्राद्ध विशेष, इसको नान्दीमुख श्राद्ध भी कहते हैं।
आम (वि०) अपरिपक्व, कच्चा, असिद्ध, अपक्व, साधारण, सामान्य, (सं० पु०) आमाशय रोग विशेष, एक फल और वृक्ष विशेष, आम्रफल, आम्रवृक्ष।
मुहा०—आम के आम गुठली के दाम=दोहरा लाभ उठाना। बारी में बारह आम सट्टी में अट्ठारह आम=जहाँ कोई वस्तु मँहगी मिलनी चाहिए वहाँ उस स्थान से भी सस्ती मिलना जहाँ प्रायः वह वस्तु सस्ती बिकती है।
आमगंधि (सं० स्त्री०) विसायन्ध गंध, चिता का धुँआ मच्छली, कच्चा मांस आदि की गंध।
आमचूर (सं० पु०) खटाई, आम का सूखा चूर्ण।
आमड़ा (सं० पु०) एक प्रकार का फल विशेष।
आमद (फ़ा० सं० स्त्री०) आमदनी, आगमन, आवाई।
आमदनी (फ़ा० सं० पु०) आय, प्राप्ति, आमद।
आमनाय (सं० पु०) आम्नाय, अभ्यास, परम्परा।
आमना सामना (सं० पु०) भेंट, मुक़ाबला।
आमने सामने (क्रि० वि०) एक दूसरे के सामने।
आमन्त्रण (सं० पु०) निमन्त्रण, न्योता, सम्बोधन, आह्वान, बुलावा, पुकार, गोहराव।
आमन्त्रित (वि०) न्योता हुआ, निमन्त्रित, आहूत, बोलाया हुआ, गोहराया हुआ।
आमय (सं० पु०) दुःख, व्याधि, रोग, पीड़ा, बीमारी।
आमयावी (वि०) पीड़ित, बीमार, रोगी।
आमरक्त (सं० पु०) उदर-रोग, अतिसार, मल, आँव गिरनेवाला रोग।
आमरण (क्रि० वि०) मरण पर्यन्त, मरणावधि।
आमर्श (सं० पु०) सलाह, परामर्श, विवेचन, विचार।
आमर्ष (सं० पु०) रोष, कोप, क्रोध, राग, द्वेष।
आमलकी (सं० पु०) आमला, छोटी जाति का अंवरा, फाल्गुन शुक्ल एकादशी।
आमला (सं० पु०) धात्री फल, आंवला, अंवरा।
आमवात (सं० पु०) रोग विशेष।
आमशूल (सं० पु०) रोग विशेष, वायुगोला, वायुशूल।
आमात्य (सं० पु०) प्रधान मन्त्री, वज़ीर, पात्र, प्रधान।
आमान्न (सं० पु०) अपक्व अन्न, कच्चा अन्न, कोरा अनाज।
आमाशय (सं० पु०) पेट के भीतर एक थैली, खाया हुआ पदार्थ इसमें एकत्रित होकर पचता है।
आमाहल्दी (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा।

आमिष (सं० पु०) मांस, गोश्त, घूंस, रिश्वत, लोभ सम्भोग; सञ्चय, लाभ, भोजन, रूप ।

आमिषप्रिय (वि०) मांस-मछली को प्यार करने वाला, (सं० पु०) चील, गिद्ध, बाज़ ।

आमिषभुक् (सं० पु०) मांस-भक्षी ।

आमिषभोगी (सं० पु०) मांस खाने वाला ।

आमिषाशी (वि०) मांस खानेवाला, मांस-भक्षी ।

आमूल (सं० पु०) कारण, मूलावधि, जड़ तक, मूल पर्यन्त । [उच्छेदित ।

आमृष्ट (सं० पु०) मर्दन किया हुआ, मर्दित, अपमानित,

आमोद (सं० पु०) दूर से आने वाला सुगंध, सौरभ, हर्ष, आनन्द, मन-बहलाव, प्रसन्नता, खुशी ।

आमोद-प्रमोद (सं० पु०) आनन्द-मंगल, भोग-विलास आराम-चैन । [बहला हुआ, सुगंधित ।

आमोदित (वि०) हर्षित, प्रफुल्लित, आनन्दित, मन

आमोदी (वि०) आनन्दित रहने वाला, प्रसन्न रहने वाला, सुगंधित करनेवाला ।

आम्नाय (सं० पु०) अभ्यास, वेद, उपदेश, वेदादि का अभ्यास और पठन, प्राचीन परिपाटी ।

आम्बर (सं० स्त्री०) कृत्रिम मूंगा, बनावटी मूँगा, कहरुवा ।

आम्र (सं० पु०) आम, रसाल । [बगीचा ।

आम्राई (सं० स्त्री०) आमराई, आम का बाग, आम का

आम्रेडन (सं० पु०) एक ही बात को बार-बार कहना, पुनरुक्ति ।

आय (सं० स्त्री०) आमदनी, लाभ-प्राप्ति, धनागम ।

आयत (सं० पु०) विशाल, विस्तृत, लम्बा, चौड़ा, (अ० पु०) कुरान या इंजिल का वाक्य ।

आयतन (सं० पु०) मन्दिर, भवन, गृह, घर, यज्ञस्थान, देव-पूजन-स्थान, वासस्थान, ठहरने की जगह, ज्ञान के सञ्चार का स्थान ।

आयति (सं० पु०) भविष्य काल, उत्तर काल ।

आयत्ति (सं० पु०) अधीनता, पर-वशता ।

आयन्दा (फ़ा० वि०) आगामी, आगन्तुक, भविष्य, (सं० पु०) आगामी समय, भविष्य काल ।

आयसु (सं० पु०) आज्ञा, आदेश, हुक्म ।

आया (क्रि० अ०) आना क्रिया का भूत काल, (सं०पु०) धात्री, धाय, बच्चों को खिलाने-पिलाने वाली स्त्री, (फ़ा०अव्य०) क्या ।

आयात (वि०) आया हुआ, आगत, उपस्थित, वर्तमान ।

आयाम (सं० पु०) विस्तार, लम्बाई, नियमन ।

आयास (सं० पु०) परिश्रम, मेहनत, मशक्कत, व्यायाम, श्रम, यत्न, प्रयास ।

आयु (सं० स्त्री०) अवस्था, वय, उम्र, जीवन-काल ।

मुहा०—आयु खुटाना = आयु कम होना । आयु क्षीण होना = आयु कम होना । आयु सिराना = आयु का अंत होना ।

आयुध (सं० पु०) हथियार, अस्त्र-शस्त्र । [स्थान ।

आयुधागार (सं० पु०) शस्त्रागार, हथियार रखने का

आयुधिक (सं० पु०) अस्त्रजीवी, अस्त्रधारी ।

आयुधीय (सं० पु०) अस्त्रधारी ।

आयुर्दाय (सं० पु०) फलित ज्योतिष, ग्रहों के स्थानानुसार आयु का निर्णय ।

आयुर्बल (सं० पु०) वय, आयुष्य, उम्र ।

आयुर्वेद (सं० पु०) आयु-विषयक-शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र, निदान-शास्त्र, वैद्यक-शास्त्र ।

आयुर्वेदी (वि०) चिकित्सक, वैद्य । [आयुष्य ।

आयुर्वेदीय (वि०) आयुर्वेद सम्बन्धी ।

आयुष्कर (वि०) आयुवर्द्धक, आयु बढ़ानेवाला ।

आयुष्टोम (सं० पु०) यज्ञ विशेष ।

आयुष्मान (वि०) चिरंजीवी, दीर्घजीवी, दीर्घायु, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक योग ।

आयुष्य (सं० पु०) अवस्था, वय, उम्र, आयु, (वि०) आयु बढ़ानेवाला, आयुवर्द्धक ।

आयोगव (सं० पु०) एक वर्ण-संकर जाति विशेष, शूद्र से वैश्य के गर्भ में उत्पन्न जाति बढ़ाई ।

आयोजन (सं० पु०) नियुक्ति, उद्योग, तैयारी, सामान, सामग्री, प्रबन्ध । [समर-भूमि ।

आयोधन (सं० पु०) संग्राम, युद्ध, रण, समर, रणस्थल,

आर (सं० पु०) कांटा, कील, पैना, अंकुश, मंगल, शनिश्चर, चमार, लोहार, पीतल, तांबा, कच्चा लोहा, किनारा, कोना, (अ० सं० स्त्री०) घृणा, बैर, शत्रुता, लज्जा, शर्म ।

आरचा (सं० स्त्री०) प्रतिमा, मूर्ति, पूजा ।

आरज (वि०) उत्तम, पूज्य, बड़ा, श्रेष्ठ ।

आरज़ा (अ० सं० पु०) बीमारी, रोग ।

आरराय (वि०) बनैला, जंगली ।

आरत (वि०) दुःखित, पीड़ित, व्यथित, सन्तप्त, व्याकुल, शोकित । [आरती ।
आरता (सं० पु०) एक वैवाहिक रीति, दुलहे का परिछन
आरति (वि०) विरक्त, (सं०स्त्री०) दीपदान, देवताओं को दिया दिखाना । [दिखाना ।
आरती (सं० स्त्री०) देवता को घृत कर्पूरादि का दिया
आरन (सं० पु०) वन, कानन, जंगल ।
आरपार (सं० पु०) इस छोर से उस छोर तक, इस किनारे से उस किनारे तक ।
आरब्ध (वि०) आरम्भ किया हुआ, उपक्रान्त ।
आरभटी (सं० स्त्री०) क्रोधादि उग्र भावों की चेष्टा, एक नाटकीय वृत्ति विशेष, इसमें वीभत्स, रौद्र, आघात, प्रतिघात, क्रोध, माया, इन्द्रजाल, आदि दिखाया जाता है । [उपक्रम ।
आरम्भ (सं०पु०) प्रारम्भ, शुरू, आदि, अनुष्ठान,
आरषी (वि०) आर्ष, ऋषि-सम्बन्धी ।
आरसी (सं० स्त्री०) शीशा, दर्पण, आइना, स्त्रियों के हाथ के अंगूठे में पहनने का एक गहना, जिसमें शीश जड़ा रहता है ।
आरा (सं० पु०) लोहे का एक औज़ार, इसमें दाँत बना रहता है, इससे लकड़ी चीरी जाती है । दारान्त क्रकच ।
आराकश (फ़ा० सं० पु०) लकड़ी चीरने वाला ।
आराज़ी (अ० सं० स्त्री०) खेत, ज़मीन ।
आराति (सं० पु०) दुश्मन, शत्रु, वैरी, विपक्षी ।
आरात् (अव्य०) समीप, पास, निकट ।
आराधक (वि०) उपासक, पुजारी, सेवक, पूजक ।
आराधन (सं० पु०) पूजा, सेवा, उपासना, तोषण, साधना ।
आराधना (सं० स्त्री० उपासना, सेवा, शुश्रूषा ।
आराधित (वि०) पूजित, उपासित ।
आराध्य (वि०) उपास्य, पूजनीय, सेव्य ।
आराम (सं० पु०) वाटिका, फुलवारी, उपवन, (फ़ा० पु०) सुख, चैन, विश्राम, स्वस्थ, चंगापन, थकावट दूर करना । [गार, विश्राम करने की जगह ।
आरामगाह (फ़ा० सं० स्त्री०) आराम का स्थान, शयना-
आरामतलब (फ़ा० वि०) सुकुमार, सुस्त, आलसी ।
आरि (सं० स्त्री०) हठ, टेक, ज़िद ।
आरिया (सं० स्त्री०) चौमासे में होने वाली एक ककड़ी विशेष ।
आरी (सं० स्त्री०) लकड़ी चीरने का एक औज़ार, इसमें दाँत बने रहते हैं, यह आरा से छोटी होती है, चमड़ा सीने का टेकुआ । [दबाना ।
आरुंधना (क्रि० स०) बन्द करना, दम रोकना, गला
आरूढ़ (वि०) चढ़ा हुआ, आरोहित, सवार ।
आरोग (वि०) स्वस्थ, नीरोग, रोगरहित, भला-चंगा ।
आरोगना (क्रि० स०) भोजन करना, खाना ।
आरोग्य (वि०) स्वस्थ, तन्दुरुस्त, आरोग्य, नीरोग ।
आरोप (सं० पु०) रोपना, लगाना, बैठाना, कल्पना ।
आरोपण (सं० पु०) रोपन, लगाना, मढ़ना, भ्रम, मिथ्या ज्ञान । [स्थापित किया हुआ ।
आरोपित (वि०) लगाया हुआ, रोपा हुआ, मढ़ा हुआ,
आरोहण (सं० पु०) चढ़ाव, उत्थान, चढ़ना, सवार होना, अखुआना, सीढ़ी, सोपान ।
आरोही (वि०) चढ़वइया, सवार, उन्नतिशील ।
आर्जव (सं० पु०) सरलता, सुगमता, नम्रता, सीधापन ।
आर्त्त (वि०) पीड़ित, व्यथित, सन्तप्त, दुखी, कातर, क्लेशित । [सूचक शब्द, आर्त्तस्वर ।
आर्त्तनाद (सं० पु०) कातर स्वर, क्लेश-सूचक शब्द, दुःख-
आर्त्तव (वि०) मौसमी, सामयिक, ऋतु-विषयक, (सं० पु०) मासिक रज, मासिक धर्म, पुष्प ।
आर्त्तस्वर (सं० पु०) आर्त्तनाद, दुःख-सूचक शब्द ।
आर्थिक (वि०) अर्थ-विषयक, द्रव्य-संबन्धी, पैसे-रुपये का । [लथपथ ।
आर्द्र (वि०) भीगा हुआ, गीला, ओदा, सरस, तर,
आर्द्रक (सं० पु०) आदी, अदरक ।
आर्द्रा (सं० स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में का छठवाँ नक्षत्र ।
आर्द्रालुब्धक (सं० पु०) केतु ।
आर्द्रावीर (सं० पु०) वाममार्गी ।
आर्द्राशनि (सं० स्त्री०) बिजुली, एक अस्त्र ।
आर्य (वि०) सत्कुलोत्पन्न, श्रेष्ठ, बड़ा, उत्तम, पूज्य ।
आर्यपुत्र (सं० पु०) स्वामी, पति, भर्त्ता, गुरुपुत्र, आदर-सूचक शब्द । [इसके प्रवर्तक दयानन्द थे ।
आर्य समाज (सं० पु०) एक धार्मिक सम्प्रदाय विशेष,
आर्या (सं० स्त्री०) पार्वती, सास, दादी, आजी ।

आर्यावर्त (सं० पु०) पुण्य भूमि, आर्यों का निवास स्थान, उत्तरी भारत, इसकी सीमा हिमालय से लेकर विन्ध्या और बंगाल की खाड़ी से लेकर अरब सागर तक है।

आर्ष (वि०) ऋषि-प्रणीत, ऋषि-सम्बन्धी, ऋषि-विषयक, ऋषि सेवित, वैदिक। [शब्द का व्यवहार।

आर्षप्रयोग (सं० पु०) व्याकरण के नियमों के विरुद्ध

आर्षविवाह (सं० पु०) आठ प्रकार के विवाहों में से एक विवाह, इस विवाह में वर पक्ष से कन्या का पिता एक या दो गौ लेकर कन्या देता था।

आलकस (सं० पु०) आलस्य, सुस्ती।

आलन (सं० पु०) घास-भूसा जो दीवार में छापी जाने वाली मिट्टी में लसी आने के लिए मिलाया जाता है, घास-पात जो गोबर में मिला कर उपरी पाथा जाता है। पाक विशेष, विना नमक का।

आलना (सं० पु०) घोंसला, खोंता।

आलबाल (सं० पु०) कियारी, थाला, थांवला।

आलम (अ० सं० पु०) जनसमूह, दुनिया, संसार।

आलमारी (सं० स्त्री०) अलमारी, एक काठ का बड़ा खड़ा करने का सन्दूक जिसमें पोथी-पत्रा आदि रक्खा जाता है। [सहारा, शरण।

आलम्ब (सं० पु०) अवलम्ब, आश्रय, उपजीविका,

आलम्बन (सं० पु०) सहारा, आश्रय, साधन, कारण, रस-विभेद विशेष, जिसके सहारे रस की उत्पत्ति हो, जैसे शृङ्गार रस में नायक नायिका।

आलय (सं० पु०) भवन, गृह, मन्दिर, घर, निवास-स्थान, मकान।

आलस (वि०) आसकती, आलस्य, सुस्ती।

आलसी (वि०) अकर्मण्य, आसकती, सुस्त।

आलस्य (सं० पु०) निरुत्साह, अकर्मण्यता, सुस्ती।

आला (सं० पु०) ताखा, अरवा, दिया का ताख (अ० वि०) सर्वोत्तम।

आलान (सं० पु०) हाथी बांधने का खूँटा, हाथी बांधने का रस्सा या ज़ंजीर, रस्सी, बंधन। [सम्भाषण, तान।

आलाप (सं० पु०) वार्त्तालाप, बातचीत, कथोपकथन

आलापना (क्रि० स०) गाना, तान छेड़ना, तान उड़ाना।

आलापिनी (सं० स्त्री०) बंसी, बांसुरी।

आलापी (वि०) तान छेड़नेवाला, गानेवाला।

आलाबु (सं० स्त्री०) लौकी, कद्दू। [अशुभ।

आलाय बलाय (सं० स्त्री०) आपद, विपद, दुःख, दरिद्र,

आलारासी (वि०) बेपरवाह, निर्द्वन्द्व, बेफ़िक्र।

आलि (सं० स्त्री०) सहेली, सखी, संगिनी, साथिनी, वयस्या, गुइंया, बांध, सेतु, पुल, रेखा, पङ्क्ति, भ्रमरी, बिच्छू, वृश्चिक।

आलिक (अ० वि०) विद्वान।

आलिखित (वि०) चित्रित, लिखित, अङ्कित।

आलिङ्गन (सं० पु०) गले लगाना, लपटाना, छाती से लगाना, अकवार-भेंट।

आली (सं० स्त्री०) सखी, सहेली, पङ्क्ति, वृश्चिक।

आलीढ़ (सं० पु०) बाण छोड़ने का आसन, दायां पैर आगे और बायां पैर पीछे करके बैठना, (वि०) खाया हुआ, भक्षित, चाटा हुआ, आस्वादित।

आलीशान (अ० वि०) विशाल, भड़कीला, भव्य।

आलुलायित (वि०) बन्धनरहित, मुक्त।

आलू (सं० पु०) कन्द विशेष। [गर्दालू।

आलूचा (सं० पु०) एक फलदार पहाड़ी वृक्ष विशेष,

आलू बुखारा (फ़ा० सं० पु०) एक फल विशेष, यह सुखा कर रक्खा जाता है, यह खट्टा-मीठा होता है, इसकी चटनी रोगियों को दी जाती है।

आलेख्य (सं० पु०) तसवीर, चित्र।

आलेप (सं० पु०) लेप, मलहम।

आलोक (सं० पु०) प्रकाश, प्रभा, ज्योति, दीप्ति।

आलोकन (सं० पु०) दर्शन, अवलोकन, देखना।

आलोकित (वि०) देखा हुआ, दर्शित।

आलोचक (वि०) देखनेवाला, आलोचना करनेवाला।

आलोचन (सं० पु०) गुण दोष की विवेचना, विवेचन, विचार। [निरूपण।

आलोचना (सं० स्त्री०) विवेचना, आन्दोलन, गुण-दोष

आलोचित (वि०) विवेचित, अनुशीलित।

आलोच्य (वि०) विचारणीय, विवेचनीय।

आलोड़न (सं० पु०) हिलोरना, मथना, सोच-विचार।

अलोड़ना (क्रि० स० मथना।

आलोल (वि०) चपल, चञ्चल।

आल्हा (सं० पु०) ३१ मात्रा का एक छन्द विशेष, एक कवि का नाम, एक पुस्तक का नाम, महोबा के एक वीर पुरुष, यह पृथ्वीराज का सम सामयिक था।

मुहा०—आल्हा गाना = अपना वृत्तान्त सुनाना ।
आवई (सं० पु०) समाचार, चर्चा
आवक (वि०) बीमा, उत्तरदायित्व ।
आवन (सं० पु०) आगमन, आना ।
आवना (क्रि० अ०) पहुँचना, आना ।
आवनी (सं० स्त्री०) आना, आगमन ।
आवनेहारा (वि०) आने वाला, अवैया ।
आवनो (क्रि० अ०) आना ।
आवभगत (सं० स्त्री) सम्मान, आदर, सत्कार ।
आवभाव (सं० स्त्री०) सम्मान, आदर, सत्कार ।
आवरण (सं० पु०) आच्छादन, परदा, ढक्कन, ढाल ।
आवर्जन (सं० पु०) फेंकना, रोकना, मना करना ।
आवर्त (सं० पु०) भंवरी, भंवर, चक्र, फेरा, घुमाव, पानी न बरसने वाला बादल, सोनामक्खी, संसार, चिन्ता, सोच-विचार ।
आवलि (सं० स्त्री०) श्रेणी, पङ्क्ति ।
आवश्यक (वि०) ज़रूरी, आपेक्ष्य, प्रयोजनीय ।
आवश्यकता (सं० स्त्री०) दरकार, ज़रूरत, प्रयोजन ।
आवश्यकीय (वि०) प्रयोजनीय, ज़रूरी ।
आवसथ (सं० पु०) घर, भवन, गृह, गेह ।
आवह (सं० पु०) सात वायुओं में से एक, भूवायु ।
आवहमान (वि०) क्रमशः, क्रमागत, पूर्वापर ।
आवा (सं० पु०) गर्म लाल लोहा पीटने के लिए दूसरे लुहार का बुलावा । [जवाई ।
आवागमन (सं० पु०) आना, जाना, जन्म-मरण, अवाई-
आवागवन (सं० पु०) जन्म-मरण, आना-जाना, आवागमन ।
आवाज़ (फ़ा० सं० पु०) शब्द, ध्वनि ।
आवाज़ा (फ़ा० सं० पु०) व्यंग, ताना ।
आवाजाही (सं० स्त्री०) आना-जाना, आवागमन ।
आवारगी (फ़ा० सं० स्त्री०) गुण्डापन, लुच्चापन ।
आवारा (फ़ा० वि०) उठल्ला, बदमाश, लुच्चा, कुमार्गी ।
आवास (सं० पु०) गेह, गृह, घर, मकान, रहने का स्थान ।
आवाहन (सं० पु०) मन्त्र से किसी देवता को बुलाना, सादर बुलाना ।
आविर्भाव (सं० पु०) उत्पत्ति, प्रकाश, प्रत्यक्षता, आवेश ।
आविर्भूत (वि०) उत्पन्न, प्रकाशित, प्रकटित ।
आविष्कर्ता (वि०) आविष्कार करनेवाला, प्रादुर्भाव करनेवाला ।
आविष्कार (सं० पु०) प्रकाश, प्रकटन, ईजाद ।
आविष्कृत (वि०) प्रकटित, प्रकाशित, प्रादुर्भूत ।
आविष्ट (वि०) मनोयोगी, लीन, किसी धुन में मस्त ।
आवृत (वि०) आच्छादित, छिपा, ढका, घेरा, वेष्ठित ।
आवृत्ति (सं० स्त्री०) बारबार किसी बात का अभ्यास करना, बारबार किसी विषय को पढ़कर याद करना, उद्धरणी ।
आवेग (सं० पु०) जोश, मन की प्रबल वृत्ति ।
आवेदक (वि०) निवेदन करनेवाला, निवेदक ।
आवेदन (सं० पु०) निवेदन, प्रार्थना, अर्ज़ी ।
आवेदन-पत्र (सं० पु०) निवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र ।
आवेद्य (वि०) निवेदन करने योग्य ।
आवेश (सं० पु०) प्रवेश, व्याप्ति, संचार, दौरा, वेग, झोंका, आतुरता, भूतादि बाधा, मृगी रोग ।
आवेशन (सं० पु०) प्रवेश, शिल्प-शाला ।
आवो (क्रि० अ०) आओ ।
आशंसा (सं० स्त्री०) इच्छा, चाह, आकांक्षा, वांछा, प्रार्थना, अनुमान, संशय, चाह ।
आशंसित (वि०) इच्छित, वांछित, अभिलषित ।
आशक्त (वि०) मोहित, मुग्ध ।
आशक्ति (सं० स्त्री०) प्यार, चाह ।
आशङ्कनीय (वि०) शङ्का के योग्य, भय-स्थान ।
आशङ्का (सं० स्त्री०) डर, भय, संदेह, भास, संशय, शक ।
आशङ्कित (वि०) भयभीत, शङ्कित, सन्देह-जनित ।
आशय (सं० पु०) तात्पर्य, अभिप्राय, मतलब, आधार, आश्रय, वासना, चाह, खान, गढ़हा ।
आशा (सं० स्त्री०) आसरा, भरोसा, उम्मेद ।
मुहा०—आशा टूटना = आशा भङ्ग होना । आशा तोड़ना = निरास करना । आशा देना = उम्मेद बँधाना । आशा बांधना = आशा करना ।
आशातीत (वि०) आशा से बढ़कर, वासना से परे ।
आशाभङ्ग (सं० पु०) नैराश्य, आशा टूटना ।
आशाबद्ध (वि०) भरोसा रक्खे हुए, आशा लगाए हुए ।
आशिक़ (अ० वि०) प्रेमी, मोहित, आसक्त ।
आशीस (सं० स्त्री०) आशीर्वाद, शुभ-प्रार्थना, मङ्गल प्रार्थना ।

आशीर्वचन (सं० पु०) आशीर्वाद ।

आशीर्वाद (सं० पु०) आसीस, मङ्गल-काङ्क्षा, मङ्गल प्रार्थना, माङ्गलिक वचन ।

आशु (सं० पु०) सावन भादों में होनेवाला धान, भदई धान, साठी, (क्रि० वि०) शीघ्र, तुरन्त चटपट, झटपट । [तत्क्षण कविता करनेवाला कवि ।

आशुकवि (सं० स्त्री०) शीघ्र कविता करनेवाला कवि,

आशुग (वि०) शीघ्र चलनेवाला, शीघ्रगामी ।

आशुतोष (वि०) शीघ्र तुष्ट होनेवाला, शीघ्र प्रसन्न होनेवाला, (सं० पु०) महादेव, शिव ।

आश्चर्य (सं० पु०) अचम्भा, विस्मय, अद्‌भुत, अपूर्व, अलौकिक, विचित्र ।

आश्चर्यान्वित (वि०) अचम्भित, विस्मित ।

आश्चर्यित (वि०) अचंभित, चकित ।

आश्रम (सं० पु०) तपोवन, ऋषि-मुनि साधु-सन्त के रहने का स्थान, मठ, कुटिया, विश्राम-स्थान, स्मृति में कथित मनुष्य-जीवन की चार अवस्थायें-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वाणप्रस्थ, संन्यास ये चार अवस्थायें हैं ।

आश्रमी (वि०) आश्रम-विषयक, आश्रम-वासी ।

आश्रय (सं० पु०) अवलम्ब, सहारा, शरण, आधार ।

आश्रयण (सं० पु०) आधार, सहारा, आश्रय, अवस्थान ।

आश्रयणीय (वि०) सहारा योग्य, अवलम्बन योग्य, आश्रय योग्य । [सेवक, नौकर ।

आश्रित (वि०) अधीन,शरणागत, सहारे पर ठहरा हुआ,

आश्लिष्ट (वि०) लिपटा हुआ, चिपटा हुआ, सटा हुआ, हृदय से चिपटा हुआ, आलिङ्गित ।

आश्लेष (सं० पु०) आलिङ्गन, मिलन, लगाव,लिपटाव ।

आश्वस्त (वि०) आशा पाया हुआ, सहारा प्राप्त ।

आश्वास (सं० पु०) सान्त्वना, ढाढ़स, दिलासा ।

आश्वासन (सं० पु०) सान्त्वना, ढाढ़स ।

आश्वासित (वि०) ढाढ़स पाया हुआ,सान्त्वना प्राप्त ।

आश्विन (सं०पु०) वर्ष का सातवां महीना,क्वार,असोज ।

आषाढ़ (सं० पु०) वर्ष का चौथा महीना, वर्षा ऋतु का यह पहला महीना है ।

आषाढ़भू (सं० पु०) मङ्गल ग्रह, उत्तराषाढ़ नक्षत्र ।

आषाढ़ा (सं० स्त्री०) पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ नक्षत्र ।

आषाढ़ी (सं० पु०) आषाढ़ मास की पूर्णिमा, इस दिन होनेवाले कार्य ।

आस (सं० स्त्री०) आशा, उम्मेद, भरोसा ।

आसकत (सं० स्त्री०) आलस, आलस्य ।

आसकती (वि०) आलसी ।

आसक्त (वि०) अनुरक्त, लिप्त, मग्न । [लिप्सा ।

आसक्ति (सं० स्त्री०) अनुरक्ति, लगन, चाह, प्रेम, इश्क़,

आसङ्ग (सं० पु०) संग, सोहबत, संसर्ग, अनुराग ।

आसतीन (फ़ा० सं० स्त्री०) बांहीं, कुर्ता आदि का वह भाग जो बांह ढांपता है ।

आसते (क्रि० वि०) धीरे-धीरे । [शब्द सान्निध्य ।

आसत्ति (सं० स्त्री०) मिलन, प्राप्ति, संग, समीपता,

आसन (सं० पु०) बैठक, स्थिति,पीढ़ा, चौकी,पीठ, चटाई, योगियों के बैठने का ढंग, ध्यान की रीति,सुरत लगाने की रीति, सेना का वैरियों के सामने अड़े रहना ।

मुहा०--आसन उखड़ना=जगह से हिल जाना । आसन डिगाना=जगह से विचलित करना । आसन डोलना=चित्त क्षुब्ध होना । आसन पाटी=खाट खटोला । आसन मारना=जम कर बैठना । आसन होना=रति प्रसंग के लिए उद्यत होना ।

आसन तले आना (क्रि० अ०) वश में होना, अधीन होना, अधीनता स्वीकार करना ।

आसनी (सं० स्त्री०) छोटा बिछौना, छोटा आसन ।

आसन्दी (सं० स्त्री०) खटोली । [पास,शेष, अन्त ।

आसन्न (वि०) उपस्थित,समीपस्थ, सन्निकट आया हुआ,

आसन्नकाल (सं० पु०) मृत्यु-समय, मरने का वक्त, अन्तिम समय ।

आसन्नभूत (सं० पु०) वर्तमानसे मिला हुआ भूतकाल ।

आस-पास (क्रि० वि०) चारों ओर, अड़ोस-पड़ोस, अगल-बगल, इधर-उधर ।

आसमान (सं० पु०) गगन, आकाश, स्वर्ग ।

मुहा०—आसमान के तारे तोड़ना=कठिन कार्य करना । आसमान ताकना=घमंड से सिर ऊपर उठाना । आसमान टूट पड़ना=अचानक विपत्ति आ पड़ना । आसमान पर उड़ना=इतराना, घमंड करना । आसमान पर चढ़ाना=बहुत प्रशंसा करना । आसमान में छेद हो जाना=अत्यन्त वर्षा होना । आसमान सिर पर उठाना=ऊधम मचाना ।

आसमानी (फ़ा० वि०) आकाश-विषयक, आकाशीय, आसमान के रंग का, फीका नीला रंग ।

आसरा (सं० पु०) भरोसा, आशा, सहारा आश्रय ।
आसव (सं० पु०) मद्य विशेष, मदिरा, अर्क़, मधु, मद ।
आसादन (सं० पु०) मिलन, प्राप्ति ।
आसादित (वि०) लब्ध, प्राप्त, भक्षित ।
आसान (फ़ा० वि०) सीधा, सहज, सरल, सुगम ।
आसानी (फ़ा० सं० स्त्री०) सरलता, सुभीता ।
आसाम (सं० पु०) उत्तर पूर्व बङ्गाल का एक प्रान्त, इसका प्राचीन नाम "कामरूप" है, आहम वंशी राजा यहाँ राज्य करते थे, उनके समय से इनका नाम आहम पड़ा, आहम से आसाम हुआ ।
आसामी (वि०) आसाम देश का रहनेवाला, आसाम देश-सम्बन्धी, (सं० पु०) देखो असामी ।
आसावरी (सं० पु०) रागिनी विशेष ।
आसिख (सं० स्त्री०) आशीर्वाद, असीस ।
आसिधार (सं० पु०) युवक-युवती का अविकृत मन से एक स्थान में निवास-व्रत ।
आसीन (वि०) विराजमान, उपविष्ट, बैठा हुआ ।
आसीस (सं० पु०) उसीस, तकिया ।
आसुर (सं० पु०) असुर-विषयक, विवाह विशेष ।
आसुरी (सं० स्त्री०) राक्षसी, असुर-सम्बन्धी ।
आसुरी चिकित्सा (सं०स्त्री०) अस्त्र-चिकित्सा,चीर फाड़ ।
आसूदगी (फ़ा० सं० स्त्री०) तृप्ति, तुष्टि ।
आसूदा (फ़ा० वि०) तृप्त, सन्तुष्ट,भरा-पूरा ।[प्रिय दर्शन ।
आसेचनक (वि०) जिसको देखने को जी चाहता रहे,
आसोज (सं० पु०) क्वार, आश्विन मास ।
आसौं (क्रि० वि०) इस वर्ष, इस साल ।
आस्कत (सं० स्त्री०) आलस्य, शिथिलता ।
आस्कती (वि०) आलसी, शिथिल ।
आस्कन्दित (वि०) घोड़ों की एक चाल, अश्व का पञ्चम गति, तिरस्कृत, अनादृत ।
आस्तर (सं० पु०) बिछौना, आसन, हाथी की झूल ।
आस्तिक (वि०) ईश्वर की सत्ता को माननेवाला, वेद, ईश्वर, परलोक आदि को माननेवाला, ईश्वरवादी ।
आस्तीक (सं० पु०) एक मुनि का नाम, इनके पिता का नाम जरत्कारु था, इनकी माता नाग वासुकी की बहन थीं, इन्होंने सर्पसत्र यज्ञ में अपने मातृ और पितृ कुल की रक्षा की थी ।
आस्तीन (फ़ा० सं० स्त्री०) पहननेवाले वस्त्र वह हिस्सा जो बांह पर रहता है । [कर पोषण करना ।
मुहा०—आस्तीन में सर्प पालना=शत्रु को पास रख
आस्था (सं० स्त्री०) श्रद्धा, भक्ति, आदर, सभा, बैठक ।
आस्थान (सं० पु०) बैठक, बैठने की जगह, सभा, समाज ।
आस्पद (सं० पु०) पद, प्रतिष्ठा, कुल, वंश, कर्म, कृत्य, स्थान ।
आस्फालन (सं० पु०) घमण्ड, दर्प, अहङ्कार ।
आस्फालित (वि०) गर्वित, कम्पित ।
आस्फोटन (सं० पु०) प्रकाश, विकाश, ताल ठोकना ।
आस्य (सं० पु०) मुंह, मुख, मुख-मण्डल, चेहरा, आनन ।
आस्वाद (सं० पु०) स्वाद, ज़ायक़ा, रस, चस्का ।
आस्वादक (वि०)स्वाद चखनेवाला, ज़ायक़ा लेनेवाला ।
आस्वादन (सं० पु०) स्वाद लेना, चखना, रस लेना ।
आस्वादु (वि०) स्वादिष्ट, स्वादयुक्त, सुरस ।
आह (अव्य०) ग्लानि, शोक, कष्ट, पीड़ा, दुख, दर्द आदि सूचक अव्यय (सं० स्त्री०) शोक या कष्ट-सूचक शब्द, कराहना, (पु०) बल, साहस ।
आहट (सं० स्त्री०) आने का शब्द, टोह, पता, निशान ।
आहत (वि०) घायल, ज़ख़्मी, जीर्ण, पुराना, कंपित ।
आहर (सं० पु०) समय, दिन, युद्ध, संग्राम, एक छोटा तालाब या नाला ।
आहर-जाहर (सं० स्त्री०) आवागमन, आना-जाना ।
आहरण (सं० पु०) हरना, छीनना,लेना
आहर्तव्य (वि०) ले आने योग्य, ग्रहणीय, संगृहीतव्य, संग्रहणीय ।
आहर्ता (वि०) हरनेवाला, छीननेवाला, ले आने वाला ।
आहव (सं० पु०) यज्ञ, लड़ाई, समर, संग्राम, युद्ध ।
आहवीय (सं० स्त्री०) कर्मकाण्ड का अग्नि विशेष ।
आहा (अव्य०) विस्मय और हर्ष-सूचक अव्यय ।
आहार (सं० पु०) खाना, भोजन, भक्षण ।
आहारक (सं० पु०) संग्राहक । [शारीरिक परिचर्या ।
आहार-विहार (सं० पु०) खान-पान, रहन-सहन,
आहारी (वि०) भोजन करनेवाला, भक्षक ।
आहार्य्य (वि०) गृहीत, बनावटी, कृत्रिम, कल्पित, भोजनीय, नायक नायिका का आपस में एक दूसरे का वेश धरना, अङ्ग संस्कार ।
आहि (क्रि० अ०) है ।

आहित (वि०) स्थापित, अर्पित, गिरवी, बन्धकी, धरोहर ।
आहिताग्नि (सं० पु०) अग्निहोत्री ।
आहितुण्डिक (सं० पु०) सँपेरा, साँप पकड़नेवाला ।
आहिस्ता (फ़ा० क्रि० वि०) धीरे-धीरे ।
आहुक (सं० पु०) यादव-वंशी एक राजा का नाम, इनके पिता का नाम अभिजित था, इनकी स्त्री का नाम था काश्या । ये श्रीकृष्ण के मातामह थे ।[वैश्य देव ।
आहुत (सं० पु०) अतिथि-सत्कार, भूतयज्ञ, नृयज्ञ, बलि
आहुति (सं० स्त्री०) होम, हवन, होम-सामग्री, मन्त्र पढ़कर देवता के निमित्त अग्नि में हवि डालना ।
आहूत (वि०) निमन्त्रित, बुलाया हुआ, न्योता हुआ ।
आहृत (वि०) हरा हुआ, लिया हुआ, छीना हुआ ।
आहै (क्रि० अ०) है ।
आहो (अव्य०) प्रश्न, विकल्प, सन्देह ।
आह्निक (वि०) दैनिक, दिवा-कृत्य, दिन का, (सं० पु०) दैनिक कृत्य, ग्रन्थ-भाग, नित्य-क्रिया ।
आह्लाद (सं० पु०) प्रसन्नता, आनन्द, हर्ष । [जनक ।
आह्लादजनक (वि०) हर्ष-वर्द्धक, आनन्द-दायक, सन्तोष-
आह्लादित (वि०) हर्षित, प्रफुल्लित, प्रसन्न, आनन्दित ।
आह्वाय (सं० पु०) नाम, संज्ञा ।
आह्वान (सं० पु०) निमन्त्रण, बुलावा, सम्बोधन, पुकार ।

इ

इ (सं० पु०) कामदेव, गजानन, यह वर्णमाला का तीसरा अक्षर है, इसका उच्चारण-स्थान तालु है इसलिए यह तालव्य भी कहा जाता है । (अ०) क्रोधार्थक, क्रोध प्रकाशित करने की ध्वनि विशेष, आश्चर्य, दया, सन्ताप, व्याकुलता, सोच ।
इक (अ०) इसका शुद्ध रूप एक है, एक ।
इकआँक (क्रि० वि०) स्थिर, निश्चय ।
उ०—जे तब होत दिखादिखी, भई अमी इकआँक ।
दगै तिरीछी दीठ अब, ह्वै बीछी को डाँक (बिहारी)
इकइस (वि०) संख्या-वाचक, इक्कीस, बीस और एक, एकविंशति का अपभ्रंश रूप । [द्वन्दी राज्य ।
इकछत्रराज (सं० पु०) साम्राज्य, एकछत्र राष्ट्र, अप्रति-
इकजोर (क्रि० वि०) एकत्रित, एकत्र, एक साथ जोड़ा हुआ । [देखना ।
इकटक (क्रि० वि०) टकटकी, बिना पलक झँपाये
इकट्ठा (वि०) एकत्रित, एकस्थ का अपभ्रंश रूप, जमा, जमात, समूह, राशीकृत, एकत्रित ।
इकठोर (सं० पु०) इकट्ठा, समूह ।
इकतर (वि०) एकत्र, एकत्रित, इसका शुद्ध रूप एकत्र है,
उ०—दे कोल्हू में पेरि, करी है इकतर घानी (गिरिधर)
इकतरा (सं० पु०) एकान्तर का अपभ्रंश रूप, एक दिन बीच देकर आनेवाला ज्वर, अँतरा ।
इकताई (सं० स्त्री०) एकता, अभेद ।
उ०—लिखे आपने दगन ते इकताई की बात,
जुरी दीठ इक सँग रहे जदपि जुदे दिखात (रसनिधि)
इकतारा (सं० पु०) एक प्रकार के बाजे का नाम, यह सितार के समान होता है पर इसमें एक तार होता है, विशेष कर बंगाली वैष्णव यही बजाकर कीर्तन करते हैं ।
इकपेचा (सं० पु०) पगड़ी विशेष, प्रायः आगरा व दिल्ली वाले इस पगड़ी को पहनते हैं, इसमें केवल एक ही पेच होता है । [सूचक दान, प्रतिज्ञा ।
इकराम (अ० सं० पु०) इनाम, पारितोषिक, प्रसन्नता
इक़रार (अ० सं० पु०) प्रतिज्ञा, ठहराव, किसी बात का निश्चय ।
इक़रारनामा (अ० सं० पु०) प्रतिज्ञापत्र ।
इकलाई (सं० स्त्री०) एकपट्टा, चादर जिसमें एक पाट हो ।
इकलौता (सं०पु०) दुलारा लड़का, पिता-माता का एक पुत्र ।
इकसंग (वि०) एक साथ, साथ-साथ ।
इकसठ (वि०) संख्या-वाचक, एक और साठ, ६१ ।
इकसर (वि०) समान, सदृश, अकेला, साथ-रहित ।
इकहरा (वि०) एकहरा, जोड़ा नहीं, अकेला ।
इकहाई (क्रि० वि०) तत्काल, एकाएकी, एक साथ ।
इकोतर (वि०) एकोत्तर, एक से अधिक कोई संख्या ।
इकौंज (सं० स्त्री०) एक वन्ध्या, एक बार प्रसव के पश्चात् जो स्त्री बन्ध्या हो जाय, काक वन्ध्या ।
इकौसो (वि०) एक वास, अकेला वास, एकान्तवास, एकान्त में रहनेवाला ।
इक्का (सं० पु०) एकाकी, अकेला, एक प्रकार की गाड़ी जिसमें एक घोड़ा या बैल जुतता है ।

इक्का-दुक्का (वि०) साहस-रहित, अकेला, एकाकी।

इक्कावन (वि०) इक्यावन, एक अधिक पचास, ५१।

इक्कासी (वि०) इक्यासी, एक अधिक अस्सी, ८१।

इक्षु (सं० पु०) ईख, गन्ना गांड़ा, एक प्रकार का पौधा जिसके रस से गुड़ चीनी आदि तैयार होते हैं।

इक्षुकांड (सं० पु०) ईख का पौधा, कास, मूंज, तृण विशेष।

इक्षुप्रमेह (सं० पु०) रोग विशेष, बीस प्रकार के प्रमेहों में से एक प्रमेह, इस रोग के रोगी का मूत्र मीठा होता है और इसी से उस पर चींटी आती हैं। यह कठिन रोग है।

इक्षुमती (सं० स्त्री०) एक प्राचीन नदी का नाम, यह नदी कहीं कुरुक्षेत्र के पास थी।

इक्षुरस (सं० पु०) ईख का रस।

इक्षुसार (सं० पु०) खाण्ड, गुड़।

इक्ष्वाकु (सं० पु०) सूर्यवंशी एक राजा का नाम। अयोध्या नगरी की स्थापना इन्होंने ही की थी और उसे अपनी राजधानी बनाया। इनके पिता का नाम वैवस्वतमनु था। ये बड़े प्रतापी और प्रसिद्ध राजा थे। इनके पीछे होने वाले सूर्यवंशी राजा इन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके कुल के राजा "ऐक्ष्वाक्व" कहे जाते हैं, श्रीरामचन्द्र भी इन्हीं के वंशज थे। काशीराज सुवन्धु का पुत्र, कहते हैं कि यह राजा इक्षुदण्ड से उत्पन्न हुआ था। कडुई लौकी।

इख़राज (अ० सं० पु०) व्यय, ख़र्च।

इखलास (अ० सं० पु०) मित्रता, सौहार्द।

इंग (सं० पु०) चिह्न, इशारा, हिलना-डुलना, चलना फिरना। [बात को बतलाना।

इंगन (सं० पु०) इशारा, चलना, चिह्न, इशारे से किसी

इंगला (सं० स्त्री०) एक नाड़ी का नाम, इड़ा नाड़ी, यह शरीर के वाम भाग में होती है और भीतर के वायु को बाहर निकालना तथा बाहर के वायु को भीतर ले जाना इसका काम है। योगी गण इसको साध कर बड़े बड़े काम करते हैं।

इंगलिश (वि०) अंग्रेज़ी, इंगलैंड देश-संबन्धी।

इंगलिस्तान (सं० पु०) इंगलैंड देश, अंगरेजों के देश का नाम।

इङ्गलैंड (सं० पु०) देश विशेष, जहाँ अंग्रेज़ रहते हैं।

इंगित (सं० पु०) संकेत, चेष्टित, अभिप्रायानुसार चेष्टा, अपने अभिप्राय का चेष्टा द्वारा प्रकट करना।

इंगुदी (सं० स्त्री०) हिंगोट का पेड़, इस वृक्ष के फल में बहुत तेल होता है, वनवासी लोग इसके फल के तेल का व्यवहार करते हैं, इसके तेल से बड़े बड़े फोड़े शीघ्र अच्छे होते हैं। महर्षियों को यह बड़ा प्रिय है, संस्कृत नाटकों में इसकी बड़ी चर्चा है। ज्योतिष्मती वृक्ष। [चिह्न।

इंगुर (सं० पु०) सिन्दूर का एक भेद, स्त्रियों का सौभाग्य-

इँगुरौटी (सं० स्त्री०) ईंगुर रखने की डिबिया। [लना।

इचकना (क्रि० अ०) क्रोध से दाँत पीसना, खीस निका-

इच्छा (सं० स्त्री०) चाह, ख़्वाहिश, अभिलाषा, प्रिय वस्तु पाने का अभिलाष, मन या आत्मा का धर्म विशेष, वेदान्तियों के मत से इच्छा मन का धर्म है, और नैयायिकों के मत से यह आत्मा का धर्म है, मनोरथ, कामना, आकांक्षा, रुचि।

इच्छाभेदी (वि०) एक औषध, विरेचन वटी विशेष, इसके द्वारा इच्छानुसार विरेचन होता है।

इच्छाभोजन (सं० पु०) इच्छानुसार भोजन, इसका प्रयोग याचक को इच्छानुसार भोजन कराने के अर्थ में होता है।

इच्छित (वि०) अभिलाषित, आकांक्षित, चाहा हुआ, यह संस्कृत का शब्द नहीं है, इस शब्द का अर्थ बोधन करने के लिए संस्कृत में इष्ट शब्द का प्रयोग होता है। [वाला।

इच्छुक (वि०) अभिलाषी, चाह करनेवाला, इच्छा रखने

इछन (सं० पु०) आँख, नेत्र।

इजमाल (अ० सं० पु०) संयुक्त, सम्मिलित, युक्त, साझा, वह वस्तु जिस पर कई मनुष्यों का अधिकार हो, बिना बाँटी हुई वस्तु।

इजराय (अ० सं० पु०) व्यवहार में लाना, उपयोग करना यथा डिगरी का इजराय करना, अर्थात् डिगरी का उपयोग में लाना। विशेष कर इस शब्द का प्रयोग अदालती कामों में होता है।

इजलास (अ० सं० पु०) न्यायालय, अदालत, न्यायाधीश के बैठने की जगह, जहां बैठ कर वह मुक़द्दमा सुनता है और उसका निर्णय करता है।

इज़हार (अ० सं० पु०) अपना मत प्रकाशित करना, प्रकाशन, व्यक्तीकरण, गवाही, साक्षी, अदालत के सामने अपनी बात कहना।

इजाज़त (अ० सं० स्त्री०) आज्ञा, सम्मति, हुक्म।

इज़ाफ़ा (अ० सं० पु०) बढ़ती, वृद्धि, अवशेष, बचत।

इजारदार (अ० वि०) ठीकेदार, अधिकारी, इजारे पर किसी वस्तु को लेनेवाला। [यार।

इजारा (अ० सं० पु०) ठीका, किराया, अधिकार, अख़्ति-

इज़्ज़त (अ० सं० स्त्री०) मान, प्रतिष्ठा, आदर, मर्यादा।

मु०—इज़्ज़त उतारना = किसी की प्रतिष्ठा नष्ट करना।

इज्य (सं० पु०) बृहस्पति।

इज्या (सं० स्त्री०) यज्ञ।

इठलाना (क्रि० अ०) अहङ्कार की चेष्टा दिखाना, ठसक दिखाना, गर्व बतलाना, शारीरिक चेष्टा द्वारा अपना अहङ्कार बतलाना, अभिप्राय विशेष से जानी हुई बात में अनजान बनना, नख़रा करना।

इड़ा (सं० स्त्री०) शरीर के वाम भाग में रहनेवाली नाड़ी, (देखो इंगला) विद्याधिष्ठात्री देवी, वाणी, पृथिवी, गौ। राजा पुरूरवा की माता का नाम, ये वैवस्वत मनु की पुत्री थीं और बुध से इनका ब्याह हुआ था।

इत (क्रि० वि०) इधर, इस ओर, इसका प्रयोग पद्य में ही अधिकता से होता है, यह संस्कृत में अव्यय इतः का अपभ्रंश रूप है।

इतः (अव्य०) इस हेतु, नियम, विभाग।

इतःपर (अव्य०) इसके बाद।

इतना (वि०) परिमाण-वाचक, संख्या-वाचक, इस प्रकार, इस तरह, परिच्छेद-वाचक।

इतमीनान (अ० सं० पु०) विश्वास, सन्तोष, निश्चय।

इतर (वि०) अन्य, दूसरा, इच्छित से दूसरा, छोटा आदमी, तिरस्कार-बोधक।

इतराना (क्रि० अ०) गर्व करना, घमंड करना।

उ०—बड़ो बड़ाई नहिं तजै, छोटो बड़ इतराय,
ज्यों प्यादा फ़रज़ी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय। (कबीर)

इतरेतर (सं० पु०) परस्पर, आपस में, अन्योन्य।

इतरेतराभाव (सं० पु०) परस्पराभाव, एक में दूसरे का अभाव और दूसरे का पहले में अभाव। जैसे घट का पट में अभाव और पट का घट में अभाव, इसे अन्योन्याभाव भी कहते हैं। यह न्यायशास्त्र का एक पारिभाषिक शब्द है। चार प्रकार के अभाव में का एक अभाव।

इतरेतराश्रय (सं० पु०) तर्क का एक दोष, तर्क के द्वारा जो वस्तु सिद्ध की जानेवाली दूसरी वस्तु की सिद्धि पर निर्भर हो और दूसरी वस्तु की सिद्धि पहली वस्तु पर निर्भर हो, ऐसी दशा में यह दोष होता है।

इतवार (सं० पु०) आदित्यवार, रविवार, एक दिन का नाम, वह दिन जिसका देवता सूर्य हो।

इतस्ततः (क्रि० वि०) इधर-उधर, अत्र-तत्र, यहां-वहां।

इताअत (अ० सं० स्त्री०) आज्ञापालन, सेवकाई।

इति (अव्य०) समाप्ति-सूचक अव्यय, (सं० स्त्री०) समाप्ति, पूर्ति, पूर्णता।

इतिकथा (सं० स्त्री०) अर्थविहीन वाक्य, अयोग्य वचन।

इति कर्तव्य (वि०) कार्य करने का ढंग, उचित काम, कर्तव्य का अङ्ग।

इतिवृत्त (सं० पु०) पुरावृत्त, पुरानी कथा, कहानी।

इतिहास (सं० पु०) प्राचीन घटनाओं का विवरण, पुरावृत्त, उपाख्यान, तवारीख़।

इतेक (वि०) इतना, इतना ही।

इतो (वि०) निर्दिष्ट मात्रा का, इतना, अवधि।

इत्तफ़ाक़ (अ० सं० पु०) मेल, मिलाप, सहमति, संयोग, अवसर। [संयोगवश।

इत्तफ़ाक़न (अ० क्रि० वि०) अचानक, हठात्, अकस्मात्,

इत्तफ़ाक़िया (अ० वि०) आकस्मिक।

इत्तला (सं० स्त्री०) सूचना।

इत्ता (वि०) इतना।

इत्तो (वि०) इतना, इतना ही।

इत्थम् (क्रि० वि०) इस तरह, ऐसा, इस प्रकार, यों।

इत्यादि (अव्य०) आदि, प्रभृति, अन्य, और, और सब, इसी प्रकार।

इत्र (अ० सं० पु०) इतर, अतर। [इतरदान।

इत्रदान (अ० सं० पु०) इत्र रखने का बर्तन, अतरदान,

इदम् (सर्व०) यह, पुरोवर्ती। [ठीक।

इदमित्थम् (अव्य०) यह, ऐसा ही, इस प्रकार, निश्चय,

इदानीं (अव्य०) इस समय, अधुना, साम्प्रति।

इदानीन्तन (वि०) साम्प्रतिक, आधुनिक, इस समय का, नवीन, नया।

इधर (अव्य०) इस ओर, इस तरफ, यहां, इस ठौर।
मुहा०—इधर-उधर करना=टाल-मटूल करना, तितर-बितर करना। इधर-उधर की बात=सुनी-सुनाई बात। इधर की दुनिया उधर होना=असंभव का संभव होना। इधर-उधर की हाँकना=गप मारना। इधर-उधर होना=उलट-पुलट होना। इधर से उधर फिरना=चारों ओर घूमना

इध्म (सं० पु०) लकड़ी, ईंधन, यज्ञ की समिधा।

इन (सं० पु०) सूर्य, ईश्वर, प्रभु, राजा, स्वामी, पति, १२ की संख्या, हस्त नक्षत्र। (सर्व०) "इस" का बहुवचन।

इनकार (अ० सं० पु०) नामंज़ूर, अस्वीकार।

इनसान (अ० सं० पु०) मनुष्य,मानुष,आदमी। [नता।

इनसानियत (अ० सं० स्त्री०) मनुष्यत्व, भलमनसी,सज्ज-

इनाम (अ० सं० पु०) पारितोषिक, पुरस्कार।

इनायत (अ० सं० स्त्री०) अनुग्रह, कृपा, दया।

इनारा (सं० पु०) कुआँ, कूप।

इने-गिने (वि०) चुने-चुनाये, कुछ, कतिपय, चन्द।

इन्दराज (सं० पु०) दर्ज।

इन्दारा (सं० पु०) इनारा, कुआं, कूप।

इन्दिरा (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, कमला, श्री, विष्णु-पत्नी, शोभा, द्युति, आश्विन कृष्ण एकादशी।

इन्दिरामन्दिर (सं० पु०) नील कमल।

इन्दिरालय (सं० पु०) पङ्कज, कमल।

इन्दिरावर (सं० पु०) नाराण, विष्णु भगवान्।

इन्दीवर (सं० पु०) नील कमल, नीलोत्पल, पङ्कज।

इन्दु (सं० पु०) चन्द्रमा, कर्पूर, एक की संख्या।

इन्दुआ (सं० पु०) गेंडुरी, गेरुवा।

इन्दुकला (सं० स्त्री०) चन्द्रकिरण, चन्द्रमा की कला।

इन्दुकान्त (सं० पु०) चन्द्रकान्त मणि।

इन्दुकान्ता (सं० पु०) रात्रि, निशा, रजनी।

इन्दुभृत (सं० स्त्री०) महादेव, शिव।

इन्दुमती (सं० स्त्री०) पूर्णिमा, पौर्णमासी, कोशल-राजा अज की स्त्री, ये विदर्भ राज की कन्या थीं, इनके गर्भ से महाराज दशरथ का जन्म हुआ।

इन्दुर (सं० पु०) चूहा, मूस, मूषिक।

इन्दुव्रत (सं० पु०) चान्द्रायण व्रत।

इन्द्र (सं० पु०) वैदिक देवता विशेष, यह देवताओं के राजा माने जाते हैं, और देवराज भी कहे जाते हैं, इनका विवाह शची से हुआ था, इनके पुत्र का नाम जयन्त था, इनका वाहन ऐरावत हाथी है और अस्त्र वज्र है।

इन्द्रकील (सं० पु०) मन्दराचल पर्वत।

इन्द्र-कुञ्जर (सं० पु०) ऐरावत हाथी।

इन्द्रगोप (सं० पु०) खद्योत, जुगनू, बीरबहूटी।

इन्द्रजाल (सं० पु०) माया-कर्म, जादूगर, मायावी।

इन्द्रजाली (वि०) जादूगर, मायावी।

इन्द्रजालिक (सं० पु०) मायावी।

इन्द्रजित् (सं० पु०) रावण का पुत्र मेघनाद, (वि०) इन्द्रियों को जीतनेवाला।

इन्द्रत्व (सं० पु०) स्वर्ग का आधिपत्य।

इन्द्रदमन (सं० पु०) बरसात में गंगा का जल किसी निश्चित स्थल या पीपल, वट वृक्ष तक पहुंचना, यह एक धार्मिक त्यौहार माना जाता है, इसमें गंगा नहाना और दान-पुण्य करना अच्छा समझा जाता है।

इन्द्रधनुष (सं० पु०) सूर्य की किरणें मेघों पर पड़ने से सतरंगा एक वृत्त आकाश में निकलता है, यह धनुषाकार होता है, इसे लोग इन्द्रधनुष कहते हैं, शक्रधनु।

इन्द्रप्रस्थ (सं० पु०) पाण्डवों का बसाया हुआ एक नगर, यह नगर वर्तमान देहली के पास था।

इन्द्रयव (सं० पु०) कोरैया का बीज, यह जव के समान लम्बा होता है और दवा के काम में आता है।

इन्द्रवंशा (सं० पु०) बारह वर्णों का एक वृत्त, इस में दो तगण, एक जगण, और एक रगण होता है।

इन्द्रवज्रा (सं० पु०) एक वर्णवृत्त, इसमें एक तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं।

इन्द्रवधू (सं० स्त्री०) बीरबहूटी।

इन्द्राणी (सं० स्त्री०) इन्द्र की स्त्री, शची, दुर्गा, बड़ी इलायची, इन्द्रायण, सिंधुवार का पेड़, निरगुंडी संभालू, बायें नेत्र की पुतली।

इन्द्रानुज (सं० स्त्री०) विष्णु, श्रीकृष्ण।

इन्द्रायण (सं० पु०) एक प्रकार की औषधि।

इन्द्रायुध (सं० पु०) इन्द्रधनुष, वज्र।

इन्द्रासन (सं० पु०) इन्द्र का आसन, राजसिंहासन।

इन्द्रिय (सं० स्त्री०) वह शक्ति जिसके द्वारा बाह्य वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त हो। इसके दो भाग हैं ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय पाँच हैं, नेत्र, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा और त्वचा, कर्मेन्द्रिय भी पाँच हैं,वाक्,हाथ,पैर, गुदा, उपस्थ, एक अन्तरात्मक इन्द्रिय भी है जिसको 'मन' कहते हैं। इसके चार विभाग हैं मन,बुद्धि,चित्त और अहंकार, सब मिलाकर चौदह इन्द्रियां हैं।
इन्द्रियगोचर (वि०) ज्ञानगम्य, इन्द्रिय-विषय।
इन्द्रियग्राह्य (वि०) ज्ञानगम्य।
इन्द्रिय-निग्रह (सं० पु०) इन्द्रियों का दमन, इन्द्रियों के वेग को वश में रखना। [ज्ञान प्राप्त हो।
इन्द्रियार्थ (सं० पु०) वे विषय जिनका इन्द्रियों द्वारा
इन्द्री (सं० स्त्री०) देखो इन्द्रिय।
इन्धन (सं० पु०) जलाने की लकड़ी, ईंधन, जलावन।
इप्सु (वि०) लोभी, इच्छुक।
इफ़रात (अ० सं० स्त्री०) अधिकता, बहुतायत।
इबारत (अ० सं० स्त्री०) लेख, लेखनकला।
इभ (सं० पु०) हाथी, हस्ती, गज, कुञ्जर।
इभपालक (सं० पु०) महावत, हाथीवान।
इभ्य (वि०) धनी, धनवान।
इमदाद (अ० सं० स्त्री०) सहायता, मदद
इमन (सं० पु०) रागिनी विशेष।
इमरती (सं० पु०) एक प्रकार की मिठाई।
इमली (सं० स्त्री०) एक वृक्ष और फल विशेष। [खट्टा।
इमामदस्ता (फ़ा० सं० पु०) लोहे या पीतल का खल
इमामबाड़ा (अ० सं० पु०) वह स्थान जहाँ शिया ताज़िया रखते और गाड़ते हैं।
इमारत (अ० सं० पु०) विशाल भवन,, पक्का मकान।
इमि (क्रि० वि०) इस प्रकार, यों, इस तरह।
इम्तहान (अ० सं० पु०) परीक्षा।
इम्रती (सं० स्त्री०) देखो इमरती।
इम्ली (सं० स्त्री०) देखो इमली।
इरा (सं० स्त्री०) वाक्, वाणी, जल, अन्न, भूमि, सरस्वती कश्यप की स्त्री, उद्भिज की उत्पत्ति इसी से हुई है।
इरादा (अ० सं० पु०) संकल्प, मनशा।
इरावान् (सं० पु०) राजा, मेघ, समुद्र, ऐरावत की विधवा कन्या के गर्भ से अर्जुन से उत्पन्न पुत्र, कुरुक्षेत्र के युद्ध में वह मारा गया था।
इर्द-गिर्द (क्रि० वि०) चारों ओर, आस-पास, अगल-बगल, इधर-उधर। [कलङ्क।
इलज़ाम (अ० सं० पु०) अपराध, दोष, अभियोग,
इलविला (सं० स्त्री०) विश्वश्रवा की स्त्री, कुबेर की माता।
इलशा (सं० स्त्री०) हिल्सा मछली।
इलहाम (अ० सं० पु०) देव-वाणी।
इला (सं० पु०) पार्वती, सरस्वती, पृथ्वी, वाणी, गाय, बुद्धिमती स्त्री, वैवस्वत मनु की कन्या जो बुध से ब्याही गई थी, इसके गर्भ से पुरूरवा का जन्म हुआ था।
इलाक़ा (अ० सं० पु०) रियासत, राज्य, सम्बन्ध, संसर्ग।
इलाज (अ० सं० पु०) दवा, औषधि, युक्ति, बचाने का उपाय।
इलायची (सं० स्त्री०) एला, एलायची। [यची का बीज।
इलायची दाना (सं० पु०) एक प्रकार की मिठाई, इला-
इलावर्त (सं० पु०) जम्बू द्वीप के खण्डों में से एक।
इलाही (अ० सं० पु०) ईश्वर, परमात्मा, ख़ुदा।
इल्ला (सं० पु०) मस्सा।
इल्वल (सं० पु०) एक प्रकार की मछली, वामी मछली, एक दैत्य का नाम जो अपने छोटे भाई को भेड़ा बना कर उसका मांस ब्राह्मणों को खिला देता था, वह ब्राह्मणों का पेट फाड़ निकल आता था, इस तरह यह ब्राह्मणों को वध किया करता था, इनको अगस्त्य मुनि खाकर हज़म कर गये। इस तरह इस की मृत्यु हुई। [समूह।
इल्वला (सं० पु०) मृगशिरा नक्षत्र के सिरस्थ पञ्चतारा
इव (अव्य०) समान, सदृश, ऐसा, सरीखा। [धार।
इशारा (अ० सं० पु०) सैन, चेष्टा, सूक्ष्म विवरण, अल्पा-
इश्तहार (अ० सं० पु०) विज्ञापन, नोटिस।
इश्तहारी (वि०) विज्ञापनीय, इश्तहार दिया हुआ।
इषु (सं० पु०) तीर, बाण, शर।
इषुधी (सं० पु०) तूणीर, तरकश। [तीरअंदाज़।
इषुमान (वि०) बाण चलानेवाला, तीर चलानेवाला,
इषूपल (सं० पु०) क़िले के फाटक पर का तोप, इसमें कंकड़-पत्थर भर कर फेंका जाता था। [प्रिय।
इष्ट (वि०) इच्छित, वाञ्छित, अभिप्रेत, पूजित, अर्जित,
इष्टदेव (सं० पु०) उपास्य देव, कुल देवता, आराध्य देव।
इष्टदेवता (सं० पु०) इष्टदेव, आराध्य देव।

इष्टापत्ति (सं० स्त्री०) वादी के प्रति प्रतिवादी की आपत्ति जिससे वादी के कथन में कुछ भेद न पड़े।
इष्टापूर्त (सं० पु०) यज्ञादि कर्म, कुआँ खोदवाना, बाग बनवाना, धर्मशाला बनवाना, मन्दिर बनवाना।
इष्टालाप (सं० पु०) वार्तालाप, कथोपकथन।
इष्टि (सं० स्त्री०) मनोभिलाषा, इच्छा, यज्ञ।
इष्य (सं० पु०) वसन्त ऋतु।
इष्वास (सं० पु०) धनुष।
इस (सर्व०) यह।
इसपात (सं० पु०) एक प्रकार का पक्का लोहा है।
इसबगोल (अ० सं० पु०) एक प्रकार की औषधि।
इसलाम (अ० सं० पु०) मुसलमानी धर्म।
इसलामिया (वि०) इसलाम-सम्बन्धी।
इसाई (वि०) ईसा के माननेवाले, क्रिस्तान। [का रूप।
इसे (सर्व०) इसको, यह का द्वितीय या चतुर्थी कारक
इस्तमरारी (अ० वि०) अविच्छिन्न, नित्य, सदा रहने वाला, अपरिवर्तनशील। [कड़ा बनाया जाता है।
इस्तिरी (सं० स्त्री०) धोबी का एक यन्त्र, इससे कपड़ा
इस्तीफ़ा (अ० सं० पु०) त्याग-पत्र।
इस्तेमाल (अ० सं० पु०) प्रयोग, व्यवहार।
इस्त्री (सं० स्त्री०) देखो इस्तिरी।
इस्थिर (वि०) स्थिर, निश्चल, अटल। [जीवावशेष।
इस्पंज (सं० स्त्री०) मुर्दा बादल, जल-शोषक समुद्री
इस्पात (सं० पु०) देखो इसपात।
इह (क्रि० वि०) यहां, इस स्थान।
इहकाल (अव्य०) इस समय।
इहलोक (सं० पु०) यह लोक, मृत्यु-लोक,
इहवां (क्रि० वि०) यहीं, इस स्थान।
इहां (क्रि० वि०) यहां, इस स्थान।
इहि (क्रि० वि०) इस स्थान, यहां, इहवां।

ई

ई—यह 'इ' का दीर्घ रूप है, इसका उच्चारण-स्थान तालु है।
ई (सं० पु०) कामदेव, (स्त्री०) लक्ष्मी, (अव्य०) कोप, रोष, दुःख, विषाद, भावना, अनुकम्पा।
ईंगुर (सं० पु०) एक खनिज पदार्थ विशेष, यह लाल रंग का होता है, हिन्दू सधवा स्त्रियाँ मांग में और माथे पर लगाती हैं, इसका लगाना सौभाग्य का चिह्न समझा जाता है, यह कृत्रिम भी होता है।
ईंचना (क्रि० स०) खैंचना, खींचना, ऐंचना।
ईंट (सं० पु०) इष्टका, ईंटा, सांचे का ढाला हुआ चौखुंटा मिट्टी का टुकड़ा जो इमारत आदि बनाने के काम आता है।
ईंटा (सं० पु०) ईंट।
मुहा०—ईंट से ईंट बजना=नगर का ढह जाना। ईंट पत्थर=कुछ नहीं। [कपड़ा आदि।
ईंधन (सं० पु०) इन्धन, जलावन, जलाने की लकड़ी
ईकार (सं० पु०) ई वर्ण।
ईक्ष (सं० स्त्री०) देखना, दर्शन।
ईक्षक सं० पु०) देखवैया, दर्शक,
ईक्षण (सं० पु०) देखना, दर्शन, नेत्र, आंख।
ईक्षणश्रवा (सं० पु०) साँप, सर्प।
ईक्षित (वि०) अवलोकित, दर्शित।
ईख (सं० पु०) गन्ना, पौंडा, ऊख।
ईठ (सं० स्त्री०) मित्र, संगी, साथी, सखा (वि०) वाञ्छित अभिप्रेत, इष्ट, प्रेमी।
ईठा (सं० स्त्री०) प्रतिष्ठा, प्रशंसा, स्तुति, गुणगान, नामी।
ईठी (सं० स्त्री०) बरछा, भाला।
ईठीदाड़ (सं० पु०) चौगान खेलने का डंडा।
ईड़ा (सं० स्त्री०) स्तव, स्तुति, प्रशंसा।
ईड़ित (वि०) प्रशंसित, जिसकी स्तुति हुई हो।
ईढ़ (सं० स्त्री०) हठ, ज़िद।
ईति (सं० स्त्री०) आपदा, उपद्रव, कृषि को हानि पहुंचाने वाले उपद्रव, यह छः हैं, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी पड़ना, चूहे लगना, पक्षियों से खेती की हानि, राज-विद्रोह।
ईद (अ० सं० पु०) मुसलमानों का एक त्यौहार।
ईदुरी (सं० स्त्री०) गेंडुरी, इडुरी, बिठई।
ईदूवा (सं० पु०) ओठघन, उढ़कन, टेक।
ईदृक् (वि०) ऐसा, इस प्रकार, इस रीति से।
ईदृश (क्रि० वि०) इस भांति, इस प्रकार, इस तरह, ऐसा।

ईप्सा (सं० स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, चाह ।
ईप्सित (वि०) अभिलाषित, वांछित, इच्छित, अभीष्ट ।
ईप्सु (वि०) इच्छुक, अभिलाषा करनेवाला, चाहनेवाला । [देना ।
ईफ़ाय डिगरी (सं० स्त्री०) डिगरी का रुपया चुकता कर
ईमान (अ० सं० पु०) विश्वास, आस्तिकता । [दार ।
ईमानदार(फ़ा० वि०)विश्वासनीय,विश्वासपात्र, दयानत-
ईमानदारी (सं० पु०) विश्वासपात्रता, दयानतदारी ।
ईरान (फ़ा० सं० पु०) फ़ारस देश । [कर कुढ़ना ।
ईर्षा (सं० पु०) द्वेष, डाह, हिंसा, दूसरे की बढ़ती देख
ईर्षालु (वि०) डाह करनेवाला, द्वेषी, ईर्षा करनेवाला, दूसरे की बढ़ती देख जलने वाला ।
ईर्षी (वि०) डाह करनेवाला, द्वेषी, द्रोही ।
ईर्ष्या (सं० स्त्री०) डाह, द्वेषी, बैर, विरोध,कुढ़ना, हिंसा ।
ईर्ष्यान्वित (वि०) ईर्षालु, डाह करनेवाला ।
ईर्ष्यावान (वि०) डाह करनेवाला ।
ईर्ष्यालु (वि०) हिंसक, द्वेषी ।
ईश (सं० पु०) ईश्वर, परमात्मा, शिव, महादेव, राजा, मालिक, स्वामी, ग्यारह की संख्या, आर्द्रा नक्षत्र ।
ईशसखा (सं० पु०) धनपति, कुबेर, धनवान ।
ईशा (सं० स्त्री०) ऐश्वर्य, ऐश्वर्यशाली स्त्री, दुर्गा ।
ईशान (सं० पु०) मालिक, प्रभु, शिव, रुद्र, महादेव, शिव की अष्ट मूर्तियों में से एक, सूर्य, ग्यारह रुद्र में से एक रुद्र, पूरब और उत्तर के मध्य की दिशा, ग्यारह की संख्या ।
ईशानी (सं० स्त्री०) दुर्गा ।
ईशानकोण (सं० पु०) पूर्व और उत्तर के बीच का कोना ।
ईशानकोणी (सं०स्त्री०) भगवती, दुर्गा, शमी का पेड़ ।
ईशिता (वि०) महत्ता, प्रधानता, प्रभुता, (सं०स्त्री०) अष्ट सिद्धियों में से एक जिसको पाकर साधक सब पर शासन कर सकता है ।
ईशित्व (सं०पु०) आधिपत्य,प्रभुत्व,महत्ता ।[प्रभु, मालिक ।
ईश्वर(सं०पु०)परमात्मा,परमेश्वर,भगवान,समर्थ,सृष्टि-कर्त्ता,
ईश्वरता (सं० स्त्री०) प्रभुता । [उपासना ।
ईश्वराराधन (सं० पु०) परमात्मा की सेवा, ईश्वर की
ईश्वरीय (वि०) दैवी, ईश्वर-विषयक, ईश्वर-संबन्धी ।
ईश्वरोपासक (सं० पु०) आस्तिक, परमात्मा का उपासक ।
ईश्वरोपासना (सं० स्त्री०) ईश्वराराधना, ईश्वर की सेवा, भजन ।
ईषण (सं० पु०) नेत्र, चक्षु, देखना, दर्शन ।
ईषणा (सं० स्त्री०) वासना, लालसा, चाह, इच्छा ।
ईषत् (वि०) अल्प, थोड़ा, किञ्चित् ।
ईषत्हास (सं० पु०) मन्द मुस्कान, अल्प हास्य ।
ईस (सं० पु०) देखो ईश ।
ईसबगोल (सं० पु०) एक औषध विशेष, इसबगोल ।
ईसवी (अ० वि०) ईसा-सम्बन्धी,ईसा-विषयक ।[प्रचारक ।
ईसा (सं० पु०) ईसाई धर्म के प्रवर्तक, ईसाई धर्म के
ईसाई (अ० वि०) ईसा को माननेवाला, क्रिस्तान ।
ईह (सं० पु०) चेष्टा, इच्छा, प्रयत्न ।
ईहग (सं० पु०) कवि । [चेष्टा ।
ईहा (सं० स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, प्रयत्न, उद्योग, उपाय,
ईहामृग (सं० पु०) मृग, तृष्णामृग, कुत्ते के समान एक मटमैले रंग का छोटा जानवर, होता है, नाटक का एक रूपक ।
ईहावृक (सं० पु०) लकड़बग्घा ।
ईहित (वि०) अभिलाषित, इच्छित, चाहा हुआ ।

उ

उ—यह तीसरा मुख्य स्वर है, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है ।
उ (सं० पु०) ब्रह्मा, शिव, प्रजापति, (अव्य०) भी, पाद पूर्ति, स्वीकार, प्रश्न, नियोग, दया, क्रोधोक्ति, कातर स्वर से उत्तर देना ।
उअना (क्रि० अ०) उगना, उदय होना ।
उअहि (क्रि० अ०) उगता है, उदय होता है ।
उआ (वि०) उगा हुआ, उदय हुआ । [कुछ क़र्ज़ न हो ।
उऋण (वि०) ऋणमुक्त, विना ऋण का, जिस पर
उए (क्रि० अ०) उगे, उदय हुए ।
उँगली (सं० स्त्री०) अङ्गुली, अँगुरी ।
मुहा०—उँगली उठना = निन्दा होना । उँगली उठाना = दोषी बताना । उँगली चटकाना = शाप देना । उँगलियों पर नचाना = अपने वश में रखना । उँगली

रखना = दोष दिखलाना। उँगली लगाना = छूना। कानों में उंगली देना = बात न सुनने का प्रयत्न करना।

उँचन (सं० स्त्री०) ओरदवान, अदवान।

उँचना (क्रि० स०) ओरदवान खींचना, अदवान कसना।

उँचाई (सं० स्त्री०) उच्चता, ऊंचापन।

उँचान (सं० पु०) ऊंचापन, ऊंचता।

उँचाना (क्रि० स०) उठाना, ऊपर करना।

उँचास (सं० पु०) ऊंचाई। [करना।

उकचना (क्रि० अ०) उखड़ना, अलग होना, स्थानत्याग

उकटना (क्रि० स०) बार बार कहना, उघटना, उखाड़ना।

उकठना (क्रि० अ०) सूखना, सूख कर ऐंठ जाना।

उकठा (वि०) सूखा हुआ, ऐंठा हुआ।

उकठि (क्रि० वि०) सहारा लेकर, सूखकर। [बैठना।

उकडूँ (सं० पु०) घुटने मोड़ कर बैठना, तलवे के बल

उकताना (क्रि० अ०) ऊबना, घबड़ाना, उबियाना, जल्दी करना, उतावली करना, जल्दबाज़ी करना।

उकतारना (क्रि० स०) तरफ़दारी करना, सँभालना।

उकताडू (सं० पु०) प्रवर्तक, उभारु, उकसाऊ।

उकलना (क्रि० अ०) उभड़ना, उचड़ना, अलग होना, ऊपर उठना, खलबलाना।

उकलवाना (क्रि० स०) उकेलने के लिए दूसरे को लगाना।

उकलाई (सं० स्त्री०) उलटी, क़ै, वमन।

उकलाना (क्रि० अ०) उलटी करना, क़ै करना।

उकवथ (सं० पु०) चर्म-रोग विशेष, यह पैर के घुटने के नीचे होता है।

उकसना (क्रि० अ०) उभरना, उठना, उभड़ना, चढ़ना।

उकसाना (क्रि० सं०) उभाड़ना, उत्तेजित करना, उसकाना, चढ़ाना, उठाना, ऊपर उठाना।

उकसावा (सं० पु०) बढ़ावा, उत्तेजना, उत्साह। [मधु।

उकारान्त (वि०) वे शब्द जिनके अन्त में "उ" हो, जैसे-

उकालना (क्रि० स०) नोचना, तह अलगाना, उचाड़ना, उधेड़ना, खोलना, उधेरना।

उकेलना (क्रि० स०) देखो उकालना। [निगदित, भाषित

उक्त (वि०) कथित, अभिहित, आख्यात, उल्लेखित,

उक्ति (सं० स्त्री०) वचन, कथन, अनोखी बात।

उखड़ना (क्रि० अ०) गड़ी वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना, उठ जाना, ठोकर खाना, चुकना, अलग होना, हटना, टूटना।

मुहा० उखड़ी-उखड़ी बातें करना = विरक्ति-सूचक बात करना। उखड़ी-पुखड़ी सुनाना = अंड-बंड सुनाना। उखाड़ी उखड़ना = कुछ किया हो सकना। मन उखड़ना = किसी की ओर से उदासीन होना। दम उखड़ना = प्राण निकलना। पाँव उखड़ना = ठहर न सकना।

उखम (सं० पु०) गर्मी, ताप, उष्म।

उखमज (सं० पु०) क्षुद्रकीट, उष्मजजीव। [रीति।

उखर (सं० पु०) ऊख बो जाने के बाद हल पूजने की

उखली (सं० स्त्री०) ओखली, कांड़ी।

उखा (सं० स्त्री०) बटलोई, बटुई।

उखाड़ (सं० पु०) उत्पाटन, उखाड़ने की परिपाटी, उखेड़, उचकाव, मल्ल-युद्ध का एक पेंच।

उखाड़ना (क्रि० स०) देखो उखारना।

उखाड़ू (वि०) चुग़ल-ख़ोर, लगाने-बुझानेवाला।

उखारना (क्रि०स०) किसी जमी या गड़ी वस्तु को उसके स्थान से अलग करना, तोड़ना, हटाना, अलगाना, तितर-बितर करना।

उखारी (सं० स्त्री०) ऊख का खेत।

उगत (सं० पु०) उद्भव, जन्म, उत्पत्ति, उपज।

उगना (क्रि० अ०) उदय होना, प्रकट होना, उत्पन्न होना, उपजना, निकलना। [होना।

मुहा०—उगते ही जलना = प्रारम्भिक दशा में ही नष्ट

उगलना (क्रि० स०) उलटी करना, क़ै करना, थूकना, भेद खोलना। [प्रकट करना।

उगाना (क्रि० स०) अङ्कुरित करना, उपजाना, जमाना।

उगाल (सं० पु०) सीठी, पीक, थूक।

उगालदान (सं० पु०) पीकदान, थूकदान। [करना।

उगाहना (क्रि० स०) एकत्रित करना, इकट्ठा करना, वसूल

उगाही (सं० स्त्री०) वसूली, भूमिकर, एक प्रकार का लेन-देन। [थुकवाना।

उगिलवाना (क्रि० स०) क़ै कराना, उलटी कराना,

उगिलाना (क्रि० स०) देखो उगिलवाना।

उग्र (वि०) तीव्र, तीक्ष्ण, रौद्र, घोर, प्रचण्ड, उत्कट, कठिन, (सं०पु०) शिव, विष्णु, सूर्य, शूद्रा के गर्भ से क्षत्रिय से उत्पन्न एक वर्णसङ्कर जाति विशेष, वच्छनाग विष।

उग्रगंध (वि०) तीक्ष्ण गंधवाला, तीव्र गंधयुक्त, लहसुन, प्याज़, कायफल, हींग चंपा।

उग्रचण्डा (सं० स्त्री०) भगवती की मूर्ति विशेष।
उग्रता (सं० स्त्री०) प्रचण्डता, कठोरता, उद्दण्डता।
उग्रतारा (सं० स्त्री०) भगवती की एक मूर्ति, जिसका दूसरा नाम मातङ्गिनी है।
उग्रसेन (सं० पु०) मथुरा का एक राजा, इसके पिता का नाम आहुक था, अत्याचारी कंस इसी का पुत्र था।
उग्रस्वभाव (वि०) उद्दण्ड स्वभाववाला, कठोर हृदय वाला।
उघटना (क्रि० अ०) किसी किये हुए उपकार को ताना के रूप में जताना, ताल देना, ताल तोड़ना, एहसान जताना। [वाना।
उघटाना (क्रि० स०) कहलवाना, एहसान को जतल-
उघटा पैन्ती (सं० स्त्री०) ओरहना देना, एहसान।
उघड़ना (क्रि० अ०) खुलना, नंगा होना, प्रकट होना।
उघरना (क्रि० अ०) देखो उघड़ना।
मुहा० = उघर कर नाचना—मनमाना काम करना।
उघरहिं (क्रि० अ०) नंगा होते हैं, खुल जाते हैं, प्रकट होते हैं।
उघरे (वि०) नंगे, खुले, प्रकट।
उघाड़ना (क्रि० स०) खोलना, नङ्गा करना।
उघाडू (सं० पु०) प्रकाशक, खोलनेवाला, उघाड़नेवाला।
उच (वि०) उन्नत, उच्च। [उठना, कूद कर उठना।
उचकना (क्रि० अ०) उछलना, कूदना, उछल कर ऊपर
उचक्का (वि०) ठग, चाईं, लुच्चा, बदमाश, गठकट, पाखण्डी, धूर्त, गुण्डा।
उचटना (क्रि० अ०) मन न लगना, नींद टूटना, उदासी छाना, उखड़ना, उचड़ना, अलग होना, हटना बिचकना, भड़कना।
उचटाना (क्रि० स०) विरक्त करना, उदासीन करना, नोचना, बिखेरना, उजाड़ना, अलगाना, छुड़ाना, बिचकाना, भड़काना।
उच नीच (वि०) ऊभड़ खाबड़।
उचरङ्ग (सं० पु०) पतिङ्गा, पतङ्ग, भुनगा।
उचरना (क्रि० स०) उच्चारण करना, कहना, बोलना, काक का बोलना जो किसी भावी आगमन की सूचना करता है, शकुन करना। [भागना, जाना।
उचलना (क्रि० अ०) अलगाना, बिलगाना, पृथक् होना,
उचाट (सं० पु०) उदासीनता, विरक्ति, मन न लगना।
उचाटू (वि०) मन को उदास करनेवाला, विरक्ति पैदा करनेवाला, उचाटनेवाला। [का अलगाना।
उचाड़ना (क्रि० स०) नोचना, उखाड़ना, सटी हुई चीज़
उचाना (क्रि० स०) ऊपर उठाना, उठाना, ऊंचा करना।
उचापत (सं पु०) उठान, लेखा, मोदी का हिसाब किताब, बनिये के यहाँ से उधार सौदा लेना।
उचित (वि०) योग्य, ठीक, न्याय, वाजिब।
उचेलना (क्रि० स०) उचाड़ना, उधेरना, अलगाना।
उचोट (सं० पु०) ठेस, ठोकर, चोट। [बड़ा, उत्तम।
उच्च (वि०) ऊंचा, ऊर्ध्व, उन्नत, उत्तुङ्ग, श्रेष्ठ, महान्,
उच्चतरु (वि०) ऊंचा वृक्ष, नारियल का पेड़।
उच्चता (सं० स्त्री०) ऊंचाई, श्रेष्ठता, बड़प्पन।
उच्चनीच (वि०) ऊपर-नीचे, असमान।
उच्चभाषी (वि०) कटु वचन बोलनेवाला, कड़ुवी बात कहनेवाला, कटु-वक्ता।
उच्चमना (वि०) सहृदय।
उच्चशिक्षा (सं० स्त्री०) अधिक शिक्षा, उच्च श्रेणी की पढ़ाई।
उच्चस्वर (सं० पु०) ज़ोर की आवाज़, दूर जानेवाला शब्द। [लगना, उदासी।
उच्चाट (सं० पु०) उदासीनता, अरुचि, विरक्ति, मन न
उच्चाटन (सं० पु०) तान्त्रिक प्रयोग जिसके द्वारा मन का उच्चाट हो जाय, नोचना, उखाड़ना, उचाड़ना, उदासी, विरक्ति, मन न लगना।
उच्चार (सं० पु०) मल, मूत्र, पुरीष, विष्ठा।
उच्चारण (सं पु०) कहना, मुंह से शब्द निकालना, कथन, शब्द का प्रयोग, उल्लेख।
उच्चारणीय (वि०) उच्चारण करने योग्य, कथनीय।
उच्चारित (वि०) कथित, अभिहित, उक्त।
उच्चार्य (वि०) उच्चारणीय, उच्चारण के योग्य, कथनीय।
उच्चैः (अव्य०) ऊपर, ऊंचा।
उच्चैःश्रवा (सं० पु०) इन्द्र का घोड़ा, यह समुद्र-मथन में मिला था, यह चौदह रत्नों में गिना जाता है।
उच्छन्न (वि०) दबा हुआ, लुप्त।
उच्छलना (क्रि० अ०) नीचे-ऊपर उठना, उछलना।
उच्छलना (क्रि० अ०) उछलना, नीचे ऊपर होना, वेग से ऊपर उठना और गिरना
उच्छव (सं० पु०) उत्सव।
उच्छाव (सं० पु०) उत्साह, धूम-धाम, उमंग।

उच्छ्वास (सं० पु०) सांस, श्वास, उसांस।
उच्छ्वाह (सं० पु०) उत्साह। [उखड़ा हुआ, खण्डित।
उच्छिन्न (वि०) नष्ट-भ्रष्ट, छिन्न-भिन्न, निर्मूल, विनष्ट,
उच्छिन्नता (सं० स्त्री०) निर्मूल, नाश।
उच्छिष्ट (वि०) जूठा, भोजन किये हुये में से बचा अंश, त्यक्त, भोजनावशिष्ट।
उच्छिष्ट भोजन (सं० पु०) जूठा भोजन, त्यक्त आहार, भोजन करने से छूटा हुआ भोजन का अंश, अवशिष्ट आहार।
उच्छू (सं० पु०) एक तरह की खांसी, वह खांसी जो गले में पानी आदि के रुक जाने से आती है।
उच्छृङ्खल (वि०) शृङ्खला-विहीन, अंडबंड, स्वेच्छाचारी उद्दण्ड, उद्धत, निरङ्कुश।
उच्छेद (सं० पु०) नाश, उन्मूलन, उत्पाटन, उखाड़-पछाड़, खण्डन। [खण्ड, विभाग, परिच्छेद।
उच्छ्वास (सं० पु०) सांस, श्वास, उसांस, प्रकरण,
उछङ्ग (सं० पु०) गोद, कोरा, कनिया, अङ्क।
उछलकूद (सं० स्त्री०) अधीरता, चञ्चलता, चपलता, खेलकूद, हलचल। [ऊपर जाना और नीचे गिरना।
उछलना (क्रि० अ०) कूदना, नीचे-ऊपर उठना, वेग से
उछाड़ (सं० पु०) क़ै, वमन।
उछाल (सं० पु०) कुदान, छलांग, ऊपर उठना।
उछालना (क्रि० स०) ऊपर फेंकना, उचकाना, कुदाना, प्रकट करना।
उछाह (सं० पु०) उमंग, उत्साह, हर्ष, प्रसन्नता, आनन्द।
उछाही (वि०) उत्साही, उमंगी।
उछीर (सं० पु०) अवकाश, छिद्र, खुला स्थान।
उजट (सं० पु०) पर्णकुटी, झोपड़ा।
उजड़ना (क्रि० अ०) नष्ट होना, उखड़ना-पुखड़ना, तितिर-बितिर होना, ध्वस्त होना।
उजड़ा (वि०) तहस-नहस, ध्वस्त, नष्ट।
उजड्ड (वि०) उद्दण्ड, गँवार, प्रचण्ड मूर्ख, असभ्य, निरङ्कुश, निर्बोध, अशिक्षित। [की एक जाति।
उजबक (वि०) उद्दण्ड, मूर्ख, अनारी, (सं० पु०) तातारियों
उजरत (सं० पु०) भाड़ा, मजदूरी।
उजयार (सं० पु०) प्रकाश, चाँदनी, उजाला।
उजल (सं० पु०) निर्मल, स्वच्छ, साफ़, श्वेत, सफ़ेद, चमक, झक।
उजला (वि०) निर्मल, स्वच्छ, साफ़, धौल, दिव्य।
उजागर (वि०) प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी, तेजस्वी, प्रकाशमान्, दिव्य, जगमग।
उजाड़ (सं० पु०) डीह, गिरी-पड़ी जगह, परती, शून्यस्थान, जंगल, (वि०) उजाड़ा हुआ, तहस-नहस, ध्वस्त, नष्ट।
उजाड़ना (क्रि० स०) तहस-नहस करना, नष्ट करना, बिगाड़ना, बरबाद करना, चौपट करना।
उजान (सं० पु०) धारे के विपरीत दिशा, चढ़ाव की ओर, उलटी ओर।
उजारि (क्रि०) उजाड़ कर। [देवता के निमित्त निकालना।
उजारी (सं० स्त्री०) अंगऊँ, नये अन्न के ढेर में से किसी
उजाला (सं० पु०) चमक, प्रभा, प्रकाश, तेज।
उजाली (वि०) चन्द्रिका, चाँदनी।
उजियारा (सं० पु०) प्रकाश, उजाला चाँदनी।
उजियारी (सं० स्त्री०) चांदनी, उजाली।
उजीना (वि०) प्रकाशमान्, रौशन।
उजेरा (सं०) उजाला, प्रकाश, चांदना।
उज्जल (वि०) निर्मल, स्वच्छ, दिव्य, चमकीला, प्रकाशित।
उज्ज्वल (वि०) उज्जल, स्वच्छ, निर्मल, चमकीला, दीप्तियुक्त, प्रकाशित।
उज्ज्वलन (सं० पु०) चमक, प्रकाश, आभा, उद्दीपन, दीप्त।
उज्जृम्भित (वि०) प्रस्फुटित, विकसित, प्रफुल्लित, (सं० पु०) प्रयत्न, अन्वेषण।
उज्जैन (सं० पु०) मालवा की प्राचीन राजधानी।
उझकना (क्रि० अ०) उछलना, उचकना, झांकना, ताकना, चौकना, चंचल होना, सजग होना, झांकने के लिये उछलना।
उझकुन (सं० पु०) ठेंगन, ओट, उचकन।
उझलना (क्रि० स०) उंडेलना, ख़ाली करना, एक बर्तन की वस्तु किसी दूसरे बर्तन में रखना।
उझिला (सं० स्त्री०) उबाली हुई सरसों जिसका उबटन लगाया जाता है।
उञ्छ (वि०) सामान्य, तुच्छ, क्षुद्र, हेय।
उञ्छवृत्ति (सं० स्त्री०) सामान्य जीविका, अन्न कट जाने पर खेत में गिरे हुए अन्न को संग्रह कर जीवन-निर्वाह, मुनि जीवन-वृत्ति।

उञ्छशील (वि०) सामान्य वृत्ति से जीवन निर्वाह करनेवाला, ऋषि, मुनि।

उज्झित (वि०) वर्जित, उत्सृष्ठ, त्यक्त।

उज्झलित (वि०) डाला हुआ, उड़ेला हुआ।

उट (सं०पु०) तिनका, तृण, पत्ता।

उटक्करलस (वि०) बिना समझा बूझा, उतावला।

उटङ्ग (वि०) ओच्छ वस्त्र, वह कपड़ा जो पहनने में छोटा पड़े।

उटज (सं० पु०) पर्ण-कुटी, पर्णशाला, झोंपड़ी, कुटिया।

उट्टङ्कन (सं० पु०) सङ्केत, इशारा, चिह्न,अङ्कित, स्वाव।

उट्टङ्कित (वि०) उल्लेखित, अङ्कित, संकेतित।

उठङ्गन (सं०) ओट, टेक, आड़,।

उठङ्गना (क्रि० अ०) लेटना, पड़ा रहना, टेक लगाना।

उठङ्गाना (क्रि० स०) किसी वस्तु को अन्य किसी वस्तु के सहारे खड़े रखना, या पट करना, भिड़ाना, किसी वस्तु के सहारे बेंडा रखना।

उठना (क्रि० अ०) ऊंचा होना, खड़ा होना, उगना।
मुहा०—उठ खड़ा होना=चलने को तैयार होना। उठ जाना=मर जाना। उठना बैठना=आना जाना। उठा-बैठी=दौड़-धूप, हैरानी। [बेचैनी।

उठबैठ (सं० स्त्री०) चुलबुलाहट, चञ्चलता, कष्ट, क्लेश,

उठवैया (सं० पु०) उठानेवाला, उठल्लू।

उठल्लू (वि०) आवारा, घुमक्कड़, चञ्चल, अस्थिर, एक ठिकाने न रहनेवाला।

उठाईगीर (वि०) ठग, गंठमार, चाई, उचक्का,हथलपक।

उठान (सं० पु०) उठने की क्रिया, वृद्धि-क्रम, उदय, आरम्भ, व्यय।

उठाना (क्रि० स०) ऊपर लेना, नीचे से ऊपर करना, खड़ा करना, उधार देना, खर्च करना, दूर करना, छोड़ना, आरम्भ करना, सहसा उभाड़ना। [जाना।
मुहा०—उठा रखना=बाक़ी रखना। उठा धरना=बद

उठौआ (वि०) जिसका नियत स्थान न हो, उठौवा।

उठौनी (सं०स्त्री०) उठाने की क्रिया, उठाने की मज़दूरी, अगौढ़ा, दादनी,[पुरहत, उधार का लेन-देन, लगन धरौआ, प्रसुता की की सेवा-टहल।

उठौवा (वि०) देखो उठौआ।

उड़ंकू (वि०) उड़नेवाला, चलने-फिरनेवाला।

उड़गण (सं० पु०) नक्षत्र-समूह, तारे।

उड़चलना (क्रि० अ०) इतराना, अकड़ना।

उड़ती (सं० पु०) जनश्रुति, अमूल, गप, अनिश्चित।

उड़नखटोला (सं० पु०) विमान, उड़नेवाला खटोला।

उड़ना (क्रि० अ०) पक्षी आदि का आकाश में चलना, आकाश-मार्ग में गमन करना। [ख़बर, किंवदंती।
मुहा०—उड़ चलना=तेज़ दौड़ना। उड़ती ख़बर=बाज़ारू

उड़नी (वि०) फैलना।

उड़ाऊ (वि०) अमित व्ययी, फ़ज़ूल खर्च करनेवाला, व्यर्थ का व्यय करनेवाला, व्यर्थ धन लुटानेवाला।

उड़ाकू (वि०) उड़ाने-पड़ानेवाला, ले भागनेवाला।

उड़ाङ्क (वि०) उड़नेवाला, उड़क्कू। [गति।

उड़ान (सं० स्त्री०)उड़ने की क्रिया, कूदना, पक्षियों की
मुहा०—उड़ान मारना=बहाना करना, बातों में टालना। ऊड़-ऊड़ होना=चारों ओर से बुरा होना।

उड़ाना (क्रि०स०) भगाना, लुटाना, शीघ्रता से काट कर अलग करना, खर्च करना, व्यय करना।

उड़ाना-पड़ाना (क्रि० स०) गँवाना, खोना, लुटाना, अपव्यय करना, नष्ट करना, फ़ज़ूल खर्च करना।

उड़ावहि (क्रि० स०) नचाते हैं, उड़ाते हैं, लुटाते हैं, भगाते हैं, गँवाते हैं।

उड़ासना (क्रि० स०) बिछौना उठाना, बिस्तर समेटना।

उड़ाहीं (क्रि० अ०) उड़ते हैं, भागते हैं, उड़ जाते हैं।

उड़िकना (क्रि० अ०) प्रतिज्ञा करना,राह देखना. इसका प्रयोग अधिकतर मारवाड़ी भाषा में होता है।

उड़िया (वि०) उड़ीसा देश-वासी, उड़ीसा देश के वाशिन्दे।

उड़ियाना (सं० पु०) एक-मात्रिक छन्द विशेष।

उड़िस (सं० पु०) खटमल, खटकीरा। [उत्कल देश।

उड़ीसा (सं० पु०) भारतवर्ष का एक प्रान्त विशेष,

उड़ेलना (क्रि० स०) उफिलना।

उडु (सं० पु०) नक्षत्र, तारा।

उडुप (सं० पु०) चन्द्रमा, डोंगी, धनई।

उडुपथ (सं० पु०) नभस्थल, आकाश।

उडुस (सं० पु०) देखो उड़िस। [योग्य होना।

उड्डीन (सं० पु०) पङ्खवाला होना, पंखदार होना, उड़ने

उड्डीयमान (वि०) उड़नेवाला, नभचर।

उढ़कना (क्रि० अ०) ठोकर खाना, सहारा लेना, टेक लगाना, रुकना, ठहरना, भिड़ाना, औंधाना।

उढ़ना (सं० पु०) कपड़ा लत्ता, ओढ़ना।
उढ़री (सं० स्त्री०) रखनी, सुरैतिन, रखेलिन, वह स्त्री जो भगा कर लायी गयी हो।
उढ़ला (सं० पु०) पहनने का वस्त्र।
उढ़ाना (क्रि० स०) कपड़ा ओढ़ाना, ढांकना।
उढ़ारना (क्रि० स०) दूसरे की स्त्री को बहका लाना, दूसरे की स्त्री को भगाना।
उढ़ेलना (क्रि० स०) उभलना, उड़ेलना, डालना।
उढ़ैया (सं० पु०) ओढ़नेवाला, ढकनेवाला।
उत (अव्य०) उधर, उस ओर।
उतथ्य (सं० पु०) एक मुनि, ये बृहस्पति के भाई थे।
उतना (अव्य०) उस परिमाण में, उस मात्रा में।
उतरन (सं० स्त्री०) पहिना हुआ पुराना कपड़ा।
उतरन-पुतरन (सं० स्त्री०) उतारे हुये पुराने कपड़े, फटा पुराना वस्त्र।
उतरना (क्रि० अ०) किसी ऊंचे स्थान से नीचे आना, पार होना, लाँघना, किनारे पहुँचना, कम होना, फीका पड़ना, उदास होना, घटना, ठहरना, टिकना, विश्राम करना, बिगड़ना, धीमा पड़ना, हट जाना, दूर होना, भर आना, कट कर अलग होना।
मुहा०—चित्त से उतरना=भूल जाना। चेहरा उतरना =मुख मलिन होना।
उतरहा (वि०) उत्तर दिशा का रहनेवाला, उत्तर-सम्बन्धी।
उतराई (सं० स्त्री०) नदी पार होने का कर, ऊंचे स्थान से नीचे उतरने की क्रिया।
उतराना (क्रि० अ०) पानी पर तैरना, उफान खाना, [प्रकट होना।
उतरायल (वि०) छोड़ा हुआ, उतारा हुआ, व्यवहृत, उपयोग किया हुआ।
उतराव (सं० पु०) ढाल, उतार।
उतला (सं० पु०) व्यस्त, व्यग्र, उतावला।
उतान (वि०) चित्त, सीधा, पीठ के बल।
उतायल (वि०) शीघ्र, जल्दी।
उतायली (सं० स्त्री०) शीघ्रता।
उतार (सं०पु०) ढाल, घटी, नीचे उतरना।
उतारन (सं०पु०) उतारा हुआ वस्त्र, उतारा हुआ पहिराव, तुच्छ, न्योछावर।
उतारना (क्रि० स०) ऊंचे से नीचे लाना, खींचना, नक़ल करना, अलगाना, लगी या लपटी वस्तु को अलग करना, उधेरना, उचेड़ना, सफ़ाई से काटना, ठहराना, बारना, न्योछावर करना, अदा करना, चुकाना, डेरा देना, वसूल करना, तौल से पूरा करना।
उतारा (सं० पु०) डेरा, ठहराव, टिकाव, नदी पार करने की क्रिया।
उतारू (वि०) उद्यत, तत्पर, तैयार।
उतावल (क्रि० वि०) शीघ्रता से, वेग से, जल्दी से।
उतावला (वि०) हड़बड़िया, जल्दबाज़, चञ्चल, भकभड़िया।
उतावली (सं० स्त्री०) शीघ्रता, हड़बड़ी, चञ्चलता।
उत्कट (वि०) दुस्साध्य, प्रबल, तीव्र, कठिन, कठोर, उग्र, मत्त, प्रबल, प्रचण्ड, विकट।
उत्कण्ठा (सं० स्त्री०) उत्सुकता, व्यग्रता, प्रबल वासना, उत्कट अभिलाषा, व्याकुलता, व्यस्तता, उद्वेग, भावना, लालसा, चाह। [उत्साहित, व्यग्र, व्यस्त।
उत्कण्ठित (वि०) उत्सुक, उद्विग्न, चिन्तित,
उत्कण्ठिता (सं० स्त्री०) उद्विग्न, नायिका-भेद, वह नायिका जो साङ्केतिक स्थान में नायक के आने में विलम्ब होने से उत्कण्ठित हो।
उत्कर्ष (सं० पु०) बड़ाई, प्रशंसा, श्रेष्ठता, उत्तमता, प्रधानता, समृद्धि, बढ़ती।
उत्कल (सं० पु०) वर्तमान उड़ीसा का प्राचीन नाम।
उत्कलिका (सं० स्त्री०) लहर, तरंग, उत्कण्ठा, फूल की कली, बड़े २ समास वाला गद्य, लम्बे चौड़े समास वाला गद्य।
उत्कीर्ण (वि०) लिखा हुआ, खोदा हुआ, पेषित, क्षत, छिदा हुआ, विधा हुआ।
उत्कुण (सं० पु०) खटमल, खटकीरा, जूं।
उत्कृष्ट (वि०) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, अच्छे से अच्छा।
उत्कृष्टता (सं० स्त्री०) उत्तमता, श्रेष्ठता, बड़प्पन।
उत्क्रान्ति (सं० स्त्री०) मरण, मृत्यु, प्रयश, श्रेष्ठता और पूर्णता की ओर प्रवृत्ति, साधारण स्थिति का उत्क्रमण।
उत्क्रोश (क्रि० अ०) चिल्लाना, (सं० पु०) टिट्टिभ, कुररी।
उत्खात (वि०) उखाड़ा हुआ, उत्पाटित, विदारित।
उत्तंस (सं० पु०) शिरोभूषण, शेखर, कर्णफूल, कनफूल।
उत्तप्त (वि०) सन्तप्त, क्रोधित, क्षुभित, उष्ण, दग्ध, तपित, पीड़ित, दुःखित, चिन्तित।

उत्तप्तता (सं० स्त्री०) क्षुब्धता, सन्तप्तता, उष्णता ।
उत्तम (वि०) श्रेष्ठ, भद्र, उत्कृष्ट, सब से अच्छा, प्रधान, (सं० पु०) राजा उत्तानपाद का पुत्र, यह सुरुचि के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, यह ध्रुव का सौतेला भाई था, यह वन में शिकार करते समय एक यक्ष द्वारा मारा गया ।
उत्तमता (सं० स्त्री०) उत्कर्षता, श्रेष्ठता ।
उत्तम पद (सं० पु०) उच्चपद, श्रेष्ठपद ।
उत्तम पुरुष (सं० पु०) वह सर्वनाम जिससे बोलने वाले का बोध हो ।
उत्तमर्ण (सं० पु०) ऋण-दाता, कर्ज़ देनेवाला महाजन ।
उत्तम साहस (सं० पु०) अस्सी हज़ार पण के जुर्माने का दण्ड, कठिन दण्ड ।
उत्तमा (वि०) उत्कृष्टा, भली, अच्छी ।
उत्तमाङ्ग (सं० पु०) मस्तक, सिर ।
उत्तमा नायिका (सं० स्त्री०) नायिका विशेष, वह नायिका जो पति के प्रतिकूल रहने पर भी अनुकूल रहे ।
उत्तमोत्तम (वि०) भले से भला, अच्छे से अच्छा, सर्वोत्तम, परमोत्कृष्ट ।
उत्तमौजा (वि०) उत्तम बल वाला, (सं० पु०) मनु के दस पुत्रों में से एक, राजा युधामन्यु का भाई, यह कुरुक्षेत्र के युद्ध में पाण्डवों के पक्ष में था ।
उत्तर (सं० पु०) एक दिशा विशेष, दक्षिण दिशा के सामने की दिशा, जवाब, समाधान, प्रतिवाक्य, विराट राज का पुत्र, अलङ्कार विशेष, (वि०) अनन्तर, उपरान्त का, पिछला, (अव्य०) पश्चात् ।
उत्तर काल (सं० पु०) आगामी समय, भविष्य ।
उत्तर काशी (सं० स्त्री०) एक स्थान का नाम, यह हरिद्वार से उत्तर है, और बद्रीनारायण से रास्ते में पड़ता है ।
उत्तर कुरु (सं० पु०) जम्बू द्वीप के नौ खण्डों में से एक ।
उत्तर कोशला (सं० स्त्री०) कोशल, अयोध्यानगरी ।
उत्तर क्रिया (सं० स्त्री०) अन्त्येष्टि क्रिया, श्राद्धादि, वर्षी ।
उत्तरदाता (सं० पु०) वह जिस पर किसी काम के [बिगड़ने बनने का भार हो, जवाबदेह ।
उत्तरदायित्व (सं० पु०) जवाबदेही ।
उत्तरदायी (वि०) जवाबदेह, उत्तर देनेवाला ।

उत्तर पक्ष (सं० पु०) सिद्धान्त, समाधान, वाद-विवाद में वह सिद्धान्त जो प्रथमोक्त प्रश्न का समाधान या खण्डन करे ।
उत्तर फाल्गुनी (सं० स्त्री०) बारहवां नक्षत्र ।
उत्तर भाद्रपद (सं० पु०) छब्बीसवां नक्षत्र ।
उत्तर मीमांसा (सं० स्त्री०) वेदान्त दर्शन ।
उत्तरा (सं० स्त्री०) विराट राज की कन्या, इसका व्याह अर्जुन के पुत्र से हुआ था, राजा परीक्षित का जन्म इसी के गर्भ से हुआ था ।
उत्तराखण्ड (सं० पु०) हिमालय के पास के उत्तर [प्रदेश ।
उत्तराधिकारी (सं० पु०) वारिस, किसी के मरने पर मृत व्यक्ति के धन सम्पत्ति का अधिकारी ।
उत्तरायण (सं० पु०) सूर्य का मकर रेखा से उत्तर की ओर जाना, वह छः महीने का समय जिसमें सूर्य लगातार उत्तर को गमन करता है, देवताओं का दिन ।
उत्तरार्द्ध (सं० पु०) पिछला आधा भाग, पीछे का [अर्द्धभाग ।
उत्तराषाढ़ (सं० स्त्री०) इक्कीसवां नक्षत्र ।
उत्तरीय (वि०) ऊपर वाला, उत्तर देशवासी, उत्तर देशीय, (सं० पु०) दुपट्टा, चादर, उपरना, ओढ़नी ।
उत्तरोत्तर (क्रि० वि०) दिन-दिन, क्रमशः, लगातार, एक के बाद एक ।
उत्तान (वि०) चित, सीधा, पीठ के बल पड़ा [हुआ, उन्मुख ।
उत्तानपाद (सं० पु०) स्वयंभू मनु के पुत्र, ये ध्रुव के पिता थे ।
उत्ताप (सं० पु०) गरमी, उष्णता, ताप, तेज, क्षोभ, [दुःख, क्लेश, शोक, वेदना ।
उत्तीर्ण (वि०) पारङ्गत, मुक्त, सफल, परीक्षा में सफलता पाया हुआ, पास ।
उत्तुङ्ग (वि०) बहुत ऊँचा, अत्यधिक ऊँचा, ऊर्ध्व, [उन्नत, ऊँचा ।
उत्तू (सं० पु०) चुनन, वस्त्रों की चुनाई, कुल्लाव, तह, एक औज़ार जिस से कपड़ों पर बेल-बूटे काढ़ने के लिये निशान बनाया जाता है ।
उत्तू करना (क्रि० अ०) तह लगाना, चुनना, कपड़े की [चुनाई करना ।
उत्तेजना (सं० स्त्री०) प्रोत्साहन, बढ़ावा, प्रेरणा, किसी कार्य में प्रवृत्त होने के लिये उत्साहित करना ।
उत्तेजित (वि०) प्रोत्साहित, प्रेरित, उत्साहित ।
उत्तोलन (सं० पु०) ऊंचा करना, ऊपर उठाना, तौलना, तानना ।

उत्थान (सं० पु०) समृद्धि, बढ़ती, उन्नति, उठान, आरम्भ।
उत्थापन (सं० पु०) उठाना, हिलाना, जगाना, मानना।
उत्थित (वि०) उठा हुआ, उत्पन्न।
उत्थिताङ्गुली (सं० स्त्री०) पञ्जा, थप्पड़।
उत्पतन (सं० पु०) ऊपर उठना, उर्द्धगमन।
उत्पतित (वि०) ऊपर उठा हुआ, उर्द्धगमित। [प्रारम्भ।
उत्पत्ति (सं० स्त्री०) उद्भव, जनन, उद्गम, जन्म, आरम्भ,
उत्पत्तिशाली (वि०) जो उत्पन्न होता है। [दुर्व्यवहार।
उत्पथ (सं० पु०) कुमार्ग, सत्पथच्युत, बुरा आचरण,
उत्पन्न (वि०) जन्मा हुआ, जात, पैदा।
उत्पन्ना (सं० स्त्री०) अगहन कृष्ण एकादशी।
उत्पल (सं० पु०) नील पद्म, नील कमल, कमल।
उत्पलपत्र (सं० पु०) कमल का पत्ता, पद्म-पत्र।
उत्पाटन (सं० पु०) जड़ से उखाड़ना, निर्मूल करना।
उत्पात (सं० पु०) उपद्रव, ऊधम, हलचल, अंधेर, आकस्मिक घटना, दंगा, फसाद। [नटखट।
उत्पातिग्रस्त (वि०) उपद्रव युत
उत्पातिवाद (सं० पु०) बवंडर।
उत्पाती (वि०) उपद्रवकारी, उत्पात मचानेवाला।
उत्पादक (वि०) उत्पन्न करनेवाला, पैदा करनेवाला, उद्भव-कर्त्ता, जन्म-दाता, जनक।
उत्पादन (सं० पु०) उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्माना।
उत्पादिका (सं० स्त्री०) उत्पादन करनेवाली स्त्री, जननी, पदार्थों की वह शक्ति जिस से वे उत्पन्न होते हैं।
उत्पीड़न (सं० पु०) दबाना, दुःख देना, पीड़ित करना।
उत्प्रेक्षा (सं० स्त्री०) उपेक्षा, आरोप, उद्भावना, उपमा, सादृश्य, अनुमान, अर्थालङ्कार विशेष, जिसमें सादृश्य होने से उपमेय में उपमान की सम्भावना हो।
उत्प्लवन (सं० स्त्री०) कूदना।
उत्फाल (सं० पु०) लाँघना।
उत्फुल्ल (वि०) खिला हुआ, फूला हुआ, विकसित, प्रफुल्लित, आनन्दित, प्रसन्नचित्त।
उत्सङ्ग (सं० स्त्री०) कोरा, गोदी, अङ्क, बीच का हिस्सा, मध्य भाग, ऊपरी भाग, निर्लिप्त, विरक्त।
उत्सङ्गी (सं० पु०) साथी।
उत्सर्ग (सं० पु०) त्याग, दान, छोड़ना।
उत्सर्ग-पत्र (सं० पु०) दान-पत्र, त्याग-पत्र।
उत्सर्जन (सं० पु०) दान, त्याग, उत्सर्ग, छोड़ना, एक वैदिक कर्म, यह साल में दो बार होता है, एक पूस में, दूसरा सावन में।
उत्सव (सं० पु०) आनन्द मंगल, उछाह, धूमधाम, आह्लाद, जलसा, त्योहार, पर्व।
उत्सव जनक (सं० पु०) आनन्दकारी।
उत्सादन (सं० पु०) विनाशन।
उत्सादित (वि०) विनाशित।
उत्सारक (सं० पु०) द्वारपाल, दरबान, चोबदार।
उत्साह (सं० पु०) उमंग, उछाह, हौसला, साहस, उद्यम, उद्योग।
उत्साह-वर्द्धक (वि०) उत्साह बढ़ानेवाला।
उत्साहित (वि०) प्रोत्साहित, उत्तेजित, उद्यत।
उत्साही (वि०) उमंगी, उछाही, उद्योगी।
उत्सुक (वि०) व्यग्र, उत्कण्ठित, अत्यन्त इच्छुक।
उत्सुकता (सं० स्त्री०) आकुलता, इच्छा।
उत्सूर (सं० पु०) संध्या-समय, सायंकाल।
उत्सृष्ट (वि०) त्यक्त, त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
उत्सेध (सं० पु०) उन्नति, बढ़ती, उचाई, सूजन, शोथ, (वि० श्रेष्ठ, उत्तम, ऊंचा।
उथलना (क्रि० अ०) औंधा होना, उलटना, नीचे-ऊपर करना, डावांडोल होना, डगमगाना।
उथल-पुथल (सं० पु०) इधर-उधर, उलट-पुलट, अंडबंड, क्रम-विहीन।
उथला (वि०) छिछला, कम गहरा।
उद् (अव्य०) यह संस्कृत का उपसर्ग है, यह निम्न अर्थों का द्योतक है, अतिक्रमण, उत्कर्ष, ऊपर, प्राबल्य, प्राधान्य, अभाव, दोष प्रकाश।
उदक (सं० पु०) जल, पानी, सलिल।
उदक-क्रिया (सं० स्त्री०) जलदान, मृतक व्यक्ति को जल से तर्पण करना।
उदधि (सं० पु०) समुद्र, सागर, मेघ, घटा।
उदधि-मेखला (सं० स्त्री०) पृथ्वी।
उदधि सुत (सं० पु०) समुद्र से उत्पन्न होनेवाले पदार्थ, चन्द्रमा, अमृत, शङ्ख। [वस्तु, लक्ष्मी, सीप।
उदधि-सुता (सं० स्त्री०) समुद्र से उत्पन्न होनेवाली
उदन्त (वि०) बिना दाँत वाला, जिस के दाँत न निकले हों।

उदपान (सं० पु०) कूल, कमण्डलु, कुएँ के पास का गड्ढा।
उदमाद (सं० पु०) उन्माद, पागलपन, मतवाला।
उदमादी (वि०) मतवाला, उन्मत्त, पागल। [प्रकट।
उदय (सं० पु०) ऊपर आना, निकलना, समुन्नति, दीप्ति, मुहा०—उदय से अस्त तक=सारी पृथ्वी में।
उदयकाल (सं० पु०) प्रातः समय, सर्प विशेष।
उदय गिरि (सं० पु०) उदयाचल।
उदयन (सं० पु०) एक राजा, ये शतानीक के पुत्र थे, इनका दूसरा नाम वत्सराज था, इनकी पत्नी का नाम वासवदत्ता था, इनकी राजधानी कौशाम्बी थी। एक प्रसिद्ध दार्शनिक, इनका जन्म स्थान मिथिला में था, वे बौद्ध-धर्म के कट्टर विरोधी थे। कुसुमाञ्जली के कर्त्ता यही हैं, इस के अतिरिक्त न्यायशास्त्र के अन्यान्य ग्रंथों की भी टीका की है, इनकी कन्या का नाम लीलावती था जो अपने समय की एक प्रसिद्ध पण्डिता थी, लीलावती नामक संस्कृत का ग्रन्थ इसने ही बनाया है।
उदयाचल (सं० पु०) उदय गिरि, पुराण के अनुसार एक पूर्व दिशा का पर्वत जहां से सूर्य उदय होते हैं।
उदयातिथि (सं० स्त्री०) वह तिथि जिसमें सूर्य उदय हों। स्नान दान, अध्ययन आदि कर्म उदयातिथि में ही करने का शास्त्र का विधान है।
उदयाद्रि (सं० पु०) उदयाचल, उदय गिरि।
उदयास्त (सं०पु०) पूर्व से पश्चिम लों, उदय से अस्त लों।
उदर (सं० पु०) पेट, जठर, ओदर।
मुहा०—उदर जिलाना=पेट पालना, पेट भरना। उदर भरना=खाना, पेट भरना।
उदरज्वाला (सं० पु०) भूख, जठराग्नि।
उदराग्नि (सं० पु०) जठराग्नि।
उदरावर्त (सं० स्त्री०) नाभी, ढोंढ़ी।
उदरिणी (सं० स्त्री०) गर्भिणी, गर्भवती, गाभिन।
उदरी (वि०) तोन्दइल, तोंदीला।
उदर्क (सं० पु०) भविष्य, अन्त, फल।
उदर्चि (सं० स्त्री०) शिव, कामदेव।
उदवना (क्रि० अ०) उगाना, निकलना, प्रकट होना।
उदसन (क्रि० अ०) उजड़ना, उड़सना तितर बितर होना, क्रम-भङ्ग होना।

उदाता (वि०) उदार, दाता।
उदात्त (वि०) दयालु, कृपालु, उदार, दाता, श्रेष्ठ, महान्, स्पष्ट, विशाल, योग्य, समर्थ (सं०पु०) वेदगान में एक स्वर भेद विशेष, काव्य का एक अलङ्कार विशेष, जिसमें संभावनीय ऐश्वर्य का बढ़ा चढ़ा कर वर्णन किया जाय, दान, एक प्रकार का गहना, एक तरह का बाजा।
उदान (सं० पु०) कण्ठस्थ प्राण वायु, नाभि।
उदार (वि०) दाता, दानशील, ऊँचे विचार का, महान्, श्रेष्ठ, बड़ा, सीधा, सरल, शिष्ट। [वाला, शीलयुक्त।
उदार चरित (वि०) ऊँचे विचार वाला, उदार चरित्र
उदारता (सं० स्त्री०) वदान्यता, दान शीलता, उच्चविचार।
उदारत्व (सं०पु०) दानशीलता।
उदारना (क्रि० स०) चीड़ना-फाड़ना। [महात्मा।
उदाराशय (वि०) ऊँचे विचार वाला, उदार आशय वाला
उदास (सं० पु०) विरक्त, खिन्न, निरपेक्ष।
उदासना (क्रि० अ०) चित्त न लगना, विरक्त होना, फीका पड़ना, उचटना, मन न लगना।
उदासी (सं० पु०) संन्यासी, त्यागी पुरुष, वैरागी, एकान्त वासी, साधुओं का एक सम्प्रदाय विशेष, (स्त्री०) खिन्नता, उदासीनता।
उदासीन (सं० पु०) वह राजा जो दो राजाओं के युद्ध में किसी पक्ष में न रहे। निसङ्ग, निरपेक्ष, (वि०) प्रपञ्च-रहित, विरक्त, जिसका मन कहीं न लगे।
उदासीनता (सं० स्त्री०) निरपेक्षता, उदासी, खिन्न, त्याग, विरक्ति।
उदाहर (सं० स्त्री०) भूरा, धुंधला।
उदाहरण (सं० पु०) मिसाल, दृष्टान्त, उपमा।
उदाहृत (वि०) उदाहरण दिया हुआ, कथित, उक्त।
उदित (वि०) प्रकट, प्रकाशित, आविर्भूत, प्रसन्न, उक्त, कथित।
उदित यौवना (सं० स्त्री०) मुग्ध नायिका के सात भेदों में से एक, वह नायिका जिसमें तीन भाग जवानी के हों और एक भाग लड़कपन।
उदीची (सं० स्त्री०) उत्तर दिशा।
उदीच्य (वि०) उत्तर दिशा सम्बन्धी, उत्तर दिशा का रहने वाला (सं० पु०) सरस्वती नदी के उत्तर पश्चिम का देश।

उदीरण (सं० पु०) कथन, उच्चारण ।
उदीरित (वि०) उक्त, कथित ।
उदुम्बर (सं० पु०) गूलर, डेवढ़ी, नपुंसक, हिजड़ा, एक तौल जो अस्सी रत्ती का होता है ।
उदूखल (सं० पु०) गूगल ।
उदै (सं० पु०) देखो उदय, [प्रकाश दीप्त ।
उदोत (वि०) दीप्त,प्रकाशित,शुभ्र,स्वच्छ,उत्तम (सं० पु०)
उद्गत (वि०) उदित, उत्पन्न, प्रकट, व्याप्त, प्राप्त, लब्ध, क्रै किया हुआ ।
उद्गम (सं० पु०) आविर्भाव, उदय, निकास ।
उद्गमन (सं० पु०) ऊपर जाना, ऊर्ध्व गमन ।
उद्गाता (सं० पु०) सामवेद ज्ञाता, सामवेद गाने वाला ब्राह्मण ।
उद्गाथा (सं० स्त्री०) आर्याछन्द का एक भेद इसके विषम पद में १२ और समपद में १८ मात्रायें होती हैं, और इसके विषम गणों में जगण नहीं होता ।
उद्गार (सं० पु०) उफान, उबाल, वमन, ओकलाई, बाढ़, गर्जन, घरघराहट, थूक, किसी के विरुद्ध बहुत दिनों से मन में रखी हुई बात को निकालना ।
उद्गीथ (सं० पु०) ओंकार प्रणव, सामवेद का एक अंश, सामवेद गाने का एक भेद विशेष ।
उद्घाट (सं० पु०) चौकी, वह स्थान जहाँ पर किसी राज्य के तरफ से माल खोल कर जाँच किया जाता हो, खोलने का काम ।
उद्घाटन (सं० पु०) खोलना,उघाड़ना,प्रकाशित करना ।
उद्घात (सं० पु०) खोलना, उघाड़ना, प्रकाशित करना ।
उद्दंश (सं० पु०) मासा, मसक ।
उद्दण्ड (वि०) अक्खड़, उद्धत, उजड्ड, निडर ।
उद्दन्त (सं० पु०) दन्तुला, आगे निकला हुआ दांत ।
उद्दाम (वि०) बंधन हीन, निरंकुश, स्वतन्त्र, बेकहा, गम्भीर महान्, उद्दण्ड, (सं०पु०) वरुण, दण्डकवृत्त का एक भेद, इसके प्रत्येक चरण में १ नगण और १३ रगण रहते हैं ।
उद्दालक (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषि, इनका दूसरा नाम आरुणि है, ये अयोद्धौम्य के शिष्य थे, एक व्रत विशेष, एक अन्न विशेष, जिसको वनकोदव कहते हैं
उद्दिम (सं० पु०) उद्योग, उद्यम, प्रयत्न ।
उद्दिष्ट (वि०) लक्ष्य, अभिप्रेत, इष्ट, दिखलाया हुआ, मनस्थ, (सं० पु०) लाल चन्दन ।
उद्दीपक (वि०) उभाड़ने वाला, उत्तेजित करने वाला,
उद्दीपन (सं० पु०) बढ़ाना, उभाड़ना, जगाना, तापन, प्रकाशन, काव्य में रसों को उत्तेजित करने वाला विभाव [संधान कारण, न्याय में प्रतिज्ञा ।
उद्देश (सं० पु०) चाह अभिलाषा, इष्ट, अभिप्राय अनु-
उद्देश्य (वि०) इष्ट, लक्ष्य, प्रयोजन, अभिप्राय ।
उद्दोत (सं०पु०) प्रकाश, (वि०) चमकीला, उत्पन्न, उदित । [(सं०पु०) मल्ल,पहलवान ।
उद्धत (वि०) अक्खड़, धृष्ट, कुचाली, अभिमानी,
उद्धतपन (सं० पु०) अक्खड़पन, उजड्डपन ।
उद्धरण (सं० पु०) ऊपर उठाना, मुक्ति, त्राण, उद्धार फंसे हुए को उबारना, किसी पुस्तक या लेख से ज्यों का त्यों किसी पुस्तक या लेख में नकल करना, पठित विषय को अभ्यासार्थ पुनः पढ़ना, आवृत्ति ।
उद्धरणी (स्त्री०) आवृत्ति ।
उद्धव (सं० पु०) एक यादव का नाम, ये श्री कृष्ण के मित्र थे, उत्सव, मंगल, आनन्द, यज्ञ की अग्नि ।
उद्धार (सं० पु०) मुक्ति, त्राण, छुटकारा, बचाव, रक्षण, निस्तार ।
उद्धृत (वि०) किसी पुस्तक या लेख को किसी पुस्तक या लेख में अविकल रूप से नक़ल करना, रक्षित, गलना हुआ ।
उद्बोधन (सं० पु०) स्मरण, चेतना, ज्ञापन, उत्तेजित करना, जागना । [(सं० पु०) कच्छप, सूप ।
उद्भट (वि०) प्रबल, प्रचण्ड, उदार, श्रेष्ठ,अनुपम, बे जोड़
उद्भव (सं० पु०) प्रादुर्भाव, जन्म, सृष्टि, वृद्धि ।
उद्भावना (सं० स्त्री०) कल्पना, उत्पत्ति, प्रकाश ।
उद्भासित (वि०) उदीप्त, उत्तेजित, प्रकट, विदित, प्रतीत [भेद कर निकलते हैं ।
उद्भिज्ज (सं० पु०) वनस्पति, वृक्षलता आदि जो पृथ्वी
उद्भिद (सं० पु०) देखो उद्भिज्ज ।
उद्भिदविद्या (सं० स्त्री०) बागवानी ।
उद्भिन्न (वि०) उत्पन्न, कई अंशों में तोड़ा हुआ, विद्ध, भेदित ।
उद्भूत (वि०) निकला हुआ, उत्पन्न ।
उद्भूतरूप (सं० पु०) दृष्टिगोचर होने योग्य रूप ।

उद्भ्रान्त (वि०) भूला हुआ, भटका हुआ, चक्कर खाता हुआ, घूमता हुआ, भौंचक्का, चकित ।
उद्भ्रान्ति (सं० स्त्री०) भूल ।
उद्यत (वि०) तत्पर, तैयार, उतारू, प्रस्तुत ।
उद्यम (सं० पु०) अध्यवसाय, उद्योग, उत्साह, प्रयत्न, चेष्टा, रोज़गार, काम-धंधा, कारबार, व्यापार ।
उद्यमी (वि०) उद्योगी, उत्साही, प्रयत्नवान्, उद्योग करने वाला ।
उद्यान (सं० पु०) उपवन, बग़ीचा, आराम ।
उद्यानपाल (सं० पु०) माली, बाग़वान ।
उद्यापन (सं० पु०) वह कृत्य जो किसी व्रत की समाप्ति पर किया जाय ।
उद्युक्त (वि०) तत्पर, तैयार, उद्योग में लगा हुआ, यत्नवान्, पराक्रमी, उत्साहान्वित ।
उद्योग (सं० पु०) प्रयत्न, चेष्टा, प्रयास, उत्साह, उद्यम, अध्यवसाय, उपाय, पराक्रम, काम-धंधा, व्यापार ।
उद्योगी (वि०) उद्यमी, प्रयत्नवान्, उत्साही, अध्यवसायी, उद्योग करने वाला ।
उद्योत (सं० पु०) प्रकाश, आलोक, आभा, चमक, झलक, उजियाला, उजाला ।
उद्र (सं० पु०) ऊदविलाव ।
उद्रिक्त (वि०) स्फुट, व्यक्त, स्पष्ट, बढ़ा हुआ ।
उद्रेक (सं० पु०) वृद्धि, बढ़ती, उत्थान, आरम्भ, [अधिकता ।
उद्वाह (सं० पु०) विवाह, परिणय ।
उद्वाहोपयुक्त (वि०) विवाहोपयुक्त, वयस्क ।
उद्विग्न (वि०) आकुल, व्यग्र, व्यस्त, घबड़ाया हुआ ।
उद्विग्नचित्त (वि०) चंचल चित्तवाला, व्यग्र मन ।
उद्विग्नता (सं० स्त्री०) घबराहट, व्याकुलता, व्यग्रता ।
उद्विग्नमना (वि०) व्याकुलचित्त, घबराया हुआ ।
उद्बुध (वि०) विकाशित ।
उद्भृत (सं० पु०) अधिक, अवाध्य ।
उद्वेग (सं० पु०) मनोवेग, आवेश, चिन्ता, घबराहट, व्याकुलता, विरह-व्यथा ।
उद्वेगकर (वि०) चिन्ता बढ़ाने वाला, व्याकुल करने [वाला ।
उद्वेगी (वि०) उत्कण्ठित, चिन्तित, उद्विग्न ।
उधर (क्रि० वि०) उस ओर, उस तरफ़, वहाँ, उस ठौर ।
उधरा (वि०) खुला हुआ, मुक्त ।
उधार (सं० पु०) ऋण, क़र्ज़, देन, मँगनी, छुटकारा ।
मुहा०—उधार खाये बैठना = किसी भारी आसरे पर दिन काटते रहना ।
उधारना (क्रि० स०) मुक्त करना, उद्धार करना, तारना, छुटकारा करना, पार करना ।
उधेड़ना (क्रि० स०) सुलझना, खोलना, उचाड़ना, अलगाना, सिलाई खोलना, टांका खोलना ।
उधेड़ बुन (सं० पु०) सोच विचार, ऊहा पोह ।
उन (सर्व०) 'उस' का बहुवचन ।
उनइस (वि०) संख्या विशेष, एक कम बीस, १९ ।
उनचास (वि०) संख्या विशेष, एक कम पचास, ४९ ।
उनतीस (वि०) संख्या विशेष, एक कम तीस, २९ ।
उनसठ (वि०) संख्या विशेष, एक कम साठ, ५९ ।
उनहत्तर (वि०) संख्या विशेष, एक कम सत्तर, ६९ ।
उनहार (वि०) समान, सदृश ।
उनासी (वि०) संख्या विशेष, एक कम अस्सी, ७९ ।
उनींदा (वि०) नींद से मतवाला, ऊंघता हुआ ।
उन्नत (वि०) ऊंचा, वर्द्धित, समृद्धि, श्रेष्ठ, महान् ।
उन्नतानत (वि०) ऊभड़-खाभड़, ऊंच-नीच ।
उन्नति (सं० स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, समृद्धि, उंचाई, चढ़ाई ।
उन्नमित (वि०) ऊपर उठाया हुआ, उत्तोलित ।
उन्नयन (वि०) ऊपर ले जाना, उत्तोलन, सोच-विचार ।
उन्नायन (क्रि०वि०) ऊपरसे नीचे की ओर झुकाया हुआ ।
उन्निद्र (वि०) नींद का न आना, नींद का उचाट, निद्रा रहित, खिला हुआ, विकसित, प्रकाशित, प्रफुल्लित ।
उन्मत्त (वि०) मतवाला, विक्षिप्त, पागल, मदांध, बौरहा, बे सुध, आपे से बाहर, सिड़ी ।
उन्मद (वि०) उन्मत्त, मतवाला, प्रमादी, विक्षिप्त, बावला ।
उन्मना (वि०) चिन्तित, व्याकुल, उत्कण्ठित, चञ्चल, घबड़ाया हुआ ।
उन्माद (सं० पु०) चित्त विभ्रम, उन्मत्तता, विक्षिप्तता, (वि०) चित्त विभ्रमी, विक्षिप्त, वह रोग जिसमें बुद्धि ठिकाने न रहे ।
उन्मादी (वि०) पागल, विक्षिप्त, सिड़ी, उन्मत्त, बावला ।
उन्मान (सं० पु०) नाप, तौल, परिमाण विशेष जो ३२ सेर के बराबर होता था ।
उन्मिषित (वि०) प्रफुल्लित, प्रस्फुटित, खिला हुआ विकसित, खुला हुआ, फूला हुआ ।
उन्मीलन (सं० पु०) उन्मेष, (नेत्र) खोलना, खिलना ।

उन्मीलित (वि०) खुला हुआ, विकसित। [उद्यत।
उन्मुख (वि०) ऊपर मुख किए हुए, उत्कण्ठित, उत्सुक,
उन्मूलक (वि०) समूल नष्ट करने वाला, जड़ से उखाड़ने वाला, ध्वस्त करने वाला, मटिया मेट करनेवाला।
उन्मूलन (सं० पु०) उखाड़ना, उत्पाटन, बरबादी, तहस-नहस।
उन्मेष (सं० पु०) नेत्र खोलना, आँख उघाड़ना, विकास, खिलना, ज्ञान, बुद्धि, प्राज्ञा, पपनी, पलक।
उन्मोचन (सं० पु०) मुक्त करना, त्याग करना।
उन्हारा (सं० पु०) डील डौल, रूप, ढाल।
उप (अव्य०) यह संस्कृत का उपसर्ग है, और शब्दों के पहले लगता है, निम्न लिखित अर्थों का द्योतक है, समीपता, सामर्थ्य, गौणता, न्यूनता, व्याप्ति।
उपकण्ठ (वि०) समीप, निकट, (सं०पु०) घोड़ों की एक चाल।
उपकथा (सं० स्त्री०) कल्पित कथा, कहानी, क़िस्सा, पुराण, इतिहास। [सामग्री, साधक वस्तु।
उपकरण (सं० पु०) राज चिह्न चंवर, छत्र आदि, सामान,
उपकार (सं० पु०) भलाई, नेकी, हित, लाभ।
उपकारक (वि०) नेकी करने वाला, उपकार करने वाला, भलाई करने वाला, उपकारी।
उपकारिका (वि०) उपकार करने वाली, (सं०स्त्री०) राज-भवन, ख़ेमा, तम्बू, क़नात। [वाला।
उपकारी (वि०) भलाई करने वाला, उपकार करने
उपकारेच्छु (वि०) उपकार चाहने वाला। [के योग्य हो।
उपकार्य (वि०) उपकार के योग्य, जो उपकार करने
उपकार्या (वि०) जो स्त्री उपकार करने के योग्य हो, (सं० स्त्री०) तम्बू, ख़ेमा, राजभवन, अन्न का गोला।
उपकुर्वाण (सं० पु०) वह ब्रह्मचारी जो विद्याध्ययन समाप्त होने पर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करे।
उपकूप (सं० पु०) किनारा, तट, कुएं के पास का पानी का गढ़ा, जो पशुओं को पानी पीने के लिए खोदा जाता है।
उपकूल (सं० पु०) तीर, तट, किनार।
उपकृत (वि०) जिसके साथ भलाई की गयी हो, कृतज्ञ।
उपकृत (सं० स्त्री०) उपकार, साहाय्य।
उपक्रम (सं० पु०) आरम्भ, अनुष्ठान, भूमिका, कार्यारम्भ की प्रथम अवस्था

उपक्रान्त (वि०) आरम्भ किया हुआ, प्रस्तुत, समारब्ध।
उपक्रोश (सं० पु०) निन्दा, भर्त्सना, कुत्सा।
उपखान (सं० पु०) कथा, कहानी, उपाख्यान।
उपगत (वि०) प्राप्त, स्वीकृत, अङ्गीकृत, ज्ञात, उपस्थित।
उपगमन (सं० पु०) स्वीकार, अङ्गीकार, प्राप्ति, योग, आगमन, ज्ञान, पास जाना।
उपगुरु (सं० पु०) उपदेशक, शिक्षक।
उपगूहन (सं० पु०) अँकवार, आलिङ्गन।
उपग्रह (सं० पु०) क़ैदी, बंधुआ, छोटे ग्रह, अप्रधान ग्रह।
उपघात (सं० पु०) आघात, रोग, पीड़ा, आशक्ति।
उपङ्ग (सं० पु०) वाद्य विशेष।
उपचय (सं० पु०) बढ़ती, वृद्धि, उन्नति, संचय। [ज्ञात।
उपचरित (वि०) सेवित, आराधित, पूजित, लक्षणा से
उपचर्या (सं० स्त्री०) चिकित्सा, सेवा, शुश्रूषा, प्रतिकार।
उपचार (सं० पु०) प्रयोग विधान, चिकित्सा, प्रतिकार, उपाय, उपकरण, सेवा, शुश्रूषा, उपक्रम, व्यवहार, घूँस, ख़ुशामद। [चिकित्सा करनेवाला।
उपचारी (वि०) उपचार करने वाला, शुश्रूषा करनेवाला,
उपचित (वि०) वर्द्धित, समृद्ध, सञ्चित, एकत्रित।
उपज (सं० पु०) पैदावार, उत्पत्ति, सूझ, स्फूर्ति, मनगढ़ंत, उक्ति। [होना।
उपजना (क्रि० अ०) पैदा होना, उत्पन्न होना, अङ्कुरित
उपजहि (क्रि० अ०) उपजते हैं, उत्पन्न होते हैं, पैदा होते हैं।
उपजा (क्रि०वि०) उत्पन्न हुआ, जन्मा। [होने वाला।
उपजाऊ (वि०) उर्वरा, उपजाने वाला, अच्छी पैदावार
उपजाए (क्रि० स०) उत्पन्न किए, पैदा किए।
उपजात (वि०) उत्पन्न, घटित।
उपजाना (क्रि० स०) सिरजना, उत्पन्न करना।
उपजित (क्रि० वि०) उत्पन्न हुआ।
उपजिह्वा (सं० स्त्री०) छोटी जीभ। [का उपाय।
उपजीविका (सं० स्त्री०) वृत्ति, जीविका, जीवन निर्वाह
उपजीवी (वि०) परावलम्बी, पराश्रयी, दूसरे के सहारे रहने वाला, दूसरे के आश्रय से जीवन निर्वाह करने वाला।
उपज्ञा (सं० स्त्री०) प्रथम ज्ञान।
उपटन (सं० पु०) उबटन, अभ्यंग, शरीर में लगाने के लिए सरसों आदि का लेप, सार, निशान।

उपटना (क्रि० अ०) साँट पड़ना, गोड़िया उखड़ना, दाग पड़ना, निशान पड़ना, उखड़ना [निशान पड़ना।
उपड़ना (क्रि० अ०) उखड़ना, उपटना, दाग पड़ना,
उपढौकन (सं० पु०) भेंट, उपहार, पारितोषिक।
उपतन्त्र (सं० पु०) यामलादि तन्त्र शास्त्र, सूक्ष्म सूत्र।
उपतप्त (वि०) तप, दुःखित, खिन्न।
उपतारा (सं० स्त्री०) क्षुद्र नक्षत्र, नेत्र-गोलक।
उपत्यका (सं० स्त्री) पहाड़ी के पास की ज़मीन, तराई।
उपदंश (सं० पु०) सुज़ाक, गर्मी, मद्यपान के बाद अच्छी लगने वाली वस्तु, चिखनी, चाट।
उपदर्शक (सं० पु०) द्वारपाल, दरवान, पहरी।
उपदल (सं० पु०) पत्ता, पान, पुष्पदल, मुकुल।
उपदा (सं० स्त्री०) भेंट, उपढौकन।
उपदिशा (सं० स्त्री०) दो दिशाओं के मध्य की दिशा, कोण। [ज्ञापित।
उपदिष्ट (वि०) जिसे उपदेश दिया गया हो, प्राप्तोपदेश,
उपदेवता (सं० पु०) छोटे छोटे देवता, भूत-प्रेत।
उपदेश (सं० पु०) शिक्षा, गुरु मन्त्र, सीख, दीक्षा।
उपदेशक (वि०) उपदेश देनेवाला, भली बातें कहने वाला, नसीहत देनेवाला।
उपदेश्य (वि०) उपदेश देने योग्य, उपदेशाधिकारी।
उपदेष्टा (वि०) उपदेश देने वाला, आचार्य, शिक्षक।
उपदेह (सं० पु०) लेपन, लेप। [हलचल, विद्रोह।
उपद्रव (सं० पु०) उत्पात, टंटा, बखेड़ा, ऊधम, विप्लव,
उपद्रवी (वि०) उत्पाती, बखेड़िया, उपद्रव मचानेवाला।
उपद्वीप (सं० पु०) छोटा द्वीप, वह स्थान जो चारों ओर समुद्र के जल से घिरा हो।
उपधर्म (सं० पु०) पाखण्ड, नास्तिकता।
उपधातु (सं० स्त्री०) अप्रधान धातु, तूतिया, सोनामक्खी, कांसा आदि, शरीरान्तर गत रस से बने अप्रधान धातु, पसीना, दूध, चर्बी आदि।
उपधान (सं० पु०) उसीस, तकिया।
उपधापक (सं० पु०) जन्मदाता।
उपधि (सं० पु०) छल, कपट।
उपनत (सं० पु०) उपस्थित, समीप लाया हुआ।
उपनय (सं० पु०) वेदाध्ययन के लिये बालकों को गुरु के पास ले जाना, समीप ले जाना, उपनयन, न्याय का पारिभाषिक शब्द विशेष।
उपनयन (सं० पु०) यज्ञोपवीत संस्कार, उपवीत, पास ले जाना।
उपनाम (सं० पु०) पदवी, उपाधि, अल्ल।
उपनिधि (सं० पु०) थाती, अमानत, धरोहर।
उपनिवेश (सं० पु०) एक देश से अन्य देश में जा बसना, अन्य स्थान से आकर बसने वालों की बस्ती।
उपनिषद् (सं० स्त्री०) ब्रह्म विद्या पढ़ने के लिए गुरु के समीप बैठना, ब्रह्म विद्या, वेदान्त शास्त्र, वेद रहस्य, निर्जन स्थान, धर्म।
उपनीत (वि०) जिसका यज्ञोपवीत संस्कार हो गया हो, आया हुआ, उपस्थित, पास आया हुआ।
उपनेता (सं० पु०) लाने वाला, यज्ञोपवीत संस्कार कराने वाला, आचार्य, गुरु, उपस्थापक।
उपनेत्र (सं० पु०) चश्मा, नेत्रों का सहायक।
उपन्ना (सं० पु०) ओढ़ने का दुपट्टा, उपरना।
उपन्यस्त (वि०) थाती रखा हुआ, धरोहर रखा हुआ।
उपन्यास (सं० पु०) वाक्य का उपक्रम, कथा, कहानी।
उपपति (सं० पु०) जार, यार, नायक, लगुवा।
उपपत्ति (सं० स्त्री०) समाधान, सिद्धि, घटना, चरितार्थ होना, हेतु, युक्ति, प्रतिपादन, प्राप्ति।
उपपत्नी (सं० स्त्री०) रखनी, सुरैतिन, वेश्या।
उपपद (सं० पु०) लेश, पद का समीपवर्ती पद।
उपपन्न (वि०) प्राप्त, लब्ध, पहुँचा हुआ, उपयुक्त, उक्त, संपन्न।
उपपातक (सं० पु०) छोटा पाप, मनुस्मृति में लिखा है कि गुरु की सेवा न करना, परस्त्रीगमन, गोवध, आत्म-विक्रय, आदि की गणना उपपातकों में है।
उपपादन (सं० पु०) प्रमाणित करना, सिद्ध करना, ठहराना, संपादन, साधन।
उपपुराण (सं० पु०) अप्रधान पुराण, छोटे पुराण, इनकी संख्या १८ है, जिनके नाम ये हैं, सनत्कुमार, नारसिंह, नारदीय, शिव, दुर्वासा, कपिल, मानव, औशनस, वारुण, कालिक, शाम्ब, नन्दा, सौर, पराशर, आदित्य माहेश्वर, भार्गव, वाशिष्ठ।
उपबर्ह (सं० पु०) तकिया, मसलन्द।
उपभुक्त (वि०) व्यवहृत, वर्तित, युक्त, भोग किया हुआ, जूठा।
उपभोक्त (वि०) उपभोग करने वाला, वर्तने वाला।

उपभोग (सं० पु०) विलास, विषयों का सुखास्वादन, आनन्द भोग की सामग्री।
उपमा (सं० स्त्री०) पटतर, मिलान, तुलना, समानता, सादृश्य, अर्थालङ्कार, जिसमें उपमा उपमेय में अन्तर होने पर भी उनका समान धर्म दिखाया जाय।
उपमाता (सं० स्त्री०) धाय, धात्री, दूध पिलाने वाली, (वि०) पटतर करनेवाला, (पु०) चित्रकार।
उपमान (सं० पु०) उपमा देने वाली वस्तु, जिस वस्तु से उपमा दी जाय, पटतर, तुलना, न्याय का एक प्रमाण विशेष। [दी गयी हो।
उपमित (वि०) संभावित, उत्प्रेक्षित, जिसकी उपमा
उपमिति (सं० स्त्री०) उपमा सादृश्य ज्ञान से उत्पन्न होने वाला ज्ञान।
उपमेय (सं० पु०) उपमा योग्य, वर्णनीय।
उपयम (सं० पु०) विवाह, संयम।
उपयुक्त (वि०) उचित, योग्य, ठीक। [प्रयोग, लाभ।
उपयोग (सं० पु०) व्यवहार, प्रयोजन, आवश्यकता,
उपयोगिता (सं० स्त्री०) काम में आने की योग्यता।
उपयोगी (वि०) उपयुक्त, उपकारी, अनुकूल, लाभदायक, प्रयोजनीय।
उपर (सं० पु०) ऊंचा, पर, उन्नत देश।
उपरक्त (वि०) विषयासक्त, पीड़ा ग्रस्त, राहु ग्रस्त।
उपरत (वि०) उदासीन, विरत, हटा हुआ, मृत। [मृत्यु।
उपरति (सं० स्त्री०) त्याग, विरति, निवृत्ति, उदासीनता,
उपरना (सं० पु०) चद्दर, दुपट्टा, ऊपर ओढ़ने का कपड़ा।
उपरवार (सं० स्त्री०) बांगर ज़मीन।
उपराग (सं० पु०) व्यसन, वासना, चन्द्र या सूर्य ग्रहण।
उपराचढ़ी (सं० स्त्री०) एक ही वस्तु पा लेने के लिये एक आदमियों का प्रयत्न करना, एकही काम करने के लिए कई आदमियों का उद्योग करना।
उपराजना (क्रि०स०) जन्माना, पैदा करना, उत्पन्न करना।
उपराजा (सं० पु०) छोटा राजा, राज-प्रतिनिधि।
उपरान्त (अव्य०) इसके बाद, पश्चात्, परे।
उपराम (सं० पु०) विराम, आराम, निवृत्ति, त्याग।
उपराला (सं० पु०) साथी, सहायक।
उपरि (क्रि० वि०) ऊपर। [कोप।
उपरि दृष्टि (सं० स्त्री०) तुच्छ देवता की दृष्टि, वायु का
उपरिष्टात् (अव्य०) ऊपर, ऊर्ध्व।
उपरिस्थ (वि०) ऊपर का, उपरस्थित।
उपरो (वि०) बाहरी, ऊपर का।
उपरी उपरा (सं० पु०) स्पर्द्धा, चढ़ा उतरी।
उपरुद्ध (वि०) रक्षित, प्रतिरुद्ध। [हुआ।
उपरोक्त (वि०) उपर्युक्त, ऊपर कहा हुआ, पहले कहा
उपरोध (सं० पु०) रोक, अटकाव, आड़, ढकना।
उपरोहित (सं० पु०) पुरोहित, कुलगुरु।
उपरोहिती (सं० स्त्री०) पुरोहित का काम, पुरोहिती।
उपरौंचा (सं०पु०) अंगोछा।
उपर्ना (सं० पु०) उपरना। [हुआ।
उपर्युक्त (वि०) उपरोक्त, पर कहा हुआ, पहले कहा
उपर्य्युपरि (अव्य०) ऊपर।
उपल (सं० पु०) ओला, पत्थर, रत्न, मेघ, चीनी, बालू।
उपलक्ष (सं० पु०) उपलक्षण, सङ्केत, उद्देश्य, चिह्न।
उपलक्षण (सं० पु०) सङ्केत, दृष्टान्त, शब्द की वह शक्ति जिससे निर्दिष्ट वस्तु के ज्ञान के साथ साथ उसके समान अन्य वस्तुओं का भी ज्ञान हो।
उपलक्ष्य (सं० पु०) सङ्केत, चिह्न, उद्देश्य, दृष्टि।
उपलब्ध (वि०) प्राप्त, पाया हुआ, ज्ञात, जाना हुआ।
उपलब्धि (सं० स्त्री०) प्राप्ति, ज्ञान, बुद्धि, अनुभव।
उपलब्धार्थी (सं० स्त्री०) उपकथा, आख्यायिका।
उपला (सं० पु०) कंडा, गोहरा, गोइंठा।
उपली (सं० स्त्री०) गोही, कंडी, गोइंठी, (वि०) उपरी।
उपल्ला (सं० पु०) ऊपर का भाग, ऊपर की तह।
उपवन (सं० पु०) फुलवारी, कुंज, उद्यान, बाग, कृत्रिम वन। [दिन।
उपवसथ (सं० पु०) गाँव, बस्ती, यज्ञारम्भ का प्रथम
उपवास (सं० पु०) फ़ाक़ा, लङ्घन, खाना छूटना, वह व्रत जिसमें निराहार रहा जाता है।
उपवासी (वि०) निराहार रहने वाला, लङ्घन करनेवाला।
उपविद्य (सं० पु०) नाटक, चेटक आदि शिल्पी।
उपविद्या (सं० स्त्री०) शिल्प कला।
उपविष (सं० पु०) कृत्रिम विष, हलका विष, अफ़ीम, धतूरा आदि।
उपविष्ट (वि०) बैठा हुआ, आसनस्थ।
उपवीत (सं० पु०) जनेऊ, यज्ञोपवीत, उपनयन।
उपवेद (सं० पु०) वेद से निकली हुई विद्या, ये चार हैं, आयुर्वेद, गन्धर्ववेद, धनुर्वेद, स्थापत्यवेद।

उपवेशन (सं० पु०) बैठना, स्थिति ।

उपवेष्टन (सं० पु०) लपेटना ।

उपशम (सं०पु०) इन्द्रिय निग्रह,निवृत्ति, शान्ति,प्रतीकार ।

उपशय (सं० पु०) किसी औषध के प्रयोग से रोग के घटने-बढ़ने का अनुमान ।

उपशल्य (सं० पु०) नगर की सीमा, भाला ।

उपशायी (वि०) प्रशान्त ।

उपशास्त्र (सं० पु०) शास्त्रानुयायी विद्या ।

उपश्रुत (वि०) अङ्गीकृत,स्वीकृत ।[निचोड़,संक्षेप, संग्रह ।

उपसंहार (सं० पु०) परिहार, हरण, समाप्ति, निष्कर्ष,

उपस (सं० स्त्री०) दुर्गन्धि । [के पास जाना ।

उपसत्ति (सं० स्त्री०) उपासना, सेवा, विनय रहित गुरु

उपसना (क्रि० अ०) सड़ना, बदबू होना । [सहायक ।

उपसम्पादक (सं० पु०) किसी काम में प्रधान का

उपसर्ग (सं० पु०) उपद्रव, अशकुन, दैवी उत्पात, पीड़ा, वह शब्द या अव्यय जो किसी दूसरे शब्द के पहले लगकर उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करता है ।

उपसर्जन (सं० पु०) ढालना, त्याग, दैवी उत्पात,उपद्रव, गौण वस्तु ।

उपसर्पण (सं० पु०) उपासना ।

उपसागर (सं० पु०) खाड़ी ।

उपस्त्री (सं० स्त्री०) रखेली, उपपत्नी ।

उपस्थ(सं० पु०) नीचे या मध्य का भाग, पेड़ू, स्त्री और पुरुष का चिह्न, स्त्री चिह्न, भग, पुरुष चिह्न, लिङ्ग, गोद, (वि०) पास बैठा हुआ, समीप स्थित ।

उपस्थ निग्रह (सं० पु०) काम-दमन, काम को वश में रखना, जितेन्द्रियता ।

उपस्थल (सं० पु०) चूतड़ नितम्ब, कटि, पेड़, कूल्हा ।

उपस्थली (सं० स्त्री०) नितम्ब, कटि,पेड़ू ।

उपस्थाता (सं० पु०) नौकर, सेवक, भृत्य ।

उपस्थान (सं०पु०) पास आना, खड़े होकर आराधना करना, पूजा का स्थान, सभा, समाज ।

उपस्थापन (सं० पु०) पास लाना, पेश करना ।

उपस्थित (वि०) विद्यमान, वर्तमान, आगत, उत्पन्न, उपनीत, समीप आया हुआ, पास बैठा हुआ ।

उपस्थिति (सं० स्त्री०) विद्यमानता, हाज़िरी ।

उपहत (वि०) दूषित, पीड़ित, नष्ट किया हुआ, ध्वस्त, क्षत, प्राप्ताघात, अशुद्ध ।

उपहसित (वि०) उपहास किया हुआ, विद्रूप, (सं०पु०) हास्य का एक भेद ।

उपहार (सं० पु०) भेंट, नज़राना ।

उपहास (सं० पु०) हँसी, दिल्लगी, बदनामी, बुराई, निन्दा, परिहास, व्यङ्ग-वचन ।

उपहास्य (वि०) निन्द्य, हँसी योग्य, उपहास के योग्य ।

उपहित (वि०) स्थापित, गृहीत, उपनीत, समर्पित, सम्मिलित ।

उपही (वि०) ऊपरी, बायबी ।

उपहृत (वि०) पाया हुआ, दिया हुआ । [वेदाध्ययन ।

उपाकर्म (सं० पु०) वेदाध्ययनारम्भ, संस्कारपूर्वक

उपाख्यान (सं० पु०) पुरावृत्त, आख्यान,पुराना वृत्तान्त, किसी कथा के अन्तर्गत की कथा ।

उपाङ्ग (सं० पु०) अवयव, किसी वस्तु के अङ्गों की पूर्ति करने वाली वस्तु, टीका, तिलक ।

उपाटना (क्रि०) देखो उपाड़ना ।

उपाड़ना (क्रि०) उखाड़ना ।

उपादान (सं० पु०) स्वीकार, ग्रहण, प्राप्ति, ज्ञान, बोध, परिचय, स्व स्व विषय में इन्द्रियों की प्रवृत्ति, स्वयं कार्य में परिणत होनेवाला कारण, समवायी कारण, प्रवृत्ति जनक ज्ञान, प्रत्याहार । [उत्तम, उत्कृष्ट ।

उपादेय (वि०) ग्रहणीय, स्वीकार करने योग्य, अच्छा,

उपादेयता (सं० स्त्री०) उत्तमता, श्रेष्ठता ।

उपाध (सं० पु०) उपद्रव, उत्पात ।

उपाधि (सं० स्त्री०) कपट, छल, उत्पात, ख़िताब .

उपाधी (वि०) उपद्रवी,उत्पाती,अधर्मी । [का एक भेद ।

उपाध्याय (सं० पु०) शिक्षक, अध्यापक, गुरु, ब्राह्मणों

उपाध्यायी (सं० स्त्री०) शिक्षयित्री, अध्यापिका ।

उपानत (सं० पु०) जूता, पनही, उपानह, खड़ाऊं ।

उपानह (सं० पु०) देखो उपनात । [करना ।

उपाना (क्रि० स०) पैदा करना, अर्जन करना, उत्पन्न

उपान्त (सं० पु०) पास, निकट ।

उपाय (सं० पु०) चेष्टा, साधन, युक्ति, प्रतीकार ।

उपायन (सं० पु०) भेंट, उपहार, सौगात ।

उपायी (वि०) उपाय करनेवाला ।

उपारना (क्रि० स०) देखो उपाड़ना ।

उपार्जन (सं० पु०) पैदा करना, कमाना ।

उपार्जित (वि०) संचित, गृहीत, कमाया हुआ ।

उपालम्भ (सं० पु०) निंदा, उलहना।
उपास (सं० पु०) लङ्घन, उपवास, फ़ाक़ा।
उपासक (वि०) उपासना करने वाला, भक्त, साधक।
उपासन (सं० पु०) सेवा में प्रस्तुत रहना, शुश्रूषा, सेवा, पास बैठना, आराधना, पूजा, धनुर्विद्या, तीरंदाज़ी।
उपासना (सं० स्त्री०) आराधना, पूजा, परिचर्या, सेवा, टहल।
उपासित (वि०) पूजित, आराधित, सेवित।
उपासी (वि०) उपासना करनेवाला, सेवक, भक्त, उपासा, भूखा।
उपास्य (वि०) सेव्य, पूजनीय, आराध्य।
उपेक्षा (सं० स्त्री०) तिरस्कार, अनादर, त्याग, घृणा।
उपेक्षित (वि०) तिरस्कृत, घृणित, निन्दित त्यक्त।
उपेत (सं० पु०) एकत्रित, युक्त। [छोटा भाई।
उपेन्द्र (सं० पु०) विष्णु या वामन अवतार, इन्द्र का
उपेन्द्रवज्रा (सं०स्त्री०)ग्यारह वर्णों का एक वृत्त विशेष।
उपोद्घात (सं० पु०) प्राक्कथन, भूमिका, प्रस्तावना, एक न्याय की एक सङ्गति विशेष।
उपोषण (सं० पु०) उपवास, निराहार।
उफ़ (अ० अव्य०) आह, ओह, अफ़सोस।
उफनना (क्रि० अ०) उबलना, उठना,उमड़ना,उथलना।
उफान (सं० पु०) उबाल। [वमन करना।
उबकना (क्रि० अ०) उलटी करना, क़ै करना, ओकाना,
उबका (सं०पु०) अरिवन,लोटा आदि लटकाने की रस्सी।
उबकाई (सं० स्त्री०) उबांत, उछांट।
उबटन (सं० पु०) उपटन, अभ्यङ्ग। [लगाना।
उबटना (क्रि० अ०) उबटन लगाना, बच्चों को तेल
उबरना (क्रि० अ०) छुटकारा पाना, मुक्त होना, बचना, छूटना, उद्धार पाना।
उबरा (वि०) फालतू,बचा हुआ, अवशिष्ट। [सींचना।
उबलना (क्रि० अ०) खौलना, उफनना, उमड़ना, पकना,
उबसना (क्रि० स०) सड़ना,पचना,गलना। [रस्सी,डोरी।
उबहन (सं० स्त्री०) कुएं से पानी भरने की रस्सी, रजुरी,
उबाना (क्रि० स०) बोना, रोपना, लगाना, (वि०) नंगे पैर। [छोड़ना।
उबारना (क्रि० स०) रक्षा करना, बचाना, राखना,
उबाल (सं० पु०) उफान, उद्वेग, क्षोभ। [पकाना।
उबालना (क्रि० स०) खौलाना, उसिनना, रांधना,
उबासी (सं० स्त्री०) जम्भाई।
उबियाना (क्रि० अ०) घबड़ाना, अकुताना।
उबीठना (क्रि० स०) मन से उतर जाना, अच्छा न लगना, उकताना, ऊबना, घबड़ाना।
उभ (सं० पु०) दो, द्वि।
उभइ (वि०) दोनों, उभय।
उभक (सं० पु०) भालु, रीछ।
उभड़ना (क्रि० अ०) देखो उभरना।
उभय (वि०) दोनों, दो, युग्म, परस्पर।
उभयतः (क्रि० वि०) दोनों ओर से, पार्श्वतः।
उभयत्र (अव्य०) दोनों ओर।
उभय सुगन्ध गण (सं० पु०) वे सुगंधित वस्तु जो जलाने पर भी महकें, चन्दन, कर्पूरादि।
उभरना (क्रि० अ०) उठना, निकलना, उकसना, फूलना, निकल आना।
उभराई (सं० स्त्री०) फुलाहट, इतराई।
उभाड़ना (क्रि० स०) उत्तेजित करना,बहकाना,उकसाना।
उभाना (क्रि० अ०) अभुआना।
उभार (सं० पु०) फुलावट, वृद्धि, ओज।
उभारना(क्रि० स०) देखो उभाड़ना। [मग्नता
उमङ्ग (सं० स्त्री०) उल्लास, उच्छाह, लहर,आनन्द, मौज,
उमङ्गना (क्रि० अ०) बढ़ चलना,आनन्द से आगे बढ़ना, उमड़ना, उभड़ना।
उमङ्गी (वि०) अभिलाषी, धुनी। [होना।
उमचना (क्रि० अ०) हुमचना, सजग होना, चौकन्ना
उमड़ना (क्रि० अ०) उभरना, बढ़ना, ऊपर उठना, वेग से बहना, बढ़ चलना।
उमदा (अ० वि०) बढ़िया, अच्छा।
उमर (अ० सं० स्त्री०) आयु, वय, अवस्था।
उमरा (अ० सं० पु०) अमीर का बहुवचन, सज्जन पुरुष, प्रतिष्ठित व्यक्ति।
उमरी (सं० स्त्री०) एक पौधा विशेष जिसको जला कर सज्जी खार बनाया जाता है।
उमस (सं० स्त्री०) उखम,वह गरमी जो हवा के न चलने पर लगती है। [चलना।
उमहना (क्रि० अ०) उमगना, उमड़ना, बह चलना,फूट
उमा (सं० स्त्री०) दुर्गा, अलसी, हलदी, कीर्ति, कान्ति, ब्रह्मज्ञान, पार्वती, शिव की पत्नी, ये दक्ष प्रजापति

की कन्या थीं, दक्ष प्रजापति ने शिव की निन्दा की, पति-निन्दा सुन इन्होंने पिता के यहाँ यज्ञकुण्ड में गिर कर अपना तन त्याग दिया, इस के बाद हिमालय की पत्नी मेनका के गर्भ से इनका जन्म हुआ, शिव जी को पाने के लिये ये कठिन तप करने लगीं, इनका कठिन तप देख मेनका ने इनको 'उमा,' तप न करो मना किया तभी से इनका नाम उमा पड़ा।

उमापति (सं० पु०) शिव, शम्भु, महादेव।

उमासुत (वि०) उमा के पुत्र, कार्तिकेय, गणेश।

उमेठन (सं० स्त्री०) ऐंठन, पेंच, बल, मरोड़।

उमेठना (क्रि० स०) ऐंठना, मरोड़ना।

उमेठवा (वि०) घुमावदार, ऐंठनदार, पेंचदार।

उमेश (सं० पु०) शिव, महादेव।

उम्दा (अ० वि०) बढ़िया, उत्तम, अच्छा।

उम्मी (सं० स्त्री०) जवा गेहूं की हरे दाने वाली बालें।

उम्मेद (फ़ा० सं० स्त्री०) आशा, भरोसा, आसरा।

उम्मेदवार (फ़ा० सं० पु०) नौकरी पाने की आशा करने वाला, आसरा रखनेवाला।

उम्मेदवारी (फ़ा० सं० स्त्री०) आशा,भरोसा,नौकरी पाने की आशा से किसी दफ़्तर में अवैतनिक रूप से काम करना।

उम्र (अ० सं० स्त्री०) देखो उमर।

उर (सं० पु०) छाती, वक्षस्थल, गोद, हृदय, मन।

उरक्षत (सं० पु०) हृदय का रोग।

उरग (सं० पु०) सांप, भुजङ्ग, सर्प, नाग।

उरगना (क्रि० अ०) सहना, जोगवना।

उरगाद (सं० पु०) गरुड़।

उरगाश्य (सं० पु०) विष्णु।

उरगारि (सं० पु०) गरुड़।

उरज (सं० पु०) स्तन, कुच।

उरझना (क्रि० अ०) लपटाना, लगना, अटकना, आसक्त होना।

उरझाना (क्रि० स०) फँसाना, अटकाना, लगाना।

उरद (सं० पु०) एक अन्न विशेष, माष।

उरबसी (सं० स्त्री०) देखो उर्वशी।

उरबिजा (सं० स्त्री०) पृथ्वी से उत्पन्न जानकी, सीता।

उरमिला (सं० स्त्री०) उर्मिला, लक्ष्मण की स्त्री।

उररी (सं० पु०) स्वीकार।

उरस (वि०) फीका, नीरस, बे स्वाद, (सं० पु०) वक्षस्थल, छाती, हृदय, मन।

उरस्त्राण (सं० पु०) कवच, बख़्तर।

उरहना (सं० पु०) उलहना, शिकायत।

उरा (सं० स्त्री०) पृथ्वी।

उराहना (सं० पु०) उलहना, शिकायत।

उरिण (वि०) ऋणमुक्त, उऋण।

उरिन (वि०) देखो उरिण।

उरु (वि०) विशाल,लम्बा चौड़ा, बड़ा,(सं०पु०) जांघ, जंघा।

उरुगाय (वि०) जिसकी स्तुति की जाय, विस्तृत गति वाला, (सं० पु०) स्तुति, प्रशंसा, विष्णु, सूर्य, श्रीकृष्ण।

उरुज (सं० पु०) तृतीय वर्ण, वैश्य, बनिया।

उरेब (सं० स्त्री०) वञ्चना, उलझाव।

उरेह (सं० पु०) चित्रकारी, नक्क़ाशी।

उरेहना (क्रि० स०) खींचना, रचना, लिखना, लगाना, रंगना।

उरोज (सं० पु०) स्तन, पयोधर, छाती।

उर्ण (सं० स्त्री०) ऊन।

उर्द (सं० पु०) एक अन्न विशेष, उरद, माष।

उर्दू (सं० स्त्री०) मिश्रित भाषा विशेष, जिसमें अरबी फ़ारसी, आदि के शब्द अधिक हों।

उर्वर (वि०) उपजाऊ।

उर्वरा (सं० स्त्री०) उपजाऊ जमीन, पृथ्वी, एक अप्सरा।

उर्वशी (सं० स्त्री०) एक अप्सरा, इसकी उत्पत्ति नारायण के जङ्घा से मानी जाती है, श्वेतद्वीप में नारायण तप कर रहे थे, उनका तप भङ्ग करने के लिए इन्द्र की अप्सरायें वहां गयीं, तब नारायण ने उर्वशी को उत्पन्न किया, उर्वशी की सुन्दरता देख कर वे लज्जित हो गयीं, और लौट कर चली गयीं।

उर्वी (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती।

उर्वीधर (सं० पु०) शेषनाग, पर्वत।

उलङ्ग (वि०) नंगा, नग्न, लुङ्गारा।

उलङ्घना (क्रि० स०) फांदना, नाघना, अवज्ञा करना, अवहेलना करना।

उलचना (क्रि० स०) पानी फेकना, छानना, पसाना।

उलझन (सं०स्त्री०) गांठ, गिरह, अटकाव, फँसाव, रोक।

उलझना (क्रि० अ०) अटकना, फँसना, गिरह पड़ना।

उलझाना (क्रि०स०) फँसाना, अटकाना, लगाये रखना।

उलझेड़ा (सं०पु०) खैंचातानी, अटकाव, फँसान, उलझन टंटा, बखेड़ा । [ऊपर करना, दोहराना, मोड़ना ।
उलटना (क्रि० अ०) पलटना, औंधाना, घुमाना, नीचे
उलटना-पलटना (क्रि० स०) नीचे ऊपर करना, इधर-उधर करना, अंड-बंड करना, काया पलट देना, पलटा खाना, घूमना फिरना ।
उलट-पलट (सं०पु०) परिवर्तन, अदल-बदल, हेर-फेर, गड़बड़ी (वि०) इधर का उधर, अंड-बंड, अव्यवस्थित, गट-पट, अस्त-व्यस्त ।
उलट-पुलट (सं०पु०) देखो उलट-पलट ।
उलटा (वि०) औंधा, पलटा । [का उधर ।
उलटा-पलटी (सं०स्त्री०) हेर-फेर, अदल-बदल, इधर
उलटी (वि०) विपरीत, विरुद्ध (सं० स्त्री०) कै, वमन ।
उलथना (क्रि० अ०) उलटना, लहराना, मथना ।
उलथा (सं० पु०) नृत्य विशेष, गिरह मार कर पानी में कूदना, बदलना, तरजुमा, अनुवाद ।
उलरना (क्रि० अ०) लेटना, सोना ।
उललना (क्रि० अ०) ढरकना, उलटना, उतरना ।
उलहना (क्रि० अ०) प्रस्फुटित होना, उभड़ना, खिलना, फूलना, हुलसना, उमड़ना ।
उलार (वि०) ओलार, जिसका पिछला भाग भारी हो ।
उलारना (क्रि० स०) सोलाना, लेटाना ।
उलाहना (सं० पु०) शिकायत, उलहना, उपालम्भ ।
उलीचना (क्रि० स०) उलचना, पानी फेकना, उड़ेलना ।
उलूक (सं०पु०) उल्लू कौरवों की ओर का एक वीर, यह दुर्योधन का दूत था, इसके पिताका नाम कितव था, जो उलूक देश का राजा था, महाभारतीय युद्ध में सहदेव ने इसका बध किया, एक मुनि, इनका दूसरा नाम कणाद था, इन्होंने वैशेषिक दर्शन की रचना की है, इनका उलूक नाम होने से ही वैशेषिक दर्शन को औलूक्य दर्शन भी कहते हैं ।
उलूखल (सं० पु०) ओखली, खरल, गुग्गुल ।
उलूपी (सं० स्त्री०) कौरव्य नाग की कन्या, इसके साथ अर्जुन ने ब्याह किया था, बभ्रुवाहन इसी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था ।
उलेटा (सं० पु०) पराठा ।
उलेड़ना (क्रि० स०) ढालना, ढरकाना ।

उल्का (सं० स्त्री०) रात में आकाश से एक प्रकार का चमकता हुआ पिण्ड जो गिरता हुआ दिखाई देता है, उलूका, अग्निपिण्ड, प्रकाश, लूक, मसाल ।
उल्कापात (सं० पु०) तारा टूटना, उत्पात, अमंगल-सूचक चिन्ह ।
उल्कामुख (सं० पु०) गीदड़, सियार, अगिया बैताल ।
उल्था (सं० पु०) अनुवाद, भाषान्तर ।
उल्मुख (सं० पु०) लूका, अङ्गारा, लुआठा । [हेलना ।
उल्लङ्घन (सं० पु०) अतिक्रमण, लाँघना, अवज्ञा, अव-
उल्लास (सं० पु०) हर्ष, हुलास, आनन्द, प्रसन्नता, पर्व, खण्ड, परिच्छेद, अध्याय, अलंकार विशेष, जिसमें एक वस्तु के गुण या दोष से अन्य वस्तु का गुण या दोष दिखाया जाय । [लिखा हुआ, खोदा हुआ ।
उल्लिखित (वि०) उत्कीर्ण, चित्रित, खींचा हुआ,
उल्लू (सं० पु०) उलूक, बेवकूफ़, मूर्ख ।
उल्लेख (सं० पु०) लेख, वर्णन, प्रसंग, चर्चा ।
उल्लेखनीय (वि०) लिखने योग्य ।
उल्लेखित (वि०) प्रस्तावित, उक्त ।
उल्लोच (सं० पु०) चाँदनी, उजियारो ।
उल्लोल (सं० पु०) कल्लोल, लहर, तरङ्ग ।
उल्वण (सं० पु०) झिल्ली जिसमें बँधा हुआ बच्चा जन्म लेता है, अवँरी, वशिष्ठ का पुत्र ।
उशना (सं० पु०) शुक्राचार्य, दैत्य-गुरु ।
उशन्ना (क्रि०स०) उलीचना ।
उशीनर (सं० पु०) एक देश का नाम, गंधार देश, एक चन्द्र वंशी राजा ।
उशीर (सं० स्त्री०) सुगंधित तृण विशेष, ख़स ।
उषा (सं० स्त्री०) बाणासुर की कन्या, इसका ब्याह अनिरुद्ध से हुआ था, प्रभात, पोह, तड़का, ब्रह्मवेला ।
उषाकाल (सं० पु०) प्रभात समय भोर, तड़का ।
उषापति (सं० पु०) कामदेव का पुत्र, अनिरुद्ध ।
उषित (वि०) दग्ध, जला ।
उष्ट्र (सं० पु०) ऊँट । [का नाम ।
उष्ण (सं० पु०) गरम, तप्त, फुर्तीला, प्याज, एक नरक
उष्ण कटिबन्ध (सं० पु०) कर्क और मकर के मध्यस्त पृथ्वी का भाग ।
उष्णता (सं० स्त्री०) गरमी ।
उष्णनदी (सं० स्त्री०) बैतरणी नदी ।

उष्णरश्मि (सं० स्त्री०) धूप, सूर्य ।
उष्णवाष्प (सं० पु०) पसीना ।
उष्णवीर्य सं ० पु०) उग्र, तीक्ष्ण, तेज ।
उष्णा (सं० स्त्री०) उबाला, क्षयरोग ।
उष्णांशु (सं० पु०) सूर्य । [आना
उष्णागम (सं० पु०) निदाघ-काल-आगमगन, गर्मी का
उष्णिक (सं० पु०) एक वैदिक छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर रहते हैं ।
उष्णीष (सं० स्त्री०) पगड़ी, मुकुट ।
उष्म (सं० स्त्री०) ताप, गरमी, क्रोध, कोप । [होता है ।
उस (सर्व०) 'यह' का वह रूप जो विभक्ति लगाने पर
उसकाना (क्रि० स०) उसकाना ।
उसता (सं० पु०) नाई ।
उसरना (क्रि० अ०) टलना, हटना ।
उसल पसल (वि०) घबड़ाया हुआ ।
उसारा (सं० पु०) ओसारा, दलान ।
उसास (सं० पु०) श्वास, सांस, लम्बी सांस ।
उसिनना (क्रि० स०) उबालना ।
उसीजना (क्रि० स०) पकाना, पक जाना ।
उसीसा (सं० पु०) सिरहाना, तकिया ।
उसूल (अ० सं० पु०) सिद्धान्त, नियम ।
उसेना (क्रि० स०) गरमाना, पकाना, छानना, पसाना ।
उसेवना (क्रि० स०) छानना, पसाना, रींधना ।
उस्काना (क्रि० स०) उभाड़ना ।
उस्तर (वि०) सेत मेत, विनमोल ।
उस्तरा (सं० पु०) छुरा, उस्तुरा ।
उस्ताद (फ़० सं० पु०) शिक्षक, गुरु, अध्यापक ।
उस्ताना (क्रि० स०) गलाना ।
उस्तुरा (सं० पु०) छुरा ।
उस्र (सं० पु०) बैल, सांड़, किरण ।
उस्रधन्वा (सं० पु०) इन्द्र ।
उस्रा (सं० स्त्री०) गाय, धेनु ।
उहदा (सं० पु०) पद, स्थान । [कर्मचारी ।
उहदेदार (अ० सं० पु०) पदाधिकारी, कार्यकर्ता,
उहरना (क्रि० अ०) दबना, बैठना, हट जाना ।
उहवां (क्रि०वि०) वहां ।
उहाड़ (सं० पु०) परदा ।
उहाँ (क्रि०वि०) वहां ।
उहार (सं० पु०) ओहार, परदा, पट ।
उहिया (सं०पु०) कनकटा, योगियों की एक स्वर्णमुद्रा ।
उही (सर्व०) वहीं ।
उहूल (सं०स्त्री०) तरंग, लहर, मौज, उमंग ।

ऊ

ऊ यह 'उ' का दीर्घ रूप है, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है ।
ऊ (सं० पु०) महादेव, ब्रह्मा, चन्द्रमा, बन्धन, मोक्ष, (सर्व०) वह, (अव्य०) भी ।
ऊँगना (सं० पु०) चौपायों का एक रोग जिसमें कान बहता है, शरीर ठंढा हो जाता है और दाना पानी छूट जाता है ।
ऊँघ (सं० स्त्री०) झपकी, नींद, ऊँघाई ।
ऊँघना (क्रि० अ०) झपकी लेना, निद्रा आना ।
ऊँघाई (सं० स्त्री०) झपक, ऊँघ, निद्रा, नींद ।
ऊँच (सं०पु०) ऊंचा, श्रेष्ठ, उच्च, ऊपर की श्रेणी का ।
ऊँचा (वि०) उन्नत, उच्च, ऊपर की ओर उठा हुआ ।
मुहा०—ऊँचा बोलने वाला = घमण्डी, अहङ्कारी ।
ऊँचा सुनना = बहरापन, कम सुनाई पड़ना ।
ऊंचाई (सं० स्त्री०) उच्चता, उठान, गौरव, बड़ाई, श्रेष्ठता ।
ऊँचे (क्रि० वि०) ऊपर की ओर ऊंचे पर ।
मुहा० ऊँचे बोल का बोल नीचा-अभिमानियों अंतिम हार ।
ऊँछ (सं० पु०) एक रोग विशेष ।
ऊंछना (क्रि० अ०) कंघी करना ।
ऊंट (सं० पु०) उष्ट्र, एक चौपाया पशु जो मारवाड़ की रेतीली ज़मीन में होता है ।
ऊंटनी (सं० स्त्री०) सांड़नी ।
ऊंट कटारी (सं० पु०) एक औषध विशेष, उटकटाई ।
ऊँटवान (सं० पु०) ऊँट हाकने वाला ।
ऊँदर (सं० पु०) मूषिक, चूहा, मूसा ।
ऊँहूं (अव्य०) नहीं ।
ऊअना (क्रि० अ०) उदय होना, उगना, निकलना ।
ऊंचा कानी (सं० स्त्री०) बहरापन ।

ऊक (सं० पु०) उल्का, तारा।
ऊकना (क्रि० अ०) भूलना, चूकना।
ऊकार (सं०पु०) 'ऊ' वर्ण।
ऊकारान्त (वि०) वे शब्द जिनके अन्त में ऊ हो।
ऊख (सं० पु०) ईख, पौंडा, गन्ना।
ऊखम (सं० पु०) गरमी, ताप, उष्णता, हवा के बन्द होने पर जो गरमी मालूम होती है।
ऊखल (सं० पु०) ओखली।
ऊगर (सं० पु०) गूलर, ऊमर, उदुम्बर।
ऊगरा (वि०) सिर्फ उबाला हुआ।
ऊजड़ (वि०) उजड़ा हुआ, तहस नहस, ध्वस्त, वीरान।
ऊजर (वि०) उजला, प्रकाश, चांदनी, स्वच्छ, निर्मल, साफ़।
ऊजरा (वि०) देखो ऊजर।
ऊटना (क्रि० अ०) हौसला बांधना, उमंग में आना, उत्साहित होना। [अनर्थक, असंबद्ध।
ऊटपटाङ्ग (वि०) बे सिर पैर का, अटपट, उच्छृङ्खल,
ऊढ़ (वि०) विवाहित।
ऊढ़ा (वि०) विवाहिता।
ऊत (वि०) निर्वंश, निःसन्तान, मूर्ख, उजड्ड।
ऊतिम (वि०) देखो उत्तम।
ऊद (सं० पु०) जल जन्तु, जो बिल्ली के समान होता है, अगर का वृक्ष, या लकड़ी, एक प्रकार का बाजा।
ऊदबत्ती (सं० स्त्री०) एक सुगन्धित बत्ती, धूप बत्ती, जो सुगन्धित वस्तुओं से बनायी जाती है।
ऊदबिलाव (सं० पु०) जलजन्तु, जिसका आकार बिल्ली से मिलता जुलता है।
ऊदल (सं० पु०) महोबा के परमाल राजा का प्रधान सरदार, यह बड़ा वीर था, एक वृक्ष विशेष।
ऊदा (सं० पु०) खैरा रङ्ग, भूरा।
ऊधट (सं० पु०) औघट, विकट रास्ता, बुरा रास्ता।
ऊधम (सं० पु०) उत्पात, उपद्रव, हुल्लड़, दंगा फसाद।
ऊधमी वि०) उपद्रवी, उत्पाती, फ़सादी। [भक्त।
ऊधो (सं० पु०) एक यादव वंशी, कृष्ण का मित्र और
मुहा०—ऊधो का लेना न माधो का देना = किसी से कुछ संबंध न रखना। [आदि का रोआँ।
ऊन (वि०) कम, न्यून, अल्प, उदास, (सं०पु०) सूरत, भेड़
ऊनत (सं० स्त्री०) कमी, न्यूनता।
ऊना (सं० पु०) खड्ग। [बना हुआ।
ऊनी (वि०) कम, थोड़ा, न्यून, भेड़ आदि के बाल का
ऊपर (क्रि० वि०) ऊंचे स्थान पर, ऊर्ध्व।
ऊपरी (वि०) बाहरी, परदेशी।
ऊब (सं० स्त्री०) घबड़ाहट, उद्वेग, अकुलाहट।
ऊबट (सं० पु०) विकट मार्ग, औघट।
ऊबड़ खाभड़ (वि०) ऊंच नीच, अटपट। [उकताना।
ऊबना (क्रि० अ०) अकुलाना, घबड़ाना, उद्विग्न होना,
ऊबरना (क्रि० अ०) छुटकारा पाना, मुक्त होना, बचना, उद्धार पाना।
ऊभ (वि०) उभरा हुआ, उठा हुआ, (सं० स्त्री०) घबड़ाहट, व्याकुलता, गरम, उमस, उमंग, हौसला।
ऊभना (क्रि० अ०) घबड़ाना, व्याकुल होना, उठना, खड़ा होना।
ऊमर (सं० पु०) गूलर, ऊगर, उदुम्बर।
ऊरु (सं० पु०) जंघा, जांघ। [विशेष।
ऊर्ज (सं० पु०) शक्ति, बल, कार्तिक महीना, काव्यालङ्कार
ऊर्जस्वल (वि०) शक्तिमान, बलवान। [लङ्कार विशेष।
ऊर्जस्वी (वि०) शक्तिशाली, प्रतापी, (सं० पु०) काव्या-
ऊर्ण (सं० पु०) ऊन।
ऊर्णनाभ (सं० पु०) रेशम का कीड़ा, लूता, मकड़ी।
ऊर्णा (सं० स्त्री०) ऊन, चित्ररथ गन्धर्व की स्त्री।
ऊर्णायु (सं० पु०) कंबल, ऊनी वस्त्र।
ऊर्ध्व (वि०) ऊपर, ऊंचा, उन्नत।
ऊर्ध्वगामी (वि०) ऊपर जानेवाला, मुक्त।
ऊर्ध्वजानु (सं० पु०) उपरिस्थ जङ्घा।
ऊर्ध्वतिक्त (सं० पु०) चिरायता, औषधि विशेष।
ऊर्ध्वपुण्ड (सं० पु०) वैष्णवी तिलक।
ऊर्ध्वरेखा (सं० स्त्री०) शुभ सूचक हस्तरेखा विशेष।
ऊर्ध्वरेता (सं० पु०) आजन्म ब्रह्मचारी, कामत्यागी, भीष्म, महादेव।
ऊर्ध्वलोक (सं० पु०) देवलोक, स्वर्गलोक।
ऊर्ध्वश्वास (सं० पु०) श्वांस का रोग विशेष, दम का ऊपर चढ़ना।
ऊर्ध्वस्थ (वि०) उच्चस्थ, उपरिस्थित।
ऊर्मि (सं० स्त्री०) लहर, तरंग, हिलकोरा, पीड़ा, शिकन।
ऊर्मि-माला (सं० स्त्री०) तरंग-समूह।
ऊर्मि-माली (सं० पु०) समुद्र, पयोधि।

ऊर्वशी (सं० स्त्री०) देखो उर्वशी।
ऊल जलूल (वि०) अंड बंड, बे सिर पैर का, अनारी।
ऊषण (सं० पु०) काली मिर्च।
ऊषर (सं० पु०) ऊसर, वह भूमि जिसमें उपज कम हो।
ऊषा (सं० पु०) देखो उषा।
ऊष्म (सं० पु०) गरमी, गरमी की ऋतु, भाप। [जाते हैं।
ऊष्मवर्ण (सं० पु०) श, ष, स, ह, ये ऊष्म वर्ण कहे
ऊष्मा (सं० स्त्री०) ग्रीष्म ऋतु, गरमी, ताप।
ऊसन (सं०पु०) एक वृक्ष विशेष इसमें से तेल निकलता है, तरमिरा।
ऊसढ़ (वि०) नीरस, फीका।
ऊसर (पु०) वह भूमि जिसमें अन्न न उपजे, ऊषर।
ऊह (अव्य०) क्लेश या विस्मय सूचक शब्द, आह।
ऊहापोह (सं० पु०) सोच-विचार, तर्क-वितर्क।

ऋ

ऋ यह वर्णमाला का सातवां स्वर वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। [(पु०) गणेश, सूर्य।
ऋ (सं० स्त्री०) देवमाता, अदिति, कुत्सित वाक्य, निन्दा,
ऋक् (सं० स्त्री०) ऋग्वेद, ऋचा [पितृ-धन।
ऋक्थ (सं० पु०) धन, सम्पत्ति, सोना, स्वर्ण, हिस्सा,
ऋक्ष (सं० पु०) भालू, रीछ, नक्षत्र, तारा, रैवतक पर्वत का एक भाग, भिलावाँ, शोनाक वृक्ष, मेष वृष आदि राशि।
ऋक्षजिह्व (सं० पु०) कुष्ट विशेष।
ऋक्षपति (सं० पु०) चन्द्रमा, जांबवान।
ऋक्षवान (सं० पु०) रैवतक पर्वत का एक भाग जो नर्मदा से लेकर गुजरात तक है।
ऋग्वेद (सं० पु०) चार वेदों में से एक।
ऋग्वेदी (वि०) ऋग्वेदज्ञाता, ऋग्वेद जानने वाला।
ऋचा (सं० स्त्री०) वेद मन्त्र, कारिडका, स्तुति, स्तोत्र।
ऋचीक (सं० पु०) भृगु वंशी एक ऋषि, ये जमदग्नि के पिता थे।
ऋच्छ (सं० पु०) भालू, रीछ।
ऋजीष (सं० पु०) सोमलता की सीठी, लोहे का तसला।
ऋजु (वि०) सरल, सीधा, सुगम।
ऋजुकाय (सं० पु०) कश्यप मुनि, सीधा शरीर।
ऋजुभुज (सं० पु०) सीधी रेखा वा भुजा। [क्षेत्र।
ऋजुभुज क्षेत्र (सं० पु०) सीधी रेखाओं से घिरा हुआ
ऋजु स्वभाव (सं० पु०) सरल स्वभाव।
ऋण (सं० पु०) उधार, क़र्ज़ा।
ऋण-ग्रहण (सं० पु०) क़र्ज़ लेना।
ऋणदाता (सं० पु०) क़र्ज़ देने वाला, महाजन।
ऋणपरिशोध (सं० पु०) ऋण चुकाना, क़र्ज़ अदा करना।
ऋणमत्कुण (सं० पु०) ज़ामिन, प्रतिभू।
ऋणमार (सं० पु०) क़र्ज़ न चुकाने वाला।
ऋण-पत्र (सं० पु०) तमस्सुक।
ऋणमार्गण (सं० पु०) प्रतिभू, ज़ामिन्दार, ज़ामिन।
ऋण-मुक्त (वि०) वह जो क़र्ज़ चुका दिये हो, ऋणपरिशोधित। [फ़ारिग़ख़ती।
ऋण-मुक्ति-पत्र (सं० पु०) ऋणपरिशोध-सूचक पत्र,
ऋणशोधन (सं० पु०) उधार चुकाना। [चुकाना।
ऋणशुद्धि (सं० स्त्री०) ऋण का भुगतान होना, क़र्ज़
ऋणार्ण (सं० पु०) एक ऋण चुकाने के लिये दूसरा ऋण लेना।
ऋणिया (सं० पु०) ऋणी।
ऋणी (सं० पु०) देनदार, उपकृत, अनुगृहीत।
ऋत (सं० पु०) सत्य, उन्छवृत्ति, मोक्ष, कर्मफल, जल, यज्ञ, (वि०) पूजित, दीप्त, सत्य।
ऋतधामा (सं० पु०) विष्णु।
ऋति (सं० स्त्री०) मंगल, गति, मार्ग, स्पर्द्धा, निन्दा।
ऋतु (सं० पु०) प्राकृति अवस्थानुसार वर्ष विभाग, ये छः हैं, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, रजोदर्शन। [यहाँ नल सारथी थे।
ऋतुपर्ण (सं० पु०) अयोध्या के एक राजा, इन्हीं के
ऋतुकाल (सं० पु०) रजोदर्शन के बाद का १६ दिन।
ऋतुगमन (सं० पु०) ऋतु समय में स्त्री के पास जाना।
ऋतुचर्या (सं० स्त्री०) ऋतुओं के अनुसार अहार बिहार का नियम।
ऋतुदान (सं० पु०) गर्भाधान, सन्तानोत्पत्ति की इच्छा से ऋतुमती स्त्री के साथ संभोग।
ऋतुमती (वि०) रजस्वला।
ऋतुराज (सं० पु०) वसन्त ऋतु। [स्नान।
ऋतुस्नान (सं० पु०) रजोदर्शन के बाद चौथे दिन का

ऋत्विज् (सं० पु०) यज्ञ कराने वाला, याज्ञक।
ऋद्ध (वि०) धनाढ्य, सम्पन्न। [विशेष, पार्वती।
ऋद्धि (सं० स्त्री०) विभव,वृद्धि, धन,सम्पत्ति, एक औषध
ऋद्धि सिद्धि (सं० स्त्री०) समृद्धि और सफलता।
ऋनिया (वि०) देखो ऋणिया।
ऋनी (वि०) देखो ऋणी।
ऋभुज (सं० पु०) इन्द्र, स्वर्ग, वज्र।
ऋषभ (सं० पु०) बैल, वृषभ।
ऋषभदेव (सं० पु०) राजा नाभि के पुत्र, इनकी गिनती विष्णु के चौबीस औतारों के अन्तर्गत है।
ऋषभध्वज (सं० पु०) शिव।
ऋषभी (सं० स्त्री०) पुरुष के समान रंग रूप वाली स्त्री।
ऋषि (सं० पु०) तपस्वी, मुनि।
ऋषिक (सं० पु०) वाल्मीकीय रामायण में वर्णित दक्षिण का एक देश।
ऋषिकुल्या (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम।
ऋषिमित्र (सं० पु०) शान्तिप्रिय, विश्वामित्र।
ऋषिराज (सं० पु०) प्रधान ऋषि।
ऋषीक (सं० पु०) ऋषिपुत्र।
ऋषीश (सं० पु०) ऋषियों में प्रधान।
ऋष्टिक (सं० पु०) दक्षिण का एक देश विशेष, जिस का वर्णन वाल्मीकि रामायण में है।
ऋष्य (सं० पु०) चितकबरा मृग।
ऋष्यकेतु(सं० पु०) कामदेव का पुत्र, अनिरुद्ध।
ऋष्यप्रोक्ता (सं० स्त्री०) सतावर। [के पास है।
ऋष्यमूक (सं० पु०) दक्षिण का एक पर्वत जो किष्किधा
ऋष्यशृङ्ग (सं० पु०) एक ऋषि, इनके पिता का नाम विभाण्डक था। लोम पाद राजा की कन्या शान्ता का ब्याह इनके साथ हुआ था, दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ इन्होंने ही कराया था।

ॠ ऌ ॡ

इन अक्षरों का हिन्दी में कोई शब्द नहीं, संस्कृत भाषा में इनके कुछ शब्द हैं, पर वे बड़े ही मुशकिल से मिलते हैं, और उनका प्रयोग भी बहुत कम होता है।

ए

ए यह 'अ' और 'इ' का यौगिक रूप है, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है। [अव्यय।
ए (सं०पु०) विष्णु,(सर्व०) यह, (अव्य०) सम्बोधनार्थक
एँच पेंच (सं० पु०) उलझन,अटकाव,घुमाव,चाल,घात।
एँडा बेंडा (वि०) उलटा-सीधा।
एँडी (स्त्र०) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा विशेष।
एक (वि०) एकाई की सब से पहली और छोटी संख्या, प्रथम संख्या, कोई, किसी, समान, तुल्य, अनुपम, अद्वितीय, एकता, अकेला।
एक आध (वि०) एक या आधा, कुछ, थोड़ा।
एकई (वि०) वही, अभिन्न, समान।
एक-एक (वि०) प्रत्येक, अलग-अलग, भिन्न-भिन्न।
एकक (वि०) अकेला, असहाय, निराला।
एककाल (वि०) एक समय, तुल्य समय।
एककालीन (वि०) समकालीन, एक समय का, एक ही बार, एक काल का।
मुहा०—एक की दस सुनना=छोटे अपराध के लिए अधिक दण्ड, एक गाली देने वाले को दस गाली सुनाना। [वृक्ष को खोखला करके बनी हो।
एकगाछी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की नाव, जो एक ही
एकचक्र (वि०) चक्रवर्ती,(सं० पु०) सूर्य, सूर्य का रथ।
एकचक्रा (सं०स्त्री०) एक प्राचीन नगर का नाम,जो आरा के पास था, बकासुर नामक राक्षस यहीं रहता था।
एकचर (वि०) अकेला चरने वाला, एक्का।
एकचित्त (वि०) एकाग्रचित्त, एकमन, हिला-मिला।
एकछत्र (वि०) पूर्ण प्रभुत्वयुक्त, अकण्टक।
एकजन्मा (वि०) शूद्र,राजा। [प्रसव करने वाली।
एकजाई (सं० स्त्री०) पहिलौठी, सकृत प्रसूता, एक बार
एकटक (सं० पु०) टकटकी, सतृष्ण दृष्टि से देखना।
एकट्ठा (सं० पु०) एकत्रित, जमा। [होता है।
एकड़ (सं० पु०) एक नाप विशेष, जो १$\frac{3}{4}$ बीघे के बराबर
एक डाल (वि०) एक समान, एक तरह, (सं०पु०) छुरा या कटार जिसका फला और बेंट एक ही लोहे का बना हो।

एकतन्त्री (सं०स्त्री०) एक मतावलम्बी। [पत्तीय।
एकतरफ़ा (फ़ा० वि०) एक पत्त का, एक ओर का, एक
एकतरफ़ा डिगरी (सं० स्त्री०) एक पत्तकी जीत होना।
एकतरा (सं० पु०) अंतरिया ज्वर, एक दिन का बीच देकर आने वाला ज्वर।
एकतही (स्त्री०) मिरजई, (पु०) एक स्थान।
एकता (सं० स्त्री०) ऐक्य, एकत्व, समानता, मेल-जोल, मिलान।
एकतान (सं० पु०) एकाग्र।
एकताल (वि०) लीन, तन्मय, एकाग्र, एक स्वर।
एकतालीस (वि०) संख्या विशेष, चालीस और एक।
एकतीस (वि०) संख्या विशेष, तीस और एक।
एकतुम्बी (सं० स्त्री०) तम्बूरा, तानपूरा, वाद्ययन्त्र विशेष
एकत्र (वि०) एकट्ठा, एक साथ, एक जगह।
एकत्रा (सं०पु०) मीज़ान, कुल जोड़।
एकत्रित (वि०) संगृहीत।
एकदा (क्रि० वि०) एक समय, एक बार।
एकदिक् (सं० पु०) एक ओर, एक भाग, एक देश।
एकदेशस्थ (वि०) एक देशी, समदेशीय।
एकदेशीय (वि०) एक देश का, जो एकही अवसर या स्थल के लिये हो।
एकदेह (सं० पु०) बुध ग्रह, वंश, गोत्र, दम्पती।
एकधा (क्रि० वि०) एक प्रकार, एक बार।
एकन एकन्ह—एक ने, किसीने, एक को, किसी को।
एकपट्टा (सं० पु०) पिछौरी।
एकपत्नी (सं० स्त्री०) पतिव्रता-सती।
एकपरामर्श (सं० पु०) एक मत।
एकपलिया (सं० पु०) वह मकान जिसमें बँड़ेर न हो।
एकपाश (सं० पु०) एक पार्श्व, एक तरफ़।
एकप्रभुत्व (सं० पु०) एकाधिपत्य, एक।
एकबारगी (क्रि० वि०) एक साथ, एकही समय में।
एक़बाल (अ० सं० पु०) प्रताप, तेज, स्वीकार।
एक़बाली (वि०) प्रतापी।
एकमत (वि०) एक सलाह वाला, समान राय वाला।
एकमुंहा (वि०) एक मुंह वाला।
एकयोनि (वि०) सहोदर, एक मां के।
एकरंग (वि०) समान।
एक़रार (अ० सं० पु०) प्रतिज्ञा, स्वीकृति, स्वीकार।
एकरूप (वि०) समान रूप।
एकलव्य (सं० पु०) एक निषाद, यह परम गुरुभक्त था, द्रोणाचार्य ने इसको अन्त्यज समझ अस्त्र विद्या इसको नहीं सिखायी, इसने द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बना कर उसी के सामने अस्त्र विद्या का अभ्यास किया, इस विद्या में यह बड़ा निपुण निकला।
एकला (वि०) अकेला, एकाकी।
एकलाई (सं० स्त्री०) ओढ़नी, चादर।
एकला दुकेला (वि०) एकाकी, एक वा दो।
एकलिङ्ग (सं० पु०) शिव जी मेवाड़ के राजपूतों के प्रधान देव हैं।
एकलौता (वि०) जो अपने मा बाप के अकेला हो।
एकवचन (सं० पु०) व्याकरण का वह वचन जिससे एक वस्तु का ज्ञान हो।
एकबार (वि०) एकदा, एक समय।
एकशफ़ (सं० पु०) घोड़ा, एक खुरवाले जीव।
एकसङ्ग (वि०) एक साथ।
एकसङ्गी (सं० पु०) साथी।
एकसठ (वि०) संख्या विशेष, साठ और एक। [स्त्री।
एकसर (वि०) एक पल्ले का, अकेला, एक लड़की या
एकसां (वि०) बराबर, समान, समतल
एकसार (वि०) समान, एकसा।
एकहत्तर (वि०) संख्या विशेष, सत्तर और एक, ७१।
एकहरा (सं० पु०) एक परत का, पतला, झीना।
एका (सं स्त्री०) दुर्गा, (पु०) ऐक्य, एकता, मेल, मिलाप।
एकाई (सं० स्त्री०) एकता, एका का भाव, गिनती में पहले अङ्क का स्थान, या उस स्थान की संख्या।
एकाएक (क्रि० वि०) अचानक, अकस्मात, अचानक।
एकाएकी (क्रि० वि०) सहसा, अकस्मात, अचानक।
एकाकार (वि०) एक समान, एक आकृति का, एक धर्म, सदृश।
एकाकिन्ह (सं० पु०) अकेले को
एकाकी (वि०) एकला, एकही, एक मात्र। [शुक्राचार्य
एकात्त (वि०) एक नेत्र वाला, काना, (सं० पु०) कौआ,
एकात्तरी (वि०) एक अत्तर का
एकाग्र (सं० वि०) एक चित्त, अनन्य चित्त, एक मना
एकाग्रचित्त (वि०) स्थिर चित्त, एक मन।
एकाग्रता (सं० स्त्री०) एक चित्तता, एक मना।

एकाङ्क (वि०) एक अङ्क का (सं० पु०) बुधग्रह, चन्दन।
एकाङ्गी (वि०) एक ओर का, एक पक्ष का।
एकातपत्र (वि०) चक्रवर्ती, सार्वभौम, एकछत्र।
एकात्मता (सं० स्त्री०) अभेद, अभिन्नता।
एकात्मा (सं० पु०) अभिन्न।
एकादश (वि०) संख्या विशेष, ग्यारह, दस और एक।
एकादशी (सं० स्त्री०) प्रत्येक चान्द्रमास के कृष्ण और शुक्ल पक्ष की ग्यारहवीं तिथि, व्रत विशेष।
एकादिक्रम (वि०) क्रमिक, क्रमानुरूप, आनुक्रमिक।
एकाधिपति (सं० पु०) चक्रवर्ती।
एकाधिपत्य (सं० पु०) पूर्ण अधिकार, पूर्ण प्रभुत्व।
एकान्त (वि०) निजन, निराला, अकेला, अलग, अत्यन्त, नितान्त।
एकान्तर (सं० पु०) एक ओर, अलगंट।
एकान्तर कोण (सं० पु०) एक ओर का कोना।
एकान्तवास (सं० पु०) न्यारा रहना, अलग रहना, अकेले में रहना। [स्थानवासी।
एकान्तवासी (वि०) अकेले में रहने वाला, निर्जन
एकायन (सं० पु०) एक मास, एक स्थान।
एकार (सं० पु०) 'ए' वर्ण।
एकारान्त (वि०) वह शब्द जिसके अन्त में 'ए' हो।
एकार्णव (सं० पु०) एकाकार, एक समुद्र।
एकार्थ (वि०) समान अर्थ वाले, समानार्थ, एक अर्थवाला।
एकाश्रित (वि०) एक ही के सहारे, अनन्य जगंतिक।
एकाह (वि०) एक दिवस में पूर्ण होने वाला।
एकाहिक (वि०) एक दिन में पूरा होने वाला।
एकीकरण (सं० पु०) एक करना।
एकीकृत (वि०) एक किया हुआ, मिलाया हुआ।
एकभाव सं० पु०) एक होना, मिलान, मिलाप।
एकेला (वि०) अकेला, एकला।
एकैक (वि०) प्रत्येक।
एकोतरसो (वि०) एक सौ एक। [सैकड़े ब्याज।
एकोतरा (वि०) एक दिन बीच देने वाला, (सं०पु०) रुपए
एकोद्दिष्ट (सं० पु०) श्राद्ध विशेष।
एकौ (वि०) कोई भी, एक भी।
एकौझा (वि०) अकेला, एकला।
एकौतना (क्रि० अ०) धान जवा गेहूँ आदि में गाभ निकलना, गरभना।
एक्का (वि०) एक वाला, अकेला, (सं० पु०) इक्का, एक घोड़े की गाड़ी।
एक्कावन (वि०) एक्का हाँकने वाला व्यक्ति।
एक्कावानी (सं० स्त्री०) एक्का हाँकने का काम।
एक्यानबे (वि) संख्या विशेष, नब्बे और एक।
एक्यावन (वि०) संख्या विशेष, पचास और एक।
एक्यासी (वि०) संख्या विशेष, अस्सी और एक।
एड़ (सं० स्त्री०) घोड़े के चलाने या दौड़ाने के लिए पैर के पिछले भाग से ठोकर मारना, पैर का पिछला भाग।
एड़क (सं० पु०) भेड़ा, मेष।
एड़ी (सं० स्त्री०) पैर का पिछला भाग, एड़।
एढ़ा (वि०) शक्तिशाली, बलवान्।
एढ़ा टेढ़ा (वि०) तिरछा, बांका। [मृग।
एण (सं० पु०) काला मृग, काले रंग का हिरन, कस्तूरी
एणमद (सं० पु०) कस्तूरी।
एणी (सं० स्त्री०) हिरनी, मृगी।
एणीन (सं० स्त्री०) हिरनी का बहुवचन।
एतद् (सर्व०) यह।
एतत्काल (सं० पु०) सम्प्रति, अधुना, इस समय।
एतत्कालीन (वि०) आधुनिक, सांप्रतिक, इस समय का।
एतदर्थ (क्रि० वि०) इस कारण, इस हेतु, इस लिए।
एतद्देशीय (वि०) इस देश का।
एतना (वि०) इतना।
एतादृक् (वि०) ऐसा, ऐसाही, एतादृश।
एतादृश (वि०) ऐसा इसके समान।
एतावत् (क्रि० वि०) इतनाही, यही।
एतावता (अव्य०) इसकारण इसलिए, इसहेतु।
एतावन्मात्र (क्रि०वि०) इतनाही, यही।
एतिक (वि०) इतनी।
एनस (सं० पु०) पाप, अपराध। [होता है।
एनी (सं० पु०) एक बहुत बड़ा वृक्ष जो पश्चिमी घाट में
एमन (सं० पु०) राग विशेष।
एरण्ड (सं० पु०) रेंड़ी, रेण।
एरण्ड खरबूजा (सं० पु०) पपीता।
एरण्ड सफेद (सं० पु०) बागबरेंडा, भोगली।
एरण्डी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की झाड़ी विशेष, तुंगा, आमी, दरेंगड़ी।
एराफेर (सं० पु०) हेर-फेर, अदल-बदल, सट्टा-बट्टा।

एरी (सं० स्त्री०) संबोधनार्थक शब्द ।
एलक (सं०पु०) मैदा चालने की चलनी, आंधी ।
एलुवा (सं० पु०) मुसब्बर ।
एला (सं० स्त्री०) इलायची ।
एलोई (सं० पु०) हे हमारे ईश्वर ।
एलोइरे (अव्य०) यह देखो, व्यङ्ग वाचक शब्द ।
एलोक (सं० पु०) यहलोक, यह संसार । [करके ।
एव (अव्य०) ऐसा, इस प्रकार का, मात्र, केवल, निश्चय
एवज़ (अ० सं० पु०) बदला, प्रतिकार, परिवर्तन ।
एवज़ी (फ़ा० सं० पु०) स्थानापन्न व्यक्ति ।
एवम् (क्रि० वि०) ऐसाही, इस प्रकार, स्वीकार सूचक शब्द
एवमस्तु (क्रि० वि०) ऐसाही हो ।
एह (सर्व०) यह ।
एहतियात (अ० सं० स्त्री०) सावधानी, चौकसी, परहेज़।
एहसान (अ० सं० पु०) कृतज्ञता
एहसानमन्द (अ० सं० वि०) कृतज्ञ ।
एहि (सर्व०) इसको ।
एहु (क्रि० वि०) यह, यह भी।
एहेतुक (अव्य०) इसलिये, इस कारण ।
एहो (अव्य०) अरे, हो, सम्बोधनार्थक अव्यय

ऐ

ऐ यह 'ए' का वृद्धिरूप है, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है ।
ऐ (सं० पु०) शिव, (अव्य०) सम्बोधनार्थक अव्यय ।
ऐँच (सं० पु०) तान, खैंच, सङ्कोच ।
ऐँचना (क्रि०) खींचना, तानना, फटकना ।[ओर को जाय ।
ऐँचाताना (वि०) ताकने में जिसकी पुतली दूसरी
ऐँठ (सं० स्त्री०) गांठ, मरोड़, अकड़, घमण्ड, गर्व ।
ऐँठन (सं० स्त्री०) मरोड़ पेच, लपेट। [देना ।
ऐँठना (क्रि० स०) बटना, मरोड़ना, बलदेना, घुमाव ।
ऐँठवाना (क्रि० स०) एंठने का काम अन्य से करवाना ।
ऐँठा (सं० पु०) रस्सी ऐंठने का एक यन्त्र ।
ऐँड बेँड (वि०) टेढ़ा, तिरछा ।
ऐँड़ा (वि०) टेढ़ा ।
ऐँडुरी (सं० स्त्री०) पीढ़ा, बीड़ा, गेंडुरी ।
ऐक (सं० पु०) एकता, ऐक्य, सहमत, एकमत ।
ऐकमत्य (सं० पु०) सम्मति, एकमत, एकराय ।
ऐकान्तिक (वि०) अत्यन्तनिर्जन, एकान्त, एकान्तवासी, वैष्णव सम्प्रदाय के भक्त विशेष ।
ऐकार (सं० पु०) ऐ वर्ण ।
ऐकारान्त(वि०) वह शब्द जिसके अन्त में ऐ हो ।
ऐकाहिक (वि०) एक दिन का ।
ऐक्य (सं० पु०) समानता, मेल, एकता ।
ऐगुण (सं० पु०) औगुण, दोष अनारीपन ।
ऐच्छिक (वि०) स्वेच्छा पूर्वक, स्वेच्छाधीन ।
ऐतरेय (सं० पु०) ऋग्वेद का एक ब्राह्मण ।
ऐतिहासिक (वि०) इतिहास संबन्धी ।
ऐतिह्य (सं० पु०) पारंपरीय कथा, पौराणिक परम्परागत प्रवाद कथा, परम्परा से प्रसिद्ध किंवदन्ती ।
ऐन (वि०) उपयुक्त, ठीक, ज्यों का त्यों, (सं० पु०) घर,
ऐनक (स्त्री०) चश्मा । [गृह, मकान ।
ऐना (सं० पु०) दर्पण, शीशा, आइना ।
ऐन्द्रजालिक (सं० पु०) बाज़ीगर, मायावी, इन्द्रजाल करनेवाला व्यक्ति ।
ऐपन (सं० पु०) एक मांगलिक द्रव्य विशेष जो चावल हल्दी पीस कर बनाया जाता है ।
ऐब (सं० पु०) दुर्गुण, दोष, कलङ्क ।
ऐवारा (सं० पु०) भेड़बकरियों का बाग ।
ऐबी (वि०) दोषी, कलङ्की, दुर्गुणी ।
ऐया (सं० स्त्री०) दादी, सास, बूढ़ी स्त्री ।
ऐयार (अ० सं० पु०) चालाक, धूर्त, छली ।
ऐयारी (अ०वि०) चालाकी, धूर्तता, छल ।
ऐयाशी (सं० स्त्री०) भोग विलास, विषय भोग ।
ऐरागैरा (वि०) बेगना, तुच्छ, इधर उधर का।
ऐरापति (सं० पु०) ऐरावत हाथी ।
ऐरावण (सं० पु०) ऐरावत हाथी, रावण का एक पुत्र ।
ऐरावत (सं० पु०) इन्द्र का हाथी, इन्द्र धनुष, इरावान मेघ, विद्युत, एक नाग, बड़हर, नारंगी ।
ऐरावती (सं० स्त्री०) येरावत हथिनी, रावी नदी, ब्रह्मा की एक नदी, एक पौधा, विद्युत् ।

ऐरेय (सं० पु०) एक प्रकार की शराब।
ऐल (सं० पु०) इलापुत्र पुरुरवा।
ऐश (अ० सं० पु०) आराम चैन, भोग विलास।
ऐशानी (वि०) ईशान कोण सम्बन्धी।
ऐशू (सं० पु०) चौपायों का एक रोग विशेष, जिसमें वे पागुर नहीं कर सकते, उनका मुंह बँध जाता है।
ऐश्वर्य (सं० पु०) धन, सम्पत्ति, विभव, गौरव, महिमा।
ऐश्वर्यवान (वि०) सम्पन्न, वैभवशाली।
ऐश्वर्य शाली (वि०) धनाढ्य, वैभव शाली।
ऐषमः (अव्य०) वर्तमान संवत्सर, इससाल।
ऐसा (वि०) इस तरह, इस प्रकार, इसके समान।
ऐसातैसा (वि०) साधारण, मामूली, तुच्छ।
ऐसे (क्रि० वि०) इस तरह, इस प्रकार, इसढंग से।
ऐहिक (वि०) सांसारिक, दुनियात्री, इसलोक से संबन्ध रखनेवाला।
ऐहै (क्रि० अ०) आवेंगे।

ओ

ओ यह 'अ' और 'उ' का यौगिक रूप है, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ और ओठ है।
ओ (सं० पु०) ब्रह्मा, (अव्य०) सम्बोधनार्थक अव्यय, स्मृति, करुणा और आश्चर्य सूचक शब्द, संयोजक। शब्द।
ओं (अव्य०) प्रणव, अच्छा, तथास्तु, हां।
ओंइछना (क्रि० स०) न्योछावर करना, वारन,।
ओंठ (सं० पु०) होंठ, ओठ, अधर।
ओंड़ा (सं० पु०) गढ़ा, सेंध (वि०) गहरा, गम्भीर।
ओंधा (वि०) उलटा, तर उपर, औंधा।
ओआ (सं० पु०) वह गढ़ा जिसमें हाथी फँसाया जाता
ओई (सं० पु०) एक वृक्ष का नाम। [नक्षत्र समूह।
ओक (सं० पु०) घर, मकान, आश्रय, निवास्थान,
ओकना (क्रि० अ०) कै करना, उलटी करना, ओ ओ करना,
ओकपति (सं० पु०) सूर्य, चन्द्र।
ओकाई (सं० स्त्री०) वमन, कै, उलटी।
ओकार (सं० पु०) 'ओ' वर्ण।
ओकारान्त (वि०) वे शब्द जिनके अन्त में 'ओ' हो
ओकी (सं० स्त्री०) कै, वमन।
ओखली (सं० स्त्री०) ऊखल, कांडी।
ओगरा (सं० पु०) पथ्य विशेष, खिचड़ी।
ओघ (सं० पु०) समूह, ढेर, राशि।
ओङ्कार (सं०पु०) देखो ओम।
ओछा (वि०) छिछोरा, तुच्छ, नीच।
ओछाई (सं० स्त्री०) छिछोरा पन, खोटाई, नीचता।
ओछापन (सं० पु०) छिछोरपन नीचता।
ओज (सं० पु०) तेज, बल, प्रताप, प्रकाश।
ओजस्वी (वि०) प्रभावशाली, तेजस्वी, प्रतापी।
ओझ (सं० पु०) पेट की थैली, आँत, झोझा।
ओझइत (सं० पु०) झाड़ फूँक करनेवाला, ओझा।
ओझड़ (सं० पु०) झोंक, ठोकर, आँत, पचौनी।
ओझर (सं० पु०) पचौनी, पेट।
ओझल (सं० पु०) ओट, आड़, एकान्त, परदा।
ओझल करना (क्रि० स०) आँख से परे रहना, छिपाना।
ओझा (सं० पु०) भूत प्रेत झाड़ने वाला, सर्यूपारी, गुजराती, और मैथिल ब्राह्मणों की एक जाति, यह शब्द उपाध्याय का अपभ्रंश है, इसका प्राकृत रूप, उवज्झाओ है। इसीसे इस शब्द की उत्पत्ति हुई है।
ओझाई (सं० स्त्री०) झाड़ फूंक।
ओट (सं० स्त्री०) आड़, ओझल, छिपाव, व्यवधान।
ओटकरना (क्रि० स०) छिपाया।
ओटहोना (क्रि०) छिपना।
ओटना (क्रि० स०) कपास से बिनौला निकालना, ओट करना। [अंड बंड बकना।
ओटनापरेतना (क्रि०) बिना बात की बात बोलना।
ओटनी (सं० स्त्री०) कपास औटने की चरखी।
ओटा (सं० स्त्री०) आड़, लुकाव, व्यवधान।
ओठ (सं० पु०) देखो, ओंठ।
ओठंगना (क्रि० अ०) आराम करना, सहारा लेना, टेक लगाना, लेट रहना।
ओड़अहिं (क्रि० स०) रोकेंगे, बचावेंगे।
ओड़न (सं० पु०) फरी, ढाल, वार रोकने की वस्तु।
ओड़ना (क्रि० स०) रोकना, निवारण करना, थामलेना।
ओडा (सं० पु०) दौरा, टोकरा, खांचा।
ओढ़न (सं० पु०)चादर, चादरा।

ओढ़ना (सं० पु०) रजाई, दोलाई, शरीर ढाँकने का वस्त्र, (क्रि० स०) पहनना, शरीर ढांकना, बदन पर वस्त्र, डालना, अपने ऊपर लेना ।
ओढ़नी (सं० स्त्री०) स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र, चद्दर ।
ओढ़र (सं० पु०) बहाना । [करवाना ।
ओढ़वाना (क्रि० स०) वस्त्र से ढंकवाना, वस्त्राच्छादित
ओढ़ाना (क्रि० स०) ढंकना, तोपना । [ताने का सूत ।
ओत (सं० स्त्री०) प्राप्ति, लाभ, आराम, चैन, (सं० पु०)
ओतप्रोत (वि०) गुथा हुआ, एक से एक मिला हुआ, उलझा हुआ, (सं० पु०) ताना बाना, टेढ़ा, आड़ा, ।
ओता (वि०) उतना ।
ओतु (सं० स्त्री०) बिल्ली, बिलाई ।
ओतुप्लुत (वि०) उलटा, उतान, उलटा पलटा, चित्त ।
ओथल पोथल (वि०) चित्त, उलटा ।
ओद (सं० पु०) भीगा, नमी, तरी, गील ।
ओदक (सं० पु०) पानी, जल ।
ओदन (सं० पु०) भात, उबाला हुआ चावल ।
ओदनी (सं० पु०) बरियारी ।
ओदर (सं० पु०) उदर, जठर, पेट । [ढहना ।
ओदरना (क्रि० अ०) फटना, गिरना, विदीर्ण होना,
ओदा (वि०) भीगा, गीला, नम, तर, आर्द्र । [गिरना ।
ओदारना (क्रि० स०) फाड़ना, विदीर्ण करना, ढाहना,
ओधे (सं० पु०) अधिकारी, स्वामी, मालिक । [रस्सी ।
ओनचन (सं० स्त्री०) उनचन, चारपाई के पैताने में की
ओनचना (क्रि० स०) चारपाई की पैताने की रस्सी को खींचना । [बाहर निकालने का रास्ता ।
ओना (सं० पु०) पानी का निकास, तालाब से पानी
ओनाड़ (वि०) बलवान, बली ।
ओनामासी (सं० स्त्री०) अक्षरारम्भ कराना ।
ओप (सं० स्त्री०) शोभा, आभा, कान्ति, दीप्ति, चमक ।
ओपची (सं० पु०) अस्त्रधारी योद्धा, कवचधारी वीर ।
ओपना (क्रि० स०) माँजना, घोटना, साफ़ करना, चमकाना ।
ओम् (सं० पु०) प्रणव मन्त्र, परमात्मा का नाम, वेदमन्त्रों और प्रार्थना आदि के प्रारम्भ में इसका उच्चारण होता है ।
ओर (सं० स्त्री०) तरफ़, दिशा ।
ओरमना (क्रि० अ०) लटकना ।
ओरमा (सं० स्त्री०) एक प्रकार की सिलाई, एकहरी सिलाई ।
ओरहना (सं० पु०) उलहना, शिकायत । [होना ।
ओराना (क्रि० अ०) समाप्त होना, अन्त होना, खतम
ओरी (सं० स्त्री०) ओलती, घर के छाजन आदि का पहला भाग जहाँ से पानी नीचे गिरता है (अव्य०) स्त्रियों के लिए सम्बोधन ।
ओरे (सं० पु०) ओले, वर्षा के पत्थर, उपल, बनौरी ।
ओरेहा (सं० पु०) रचना, सृष्टि ।
ओल (सं० पु०) सूरन, ज़िमीकन्द, मनौती ।
ओलतो (सं० पु०) ओरी ।
ओलम्भा (सं० पु०) ओलहना ।
ओला (सं० पु०) पत्थर, बनौरी, एक मिठाई ।
ओषधि (सं० स्त्री०) जड़ी, बूटी, घास, पौधा जो दवा के काम आते हैं, वनस्पति, एक बार फल कर सूख जानेवाले पौधे ।
ओषधीश (सं० पु०) चन्द्रमा, चन्द्र, कलाधर, कपूर ।
ओष्ठ (सं० पु०) होंठ, ओंठ, अधर ।
ओष्ठी (सं० स्त्री०) कुंदरू, बिम्बाफल ।
ओष्ठ्य (वि०) ओष्ठ से उच्चारण किये जाने वाले वर्ण ।
ओस (सं० स्त्री०) शीत, पाला, शिशिर ।
ओसर (सं० स्त्री०) कलोर, जवान भैंस ।
ओसरा (सं० पु०) बारी, दांव, पारी ।
ओसरी (सं० स्त्री०) पारी, बारी ।
ओसाई (सं० स्त्री०) भूसे से अन्न अलगाने की क्रिया ।
ओसाना (क्रि० स०) भूसे से अन्न अलग करना, दायें हुये ग़ल्ले को किसी बरतन में रख कर हवा में उड़ाना ।
ओसारा (सं० पु०) दालान, बरामदा ।
ओसीसा (सं० पु०) तकिया, उसीस ।
ओह (अव्य०) क्लेशसूचक अव्यय ।
ओहट (सं० स्त्री०) ओझल, ओट ।
ओहटा (क्रि० वि०) दूर ।
ओहदा (अ० सं० पु०) पद, स्थान । [कार्य-कर्ता ।
ओहदेदार (फ़ा० सं० पु०) स्थानापन्न व्यक्ति, अधिकारी,
ओहर (सं० स्त्री०) ओट, ओझल ।
ओहरना (क्रि० अ०) घटना, कम होना ।
ओहरी (सं० स्त्री०) शिथिलता, थकावट ।
ओहा (सं० पु०) गाय का थन ।

ओहार (सं० पु०) परदा, रथ या पालकी के ऊपर डालने का कपड़ा।

ओहि (सर्व०) उसको, उसे।

ओहो (अव्य०) विस्मय या हर्ष सूचक अव्यय।

औ

औ यह 'अ' और 'उ' का वृद्धि रूप है, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ और ओठ है।

औ (सं० पु०) अनन्त, शेष, निःस्वन, (सं० स्त्री०) पृथ्वी, विश्वधारा (अव्य०) संयोजक अव्यय, (वि०) दूसरा, अन्य

औंगी (सं० स्त्री०) चुप्पी, मौन, गूंगापन।

औंघना (क्रि० अ०) झपकी लेना, ऊंघना।

औंघाई (सं० स्त्री०) झपकी, तन्द्रा, पतली नींद।

औंघाना (क्रि० अ०) देखो औंघना।

औंजना (क्रि० अ०) अकुलाना, ऊबना, व्याकुल होना।

औंठ (सं० स्त्री०) छोर, किनारा, अवँठ।

औंड़ (सं० पु०) बेलदार।

औंड़ा (वि०) गहरा, अथाह।

औड़ा पौंड़ा (वि०) अट पट, अंडबंड, इधर उधर।

औंधना (क्रि० अ०) उलटना, उलटा होना, उलटा जाना।

औंधा (वि०) उलटा, पट, मुंह के बल।

औंधाना (क्रि० स०) उलटना, उलट देना, नीचे मुंह कर देना, पट करना, पट कर देना।

औंरा (सं० पु०) आंवरा, धात्री फल, आमलकी।

औंला (सं० पु०) देखो औंरा।

औंलासार (सं० पु०) इसी नाम का गंधक।

औक़ात (अ० सं० पु०) हैसियत, समय, वक्त।

औकारान्त (सं० पु०) वे शब्द जिनके अन्त में औ हो।

औखद (सं० पु०) देखो औषधि।

औगत (सं० स्त्री०) दुर्दशा, दुर्गति, (वि०) विदित, ज्ञात।

औगाह (वि०) अथाह, गम्भीर। [बट कर बनाया जाय।

औगी (सं० स्त्री०) कोड़ा, चाबुक, वह कोड़ा जो रस्सी

औगुण (सं० पु०) दोष, दुर्गुण, कलङ्क।

अगुणी (वि०) दुर्गुणी, कलङ्की, ऐबी।

औगुन (सं० पु०) देखो औगुण।

औगुनी (वि०) देखो औगुणी।

औघट (वि०) अवघट, दुर्गम, अगम्य, दुस्तर।

औघड़ (सं० पु०) अघोरी, मौजी, अमंगल के चिह्न, अपशकुन।

औचक (क्रि० वि०) अचानक, अकस्मात्, हठात्, सहसा। [झंझट, कठिनाई।

औचट (क्रि० वि०) देखो औचक, (सं० स्त्री०) संकट,

औछु (सं०स्त्री०) दारुहल्दी की जड़।

औज़ार (अ० सं० पु०) बढ़ई लोहार आदि के हथियार।

औझड़ (सं० पु०) धक्का, खोंच, (क्रि० वि०) लगातार, निरन्तर।

औटन (सं० स्त्री०) उबाल, उफान, ताप, छुरी।

औटना (क्रि० स०) खौलाना, गरम करना, उबालना।

औतार (सं० पु०) देखो अवतार। [अभिलाषा।

औत्सुक्य (सं० पु०) उत्सुकता, हौसला, उत्कण्ठा,

औदनिक (सं० पु०) रसोइया।

औदरिक (वि०) पेट, उदर-विषयक।

औदात (वि०) श्वेत, सफ़ेद।

औदान (सं० पु०) घलुआ, घाल, सेंत का।

औदार्य (सं० पु०) उदारता, महत्ता, श्रेष्ठत्व। [अनिच्छा।

औदास्य (सं० पु०) उदासी, वैराग्य, मनोमालिन्य,

औदास्य भाव (सं० पु०) वैराग्य भाव, उदासीनता।

औदीच्य (सं० पु०) ब्राह्मणों की एक जाति जो गुजरात में रहते हैं।

औद्धत्य (सं० पु०) धृष्टता, ढिठाई, उग्रता, उजड्डपन।

औद्योगिक (वि०) उद्योग-संबन्धी।

औद्वाहिक (वि०) बिवाह संबन्धी, बिवाह विषयक।

औना पौना (वि०) थोड़ा-बहुत, आधा-तीहा, न्यूनाधिक।

औपचारिक (वि०) उपचार-सम्बन्धी, सेवा-सम्बन्धी।

और (अव्य०) संयोजक अव्यय, (वि०) अन्य, भिन्न, दूसरा।

औरत (सं० स्त्री०) स्त्री, पत्नी, भार्या, जोरू।

औरस (सं० पु०) अपनी धर्म पत्नी से उत्पन्न पुत्र।

औरेब (सं० पु०) टेढ़ी चाल, वक्रगति, कपड़े की तिरछी काट, दाव पेंच की बात, उलझन।

और्ध्वदैहिक (वि०) अन्त्येष्टि क्रिया।

औलाद (अ० सं० स्त्री०) संतति, सन्तान।

औवल (अ० वि०) सर्वोत्तम, प्रधान, पहिला।

औषध (सं० पु०) दवा, भेषज।

औषधालय (सं० पु०) दवाखाना, शफ़ाखाना।

औसत (अ० सं० पु०) माध्यमिक, साधारण, सामान्य, भिन्न भिन्न संख्याओं को जोड़ कर भाग देने से जो बराबर आवे वह।

औसना (क्रि० अ०) गरमी पड़ना, उमस होना, बासी होना।

औसर (सं० पु०) अवकाश, समय, छुट्टी।

औसान (सं० पु०) अन्त, समाप्ति, परिणाम, बोध, चेत, धैर्य, साहस।

औसेर (सं० पु०) अटकाव, उलझन, फँसाव, चिन्ता, [खटका।

औहाती (वि०) अहिवाती, सधवा।

क

क 'क' व्यञ्जन का पहला वर्ण, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है।

कं (सं० पु०) केवल इसका प्रयोग संस्कृत में होता है, सो भी कहीं कहीं। मस्तक, सुख, जल, केश, कामदेव, अग्नि, आत्मा, मनोरथ, निपुण, धन, प्रकाश, ब्रह्मा, विष्णु, पवन, यम, मन. शब्द, शरीर सूर्य, राजा। भक्त नन्ददास ने हिन्दी में भी इस का प्रयोग किया है, यथा—

कं सुख, कं जल कं अनल, कं शिर कं पुनि काम।
कं कंचन ते प्रीति तजि सदा कहो हरि नाम॥

कँउधा (सं० पु०) प्रकाश, विद्युत् की चमक, विद्युत्।

कंकड़ (सं०पु०) पृथ्वी का सख़्त विकार विशेष, यह खानों में से निकलता है, सड़क आदि के बनाने के काम में अधिकता से आता है और इसका चूना भी बनता है। इसके कई भेद होते हैं।

कंकड़ीला (वि०) कंकड़ मिला हुआ, जहां कंकड़ अधिक हो वह स्थान, वह भूमि जहाँ कंकड़ अधिक हो।

कँकर (सं पु०) देखो कंकड़

कँकरीट (अं० सं० पु०) पक्की छत बनाने का एक मसाला चूना, ईंट का चूरा, बालू आदि के योग से यह बनता है।

कँखवारी (सं० स्त्री०) काँख में होने वाला फोड़ा, कँखरवार, कँखौरी।

कँखौरी (सं० स्त्री०) कंखवारी, कँखरवारी।

कँगन (सं०पु०) बलय, कड़ा, हाथ में पहनने का आभूषण।

मुहा०—हाथ कंगन को आरसी क्या = अर्थात् जानी बात के लिये प्रमाण की क्या आवश्यकता। हाथ के कंगन को देखने के लिए दर्पण की आवश्यकता नहीं हुआ करती।

कँगना (सं० पु०) आभूषण विशेष, एक प्रकार के आभूषण जिसे स्त्रियाँ हाथ में पहनती हैं। [का नाम है।

कँगनी (सं० स्त्री०) यह स्त्रियों के हाथ के एक आभूषण

कंगला (सं० पु०) दरिद्र, असमर्थ, भिक्षुक, कंगाल।

कँगही (सं० स्त्री०) कङ्घी, माथे के बाल साफ़ करने की एक वस्तु।

कँगारू (सं० पु०) जन्तु विशेष।

कँगाल (सं० पु०) दरिद्र, भिक्षुक, भिखारी, असमर्थ।

कँगाल बाँका (सं० पु०) दरिद्र और अभिमानी।

कँगाली (सं० स्त्री०) दरिद्रता, ग़रीबी।

कँगूरा (सं० पु०) शिखर, पर्वत या ऊंचे मकानों के ऊपर का भाग।

कँगूरिया (सं० स्त्री०) छोटी अंगुली, कनगुरिया।

कंघा (सं० पु०) कँगही।

कंघी (सं० स्त्री०) छोटी कँगही।

कँजड़ (सं० पु०) जाति विशेष, नीच जाति विशेष, इस जाति के लोग भीख माँगने के लिए प्रायः घूमा करते हैं। [भी अधिक प्यार करने वाला।

कंजूस (सं० पु०) कृपण, मक्खीचूस, धन को प्राणों से

कंजूसी (सं० स्त्री०) कृपणता।

कँटबाँस (सं० पु०) एक प्रकार का बांस, यह पतला होता है, और खोखला नहीं होता, यह मज़बूत होता है इससे लोग इसकी लाठी बनाते हैं।

कँटिया (सं० स्त्री०) छोटा काँटा, छोटी कील, कूएँ में गिरी वस्तु निकालने की एक वस्तु, मछली पकड़ने ली बंसी। [काँटा अधिक हो।

कँटीला (वि०) काँटेदार, वह वृक्ष या स्थान जहाँ

कंटोप (सं० पु०) टोपी, बड़ी टोपी, जो कानों को भी ढँक देती है, प्रायः साधु लोग इसे पहनते हैं।

कँठ तरिया (सं० स्त्री०) कंठहार, गले का एक आभूषण।
कँडरा (सं० पु०) सरसों की मोटी डण्ठी, इसे गांव के लड़के खाते हैं, कोई इसका साग भी बनाते हैं।
कंडा (सं० पु०) उपरी गोहरी, सुखाया हुआ गोबर, यह हवन आदि के लिए अग्नि जलाने के काम आता है।
कंडी (सं० स्त्री०) गोहरी, उपरी। [जाता है
कंडील (सं० स्त्री०) लालटेन,इसमें दिया रख कर जलाया
कँदौरा (सं० पु०) करधनी, कँदैला।
कँदौला (वि०) गंदला, कांदो वाला, मलिन जल।
कँधनो (सं० स्त्री०) करधनी, कमर में पहनने का गहना।
कँधावर (सं० पु०) बैल के कंधे पर रखा जाने वाला जूए का एक भाग, कंधे पर रखने का दुपट्टा, जामाता बहनोई आदि मान्य को दी जानेवाली धोती।
कँधेली (सं० स्त्री०) घोड़े और बैलों का एक साज़, घोड़ों को गाड़ी आदि में जोतने के लिए तथा उन पर कुछ लादने के लिए उनकी पीठ पर यह रखा जाता है। बैल की पीठ पर भी यह रखा जाता है जब उस पर कुछ लादना होता है।
कँधैया (सं० पु०) कन्हैया, श्रीकृष्ण।
कँपकपी (सं० स्त्री०) कम्प, काँपना, संचलन।
कँपना (क्रि० अ०) हिलना, डोलना, संचलित होना, भयभीत होना।
कँपाना (क्रि० स०) हिलाना, डुलाना, भयभीत करना।
कम्पास (सं० स्त्री०) दिशाओं का ज्ञान कराने वाला यंत्र विशेष, दिग्दर्शक यन्त्र।
कम्बख़्त (वि०) अभागा, बदमाश। [काम में आता।
कम्बलगट्टा (सं० पु०) कमल का बीज, यह औषधि के
कम्वासा (सं० पु०) नाती का पुत्र, कन्या के पुत्र का पुत्र।
कंस (सं० पु०) धातु विशेष, ताम्बा और राङ्गा के मिलाने से यह धातु बनती है। मथुरा का एक प्रसिद्ध राजा जो श्री कृष्ण का प्रतिद्वन्द्वी था इसके पिता का नाम उग्रसेन था। जरासन्ध की अस्ति और प्राप्ति नाम की दोनों कन्याएँ इसको ब्याही गई थीं, यह श्रीकृष्ण का मामा था इसने श्रीकृष्ण के साथ पूर्ण शत्रुता की थी। और यह श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया।
कंसकार (सं० पु०) जाति विशेष, इस जाति के लोग ताँबे पीतल आदि धातुओं के बर्तन बनाने और बेचने का काम करते हैं।
कंसताल (सं० पु०) वाद्य विशेष, झाँझ विशेष।
कइत (सं० स्त्री०) ओर, तरफ़।
कई (वि०) कितने ही, बहुत से, अनेक।
कएक (वि०) थोड़ा, अल्प, कतिपय।
ककई (सं० स्त्री०) देखो कंघी।
ककड़ासींगी (सं० स्त्री०) औषधि विशेष।
ककड़ी (सं० स्त्री०) एक फल विशेष, ककरी।
ककना (सं० पु०) कङ्गन, हाथ में पहिनने का एक आभूषण।
ककनी (सं० स्त्री०) आभूषण विशेष जिसे स्त्रियाँ हाथों में पहिनती हैं, पहुँची। [फोड़ा।
ककराली (सं० स्त्री०) काँख में उत्पन्न होने वाला
ककवा (सं० पु०) कंघा।
ककरेज़ा (सं० पु०) बैजनी रंग।
ककरौंधा (सं० पु०) छोटा औषधि का पौधा।
ककहरा (सं० पु०) क से लेकर ह तक के वर्ण, वरतनियाँ। [ककई, चौबगला।
ककही (सं० स्त्री०) लाल रङ्ग की रुई का नाम है,
ककुत्स्थ (सं० पु०) इक्ष्वाकु नाम के एक राजा का पुत्र।
ककुद् (सं० पु०) एक पर्व्वत का नाम है, बैल के कंधे के कुब्बड़ को भी कहते हैं, राज चिह्न।
ककुभ (सं० पु०) अर्जुन वृक्ष, वीणा का बाँका भाग।
ककुलाना (क्रि० स०) खजुलाना।
ककोरना (क्रि० स०) खुरचना, उखाड़ना।
कक्कड़ (सं० पु०) तम्बाकू मिश्रित सुरती, जिसे चिलम में रख कर पीते हैं।
कक्का (सं० पु०) पिता का छोटा भाई, काका, केकय देश का नाम है, वाद्य विशेष, नगाड़ा।
कक्ष (सं० पु०) काँख, बगल, काँछ। [एक तौल, रत्ती।
कक्षा (सं० स्त्री०) परिधि, तुलना, समानता, बराबरी,
कक्षीवान (सं० पु०) एक ऋषि का नाम है।
कखरो (सं० पु०) देखो कक्ष। [नाम है।
कखौरी (सं० स्त्री०) काँख में निकलने वाले फोड़े का
कगदही (सं० स्त्री०) कागज़ बाँधने का बस्ता।
कगार (सं० पु०) उठा हुआ किनारा, जो सुन्दरता विशेष के वास्ते बनाया जाता है, कारनिस, कँगनी।

कगार (सं० पु०) करार, नदी का ढहता हुआ किनारा, उच्च खण्ड ।

कगारा (सं० स्त्री०) करारा, टीला ।

कङ्क (सं० पु०) बनावटी ब्राह्मण, मांस खानेवाला पक्षी, बगला, यमराज, और युधिष्ठिर को भी कहते हैं क्योंकि विराट राजा के यह इन्होंने भी ब्राह्मण का भेष बनाया था ।

कङ्कण (सं० पु०) देखो ककना ।

कङ्कपत्र (सं० पु०) उड़ने वाला बाण ।

कङ्कर (सं० पु०) कँकर, रोड़ा ।

कङ्काल (सं० पु०) हड्डी ।

कङ्काल माला (सं० स्त्री०) हड्डियों की माला ।

कङ्काल माली (सं० पु०) शिव, भैरव ।

कङ्घा (सं० पु०) कंघा।

कच (सं० पु०) लोभ, केश, फोड़े की सूखी पपड़ी, वृहस्पति का पुत्र, मल्लयुद्ध का एक दाँव ।

कचपल (सं० पु०) कच्चापन, भीरुता ।

कचक (सं० स्त्री०) कुचलाहट की चोट, किरकिर ।

कचकच (सं० स्त्री०) वितण्डा, व्यर्थ कोलाहल ।

कचकचाना (क्रि० अ०) तोड़ना, फोड़ना, अति शक्ति लगा कर दाँत पीसना ।

कचकड़ (सं० पु०) कछुए की खोपड़ी ।

कचकना (क्रि० अ०) ठेस लगाना, कुचलना ।

कचका (सं० पु०) कछुए का ऊपरी भाग ।

कचकेला (सं० पु०) कच्ची केले की फली ।

कचकैया (सं० पु०) ठोकर, ठेस ।

कचनार (सं० पु०) वृक्ष विशेष ।

कचपच(सं० पु०) गुत्थमगुत्था,सघन,मचामच । [नक्षत्र ।

कचपचिया (सं० पु०) झुण्ड, समूह, गुच्छा, कृत्तिका

कचपन (सं० पु०) अपक्वता, कच्चापन ।

कचबच (सं० पु०) लड़कों का बोल ।

कचमच (सं० स्त्री०) बकबक ।

कचबना (क्रि०स०) स्वतंत्रता पूर्व्व खाना ।

कचर कचर (वि०) कच्चे फल खाते समय का शब्द विशेष

कचरकूट (सं० पु०) मार पीट ।

कचरना (क्रि० स०) रौंदना, दबाना, चबाना, कुचलाना ।

कचर पचर (सं० पु०) गिचपिच ।

कचरा (सं० पु०) कूड़ा, बिना पका ख़रबूज़ा ।

कचरी (सं० स्त्री) सूखा फल विशेष, चने सहित चने के वृक्ष की डालियाँ ।

कचला (सं० पु०) मलीन, गीली मिट्टी, कीचड़ ।

कचलोंदा (सं० पु०) कच्चे आटे की लोई, वा गुंधे हुए आटे का गोला ।

कचलोन (सं० पु०) लवण विशेष ।

कचलोहिया (सं० स्त्री०) कच्चा लोहा ।

कचलोहू (सं० पु०) मवाद, कच्चा खून, घाव का पानी ।

कचवाँसी(सं० स्त्री०) खेत नापने का एक छोटा नाप, बीघे का आठ हजारवाँ भाग ।

कचहरी (सं० स्त्री०) सभा, विचार स्थल, जमघट ।

कचाई (सं० स्त्री०) अपक्वता, अजीर्ण, हज़म न होना, कच्चापन ।

कचाल (सं० पु०) वाद विवाद, झगड़ा टंटा, कलह ।

कचालू (सं० पु०) एक प्रकार की घुइयाँ, कन्द विशेष, गरम मसाला आदि डाले हुए कई एक फल, अथवा आलू ।

कचिया (सं० पु०) हँसिया, दाँती ।

कचियाना (क्रि० अ०) हिचकिचाना, डरना, निरुत्साह

कचियाहट (सं० स्त्री०) अपक्वता, कच्चापन । [होना ।

कचूमर (सं० स्त्री०) कुचला, चूर्ण, भुरकुस ।

कचूर (सं० पु०) कन्द विशेष सुगन्ध युक्त ।

कचेरा (सं० पु०) जाति विशेष । [हुई पूड़ी ।

कचौड़ी (सं० स्त्री०) दाल या आलू आदि पदार्थ भरी

कच्चा (वि०) अपक्व, बिना पका ।

कच्चाचिट्ठा (सं० पु०) समस्त वृत्त सूचक पत्र, ठीक ब्यौरा, सत्य समाचार ।

कच्चापन (सं० पु०) कचाई । [भोजन ।

कच्ची (स्त्री० पु०) बे पकी रसोई, जल में बनाए हुए

कच्चू (सं० पु०) कन्दविशेष का नाम है ।

कच्छ (सं०पु०) गुजरात के समीप बसे हुए देश का नाम, धोती की लांग ।

कच्छप (सं० पु०) कछुआ, विश्वामित्र ऋषि के एक पुत्र का नाम, मद्य खींचने का एक यन्त्र, एक तालू के रोग का नाम, नाग विशेष । [लगती हैं ।

कच्छा (सं० स्त्री०) नौका विशेष जिसमें दो पतवारें

कछ (सं० पु०) नितम्ब, काँछ ।

कछना (सं० पु०) ऊँची बँधी हुई धोती ।

कछुनी (सं० स्त्री०) देखो कछुना ।
कछुलम्पट (सं०पु०) बदमाश । [पूतों में होती है ।
कछुवाहा (सं० पु०) जाति विशेष का नाम है जो राज-
कछार (सं० पु०) नदी या तालाब के किनारे की वह ज़मीन जहाँ जल भरा रहता है या किनारे की ज़मीन ।
कछारना (क्रि० स०) पछारना, धोना ।
कछु (वि०) अल्प, थोड़ा, किञ्चित् । [है ।
कछुक (वि०) थोड़ा यह प्रयोग प्रायः रामायण में आता
कछुवा (सं० पु०) कमठ, कूर्म ।
कछौटी (सं० स्त्री०) छोटी धोती, कोपीन, लँगोटी ।
कज (सं०पु०) कञ्ज, दोष, कमल, ऐब ।
कजक (सं० पु०) अङ्कुश ।
कजरा (सं० पु०) काजल, या काली आंखों वाला बैल (वि०) काजल वाला, काला । [जाता है ।
कजरी (सं० स्त्री०) गीत विशेष जो प्रायः वर्षा में गया
कजरे (वि०) काजल लगाए हुए । [जाता है ।
कजरौटा (सं० पु०) पात्र विशेष जिसमें काजल रक्खा
कजला (सं० पु०) स्याह, कज्जलाङ्कित, खरबूजा विशेष ।
कजली (सं० स्त्री०) (देखो कजरी) एक त्यौहार जो बुँदेल, खण्ड में श्रावण पूर्णिमा को मनाया जाता है ।
कजलीतीज (सं० स्त्री०) भाद्रपद कृष्णतीज का नाम है ।
कजलीवन (सं० पु०) बन विशेष जो आसाम देश में है इसमें प्रायः हाथी अधिक होते हैं । केले के बन का भी नाम है ।
कजलौटी (सं० स्त्री०) काजर पारने का मिट्टी का पात्र ।
कज्जल (सं० पु०) अंजन, सुरमा, गिरि, पर्व्वत विशेष ।
कज्जलगिरि (सं० पु०) काला पहाड़ ।
कजा (सं० पु०) काँजी, माड़ ।
क़ज़ा (अ० सं० स्त्री०) मृत्यु ।
क़ज़ाक़ (अ० सं० पु०) लुटेरा, डाकू ।
क़ज़िया (अ० सं० पु०) झगड़ा, लड़ाई, बखेड़ा ।
क़ज़्ज़ाक़ी (अ० सं० स्त्री०) क़ज़्ज़ाक का कार्य, लुटेरापन, चालाकी, लूट मार [जाति का नाम ।
कञ्चन (सं० पु०) कनक, सोना, सुवर्ण, धन, धतूरा, एक
कञ्चनक (सं०पु०) वृक्ष विशेष, मैनफल, कचनार ।
कञ्चनी (सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, वेश्या, कञ्चन जाति की अबला, कनक पुतली ।

कञ्चु (सं० पु०) कुर्ता, चोली, अँगिया ।
कञ्चुकी (सं०पु०) चोली ।
कञ्ज (सं० पु०) ब्रह्मा, अमृत, केश, पल ।
कञ्जर (सं० पु०) जाति विशेष ।
कञ्जा (सं०) भूरी आँख वाला ।
कञ्जिया (सं० स्त्री०) नेत्रों की अंजनी ।
कञ्जूस (वि०) सूम ।
कञ्जूसी (सं० स्त्री०) सूम होना ।
कट (सं० पु०) खस, गण्डस्थल, कमर, कटि, नीवि, एक घास विशेष, टट्टी ।
कटक (सं० पु०) सेना पर्वतीय मध्य भाग, कङ्कण, राज-शिविर, चक्र, पहाड़ की समभूमि, सामुद्रिक नमक, झुण्ड, नितम्ब, मेखला चक्र, नगर विशेष, जो उड़ीसा प्रान्त में है, हाथी के दाँतों पर चढ़े हुए कड़े, घास की चटाई, साथरी, गोंदरी, देश विदेश ।
कटकट (सं० पु०) झगड़ा, लड़ाई ।
कटकटहिं (क्रि० वि०) कटकटाते हैं, किचकिचाते हैं, क्रोधित शब्द करते हैं ।
कटकटाना (क्रि० अ०) दाँत पीसना ।
कटकना (सं० पु०) ढाँचा, बोधक, उपाय ।
कटकाई (सं० पु०) समूह, सेना झुण्ड ।
कटकिना (सं० पु०) दुःख से समय बिताना ।
कटकी (वि०) कटक की बनाई हुए चीजें, गिरि, पर्वत ।
कटखना (वि०) कटौवा, कटहा, काटने वाला ।
कटघरा (सं० पु०) कटहरा, काठ का घर, कठरा ।
कटती (सं० स्त्री०) बिक्री ।
कटन (सं० पु०) काट, कतरन ।
कटना (क्रि० अ०) समाप्त होना, बीतना, कटजाना ।
कटनि (सं० स्त्री०) काट, प्रीति, रीझन ।
कटनी (सं० स्त्री०) खेत के काटने का समय, काटने का अस्त्र विशेष, काटने का काम ।
कटफल (सं० पु०) फल विशेष, कायफल, कैफल । [हाट ।
कटरा (सं० पु०) नगर के मध्य भाग का नाम है, चौक,
कटहर (सं० पु०) एक फल का नाम है ।
कटहरा (सं० पु०) काठ का बड़ा घर, कठहरा ।
कटहल (सं० पु०) देखो कटहर ।
कटहा (वि०) काटने वाला, जिसकी आदत दाँतों से काटने की हो ।

कटा (सं० पु०) बध, हत्या, मारामारी, काटाकाटी।
कटाकटी (सं० स्त्री०) मार, काट। [द्वारा संकेत।
कटाक्ष (सं० पु०) भाव भरी दृष्टि, तिरछी चितवन, नेत्रों
कटान (वि०) घट जाना, पैना, तेज़।
कटार (सं० पु०) कटारी, ख़ञ्जर, शस्त्र विशेष।
कटाल (सं० पु०) समुद्र की बाढ़, जुआर। [हुआ स्थल।
कटाव (सं० पु०) सरिता का तट, नदी के वेग से गिरता
कटाह (सं० पु०) बड़ी कड़ाही, कड़ाह, हण्डा।
कटि (सं० पु०) देह का मध्य हिस्सा, कमर।
कटित (सं० पु०) खपत, विक्रय।
कटितर (सं० पु०) कटिदेश, नितम्ब।
कटिदेश (सं० पु०) शरीर का मध्य भाग।
कटिबन्ध (सं० पु०) भूमि का गरम ठंडा भाग, कमरबन्द।
कटिबद्ध (सं० पु०) तत्पर, उद्यत, तैयार, कमर बाँधे हुए।
कटिया (सं० स्त्री०) पशुओं का कटा हुआ चारा, रत्नों को सुडौल करने वाला, सन का बना हुआ कपड़ा, धोती।
कटिसूत्र (सं० पु०) कमर में पहिनने का आभूषण, करधनी, कमर का डोरा।
कटीला (वि०) एक पौधे का नाम, कण्टक युक्त, कांटों वाला, सावन्त, कतीरा गोंद। [मत्सर, बुरा।
कटु (वि०) कड़ुआ, चरपरा, तीक्ष्ण सुगन्धि, अप्रिय,
कटुआ (सं० पु०) मुसलमान, महुरों की छोटी २ शाख़, एक काले रङ्ग का कीड़ा।
कटुक (वि०) कड़ुआ, तिक्त, तीक्ष्ण, कटु।
कटुकी (सं० स्त्री०) औषधि विशेष, कुटकी।
कटुग्रन्थि (सं० स्त्री०) एक औषधि का नाम है, पीपरामूल, सोंठ।
कटुत्कट (वि०) कटुभद्र (सं० स्त्री०) सोंठ।
कटुभी (सं० स्त्री०) मालकागुनी धान विशेष।
कटुरोहिणी (सं० स्त्री०) कुटकी, औषधि विशेष।
कटूसा (सं० स्त्री०) बुरी बात, फूहड़पन।
कटेहर (सं० पु०) खोंपा, हल की वह लकड़ी जिसमें फाल बैठाया जाता है।
कटैया (सं० पु०) काटने वाला, फल विशेष (भटकटैया)
कटैला (सं० पु०) एक मूल्यवान पत्थर। [रक्खे जाते हैं।
कटोरदान (सं० पु०) एक पात्र विशेष, जिसमें भोजन
कटोरा (सं० पु०) एक पात्र का नाम है।
कटोरिया (सं० स्त्री०) कटोरी, बेलिया।
कटोरी (सं० स्त्री०) छोटा बेला, पात्र विशेष।
कटोल (सं० पु०) फल विशेष, चण्डाल।
कट्टर (वि०) काटने वाला, दुराग्रही, दृढ़, हठी, काट खाने वाला, अन्ध विश्वासी।
कट्टहा (सं० पु०) महाब्राह्मण, कट्टिया, महापात्र।
कट्टहिं (क्रि०) काटते हैं। [का यन्त्र।
कट्ठा (सं० पु०) नापने की वस्तु, बिस्वा, खेत नापने
कठ (सं० पु०) एक मुनि का नाम है, एक वेद की शाखा (वि०) जङ्गली, निकृष्ट।
कठउपनिषत् (सं० स्त्री०) पुस्तक विशेष, वेदान्त शास्त्र।
कठघरा (सं० पु०) कटहरा, घेरा, बेड़ा, काठ का घेरा, चारदीवारी।
कठड़ा (सं० पु०) कटहरा, कठौती, काष्ठपात्र।
कठताल (सं० पु०) करताल।
कठन्दर (सं० पु०) रोग विशेष, उदर का कड़ापन, काष्ठोदर।
कठपुतली (सं० पु०) काठ की पुतली, काष्ठमूर्ति।
कठफुड़वा (सं० पु०) पक्षी विशेष, कड़ा फोड़ा।
कठविरुकी (सं० स्त्री०) भेक, ऊसर साँड़। [आह्वाव, होदी।
कठरा (सं० पु०) काठ का बना हुआ पात्र, कठौती,
कठल (सं० पु०) गले का भूषण, कठुला।
कठवता (सं० स्त्री०) काठ निर्मित पात्र, कठवत्।
कठशाखा (सं० स्त्री०) ऋग्वेद का एक भाग। [हास्य।
कठहंसी (सं० स्त्री०) शुष्कहास्य, अकारण हास्य, काष्ठ-
कठारा (सं० पु०) नदी व तालाब का किनारा।
कठारी (सं० पु०) काठ का बना कमण्डल।
कठिन (वि०) कठोर, कर्कश, कड़ा, क्लिष्ट, दृढ़, स्तब्ध, दुष्कर, दुस्साध्यता (सं० स्त्री०) कठोरता, निठुरता, दुरूहता, मज़बूती।
कठिनता (सं० स्त्री०) कर्कशता, कठोरता।
कठिनत्व (सं० पु०) कड़ापन, कठिनता।
कठिन पृष्ठक (सं० पु०) कूर्म, कछुआ।
कठिनान्तःकरण (सं० पु०) निठुर, निर्दय।
कठिनिका (सं० स्त्री०) खड़ी, कठिनी।
कठिनी (सं० स्त्री०) मिट्टी, लुई, खड़ी। [माला।
कठिया (सं० पु०) कठौती, फौंदा, जाला, काठ की
कठियाना (क्रि० अ०) कड़ा हो जाना, कड़ा होना, सूख जाना, काठ की भाँति हो जाना।
कठुआना (क्रि० अ०) देखो कठियाना।

कठिल्ल (सं० पु०) करेला, तरकारी।
कठुला (सं० पु०) गले में पहिनने की माला जो बालकों को पहिनाई जाती है, कठला।
कठेठ (वि०) कठोर, कठिन, सख़्त।
कठेठी (सं० स्त्री०) कठोर, कड़ी, कठिन।
कठोदर (सं० पु०) पेट की बीमारी विशेष।
कठोर (वि०) निर्दय, बेरहम, निष्ठुर, कठिन, कड़ा, क्लिष्ट।
कठोरता (सं० स्त्री०) कड़ाई, निर्दयता, निठुरता, निष्ठुरता, बेरहमी।
कठोरताई (सं० स्त्री०) क्लिष्टता, कठिनता, निर्दयीपन।
कठोरपन (सं० पु०) कठोरता, कड़ापन।
कठोलिया (सं० पु०) काठ का बना छोटा बर्तन।
कठौत (सं० स्त्री०) छोटा कठौता।
कठौता (सं० पु०) काष्ठ पात्र, काठ का बड़ा बर्तन।
कठौती (सं० स्त्री०) देखो कठौत।
कड़ (सं० पु०) कुसुम, बरैं, कमर, बर्रे, पुष्प का बीज।
कड़क (सं० स्त्री०) कड़कड़ाहट का शब्द, कठोर शब्द, बिजली का शब्द, तड़प, दपेट, गर्जन, वीरता का वचन, घोड़े की सरपट चाल।
कड़कड़ (सं० पु०) बादलकी गर्जन, ताशे की ध्वनि, कठिन शब्द, दो वस्तुओं का आघात।
कड़कड़ाता (वि०) कड़कड़ शब्द करता हुआ, अति तेज़, घोर, प्रचण्ड।
कड़कड़ाना (क्रि० अ०) घोर नाद करना, कठोर ध्वनि, चूर २ करना। [महान शब्द।
कड़कड़ाहट (सं० स्त्री०) कड़ कड़ शब्द, गरज, घोर ध्वनि,
कड़कना (क्रि० अ०) गड़गड़ाना, बादल का शब्द, चटकने की आवाज़, दरकना, रेशमी कपड़े का तह पर से कट जाना। [भयंकर शब्द।
कड़का (सं० पु०) धड़ाका, बिजली, ज़ोर की आवाज़,
कड़खा (सं० पु०) वीरों को उत्साहित करने वाले गीत।
कड़खैत (सं०पु०) उत्साही गीत गाने वाला आदमी, भाट, चारण।
कड़वी (सं० स्त्री०) कटु, करुई, तिक्त।
कड़ा (सं० पु०) हाथ पाँव में पहिनने का आभूषण, लोहे का चूल्हा व कुण्ड, कबूतर की एक जाति, कठिन, मुश्किल।
कड़ाई (सं० स्त्री०) कठिनता, कठोरता, निर्दयता, सख़्ती।
कड़ाका (सं० पु०) कड़ी वस्तु टूटने का शब्द, प्रचण्ड।
कड़ाबीन (सं० स्त्री०) कमर में बाँधने की छोटी बन्दूक अथवा पुरानी चाल की बड़े मुँह वाली बन्दूक।
कड़ाह (सं०पु०) बड़ी कड़ाही, कड़ाहा, लोहे का गोल पात्र।
कड़ाहा (सं०पु०) देखो कड़ाह। [हलुआ आदि बनाते हैं।
कड़ाही (सं० स्त्री०) धातु का वह पात्र जिसमें पूड़ी
कड़िहारु (सं० पु०) मल्लाह, मांझी। [गीत का एक पद
कड़ी (सं० स्त्री०) लोहे-पीतल की छोटी जंजीर, या छल्ला,
कड़ीदार (वि०) छल्ला युक्त, जिसमें कड़ी लगी हुई हो।
कड़ुआ (वि०) अप्रिय, कटु, स्वाद रहित।
मुहा०—कड़ुआ लगना = बुरा मालूम होना।
कड़ुआ तेल (सं० पु०) सरसों का तेल जिसमें झाल विशेष होता है।
कड़ुआना (क्रि० अ०) कड़ुआ लगना, चिढ़ना, खिसियाना, खुनसाना, बुरा लगना, अप्रिय मालूम होना।
कड़ुआहट (सं० स्त्री०) कड़ुआपन।
कड़ू (वि०) कड़ुआ, तीखा। [पुरुष।
कड़ेर (सं० पु०) मोर की डाढ़ी, खराद करने वाला
कढ़ना (क्रि० अ०) निकलना, जाना, उदय होना, दौड़ में आगे निकल जाना।
कढ़ाई (सं० स्त्री०) देखो "कड़ाही", निकलाई, निकलवाई, बेल-बूटा निकालने का कार्य्य।
कढ़ाना (क्रि० स०) कढ़वाना, बाहर कराना, खिंचवा लेना, निकलवाना। [का उभार।
कढ़ाव (सं० पु०) कसीदे का काम, कड़ाह, बेल-बूटे
कढ़ावना (क्रि० स०) निकलवाना, बाहर करना, खिंचवाना, कसीदा कराना। [कसीदा की हुई वस्तु।
कढ़ी (सं० स्त्री०) भारतवासियों का एक प्रकार का भोजन
कढ़ुआ (सं० पु०) कढ़ुआ, निकाला हुआ, ऋण, क़र्ज़ लिया हुआ धन, जाति-च्युत किया हुआ।
कढ़ोरना (क्रि०) देखो घसीटना।
कढ़ैया (सं० स्त्री०) देखो कड़ाही।
कण (सं० पु०) टुकड़ा, किनका, अन्न का दाना, भिक्षा।
कणजीरा (सं० पु०) सफ़ेद जीरा।
कणभोजी (सं० पु०) कण भक्षक, कणाद मुनि।
कणा (सं० स्त्री०) पीपल, औषधि विशेष।
कणाद (सं० पु०) सुनार, सुवर्णकार, ऋषि विशेष, वैशेषिक दर्शन के रचयिता।

कणमात्र (सं० पु०) एक विन्दु, बहुत थोड़ा।
कणिका (सं० स्त्री०) किनकी, ज़र्रा, लेश, विन्दु।
कणिश (सं० पु०) गेहूँ आदि अन्न की बाल।
कणी (सं० स्त्री०) छोटा भाग, कनी।
कण्टक (सं० पु०) काँटा, सूल, क्षुद्र शत्रु, रोमाञ्च, दोष।
कण्टकद्रुम (सं० पु०) काँटेदार वृक्ष, सेमर का पेड़।
कण्टक प्रावृता (सं० स्त्री०) घृतकुमारी, घिकुआरी।
कण्टक फल (सं० पु०) सिंघाड़ा, धतूरा, कटहल आदि।
कण्टक भुक् (सं० पु०) ऊँट।
कण्टकमय (सं० पु०) काँटेदार, आपत्तिदायक, बुरा।
कण्टकलता (सं० स्त्री०) खीरा, फल विशेष।
कण्टकारि (सं० स्त्री०) भटकटैया।
कण्टार (वि०) कण्टकमय, कटीला।
कण्टिया (सं० पु०) आँकड़ी, छोटी कील।
कण्ठ (सं० पु०) गला, स्वर, घाँटी, उपस्थित।
कण्ठला (सं० स्त्री०) माला, आभूषण विशेष।
कण्ठस्थ (वि०) मुखस्थ।
कण्ठ पाशक (सं० पु०) हाथी के गले में बाँधने की रस्सी
कण्ठ भूषा (सं० स्त्री०)आभरण जो गले में पहिना जाता है, हार विशेष।
कण्ठमाला (सं० स्त्री०) एक रोग का नाम जो गले में होता है, विषबेल, गले में पहिनने की माला।
कण्ठा (सं० पु०) बड़े दाने की माला।
कण्ठागत (वि०) शरीर त्याग के उद्योगी।
कण्ठाग्र (वि०) मुखाग्र, कण्ठस्थ।
कण्ठिधारी (सं० पु०) वैरागी, भगत, कण्ठी पहनने वाला।
कण्ठी (सं० स्त्री०) छोटे दानों की माला।
कण्ठीरव (सं० पु०) शेर, कंठध्वनि, सस्वर।
कण्ठ्य (वि०) कण्ठ से उच्चारित होने वाले वर्ण।
कण्डा (सं० पु०) उपला, उपरी, गोहरी।
कण्डू (सं० पु०) खुजली, खाज, रोग विशेष।
कण्डूघ्न (सं० पु०) खुजली की औषधि।
कण्डूति (सं० स्त्री०) खुजली होना। [धुनिया।
कण्डेरा (सं० पु०) काण्डकार, बाण बनाने वाली जाति,
कण्डोला (सं० पु०) बाँस का बना अन्न रखने का पात्र।
कण्व (सं० पु०) प्राचीन ऋषि विशेष, जिनके बहुत से मंत्र ऋग्वेद में हैं यजुर्वेद के भी शाखाकार हैं, शकुन्तला के पालन कर्ता।

कत (सं० पु०) लेखनी का अग्र भाग, क़लम की नोक (अव्य०) कहाँ, कैसे, किस लिए, क्या, कौन हेतु।
कतक (सं० पु०) निर्मली, रीठा, (अव्य०) कितना।
कतनई (सं० स्त्री०) कताई, सूत कातने की मज़दूरी।
कतना (क्रि० अ०) काता जाना, (अव्य०) कितना।
कतनी (सं० स्त्री०) सूत कातने की टिकुरी, सूत कातने का सामान रखने वाली टोकरी, डलिया। [यन्त्र।
कतन्नी (सं० स्त्री० कतरनी, कपड़े आदि काटने का
कतरछाँट (सं० स्त्री०) काट छाँट, कतर-ब्योंत।
कतरन (सं० स्त्री०) कपड़े आदि के कटे हुए छोटे टुकड़े।
कतरना (क्रि० स०) काटना, ब्योंतना, किसी वस्तु को क़ैंची से काटना।
कतरनी (सं० स्त्री०) यंत्र विशेष, क़ैंची, मिक़राज़।
कतरब्योंत (सं० पु०) काट छाँट, उलट-फेर, हेर-फेर।
कतरवाई (सं० स्त्री०) काटने की मज़दूरी।
कतरवाना (क्रि०) कतरने में सहायता देना।
क़तरा (वि०) टुकड़ा, पृथक २ किया हुआ। [मज़दूरी।
कतराई (सं० स्त्री०) कतरने का काम या उसकी
कतराना (क्रि० अ०) बच कर निकल जाना, (क्रि० स०) कटवाना, छटवाना, ब्योंत कराना, अलग कराना।
कतरी (सं० स्त्री०) कोल्हू का भाग विशेष, जमी हुई मिठाई का कटा हुआ भाग, एक औज़ार, पीतल का बना आभूषण, काट छाँट करने का यन्त्र, क़ैंची।
कतवार (सं० पु०) कूड़ा-करकट, घास-फूस।
कतहूँ (अव्य०) कहीं भी, किसी जगह।
क़तल (अ० सं० पु०) क़त्ल, वध, हत्या।
क़तल करना (क्रि० स०) मार डालना, हत्या करना।
क़तलाम (अ० सं० पु०) सब की हत्या, घोर वध।
कतवाना (क्रि० स०) कातने में सहारा देना या दूसरे के द्वारा कातने का काम कराना।
कतवार (सं० पु०) कूड़ा-करकट, व्यर्थ-वस्तु, घास-फूस, बेकार-वस्तु। [ठाम, कौन से ठाम।
कतहूँ (अव्य०) कहीं, किसी जगह, किसी स्थान, कौने
कताई (सं० स्त्री०) कातना, कातने की विधि, कताने की मिहनत।
कताना (क्रि० स०) दूसरे के द्वारा कताने का काम कराना
क़तार (अ० सं० स्त्री०) पङ्क्ति, श्रेणी, लैन।
कति (वि०) कितने, कितेक, कितनेक, कितने ही।

कतिक (वि०) किस क़दर, कितने।
कतिपय (वि०) थोड़े, अल्प, कितने ही।
कतीरा (सं० पु०) गोंद विशेष।
कतुवा (सं० पु०) तकुवा, तक्का।
कतेक (वि०) कति, कितने, दो एक, थोड़े।
कत्त (अव्य०) कहाँ, क्यों कर।
कत्तल (सं० पु०) पत्थर के छोटे टुकड़े।
कत्ता (सं० पु०) औज़ार विशेष, छोटी तलवार, बाँका बाँस
कत्तान (सं० पु०) छुरी, कटारी, यमधार।
कत्ती (सं० स्त्री०) छोटी तलवार, छुरी, चाकू, सुनारों का काटने का एक यन्त्र, कटारी।
कत्थ (सं० पु०) कसेरे की स्याही, लोहे की स्याही, रँगरेज़, रङ्गने का काम करने वाला।
कत्थई (वि०) खैर का रङ्ग। [गाने का काम करते हैं।
कत्थक (सं० पु०) जाति विशेष, इस जाति के लोग नाचने
कत्था (सं० पु०) खैर जो पान के साथ खाया जाता है।
कथक (वि०) कथा वार्त्ता कहने वाला व्यक्ति।
कथक्कड़ (सं० पु०) अधिक कथा कहने वाला।
कथचन (अव्य०) किस प्रकार।
कथञ्चित (अव्य०) किस प्रकार।
कथन (सं० पु०) कहना, बखान, वार्त्ता, कथा, उच्चारण, बोलने की गति, विवरण करना।
कथनी (सं० स्त्री०) देखो कथन।
कथनीय (वि०) कहने योग्य, बताने लायक।
कथरी (सं० स्त्री०) गुदड़ी, कथड़ी, पुराने वस्त्रों का बना हुआ ओढ़ने या बिछाने का वस्त्र।
कथम् (अव्य०) किस प्रकार।
कथहिं (क्रि०) कहते हैं।
कथा (सं० स्त्री०) वार्त्ता, कही हुई बात, कहानी।
कथानक (सं० पु०) सारांश, कहानी, छोटी कथा, तत्व वार्ता।
कथाप्रबन्ध (सं० पु०) आख्यायिका, किस्सा।
कथाप्रसङ्ग (सं० पु०) सपेरा, मदारी, विष वैद्य, अनेक वार्ता, कथोपकथन, बात चीत।
कथाप्राण (सं० पु०) नाटक-वक्ता, कथक।
कथामुख (सं० पु०) ग्रन्थ की प्रस्तावना, आख्यायिका, कथा का प्रारम्भ।
कथावार्ता (सं० स्त्री०) अनेक प्रकार के प्रसङ्ग, नाना विषयक गाथाएँ, कहानी, क़िस्से। [करने में सहायक
कथासचिव (सं० पु०) सम्मतिदाता, मंत्री, बातचीत
कथिक (सं० पु०) देखो कत्थक।
कथित (वि०) उक्त, कहा हुआ, वर्णित, उच्चारित।
कथितव्य (वि०) वक्तव्य, कथनीय।
कथीर (सं० पु०) रङ्गा, हिरन, खुरी, राङ्गा।
कथोद्घात (सं० पु०) कथा प्रारम्भ, प्रस्तावना।
कथोपकथन (सं० पु०) अलाप, वार्तालाप, बात-चीत, बोलचाल, वादविवाद।
कथ्य (वि०) वक्तव्य, कथितव्य। [जून।
कद (अव्य०) कब, किसी वक्त, कहिया, कितने समय, कौन
क़द (अ० सं० पु०) उंचाई, डील।
कदक्षर (सं० पु०) खराब अक्षर।
कदध्वा (अव्य०) निन्दित पन्थ।
कदन (सं० पु०) पाप, लड़ाई, युद्ध, समर, मारण, मर्दन, बधिक, नाशक, दुःख, आपत्ति। [अपथ्यान्न।
कदन्न (सं० पु०) कोदो, कुअन्न, वर्जितअन्न, कुत्सितअन्न,
कदम (सं० पु०) डग, चरण, पाद, वृक्ष विशेष।
कदंब (सं० पु०) समूह।
कदम्ब (सं० पु०) कदम्ब वृक्ष।
कदम्बक (सं० पु०) समूह, ढेर, झुण्ड।
कदम्ब कुसुमाकर (वि०) वर्तुलाकार, गोल।
कदर (सं० पु०) आरा, लकड़ी चीरने का औज़ार विशेष, टाँकी, सफेद खैर, गोखरू, अंकुश। [पोकपन।
कदरई या कदराई (सं० स्त्री०) कायरपन, भीरुता, डर-
कदरज (सं० पु०) एक प्रसिद्ध पापी।
क़दरदान (फ़ा० वि०) गुणग्राही, क़दर करने वाला, सम्मान कर्ता, गुणग्राहक।
कदराई (सं० स्त्री०) देखो कदरई। [कचियाना।
कदराना (क्रि० अ०) डरपोक होना, कायर होना, डरना
कदर्थ (सं० पु०) व्यर्थ वस्तु, निकम्मी चीज, कूड़ा करकट, कुत्सित पदार्थ।
कदर्थित (वि०) कुदशा युक्त, दुर्गति प्राप्त, विडम्बना।
कदर्य (वि०) सूम, कंजूस, मक्खीचूस, निन्दित, अपकृष्ट, मंद, क्षुद्र।
कदली (सं० स्त्री०) केले की फली, केला, बरमा में उत्पन्न होने वाला एक वृक्ष, एक प्रकार का हिरण।

कदा (क्रि० वि०) कब, किस समय।
कदाकार (वि०) कुरूप, बदशकल, बुरे आकार का, कुत्सित आकृति।
कदाकृति (सं०स्त्री०) कुरूप।
कदाख्य(वि०) बदनाम।
कदाच (क्रि० वि०) कदाचित, शायद, दैवात्।
कदचना (अव्य०) किसी समय, कभी।
कदाचार (सं० पु०) दुराचार, बुरी चाल, बदचलनी, कुचलन, अनाचार, निन्दितकर्म, दुर्व्यवहार।
कदाचित् (क्रि० वि०) कभी, शायद, दैवात, अकस्मात, कभी, किसी समय।
कदापि (क्रि० वि०)कभी भी,हर्गिज़, किसी समय,कदाच।
क़दीम (अ० वि०) प्राचीन, पुरानी, पुरातन, पुराना।
कदीमा (सं० पु०) लोहारी, शावल।
कदुष्ण (वि०) थोड़ा गर्म, शीर गर्म, शीत गर्म, कोसा, चर्म न जलने योग्य गर्म।
कद्दू (सं० पु०) एक फल, कोहँड़ा, कुँभड़ा।
कद्दूकश (फ़ा० सं० पु०) यन्त्र विशेष, जिस पर कद्दू को रगड़ कर रायते के योग्य बनाते हैं।
कद्रू (सं० पु०) कश्यप ऋषि की एक स्त्री, नाग माता।
कधी (क्रि० वि०) किसी समय, कभी।
कन (सं० पु०) कण, अणु, अनाज का दाना, प्रसाद, बूँद, भीख, जूठन, भिक्षान्न, कतरा, चावलों की किनकी, धूल, हीर, सत, शरीर सम्बन्धी शक्ति, यौगिक व्यवहार में कान का अर्थवाची भी है।
कनई (सं० स्त्री०) नूतन शाख, अङ्कुर, कल्ला, कोंपल।
कन अंगुल (सं० स्त्री०) छोटी उँगली, कनिष्ठा, कानी उँगली। [वृक्ष, नागकेसर, गेहूँ।
कनक (सं० पु०) सोना, सुवर्ण, कञ्चन, धतूरा, पलाश-
कनककली (सं० पु०) लौंग, कान में पहिनने का [आभूषण।
कनकक्षार (सं० पु०) सुहागा।
कनक चम्पक (सं० पु०) वृक्ष विशेष, कनक चंपा।
कनकचम्पा (सं० पु०) वृक्ष विशेष, चम्पा।
कनकजीर (सं० पु०)एक प्रकार का धान।[काटने वाला
कनकटा (सं० पु०) बूचा, कटे कानों वाला, या कान
कनकना (वि०) कनकनाहट उत्पन्न कारक, चुनचुनाने वाला, अरुचिकर, चिड़चिड़ा, थोड़ी बात में चिढ़ने वाला, कनकनना।
कनकनाना (क्रि० अ०) चुनचुनाना, (सं०) सूरन, अरवी आदि के स्पर्श से उत्पन्न हुई वेदना, चुनचुनाहट, नागवार।
कनकनाहट (सं० स्त्री०) कनकनी, कनकनाने का भाव।
कनक रस (सं० पु०) हरिताल। [नाम।
कनक लोचन (सं० पु०) हिरण्याक्ष, एक राक्षस का
कनकसिपु (सं० पु०)प्रहलाद के पिता का नाम।
कनकाचल (सं० पु०) सुमेरु पर्वत, अस्त गिरि, दान विशेष।
कनकी (सं० स्त्री०) चावलों के छोटे टुकड़े, किनकी।
कनकूत (सं० पु०) बँटाई का ढंग, उपज का अनुमान।
कनकैआ (सं० पु०) काग़ज़ की पतङ्ग जो उड़ाने के काम में आती है।
कनखजूरा (सं० पु०) कनशलाई, कीट विशेष, गोजर।
कनखियाना (क्रि० स०) कनखी से देखना, तिरछी नज़र से देखना, आँख का इशारा करना, सैन चलाना।
कनखी (सं० स्त्री०) कटाक्ष, इशारा, अदृश्य दृष्टि, सैन, दूसरों की दृष्टि बचा कर देखने की पद्धति।
कनगुरिया (सं० स्त्री०) उँगली, छिगुनिया, छिगुनी, कनिष्ठा उँगली।
कनछेदन (सं० पु०) कर्ण-बेध, एक संस्कार, कान छिदना।
कनटोप (सं० पु०) कानों को ढँकने वाली टोपी।
कनपटी (सं० पु०) कान और नेत्रों के बीच की जगह परपटी, गण्डस्थल।
कनफटा (सं० पु०) साधू विशेष, गोरखनाथ के अनुयायी, कानों में लकड़ी के मुद्रा पहनने वाले।
कनफुँकवा (सं० पु०) कान फूंकने वाला, मंत्र दीक्षा देने वाला, दीक्षित, जिसने दीक्षा दी हो।
कनफूल (सं० पु०) आभरण विशेष, कान में पहिनने का ज़ेवर, कर्णफूल। [की इच्छा विशेष रखने वाला।
कनरसिया (सं० पु०) कर्ण रसिक, गीतज्ञ, बातें सुनने
कनल (सं० पु०) भिलावाँ।
कनवई (सं० स्त्री०) छटाँक, सेर का सोलहवाँ भाग।
कनवा (सं० पु०) देखो कनवई।
कनसलाई (सं० स्त्री०) गोजर, कनखजूरा।
कनहा (सं० पु०) अन्न की जाँच करनेवाला।
कनहार (सं० पु०) पतवार पकड़ने वाला नाविक, केवट।

कना (सं० पु०) देखो कन । [डाली ।
कनाई (सं० स्त्री०) टहनी, कल्ला, अति पतली पौधे की
कनागत (सं० पु०) क्वार का कृष्ण पक्ष, अपर पक्ष, पितृ पक्ष, कन्यागत ।
क़नात (अ० सं० स्त्री०) कपड़े की वह दीवार जो तम्बू की सीमा घेरने या आड़ के लिये लगाई जाती है ।
कनारा (सं० पु०) मदरास का एक भाग विशेष ।
कनारी (सं० स्त्री०) किनारी । [पिसान ।
कनिक (सं० स्त्री०) गेहूँ या उसका आटा, गेहूँ का
कनिका (सं० स्त्री०) अति छोटा टुकड़ा ।
कनियाँ (सं० स्त्री०) गोद, कोर, उछंग ।
कनियाना (क्रि०) कतराना ।
कनियाहट (सं० स्त्री०) भड़क, संकोच, खींच ।
कनिष्ठ (वि०) अत्यन्त लघु, बहुत छोटा, सब से छोटा, छोटा भाई, हीन, निकृष्ट ।
कनिष्ठा (वि०) बहुत छोटी, सब से छोटी, छोटी बहिन, छोटी उँगली, हीन, नीच । [छोटी उँगली ।
कनिष्ठिका (सं० स्त्री०) कानी उँगली, छिगुनी, सब से
कनिहा (सं० पु०) धुना, प्रतिहिंसक ।
कनी (सं० स्त्री०) छोटा भाग, छोटा टुकड़ा, किरच, हीरे का छोटा कण । [अँगुरी ।
कनीनिका (सं० स्त्री०) आँख का तारा, कन्या, छोटी
कनीयान (वि०) कनिष्ठ, अनुज, अतियुवा ।
कने (अव्य०) पास, समीप । [गोशमाली ।
कनेठी (सं० स्त्री०) कान मरोड़ने की सज़ा, कनउमेठी,
कनेर (सं० पु०) कनेल, करवीर, हस्तिवेश्या ।
कनौज (सं० पु०) नगर विशेष ।
कनौजिया (वि०) कन्नौज निवासी ।
कन्त (सं० पु०) स्वामी, भतार, ईश्वर ।
कन्था (सं० स्त्री०) गुदड़ी, कथड़ी । [गूदड़ बाबा ।
कन्थाधारी (सं० पु०) भिक्षुक, संन्यासी, संसारत्यागी,
कन्द (सं० पु०) बिना रेसे की जड़, मूल ।
कन्दवर्द्धन (सं० पु०) मूल, ओल ।
कन्दमूल (सं० पु०) मुनि भोजन विशेष ।
कन्दरा (सं० स्त्री०) गुहा, गुफ़ा, खोह, पर्व्वत की सुरङ्ग ।
कन्दराल (सं० पु०) पर्कटी वृक्ष, अखरोट, पाकर ।
कन्दर्प (सं० पु०) कामदेव, ताल विशेष ।
कन्दल (सं० पु०) नवीन अंकुर, कलह, सोना ।
कन्दलित (वि०) अङ्कुरित, प्रस्फुटित, खिलित, अङ्कुर प्राप्त ।
कन्दसार (सं० पु०) हरिण ।
कन्दासी (सं० पु०) औषधि विशेष ।
कन्दु (सं० पु०) लोहमय, पाक पात्र, कढ़ी, बेढ़ी ।
कन्दुक (सं० पु०) गेंद, वृत, गोल, तकिया, सुपारी, वर्ण वृत्त ।
कन्ध (सं० पु०) कांधा, शाखा ।
कन्धनी (सं० स्त्री०) कर्धनी । [मौथा, मुस्ता ।
कन्धर (सं० पु०) ग्रीवा, घेटुआ, गला, कंठ, गर्दन, मेघ,
कन्धार (सं० पु०) नगर विशेष, कहार, मल्लाह ।
कन्धेली (सं० स्त्री०) ज़ीन, खोगीर, गद्दी, वह वस्तु जो बैलों की पीठ पर रक्खी जाती है और उसपर बनिए अन्न लादते हैं ।
कन्हैया (सं० पु०) श्रीकृष्ण ।
कन्नौज (सं० पु०) नगर विशेष, जो यू० पी० प्रान्त में गङ्गा के किनारे बसा हुआ है ।
कन्यका (सं० स्त्री०) अविवाहिता कन्या ।
कन्या (सं० स्त्री०) कुमारी, पुत्री, लड़की, बेटी, एक राशि, अविवाहित ।
कन्याकाल (सं० पु०) कन्या की दश वर्ष की अवस्था ।
कन्याकुमारी (सं० स्त्री०) रास कुमारी, अन्तरीप विशेष जो भारत के दक्षिण देश में है ।
कन्यागत (सं० पु०) कन्याराशिस्थ ।
कन्यादाता (सं० पु०) कन्यादान का अधिकारी ।
कन्यादान (सं० पु०) पुत्री को वैदिक रीति से दान करने की रीति, विधि विशेष । [धन ।
कन्याधन (सं० पु०) पिता के द्वारा पुत्री को दिया हुआ
कन्यापति (सं० पु०) जामात्र, जामाता, दमाद ।
कन्याभाव (सं० पु०) कौमार्यभाव, कुमारता का भाव ।
कन्याराशि (वि०) जिसके लग्न में कन्याराशि स्थित हो ।
कन्हरिया (सं० पु०) मल्लाह, मांझी । [कनहाई ।
कन्हाई (सं० पु०) कृष्ण, (सं० स्त्री०) खेत कूतना,
कन्हावर (सं० पु०) देखो कँधावर ।
कन्हैया (सं० पु०) अति प्रिय, कृष्ण का नाम ।
कपकपी (सं० स्त्री०) थरथरी ।
कपट (सं० पु०) छल, दंभ, धोखा, प्रतारणा ।

कपटता (सं० स्त्री०) शठता, धूर्तता ।
कपटना (क्रि० स०) काटना, छाँटना, पृथक् करना ।
कपट वेश (सं० पु०) छलवेश ।
कपटवेशधारी (सं० पु०) ठग, धूर्त ।
कपटी (वि०) छली, बहुरुपिया, खोटा, दम्भी, दग़ाबाज़, धोखेबाज़, कपट करने वाला, छिपाव करने वाला, [महीन ।
कपड़कोट (सं० पु०) डेरा,तम्बू, ख़ीमा ।
कपड़छन (सं० पु०) कपड़े में छना हुआ चूर्ण, अति
कपड़द्वार (सं० पु०) वस्त्रागार, वस्त्र भंडार, कपड़े बनने या बिकने का स्थान, कपड़ों का गोदाम, तोशाख़ाना ।
कपड़धूलि (सं० स्त्री०) एक भाँति का महीन रेशमी कपड़ा, करेब ।
कपड़मिट्टी (सं० स्त्री०) धातु या औषधि फूँकते समय बर्तन पर मट्टी और कपड़ा लगाने की क्रिया, कपड़ौटी, गिल-हिकमत ।
कपड़विन (सं० पु०) दरज़ी, रफ़ूगर ।
कपड़ा (सं० पु०) वस्त्र, लत्ता ।
कपड़ों से होना (क्रि०) रजस्वला होना ।
कपर्द (सं० पु०) शङ्कर जटा, जटाजूट, कौड़ी ।
कपर्दिका (सं० स्त्री०) कौड़ी, बराटिका । [भूतेश ।
कपर्दी (सं० पु०) शिव, शङ्कर, महादेव, जटाधारी,
कपसेठा (सं० पु०) बन की लकड़ी, कपास के पेड़ की सूखी लकड़ी जो जलाने के कार्य में आती है ।
कपाट (सं० पु०) किवाड़, किवाड़ी, पट, नेत्रों के पलक ।
कपार (सं० पु०) खोंपड़ी, कपाल, ललाट, भाल, अदृष्ट, भाग ।
कपालभृत (सं० पु०) महादेव, शङ्कर, शिव ।
कपाल (सं० पु०) देखो कपार ।
कपाल क्रिया (सं० स्त्री०) मृतक शव की अधजली अवस्था में लकड़ी या बांस से खोपड़ी फोड़ने की क्रिया ।
कपाल मोचन (सं० पु०) बनारस में एक तलाव है ।
कपालिक (सं० पु०) शैव मत के तान्त्रिक साधु, जाति विशेष जो बङ्गाल में होती है, कुष्ट रोग की एक भाँति ।
कपालिका (सं० स्त्री०) खोपड़ी, दन्तशर्करा, दांतों का रोग विशेष, घड़े के नीचे व ऊपर का भाग ।
कपालिनी (सं० स्त्री०) दुर्गा, भगवती, कपाल धारण करने वाली, कपाल धारिणी, शिवा, भवानी ।
कपाली (सं० पु०) शिव, महादेव, भैरव, खपरे में भीख मांगने वाला, भिक्षुक, एक वर्णसङ्कर जाति विशेष, सरदल, द्वार के ऊपर लगा हुआ काष्ठ ।
कपालीय (वि०) भाग्यवान् ।
कपास (सं० स्त्री०) रुई का पेड़, अथवा वह अवस्था जब तक कि बिनौले अलग न किए हों ।[पीला रंग ।
कपासी (वि०) कपास के फूल जैसा रंग अर्थात् हलका
कपि (सं० पु०) बन्दर, बानर, मर्कट, गज, हाथी, कञ्जा, एक औषधि विशेष जो सुगन्धित होती है, शिला-रस, सूर्य ।
कपिकच्छु (सं० स्त्री०) केवांच ।
कपिकच्छू (सं० स्त्री०) बानरी, मर्कटी, केवाँच, करेंच ।
कपिकुञ्जर (सं० पु०) बानरों के राजा, प्रधान, हनुमान ।
कपित्थ (सं० पु०) कैथा ।
कपिध्वज (सं० पु०) अर्जुन, पाण्डु का तृतीय पुत्र ।
कपिन्द्र (सं० पु०) बानरेश ।
कपिप्रिय (सं० पु०) कैथ, फल विशेष जिसकी चटनी और अचार भी बनता है ।
कपिबक्र (वि०) बानर के समान मुखवाला ।
कपिरथ (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र जी, अर्जुन ।
कपिल (वि०) भूरा, मटमैला, तामड़ा वर्ण, सफेद, मुनि विशेष, कुश द्वीप के अन्तर्गत एक द्वीप का नाम, सांख्य शास्त्र के निर्माता ।
कपिलता (सं० स्त्री०) भूरापन, ललाई, पिलाई, सफेदी, पीलापन, मटमैलापन । [गंगाजी ।
कपिलधारा (सं० पु०) काशी, व गया का एक तीर्थ,
कपिलवस्तु (सं० पु०) एक नगर का नाम जो नैपाल की तराई में पूर्व बसा हुआ था, बौद्ध भगवान या गौतम बुद्ध का जन्म स्थान ।
कपिला (वि०) मटमैली, भूरी, चित्तेदार, सीधी, सादी, भोलीभाली, गाय, एक राजा की कन्या का नाम, जोंक, चींटी, औषधि विशेष, पुण्डरीक, दिग्गज की स्त्री का नाम, दक्ष प्रजापति की कन्या, मध्य प्रदेश की एक नदी ।
कपिलागम (सं० पु०) सांख्य शास्त्र । [इन्द्र ।
कपिलाश्व (सं० पु०, सफ़ेद घोड़ा, सफ़ेद घोड़े वाले ।

कपिश (वि०) काला और पीला रंग से बना हुआ बादामी रंग, मटमैला ।
कपिशा (सं० स्त्री०) कश्यप मुनि की एक स्त्री, नदी विशेष जिसे कसाई कह कर आज कल पुकारते हैं। यह मेदिनीपुर के दक्षिण में है, मद्य विशेष ।
कपी (सं० स्त्री०) घिरनी, घिर्री ।
कपीश (सं० पु०) बानरों के राजा, हनुमान, सुग्रीव, बालि इत्यादि, कपि स्वामी, कपिपति ।
कपिश्वर (सं० पु०) बानरों का राजा, सुग्रीव, हनुमान
कपुत्र } कपूत } (सं० पु०) दुष्ट पुत्र ।
कपूती (सं० स्त्री०) अयोग्यता, नालायक़ी, वह माता जिसका पुत्र दुराचारी हो, पुत्र के अयोग्य आचरण ।
कपूर (सं० पु०) सुगन्धित श्वेत द्रव्य विशेष, कर्पूर ।
कपूर कचरी (सं० स्त्री०) औषधि विशेष, गंधपलाशी, गंध मूली, सुगन्धित लता, गन्धौली ।
कपूरी (वि०) कपूर का बना हुआ, वा हलका पीला रंग ।
कपोत (सं० पु०) कबूतर, परेवा, पारावत, पक्षी मात्र, भूरे रंग का कच्चा सुरमा ।
कपोत पालिका (सं० स्त्री०) कबूतरों का दरबा ।
कपोत वर्णी (सं० स्त्री०) छोटी इलायची ।
कपोत वङ्का (सं० स्त्री०) ब्राह्मी बूटी ।
कपोत वृत्ति (सं० स्त्री०) रोज़ कमाना, रोज़ खाना ।
कपोतव्रत (सं० पु०) दूसरे के अत्याचार को चुपचाप सहना ।
कपोताद्य (सं० पु०) नर विशेष ।
कपोतिका (सं० स्त्री०) कबूतरी ।
कपोती (सं० स्त्री०) कबूतरी, पेंडुकी, कमरी ।
कपोल (सं० स्त्री०) गाल, गण्डस्थल ।[अप्रमाणित, गप्प ।
कपोल कल्पना (सं० स्त्री०) बनावटी बात, मनगढ़ंत,
कपोल कल्पता (वि०) झूठा, बनावटी, मनगढ़ंत, अप्रमाणित, अनृत, मिथ्या ।
कफ़ (अ० सं० पु०) क़मीज़ की अस्तीन के अग्र भाग का नाम है जहाँ बटन लगाए जाते हैं ।
कफ़न (अ० सं० पु०) मुर्दा लपेटने का कपड़ा । [नना ।
कफ़नाना (क्रि० स०) शव को कपड़ा लपेटना या पहि-
कफ़नी (सं० स्त्री०) मेखला साधुओं के पहिनने का एक वस्त्र जो बिना सिला होता है, मुर्दा लपेटने का कपड़ा ।
कफघ्न (वि०) कफ नाशक ।
कफवर्द्धक (वि०) गोल मिरिच ।
कफारि (सं० पु०) सोंठ ।
कफाणी (सं० पु०) केहुनी ।
कब (क्रि० वि०) किस समय, किस काल, कौन वक्त ।
कबकब (अव्य०) किस किस समय ।
कबड्डी (सं० स्त्री०) भारतवासियों का एक खेल ।
कबतक (अव्य०) किस समय तक ।
कबन्ध (सं० पु०) रुण्ड मुण्ड, शिर रहित शरीर, पीपा, कंडाल, बादल, मेघ, पेट, जल, एक दानव का नाम, राहु, एक प्रकार की केतु की आकृति, एक गन्धर्व का नाम, मुनि विशेष । [जाते हैं ।
क़बर (अ० सं० स्त्री०) क़ब्र, जिसमें मुसलमान गाड़े
क़बरस्तान (अ० सं० पु०) क़ब्रस्थान, मुसलमान, अंग्रेज़ों के मुर्दे गाड़ने की जगह, यवन-श्मसान ।
कबरा (वि०) चितला, कल्माष, शब्बला, भूरा, दो रंग का, चिकतबरा ।
कबाड़ (सं० पु०) व्यर्थ सामान, अंगड़ खंगड़, टूटी फूटी वस्तु, व्यर्थ व्यवसाय, तुच्छ व्यापार ।
कबाड़िया (सं० पु०) तुच्छ व्यापार करने वाला, टूटी फूटी चीज़ों का बेचने वाला व्यापारी ।
कबाब (सं० पु०) सींकों पर भुना हुआ मांस ।
कबाबचीनी (सं० स्त्री०) औषधि विशेष ।
कबाबी (वि०) कबाब बेचने या खाने वाला, मांस-भक्षी ।
कबार (सं० पु०) लेन देन, पशुओं का भोजन ।
कबलों (अव्य०) कितने समय तक ।
कबाला (सं० पु०) प्रतिज्ञा पत्र जिसके द्वारा किसी दूसरे को अधिकार प्राप्त हो ।
कबीर (सं० पु०) एक वैष्णव भक्त विशेष, जिनके बनाए हुए बहुत से पद मिलते हैं । [के मानने वाले ।
कबीरपन्थी (वि०) कबीर के मतानुयायी या उसके धर्म
कबीला (सं० स्त्री०) स्त्री, पत्नी । [मनवाना ।
कबुलवाना (क्रि० स०) स्वीकार कर लेना, मनाना,
कबूलना (क्रि० स०) स्वीकार कर लेना, मान लेना, अङ्गीकार करना, मंजूर करना ।
कबूतर (सं० पु०) "देखो कपोत" [हो ।
कबूतरबाज़ (वि०) जो कबूतर उड़ाता हो या पालता

कबूतरबाज़ी (सं० स्त्री०) कबूतर उड़ाने या पालने की आदत। [वाली, सुन्दर स्त्री
कबूतरी (सं० स्त्री०) कपोतनी, कबूतर की स्त्री, नाचने
क़बूल (अ० सं० पु०) स्वीकार, अङ्गीकार, मानना, मंज़ूर।
क़बूलना (क्रि० स०) स्वीकार करना, मंज़ूर करना, मानना, अंगीकार करना।
क़बूलियत (अ० सं० स्त्री०) स्वीकारी, स्वीकार-पत्र जो आसामी की ओर से लिखा गया हो।
क़ब्ज़ (अ० सं० पु०) ग्रहण, पकड़, अवरोध, अजीर्ण।
क़ब्ज़ा (अ० सं० पु०) मूंठ, दस्ता, अधिकार, पीतल लोहे वा अन्य धातुओं के बने हुए दो टुकड़े जो बीच में इस प्रकार मिलाए जाते हैं जो स्वेच्छा इधर से उधर घुमाए जा सकें। प्रायः बक्स आदि सामान जो खोलने और बन्द करने के ही लिए होते हैं उनमें लगाए जाते हैं। [साफ़ न होना।
क़ब्ज़ियत (अ० सं० स्त्री०) पूर्ण मल-त्याग न होना, दस्त
कभी (क्रि० वि०) किसी समय, किस घड़ी, कदापि।
कभू (क्रि० वि०) कभी।
कम (वि०) थोड़ा, अल्प, न्यून।
कमअक़्ल (वि०) निर्बुद्धि।
कमअसल (वि०) वर्णसङ्कर, दोग़ला।
कमकस (वि०) काम में जिसका मन न लगता हो, आलसी, सुस्त, काहिल, कामचोर। [कपड़ा।
कमख़ाब (फ़ा० सं० पु०) एक प्रकार का मोटा रेशमी
कमची (सं० स्त्री०) पतली लपलपाती हुई छड़ी।
कमच्छा (सं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध आसाम प्रान्तीय देवी जो कामरूप नगर में है, कामेच्छा पूर्ण करने वाली।
कमज़ोर (वि०) शक्तिहीन, बलरहित, अशक्त, निर्बल, दुर्बल, नाताक़त।
कमज़ोरी (फ़ा० सं० स्त्री०) निर्बलता, दुर्बलता, नाताक़ती, अशक्तता, शक्तिहीनता, अपौरुषता।
कमठ (सं० पु०) कच्छप, कछुवा, साधुओं का तुंबे का पात्र, बांस, बाद्य विशेष, वृक्ष विशेष।
कमठा (सं० पु०) धनुष, कमान, जैन सम्प्रदायी एक महात्मा का नाम, बांस का धनुष, भारतीय प्राचीन शस्त्र। [धजी, लचीली फट्टी, धनुई।
कमठी (सं० स्त्री०) कच्छपी, कछुई, पतले बांस की
कमड़ा (सं० पु०) पेठा, कोहड़ा।

कमण्डल (सं० पु०) कमण्डलु, साधुओं के जल रखने का पात्र विशेष। [है, पाकर वृक्ष।
कमण्डलु (सं० पु०) संन्यासियों के जल पात्र का नाम
कमती (सं० स्त्री०) घटती, कमी, न्यूनता।
कमना (क्रि० अ०) घटना, कम होना, न्यून होना।
कमनीय (वि०) सुन्दर, मनोहर, चाहने योग्य, कामना के लायक़, योग्य।
कमनैत (सं० पु०) कमान तीर चलाने वाला, तीरन्दाज़।
कमनैती (सं० स्त्री०) तीर चलाने की विद्या, धनुर्विद्या, तीरन्दाज़ी।
कमर (सं० स्त्री०) कटि, शरीर का मध्य भाग।
कमरकस (वि०) ढाक का गोंद, कटिबन्धन, कमर कसने का कपड़ा क़मरबस्ता, एक प्रकार का गोंद।
कमरख (सं० पु०) वृक्ष विशेष जिसका फल कमरख कहलाता है वह प्रायः चटनी अचार और तरकारी बनाने के काम में आता है।
कमरटूटा (वि०) कुबड़ा, कुब्ज।
कमरबन्द (सं० पु०) पटुका, पेटी, इज़ारबन्द।
कमरा (सं० पु०) कोठरी, तसवीर उतारने का एक यन्त्र, कम्बल, कमला।
कमरिया (सं० पु०) कमर, हाथी विशेष, कमली, एक रोग का नाम, चरखी में लगी हुई लकड़ी विशेष।
कमल (सं० पु०) पद्म, जलज, अम्बुज। [काम आता है।
कमलगट्टा (सं० पु०) कमल का बीज जो दवाई में बहुधा
कमलनयन (वि०) सुन्दर कमल के समान नेत्र, या सुन्दर आंखों वाला, या वाली।
कमलनाभ (सं० पु०) विष्णु का नाम है।
कमलबाई (सं० स्त्री०) रोग विशेष, पिलाही, प्लीहा, जिसमें समस्त शरीर पीत वर्ण का हो जाता है।
कमलयोनि (सं० पु०) ब्रह्मा।
कमला (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, धन, ऐश्वर्य्य, एक प्रकार की नारंगी, सरिता विशेष जो तिरहुत में प्रवाहित है, वर्णवृत्त विशेष, ढोला, लट।
कमलाकर (सं० पु०) सरोवर, तालाब, पुष्कर अथवा जहाँ कमल उत्पन्न हों। [विष्णु।
कमलाकान्त (सं० पु०) कमल के समान कान्ति वाले
कमलाक्ष (सं० पु०) कमल का बीज, कमलगट्टा, कमल-नयन।

कमलापति (सं० पु०) लक्ष्मी के पति विष्णु भगवान्, नारायण। [का आसन विशेष।

कमलासन (सं० पु०) ब्रह्मा, योग का "पद्मासन" नाम

कमलिनी (सं० स्त्री०) छोटा कमल, नलिनी, वह तालाब जहाँ कमल उत्पन्न हो।

कमली (सं० पु०) ब्रह्मा, छोटा कम्बल, कमरी।

कमवाना (क्रि० स०) पैदा कराना, उपार्जन कराना, हीन कार्य कराना, कनिष्ठ सेवा कराना, ठीक कराना।

कमसमझी (सं० स्त्री०) अज्ञता, मूर्खता, बेवकूफ़ी, नादानी। [वाला, नादान।

कमसिन (वि०) छोटी आयु, अल्पायु, छोटी अवस्था

कमाई (सं० स्त्री०) उपार्जित द्रव्य, कमाया धन, पैदा की हुई सम्पत्ति।

कमाऊ (वि०) परिश्रमी, पैदा करने वाला, उपार्जन करने वाला, यत्न में संलग्न रहने वाला।

कमान (सं० स्त्री०) कमठा, धनुष, प्राचीन शस्त्र।

कमाना (क्रि० स०) उपार्जन करना, प्राप्त करना, पैदा करना। [आकार वाली।

कमानी (सं० स्त्री०) लोहे की तीली, लचीली, कमान के

कमानीदार (वि०) कमानी लगा हुआ, कमानीदार, कमानी वाला।

कमाल (अ० सं० पु०) परिपूर्णता, पूरापन, निपुणता, अत्यन्त अद्भुत काम, अनोखा कर्तव्य, शाबासी।

कमासुत (वि०) कमाने वाला, कमाई करने वाला, उद्यमी। [कमी, घाटा।

कमी (सं० स्त्री०) न्यूनता, कोताही, घटती, घटाव,

कमीना (वि०) ओछा, नीच, क्षुद्र, तुच्छ। [पन, अल्पता।

कमीनापन (सं० पु०) नीचता, क्षुद्रता, तुच्छपन, ओछा-

कमेटी (सं० स्त्री०) सभा, समिति। [सहायक।

कमेरा (सं० पु०) काम करने वाला, मज़दूर, सेवक,

कमेहरा (सं० पु०) कच्ची मट्टी का बना हुआ साँचा।

कमोदन (सं० स्त्री०) कुईं, कुमुद। [कछरा।

कमोरा (सं० पु०) मट्टी का चौड़े मुँह का पात्र, घड़ा,

कमोरी (सं० स्त्री०) चौड़े मुँह का मट्टी का छोटा बर्तन।

कम्प (सं० स्त्री०) थरथराहट, कपकपी, अवयव-सञ्चालन।

कम्पज्वर (सं० पु०) वह ज्वर जिसमें शरीर कांपता है।

कम्पन (सं० पु०) थरथर, डगडग, स्पन्दन, चलन, काँपन।

कम्पना (क्रि०) थरथराना।

कम्पवायु (सं० पु०) रोग विशेष।

कम्पमान (सं० पु०) कम्पनयुक्त।

कम्पाहा (सं० पु०) कम्पित।

कम्पित (सं० पु०) कम्पायमान, काँपता हुआ, डगमगा।

कम्बल (सं० पु०) कमरी, लोई, ऊनी मोटा कपड़ा।

कम्बु (सं० पु०) शंख, घोंघा, हाथी। [गले वाला।

कम्बुग्रीव (वि०) लम्बी गर्दन वाला, या शंख के समान

कयरी (सं० स्त्री०) अँबिया, टिकोरा।

कया (सं० स्त्री०) काया, शरीर, देह। [अन्तिम दिन।

क़यामत (अ० सं० पु०) लेखे का दिन, प्रलय काल,

क़यास (अ० सं० पु०) विचार, अनुमान, ध्यान, ख्याल।

कर (सं० पु०) हाथ, राजस्व, महसूल, भाड़ा, राजधन, हाथी की सूड़, ओला, किरण, हस्त नक्षत्र।

करई (सं० स्त्री०) मटकैना, करई, मट्टी का बहुत छोटा पात्र, (क्रि० स०) करइ, करहिं, करें, करते हैं।

करक (सं० स्त्री०) कमण्डलु, करवा, दाड़िम, कचनार, पलास, मौलसिरी, करीर, ठटरी, नारियल का खोपड़ा, पीड़ा, दर्द, रह रह कर उठने वाला शूल, कसक, चिनक।

करकच (सं० पु०) समुद्री नमक।

करकचि (सं० पु०) किचकिचाहट, अपुष्ट, कोमल।

करकट (सं० पु०) झाड़न, बुहारन, बटोरन, कतवार, कूड़ा, घास फूँस, घासपात।

करकना (क्रि० अ०) कड़कना, बड़ी वस्तु का ज़ोर से फटना, तड़कना, खटकना, रह-रह कर दुःखित होना।

करकर (सं० पु०) समुद्र से निकलने वाला नमक।

करकरा (सं० पु०) करकटिया, करकरिया, खुरखुरा।

करकराहट (सं० पु०) कड़ापन, खुरखुराहट, नेत्र में कुछ वस्तु पड़ जाने का दर्द।

करकस (वि०) कर्कश, बुरा स्वभाव। [पड़ना।

करका (सं० पु०) ओला, शिला, पत्थर-वृष्टि, ओले

करकाना (क्रि० स०) मुरकाना, लचकाना, कड़काना, तोड़ना, मोड़ना।

करख (सं० पु०) खैंच, हठ, नाप विशेष।

करखा (सं० पु०) कड़खा, छन्द विशेष।

करगह (सं० पु०) करघा ।
करगही (सं० स्त्री०) एक मोटा जड़हन धान ।
करघा (सं० पु०) करगह, कपड़ा बुनने का यन्त्र ।
करछा (सं० पु०) बड़ी कलछी, पक्षी विशेष ।
करछिया (सं० स्त्री०) चिड़िया जो शीत प्रदेश में रहती है ।
करछुल (सं० पु०) कलछी ।
करछुली (सं० स्त्री०) कलछुली, कलछी ।
करज (सं० पु०) नख, नाखून, उँगली, नख नाम की सुगन्धित वस्तु, करंज, करञा ।
करंज (सं० पु०) करंजा, वृक्ष विशेष ।
करट (सं० पु०) कौआ, हाथी का गण्डस्थल, कनपटी, कुसुम का पौधा, नास्तिक, गिरगिट, काक, कुत्सित जीवी ।
करण (सं० पु०) व्याकरण में एक कारक विशेष, हथियार, इन्द्रिय, देह, क्रिया कार्य, स्थान विशेष, हेतु, कायस्थों का एक भेद, आसाम आदि स्थानों की एक जंगली जाति । [अवश्य कर्तव्य, कर्तव्य कर्म ।
करणीय (वि०) करने योग्य, करने लायक, करने के उचित,
करण्ड (सं० पु०) कौआ, बक्स, पेटी, डिब्बा, डिबिया ।
करत (क्रि०) करता है, करते ही ।
करतब (सं० पु०) कार्य, काम, करतूत, कर्तव्य, कर्म, करामात, करनी, कला, गुण ।
करतबी (वि०) कर्तव्य करने वाला, गुणी, बाजीगर, करामात दिखाने वाला, पुरुषार्थी, क्रिया-कुशल, निपुण ।
करतल (सं० स्त्री०) हथेली, हाथ की गदोरी ।
करताल (सं० पु०) दोनों हाथों की ताली, बाजा विशेष, झांझ, मजीरा ।
करताली (सं० स्त्री०) दोनों हाथों के आघात का शब्द, ताली, थपोड़ी, हथोड़ी । [करतब ।
करतूत (सं० पु०) कला, गुण, कर्तव्य, करनी, योग्यता,
करतूती (सं० स्त्री०) कला, हुनर, करनी, गुण ।
करद (वि०) कर देने वाला, आसामी, मालगुज़ार, आधीन, छुरा, चाकू ।
करदा (सं० पु०) छीज, कमी, कूड़ा करकट, खूद खाद, बिक्री के सामान में मिला हुआ कूड़ा ।
करदपत्र (सं० पु०) पट्टा, राजस्व-सूचक-पत्र ।
करदराज्य (सं० पु०) वह राज्य जो दूसरे राज्य को कर दे।
करधनी (सं० स्त्री०) आभरण विशेष जो कमर में पहिना जाता है ।

करनधार (सं० पु०) कर्णधार । [आभूषण ।
करनफूल (सं० पु०) तरौना, काँप, स्त्रियों के कान का
करनवेध (सं० पु०) हिन्दुओं का संस्कार विशेष ।
करना (सं० पु०) पौधा विशेष, (क्रि० स०) भुगताना, निबटाना, सपराना ।
करनाटक (सं० पु०) मद्रास प्रान्त का भाग विशेष ।
करनाटकी (सं० पु०) करनाटक प्रदेश में बसने वाले, बाज विशेष, इन्द्रजाली, जादूगर ।
करनाल (सं० पु०) सिंघा, नरसिंहा भोंपा, धूत, ढोल विशेष, एक प्रकार की तोप, पञ्जाब प्रान्त का एक नगर । [बनाने वालों का एक औज़ार, कन्नी ।
करनी (सं० स्त्री०) कार्य, करतूत, करतब, कर्तव्य, मकान
करपुट (सं० पु०) बद्धाञ्जली ।
करपीड़न (सं० पु०) हाथ पकड़ना, पाणिग्रहण, विवाह ।
करबला (सं० स्त्री०) निर्जल, निर्जन स्थान, ताजियों के गाड़ने की जगह, अरब का मैदान विशेष जहाँ मुहम्मद की मृत्यु हुई थी ।
करबाल (सं० पु०) तलवार ।
करबी (सं० स्त्री०) ज्वार बाजरे का वह चारा जो पशुओं को काट कर खिलाया जाता है ।
करभ (सं० पु०) हथेली के पीछे का भाग, करपृष्ठ, हाथी का बच्चा, एक सुगन्धित वस्तु, कटि ।
करभीर (सं० पु०) सिंह, व्याघ्र ।
करम (सं० पु०) कर्म, काम, करनी, कर्तव्य, भाग्य ।
करमकल्ला (सं० पु०) बँधी गोभी, गांठ गोभी, पात गोभी ।
करमठ (वि०) कर्मनिष्ठ, कर्मकांडी, कर्मयुक्त, कर्मप्रिय, काम से संलग्न । [विशेष ।
करमात (सं० पु०) कर्म, भाग्य, क़िस्मत, नसीब, गुण
करमाला (सं० स्त्री०) उँगलियों के पोरुए जिन पर माला के अभाव में गणना कर जप किया जाता है ।
करमुखा (वि०) दुष्ट, काले मुँह वाला, कलंकी ।
करमैती (सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक उपासिका, एक ब्राह्मण कन्या ।
कररुह (सं० पु०) नख, नाखून । [या बगल से सोना ।
करवट (सं० स्त्री०) हाथ के सहारे लेटने की क्रिया पद्धति,
करवर (सं० पु०) संकट, कठिनाई ।
करवा (सं० पु०) धातु या मट्टी का टोंटीदार लोटा, बधना, जहाज़ में लगाने की लोहे की घोड़िया या कोनिया ।

करवाचौथ (सं० स्त्री०) कार्तिक कृष्ण चतुर्थी, स्त्रियों का त्योहार विशेष, गौरी पूजा का दिवस। [लगाना।
करवाना (क्रि० स०) करने में प्रवृत्त करना, करने में
करवार (सं० स्त्री०) तलवार, खड्ग।
करवीर (सं० पु०) कनेर का वृक्ष या फूल, श्मशान, चेदि देश का नगर विशेष, ब्रह्मावर्त्त की एक प्राचीन राजधानी।
करवैया (वि०) करने वाला। [करामात।
करश्मा (फ़ा० सं० पु०) चमत्कार, अद्भुत व्यापार,
करसम्पुट (सं० पु०) हाथ जोड़ना।
करसी (सं० स्त्री०) जंगली गोइँठा।
करह (सं० पु०) नया कल्ला।
करहा (सं० पु०) सफ़ेद सिरिस का वृक्ष।
करहाट (सं० पु०) कमल की जड़, भसींड, मुरार, पद्म का छत्ता, मैनफल।
करहाटक (सं० पु०) कमल की मोटी मूल, कमल का छत्ता, छत्तरी, मैनफल। [हुआ दाना, अन्न।
करहीं (सं० स्त्री०) पीटने के पश्चात् बाल में लगा
करा (सं० स्त्री०) कला, गुण।
कराइहि (क्रि०) करायेगा, करवायेगा।
कराई (सं० स्त्री०) दाल का छिलका, भूसी।
करात (अ० सं० पु०) तौल विशेष।
करांत (सं० पु०) आरा।
करांति (सं० पु०) आरा से चिरने वाला।
कराना (क्रि० स०)करने में लगाना।
करामात (सं० स्त्री०) चमत्कार, करश्मा, अद्भुत व्यापार, विचित्रता। [पटु।
करामाती (वि०) सिद्ध, करामात दिखाने वाला, कुशल,
करायल (सं० स्त्री०) कलौंजी, कढ़ी, मँगरैल, (सं० पु०) तेल मिली राल। [कटता हो।
करार (सं० पु०) नदी का ऊँचा किनारा जो पानी से
करारना (क्रि० अ०) बुरा शब्द करना, काँ काँ करना।
करारा (सं० पु०) ऊँचा भाग जो पानी से कट कर बना हो, दूह।
कराल (वि०) डरावना, भयानक आकृति, भीषण, ऊँचा।
करालाकृति (सं० स्त्री०) भयंकर रूप।
कराह (सं० पु०) दुःख के समय निकला हुआ शब्द, व्यथाजनक ध्वनि।
कराहना (क्रि० अ०) व्यथा-सूचक शब्द का निकलना।
करि (सं० पु०) हाथी। [कृष्णता।
करिखई (सं० स्त्री०) श्यामता, कालापन, कालिमा,
करिखा (सं० पु०) देखो कालिख।
करिगह (सं० पु०) देखो करगह।
करिज (सं० पु०) हाथी का बच्चा।
करिण (सं० पु०) हाथी, करिया।
करिणी (सं० स्त्री०) हथनी।
करिया (सं० पु०) काला सर्प, करिखा, पतवार, मल्लाह।
करिवदन(सं०पु०)हाथी के समान मुँह वाला,अर्थात् गणेश।
करिहांव (सं० स्त्री०) कमर, कटि, शरीर का मध्य भाग।
करी (सं० पु०) हाथी, मातङ्गी,कली, कड़ी।
करीन्द्र (सं० पु०) इन्द्र का हाथी। [केराना, मसाला।
करीना (सं० पु०) टाँकी, पत्थर काटने का औज़ार,
करीम (सं० पु०) वृक्ष विशेष, बाँस का नूतन अङ्कुर, कल्ला, घड़ा, टेंटी का पेड़ जो मरुभूमि में उत्पन्न होता है।
करील (सं० पु०) देखो करीर। [अप्रिय।
करुआ (सं० पु०) वृक्ष विशेष, कटु, तिक्त, अस्वाद,
करुआई (सं० स्त्री०) करुआपन, कड़ुआहट, तिक्तता।
करुण (सं० पु०) वृक्ष विशेष, करुणा, दया।
करुणा (सं० स्त्री०) दया, कृपा, अनुकम्पा।
करुणाकर (सं० पु०) दयालु,कृपालु। [की निगाह।
करुणादृष्टि (सं० स्त्री०) दयादृष्टि, कृपादृष्टि, मेहरबानी
करुणानिधान (वि०) दयालु, करुणापूर्ण हृदयवाला।
करुणान्वित (वि०) क्षमावान्।
करुणामय (सं० पु०) दयामय।
करेजा (सं० पु०) कलेजा, हृदय।
करेणु (सं० पु०) हाथी, गज, करि, कर्णिकार वृक्ष।
करेरा (वि०) दृढ़, कठिन, कठोर, कड़ा।
करेला (सं० पु०) फल विशेष, हर्रे, आतिशबाज़ी।
करेली (सं० स्त्री०) वह स्थान जिस में करेला उत्पन्न होता है, कड़ुए फलों वाला जङ्गल।
करैत (सं० पु०) काला फनदार सर्प।
करैली (सं० स्त्री०) देखो करेली।
करैल मिट्टी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की काली मिट्टी जिससे स्त्रियाँ सिर धोती हैं।
करोत (सं० पु०) लकड़ी चीरने का औज़ार, आरा।
करोदना (क्रि० स०) खुरचना, करोदना, खसोटना।

करौंद (सं० पु०) फल विशेष, जो चटनी अचार के काम में आता है, कान के पास की गिलटी ।

करोर (वि०) शत लक्ष, सौ लाख । [धनी हो ।

करोरपती (वि०) जिस के पास करोड़ रुपये हों या अधिक

करोरी (सं० पु०) रोकड़िया, तहवीलदार, खज़ानची, कोष रखने वाला, करोड़ का स्वामी ।

करौत (सं० पु०) लकड़ी चीरने का औज़ार विशेष, आरा ।

करौती (सं० स्त्री०) आरी, लकड़ी चीरने का छोटा औज़ार ।

करौली (सं० स्त्री०) नगर विशेष जो राजपूताना प्रान्त में बसा हुआ है, एक प्रकार की छुरी ।

कर्क (सं० पु०) केकड़ा, राशि विशेष, काँकड़ासिंगी, अग्नि, दर्पण, घट, कात्यायनसूत्र के एक भाष्य कर्त्ता ।

कर्कट (सं० पु०) केकड़ा, नाग विशेष, कर्क राशि, कमल की स्थूल जड़, नृत्य विशेष, तखरी की दंडी का अन्तिम भाग जहाँ पलरे बाँधे जाते हैं, सड़ँसा, तुम्बी ।

कर्कटी (सं० पु०) कछुई, ककड़ी, सेमल का फल, साँप घड़ा, तरोई, कांकड़ासिंगी, बँदाल की लता ।

कर्कन्धु (सं० पु०) बेर का पेंड़, बेरी ।

कर्कश (सं० पु०) ऊख का वृक्ष, ईख, तलवार, बुरा, खड्ग, तेज, सुरखुरा, खुरखुरा, क्रूर ।

कर्केतन (सं० पु०) रत्न विशेष, ज़मुर्रद ।

कर्कोत (सं० पु०) बेल का वृक्ष, राजा विशेष, काश्मीर का एक राजवंश, नगर विशेष, ककोड़ा, खेखसा, बँदाल।

कर्छनी (सं० स्त्री०) खुर्चनी, करोचनी ।

कर्छा (सं० पु०) डब्बू, बड़ी कछु्ल ।

कर्छारल (सं० स्त्री०) कुलाँच, चौकड़ी ।

कर्छी (सं० स्त्री०) करछुल, कैरी ।

कछु्ल, कछु्ली } (सं० स्त्री०) कर्छी ।

क़र्ज़ (अ० सं० पु०) ऋण, उधार लिया हुआ धन ।

क़र्ज़ा (अ० सं० पु०) देखो क़र्ज़ ।

क़र्ज़दार (वि०) ऋणी, उधार लेने वाला व्यक्ति ।

कर्ण (सं० पु०) कान, कर्णेन्द्रिय, कुन्ती का एक पुत्र, पतवार, अंगराज, समकोण, काव्य शास्त्र में गुण विशेष ।

कर्णकटु (वि०) सुनने में अप्रिय, कर्कश, बुरा ।

कर्णकुहर (सं० पु०) कान का गोलापन, गोलक ।

कर्णआधार (सं० पु०) नाविक, मल्लाह, मांझी, नाव खेने वाला, चढनदार ।

कर्णपरम्परा (सं० स्त्री०) श्रुति परम्परा, सुनी सुनाई व्यवस्था, एक दूसरे से सुनने का क्रम ।

कर्णपिशाच (सं० पु०) देवी से सिद्धी प्राप्त पुरुष जो सब बातें बता सके ।

कर्णप्रयाग (सं० पु०) गढ़वाल प्रान्त का एक प्रसिद्ध नगर जहाँ स्नान करने का महात्म्य विशेष है ।

कर्णमूल (सं० पु०) कान के समीप की सूजन, रोग विशेष, कनपेड़ा ।

कर्णवेध (सं० स्त्री०) संस्कार विशेष, कनछेदन ।

कर्णाट (सं० पु०) दक्षिण का एक प्रदेश, राग विशेष, स्वर पाठ ।

कर्णाटी (सं० स्त्री०) रागिनी विशेष, शब्दालङ्कार की एक वृत्ति, कर्णाटक देश की स्त्रियाँ, या वहाँ की भाषा । [आभूषण विशेष ।

कर्णाभरण (सं०पु०) कान में पहिनने का ज़ेवर,

कर्णिका (सं० स्त्री०) करनफूल, कान में धारण करने का आभूषण, सूँड़ की नोक, हाथ की मध्यम उँगली, सेवती, गुलाब, रोग विशेष, कलम, मेढ़ासिङ्गी, फल लगनेवाला डंठल ।

कर्णिकार (सं० पु०) वृक्ष और पुष्प विशेष, चम्पा ।

कर्णेजप (सं० स्त्री०) पिशुन, कानों में चुगुली खाने वाले, चुगुलखोर, कानों द्वारा विजय प्राप्त करनेवाला ।[काम ।

कर्तन (सं० पु०) कातना, काटना, कतरना, कातने का

कर्तनी (सं० स्त्री०) कैंची, कतरनी ।

कर्तब (सं० पु०) कर्तव्य, करतब, काम ।

कर्तरी (सं० स्त्री०) काँटी, लोहा आदि काटने की कैंची, छोटी तलवार, कटारी, छुरी, बाजा विशेष, ज्योतिष शास्त्र का एक योग विशेष ।

कर्तव्य (वि०) करने योग्य, करणीय, उचित, उपकृत, धर्म ।

कर्तव्यविमूढ़ (वि०) अस्थिर, भौंचक्का, जो अपना कर्तव्य स्थिर न कर सके ।

कर्ता (सं० पु०) करनेवाला, बनानेवाला, रचनेवाला, प्रभु, स्वामी, ईश्वर, मालिक, अधिपति, प्रथम कारक ।

कर्तार (सं० पु०) सिरजनहार, स्वामी, मालिक, ईश्वर ।

कर्तृक (वि०) किया हुआ, बनाया हुआ, सम्पादित ।

कर्तृत्व (सं० पु०) करने वाले का धर्म, प्रभुता, अधिकार, स्वामित्व, करने की शक्ति ।

कर्तृप्रधान (सं० स्त्री०) वह क्रिया जो कर्ताप्रधान हो।
कर्तृवाचक (वि०) कर्ता का बोधक, कर्ता का बोध करनेवाला, कारक को दर्शाने वाली क्रिया।
कर्तृवाची (वि०) जिसके द्वारा कर्ता का बोध हो।
कर्तृवाच्य (सं० पु०) वह वाक्य जो कर्ता का बोध कराता हो, जिसमें कर्ता का बोध प्रधान हो।
कर्दम (सं० पु०) कीचड़, कीच, पाप, मांस, एक ऋषि विशेष, छाया।
कर्पट (सं० पु०) चिथड़ा, गूदड़, लत्ता, पर्व्वत विशेष।
कर्पटी (सं० पु०) चिथड़े गुदड़े पहिनने वाला साधू, भिखारी, भिक्षुक।
कर्पर (सं० पु०) कपाल, खोपड़ी, खप्पर, कच्छ की खोपड़ी, शस्त्र विशेष, गूलर, कड़ाह, कलह।
कर्परी (सं० स्त्री०) तूतिया, खपरिया।
कर्पास (सं० पु०) कपास, बिनौले सहित रुई।
कर्पासि (सं० स्त्री०) कपास का पौधा, बांगा।
कर्पूर (सं० पु०) कपूर, श्वेत रंग की सुगन्धित वस्तु।
कर्बुर (सं० पु०) सोना, स्वर्ण, सुवर्ण, धतूरा, जल, राक्षस, जड़हन धान, कचूर। [व्यापार, क्रिया, करतूत।
कर्म (सं० पु०) भाग्य, करनी, द्वितीय कारक, कार्य, प्रयोजन,
कर्मकाण्ड (सं० पु०) धर्म सम्बन्धी कृत्य, यज्ञादि कर्म, वेद का वह भाग जिसमें कर्म वर्णित है।
कर्मकाण्डी (सं० पु०) धार्मिक कृत्य करानेवाला, यज्ञादि कर्म करानेवाला या करनेवाला।
कर्मक्षेत्र (सं० पु०) कार्य करने का स्थान, कर्म करने की जगह, पुराणानुसार भारत।
कर्मचारी (सं० पु०) काम करनेवाला, कार्यकर्त्ता, अमला, राज्य-प्रबन्ध या किसी कार्यालय से सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति।
कर्मणा (क्रि० वि०) कर्म से, काम से, कर्म द्वारा।
कर्मण्य (वि०) उद्योगी, कार्यकुशल, प्रयत्नवान्, यत्नशील, यत्न करने वाला।
कर्मधारय समास (सं० स्त्री०) विशेषण, और विशेष्य के समान अधिकार वाला समास, जिसमें दोनों का अधिकार समान हो।
कर्मनासा (सं० स्त्री०) नदी विशेष।
कर्मनिष्ठा (वि०) शास्त्रोक्त कर्म में निष्ठा करनेवाला, क्रियावान्, शास्त्रानुकूल कर्मों में निष्ठा रखनेवाला।

कर्मप्रधान (सं० पु०) कर्म की प्रधानता वाली क्रिया, जिसका प्रधान कर्म हो। [किये हुए कामों का फल।
कर्मभोग (सं० पु०) करनी का फल, भाग्य का परिश्रम,
कर्मयोग (सं० पु०) शास्त्र विहित कर्म, योग्य कर्म, उत्तम काम, गीतादि पुस्तकों को भी इस नाम से पुकारते हैं।
कर्मरेख (सं० पु०) प्रारब्ध की लिखावट, भाग्य की रेखा।
कर्मवाच्य (सं० स्त्री०) क्रिया विशेष।
कर्मविपाक (सं० पु०) भाग्य का फल, कृतकर्म का परिणाम, ग्रन्थ विशेष, शुभाशुभ का ज्ञान करानेवाला
कर्मवीर (सं० पु०) कार्य करने में वीर।
कर्मशील (सं० पु०) उद्योगी, प्रयत्नवान, सदा काम में रत रहनेवाला, उद्यमी, पुरुषार्थी। [उद्योगी, साहसी।
कर्मशूर (सं० पु०) जो स्वभावतः कर्म-प्रवृत्त हो, उत्साही,
कर्मसंन्यास (सं० पु०) कर्मरहित, निष्कर्म, कर्मत्याग।
कर्मसंन्यासी (सं० पु०) कर्मत्यागी, यती, साधू, कर्म का त्यागनेवाला पुरुष। [जिसने काम होते हुए देखा हो।
कर्मसाक्षी (वि०) जिसके सामने काम हुआ हो, या
कर्मस्थान (सं० पु०) काम करने का स्थल, ज्योतिष शास्त्र अनुसार दशमस्थान। [हो सके, अकर्मण्य।
कर्महीन (वि०) दुर्भाग्य, अभाग, जिससे शुभ कर्म न
कर्मान्त (सं० पु०) जुती हुई पृथ्वी, कार्य की समाप्ति, कार्यालय, कारखाना। [कर्मनिष्ठ।
कर्मिष्ठ (वि०) काम करनेवाला, कार्य में चतुर, क्रियावान्,
कर्मी (वि०) फल की इच्छा से यज्ञादि करनेवाला।
कर्मेन्द्रिय (सं० स्त्री०) काम करनेवाले अवयव, हाथ पाँव आदि। [कड़ा, कठिन, मुश्किल, कठोर।
कर्रा (सं० पु०) जुलाहों का सूत फैलाने का काम, (वि०)
कर्राना (क्रि० अ०) कड़ा होना, कठोर होना, अकड़ना।
कर्ष (सं० पु०) तोल विशेष, खिंचाव, जुताव, बखेड़ा, विरोध, ताव, जोश।
कर्षक (सं० पु०) खींचनेवाला, खेतिहर, जोतनेवाला, हल चलानेवाला, कृषक, किसान। [लकीर करना।
कर्षण (सं० पु०) कृषि कर्म, खेती का काम, खरोच कर
कर्षणी (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष, अंकुशी।
कर्षणीय (वि०) खींचने या जोतने योग्य।
कर्षा (सं० पु०) डाह, लाग, कड़ी दृष्टि।
कर्हिचित् (अव्य०) किसी काल।
कल (सं० पु०) मधुर, अव्यक्त ध्वनि, वीर्य, साल का पेड़,

चैन, सुख, सेहत, मनोहर, व्यतीत और आने वाला दिन, यन्त्र, मशीन।

क़लई (अ० सं० स्त्री०) राङ्गा, मुलम्मा, सफ़ेदी, चूना।

क़लईगर (सं० पु०) क़लई करनेवाला व्यक्ति विशेष।

कलईदार (वि०) मुलम्मा चढ़ी हुई, कलई किया हुआ।

कलक (सं० पु०) रंज,दुःख, चिन्ता, बेकली, घबराहट।

कलकण्ठ (सं० पु०) कोकिल, कोयल, जिसका स्वर मधुर हो, मयूर-हंस, कबूतर।

कलकना (क्रि० अ०) शोर करना, चीत्कार करना, चिल्लाना, घोर शब्द करना, ज़ोर से पुकारना।

कलकल (सं० पु०) नदी आदि के प्रवाह का शब्द, कोलाहल, शोर।

कलकानि (सं० स्त्री०) दुःख, हैरानी, परेशानी, चिन्ता।

कलकृर (अ० सं० पु०) ज़िले का मुख्य प्रबन्ध करने वाला हाकिम, तरतीब से रखनेवाला पुरुष, सरकारी मालगुजारी वसूल करनेवाला

कलकृरी (सं० स्त्री०) कलकृर का दफ़्तर।

कलंक (सं० पु०) अपयश, अपवाद, दोष, दुष्कीर्ति, दाग, मिथ्यापराध। [युक्त।

कलंकित (वि०) दूषित, अपराधी, अपयशी, बुराई

कलंकी (वि०) दोषयुक्त, अपवादी, अपराधी, दोषी।

कलगी (तु० सं० स्त्री०) मकानों का ऊँचा हिस्सा, रत्न जटित शिर का आभूषण, लावनी का एक ढङ्ग, कलंकी, शिखर, चूड़ा।

कलचुरी (सं० पु०) एक प्राचीन राजवंश।

कलंज (सं० पु०) तम्बाकू का पौधा, वृक्ष, हिरन, पक्षी विशेष का मांस, एक तोल विशेष।

कलछी (सं० स्त्री०) करछी, करछुली,करछुल जिससे पूड़ी आदि पकवान पदार्थ पलटे और निकाले जाते हैं।

कलछुल (सं० पु०) देखो कलछी।

कलछुला (सं०पु०) भाड़ में से बालू निकालने का यन्त्र।

कलछुली (सं० स्त्री०) कलछी, करछी।

कलदार (वि०) कल लगा हुआ, पेंच लगा हुआ, जिसमें कल लगी हुई हो, वह रुपया जो टकसाल में मशीन द्वारा बनाया गया हो।

कलधूत (सं० पु०) चाँदी।

कलधौत (सं० पु०) सोना,स्वर्ण। [बन्दर नचाने वाला।

कलन्दर (सं० पु०) मदारी, वर्णसङ्कर एक जाति, रीछ,

कलप (सं० पु०) ख़िज़ाब, कल्प, कलफ़।

कलपतरु (सं० पु०) देव वृक्ष।

कलपना (क्रि० अ०) कुढ़ना, तड़पना, घबड़ाना, दुखित होना। [जी दुखाना, रुलाना, तरसाना।

कलपाना (क्रि० स०) कुढ़ाना, दुःख देना, दुःखी करना,

कलपांत (सं० पु०) काल का अन्त।

कलपित (वि०)कृत्रिम।[लेई जो धोबी काम में लाते हैं।

कलफ़ (सं० पु०) माड़, माड़ी, चावल आदि की पतली

कलबल (सं० पु०) युक्ति, दाँव पेच, उपाय, हल्ला गुल्ला, अस्पष्ट, हावभाव। [हस्तिशावक।

कलभ (सं० पु०) हाथी, या ऊँट का बच्चा, धतूरा, करभ,

कलम (सं पु०) लेखनी, लिखने का यन्त्र, पेड़ की डाली जो अन्यत्र लगाई जाती है।

कलमकार (सं० पु०) चित्रकार, रंग भरनेवाला, जिसका कलम द्वारा कार्य होता हो, कलम की दस्तकारी करनेवाला, कपड़ा विशेष जिस पर विशेष रूप से बेल बूटे होते हैं। [धब्बा, बुराई।

कलमख (सं० पु०) पाप, दोष, कलंक, लांछन, दाग,

क़लमतराश (फ़ा० सं० पु०) चाकू, क़लम बनाने की छुरी, कहार और हाथी चलानेवालों की भाषा में एक प्रकार की खूँटी। [बक्स, या पात्र।

क़लमदान (फ़ा० सं० पु०) क़लम रखने का तख़्ते का

कलमल (सं० स्त्री०) कुलबुल, चञ्चल, छटपट।

कलमलाना (क्रि० अ०) कुलबुलाना, कनकनाना, छटपटाना, चञ्चल होना।

कलमलाए (क्रि०) चंचल हुए, छटपटाए।

कलमा (अ० सं० पु०) वाक्य, बात, मुसलमानों का सब से माननीय मूल मंत्र।

क़लमी (फ़ा० वि०) लिखित, लिखा हुआ।

कलमीशोरा (सं० पु०) शोरा विशेष जो साधारण से अधिक साफ़ और तेज़ होता है, तीव्र शोरा।

कलमुँहा (वि०) काले मुँह वाला,दोषी,कलंकित,लांछित।

कलरव (सं० पु०) मधुर स्वर कोकिल, कबूतर, जनसमुदाय का शब्द, शोर, अस्फुट शब्द।

कलल (सं० पु०) जरायु, झिल्ली, गर्भ को आच्छादित करनेवाला, पनला चमड़ा। [बिकने का स्थान।

कलवरिया (सं० पु०) कलवार की दूकान, शराब

कलवार (सं० पु०) कलार, कलाल, मद्य बनाने या बेचनेवाली जाति।

कलवारिन (सं० स्त्री०) कलवार की स्त्री।

कलश (सं० पु०) घड़ा, गगरा, मन्दिर इत्यादि का शिखर, चोटी, सिरा, प्रधान अङ्ग, कश्मीर का एक राजा विशेष, श्रेष्ठ व्यक्ति, नृत्य की एक वर्त्तना।

कलशी (सं० स्त्री०) गगरी, घड़िया, छोटा जल पात्र, मन्दिर का छोटा कंगूरा, पृष्टपर्णी, पिठवन, वाद्य विशेष।

कलस (सं० पु०) देखो कलश। [विशेष।

कलसिरी (सं० स्त्री०) काले शिर की चिड़िया, पक्षी

कलसा (सं० पु०) पानी रखने का पात्र, गगरा, घड़ा, मन्दिर का शिखर।

कलसी (सं० स्त्री०) देखो कलशी।

कलहंतरिता (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो पति का अनादर कर पश्चात्ताप करे, अवस्थानुसार दस नायिका के भेदों में से एक।

कलहंस (सं० पु०) हंस, राजहंस, श्रेष्ठ राजा, परमात्मा, ब्रह्मा, वर्ण वृत्त विशेष, संकर जाति की एक रागिनी।

कलह (सं० पु०) विवाद, क्लेश, झगड़ा द्वन्द, तलवार का म्यान।

कलहकारी (वि०) झगड़ालू, क्लेश करनेवाला, द्वन्दी।

कलहप्रिय (वि०) नारद, मैना।

कलहान्तरिता (सं० स्त्री०) देखो कलहंतरिता। [कर्कशा।

कलहारी (सं० स्त्री०) लड़ाकी, लड़ने वाली, क्लेश करनेवाली,

कलहिन (सं० स्त्री०) लड़ाकी स्त्री, शनि की स्त्री का नाम।

कलही (सं० स्त्री०) देखो कलहकारी।

कला (सं० स्त्री०) अंश, भाग, भेद।

कलाई (सं० स्त्री०) मणिवन्ध, गट्टा, पहुँचा।

कलाकन्द (सं० पु०) बर्फी, मिठाई विशेष।

कलाकौशल (सं० पु०) हुनर, कारीगरी शिल्प, दस्तकारी या उसकी निपुणता।

कलाजङ्ग (सं० पु०) कुश्ती का एक पेंच, मल्लयुद्ध का दांव विशेष। [शिव, कला धारण करनेवाला।

कलाधर (सं० पु०) चन्द्रमा, दण्डक छन्द का एक भेद,

कलानाथ (सं० पु०) चन्द्रमा, गन्धर्व विशेष।

कलानिधि (सं० पु०) चन्द्रमा, शशि।

कलाप (सं० पु०) समूह, झुण्ड, मोर की पूँछ, मुट्ठा, कमरबन्द, करधनी, चन्द्र कलावा, व्यापार, वर्ष में चुकानेवाला ऋण, वेद की एक शाखा, राग विशेष, मल्हार।

कलापट्टी (सं० स्त्री०) जहाजों की पटरियों की सन्धियों में सन आदि भरने का काम।

कलापिन (सं० स्त्री०) मोरनी, निशा, रात्रि, नागरमोथा।

कलापी (सं० पु०) मोर, कोयल, वट वृक्ष, वैशंपायन ऋषि का एक शिष्य।

कलाबत्तू (सं० पु०) सोने चाँदी का बहुत पतला तार, या उससे बनाई हुई लैस, फीता। [वाला, नट।

कलाबाज (वि०) कला लेखने वाला, नट-क्रिया करने

कलाबाजी (सं० स्त्री०) नट-क्रिया, ढेकली, शिर के सहारे उलट जाना।

कलाम (सं० पु०) वाक्य, बचन, उक्ति, वार्त्तालाप, बातचीत, वादा, संकल्प, प्रतिज्ञा। [वाले, शुण्डी।

कलार (सं० पु०) जाति विशेष, शराब बेचने या बनाने

कलाल (सं० पु०) कलवार, कलार। [में निपुण।

कलावन्त (सं० पु०) गवैया, नट, कलाबाज, गायन-कला

कलावान (वि०) गुणी, कला-कुशल, चतुर।

कलि (सं० पु०) बहेड़े का फल, पाशे के खेत की गोट विशेष, चौथा युग, कलह, पाप, सूरमा, वीर, शिव का एक नाम है, छन्द में गण भेद, विवाद, झगड़ा।

कलिका (सं० स्त्री०) कली, बे खिला फूल, वीणा का अग्र भाग, पूर्व कालीन बाजा विशेष, छन्द विशेष का एक भेद, कला महूर्त, बुरा समय।

कलिकाल (सं० पु०) कलियुग, बुरा समय।

कलिङ्ग (सं० पु०) देश विशेष, पक्षी विशेष जो मटीले रङ्ग का होता है, इन्द्र जौ, सिरस, पाकर, तरबूज, राग विशेष।

कलिङ्गड़ा (वि०) कलिङ्ग देश निवासी, राग विशेष।

कलिञ्जर (सं० पु०) पर्व्वत विशेष जो बुंदेलखण्ड में विद्यमान है, कलिन्जर।

कलिन्द (सं० पु०) भास्कर, सूर्य, बहेड़ा पर्व्वत विशेष, जहाँ से यमुना निकली है।

कलिन्दजा (सं० स्त्री०) यमुना।

कलिन्दी (सं० स्त्री०) कालिन्दी, यमुना।

कलिमल (सं० पु०) पाप, कलुष, दोष।

कलिया (सं० पु०) पकाया हुआ मांस।

कलियाना (क्रि० अ०) कली युक्त होना, चिड़ियों के नये पंख निकलना।

कलियुग (सं० पु०) देखो कलिकाल।

कलियुगी(वि०)दुर्वृत्ति वाला,बुरा,कलियुग का पैदा हुआ, बुरे युग का उत्पन्न।

कलिल (वि०) मिश्रित, ओतप्रोत, घना, दुर्गम, सघन (सं०पु०)पंक,कीचड़,चहला, दलदल।[विकसित पुष्प।

कली (सं० स्त्री०) कलिका, ढोंढी, कोंपल, अर्द्ध

क़लीन्दा (सं० पु०) तरबूज, हिनवाना।

क़लील (अ० वि०) थोड़ा, अल्प,कम, न्यून।

कलुआबीर (सं० पु०) सावरी मंत्री का एक देवता।

कलुष (सं० पु०) मैल, पाप, दोष, ऐब।

कलुषयोनिज (वि०) अनौरस, दासीपुत्र।

कलुषाई (सं० स्त्री०) बुद्धि की मलीनताई, विकार, दोष, अपवित्रता, मलीनता। [बुरा, दुष्कृती, पापी।

कलुषित (वि०) दूषित, मैला, दुखित, क्षुब्ध, असमर्थ,

कलूटा (वि०) काला, काले रङ्ग का।[भोजन, कलेवा।

कलेऊ (सं० पु०) जलखावा, प्रातःकाल का अल्प

कलेजा (सं० पु०) हृदय, अदृश्य भाग, करेजा।

मुहा०—कलेजा उलटना=अधिक कै करना। कलेजा काँपना=भयभीत होना। कलेजा जलना=दुखी होना, कुढ़ना। कलेजा ठण्डा करना=मनोरथ सिद्ध करना, मन चाही बात होने से चित्त प्रसन्न करना। कलेजा फटना=अधिक दुःख से व्याकुल होना। कलेजे पर साँप लोटना=अधिक दुःखी होना। कलेजे में डालना=अधिक चाहना। कलेजे से लगा रखना=अधिक चाहना।

कलेजी (सं० स्त्री०) कलेजे का मांस।

कलेवर (सं० पु०) शरीर, देह, बदन, चोला।

कलेवा (सं० पु०) देखो कलेऊ।

कलेश (सं० पु०) दुःख,क्लेश,विपत्ति।

कलोर (सं० स्त्री०) नयी गाय, ओसर। [खेल-कूद।

कलोल (सं० पु०) आमोद, प्रमोद, क्रीड़ा, केलि, विनोद,

कलोलना (क्रि० अ०) खेलना, क्रीड़ा करना।

कलोलिनी (सं० स्त्री०) कल्लोलिनी, प्रवाहित नदी, तरङ्गिणी। [विशेष, औषधि विशेष।

कलौंजी (सं० पु०) पौधा विशेष, मरगल तरकारी

कलौंस (वि०) कलंक, स्याही, कालापन।

कल्क (सं० पु०) चूर्ण, बुकनी, गूदा, पीठी, शठता, मल, कान की मैल, पाप, अवलेह, ओषधि को पीस कर बनाई हुई चटनी, बहेड़ा, गन्ध द्रव्य विशेष।

कल्क फल (सं० पु०) पौधा विशेष।

कल्की (सं० पु०) कलि में होनेवाला अवतार, (वि०) पापी, अपराधी, बुरा, निकृष्ट।

कल्प (सं० पु०) विधान, विधि, उपाय, अभिप्राय, ब्रह्मा का दिन, शास्त्र विशेष, कर्मकाण्ड, विभाग, एक प्रकार का नृत्य।

कल्पतरु (सं० पु०) कल्प वृक्ष, जिससे मुंह माँगी वस्तु मिल सके, जिस वस्तु की इच्छा की जाय वह उससे मिल जाय।

कल्पद्रुम (सं० पु०) देखो कल्पतरु।

कल्पना (सं० स्त्री०) बनावट, रचना, अप्रमाणित, फ़र्ज़ी।

कल्पपादप (सं० पु०) कल्पवृक्ष, देववृक्ष, कल्पद्रुम।

कल्पलता (सं० स्त्री०) कल्पद्रुम, कल्पवृक्ष। [से रहना।

कल्पवास (सं० पु०) माघ में महीने भर गङ्गा पर संयम

कल्पवृक्ष (सं० पु०) कल्पतरु, देववृक्ष, वह वृक्ष जिससे मनोवांछित वस्तु प्राप्त हो। [का विधान है।

कल्पसूत्र (सं० पु०) ग्रन्थ विशेष जिसमें यज्ञादि कर्मों

कल्पान्त (सं० पु०) प्रलय, अन्तिम काल।

कल्पान्तस्थायी (वि०) अक्षय,कभी नाश न होने वाला।

कल्पित (वि०) मनमाना, बनावटी।

कल्पितोपमा (सं० स्त्री०) उपमा जो विशेष कवियों द्वारा निर्मित होती है। [विशेष।

कल्मष (सं० पु०) पाप, अघ, अपराध, मैल, नरक

कल्माष (वि०) चितकबरा, काला, रंगबिरंगा, चित्रवर्ण।

कल्माषपाल (सं० पु०) कलवार।

कल्य (सं० पु०) प्रातः काल, गत या आने वाला दिन।

कल्याण (सं० पु०) मङ्गल, आनन्द, शुभ, भलाई।

कल्याणभार्य (सं० पु०) वह पुरुष जो बार २ बिवाह करे और उसकी स्त्री मर जाय।

कल्याणी (वि०) आनन्द करने वाली सुन्दरी।

कल्यान (सं० पु०) देखो "कल्याण"।

कल्ल (सं० पु०) बहिरा।

कल्लर (सं० पु०) ऊसर, खार।

कल्ला (सं० पु०) अङ्कुर, किल्ला, गला, गोंफा। [वाला।

कल्लादराज़ (फ़ा० वि०) दुर्वचनी,बढ़ बढ़ कर बात बनाने

कल्लादराज़ी (सं० स्त्री०) मुँहज़ोरी, बराबरी।

कल्लाना (क्रि० अ०) असह्य होना, दुःखदायी होना, चोट लगने के पश्चात् पीड़ा होना।

कल्लू (वि०) काला कलूटा।
कल्लोल (सं० पु०) पानी की लहर, तरंग, मौज, उमंग क्रीड़ा, किलोल। [सरिता।
कल्लोलिनी (सं० स्त्री०) लहराती हुई नदी, किल्लोलित
कलह (क्रि० वि०) देखो "कल"।
कलहरना (क्रि० अ०) भुजना, तला जाना।
कलहारना (क्रि० स०) तलना, भूनना।
कवक (सं०) कवल, ग्रास, छत्रक।
कवच (सं० पु०) आवरण, छाल, छिलका, जिरहबख्तर, सँजोया, लोहे का बना हुआ वस्त्र विशेष जिसे शूर-वीर युद्ध के समय पहिना करते हैं।
कवन (वि०) कौन, किस, क्या।
कवयी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली, सुंभा।
कवर (सं० पु०) कवल, ग्रास, कौर, लुक़मा, निवाला, आच्छादन।
कवरी (सं० स्त्री०) जूड़ा, चोटी, गुच्छा, कली।
कवर्ग (सं० पु०) क से ङ तक का अक्षर समूह, कण्ठ से उच्चारित पाँच अक्षर।
कवल (सं० पु०) कवर, भोजन का वह भाग जो एक बार खाने के लिए लिया जाता है, मछली विशेष, एक तोल विशेष।
कवलित (वि०) भक्षित, खाया हुआ, भुक्त, ग्रसित।
क़वायद (फ़ा० सं० स्त्री०) नियम, व्यवस्था, व्याकरण।
कवि (सं० पु०) काव्य करने वाला, कविराज, कविता रचने वाला, ऋषि, पण्डित, शुक्राचार्य, सूर्य उल्लू, ब्रह्मा। [वर्णन।
कविता (सं० स्त्री०) रचना, प्रभावशाली पद्यमय
कविताई (सं० स्त्री०) देखो "कविता"। [कविता।
कवित्त (सं० पु०) छन्द शास्त्र, एक छन्द विशेष, काव्य,
कविराज (सं० पु०) श्रेष्ठ कवि, भाट, बङ्गाली वैद्यों की उपाधि।
कविराय (सं० पु०) देखो "कविराज"।
कविशेखर (सं० पु०) महान कवि, छन्द शास्त्र या सङ्गीत की साठ कलाओं में से एक।
कव्य (सं० पु०) पितरों को दिया जाने वाला अन्न।
कव्यवाह (सं० पु०) वह अग्नि जिसमें पिण्ड से पितृ यज्ञ में आहुति दी जाती है।

कशमकश (फ़ा० सं० स्त्री०) खींचातानी, ऐंचातानी, भीड़भाड़, धक्कमधक्का, आगा-पीछा, सोच-विचार, दुविधा, असमंजस, सन्देह।
कशा (सं० स्त्री०) कोड़ा, चाबुक, रस्सी।
कशिपु (सं० पु०) तकिया, बिछौना, आसन, पहनावा, कपड़ा, अन्न, भात। [का कढ़ा हुई बेल बूटा।
कशीदा (फ़ा० सं० पु०) गुलकारी का कार्य, कपड़े पर सुई
कशेरू (सं० पु०) एक प्रकार का फल, कसेरू। [अचैतन्य।
कश्मल (सं० पु०) मोह, बेहोशी, मूर्छा, पाप, अघ,
कश्मीर (सं० पु०) एक पर्व्वतीय प्रदेश जो पञ्जाब के उत्तर में हिमालय पर्व्वत पर बसा हुआ है।
कश्मीराज (सं० पु०) केशर।
कश्मीरी (वि०) कश्मीर का निवासी या वहाँ उत्पन्न हुआ, कश्मीर देश की भाषा।
कश्यप (सं० पु०) एक वैदिक कालीन ऋषि, ऋग्वेद के कुछ मंत्रों के ऋषि, कछुआ, मछली विशेष, मृग विशेष। [हुआ है।
कश्यमेरु (सं० पु०) एक पर्व्वत विशेष जहाँ कश्मीर बसा
कष (सं० पु०) सान, कसौटी, सोने की परीक्षा करने वाला पत्थर।
कषा (सं० पु०) रस्सी, चाबुक।
कषाया (सं० पु०) कषैला, काढ़ा।
कषेला (वि०) कसाव।
कषैला (वि०) कसैला, कसाव। [तीफ़, मुश्किल।
कष्ट (सं० पु०) दुःख, क्लेश, वेदना, कथा, आपत्ति, तक-
कष्टी (वि०) कष्टवाला।
कष्टकल्पना (सं० स्त्री०) विचारों की खींच खाँच, कठिनाई से घटने वाली युक्ति।
कष्टसाध्य (वि०) कठिनता से घटने वाली युक्ति, मुश्किल से होने वाला कार्य, दुष्कर।
कस (सं० पु०) परीक्षा, कसौटी, जाँच, परीक्षा।
कसक (सं० स्त्री०) चोट के लगने के उपरान्त की पीड़ा।
कसकना (क्रि० अ०) दर्द होना, सालना, टीसना, दुःख।
कसकुट (सं० पु०) मिश्रित धातु विशेष।
कसन (सं० स्त्री०) कसने की क्रिया, कसने का ढङ्ग, किसी वस्तु को बाँधने की रस्सी, घोड़े की तंग बाँधने की पद्धति। [करना।
कसना (क्रि० स०) बाँधना, खींचना, परखना, परीक्षा

कसनी (सं० स्त्री०) बाँधने की वस्तु, बेठन, गिलाफ़, अँगिया, चोली, कसौटी, परीक्षा।
क़सबा (अ० सं० पु०) बड़ा गाँव, या वह छोटा नगर जहाँ कच्चे पक्के मकान और साधारण गाँव से आबादी विशेष हो। [रिया, रण्डी, छिनाल, दुराचारिणी।
कसबिन (सं० स्त्री०) वेश्या, व्यभिचारिणी स्त्री, पतु-
कसबी (सं० स्त्री०) देखो "कसबिन"।
कसमस (सं० स्त्री०) हिचकिच, संकोच, सोच-विचार, आगा-पीछा।
कसमसाना (क्रि० अ०) कसमस करना, शरीर तोड़ना, हिचकिचाना, आगा पीछा करना, सोच विचार करना।
कसर (सं० स्त्री०) कमी, अल्पता, न्यूनता, त्रुटि।
कसरत (सं० स्त्री०) व्यायाम, परिश्रम, शारीरिक बल बढ़ाने वाले दंड बैठक आदि।
कसरती (वि०) कसरत करने वाला, परिश्रमी।
कसरवानी (सं० पु०) बनियों की जाति विशेष।
कसरहट्टा (सं० पु०) कसेरों का बाज़ार, बर्तन आदि बिकने की हाट।
कसहन (सं० पु०) टूटे फूटे काँसे के बरतनों के टुकड़े।
कसहनी (सं० स्त्री०) कसहँडी, काँसे पीतल के चौड़े मुंह वाले बरतन।
कसाई (सं० पु०) बधिक, घातक,घाती, बूचड़, गौ आदि पशुओं का हनन करने वाला या उनके मांस का व्यापारी।
कसाना (क्रि० अ०) कसैला हो जाना, काँसे के पात्र के प्रभाव से किसी वस्तु का बिगड़ जाना।
कसाला (सं० पु०) कष्ट, तकलीफ़, दुःख।
कसाव (सं० पु०) कसैलापन, खिँचाव, बँधाव।
कसिया (सं० स्त्री०) पक्षी विशेष। [आना।
कसियाना (क्रि० अ०) कसाव युक्त होना, कसैला हो
कसी (सं० स्त्री०) हल की कुसी, पृथ्वी नापने की एक रस्सी, लांगूल, फाल।
कसीदा (सं० पु०) देखो "कशीदा"।
कसीस (सं० पु०) वस्तु विशेष जो रंग और औषधि बनाने के काम में आती है।
कसून (सं० पु०) कञ्जी आँख का घोड़ा, सुलेमानी अश्व।
क़सूर (अ० पु०) अपराध, ऐब, दोष, बुराई, ख़ता।
क़सूरमन्द (अ० वि०) अपराधी, दोषी, ऐबी।
कसूरवार (अ० वि०) देखो "क़सूरमन्द"।
कसेरा (सं० पु०) ठठेरा। [तालाबों में होता है।
कसेरू (सं० पु०) एक मेवा विशेष, जो झीलों और
कसैया (सं० पु०) पारखी, परखने वाला, जाँचने वाला, कसने वाला, जकड़ने वाला, बांधने वाला, परीक्षा करने वाला। [आँवला आदि, कषाव, कसाव।
कसैला (वि०) कषाय स्वाद वाले पदार्थ जैसे बहेड़ा,
कसैलापन (सं० पु०) कषैलता, कसैले का भाव।
कसैली (सं० स्त्री०) सुपाड़ी, कषैली वस्तु।
कसोरा (सं० पु०) मिट्टी का प्याला, कटोरा।
कसौंजा (सं० पु०) पौधा विशेष, कसौंदी।
कसौटी (सं० स्त्री०) सोना जाँचने का पत्थर, कसनी।
कसौंदी (सं० स्त्री०) कसौंजा, पौधा विशेष।
कस्तूर (सं० पु०) वह मृग जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है, या वह गोला जिसके भीतर कस्तूरी रहती है।
कस्तूरा (सं० पु०) वह वस्तु जिसमें से मोती निकलता है।
कस्तूरिया (सं० पु०) कस्तूरी मृग, वह हिरन जिसकी नाभि में कस्तूरी हो।
कस्तूरी (सं० स्त्री०) सुगन्धित द्रव्य विशेष जो मृग की नाभि में होती है, मृगमद। [कस्तूरी होती है।
कस्तूरी मृग (सं० पु०) मृग विशेष जिसकी नाभि में
कहँ (प्रत्यय) के लिए, लिए। [प्रबल हास्य।
क़हक़हा (सं० पु०) ठट्ठा, ज़ोर का हास्य, अट्टहास,
कहगिल (फ़ा० सं० स्त्री०) भूसा मिला हुआ गारा।
कहन (सं० स्त्री०) कथन, उक्ति, कहावत। [लना।
कहना (क्रि० स०) उच्चारण करना, बोलना, शब्द निका-
कहनावत (सं० स्त्री०) कथा, कहावत, उक्ति।
कहनी (सं०स्त्री०) कहनी,कथा,गढ़ी बात,प्रचलित उक्ति।
कहनूत (सं० स्त्री०) कहावत, कहनावत, बात।
क़हर (अ० सं० पु०) विपत्ति, आपत्ति, ग़ज़ब, आफत।
कहरत (क्रि०) कराहता है।
कहरना (क्रि० अ०) कराहना, पीड़ा से दुखी होकर स्वर निकालना। [कहलाना।
कहलाना (क्रि० स०) संदेशा भेजना, दूसरे के द्वारा
क़हवा (अ० सं० पु०) वृक्ष विशेष जिसके बीजों का शरबत बनाया जाता है

कहवाना (क्रि० स०) देखो "कहलाना"।
कहवैया (वि०) कहने वाला।
कहहिं (क्रि०) कहते हैं।
कहाँ (क्रि० वि०) किस जगह, कौन स्थान। [उपदेश।
कहा (सं० पु०) कथन, वचन, बात, आज्ञा, आदेश,
कहाना (क्रि० स०) देखो "कहलाना"।
कहानी (सं० स्त्री०) कथा, गल्प, कहानी, बात।
कहार (सं० पु०) शूद्र जाति विशेष जो जल लाने, डोली ले जाने आदि, सेवा कार्य करती है।
कहावत (सं० स्त्री०) बोल-चाल में आने वाले वाक्य, उक्ति, प्रचलित, लोकोक्ति। [अपराध।
कहासुना (सं० पु०) अनुचित कथन,व्यवहार, भूल-चूक,
कहासुनी (सं० स्त्री०) वाद-विवाद, झगड़ा, अनुचित वार्त्तालाप।
कहि (क्रि०) कहकर।
कहिजात (क्रि०) कहा जाता है।
कहीँ (क्रि० वि०) अनिश्चित स्थान, किसी जगह। (क्रि० वि०) किसी स्थान, कहीं।
कहुआ (सं० पु०) औषधि विशेष, कहुआ।
काँइयाँ (वि०) धूर्त, चालाक, होशियार, फ़रेबी।
काँकर (सं० पु०) कङ्कड़, कङ्कर।
काँकरी (सं० स्त्री०) छोटी कङ्कड़ी।
काँकिनी (सं० स्त्री०) कौड़ी। [गड्ढा।
काँख (सं० स्त्री०) बगल, बांह की जड़ के नीचे का भाग,
काँखना (क्रि० अ०) अति कठिनता से ऊँ, आँ करना, ज़ोर से वायु को रोकना, खखारना, खांसना, थूकना आह भरना।
काँखसोती (सं० स्त्री०) दुपट्टा डालने का एक ढंग।
काँगड़ा (सं० पु०) एक पक्षी विशेष, एक प्रान्त जो पञ्जाब में पहाड़ी पर बसा है।
काँगनी (सं० स्त्री०) धान विशेष, कँगनी।
काँच (सं० पु०) दर्पण, शीशा, रोग विशेष, धोती का वह भाग जो जङ्घाओं के बीच से पीछे को जाता है। [चर्म।
काँचरी (सं० स्त्री०) कांचली, सांप से ऊपर का पतला
काँजी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का खट्टा रस, सिरका।
काँट (सं० पु०) कंटक, कांटा। [शाल।
काँटा (सं० पु०) शूल, दर्द, तोलने की छोटी तराजू

मुहा०—काँटा सा निकलजाना=दुःखों से छुटकारा पाना।
क़ाँटी (सं० पु०) छोटा कांटा, कील।
काँटना (क्रि० स०) पीटना, ठोकना, मारना, कुचलना, रौंदना, दबाना। [निकट।
काँठा (सं० पु०) गला कंठा, उपकण्ठ, समीप, पास,
काँडी (सं० स्त्री०) उखली, भारी चीज़ों को ढकेलने की लकड़ी, लट्ठा, जहाज़ के लंगर की डांडी, बांस या लकड़ी का पतला सीधा लट्ठा, अरहर का सूखा डंठल।
काँथरी (सं० स्त्री०) गुदड़ी, कथरी।
काँदना (क्रि० अ०) चिल्लाना, रोना, शोर करना।
काँदव (सं० पु०) कीच, कीचड़, पङ्क।
काँदू (सं० पु०) बनियों की एक जाति।
काँदो (सं० पु०) देखो "कांदव"।
काँध (सं० पु०) स्कन्ध, कन्धा, कांधा, कंध।
काँधना (क्रि० स०) उठाना, स्वीकार करना, सँभालना।
काँधर (सं० पु०)कृष्ण केशव।
काँधा (सं० पु०) देखो "कांध"।
काँप (सं० पु०) करनफूल, बांस या लकड़ी की लचीली छड़, हाथी का दांत, सूअर का खाँग, व्याकुल, दबाव।
काँपना (क्रि० स०) थरथराना, रोमाञ्चित होना या हो जाना, हिलना। कांय।
काँवकाँव (सं० पु०) कौवे का शब्द, बुरा शब्द, कांय
काँवर (सं० स्त्री०) बहँगी, या गंगा जल ले जाने की दो टोकरियां जो एक डंडे के सिरों पर बँधी रहती हैं।
काँवरिया (सं० पु०) कामर्थी, काँवर ले जाने वाला व्यक्ति। [वाला।
काँवाँरथी (सं० पु०) कामना से तीर्थ में काँवर ले जाने
काँस (सं० पु०) एक प्रकार की घास।
काँसा (सं० पु०) एक धातु विशेष, कसकुट।
काँसागर (सं० पु०) काँसे का काम करने वाला व्यक्ति।
काँसी (सं० स्त्री०) कांसा, धान के पौधे का एक रोग।
का (प्रत्यय) सम्बन्ध का चिह्न, सम्बन्ध-सूचक।
काई (सं० स्त्री०) जल पर होने वाला आवरण।
काऊ (क्रि० वि०) कोई, कभी, किसी।
काक (सं० पु०) कौआ, कौवा।
काकजंघा (सं० पु०) औषधि विशेष।

काकड़ासिङ्गी (सं० स्त्री०) औषधि विशेष।

काकतालीय (वि०) दैवात्, अकस्मात्, इत्तफ़ाक़िया।

काकदन्त (सं०पु०) असम्भव, आश्चर्यजनक, अद्भुत बात।

काकपक्ष (सं० पु०) कुल्ला, जुल्फ।

काकपद (सं० पु०) भूल को बतलाने वाला चिह्न, हीरे में होने वाला एक दोष, कौए के पैर के समान चिह्न।

काकबन्ध्या (सं० स्त्री०) सकृत्प्रसूता स्त्री जिसके एक ही बार पुत्र उत्पन्न हुआ हो।

काकभुसुंडी (सं० पु०) एक ब्राह्मण जो लोमश के शाप से कौए की योनि में उत्पन्न हुआ और त्रेता में श्रीरामचन्द्र का परम भक्त रहा, जिसका वर्णन रामायण में है।

काकरी (सं० स्त्री०) ककड़ी, ककरी।

काकली (सं० स्त्री०) मधुर ध्वनि, कलनाद, सेंद लगाने की सबरी, साठी, धान, गुञ्जा, संगीत का वह स्थान विशेष जहां सूक्ष्म और स्फुट स्वर लगता है।

काका (सं० स्त्री०) काकजंघा, मसी, ककोली, घुंघची, कठूमर, कठगूलर, मकोय, चाचा, पिता का छोटाभाई।

काकातूआ (सं० पु०) एक तोता पक्षी विशेष।

काकिणी (सं० स्त्री०) घुंघची, तोल विशेष, कौड़ी।

काकिनी (सं० स्त्री०) देखो "काकिणी"।

काकी (सं० स्त्री०) कौए की मादा, चाची, पिता के छोटे भाई की स्त्री।

काकु (सं० पु०) व्यंग, तंज़, ताना, व्यंग्योक्ति जिससे अनेक अर्थ हो सकें।

काकुत्स्थ (सं० पु०) रामचन्द्र, ककुत्स्थ वंश में उत्पन्न एक राजा।

काकुन (सं० पु०) कँगनी।

काकुल (सं० पु०) जुल्फ़ें, कुल्ले, कनपटी पर लटके हुए बाल।

काकोदार (सं० पु०) साँप।

काकोल (सं० पु०) एक विष का नाम।

काग (सं० पु०) कौआ, वायस, वृक्ष विशेष।

काग़ज़ (अ० सं० पु०) कागद।

काग़ज़ात (अ०स०पु०) काग़ज़ पत्र, काग़ज़ का बहुवचन।

काग़ज़ी (अ० वि०) काग़ज़ का बना हुआ, जिसका छिलका पतला हो, काग़ज़ की दूकान करने वाला।

कागद (सं० पु०) काग़ज़।

कागर (सं० पु०) कागद, काग़ज़।

कागावासी (सं० पु०) भांग जो सवेरे छानी जाय, एक प्रकार का मोती।

काचरी (सं० स्त्री०) केंचुली, काँचली।

काचा (वि०) कच्चा, डरपोक, कायर, भीरु।

काची (सं० स्त्री०) दूध रखने की हाण्डी, दुग्ध रखने का मिट्टी का बर्तन।

काचो (वि०) अनित्य, मिथ्या, असार, निस्सार।

काछ (सं० पु०) पेडू और जाँघ के जोड़ का स्थान।

काछना (क्रि० स०) कटि वस्त्र के लटके हुए भाग को बाँधना, बनाना, सँवारना, पहिनना।

काछनी (सं० पु०) कछनी, धोती।

काछा (सं० पु०) कछनी।

काछिय (क्रि०) काछना चाहिए; पहनना चाहिए।

काछी (सं० पु०) तरकारी बोने और बेचने वाला व्यक्ति।

काछे (वि०) निकट, पास, समीप, नज़दीक।

काज (सं० पु०) काम, कृत्य, प्रयत्न जो किसी कार्य के अर्थ किया जाता है, धन्धा।

काजर (सं० पु०) देखो "काजल"।

काजल (सं० पु०) कज्जल, काजर, धुएँ से जमा हुआ कीट।

क़ाज़ी (अ० सं० पु०) न्यायाध्यक्ष, न्याय करने वाला, मुसलमानों के धर्म रीति की व्यवस्था करने वाला, विचारक।

काजू (सं० पु०) एक प्रकार का सूखा मेवा, एक वृक्ष विशेष।

काजे (अव्य०) लिये, निमित्त।

काञ्चन (सं० पु०) सुवर्ण, हेम, सोना, पद्म, केसर, पुष्प विशेष।

काञ्ची (सं० स्त्री०) मेखला, आभरण विशेष, नगर विशेष।

काञ्चीपद (सं० स्त्री०) जंघन, नितम्ब।

कांजिम (सं० पु०) माँड, भात से निकाला हुआ जल, मांडी।

काट (सं० स्त्री०) चीरा, काटा हुआ, मैल, मलीनता खण्ड २ करने की पद्धति।

काटकूट (सं० स्त्री०) काट छाँट, छाँट छूट, कतरब्यौंत, छेदन भेदन।

काट खाना (क्रि०) दाँत से काटना।

काटछाँट (सं० स्त्री०) देखो "काट कूट"।

काटवाना (क्रि० स०) छँटवाना, कटाना, ब्यौंतवाना।

काटन (सं० पु०) छेदन भेदन, ब्यौंत।

काटना (क्रि० स०) भेदना, ब्यौंतना, छाँटना।

काटु (वि०) काटने वाला।

काठ (सं० पु०) लकड़ी, काठी, दारु, काष्ठ।

मुहा०—काठ कबाड़ = काठ की टूटी फूटी वस्तु। काठ का उल्लू = मूर्ख, अनारी। काठ चबाना = दुःख से समय बिताना। काठ में पाँव देना = स्वयं दुःख भोगने के

लिए तैय्यार होना । काठ की पुतली = निरामूर्ख, काठ की पुतली की तरह दूसरों की इच्छा पर चलना ।
काठड़ा (सं० पु०) कठौता, काठ का बना हुआ बर्तन ।
काठमांडू (सं० पु०) नगर विशेष, नैपाल की राजधानी ।
काठिन्य (सं० पु०) कड़ापन, कठोरता, सख़्ती दृढ़ता, निठुरता । [भाग ।
काठियावाड़ (सं० पु०) देश विशेष, गुजरात का एक
काठी (सं० स्त्री०) घोड़ों की पीठ पर कसने का जीन ।
काढ़ना (क्रि० स०) निकालना, कसीदा करना, खींचना बाहर करना ।
काढ़ा (सं० पु०) औषधियों का पानी, क्वाथ, जोशांदा ।
काण्ड (सं० पु०) खण्ड, भाग, प्रकरण, खेल, बाण, तीर, शर, व्यापार, दण्ड, वर्ग, परिच्छेद, अवसर, प्रस्ताव ।
काण्डकार (सं० पु०) तीर बनाने वाला ।
कातना (क्रि० स०) रुई से सूत बनाना ।
कातर (वि०) व्याकुल, अधीर, चञ्चल, धैर्यरहित ।
काता (सं० पु०) काता हुआ सूत, धागा, डोरा ।
कातिक (सं० पु०) मास विशेष, कार्तिक ।
कातिकी (सं० स्त्री०) कार्तिक की पूर्णिमा ।
क़ातिल (अ० वि०) घातक, प्राण लेने वाला, जल्लाद ।
काती (सं० स्त्री०) कैंची, सुनारों की कतरनी, छोटी तलवार, सूत कातने वाला । [ऋषि का नाम ।
कात्यायन (सं० पु०) कत ऋषि के गोत्र में उत्पन्न एक
कात्यायनी (सं० स्त्री०) कात्यायन की स्त्री, कषायवस्त्र धारण करनेवाली अधेड़ विधवा, कतगोत्र में उत्पन्न एक दुर्गा, याज्ञवल्क्य की पत्नी ।
कादम्ब (वि०) कदंब-सम्बन्धी, समूह-सम्बन्धी, कदम का पेड़ या फूल, हंस विशेष, ईख, बाण, दक्षिण का प्राचीन राजवंश ।
कादम्बनी (सं० स्त्री०) मेघमाला, घटा, मेघराग की एक रागिनी, मेघ-समूह ।
कादर (वि०) कायर, डरपोक, भीरु । [व्याकुलता ।
कादराई (सं० स्त्री०) भीरुता, डरपोकपन, कायरता, भय,
कादा (सं० पु०) लकड़ियों की पटरी जो जहाज़ों की शहतीरों के जड़ने के लिये लगाई जाती है ।
कान (सं० पु०) कर्ण, श्रोत्र इन्द्रिय ।
मुहा०—कान ऐंठना या उमेठना = भर्त्सना करना, कान खींचना । कान में उँगली देकर रहना = उदासीन होना । कान काटना = छकाना, पराजित करना । कान खड़े होजाना = सावधान होना । कान खोल देना = सावधान कर देना । कान झुकाना = सुनना चाहना, कान देना । कान दबाकर रहना = चुपचाप चलदेना । कान धरना = सावधानी से सुनना । कान पकड़ना = अपनी भूल समझ लेना । कान पर जूँ न रेंगना = असावधान रहना । कान पर रखना = याद रखना । कान पर हाथ धरना = अस्वीकार करना, नाहीं करना । कान फूँकना = अपने वश में कर लेना । कान फूटना = बहिरा हो जाना । कान फोड़ना = भयंकर शब्द करना । कान भरना = विरोध पैदा करना । कान मलना = सजा देना । कान में तेल डालना = उपेक्षा करना । कान में तेल डालकर सो रहना = उदासीनता दिखाना । कान लगाना = उत्सुक होना । कान न हिलाना = कुछ उत्तर न देना । काना कानी करना = चर्चा करना, अफ़वाह कानो कान कहना = गुप्त रीति से कान में कहना ।
कानकुब्ज (सं० पु०) एक प्रकार के ब्राह्मण, कान्यकुब्ज देश में रहने वाले ।
कानड़ा (वि०) काना, एक आंख का व्यक्ति । [मुँह ।
कानन (सं० पु०) बन, जंगल, कान का बहुवचन, ब्रह्मा का
काना (वि०) देखो "कानड़ा" । [नन्हीं ।
कानी (सं० स्त्री०) एक आंख वाली स्त्री, सब से छोटी,
कानाफूसी (सं० स्त्री०) कान के पास कही हुई बात, चुपके २ बोली हुई बात ।
कानि (सं० पु०) लज्जा, मान, सङ्कोच, शर्म ।
कानीन (वि०) अविवाहिता से उत्पन्न पुत्र, कन्याजात, अनूढ़ा पुत्र, अविवाहिता-गर्भज । [रखने का आईन ।
क़ानून (अ० सं० पु०) विधि, नियम, राज्य में शान्ति
क़ानूनदाँ (फ़ा० सं० पु०) क़ानून जानने वाला, विधिज्ञ, क़ानून छांटनेवाला, हुज्जत करनेवाला, कुतर्क करने वाला । [पटवारियों का निरीक्षक ।
क़ानूनगो (फ़ा० सं० पु०) माल का एक कर्मचारी,
कान्त (सं० पु०) स्वामी, पति, कुङ्कुम, लौह विशेष, चन्द्रमा, शिव, विष्णु, बसन्त, श्रीकृष्ण ।
कान्तलौह (सं० पु०) शुद्ध लोहा ।
कान्ता (सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, नारी, औरत ।

कान्तार (सं० पु०) सघनवन, महावन, कुपथ,कुमार्गपथ, कठिन मार्ग ।

कान्ता-शक्ति(वि०)स्त्रियों का बल,प्रबल बल ।[की कला ।

कान्ति (सं० स्त्री०) शोभा, आभा, दीप्ति, चमक, चन्द्रमा

कान्यकुब्ज (सं० पु०) ब्राह्मणों की जाति विशेष, कान्य-कुब्ज देश में बास करने वाला, कनवजिया ।

कान्ह (सं० पु०)श्रीकृष्ण, माधव ।

कान्हड़ा (सं० पु०) राग विशेष । [लकड़ी विशेष ।

कान्हार (सं० पु०) कृष्ण भगवान् ,कोल्हू में लगानेवाली

कापड़ी (सं० पु०) एक जाति विशेष ।

कापाल (सं० पु०) एक अस्त्र विशेष, बायबिडंग, सन्धि विशेष, जब सन्धि करने वाला पक्ष विपक्षी को समान सत्व देना स्वीकार करे ।

कापालिक (सं० पु०) कुष्ट विशेष, बंगाल प्रान्तीय एक वर्ण संकर जाति, शैवमत के साधू, अघोरी, बाम-मार्गी । [कापाली जाति से उत्पन्न ।

कापाली (सं० पु०) शिव,एक प्रकार का वर्णसंकर अर्थात्

कापुरुष (सं० पु०) भीरु, कादर, निकम्मा, कायर ।

क़ाफ़िया (अ० सं० पु०) अन्तिम अनुप्रास, तुक, सज़ ।

काफ़िर (अ० वि०) मुसलमानों से पृथक धर्म माननेवाले निर्दयी, कठोर, दुष्ट, काफ़िर देश का रहनेवाला, नास्तिक, ईश्वर को न माननेवाला ।

काफी (वि०) इच्छा अनुसार, पूर्ण,पर्याप्त,बस,आवश्यक-तानुकूल, पूरा, मतलब भर के लिये ।

काफ़ूर (सं० पु०) कपूर, कर्पूर ।

काबा (अ० सं० पु०) मुसलमानों का एक तीर्थ विशेष अथवा मुहम्मद साहब का निवास-स्थान जो अरब में है ।

क़ाबिज़ (अ० वि०) अधिकारी, अधिकार रखनेवाला, क़ब्ज़ा रखने वाला । [चतुर ।

क़ाबिल (अ० वि०) विद्वान, योग्य, लायक़, पण्डित,

काबुल (सं० पु०) नदी विशेष, अफ़ग़ानिस्तान का पुराना नाम, या अफ़ग़ानिस्तान का एक प्रधान नगर ।

काबुली (वि०) काबुल का देश निवासी, या वहां का उत्पन्न व्यक्ति और वस्तुएँ ।

क़ाबू (तु० सं० पु०) क़ब्ज़ा, अधिकार, इख़्तियार, ज़ोर, बल, कस, शक्ति । [महादेव, कार्य ।

काम (सं० पु०) इच्छा, मनोरथ, अभिलाषा, मदन,

मुहा०—काम आना (क्रि०) युद्ध में मारा जाना । काम में आना=काम चलाना, किसी तरह काम निकालना । काम निकालना=अपनी इच्छा पूरी करना । काम पूरा करना=समाप्त करना । काम में लाना=व्यवहार में लाना, उपयोग करना ।

कामकाज (सं० पु०) व्यौपार, काम-धन्धा, काम-धाम ।

कामकाजी (सं० पु०) काम धन्धा करनेवाला ।

कामचर (सं० पु०) इच्छानुसार विचरनेवाला ।

कामचलाऊ (वि०) कुछ उपयोगी,थोड़ा काम देनेवाला ।

कामचारी (वि०) कामुक, लम्पट, स्वेच्छानुकूल घूमने वाला, स्वेच्छाचारी ।

कामचोर (वि०) आलसी, अकर्मण्य, काम में मन न लगानेवाला, काम से जी चुरानेवाला, काम से भागने वाला ।

कामज्वर (सं० पु०) ज्वर विशेष ।

कामद (वि०) इच्छानुसार फलदाता, कामना पूरी करनेवाला, मनोरथ पूर्णकर्ता । [शङ्कर ।

कामदहन (सं० पु०) कामदेव को जलानेवाले शिव,

कामदानी (सं० स्त्री०) कलाबत्तू या सलमा सितारे का किया हुआ-बेल बूटा, कसीदा, कसीदा कढ़ा हुआ कपड़ा । [कसीदा या काम किया हुआ ।

कामदार (सं० पु०) राज्य-कर्मचारी, कारिंदा, अमला

कामदुधा (सं० स्त्री०) कामधेनु ।

कामदेव (सं० पु०) मदन, कंदर्प ।

कामधाम (सं०स्त्री०) देखो "कामकाज" ।

कामधेनु (सं० स्त्री०) सब कामना पूर्ण करने वाली गौ विशेष, दान के लिए सुवर्ण की बनाई हुई गाय ।

कामना (सं० स्त्री०) मनोरथ, इच्छा, वांछा ।

कामबाण (सं० पु०) कामदेव के बाण,उन्मादन, सन्तपन इत्यादि ।

कामयाब (फ़ा० सं० पु०) सफल, उत्तीर्ण ।

कामयाबी (फ़ा० सं० स्त्री०) सफलता, कृतकार्यता ।

कामरी (सं० स्त्री०) कँमली, कमरी, छोटा कम्बल ।

कामरू (सं० पु०) आसाम प्रान्तीय एक बड़ा नगर, यहां भारतीय सुप्रसिद्ध कामाक्षा देवी का मन्दिर है ।

कामरूप (सं० पु०) देवता विशेष, बरगद की एक जाति, कामाख्या देवी का प्रसिद्ध स्थान, नगर विशेष जो आसाम प्रान्त में बसा हुआ है, अस्त्र विशेष जिससे

प्राचीन काल में शत्रुओं के चलाये हुए शस्त्र व्यर्थ किए जाते थे, छन्द विशेष। [विद्याधर।

कामरूपी (वि०) बहुरुपिया, अनेक भेष धारण करनेवाला,

कामल (सं० पु०) वसन्त काल, रोग विशेष जिसमें समस्त शरीर और नेत्र पीले पड़ जाते हैं, यह पित्त-विकार से उत्पन्न होता है।

कामशर (सं० पु०) आम, कामबाण। [ग्रन्थ विशेष।

कामशास्त्र (सं०पु०) स्त्री पुरुष के समागम की शिक्षा का

कामसुत (सं० पु०) अनिरुद्ध जो प्रद्युम्न के पुत्र थे।

कामाक्षी (सं० स्त्री०) देवी का एक अभिग्रह, वा देवी की मूर्ति।

कामान्ध (सं० पु०) विषयान्ध।

कामाख्या (सं० स्त्री०) कामरूप, आसाम की सुप्रसिद्ध देवी, सती वा देवी का योनिपीठ। [व्याकुल।

कामातुर (वि०) कामेच्छा से व्याकुल, समागम इच्छा से

कामायुध (सं० पु०) आम, कामदेव का बाण।

कामारथी (सं० पु०) कामार्थी, कामरिया, गङ्गाजलिया, किसी कामना विशेष से तीर्थ में कामरि ले जानेवाला।

कामारि (सं० पु०) काम के शत्रु, शिव, महादेव।

कामिनी (सं० स्त्री०) स्त्री, सुन्दरी, दारुहल्दी, मदिरा, परगाछा, एक वृक्ष विशेष, रागिनी विशेष।

कामिल (अ० वि०) पूर्ण, सब, समूचा, समस्त, योग्य, व्युत्पन्न, होशियार।

कामी (वि०) इच्छुक, काम से व्याकुल, विषयी, चकवा, कबूतर, चिड़ा, सारस, चन्द्रमा, विष्णु, काकड़ासिंगी।

कामुक (वि०) "देखो कामी"। [वाला।

कामोद्दीपक (वि०) सहवास की इच्छा, उत्पन्न करने

कामोद्दीपन (वि०) काम की इच्छा, उत्तेजना।

काम्य (वि०) कमनीय, सुन्दर, अभिलाषा का कारण।

काय (वि०) मनुष्य तीर्थ, प्रजापति तीर्थ, मूर्ति, देह, शरीर, जिस्म। [उपशमन विधान वाला वर्णन।

कायचिकित्सा (सं० स्त्री०) सर्वांग व्यापी रोगों का

कायथ (सं० पु०) कायस्थ, भारतीयों की जाति विशेष।

क़ायदा (अ० सं० पु०) नियम, चाल चलन, क्रम, व्यवस्था, दस्तूर, व्यवहार।

कायफल (सं० पु०) औषधि विशेष।

कायम (अ० वि०) ठहरा, स्थिर, उपस्थित, विद्यमान, निर्धारित, निश्चित।

कायर (वि०) डरपोक, भीरु, कादर, असाहसी।

कायरता (सं० स्त्री०) डरपोकपन, भीरुता, कादरता, कायरपन।

क़ायल (अ० वि०) स्वीकार करने वाला, मानने वाला।

कायस्थ (सं० पु०) "देखो कायथ"।

काया (सं० स्त्री०) शरीर, देह, कलेवर।

कायाकल्प (सं० पु०) औषधि के सेवन द्वारा शरीर को सशक्त करने की क्रिया, निर्बल या जर्जर शरीर को नया करने वाली पद्धति।

कायापलट (सं० पु०) भारी हेर फेर, अद्भुतपरिवर्तन, शरीर बदल जाना, नये रूप की प्राप्ति।

कायिक (वि०) शारीरिक, शरीर से किया हुआ वा उत्पन्न, शरीर-सम्बन्धी।

कार (सं० पु०) क्रिया, कार्य, काम। [रखने वाला वाक्य।

कारक (वि०) करने वाला, कर्ता, हेतु, क्रिया से सम्बन्ध

कारकदीपक (सं० पु०) अलङ्कार विशेष, जिसमें कई एक क्रियाओं का एक ही कर्ता माना जाय।

कारकुन (फ़ा० सं० पु०) बदले में काम करनेवाला, प्रबन्ध कर्ता, कारिन्दा।

कारख़ाना (फ़ा० सं० पु०) कार्यालय, व्यौपार के निमित्त सामान तैयार करने का स्थान।

कारगर (फ़ा० वि०) प्रभावोत्पादक, उपयोगी, प्रभाविनी, प्रभावजनक, असर करनेवाला।

कारगुज़ार (फ़ा० वि०) सुचारु रूप से काम करने वाला, कर्तव्य समझाने वाला, भली भांति काम करने वाला। [कार्यकुशलता, कार्यपटुता।

कारगुज़ारी (फ़ा० सं० स्त्री०) होशियारी, कर्मण्यता,

कारचोबी (फ़ा० वि०) कसीदा, ज़रदोज़ी, गुलकारी, वस्त्र विशेष जिस पर कलाबत्तू का काम हो।

कारज (सं० पु०) कार्य, धन्धा, काम।

कारण (सं० पु०) हेतु, सबब, वजह, बाइस।

कारणमाला (सं० स्त्री०) हेतुओं का क्रम, अलङ्कार विशेष। [प्रधान।

कारणशरीर (सं० पु०) आनन्दमय कोष, सुषुप्त, सत्व,

कारण्डव (सं० पु०) हंस विशेष, पक्षी विशेष।

कारपरदाज़ (फ़ा० वि०) कारकुन, प्रतिनिधि, कारिन्दा, प्रबन्धक। [पेशा, धन्धा।

कारबार (फ़ा० सं० पु०) व्यवसाय, काम काज, व्यौपार,

कारबारी (फ़ा० वि०) काम-काजी ।
कारवाई (फ़ा० सं० स्त्री०) काम, कृत्य, कर्मण्यता ।
कारसाज़ (फ़ा० वि०) काम करने वाला, या पूरा करने की युक्ति निकालने वाला व्यक्ति ।
कारसाज़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) गुप्त कार्यवाही, काम पूरा करने की छिपी युक्ति, चालबाज़ी ।
कारस्तानी (फ़ा० सं० स्त्री०) "देखो कारसाज़ी" ।
कारागार (सं० पु०) बन्दीगृह, क़ैदख़ाना, जेलखाना ।
कारागृह (सं० पु०) "देखो कारागार" ।
कारावास (सं० पु०) क़ैद, सज़ा ।
कारिका (सं० स्त्री०) सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या, नटी, नाटक करने वाले नट की स्त्री, राग विशेष ।
कारिख (सं० स्त्री०) कालिमा, स्याही ।
कारीगर (सं० पु०) दस्तकार, शिल्पकार, सुन्दर वस्तु बनाने वाला । [स्याह ज़ीरा ।
कारीजीरी (सं० पु०) कालीजीरी, एक प्रकार का
कारुणिक (वि०) कृपालु, दयावान, दयालु ।
कारुण्य (सं० पु०) करुणाभाव, दया, मिहरबानी, इनायत, अनुकम्पा ।
कारो (वि०) काला, स्याह ।
कारोबार (फ़ा० सं० पु०) "देखो कारबार" ।
कारोबारी (सं० पु०) व्यवसायी, व्यापारी ।
कार्त्तवीर्य (सं० पु०) कृतवीर्य का पुत्र सहस्रार्जुन, माहिष्मती नगरी का राजा ।
कार्तिक (सं० पु०) वह सम्वत्सर जिसमें कृतिका या रोहिणी में बृहस्पति हों, शरद् ऋतु का दूसरा माह जिसमें पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र में रहता है । [षड़ानन, स्कन्द, महादेव का ज्येष्ठ पुत्र ।
कार्तिकेय (सं० पु०) कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न होने वाले
कार्पण्य (सं० पु०) कंजूसी, सूमपन, कृपणता ।
कार्मुक (सं० पु०) धनुष, परिधि का भाग, चाप, बाँस, खैर, बकायन, मधु विशेष, धन राशि, रुई धुनने का यन्त्र, आसन विशेष ।
कार्य (सं० पु०) व्यापार धन्धा, फल, प्रयोजन, रुपये-पैसे का विवाद झगड़ा, दशम स्थान, आरोग्यता, हेतु, काम ।
कार्यकार }
कार्यकारक } (सं० पु०) काम करनेवाला ।
कार्यकर्त्ता (सं० पु०) कर्मचारी, काम करने वाला ।
कार्य-कारण-भाव (सं०पु०) कारण और कार्य का सम्बन्ध ।
कार्यकुशल (सं०) कार्यदक्ष ।
कार्यक्षम (सं० पु०) कार्यकर्ता ।
कार्यतः (अव्य०) कार्य वश । [रेख करने वाला ।
कार्यदर्शी (सं० पु०) निरीक्षक, काम देखने वाला, देख
कार्याधिकारी (सं० पु०) वह व्यक्ति जिसके अधिकार में काम कराने इत्यादि का प्रबन्ध हो, अफ़सर, प्रतिनिधि ।
कार्याध्यक्ष (सं० पु०) प्रधान कार्यकर्त्ता, अफ़सर ।
कार्यार्थी (वि०) कार्य की सिद्धि चाहने वाला, मन्तव्य रखने वाला । [का काम होता हो ।
कार्यालय (सं० पु०) दफ़्तर, कारख़ाना, जहाँ किसी प्रकार
कार्रवाई (सं० स्त्री०) "देखो कारवाई" ।
कालंजर (सं० पु०) एक पर्व्वत विशेष, और उसके नीचे बसने वाला एक क़सबा ।
काल (सं० पु०) समय, वक्त, क्षण, अवसर, मरण, शिव, शनि, यम, ऋतु, महँगी, अकाल, सर्प ।
मुहा०—काल काटना = व्यर्थ समय बिताना । काल गँवाना = उचित समय पर काम न करना ।
कालकूट (सं० पु०) हलाहल, विष विशेष ।
कालकोठरी (सं० स्त्री०) वह स्थान विशेष जहाँ वायु न जाती हो आदमी दम घाट कर मर जाय, प्रकृति विरुद्ध स्थान, कालाघर ।
कालक्षेप (सं० पु०) समय बिताना, दिन काटना ।
कालचक्र (सं० पु०) समय का हेर-फेर, गर्दिश के दिन, ज़माने का परिवर्तन । [ज्योतिषी, मुर्ग़ा ।
कालज्ञ (सं० पु०) समय की गति को जानने वाला,
कालज्ञान (सं० पु०) समय की जानकारी, स्थिति और अवस्था की पहिचान । [धर्म ।
कालधर्म (सं० पु०) मृत्यु, विनाश, अवसान समय का
कालनेमि (सं० पु०) रावण का मामा, दानव विशेष जिसने देवताओं को विजय कर स्वर्गाधिकार प्राप्त किया जो भगवान् विष्णु के हाथ से मृत्यु पा दूसरे जीवन में कंस हुआ ।
कालपाश (सं० पु०) समय का बन्धन, समय का वह नियम जिसके कारण भूत प्रेत आदि कोई अनिष्ट न कर सकें, मरण-रज्जु, यम-पाश । [भाग ।
कालम (अं० सं० पु०) पुस्तक या समाचार पत्र का काई

कालयवन (सं० पु०) यवनों का एक राजा विशेष जो भगवान् कृष्ण की कोप-दृष्टि से काल को प्राप्त हुआ था। [काटना, गुज़र करना।

कालयापन (सं० पु०) काल बिताना, कालक्षेप, दिन

कालराति (सं० स्त्री०) दिवाली की अमावस्या, दुर्गा की एक मूर्ति, प्रलय काल की रात्रि, भयावनी अँधेरी रात, मनुष्यों की आयु का नाश करने वाली यमराज की भगिनी, ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रात्रि का वह भाग जिसमें कार्य वर्जित होता है।

कालरात्रि (सं० स्त्री०) "देखो कालराति"।

कालवाचक (वि०) समय-बोधक, जिसके द्वारा समय का ज्ञान हो।

कालवाची (वि०) समय का ज्ञान करने वाला।

कालवेला (सं० स्त्री०) ज्योतिष के अनुसार वह समय जिसमें कार्य करने का निषेध हो।

काला (वि०) कृष्ण, काजल के रङ्ग का, स्याह।

कालाकन्द (सं० पु०) धान विशेष जो अगहन में होता है और उसका चावल बहुत दिन तक ठहर सकता है।

कालाकलूटा (वि०) अत्यन्त श्याम, विशेष काला।

कालाग्नि (सं० पु०) प्रलयानल, प्रलय अधिष्ठाता रुद्र, पञ्चमुखी रुद्राक्ष, संहारकारक अग्नि।

कालाचोर (सं० पु०) भारी चोर, अनजान, बुरे से बुरा आदमी, तुच्छ पुरुष।

कालाजीरा (सं० पु०) कृष्ण रङ्ग का जीरा, धान विशेष।

कालातीत (वि०) व्यतीत काल, जिसका समय बीत गया हो। [कुटिल आदमी।

कालानाग (सं० पु०) विषधर सर्प, काला साँप, बहुत

कालापहाड़ (सं० पु०) दुस्तर वस्तु, भयानक और बहुत भारी, अत्यन्त कुटिल। [वतनी की सज़ा।

कालापानी (सं० पु०) देशान्तर वास का दण्ड, जला-

कालि (क्रि० वि०) गत या आने वाला दिन, कालिह, काल।

कालिक (वि०) समयोचित, बेला सम्बन्धी।

कालिका (सं० स्त्री०) चण्डिका, काली, देवी की मूर्ति, काकोली, शृगाली, कौए की मादा, मेघ, सूवर, स्याही, मदिरा, हर विशेष, आँख की कृष्ण पुतली, दक्ष की एक पुत्री, कुहरा, हलकी वर्षा या झड़ी, बिच्छू, सिर में मलने वाली मिट्टी, रण चण्डी, चार वर्ष की कन्या, बिछुआ पौधा, क़िस्तबन्दी, मट्ठे का कीड़ा, काली हर, कान की प्रधान नस, चौथे मुहर्त की दासी, एक नगर विशेष जो पञ्जाब में है।

कालिख (सं० स्त्री०) कलौंछ, स्याही, कज्जल।

कालिङ्ग (सं० पु०) फल विशेष, तरबूज़। [की ओर है।

कालिञ्जर (सं० पु०) एक पर्व्वत विशेष जो बाँदा से पूर्व

कालिन्दी (सं० स्त्री०) यमुना, सूर्य-तनया, कलिन्दी।

कालिमा (सं० पु०) दोष, ऐब, कलङ्क, मलीनता, मालिन्य कालापन, कृष्णता, अँधेरा।

कालिय (सं० पु०) वह सर्प विशेष जिसे श्रीकृष्ण ने वश में किया था। [विद्या, नदी विशेष।

काली (सं० स्त्री०) पार्वती, चण्डिका, दुर्गा, प्रथम महा

कालीदह (सं० पु०) वृन्दावन में यमुना किनारे का वह कुण्ड जहाँ पर काली नाम का सर्प रहता था।

कालीन (वि०) काल सम्बन्धी, चिरकालिक।

क़ालीन (अ० सं० पु०) गलीचा। [के काम में आती है।

कालीमिर्च (सं० स्त्री०) गोल मिर्च जो प्रायः औषधि

काल्पनिक (सं० पु०) मनगढ़ंत, फ़र्ज़ी (वि०) कल्पना करने वाला। [कल।

कालिह (क्रि० वि०) व्यतीत या आने वाला दिवस, कालि,

कावर (सं० स्त्री०) कामर, काँवर, बहँगी, डोली।

कावरी (सं० पु०) रस्सी का वह फंदा जिसमें कोई वस्तु बाँधी जाती है।

कावेरी (सं० स्त्री०) नदी विशेष। [कविता, शुक्राचार्य।

काव्य (सं० स्त्री०) मनोवेग से पूर्ण रचना या वाक्य,

काव्यलिङ्ग (सं० पु०) एक अलंकार विशेष।

काश (सं० पु०) काँस, एक प्रकार की घास, चूहा विशेष, एक मुनि।

काशिराज (सं० पु०) काशी का राजा, दिवोदास, धन्वन्तरि। [बनारस।

काशी (सं० स्त्री०) संयुक्त प्रान्त की एक नगरी विशेष,

काशीकरवट (सं० पु०) काशी का एक तीर्थ स्थान जहाँ लोग आरे के नीचे कट कर प्राण देना धर्म समझते थे, दुःख सहते हुए काशी वास करना।

काशीफल (सं० पु०) कुम्हड़ा, कद्दू।

काश्त (फ़ा० सं० स्त्री०) कृषी, खेती।

काश्तकार (फ़ा० सं० पु०) किसान, कृषक, खेतिहर।

काश्तकारी (फ़ा० सं० स्त्री०) खेतीबारी, किसानी, काश्त का हक़।

काश्मीर (सं० पु०) विख्यात देश, वहाँ का निवासी, काश्मीर में उत्पन्न वस्तु, केशर, सुहागा, पुष्करमूल ।
काश्मीरा (सं० पु०) एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा, अङ्गूर विशेष । [निवासी, काश्मीर देश का ।
काश्मीरी (वि०) काश्मीर देश सम्बन्धी, वहाँ का
काश्यप (सं० पु०) कणाद मुनि, मृग विशेष, गोत्र विशेष, काश्यप ऋषि का वंश, काश्यप प्रजापति के वंश का एक गोत्र ।
काष्ठ (सं० पु०) काठ, लकड़ी, ईंधन ।
काष्ठा (सं० स्त्री०) हद, सीमा, अन्त, अवधि, उत्कर्ष, कला का तीसवाँ भाग, दिशा, काश्यप की स्त्री,ओर, दिशा, चन्द्रमा की कला, घोड़े का दौड़ लगाने का मैदान या सड़क, उच्चतम चोटी ।
कास (सं० पु०) सहिजन का पेड़, खाँसी, काँस ।
कासनी (सं० पु०) एक पौधा विशेष,या उसका बीज जो औषधि के काम में आता है, एक प्रकार का रङ्ग ।
कासा (फ़ा० सं० पु०) प्याला, कटोरा, आहार, भोजन ।
कासार (सं० पु०) छोटा तालाब, छोटा सरोवर, दण्डक वृत्त विशेष, कसार, पंजीरी ।
काह (क्रि० वि०) क्या, कौन, किस ।
काहि (सर्व०) किसको, किसे, किससे ।
काहिल (अ० वि०) सुस्त, आलसी, जो फुरतीला न हो ।
काहिली (सं० स्त्री०) सुस्ती, आलस ।
काहू (सर्व०) किसी ।
काहे (क्रि० वि०) क्यों, किसलिए ।
किंकर (सं० पु०) नौकर ।
किंकरत्व (सं० स्त्री०) दासत्व ।
किंकिणी (सं० स्त्री०) करधनी विशेष ।
किंकर्तव्य विमूढ़ (वि०) हक्का बक्का, भौचक्का, घबड़ाया हुआ, कर्तव्याकर्तव्यविहीन, आकुल, व्याकुल ।
किंवदन्ती (सं० स्त्री०) सुनी हुई बात,अनिश्चित ख़बर, जनश्रुति, अफ़वाह, जनरव ।
किंशुक (सं० पु०) पलाश, ढाक, टेसू , तुन का पेड़ ।
किकियाना (क्रि० अ०)कीं कीं,या कें कें का शब्द करना, चिल्लाना, रोना, चीख़ना, चीख़ मारना, दुहाई देना ।
किचकिच(सं० स्त्री०)व्यर्थ वार्तालाप,अनर्थ वाद विवाद, झगड़ा,तकरार,व्यर्थ कोलाहल ।[पीसना,अधीर होना ।
किचकिचाना (क्रि० अ०) चिल्लाना, क्रोधित होना, दाँत
किचकिचाहट(सं० पु०) किचकिचाने का भाव ।
किचड़ाना (क्रि० अ०) आँख कीचड़ से भरना, कीचड़ युक्त होना । [कीचड़, काँदो, अव्यक्त ध्वनि ।
किचपिच (सं० पु०) अस्पष्ट उत्तर,बानर आदि का बोल,
किचरा (सं० पु०) आँख का मैल ।
किञ्चित (वि०) अल्प, थोड़ा, ईषत्, कुछ,थोड़ा ।
किञ्चित मात्र (अव्य०) थोड़ा, अल्प ।
किञ्जलक (सं० पु०) फूल की पाँखड़ी, पुष्पराज, केशर, पराग, कमल के बीच की जटा ।
किटकिट (सं० पु०) वाद-विवाद, किचकिच, व्यर्थ कोलाहल । [किचाना ।
किटकिटाना (क्रि० अ०) क्रोध से दाँत पीसना, किच-
किट्ट (ं० पु०) मल, मैला, बिट, धातु की मैल, तेल के नीचे बैठी हुई मैल ।
किड़किड़ (सं०पु०) दाँतों की रगड़ से उत्पन्न शब्द ।
किड़किड़ाता (क्रि०) किटकिटाता ।
कित्त (अव्य०) कहाँ, कितनी, किस ओर, किधर ।
कितना (वि०) किस परिमाण मात्रा वा संख्या का प्रश्नार्थ, परिमाण विषयक ।
कितव (सं० पु०) जुआरी, धूर्त, छली, लम्पट, उन्मत्त, पागल, धतूरा, गोरोचन, खल । [ब्यौंत ।
किता (सं० पु०) सीने के वास्ते कपड़े की काट छाँट,
किताब (सं० स्त्री०) पुस्तक, ग्रन्थ, रजिस्टर । [समान ।
किताबी (वि०) किताब के आकार का, किताब के
कितिक (वि०) कितना, किस प्रकार ।
कितेक (वि०) बहुत अधिक, प्रचुर, विपुल ।
कितो (वि०) कितना ।
कित्ता (वि०) कितना ।
किदारा (सं० स्त्री०) रागिनी विशेष ।
किधर (अव्य०) कहाँ ।
किधौं (अव्य०) अथवा, या, तो वा ।
किन (सर्व०) किसका बहुवचन, क्यों नहीं,कौन,किसको ।
किनका (सं० पु०) अन्न का छोटा दाना,टूटा अन्न,खुद्दी ।
किनहा (वि०) जिसमें कीड़े पड़ गए हों ।
किनार (सं० पु०) किनारी, कोर, अन्तिम सीमा
किनारदार (फ़ा० सं० पु०) हाशियादार, किनारीदार ।
किनारा (सं० पु०) तट, तीर, निकट, समीप, धोती आदि वस्त्रों का इधर उधर का प्रान्त, कोर ।

किनारी (सं० स्त्री०) किनारा, गोटा, पट्ठा, मग़ज़ी ।
किन्तु (अव्य०) वरन्, परन्तु, अथवा, मगर, लेकिन ।
किन्नर (सं० पु०) एक प्रकार के गायन-पटु देवता ।
किन्नरी (सं० स्त्री०) विद्याधरी, स्वर्गीय गायका, किन्नर की स्त्री, तँबूरा विशेष, किँगरी, सारंगी ।
किफ़ायत (अ० सं० स्त्री०) काफ़ी वा अलम् होने का भाव, कमख़र्ची, लाभ,बचत, कम दाम, थोड़ा मूल्य ।
किफ़ायतशारी (सं० स्त्री०) कमख़र्ची ।
किफ़ायती (वि०) कम ख़र्च करनेवाला व्यक्ति, सँभल कर व्यय करनेवाला । [किस तरीक़े से ।
किमि (क्रि० वि०) किस भाँति, कैसे, किस प्रकार,
किंपुरुष (सं० पु०) किन्नर, विद्याधर, स्वर्गीय गायक ।
कियत् (वि०) कितना. किस परिमाण में ।
कियारी (सं० स्त्री०) खेतों के छोटे छोटे विभाग, क्यारी, खेत का एक विभाग, सुनारों की बोली में चारपाई ।
किरका (सं० स्त्री०) छोटा टुकड़ा, कङ्कड़, किरकिरी ।
किरकिटी (सं० स्त्री०) मिट्टी या पत्थर का वह कण जो आँख में गिर कर पीड़ा उत्पन्न करता है, किरकिरी ।
किरकिरा (वि०) कँकरीला, कङ्कड़दार, रेतीला ।
किरकिराना (क्रि० अ०) किरकिरी पीड़ा होना ।
किरकिराहट (सं० स्त्री०) ककरीलापन, किरकिरापन ।
किरकिरी (सं० स्त्री०) आँख में पड़ा हुआ कण,अपमान ।
किरच (सं० स्त्री०) फाँस, किरिच, एक प्रकार की नोकीली तलवार, नोकदार टुकड़ा ।
किरण (सं० पु०) किरन, ज्योति की पतली २ रेखाएँ, रश्मि, मयूख, सूर्य या प्रकाशमय पदार्थ का तेज ।
किरणमाली (सं० पु०) सूर्य, भास्कर ।
किरन (सं० पु०) रश्मि, किरण । [इनायत ।
किरपा (सं० स्त्री०) कृपा, दया, अनुकम्पा, मिहरबानी,
किरमिज (सं० पु०) हिरमिजी, एक प्रकार का रंग ।
किरमिजी (वि०) किरमिज का रंग ।
किरराना (क्रि०) दाँत पीसना, किर्र २ आवाज़ करना ।
किरात (सं० पु०) एक प्राचीन जंगली जाति, साईस, चिरायता, एक देश का एक प्राचीन नाम ।
किराती (सं० स्त्री०) किरात जाति की स्त्री, स्वर्ग की गंगा,कुट्टिनी, चँवर हिलाने वाली, दुर्गा ।
क़िरान (क्रि० वि०) पास, निकट, समीप, नज़दीक ।
क़िराना (सं० पु०) व्यापारिक वस्तुएँ, केराना ।
किराया (सं० पु०) भाड़ा, कर, लाने की मज़दूरी ।
किरायेदार (सं० पु०) भाड़ेदार, दाम देकर वस्तु बर्तने वाला ।
किरासन (अ० सं० पु०) करोसिन तेल, मिट्टी का तेल ।
किरिच (सं० स्त्री०) देखो "किरच" ।
किरिया (सं० स्त्री०) शपथ, क़सम, सौगन्ध, मृत व्यक्ति के हेतु श्राद्धादि कर्म, मृत कर्म ।
किरीट (सं० पु०) मुकुट, सवैया ।
किरीटी (सं० पु०) इन्द्र, अर्जुन, राजा ।
किरोर (सं० पु०) करोड़, शत लाख की संख्या ।
किरौना (सं० पु०) कीड़ा, कीट ।
किर्च (सं० स्त्री०) देखो "किरच" ।
किर्मीर (सं० पु०) राक्षस विशेष ।
किल (अव्य०) निश्चय, स्थिर, दृढ़ ।
किलक (सं० स्त्री०) हर्षध्वनि, आनन्द-सूचक आवाज़, चटक, प्रभा, दीप्ति, एक प्रकार का क़लम बनाने का नरकुल । [करना ।
किलकना (क्रि० अ०) किलकार मारना, हर्षध्वनि
किलकार (सं० स्त्री०) हर्षध्वनि, आनन्द के समय का ज़ोर से निकला हुआ शब्द ।
किलकारी (सं० स्त्री०) हर्षध्वनि । [विवाद ।
किलकिल (सं० स्त्री०) किटकिट, झगड़ा, लड़ाई, वाद-
किलकिलाना (क्रि० अ०) हर्षध्वनि करना, आनन्द में आकर चिल्लाना ।
किलकिलाहट (सं० स्त्री०) किलकिलाने का शब्द ।
किलकैया (सं० पु०) एक प्रकार का नहरुए के ढंग का रोग जिसमें पशुओं के पैरों में कीड़े पड़ जाते हैं ।
किलना (क्रि० अ०) कीलन होना, कीला जाना, वश में करना, गति अवरोध होना ।
किलनी (सं० स्त्री०) क्षुद्र जन्तु, कुत्ते का जुँवा ।
किलबिलाना (क्रि० अ०) कुलबुलाना, अकुलाना ।
किलवाना (क्रि० स०) जादू टोना करवाना, कील ठुकवाना, मंत्र द्वारा भूत प्रेतों के वेग को रोकना ।
किल्बिष (सं० पु०) पाप, अपराध, दोष, ऐब, अशुभ, अनिष्ट, बुरा, गुनाह ।
किल्बिषी (वि०) दोषी, दोष युक्त ।
क़िला (अ० सं० पु०) दुर्ग, गढ़, कोट, लड़ाई से बचने का एक उत्तम स्थान ।

किलाबन्दी (अ० सं० स्त्री०) व्यूह रचना, दुर्ग निर्माण, सेनाओं को श्रेणी में नियमानुसार खड़ा करना, शतरंज में राजा को सुरक्षित घर में रखना।

किलोल (सं० पु०) कल्लोल, कलोल, [तंगी।

क़िल्लत (अ० सं० स्त्री०) कमी, न्यूनता, संकोच, दिक़त,

किल्ला (सं० पु०) खूँटा, जाँते के बीच की मेख, बड़ी कील।

किल्ली (सं० स्त्री०) कील, खूँटी, मेख, अर्गल, कीली, सिटकिनी।

किल्विष (सं० पु०) पाप, अपराध, दोष, ऐब, बुराई।

किवाड़ (सं० पु०) कपाट, पाट।

किवार (सं० पु०) देखो "किवाड़"। [पंखड़ियाँ।

किशलय (सं० पु०) कल्ला, कोंपल, नूतन पत्र, फूलों की

किशोर (वि०) ११ से १५ वर्ष की अवस्था का बालक।

किशोरी (सं० स्त्री०) कुमारी। [भाग।

किश्त (सं० पु०) भाग, ऋण का थोड़ा २ कर देनेवाला

किश्ती (सं० स्त्री०) छोटी सुन्दर नाव।

किष्किन्धा (सं० स्त्री०) रामायण का एक भाग, काण्ड, किष्किन्धा पर्व्वत की श्रेणी या गुफा।

किस (सर्व०) कौन।

किसनई (सं० स्त्री०) खेती, किसानी, कृषि कार्य।

किसमत (सं० स्त्री०) भाग, प्रारब्ध, क़िस्मत, मक्सूम।

किसमिस (सं० पु०) सुखाई हुई दाख, सुखाया हुआ छोटा बिना दाने का अंगूर।

किसमिसी (वि०) किसमिस के रंग का, किसमिस का, जिसमें किसमिस हो।

किसलय (सं० पु०) "देखो किशलय"।

किसान (सं० पु०) खेतिहर, खेती करने वाला, कृषक।

किसानी (सं० स्त्री०) खेती कर्म, कृषि कार्य।

किसिम (सं० स्त्री०) क़िस्म भाँति, प्रकार।

किसी (सर्व०) कोई का एक रूप।

किसू (सर्व०) किसी, कोई।

क़िस्त (अ० सं० स्त्री०) देखो "किश्त"।

क़िस्तबन्दी (अ० सं० स्त्री०) क़िस्तवार, थोड़ा २ करके।

किस्म (सं० स्त्री०) देखो "किसिम"।

क़िस्मत (अ० सं० स्त्री०) देखो "किसमत"।

किस्मतवर (फ़ा० वि०) भाग्यवान, भाग्यशाली।

किस्सा (अ० सं० पु० कहानी, कथा, गाथा, गल्प।

किहुनी (सं० स्त्री०) कुहनी।

की (प्रत्यय) विभक्ति "का" का स्त्रीलिङ्ग (क्रि० स०) कर दी, कर डाली, किया।

कीक (सं० पु०) चीत्कार, चीख, शोर गुल, चिल्लाहट।

कीकट (सं० पु०) मगधदेश, दरिद्र।

कीकड़ (सं० पु०) बबूल का पेड़।

कीकना (अ० क्रि०) किल्लाना, चिल्लाना, चीत्कार करना।

कीकर (सं० पु०) बबूल का पेड़।

कीकस (सं० पु०) हाड़, अस्थि।

कीका (सं० पु०) घोड़ा।

कीच (सं० पु०) कीचड़, पंक, कर्दम, दलदल।

कीचक (सं० पु०) राजा विराट का साला, वह बाँस जिसके छेद में घुस कर वायु हू हू शब्द करती है।

कीचड़ (सं० पु०) देखो "कीच"।

कीजिय (क्रि०) कीजिए, करना चाहिए।

कीजै (क्रि०) करिये, कीजिए।

कीट (सं० पु०) कीड़ा, मकोड़ा, रेंगने वाले क्षुद्र जन्तु।

कीटमणि (सं० स्त्री०) खद्योत, जुगनू।

किड़हा (वि०) घुनी, कीड़ा युक्त।

कीड़ा (सं० पु०) देखो "कीट"।

कीड़ी (सं० स्त्री०) छोटा कीड़ा, चींटी। [से कढ़ा होता है।

कीनखाब (सं० पु०) कमख़ाब, वस्त्र विशेष जो कलाबत्तू

कीनना (क्रि० स०) मोल लेना, क्रय करना, ख़रीदना।

कीना (फ़ा०सं०पु०) द्वेष, बैर, शत्रुता, दुश्मनी। [वाला।

कीनिया (सं० पु०) कपटी, बैर रखनेवाला, कपट रखने

कीन्ह (क्रि०) किया, बनाया।

कीन्हे (क्रि०) करे, किए।

क़ीमत (अ० सं० पु०) मूल्य, दाम। [हुआ।

क़ीमती (अ० वि०) अधिक दामों का, बहुमूल्य, खरीदा

किमियाँगर (फ़ा० सं० पु०) रसायन बनानेवाला।

कीरतन (सं० पु०) कीर्तन, कथन, यशवर्णन, गुण कथन, गान। [वहाँ का बासी।

कीर (सं० पु०) तोता, शुक, बहेलिया, काश्मीर देश या

कीरत, कीरति } (सं०स्त्री०) कीर्ति, यश।

कीरा (सं० पु०) साँप, कीड़ा।

कीर्त्तन (सं० पु०) देखो "कीरतन"।

कीर्त्तनिया (सं० पु०) श्रीकृष्ण-लीला सम्बन्धी भजन गाने वाला, कीर्त्तन करने वाला।

कीर्ति (सं० स्त्री०) यश, बड़ाई, पुण्य, ख्याति, नामवरी।

कीर्तिमन्त (वि०) कीर्तिमान, नेकनाम, मशहूर, विख्यात।

कीर्तिमान् (वि०) देखो "किर्तिमन्त"।

कीर्तिवान (वि०) देखो "कीर्तिमन्त"।

कील (सं० पु०) कीला, काँटा।

कीलकाँटा (सं० पु०) साज सामान।

कीलक (सं० पु०) खूँटी, कील, पशुओं के बाँधने का खूँटा, अन्य मंत्र का प्रभाव नष्ट करने वाला मंत्र। स्तव विशेष, केतु विशेष, ज्योतिष, शास्त्र के प्रभाव आदि, ६० वर्षों में से ४२ वाँ वर्ष।

कीलन (सं० पु०) बन्धन, रोक, रुकाव, किसी मंत्र की शक्ति घटाने का कार्य।

कीलना (क्रि० स०) मेख गाड़ना, किसी मंत्र वा युक्ति से प्रभाव को नष्ट करना, निश्शक्त कर देना, आधीन करना।

कीला (सं० पु०) बड़ी कील, काँटा, शंकु, कील।

कीलित (वि०) मंत्र द्वारा स्तम्भित, कीला हुआ, जिसमें कील जड़ी हों। [हाँकने वाला व्यक्ति।

कीलिया (सं० पु०) पुरवोलबा, पैरहा, मोट के बैलों को

कीली (सं० स्त्री०) किल्ली, चक्र के बीच में गड़ी हुई मेख, या कील।

कीश (सं० पु०) बन्दर, बानर, लंगूर।

कीशपर्णी (सं० स्त्री०) अपामार्ग, चिरचिरा।

कीस (सं० पु०) गर्भ की थैली।

कु (अव्य०) यह उपसर्ग है, संज्ञा शब्दों के पहले यह लगता है, कुत्सा, निन्दा, न्यून आदि अर्थों का यह द्योतक है, (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती।

कुँअर (सं० पु०) लड़का, पुत्र, राजपुत्र, राजकुमार।

कुँआ (सं० पु०) कूप, इनारा।

कुँआरा (वि०) अविवाहित, बिन ब्याहा।

कुँइया (सं० स्त्री०) छोटा कुँआ, छोटा कूप।

कुँई (सं० स्त्री०) कुमुदिनी।

कुँचकी (सं० स्त्री०) चोली, अँगिया, कुर्ती।

कुँचि (सं० पु०) अंजली, आठ मुट्ठी का एक परिमाण विशेष। [बेचते हैं।

कुँजड़ा (सं० पु०) एक जाति विशेष जो साग सब्ज़ी

कुँजा (सं० पु०) चुक्कड़, पुरवा।

कुंजी (सं० स्त्री०) ताली, चाबी। [बर्तन।

कुंडा (सं० पु०) बड़ा मटका, कछरा, मिट्टी का बड़ा

कुँडिया (सं० स्त्री०) एक बर्तन विशेष, कूँडी।

कुँडी (सं० स्त्री०) मिट्टी या पत्थर का छोटा बर्तन जो कटोरे के आकार के समान होता है।

कुँदरू (सं० पु०) एक फल विशेष, रक्तफला, बिम्बा।

कुंदी (सं० स्त्री०) कपड़ों का घोटना, तह लगाना, पीटना।

कुँदीगर (सं० पु०) कुन्दी करने वाला व्यक्ति।

कुँदेरना (क्रि० स०) खुर्चना, खरोचना, छीलना, छिछोरना। [वाला।

कुँदेरा (सं० पु०) खुर्चने वाला, खरादने वाला, छीलने

कुँभार (सं० पु०) कुँहार, कोहार, एक जाति विशेष।

कुँवर (सं० पु०) राजपुत्र, राजकुमार, लड़का, बेटा।

कुँअरी (सं० स्त्री०) राजकन्या, राजपुत्री।

कुँवा (सं० पु०) कूप, कुँआ।

कुँवारा (वि०) देखो "कुँआरा"।

कुँहड़ा (सं० पु०) कुम्भाण्ड, कुम्हड़ा, काशीफल।

कुँहकुँह (सं० पु०) केशर।

कुआँ (सं० पु०) कुँआ, कूप।

कुआर (सं० पु०) आश्विन, आसोज।

कुआरी (वि०) कुआर में होने वाला।

कुइयाँ (सं० स्त्री०) छोटा कुँआ।

कुकड़ना (क्रि० अ०) संकुचित होना, सिकुड़ना।

कुकड़ी (सं० स्त्री०) कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा, अंटी, मदार का फल।

कुकरौंधा (सं० पु०) एक प्रकार की घास विशेष, कुकरमुत्ता, कुकुरौंधा। [काम।

कुकर्म (सं० पु०) दुष्कर्म, बुरा काम, नीच काम, खोटा

कुकर्मी (वि०) दुष्कर्मी, दुराचारी, पापी, बुरा काम करने वाला।

कुकुर (सं० पु०) यादव क्षत्रियों की एक जाति विशेष, एक देश विशेष, गठिवन का पेड़, कुत्ता।

कुकुरखाँसी (सं० स्त्री०) खाँसी जिसमें कफ़ सूख गया हो और बाहर न निकले।

कुकुरढाँसी (सं० स्त्री०) देखो "कुकुरखाँसी"।

कुकुरदन्ता (वि०) जिससे दाँत कुछ बड़े होकर आगे की ओर निकल आये हों।

कुकुरमाछी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मक्खी जो कुकुर, गाय, बैल, जानवरों के शरीर में चपकी रहती है।

कुकुरमुत्ता (सं० पु०) कुकरौंधा।
कुकुरी (सं० स्त्री०) कुकड़ी, कुतिया।
कुकुरौंछी (सं० स्त्री०) कुकुरमाछी।
कुकुही (सं० स्त्री०) बनमुर्गी, भुकुड़ी, काले दाग़ जो बाजड़े की बालों में लग जाते हैं।
कुक्कुट (सं० पु०) मुर्गा, अरुणशिखा।
कुक्कुर (सं० पु०) कुकुर, कुत्ता, श्वान।
कुक्रिया (सं० स्त्री०) बुराकाम, पाप।
कुक्षि (सं० स्त्री०) कोख, पेट, उदर।
कुखेतु (सं० पु०) बुरा स्थान।
कुख्याति (सं० स्त्री०) बदनामी, अपयश, निन्दा।
कुगंध (सं० स्त्री०) बुरी गन्ध, बदबू। [कपट।
कुघाति (सं० पु०) बे मौक़ा, कुअवसर, कुसमय, छल
कुङ्कुम (सं० पु०) केशर।
कुङ्कुमा (सं० पु०) एक शीशे का बर्तन जिसमें गुलाल रक्खा जाता है। [संकुचित।
कुच (सं० पु०) स्तन, छाती, चूँची, (वि०) कृपण,
कुचकुचवा(सं० पु०) उल्लू। [चुभाना।
कुचकुचाना (क्रि० स०) बार बार कोंचना, लगातार
कुचन (क्रि०) तह करना, कुचियाना।
कुचन्दन (सं० पु०) लाल चन्दन, रक्तचन्दन।
कुचर (सं० पु०) आवारा, नीच कर्म करने वाला, निन्दक, पर छिद्रान्वेषी।
कुचरा (सं० पु०) बढ़नी, झाड़ू। [मसलना, रौंदना।
कुचलना (क्रि० स०) चूरचूर करना, दबाना, पीसना,
कुचला (सं० पु०) एक प्रकार का विष।
कुचाग्र (सं० पु०) स्तन का अगला भाग।
कुचाल (सं० पु०) दुराचरण, कुरीति, बुरा चाल चलन, दुष्टाचरण, कुव्यवहार, कुटेव, दुष्टता, बदमाशी।
कुचाली (वि०) दुराचारी, कुमार्गी, दुष्ट, बदमाश।
कुचाह (सं० स्त्री०) अशुभ, अमंगल, अनिच्छा, कपट स्नेह।
कुचि (सं० पु०) झाड़ू, बुहारी, बढ़नी।
कुचिया (सं० पु०) लोलकी, कान के नीचे का अग्रभाग।
कुचियाना (क्रि०) तह करना।
कुचिलना (क्रि० स०) देखो "कुचलना"।
कुचेल (सं० पु०) मलिन वस्त्र, (वि०) मैला, गंदा, मैला वस्त्र पहनने वाला।
कुचैला (वि०) गन्दा, मैला, मलिन वस्त्र वाला।
कुचैना (सं० पु०) दुःख, विषाद।
कुचोद्य (सं० पु०) खुचुर, निन्दित प्रश्न, कुतर्क।
कुच्छित (वि०) गर्हित, निन्दित कुत्सित।
कुछ (वि०) थोड़ा, जरा, अल्प, टुक, एक आध।
मुहा०—कुछ एक=थोड़ा सा। कुछ से कुछ होना=भारी उलट फेर हो जाना। कुछ का कुछ होना=उलटा होना। कुछ न कुछ=थोड़ा बहुत। कुछ सुनने पर लगना=गाली खाना। कुछ खा लेना=विष खा लेना। कुछ खा कर मरना=विष खा कर मरना। अपने को कुछ लगाना=बड़ा समझना। कुछ हो जाना=किसी योग्य हो जाना।
कुज (सं० पु०) मंगल ग्रह, भौम, नरकासुर।
कुजलीवन (सं० पु०) वह वन जिसमें हाथी अधिक रहते हों, कुञ्जर वन।
कुजाति (सं० पु०) जातिच्युत, नीच जाति, बुरी जाति।
कुजोग (सं० पु०) कुमेल, अनमेल, कुसंग, कुअवसर, अशुभ योग।
कुञ्चिका (सं० स्त्री०) चाभी, ताली, एक प्रकार की मछली, डुर डुर, घुंघुची, बाँस की बाती।
कुञ्चित (वि०) छल्लेदार, घूँघरवाले, टेढ़ा, घूमा हुआ।
कुञ्जी (सं० स्त्री०) कलौञ्जी, चाभी, ताली, कुन्जी।
कुञ्ज (सं० पु०) लता मण्डप, लतादिकों से छाया हुआ स्थान।
कुञ्जर (सं० पु०) हाथी, पीपल, बाल, हनुमान के नाना, मलयागिरि के एक शिखर का नाम, एक शुक पक्षी, इसी ने च्यवन ऋषि को उपदेश दिया था, आठ की संख्या, (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ।
कुञ्जी (सं० स्त्री०) मानेवाली पुस्तक, शरह, ताली।
कुट (सं० पु०) घर, भवन, गढ़, कोट, पहाड़, पेड़, पत्थर तोड़ने का घन, शूल, व्यथा।
कुटकी (सं० स्त्री०) औषधि विशेष, एक मिठाई का नाम।
कुटज (सं० पु०) कुटैया, इन्द्रयव, द्रोणाचार्य, अगस्त्यमुनि।
कुटनई (सं० स्त्री०) दूती कर्म, कुटनपन, झगड़ा लगाने का काम, लगाने बुझाने का काम।
कुटनपन (सं० पु०) स्त्री को पर पुरुष से और पुरुष को पर स्त्री से मिलाने का काम, कुटनई, दूती कर्म, लगाने बुझाने का काम, इधर का उधर लगाना बुझाना।

कुटनपेशा (सं० पु०) देखो "कुटनपन"।
कुटनहारी (सं० स्त्री०) धान कूटने वाली स्त्री।
कुटना (सं० पु० कुटनई का काम करने वाला पुरुष, पर स्त्री को पर पुरुष से मिलाने वाला पुरुष, झगड़ा लगाने वाला व्यक्ति, चुगलखोर, (क्रि० अ०) कूटा जाना, पीटा जाना, चूर चूर होना।
कुटनाई (सं० स्त्री०) कुटनपन। [फुसलाना।
कुटनाना (क्रि० स०) पर स्त्री को बहकाना, बहकाना,
कुटनी (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो पर स्त्री को पर पुरुष से और पर पुरुष को पर स्त्री से मिलावे, दूती, लगाने बुझाने वाली स्त्री।
कुटनीपना (सं० पु०) देखो "कुटनपन"। [कटकट।
कुटर कुटर (सं० पु०) किसी चीज के खाने का शब्द,
कुटाई (सं० स्त्री०) कूटने का काम, पीटने का काम, कूटने पीटने का मेहनताना। [छोटा घर।
कुटिया (सं० स्त्री०) झोपड़ी, घास पात का बना हुआ
कुटिल (वि०) तिरछा, टेढ़ा, वक्र, छली, कपटी, क्रूर, दुष्ट। [दुष्टता, खोटाई।
कुटिलता (सं० स्त्री०) वक्रता, टेढ़ापन, छल, कपट,
कुटिलाई (सं० स्त्री०) देखो "कुटिलता"।
कुटिलान्तःकरण (सं० पु०) खल, कपटी।
कुटी (सं० स्त्री०) झोपड़ी, कुटिया।
कुटीचर (सं० पु०) पति विशेष।
कुटीर (सं० पु०) कुटी, मड़ैया।
कुटुम (सं० पु०) परिवार, बन्धु बांधव, परिजन।
कुटुमी (सं० पु०) परिजन, जाति बिरादर।
कुटुम्ब (सं० पु०) परिवार।
कुटुम्बी (वि०) सम्बन्धी, कुटुम्ब वाले, परिवार वाले।
कुटेव (सं० पु०) बुरी आदत, बुरी लत, खराब बान।
कुटौनी (सं० स्त्री०) धान कूटने का मेहनताना, धान कूटने का काम।
कुट्टनी (सं० स्त्री०) दूती, कुटनी।
कुठाँव (सं० स्त्री०) कुठौर, कुस्थान, बुरी जगह, मर्मस्थान।
मुहा०—कुठाँव मारना = बुरी मौत मारना, घोर आघात पहुँचाना।
कुठार (सं० पु०) कुल्हाड़ी, परशु, फरसा।
कुठारी (सं० स्त्री०) कुल्हाड़ी, छोटा फरसा।
कुठाहर (सं० स्त्री०) मर्म स्थान, कुठाँव, कुठौर।

कुठिया (सं० स्त्री०) एक मिट्टी का गहरा बर्तन जिसमें अन्न रक्खा जाता है। [रखा जाता है।
कुठिला (सं० स्त्री०) एक मिट्टी का बर्तन जिसमें अन्न
कुठौर (सं० पु०) कुठाँव, बुरी जगह, अनवसर। [करना।
कुड़कना (क्रि० अ०) घूरना, गुर्राना, कुड़पुड़ाना, कुड़कुड़
कुड़कुड़ (सं० पु०) इस शब्द का अर्थ कुछ नहीं होता, यह खेत में से पक्षियों को भगाने के लिए कहा जाता है।
कुड़पुड़ाना (क्रि० अ०) मन ही मन कुढ़ना।
कुड़मल (सं० पु०) कली।
कुड़मा (सं० पु०) परिवार कुटुम्ब।
कुड़व (सं० पु०) एक प्रचीन माप विशेष जिससे अन्न नापा जाता है।
कुडौल (वि०) कुरूप, बेढंगा, भद्दा। [कुचाला।
कुढंग (सं० पु०) बुरा आचरण, दुर्व्यवहार, कुरीति,
कुढंगा (वि०) बेढंगा, भद्दा, बे तरीक़ा।
कुढ़न (सं० स्त्री०) मन ही मन जलना, चिढ़, भीतर ही भीतर क्रोध सुलगना।
कुढ़ना (क्रि० अ०) मन ही मन चिढ़ना, मन ही मन जलना, जलना, डाह करना, ईर्षा करना, मन ही मन क्रोध करना।
कुढब (वि०) बेढब, कुरूप, कठिन।
कुढ़ाना (क्रि० स०) चिढ़ाना, छेड़ना, खिझाना, सताना, कलपाना, दुःखित करना।
कुढावा (सं० पु०) कुटुम्ब।
कुण्ठित (वि०) कुन्द, गुठला, जो तेज न हो, बिना धार का, भयभीत, लज्जित, सङ्कुचित।
कुण्ड (सं० पु०) गड्ढा या गर्त जिसमें हवन किया जाता है, चौबच्चा, गड्ढा, कुंड। [फेंटी, मण्डल, मेखला।
कुण्डल (सं० पु०) कान में पहिनने का एक गहना, बाला,
कुण्डलिया (सं० स्त्री०) छन्द विशेष, यह दोहे और रोला के संयोग से बनता है।
कुण्डली (सं० स्त्री०) गुडुचि, कचनार, केवाँच, जलेबी, फेंटी, खंजड़ी, एक बारह खाने का चक्र जिससे जन्म काल के ग्रहों की दशा मालूम होती है।
कुण्ठी (सं० स्त्री०) द्वार की साँकल या जंजीर।
कुतका (सं० पु०) सोंटा, डंडा।
कुतना (क्रि० अ०) अन्दाज़ा करना।

कुतरन (सं० स्त्री०) कुतरा हुआ टुकड़ा, कतरन ।
कुतरना (क्रि० स०) दाँत से छोटे छोटे टुकड़े काटना, कतरना ।
कुतर्क (सं० पु०) बितंडावाद, बकवाद, कुत्सित तर्क ।
कुतर्की (वि०) बितंडावादी, बकवादी । [वाला पुरुष ।
कुंतवार (सं० पु०) कूतने वाला व्यक्ति, अन्दाज़ा लगाने
कुतार (सं० पु०) अंडस, असमञ्जस, असुविधा ।
कुतिया (सं० स्त्री०) कुत्ती, कुकुरी ।
कुतुबख़ाना (फ़ा० सं० पु०) पुस्तकालय ।
कुतुबनुमा (अ० सं० पु०) दिशा का ज्ञान कराने वाला एक यन्त्र विशेष । [बेचने वाला ।
कुतुबफ़रोश (फ़ा० सं० पु०) पुस्तक-विक्रेता, किताब
कुतूहल (सं० पु०) कौतुक, परिहास, उत्सुकता, खिलवाड़, अचंभा, आश्चर्य ।
कुतूहली (वि०) अपूर्व, अद्‌भुत, कौतुकी, खिलवाड़ी ।
कुत्ता (सं० पु०) कुकुर, श्वान ।
कुत्ती (सं० स्त्री०) कुतिया, कुकुरी ।
कुत्सा (सं० स्त्री०) निन्दा, बुराई ।
कुत्सित (सं० पु०) एक औषध विशेष, कूड़ा, कोरैया, (वि०) निन्दित, गर्हित, नीच ।
कुथ (सं० पु०) हाथी की झूल, पालकी रथ आदि का परदा, ओहार, कंथा, कथरी ।
कुथरी (सं० स्त्री०) कथरी, गुदड़ी, कंथा ।
कुदकना (क्रि० अ०) कूदना, उछलना । [माया, प्रकृति ।
कुदरत (अ० सं० स्त्री०) सामर्थ्य, शक्ति, दैवी शक्ति,
कुदरती (अ० वि०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, दैवी ।
कुदाँव (सं० पु०) धोखा, विश्वासघात, कुघात, भयंकर स्थान, विकट स्थिति ।
कुदाई (सं० स्त्री०) कूदने की क्रिया, (वि०) छली, विश्वासघाती । [की जगह ।
कुदान (सं० पु०) बुरा दान, उछलने का स्थान, कूदने
कुदाना (क्रि० स०) कूदने में लगाना, उछालना, फँदाना ।
कुदार (सं० पु०) लोहे का औज़ार जिसमें लकड़ी का बेंट लगा रहता है और ज़मीन खोदने के काम में आता है । [हथियार, कुदार ।
कुदाल (सं० पु०) ज़मीन खोदने के लिए एक लोहे का
कुदाली (सं० स्त्री०) छोटा कुदार । [आपत्तिकाल ।
कुदिन (सं० पु०) दुःख का समय, दुर्दिन, खोटे दिन,
कुदृष्टि (सं० स्त्री०) बुरी दृष्टि, पाप दृष्टि, विरुद्धाचरण ।
कुदेश (सं० पु०) बुरा देश, अस्वास्थकर देश ।
कुनकुना (वि०) गुनगुना, थोड़ा गरम ।
कुनप (सं० पु०) शरीर ।
कुनबा (सं० पु०) परिवार, कुटुम्ब । [कर्म करती है ।
कुनबी (सं० पु०) एक हिन्दू जाति, अधिकतर यह कृषि
कुनीति (सं० स्त्री०) दुर्व्यवसाय, अन्याय ।
कुन्त (सं० पु०) बरछी, भाला, क्रूर भाव, जूँ, कुन्ती के पिता का नाम ।
कुन्तल (सं० पु०) केश, बाल, एक देश का नाम, यह देश बरार और कोंकण के मध्य में था ।
कुन्तवर्द्धन (सं० पु०) भँगरैया, भृंगराज ।
कुन्तभोज (सं० पु०) एक राजा, ये सूरसेन के बुआ के लड़के थे, ये निःसन्तान थे, इन्होंने सूरसेन की लड़की पृथा को गोद बिठाया था ।
कुन्ती (सं० स्त्री०) पाण्डवों की माता, यह सूरसेन की कन्या थी, इसको कुन्तभोज ने गोद लिया था, इसीसे इसका नाम कुन्ती पड़ा इसका विवाह पाण्डु के साथ हुआ था । इसको दुर्वासा ऋषि ने वशीकरण मन्त्र बतलाये थे, जिससे यह देवताओं को बुला कर पुत्र पैदा कर सकती थी, अविवाहित अवस्था में ही इसने सूर्य का आह्वान कर कर्ण को उत्पन्न किया था ।
कुन्द (सं० पु०) एक प्रकार का पुष्प वृक्ष, इस में सफेद फूल होते हैं, श्वेत पुष्प ।
कुन्दन (सं० पु०) खालिस सोना, उत्तम सुवर्ण ।
कुपंथ (सं० पु०) देखो "कुपथ" ।
कुपथ्यी (वि०) असंयमी, पथ्य न करनेवाला ।
कुपथ (सं० पु०) कुमार्ग, दुराचरण, निषिद्ध आचरण ।
कुपथगामी (वि०) कुमार्गी, दुराचारी, पापी ।
कुपथ्य (सं० पु०) अस्वास्थ्यकर आहार विहार, अपथ्य ।
कुपात्र (वि०) अयोग्य, नालायक़, अपात्र, अनुपयुक्त ।
कुपित (वि०) क्रुद्ध, नाराज़, क्रोधित । [लड़का ।
कुपुत्र (सं० पु०) कपूत, कुपथगामी पुत्र, नालायक़
कुपुरुष (सं० पु०) बुरा मनुष्य, दुष्ट आदमी ।
कुपूत (सं० पु०) कुपुत्र ।
कुप्पा (सं० पु०) चमड़े का घड़े के समान बड़ा बर्तन जिसमें घी, तेल आदि रक्खा जाता है ।

कुप्पी (सं० स्त्री०) छोटा कुप्पा।
कुफ्र (अ० सं० पु०) मुसलमानी धर्म से भिन्न अन्य धर्म।
कुबजा (सं० पु०) कुबड़ा, टेढ़ा।
कुबड़ा (सं० पु०) कुबजा, टेढ़ी पीठ वाला मनुष्य, टेढ़ा।
कुबड़ी (सं० स्त्री०) छड़ी जिसका मूठा झुका या टेढ़ा रहता है। [प्रेम अधिक था, कुब्जा।
कुबरी (सं० स्त्री०) कंस की एक दासी, श्रीकृष्ण में इसका
कुबानि (सं० स्त्री०) कुटेव, बुरी लत, खोटी बान।
कुब्ज (वि०) टेढ़ी पीठवाला।
कुब्जा (सं० स्त्री०) देखो "कुबरी"।
कुमक (तु० सं० स्त्री०) सहायता, मदद, पक्षपात।
कुमकुम (सं० पु०) केशर, कुंकुमा।
कुमकुमा (सं० पु०) गुलाल रखने के लिये एक शीशे का बर्तन, एक लाह का लट्टू जिसमें अबीर गुलाल रख कर होली के दिन आपस में एक दूसरे पर छोड़ते हैं।
कुमति (सं० पु०) दुर्मति, दुर्बुद्धि।
कुमद (वि०) कमल।
कुमन्त्रण (सं० स्त्री०) बुरी सलाह, कुपरामर्श।
कुमाच (सं० पु०) एक प्रकार की रोटी।
कुमार (सं० पु०) पाँच वर्ष का बालक, कार्तिकेय, सनक, सनन्दन, सनत् आदि देवता, ये सदा बालक ही रहते हैं, युवराज, पुत्र, बेटा, लड़का, अविवाहित बालक, राजपुत्र, अग्निपुत्र, भारतवर्ष का नाम, जैनों के मत से बारहवें जिन।
कुमारग (सं० पु०) कुपंथ, कुमार्ग।
कुमारिका (सं० स्त्री०) कुमारी, अविवाहिता, भारत के एक उपद्वीप का नाम।
कुमारिल (सं० पु०) प्रसिद्ध दार्शनिक और मीमांसक, इन्होंने वेदों की टीका की है। ये शङ्कराचार्य के समसामयिक थे, ये अपने समय के सब से बड़े वेद-ज्ञाता और वैदिक धर्मावलम्बी थे, इनके समय में वैदिक धर्म का भारत में खूब प्रचार हुआ, इन्होंने बौद्ध धर्म खण्डन के लिये बौद्धों से उसका अध्ययन किया, और बौद्ध धर्म का खण्डन किया, अन्त में गुरु-द्रोह के पाप के प्रायश्चित्त के लिये प्रयाग में तुषानल में जल मरे। [अविवाहिता।
कुमारी (सं० स्त्री०) दश वर्ष की आयु तक की कन्या,
कुमारीपूजन (सं० पु०) देवी पूजन के समय कुमारियों का पूजन, देवी पूजने से पहले कुमारियों की पूजा होती है और उनको मिठाई खिलाई जाती है।
कुमार्ग (सं० पु०) कुपथ, कुमारग, दुराचरण, अधर्म, बुरा मार्ग। [वाला, कुमार्गी, अधर्मी, दुराचारी।
कुमार्गगामी (वि०) कुपंथी, बुरे मार्ग में जाने
कुमार्गी (वि०) देखो "कुमार्गगामी"।
कुमुद (सं० पु०) कुईं, कमल।
कुमुदबन्धु (सं०) चन्द्रमा। [होने का स्थान।
कुमुदिनी (सं० स्त्री०) पद्मिनी, कमलिनी, कुमुद पैदा
कुमोदिनी (सं० स्त्री०) देखो "कुमुदिनी"।
कुम्भ (सं० पु०) कलश, घड़ा, घट, हाथी का मस्तक, एक राशि का नाम, मेवाड़ के एक राजा, ये महाराणा मुकुल के पुत्र थे जिनके मारे जाने पर १४१६ ई० में यह मेवाड़ के राजसिंहासन पर विराजमान हुए, यह संस्कृत के ज्ञाता और वीर भी थे, इन्होंने जयदेव के गीतगोविन्द की टीका की है इन्होंने वीरता के साथ, मालवा के राजा महमूद को परास्त कर कैद किया था। छः मास तक महमूद चित्तौर में कैद था, महाराणा कुम्भ का बर्ताव उसके साथ दयापूर्ण था।
कुम्भकर्ण (सं०पु०) एक राक्षस, यह रावण का भाई था।
कुम्भकार (सं० पु०) एक वर्ण संकरी जाति, इसकी उत्पत्ति विश्वकर्मा से शूद्रा के गर्भ से हुई है. कुम्हार।
कुम्भज (सं० पु०) घड़े से उत्पन्न पुरुष, वशिष्ठ, अगस्त्य मुनि, द्रोणाचार्य। [चार्य।
कुम्भसम्भव (सं० पु०) वशिष्ठ, अगस्त्य मुनि, द्रोणा-
कुम्भवीर्य (सं० पु०) रीठा।
कुम्भा (सं० पु०) छोटा घड़ा।[(पु०) हाथी, कायफल।
कुम्भिका (सं० स्त्री०) जल पर जमने वाला एक पौधा,
कुम्भी (सं०स्त्री०) वह पौधा जो ताल तलैया में पानी पर जमता है (पु०) हाथी, कायफल।
कुम्भीनस (सं० पु०) सर्प, सांप।
कुम्भीपाक (सं० पु०) नरक विशेष।
कुम्भीर (सं० पु०) नक्र, मगर।
कुम्भोरुणा (सं०स्त्री०) निसोत, औषध विशेष।
कुम्मैत (सं०पु०) सियाही लिये हुए लाल रङ्ग का घोड़ा, लाखी।

कुम्हड़ा (सं० पु०) कुष्माण्ड, काशीफल, कोंहड़ा।
कुम्हरौरी (सं० स्त्री०) पीठी में कुम्हड़े के बारीक टुकड़े फेट कर बनाई हुई बरी। [होना।
कुम्हलाना (क्रि० अ०) मुरझाना, सूखना, कान्तिहीन
कुम्हार (सं० पु०) कुम्भकार, कुलाल, मिट्टी के बर्तन बनाने वाली जाति।
कुम्हारी (सं० स्त्री०) भृंगी, कुम्हार की स्त्री। [अभाव।
कुयोग (सं० पु०) कष्टदायक ग्रह, कुसमय, योग का
कुयोगी (सं० पु०) विषय-भोगी, विषय का भोग करने वाला पुरुष। [है।
कुरकुर (सं० पु०) शब्द जो खरी वस्तु के टूटने से होता
कुरकुराहट (सं० पु०) कुरकुर शब्द होना।
कुरङ्ग (सं० पु०) हिरन, मृग।
कुरङ्गनयनी (सं० स्त्री०) मृगलोचनी, मृगनयनी।
कुरङ्गनाभि (सं० पु०) कस्तूरी।
कुरण्टक (सं०पु०) पियवाँसा, पीली कटसरैया।
कुरता (सं० पु०) पहनने का एक कपड़ा।
कुरती (सं० स्त्री०) स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र।
कुरथी (सं० स्त्री०) एक अन्न विशेष, कुलथी।
कुरना (क्रि० अ०) ढेर लगना।
कुरमा (सं० पु०) परिवार, कुनबा, कुटुम्ब।
कुरर (सं० पु०) एक पक्षी विशेष, क्रौंच, उत्क्रोश।
कुररी (सं० स्त्री०) पक्षी विशेष, टिट्टिभ।
कुरसी (अ० सं० स्त्री०) एक काठ की चौकी, इसके पाये ऊंचे होते हैं, इसमें पीछे पीठ टेकने के लिए बना रहता है।
कुरसीनामा (फ़ा० सं० स्त्री०) वंशावली।
कुराई (सं० स्त्री०) बुरा मार्ग, पाँव फँसने योग्य मार्ग, विलम्ब, ढेर लगाना, उलरना।
कुरान (अ० सं० पु०) मुसलमानों की धर्म पुस्तक।
कुराय (सं० पु०) ककड़ी।
कुराह (सं० स्त्री०) कुमार्ग, कुपंथ, बुरा रास्ता।
कुराहर (सं० पु०) कोलाहल, गुलगपाड़ा।
कुराही (वि०) कुपंथी, कुमार्गी, दुराचारी, बदचलन।
कुरी (सं० पु०) अरहर की ढेंढ़ी, कुल, वंश, ख़ान्दान।
कुरीति (सं० स्त्री०) कुव्यवहार, दुराचरण, निषिद्धाचरण।
कुरु (सं० पु०) एक प्राचीन देश, पृथ्वी के नव खण्डों में से एक, चन्द्रवंशी राजा जिसके कुल में पाण्डु और धृतराष्ट्र उत्पन्न हुए थे।
कुरुई (सं० स्त्री०) मौनी, डलिया।
कुरुक्षेत्र (सं० पु०) बहुत पुराना तीर्थ स्थान, यह सरस्वती नदी के दक्षिण की ओर था, इस स्थान का उल्लेख वेद में भी है, प्राचीन समय में ऋषि लोग यहाँ यज्ञादि किया करते थे, प्राचीन तीर्थों का कुछ चिह्न इस समय भी पाया जाता है महाभारत का संग्राम यहीं हुआ था, ग्रहण आदि के समय यहाँ यात्रियों की बड़ी भीड़ होती है।
कुरुखेत (सं०पु०) देखो "कुरुक्षेत्र"।
कुरुचि (सं० स्त्री०) ग्लानि, बुरी इच्छा, नीच वासना।
कुरुल (सं० पु०) चिकुर, घुँघरू, बच्चों के सिर के बालों की लट।
कुरूप (वि०) बदसूरत, कुत्सित रूप, बुरा स्वरूप।
कुरेदना (क्रि० स०) खरोचना, खुरचना।
कुरेदनी (सं० स्त्री०) खुरचनी, खोदना।
कुरेभा (सं० स्त्री०) वर्ष में दो बार ब्याने वाली गाय।
कुरेलना (क्रि० स०) खोदना, कुतरना, करोदना, टटोलना।
कुरैत (सं० पु०) हिस्सेदार, साझी।
कुरैया (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष, कुटज, काही। [लगाना।
कुरौना (क्रि० स०) ढेर लगाना, गट्टु लगाना, कूरा
कुरौनी (सं० स्त्री०) राशि, ढेर, थोक।
कुर्ता (सं० पु०) शरीर में पहनने का कपड़ा, कुरता।
कुर्ती (सं० स्त्री०) स्त्रियों के पहनने का वस्त्र, झूला।
कुर्बानी (फ़ा० सं० स्त्री०) किसी देवता को बलिदान चढ़ाना, बलिदान।
कुब्बा (सं० पु०) कूबड़, कुब्ज। [कुनबी।
कुर्मी (सं० पु०) एक खेती का पेशा करने वाली जाति,
कुर्याल (सं० स्त्री०) आनन्द, आराम, चैन, पक्षी का आनन्द में पर झाड़ना।
मुहा०—कुर्याल में गुलेल लगाना = सुख में दुःख होना, निराश होना।
कुल (सं० पु०) गोत्र, वंश, जाति, समूह, झुण्ड।
कुलकण्टक (सं० पु०) अपने दुराचरणों से अपने परिवार वालों को दुखित करने वाला, कुपुत्र।
कुलकानि (सं० स्त्री०) कुल की लज्जा, कुल की मर्यादा।
कुलकुला (सं० पु०) कुल्ला, गण्डूष।
कुलक्षण (सं० पु०) बुरा लक्षण, खोटा चिह्न, कुचाल
कुलक्षणी (सं० स्त्री०) दुराचारी, बुरे लक्षण वाला।

कुलचा (सं० पु०) औरों से छिपा कर के संग्रह किया हुआ धन, पूंजी, धन।
कुलच्छन (सं० पु०) देखो "कुलक्षण"।
कुलच्छनी (सं० पु०) देखो "कुलक्षणी"।
कुलज (सं० पु०) सत्कुलोद्भव, सत्कुलोत्पन्न, परवल।
कुलटा (सं० स्त्री०) व्यभिचारिणी, पुंश्चली, छिनाल, बदचलन।
कुलतारन (सं० पु०) कुल को तारने वाला, सुपुत्र।
कुलथी (सं० स्त्री०) अन्न विशेष, कुरथी।
कुलदेवता (सं० पु०) कुल परम्परा से पूजित देवता।
कुलद्रोही (वि०) कुल का नाश करने वाला, कुल में दाग लगाने वाला।
कुलधर्म (सं० पु०) कुलदेव।
कुलपूज्य (सं० पु०) कुलदेव, पुरोहित।
कुलफ (सं० पु०) ताला।
कुलफा (सं० पु०) एक साग विशेष, यह पुनर्नवा के समान होता है, पर इसके साग में ज़रा खारापन होता है। [मलाई का बर्फ जमाया जाता है।
कुलफी (सं० स्त्री०) पेंच, टीन आदि का चोंगा, जिसमें
कुलबुल (सं० पु०) चुलबुल, छोटे जीवों के हिलने डुलने की आवाज़। [खुजलाना, अकुलाना।
कुलबुलाना (क्रि० अ०) चुलबुलाना, हिलना डोलना,
कुलबुलाहट (सं० स्त्री०) चुलबुलाहट, छोटे जीवों के चलने फिरने की आहट। [अयोग्य, नालायक़।
कुलबोरन (वि०) कुल को डुबोनेवाला, कुल-नाशक,
कुलवधू (सं० स्त्री०) कुल-स्त्री, पतिव्रता।
कुलवन्त (वि०) कुलीन। [पतिव्रता।
कुलवन्ती (सं० स्त्री०) बड़े घर की बहू बेटी, सती,
कुलवान् (सं० पु०) सद्वंशज, कुलीन।
कुलहबरा (सं० पु०) बच्चों के पहनने का एक कुर्ता जो सिर से पैर तक होता है। [करनेवाला।
कुलागार (सं० पु०) सत्यानाशी, कुलबोरन, कुल का नाश
कुलाँच (सं० स्त्री०) छलाङ्ग, चौकड़ी।
कुलाङ्गना (सं० स्त्री०) कुलवन्ती, कुलीन स्त्री।
कुलाचार्य (सं० पु०) पुरोहित, कुल-गुरु।
कुलाल (सं० पु०) कुम्भकार, कुम्हार।
कुलाहल (सं० पु०) कोलाहल, हलचल।
कुलिश (सं० पु०) कुठार, वज्र, हीरा।
कुली (सं० पु०) बोझ ढोनेवाला, बोझिया, मज़दूर।
कुलीन (सं० पु०) सद्वंशोद्भव, पवित्र, शुद्ध।
कुलुफ (सं० पु०) ताला, कुफल।
कुलू (सं० पु०) एक प्राचीन देश।
कुलेल (सं० स्त्री०) खेल, क्रीड़ा, कलोल।
कुलेलना (क्रि० अ०) क्रीड़ा करना, कलोल करना, खेलना।
कुल्ला (सं० पु०) मुँह में पानी भर कर फेंकना।
कुल्ली (सं० पु०) कुल्ला।
कुल्हड़ (सं० पु०) चुक्कड़, पुरवा, चुक्का।
कुल्हाड़ा (सं० पु०) टाँगा, कुठार।
कुल्हाड़ी (सं० स्त्री०) टाँगी, छोटा कुल्हाड़ा।
कुल्हिया (सं० स्त्री०) कुल्हड़, चुक्कड़, छोटा पुरवा।
मुहा०—कुल्हिया में गुड़ फोड़ना = गुप्त काम करना।
कुवलय (सं० पु०) नील कमल, कोका, भूमण्डल।
कुवलयापीड़ (सं० पु०) कंस का एक हाथी।
कुवलयाश्व (सं० पु०) एक राजा का नाम, ये बृहदश्व के पुत्र थे इन्हों ने धुंधु राक्षस का वध किया था, तब से इनका नाम धुंधुमार भी पड़ा। ऋतुध्वज का दूसरा नाम, इनके पिता का नाम था शत्रुजित्। गन्धर्व राज की कन्या मदालसा से इसका ब्याह हुआ था, इनके पास एक कुवलय नाम का घोड़ा था, इसी से ये कुवलयाश्व भी कहे जाते थे।
कुवाक्य (सं० पु०) गाली, दुर्वचन, कुवाच्य, कठोर वचन।
कुवाच्य (सं० पु०) देखो "कुवाक्य"।
कुवार (सं० पु०) कुआर, आश्विन, असोज। [कुआरी।
कुवारी (वि०) आश्विन मास में होने वाला धान,
कुविचार (सं० पु०) नीच विचार, ओछा विचार।
कुविन्द (सं० पु०) कोरी, जुलाहा।
कुबुद्धि (सं० पु०) नीच बुद्धि, दुर्बुद्धि।
कुबेर (सं० पु०) देवताओं के कोषाध्यक्ष, इनके पितामह का नाम पुलस्त्य था और पिता का विश्रवस्, ये रावण के सौतेले भाई थे, रावण ने इनको अपने राज्य से निकाल दिया था, इन्होंने ब्रह्मा की स्तुति करके उत्तर दिशा का राज्य पाया था और देवता बना दिये गये थे, ये बड़े कुरूप थे।
कुश (सं० पु०) एक पवित्र तृण जो तर्पण श्राद्धादि के काम में आता है, डाभ, दर्भ, रामचन्द्र के पुत्र का नाम, सप्त द्वीपों में से एक द्वीप।

कुशकुन (सं० पु०) बुरे सगुन ।
कुशध्वज (सं० पु०) एक राजा का नाम जो ह्रस्वरोम के पुत्र थे, और सीरध्वज जनक के छोटे भाई इनकी दो कन्यायें थीं माण्डवी और श्रुतकीर्ति । माण्डवी का व्याह भरत और श्रुतकीर्ति का शत्रुघ्न से हुआ था ।
कुशनाभ (सं० पु०) अयोध्या के एक राजा, ये महाराजा कुश के पुत्र थे, इन्होंने नगर बसाया था जिसका नाम महोदय था । [पवित्री ।
कुशमुद्रिका (सं० स्त्री०) कुश की बनी हुई मुन्दरी, पैंती,
कुशल (वि०) चतुर, निपुण, दक्ष, अच्छा, भला, चङ्गा, (सं० पु०) क्षेम, मंगल ।
कुशलक्षेम (सं० पु०) राज़ी ख़ुशी, कल्याण, मंगल ।
कुशलता (सं० स्त्री०) योग्यता,चतुराई,दक्षता, निपुणता ।
कुशलप्रश्न (सं० स्त्री०) कुशल-क्षेम पूछना ।
कुशलाई (सं० स्त्री०) कुशलक्षेम, कल्याण, मंगल ।
कुशलात (सं० स्त्री०) क्षेम, कुशल, मंगल ।
कुशस्थली (सं० स्त्री०) द्वारिका ।
कुशा (सं० स्त्री०) कुश ।
कुशासन (सं० पु०) कुश की चटाई । [पौत्र थे ।
कुशिक (सं० पु०) एक राजा का नाम, विश्वामित्र इनके
कुशूल (सं० पु०) कोठला, डेहरी ।
कुशोदक (सं० पु०) कुशा सहित जल-तर्पण ।
कुश्ती (फ़ा० सं० स्त्री०) मल्लयुद्ध ।
कुश्तीबाज़ (फ़ा० सं० पु०) पहलवान ।
कुष्ठ (सं० पु०) कोढ़ ।
कुष्ठी (सं० पु०) कोढ़ी ।
कुष्माण्ड (सं० पु०) कोहड़ा, कुम्हड़ा ।
कुसगुन (सं० पु०) असगुन, कुलक्षण ।
कुसङ्ग (सं० पु०) बुरी सोहबत, दुर्जन-सहवास ।
कुसङ्गत (सं० पु०) दुष्टों का संग, दुर्जन का साथ ।
कुसमय (सं० पु०) कुदिन, दुर्दिन, दुःख का समय, खोटे दिन ।
कुसलक्षेम (सं० पु०) देखो "कुशल क्षेम" ।
कुसलाई (सं० स्त्री०) देखो "कुशलाई" ।
कुसलात (सं० स्त्री०) "देखो "कुशलात" ।
कुसाइत (सं० स्त्री०) कुसमय, खोटा समय, बुरी साइत ।
कुसाखी (सं० पु०) बुरे पेड़, कुवृक्ष ।
कुसीद (सं० पु०) सूद, व्याज ।
कुसुम (सं० पु०) पुष्प, फूल, लाल रंग का एक फूल जिससे कपड़े रंगे जाते हैं ।
कुसुमबाण (सं० पु०) कामदेव का बाण, कुसुम शर ।
कुसुमपुर (सं० पु०) पाटलीपुत्र, पटने का प्राचीन नाम ।
कुसुमशर (सं० पु०) कामदेव ।
कुसुमस्तवक (सं० पु०) फूलों का गुच्छा, फूलों के फूलने का गुच्छा जहाँ फूल लगते हैं ।
कुसुमाकर (सं० पु०) बसन्त । [का नाम ।
कुसुमाञ्जलि (सं० पु०) पुष्पाञ्जलि, न्याय के एक ग्रन्थ
कुसुमायुध (सं० पु०) कामदेव, कन्दर्प ।
कुसुमित (वि०) प्रफुल्लित, पुष्पित ।
कुसुम्भ (सं० पु०) कुसुम, कुमकुम, केशर ।
कुसुम्भा (सं० पु०) कुसुम का रंग ।
कुसूर (अ० सं० स्त्री०) ख़ता, दोष, अपराध ।
कुहुक (सं० पु०) माया, जाल, धोखा । [बोलना ।
कुहकना (क्रि० अ०) पीकना, पक्षियों का मधुर स्वर में
कुहना (क्रि० स०) अच्छी तरह से पीटना, कूट कूट कर मारना ।
कुहनी (सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ हाथ और बाँह की हड्डियाँ मिली हुई हैं । [कन्या बैठाये जाते हैं ।
कुहबर (सं० पु०) वह स्थान जहाँ विवाह के बाद बर
कुहरा (सं० पु०) कुहेसा, कुहासा ।
कुहराम (सं० पु०) रोना पीटना, कलपना, विलपना ।
कुहाना (क्रि० अ०) रूठना, रिसाना, चिढ़ना ।
कुहासा (सं० पु०) कुहरा ।
कुही (सं० पु०) बाज पक्षी ।
कुहुक (सं० पु०) कोकिल का शब्द, पीक । [से बोलना ।
कुहुकना (क्रि० अ०) कुहकना, पक्षियों का मीठे स्वर
कुहू (सं० स्त्री०) वह अमावस्या जिसमें चन्द्रमा दिखायी न पड़े, मोर या कोयल की बोली ।
कूँआँ (सं० पु०) कुआँ, कूप, इनारा, ।
कूँआ (सं० पु०) क्वार । [का शब्द ।
कूँख (सं० स्त्री०) कोख, पेट, गर्भ, कुखने का शब्द, दुःख
कूँखना (क्रि० अ०) दुःख की ध्वनि करना, काँखना ।
कूँच (सं० स्त्री०) कूँचा, बड़ा कूँचा, इससे जुलाहे कपड़ा बनाने के लिए सूत साफ़ करते तथा सूतों को मज़बूत बनाते हैं ।

कूँचा (सं० पु०) झाड़ू, बुहारी।
कूँची (सं० स्त्री०) छोटा कूचा, ब्रुश, गहना बाल कपड़ा आदि साफ़ करने का ब्रुश।
कूँजड़ी (सं० स्त्री०) कुँजड़ा जाति की स्त्री, इस जाति वालों का पेशा साग सब्ज़ी बेचना है।
कूँजना (क्रि० अ०) कूजना, गूँजना, अव्यक्त शब्द होना।
कूँड़ा (सं० पु०) मिट्टी का बर्तन, जो पानी या अन्न रखने के काम में आता है।
कूँड़ी (सं० स्त्री०) पथरौटी, पत्थर की कटोरी।
कूँथना (क्रि० अ०) काँखना, दुःख की ध्वनि निकालना, कबूतरों का गुटुरगूँ करना।
कूई (सं० स्त्री०) पुष्प विशेष, कुमुदिनी, श्वेत कमल, कमल की जाति का एक पुष्प, यह कमल के समान होता है, इसके पत्ते भी क़रीब क़रीब कमल के ही समान होते हैं, इसका फूल श्वेत होता है, और वह रात को विकसित होता है।
कूक (सं० स्त्री०) कोयल का शब्द, मधुर ध्वनि, घड़ी आदि को चलाने के लिये उसमें कुंजी देने को भी कूक कहते हैं।
कूकना (क्रि० अ०) कोयल का बोलना, कोयल का शब्द करना, घड़ी आदि में चाभी देना।
कूकर (सं० पु०) कुत्ता।
कूकरनिंदिया (सं० स्त्री०) कुत्ते की नींद के समान नींद, साधारण नींद जो आहट पाते ही टूट जाय। कुत्ते बहुत कम सोते हैं, और सोते भी हैं तो सदा सावधान रहते हैं।
कूकरमुत्ता (सं० पु०) कुकुरमुत्ता, एक बरसाती पौधा, इसकी गंध बुरी होती है, इसके पत्ते बड़े बड़े और कोमल होते हैं, इसके पत्ते के ऊपर सफ़ेद सफ़ेद रोयें से होते हैं।
कूकरलेंड़ (सं० पु०) कुकुरों का मैथुन, ये मैथुन के अन्त में जुड़ जाते हैं उसे ही कुकुरलेंड़ कहते हैं। ग्रामीण बोली में निरर्थक भीड़ को भी कुकुरलेंड़ कहते हैं।
कूकरी (सं० स्त्री०) सूत, गड्डी।
कूच (तु० सं० पु०) यात्रा, प्रस्थान, रवानगी, प्रयाण, सेना का प्रस्थान।
मुहा०—कूच करना=चला जाना, पराधीन होना, मर जाना। देवता का कूच करना=निरुक्त होना, कर्तव्यविमूढ़ हो जाना, अवाक होना, भय लज्जा आदि से ठिठिक जाना। कूच बोलना=यात्रा के लिये सेना को आज्ञा देना, स्थानत्याग का हुक्म देना।
कूचिका (सं० स्त्री०) कुची, सलाई।
कूचिया (सं० स्त्री०) इमली, कनपट्टी।
कूची (सं० स्त्री०) कुंची।
कूज (सं० स्त्री०) कुजन, अव्यक्त शब्द, धातु पात्र आघात होने के पश्चात् का अव्यक्त शब्द।
कूजन (सं० स्त्री०) शब्द, ध्वनि, कुज, गूंज।
कूजना (क्रि० अ०) पक्षियों का मधुर बोलना, शब्द करना, अव्यक्त शब्द होना।
कूजहिं (क्रि०) कूजते हैं, गुंजारते हैं।
कूजा (सं० पु०) मिट्टी या धातु का टोंटीदार पात्र, मिसरी का गोला। [स्थान।
कूजित (वि०) कथित, शब्दित, ध्वनित, ध्वनिपूर्ण
कूट (सं० पु०) शिखर, शृंग, पहाड़ की चोटी, भूसा मिला हुआ अन्न का ढेर, गूढ़ भेद, गुप्त रहस्य, मन्त्र, छल कपट पूर्ण नीति, झूठ, मिथ्यापूर्ण, बनावटी।
कूटना (क्रि० स०) किसी वस्तु पर आघात पहुँचाना, दवा धान आदि का कूटना, मारना, सिल चक्की आदि को काम के लायक़ बनाने के लिए टाँकी से उसे ऊबड़ खाबड़ बनाना।
कूटनीति (सं० स्त्री०) अधर्म नीति, छल कपट पूर्ण नीति, धोखेबाज़ी, दूसरे को धोखा देकर अपना काम निकालने की कपटपूर्ण चाल।
कूटपाश (सं० पु०) पक्षियों के फँसाने का जाल।
कूटलेख (सं० पु०) झूठा लेख, असत्य लेख, जाली दस्तावेज़।
कूटलेखक (सं० पु०) झूठे लेख बनाने वाला, जाली दस्तावेज़ बनानेवाला। [साक्षी।
कूटसाक्षी (सं० पु०) झूठा गवाह, झूठी गवाही, मिथ्या
कूटस्थ (सं० पु०) नित्य, अविनाशी, अटल, अचल, परमेश्वर, आत्मा, सांख्य के मतानुसार जागृत, स्वप्न और सुषुप्त इन तीनों अवस्थाओं में एक समान रहने वाला आत्मा-पुरुष जो परिणामरहित हो।
कूट्ट (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा, इसके दाने का आटा फलाहार के काम में आता है, यह पवित्र समझा जाता है, इसके आटे से फलाहारी मिठाइयाँ भी बनाई जाती हैं।

कूड़ा (सं० पु०) कतवार, बुरी दशा में पड़ी घास आदि का योग, कूड़ा कतवार । [किया जाता है ।

कूड़ाखाना (सं० पु०) वह स्थान जहाँ कूड़ा एकट्ठा

कूढ़ (वि०) मूर्ख, नासमझ ।

कूत (सं० पु०) आनुमानिक परिमाण निश्चय, खड़ी फसल आदि से होने वाले अन्न का अनुमान के द्वारा निश्चय करना ।

कूतना (क्रि० स०) अनुमान द्वारा किसी वस्तु का परिमाण निश्चित करना, अन्दाज़ करना, अनुमान करना, अटकल लगाना ।

कूथना (क्रि०) काँखना । [उछलना ।

कूदना (क्रि० अ०) उछलना, फाँदना, ऊपर या नीचे

कूप (सं० पु०) कूँआ, इनारा ।

कूपमण्डूक (सं० पु०) अज्ञानी मनुष्य, अनुभवहीन मनुष्य, कूएँ में रहने वाले मेंढक को किसी बात का अनुभव नहीं होता, क्योंकि कूएँ के अतिरिक्त बाहरी बातों का उसे ज्ञान नहीं हो सकता । अनुभवहीन मनुष्य के अर्थ में भी इनका प्रयोग होता है ।

कूपा वा कूपार (सं० पु०) समुद्र ।

कूबड़ (सं० पु०) पीठ पर का उठा हुआ भाग, किसी किसी मनुष्य की पीठ पर ऊपर की ओर उठा हुआ रहता है, वह उठा हुआ भाग कूबड़, या कूबर कहा जाता है ।

कूबरी (सं० स्त्री०) कंस की दासी ।[देखकर जलनेवाला ।

कूर (सं० पु०) क्रूर, निर्दय, दयाहीन, दूसरों की उन्नति

कूरता (सं० स्त्री०) क्रूरता, निर्दयता, जड़ता, मूर्खता ।

कूरपन (सं० पु०) क्रूरता, मनुष्य का वह धर्म जिस कारण यह क्रूरता करता है ।

कूरम (सं० पु०) कूर्म, कच्छप, कछुआ ।

कूर्म (सं० पु०) कच्छप, कछुआ, विष्णु का एक अवतार, मुद्रा विशेष, ध्यान की एक मुद्रा ।

कूर्मपुराण (सं० पु०) एक पुराण का नाम, यह अठारहों पुराणों में का एक पुराण है ।

कूल (सं० पु०) तीर, तट, नदी का किनारा ।

कूलहना (क्रि० अ०) काँखना, कराहना, पीड़ा से अव्यक्त ध्वनि करना । [हुई हड्डियों का स्थान ।

कूलहा (सं० पु०) कमर के नीचे दोनों बग़ल में निकली

कूवत (अ० सं० पु०) बल, शक्ति, सामर्थ्य, ताक़त ।

कूबर (सं० पु०) कूबड़ ।

कूष्माण्ड (सं० पु०) कुम्हड़ा, पेठा ।

कृकाटिका (सं० पु०) कन्धे और गले का जोड़ ।

कृच्छ्र (सं० पु०) कष्ट, दुःख, पाप, व्रत विशेष, पापनाशक व्रत ।

कृत (वि०) किया हुआ, सम्पादित, रचित, निर्मित ।

कृतक (क्रि०) काल्पनिक, बनावटी ।

कृतकर्मा (वि०) प्रवीण, दक्ष, चतुर, निपुण ।

कृतकार्य (सं० पु०) सम्पादित कार्य, चरितार्थ ।

कृतकाल (सं० पु०) निश्चित समय, नियत समय ।

कृतकृत्य (वि०) जिसका काम पूरा हुआ है, जिसका मनोरथ सिद्ध हुआ, सफल मनोरथ, सम्मान सूचना के लिए इसका प्रयोग होता है ।

कृतघ्न (वि०) अकृतज्ञ, उपकारी के प्रति अपकार करने वाला, कृत का नाश करनेवाला ।[अपकार का भाव ।

कृतघ्नता (सं० स्त्री०) कृतघ्नताई, उपकारी के प्रति

कृतघ्नताई (सं० स्त्री०) कृतघ्नता । [वाला ।

कृतघ्नी (वि०) अकृतज्ञ, उपकारी के प्रति अपकार करने

कृतज्ञ (वि०) कृत को जानने वाला, अपने प्रति किये उपकारों को प्रत्युपकार करने के लिए जानने वाला ।

कृतज्ञता (सं० स्त्री०) कृतज्ञ का धर्म, निहोरा मानना ।

कृतयुग (सं० पु०) सतयुग, पहिला युग, चारों युगों में से पहला युग ।

कृतविद्य (वि०) निपुण, पण्डित, विद्वान् ।

कृतवीर्य (सं० पु०) एक राजा का नाम, इनके भाई का नाम कृतवर्मा था, यह महाभारत के युद्ध में सम्मिलित हुए थे ।

कृताञ्जलि (वि०) करबद्ध, जिसने हाथ जोड़े हों ।

कृतात्मा (सं० पु०) ज्ञानी, शुद्धाचारी, वह जिसने अपनी आत्मा का संशोधन किया हो । [बाक़ी न रहा हो ।

कृतार्थ (वि०) सफल, सिद्ध मनोरथ, जिसका कुछ प्रयोजन

कृति (सं० स्त्री०) कार्य, काम ।

कृती (वि०) अभिज्ञ, विद्वान्, निपुण ।

कृत्तिका (सं० स्त्री०) एक नक्षत्र का नाम, तीसरा नक्षत्र, इस में छः तारे हैं ।

कृत्तिवास (सं० पु०) शिव, महादेव, चर्म धारण करने के कारण महादेव का यह नाम पड़ा । शुद्ध संस्कृत रूप कृत्तिवासा है ।

कृत्य (सं० पु०) करणीय, कर्तव्य, अनुष्ठेय कर्म, धर्म और समाज का विहित काम, वे कर्तव्य जो अनुष्ठान के योग्य हों।

कृत्यविद् (वि०) कृत्यों को जानने वाला, कर्तव्य का अभिज्ञ, काम करने की प्रणाली का जानने वाला, निपुण, दक्ष, निष्णात, चतुर।

कृत्या (सं० स्त्री०) एक तान्त्रिक क्रिया, मारण आदि करने के एक अनुष्ठान की विधि, एक राक्षसी का नाम। इस राक्षसी का उल्लेख तन्त्र ग्रन्थों में पाया जाता है।

कृत्याकृत्य (सं० पु०) कर्तव्य अकर्तव्य, अच्छा बुरा।

कृत्रिम (वि०) बनावटी, बनाया हुआ, निर्मित, शास्त्रोक्त बारह प्रकार के पुत्रों में का एक पुत्र।

कृदन्त (सं० पु०) व्याकरण की एक प्रक्रिया, कृत् आदि प्रत्ययों के योग से जो शब्द बनें और वे प्रत्यय भी कृदन्त कहे जाते हैं।

कृपण (सं० पु०) कंजूस, सूम, जो प्राणों से भी धन को अधिक चाहे। [कारण वह कृपणता करता है।

कृपणता (सं० स्त्री०) कंजूसी, कृपण का वह भाव जिसके

कृपणाई (सं० स्त्री०) सूमड़ापन।

कृपया (क्रि० वि०) कृपाकर, कृपा पूर्वक, दया कर के।

कृपा (सं० स्त्री०) दया, मिहरबानी, इनायत, अनुग्रह, क्षमा।

कृपाचार्य (सं० पु०) गौतम के पुत्र शरद्वत् के पुत्र, द्रोणाचार्य के साले, कौरव और पाण्डवों के धनुर्विद्या के गुरू। [भेद।

कृपाण (सं० पु०) तलवार, छुरा, दण्डक वृत्त का एक

कृपाणिका (सं० स्त्री०) छोटी तलवार, कटारी।

कृपापात्र (सं० पु०) दया का अधिकारी।

कृपाल (वि०) कृपालु, दयालु।

कृपालु (वि०) दयालु, कृपा करने वाला।

कृपालुता (सं० स्त्री०) दयाभाव, मिहरबानी।

कृपिण (वि०) कृपण, दुष्ट, कंजूस, क्षुद्र।

कृपिणता (सं० स्त्री०) कंजूसी, क्षुद्रता, दुष्टता।

कृमि (सं० पु०) छोटा कीट, क्षुद्र कीड़ा, किरवा, लाह।

कृमिरोग (सं० पु०) रोग विशेष जिसमें आमाशय और पक्वाशय में कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं।

कृश (वि०) दुबला, पतला, क्षीण, छोटा, सूक्ष्म।

कृशता (सं० स्त्री०) दुबलापन, क्षीणता।

कृशाङ्गी (सं० स्त्री०) दुर्बल शरीर वाली स्त्री।

कृशानु (सं० पु०) अग्नि।

कृशिताई (सं० स्त्री०) कृशता, क्षीणता, दुर्बलता।

कृश्न (वि०) श्याम, काला, स्याह, नीला, या आसमानी, श्रीकृष्ण भगवान्, अथर्ववेद का एक उपनिषद्, छप्पय छन्द का एक भेद, वेदव्यास, अर्जुन, कोयल, कौवा, कृष्ण पक्ष, कलियुग, शाल्मलि द्वीप निवासी शूद्र, करौंदा, नील, पीपल, चन्द्रमा का कलंक, लोहा, सुरमा। [कला कुशल व्यक्ति।

कृशाश्व (सं० पु०) दक्ष के जामाता, राजा विशेष, नाट्य

कृशिन (वि०) दुर्बल, क्षीणकाय, दुबला पतला।

कृशोदरी (वि०) पतली कमर वाली।

कृषक (सं० पु०) खेतिहर, किसान,कृषि कर्म करने वाला।

कृषाण (सं० पु०) किसान।

कृषि (सं० स्त्री०) खेती, किसनई।

कृषिक (सं०पु०) देखो "कृषक"।

कृषिकार (सं० पु०) किसान, कृषक।

कृष्ण (सं० पु०) देखो "कृश्न"।

कृष्णकर्म (सं० पु०) बिना कामना के किया हुआ कार्य, फोड़े की चिकित्सा की एक प्रक्रिया, हिंसा आदि पाप पूर्ण कार्य।

कृष्णचन्द्र (सं० पु०) देखो "कृष्ण"।

कृष्णद्वैपायन (सं० पु०) पराशर के पुत्र वेदव्यास, पाराशर्य। [पाख।

कृष्णपक्ष (सं० पु०) अँधेरा पक्ष, बदी, चन्द्र विहीन

कृष्णमुख (सं० पु०) दानव विशेष, लङ्गूर।

कृष्णसखा (सं० पु०) अर्जुन।

कृष्णस्कन्ध (सं० पु०) सुरती का पेड़।

कृष्णा (सं० स्त्री०) द्रौपदी, पीपर, नदी विशेष,नाल बरी काली दाख, काला ज़ीरा, अगर, देवी विशेष, राई, योगिनी विशेष, आँख की छोटी पुतली, यमुना नदी का नाम, काली सरसों।

कृष्णाचल (सं० पु०) गिरनार पर्वत, रैवतक पर्वत, प्राचीन द्वारका इसी पर्वत पर थी, काला पहाड़।

कृष्णाजिन (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम, मृग-चर्म, काले मृग का चमड़ा।

कृष्णाफल (सं० पु०) काली मिर्च।

कृष्णाफल (सं० पु०) काली मिर्च।
कृष्णाभिसारिका (सं० स्त्री०) अँधेरी रात्रि में प्रेमी के पास संकेत-स्थान में जाने वाली स्त्री नायिका विशेष।
कृष्णार्पण (सं० पु०) निष्काम कर्म।
कृष्णाष्टमी (सं० स्त्री०) भाद्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी, श्रीकृष्ण का जन्म-दिन।
कृष्णोपकुल्या (सं० स्त्री०) औषधि विशेष, पीपली।
कृसर (सं० पु०) चित्रान्न, खिचड़ी।
क्लृप्त (वि०) रचित, निर्मित।
क्लृप्तकेश (सं० पु०) जटाधारी।
केंओंडी (सं० स्त्री०) केवड़ा, केतकी, पुष्प विशेष।
केंकें (सं० स्त्री०) चिड़ियों का कष्ट-सूचक शब्द।
केंचुआ (सं० पु०) एक बरसाती कीड़ा।
केंचुली (सं० स्त्री०) सर्प आदि का ऊपरी खोल जो प्रति वर्ष स्वतः उतर जाता है।
केंचुवा (सं० पु०) देखो "केंचुआ"।
केंत (सं० पु०) एक प्रकार का मोटा बेत जिसकी छड़ियाँ बनती हैं।
केंदु (सं० पु०) तेंदू का पेड़।
के (प्रत्यय) सम्बन्ध सूचक "का" विभक्ति का बहुवचन।
केउ (सर्व०) कोई।
केकड़ा (सं० पु०) पानी का एक कीड़ा, कर्कट, गेंगटा।
केकय (सं० पु०) एक प्राचीन देश का नाम, वहाँ का राजा, वा निवासी, दशरथ के स्वसुर, केकयी के पिता।
केकयी (सं० स्त्री०) केकय देश की स्त्री, दशरथ की रानी, भरत जी की माता।
केकर (वि०) टेढ़ा मेढ़ा, वक्र,डेरा, भेंगा।
केका (सं० स्त्री०) मोर की बोली, कूक, मधुर ध्वनि।
केकी (सं० पु०) मोर, मयूर, शिखी।
केड़ा (सं० पु०) कोंपल, कल्ला, नूतनपत्र।
केचित (सं० पु०) कोई।
केत (सं० पु०) घर, भवन, स्थान, केतु, ध्वजा, बुद्धि, संकल्प, सलाह, अन्न।
केतक (सं० पु०) केवड़ा, (वि०) किस कदर, बहुत।
केतकी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का पौधा, केवड़े का वृक्ष।
केतन (सं० पु०) गृह।
केतिक (वि०) थोड़े, दो चार, अल्प परिमाण।
केती (वि०) कितना।
केतु (सं० पु०) ज्ञान, दीप्ति, ध्वजा, पताका, निशान, चिह्न, नवाँ ग्रह, राहु का शरीर, पापग्रह, दानव विशेष। समुद्र के मथे जाने पर जब अमृत निकला तो वह देवताओं के हिस्से आया। देवता लोग पंक्ति बना कर उसे पी रहे थे तो एक राक्षस भी उन की पंक्ति में जा बैठा। अमृत पी लेने के बाद मालूम हुआ कि वह राक्षस है। विष्णु भगवान ने, जो मोहिनी रूप धारण कर अमृत बाँट रहे थे, इस राक्षस का सिर काट लिया। परन्तु अमृत पी लेने के कारण वह राक्षस अमर हो गया था इस लिए वह मर न सका और एक के स्थान पर दो राक्षस हो गए। मस्तक भाग का नाम राहु और धड़ का नाम केतु पड़ा। ये दोनों ग्रह माने जाते हैं। [पुच्छल तारा।
केतुतारा (सं० स्त्री०) धूम्रकेतु, अशुभ सूचक तारा,
केते (सं० पु०) कितने, कै।
केतुमाल (सं० पु०) नौ खण्डों में से एक खण्ड विशेष।
केदली (सं० पु०) केले का पेड़, कदली वृक्ष, कदली, रम्भा, केला।
केदार (सं० पु०) धान बोया या रोपा हुआ खेत, क्यारी, थाँवला, मेघराग का चौथा पुत्र, हिमालय पर्वत का एक शिखर।
केदारनाथ (सं० पु०) केदार पर्वत के स्वामी, महादेव।
केन (सर्व०) किसने (सं० पु०) एक उपनिषद का नाम।
केन्द्र (सं० पु०) लग्न का चौथा. पाँचवा, और दशवाँ स्थान, गोलाकार वस्तु का मध्य भाग। [असम्पूर्ण।
केन्द्रीभूत (सं० पु०) राशिकृत, एकत्रित, संकुचित, सङ्कीर्ण,
केमद्रुम (सं० पु०) जन्म-काल का ग्रह, योग विशेष, दरिद्र योग। [बिजायठ, बहुँटा।
केयूर (सं० पु०) अलङ्कार विशेष, अङ्गद, बाजूबन्द,
केर (अव्य०) सम्बन्ध सूचक अव्यय, अवधी भाषा में यह "का" के स्थान में आता है।
केरल (सं० पु०) देश विशेष, एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसका प्रचार प्रथम केरल देश में हुआ था, मालाबार देश।
केरा (सं० पु०) केला, कदली।
केराना (क्रि० स०) छाँटना, फटकना, सूप या चलनी में रख कर कूड़ा निकालना, (सं० पु०) पंसारियों के यहाँ मिलने वाली दैनिक व्यवहारिक वस्तुएँ, किराना।

केराव (सं० पु०) मटर।
केला (सं० पु०) केरा, कदली। [मैथुन, समागम।
केलि (सं० स्त्री०) परिहास, खेल, विहार, क्रीड़ा, रति,
केलिकला (सं० स्त्री०) सरस्वती की वीणा, रति-क्रिया।
केलिगृह (सं० पु०) क्रीड़ाघर।
केली (सं० स्त्री०) सुख शयन,आनन्द सुख,क्रीड़ा, खेल।
केवट (सं० पु०) कैवर्त, मल्लाह।
केवटी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा।
केवड़ई (वि०) केवड़े के समान रङ्ग वाला।
केवड़ा (सं० पु०) केतकी का पौधा। [उत्तम, श्रेष्ठ।
केवल (वि०) एक मात्र, अकेला, शुद्ध, पवित्र, उत्कृष्ट,
केवलव्यतिरेकी (सं० पु०) अनुमान विशेष, पूर्ववत्।
केवलान्वयी (सं० पु०) अनुमान विशेष, पूर्ववत्।
केवली (वि०) एकाकी, ग्रन्थ विशेष, जैनियों की मुक्ति, जन्म-पत्री।
केवाँच (सं० स्त्री०) कौंच।
केवाड़ (सं० पु०) देखो "किवाड़"।
केवा, केवान (सं० पु०) कँवल, कमल,आनाकानी, संकेत।
केश (सं० पु०) रश्मि, किरण, वरुण, विश्व, बाल, रोम, सिर के बाल, कच, ब्रह्मा की शक्ति विशेष, विष्णु, सूर्य।
केशकलाप (सं० पु०) केश-समूह, चोटी, जूड़ा।
केशग्रह (सं० पु०) केशकर्षण, केश पकड़ कर खींचना।
केशकर्म (सं० पु०) केशान्त नामक संस्कार, बाल काढ़ने व गूथने की पद्धति, केशविन्यास, चोटी बनाना।
केशपाश (सं० पु०) बालों की लट, काकुल, केश-समूह।
केशबन्ध (सं० पु०) नृत्य का एक हस्तक जिसमें हाथों को कन्धों पर से घुमा कर कमर पर ले जाते हैं और फिर ऊपर ले जाते हैं।
केशमार्ज्जनी (सं० स्त्री०) कंघी, ककही।
केशरञ्जन (सं० पु०) भृङ्गराज, भँगरैया।
केशर (सं० पु०)देखो "केसर"। [भृङ्गराज, भँगरैया।
केशराज (सं० पु०) एक प्रकार का भुजंगा पक्षी,
केशरिया (सं० पु०) पीला रंग विशेष, केसर का रंग,एक प्रकार का पहनावा जिसे राजपूत युद्ध के समय पहनते थे,यह पहनावा एक प्रकार का शपथ समझा जाता था, अर्थात् केशरिया पहन कर युद्ध से हट नहीं सकते, मर भले ही जाँय।
केशरी (सं० पु०) सिंह, केसरी, मृगराज, एक बानर का नाम, हनुमान जी के पिता।
केशव (सं० पु०) श्रीकृष्ण, केशव नाम पड़ने का कारण भगवान् ने स्वयं कहा है कि सूर्य, चन्द्रमा आदि प्रकाशशील पदार्थों को केश कहते हैं, वे हमारे हैं, अतएव हमारा नाम केशव है।
केशविन्यास (सं० पु०) बालों की सजावट,चोटी बनाना।
केशाकेशी (सं० पु०) परस्पर बाल पकड़ के लड़ना, झोंटाखिचौवल, झोंटाझोटी।
केशान्त (सं० पु०) संस्कार विशेष, मुण्डन।
केशि (सं० पु०) राक्षस विशेष।
केशिनी (सं० पु०) जटामाँसी, औषध विशेष, सुन्दर और बड़े बालों वाली स्त्री, अप्सरा विशेष, राजा सगर की रानी, रावण की माता, एक प्राचीन नगरी का नाम, पार्वती की सहचरी, दमयंती की एक दूती का नाम।
केशी (सं० पु०) घोड़ा, सिंह, असुर विशेष, यादव विशेष, सुन्दर बालों वाला, नील का पौधा, केवाँच।
केसर (सं० पु०) सुगन्धित पीली वस्तु विशेष, जो प्रायः कश्मीर में उत्पन्न होती है।
केसरिया (वि०) केसर के समान रङ्ग का, पीला, ज़र्द।
केसरी (सं० पु०) सिंह, घोड़ा, अश्व, नीबू, विशेष, हनुमान के पिता, नागकेशर, बगुला विशेष, चार-खाने की एक जाति, उड़ीसा प्रान्त का एक राज-वंश।
केसू (सं० पु०) ढाक, टेसू, पलास
केह(सर्व०)कौन मनुष्य,कोई, कोई व्यक्ति,अनिर्दिष्ट व्यक्ति।
केहरि (सं० पु०) देखो "केहरी"।
केहरी (सं० पु०) सिंह, घोड़ा, बानर विशेष।
केहा (सं० पु०) मयूर, मोर।
केहि (वि०) किस, कौन।
केहुनी (सं० स्त्री०) कोहनी,कुहनी,बांह के बीच की गांठ।
केहूँ (वि०) किसी प्रकार, किसी भाँति। [किंचुली।
कैंचली (सं० स्त्री०) साँप का खाल, सर्प चर्म, कैचलु,
कैंची (सं० स्त्री०) कपड़ा काटने का यन्त्र विशेष,कतरनी।
कैंड़ा (सं० पु०) पैमाना, माप, मान, नक़्शा ठीक करने का यन्त्र विशेष। [किस क़दर।
कै (वि०) कितने ही, कितना, किस प्रकार, किस तरह,

कैकेय (सं० पु०) कैकेय गोत्रोत्पन्न व्यक्ति।
कैकेयी (सं० स्त्री०) कैकेय राजा की पुत्री, दशरथ की छोटी रानी, भरत की माता। [भक्ति का एक अङ्ग।
कैङ्कर्य (सं० पु०) किङ्करत्व, भृत्यता, दासत्व, नवधा
कैकसी (सं० स्त्री०) लंकेश्वर रावण और कुम्भकर्ण आदि की माता का नाम, सुमाली राक्षस की कन्या, और विश्रवा मुनि की पत्नी थीं।
कैटभ (सं० पु०) दैत विशेष।
कैटभारि (सं० पु०) विष्णु, नारायण।
कैटभेश्वरी (सं० पु०) दुर्गा, भगवती।
कैत (सं० स्त्री०) ओर, तरफ, किनारा।
कैतक (सं० पु०) केवड़ा का फूल, केतकी पुष्प।
कैतव (सं० पु०) बहाना, छल, कपट, धूर्तता, जुआ लहसुनियाँ, धतूरा।
कैतववाद (सं० पु०) छलना, ठगना, प्रवंचना, औषधि विशेष, चिरायता।
कैतवापाह्नुति (सं० स्त्री०) अलङ्कार विशेष।
कैथ (सं० पु०)वृक्ष विशेष, कैथा।
कैथा (सं० पु०) देखो "कैथ"।
कैथिन (सं० स्त्री०) कायस्थ जाति की स्त्री, कायथिन।
कैथी (सं० स्त्री०)एक प्रकार का फल, एक पुरानी लिपि।
कैद (अ० सं० स्त्री०) बन्धन, कारागार, जेल।
कैदखाना (फ़ा० सं० पु०) बन्दीगृह, जेलखाना, दण्डित व्यक्तियों को रखने का सरकारी मकान।
कैदी (फ़ा० सं० पु०) बन्दी, बँधुवा, दण्डित व्यक्ति।
कैधोँ (अव्य०) या, वा, अथवा।
कैफ़ियत (अ० सं० पु०) समाचार, वर्णन, विवरण।
कैमुतिक (सं० पु०) न्याय विशेष, अनायास सिद्ध।
कैमुतिकन्याय (सं० पु०) न्यायशास्त्र की एक युक्ति विशेष।
कैयट (सं० पु०) व्याकरण महाभाष्य के टीकाकार, ये कश्मीर के रहने वाले थे, ये अपने समय के व्याकरण के विद्वानों में प्रधान समझे जाते थे। इनका समय ग्यारहवीं सदी विद्वानों के मत से निश्चित है। (२) ये भी काश्मीर निवासी थे। ९७७ ई० में इन्होंने आनन्दवर्द्धन के देवीशतक की टीका लिखी है। इनके पिता का नाम चन्द्रादित्य और पितामह का नाम वल्लभदेव था।
कैर (सं० पु०) करील।
कैरव (सं० पु०) श्वेतकमल, पद्म, कुमुद, शत्रु, जुआरी।
कैरवि (सं० पु०) चन्द्रमा।
कैरवी (सं० स्त्री०) चाँदनी, मैत्री।
कैरी (वि०) भूरे रङ्ग की, केरी।
कैल (सं० स्त्री०) वृक्ष की नूतन निकली हुई पतली लम्बी शाखा, कनखा।
कैलाश (सं० पु०) हिमालय पर्वत का एक भाग विशेष, शिव जी का निवास-स्थान।
कैलास (सं० पु०) देखो कैलाश।
कैलासनिकेतन (सं० पु०) महादेव, कुवेर।
कैलासवास (सं० पु०) मरण, मृत्यु।
कैवर्त (सं० पु०) मल्लाह, केवट, कछुवा, कर्णधार।
कैवल्य (सं० पु०) शुद्धता, निर्लिप्तता, दार्शनिक सिद्धांत विशेष, उपनिषद् विशेष।
कैशिक (वि०) केश-वाला, बड़े बड़े बालों वाला, (सं० पु०) केश समूह, शृङ्गार, नृत्य में सुकुमारता का दृश्य दिखलाने वाला भाव। [में से एक।
कैशिकी (सं० स्त्री०) नाटक की प्रधान चार वृत्तियों
कैसा (वि०) किस प्रकार, किस ढङ्ग का।
कैसाहो(वि०)किसी प्रकार का।
कैसे (क्रि० वि०) किस प्रकार से,किस हेतु,क्योंकर।
कैसो (क्रि० वि०) कैसे हू, किसी तरह भी।
कैहो(क्रि० वि०) करूँगा, कहूँगा।
कोँई (सं० पु०) कुँई, फूल विशेष, कुमुद।
कोँचना (क्रि० स०) चुभाना, चुभाना, गोदना, गड़ाना।
कोँचा (सं० पु०) एक जल-पक्षी, भड़भूँजे का बालू निकालने वाला करछा, चिड़ीमारों की एक लग्गी।
कोँछी (सं० स्त्री०) साड़ी का आगे चुन कर खोंसने वाला भाग, फुबती, तिन्नी, नीवी।
कोँढ़ा (सं० पु०) कड़ा, लोहे आदि धातुओं का छल्ला।
कोँढ़ी (सं० स्त्री०) कोढ़ा, छोटा कड़ा, या छल्ला।
कोँथना (क्रि० अ०) कूँखना, कूँकना।
कोँपना (क्रि० अ०) कोंपल निकलना या लगना। [पत्र।
कोँपल (सं० स्त्री०) अङ्कुर, कल्ला, लम्बी पत्ती, नूतन
कोँस (सं० पु०) छीमी, लम्बी फली।
कोँहड़ा (सं० पु०) कुम्हड़ा, काशीफल, पेठा।
कोँहड़ौरी (सं० स्त्री०) पेठा,कुम्हड़े की बनाई हुई बरी।

कोँहार (सं० पु०) कुम्हार, कुम्भकार, घड़ा बनाने वाला।
को (अव्य०) कर्मवाचक, द्वितीया विभक्ति, सम्प्रदान का चिह्न, कौन ।
कोआ (सं० पु०) रेशम के कीड़े का खोल या घर, कुसियारी, रेशम का कीड़ा, पका हुआ महुए का फल, कटहल के पके हुए बीज कोश, धुनी हुई ऊन की पोनी जिसे कात कर गड़रिये ऊन का तागा निकालते हैं ।
कोइ (सर्व०) कौन, किस ।
कोइन (सं० पु०) गोलैंदा, पका हुआ महुआ ।
कोइरी (सं० पु०) काछी, साग बेचने वाली एक जाति ।
कोइल (सं० स्त्री०) कोयल नाम का पक्षी, करघे में लगी हुई एक लकड़ी विशेष जो ढरकी के बगल में लगी रहती है, जुलाहा, मथानी को सीधी रखने वाली गोल छेद की एक लकड़ी ।
कोइला (सं० पु०) कोयला, लकड़ी या पत्थर का अधजला भाग जो बुझाकर रख दिया जाता है और समय पर उसमें आग लगा देने से बहुत अग्नि हो जाती है, यह प्रायः रेल और लोहे के गरम करने अथवा आवश्यकता पड़ने पर भोजन बनाने के काम में लाया जाता है । [आम, आम की गुठली ।
कोइली (सं० स्त्री०) आघात विशेष से दाग लगा हुआ
कोई (सर्व०) अज्ञात, न जाने कौन एक । [अथवा वह ।
मुहा०—कौन सा=कोई आदमी। कोई न कोई=यह
कोउ (सर्व०) कोई ।
कोऊ (सर्व०) कोई भी, कोई हू । [जाति ।
कोपरी (सं० पु०) जाति विशेष, काछी, खेती करने वाली
कोक (सं० पु०) चक्रवाक, चकवा पक्षी, सुरख़ाब, एक रतिशास्त्र-विशारद पण्डित, सङ्गीत का छठा भेद, विष्णु, भेड़िया, मेढक, वन में उत्पन्न होने वाला खजूर ।
कोकनद (सं० पु०) लाल कमल ।
कोकम (सं० पु०) अमसूल, एक दक्षिण में पैदा होने वाला सदाबहार पेड़ । [शास्त्र ।
कोकशास्त्र (सं० पु०) कोकदेव का बनाया हुआ रति-
कोका (सं० पु०) चक्रवाक, चकई, चकवा, धाय भाई, फरिया, कँवल, वस्त्र विशेष ।
कोकिल (सं० स्त्री०) कोयल, कोइल, पक्षी विशेष, नीलम की एक छाया, चूहा विशेष, छप्पय का एक भेद, जलता हुआ अङ्गारा ।
कोकिला (सं० स्त्री०) कोयल, पिक ।
कोकिलावास (सं० पु०) आम्र वृक्ष ।
कोकी (सं० स्त्री०) चक्रवाकी, चकई ।
कोङ्कण (सं० पु०) शास्त्र विशेष, देश विशेष यह देश दक्षिण भारत में है । [गर्भाशय ।
कोख (सं० पु०) उदर, पेट, पसलियों का अधोभाग,
कोखवन्द (वि०) बन्ध्या, सन्तानहीन, निपुत्री, बाँझ ।
कोचना (क्रि० स०) कोंचना, चुभोना ।
कोचा (सं० पु०) तलवार कटार आदि का हलका घाव ।
कोचिला (सं० पु०) कुचला, विष विशेष जो औषधि के काम में आता है ।
कोचीन (सं० पु०) मदरास प्रान्तीय एक राजधानी ।
कोछा कोछी (सं० स्त्री०) गोदी, लड़कों को झुलाने की झोली । [अंचरा ।
कोछे (सं० पु०) कोख , कुक्षि, उत्संग, गोदी, अंचल,
कोजागर (सं० पु०) शरद पूनो, आश्विन पूर्णिमा ।
कोट (सं० पु०) दुर्ग, गढ़, क़िला शहरपनाह, प्राचीन राजमन्दिर, राजमहल ।
कोटर (सं० पु०) वृक्ष का खोंखला, खोड़रा, खोहड़,किले के आस पास का बनावटी वन जो दुर्गरक्षा के लिये लगाया जाय ।
कोटवारण(सं० पु०) चारदीवारी ।
कोटवी (सं० स्त्री०) नग्न स्त्री, विवस्त्रा नारी ।
कोटा (सं० पु०) एक नगर का नाम,राजपूताने एक राज्य ।
कोटि (सं० स्त्री०) धनुष का अग्रभाग, कमान का गोशा, अस्त्र नोक व धार, वर्ग, श्रेणी, वाद विवाद का पूर्व पक्ष, उत्तमता, अर्द्धचन्द्र का सिरा, समूह, राशिचक्र का तृतीयांश, करोड़, अनेकबार ।
कोटिकल्प (सं० पु०) सर्वदा, सर्वक्षण । [नाम ।
कोटिवर्ष (सं० पु०) करोड़ वर्ष, बाणासुर के नगर का
कोटिक (वि०) करोड़, बहुत अधिक, अमित ।
कोटिर (सं० पु०) जटा, किरीट, मुकुट ।
कोटिशः (क्रि० वि०) अनेक प्रकार से,अनेकानेक ।[धनी ।
कोटियाधीस (सं० स्त्री०) करोड़ी, करोड़पति, अधिक

कोट्ट (सं० पु०) देखो "कोट"।
कोठरी (सं० स्त्री०) छोटा कमरा, तङ्ग कोठा।
कोठा (सं० पु०) भण्डार, चौड़ा कमरा, बड़ी कोठरी।
कोठार (सं० पु०) अन्न आदिक रखने का स्थान, भण्डार।
कोठारी (सं० पु०) भण्डारी, भण्डार का प्रवन्धक, व अधिकारी।
कोठिला (सं० पु०) कुठला, बखार।
कोठी (सं० स्त्री०) बड़ा पक्का मकान, हवेली, बड़े कारबार या लेन देन वाला स्थान, बङ्गला।
कोठीवाल (सं० पु०) महाजन, साहूकार, बड़ा व्यापारी, महाजनी लिपि, मुड़िया, धनी।
कोठीवाली (सं० स्त्री०) कोठी चलाने का काम, कोठी वाला या महाजनी अक्षर। [पोला करना।
कोड़ाना (क्रि०स०) गोड़ना, खोदना, खोद कर उलटना,
कोड़वाना (क्रि० स०)गुड़वाना, दूसरे के द्वारा खोद कर पलटवाने का काम कराना।
कोड़ा (सं० पु०) साँटा, चाबुक, दुर्रा, पशुओं को मारने का छोटा डण्डा।
मुहा०—कोड़ा करना = वश में करना, आधीन करना।
कोड़ाई (सं० स्त्री०) खेत गोड़ने की मजदूरी, गोड़ाई।
कोड़ाना (क्रि० स०) देखो"कोड़वाना"।
कोड़ार (सं० पु०) कोंडरा, तौक, साग आदि बोने के लिए कोइरियों का खेत।
कोड़ी (सं० स्त्री०) बीस संख्या की कोई परिमित वस्तु।
कोढ़ (सं० पु०)रोग विशेष, कुष्ट।
कोढ़ना (क्रि०) खोदना, खखोरना, गढ़ा खोदना।
कोढ़ी (सं० पु०) कोढ़ रोग से पीड़ित व्यक्ति।
कोण (सं० पु०)गोशा, कोना।
कोतल (सं० पु०) जलूसी, सजाया हुआ घोड़ा, राजा की सवारी का घोड़ा, आवश्यकतार्थ विशेष साथ में रहने वाला घोड़ा। [चारी।
कोतवाल (सं० पु०) पुलिस का नागरिक प्रधान कर्म-
कोतवाली (सं० स्त्री०) कोतवाल का पद, या उसका काम, वह स्थान जहाँ कोतवाल प्रायः रहता हो, थाना।
कोतह (फ़ा० वि०) छोटा, कम, अल्प, थोड़ा।
कोतहगर्दन (फ़ा० सं० पु०) छोटी गर्दन वाला, कम लम्बी गर्दन वाला व्यक्ति। [निचाई।
कोतही (फ़ा० सं० स्त्री०) कोर कसर, कमी, त्रुटि, मूल,
कोथली (सं० स्त्री०) रुपया रखने की लंबी पतली थैली जिसे कमर में बाँध कर रखते हैं।
कोथमीर (सं० पु०)कच्ची धनियाँ, धनियाँ की हरी पत्ती।
कोथी (सं० स्त्री०) म्यान का पोला या साम।
कोद (सं० स्त्री०) दिशा, ओर, कोना।
कोदर्या (सं० स्त्री०) कोदो। [प्राचीन देश।
कोदण्ड (सं० पु०) धनुष, कमान, धन राशि, भौंह, एक,
कोद्रव (सं० पु०) कोदो, कोदरा, कोदई, अन्न विशेष।
कोदो (सं० पु०) देखो "कोद्रव"।
कोद्रव्य (सं०पु०) देखो "कोद्रव"।
कोन, कोना (सं० पु०) देखो "कोण"।
कोनर (सं० पु०) कोना, किनारा, ओर।
कोनिया (सं० स्त्री०) पटनी, कोनों को सुदृढ़ करने वाली मुड़ी हुई पत्ती जो प्रायः बक्स आदि के लगाने के लिये काम में आती है।
कोन्त (सं० पु०) कुन्त, भाला, बर्छी, गोशा।
कोप (सं० पु०) क्रोध, रिस, गुस्सा, चढ़ाई।
कोपना (क्रि० अ०) कुपित होना, क्रोधित होना।
कोपभवन (सं० पु०) क्रोधित होकर एकान्त में बसने वाले प्राणियों का स्थान, क्रोधित हो कर जिस कोठरी में क्रोधी जा बैठे।
कोपर (सं० पु०) देखो "कोपल"।
कोपल (सं० पु०) मुलायम पत्ती, कल्ला, कोंपल।
कोपान्ध (वि०) अत्यंत क्रुद्ध, क्रोध से अंधा।
कोपान्वित (वि०) क्रुद्ध, क्रोधित।
कोपित (वि०) क्रोधशील, गुस्सा।
कोपी (वि०) क्रोधी, क्रोध करने वाला, संकीर्ण राग का एक भेद। [की लँगोटी, कछनी।
कोपीन (सं० पु०) कौपीन, ब्रह्मचारी और संन्यासियों
कोफ़्ता (फ़ा० सं० पु०) कबाब विशेष।
कोविद (सं० पु०) कोविद, पण्डित, निपुण, ज्ञानी, कवि।
कोबी (सं०स्त्री०) गोभी या उसका फूल। [संगीत।
कोमल (वि०)मृदु, सुन्दर, सुकुमार, स्वर का भेद विशेष
कोमलता (सं० स्त्री०) मधुरता, नरमी, मृदुलता, नम्रता।
कोमलताई (सं० स्त्री०) मृदुलता, कोमलता, नरमाहट।
कोय (सर्व०) कोई। [को दिया जाने वाला चारा।
कोयर (सं० पु०) साग पात, सब्जी, तरकारी, पशुओं
कोयल (सं० स्त्री०) कोकिला, कोइल।

कोयला (सं० पु०) देखो "कोइला"।
कोया (सं० पु०) आँख का डेला, नेत्र का किनारा।
कोये (सं० पु०) आँख के डेले, आँखों के बीच का श्वेत ढेला या ढेंढर।
कोर (सं० स्त्री०) किनारा, सिरा बगल, कोर।
कोरक (सं० पु०) कली, मुकुल, चोरक नाम का गन्ध द्रव्य।
कोरकसर (सं० स्त्री०) दोष, ऐब, कमी, त्रुटि, कमी बेशी।
कोरङ्गी (सं० स्त्री०) छोटी इलायची। [का प्रबन्धक दफ़्तर।
कोरट (अ० सं० पु०) कोर्ट आफ़ वार्ड्स, नाबालिग की जायदाद
कोरमा (तु० सं० पु०) अधिक घी में भूना हुआ माँस।
करहा (वि०) कोरदार, नोकदार, किनारे दार।
कोरा (वि०) अछूत, नया, ताज़ा, नवीन।
कोरापन (सं० पु०) नवीनता, अछूतापन।
कोरि (क्रि०) खुरच कर, खोद कर, कोड़ कर।
कोरी (सं० पु०) जुलाहा, मोटा कपड़ा बुनने वाली शूद्र जाति, कोली। [होना।
मुहा०—कोरे रहना = निराश होना, मनोरथ सिद्ध न
कोल (सं० पु०) कोर, गोद, शूकर, सूअर, चित्रक नामक औषधि, शनिश्चर, ग्रह, बेर, तोले भर की तोल, काली मिर्च, शीतलचीनी, चव्य, पुरु-वंशीय एक प्राचीन राज विशेष, एक जंगली जाति।
कोला (सं० पु०) देखो "कोल"। [की ध्वनि।
कोलाहल (सं० पु०) शोर, चिल्लाहट, रौला, हौरा, ज़ोर
कोलिआर (सं० पु०) एक प्रकार का झाड़ीदार पेड़।
कोलिया (सं० स्त्री०) पतला मार्ग, तंग रास्ता, छोटा पतले आकार वाला लम्बा खेत।
कोलियाना (क्रि० अ०) तंग गली में चला जाना, या तंग गली से निकल जाना, (सं० पु०) कोलियों का मुहाल, कोलियों के रहने का स्थान, गाँव का वह भाग जहाँ कोली रहते हों।
कोली (सं० पु०) ताँती, छोटी गली, एक जाति विशेष।
कोल्हाड़ (सं० पु०) कुल्हवाड़, वह स्थान जहाँ ऊख पेल कर रस निकाला या गुड़ बनाया जाता हो।
कोल्हुआ (सं० पु०) कूल्हा, कुश्ती का एक पेच।
कोल्हू (सं० पु०) तेल या ऊख पेलने का यन्त्र।
कोविद (वि०) देखो "कोबिद"।
कोश (सं० पु०) अण्डा सम्पुट, डिब्बा, गोलक, पुष्प-कलिका, मद्यपात्र, पञ्चपात्र नामक पूजा का एक पात्र, तलवार कटार आदि शस्त्रों की म्यान, आवरण, खोल, थैली, एकत्रित धन, वह ग्रन्थ विशेष जिसमें पर्याय सहित शब्द दिए गए हों; समूह, योनि, अंड-कोश, घाव पर बाँधने की पट्टी, रेशम का कोया, शनि और गुरु के साथ किसी तीसरे ग्रह का समागम।
कोशल (सं० पु०) सरयू तटस्थ एक प्राचीन देश, अयोध्या, वहाँ बसने वाली क्षत्रिय जाति, एक राग विशेष।
कोशला (सं० स्त्री०) कोशल की राजधानी अयोध्या।
कोशलाधीश (सं० पु०) श्री रामचन्द्र, कोशल के राजा।
कोशलापुरी (सं० स्त्री०) अयोध्या।
कोशवृद्धि (सं० स्त्री०) अंड-वृद्धि का रोग, या धन की अधिकता। [नगरी।
कोशाम्बी (सं० स्त्री०) कोशम्ब की बसाई हुई एक प्राचीन
कोशागार (सं० पु०) ख़ज़ाना, भण्डार।
कोशाधीस (सं० पु०) भण्डारी, कोशाध्यक्ष, खजानची।
कोशिश (सं० पु०) प्रयत्न, चेष्टा, उद्योग।
कोष (सं० पु०) देखो "कोश"।
कोषवृद्धि (सं० स्त्री०) देखो "कोश-वृद्धि"।
कोषकार (सं० पु०) ख़ज़ानची, कोशाध्यक्ष
कोषाध्यक्ष (सं० पु०) कोषाधीश, कोषाधिपति, भण्डारी, खजानची।
कोष्ठ (सं० पु०) पेट का भीतरी भाग, उदर का मध्यभाग।
कोष्ठक (सं० पु०) दीवार, लकीर, बहुत घरों का चक्र या कोठा, चिह्न विशेष।
कोष्ठबद्ध (सं० पु०) मलावरोध, मल की रुकावट रोग विशेष। [दस्त न होना।
कोष्ठबद्धता (सं० स्त्री०) अजीर्ण, पेट में मल रुकना,
कोष्ठागार (सं० पु०) भण्डार, कोष, खजाना।
कोस (सं० पु०) दूरी की एक नाप, दो मील
कोसना (क्रि० स०) शाप रूप गाली देना, दुर्वचन कह कर बुरा मनाना।
कोसल (सं० पु०) देखो "कोशल"।
कोसा (सं० पु०) रेशमी कपड़ा, बड़ा दिया जो बर्तन ढकने के कार्य में आता है।
कोसिला (सं० स्त्री०) कौशल्या, रामचन्द्र की माता, दशरथ की प्रधान रानी।
कोसी (सं० स्त्री०) नदी विशेष, कौशिकी।

कोहँडौरी (सं० स्त्री०) उर्द की पीठी, या कुम्हड़ा की बनाई हुई बरी।
कोह (फ़ा० सं० पु०) पर्वत, पहाड़।
कोहनी (सं० स्त्री०) बाँह के बीच की गाँठ, केहुनी।
कोहबर (सं० पु०) वह स्थान जहाँ विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किये जाते हैं।
कोहरा (सं० पु०) कुहासा, कुहरा, कुहर।
कोहा (सं० पु०) नाँद, कपाल की शक्ल का मिट्टी का बर्तन।
कोहान (सं० पु०) कूबड़, कुब्जा, जो ऊँट की पीठ पर होता है। [गुस्सा होना।
कोहाना (क्रि० अ०) रूठना, नाराज होना, क्रोधित होना,
कोहाव (सं० पु०) क्रोध, कोप, रूठना, कोहाना, मान करना, रूस जाना।
कोही (वि०) गुस्सावर, क्रोधी, गुस्सैल।
कौहु, कोहू (सं० पु०) देखो "कोह"।
कौ (अ०) का, को।
कौंध (सं० स्त्री०) बिजली की चमक, विद्युज्ज्योति।
कौंधना (क्रि० अ०) चमकना, बिजली का दिखाई देना।
कौंधनी (सं० स्त्री०) करधनी।
कौंधा (सं० पु०) बिजुली, विद्युत, दामिनी।
कौंला (सं० पु०) कमला, संगरा नीबू विशेष।
कौआ (सं० पु०) कौवा, काक।
कौआना (क्रि० अ०) भौंचकाना, चकबकाना, आश्चर्य से इधर उधर देखना, स्वप्न में दैवात् बड़बड़ाना।
कौटिल्य (सं० पु०) टेढ़ापन, कुटिलता, कपट, चाणक्य का नाम भी है।
कौटुम्बिक (वि०) कुटुम्ब-सम्बन्धी, परिवार वाला।
कौड़ा (सं० पु०) बड़ी कौड़ी, अलाव, जंगली प्याज।
कौड़िया (वि०) कौड़ी के रंग का, कौड़ी के समान, कुछ काला और कुछ सफेद। [जाति, कृपण धनी।
कौड़ियाला (वि०) कोड़ई रंग, विषैले सर्प की एक
कौड़ियाही (सं० स्त्री०) अल्प धन के लालच में कोई काम करा लेना वा कौड़ियों द्वारा मज़दूरी चुकाना।
कौड़िहाई (सं० स्त्री०) देखो "कौड़ियाही"।
कौड़ी (सं० स्त्री०) वराटिका, कपर्दिका, तुच्छ, बेकाम।
कौड़ेना (सं० पु०) कसेरों के व्यवहार में आने वाला, बर्तनों पर नक्कासी के काम करने का एक औज़ार।
कौणप (सं० पु०) वासुकी वंशज नाग, राक्षस विशेष।
कौण्डिन्य (सं० पु०) कुण्डिन मुनि का पुत्र, विष्णु गुप्त चाणक्य। [आनन्द, खेल तमाशा।
कौतुक (सं० पु०) कुतूहल, आश्चर्य, अचम्भा विनोद,
कौतुकिया (सं० पु०) कौतुक करने वाला, विनोदशील, विवाह सम्बन्ध कराने वाला नाऊ।
कौतुकी (वि०) देखो "कौतुकिया"। [कौतुक, आश्चर्य।
कौतूहल (वि०) अपूर्व वस्तु देखने का अभिलाष, हर्ष,
कौथ (सं० स्त्री०) कौन सी तिथि, कौन तारीख।
कौथा (वि०) किस संख्या का, गणना में किस स्थान का, कौन नम्बर का।
कौन (सर्व०) किस, क्या।
कौनप (वि०) पापी।
कौनसा (वि०) कैसा।
कौन्ता (सं० स्त्री०) कुन्ती, पाण्डव की माता।
कौन्ती (सं० स्त्री०) कुन्तधारी, भाला धारण करने वाला।
कौन्तेय (सं० पु०) कुन्ती के एक पुत्र, पांडव, अर्जुन।
कौप (वि०) कूपन सम्बन्धी जल, कूपोदक।
कौपीन (सं० पु०) देखो "कोपीन"।
क़ौम (अ० सं० स्त्री०) वर्ण, जाति, नस्ल।
कौमार (सं० पु०) बाल्यावस्था, कुमार अवस्था।
कौमारभृत्य (सं० पु०) बालकों के पालने और चिकित्सा करने की विद्या, धातृविद्या, दायगीरी।
कौमारी (सं० स्त्री०) कन्यावस्था विशेष, कार्तिक की शक्ति, बराही कन्द, प्रथम विवाह की स्त्री, पार्वती का नाम।
कौमुदी (सं० पु०) ज्योत्स्ना, चान्दनी, जुन्हैया, नदी विशेष, दीपोत्सव तिथि, आश्विन और कार्तिक की पूर्णिमा।
कौमोदकी (सं० स्त्री०) विष्णु की गदा।
कौर (सं० पु०) कवल, ग्रास। [दिखाना।
कौरना (क्रि० स०) थोड़ा भूनना, सेकना, अल्प अग्नि
कौरव (सं० पु०) कुरु राजा के पुत्र, कुरुवंशीय।
कौरव्य (सं० पु०) कुरुराज का वंश, मुनि विशेष, महाभारत में वर्णित एक नगर।
कौरा (सं० पु०) दरवाज़े का वह भाग जिससे किवाड़ खुले होने पर मिले रहते हैं।
कौरी (सं० स्त्री०) अँकवार, कौली।
कौल (सं० पु०) उत्तम कुलोत्पन्न, वाममार्गी, कवल, कौर, कमल, चलता गाना।

क़ौल (सं० पु०) वादा, प्रण, इक़रार, प्रतिज्ञा, उक्ति वाक्य, कथन, जबान।

कौलव (सं० पु०) एकादश करणों में का तीसरा करण।

कौला (सं० पु०) कोला, गोदी, आलिङ्गन, कनियाँ।

कौलिक (वि०) कुलपरम्पराप्राप्त (सं० पु०) ताँती, पाखण्डी।

कौली (सं० स्त्री०) अँकवार, गोदी।

कौलीन (त्रि०) उच्च कुल का, उच्च वंशीय।

कौलेयक (सं० पु०) कुक्कुर,कुत्ता।

कौलेली (सं० पु०) गन्धक।

कौवा (सं० पु०) काक, काले रङ्ग का पक्षी विशेष।

कौवाली (अ० सं० पु०) एक प्रकार का गाना, ध्वनि विशेष से गाई जाने वाली गजल, संगीत में तिताला बजाने का एक भेद। [औषधि।

कौवेर (सं० पु०) कुवेर सम्बन्धी, कुवेर का, कूट नाम

कौवारी (सं० स्त्री०) उत्तर दिशा, कुवेर की शक्ति।

कौशल (सं० पु०) चतुराई, कुशलता, निपुणता, पटुता, मंगल, तथा कौशल देश वासी।

कौशली (सं० पु०) कुशलता, जुहार, कुशल प्रश्न।

कौशल्या (सं० स्त्री०) रामचन्द्र की माता, दशरथ की रानी, कोशल देश के राजा दशरथ की प्रधान स्त्री, पुरु राजा की स्त्री, जन्मेजय की माता, सत्यवान की स्त्री, धृतराष्ट्र की माता, पंचमुखी आरती, बत्ती की आरती।

कौशाम्बी (सं० स्त्री०) वत्स देश की राजधानी का नाम, प्रयाग से ३० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है।

कौशिक (सं० पु०) इन्द्र, जरासंध का सेनापति, अश्व कर्मा, कुशिक राजा का गाधि नाम का पुत्र, विश्वामित्र, मज्जा, रेशमी वस्त्र, नेवला, अथर्ववेद का एक सूत्र, एक उपपुराण का नाम भी है।

कौशिकी (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम जो दरभंगा से पूरब की ओर बहती है। चण्डिका,एक रागिनी, काव्य की प्रथम वृत्ति।

कौशेय (सं० पु०)पटवस्त्र, पीताम्बर, रेशमी धोती आदि।

कौसुम्भ (सं० पु०) वन कसुम, एक प्रकार का साग।

कौस्तुभ (सं० पु०) रत्न विशेष जो समुद्र से निकला था, मुद्रा विशेष जिसका तन्त्र शास्त्र में वर्णन है।

क्या (सर्व०) प्रश्नवाचक शब्द, प्रश्नसूचक शब्द।

क्यारी (सं० पु०) कियारी, खेत का छोटा भाग जो बोने के वास्ते पृथक २ मेंड़ लगाकर बनाया जाता है।

क्यों (क्रि० वि०) किस कारण, किस निमित्त।

क्योंकर (अ०) किस प्रकार, कैसा, किस तरह।

क्योंकि (अ०) इसलिये, इस कारण, किन्तु।

क्रकच (सं० पु०) ज्योतिष के अनुसार एक योग विशेष, करीर का पेड़, आरा, बाजा विशेष, तख्ते चीरने की मजदूरी स्थिर करने की गणित क्रिया।

क्रतक (सं० पु०) वसुदेव के पुत्र का नाम।

क्रतु (सं० पु०) संकल्प, इच्छा, विवेक, इन्द्रिय, जीव, आत्मा, विष्णु, अश्वमेध, यज्ञ।

क्रतुद्वेषी (सं० पु०) असुर, दानव, दैत्य, नास्तिक।

क्रतुध्वंसी (सं० पु०) शिव, शङ्कर, महादेव।

क्रतुपुरुष (सं० पु०) यज्ञ पुरुष।

क्रतुभुज (सं० पु०) देवता, सुर।

क्रतुविक्रयी (सं० पु०)द्रव्य लेकर यज्ञ फल बेचने वाला।

क्रतुमाली (सं० स्त्री०) औषधि विशेष, किरवाली।

क्रथकौशिक (सं० पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, क्रथ और कौशिक का वंश।

क्रथन (सं० पु०) सफ़ेद अगर, ऊँट।

क्रन्दन (सं० पु०) रुदन, विलाप, रोना, युद्ध अवसर पर वीरों का आह्वान।

क्रन्दित (सं० पु०) अनुशोचित, विलपित, रोदित।

क्रम (सं० पु०) पूर्वापर सम्बन्धी व्यवस्था, पैर रखने की क्रिया, पद्धति।

क्रम क्रम (क्रि० वि०) शनैः शनैः। [से एक।

क्रमण (सं० पु०) पैर, पाँव, पारे के अठारह संस्कारों में

क्रमभंग (सं० पु०) अनियम, विधिहीनता, साहित्य का एक दोष।

क्रमभोग (सं० पु०) विधि नियोग।

क्रमशः (क्रि० वि०) धीरे धीरे, क्रम से, सिलसिलेवार, परंपरागत, थोड़ा थोड़ा कर के। [हो।

क्रमसंन्यास (सं०पु०) आश्रम-क्रम से जो संन्यास लिया

क्रमागत (वि०) परंपरागत, जो परम्परा से होता आया हो, क्रमशः किसी रूप से प्राप्त।

क्रमानुकूल (क्रि० वि०) नियमानुसार, क्रमानुसार, क्रमशः, सिलसिलेवार, नम्बरवार।

क्रमानुयायी (त्रि०) विहित, व्यवस्थित, नियमानुकूल।

क्रमानुसार (क्रि०वि०)नम्बरवार, क्रम से, क्रमानुकूल ।
क्रमान्वय (क्रि०वि०) एक के बाद एक,नम्बर से,क्रम से ।
क्रमिक (क्रि० वि०) क्रमशः ।
क्रमुक (सं० पु०) नागरमोथा, सुपारी का वृक्ष, शहतूत का पेड़, पठानी लोध, एक देश का नाम ।
क्रमेल, क्रमेलक (सं० पु०) ऊँट,उष्ट्र ।
क्रय (सं० पु०) मोल लेने की क्रिया, खरीदने का काम
क्रयणीय (वि०) क्रेय, क्रेतव्य,मोल लेने योग्य ।
क्रयविक्रय (सं० पु०) लेन-देन, व्यापार,ख़रीद फरोख़्त ।
क्रयिक(सं० पु०) क्रेता, माल लेने वाला, खरीददार ।
क्रयी (वि०) क्रय-कर्त्ता, मोल लेने वाला ।
क्रय्य (वि०) बिकने के लिए रक्खी हुई वस्तु ।
क्रव्य (सं० पु०) मांस, गोश्त ।
क्रव्याद (सं० पु०) चिता की अग्नि, मांस खाने वाला ।
क्रान्त (वि०) ढका हुआ, दबा हुआ, किसी वस्तु द्वारा छुपा हुआ, ग्रस्त ।
क्रान्ति (स० स्त्री०) उथल-पथल, घोर परिवर्तन, हेरफेर, उपद्रव, अत्याचार डग भरने की क्रिया, कदम रखना, गति, कल्पित वृत्त, आवृत्त, अपमण्डल सूर्यपथ ।
क्रान्तिक्षेत्र (सं० पु०) क्रान्ति के अर्थ बनाया हुआ केन्द्र । [एक अंग ।
क्रान्तिज्या (सं० स्त्री०) क्रान्ति वृत्तक्षेत्र में अक्षक्षेत्र का
क्रान्तिपात (सं० पु०) जिन विन्दुओं पर क्रान्तिवलय और खगोलीय विषुवत् रेखाएँ एक दूसरे को काटती हों । [किसी विन्दु की दूरी ।
क्रान्तिभाग (सं० पु०) खगोलीय, नाड़ी मण्डल से
क्रान्तिमण्डल (सं० पु०) राशि चक्र । [क्रान्ति ।
क्रान्तिवृत्त (सं० स्त्री०) सूर्य का मार्ग, सूर्य का पथ,
क्रिमि (सं० पु०) कीड़ी, चींटी, पेट का रोग विशेष ।
क्रिय (सं० पु०) मेष राशि । [से एक भेद ।
क्रियमाण (वि०) जो हो रहा हो, कर्म के चार भेदों में
क्रिया (सं० स्त्री०) व्यापार, काम, प्रयत्न, चेष्टा, व्याकरणानुसार वह अग जिसमें होना पाया जाय, शौचादि कर्म्म,श्राद्धादि प्रेत काय,उपाय,उपचार न्याय, विचार साधन,अभियोग की कार्रवाई ।[प्रवृत्त, कर्मठ ।
क्रियानिष्ठ (वि०) शास्त्रानुकूल कर्म करने वाला, कर्म-
क्रियान्वित (वि०) कर्मान्वित, काम में लाया हुआ ।
क्रियापटु (वि०) चतुर, प्राज्ञ, दक्ष, विदग्ध ।
क्रियापर (वि०) कर्मठ,सुकर्मा,पटु.काम अच्छी तरह करने वाला । [साक्षियों का शपथ करना ।
क्रियापाद (सं० पु०) चतुष्पाद, व्यवहार का तीसरा पाद,
क्रियारूप (सं० पु०) धातुरूप, आख्यात ।
क्रियालोप (सं० पु०) कर्म में विरक्ति, कर्म-निवृत्ति ।
क्रियावसन्न (वि०) पराजित ।
क्रियावान (वि०) देखो "क्रियानिष्ठ" ।
क्रियाविशेषण (सं० पु०) व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे क्रिया के किसी काल या भाव विशेष का बोध हो ।
क्रियाशून्य (वि०) कर्महीन, कर्मरहित । [आभूषण ।
क्रीट (सं० पु०) मुकुट, किरीट, शिर में पहिनने का
क्रीडनक (सं० पु०) खेल,खेलने की वस्तु । [वृत्त विशेष ।
क्रीड़ा (सं० स्त्री०) कल्लोल, केलि, ताल का भेद विशेष,
क्रीड़ावन (सं० पु०) प्रमोद वन, केलि कानन ।
क्रीड़ामृग (सं० पु०) खेल के पशु, वानर आदि ।
क्रीड़ारथ (सं० पु०) पुष्प रथ, फूलों का रथ ।
क्रीड़ाशैल (सं० पु०) बनावटी पर्वत, नक़ली पहाड़ ।
क्रीत (वि०) ख़रीदा हुआ, लाया हुआ ।
क्रीतक (सं० पु०) मोल लिया हुआ पुत्र ।
क्रीतपुत्र (सं० पु०) बारह प्रकार के पुत्रों में से एक पुत्र ।
क्रुद्ध (वि०) क्रोध युक्त, गुस्से में भरा हुआ ।
क्रुमुक (सं० पु०) सुपारी, पुंगी फल ।
क्रुष्वा (सं० पु०) शृगाल, सियार ।
क्रूर (वि०) परपीड़क, निर्दयी, कठिन, तीखा, गरम,नीच, घोर, (सं० पु०) भात, बाज पक्षी, लाल कनेर, कंक, गावजुवाँ,विषम राशियाँ ।[मुर्खी.तितलौकी का पेड़ ।
क्रूरकर्मा (सं० पु०) दुष्कर्मी, बुरे काम करने वाला,सूरज
क्रूरगन्ध (सं० पु०) उग्रगंध, तीखा गन्धक ।
क्रूरग्रह (सं० पु०) विषम राशि, रवि, मंगल, शनि, राहु, केतु, बुरे ग्रह । [रता, बुरापन ।
क्रूरता (सं० स्त्री०) दुष्टता, निष्ठुरता, निठुरता, कठो-
क्रूरदन्ती (सं० स्त्री०) देवी का एक नाम ।
क्रूरलोचन (सं० पु०) शनिग्रह. शनैश्चर ।
क्रूरस्वरा (सं० पु०) कर्कश ध्वनियुक्त, भयंकर शब्द ।
क्रूराकार (सं० पु०) रावण,भयंकर आकार ।
क्रूराचार (वि०) भयानक, निठुर, नृशंस ।
क्रूरात्मा (वि०) दुरस्वभाव, दुरात्मा, दुष्ट प्रकृति ।

क्रेतव्य (वि०) क्रेय वस्तु, क्रयणीय, खरीदने योग्य।
क्रेता (सं० पु०) ख़रीदने वाला, मोल लेने वाला, ख़रीददार।
क्रेय (वि०) देखो क्रेतव्य। [वाराही कन्द।
क्रोड़ (सं० स्त्री०) भुजान्तर, गोद,कोला, सुअर, शनिग्रह,
क्रोड़पत्र (सं० पु०) पूरक, ज़मीमा, समाचार-पूर्ति के वास्ते चिपका या रक्खा या लगाया हुआ पत्र, जो प्रायः अख़बारों में रख कर बाँटे जाते हैं।
क्रोध (सं० पु०) चित्तोद्वेग, रोष, गुस्सा, कोप।
क्रोधन (सं० पु०) क्रोधी, कोप करने वाला,गर्ग मुनि के शिष्य और कौशिक के पुत्र का नाम, अयुत के पुत्र और देवतिथि के पिता का नाम, सम्वत्सर विशेष।
क्रोधमूर्छित (सं० पु०) सुगन्ध द्रव्य विशेष।
क्रोधवन्त (वि०) कुपित, गुस्से में भरा हुआ।
क्रोधवश (क्रि० वि०) क्रोध में, गुस्से की दशा में।
क्रोधातुर (वि०) क्रोधी।
क्रोधान्ध (वि०) क्रोध से अन्धा।
क्रोधित (वि०) कुपित, क्रुद्ध, क्रोधयुक्त, गुस्सावर।
क्रोधी (वि०) क्रोध करने वाला।
क्रोश (सं० पु०) चार या आठ हज़ार हाथ के मार्ग की लम्बाई, कोस।
क्रोष्ट (सं० पु०) श्रृगाल, सियार, गीदड़।
क्रौंच (सं० पु०) कराँकुल नामक पक्षी, हिमालय के अन्तर्गत एक पर्वत, सात द्वीपों में एक। [महाद्वीप।
क्रौंच द्वीप (सं० पु०) सात महाद्वीपों के अन्तर्गत एक
क्रौर्य (सं० पु०) क्रूरता, निष्ठुरता।
क्लान्त (वि०) थका हुआ, श्रान्त।
क्लान्तमना (वि०) श्रान्तमन, विषादयुक्त।
क्लान्ति (सं० स्त्री०) थकावट, श्रान्ति, परिश्रम। [वाला।
क्लान्तिकर (वि०) श्रमजनक,श्रान्तिकर,थकावट पैदा करने
क्लान्तिच्छिद् (वि०) विश्राम, स्वास्थ।
क्लिन्न (वि०) आर्द्र, भीगा, सजल, गीला, मैला।
क्लिशित (सं० स्त्री०)क्लेशित,जिसको बहुत क्लेश हुआ हो।
क्लिश्यमान (वि०) सन्तापित, पीड़ित।
क्लिष्ट (वि०) क्लेश युक्त, कठिन, दुःखी, दुःख से पीड़ित।
क्लिष्टता (सं० स्त्री०) कठिनता, मुसीबत, आपत्ति।
क्लीव (वि०) नपुंसक, नामर्द, कादर, कायर, डरपोक, कमहिम्मत।
क्लीवता (सं० स्त्री०) नपुंसकता, कायरता। [मैलापन।
क्लेद (सं० पु०) आर्द्रता, पसीना, गीलापन, ओदापन,
क्लेदन (सं० पु०) पसीना लाने का कार्य, शारीरिक श्लेष्माओं में से एक।
क्लेदिन (वि०) भींगा हुआ, आर्द्र, स्वेदित।
क्लेश (सं० पु०) व्यथा, दुःख, कष्ट, वेदना, पीड़ा।
क्लेशकर (वि०) दुःखदायक, कष्टदायक।
क्लेशग्रहण (सं० पु०) विपत्ति का नाश।
क्लेशद (वि०) दुःखकर,व्यथा देने वाला।
क्लेशवान् (वि०) आपत्तिग्रस्त, आपन्न, दुर्गत।
क्लेशापह (वि०) क्लेशनाशकारी।
क्लेशित (वि०) दुखी, पीड़ित, व्यथित, दुःखित।
क्लैव्य (सं० पु०) नपुंसकता, नामर्दी, हिजड़ापन।
क्वचित् (क्रि० वि०) कोई भी, शायद ही कोई, बहुत कम।
क्वण (सं० पु०) वीणा का शब्द, घुँघरू का शब्द।
क्वथिता (सं० स्त्री०) शहद से बना आसव, एक प्रकार का रसा विशेष। [कर निकला रस।
क्वाथ (सं० पु०) काढ़ा, जौशाँदा, औषधियों को औंट
क्वार (सं० पु०) मास विशेष, आश्विन।
क्वारपन (सं० पु०) कुआरापन, कुमारपन।
क्वारा (सं० पु०) जिसका बिवाह न हुआ हो, अविवाहित, बिन ब्याहा,कुआरा। [वाला धान विशेष।
क्वारी (सं० स्त्री०) कुमारी, कन्या (वि०) क्वार में होने
क्षई (सं० स्त्री०) क्षयरोग, सूखी खांसी।
क्षण (सं० पु०) समय का अति छोटा भाग।
क्षणक (सं० स्त्री०) क्षण, काल।
क्षणद (सं० पु०) जल, ज्योतिषी, रतौंधिया, जिसे रात में न दीखे।
क्षणदा (सं० पु०) रात्रि, निशा।
क्षणदाकर (सं० पु०) चन्द्रमा।
क्षणदान्ध (वि०) रात के अन्धे, प्राणि विशेष, उल्लू।
क्षणद्युति (सं० स्त्री०) बिजली, विद्युत।
क्षणध्वंसी (वि०) अतिशय अस्थिर, क्षणमात्र ही में नष्ट होने वाला।
क्षणप्रति (अव्य०) सतत, अनवरत बराबर।
क्षणप्रभा (सं० स्त्री०) देखो "क्षणद्युति"।
क्षणभंगुर (वि०) शीघ्र नष्ट होने वाला,अनिश्चित।

क्षणरुचि (सं० स्त्री०) बिजली, चमक, प्रकाश।
क्षणिक (वि०) अनित्य, एक क्षण रहने वाला।
क्षणिका (सं० स्त्री०) बिजली, तड़ित।
क्षणिनी (सं० स्त्री०) रात, निशा।
क्षत (वि०) जिसे आघात पहुँचा हो, (सं० पु०) घाव व्रण, फोड़ा, ज़ख़्म, आघात पहुँचाना।
क्षतकास (सं० पु०) कास, रोग विशेष।
क्षतज (वि०) क्षत से उत्पन्न, शोथ, लाल, (सं० पु०) रक्त, रुधिर, काश विशेष।
क्षतयोनि (वि०) वह स्त्री जिसका पुरुष के साथ समागम [हो चुका हो।
क्षतविक्षत (वि०) घायल, लहूलुहान, अति आघातित।
क्षतव्रत (सं० पु०) अवकीर्ण व्रत।
क्षतव्रण (सं० पु०) छः प्रकार के घोड़ों में एक, चोट लगे हुए स्थान के पकने पर उसे काट डालें ऐसी दशा में उसे क्षतव्रण कहेंगे।
क्षता (सं० स्त्री०) विवाह से पूर्व किसी अन्य पुरुष से दूषित होने वाली कन्या।
क्षताशौच (सं० पु०) घाव या चोट लगने के कारण अशौच होना जिसके कारण श्रौत स्मार्त आदि कर्म न किए जा सकें।
क्षति (सं० स्त्री०) हानि, क्षय, नाश, नुकसान।
क्षत्ता (सं० पु०) द्वारपाल, दरबान, मछली, नियोग करने वाला पुरुष, दासी-पुत्र, क्षत्रिया माता और शूद्र से उत्पन्न हुई जाति।
क्षत्र (सं० पु०) बल, राष्ट्र, धन, शरीर, जल, तगर का वृक्ष, (स्त्री०) क्षत्रिय।
क्षत्रकर्म (सं० पु०) क्षत्रियों के योग्य कर्म, क्षत्रियोचित [कर्म।
क्षत्रधर्म (सं० पु०) क्षत्रियों का धर्म।
क्षत्रधारी (सं० पु०) राजा, भूपाल।
क्षत्रपति (सं० पु०) नृप, राजा।
क्षत्रबन्धु (सं० पु०) पतित, नाम मात्र का क्षत्रिय।
क्षत्रविद्या (सं० स्त्री०) क्षत्रियों की विद्या, बाण-विद्या, धनुर्विद्या।
क्षत्रान्तक (सं० पु०) परशुराम।
क्षत्राणी (सं० स्त्री०) देखो "क्षत्रिया"।
क्षत्रिन (सं० स्त्री०) देखो "क्षत्रिया"।
क्षत्रिया (सं० स्त्री०) क्षत्राणी, क्षत्रिय जाति की स्त्री।
क्षत्री (सं० पु०) क्षत्रिय।
क्षन्तव्य (वि०) क्षमा के योग, माफ करने लायक।
क्षपणक (वि०) निर्लज्ज, लज्जा रहित संन्यासी, विक्रमादित्य के नव रत्नों में से एक विद्वान।
क्षपा (सं० पु०) रात, हल्दी।
क्षपाकर, क्षपानाथ (सं० पु०) कपूर, चन्द्रमा।
क्षपान्त (सं० पु०) भोर, प्रातःकाल, प्रभात, सबेरा।
क्षम (वि०) योग्य, समर्थ, उपयुक्त।
क्षमता (सं० स्त्री०) सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता।
क्षमना (क्रि० स०) क्षमा करना, माफ़ करना।
क्षमनीय (वि०) क्षमणीय, क्षमा करने योग्य, बलवान, शक्तिशाली।
क्षमवाना (क्रि० स०) क्षमा कराना, माफ़ कराना।
क्षमा (सं० स्त्री०) सहिष्णुता, सहनशीलता, खैर का पेड़, पृथिवी, वेत्रवती या बेतवा नदी का एक नाम, दुर्गा का एक नाम, राधिका की सखी विशेष, आर्या छन्द का भेद विशेष।
क्षमाई (सं० स्त्री०) छमाई, क्षमा करने की पद्धति।
क्षमाना (क्रि० स०) देखो "क्षमवाना"।
क्षमापति (सं० पु०) क्षमा करने वाला, शान्त।
क्षमापन (सं० पु०) क्षमा करने का काम।
क्षमावान (वि०) गमख़ोर, सहनशील, सहिष्णु।
क्षमाशील (वि०) शान्त प्रकृति, क्षमावान।
क्षमितव्य (वि०) क्षमा करने योग्य, माफ़ी के लायक।
क्षमिता (वि०) क्षमाशील, सहिष्णु।
क्षमिय (वि०) क्षमा कीजिये, मुआफ़ कीजिये।
क्षमी (वि०) क्षमाशील, क्षमावान्।
क्षम्य (वि०) माफ करने योग्य, क्षमा करने योग्य।
क्षय (सं० पु०) ह्रास, अपचय, कल्पान्त, नाश, घर, मकान, निवासस्थान, यक्ष्मा नामक रोग, क्षयी, नीति शास्त्र अनुसार अष्ट वर्ग का समूह, ज्योतिष शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का माघ जो शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ हो कर कृष्ण अमावस्या को समाप्त हो जाता है।
क्षयकाल (सं० पु०) प्रलयकाल।
क्षयकास (सं० पु०) क्षयी रोग में होने वाली खाँसी।
क्षयथु (सं० पु०) खाँसी, कास।
क्षयपक्ष (सं० पु०) अँधेरा पक्ष, कृष्ण पक्ष।
क्षयमास (सं० पु०) मलमास, अधिमास।

क्षयिष्णु (वि०) क्षय होने वाला, नाश होने वाला, नष्ट होने वाला। [होने वाला, क्षयरोगग्रस्त।
क्षयी (वि०) नाश होने वाला, ह्रास होने वाला, क्षय
क्षरणा (क्रि०) टपकना, रस रस का चूना, झड़ना, झरना, विकारोत्पन्न होना, छूटना।
क्षवथु (सं० पु०) एक नासिका रोग, जो अधिक चरपरे पदार्थ सूँघने अथवा सूर्य की ओर देखने से उत्पन्न होता है।
क्षान्त (वि०) सहनशील, सन्तोषी, धीर।
क्षान्ति (सं० स्त्री०) शान्ति, सहनशीलता, क्षमा।
क्षात्र (वि०) क्षत्रिय-सम्बन्धी।
क्षाम (वि०) क्षीण, दुर्बल, निर्बल।
क्षामकण्ठ (वि०) सूखा कण्ठ, मन्द शब्द।
क्षार (सं० पु०) पाचक, जारक, दाहक, नमक, सज्जी, शोरा, खार, भस्म, राख, सोहागा, काँच, शीशा, गुड़।
क्षारक (सं० पु०) सज्जी, क्षार, चिड़िया फंसाने का जाल, मछली पकड़ने की दौरी।
क्षारपत्र (सं० पु०) बथुआ, शाक विशेष।
क्षारभूमि (सं० स्त्री०) खारी भूमि, ऊसर खेत।
क्षारमेह (सं० पु०) मेह रोग विशेष।
क्षारमृत्तिका (सं० स्त्री०) खारी मिट्टी।
क्षारश्रेष्ठ (सं० पु०) ढाकवृक्ष, पलास।
क्षारसिन्धु (सं० पु०) लवण समुद्र।
क्षारित (वि०) अपवाद-ग्रस्त, अपवादयुक्त, दूषित।
क्षालन (सं० पु०) प्रक्षालन, धोना, स्वच्छ करना।
क्षिति (सं० पु०) पृथ्वी, भूमि, धरती, वासस्थान, जगह, गोरोचन, ऋषि विशेष, पञ्चम स्वर की चार श्रुतियों में से पूर्व, प्रलय काल, क्षय। [पेड़, दरख्त।
क्षितिज (सं० पु०) नरकासुर, मंगल ग्रह, केचुआ, वृक्ष
क्षितिनाथ (सं० पु०) राजा, शासक, रक्षक।
क्षितिपाल (सं० पु०) राजा, नृपति।
क्षितिमंडन (सं० पु०) ब्रह्म, आदर्श पुरुष।
क्षितीश (सं० पु०) राजा, नरेश, पृथ्वीपाल।
क्षितीश्वर (सं० पु०) प्रभु, स्वामी।
क्षिप्त (वि०) फेंका हुआ, त्यक्त, विकीर्ण, अवज्ञात, पतित, अपमानित, बात रोग से युक्त।
क्षिप्र (क्रि० वि०) त्वरित, शीघ्र, जल्दी, तत्क्षण, तुरन्त।
क्षिप्रहस्त (वि०) शीघ्र कार्य करने वाला।
क्षीण (वि०) दुबला, पतला, सूक्ष्म, घटा हुआ, कम, क्षयशील।
क्षीणता (सं० स्त्री०) घटी, कमी, घाटा, हानि।
क्षीणांग (सं० पु०) दुर्बलांग, दुबला पतला शरीर। [वाला।
क्षीयमान् (वि०) नाशवान, नित्य घटने वाला, कम होने
क्षीर (सं० पु०) दूध, पय, जल, पानी, पेड़ों का रस, वृक्षों का दूध, खीर, सरल नामक वृक्ष का गोंद।
क्षीरकण्ठ (सं० पु०) बच्चा, दुधमुँहा, बालक।
क्षीरघृत (सं० पु०) मक्खन।
क्षीरधि (सं० पु०) सागर, समुद्र। [मिलना, मिलन।
क्षीरनीर (सं० पु०) आलिंगन, गले लगाना, सम्मेलन,
क्षीरपाक (वि०) दूध में पकाया हुआ भोजन या औषधि।
क्षीरविदारी (सं० स्त्री०) औषधि विशेष।
क्षीरसमुद्र (सं० पु०) दूध का समुद्र।
क्षीरस्वामी (सं० पु०) संस्कृत के प्रसिद्ध कवि।
क्षीरी (सं० स्त्री०) वृक्ष और फल विशेष, खीरी, थन।
क्षीरोद (सं० पु०) क्षीर समुद्र, खारी सागर।
क्षीरोदक (सं० पु०) क्षीर समुद्र।
क्षीरोदतनया (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, रमा, कमला।
क्षुण्ण (वि०) चूर्णकृत, दुःखित, सन्तापयुक्त चित्त, क्षुब्ध।
क्षुत (सं० पु०) छींक।
क्षुत् (सं० स्त्री०) भूख, भोजन की इच्छा, क्षुधा।
क्षुत्पिपासा (सं० स्त्री०) भूख, प्यास।
क्षुद्र (वि०) अधम, नीच, तुच्छ, क्रूर, खोटा, थोड़ा, छोटा।
क्षुद्रघंटिका (सं० स्त्री०) घूँघरू, आभूषण विशेष।
क्षुद्रता (सं० स्त्री०) तुच्छता, नीचता, कमीनापन, ओछापन। [धान विशेष।
क्षुद्रधान्य (सं० पु०) कँगना, कोदो, चेना, बातकारक
क्षुद्रप्रकृति (वि०) दुस्स्वभाव, नीच प्रकृति।
क्षुद्रबुद्धि (वि०) तुच्छ बुद्धि, नीच बुद्धि।
क्षुद्ररोग (सं० पु०) बुरे रोग, छोटे रोग।
क्षुद्रा (सं० स्त्री०) नीच स्त्री, वेश्या, अमलोनी, चंगेरी, जटामासी, बालछड़, सरघा नामक मधुमक्खी, कौड़ियाला, कटेरी, हिचकी।
क्षुद्राशय (वि०) कमीना, नीच प्रकृति।
क्षुधा (सं० स्त्री०) भोजनेच्छा, क्षुधा, भूख।
क्षुधातुर (वि०) भूखा, क्षुधा से व्याकुल।
क्षुधालु (वि०) भुक्खड़, सदैव भूखा।

क्षुधान्वित (वि०) भूखा, क्षुधित, क्षुधावान, क्षुधा से पीड़ित ।
क्षुधावान (वि०) भूखा ।
क्षुधित (वि०) भूखा, भोजन की इच्छा रखने वाला ।
क्षुप (सं० पु०) झाड़ियों का पौधा, कटीला वृक्ष, सत्य-भामा से उत्पन्न श्रीकृष्ण का पुत्र, रतिबंध, काम शास्त्र की क्रिया विशेष । [डरा हुआ ।
क्षुब्ध (वि०) क्षोभित, चञ्चल, अधीर, कुपित, भयभीत,
क्षुभित (वि०) क्षुब्ध ।
क्षुर (सं० पु०) अस्तुरा, छुरा, मूँज, खुर ।
क्षुरक (सं० पु०) गोखरू, वृक्ष विशेष ।
क्षुरधार (सं० पु०) नरक विशेष, बाण विशेष ।
क्षुरप (सं० पु०) खुरपा, तेज़ धार वाला बाण ।
क्षुरिका (सं० स्त्री०) चाकू, छूरी, साग विशेष जिसे पालकी कहते हैं । [चाकू ।
क्षुरी (सं० पु०) नाई, हज्जाम, खुरवाला पशु, छूरी,
क्षेत्र (सं० पु०) खेत, समान भूमि, उत्पत्ति स्थान, राशि, स्त्री, शरीर, अन्तःकरण, रेखाओं से घिरा स्थान ।
क्षेत्रगणित (सं० पु०) खेतों के माप करने का गणित, वह गणित विद्या जिसके द्वारा खेत नापे जाँय, या जिसमें खेतों के नाप का वर्णन हो ।
क्षेत्रज (वि०) खेत में उत्पन्न, धर्म्म शास्त्र, पुत्र विशेष ।
क्षेत्रजा (सं० स्त्री०) श्वेत कटोरी, ककड़ी विशेष, शिल्पी घास । [किसान ।
क्षेत्रज्ञ (सं० पु०) साक्षी, परमात्मा, जीवात्मा, खेतिहर,
क्षेत्रदेवता (सं० पु०) खेतों के अधिष्ठाता देवता ।
क्षेत्रपति (सं० पु०) खेत की रक्षा करने वाला, काश्तकार, किसान ।
क्षेत्रपाल (सं० पु०) भैरव विशेष, द्वारपाल, खेत का रक्षक, किसी स्थान का मुख्य प्रबन्धकर्ता, स्वयम्भू, भूमिया ।
क्षेत्रफल (सं० पु०) रक़बा, वर्ग परिमाण ।
क्षेत्रविद (सं० पु०) कृषि-शास्त्र-वेत्ता ।
क्षेत्राजीव (वि०) कृषक, कर्षक किसान ।
क्षेत्राधिप (सं० पु०) मेष आदि बारह राशियों के स्वामी, खेत का स्वामी, जमींदार, खेत के अधिष्ठाता देवता ।
क्षेत्री (सं० पु०) विवाहित पति, खेत का स्वामी, पति, मालिक ।

क्षेप (सं० पु०) फेंकना, ठोकर, घात, निन्दा, कलंक, बिताना, गुज़ारना, समाप्त करना । [हुआ ।
क्षेपक (वि०) निन्दनीय, मिश्रित, मिला हुआ, फेंका
क्षेपण (सं० पु०) गिराना, फेंकना, बिताना, काटना, निन्दा ।
क्षेपणी (सं० स्त्री०) नाव का डाँड, बल्ली, अस्त्र विशेष ।
क्षेपणीय (वि०) बिगाड़ने योग्य, फेंकने लायक़ ।
क्षेम (सं० पु०) मङ्गल, कुशल अभ्युदय, सुख, सुरक्षा, प्राप्त वस्तु की रक्षा, जन्म से चौथा नक्षत्र, चोवा, धर्म का पुत्र जो शान्ति से उत्पन्न हुआ था ।
क्षेमकर (वि०) शुभकर, मङ्गलकर । [वाली ।
क्षेमकरी (सं० स्त्री०) एक देवी का नाम, कुशल करने
क्षेमकर्ण (सं० पु०) जन्मेजय का सखा, अर्जुन का पुत्र ।
क्षेमकुशल (सं० पु०) आरोग्य मंगल ।
क्षेमकृत (वि०) कल्याणकारक, मंगलकर्त्ता । [आसन ।
क्षेमासन (सं० पु०) आसन विशेष, स्वर्ग-प्राप्ति का
क्षेमी (वि०) मङ्गलकारक, क्षेम करने वाला । [कवि ।
क्षेमेन्द्र (सं० पु०) काश्मीर-निवासी एक प्रसिद्ध संस्कृत
क्षोणि (सं० स्त्री०) पृथ्वी, मेदिनी, अवनी, एक संख्या ।
क्षोणिग (वि०) क्षितिग (सं० पु०) मंगल ।
क्षोणिदेव (सं० पु०) ब्राह्मण, भूसुर ।
क्षोणिप (सं० पु०) राजा, नरपति ।
क्षोणी (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरनी, धरती ।
क्षोणीपति (सं० पु०) नरेश, राजा, नृप ।
क्षोद (सं० पु०) सफ़ूफ़, बुकनी, चूर्ण, जल पानी, पीसने की क्रिया, चूर्ण करने का काम ।
क्षोभ (सं० पु०) विकलता, खलबली, घबड़ाहट, भय, डर, शोक, क्रोध । [करने वाला ।
क्षोभया (वि०) क्षोभक, क्षोभित करने वाला, दुखित
क्षोभित (वि०) व्याकुल, चलायमान, क्रुद्ध, डरा हुआ ।
क्षोभी (वि०) व्याकुल, उद्वेगशील ।
क्षौणि, क्षौणी (सं० स्त्री०) देखो "क्षोणि" ।
क्षौद्र (सं० पु०) क्षुद्रता, पतला मधु, जल, धूल, मागधी माता से उत्पन्न वर्ण संकर जाति ।
क्षौम (सं० पु०) असली वस्त्र, घर का ऊपरी कमरा ।
क्षौर (सं० पु०) बाल बनवाना ।
क्षौरक, क्षौरिक (सं० पु०) छुरा, नाई, नापित ।
क्षौरकर्म (सं० पु०) मुण्डन, हजामत ।

क्ष्मा (सं० स्त्री०) धरती, पृथ्वी।
क्ष्मातल (सं० पु०) धरातल, भूतल, पृथ्वी तल।
क्ष्माभुक् (सं० पु०) भूमि-भोक्ता, राजा।
क्ष्माभृत् (सं० पु०) राजा, नृप, पर्वत, पहाड़।

ख

ख यह कवर्ग का द्वितीय अक्षर है, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है।
ख (सं० पु०) गगन मण्डल, आकाश, शून्य, स्वर्ग, ब्रह्म, शब्द, विन्दु, कर्म, सुख, इन्द्रिय, छिद्र, निर्गम, गर्त।
खंख (वि०) खाली, छूछा, उजाड़, निर्जन।
खँखार (सं० पु०) कफ़, थूक।
खँखारना (क्रि० अ०) थूकना, कफ़ फेंकना।
खंग (सं० पु०) तलवार, असी, खड्ग, गैंडा।
खंगड़ (वि०) उद्धत, उजड्ड, उद्दण्ड, (सं० पु०) अंट संट, अंगड़ खंगड़।
खंगना (क्रि० स०) घटना, कम होना।
खंगर (सं० पु०) झावां, लोह कीट, लोहे का चून।
खंगार (सं० पु०) थूक, खँखार।
खंगालना (क्रि० स०) धोना, साफ़ करना, ख़ाली कर देना, उड़ा ले जाना।
खंगी (सं० स्त्री०) कमी, घटी, चुकना।
खंगैल (वि०) लंबे दाँत वाला, दँतैला, बड़े बड़े दाँत [वाला।
खंघारना (क्रि० स०) देखो "खंगालना"।
खंचना (क्रि० अ०) चिह्न पड़ना, निशान होना।
खंचिया (सं० स्त्री०) टोकरी, झौवा।
खंजड़ी (सं० स्त्री०) खंजरी, एक छोटी डफली।
ख़ंजर (फ़ा० सं० पु०) कटार, दाव।
खंजरी (सं० स्त्री०) एक छोटी डफली, खंजड़ी।
खंडनी (सं० स्त्री०) कर, मालगुज़ारी।
खंडपूरी (सं० स्त्री०) खाँड और मेवे आदि भरी पूरी।
खंडर (सं० पु०) खँड़हर, टूटा फूटा मकान।
खंडरा (सं० पु०) खड़ेरा बेसन की एक प्रकार की [तरकारी।
खंडरीच (सं० पु०) देखो "खञ्जन"।
खंडवानी (सं० स्त्री०) शर्बत।
खंडसार (सं० स्त्री०) शक्कर का कारख़ाना।
खंडहर (सं० पु०) देखो "खंडर"।
खंडिया (सं० पु०) ईख की गँडेरियाँ या छोटे छोटे टुकड़े बनाने वाला, (सं० स्त्री०) टुकड़ा। [लगाने को किरत।
खंडी (सं० स्त्री०) गाँव के समीप में वृक्षों का समूह,
खंता (सं० पु०) ज़मीन खोदने का औज़ार।
खंती (सं० स्त्री०) छोटा खंता, खनित्र।
खंदक (अ० सं० पु०) गड्ढा।
खंधियाना (क्रि० स०) ख़ाली करना।
खंभ (सं० पु०) खंभा, स्तंभ।
खंभा (सं० पु०) स्तंभ, खंभ।
खँभार (सं० पु०) डर, भय, चिन्ता, शोक, घबराहट।
खंभिया (सं० स्त्री०) थूनी, बाँस या लकड़ी का छोटा पतला खंभा।
खई (सं० स्त्री०) ज़ंग, मुर्चा, मैल, युद्ध, लड़ाई।
खखार (सं० पु०) खंखार, थूक, कफ़।
खखारना (क्रि० अ०) खँखारना, थूकना।
खखोरना (क्रि० स०) ढूँढना, खोजना, छान-बीन करना।
खग (सं० पु०) आकाशचर, चिड़िया, पक्षी, वायु, ग्रह, तारा, बादल, देवता, चन्द्र, सूर्य, गंधर्व, तीर।
खगकेतु (सं० पु०) गरुड़, गरुड़ध्वज।
खगना (क्रि० स०) गड़ना, चुभना, धँसना, अड़ जाना, उभड़ आना, लिपटना, अनुरक्त होना।
खगनाथ, खगनायक (सं० पु०) चन्द्रमा, सूर्य, गरुड़।
खगनाह (सं० पु०) गरुड़, पक्षिराज।
खगपति (सं० पु०) सूर्य, चन्द्रमा, गरुड़।
खगमाल (सं० स्त्री०) पक्षी-समूह।
खगहा (सं० पु०) बाज़, गैंडा, व्याध।
खगेन्द्र (सं० पु०) गरुड़।
खगेश (सं० पु०) गरुड़।
खगोल (सं० पु०) नभो मण्डल, आकाश-मण्डल।
खग्ग (सं० स्त्री०) खड्ग, तलवार, शूरवीर।
खङ्गना (क्रि०) कम होना, घटना, (सं० पु०) न्यूनता, [अल्पता।
खङ्गर (सं० पु०) झामा, लोहे का मैल, लोह चून।
खङ्गार, खकार (सं० पु०) थूक, कफ़।
खङ्गालना, खगारना (क्रि०) धोना, बर्तन साफ़ करना, अचाँसना।

खङ्गैल (वि०) दँतैला, बड़े बड़े दाँत वाला।
खग्रास (सं० पु०) चन्द्र या सूर्य ग्रहण जिसमें चन्द्र या सूर्य बिलकुल छिप जायँ। [होना, फँसना।
खचना (क्रि० स०) जड़ा जाना, अङ्कित होना, चित्रित
खचर (सं० पु०) नभचर, सूर्य, पक्षी, बाण।
खचरा (वि०) वर्ण संकर, अधम, नीच।
खचा (क्रि०) खचित, खींचा हुआ।
खचाई (क्रि०) बनवाना, खिचवाना।
खचाखच (क्रि० वि०) ठसाठस, ठेलमठेल।
खचाना (क्रि० स०) अङ्कित करना, घसीट कर लिखना।
खचित (वि०) खींचा हुआ, चित्रित, लिखित।
खचिया (सं० स्त्री०) टोकरी, झौआ, खँचिया।
खची (सं० स्त्री०) निर्मित।
खचीना (सं०स्त्री०) लकीर, रेखा।
खजरा (सं०पु०) मिश्रित, मिला हुआ, बड़ेरी। [पशु विशेष।
खच्चर (सं० पु०) घोड़े और गदही के संयोग से उत्पन्न
खजला (सं० पु०) खाजा।
ख़ज़ानची (फ़ा० सं० पु०) कोषाध्यक्ष।
ख़जाना (अ० सं० पु०) कोष, धनागार।
खजुरहट (सं० स्त्री०) एक प्रकार का खजूर जो नैपाल की तराई में होता है। [डोरा।
खजुरा (सं० पु०) स्त्रियों की चोटी बाँधने का बटा हुआ
खजुराही (सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ खजूर के पेड़ बहुत से हों।
खजुलाना (क्रि० स०) ककुलाना, खुजलाना। [खाजा।
खजुली (सं० स्त्री०) खाज, खुजली, ककुलाहट, छोटा
खजूर (सं० पु०) छुहारा विशेष।
खजूरा (सं० पु०) गोजर, कनगोजर।
खजूरिया (सं० पु०) खजूर।
खञ्ज (सं० पु०) लूला, लंगड़ा, पंगुल।
खञ्जन (सं० पु०) पक्षी विशेष, खंडैच, खंडिरिच।
खञ्जर (सं० पु०) कटारी, अस्त्र विशेष, दाव।
खञ्जरी (सं० पु०) वाद्य विशेष, खञ्जड़ी।
खञ्जरीट (सं० पु०) देखो "खञ्जरीर"।
खञ्जरीर (सं० पु०) खञ्जन, खडैच।
खञ्जा (सं० स्त्री०) वृत्त विशेष, जिसके सम पादों में २८ लघु और अन्त में एक गुरु, और विषम में ३० लघु और अन्त में एक गुरु होता है।

खट (सं० स्त्री०) खाट, चारपाई, खट खट शब्द।
खटक (सं० पु०) शङ्का, सन्देह, खटका, अन्देशा।
खटकना (क्रि० अ०) खटखटाहट होना, डरना, खटका होना, सन्देह होना, खड़खड़ाना, बुरा लगना।
खटका (सं० पु०) सन्देह, भय, अन्देशा, डर, चिन्ता।
खटकाना (क्रि० स०) खटखटाना, याद दिलाना, आहट देना, ठुकराना।
खटकीरा (सं० पु०) खटमल, उड़िस।
खटखट (सं० स्त्री०) झगड़ा, झंझट, टंटा बखेड़ा, खट खट शब्द। [खट शब्द करना।
खटखटाना (क्रि० स०) खटकाना, ठकठकाना, खट-
खटछप्पर (सं० पु०) शय्या, खाट का एक भेद।
खटना (क्रि०) ठहरना, टिकाना, काम में लगे रहना।
खटाही (क्रि०) स्थिर रहना।
खटपट (सं० स्त्री०) अनबन, झगड़ा, टंटा, बखेड़ा।
खटपटिया (वि०) झगड़ालू, टंटा बखेड़ा करने वाला।
खटपटी (सं० स्त्री०) काठ का बना ऊपर फीता लगा खड़ाऊँ।
खटपाटी लेना (सं० पु०) हठ दिखाने को स्त्रियों का धन्धा या खाना पीना आदि छोड़ना।
खटपुना (सं० पु०) खाट बुनने वाला, खटबुनवा।
खटमल (सं० पु०) खटकीरा, उड़िस।
खटमिठा (वि०) खट्टा और मीठा स्वाद वाला।
खटराग (सं० पु०) टंटा बखेड़ा, झगड़ा लड़ाई, अनमेल बैर, विरोध।
खटरिया (सं० स्त्री०) कीड़ा विशेष।
खटला (सं० पु०) बाली पहनने के लिए स्त्रियों के कान का छेद।
खटवा (सं० स्त्री०) पलंग, शय्या, चारपाई।
खटवाट (सं० पु०) खाट की पाटी।
खटवार (सं० स्त्री०) धूर, कूड़ा।
खटाई (सं० स्त्री०) अम्लता, तुरशी, खट्टा।
खटाका (सं० पु०) धड़ाका, "खट" का शब्द।
खटाखट (क्रि० वि०) चट पट, शीघ्र, (सं० पु०) खट-खट ध्वनि। [निभाना।
खटाना (क्रि० अ०) खट्टा होना, निबाह होना,
खटापटी (सं० स्त्री०) देखो "खटपट"।
खटाव (सं० पु०) खूंटा जिसमें नाव बांधी जाती है।

खटास (सं० स्त्री०) खट्टा, खटाई, (सं० पु०) एक जन्तु विशेष, मुश्क बिलाव।
खटाहिं (क्रि०) ठहरना, टिकना।
खटिक (सं० पु०) एक नीच जाति जिसका काम मेवा आदि बेचना है, ये हिन्दू हैं।
खटिका (सं० स्त्री०) लड़कों के लिखने की खड़िया मिट्टी, सेलखड़ी।
खटिया (सं० स्त्री०) खाट, चारपाई।
खटोलना (सं० पु०) छोटी चारपाई।
खटोला (सं० पु०) खाट, चारपाई।
खट्ट (सं० स्त्री०) खाट, चारपाई।
खट्टा (वि०) अम्ल, तुर्श, खटाई।
खट्टामीठा (सं० पु०) खटमीठा।
खट्टिक (सं० पु०) खटीक, बहेलिया।
खट्टू (सं० पु०) मजूर, मोटिया, बनिहार।
खट्वा (सं० पु०) चारपाई, खाट।
खड़ंजा (सं० स्त्री०) ईंटों की खड़ी जोड़ाई।
खड़ (सं० पु०) पयाल, पुआरा, घास।
खड़क (सं० पु०) गोशाला (स्त्री०) खटक।
खड़कना (क्रि० अ०) झनझनाना, खड़ खड़ ध्वनि होना।
खड़का (सं० पु०) देखो "खटका"।
खड़खड़ (सं० पु०) खट खट शब्द।
खड़खड़ाना (क्रि० अ०) खट खट शब्द होना, ठकठकाना।
खड़खड़ाहट (सं० स्त्री०) खड़ खड़ ध्वनि।
खड़खड़िया (सं० स्त्री०) डोली, पालकी, पीनस।
खड़बड़ (सं० स्त्री०) खट खट, खड़ खड़।
खड़बड़ाना (क्रि० अ०) तितर बितर होना, हड़बड़ाना, घबराना।
खड़बड़ाहट (सं० स्त्री०) खड़खड़ शब्द होना, खड़खड़ाने की आहट।
खड़बड़ी (सं० स्त्री०) खलबली, हड़बड़ी, घबराहट।
खड़बीड़ा (वि०) ऊँचा नीचा, ऊभड़ खाभड़।
खड़बीहड़ (वि०) ऊभड़ खाभड़, खड़बीड़ा।
खड़मंडल (सं० पु०) गड़बड़, तितर बितर।
खड़लीच (सं० पु०) खञ्जन, पक्षी विशेष।
खड़सान (सं० पु०) खरसान, शान धराने का पत्थर, औज़ार तेज़ करने का पत्थर।
खड़ा (सं०पु०) दण्डायमान, सीधा, ऊपर को उठा हुआ।
खड़ाऊँ (सं० पु०) पादुका।
खड़ाका (सं० पु०) खटका।
खड़िया (सं० स्त्री०) दुधिया मिट्टी।
खड़ी (सं० स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
खडुश्रा (सं० पु०) बाला, कड़ा।
खड़ेखड़े (क्रि० वि०) शीघ्र तत्क्षण, तत्काल, तुरन्त।
खड़ैचड़ (सं० पु०) खञ्जन।
खड्ग (सं० पु०) तलवार, असि, गैंडा।
खड्ड (सं० पु०) गड्ढा, गड्ढा।
खड्ढा (सं० पु०) गढ़ा, गड्ढा, गड्ढा।
खण्ड (सं० पु०) टुकड़ा, भाग, हिस्सा।
खण्डखण्ड (सं० पु०) टुकड़ा टुकड़ा।
खण्डताल (सं० पु०) संगीत का ताल विशेष।
खण्डन (सं० पु०) निराकरण, तोड़ना, अशुद्ध ठहराना, छिन्न-भिन्न करना।
खण्डना (क्रि० स०) खण्डित करना, अप्रमाणित करना, अशुद्ध साबित करना।
खण्डनार्थ (सं० पु०) खण्डन करने के लिए।
खण्डनीय (सं० पु०) खण्डन करने योग्य।
खण्डपरशु (सं० पु०) शिव, महादेव।
खण्डप्रलय (सं० पु०) ब्रह्मा के एक दिन बीतने पर होने वाला प्रलय।
खण्डर (सं० पु०) खण्डहर, उजाड़, बीरान।
खण्डरना (क्रि० स०) टुकड़े टुकड़े करना, खण्ड खण्ड करना, काटना।
खण्डशः (क्रि० वि०) टुकड़ा टुकड़ा।
खण्डसर (सं० पु०) खाण्ड का कारख़ाना, शक्कर का कारख़ाना।
खण्डित (वि०) खण्ड किया हुआ, अप्रमाणित, काटा हुआ, अपूर्ण, टूटा हुआ, भग्न।
मुहा०—खण्डित करना = बात काटना, खंडन करना।
खण्डिता (सं० स्त्री०) नायिका विशेष, जिसका नायक रात्रि को अन्यत्र सम्भोग करे, वह नायिका जो अपने नायक को दूसरे में आसक्त देख दुःख करे।
ख़त (अ० सं० पु०) चिट्ठी, पत्री, लकीर, धारी, हजामत।
ख़तम (अ० वि०) समाप्त, पूर्ण, इति।
ख़तरनाक (वि०) भयानक, ख़ौफ़नाक।
ख़तरा (अ० सं० पु०) डर, भय, शङ्का,
ख़तरानी (सं० स्त्री०) खत्री जाति की स्त्री।

ख़ता (अ० सं० पु०) अपराध, दोष, क़सूर, फ़रेब,धोखा ।
खतान (सं० स्त्री०) लेखा बही, जमा, जमा खर्च ।
खति (सं० स्त्री०) हानि, क्षति ।
खतियाना (क्रि० स०) दैनिक आय-व्यय और क्रय-विक्रय को भिन्न भिन्न मद् में दर्ज करना ।
खतियौनी (सं० स्त्री०) खाता, खतान, वह खाता जिसमें हर एक आदमी का रक़बा और लगान लिखा हो ।
खत्ता (सं० पु०) गढ़ा, अन्न रखने का गढ़ा, खत्ती ।
खत्तिल (सं० पु०) पोस्त, पौधा विशेष ।
खत्ती (सं० स्त्री०) छोटा खत्ता । [विशेष ।
खत्री (सं० पु०) पञ्जाब में रहने वाली एक व्यापारिक जाति
खदखदाना (क्रि० अ०) खदखद् शब्द करना, जो किसी वस्तु के उबाल में होता है ।
खदबदाना (क्रि० अ०) देखो "खदखदाना" ।
खदान (सं० स्त्री०) खान ।
खदिर (सं० पु०) कत्था, खैर ।
खदुका (सं० पु०) क़र्ज़ लेकर व्यापार करने वाला,ऋणी ।
खदेड़ (सं० पु०) अहेर, शिकार, दौड़ ।
खदेड़ना (क्रि० स०) खदेरना, भगाना । [भगाना ।
खदेरना (क्रि० स०) भगाना, खदेड़ना, हटाना, दूर
खद्योत (सं० पु०) जुगनू, सूर्य ।
खन (सं०पु०) खण्ड, भाग, तत्काल, क्षण, लहमा ।
खनक (सं० पु०) चूहा, मूषिक, खोदने वाला, सुवर्णादि उत्पन्न होने का स्थान, भूतत्त्ववेत्ता । [करना ।
खनकना (क्रि० अ०) ठनठन शब्द करना, खनखन शब्द
खनकाना (क्रि० स०) ठनठनाना, खन खन शब्द करना ।
खनखजूरा (सं० पु०) कनगोजर, कनखजूरा ।
खनखनाना (क्रि० स०) ठनठनाना ।
खनन (सं० पु०) विदारण, गढ़ा ।
खनना (क्रि० स०) गोड़ना, खोदना ।
खनवाना (क्रि० स०) गोड़वाना, खोदवाना ।
खनहन (वि०) हलका, पतला, दुबला,कमज़ोर,सुन्दर ।
खना (सं० स्त्री०) प्रसिद्ध ज्योतिः शास्त्र,विदुषी स्त्री, विक्रमादित्य के नव रत्नों में से एक रत्न वराह मिहिर की स्त्री थी ।
खनि (सं० स्त्री०) धातुओं का उत्पत्ति-स्थान, खानि ।
खनिज (वि०) खान से निकला हुआ, खानि का ।
खनित्र (सं० पु०) खंता, खन्ती, कुदाल, फावड़ा आदि ।

खंता (सं० पु०) } खोदने का हथियार ।
खंती (सं० स्त्री०) }
खन्दान (सं० पु०) गढ़ा, गड़हा, गति, आकार ।
खपत्री (सं० स्त्री०) कमाची, कमठी, बांस की तीली ।
खपटा (सं० पु०) खपड़े का टुकड़ा, खपड़ा ।
खपड़ा (सं० पु०) ठिकरा, खपटा, पथुआ, मिट्टी का पका टुकड़ा, जिस से घर छाया जाता है ।[भूँजते हैं ।
खपड़ी (सं०स्त्री०)भड़भूँजों की हँड़िया जिसमें दाना आदि
खपड़ैल (सं० स्त्री०) खपड़े से छाया हुआ घर ।
खपत (सं० स्त्री०) बिक्री, समाई, समावेश, चुकाव ।
खपती (सं० स्त्री०) देखो "खपत" ।
खपना (क्रि० अ०) बिकना, घटना, कम होना, चुकना ।
खपरा (सं० पु०) देखो "खपड़ा" ।
खपरिया (सं० स्त्री०) एक उपधातु, रसक, दर्विका, छोटा छोटा खपड़ा, एक प्रकार का का कीड़ा ।
खपरी (सं० स्त्री०) देखो "खपड़ी" ।
खपरैल (वि०) खपड़ा से छाया हुआ । [तीली ।
खपाच (सं० स्त्री०) चैला, कमाची, कमठी, बांस की
खपाची (सं० स्त्री०) देखो "खपची" ।
खपाना (क्रि० स०) लगाना, समाप्त करना, ख़र्च करना, व्यय करना, बिकवाना, बेंचना ।
खपित (वि०) बिका हुआ ।
खपुआ (वि०) भगोड़ा, डरपोक ।
खपुर (सं० पु०) स्वर्ग , सुपारी का पेड़ ।
खपुष्प (सं० पु०) आकाश पुष्प, मिथ्या ।
खप्पड़ (सं० पु०) खप्पर, भिक्षापात्र, कपाल, खोपड़ी ।
खप्पर (सं० पु०) देखो "खप्पड़" ।
ख़फ़गी (फ़ा० सं० स्त्री०) क्रोध, कोप, अप्रसन्नता ।
ख़फ़ा (अ० वि०) क्रोधित, रुष्ट, अप्रसन्न ।
ख़फ़ीफ़ (अ० वि०) थोड़ा, अल्प, तुच्छ, क्षुद्र ।
ख़फ़ीफ़ा (वि०) छोटा ।
ख़फ़ीफ़ाजज (सं० पु०) उस अदालत का जज जिस में न्याय संक्षेप रीति से और शीघ्र किया जाता है ।
ख़बर (सं० स्त्री०) संवाद, हाल, समाचार, वृत्तान्त ।
ख़बरगीरी (फ़ा० सं० स्त्री०) देख भाल-चौकसी ।
ख़बरदार (फ़ा० वि०) चैतन्य, सावधान, सजग ।
ख़बरदारी (फ़ा० सं० स्त्री०) चैतन्यता, सावधानी, होशियारी ।

ख़बसा (सं० पु०) कीचड़, चहला।
ख़ब्त (अ० सं० पु०) सनक, पागलपन।
ख़ब्ती (वि०) सनकी, पागल।
खब्बा (वि०) बाएँ हाथ से काम करने वाला। [ठोकना।
खम (सं० पु०) ताल, भुजा, खम्भ, खम ठोकना, ताल
खमरुआ (वि०) व्यभिचारिणी का लड़का, छिनाल-पुत्र।
खमस (सं० पु०) उमस, ऊष्म। [भय, अन्देशा।
खभार (सं० पु०) मोह, क्षोभ, हलचल, घबराहट, डर,
खभारु (सं० पु०) गुड़गुड़ाहट, पेट की जलन।
खमकना (क्रि० अ०) खम खम शब्द होना।
ख़मीर (अ० सं० पु०) आटे का सड़ाना। [हुआ।
ख़मीरा (अ० वि०) ख़मीर मिला हुआ, ख़मीर से बना
खमीलन (सं० पु०) सुस्ती, थकावट, भ्रान्ति, क्लान्ति।
खम्बा (सं० पु०) थम्भा, स्तम्भ, थूनी।
खम्भा (सं० पु०) खम्बा, थम्भा, स्तम्भ।
खम्माच (सं० स्त्री०) रागिनी विशेष जो रात के दूसरे पहर की घड़ी में गायी जाती है।
ख़यानत (अ० सं० स्त्री०) थाती न लौटाना, धरोहर वापस न देना, बेईमानी, चोरी।
ख़याल (सं० पु०) ध्यान, याद, स्मरण।
खर (सं० पु०) कौआ, गदहा, तिनका, घास, एक राक्षस, वह रावण का भाई था जो सुमाली नामक राक्षस की कन्या के गर्भ से विश्रवा मुनि से उत्पन्न हुआ था, पंचवटी में रामचन्द्र जी के द्वारा इसका वध हुआ था, (वि०) तीक्ष्ण, तेज़, तीखा।
खरक (सं० पु०) गौशाला, लकड़ियों का बना हुआ घेरा जिसमें गायें रक्खी जाती हैं, टट्टर।
खरकना (क्रि० अ०) सरकना, गिरना, खरखराना, चल देना।
खरका (सं० पु०) कड़ा तिनका जिससे दाँत खोदा जाता है या पत्तल दोना आदि बनाया जाता है।
खरखर (वि०) दरदर, शीघ्र।
खरखरा (वि०) खुरखुरा, रूखड़, असमतल।
ख़रख़शा (फ़ा० सं० पु०) झगड़ा, लड़ाई, टंटा, बखेड़ा।
ख़रगोश (फ़ा० सं० पु०) खरहा।
खरच (सं० पु०) खर्च, व्यय, खपत। [बरतना, लगाना।
खरचना (क्रि० स०) व्यय करना, खर्चना, खपाना,
खरचा (सं० पु०) खर्च, व्यय, खरच, खपत।
खरची (सं० स्त्री०) व्यभिचार करने का पुरस्कार।
खरञ्जा (सं० पु०) पटाव, पक्की सड़क।
खरछुरा (वि०) खड़खड़ दरदर।
खरतल (वि०) खरा, स्पष्टवादी।
खरदूषण (सं० पु०) खर और दूषण नामक राक्षस।
खरपत्र (वि०) सुगन्धित पौधा, भरुवा।
खरपा (सं० पु०) स्त्रियों के पहिनने का जूता, जूती खड़ाऊँ, चौबगला।
खरब (सं० पु०) संख्या विशेष, सौ अरब का एक खर्ब होता है।
खरबर (सं० स्त्री०) खड़खड़ ध्वनि।
खरबूज़ा (सं० पु०) एक प्रकार का फल। [उथल पुथल।
खरभर (सं० पु०) हौरा, गुलगपाड़ा, शोर, खलबली,
खरमञ्जरी (सं० स्त्री०) चिचड़ा, अपामार्ग।
खरमिटाव (सं० पु०) जलपान।
खरयष्टिका (सं० स्त्री०) खिरहरी, औषधि विशेष।
खरल (सं० पु०) खल, औषधि कूटने का पत्थर का एक पात्र।
खरवांस (सं० पु०) चैत और पूस मास जिसमें सूर्य धन और मीन राशि पर रहता है।
खरहरा (सं० पु०) छोटे छोटे कंकड़ ढेले आदि बटोरने के लिये एक बड़ा झाड़ू, भांग, घोड़े का बदन साफ करने के लिये एक कंघी।
खरहरी (सं० स्त्री०) मेवा विशेष।
खरहा (सं० पु०) शशक, ख़रगोश।
खरहारना (क्रि० स०) झाड़ना, बुहारना, बटोरना।
खरहिन्द (सं० स्त्री०) जली घास, दुर्गन्ध।
खरही (सं० स्त्री०) ढेर, राशि, गल्ला। [ख़ालिस, शुद्ध।
खरा (वि०) तेज़, तीक्ष्ण, चोखा, अच्छा, बढ़िया, उत्तम,
खराई (सं० स्त्री०) सत्यता, सच्चाई, प्रातः जलपान न मिलने से या देर से मिलने से जुकाम आदि स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ी का होना।
खराऊ (सं० स्त्री०) पादुका, खड़ाऊँ।
खराका (सं० पु०) धड़ाका, खरखराहट।
खराद (सं० पु०) एक औज़ार विशेष, जिस पर चढ़ा कर लकड़ी बर्तन आदि चिकने बनाये जाते हैं।
खरादना (क्रि० स०) खराद पर चढ़ा कर सुडौल बनाना, खराद पर चढ़ा कर साफ़ सुथरा बनाना।
खरापन (सं० पु०) सत्यता, सचाई।

ख़राब (अ० वि०) नीच, हीन, तुच्छ, निकृष्ट, बुरा, आपद्ग्रस्त।

ख़राबी (फ़ा० सं० स्त्री०) दुरवस्था, दुर्दशा, दोष, अवगुण। [मात्रा का एक छन्द विशेष।

खरारि (सं० पु०) राम, विष्णु, कृष्ण, बलराम, ३२

ख़राश (फ़ा० सं० स्त्री०) छिलन, खरोंच, हलका घाव।

खरिक (सं० पु०) गोशाला, सड़क, ऊख जो ख़रीफ़ की फ़सल के बाद बोई जाय।

खरिहान (सं० पु०) वह स्थान जहाँ पर खेत से अन्न काट कर रक्खा जाता है और वहीं दवांई ओसाई की जाती है, खलिहान।

खरी (सं० स्त्री०) भली, चोखी, खड़ी, खड़िया, खली।

ख़रीता (अ० सं० पु०) थैली, खीसा।

ख़रीद (फ़ा० सं० स्त्री०) खरीदा हुआ, क्रय, कीनना।

ख़रीदना (क्रि० स०) क्रय करना, मोल लेना।

खरीददार (सं० पु०) गाहक, मोल लेने वाला, क्रय करने वाला, इच्छुक।

ख़रीददारी (फ़ा० सं० स्त्री०) क्रय, ख़रीद।

ख़रीफ़ (अ० सं० स्त्री०) आषाढ़ से अगहन भर में काटी जाने वाली फ़सल।

खरे (सं० पु०) रुपये में एक आने की दलाली, अच्छे, भले, खड़े।

खरो (वि०) चोखा, खरा, उत्तम, तीखा।

खरोंच (सं० पु०) खसोट, बकोट, नख आदि का चिह्न।

खरोंचना (क्रि० अ०) बकोटना, खुरचना, छीलना।

खरोट (सं० पु०) देखो "खरोंच"।

खरोटना (क्रि० अ०) देखो "खरोचना"।

खरौंट (सं० स्त्री०) खरोंच।

ख़र्च (सं० पु०) देखो "खरच"।

खर्चना (क्रि० अ०) देखो "खरचना"।

खर्चीला (वि०) अधिक ख़र्च करने वाला, अधिक व्यय करने वाला।

खर्ज (सं० पु०) राग उच्चारण का विशेष स्थान।

खर्जूर (सं० पु०) खजूर, छुहारा, बिच्छू, चांदी, हरताल।

खर्जूरा (सं० स्त्री०) मूसली, औषधि विशेष।

खर्पर (सं० पु०) खप्पर, सिर, कपाल।

खर्ब (सं० पु०) देखो "खरब" (वि०) छोटा, अपूर्ण अंग वाला, बौना, वामन।

खर्बट (सं० पु०) पर्वत पर बसा हुआ नगर, चार सौ गावों के मध्य में बसा हुआ गांव।

खर्बूज़ा (सं० पु०) देखो खरबूज़ा। [खरा।

खर्रा (सं० पु०) मसविदा, चिट्ठा, खसरा, टट्टर, खर

खर्राट (सं० पु०) वृद्ध, अनुभवी।

खर्राटा (सं० पु०) गाढ़ निद्रा, सोते में नाक की घुर्राहट।

खल (वि०) दुष्ट, दुर्जन, नीच, अधम, क्रूर, निर्लज्ज, बेहया, चुगलखोर, मक्कार, फ़रेबी, (सं० पु०) खरल, स्थान, खलिहान, तलछट, सूर्य, धतूरा।

खलई (सं० स्त्री०) खलता।

ख़लक़ (अ० स० पु०) सृष्टि, जीवधारी, जगत, संसार।

ख़लक़त (अ० सं० स्त्री०) सृष्टि, समूह, भीड़।

खलकथा (सं० स्त्री०) धूर्तों की कथा, चापलूसी की बात।

खलखल (सं० पु०) नदी, वेग की ध्वनि।

खलता (सं० स्त्री०) दुष्टता, नीचता, अधमता।

खलड़ा (सं० पु०) उपवन, रमणीय बाग, मनोहर वन।

खलड़ा (सं० पु०) चमड़ा, खाल, ढाल।

खलना (क्रि० अ०) अखरना, बुरा लगना, नागवार गुज़रना, अप्रिय लगना। [उत्सुकता।

खलबल (सं० पु०) हलचल, कुलकुलाहट, कुतूहल,

खलबलाना (क्रि० अ०) कुलबुलाना, खौलना, खड़बड़ाना, उबलना, उकूलना। [भय, डर।

खलबली (सं० स्त्री०) व्याकुलता, घबराहट, हलचल,

ख़लल (अ० सं० पु०) बाधा, टोक, रुकावट।

खला (सं० स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, दुष्टा स्त्री।

खलान (वि०) खल का बहुवचन। [पचकाना।

खलाना (क्रि० स०) ख़ाली करना, खोदना, गढ़ा बनाना,

खलार (सं० स्त्री०) नीची भूमि, नीचान। [नीचान।

खलारा (वि०) नीचा, गहरा, (सं० स्त्री०) नीची ज़मीन,

खलारि (सं० पु०) विष्णु, भला, सज्जन।

खलारु (सं० पु०) नीचान, पस्त, खलार।

ख़लास (अ० वि०) मुक्त, समाप्त, ख़तम।

ख़लासी (सं० स्त्री०) छुटकारा, मुक्ति, (सं० पु०) जहाज पर कुली का काम करने वाला नौकर।

खलियान (सं० पु०) देखो "खरिहान"।

खलियाना (क्रि० स०) खाली करना, छीलना, उधेड़ना, खाल उतारना।

खलिहान (सं० पु०) देखो "खरिहान"।

खली (सं० स्त्री०) सरसों तिल आदि का तेल निकाल लेने पर बची हुई सीठी, (वि०) खलने वाला, नीच, अधम।

खलीता (फ़ा० सं० स्त्री०) थैला, जेब, चिट्ठी, पत्री।

खलीन (सं० पु०) कविका, लगाम।

ख़लीफ़ा (अ० सं० पु०) अध्यक्ष, बूढ़ा दरजी, भाई।

खलु (क्रि० वि०) निश्चल, निस्सन्देह, अवश्य, विनती, प्रार्थना, नियम, निषेध, प्रश्न, शब्दालङ्कार।

खलेल (सं० पु०) फुलेल, फुलेल का गाज।

खलै (क्रि०) अखरना।

खल्लिव (वि०) देखो "खल्वाट"।

खल्वाट (सं० पु०) गंजा, चँदुला।

खवा (सं० पु०) कंधा, काँध।

खवाई (सं० स्त्री०) खिलाना-पिलाना, भोज-भात।

खवाना (क्रि० स०) खिलाना, भोजन कराना।

ख़वास (अ०सं०पु०) राजा रईसों का वह नौकर जो पान लगाता है तम्बाकू भरता है और कपड़ा पहिनाता है।

खवासी (सं० स्त्री०) नौकरी, चाकरी।

खवैया (वि०) खानेवाला।

खश (सं०पु०) एक सुगन्धित तृण विशेष, एक प्राचीन प्रधान देश, यह भारत वर्ष के उत्तर की ओर है। यहां के बाशिन्दे भी खश नाम से प्रसिद्ध हैं।

खस (सं० पु०) देखो "खश"। [देना।

खसकंत (सं० स्त्री०) चंपत होना, भाग, जाना, चल

खसकना (क्रि० अ०) सरकना, स्थानान्तरित होना।

खसकवाना (क्रि० स०) एक स्थान से दूसरे स्थान को हटवाना, सरकवाना।

खसकाना (क्रि० स०) हटाना, बढ़ाना, सरकाना।

खसखस (सं० पु०) पोस्ते का दाना, खस, उशीर।

खसखसा (वि०) गजा सूखना, भुरभुरा।

खसखास (सं० पु०) खस, उशीर।

खसटा (सं० पु०) खुली, खुरी। [खसकना।

खसना (क्रि० अ०) भँसना, गड़ना, गिर पड़ना,

ख़सम (अ० सं० पु०) पति, भर्ता, स्वामी।

खसरा (सं० पु०) बही, खर्रा, खुजली। [गिराना।

खसाना (क्रि० स०) गिराना, नीचे लुढ़काना, नीचे

खसिया (वि०) बधिया, नपुंसक बकरा।

खसियाना (क्रि० स०) बधियाना, अण्डकोश निकालना।

खसी (सं०पु०) बकरा। [पूर्वक छीनना, बलात्कार से लेना।

खसोटना (क्रि० स०) उजाड़ना, खरोचना, नोचना, बल

खसोटा (सं० पु०) कुश्ती लड़ने का एक पेंच।

खस्फटिक (सं० पु०) कांच, सूर्यमणि, आकाश की मणि।

खस्सी (अ० सं० पु०) बकरा।

खहर (सं० पु०) वह राशि जिसका हर शून्य हो।

खांग (सं० पु०) कांटा, नोक।

खांगड़ (वि०) कँटीला, खांग वाला, शस्त्रधारी।

खांगना (क्रि० अ०) लंगड़ाना, घटना, कम होना।

खांच (सं० पु०) संधि, जोड़। [लिखना।

खांचना (क्रि० स०) खींचना, अङ्कित करना, घसीट

खांचा (सं० पु०) टोकरा, झौवा, बड़ा पिंजड़ा।

खांड़ (सं० पु०) शक्कर, खंड।

खांड़ना (क्रि० स०) कूटना, छाँटना।

खांड़ा (सं० पु०) खड्ग, तेगा, भाग, टुकड़ा।

खांसना (क्रि० अ०) खंखारना, खोंखना।

खांसी (सं० स्त्री०) खोंखी, कास रोग।

खाइ (क्रि० स०) खाकर।

खाइय (क्रि० स्त्री०) खाइये।

खाई (सं० स्त्री०) क़िले या नगर के चारों ओर की नहर, जो उसकी रक्षा के लिये खोदी जाती है, गढ़ा, नाला।

खाऊ (सं० पु०) पेटू, अधिक खाने वाला व्यक्ति।

ख़ाक (फ़ा० सं० स्त्री०) राख, धूल, मिट्टी, गर्द।

ख़ाकसीर (सं० स्त्री०) औषधि विशेष।

ख़ाका (सं० पु०) ढाँचा, डौल।

ख़ाकी (फ़ा० वि०) भूरा, (सं० पु०) मुसलमान फ़क़ीरों का एक सम्प्रदाय विशेष।

खाग (सं० पु०) गैंडे का सींग।

खागा (सं० पु०) खंगा, तलवार, खाँड़ा।

खाज (सं० स्त्री०) खुजली, खुजलाहट।

खाजा (सं० पु०) एक प्रकार की मिठाई।

खाञा (सं० पु०) काठ का बड़ा पात्र।

खाट (सं० स्त्री०) चारपाई, खटिया, पलंग।

खाड़ (सं० पु०) गढ़ा, खात, गर्त। [जलाया था।

खाण्डव (सं० पु०) एक प्राचीन वन, इसको अर्जुन ने

खाण्डवप्रस्थ (सं० पु०) एक गांव का नाम, यह गांव धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को दिया था, पाण्डवों ने यहीं पर इन्द्रप्रस्थ नामक नगर बसाया।

खात (सं० पु०) गढ़ा, कुआं, तालाब, खाद, गोबर।

खातक (सं० पु०) ऋणि, क़र्ज़दार, ताल, तलैया, परिखा, खाईं।

ख़ातमा (फ़ा० सं० पु०) अन्त, मृत्यु।

खाता (सं० पु०) लेन-देन, हिसाब-किताब, बखार,गढ़ा।

ख़ातिर (अ० सं० स्त्री०) सम्मान, आदर।

ख़ातिरजमा (अ० सं० स्त्री०) विश्वास, संतोष, ढाढ़स।

ख़ातिरदारी (फ़ा० सं० स्त्री०) आदर, सम्मान।

ख़ातिरी (सं० स्त्री०) आदर, सम्मान, ढाढ़स, सन्तोष।

खानऊ (क्रि० स०) खा लेता, खा जाता।

खाती (सं० स्त्री०) खतिया, बढ़ई, तलैया।

खाद (सं० स्त्री०) गोबर, कतवार पाँस।

खादक (सं० पु०) ऋणि, खवैया, खाने वाला।

खादन (सं० पु०) भोजन, खाना।

खादि (सं० पु०) खाद्य, कवच, हस्तत्राण।

ख़ादिम (अ० सं० पु०) नौकर, चाकर, दास, सेवक।

खादुक (वि०) हिंसक, हिंसालु। [खाने योग्य।

खाद्य (सं० पु०) भक्ष्य, भोज्य, भोजन करने योग्य,

खाधु (सं० पु०) भोजन, खाद्य।

खान (सं पु०) भोजन, भोजन की सामग्री सं० स्त्री०) खानि, उद्भव-स्थान, आकर।

खानखर (सं० पु०) गढ़ा, सुरङ्ग खोह।

ख़ानख़ाना (फ़ा० स० पु०) मुगल सरदारों की उपाधि, सरदारों का सरदार।

ख़ानख़ाह (फ़ा० क्रि० वि०) अवश्य, ज़रूर।

ख़ानगी (फ़ा० वि०) घरेलू, निज का, (सं० स्त्री०) पतुरिया, कसबी, वेश्या।

ख़ानदान (फ़ा० सं० पु०) कुल,वंश। [पैत्रिक।

ख़ानदानी (फ़ा० वि०) कुलीन, सत्कुलोद्भव, पुश्तैनी

खानदेश (सं० पु०) सतपुड़ा की पर्वतमाला के दक्षिण का एक प्रदेश, यह बम्बई प्रान्त के अन्तर्गत है।

खानपान (सं० पु०) अन्न जल, आबदाना, खाने पीने का व्यवहार।

ख़ानसामा (फ़ा० सं० पु०) अंग्रेज़ या मुसलमानों का वह नौकर जो भण्डारे का काम करता है।

खाना (सं० पु०) भोजन, आहार, (क्रि०स०) भोजन करना, भक्षण करना।

मुहा०—जिसका खाना उससे गुर्राना=उपकार न मानना। खाने के दाँत और दिखाने के और, बाहर कुछ भीतर कुछ, खाना पीना लहू करना=क्रोध वा खेद उत्पन्न करना।

ख़ानातलाशी (फ़ा० सं० स्त्री०) किसी पर चोरी का शुबहा होने पर माल बरामद करने के लिए उसके घर में ढूंढ़ना। [सम्बन्ध।

खाना पीना (सं० पु०) खान पान, खाने पीने का

ख़ानापूरा (सं० स्त्री०) नक़शा भरना।

ख़ानाशुमारी (फ़ा० सं० स्त्री०) मकान गिनने का काम।

खानि (सं० स्त्री०) उत्पत्ति-स्थान, उद्भव-स्थान, खान।

खानिक (वि०) खानि सम्बन्धी, खदान का।

खाना (सं० पु०) खान।

खाप (सं० स्त्री०) म्यान, कोष।

खापट (सं० स्त्री०) करइल मिट्टी, काली और लसदार कड़ी मिट्टी।

खापर (सं० स्त्री०) खापट, ऊभड़ खाभड़ ज़मीन।

खाबड़ (वि०) ऊभड़, नीचा ऊंचा,अंडबंड।

ख़ाम (फ़ा० वि०) कच्चा, अनुभवशून्य।

ख़ामख़ाह (क्रि० वि०) अवश्य, ज़रूर।

खामना (क्रि० स०) गीली मिट्टी आदि से किसी चीज़ का मुंह बन्द करना, चिट्ठी का मुंह बन्द करना।

ख़ामी (फ़ा० सं० स्त्री०) कच्चाई, अधूरापन, अपूर्ण।

ख़ामोश (फ़ा० वि०) मौन, चुप।

ख़ामोशी (फ़ा०सं० स्त्री०) चुप्पी, मौन।

खार (सं० पु०) लोनाक्षार, रेह, कल्लार, सज्जी मिट्टी।

खारक (सं० पु०) छोहारा।

खारका (सं० पु०) छुहारा।

खारय (क्रि० स०) चार निकालें, खाली करें।

खारा (वि०) क्षार, लोना, अरुचिकर, तीखा।

ख़ारिज (अ० वि०) बहिष्कृत, निकला हुआ, जिस मुक़द्दमे की सुनाई न हो।

खारी (सं० पु०) सोलह द्रोण का एक परिमाण विशेष (सं० स्त्री०) एक प्रकार का नमक, कड़ुवा नमक।

खारुवा (सं० पु०) लाल रंग का एक मोटा देशी कपड़ा।

खाल (सं० स्त्री०) चर्म, चमड़ा, त्वचा, धौंकनी नीची जगह, नीचाई। [सरकारी।

खालसा (वि०) जिस पर एक ही का अधिकार हो,

खाला (वि०) नीचा।

ख़ाला (अ० सं० स्त्री०) मौसी ।
ख़ाली (वि०) छूँछा, रिक्त, शून्य ।
खाले (वि०) नीचे ।
खलु (सं० पु०) देह का चर्म, खोदना ।
ख़ाविन्द (फ़ा० सं० पु०) ख़सम, पति, भर्ता ।
ख़ास (अ० वि०) प्रधान, मुख्य आत्मीय, निजी, स्व, प्रिय ।
ख़ासक़लम (अ० सं० पु०) बड़े आदमियों के निजी काम के लेखक या सहायक ।
ख़ासगी (अ० वि०) निजी, स्व, अपना ।
ख़ासबाज़ार (फ़ा० सं० पु०) राजा के महल के पास या सामने वाला बाज़ार, जहां से राजा सौदा लेता है ।
ख़ासा (अ० सं० पु०) राजभोग, राजा का खाना, राजा की निजी सवारी, मोयनदार पूरी । भला, चंगा, अच्छा, सुन्दर, सुडौल, भरपूर, स्वास्थ, निरोग ।
ख़ासियत (अ० सं० स्त्री०) स्वभाव, आदत, गुण ।
ख़ासी (सं० स्त्री०) देखो "खासा" ।
ख़ाहिश (सं० स्त्री०) इच्छा, चाह ।
खिंचना (क्रि० अ०) तनना, इंचना, घसीटना, प्रवृत्त होना ।
खिंचवाना (क्रि० स०) तनवाना, ऐंचवाना, घसिटवाना प्रवृत्त कराना । [ताना ।
खिचाई (सं० स्त्री०) खींचने का काम, खींचने का मेहन-
खिचड़वार (सं० पु०) मकर संक्रान्ति, इस दिन खिचड़ी दान करने का महात्म है ।
खिचड़ी (सं० स्त्री०) दाल और चावल को मिला कर पकाया हुआ चावल, एक साथ मिला हुआ दाल, चावल, दो वस्तुओं का संयोग, मकर संक्रान्ति ।
खिचना (क्रि० अ०) देखो "खिंचना" ।
खिचाय (क्रि० स०) खिंचवाकर, तनवाकर ।
खिचाव (सं० पु०) ऐंचाव, तनाव ।
खिचावट (सं० पु०) ऐंचावट, तनाव ।
खिजड़ी (सं० स्त्री०) योगी का आसन ।
खिज़मत (सं० स्त्री०) सेवा, टहल ।
खिजलाना (क्रि० अ०) चिढ़ाना, झुँझलाना, क्रोधित होना, क्रोधित करना । [करना ।
खिजाना (क्रि० अ०) चिढ़ाना, क्रुद्ध करना, नाराज़

ख़िज़ाब (अ० सं० पु०) केश कल्प, सफ़ेद बालों को रंगने की औषधि ।
खिझ (सं० स्त्री०) कोप, क्रोध ।
खिझना (क्रि० अ०) चिढ़ना, नाराज़ होना, झुँझलाना ।
खिझलाना (क्रि० अ०) खिजना, चिढ़ना ।
खिझाना (क्रि० स०) चिढ़ाना, तंग करना, नाराज़ करना, खिजाना ।
खिड़की (सं० स्त्री०) झरोखा, जंगला, गवाक्ष, दरीचा ।
खिण्डाना (क्रि० स०) बिथराना, बिखेरना ।
ख़िताब (अ० सं० पु०) उपाधि, पदवी ।
ख़िताबी (अ० वि०) पदवी-प्राप्त, ख़िताब पाया हुआ ।
ख़िदमत (फ़ा० सं० स्त्री०) खिजमत, सेवा, टहल ।
ख़िदमतगार (फ़ा० सं० पु०) टहलुआ, सेवक ।
ख़िदमतगारी (फ़ा० सं० स्त्री०)सेवा, टहल ।
खिन (सं० पु०) लहमा, क्षण । [दुखिया, नाराज़ ।
खिन्न (वि०) उदास, चिन्तित, असहाय, दुःखित,
खियानत (सं० स्त्री०) देखो "खयानत" ।
खियाना (क्रि० अ०) घिस जाना । [याद ।
ख़ियाल (सं० पु०) ख़याल, विचार, इरादा, स्मरण,
खिर (सं० स्त्री०) बाने का सूत रखने की ढरकी, नार ।
खिरकी (सं० स्त्री०) खिड़की, जंगला, झरोखा, दरीचा ।
खिरनी (सं० स्त्री०) फल विशेष ।
ख़िराज (अ० सं० पु०) कर, मालगुज़ारी ।
खिरेंटी (सं० स्त्री०) बीजबंद, बरियारा ।
ख़िलअत (अ० सं० स्त्री०) राजा महाराजाओं से दिया हुआ सम्मान-सूचक वस्त्रादि ।
खिल (सं० पु०) धत्री, अर्गल । [खिला कर हँसना ।
खिलखिलाना (क्रि० अ०) ठट्ठा मार कर हँसना, खिल-
खिलजाना (क्रि० स०) देखो "खिलना" ।
खिलना (क्रि० अ०) विकसित होना, प्रमुदित होना, प्रसन्न होना ।
खिलवाड़ (सं०स्त्री०) खेल, तमाशा, क्रीड़ा, मन-बहलाव ।
खिलवाड़ी (सं०पु०) तमाशगीर, खेल करने वाला ।
खिलवाना (क्रि०स०) दूसरे से खाना खिलाना, दूसरे से भोजन करवाना ।
खिलाई (सं० स्त्री०) भोजन-क्रिया, भोजन का दाम ।
खिलाई दाई (सं०स्त्री०) धात्री, धाया । [अपव्ययी ।
खिलाऊ (वि०) खिलाने वाला, भोजन कराने वाला,

खिलाड़ (सं० पु०) खेल करने वाला, जादूगर, चंचल, आवारा।

खिलाड़ी (सं० पु०) देखो "खिलाड़"।

खिलाना (क्रि० स०) भोजन कराना, खेलाना, खेल [कराना।

खिलाफ़ (अ० वि०) विरुद्ध, विपरीत।

खिलैया (वि०) खेलाड़, खिलाड़ी।

खिलौना (सं० पु०) खेलने की चीज़, गुड़िया, पुतली, [मूर्ति, आदि।

खिल्ली (सं० स्त्री०) हँसी, मज़ाक़, दिल्लगी, ठठोली, ठट्ठा, पान का बीड़ा, धान का लावा।

खिल्लू (वि०) खिलाड़।

खिल्लो (सं० स्त्री०) अधिक हँसने वाली स्त्री।

खिसकना (क्रि०) चम्पत होना, भागना। [टलना।

खिसकाना (क्रि० सं०) सरकाना, दूर भगाना, हटाना,

खिसना (क्रि० अ०) देखो "खसना"। [सरकना।

खिसलना (क्रि० अ०) फिसलना, बिछलना, गिरना,

खिसलहा (वि०) फिसलहा, चिकना।

खिसलाहट (सं० स्त्री०) खीस, क्रोध, कोप, खीझना।

खिसाना (क्रि० अ०)कुपित होना, क्रुद्ध होना, उत्साह-भङ्ग होना, हटना, टलना। [कना।

खिसाय रहना (क्रि० अ०) नाराज़ होना, टलना, हिच-

खिसियाना (क्रि० अ०) क्रुद्ध होना, नाराज़ होना, रिस करना, चिड़चिड़ाना।

खिसियानि (सं०स्त्री०) लज्जित होना, लज्जा, लजाई।

खिसियानो (सं० स्त्री०) लज्जा, शर्म, हया।

खिसियाहट (सं० स्त्री०) खीस, क्रोध, रिस, कोप।

खींच (सं० स्त्री०) अनबन, नाराजी।

खींच तान(सं० स्त्री०) चढ़ा उपरी, एक ही वस्तु के लिए दो व्यक्तियों का परस्पर विरुद्ध उद्योग।

खींचना (क्रि० स०) घसीटना, ऐंचना।

खींचाखींची (सं० स्त्री०) खींचतान, चढ़ा उतरी।

खींचातान (सं० स्त्री०) देखो "खींचतान"।

खींचातानी (सं० स्त्री०) खींचा खींची, खींचातान।

खीज (सं० स्त्री०) झुँझलाहट, खीस, क्रोध।

खीजना (क्रि० अ०) कुपित होना, खिसियाना।

खीझ (सं० स्त्री०) खींच, झुंझलाहट, क्रोध।

खीझना (क्रि०अ०) खींजना, कुपित होना,क्रोध करना।

खीन (वि०) दुर्बल, छीन।

खीर (सं० स्त्री०) क्षीर, पायस, दुध में उबाला चावल।

खीरमोहन (सं० पु०) एक प्रकार की बङ्गला मिठाई का नाम जो छेने से बनती है।

खीरा (सं० पु०) फल विशेष।

खीरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का मेवा, पिस्ता।

खील (सं० स्त्री०) धान का लावा,कांटा, कील।

खीलना (क्रि० स०) खील लगाना।

खीला (सं० स्त्री०) कांटा, कील, मेख।

खीला (सं० स्त्री०) पान का बीड़ा। [अप्रसन्नता।

खीस (वि०) नष्ट,बरबाद (सं० स्त्री०) क्रोध, रोष,

खीसना (सं० पु०)रिसाना, खिसियाना।

खीसा (सं० पु०) थैला, थैली खलीता, जेब।

खीह (सं० स्त्री०) सज्जी, रेह। [निकाले।

खुँटकढ़वा (सं० पु०) वह व्यक्ति जो कान की मैल

खुँदलना (क्रि० स०) कुचलना, रौंदना। [अनादृत।

खुआर (वि०) आपद्-ग्रस्त, खराब, अप्रतिष्ठित, बेइज़्ज़त,

खुआरी (सं० स्त्री०) नाश, ख़राबी, बेइज़्ज़ती, अनादर।

खुक्ख (वि०) छूछा, खाली।

खुख (वि०) भिक्षुक, दरिद्र, कंगाल।

खुगीर (फ़ा० सं० पु०) जीन, नमदा, चारजामा।

खुचर (सं० स्त्री०) व्यर्थ अवगुण दिखाने का प्रयत्न, निरर्थक दोष निकालने का काम।

खुचुर (सं० स्त्री०) देखो "खुचर"।

खुजलाना (क्रि० स०) कुलाना, खजुआना, सहलाना।

खुजलाहट (सं० स्त्री०)खुजली, सुरसरी, गुदगुदी।

खुजली (सं० स्त्री०) देखो"खुजलाहट"।

खुजवाना (क्रि० स०) अनुसंधान कराना,ढूंढवाना, पता लगवाना।

खुजाना (क्रि० अ०) देखो "खुजलाना"।

खुझा (सं० पु०) फलादि का निकम्मा रेशेदार भाग में तलछट, चेला।

खुझराहा (वि०) अर्थपिशाच, कंजूस, कृपण।

खुटकाना (क्रि० स०) सन्देह करना, संशय होना, किसी वस्तु के ऊपर का भाग तोड़ना, कुतरना।

खुटका (सं० पु०) खटका, सन्देह, शङ्का।

खुटचाल (सं स्त्री०) दुष्टता, नीचता, बुरी चाल चलन, उपद्रव, निन्दित आचरण।

खुटचाली (वि०) उपद्रवी, दुष्ट, दुराचारी।

खुटाई (सं० स्त्री०) दुष्टता।

खुटाना (क्रि० अ०) खतम होना, समाप्त करना, अन्त होना, बराबर करना, समान करना।
खुटानी (क्रि०) पूरी हुई।
खुटी (सं० स्त्री०) खूटी, काल।
खुट्टी (सं० स्त्री०) मूलधन, पूँजी, एक मिठाई विशेष, विरोध, इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग जब बच्चे किसी से झगड़ते हैं तब करते हैं।
खुडला (सं पु०) पक्षियों के रहने की जगह, मुर्गियों का दर्बा, बेहड़। [पायखाना फिरा जाता है।
खुड्डी (सं० स्त्री०) पायखाने का वह गड्ढा जिसमें
खुराड़ला (सं० पु०) कोटर, खोखर, वृक्ष का छिद्र।
खुत्थ (सं० पु०) वृक्ष के जड़ के ऊपर का भाग।
खुत्थी (सं० स्त्री०) खटी, धन, दौलत, बसनी।
खुद (फ़ा० अव्य०) स्वयं, निज, आप।
खुदकाश्त (फ़ा० सं० स्त्री०) वह ज़मीन जिसको मालिक जाते बोये मगर सीर न हो।
खुदकुशी, (फ़ा० सं० स्त्री०) आत्मघात, आत्महत्या।
खुदग़रज़ (फ़ा० वि०) स्वार्थी, मतलबी।
खुदगरज़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) स्वार्थपरता, स्व इष्ट-सिद्धि।
खुदमुख़्तार (फ़ा० वि०) स्वच्छन्द, स्वतन्त्र।
खुदरा (सं० पु०)छोटा छोटी मामूली चीज़ें,फूटकर,वस्तु।
खुदवाई (सं० स्त्री०) खुदवाने का काम, खोदवाने की मजूरी।
खुदवाना (क्रि० स०) गोड़वाना, फोड़वाना।
ख़ुदा (फ़ा० सं० पु०) ईश्वर।
खुदाई (फ़ा० सं० स्त्री०) ईश्वरत्व, सृष्टि, (सं० स्त्री०) खोदने का काम, खोदने की मजूरी।
खुदावन्द (फ़ा० सं० पु०) अभिमान सूचक शब्द, ईश्वर, मालिक, हुज़ूर, जनाब, श्रीमान्, अन्नदाता।
खुदी (फ़ा० सं० पु०) अभिमान, अहंकार, घमण्ड, (स्त्री०) चावल आदि का टुकड़ा, खुद्दी,कण,कणिका।
खुद्दी (सं० स्त्री०) चावल आदि के छोटे छोटे टुकड़े।
खुनस (सं० स्त्री०) क्रोध, रिस, गुस्सा, कोप।
खुनसाना (क्रि० अ०) रिस करना, क्रोध करना।
खुनसी (वि०) क्रोधी, गुस्सावर।
खुन्दलना (क्रि० स०) पैर से कुचलना, खुरचना।
खुफिया (फ़ा० वि०) छिपा हुआ, गुप्त।
खुद्दे (सं० स्त्री०) अन्तर, व्यवधान।
खुफिया पुलिस (सं०स्त्री०)जासूस, भेदिया, गुप्त पुलीस।
खुबना (क्रि०अ०) बिंधना, पैरना, चुभना, धाक जमाना, प्रभाव डालना।
खुबारु (वि०) नष्ट।
खुभना (क्रि०स०) चुभना, धंसना, बिंधना।
खुभी (सं० स्त्री०) कान में पहनने का एक गहना, लौंग।
खुमारी (सं० स्त्री०) मद, नशा के उतार की दशा।
खुर (सं० पु०) चौपायों के पैर की फटी हुई टाप।
खुरखुर (सं०पु०) घर घर शब्द।
खुरखुरा (वि०) खरखर, असमतल, रूखर।
खुरखुराना (क्रि०अ०) खुरखुर शब्द होना, घरघराना।
खुरखुराहट (सं० स्त्री०) खुर खुर शब्द।
खुरचन (सं० स्त्री०) खखोरन, खखोरी।
खुरचना (क्रि० सं०) खखोरना, खरोचना, छीलना।
खुरण्ड (सं० पु०) पपड़ी, खूंटी।
खुरदाँय (सं० पु०) दँवरी, कटी फ़सल को बैलों से कुचलवाना।
खुरपा (सं० पु०)घास या चमड़ा छीलने का एक औज़ार।
खुरपी (सं०स्त्री०)छोटा खुरपा।
खुरमा (अ० सं० पु०) छोहारा, एक प्रकार की मिठाई।
खुरहर (सं० स्त्री०) खुर का निशान, खुर से बना हुआ मार्ग।
खुराक (फ़ा० सं० पु०) खाना, भोजन।
खुराकी (फ़ा० सं० स्त्री०) नगद पैसा जो भोजन के लिए दिया जाता है। [झगड़ा, टंटा।
खुराफ़ात (अ० सं० स्त्री०) गाली गलौज, उपद्रव,
खुरासान (फ़ा० सं० पु०) फारस देश का एक प्रान्त, यहां की अजवाइन बहुत अच्छी होती है।
खुरासानी (वि०) खुरासान का, खुरासान सम्बन्धी।
खुरिया (सं० स्त्री०) कटोरी, प्याली, घोंटू, घुटने की चकती।
खुरी (सं० स्त्री०) खुर का चिह्न, सुम का निशान।
खुरेरना (क्रि० स०)भगाना, खदेरना, रगेदना।
खुर्दबीन (फ़ा० सं० स्त्री०) सूक्ष्म-दर्शक यन्त्र।
खुर्दाफरोश (फ़ा० सं० पु०) बिसाती, छोटी मोटी खुदरा चीज़ें बेचने वाला व्यक्ति।
खुर्राट (वि०) बूढ़ा,अनुभवी,चालाक बहुत पुराना,जीर्ण।

खुलवाना (क्रि० स०) खोल देना, छुड़ाना।
खुला (वि०) स्पष्ट, प्रकट, मुक्त, बंधन रहित।
खुलासा (अ० सं० पु०) संक्षेप, सारांश, (क्रि० वि०) अवाध, खुला हुआ, प्रकट, स्पष्ट, संक्षिप्त, सारांश, साफ़।
खुली (सं० स्त्री०) थैली, तोड़ा।
खुलेबन्द (क्रि० वि०) प्रकाश्य रूप से, खुल्लमखुल्ला।
खुल्लमखुल्ला (क्रि० वि०) प्रकाश रूप से, निर्भयता से।
खुश (फ़ा० वि०) मग्न, प्रसन्न, आनन्दित।
खुशक़िस्मत (फ़ा० वि०) भाग्यवान्।
खुशक़िस्मती (फ़ा० सं० स्त्री०) सौभाग्य।
खुशख़त (फ़ा० वि०) सुन्दर लिखने वाला, अच्छा अक्षर लिखने वाला।
खुशख़ती (सं० स्त्री०) अच्छी लिखावट। [समाचार।
खुशखबरी (फ़ा० सं० स्त्री०) शुभ सम्वाद, आनन्द दायक
खुशनवीस (फ़ा० सं० पु०) बढ़िया अक्षर लिखने वाला।
खुशनसीब (फ़ा० वि०) भाग्यवान्।
खुशनुमा (फ़ा० वि०) सुन्दर, मनोहर।
खुशबू (फ़ा० सं० स्त्री०) सुगंधि।
खुशबूदार (फ़ा० वि०) सुगंधित।
खुशहाल (फ़ा० वि०) संपन्न, सुखी।
खुशामद (फ़ा० सं० स्त्री०) चापलूसी, चाटुता।
खुशामदी (वि०) चापलूस। [करने वाला।
खुशामदीटट्टू (सं० पु०) खुशामद करके जीविका पैदा
खुशियाली (सं० स्त्री०) आनन्द, प्रसन्नता।
खुशी (फ़ा० सं० स्त्री०) प्रसन्नता, आनन्द।
खुश्क (वि०) सूखा।
खुश्की (वि०) निरस, सूखा, पैदल रास्ता।
खुसुरफुसुर (सं० पु०) कानाफूसी, कानाकानी।
खुही (सं० स्त्री०) घोघी, खोही।
खूंखार (फ़ा० वि०) रक्त पीने वाला, भयंकर, निर्दयी, क्रूर।
खूंच (सं० स्त्री०) नाड़ी विशेष।
खूंट (सं० पु०) कोना, छोर, ओर, तरफ़, कान की मैल।
खूंटना (क्रि० स०) खोंटना, टोकना, चुकाना, घटाना, संकुचित करना, उद्यत होना।
खूंटला (सं० पु०) औषधि विशेष। [का मेख।
खूंटा (सं० पु०) खंभा, थंभा, बैल गाय भैंस आदि बांधने
खूंटी (सं० स्त्री०) मेख, छोटा खूंटा।
खूंद (सं० स्त्री०) थोड़े घेरे में घोड़े का इधर उधर चलना।
खूंदना (क्रि० अ०) पैरों से खोदना, खोदना, टाप मारना, रौंदना, कुचलना।
खूझा (सं० पु०) देखो "खुज्झा"।
खूटना (क्रि०) तोड़ना, खसोटना, उखाड़ना, उधेड़ना।
खूटी (सं० स्त्री०) खूंटी, पपड़ी।
खूड (सं० पु०) रेघारी, अङ्क, खाई, खान।
खूद (सं० पु०) स्वयं, आप, तलछट, खाद मैल, पर्याय, खुदर, खूदड़।
खूदराना (क्रि०) दुल्की चलना।
खून (सं० पु०) रुधिर, लोहू, रक्त।
खूनखच्चर (सं०पु०) मार काट।
खूनखराबी (सं० पु०) मार काट।
खूनी (फ़ा० वि०) हत्यारा, घातक।
खूब (वि०) अच्छा, भला, उत्तम।
खूबड़ खाबड़ (वि०) नीच ऊंच, ऊभड़ खाभड़।
खूबसूरत (फा० वि०) रूपवान्, सुन्दर।
खूबसूरती (सं० स्त्री०) सुन्दरता, सौन्दर्य। [विशेषता।
खूबी (फ़ा० सं० स्त्री०) अच्छाई, गुण, विलक्षणता,
खूभना (क्रि०) पुराना होना।
खूसट (सं० पु०) उल्लू, उरुआ, घुग्घू, (वि०) मनहूस, अरसिक, शुष्क हृदय, पाषाण हृदय
खेकसा (सं० पु०) फल विशेष, चिह्न, लक्षण।
खेचर (सं० पु०) आकाश में चलने वाला, शिव, चन्द्र, सूर्य, तारागण, पक्षी, विद्याधर, भूत-प्रेत, राक्षस, देवता, विमान, वायु, बादल।
खेचरी (सं० स्त्री०) विद्याधर, पक्षी, नक्षत्र।
खेचरीगुटिका (सं० स्त्री०) तन्त्रानुसार योग-सिद्धि की एक प्रकार की गोली, जिसको मुंह में रख कर मनुष्य आकाश में उड़ सकता है।
खेचरीमुद्रिका (सं० स्त्री०) तन्त्रानुसार दोनों हाथों को एक दूसरे पर लपेटने की मुद्रा, योग साधन की एक मुद्रा।
खेजड़ी (सं० स्त्री०) शमी का एक पेड़।
खेट (सं० पु०) छोटा गांव, खेड़ा, ग्रह, पक्षी, घास, तृण तिनका, घोड़ा, मृगया, आखेट, अहेर, शिकार, चमड़ा, ढाल, लाठी, सोंटा, डंडा, नीच, डर।
खेटक (सं० पु०) छोटा गांव, पुरवा, खेट, खेड़ा, बलदेव की गदा, ढाल, लाठी, सोंटा, तारा, मृगया, अहेर।

खेटको (सं० पु०) भड्डरी, भडोला, शिकारी, अधिक।
खेड़ा (सं० पु०) खेट, गांव, पुरवा, टोला।
खेड़ो (सं० स्त्री०) एक प्रकार का लोहा, फौलाद, इस्पात, कान्तिसार, मांस का वह भाग जो जरायुज जीवों के बच्चों के नाल के साथ लगा रहता है, गर्भावरण।
खेढ़ी (सं० स्त्री०) गर्भावरण, झिल्ली।
खेत (सं० पु०) क्षेत्र, जोतने बोने की भूमि।
मुहा०—खेत छोड़ना=युद्ध- स्थल से भाग जाना। खेत रहना=युद्ध में मारा जाना।
खेतल (सं० पु०)आकाश-मंडल।
खेतिहर (सं० पु०) खेती करने वाला, किसान।
खेती (सं० स्त्री०) काश्तकारी, कृषि कर्म।
खेतीबारी (सं० स्त्री०) काश्तकारी, किसानी-कृषि।
खेद (स० पु०) मनस्ताप, रंज, दुःख, ग्लानि, थकावट, अप्रसन्नता। [सताना, शिकार का पीछा करना।
खेदना (क्रि० स०) भगाना. हाँकना, मार कर भगाना,
खेदा (सं० पु०) हाथी फँसाने की जगह, शिकार,अहेर।
खेदाई (सं० स्त्री०) खेदने का काम, खेदने की मजूरी।
खेदान्वित (वि०) दुःखित।
खेदित (वि०) शोकान्वित, खेदयुक्त।
खेना (क्रि० स०) नाव चलाना, काल-क्षेप करना. समय बिताना। [सके, बोझ, भार।
खेप (सं० स्त्री०) उतना बोझ जितना एक बार में जा
मुहा०—खेप हारना=हानि उठाना।
खेपना (क्रि० स०) बिताना, काटना, काल-क्षेप करना।
खेपा (वि०) पागल, उन्मत्त, बकवादी।
खेम (सं० पु०) कुशल,मंगल, आनन्द, अभ्युदय.सुरक्षा।
खेमटा (सं० पु०) बारह मात्राओं का एक ताल।
खेमा (अ० सं० पु०) डेरा, तम्बू. क़नात।
खेरा (सं० पु०) डीह, परतो, ऊजड़ गाँव।
खेरी (सं० स्त्री०) देखो "खेड़ी"।
खेरे (सं० पु०) गाँव, छोटी बस्ती।
खेल (सं० पु०) क्रीड़ा, मन-बहलाव, कौतुक, मनोरञ्जन, बिहार, विनोद, दिल-बहलाव, उछल-कूद, दौड़-धूप।
मुहा०—खेल करना खेल समझना=तुच्छ समझना। खेल खेलना=बहुत तंग करना। खेल बिगड़ना= रंग में भंग होना, काम बिगड़ना।
खेलना (क्रि० अ०) उछल-कूद करना,क्रीड़ा करना, बिहार करना, मन बहलाना, कूदना, फाँदना, दौड़ना।
खेलवाड़ (सं० पु०) खेल, कौतुक, क्रीड़ा, दिल्लगी, दिल-बहलाव।
खेलवाड़ी (वि०)खेलने वाला, कौतुक प्रिय।
खेला (सं० पु०) खिलवाड़, खेल।
खेलाई (सं० स्त्री०) खेल।
खेलाउब (क्रि० स०) खेलाना, तंग करना, सताना।
खेलाड़ी (वि०) खेलने वाला।
खेलाना (क्रि० स०) बहलाना, खेल में प्रवृत्त करना।
खेलौना (सं० पु०) देखो "खिलौना"।
खेवक (सं० पु०) देखो "खेवट"।
खेवट (सं० पु०) माझी, मल्लाह, नाव खेने वाला, एक रजिस्टर जिसमें प्रत्येक पट्टीदार के हिस्सेदार की तादाद और उसकी मालगुज़ारी लिखी रहती है।
खेवटिया (सं० पु०) मल्लाह, माझी, खेवट। [मल्लाह।
खेवनहार (सं० पु०) पार लगाने वाला, खेने वाला,-
खेवना (क्रि० स०) खेना, नाव चलाना।
खेवा (सं० पु०) खेवाई, नाव की उतराई की मजूरी, नाव का किराया।
खेवाई (सं० स्त्री०) देखो "खेवा"।
खेस (सं० पु०) मोटे सूत का बना देसी वस्त्र, यह बिछाने के काम में आता है। [एक अन्न,लतरी।
खेसारी (सं० स्त्री०) अन्न, विशेष, मटर की जाति का
खेह (सं० स्त्री०) धूल, मट्टी, ख़ाक, राख, भस्म।
खैंच (सं० स्त्री०) एंच, तान, उखाड़।
खैंचना (क्रि० स०) खींचना, एंचना, तानना।
खैंचा खैंच (सं० पु०) लड़ाई झगड़ा।
खैंचाखैंची (सं० स्त्री०) देखो "खींचतान"।
खैंचातान(सं० स्त्री०) देखो "खीचतान"
खैंचातानी (सं० स्त्री०) देखो "खींचतान"।
ख़ैबर (सं० पु०) एक घाटी का नाम, जो भारत और अफ़ग़ानिस्तान के बीच में है।
खैर (सं० पु०) कत्था, खदिर, (अव्य०) अस्तु।
खैरख़्वाह (फ़ा० वि०) शुभचिन्तक।
खैरख़्वाही (फ़ा० सं० स्त्री०) शुभचिन्तन।
खैरसार (सं० पु०) खदिर, कत्था, खैर।
खैरा (सं० पु०) भूरा रंग,कत्थई, एक मछली।

खैरात (अ० सं० पु०) दान, पुण्य।
खैराती (वि०) धर्मार्थी, पुण्यार्थ। [आनन्द, मंगल।
खैरियत (फ़ा० सं० स्त्री०) राज़ी खुशी, खेम, कुशल चेम,
खैला (सं० पु०) नाटा, बछड़ा।
खोंखना (क्रि० अ०) खांसना, खँखारना।
खोंखल (वि०) पोला, खाली, शून्य।
खोंखी (सं० स्त्री०) खांसी।
खोंगी(सं० स्त्री०) पान के बीड़े का चौघड़ा।
खोंच (सं० स्त्री०) नोकीली चीज़ के लगने से छिल जाना, या फट जाना, चीर, खोंच।
खोंचना (क्रि०) घुसेड़ना, ठेलना, चुभोना।
खोंचा (सं० पु०) बहेलियों का चिड़िया फँसाने के लिये लम्बा बांस, खोंच, चार, पेट का दर्द।
खोंचिया (सं० पु०) भिक्षुक, भिखमंगा, भिखारी।
खोंची (सं० स्त्री०) वह अन्न जो किसी के यहाँ से बायन लाने वाले नाई आदि को गृहस्थ के यहां से मिलता है। वह अन्न जो दूकानदार गल्ले में से निकाल कर भिखमंगों या थोड़ा बहुत टहल करने वालों को देते हैं।
खोंटना (क्रि० स०) चने आदि के ऊपर की फुनगी तोड़ना, नोचना, कतरना।
खोंडर (सं० पु०) खोंखला, कोटर।
खोंडकल (सं० पु०) गड्हा, गढ़ा, कोटर।
खोंता (सं० पु०) घोंसला, पक्षियों का घर, नीड।
खोंप (सं० स्त्री०) टांका, सलंगा, सिलाई के दूर दूर टांकों के गोफे।
खोंपा (सं० पु०) भूसा, अन्न रखने के लिए अरहर के डंठल आदि से बना हुआ घर, गाड़, ताख, जूड़ा, छाजन का कोना।
खोंपी (सं० स्त्री०) देखो "खोंपा"
खोंसना (क्रि० स०) अटकाना, घुसेड़ना, भरना, ठोंसना।
खोआ (सं० पु०) सुरखी, गार, खोया, मावा।
खो आना (क्रि०) हार जाना, ठग जाना, भूल जाना, हरा आना।
खोइ (क्रि० वि०) नष्ट होकर, खो कर। [कंबल की घोघी।
खोइया (सं० स्त्री०) छिलका, ऊख की सीठी, छोई, लाई,
खोई (सं० स्त्री०) देखो "खोइया"।
खोऊ (वि०) उड़ाऊ, खर्चीला, अपव्ययी।
खोखना(क्रि०)काँखना, खखारना, कफ निकलना, खाँसना।
खोखला (सं० पु०) पोला, शून्य, रिक्त, सारहीन, थोथा।
खोखा (सं० पु०) रुपये अदा की हुई हुण्डी, बालक, बच्चा, लड़का।
खोखी (सं० पु०) खाँसी, कास, रोग विशेष।
खोगीर (सं० स्त्री०) देखो "खुगीर"।
खोच (सं० पु०) चीर, खोंप, किसी चीज़ से कपड़े का फट जाना, छेद होना।
खोचकिल (सं० पु०) खोंता, घोंसला।
खोचा (सं० पु०) चीरा, भराव, ठेस।
खोचा (सं० पु०) अन्न, फल, तरकारी आदि का वह थोड़ा सा भाग जो धर्मार्थ में भिखमंगों को और छोटी सेवाओं के लिये इतर जनों को दिया जाय।
खोज (सं० पु०) ढूंढ़ना, टोह, अनुसंधान, अन्वेषण, पता, चिह्न, निशान।
खोजना (क्रि० स०) टोह लगाना, अनुसंधान करना, अन्वेषण करना, पता लगाना, ढूंढ़ना। [लगवाना।
खोजवाना (क्रि० स०) टोह लगवाना, ढुंढ़वाना, पता
खोजा (सं० पु०) नपुंसक जो मुसलमान बादशाहों के ज़नाने महलों में रक्षक या सेवक के समान रहते थे, नौकर, दास, माननीय पुरुष, सरदार।
खोजाना (वि०) देखो "खोजवाना"।
खोजी (वि०) ढूंढ़ने वाला, पता लगाने वाला, टोह लगाने वाला, खोजने वाला।
खोट (सं० स्त्री०) दुर्गुण, अवगुण, ऐब, दोष, बुराई।
खोटपन (सं० पु०) क्षुद्रता, दुष्टता, नीचता।
खोटा (वि०) दुर्गुणी, ऐबी, दूषित बुरा।
खोटाई (सं० स्त्री०) दुष्टता, छल कपट, बुराई,।
खोटापन (सं० पु०) देखो "खोटपन"।
खोटी(वि०)खोटा का स्त्रीलिङ्ग।
खोड़ (सं० स्त्री०) देवी देवता, भूत प्रेतादि का कोप।
खोड़स (वि०) संख्या विशेष, सोलह।
खोड़ला (वि०) पोपला, अदन्त, दाँत रहित।
खोता (सं० पु०) खोंता, घोसला, नीड, पक्षियों के रहने का स्थान।
खोद (फ़ा० सं० पु०) शिर-त्राण, टोप, कूंड़, पूछताछ।
खोदना (क्रि० स०) गोड़ना, खनना।
खोदवाना (क्रि० स०) गोड़वाना, खनवाना।
खोद्दर (वि०) ऊंच नीच, ऊभड़-खाभड़, दौड़ दपट।

खोदरा (वि०) अड़बड़, दरदरा।
खोदविनोद (सं० पु०) छानबीन, पूंछताछ, छेड़छाड़।
खोदाई (सं०स्त्री०) खोदने का काम।
खोदै (क्रि० स०) उखाड़े, नष्ट करे, खोद डाले।
खोना (क्रि० स०) गवांना, बिगाड़ना, खराब करना, नष्ट करना, भुला देना।
खोन्चा (सं० पु०) पचमेल मिठाई या खाने पीने की अन्य चीज़ें, दही बड़े आदि रक्खा हुआ बड़ा थाल या परात, जिसको फेरी वाले एक जगह रख कर या घूम कर बेंचते हैं।
खोप (सं० पु०) खोंच, छेद, छिद्र।
खोपड़ा (सं० पु०) सिर, कपाल, सिर की हड्डी, गरी का गोला, नारियल, गरी।
खोपड़ी (सं० स्त्री०) सिर की हड्डी, सिर।
खोपरा (सं० पु०) देखो "खोपड़ा"।
खोपरी (सं०स्त्री०) देखो "खोपड़ी"।
खोपा (सं० पु०) छाजन का कोना, बँधी हुई वेणी, गाढ़, ताख, जूड़ा, अन्न रखने के लिये तृण निर्मित गृह विशेष।
खोबार (सं० पु०) सुअरों के रहने का घर।
खोभार (सं० पु०) बिहार में सुअरों को बन्द रखने का स्थान, कूड़ा कर्कट फेंकने की जगह।
खोय (फ़ा० सं० स्त्री०) स्वभाव, आदत।
खोया (सं० पु०) देखो "खोआ"।
खोर (सं० स्त्री०) सँकरी गली, तंग गली।
खोरना (क्रि० अ०) नहाना, आग को लकड़ी से उलट पुलट करना, (सं० पु०) भड़भूजों की लकड़ी जिससे वे आग खोदते हैं।
खोरा (सं० पु०) कटोरा, गिलास, जल पीने का बर्तन।
खोराक (फ़ा० सं० स्त्री०) भोजन की मात्रा, भोजन की सामग्री।
खोराकी (फ़ा० वि०) अधिक भोजन करने वाला, (सं० स्त्री०) भोजन के लिए दिया जाने वाला धन।
खोरि (सं० स्त्री०) संकरी गली, दोष, दुर्गुण, ऐब, नुक्स।
खोरिया (सं० स्त्री०) छोटा कटोरा।
खोरे (वि०) दुर्गुणी, ऐबी।
खोल (सं० पु०) गिलाफ़, दोहर, ओढ़ने का मोटा कपड़ा
खोलड़ा (सं० पु०) खोखला, खोह, कोटर।
खोलना (क्रि० स०) आवरण हटाना, अलगाना, उधेड़ना, फैलाना, मुक्त करना।
खोली (सं० स्त्री०) चौगी, नालिका, अस्त्र रखने की वस्तु।
खोवा (सं० पु०) खोआ, खोया, मावा।
खोवै (क्रि० स०) नष्ट करै, भुलवावे, हेरवावे, खोवावे।
खोसना (क्रि०) ठूसना, भरना, घुसेड़ना।
खोही (सं० स्त्री०) पत्तों का बना हुआ छाता।
खोह (सं० पु०) कन्दरा, गुफा, गुहा।
खौड़ (सं० पु०) खौर, चन्दन तिलक।
खौफ़ (अ० सं० पु) भय, डर, भीत।
खौर (सं० पु०) त्रिपुण्ड, चन्दन का आड़ा टीका, लहरियादार चन्दन, धनुषाकार चंदन का तिलक।
खौरना (क्रि० स०) चन्दन लगाना, तिलक करना, आग को उलट पलट कर बुझाना, इस अर्थ में बिहारी भाषा में प्रयोग होता है।
खौरहा (वि०) जिसके बाल या रोंवें झड़ गये हों।
खौरा (सं० पु०) पशुओं का एक रोग जिसमें बाल झड़ जाते हैं।
खौलना (क्रि० अ०) गरम होना, उबलना।
खौलाना (क्रि० स०) उबालना, गरम करना।
ख्यात (वि०) प्रसिद्ध, मशहूर। [कीर्ति।
ख्याति (सं० स्त्री०) प्रसिद्धि, नामवरी, प्रतिष्ठा, यश,
ख्यातिघ्न (वि०) दुर्नाम-जनक, अपवादी।
ख्यातित्व (सं० पु०) यशस्विता, विश्रुति, प्रतिष्ठा।
ख्यात्यापन्न (वि०) कीर्तिमान, यशस्वी, प्रतिष्ठित।
ख्यापक (सं० पु०) प्रकाशक, व्यञ्जक, द्योतक, फैलानेवाला
ख्यापन (सं० पु०) प्रकाश, विज्ञापन, प्रसिद्ध होना।
ख्यातव्य (वि०) प्रशंसायोग्य।
ख्याल (सं० पु०) खेल, तमाशा, क्रीड़ा कौतुक, ध्यान, अनुमान, अटकल, स्मरण, विचार।
ख्याली (वि०) कल्पित, वहमी, सनकी, कौतुक।
ख्रीष्ट (सं० पु०) ईसा।
ख्रीष्टियान (सं० पु०) ईसाई।
ख़्वाब (फ़ा० सं० पु०) स्वप्न, सोने की दशा।
ख़्वारी (फ़ा० सं० स्त्री०) नाश, बर्बादी, अपमान, अनादर।
ख़्वाहिश (फ़ा० सं० स्त्री०) इच्छा, चाह, अभिलाषा।
ख़्वाहिशमन्द (फ़ा० वि०) इच्छुक, अभिलाषी।

ग

ग यह कवर्ग का तीसरा वर्ण है, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है।

ग (सं० पु०) गणेश, गन्धर्व, गीत, गुरुमात्रा।

गंगबरार (सं० पु०) वह ज़मीन जो गंगा के धारा के हट जाने से निकल आती है, कछार, दियर।

गंगशिकस्त (सं० पु०) वह ज़मीन जो गंगा या किसी नदी में कट कर गिर गयी हो। [गुलशकरी।

गँगेरन (सं० पु०) एक औषधि विशेष, नाग पत्ता,

गँगेरुवा (सं० पु०) एक पहाड़ी वृक्ष विशेष, इसके फल आँवले के समान होते हैं।

गंज (सं० पु०) एक रोग विशेष, जिसमें सिर के सब बाल गिर पड़ते हैं, समूह, ढेर, राशि, ख़ज़ाना, कोष, हाट, बज़ार।

गंजना (क्रि० स०) अवहेलना करना, अवज्ञा करना, निरादर करना, नष्ट करना, दुःख देना, यातना देना।

गंजा (वि०) जिसके सिर में बाल न हों, खत्तार (सं०पु०) गांजा, मद्य-गृह।

गंजी (सं० स्त्री०) ढेर, समूह, शकरक़न्द, कन्द।

गंजीफ़ा (फ़ा० सं० पु०) एक तास का खेल, जिसमें ९६ पत्ते होते हैं, और तीन आदमी मिल कर खेलते हैं।

गँजेड़ी (वि०) गाँजा पीने वाला।

गँठकटा (सं० पु०) गिरहकटा, पाकेटमार, चाँई।

गँठजोड़ा (सं० पु०) गँठबन्धन।

गँठबन्धन (सं० पु०) गँठजोड़ा, शुभ कर्मों में स्त्री पुरुषों के वस्त्रों के छोर को एक साथ बाँधना।

गँड़घिसनी (सं० स्त्री०) अत्यधिक खुशामद और विनती, निकृष्ट परिश्रम।

गँड़तरा (सं० पु०) छोटे बच्चों के चूतड़ के नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा। [धान।

गँड़रा (सं० पु०) एक प्रकार की घास, एक कुआरी

गँड़ासा (सं० पु०) एक औज़ार जिस से किसान चौपायों के चारा के महीन टुकड़े करते हैं।

गँड़ासी (सं० स्त्री०) देखो "गँड़ासा"।

गँड़ेरी (सं० स्त्री०) ईख के छोटे टुकड़े जो चूसे जाते हैं।

गँड़ेरा (सं पु०) कच्चा और हरा खजूर।

गंधी (सं० पु०) तेल फुलेल बेंचने वाला, अत्तार।

गंधेला (सं पु०) एक पक्षी का नाम।

गँवइया (वि०) देहाती, गँवारपन।

गँवई (सं० स्त्री०) छोटा गाँव।

गँवरदल (वि०) गँवार, देहाती, बेहूदा।

गँवहिया (सं० पु०) अतिथि, पाहुन, मेहमान।

गंवाऊ (वि०) उड़ाने पड़ाने वाला, नाश करने वाला।

गँवी (सं० स्त्री०) गाँव, ग्राम।

गँवाना (क्रि० स०) काटना, बिताना, खोना।

गँवार (वि०) देहाती, ग्रामीण, असभ्य। [अज्ञानता, गँवार।

गँवारी (सं० स्त्री०) ग्रामीणता, देहातीपना, मूर्खता,

गँवारू (वि०) देहाती, बेढंगा, भद्दा।

गँस (सं० पु०) द्वेष, बैर, गाँठ, आक्षेप, ताना।

गँसना (क्रि० स०) गाँठना, जकड़ना, जोर से कसना, कस जाना, भिड़ना, जकड़ जाना।

गँसा (सं० पु०) अँगुलियों के बीच का स्थान।

गँसीला (वि०) चुभने वाली, ठस, गठित, गँसा हुआ।

गइया (सं० स्त्री०) गाय, गौ।

गई (क्रि०) जारी रही, चली गई। [देना।

गई करना (क्रि० अ०) छोड़ देना, ध्यान न देना, जाने

गई बहोर (वि०) गयी वस्तु को लौटाने वाला, बिगड़ी बात को बनाने वाला।

गकार (सं० पु०) कवर्ग का तीसरा वर्ण, ग अक्षर।

गगन (सं० पु०) आकाश, नभ, व्योम, शून्य, एक छप्पय छन्द का भेद।

गगनकुसुम (सं० पु०) आकाश कुसुम, मिथ्या, असम्भव।

गगनगामी (वि०) आकाशचारी, आसमान में उड़ने वाला

गगनचर (सं० पु०) वह जो आकाश में चले।

गगनचारी (वि०) आकाशगामी।

गगनविहारी (सं० पु०) चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, पक्षी।

गगनभेड़ (सं० पु०) गीध, हड़गीला।

गगनमण्डल (सं० पु०) आकाशमण्डल, नभोमण्डल।

गगनस्पर्शी (वि०) नभस्पर्शी, आकाश छू लेने वाला, बहुत ऊँचा।

गगरा (सं० पु०) पीतल लोहा आदि का बड़ा घड़ा, कलसा।
गगरी (सं० स्त्री०) कलश, घड़ा।
गङ्ग (सं० स्त्री०) गङ्गा, (सं० पु०) एकमात्रिक छन्द, इसके प्रत्येक चरण में ६ मात्रा और अन्त में दो गुरु होते हैं, एक हिन्दी कवि का नाम, ये अकबर के समय में हुये थे।
गङ्गा (सं० स्त्री०) एक पवित्र नदी जो गङ्गोत्री से निकली है और बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है, जाह्नवी, भागीरथी, सुर नदी, मंदाकिनी, आदि इसके अनेक नाम हैं।
गङ्गाजमुनी (वि०) दो धातुओं का बना हुआ, संकर, श्वेत कृष्ण मिला हुआ, काला सफ़ेद मिला हुआ, दोरंगा, मिला जुला अबलक़।
गङ्गाजल (सं० पु०) गङ्गोदक, गङ्गा का पानी, एक वस्त्र का नाम, इसका साफा बाँधा जाता है। [वाला।
गङ्गाजलिया (सं० पु०) गङ्गा का जल लेकर शपथ करने
गङ्गाजली (सं० स्त्री०) काँच शीशा आदि धातुओं की बनी सुराही जिसमें गंगाजल ले जाया जाता है।
गङ्गादास (सं० पु०) एक संस्कृत कवि का नाम, इन्होंने छन्दो मंजरी नामक छन्दःशास्त्र की पुस्तक बनाई है। गोपाल दास वैद्य के पुत्र थे।
गङ्गाद्वार (सं० पु०) हरद्वार।
गङ्गाधर (सं० पु०) शिव, महादेव, एक औषधि का नाम जो संग्रहणी रोग में दी जाती है।
गङ्गापुत्र (सं० पु०) भीष्म, एक ब्राह्मण की जाति जिसका काम गंगा आदि नदियों के घाट पर दान लेना है, घाटिया। [पूजादि होती है।
गङ्गापूजा (सं० स्त्री०) विवाह के बाद जो गङ्गा की
गङ्गाप्राप्ति (सं० स्त्री०) मरण, मृत्यु।
गङ्गा यमुना (वि०) श्वेत, कृष्ण वर्ण का मिश्रण, दो वर्ण की धातुओं का सम्मिलन।
गङ्गायात्रा (सं० स्त्री०) मरणासन्न व्यक्ति को मरने के लिये गङ्गातट पर ले जाना।
गङ्गाराम (सं० पु०) तोते का प्यार का नाम।
गङ्गालाभ (सं० पु०) मृत्यु, मरण, गङ्गा की प्राप्ति।
गङ्गासागर (सं० पु०) एक तीर्थ-स्थान, जहाँ पर गंगा और समुद्र का संगम होता है, यहां मकर संक्रान्ति को बड़ा मेला लगता है।
गङ्गासुत (सं० पु०) भीष्म।
गङ्गा स्नान (सं० पु०) गगां जी का स्नान।
गङ्गा स्नाई (सं० पु०) गगां स्नान शील।
गङ्गी भूत (वि०) पवित्र, पावन।
गङ्गोदक (सं० पु०) गङ्गा-जल।
गच (सं० पु०) एक प्रकार का शब्द जो किसी नरम वस्तु में कड़ी वस्तु के घुसने से होता है, पक्की छत।
गचकारी (सं० स्त्री०) चूने सुरखी का काम।
गचगीरी (सं० स्त्री०) चूने सुरखी का काम, गचकारी।
गचना (क्रि० स०) ठूँस ठूँस के भरना, कसकस के ठूँसना।
गचपच (सं० पु०) उलट-पलट, भीड़-भाड़, गोलमाल।
गचमीना (वि०) ठींगना, छोटा, मोटा।
गचाका (सं० पु०) गच से गिरने या लगने का शब्द।
गच्छ (सं० पु०) गाँछ, वृक्ष, वौद्धों का स्थान, साधुओं का मठ।
गज (सं० पु०) हाथी, कुञ्जर, एक वानर का नाम, एक राक्षस का नाम, यह महिषसुर का पुत्र था आठ का अङ्क, धातु आदि भस्म करने के लिए गढ़ा, दो हाथ की नाप, मकान की नींव।
गजकुम्भ (सं० पु०) हाथी का मस्तक।
गजगति (सं० स्त्री०) हाथी के समान मन्द मन्द चाल, एक वृत्त इसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण, एक लघु और एक गुरु होता है। [वाली स्त्री।
गजगामी (वि०) हाथी के समान मन्द मन्द चलने
गजगाह (सं० पु०) हाथी का झूल। [वाली।
गजगौनी (सं० स्त्री०) हाथी के समान मन्द मन्द चलने
गजचर्म (सं० पु०) हाथी का चमड़ा, एक रोग विशेष, इसमें चमड़ा हाथी के चमड़े के समान मोटा हो जाता है।
गजचिर्भटी (सं० स्त्री०) इनारुन, इन्द्रवारुणी।
गजच्छाया (सं० स्त्री०) एक योग विशेष, यह योग तब पड़ता है जब चन्द्रमा मघा नक्षत्र में और सूर्य हस्त में हो और आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथि हो, यह योग श्राद्ध कर्म के लिए उत्तम समझा जाता है।
गजट (अ० सं० पु०) समाचार-पत्र, अख़बार।
गजता (सं० स्त्री०) हाथियों का समूह।

गजदन्त (सं० पु०) हाथी दाँत, दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत, नृत्य में एक भाव विशेष।

गजदन्ती (वि०) हाथी दाँत का।

गजगमनी (वि०) हाथी की सी चाल चलने वाली स्त्री।

गजदान (सं० पु०) हाथी का मद, हाथी का दान।

गजधर (सं० पु०) मकान बनाने वाला मिस्त्री, थवई, राज।

ग़ज़नवी (सं० स्त्री०) ग़ज़नी का रहने वाला।

गजनी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिट्टी।

गजपति (सं० पु०) हाथियों के झुण्ड का स्वामी, राजा-कलिङ्ग देश के राजाओं की पदवी।

गजपाटल (सं० पु०) काजल, सुरमा।

गजपाल (सं० पु०) हाथीवान, महावत।

गजपिप्पली (सं० स्त्री०) गजपीपर, पीपर विशेष।

गजपीपर (सं० पु०) पीपर विशेष।

गजपुट (सं० पु०) धातुओं को भस्म करने के लिए एक प्रकार का गढ़ा जो सवा हाथ लम्बा, सवा हाथ चौड़ा और सवा हाथ गहरा होता है।

गजपुङ्गव (सं० पु०) मुख्य हाथी, प्रधान हाथी।

गजभिषक (सं० पु०) सोंठि।

ग़ज़ब (अ० सं० पु०) रिस, क्रोध, विपत्ति, आफ़त, जुल्म, अन्याय।

गजमुक्ता (सं० स्त्री०) हाथी के मस्तक का मोती।

गजमुख (सं० पु०) गणेश।

गजमोती (सं० स्त्री०) गज-मुक्ता।

गजयूथ (सं० पु०) हाथियों का झुण्ड।

गजर (सं० पु०) घंटा बजने का शब्द, पारा।

गजरथ (सं० पु०) हाथी से खींचा जाने वाला बड़ा रथ।

गजरबजर (सं० पु०) अंडबंड, घाल मेल।

गजरा (सं० पु०) गाजर के पत्ते, फूलों की माला, हार, माला।

गजराज (सं० पु०) बड़ा हाथी।

गजरि(सं० पु०) शेर, बाघ, सिंह,।

ग़ज़ल (फ़ा० सं० स्त्री०) शृङ्गार रस की एक कविता जो फ़ारसी और उर्दू में की जाती है।

गजवदन (सं० पु०) गणेश।

गजवुसा (सं० पु०) कदली, कदली वृक्ष, केला।

गजाग्रणी (सं० पु०) बड़ा हाथी, ऐरावत।

गजाध्यक्ष (सं० पु०) हाथी का अधिपति, हस्ति-स्वामी

गजशाल (सं० स्त्री०) हथिसाल, फ़ीलख़ाना।

गजा (सं० पु०) खुर्मा, खजूर।

गजाधर (सं० पु०) विष्णु नारायण।

गजाना (क्रि०) फेन देना, बसाना, सड़ाना।

गजानन (सं० पु०) गणेश।

गजारि (सं० पु०) सिंह-वृक्ष विशेष।

गजाशन (सं० पु०) अश्वत्थ, पीपल।

गजास्य (सं० पु०) गणेश।

गजाह्वय (सं० पु०) नगर विशेष, हस्ति-स्वामी।

गजी (सं० पु०) एक मोटा देशी वस्त्र, गाढ़ा।

गजेन्द्र (सं० पु०) ऐरावत, गजराज, दिग्गज।

गञ्ज (सं० पु०) रोग विशेष, एक रोग जो शिर में होता है, राशि ढेर, समूह, हाट, बज़ार खज़ाना।

गञ्जना (वि०) यातना, वेदना, पीड़ा, दुःख-ग्लानि, सूचक वाक्य।

गञ्जर (सं० पु०) दलदल। [गांजा, मद्य गृह।

गञ्जा (क्रि०) जिसके सिर में बाल न हों, रोग विशेष

गञ्जित (वि०) अपमानित, कलकित, दुःखित, लांछित पीड़ित।

गझ (सं० पु०) जय में प्राप्त धन, जीता धन।

गझा (सं० पु०) विजय में पाया हुआ धन-सम्पत्ति।

गझिन (वि) सघन, घन, निविड़, घना, गाढ़ा, मोटा।

गटई (सं० स्त्री०) गला।

गटकाना (क्रि० स०) निगलना, खाना।

गटपट (वि०) खफड़ा, उलट पुलट, (सं० स्त्री०) प्रसङ्ग, सहवास, संयोग, मिलावट।

गटागट (क्रि० वि०) लगातार, धड़ाधड़।

गटापारचा (सं० पु०) एक प्रकार का गोंद।

गटी (सं० स्त्री०) गांठ, समूह, झुंड।

गट्ट (सं० पु०) वह शब्द जो किसी वस्तु के निगलने में गले से होता है।

गट्टा (सं० पु०) कलाई, एक प्रकार की मिठाई।

गट्ठर (सं० पु०) गट्ठा, बड़ी गठरी।

गट्ठा (सं० पु०) गट्ठर, बोझा।

गठकटा (वि०) गिरहकट, चाई, बेईमान।

गठन (सं० स्त्री०) बनावट, रचना।

गठना (क्रि० अ०) सटना, जुड़ना, मिलना, एकत्रित होना, संयोग होना, सम्मिलित होना, ठीक ठीक बनाना

गठबंधन (सं० पु०) विवाह की एक प्रथा, वर बधू के वस्त्रों के छोर को एक साथ मिला कर गांठ बांधना।

गठर (सं० पु०) गट्ठा।

गठरी (सं० स्त्री०) गट्ठर, बोझ, भार।

गठवाना (क्रि० स०) गठाना, ढँकवाना, मिलवाना, संयोग कराना, जुड़वाना, जोड़ा मिलवाना।

गठाना (क्रि० स०) सिलवाना, गठवाना, जोड़ा मिलवाना, जुड़वाना।

गठाव (सं० पु०) बनावट, गठन, रचना।

गठित (वि०) रचित।

गठिया (सं० स्त्री०) कपड़े के थानों की गठरी, छोटी गठरी, बात रोग जिसमें अङ्गों के जोड़ जकड़ जाते हैं। [में रखना।

गठियाना (क्रि० स०) गांठ देना, गांठ बांधना, गांठ

गठिहा (वि०) गाँठों वाला। [मुसंड।

गठीला (वि०) सुडौल, मजबूत, दृढ़, हट्टा कट्टा, संड

गठुवा (वि०) कपड़ों की गांठ, खूटी, गेठुरा।

गड़ (स० पु०) आड़, ओट, चार दीवारी, गढ़ गढ़ा, खांई

गड़ंत (सं० पु०) गंडा, टोना, एक खेल का नाम।

गड़क (सं० पु०) एक प्रकार की मछली।

गड़कना (क्रि० अ०) गड़गड़ शब्द करना।

गड़गड़ाना (क्रि० अ०) गरजना, कड़कना, गुड़गुड़ाना।

गड़गड़ाहट (सं० स्त्री०) कड़क, गर्जन, गुड़गुड़ाने का शब्द।

गड़गड़ी (सं० स्त्री०) डुग्गी, नगाड़ा।

गड़गूदर (सं० पु०) चिथड़ा, गूदड़, पुराना कपड़ा।

गड़न (सं० पु०) दलदल, धसान, गढ़न।

गड़ना (क्रि० अ०) धँसना, चुभना, छिदना, पैठना, रह जाना, आसक्त होना, समाना, अटना।

गड़प (सं० पु०) जल आदि में किसी वस्तु के सहसा गिरने का शब्द। [जाना।

गड़पना (क्रि० स०) निकलना, किसी वस्तु को पचा

गड़प्पा (सं० पु०) भारी गढ़ा, धोखे की जगह।

गड़बड़ (वि०) ऊँच नीच, (सं० पु०) ऊटपटांग, अडंबंड, अव्यवस्था। [बली।

गड़बड़ा (सं० पु०) गढ़ा, खत्ता, मड़ोरा, मिलाव, खल-

गड़बड़ाना (क्रि० अ०) बिगाड़ना, बिगड़ना, भूल में पड़ना, भूल में डालना, चक्कर में आना, चक्कर में पड़ना। [डर।

गड़बड़ाहट (सं० स्त्री०) खलबली, अव्यवस्थित, भय,

गड़बड़िया (वि०) गड़बड़ करने वाला, अव्यवस्थित करने वाला, उपद्रवी।

गड़बड़ी (सं० स्त्री०) देखो "गड़बड़"।

गड़पल (सं० पु०) परिहास में इस नाम से पुकारना, बानर का दूसरा नाम। [गड़ेरिया

गड़रिया (सं० पु०) भेड़ पालने वाली जाति, भेड़िहारा,

गड़री (सं० स्त्री०) गेडुर, बिढ़ा, बिठई।

गड़लवण (सं० पु०) सांभर नमक।

गड़वाना (क्रि० सं०) गाड़ने में प्रवृत्त कराना।

गड़हा (सं० पु०) खत्ता, गर्त, ताल।

गड़ही (सं० स्त्री०) छोटा गढ़हा, तलैया।

गड़ाना (क्रि० स०) भोंकना, चुभाना, धँसाना।

गड़ारी (सं० स्त्री०) गोल लकीर, घेरा, गंडा, आड़ी धारी, घिरनी।

गड़ारीदार (वि०) घेरदार, धारीदार।

गड़ासा (सं० पु०) देखो "गँड़ासा"।

गड़ियार (सं० पु०) मट्टर, बोदा, मगरा, जड़, सुस्त।

गड़ी (क्रि०) धंसी, डूबी, धस गई, डूब गई।

गडुआ (सं० पु०) तमहा, टोंटीदार, बड़ा लोटा।

गडुई (सं० स्त्री०) छोटा गडुआ।

गडुर (सं० पु०) गरुण, कुबड़ा आदमी।

गडुवा (सं० पु०) गडुआ, हथहर, कलश।

गड़ेरिया (सं० पु०) भेड़ पाल, गड़रिया, वह जाति जो भेड़ बकरी पालती है और कम्मल बिनती है।

गड़ोना (क्रि० सं०) चुभाना, छेदना, धंसाना, गड़ाना।

गड्ड (सं० पु०) एक ही वस्तुओं का एक के ऊपर एक का ढेर।

गड्डबड्ड (वि०) देखो "गड़बड़"।

गड्डरिक (सं० पु०) गड़ेरिया।

गड्डाम (अ० वि०) नीच, पाजी, लुच्चा।

गड्डामी (वि०) देखो "गड्डाम"।

गड्डालिका (सं० स्त्री०) भेड़िया धसान, देखा देखी काम करने वाला, एक को कोई काम करते देख सभी का वही करने लगना।

गड्डी (सं० स्त्री०) देखो "गड्डु"।
गड्ढा (सं० पु०) गड़हा, गर्त, गढ़ा।
गढ़ (सं० पु०) किला, दुर्ग, कोट।
गढ़त (सं० स्त्री०) बनावट, आकृति, ढांचा, रचना।
गढ़न (सं० स्त्री०) बनावट, गठन, रचना।
गढ़ना (क्रि० स०) रचना, बनाना, सुधारना, ठोकना।
गढ़नि (सं० स्त्री०) गढ़ का बहु वचन, बनावट, गठन।
गढ़न्त (वि०) बनावटी, कल्पित।
गढ़वार (वि०) स्थूल, मोटा, गाढ़ा, गंभीर।
गढ़वाल (सं० पु०) एक प्रदेश का नाम जो उत्तरा खण्ड में है, किले का रक्षक, गढ़वाला, मोटा, गाढ़ा।
गढ़ा (सं० पु०) गड़हा, गर्त, गड्ढा
गढ़ाई (सं० स्त्री०) गढ़ने की मजूरी।
गढ़ाना (क्रि० स०) बनवाना, गढ़वाना।
गढ़िया (सं० स्त्री०) बल्लम, बरछी, भाला।
गढ़ी (सं० स्त्री०) छोटा किला, छोटा कोट, दृढ़ और सुरक्षित मकान।
गढ़ीश (सं० पु०) गढ़ का मालिक, गढ़पति।
गढ़ेला (सं० पु०) गड़हा, गढ़ा, खँड़हर।
गढ़ैया (सं० पु०) तलैया, (वि०) बनाने वाला, गढ़ने वाला।
गण (सं० पु०) समूह, श्रेणी, यूथ, झुण्ड, थोक, शिव का प्रथम गण, सेना विशेष जिसमें २७ रथ, २७ हाथी, ८१ घोड़े और १३५ पैदल हों। छन्दशास्त्र के गण ये आठ हैं, भगण, जगण, सगण, रगण, यगण तगण, मगण, नगण।
गणक (सं० पु०) ज्योतिषी।
गणता (सं० स्त्री०) गण का धर्म समूहत्व, पक्षपातिता।
गणदेवता (सं० पु०) मिल कर रहने वाले देवता, एक समूह में रहने वाले देवता।
गणन (सं० पु०) गिनती।
गणना (सं० स्त्री०) गिनती, संख्या।
गणनाथ (सं० पु०) गणेश।
गणनायक (सं० पु०) गणेश।
गणनीय (वि०) गिनने योग्य, प्रसिद्ध।
गणपति (सं० पु०) गणेश।
गणपाठ (सं० पु०) एक ग्रन्थ का नाम।
गणराऊ (सं० पु०) गणनायक, गणेश।
गणाधिप (सं० पु०) गणेश।
गणाध्यक्ष (सं० पु०) गणेश, शिव।
गणिका (सं० स्त्री०) वेश्या, रण्डी, पतुरिया।
गणित (सं० पु०) ज्योतिष शास्त्र, अङ्कविद्या।
गणितकार (सं० पु०) गणक, ज्योतिर्वेत्ता, अङ्कवेत्ता।
गणितज्ञ (सं० पु०) ज्योतिषी, हिसाबदाँ, गणित जानने वाला।
गणेश (सं० पु०) हिन्दुओं के प्रधान पञ्चदेवों में से एक देव, इनका सब शरीर मनुष्य का है, चार हाथ हैं और सिर हाथी का, इसकी कथा यह है कि गणेश के जन्म लेने पर पार्वती ने सब देवताओं को इनको देखने के लिए बुलाया। सब देवता तो आये; उनमें शनिश्चर भी थे। ये देखना नहीं चाहते थे, क्योंकि इनकी दृष्टि पड़ना बुरा ही है, पर पार्वती के बहुत कहने पर इन्होंने देखा, इनके देखते ही गणेश का सिर धड़ से अलग हो गया। यह देख देवताओं ने विष्णु की स्तुति की, विष्णु ने प्रसन्न हो कर हाथी का सिर जोड़ दिया। इसी से इनका सिर हाथी का है।
गणेशक्रिया (सं० स्त्री०) योग की एक क्रिया, इसमें अंगुली द्वारा गुदा का मल साफ़ किया जाता है।
गणेशचतुर्थी (सं० स्त्री०) भादों माघ और फाल्गुन की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी जिस दिन गणेश जी की धूम धाम से पूजा होती है।
गण्ड (सं० पु०) गाल, कपोल, कनपटी, गजकुम्भ।
गण्डक (सं० पु०) गैंड़ा, रोग विशेष, चिह्न, गांठ।
गण्डकी (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम, यह नैपाल में हिमालय से निकली है और पटने के पास गङ्गा में मिलती है, इसमें शालिग्राम की मूर्तियाँ पायी जाती हैं।
गण्डमाला (सं० स्त्री०) एक रोग, कण्ठमाला, गलगण्ड।
गण्डमूर्ख (वि०) विकट मूर्ख।
गण्डशैल (सं० पु०) पर्वत से टूटा हुआ बड़ा पत्थर, छोटा पहाड़।
गण्डस्थल (सं० पु०) कनपटी, गाल, कपोल।
गण्डा (सं० पु०) संख्या विशेष, चार कौड़ी, चार पैसा, चार रुपया, चार आम आदि, तंत्र मंत्र किया हुआ सूत, हंसली, कंठा।

गण्डान्त (सं० पु०) ज्योतिष शास्त्रानुसार मघा और अश्विनी के अन्तिम तीन दण्ड, और ज्येष्ठा श्लेषा रेवती के अन्तिम पाँच या तीन दण्ड।

गण्डासा (सं० पु०) कुटी काटने का बड़ा गँड़ासा, शास्त्र विशेष।

गण्ड़ासी (सं० स्त्री०) छोटा गँड़ासा।

गण्डि (सं० पु०) रोग विशेष, गण्डमाला।

गण्डिका (सं० स्त्री०) नदी विशेष, गण्डकी।

गण्डी (सं० स्त्री०) घेरा, रेखा आदि के द्वारा सीमा बद्ध [स्थान।

गण्डीर (सं० पु०) सेहुँड़ वृक्ष, गन्ना, ऊख।

गण्डूल (वि०) प्रफुल्ल, विकसित।

गण्डूष (सं० स्त्री०) कुल्ला, चुल्लू।

गण्य (वि०) माननीय, गणनीय, पूज्य।

गत (वि०) गुज़रा हुआ, गया हुआ, व्यतीत, अतीत, रहित, हीन, हत, नष्ट, गमन, गति, (सं० स्त्री०) दशा, चाल चलन, अवस्था।

गतका (सं० पु०) लकड़ी खेलने का डण्डा।

गतक्लम (वि०) श्रम रहित।

गतपत्र (वि०) लज्जा रहित।

गतप्रत्यागत (सं० पु०) संगीत में ताल का एक भेद [विशेष।

गतप्रत्यागता (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पति के आज्ञा बिना घर से बाहर चली गयी हो और स्वेच्छानुसार कुछ समय तक बाहर रह कर पुनः पति के घर चली आयी हो।

गतप्रभा (वि०) तेज रहित।

गतवैर (वि०) शत्रु रहित।

गतवित्त (वि०) गत विभव, निर्धन, दरिद्र।

गतव्यथा (वि०) अक्लेश, क्लेश रहित, सूखी।

गतागत (सं० पु०) आवागमन, जन्ममरण, (वि०) आया हुआ, गया हुआ। [बीता, पिछली संख्या।

गताङ्क (वि०) जिसमें सत्पुरुष का चिह्न न हो, गया

गताधि (वि०) सूखी।

गतानुगतिक (वि०) पिछलग्गू।

गतायु (वि०) मरणासन्न।

गतार्थ (वि०) अभिप्राय सिद्ध।

गति (सं० स्त्री०) अवस्था, दशा, ज्ञान,पथ,मार्ग, यात्रा।

गतिक्रिया (सं० स्त्री०) शिथिलता, विलम्ब।

गतिविहीन (सं० पु०) गमन शक्ति रहित।

गते (क्रि० वि०) शनैः शनैः, धीरे धीरे, धीमे धीमे।

गत्ता (सं० पु०) पतले काग़ज़ों को लेइ से चपका चपका कर बनायी हुई दफ्ती, जिल्द।

गथ (सं० पु०) पूजी, माल, मोल, धन, झुंड।

गथना (क्रि० स०) एक को दूसरे में गूथना, एक में दूसरे को जोड़ना, एक से दूसरा मिलना।

गद (सं० पु०) रोग, व्याधि, वाक्य, विष, श्री कृष्ण का छोटा भाई, एक राक्षस का नाम रामचन्द्र की बानरी सेना का एक बानर सेनापति।

गदका (सं० पु०) लकड़ी खेलने का एक डंडा, यह दो ढाई हाथ लम्बा होता है, इस पर चमड़ा मढ़ा होता है और पकड़ने के लिए मूठिया लगी रहती है।

गदकारी (वि०) रोग उत्पन्न करने वाला पदार्थ।

गदगद (वि०) अत्यधिक प्रसन्न, हर्ष, आनन्द, आनन्द के मारे मुंह से स्पष्ट शब्द न निकलना।

गदर (अ० सं० पु०) विद्रोह, बलवा, उपद्रव, हलचल।

गदरा (वि०) गद्दर, अधपका।

गदराना (क्रि० अ०) पकने के करीब आना, अधपका होना, आंखों में कीचड़ आना, आंखें उठने पर होना, युवावस्था का विकाश होना।

गदला (वि०) मैला, कनोर, गन्दा, मटमैला।

गदलाई (सं० स्त्री०) मटमैलापन, गन्दा पन।

गदशत्रु (वि०) वैद्य, औषध।

गदह (सं० पु०) गधा, खर, गदहा।

गदहपचीसी (सं० स्त्री०) १६ से २५ वर्ष तक की मनुष्य की आयु, इस समय के बीच में मनुष्य को कुछ अनुभव नहीं रहता और बुद्धि अपरिपक्व रहती है।

गदहपन (सं० स्त्री०) मूर्खता। [विशेष।

गदहपूरना (सं० स्त्री०) पुनर्नवा,एक घास, बूटी, औषधि

गदहलोटन (सं० पु०) गदहे का ज़मीन पर लोटना, वह ज़मीन जहाँ गदहा लोटे हो।

गदहा (वि०) वैद्य, चिकित्सक, (सं० पु०) गर्दभ, बैशाखनन्दन, गधा, मूर्ख,नसमझ।

गदहिया (सं० स्त्री०) गदही।

गदही (सं० स्त्री०) रासभी, गर्दभी, गदहे की मादा।

गदा (सं० स्त्री०) लोहे का एक अस्त्र, यह लाठी के समान होता है इसके सिर पर भारी लट्टू लगा रहता है।

गदाई (फ़ा० वि०) नीच, तुच्छ, क्षुद्र ।
गदाग्रज (सं० पु०) श्री कृष्ण, विष्णुभगवान ।
गदाधर (सं० पु०) विष्णु नारायण, श्री कृष्ण ।
गदायुध (सं० पु०) यष्टि, लाठो, गदा ।
गदायुद्ध (सं० पु०) युद्ध विशेष ।
गदारि(सं० पु०) रोग शत्रु, रोग नाशक, वैद्य ।
गदाला (सं० पु०) हाथी पर का गद्दा, मिट्टी खोदने का औजार विशेष ।
गदित (वि०) कथित,कहा हुआ । [रोग युक्त,रोगी ।
गदी (सं० पु०) विष्णु, नारायण (वि०) गदा विशिष्ट,
गदेल (सं० पु०) बच्चा, शिशु, गोद का बच्चा, दूध पीने वाला बच्चा । [बिछौना,लड़का, बच्चा ।
गदेला (सं० पु०) मोटा कपड़ा, रुई भरा हुआ मोटा
गद्गद् (वि०) देखो "गदगद" ।
गद्द (सं० पु०) कोमल स्थान पर किसी गरिष्ठ वस्तु के गिरने का शब्द, पेट में गुरु वस्तुओं के न पचने से भारीपन होना, (वि०) मूर्ख, जड़ ।
गद्दर (वि०) गदरा, अधपका ।
गद्दा (सं० पु०) रुई आदि भरा हुआ मोटा बिछौना ।
गद्दी (सं० स्त्री०) मोटा बिछौना, सिंहासन, तख़्त ।
गद्दीनशीन (वि०)तख़्तनशीन,सिंहासनारूढ़,उत्तराधिकारी ।
गद्य (सं० पु०) छन्द विहीन वाक्य, वार्तिक प्रबन्ध ।
गद्यात्मक (वि०) गद्य-विषयक ।
गधा (सं० पु०) गदहा, गर्दभ ।
गन (सं० पु०) देखो "गण" ।
गनई (क्रि० स०) गिनता है ।
गनगौर (सं० स्त्री०) चैत्र सुदी तीज, इस दिन गणेश और गौरी का पूजनादि होता है ।
गनती (सं० स्त्री०) गिनती ।
गनना (क्रि० स०) गिनना, गिनती करना (सं० स्त्री०) गणना,विवाह में वर कन्या के कुण्डली का मिलान ।
ग़नी (अ० वि०) धनवान, धनी ।
ग़नीमत (अ० सं० स्त्री०) मुफ़्त का माल, लूट का माल, बड़ी बात,धन्यवाद के योग्य बात,प्रसन्नता की बात ।
गन्तव्य (सं० पु०) गमन योग्य, सुगम, जाने का स्थान, गवन शील ।
गन्दना (सं० पु०) कन्द मूल विशेष, लहसुन की गांठ में जौ डाल कर बोने से पैदा होने वाली घास विशेष।

गन्दा (वि०) मैला, घिनौना,अशुद्ध ।
गन्ध (सं० पु०) महक, बास ।
गन्धक (सं० पु०) खनिज वस्तु विशेष, यह औषधि के काम में आता है । [गोली ।
गन्धकवटी (सं० स्त्री०) गन्धक मिला हुआ पाचक की
गन्धगर्भ (सं० पु०) बेल वृक्ष ।
गन्धद्रव्य (वि०) सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य ।
गन्धद्विप (सं० पु०) उत्तम हस्ति ।
गन्धपुष्प (सं० पु०) चन्दन और फूल ।
गन्धप्रिय (वि०)घ्राण लुब्ध,गन्धग्राही,महक का शौकीन ।
गन्धबणिक (सं०पु०) वर्ण संकर, जाति विशेष, अत्तार ।
गन्धमादन (सं० पु०) एक पर्वत का नाम, एक सुगंधित द्रव्य, भौंरा ।
गन्धराज (सं० पु०) एक सुगन्धित द्रव्य, चन्दन ।
गन्धर्व (सं० पु०) देवताओं का एक भेद, ये स्वर्ग में रहते हैं और इनका काम है गीत गाना, घोड़ा, कस्तूरी, मृग ।
गन्धर्वनगर (सं० पु०) गन्धर्वों का नगर, अलका, संध्या के समय पश्चिम ओर बादलों में फैली हुई लाली, मिथ्या भ्रम ।
गन्धर्वविद्या (सं० स्त्री०) संगीत विद्या, गान विद्या ।
गन्धर्वविवाह (सं० पु०) विवाह के अष्ट भेदों में से एक, वह विवाह जो वर बधू गुपचुप से कर लेते हैं ।
गन्धर्ववेद (सं० पु०) सङ्गीत शास्त्र ।
गन्धर्वी (वि०) गन्धर्व विषयक, (सं० स्त्री०) गन्धर्व की स्त्री, सुरभी की कन्या, घोड़ों की उत्पत्ति इसी से मानी जाती है ।
गन्धवह (सं० पु०)वायु, पवन, नाक । [नाक, नासिका ।
गन्धवाह (सं० पु०)पवन, वायु, हवा, कस्तुरिया, हरिन,
गन्धसार (सं० पु०) चन्दन, श्रीखण्ड ।
गन्धान (सं० पु०) सुवर्ण, सोना ।
गन्धाना (क्रि० स०) बदबू करना, बसाना, गन्ध देना ।
गन्धार (सं० पु०) स्वरों में रागिनी विशेष, देश विशेष, कन्धार, तीसरा स्वर,गन्धार ।
गन्धारी (सं० स्त्री०) देखो "गान्धारी" पार्वती की एक सखी का नाम, जवासा, गांजा, बाएं नेत्र से निकलने वाला श्वास ।
गन्धाश्मा (सं० पु०) गन्धक, उपधातु विशेष ।

गन्धि (सं० स्त्री०) गन्ध, वास, गन्धक ।
गन्धिकार (सं० स्त्री०) आहू वेर गन्धक ।
गन्धिकारिणी (सं० स्त्री०) लजारु, औषधि विशेष, लाजवन्ती ।
गन्धिपर्ण (सं० पु०) वृक्ष विशेष, जिसके पत्तों में गन्ध [हो, छतिवन वृक्ष ।
गन्धिलुब्ध (वि०) सुगन्धाभिलाषी, सुगन्धि लोलुप ।
गन्धी (सं० पु०) सुगन्धि, वस्तु विक्रेता, अतर बेंचने वाली जाति, एक घास, एक कीड़ा ।
गन्धीला (वि०) मैला गँदला ।
गन्य (वि०) गिनने के योग्य, गण्य, गिनती में, गिनती [करने लायक ।
गप (सं० पु०) झूठी बात, मन बहलाव की बात, गपोड़ इधर उधर की बात, अफवाह,झूठी खबर ।
गपकना (क्रि० स०) चट निगल जाना, झट से खा [जाना ।
गपड़ (सं० पु०) निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, मिश्रित, मिलावट ।
गपड़चौथ (सं० पु०) अनियमित, अनिश्चित, व्यर्थ ।
गपना (क्रि० स०) गप हांकना, इधर उधर की गपें उड़ाना, व्यर्थ की बातें मारना, बकबक करना ।
गपशप (सं० पु०) दिल बहलाव की बात, इधर उधर की बात ।
गपोड़ (वि०) गप्पी, मिथ्या बात करने वाला, डींग हाँकने वाला ।
गपोड़ा (सं० पु०) कपोल कल्पना, मिथ्या बात, गप [शप ।
गपोड़ेबाज़ी (सं० स्त्री०) झूठमूठ की बातें करना, निरर्थक बकवाद ।
गप्प (सं० स्त्री०) गप, गपशप, कपोल-कल्पित बात, अफ़वाह, झूठी बातें ।
गप्पी (वि०) बातुल, गल्पक, गप हाँकने वाला, मिथ्या- [वादी, झूठा ।
गप्फा (सं० पु०) बड़ा कौर, बड़ा ग्रास, फ़ायदा, लाभ ।
ग़फ़लत (अ० सं० स्त्री०) असावधानी, लापरवाही, भूल, भ्रम, प्रमाद ।
ग़बन (अ० सं० पु०) ख़यानत, दूसरे की धरोहर को [हड़प जाना ।
गबरगण्ड (वि०) मूढ़, मूर्ख, अनारी, जड़ ।
गबरू (वि०) युवा, जवान पट्ठा, भोला भाला, सीधा, (सं० पु०) पति, स्वामी, भर्ता, भतार ।
गबरून (सं० पु०) चारखाने का एक मोटा वस्त्र जो लुधियाने में बनता है ।
गबशन (सं० पु०) चर्मकार, चंडाल ।

गभस्ति (सं० पु०) किरन, सूर्य,बाँह, (सं० स्त्री०) स्वाहा
गभस्तिमत् (सं० पु०) सूर्य ।
गभीर (वि०) गहरा, अथाह, अगाध ।
गभुआर (वि०) गर्भ शिशु, नादान, जिस बालक का मुण्डन न हुआ हो उसका बाल, बालकों के जन्म के बाल, अंगुठिया बाल, झुप्पेदार बाल, घूघंर वाले बाल ।
गभुआरी (वि०) पेट की,गर्भ की ।
गम (सं० पु०) गति, गमन, चलना, मार्ग, राह, गुज़र, पैठ, प्रवेश, (अ० सं० पु०) शोक, दुःख रञ्ज ।
गमक (सं० पु०) बोधक, सूचक, जाने वाला, नगाड़े का शब्द,राग का एक स्वर,(सं०स्त्री०)सुगन्ध,वास,महक ।
गमकना (क्रि०) महकना, बास देना ।
गमकीला (वि०) सुगन्धित, गमकने वाला, गन्धवान ।
ग़मख़ोर (फा० वि०) सहनशील, सहिष्णु ।
ग़मख़ोरी (फा० सं० स्त्री०) सहनशीलता, सहिष्णुता ।
गमत (सं० पु०) राह, मार्ग, व्यवसाय ।
गमन (सं० पु०) यात्रा, भ्रमण, जाना, चलना, घूमना, [प्रस्थान ।
गमनपत्र (सं० पु०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिये अधिकार पत्र, चालान ।
गमना (क्रि० अ०) चलना, जाना, यात्रा करना, प्रयाण [करना ।
गमनागमन (सं० पु०) आना जाना, आवागमन ।
गमला (सं० पु०) मिट्टी का पात्र जिसमें फूलों के पेड़ लगाये जाते हैं ।
गमाना (क्रि० स०) गवांना, खोना, ग़ायब करना ।
गमार (सं० पु०) गवांर देहाती ।
ग़मी (अ० सं० स्त्री०) सोग, शोक, मरना, मृत्यु ।
गम्भारी (सं० स्त्री०) एक वृक्ष विशेष ।
गम्भीर (वि०) गहरा, अगाध, अथाह, गहन, घना ।
गम्भीरता (सं० स्त्री०) गाम्भीर्य, अगाधता का परिमाण, गहराई ।
गम्भीरत्व (सं० पु०) गम्भीरता, निम्नता, गहराई ।
गम्भीरवेदी (सं० पु०) मत्त हाथी, वह हाथी जो हाथीवान के वश में न हो ।
गम्मत (सं० स्त्री०) विनोद, मौज, बहार, हँसी दिल्लगी ।
गम्य (वि०) लभ्य, प्राप्य, भोग्य, जाने योग्य, चलने योग्य, गमन करने योग्य ।
गम्यमान् (वि०) अतिक्रान्त ।

गम्यागम्य (वि०) कर्तव्याकर्तव्य, साध्यासाध्य ।

गय (सं० पु०) घर, मकान, आकाश, शून्य, प्राण, धन, पुत्र, अपत्य, हाथी, एक राजर्षि का नाम, इनके पिता का नाम अमूर्तराय था, इन्होंने १०० वर्ष तक यज्ञ करके यज्ञान्न खाया था, ये बड़े दानी थे, ये प्रतिदिन एक लाख साठ हज़ार गौ, दस हज़ार घोड़े, और एक लाख निष्का एक मुद्रा, दान किया करते थे, इन्होंने एक बड़ा भारी यज्ञ किया था, जिसमें सुवर्ण निर्मित ३६ योजन की वेदी बनी थी, रामचन्द्र जी की बानरी सेना का एक बानर सेनापति, एक राक्षस, यह विष्णु का कट्टर भक्त था, गया नामक स्थान की स्थापना इसी के नाम पर हुई है ।

गयन्द (सं०पु०) बड़ा हाथी, गजेन्द्र, प्रधान हाथी ।

गयल (सं० स्त्री०) गली, कूचा, रास्ता, मार्ग ।

गया (सं० स्त्री०) हिन्दुओं का एक प्राचीन और प्रसिद्ध तीर्थ स्थान, जो बिहार प्रान्त में है ।

गयावाल (सं० पु०) गया के पण्डा ।

गयावाली (वि०) गया सम्बन्धी ।

गयासुर (सं० पु०) असुर विशेष ।

गर (सं० पु०) ग्यारह करणों में से एक, हलाहल विष, गरल, बछनाग, रोग, व्याधि ।

गरई (क्रि०) गल जाता है, सड़ता है, नम्र होता है ।

गरगराना (क्रि० अ०) कोलाहल करना, गरजना, ज़ोर से चिल्लाना ।

गरगरी (सं० स्त्री०) देव दाली, देव दारु वृक्ष ।

गरघ्न (वि०) विषघ्न, रोग नाशक । [ध्वनि ।

गरज (सं० स्त्री०) गर्जन, तर्जन, घोर शब्द, गम्भीर

ग़रज़ (अ० सं० स्त्री०) अभिप्राय, मतलब, प्रयोजन, आशय, आवश्यक । [विकट नाद करना ।

गरजना (क्रि० अ०) चिंघाड़ना, भयानक शब्द करना,

ग़रज़मन्द (फ़ा० वि०) ग़रज़ वाला, इच्छुक, चाहने वाला, आवश्यकता रखने वाला ।

गरजी (वि०) मतलबी, ग़रज़मन्द, इच्छुक, ग़रज़ वाला ।

गरजू (वि०) देखो "ग़रज़ी" ।

गरद (सं० स्त्री०) गर्द, धूर, गरदा, रज ।

गरदन (सं० पु०) गटई, गला, कण्ठ, ग्रीवा ।

गरदनी (सं० पु०) गरदाँव ।

गरदनिया (सं० स्त्री०) किसी के गले में हाथ लगाकर किसी स्थान से निकाल देना ।

गरदाँव (सं० पु०) गरदान ।

गरदा (सं० स्त्री०) गर्द, गरद, धूल, रज, ख़ाक ।

गरदान (सं० पु०) वह रस्सी जो जानवरों के गले में बाँधी जाती है ।

गरब (सं० पु०) गर्व, अभिमान, अहंकार, घमण्ड ।

गरबीला (वि०) घमण्डी, अभिमानी, अहंकारी ।

गरभ (सं० पु०) गर्भ, पेट, उदर, अहङ्कार, अभिमान ।

गरभपात (सं० पु०) देखो गर्भपात ।

गरम (वि०) तप्त, उष्ण, क्रुद्ध, कुपित ।

गरमाई (सं० स्त्री०) गरमी, उष्णता ।

गरमागरमी (सं० स्त्री०) तत्परता, जोश, उत्साह ।

गरमाना (क्रि० स०) गरम करना, औटना ।

गरमाहट (सं० स्त्री०) ताप, उष्णता, गरमी ।

गरमी (सं० स्त्री०) ताप, उष्णता, गरमाहट, उग्रता, प्रचण्डता ।

गरल (सं० स्त्री०) ज़हर, विष, सांप का ज़हर, सर्प विष, कालकूट, हलाहल ।

गरलारि (सं० पु०) पन्ना, मरकत, मणि ।

गरवा (वि०) भारी, बोझ, धीर, सज्जन ।

गरह (सं० पु०) देखो "ग्रह" ।

गरहन (सं० पु०) देखो "ग्रहण" ।

गराँव (सं० स्त्री०) गरदाँव, गरदनी, पगहे का वह भाग जो चौपायों के गले में रहता है ।

गराड़ी (सं० स्त्री०) काठ का बना हुआ रस्सी बटने का एक यंत्र, चरख़ी, घिरनी, कुएँ से पानी भरने का एक काठ या लोहे की बनी गोलाकार चरख़ी ।

गरारी (सं० पु०) देखो "गराड़ी" ।

गरिमा (सं० स्त्री०) आत्मश्लाघा, अहंकार, घमण्ड, गौरव, महत्व, महिमा, गुरुत्व, भारीपन, अष्ट सिद्धियों में से एक सिद्धि ।

गरिमान्वित (वि०) दम्भिक, अभिमानी ।

गरियार (वि०) हठी, आलसी ।

गरियाना (क्रि० अ०) गाली देना ।

गरिष्ट (वि०) अत्यन्त भारी, अति गुरु, जल्दी हज़म न होने वाला, जल्दी न पचने वाला, माननीय ।

गरी (सं० स्त्री०) नारियल के भीतर का भाग जो खाया जाता है, गोला, खोपड़ा ।

गरीब (वि०) कंगाल, दरिद्र, निर्धन, दीन, हीन, नम्र ।

ग़रीबनेवाज (फ़ा० वि०) ग़रीबों का दुःख हरने वाला, दयालु । [वाला ।

ग़रीबपरवर (फ़ा० वि०) दीन-रक्षक, ग़रीबों को पालने

गरीबामऊ (वि०) ग़रीबी के अनुकूल, भला बुरा ।

ग़रीबी (सं० स्त्री०) दीनता, दरिद्रता, नम्रता ।

गरीयसी (वि०) देखो "गरीयान्" ।

गरीयान् (वि०) अति गुरु, गरिष्ट, भारी ।

गरुअ (वि०) भारी, बोझा, बोझैला, बोझवाला ।

गरुआ (वि०) भारी, बोझैल ।

गरुआई (सं० स्त्री०) भार, बोझ, गुरुता ।

गरुड़ (सं० स्त्री०) पक्षिराज, ये कश्यप से विनता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, इनके जन्म की कथा यों है, एक बार पुत्र की इच्छा से कश्यप ने यज्ञ करने का विचार किया, यज्ञ की सामग्रियाँ एकत्रित करने में इन्द्र और बालखिल्य गण लग गये, इन्द्र ने बालखिल्यों की हँसी उड़ाई, इससे उन्होंने कुपित हो कर एक दूसरे इन्द्र को उत्पन करना चाहा पर कश्यप के समझाने बुझाने से वे शान्त हो गये, और उन्होंने कहा कि इन्द्र उत्पन्न करने की जो तुम्हारी इच्छा है वह पूर्ण होगी, अर्थात् जो पुत्र उत्पन्न होगा वह पक्षियों का इन्द्र होगा, इस प्रकार गरुड़ और अरुण बिनता के गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न हुए, गरुड़ विष्णु के वाहन हुए, और अरुण सूर्य के सारथी, स्वर्ग से अमृत लाकर गरुड़ ने अपनी माता को दासत्व से मुक्त किया था ।

गरुड़गामी (सं० पु०) विष्णु भगवान ।

गरुड़ध्वज (सं० पु०) विष्णु, नारायण, श्रीकृष्ण ।

गरुड़पुराण (सं० पु०) संस्कृत के एक पुराण का, नाम यह अठारहों पुराण में से है, इसमें यमपुरी और नरकों का वर्णन है, इसमें प्रेत कर्म की व्यवस्थाभी है ।

गरुड़ाग्रज (सं० पु०) अरुण, सूर्य का सारथी ।

गरुड़ासन (सं० पु०) गरुड़ पर का आसन, विष्णु ।

गरुत् (सं० पु०) पक्ष, पर, पख ।

गरुता (सं० स्त्री०) भारीपन, गुरुता, गम्भीरता, महत्व, बड़ाई ।

गरुव (वि०) भारी, गुरु, बोझइल ।

गरुवाई (सं० स्त्री०) देखो "गरुआई" ।

ग़रूर (अ० सं० पु०) अहंकार, अभिमान, घमण्ड ।

ग़रूरी (वि०) घमण्डी, अहंकारी, अभिमानी ।

गरोह (फा० सं० पु०) समूह, झुण्ड, गोल, यूथ ।

गर्ग (सं० पु०) एक वैदिक ऋषि, इनका जन्म अंगिरस भारद्वाज के वंश में हुआ था, एक प्राचीन ज्योतिषी, इन्होंने गर्गसंहिता और अन्य ज्योतिष के ग्रन्थ बनाये थे, बैल, बिच्छू, केचुआ ।

गर्गज (सं० पु०) गुमट, शिखर ।

गर्गया (सं० स्त्री०) पक्षि विशेष, गौरैया ।

गर्गरी (सं० स्त्री०) कलसी, गगरी, मथनी, माठ ।

गर्ज (सं० स्त्री०) देखो "गरज" ।

गर्जन (सं० पु०) देखो "गरजना" ।

गर्जना (क्रि० अ०) देखो "गरजना" ।

गर्जित (क्रि० वि०) गर्जा हुआ ।

गर्त (सं० पु०) गड़हा, गढ़ा, दरार, छिद्र, जलाशय, नरक विशेष ।

गर्द (फ़ा० सं० स्त्री०) देखो "गरद" ।

गर्दख़ोर (फ़ा० वि०) जो गरदा मट्टी, धूल आदि पड़ने से खराब न हो ।

गर्दन (सं० पु०) गला, गटई, गरदन ।

गर्दभ (सं० पु०) गदहा, गधा ।

गर्दिश (फ़ा० सं० स्त्री०) चक्कर, घुमाव, फेर ।

गर्द्ध (सं० पु०) लिप्सा, स्पृहा ।

गर्भ (सं० पु०) स्त्री के उदर का भीतरी भाग जिसमें बच्चा रहता है, गर्भाशय, भ्रूण, उदरस्थ शिशु, कुक्षि, उदर, पेट ।

गर्भकण्टक (सं० पु०) पनसफल, कटहल ।

गर्भकर (सं० पु०) पुत्रजीव वृक्ष, पीतिजया ।

गर्भकाल (सं० पु०) गर्भ धारण के लिए उपयुक्त समय, ऋतुकाल ।

गर्भगृह (सं० पु०) घर का मध्य भाग, आँगन ।

गर्भघातिनी (सं० स्त्री०) गर्भ का नाश करने वाली स्त्री, लांगलि का वृक्ष ।

गर्भघाती (वि०) गर्भ से गिरने वाला ।

गर्भच्युत (वि०) गर्भ से पतित, अपूर्ण गर्भ से उत्पन्न ।
गर्भज (वि०) गर्भ से उत्पन्न, गर्भ से होने वाला ।
गर्भदास (सं० पु०) दासी-पुत्र, जन्म से दास ।
गर्भधारिणी (सं० स्त्री०) गर्भवती, माता ।
गर्भपात (सं० पु०) गर्भ गिरना, गर्भ-नाश ।
गर्भवती (सं० स्त्री०) गर्भिणी, गुर्विणी, गाभिन ।
गर्भवास (सं० पु०) गर्भाशय । [हो ।
गर्भशय्या (सं० स्त्री०) वह स्थान जहां गर्भ की उत्पत्ति
गर्भस्थ (वि०) गर्भ में स्थित ।
गर्भस्राव (सं० पु०) गर्भ-पात ।
गर्भहत्या (सं० पु०) भ्रूण-हत्या ।
गर्भागार (सं० पु०) गृह के बीच की कोठरी, आंगन, गर्भगृह, सूतिका गृह, गर्भपात ।
गर्भाङ्क (सं० पु०) नाटक के एक अङ्क के एक दृश्य की समाप्ति और दूसरे दृश्य के आरम्भ के बीच में जो एक अङ्क का दृश्य दिखलाया जाता है वह दृश्य ।
गर्भाधान (सं० पु०) गर्भ धारण करने के लिए ऋतुमती होने के बाद जो संस्कार किया जाता है ।
गर्भाशय (सं० पु०) उदर के भीतर का भाग जिसमें बच्चा रहता है ।
गर्भाष्टम (सं० पु०) गर्भ होने से आठवां मास, आठवां वर्ष । [गर्भवती ।
गर्भिणी (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो,
गर्भित (वि०) उदरस्थ, भरा हुआ, पूर्ण ।
गर्रा (वि०) लाख के रंग का, रुहेलखंड की एक नदी ।
गर्व (सं० पु०) अभिमान, घमण्ड, अहंकार, दर्प ।
गर्वजनक (वि०) अहंकार-जनक, दर्पान्वित ।
गर्वाना (क्रि० अ०) घमण्ड करना, अहङ्कार करना अभिमान करना ।
गर्वान्वित (वि०) अहङ्कारी ।
गर्वित (सं० स्त्री०) नायिका विशेष, वह नायिका जिसको अपने रूप या प्रेम का गर्व हो ।
गर्विष्ठा (वि०) अभिमानी, अहङ्कारी, घमण्डी ।
गर्वी (वि०) अहंकारी, घमण्डी ।
गर्वीला (वि०) गर्वी, घमण्डी, अहंकारी ।
गर्हित (वि०) दूषित, निन्दित, तिरस्कृत । [विशेष ।
गल (सं० पु०) गला, गरदन, गटई, गाल, एक मत्स्य
गलका (सं० पु०) फोड़ा ।
गलगण्ड (सं० पु०) गण्डमाल, एक रोग जिससे गले में मास लटक आता है । [एक प्रकार का खट्टा नीबू ।
गलगल (सं० पु०) पक्षी विशेष, सिगोटी, चकोतरा,
गलगला (वि०) भीगा, तर, आर्द्र ।
गलगलाना (क्रि० अ०) भीगना, गीला होना ।
गलगलिया (सं० स्त्री०) एक पक्षी जिसको सिरोही या किलहटी कहते हैं ।
गलगुच्छा (सं० पु०) दोनों गलपट के बढ़े हुए बाल जो शौक से रक्खा जाता है, गलमुच्छा ।
गलग्रह (सं० पु०) वे तिथियाँ जिनमें अध्ययन का शास्त्रानुसार निषेध हो, गले का एक रोग, उपद्रव, उत्पात । [जिसके कोई सन्तान न हो ।
गलतंस (सं० स्त्री०) वह व्यक्ति या उसकी सम्पत्ति
ग़लत (अ० वि०) अशुद्ध, झूठ ।
गलतकिया (सं० स्त्री०) गालों के नीचे रक्खी जाने वाली तकिया । [रस्सी ।
गलतर्नी (सं० स्त्री०) पगहा, गेराँव में बाँधी जानी वाली
गलता (सं० पु०) एक रेशमी और सूती वस्त्र जो धारीदार और चमकीला होता है ।
ग़लती (सं० स्त्री०) अशुद्धि, भूल, धोखा, चूक ।
गलना (क्रि० अ०) पिघलना, घुलना, हाथ पैर ठिठुरना, शरीर सूखना, नरम होना ।
गलन्दा (सं० पु०) कुटभाषी ।
गलफटाकी (सं० स्त्री०) आत्मश्लाघा, बड़ाई, घमण्ड ।
गलफड़ा (सं० पु०) जबड़ा, जलचरों का पानी में सांस लेने वाला अवयव, दोनों जबड़ों के बीच गाल पर का मांस ।
गलफाँसी (सं० स्त्री०) जंजाल, झंझट, दुःखदायी कार्य ।
गलबल (सं० पु०) हल्ला, कोलाहल, खलबली ।
गलबाँह (सं० स्त्री०) गोद, आलिङ्गन ।
गलबाँहियां (सं० स्त्री०) गले में हाथ डालना, एक दूसरे के गले में हाथ लगाकर चलना ।
गलमुच्छा (सं० पु०) देखो "गलगुच्छा" ।
गलभंग (वि०) स्वर बद्ध, बैठा हुआ कंठ । [करना ।
गलवाना (क्रि० स०) पिघलवाना, गलाने में प्रवृत्त
गलसूई (सं० स्त्री०) गलतकिया, गालों के नीचे रक्खी जाने वाली तकिया ।

गलस्तन (सं० पु०) स्तनाकार दो छोटी थैलियाँ जो बकरी के गले के पास लटकती रहती हैं, गलथन ।

गलस्तनी (सं० स्त्री०) बकरी, अजा ।

गलहड़ (सं० पु०) रोग विशेष ।

गलहस्त (सं० पु०) गला घोटना, गला दबाना, गले में हाथ लगाकर निकाल देना ।

गलही (सं० स्त्री०) नाव का अगला भाग ।

गला (सं० पु०) कण्ठ, गरदन, गटई, शब्द, आवाज़ ।

मुहा०—गला काटना = अत्यंत कष्ट पहुँचाना । गला घुँटना = अच्छी तरह सांस न लिया जाना । गला दबाना = ज़बरदस्ती करना । गला पड़ना = मुँह से घरघराहट के साथ शब्द निकलना । गला फाँसना = बंधन में डालना । गले का बोझ = व्यर्थ का भार । गले का हार = अत्यन्त प्रिय । गला घोटना = गले को ऐसा दबाना कि साँस रुक जाय । गले मढ़ना = ज़बरदस्ती देना । गले लगाना = इच्छा के विरुद्ध किसी को कोई वस्तु देना । गला बैठना = शब्द का भारी होना । गले पड़ी बजाये सिद्ध = अनिच्छा पूर्वक किसी काम को करना ।

गलाना (क्रि० स०) द्रव करना, पिघलाना, पुलपुला करना, व्यय कराना, नरम करना, घुलाना ।

गलानि (सं० स्त्री०) अपनी करनी पर पश्चात्ताप या खिन्नता, अपनी करतूत पर लज्जा, दुःख, पश्चात्ताप, क्षोभ ।

गलाव (सं० पु०) द्रव, पिघलन, गलने की क्रिया ।

गलासी (सं० स्त्री०) पगहा, पशु बाँधने की रस्सी ।

गलित (वि०) गला हुआ, सड़ा हुआ, पतित, च्युत, भ्रष्ट, जीर्ण, खण्डित ।

गलितकुष्ट (सं० पु०) असाध्य कुष्ट, वह कुष्ट जिसमें अङ्ग गल गल कर गिरें ।

गलितयौवना (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसकी जवानी ढल [गयी हो ।

गलियाना (क्रि० अ०) गाली देना, गले में ज़बरदस्ती ठूंसना ।

गलियारा (सं० पु०) तङ्ग गली, पैंड़ा ।

गलियारी (सं० स्त्री०) गली, कूचा ।

गली (सं० स्त्री०) खोरी, कूचा, तङ्ग रास्ता ।

मुहा० = गली गली मारे फिरना = इधर उधर व्यर्थ घूमना । गली झँकाना = इधर उधर हैरान करना ।

गलीचा (सं० पु०) एक प्रकार का सूती या ऊनी मोटा बिछौना जिस पर रंग बिरंगे बेल बूटे बने रहते हैं ।

ग़लीज़ (अ० वि०) गन्दा, मैला, अशुद्ध ।

गलेफ (सं० पु०) तकिया की खोल, लिहाफ़, बड़ी रज़ाई, म्यान ।

गलैचा (सं० पु०) देखो "गलीचा" ।

गलौआ (सं० पु०) गाल ।

गल्प (सं० स्त्री०) गप्प, डींग, शेखी, कल्पित कथा, किस्सा कहानी ।

गल्ला (सं० पु०) अन्न की राशि, अन्न, अनाज, उपज, [पैदावार ।

गल्लाला (सं० पु०) कुल्ली का काढ़ा ।

ग़ल्लाफरोश (फ़ा० सं० पु०) अन्न की दूकान करने वाला, अन्न बेचने वाला ।

गल्ली (सं० स्त्री०) गली, कूचा, खोरी ।

गँव (सं० पु०) दाँव, घात, मौका प्रयोजन, मतलब, [अवसर ।

गवन (सं० पु०) जाना, चलना, प्रस्थान, गति, प्रयाण ।

गवना (सं० पु०) विवाहित स्त्री का पहली बार पति के घर आना ।

गवनी (सं० स्त्री०) चलने वाली, गयी ।

गवय (सं० पु०) नील गाय ।

गवर्नमेण्ट (अ० सं० स्त्री०) सरकार, शासक मंडल, [शासन पद्धति ।

गवहिं (क्रि० वि०) प्रयोजन से, मौके से ।

गवाक्ष (सं० पु०) जंगला, झरोखा, गौंखा, खिड़की ।

गवांना (क्रि० स०) खोना, नष्ट करना, गाने कराना ।

गवारा (फ़ा० वि०) सह्य, मनमाना, अनुकूल, पसंद ।

गवासा (सं० पु०) कसाई, गोभक्षक ।

गवाह (फ़ा० सं० पु०) साक्षी, साखी ।

गवाही (फ़ा० सं० स्त्री०) साक्ष्य, साक्षी का कथन ।

गवेधुका (सं० स्त्री०) नया धान्य विशेष ।

गवेषणा (सं० स्त्री०) ढूँढ़ना, छानबीन, पता, अनुसाधन । [अन्वेषण ।

गवैया (वि०) गाने वाला ।

गवैंहा (वि०) ग्रामीण, देहाती, गवांर ।

गव्य (सं० पु०) गौ से उत्पन्न द्रव्य घी, दूध, दही, माखन, गोबर, गोमूत्र आदि ।

गव्यति (सं० स्त्री०) दो कोस, चार मील ।

ग़श (अ० सं० पु०) मूर्च्छा, बेहोशी ।

गश्त (फ़ा० सं० पु०) भ्रमण, दौरा, घूमना, फिरना ।

गसना (क्रि० स०) गोठना, जकड़ना, बाँधना, घेरना ।

गसीला (वि०) गठा हुआ, आपस में मिला हुआ, जकड़ा हुआ।
गस्तान (सं० स्त्री०) कुलटा, व्यभिचारिणी।
गस्सा (सं० पु०) ग्रास, कौर।
गह (सं० स्त्री०) बेंट छपकंडा (क्रि० स०) पकड़ करो, पकड़ो, धरो।
गहई (क्रि० स०) पकड़ते हैं, धरते हैं, पकड़ना, धरना, गहना।
गहक (सं० स्त्री०) उन्मत्तता, अमल।
गहकना (क्रि० अ०) लपकना, ललकना, लहकना।
गहगड्ड (वि०) घोर, भारी, गहरा।
गहगह (वि०) उछाह से भरा, प्रफुल्लित, प्रसन्नतायुक्त, उमंगपूर्ण।
गहगहा (वि०) उछाह से और आनन्द से परिपूर्ण, प्रफुल्लित।
गहगहाना (क्रि० अ०) आनन्दित होना, उमगना, लहलहाना, हिलोरना, लहकाना, प्रफुल्लित होना।
गहगहे (क्रि० वि०) बड़े हर्ष के साथ, बड़ी प्रसन्नता से।
गहन (सं० पु०) वन, कानन, जंगल, दुर्गम, गहराई, थाह, ग्रहण, कलंक , विपत्ति, दुःख, जल, बंधन रेहन, (वि०) गंभीर, गहरा, अथाह।
गहनकर (सं० पु०) मत्त होना, उमगना, पकड़कर आनन्दित होना।
गहना (सं० पु०) आभूषण, अलङ्कार, बंधक, रेहन, (क्रि० स०) लेना, धरना, पकड़ना, थामना,।
गहनी (सं० स्त्री०) सन, पलास, पशु रोग विशेष।
गहने (क्रि० वि०) बंधक, धरोहर में, रेहन में।
गहबर (वि०) विषम, दुर्गम, व्याकुल, उद्विग्न, सघन, (सं० पु०) जङ्गल, खोह, घना वन।
गहरवार (स० पु०) क्षत्रिय जाति विशेष।
गहरा (वि०) गम्भीर, अगाध।
गहराई (सं० स्त्री०) गंभीरता, अगाधपन।
गहरापन (सं० पु०) देखो "गहराई"।
गहरापा (सं० पु०) देखो "गहराई"।
गहराव (सं० पु०) गहराई, गम्भीरता।
गहरु (सं० स्त्री०) विलम्ब, देर।
गहरे (क्रि० वि०) यथेच्छ, अच्छी तरह।
गहरेबाजी (सं० स्त्री०) एक्के के घोड़े की खूब तेज़ चाल।
गहल (सं० पु०) अंगूरों का गुच्छा।
गहलौत (सं० पु०) क्षत्रियों की एक जाति।
गहवा (सं० पु०) सँड़सी, चिमटा।
गहवाना (क्रि० स०) पकड़वाना, धरवाना।
गहवार (सं० पु०) देखो "गहरवार"।
गहवारा (सं० पु०) झूला, पालना, हिंडोला।
गहवैया (वि०) पकड़ने वाला।
गहागह (क्रि० वि०) देखो "गहगह"।
गहाना (क्रि० स०) पकड़वाना, धराना।
गहिरा (वि०) गहरा, गम्भीर, अथाह।
गहिराई (सं० स्त्री०) गहराई।
गहीला (वि०) उन्मत्त, पागल, घमंडी, गर्बीला।
गहैया (वि०) पकड़ने वाला, ग्रहण करने वाला, स्वीकृत करने वाला।
गह्वर (सं० पु०) गुहा, कन्दरा, गुफा, गुप्त स्थान, दुर्गम स्थान, लता गृह, कुञ्ज, वन, झाड़ी, दम्भ, पाखण्ड, दुर्गम्य विषय, कठिन विषय, (वि०) दुर्गम, विषम।
गा (क्रि०) चलागया, गया।
गाई (सं० स्त्री०) गौ, गाय।
गांऊ (सं० पु०) गांव, ग्राम, पुरवा, (क्रि० स०) गान करूं।
गाछना (क्रि० स०) पिरोना, गूंथना, गांथना।
गांज (सं० पु०) ढेर, राशि, टाल।
गांजना (क्रि० स०) टाल लगाना, राशि लगाना, ढेर लगाना।
गांजा (सं० पु०) भांग की कली।
गांझा (सं० पु०) देखो "गांजा"।
गांठ (सं० पु०) जोड़, सन्धि, गिरह, गिलटी।
मुहा०—गांठ खुलना = उलझन मिटना। गांठ पड़ना = मनमोटाव होना। गांठ का पूरा आँख का अन्धा = धनी निर्बुद्धि। गांठ का पूरा = धनी, मालदार। गांठ खोलना = उलझन मिटाना, कठिनाई दूर करना। गांठ उखड़ना = किसी अङ्ग का अपने जोड़ पर से हट जाना। गाँठ गठीला = हट्टा कट्टा, गांठदार।
गांठकट (सं० पु०) गिरहकट, ठग।
गांठगोभी (सं० स्त्री०) गोभी विशेष।
गांठदार (वि०) बहुत से गांठ वाला, गठीला।
गांठना (क्रि० स०) गाँठ लगाना, बांधना, रोब जमाना, वश में करना, प्रभुत्व जमाना, जोड़ना, साटना, मिलाना।
गाँड़ (सं० स्त्री०) गुदा, गुह्य, अपान।

मुहा०—गाँड़ की खबर न होना=सुध व चेत न होना । गाँड़ के नीचे गङ्गा बहना=अधिक ऐश्वर्य्य होना । गाँड़ घिसना=बड़ा उद्योग करना । गाँड़ चलना=दस्त आना । गाँड़ चाटना=खुशामद करना । गाँड़ फाड़ना=डराना, धमकाना । गाँड़ में उंगली करना=छेड़ना, छकाना । गाँड़ में मिरचें लगना=बुरा लगना ।

गाँडर (वि०) गहरा, गड़हे का ।

गांड़र (सं० पु०) एक प्रकार की घास, कास ।

गांड़ा (सं० पु०) गड़ेरी, ईख, गन्ना ।

गांड़ी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की घास । [वाला ।

गाँडू (वि०) गुदा भंजन कराने वाला, गुदा मैथुन कराने

गांथना (क्रि० स०) गूंथना, बनाना, गूंधना, मोटी सिलाई करना, जोड़ना, गांठना ।

गांव (सं० पु०) नगर, ग्राम, पुरवा, बस्ती ।

गांवना (क्रि०) गान करना । [मालिन्य, बैर, शत्रुता ।

गांस (सं० पु०) रोक टोक, बंधन, ईर्षा, द्वेष, मनो-

गांसना (क्रि० स०)गाँठना,कसना,गूंधना,छेदना चुभोना, ठस करना,वश में रखना, बरमाना,छिद्र बन्द करना ।

गाँसी (सं० स्त्री०)हथियार के आगे का भाग, नोक, धार, तीक्ष्णता, गांठ, मनोमालिन्य, छल, कपट ।

गाँहक (सं० पु०) ग्राहक, गहकी, ख़रीददार ।

गाऊघप्प (वि०) जमामार, दूसरे का माल हड़प जाने वाला, उड़ाऊबीर, अधिक व्यय करने वाला ।

गागर (सं० पु०) घड़ा,कलश,गगरी,घट । [जाति विशेष ।

गागरा (सं० पु०) घड़ा, कलशा, गगरी, भंगियों की एक

गागरी (सं० स्त्री०) गगरी, घड़ा, घट, कलशी ।

गाङ्ग (सं० पु०) भीष्म, कार्तिकेय, बरसाती जल, धतूरा, सुवर्ण, सागर, (वि०) गङ्गा से सम्बन्ध रखने वाला ।

गाङ्गेय (सं० पु०) भीष्म पितामह, सोना, धतूरा, कार्तिकेय, दक्षिणात्य एक राजवंशी, इस वंश वालों ने कोल्हापुर बसाया, जगन्नाथ जी का प्रसिद्ध मन्दिर इसी वंश के राजा अनंगभीमदेव ने बनवाया था ।

गाछ (सं० पु०) पेड़, पौधा, वृक्ष ।

गाछी (सं० स्त्री०) बधिया, बैल आदि लादने वाले जानवरों के पीठ पर जो बोरा रक्खा जाता है, खजूर का मुलायम कोंपल ।

गाज (सं० पु०) फेन, झाग, बिजुली, वज्र, गरजन, गर्जन ।

गाजना (क्रि० अ०) गरजना, चिंघाड़ना, हुंकारना, चिल्लाना, प्रसन्न होना, प्रफुल्लित होना ।

गाजर (सं० पु०) गजरा, एक मूल विशेष ।

गाजाबाजा (सं० पु०) अनेक प्रकार के बाजे, वह उत्सव जिसमें नाच गान बाजा आदि पूरे तौर से हो ।

गाज़ी (अ० सं० पु०) विधर्मियों से युद्ध करने वाला, मुसलमान वीर पुरुष, शूरवीर, बहादुर ।

गाटा (सं० पु०) छोटा खेत, पयाल दाने के लिये बैलों की नधाई ।

गाड़ (सं० पु०) गड्ढा,गड़हा, खत्ता, भगाड़, मेड़ ।

गाड़तोप (सं० स्त्री०) मिट्टी देना, दफनाना, बुरी और निन्दित बात को छिपाना ।

गाड़ना (क्रि० स०) ज़मीन में गढ़ा करके उसमें कोई वस्तु डाल कर ऊपर से मिट्टी डालना, तोपना, छिपाना, दफनाना ।

गाड़र (सं० स्त्री०) भेड़, मेष ।

गाड़रु (सं० पु०) सांप झाड़ने वाला, सर्प का विष उतारने वाला, सांप का विष उतारने का मन्त्र जानने वाला ।

गाड़हिं (क्रि०) गाड़ते हैं, तोपते हैं ।

गाड़ा (सं० पु०) खत्ता, गर्त, गढ़ा, छोटी गाड़ी ।

गाड़ी (सं० स्त्री०) शकट, यान, रथ, छकड़ा ।

गाड़ीखाना (सं०स्त्री०) गाड़ी रखने का स्थान ।[सारथी ।

गाड़ीवान (सं० पु०) कोचवान, गाड़ी हाँकने वाला,

गाढ़ (सं० पु०) घना, गाढ़ा, दृढ़, अतिशय, अधिक, कठिन, विकट, दुर्गम, जञ्जाल, झंझट, बिपत्ति,वेदना, कष्ट ।

गाढ़ता (सं० स्त्री०) घनता, गाढ़ापन ।

गाढ़ा (वि०) जो तरल न हो, जमा हुआ, पोढ़ा, ठस, ठोस, घनिष्ट, घना, दृढ़, विकट, प्रचण्ड, दुरूह ।

गाढ़ालिङ्गन (सं० पु०) अकवार, भेंट, आलिङ्गन ।

गाढ़े (क्रि० वि०) मज़बूती से, दृढ़ता से, भली भाँति, अच्छी तरह ।

गाणपत (वि०) गण के स्वामी का, सेना के स्वामी का, गणेश सम्बन्धी ।

गाणपत्य (सं० पु०) गणेश का उपासक ।

गाणिका (सं० पु०) वेश्याओं का समूह ।

गाणेश (वि०) गणेश को पूजने वाला ।

गाण्डीव (सं० पु०) अर्जुन का धनुष।
गाण्डीवधार (सं० पु०) अर्जुन।
गाण्डीवी (सं० पु०) अर्जुन।
गात (सं० पु०) देह, शरीर, अङ्ग, तनु।
गाता (सं० पु०) गाने वाला, गवैया, जिल्द, पुट्ठा।
गातामतिक (क्रि० वि०) आने जाने के कारण।
गातानुगतिक (वि०) अन्ध विश्वास पूर्वक किसी उदाहरण या रीति रवाज का अनुसरण करने वाला।
गाती (सं० स्त्री०) चद्दर ओढ़ने का एक तरीका, चद्दर को सब अङ्गों में लपेट कर गले में बांधना।
गातु (सं० पु०) गवैया, कोयल, भौंरा, पथिक, पृथ्वी।
गात्र (सं० पु०) अङ्ग, शरीर, तन।
गात्रकण्डू (सं० स्त्री०) शरीर की खुजलाहट।
गात्रभङ्गी (सं० स्त्री०) शरीर की विकृति, आकार।
गात्रलेपनी (सं० स्त्री०) अङ्ग लेपन, उबटन।
गात्रवेदना (सं० स्त्री०) अंग पीड़ा, **गात्रसंवाहन** (स० पु०) शरीर रचना।
गाथक (वि०)कथक, गवैया, गायक।
गाथना (क्रि० स०) गूंधना, गूंथना, बनाना, पोहना, पिरोना, जोड़ना। [कहानी, श्लोक, छन्द।
गाथा (सं० स्त्री०) स्तुति, वृत्तान्त, हाल कथा गीत,
गाथें (क्रि० स०) गूंधे, गूथें, पिरोयें,पोहें।
गाद (सं०स्त्री०) तलछट, कीट, मैल।
गादना (क्रि० स०) दृढ़ करना, ठासना, दबाना।
गादर (सं० पु०) कायर, डरपोक, भीरु, राशि, ढेर।
गादा (सं० पु०) मटर आदि का होरहा, कच्चा अन्न।
गादी (सं० स्त्री०) गद्दी, सिंहासन, तख़्त, एक पकवान विशेष।
गादीस्वामी (सं० पु०) समुदाय का बड़ा महन्त।
गादुर (सं० पु०) चमगादड़। [का बहाव।
गाध (सं० पु०)लिप्सा, लोभ, स्थान, थाह, तट, नदी
गाधा (सं० स्त्री०) गायत्री स्वरूप महादेवी।
गाधि (सं० पु०) चन्द्रवंशी राजा का नाम, इनके पिता का नाम कुशिक था, विख्यात तपस्वी विश्वामित्र इन्हींके पुत्र थे।
गाधिज (सं० पु०) विश्वामित्र।
गाधिनन्दन (सं० पु०) विश्वामित्र।
गाधिपुर (सं० पु०) कान्य कुब्ज देश।
गाधिसुवन (सं० पु०) विश्वामित्र।
गाधेय (सं० पु०) विश्वामित्र।
गान (सं० पु०) गाना, गीत, संगीत। [छेड़ना
गाना (क्रि० स०) अलापना, वर्णन करना, कहना, तान
गांधर्व (वि०) गंधर्व सम्बन्धी, (सं० पु०) स्त्री पुरुष का स्वेच्छानुसार बिवाह कर लेना, एक प्राचीन देश का नाम, गान।
गांधर्वविद्या (सं० स्त्री०) देखो "गंधर्व विद्या"।
गांधर्व बिवाह (सं० पु०) देखो" गन्धर्व बिवाह"।
गान्धार (सं० पु०) संगीत स्वर विशेष, जम्बू द्वीप का उत्तरीय भाग, इसकी सीमा पेशावर से लेकर कंधार तक मानी जाती थी, यहां के भेड़ों का उल्लेख ऋग्वेद में भी पाया जाता है।
गान्धारी (सं० स्त्री०) गान्धार देश के राजा सुबल की कन्या, ये धृतराष्ट्र को ब्याही गयी थीं, इनकी गणना पतिव्रताओं में है, पति के अंधे होने के कारण इन्होंने भी अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली थी, इन्होंने तप करके शिव को प्रसन्न किया था और सौ पुत्र होने का बर भी शिवजी से पाया था, दुर्योधन इन्हीं का पुत्र था। भोजवंशीय राजा क्रोटु की स्त्री, इनके पुत्र का नाम था अनमित्र, पार्वती की एक सखी का नाम,जैनों का एक शासक देवता विशेष, एक रागिनी विशेष, जवासा, गाँजा, मादक द्रव्य विशेष।
गांधिक (सं० पु०) गंधी, अत्तार, गन्ध द्रव्य। [धान।
ग़ाफ़िल (अ० वि०) बेखबर, लापरवाह, बेसुध, असाव-
गाभ (सं० पु०) गर्भ, पेट।
गाभा (सं० पु०) नया कोपल, नया पत्ता, नया कल्ला।
गाभिन (सं० स्त्री०) गर्भिणी, गर्भवती।
गाम (सं० पु०) गांव, ग्राम।
गामिनी (सं० स्त्री०) जाने वाली, गमन करने वाली।
गामी (वि०) जाने वाला, गमन करने वाला।
गामुक (वि०) गमन करने वाला, गामी। [स्थिरता।
गाम्भीर्य (सं० पु०) धीरता, शान्ति, गम्भीरता,
गाय (सं० स्त्री०) गौ, गो, गइया, धेनु।
गायक (वि०) गवैया।
गायगोठ (सं० पु०) गौशाला, गाओं के रहने का बाड़ा।
गायगोरू (सं० पु०) गोसमूह, गोशाला।

गायत्री (सं० स्त्री०) वैदिक छन्द विशेष, यह तीन पद का होता है और प्रत्येक पद में आठ आठ अक्षर रहते हैं, एक पवित्र मन्त्र, उपनयन संस्कार होते समय इस मन्त्र का उपदेश दिया जाता है, इसका बड़ा महत्त्व है, जो ब्राह्मण गायत्री का जप नहीं करता, वह पतित समझा जाता है, यह नित्यकर्मों में है। पद्म पुराण में गायत्री को ब्रह्मा की स्त्री लिखा है, षड़ाक्षरों की एक वर्ण वृत्ति, गङ्गा, दुर्गा, भगवती खैर।

गायन (सं० पु०) गवैया, गाने वाला।

ग़ायब (अ० वि०) लापता, गुम, गुप्त।

गार (सं० स्त्री०) गाली।

ग़ारत (अ० वि०) तहस नहस, मटियामेट, बरबाद।

गारद (सं० स्त्री०) सिपाहियों का झुण्ड, पहरा, चौकी।

गारना (क्रि० स०) निचोड़ना, दबा कर निकालना, दुहना, त्यागना, निकालना, दूर करना।

गारा (सं० पु०) गिलावा, चहला, ईंट जोड़ने के लिये डाल कर गीला किया हुआ चूना सुर्खी या मिट्टी।

गारि (सं० स्त्री०) देखो "गारी"।

गारी (सं० स्त्री०) गार, गाली, कुवाच्य।

गारुड़ (सं० पु०) साँप का विष उतारने वाला, सर्प का विष दूर करने का मन्त्र, सेना की व्यूह रचना, मरकत मणि, पन्ना, सोना, एक पुराण का नाम, गरुड़ पुराण, एक अस्त्र विशेष।

गारूड़ी (सं० स्त्री०) देखो "गारुड़"।

गारुत्मत (सं० पु०) पन्ना, मरकत, गरुड़ का अस्त्र।

गार्गी (सं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री, इसका जन्म गार्ग गोत्र में हुआ था।

गार्हपत्याग्नि (सं० स्त्री०) छः प्रकार के अग्नि में से प्रधान अग्नि, अग्निहोत्र वालों के लिए इस अग्नि को जीवित रखना अत्यन्त आवश्यक है।

गार्हस्थ्य (सं० पु०) गृहस्थाश्रम, गृहस्थ-सम्बन्धी।

गाल (सं० पु०) गण्ड, कपोल, छल, कपट।

मुहा०—गाल फुलाना = अभिमान प्रगट करना। गाल बजाना = बढ़ बढ़ कर बात करना। गाल मारना = डींग हांकना, कौर मुँह में डालना। गाल में जाना = मुंह में पड़ना।

गाल गूल (सं० पु०) अनाप शनाप व्यर्थ की बात।

गालव (सं० पु०) एक ऋषि का नाम, इन्होंने विश्वामित्र के यहाँ अध्ययन किया था।

गाला (सं० पु०) धुनी हुई रूई का गोला, रूई की फली जो कपास के फटने पर निकलती है।

गाली (सं० स्त्री०) कुवाच्य, दुर्वचन, फूहड़ बात।

गालीगलौज (सं० स्त्री०) गाली, दुर्वचन, गाली गुफ़्ता।

गालीगुफ़्ता (सं० स्त्री०) गाली गलोज, दुर्वचन, गाली।

गालु (सं० पु०) टेंट, गाल।

गालघप्पू (वि०) स्वार्थी, चापलूस।

गावदी (वि०) अज्ञान, नासमझ, उजबक, भोला, जड़, अबोध।

गावदुम (सं० पु०) चढ़ाव उतार, ढालू।

गाल (सं० पु०) आपत्ति, संकट, दुःख, क्लेश।

गावहि (क्रि० स०) गाता है। [गाहक, ग्राहक।

गाह (सं० पु०) मगर, ग्राह, मक्र, (वि०) दुर्गम, गहन,

गाहक (सं० पु०) ग्राहक, खरीददार, मोल लेने वाला, चाहने वाला, इच्छुक, प्रेमी।

गाहकी (सं० स्त्री०) बिक्री, गाहक।

गाहन (सं० पु०) स्नान, नहान। [करना।

गाहना (क्रि० स०) ढूँढ़ना, मथना, थाह लेना, क्षुब्ध

गाहा (सं० स्त्री०) कथा, गाथा, चरित्र, वर्णन।

गाहिगाहि (क्रि०) ढूँढ़ ढूँढ़ कर।

गाही (सं० स्त्री०) पाँच की संख्या, पञ्च संख्या परिमित, गण्डा, पाँच वस्तुओं का समूह। [ग्वालिन।

गिंजाई (सं० स्त्री०) एक प्रकार का कीट, घिनौरी,

गिआन (सं० पु०) ज्ञान, बुद्धि, चेतनता बोध।

गिचपिच (वि०) अस्पष्ट, कचपच, खिचड़ी, भीड़भाड़।

गिचपिचिया (वि०) अस्पष्ट बोलने वाला, कचपचिया।

गिचिरपिचिर (वि०) किचिरपिचिर, मिला जुला, गिचपिच। [खाद्य वस्तु।

गिज़ा (अ० सं० स्त्री०) खोराक, भोजन, भक्ष्य वस्तु,

गिटकारी (सं० स्त्री०) गिटकिरी।

गिटकिरी (सं० स्त्री०) टुकड़े, गिड़गिड़ी, गिट्टी।

गिटकौरी (सं० स्त्री०) कंकड़ी, पत्थर के टुकड़े।

गिटपिट (सं० स्त्री०) अस्पष्ट शब्द, निरर्थक शब्द।

गिट्टा (सं० पु०) कंकड़ पत्थर के टुकड़े।

गिट्टी (सं० स्त्री०) कंकड़ा, चिलम के सूराख पर रखने की मिट्टी या पत्थर की छोटी गोली।

गिड़गिड़ाना (क्रि० अ०) बहुत नम्र होकर कोई बात कहना, अत्यधिक विनती, प्रार्थना करना, चिरौरी करना।

गिड़गिड़ाहट (सं० स्त्री०) चिरौरी, बिनती।

गिद्ध (सं० पु०) गृध्र, गीध, एक मांसाहारी पक्षी विशेष।

गिद्धराज (सं० पु०) जटायु।

गिनती (सं० स्त्री०) गणना, गनना, शुमार।

गिनना (क्रि० अ०) गणना करना, शुमार करना, गनना।

गिनवाना (क्रि० स०) शुमार करवाना, गणना करवाना, गिनने में प्रवृत्त करना। [लगाना, गिनवाना।

गिनाना (क्रि० स०) गिनने में प्रवृत्त कराना, गिनने में

गिन्नी (अ० सं० स्त्री०) सोने का सिक्का विशेष, जो १५) के बराबर होता है, मोहर।

गिन्नी (सं० स्त्री०) चक्कर, गिनी।

गिरगिट (सं० पु०) गिरगिटान, शरट, जन्तु विशेष।

गिरगिटान (सं० पु०) गिरगिट।

गिरगिट्टी (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष। [खिलौना।

गिरगिरी (सं० स्त्री०) सारंगी की तरह लड़कों का एक

गिरजा (सं० स्त्री०) पार्वती।

गिरत (क्रि० अ०) गिरता है। [नाई से।

गिरतेपड़ते (क्रि० वि०) बहुत मेहनत से, बड़ी कठि-

गिरदा (सं० पु०) चक्कर, घेरा, ढाल, ढोल या खंजड़ी का मेड़रा, तकिया, गेड़ुआ, काठ की थाली।

गिरदान (सं० पु०) गिरगिट। [करने वाला।

गिरदावर (सं० पु०) घूमने वाला, घूम फिर कर जाँच

गिरधर (सं० पु०) पर्वत धारण करने वाला व्यक्ति, कृष्ण, वासुदेव।

गिरधारन (सं० पु०) कृष्ण, वासुदेव।

गिरधारी (सं० पु०) देखो "गिरधर"।

गिरना (क्रि० अ०) किसी वस्तु का एक दम ऊपर से नीचे आ जाना, पड़ना, झड़ना, खसकना, अवनत होना। [पड़ना।

गिरपड़ना (क्रि० अ०) फिसल जाना, कूद पड़ना, झुक

गिरफ़्तार (फ़ा० वि०) कैद किया हुआ, बांधा हुआ, ग्रस्त, पकड़ा हुआ।

गिरफ़्तारी (फ़ा० सं० स्त्री०) क़ैद, बंधन, जेल होना।

गिरवर (सं० पु०) बड़ा पहाड़, श्रेष्ठ पर्वत।

गिरवी (फ़ा० वि०) बंधक, रेहन, गिरों।

गिरह (फ़ा० स० स्त्री०) गांठ बंधन, ग्रंथि, एक गज का सोलहवां भाग, उलटी, कलैया, कुश्ती का पेंच।

गिरहकट (वि०) गांठकट, पाकेटमार।

गिरहबाज़ (फ़ा० वि०) एक जाति का कबूतर विशेष।

गिरा (सं० स्त्री०) वाक् शक्ति, वचन, बोल, वाक्, वाणी, सरस्वती।

गिराग्राम (सं० पु०) गवाँरू बोली।

गिराना (क्रि० स०) पटकना, पतन करना, पछाड़ना, छलकाना, अवनत करना, घटाना।

गिरानी (फ़ा० सं० स्त्री०) मँहगी, टोटा, कमी, अभाव।

गिराह (सं० पु०) ग्रह, मगर, घड़ियाल।

गिरि (सं० पु०) पर्वत, पहाड़, भूधर, दशनामी संन्यासियों में से एक प्रकार के संन्यासी।

गिरिकण्टक (सं० पु०) बज्र।

गिरिकदली (सं० स्त्री०) पहाड़ी केला।

गिरिकद्रुक (सं० पु०) बहुत कड़वी।

गिरिका (सं० स्त्री०) मुसटी, चुहिया।

गिरिज (सं० पु०) शिलाजीत, गेरु, अभ्रक, लोहा।

गिरिजा (सं० स्त्री०) पार्वती, गौरी।

गिरिजानन्दन (सं० पु०) कार्तिकेय, गणेश।

गिरिधर (सं० पु०) कृष्ण।

गिरिधरन (सं० पु०) कृष्ण।

गिरिधारन (सं० पु०) कृष्ण।

गिरिधारी (सं० पु०) कृष्ण।

गिरिनन्दिनी (सं० स्त्री०) पार्वती, गङ्गा।

गिरिनाथ (सं० पु०) शिव, शम्भु।

गिरिन्द्रा (सं० पु०) पर्वतराज, हिमालय।

गिरिर (सं० पु०) बच्चा, शिशु।

गिरिराज (सं० पु०) हिमालय, सुमेरु।

गिरिवर (सं० पु०) पर्वत श्रेष्ठ, सुमेरु, हिमालय, विन्ध्य।

गिरिव्रज (सं० पु०) केकय देश की राजधानी का नाम, राजगृह का प्राचीन नाम, जो जरासंध की राजधानी थी।

गिरिसाह्वय (सं० पु०) शिलाजीत, पर्वत से उत्पन्न धातु।

गिरिसुता (सं० स्त्री०) पार्वती।

गिरिसृष्ट (सं० स्त्री०) गेरु, उपधातु विशेष।

गिरीन्द्र (सं० पु०) पर्वत राज, हिमालय, मेरु।

गिरीश (सं० पु०) शिव, कैलासपति, मेरु, हिमालय ।
गिरैया (सं० स्त्री०) छोटा गरदाँव, (वि०) अवनतोन्मुखा, गिरने वाला ।
गिरो (फ़ा० वि०) बंधकी, रेहन, गिरवी ।
गिलई (क्रि० अ०) निकल गयी ।
गिलट (सं० स्त्री०) उपधातु विशेष ।
गिलटी (सं० स्त्री०) ग्रंथि, गांठ ।
गिलन (सं० पु०) निकलना, खाना, भक्षण, गेलन, ४ सेर के लगभग एक अंग्रेज़ी नाप, छः बोतल के लगभग एक अंग्रेज़ी नाप ।
गिलना (क्रि० स०) निगलना, लीलना ।
गिलहरा (सं० पु०) बांस का बना पान का डब्बा, बेलहरा, मोटी मोटी धारियों वाला एक प्रकार का सूती वस्त्र ।
गिलहरी (सं० स्त्री०) कुड़ी, रुखी चिखुरी, एक प्रकार का जानवर विशेष ।
गिलाफ़ (अ० सं० पु०) खोल, लिहाफ़, म्यान, गिलेफ ।
गिलास (सं० पु०) पानी पीने का बर्तन ।
गिलित (वि०) भुक्त, भक्षित ।
गिलिपर (वि०) आलसी, शिथिल, ढील ।
गिलेफ (सं० पु०) गिलाफ, खोल, म्यान, लिहाफ, रजाई ।
गिलोय (सं० स्त्री०) गुडुच, अमृतलता, गुरिच ।
गिलो (सं० स्त्री०) गिलोय ।
गिलोरी (सं० स्त्री०) पान की खीली, बीड़ा ।
गिल्ला (सं० पु०) उलहना, शिकायत, निन्दा ।
गिल्ली (सं० स्त्री०) गुल्ली, गिलहरी, मकई की ठुड्डी ।
गी (सं० स्त्री०) सरस्वती, वाणी, बोलने की शक्ति ।
गीज (सं० पु०) मुसलमानी खाना ।
गींजना (क्रि० स०) मलना, मसलना ।
गीत (सं० पु०) गान ।
गीतमोदी (सं० पु०) किन्नर, स्वर्ग-गायक ।
गीतवादन (सं० पु०) गाना, कीर्त ।
गीता (सं० पु०) गान, अध्यात्मविद्या, कथा, वृत्तान्त, हाल ।
गीति (सं० स्त्री०) गान, गीत, आर्या छन्द का एक भेद इसके विषम चरणों में २२ और सम में १८ मात्राएं होती हैं ।
गीतिका (सं० पु०) एक मात्रिक छन्द विशेष, एक गाना ।
गीदड़ (सं० पु०) सियार, श्रृगाल, जम्बुक ।
गीदड़भबकी (सं० स्त्री०) ऊपरी साहस दिखाना ।
गीध (सं० पु०) गिद्ध, गृध्र ।
गीधना (क्रि० अ०) परचना ।
गीरवाण (सं० पु०) देवता ।
गीर्वाण (सं० पु०) देवता, सुर, वाणी ।
गीर्वाणकुसुम (सं० पु०) लौंग ।
गीर्वाणी (सं० स्त्री०) संस्कृत भाषा, देव वाणी ।
गीला (वि०) भीगा, आर्द्र, तर ।
गीलापन (सं० पु०) नमी, तरी ।
गीष्पति (सं० पु०) देवगुरु, बृहस्पति ।
गु (सं० पु०) विष्टा, मल, पाखाना ।
गुंग (वि०) गूंगा, मूक ।
गुँगबहरी (सं० स्त्री०) मछली विशेष, वामी, बाम ।
गुंगा (वि०) गूंगा, मूक ।
गुंजना (क्रि० अ०) गुनगुनाना, भुनभुनाना, भौंरों का भुनभुनाना ।
गुंजरना (क्रि० अ०) गुंजना, मधुर ध्वनि करना, भुनभुनाना, गुनगुनाना ।
गुंजाइश (फ़ा० सं० पु०) स्थान, सावकाश, अँटने की जगह, सुभीता, समाई ।
गुंजान (वि०) सघन, घना, मोटा, गाढ़ा, अविरल ।
गुंजार (सं० पु०) गुनगुनाहट, भँवरों की मधुर ध्वनि, भौरों का गूंजना ।
गुंडई (सं० स्त्री०) बदमाशी, गुंडापन ।
गुंडा (वि०) बदमाश, छैला, चिकनिया, शोहदा, बदचलन, पापी, कुमार्गी, (सं० पु०) बदमाश व्यक्ति ।
गुंडापन (सं० पु०) शोहदापन, बदमाशी, गुंडई ।
गुंधना (क्रि० अ०) माड़ना, सानना, साना जाना ।
गुंधाई (सं० स्त्री०) मँड़ाई, सनाई, गूंधने की मजूरी ।
गुआरपाठा (सं० पु०) ग्वारपाठा, घीकुवार ।
गुआलिन (सं० स्त्री०) ग्वालिन, ग्वाला की स्त्री ।
गुइयाँ (सं० स्त्री०) संगी, साथी, सहचरी, सहेली ।
गुखरु (सं० पु०) गोखरू, गुरखुल ।
गुगुलिया (सं० पु०) मदारी ।
गुग्गुल (सं० पु०) सुगन्धित द्रव्य विशेष, देव धूप ।
गुच्छ (सं० पु०) गुच्छा, झब्बा, स्तवक ।
गुच्छा (सं० पु०) स्तवक, गुच्छ, झब्बा, फुंदना, फुलरा ।
गुच्छे (सं० पु०) झब्बे, फुंदने ।
गुच्छेदार (वि०) गुच्छा युक्त, झब्बेदार ।

गुज़र (सं० पु०) अहीर, ग्वाट, ग्वाला, निर्वाह, कालक्षेप, प्रवेश, पैठ, गति, निकास।

गुज़रना (क्रि० अ०) समय कटना, बीतना, व्यतीत होना, निर्वाह होना, पार होना, निपटना, निबहना।

गुज़रबसर (फ़ा० सं० पु०) कालक्षेप, निर्वाह।

गुजरात (सं० पु०) भारत के एक प्रान्त का नाम जो राजपूताने के आगे है।

गुजराती (वि०) गुजरात के रहने वाले,गुजरात देशीय।

गुजरिया (सं० स्त्री०) ग्वालिन, गोपी, अहिरिन।

गुज़श्ता (फ़ा० वि०) गत, व्यतीत, मृत।

गुज़ारना (क्रि० स०) काटना, बिताना, व्यतीत करना।

गुज़ारा (फ़ा० सं० पु०) गुज़र,निर्वाह,नाव की उतराई।

गुज़ारिश (फ़ा० सं० स्त्री०) निवेदन, अर्ज़।

गुजिया (सं० स्त्री०) कान का गहना।

गुझिया (सं० स्त्री०) पकवान विशेष, मेवे की मिठाई।

गुञ्ज (सं० पु०) पुष्पस्तवक, गुच्छा, गुच्छ।

गुञ्जन (सं० पु०) भँवरे का गुञ्जार, भ्रमर-ध्वनि।

गुञ्जा (सं० स्त्री०) घुंघुची,लाल रत्ती।

गुञ्जान (वि०) गाढ़ा, घना।

गुञ्झा (वि०) ढीला,शिथिल (सं० पु०) गोझा, गूदा।

गुटकना (क्रि० स०) गुटरगूं करना, निगलना।

गुटका (सं० स्त्री०) छोटे आकार की पुस्तक, एक प्रकार का मसाला।

गुटरगूँ (सं० स्त्री०) कबूतर की बोली। [गोली।

गुटिका (सं० स्त्री०) गोली, बटी, बटिका, औषधि की

गुट्ट (सं० पु०) झुंड, दल, समूह। [गिलटी, गांठ।

गुट्ठल (वि०) बड़ी गुठली वाला, मूर्ख, जड़, गुलथी,

गुठलाना (क्रि० अ०) फलों में गुठली होना, दाँत का खट्टा होना, दाँत गोठिल होना।

गुठली (सं० स्त्री०) किसी फल का कड़ा बीज, आम का बीज, बैर का बीज।

गुड़ (सं० पु०) ऊख का जमाया हुआ रस।

गुड़गुड़ (सं० पु०) हुक्का आदि का शब्द।

गुड़गुड़ना (क्रि० अ०) गुड़गुड़ शब्द होना, गुड़गुड़ शब्द करना।

गुड़गुड़ी (सं० स्त्री०) छोटा हुक्का।

गुड़च (सं० स्त्री०) गिलोय, गुरुच।

गुड़धानी (सं० स्त्री०)भुने हुये गेहूँ और गुड़ का लड्डू।

गुड़हर (सं० पु०) अड़हुल का पेड़ या फूल। [हो।

गुड़ाकू (सं० पु०) पीने का तम्बाकू जिसमें गुड़ मिला

गुडाकेश (सं० पु०) शिव, अर्जुन।

गुड़ाना (क्रि० स०) गड़वाना, खोदवाना, खनना।

गुड़िया (सं० स्त्री०) कपड़े की बनी पुतली।

गुड्डी (सं० पु०) चंग, पतङ्ग, कनकौआ, गुड्डी।

गुडूची (सं० स्त्री०) गिलोय, गुरुच।

गुड्डा (सं० पु०) कपड़े का बना पुतला।

गुड्डी (सं० स्त्री०) देखो "गुड़ी"।

गुर्दा (सं० स्त्री०) छिपने का स्थान।

गुण (सं० पु०) धर्म, निपुणता, प्रवीणता, फल, स्वभाव, असर, विशेषण, लक्षण, सद्वृत्ति, प्रकृति, तीन की संख्या।

गुणक (सं० पु०) वह अंक जिससे गुणा किया जाय।

गुणकथन (सं० पु०) प्रशंसा करना।

गुणकरना (क्रि० अ०) लाभ पहुँचाना। [भलाई करना।

मुहा० गुण का पलटा देना = प्रत्युपकार करना,भलाई के बदले

गुणकारक (वि०) लाभदायक, फ़ायदेमन्द।

गुणकारी (वि०) लाभदायक।

गुणगान (सं० पु०) गुण कथन।

गुणगृह्य (सं० पु०) सद्गुण युक्त, गुणी।

गुणग्राम (सं० पु०) गुणों के समूह।

गुणग्राहक (सं० पु०) गुण का आदर करने वाला व्यक्ति, गुण को ढूंढने वाला।

गुणग्राही (वि०) गुणियों का आदर सम्मान करने वाला, गुण को ग्रहण करने वाला।

गुणज्ञ (वि०)गुणी,गुण जानने या पहचानने वाला।

गुणज्ञता (सं० स्त्री०) गुण की परख, गुण की पहिचान।

गुणज्ञान (वि०) बुद्धि प्रभाव।

गुणदर्शी (वि०) सार-ग्राही।

गुणदाता (वि०) शिक्षक, गुरु।

गुणधर्म (सं० पु०) उत्तम पदार्थ, सार पदार्थ।

गुणन (सं० पु०) गुणा, ज़रब।

गुणनफल(सं० पु०) गुणा करने से प्राप्त अङ्क।

गुणना (क्रि० स०) गुणा करना, ज़रब देना।

गुणनिधि (वि०) गुणसिन्धु, गुणसागर।

गुणवन्त (वि०) गुणी, गुण वाला।

गुणवन्ती (वि०) गुण वाली।

गुणवाचक (वि०) गुण प्रकट करने वाला।

गुणवान (सं० पु०) गुणी गुणवन्त, गुण वाला।

गुणा (सं० पु०) अंकगति की एक प्रक्रिया, गुणन, बार, गुना, ज़रब।

गुणाकर (सं० पु०) गुणों का समुद्र, गुणनिधि।

गुणागुण (सं० पु०) गुण दोष, भला बुरा।

गुणाढ्य (सं० पु०) एक संस्कृत के धुरंधर विद्वान्, ये नागवासुकि के छोटे भाई कीर्तिसेन के पुत्र थे, इनके पिता इनके बचपन में ही मर गये, पर इन्होंने संस्कृत का अच्छी तरह से अध्ययन किया, अध्ययन समाप्त कर ये प्रतिष्ठान प्रदेश के राजा सतवाहन के दरबार में रहने लगे। राजा संस्कृत नहीं जानता था, उसने संस्कृत सीखना चाहा, इन्होंने छः वर्ष में उसको संस्कृत सीखा देने को कहा, पर एक दूसरे पण्डित ने छः ही महीने में सिखा देने का वादा किया, इसपर इन्होंने उस पण्डित से नाराज़ होकर प्रतिज्ञा की कि यदि तुम छः महीने में राजा को संस्कृत सिखा दोगे तो मैं संस्कृत आदि भाषाओं में कभी न बोलूंगा, न पढूं लिखूंगा, उस पण्डित ने छः महीने में राजा को संस्कृत सिखा दी, इस पर वे जंगल में चले गये, और पिशाचों के साथ रह कर उनकी भाषा सीखने लगे। उन्हीं की भाषा में बृहत्कथा नामक एक ग्रन्थ इन्होंने लिखा, इनके प्राचीन और सत्कवि होने का उल्लेख आर्या सप्तशती में मिलता है। [परब्रह्म, परमात्मा।

गुणातीत (सं० पु०) निर्गुण, गुणरहित, गुण से परे,

गुणानुवाद (सं० पु०) प्रशंसा, बड़ाई।

गुणित (वि०) गुणन किया हुआ, गुना, पूरित।

गुणी (वि०) गुणवान्, गुणवन्त।

गुणीकृत (वि०) गुणित, पूरित।

गुणीभूत (सं० पु०) अप्रधान।

गुणीभूतव्यङ्ग (सं० पु०) काव्य में अप्रधान व्यङ्ग।

गुणेश्वर (सं० पु०) परमेश्वर, चित्रकूट पर्वत।

गुणोत्कर्ष (सं० पु०) गुण की अधीनता, गुण की सुन्दरता गुणव्याख्या [यशगान।

गुणोत्कीर्तन (सं० पु०) गुण-कथन, गुणगान, स्तुति,

गुणोपेत (वि०) गुणी, गुणवान, गुणयुक्त।

गुणौघ (सं० पु०) गुण समूह। [लुचा।

गुण्डा (सं० पु०) लम्पट, दुष्ट, दुरात्मा, दुराचारी, निर्लज्ज

गुण्य (सं० पु०) वह अंक जिसको गुणा किया जाय।

गुण्याङ्क (सं० पु०) गुणा किया जाने वाला अङ्क।

गुत (सं० पु०) चुपचाप, मौन, उदासीन।

गुत्थ (सं० पु०) हुक्के के नैचों की बुनावट। [उलझन।

गुत्थमगुत्था (सं० पु०) हाथाबाहीं, मुठभेड़, लड़ाई,

गुत्थी (सं० स्त्री०) उलझन, गिरह।

गुथना (क्रि०अ०) पिरोना, गुंथवन, टांका लगना।

गुद (सं० स्त्री०) गुह्य स्थान, गुदा।

गुदगुदा(वि०) मांसदार, मुलायम।

गुदगुदाना (क्रि० अ०) सहलाना, सुरसुराना, चुलचुलाना, उमंगना, कांख आदि स्थानों में हाथ लगा कर सुहराना, गुदराना।

गुदगुदाई (सं० स्त्री०) गुदगुदी, कांख आदि में हाथ लगाने से होने वाली सुरसुराहट।

गुदगुदाहाट (सं० स्त्री०) गुदराहट, सुहराना। [बुलाहट।

गुदगुदी (सं० स्त्री०) सुरसुराहट, उमंग, उछाह, चुल-

गुदड़िया (सं० पु०) गुदड़ी बेचने वाला, गुदड़ी पहनने वाला, डेरा शामियाना किराये पर देने वाला।

गुदड़ी (सं० स्त्री०) फटे पुराने वस्त्र, कथरी, कंथा।

गुदड़ी बाज़ार (सं० पु०) वह बाज़ार जिसमें फटे पुराने वस्त्र, पुरानी चीज़ें बिकती हैं।

गुदना (सं० पु०) गोदना।

गुदरत (क्रि०) जानता है, चलता है।

गुदरना (क्रि०) जानना, जाना. यह शब्द रामायण में प्रयुक्त हुआ है।

गुदराना (क्रि० अ०) गुदगुदाना।

गुदा (सं० पु०) गुह्य स्थान।

गुदाना (क्रि०) गोदने की क्रिया कराना।

गुदाम (सं० पु०) भण्डार, गोला।

गुदारा (सं० पु०) घटहा। [स्थान।

गुदी (सं० स्त्री०) नाव बनाने या मरम्मत करने का

गुद्दा (सं० पु०) सार भाग, भीतर का भाग, अन्तःसार, गिरी। [ग्रन्थि, ग्रीवा।

गुद्दी (सं० स्त्री०) गिरी, मींगी, अन्तःसार, ल्यौंड़ी, गर्दन

गुन (सं० पु०) देखो "गुण"।

गुनग्राहक (सं० पु०) गुण का आदर करने वाला।

गुनगुना (वि०) थोड़ा गरम, कुनकुन। [बोलना।

गुनगुनाना (क्रि० अ०) गुनगुन शब्द करना, नाकी देकर

गुनद (वि०) गुणदायक, लाभकारी फ़ायदेमन्द।
गुनवन्त (वि०) देखो "गुणवन्त"।
गुनह (सं० पु०) दोष, पाप, कसूर, अपराध।
गुनहगार (फा० वि०) दोषी, पापी, अपराधी, पापी।
गुनहगारी (फ़ा० सं० स्त्री०) दोष, अपराध, पाप।
गुनहु (क्रि०) विचारो, गुणन करो, समझो।
गुनहू (क्रि०) विचारो, गुणन करो, (सं० पु०) लाभ भी, फायदा भी।
गुना (सं० पु०) देखो "गुणा"
गुनानि (सं० स्त्री०) आन्तरिक इच्छा, अभिलाषी।
गुनाह (फ़ा० सं० पु०) पाप, दोष, अपराध।
गुनाही (फ़ा० सं० पु०) दोषी, पापी, अपराधी।
गुनिये (क्रि०) सीखिये, बिचारिये, गुणन कीजिये।
गुनी (वि०) देखो "गुणी"। [खा जाना।
गुपकना (क्रि०) ऊपर से आती चीज को लोक लेना,
गुपचुप (क्रि० वि०) चुपचाप, चुपके से, छिपा कर, (सं० स्त्री०) एक मिठाई का नाम।
गुप्त (वि०) छिपा, हुआ, गूढ़, रक्षित, अल्ल या पदवी जो वैश्य, शूद्र अपने नाम के आगे लगाते हैं, एक प्राचीन राज वंश, नन्द वंश के बाद जिसके हाथ में मगध का शासन आया, इस वंश में चन्द्रगुप्त समुद्रगुप्त आदि बड़े प्रतापी राजा हुए हैं।
गुप्तगुति (सं० स्त्री०) चर, दूत।
गुप्तचर (सं० पु०) खुफिया, भेदिया, जासूस।
गुप्तदान (सं० पु०) वह दान जो देने वाले के अतिरिक्त और कोई न जाने।
गुप्तवेश (सं० पु०) छली, कपटी, ढोंगी, आडम्बरी।
गुप्तार (सं० पु०) छिपाव, लुकाव।
गुप्तारधार (सं० पु०) अयोध्या के एक धार का नाम।
गुप्ती (सं० स्त्री०) अस्त्र विशेष, एक प्रकार का डण्डा जिसमें अस्त्र छिपा रहता है।
गुफना (सं० पु०) गोफल।
गुफा (सं० स्त्री०) गह्वर, खोह, कन्दरा, गुहा। [कथन।
गुफ्तगू (फ़ा० सं० स्त्री०) वार्तालाप, बातचीत, कथोप-
गुबरैला (सं० पु०) एक प्रकार का कीड़ा जो गोबर मल आदि में रहता है और खाता है।
गुबार (अ० सं० पु०) धूल, गरदा, ख़ाक।
गुब्बारा (सं० पु०) काग़ज़ का बना एक बड़ा थैला जिसमें गरम हवा भर कर आकाश में उड़ाते हैं।
गुभाना (क्रि०) चुभाना, गड़ाना।
गुम (फ़ा० वि०) गुप्त, छिपा हुआ, खोया हुआ, अप्रसिद्ध
गुमची (सं० स्त्री०) गुंजा, घुँघची।
गुमटा (सं० पु०) बड़ा फोड़ा, गुमड़ा, कपास को नष्ट करने वाला कीड़ा। [कोठरिया।
गुमटी (सं० स्त्री०) गुम्मट, लाट, कलस, शिखर, छोटी
गुमड़ा (सं० पु०) बिना फूटा फोड़ा।
गुमड़ी (सं० स्त्री०) छोटी फुंसी।
गुमना (क्रि० अ०) खो जाना, गुम होना।
गुमनाम (फ़ा० वि०) अज्ञात, अप्रसिद्ध।
गुमरा (सं० पु०) बड़ा फोड़ा, कीट विशेष। [विशेष।
गुमरी (सं० स्त्री०) कलश, शिखर, छोटी कोठरी, वस्त्र
गुमराह (फा० वि०) भूला भटका, कुमार्ग गामी।
गुमसना (क्रि० अ०) सड़ना, दुर्गन्ध युक्त होना।
गुमसा (वि०) सड़ा, गला।
गुमसाहट (सं० पु०) सड़ाइन, पचाइन। [घमण्ड।
गुमान (फ़ा० सं० पु०) मान, अहंकार, अभिमान, गर्व,
गुमाना (क्रि० स०) गायब करना, खो आना, गँवाना।
गुमानी (वि०) अहंकारी, अभिमानी, गर्बीला।
गुमाश्ता (फ़ा सं० पु०) बड़े व्यापारियों के यहां बही खाता लिखने या माल खरीदने बेचने वाला व्यक्ति।
गुमाश्तागिरी (फ़ा० सं० स्त्री०) गुमाश्ते का काम, गुमास्ते का पद।
गुम्फ (सं० पु०) गाथना, गूथना।
गुम्फित (वि०) गुहा हुआ, प्रणीत।
गुम्मर (सं० पु०) गुंबज।
गुम्मा (सं० पु०) बड़ी मोटी ईंट।
गुर (सं० पु०) मूल मन्त्र, गुण। [दूत, चर, जासूस, गुप्तचर।
गुरगा (सं० पु०) चेला, शिष्य, अनुचर, दास, सेवक, नौकर,
गुरगाबी (फ़ा० सं० पु०) मुंडा जूता, पनही।
गुरच (सं० पु०) गुरुच, गिलोय, गुडूच।
गुरचियाना (क्रि० अ०) सिकुड़ना, घुरचियाना।
गुरची (सं० स्त्री०) घुरची, सिकुड़न, बल।
गुरजना (क्रि०) घुरटना, घुड़कना, गरजना।
गुरदा (सं० पु०) कलेजे के पास का एक अङ्ग, साहस।
गुरमुख (वि०) गुरु मन्त्र लिया हुआ, दीक्षित।

गुरवार (सं० पु०) गुरुवार, वृहस्पतिवार, बिअफे ।

गुरिया (सं० स्त्री०) मनिया, माला के दाने ।

गुरु (सं० पु०) मन्त्र देने वाला, दीक्षा देने वाला, उस्ताद, आचार्य, वृहस्पति, उपदेष्टा, दो मात्राओं के अक्षर, द्विमात्रिक अक्षर, (वि०) लम्बा चौड़ा, भारी, वजनी, बोझैल । [स्त्री ।

गुरुआइन (सं० स्त्री०) गुरु की स्त्री, शिक्षा देने वाली

गुरुआई (सं० स्त्री०) गुरु कृत्य, गुरुवाई, धूर्तता, शठता ।

गुरुकार्य (सं० पु०) आवश्यक कार्य, फलवान कार्य ।

गुरुकुल (सं० पु०) गुरु या आचार्य का स्थान जहां वह विद्यार्थियों को रख कर पढ़ावे ।

गुरुच (सं० स्त्री०) गिलोय, गुडूच, गुरच । [आदि ।

गुरुजन (सं० पु०) बड़े लोग, गुरु, आचार्य, माता, पिता

गुरुतर (वि०) कठिनतर, बहुत भारी, माननीय ।

गुरुतला(सं० पु०)वह व्यक्ति जो विमाता से संयोग करे ।

गुरुतलपग (वि०) सौतेली मां के साथ सम्बन्ध करने वाला, गुरु की स्त्री को हरने वाला ।

गुरुतलपग्रत (सं० पु०) गुरु पत्नी हरण का प्रायश्चित्त ।

गुरुता (सं० स्त्री०) भारी, भारीपन, गुरुत्व, महत्व, बड़प्पन ।

गुरुताई (सं० स्त्री०) देखो "गुरुता" ।

गुरुत्व (सं० पु०) भार, भारीपन, बोझ ।

गुरुत्वाकर्षण (सं० पु०) भारी वस्तुओं को ज़मीन पर गिराने वाली आकर्षण शक्ति ।

गुरुदक्षिणा (सं० स्त्री०) विद्याध्ययन की समाप्ति के बाद जो आचार्य या गुरु को दक्षिणा दी जाती थी ।

गुरुदशा (सं० स्त्री०) गुरु की दशा, वृहस्पति की दशा ।

गुरुदार (सं० स्त्री०) गुरु की स्त्री, वेदाध्यापक अथवा अन्नदाता की स्त्री ।

गुरुदेव (सं० पु०) आचार्य ।

गुरुदैवत(सं० पु०) पुष्य नक्षत्र ।

गुरुद्वारा (सं० पु०) गुरु या आचार्य के रहने की जगह ।

गुरुपत्नी (सं० स्त्री०) गुरु की स्त्री ।

गुरुपदिष्ट (वि०) गुरु से शिक्षा व उपदेश ग्रहण ।

गुरुपाक (वि०) देर से पचने वाला ।

गुरुपाप (वि०) कठिन पाप, महा पाप, अति पाप ।

गुरुपुष्प (सं० पु०) वह योग जब वृहस्पति को पुष्य नक्षत्र पड़े ।

गुरुप्रमोद (सं० पु०) अतिशय आनन्द, अत्यन्त हर्ष ।

गुरुभाई (सं० पु०) एक ही गुरु के शिष्य ।

गुरुमन्त्र (सं० पु०) दीक्षा में प्राप्त मन्त्र ।

गुरुमुख (वि०) गुरु से मन्त्र लिया हुआ, दीक्षित ।

गुरुमुखहोना (क्रि०) मन्त्र लेना,चेला होना,गुरु करना ।

गुरुमुखी (सं० स्त्री०) वह लिपि जो पन्जाब में प्रचलित है, पञ्जाबी भाषा की लिपि । [दीर्घ ।

गुरु लघु (वि०) मान्य अमान्य, प्रधान अप्रधान, ह्रस्व

गुरुवाइन (सं० स्त्री०) गुरु की स्त्री ।

गुरुवार (सं० पु०) वृहस्पतिवार, बिअफे ।

गुरुविनी (सं० स्त्री०) गर्भवती, गर्भिणी ।

गुरु शुश्रूषा (सं० पु०) गुरु सेवा ।

गुरुसेवा (सं० स्त्री०) गुरु पूजा ।

गुरू (सं० पु०) अध्यापक, आचार्य, गुरु ।

गुरूपदेश (सं० पु०) गुरु के समीप की शिक्षा ।

गुरेरना (क्रि० अ०) घूरना, आँख फाड़ कर देखना ।

गुर्गरी (सं० स्त्री०) कम्प ज्वर, जूड़ी,जड़इया ।

गुर्गा (सं० पु०) देखो "गुरगा" ।

गुर्गावी (सं० स्त्री०) पनही, जूती, गुरगावी ।

गुर्जर (वि०) गुजरात, गुजरात के रहने वाले, गूजर, एक जाति विशेष । [विशेष ।

गुर्जरी (सं० स्त्री०) गुजरात की स्त्रियाँ, एक रागिनी

गुर्रा (सं० पु०) धनुही की फरहा कसने वाली रस्सी ।

गुर्राना (क्रि० स०) क्रोध में आकर कर्कश शब्द कहना, भयभीत करने के लिए घर घर शब्द करना ।

गुर्री (सं० स्त्री०) भुना हुआ जव । [विमाता ।

गुर्वङ्गन (सं० स्त्री०) गुरु की स्त्री, आचार्य पत्नी, मा,

गुर्वादित्य (सं० पु०) वह योग जब सूर्य और वृहस्पति एक राशि पर हों ।

गुर्विणी (सं० स्त्री०) गर्भवती, गर्भिणी ।

गुर्वी (सं० स्त्री०) गर्भिणी, गुर्विणी, गर्भवती, श्रेष्ठ स्त्री ।

गुल (फा० सं० पु०) पुष्प, फूल, गुलाब का फूल, चिराग की बत्ती का जला हुआ आगे का भाग, अङ्गार का गोला, अङ्गारा, हल्ला, शोर, हुल्लड़ ।

मुहा०—गुल खिलना = नई बात पैदा होना । गुल करना = बुझा देना ।

गुलकन्द (फा० सं० पु०) मिश्री या चीनी में मिली हुई गुलाब की पंखड़ियाँ ।

गुलगपाड़ा (सं० पु०) हल्ला, शोर, गुल, हुल्लड़।
गुलगुल (वि०) नरम, कोमल। [नरम, कोमल।
गुलगुला (सं० पु०) एक प्रकार का पकवान, (वि०)
गुलगुलाना (क्रि० स०) नरम करना, नरमाना, पिघलाना।
गुलगुली (सं० स्त्री०) मत्स्य विशेष जो हिमालय के झरनों में पाई जाती है।
गुलगूथना (क्रि०) सटना, गाल फुलवाना। [मारना।
गुलचना (क्रि० स०) धीरे से प्रेम पूर्वक गाल पर
गुलचा (सं० पु०) धीरे से प्रेम पूर्वक अँगुलियों से गाल पर मारना।
गुलचांदनी (सं० स्त्री०) पुष्प विशेष।
गुलचाना (क्रि० स०) गुलचना, गुलचा मारना।
गुलचीन (सं० पु०) एक वृक्ष विशेष, यह बारहों महीने फूलता है इसका फूल ऊपर सफेदी और भीतर पीलापन लिए रहता है।
गुलछर्रा (सं० पु०) स्वतन्त्रता पूर्वक, अनुचित रीति, भोग विलास में समय बिताना।
गुलज़ार (फा० वि०) हरा भरा, चहल पहल, (सं० पु०) बाग, बगीचा, उपवन। [आनन्द।
गुलझड़ी (सं० स्त्री०) उलझन, झंझट, उलझन की गांठ,
गुलदस्ता (फ़ा० सं० पु०) फूलों का गुच्छा, पुष्प स्तवक, एक प्रकार का घोड़ा जिसका अगला बायां पैर गांठ तक सफेद हो और बाकी तीन पैर एक रंग के हों।
गुलदाउदी (सं० स्त्री०) पुष्प वृक्ष विशेष।
गुलदाना (फ़ा० सं० पु०) बुन्दिया मिठाई।
गुलनार (फा० सं० पु०) अनार का फूल, एक प्रकार का अनार जिसमें फल नहीं होते केवल फूल ही होते हैं, अनार के रंग के समान एक रंग।
गुलबकावली (सं० स्त्री०) पुष्प वृक्ष विशेष।
गुलबदन (फ़ा० सं०पु०) धारीदार बहुमूल्य रेशमी वस्त्र।
गुलमेंहदी (सं० स्त्री०) पौधा विशेष।
गुलशकरी (फा० सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई जो चीनी और गुलाब के फूल से बनती है, गंगेरन।
गुलशन (फा० सं० पु०) फुलवारी, बाग़।
गुलशब्बो (फ़ा० सं० पु०)एक पुष्प वृक्ष विशेष, सुगंधिराज, रजनीगंधा, एक प्रकार का खेल जो अंधेरे में खेला जाता है और चपतबाजी होती है।

गुलहजारा (फ़ा० सं० पु०) पुष्प विशेष।
गुलाब (सं० पु०) पुष्प विशेष।
गुलाबजामुन (सं० पु०) एक प्रकार की मिठाई।
गुलाबपाश (फ़ा० सं० पु०) एक प्रकार का झारी के आकार का बर्तन जिसमें गुलाबजल महफ़िलों में छिड़का जाता है।
गुलाबास (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा।
गुलाबी (फ़ा० वि०) गुलाब के रंग के समान, गलाब के रंग का सा, गुलाब से संबन्ध रखने वाला, हलका, फीका
गुलाम (अ० सं० पु०) खरीदा हुआ नौकर।
गुलामी (सं० स्त्री०) दासत्व, परतन्त्रता, पराधीनता।
गुलाल (सं० पु०) एक प्रकार का रंग।
गुलिक (सं० पु०) मोती की माला के दाने।
गुलिया (सं० स्त्री०) सिर के पीछे का गड्ढा, (वि०) महुवे के बीज की गूदी से बना हुआ।
गुली (सं० स्त्री०) गल्ली, बाजरे की भूसी।
गुलूबन्द (फा० सं० स्त्री०) सूती, ऊनी या रेशमी लम्बी पट्टी जो गले में जाड़े के दिन में लपेटी या बाँधी जाती है।
गुलेनार (सं० पु०) गुलनार। [गोलियां फेंकी जाती हैं।
गुलेल (सं० स्त्री०)एक प्रकार का धनुष जिससे मिट्टी की
गुल्फ़ (सं० पु०) एँड़ी के ऊपर की गांठ, फीली।
गुल्म (सं० पु०)रोग विशेष, वह सेना जिसमें ९ हाथी ९ रथ, २७ अश्व और ४५ पैदल हों।
गुल्मशूल (सं० पु०) रोग विशेष।
गुल्लर (सं० पु०) ऊमर उदुम्बर, गूलर।
गुल्ला (सं० पु०) मिट्टी की गोली, जो गुलेल से फेंकने के लिए बनायी जाती है गंडेरी।
गुल्लाला (फ़ा० सं० पु०) पुष्प विशेष।
गुल्ली (सं० स्त्री०) किसी फल की गुठली, किसी वस्तु का लम्बा छोटा टुकड़ा।
गुवा (सं० पु०) सुपारी।
गुवाक (सं० पु०) सुपारी का पेड़।
गुवारपाठा (सं० पु०) ग्वारपाठा, घीकुवार।
गुवाल (सं० पु०) ग्वाला, गोप, अहीर।
गुवालिन (सं० स्त्री०) अहिरिन, गोप की स्त्री।
गुवालियर (सं० पु०) देश विशेष, मध्य भारत की एक रियासत।

गुवैया (सं० स्त्री०) गुइयां।
गुष्टि (सं० स्त्री०) मित्रता, सलाह।
गुसा (सं० पु०) क्रोध, रोष, रिस, कोप। [साधु, अतीत।
गुसाईं (सं० पु०) स्वामी, प्रभु, जितेन्द्रिय, संन्यासी विरक्त
गुस्ताख़ (फ़ा० वि०) ढीठ, धृष्ट, अशिष्ट, असङ्कोच।
गुस्ताख़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) बेअदबी, ढिठाई, धृष्टता असहनशीलता।
गुस्सा (सं० पु०) कोप, क्रोध। [वाला।
गुस्सैल (वि०) गुस्सावर, थोड़ी सी बात में नाराज़ होने
गुह (सं० पु०) कार्तिकेय, विष्णु का एक नाम, घोड़ा, अश्व, पिठवन, सरिवन, बुद्ध, मेढ़ा, माया, हृदय, गुफा, एक निषाद का नाम, यह शृङ्गवेरपुर का रहने वाला और रामचन्द्र का मित्र था, मैला, विष्टा, गूह।
गुहक (सं० पु०) एक अनार्य राजा का नाम।
गुहना (क्रि० स०) गूंथना, पिरोना, गांथना।
गुहनौ (क्रि०) गांथना, गूथना, पिरोना।
गुहर (वि०) गुप्त, छिपा, ढका, लुका।
गुहराना (क्रि० स०) चिल्लाना, बुलाना, पुकारना।
गुहवाना (क्रि० स०) गुंथवाना, गांथवाना, गूंधवाना।
गुहांजनी (सं० स्त्री०) अंखिजनी, बिलनी।
गुहा (सं० स्त्री०) गुफा, गह्वर, कन्दरा।
गुहागृह (सं० पु०) कन्दरा।
गुहाना (क्रि० स०) देखो "गुहवाना"।
गुहार (सं० पु०) सहायता के लिए पुकार।
गुहारी (वि०) गुहराने वाला।
गुहाशय (सं० पु०) विष्णु, व्याघ्र, सिंह।
गुहिल (सं० पु०) धन, ऐश्वर्य, विभव।
गुहेरी (सं० स्त्री०) गुहांजनी, आंख की बरौनी पर की फुड़िया।
गुह्य (वि०) पोशीदा, गुप्त, गोपनीय, गूढ़। [यक्ष।
गुह्यक (सं० पु०) कुबेर के ख़ज़ाने की रक्षा करने वाले
गुह्यकेश्वर (सं० पु०) कुबेर।
गू (सं० पु०) गूह, मैल, विष्टा।
गूँइया (सं० पु०) साथी, संगी।
गूँगा (वि०) मूक, वाक् शक्ति रहित, अनबोला।
गूँगी (वि०) गूँग स्त्री, (सं० स्त्री०) स्त्रियों के हाथ की अंगुलियों में पहिनने की बिछिया।
गूँज (सं० पु०) प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द, गुंजार, भिन-भिनाहट।
गूँजना (क्रि० अ०) गुंजारना, भौंरों का भिनभिनाना।
गूँझा (सं० पु०) एक प्रकार की मिठाई।
गूँड़ा (सं० पु०) नाव का आड़ा काठ।
गूँथना (क्रि० स०) गुथना, पिरोना, गुहना।
गूँदना (क्रि० स०) सानना, गोला बनाना।
गूँदनी (सं० स्त्री०) लसोड़ा, वृक्ष विशेष।
गूंदा (सं० पु०) अन्तःसार।
गूंधन (सं० पु०) पेड़ा, लोई।
गूंधना (क्रि० स०) सानना, गुंदना, बिनना।
गूगल (सं० पु०) गुग्गल।
गूगला (सं० स्त्री०) घोंघा, सीप। [एक जाति विशेष।
गूजर (सं० पु०) अहीरों की एक जाति, क्षत्रियों की
गूजरी (सं० स्त्री०) गूजर जाति की स्त्री, स्त्रियों के पैर में पहनने का एक गहना। [पकवान विशेष।
गूझा (सं० पु०) फलों के भीतर का रेशा, गूदा, एक
गूढ़ (वि०) गुप्त, पोशीदा, छिपा हुआ, जटिल, कठिन, गम्भीर, सूक्ष्म, एकान्त, गुहा।
गूढ़चर (सं० पु०) गुप्तचर, गोइंदा।
गूढ़ज (सं० पु०) जारज पुत्र।
गूढ़पत्र (सं० पु०) करील का पेड़, नाग फली।
गूढ़पथ (सं० पु०) चित्त, अन्तःकरण।
गूढ़पाद (सं० पु०) साँप, सर्प, भुजंग।
गूढ़पुरुष (सं० पु०) गुप्तचर, भेदिया, दूत।
गूढ़भाषित (सं० पु०) इशारे से बातें करना।
गूढ़ार्थ (सं० पु०) दुर्बोध अर्थ, जटिल अर्थ।
गूढ़ोक्ति (सं० स्त्री०) अलंकार विशेष, जिसमें कोई गुप्त बात दूसरे के ऊपर छोड़ तीसरे के प्रति कही जाय।
गूथ (सं० पु०) सूत की बड़ी गांठ।
गूथना (क्रि० स०) गूँथना, गांथना, तागना।
गूद (सं० पु०) गूदा, सार भाग, मग्ज़।
गूदड़ (सं० पु०) फटा पुराना वस्त्र, कथरी, कंथा।
गूदड़ी (सं० स्त्री०) कथरी, सुजनी।
गूदर (सं० पु०) गूदड़। [अन्तःसार।
गूदा (सं० पु०) मींगी, फलों का सार भाग, मेजा,
गूदिया (वि०) इच्छुक, लोभी। [प्रकार का रंग।
गूना (सं० पु०) सोने या पीतल से बनाया हुआ एक

गूप (वि०) छिपा, गुप्त ।
गूमड़ा (सं० पु०) सूजन, गिलटी, फोड़ा ।
गूमड़ी (सं० स्त्री०) गांठ ।
गूमना (क्रि० स०) रौंदना, कुचलना, मांड़ना, गूंधना ।
गूमा (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम में आता है ।
गूलर (सं० पु०) उदुम्बर, ऊमर । [दुर्लभ होना ।
मुहा०—गूलर का फूल होना = कभी देखने में न आना,
गूह (सं० पु०) मैला, विष्ठा, गुह । [करना ।
मुहा०—गुह में ढेला फेंकना = बुरे आदमी से छेड़ छाड़
गूहड़िया (सं० स्त्री०) कूड़ा, कतवार, कर्कट, गोबर ।
गृंजन (सं० पु०) गाजर, लहसुन, प्याज, शलगम ।
गृध्र (सं० पु०) गिद्ध, गीध । [पास है ।
गृध्रकूट (सं० पु०) एक पर्वत का नाम जो राजगृह के
गृध्रराज (सं० पु०) जटायु ।
गृध्रा (वि०) मर भूखा, लोभी, लालची ।
गृष्टी (सं० स्त्री०) एक बार की ब्यायी गौ ।
गृह (सं० पु०) मकान, घर, वासस्थान, गेह, भवन, आश्रम, निकेतन, कुटुम्ब, वंश, परिवार ।
गृहकन्या (सं० स्त्री०) घीकुआर, ग्वारपाठा ।
गृहकर्ण (सं० पु०) घरेलू काम ।
गृहगोधा (सं० स्त्री०) छिपकली, बिसतुइया, बिछुतिया ।
गृहगोधिका (सं० स्त्री०) देखो "गृहगोधा" ।
गृहछिद्र (सं० पु०) घर का गुप्त भेद, घर का दोष ।
गृहणी (सं० स्त्री०) काँजी ।
गृहतरी (सं० स्त्री०) घर के बाहर का चबूतरा, गली ।
गृहदाहक (सं० पु०) आततायी, घर जलाने वाला ।
गृहनिर्माता (सं० पु०) घर बनाने वाला ।
गृहपति (सं० पु०) घर का स्वामी, अग्नि, कुत्ता ।
गृहपाल (सं० पु०) गृह-रक्षक, पहरुआ कुत्ता ।
गृहबाटिका (सं० स्त्री०) घर के पास का बाग़ ।
गृहबासी (वि०) घर में रहने वाला ।
गृहभङ्ग (सं० पु०) गृह-भेदक, प्रवास ।
गृहभेदी (सं० पु०) घर का भेदिया ।
गृहमणि (सं० पु०) दीपक, दिया, चिराग़ ।
गृहमेधी (सं० पु०) गृही, गृहपति, घरवाला ।
गृहविच्छेद (सं० पु०) कुटुम्ब-कलह ।
गृहस्त (सं० पु०) देखो "गृहस्थ" ।
गृहस्थ (सं० पु०) चार आश्रमों में से दूसरे आश्रम में रहने वाला व्यक्ति, संसारी, ज्येष्ठाश्रम, द्वितीयाश्रम ।
गृहस्थता (सं० स्त्री०) गृहव्यापार, गृहस्थ का धर्म ।
गृहस्थाश्रम (सं० पु०) वह आश्रम जिसमें मनुष्य विद्याध्ययन के बाद विवाहादि करके प्रवेश करता है और घरबार सँभालता है, ज्येष्ठाश्रम, द्वितीयाश्रम ।
गृहागत (सं० पु०) पाहुने, अतिथि ।
गृहार्थ (वि०) घर के लिये, गृह के निमित्त ।
गृहिणी (सं० स्त्री०) घर की स्वामिनी, घर की मालिकिन, स्त्री, भार्या, पत्नी । [श्रमी ।
गृही (सं० पु०) गृहस्थ, घरबार वाला व्यक्ति, गृहस्था-
गृहीत (वि०) स्वीकृत, अङ्गीकृत, ग्रहण किया हुआ ।
गृह्य (वि०) गृह संबन्धी, गृहस्थ का कर्तव्य ।
गृह्यग्रन्थ (सं० पु०) धर्म संहिता, कर्म काण्ड ग्रन्थ ।
गृह्यसूत्र (सं० पु०) स्मृतिशास्त्र ।
गृह्याग्नि (सं० पु०) गृह सम्बन्धी अग्नि, अग्निहोत्र का अग्नि ।
गेंगरा (सं० पु०) केंकड़ा ।
गेंड (सं० पु०) घेरा, ईख का पत्ता ।
गेंडक (सं० पु०) गेंदा, पुष्प विशेष ।
गेंडना (क्रि० स०) घेरना, छेकना, रोकना अलगाना, सीमा बाँधना ।
गेंड़ा (सं० पु०) गेंड़ा नामक जन्तु, ऊख के ऊपर के पत्ते, अगौरी ईख, ईख के बड़े बड़े टुकड़े ।
गेंडुआ (सं० पु०) टोंटी दार लोटा, सिरहान, तकिया, उसीस ।
गेंडुरी (सं० स्त्री०) बिठई, बिंठा, ईंडुरी ।
गेंद (सं० पु०) कंदुक, रबड़ कपड़े आदि की बनी हुई एक गोल वस्तु जिससे लड़के खेलते हैं ।
गेंदघर (सं० पु०) गेंद खेलने का घर, क्लब घर ।
गेंदा (सं० पु०) पुष्प विशेष, गेंद ।
गेंदी (सं० स्त्री०) खेलने की गोली ।
गे (क्रि० अ०) गये, चले गये ।
गेगला (वि०) मूर्ख, भोंदू, जड़ ।
गेगलापन (सं० पु०) मूर्खता, जड़ता ।
गेगली (वि०) फूहर, बदसूरत, भद्दी ।
गेड़ना (क्रि० स०) घेरना, घेरा बनाना, गोल लकीर खींचना, परिक्रमा करना ।

गेडुआ (सं० पु०) तकिया, सिरहाना, टोंटीदार लोटा।
गेडुरी (सं० स्त्री०) एंडुरी, बींड़ा, इडुरी।
गेदरा (वि०) अनबूझ, अज्ञान, भोंदू।
गेदा (सं० पु०) बिना पर की चिड़िया, पत्ती का वह बच्चा जिसके पंख न निकले हों।
गेय (वि०) कीर्तन के योग्य, गाने योग्य।
गेया (सं० पु०) मिटनी, बोटा, खण्ड।
गेरना (क्रि० स०) ढालना, उड़ेलना, गिराना, डालना।
गेरांव (सं० पु०) गरदावन, गरदवार्सा।
गेरु (सं० पु०) गैरिक, पहाड़ की लाल मिट्टी, उपधातु।
गेरुआ (वि०) गेरू का सा रंग, गैरिक, जोगिया, गेरू में रंगा हुआ।
गेरुई (सं० स्त्री०) एक प्रकार के कीड़े जो चैती के फसल में हानि पहुंचाते हैं। [निकलती है, गैरिक।
गेरू (सं० स्त्री०) लाल रंग की एक मिट्टी जो खानों से
गेह (सं० पु०) मकान, घर, गृह, वास-स्थान।
गेहनी (सं० स्त्री०) गृहिणी, स्त्री, पत्नी, भार्या।
गेहसूर (सं० पु०) घर में वीरता दिखाने वाला।
गेही (सं० पु०) गृहस्थ, गृही।
गेहुंअन (सं० पु०) एक मटमैले रंग का ज़हरीला साँप।
गेहुँआ (वि०) गेहूँ के रंग के समान।
गेहूं (सं० पु०) अन्न विशेष, गोधूम, गोंहूं।
गेंड़ा (सं० पु०) एक जानवर जिसके चमड़े का ढाल और हड्डी का अर्घा बनता है।
गैंत (सं० पु०) कुदाल, खोदने का औज़ार।
गैंता (सं० स्त्री०) कुदाल।
गैन (सं० पु०) गैल, राह, मार्ग, पथ।
गैना (सं० पु०) नाटा बैल, झाड़।
गैबी (वि०) गुप्त, अज्ञात, अजनबी, गूढ़।
गैया (सं० स्त्री०) गाय, गो, धेनु।
ग़ैर (अ० वि०) अन्य, पराया, दूसरा।
ग़ैरत (अ० सं० स्त्री०) लज्जा, हया, शरम।
ग़ैरमनकूला (अ० वि०) अचल, स्थिर, अटल, जो एक स्थान से दूसरे स्थान में न ले जाया जा सके।
ग़ैरमामूली (अ० वि०) असाधारण।
ग़ैरमुनासिब (अ० वि०) अनुचित।
ग़ैरमुमकिन (अ० वि०) असंभव, नामुमकिन।
ग़ैरवाजिब (अ० वि०) अनुचित, अयोग्य।
गैरा (सं० पु०) आंटी, मुट्ठा, घास का पूला।
गैरिक (सं० पु०) गेरू।
गैरेय (सं० पु०) शिलाजीत।
गैल (सं० पु०) कूचा, गली, राह, रास्ता, मार्ग।
गैहरी (सं० स्त्री०) बेंड़ा, अर्गल, रोकने का डण्डा।
गो (सं० स्त्री०) गाय, गऊ, धेनु, पशु, माता, जननी, वृषभ नाम की औषधि, वृषि राशि, किरण, वाक् शक्ति, वाणी, सरस्वती, दृष्टि, नेत्र, विद्युत्, बिजली, दिशा, पृथ्वी, जिह्वा, जीभ, (सं० पु०) बैल, शिव के नंदी नामक गण, सूर्य, चन्द्र, घोड़ा, तीर बाण बज्र, शब्द, नौ की संख्या, शरीर के रोंये, स्वर्ग, आकाश, प्रशंसक, गवैया, गाने वाला (फ़ा० अव्य०) यद्यपि।
गोंइँठा (सं० पु०) कंडा, गोहरा, उपरी, उपला।
गोंइँड़ा (सं० पु०) गांव के आस पास की ज़मीन, गांव के किनारे।
गोंछ (सं० स्त्री०) गलगोछा, गलमोछा।
गोंठना (क्रि० स०) किसी वस्तु के किनारे को मोड़ना, चारों ओर लकीर से घेरना।
गोंठनी (सं० स्त्री०) गुझिया गोंठने का एक औज़ार।
गोंठा (सं० पु०) देखो "गोंइठा"।
गोंठी (सं० स्त्री०) चेचक, शीतला, रोग विशेष।
गोंड़ (सं० पु०) एक असभ्य जंगली जाति विशेष, राग विशेष, बङ्गाल और भुवनेश्वर के मध्य का देश, नाभी का लटका हुआ मांस, गायों के रहने का स्थान।
गोंड़ा (सं० पु०) बाड़ा, घेरा, पुरवा, गांव, मुहल्ला, खेड़, बस्ती, सहन, आंगन, चौक, सड़क, परछन।
गोंद (सं० पु०) वृक्षों का सूखा हुआ दूध, लासा, निर्यास।
गोंदनी (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष, हिंगोट, इंगुदी।
गोंदा (सं० पु०) भुने बेसन की लोई जो पक्षियों को खिलाई जाती है।
गोंदी (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष, हिंगोट, इंगुदी।
गोआल (सं० पु०) गोपाल, गोप, अहीर।
गोइँजी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली।
गोइठा (सं० पु०) देखो "गोंइठा"।
गोइड़ (सं० पु०) देखो "गोंइँड़ा"। [वाला।
गोइदा (फ़ा० सं० पु०) गुप्तचर, भेदिया, गुप्त ख़बर देने

गोइयां (सं० स्त्री०) देखो "गुइयां"।
गोई (वि०) छिपा हुआ, गुप्त।
गोऊ (वि०) चुराने वाला, हरने वाला, छिपाने वाला।
गोए (वि०)गुप्त किये, छिपे हुये।
गोकर्ण (सं० पु०) तीर्थ स्थान, जो मालावार में है खच्चर, गण देवता विशेष, बित्ता, सर्प विशेष, एक राक्षस का नाम, एक मुनि का नाम, (वि०) जिसका कान गौ के समान हो।
गोकुल (सं० पु०) गौओं का समूह, गायों का झुण्ड, एक प्राचीन नगर का नाम, यह मथुरा के पास है यहीं श्रीकृष्ण ने अपना बाल्य समय बिताया था।
गोकुलस्थ (वि०) गोकुल का रहने वाला, बल्लभ संप्रदाय वालों का एक भेद, तैलंग ब्राह्मणों का एक भेद।
गोकुलेश (सं० पु०) श्रीकृष्ण।
गोकेस (सं० पु०) इतनी दूर का फासला जहां तक गाय के बोलने का शब्द पहुँच सके।
गोक्षुर (सं० पु०) गोखरू।
गोखा (सं० पु०) गौखा, झरोखा। [गोले फल होते हैं।
गोखुरू (सं० पु०) एक औषधि विशेष जिसमें कटीले
गोखुर (सं० पु०) गौ का खुर।
गोखुरा (सं० पु०) करैत सांप।
गोग्रास (सं० पु०) भोजन का वह ग्रास जो गौ के लिए निकाल दिया जाता है।
गोघात (सं० स्त्री०) गो-हत्या।
गोचना (क्रि० स०) धरना, रोकना, पकड़ना।
गोचर (वि०) जो इन्द्रियों द्वारा जाना जाय, (सं० पु०) इन्द्रिय-गम्य विषय, गायों के चरने का स्थान, चरागाह, प्रान्त, देश।
गोचर्म (सं० पु०) गाय का चमड़ा, एक प्राचीन नाप विशेष जो २१०० हाथ लम्बी और इतनी ही चौड़ी होती थी, इस नाप से ज़मीन खेत आदि नापा जाता था।
गोचा (सं० पु०) धोका देना, दबाना। [दबाना।
गोचागोची (सं० स्त्री०) धोखे पर धोखा, बलात्कार
गोचारण (सं० पु०) गोपालन, गौ को चराना।
गोचिकित्सा (सं० स्त्री०) गौ की औषधि, गौ की दवा।
गोछ (सं० पु०) पूंछ, गोंछ।

गोज (फ़ा० सं० पु०) पाद, अपान वायु।
गोजई (सं० स्त्री०) गेहूँ और जव मिला हुआ।
गोजर (सं० पु०) कनखजूरा।
गोजल (सं० पु०) गौमूत्र।
गोजिका (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष,एक प्रकार का पौधा।
गोजिह्वा (सं० स्त्री०)गोभी।
गोजी (सं० स्त्री०)लाठी, लठ।
गोझनवट (सं० पु०) स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो बगल में पीठ की ओर रहता है।
गोझा (सं० पु०) पकवान विशेष, जेब, थैली, खलीता, बंसकील, गुज्झा। [गाँव की टोली, मण्डली।
गोट (सं० पु०) मगजी, तोई, गाँव, खेलने की गोष्टी,
गोटा (सं० पु०) चांदी सोने का बना हुआ पतला फीता, किनारा, कोर।
गोटी (सं० स्त्री०) कंकड़, पत्थर आदि की छोटी छोटी गोलियाँ जिससे खेल खेला जाता है।
गोठ (सं० स्त्री०) गोशाला, सभा, सैर सपाटा।
गोठिल (वि०) कुण्ठित, कुन्द, जिसकी धार तीक्ष्ण न हो। [एक जाति।
गोड़ (सं० पु०) पांव, पैर, पाद, टांग, भड़भूंजों की
गोड़इत (सं० पु०) प्राचीन समय का वह धावक जो एक गांव से दूसरे गांव में पत्र पहुंचाया करता था, गांव में पहरा देने वाला, पहरुआ, चौकीदार।
गोड़ई (सं० स्त्री०) करघे में पाई करने के लिए पाई के दोनों ओर खड़ी की जाने वाली लकड़ियाँ।
गोड़न (सं० पु०) बे नमक वाली मिट्टी से भी नमक निकालने की क्रिया।
गोड़ना (क्रि० स०) खोदना, खनना।
गोड़वास (सं० पु०) पशुओं के पैर बांध कर खूंटे में बाँधे जाने वाला रस्सा।
गोड़वाना (क्रि० स०) खोदवाना, खनवाना। [गहना।
गोड़संकर (सं० पु०) स्त्रियों के पैर में पहनने का एक
गोड़हरा (सं० पु०) गोड़ाव, कड़ा।
गोड़ा (सं० पु०) पाया, घोड़िया, थाला।
गोड़ाई (सं० स्त्री०) खोदाई, खनाई।
गोड़ाना (क्रि० स०) गोड़वाना।
गोड़िया (सं० स्त्री०) छोटा पैर, कहार, मल्लाह। [गोड़।
गोड़ी (सं० स्त्री०) लाभ, फायदा, पाने का उद्योग, पैर,

गोण (सं० पु०) थैला, बोरा, आखा। [पतला वस्त्र।
गोणी (सं० स्त्री०) बोरा,आखा, गोन,नाप विशेष,छनना,
गोत (सं० पु०) गोत्र, वंश, कुल।
गोतम (सं० पु०) मुनि विशेष, जिन्होंने गोत्र का प्रवर्तन किया था,गोतम ऋषि, न्याय दर्शनकार।
गोतम नारी (सं० स्त्री०) गोतम मुनि की स्त्री, अहल्या।
गोतमान्वय (सं० पु०) शाक्य मुनि, बुद्धदेव।
गोतमी (सं० पु०) गोतम ऋषि की पत्नी, अहिल्या।
गोता (सं० पु०) डुब्बी, डुबकी।
गोताखोर (सं० पु०) डुब्बी लगाने वाला।
गोतामार (सं० पु०)गोता लगाने वाला।
गोतिया (वि०) जात बिरादर, अपने गोत्र का, गोती।
गोती (वि०) जात बिरादर, वंशज, स्वगोत्र वाले।
गोतीत (वि०) इन्द्रियों से परे, अगोचर।
गोत्र (सं० पु०) गोत, वंश, कुल, जाति, पर्वत, पहाड़, समूह, गरोह, क्षेत्र, राज छत्र।
गोत्रज (वि०) एक गोत्र वाला, एक वंश वाला।
गोत्रधन (सं० पु०) पैत्रिक धन, पिता का धन।
गोत्रशत्रु (सं० पु०) इन्द्र, शक्र, कुलाङ्गार।
गोत्री (वि०) गोत्रज, गोतिया, गोती, सम गोत्र वाले।
गोद (सं० पु०) कोरा, गोदी, अँकवार। [करना।
गोदना (क्रि० स०) गड़ाना, चुभोना, चोंकना, चिह्नित
गोदन्त (सं० पु०) हरिताल, पीले रंग की एक वस्तु।
गोदा (सं० पु०) चिह्न, निशान, अङ्क, पीपर पाकड़ बड़ आदि का फल। [देना
गोदान (सं० पु०) गौ को संकल्प करके ब्राह्मण को
गोदाम (सं० पु०) गुदाम, भण्डार।
गोदावरी (सं० पु०) दक्षिण प्रान्त की एक पवित्र नदी, यह नासिक के पास से निकलती है और बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है।
गोदी (सं० स्त्री०) गोद, अँकवार, कोरा।
गोदोहन (सं० पु०) गाय दुहना, गाय से दूध निकालना।
गोदोहनी (सं० स्त्री०) गोदोहन पात्र, दुधेड़ी, दोहनी, घूंचा। [पहाड़।
गोधन (सं० पु०) गौओं का झुण्ड, गोवर्द्धन नाम का
गोधा (सं० स्त्री०) गोह नामक जल जन्तु, एक प्रकार के चमड़े की पट्टी जो धनुष की प्रत्यञ्चा के चोट से बचने के लिए धनुर्धारी हाथ की कलाई पर बांधते हैं।
गोधिका (सं० स्त्री०) गोह, जल जन्तु विशेष।
गोधी (सं० स्त्री०) अन्न विशेष, गेहूं।
गोधूम (सं० पु०) गेहूँ, नारंगी। [पहले का समय।
गोधूली (सं० स्त्री०) संध्या समय, सूर्यास्त के एक घड़ी
गोधेनु (सं० स्त्री०) दुग्धवती गौ, दुधार गाय।
गोधोरा (सं० स्त्री०) सायङ्काल,सन्ध्या काल।
गोन (सं० स्त्री०) आखा, बोरा, मस्तूल में बांध कर नाव खींचने के लिये मूँज आदि की रस्सी, एक प्रकार की घास। [चटाई, चटाई।
गोनर (सं० पु०) एक प्रकार की घास, इसकी बनी हुई
गोनर्दीय (सं० पु०) पातञ्जलि मुनि, (वि०) गोनर्द देश का, गोनर्द देश सम्बन्धी।
गोना (क्रि० स०) छिपाना, लुकाना।
गोनिया (सं० स्त्री०) बढ़ई राज आदि का एक औज़ार जो किसी दीवार कोना आदि की सिधाई जांचने के काम आती है, अपनी पीठ या बैलों पर बोरा लाद कर ढोने वाला, नाव का गोन खींचने वाला।
गोप (सं० पु०) ग्वाल, अहीर, राजा, उपकारी, एक गन्धर्व का नाम, एक औषध विशेष, स्त्रियों का एक गहना जो गले में पहनती हैं।
गोपक (सं० स्त्री०) बहुत ग्रामों का स्वामी।
गोपकन्या (सं० स्त्री०) अहिरिन।
गोपति (सं० पु०) साँड़, वृष, बैल, गोरक्षक।
गोपद (सं० पु०) गाय का खुर, गोशाला।
गोपन (सं० पु०) लुकाव, छिपाव, दुराव, तेज पत्ता।
गोपना (क्रि० अ०) छिपाना, लुकाना।
गोपनार्ह (वि०) छिपने योग्य।
गोपनीय (वि०) छिपाने योग्य।
गोपर (वि०) गोतीत,इन्द्रियों से परे।
गोपा (वि०) लुकाने वाला, छिपाने वाला, दुराने वाला (सं० स्त्री०) गाय पालने वाली, ग्वालिन, अहीरिन। गौतम बुद्ध की स्त्री, इसका दूसरा नाम यशोधरा था, वह बड़ी पतिव्रता और विदुषी थी, बुद्ध के साथ यह भी भिक्षुणी हो गयी थी, बुद्ध के मरने पर इसी ने बुद्धाश्रम का संचालन किया था।
गोपाल (सं० पु०) गौ पालने वाला, अहीर,ग्वाला गोप, श्रीकृष्ण, राजा, मन, छन्द विशेष।
गोपालक (सं० पु०) अहीर, शिव, राजा।

गोपालय (सं० पु०) ग्वालों का घर, ब्रज ।

गोपाष्टमी (सं० स्त्री०) कार्तिक शुक्ल अष्टमी, इस दिन गौ का पूजनादि होता है ।

गोपिका (सं० स्त्री०) अहीरिन, ग्वालिन ।

गोपित (वि०) प्राप्त, रक्षित, गुप्त, छिपा । [थीं ।

गोपी (सं० स्त्री०) ग्वालिन, जो श्रीकृष्ण के साथ रहती

गोपीचन्द्र (सं० पु०) एक प्राचीन राजा का नाम, ये भर्तृहरि की बहिन मैनावती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, माता के उपदेश से ये राजपाट छोड़ विरक्त हो गये थे, इन्होंने अपनी स्त्री पद्मावती से भिक्षा मांगी थी । ये जलन्धर नाथ के शिष्य थे, इन के जीवन की घटनाओं को जोगी सारंगी बजा कर घर घर गीत गा कर भिक्षा मांगते हैं ।

गोपी चन्दन (सं० पु०) एक प्रकार की मिट्टी ।

गोपीनाथ (सं० पु०) श्रीकृष्ण, गोपियों के स्वामी ।

गोपुच्छ (सं० पु०) एक प्रकार का हार, गुच्छेदार ।

गोपुर (सं० पु०) नगर द्वार, किले का फाटक ।

गोप्ता (सं० पु०) रक्षक, विष्णु, गङ्गा ।

गोप्य (वि०) गोपनीय ।

गोप्रकांड (सं० पु०) श्रेष्ठ गौ, उत्तम गौ ।

गोफ (सं० पु०) दासी पुत्र, दास, सेवक, गोपियों का समूह, गुप्त ।

गोफणा (सं० स्त्री०) गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र विशेष, गुफना, ज़ख़्म की पट्टी ।

गोफन (सं० पु०) ढेलवाँस, फन्नी ।

गोफा (सं० पु०) गाभा, कोपल ।

गोफिया (सं० स्त्री०) गोफन ।

गोबर (सं० पु०) गौ का विष्टा, गोमय । [कुरूप ।

गोबरगणेश (सं० पु०) मूर्ख, जड़, अकर्मण्य, भद्दा,

गोबराना (क्रि० स०) गोबरी करना, गोबर से लीपना ।

गोबरिया (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा, जिसकी जड़ विषैली होती है ।

गोबरी (सं० स्त्री०) गोबर की लिपाई, गोबर का लेप ।

गोबरैला (सं० पु०) गोबर में रहने और उत्पन्न होने वाला कीड़ा ।

गोबरौरा (सं० पु०) देखो "गोबरैला" ।

गोबरौला (सं० पु०) देखो "गोबरैला" ।

गोभिल (सं० पु०) मुनि विशेष, वैश्यों की उपाधि ।

गोभी (सं० पु०) गो जिह्वा, कली, कोंपल, एक तरह की सब्ज़ी ।

गोमका (सं० पु०) कुम्हड़ा, कोंहड़ा ।

गोमत्तिका (सं० स्त्री०) दंश, डांस । [छन्द ।

गोमती (सं० स्त्री०) एक नदी, ग्यारह मात्रा का एक

गोमन्त (सं० पु०) पर्वत विशेष, एक पहाड़ का नाम ।

गोमय (सं० पु०) गोबर ।

गोमायु (सं० पु०) सियार, शृगाल ।

गोमिथुन (सं० पु०) दो गौ, गौ की जोड़ी ।

गोमुख (सं० पु०) गौ का मुख, शंख, सिंहनर, जयमाली, ऐपन, सेंध, सुरंग, एक यक्ष का नाम ।

गोमुखव्याघ्र (सं० पु०) वह मनुष्य जो देखने में तो सीधा और भोला भाला धर्मात्मा दीखे, परन्तु मन का बड़ा ख़राब और दुष्ट हो ।

गोमुखी (सं० स्त्री०) जयमाली, गंगोतरी का वह स्थान जो गोमुख के समान है और जहां से गङ्गा निकलती हैं, तीर्थ विशेष । [अज्ञान ।

गोमूढ़ (वि०) गौ के समान मूर्ख, अबोध, अतिशय

गोमूत्र (सं० पु०) गौ का मूत्र ।

गोमूत्रिका (सं० स्त्री०) एक प्रकार का चित्रकाव्य, एक बन्ध का नाम, तृण विशेष । [मणि ।

गोमेद (सं० पु०) गौ लोचन, शीतल चीनी, गोमेदक

गोमेध (सं० पु०) यज्ञ विशेष जिसमें गौ से हवन किया जाता था । [समाधि ।

गोर (वि०) गोरा, सफ़ेद, गौर वर्ण, (सं० स्त्री०) क़ब्र,

गोरक्ष (वि०) गोपाल, गौ रखने वाला ।

गोरक्षनाथ (सं० पु०) प्रसिद्ध और धर्म प्रवर्तक, ईसा की १५ वीं शताब्दी में ये महात्मा उत्तर पश्चिम प्रदेश में उत्पन्न हुये थे । ये कबीर साहब के समकालीन थे । इनके अनेक शिष्य थे, शिष्य इनको गुरु गोरखनाथ कहते थे । इनका कहना है कि सबसे श्रेष्ठ संसार में योगी यही हैं । इन्होंने उदार धर्म का प्रचार किया है । इन्होंने गोरक्ष संहिता नामक योग का ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा है ।

गोरखधंधा (सं० पु०) उलझन वाला काम, उलझन, पेंच, झगड़ा, एक में उलझे हुए तारों को अलगाने का काम ।

गोरखनाथ (सं० पु०) एक प्रसिद्ध अवधूत, ये गोरख पुर के निवासी थे, वहीं इन्होंने प्रसिद्धि भी पायी

थी, ये बड़े सिद्ध माने जाते थे, इनके सम्प्रदाय वाले अब भी हैं।
गोरखपन्थी (वि०) गोरखनाथ के अनुयायी।
गोरखमुण्डी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का पौधा जिसको मुण्डी कहते हैं। [निवासी।
गोरखा (सं० पु०) नेपाल का एक प्रदेश, इस देश के
गोरखाली (सं० पु०) नेपाल का एक प्रदेश, गोरखा।
गोरस (सं० पु०) दूध, दही, छाछ, माठा, तक्र।
गोरसा (सं० पु०) गाय के दूध से पला बच्चा।
गोरसी (सं०स्त्री०) दूध गरमाने के लिये अँगेठी, बोरसी।
गोरा (वि०) सफ़ेद, उज्ज्वल, गौर।
गोराई (सं० स्त्री०) सुन्दरता, सौन्दर्य।
गोरी (सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, रूपवती स्त्री।
गोरुत (सं० पु०) दो कोश। [इत्यादि।
गोरू (सं० पु०) चौपाया, मवेशी, पशु, गाय बैल भैंस
गोरोचन (सं० पु०) पीले रंग का एक सुगन्धित द्रव्य।
गोलंदाज़ (फ़ा० सं० पु०) तोप चलाने वाला, गोला चलाने वाला।
गोलंदाज़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) गोला चलाने की क्रिया।
गोलंबर (सं० पु०) गुंबज, गुंबद, कलबूत, फुलवारी के भीतर गोल चौतरा।
गोल (सं० पु०) वृत्ताकार, वर्तुल, मण्डलाकार।
गोलक (सं० पु०) विधवा का जारज पुत्र, गोलोक, गोल पिण्ड, इन्द्र, फण्ड, गल्ला।
गोलचला (सं० पु०) गोलन्दाज।
गोलमाल (सं० पु०) अगड़ बगड़, गड़बड़, अव्यवस्था।
गोलमिर्च (सं० स्त्री०) काली मिर्च।
गोला (सं० पु०) मण्डल, घेरा, गोल, मण्डी।
गोलाङ्गूल (सं० पु०) एक प्रकार का बन्दर जिसकी पूँछ गाय जैसी होती है।
गोलाई (सं० पु०) गोलापन।
गोलाकार (सं० पु०) गोल आकार वाला।
गोलाध्याय (सं० पु०) ज्योतिष विद्या, एक ग्रन्थ का नाम, जिसके कर्ता भास्कराचार्य हैं।
गोलार (सं० पु०) गोलाई।
गोलार्द्ध (सं० पु०) पृथ्वी का आधा भाग।
गोलियाना (क्रि० अ०) गोल बांधना, गोली बनाना।
गोली (सं० स्त्री०) छोटा गोलाकार पिण्ड, बटिया, बटी।
गोलोक (सं० पु०) श्रीकृष्ण का निवास स्थान, बैकुण्ठ।
गोलोकप्राप्ति (सं० स्त्री०) मुक्ति पाना।
गोलोकवासी (सं० पु०) भगवान, श्रीकृष्ण, राजा।
गोलोमा (सं० पु०) औषधि विशेष, बच।
गोवध (सं० पु०) गोहत्या, गौ को मारना।
गोवना (क्रि० स०) लुकाना, छिपाना।
गोवर्द्धन (सं० पु०) वृन्दावन का एक पर्वत, इन्द्र के अधिक वर्षा वर्षाने पर श्रीकृष्ण ने इसको अपनी कानी अंगुली पर उठा लिया था।
गोवर्द्धनधारी (सं० पु०) गोवर्द्धन पर्वत को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण चन्द्र जी।
गोवर्द्धनाचार्य (सं० पु०) संस्कृत के कवि, शृङ्गार के प्रसिद्ध आर्या सप्तशती नामक ग्रन्थ के कर्ता, अपने गीत गोविन्द में जयदेव ने इनका उल्लेख और प्रशंसा की है इनके पिता का नाम नीलाम्बर था।
गोवशा (सं०स्त्री०) वन्ध्या गौ, बहिला गाय।
गोविन्द (सं० पु०) श्रीकृष्ण, बृहस्पति।
गोविन्द द्वादशी (सं० स्त्री०) फाल्गुन शुक्ल द्वादशी।
गोविन्द ठक्कुर (सं० पु०) यह मिथिला वासी संस्कृत पंडित थे।
गोविन्दराज (सं० पु०) मनुस्मृति के एक टीकाकार थे।
गोशवारा (फ़ा० सं० पु०) कुण्डल, कलँगी, सिरपेंच, जोड़, मीज़ान, वह लेख जिसमें प्रत्येक मद का आय-व्यय अलग अलग दिखाया जाता है।
गोशाला (सं० स्त्री०) गौओं के रहने का स्थान।
गोश्त (फ़ा० सं० पु०) मांस।
गोश्तखोर (सं० पु०) मांस खाने वाला जानवर (वि०) मांस खाने वाला। [दल।
गोष्ठ (सं० पु०) बाड़ा, गौओं के रहने का स्थान, परामर्श,
गोष्ठविहार (सं० पु०) गौ चराने के समय श्रीकृष्ण की केलि।
गोष्ठी (सं० स्त्री०) सभा, समूह, परामर्श, बातचीत।
गोष्पद (सं० पु०) गोशाला, गौ के खुर के बराबर गढ़ा।
गोसाईं (सं० पु०) गोस्वामी, संन्यासियों का एक भेद, ईश्वर, मालिक, प्रभु, अतीत, जितेन्द्रिय।
गोसैंया (सं० पु०) ईश्वर, प्रभु, मालिक।
गोसदृश (सं० पु०) चमरी गाय व वन गौ।
गोस्तन (सं० पु०) गौ का थन, गुच्छ, पौध स्तवक।

गोस्तनी (सं० पु०) द्राक्षा, दाख, अंगूर।
गोस्थान (सं० पु०) गोष्ठ, गोठ, गोकुल, गोशाला।
गोस्वामी (सं० पु०) जितेन्द्रिय, वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्यों के उत्तराधिकारी।
गोह (सं० पु०) गोधा, विछखोपरा।
गोहन (सं० पु०) संगी, साथी, साथ, संग।
गोहरा (सं० पु०) कण्डा, उपरी, उपला।
गोहराना (क्रि० स०) बुलाना, पुकारना, गुहराना।
गोहरी (सं० स्त्री०) उपरी, कण्डा।
गोहरौर (सं० पु०) पथे हुए कण्डे का ढेर।
गोहार (सं० पु०) शोर, चिल्लाहट, हुल्लड़, पुकार, दुहाई, सहायता के लिए बुलाना।
गोही (सं० स्त्री०) गुप्त वार्ता, छिपाव, दुराव, गुठली, महुवे का बीज।
गोहुवन (सं० पु०) एक ज़हरीला सांप।
गोहूं (सं० पु०) गेहुं।
गौं (सं० पु०) अवसर, मौका, दांव, सुभीता।
गौ (सं० स्त्री०) गाय, धेनु, गइया।
गौख (सं० पु०) झरोखा, जङ्गला।
गौखा (सं० स्त्री०) झरोखा, जङ्गला।
गौखी (सं० स्त्री०) जूता, पनही।
गौगा (सं० पु०) अफ़वाह, जनश्रुति, गुलगपाड़ा, [होहल्ला।
गौछई (सं० स्त्री०) अंकुर, फुनगी।
गौड़ (सं० पु०) बंग देश का पूर्वी भाग, गौड़ देश का रहने वाला कायस्थ जाति विशेष, ब्राह्मणों की एक जाति विशेष।
गौड़पाद (सं० पु०) स्वामी शङ्कराचार्य के गुरु के गुरु इन्होंने माण्डूक्योपनिषद् की टीका लिखी है, और सायण कारिका का भाष्य किया है।
गौड़ा (सं० पु०) उड़ीसा, कहार।
गौड़िया (वि०) गौड़ देश का रहने वाला, गौड़ देश का।
गौड़ी (सं० स्त्री०) मद्य विशेष, काव्य में वृत्ति विशेष, रागिनी विशेष।
गौड़ेश्वर (सं० पु०) कृष्ण चैतन्य स्वामी, गौराङ्ग प्रभु।
गौण (वि०) अप्रधान, सहायक।
गौण काल (सं० पु०) अप्रधानकाल।
गौणी (वि०) अप्रधान, साधारण, अस्सी प्रकार की लक्षणाओं में से एक।

गौतम (सं० पु०) बुद्ध देव का दूसरा नाम, गोत्र प्रवर्तक एक ऋषि, गौतम ऋषि के वंशज, सप्तर्षि मण्डल के ताराओं में से एक तारा का नाम, कृपाचार्य का दूसरा नाम, एक पर्वत का नाम।
गौतमनारि (सं० स्त्री०) अहिल्या।
गौतमी (सं० स्त्री०) अहिल्या, कृपाचार्य की स्त्री, दुर्गा का एक नाम, गौतम की बनाई स्मृति, गोदावरी नदी।
गौदान (सं० पु०) गोदान।
गौन (सं० स्त्री०) बोरे के थैले जिनमें अन्न भर कर बैल पर लादा जाता है।
गौनई (सं० स्त्री०) गान, संगीत।
गौनहार (सं० स्त्री०) लोकनी, वह स्त्री जो गवने जाने वाली स्त्री के साथ उसके ससुराल जाती है।
गौना (सं० पु०) द्विरागवन, बधू का प्रथम बार ससुराल में आना।
गौर (वि०) गोरा, श्वेत, उज्ज्वल, (सं० पु०) धव नाम का वृक्ष, सोना, चन्द्रमा, केसर, एक तौल विशेष, एक पर्वत।
ग़ौर (अ० सं० पु०) ध्यान, चिन्तन, सोच, विचार।
गौरव (सं० पु०) महत्त्व, गुरुता, सम्मान, आदर, बड़प्पन, अभ्युत्थान, उत्कर्ष।
गौरवजनक (वि०) सम्मान-सूचक, मर्यादा-जनक।
गौरवा (सं० पु०) चटक पक्षी।
गौरवान्वित (वि०) प्रतिष्ठित, मान्य।
गौरा (सं० स्त्री०) पार्वती, दुर्गा, हल्दी।
गौराङ्ग (वि०) विष्णु, चैतन्य, श्रीकृष्ण, श्वेतवर्ण, पीतवर्ण।
गौरि (सं० पु०) देखो "गौरी"।
गौरिका (सं० स्त्री०) आठ वर्ष की कन्या, दुर्गा।
गौरिया (सं० स्त्री०) मिट्टी का हुक्का, चटक।
गौरिला (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरणी, धरनी।
गौरी (सं० स्त्री०) पार्वती, अष्ट वर्षीय बालिका, हल्दी, दारु हल्दी, गोरोचन, मजीठ, सफ़ेद दूब, सोन कदली प्रियंगु नामक वृक्ष, सफेद गाय, गंगा नदी, पृथ्वी, बुद्ध की एक शक्ति का नाम, वरुण की स्त्री, जटामांसी, रागिनी विशेष, एक नदी का नाम।
गौरीपति (सं० पु०) शिव, महादेव।
गौरीपुत्र (सं० पु०) कार्त्तिकेय, गणेश।
गौरीश (सं० पु०) शिव महादेव।

गौरीशङ्कर (सं० पु०) शिव, महादेव, हिमालय की सब से ऊँची चोटी का नाम।

गौरैया (सं० स्त्री०) देखो "गौरिया"। [स्थान।

गौशाला (सं० स्त्री०) गोशाला, गौओं के रहने का

ग्याभन (सं० स्त्री०) गर्भवती

ग्यारस (सं० स्त्री०) एकादशी तिथि।

ग्यारह (वि०) संख्या विशेष, दस और एक।

ग्रथित (वि०) गुथा हुआ, पिरोया हुआ।

ग्रन्थ (सं० पु०) पुस्तक, पोथी, किताब, ग्रन्थन, गांठ देना, धन।

ग्रन्थक (सं० पु०) निर्माणकर्ता, रचयिता, माला का सूत्र, निबन्धकार। [वाला, ग्रन्थकार।

ग्रन्थकर्ता (सं० पु०) पुस्तक लिखने वाला, ग्रन्थ बनाने

ग्रन्थकार (सं० पु०) देखो "ग्रन्थकर्ता"।

ग्रन्थचुम्बन (सं० पु०) वह जो किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता न हो, ग्रन्थों का मर्म न समझा हो केवल पाठ कर गया हो, अल्पज्ञ। [गूंथना।

ग्रन्थन (सं० पु०) गांठ, गुम्फन, निर्माण, जोड़ना,

ग्रन्थसाहब (सं० पु०) सिक्खों की धर्म पुस्तक।

ग्रन्थि (सं० स्त्री०) गांठ, गिरह।

ग्रन्थिक (सं० पु०) दैवज्ञ, गणक, सहदेव नामक पाण्डव, पीपरामूल, करीर, गुग्गुल, गठिवन।

ग्रन्थित (वि०) गूथा हुआ, निर्मित, गांठ पारा हुआ।

ग्रन्थिबन्धन (सं० पु०) गाँठ जोड़ाव, गँठबंधन।

ग्रन्थिमान (सं० पु०) हरसिंगार, जड़ हड़ जोड़, वह औषधि जिससे टूटी हुई हड्डी जुड़ी जाती है।

ग्रन्थिल (सं० पु०) पीपरामूल, अदरख, आदी, काँकई वृक्ष, करील, आलू।

ग्रसन (सं० पु०) भक्षण, ग्रहण, पकड़, निगलना, आक्रमण ग्रास, एक असुर का नाम।

ग्रसना (क्रि० स०) पकड़ना, सताना, बुरी तरह पकड़ना, दृढ़ता से पकड़ना।

ग्रसित (वि०) पकड़ा हुआ, पीड़ित, ग्रस्त।

ग्रस्त (वि०) ग्रसित, पकड़ा हुआ, खाया हुआ, भक्षित, पीड़ित, आक्रान्त, गृहीत।

ग्रस्तास्त (सं० पु०) ग्रहण लगने पर बिना मोक्ष हुए ही चन्द्रमा या सूर्य का अस्त होना। [होना।

ग्रस्तोदय (सं० पु०) ग्रहण लगे पर सूर्य चन्द्र का उदय

ग्रह (सं० पु०) सूर्य आदि नवग्रह, नौ की संख्या, ग्रहण करना, अनुग्रह, चन्द्र या सूर्य ग्रहण, राहु, रोग विशेष।

ग्रहण (सं० पु०) सूर्य मंगल आदि नवग्रह, आग्रह, हठ, अध्यवसाय, अनुग्रह, निर्बन्धन, ९ का संख्या, लेना, ग्रहण करना, कृपा।

ग्रहकल्लोल (सं० पु०) राहु।

ग्रहगोचर (सं० पु०) देखो "गोचर"।

ग्रहण (सं० पु०) चन्द्र सूर्य पर किसी ग्रह की छाया पड़ना, चन्द्र सूर्य का उपराग, स्वीकार, प्राप्ति, उपलब्धि।

ग्रहणान्त (सं० पु०) मोक्ष, उग्रह।

ग्रहणी (सं० स्त्री०) पित्त की प्रधान आधार वाली नाड़ी जो आमाशय और पक्वाशय के मध्य में है, अतिसार रोग।

ग्रहणीय (वि०) लेने योग्य, ग्राह्य।

ग्रहदशा (सं० स्त्री०) ग्रहों की स्थिति, अभाग्य।

ग्रहपति (सं० पु०) सूर्य, शनि, आक का वृक्ष।

ग्रहमैत्री (सं० पु०) वर कन्या के गृह स्वामियों की अनुकूलता, या मित्रता, इसका विचार व्याह ठीक करने के समय होता है।

ग्रहवेध (वि०) ग्रह की दशा आदि जानना।

ग्रहस्थापना (सं० पु०) नवग्रहों की पूजा, स्थापना।

ग्रहित (वि०) गृहीत, पकड़ा।

ग्रहीता (वि०) लेने वाला, ग्रहण करने वाला।

ग्रहोपराग (सं० पु०) ग्रहों का ग्रहण।

ग्रांडील (सं० पु०) ऊँचे कद का।

ग्राम (सं० पु०) गांव, बस्ती, खेड़ा, जनपद, समूह।

ग्रामकुक्कुट (सं० पु०) पालतू मुर्गा।

ग्रामकूट (सं० पु०) शूद्र जाति।

ग्रामगृह्य (सं० पु०) गाँव का बाहर।

ग्रामणी (सं० पु०) गांव का मालिक, मुखिया, प्रधान, विष्णु, यक्ष, नापित, (सं० स्त्री०) वेश्या।

ग्रामतक्षा (सं० पु०) गाँव का बढ़ई।

ग्रामदेवता (सं० पु०) डिहवार देवता, गांव का देवता।

ग्रामयाचक (सं० पु०) पुरोहित।

ग्रामवासी (सं० पु०) गाँव का रहने वाला।

ग्रामसिंह (सं० पु०) कुत्ता।

ग्रामिक (वि०) ग्राम्य, देहाती, गवँइया।
ग्रामीण (वि०) देहाती, गँवार।
ग्रामेश (सं० पु०) गाँव का मालिक, जमींदार।
ग्राम्य (वि०) ग्रामीण, मूर्ख, गँवार, छल कपट रहित।
ग्राम्यदेवता (सं० पु०) ग्राम रक्षक देवता।
ग्राम्यधर्म (सं० पु०) मैथुन, स्त्रीप्रसंग।
ग्राव (सं० पु०) बिनौरी, ओला, पत्थर, पहाड़। [ग्रहण।
ग्रास (सं० पु०) कौर, कवल, पकड़, सूर्य या चन्द्रमा में
ग्रासक (वि०) पकड़ने वाला, निगलने वाला।
ग्रासाच्छादन (सं० पु०) अन्न, वस्त्र, रोटी, कपड़ा।
ग्रासना (क्रि० स०) धरना, पकड़ना, निगलना, सताना।
ग्राह (सं० पु०) घड़ियाल, मगर, उपराग, ग्रहण, लेना, पकड़ना, ग्राहक, ज्ञान। [वाला, विष वैद्य, बाज पक्षी।
ग्राहक (सं० पु०) ग्रहण करने वाला, गाहक, चाहने
ग्राहकता (सं० स्त्री०) लोभ, ग्रहण करने की इच्छा।
ग्राहिका (सं० स्त्री०) त्रिबली का तृतीय बल।
ग्राही (सं० स्त्री०) ग्रहण करने वाला, मल रोधक, कैथ।
ग्राह्य (वि०) ग्रहणीय, मनोनीत, ज्ञातव्य।
ग्रीवा (सं० स्त्री०) गला, कण्ठ, गरदन।
ग्रीवाभरण (सं० पु०) गले का गहना।
ग्रीषम (सं० स्त्री०) देखो "ग्रीष्म"।
ग्रीष्म (सं० पु०) गरमी ऋतु, गरम, उष्ण।
ग्रीष्म काल (सं० पु०) उष्ण काल, गर्मी।
ग्रैवेय (सं० पु०) कण्ठ का भूषण, गले का गहना, कण्ठा, हँसुला इत्यादि।
ग्रैवेयक (सं० पु०) गले में पहिनने का गहना, हार, माला, हंसुली आदि।
ग्लपित (वि०) अवसन्न, थकित, श्रान्त, थकावट।
ग्लह (सं० पु०) पण, जुए की बाजी।
ग्लान (सं० पु०) खिन्न, रोगी।
ग्लानि (सं० पु०) खेद, खिन्नता, श्रान्ति, मानसिक व्यथा।
ग्लौ (सं०पु०) चन्द्रमा, विष्णु, कपूर।
ग्वार (सं० स्त्री०) एक पौधा, कौरी, खुरथी।
ग्वारपाठा (सं० पु०) घीकुआर।
ग्वाल (सं० पु०) अहीर, गोपाल।
ग्वाला (सं० पु०) देखो "ग्वाल"।
ग्वालिन (सं० स्त्री०) अहीरिन।
ग्वैंड़ा (वि०) गांव के आस पास, समीप।
ग्वैंड़े (क्रि० वि०) पास, समीप, निकट।
ग्वैंयां (सं० स्त्री०) सहचरी, संगिनी, सखी।

घ—यह कवर्ग का चौथा वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है। मेघ, धूप, घर्घर शब्द, घंटा।
घंघरा (सं० पु०) लहँगा, घँघरा, साया।
घंघरी (सं० स्त्री०) छोटा लहँगा, छोटा साया, घँघरी।
घंघोरना (क्रि० स०) घंघालना, पानी को हिला कर गंदला करना, जल को हिला कर उसमें कुछ मिलाना।
घंघोलना (क्रि० स०) देखो "घंघोरना"।
घंच (सं० पु०) गला, कण्ठ, नरेटी, ग्रीवा।
घंट (सं० पु०) घड़ा, वह जलपात्र जो किसी के मरने पर मृतक क्रिया में पीपल के वृक्ष में बांधा जाता है।
घंटा (सं० पु०) एक प्रकार का बाजा जो शिव आदि के मन्दिरों में लटका रहता है जिसमें एक लोलकी लगी रहती है, उसको हिलाने से ध्वनि निकलती है, घड़ी, घड़ियाल, घंटा बजाने की ध्वनि, दिन रात का चौबीसवां भाग, ढाई घड़ी, कुछ नहीं, ठेंगा।
घंटी (सं० स्त्री०) बहुत छोटा घंटा, गले के भीतर का मांस-पिण्ड जो जीभ के जड़ के पास लटका रहता है जिसको कौआ कहते हैं, लोलक।
घघरा (सं० पु०) स्त्रियों का एक चुननदार सिला हुआ पहनावा, जो कमर से पैर तक होता है, साया, लहँगा।
घघरी (सं० स्त्री०) छोटा घंघरा, घंघरी।
घचाघच (सं० पु०) ठसाठस, लबालब, किसी नरम चीज़ में चुभने का शब्द।
घट (सं० पु०) घड़ा, गगरी, कलस, पिण्ड, शरीर, मन, (वि०) थोड़ा, छोटा, मध्यम, कम।
घटक (सं० पु०) मध्यस्त, दलाल बिचवनियां, चारण, चतुर व्यक्ति, घड़ा।
घटकता (सं० स्त्री०) कुटनापन। [सभासद पण्डित।
घटकर्पर (सं० पु०) राजा विक्रमादित्य की सभा का एक

घटका (सं० पु०) मरते समय की दशा जिसमें प्राण रुक रुक कर निकलता है, घुटका, घर्रा ।
घटज (सं० पु०) कुम्भज ऋषि, अगस्त मुनि ।
घटती (सं० स्त्री०) अवनति, कमी, न्यूनता, कसर ।
घटदासी (सं० स्त्री०) कुटनी, दूती, सङ्गमकारिणी ।
घटन (सं० पु०) संयोग, दैव योग ।
घटना (क्रि० अ०) ठीक बैठना, लगना, आरोप होना, विधि मिलना, होना, उपस्थित होना, क्षीण होना, कम होना, थोड़ा होना, (सं० स्त्री०) मिलन, योजन, अद्भुत कर्म, वारदात, विलक्षण दृश्य, किसी बात का हो जाना ।
घटनीय (वि०) घटने योग्य, होने योग्य ।
घटन्त (सं०स्त्री०) न्यूनता, हीनता, अल्पता, ह्रास, उतार ।
घटब (सं० पु०) कम होना, क्षीण होना, न्यून होना, निर्माण करना । [कम वेश ।
घटबढ़ (सं० स्त्री०) न्यूनाधिक्य, कमी वेशी, (वि०)
घटयोनि (सं० पु०) अगस्त्य मुनि ।
घटवाई (सं० स्त्री०) घाट उगाहने वाला, घाट पर कर लेने वाला ।
घटवार (सं० पु०) घाट पर कर लेने वाला, मल्लाह, केवट, घाट पर दान लेने वाला ब्राह्मण, घाटिया ।
घटवारिया } घटवालिया } (सं० पु०) देखो "घटवार" ।
घटहा (सं० पु०) घाट का ठेकेदार, इस पार से उस पार जाने वाली नाव । [हुए मेघ, झुण्ड, समूह ।
घटा (सं० स्त्री०) बादलों का समूह, मेघ माला, उमड़े
घटाकाश (सं० पु०) घड़े के भीतर का खाली स्थान ।
घटाटोप (सं० पु०) बादलों का उमड़ना, घनघोर बादलों का घेरना, ओहार, आच्छादन ।
घटाना (क्रि० स०) कम करना, न्यून करना, कटना, बाकी निकालना, अपमान करना, अप्रतिष्ठा करना ।
घटाव (सं० पु०) कमी, न्यूनता, अवनति ।
घटिका (सं० स्त्री०) घड़ी, दण्ड, मुहूर्त ।
घटित (वि०) रचित, निर्मित, मिलित, संयुक्त ।
घटिया (वि०) कम मूल्य का, सस्ता, अधम, निकृष्ट, तुच्छ, नीच ।
घटिहा (वि०) लंपट, धूर्त, व्यभिचारी, धोखेबाज, चालाक, मक्कार, बेईमान, खल, दुष्ट ।
घटी (सं० स्त्री०) घड़ी, दण्ड, मुहूर्त, गगरी, कलसी, टोटा, घाटा, नुकसान, हानि, कमी, न्यूनता ।
घटीकार (सं० पु०) घड़ी बनाने वाला, घड़ीसाज़, कुम्हार ।
घटी यन्त्र (सं० पु०) घड़ी, समय-सूचक यन्त्र, संग्रहणी रोग का एक भेद, रहँट जिससे कुएँ से पानी निकाला जाता है ।
घटोत्कच (सं० पु०) एक राक्षस का नाम, यह भीम का औरस पुत्र था, यह हिडिम्बा नाम की राक्षसी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की तरफ़ से इसने युद्ध किया था, इसको कर्ण ने मारा था ।
घटोत्कर्ण (सं० पु०) शिव के एक अनुचर का नाम, यह मंगल का पुत्र था । [तट ।
घट्ट (सं० पु०) घाट, नदी वा तालाब का किनारा, नदी
घट्टा (सं० पु०) कमी, टोटा, हानि, क्षति, छेद, दरार ।
घट्ठा (सं० पु०) किसी वस्तु की रगड़ से किसी अङ्ग का चमड़ा मोटा पड़ जाना ।
घड़घड़ (सं० पु०) बादल के गर्जने या एक्का गाड़ी चलने की ध्वनि । [तड़पना ।
घड़घड़ाना (क्रि० अ०) घड़घड़ शब्द करना, गरजना,
घड़घड़ाहट (सं० स्त्री०) घड़घड़ शब्द की आहट ।
घड़त (सं० स्त्री०) गढ़न, सांचा, गठन, ढील, आकृति, बनावट ।
घड़ना (क्रि० स०) बनाना, गढ़ना, निर्मित करना ।
घड़ा (सं० पु०) कलसा, घट, घैला, जलपात्र ।
घड़िया (सं० स्त्री०) मिट्टी का वह बर्तन जिस में सोनार सोना चांदी गलाते हैं, कुल्हिया, पुरवा, मिट्टी का छोटा प्याला, शहद का छत्ता ।
घड़ियाल (सं० पु०) ग्राह, मगर, घंटा ।
घड़ियाली (वि०) घंटा बजाने वाला, घंटा बनाने वाला, (सं० स्त्री०) विजय घंट, विजर घंट ।
घड़ी (सं० स्त्री०) समय का एक मान, दिन रात का ३२ वां भाग, साठ पल का समय ।
मुहा०—घड़ी घड़ी=हर समय । घड़ी में तोला घड़ी में माशा=जल्दी २ हालत बदलना ।
घड़ीसाज़ (सं० पु०) घड़ी की मरम्मत करने वाला, बिगड़ी घड़ी को बनाने वाला ।

घड़ौंचा) घड़ौंचो) (सं० पु०) तिपाई, लटकन, पलहंड़ा।

घण्ट (सं० पु०) घड़ी, बाजा विशेष, वाद्य यंत्र, घड़िया।

घण्टापथ (सं० पु०) गाँव का प्रधान मार्ग।

घण्टालि (सं० स्त्री०) छोटा घंटा, वृक्ष विशेष, कोसातकी।

घण्टा शब्द (सं० पु०) घंटा का शब्द, समय-सूचक ध्वनि।

घण्टिका (सं० स्त्री०) तालु के ऊपर की छोटी जीभ, घांटी, लोला।

घण्टी (सं० स्त्री०) लुटिया, छोटा लोटा, छोटा घंटा।

घण्टू (सं० पु०) हाथी का घंटा, प्रताप, उत्तम घंटी, माला।

घण्टेश्वर (सं० पु०) देवता विशेष, शिव का गण, घटोत्कर्ण, मङ्गल का पुत्र।

घतिया (सं० पु०) हत्यारा, धोखेबाज़, घातक।

घतियाना (क्रि० स०) घात में लाना, छिपाना, चुराना।

घन (सं० पु०) मेघ, बादल, लोहा पीटने के लिए लोहारों का बड़ा हथौड़ा, ठोस, पोढ़ा, मजबूत, दृढ़, भारी, अधिक, बहुत, निविड़, अविरल, किसी संख्या को उसी से दो बार गुणा करने पर जो संख्या मिले।

घनकाल (सं० पु०) वर्षा ऋतु।

घनगरज (सं० स्त्री०) मेघों के गरजने का शब्द।

घनघन (सं० पु०) सर्वदा, सदा।

घनघनाना (क्रि० अ०) घन घन शब्द होना।

घनघेरा (सं० पु०) घंघरा, लहंगा।

घनघोर (सं० पु०) गम्भीर ध्वनि, भीषण शब्द, (वि०) भीषण, भयानक, बहुत घना, गहरा।

घनचक्कर (सं० पु०) अस्थिर बुद्धि वाला मनुष्य, मूर्ख, बेवकूफ, निठल्ला, आवारा, आतशबाजी, चरखी, सूर्यमुखी फूल, जंजाल, झंझट।

घनज्वाला (सं० स्त्री०) बिजली।

घनता (सं० स्त्री०) ठोसपन।

घनत्व (सं० पु०) घनता, ठोसपन, गठाव, लम्बाई चौड़ाई और मोटाई।

घनध्वनि (सं० स्त्री०) मेघ-गर्जन।

घननाद (सं० पु०) मेघ का शब्द।

घननिहार (सं० पु०) तुषार राशि, अधिक तुषार।

घन पदवी (सं० स्त्री०) आकाश, अंतरिक्ष, व्योम।

घनफल (सं० पु०) लम्बाई चौड़ाई और मोटाई का गुणनफल, किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त फल।

घनमूल (सं० पु०) किसी घन का मूल अङ्क, वह संख्या जिसको उसी से दो बार गुणा करने पर कोई संख्या मिले।

घनरस (सं० पु०) गोंद, अवलेह।

घनश्याम (सं० पु०) श्रीकृष्ण, काला मेघ, (वि०) बादल के सदृश काला।

घनसमय (सं० पु०) वर्षा ऋतु।

घनसार (सं० पु०) कपूर, पारा विशेष।

घना (वि०) बहुत अधिक, प्रचुर, सघन, गझिन, गहरा।

घनाक्षरी (सं० पु०) मनहर या दण्डक छन्द।

घनामल (सं० पु०) भैंसा, महिष।

घनाढ्ु (सं० पु०) औषधि विशेष, नागरमोथा।

घनिष्ठ (वि०) घना, गाढ़ा, निकटवर्ती, समीपस्थ, अत्यधिक, नज़दीक।

घने (वि०) अनेक, बहुत।

घनेरा (वि०) अतिशय, अत्यधिक।

घनेरे (वि०) अगणित, असंख्य, बहुत, अधिक।

घन्नई (सं०स्त्री०) घड़ों को लकड़ियों में बांध कर बनाया गया बेड़ा, जिससे छोटी नदियां पार की जाती हैं।

घपचियाना (क्रि० अ०) चक्कर में आना, घबराना।

घपची (सं० स्त्री०) दोनों हाथों के पञ्जों का जकड़ना, दोनों हाथों की चिपट।

घपला (सं० पु०) गोलमाल, गड़बड़।

घपुआ (वि०) भकुआ, जड़, मूर्ख।

घप्पू (वि०) भकुआ, घपुआ, मूर्ख।

घबड़ाना (क्रि० अ०) घबराना, व्याकुल होना, अधीर होना, हड़बड़ाना, ऊबना, उचाट होना, जल्दी मचाना, व्यग्र होना, चंचल होना।

घबड़ाहट (सं० स्त्री०) उद्विग्नता, व्याकुलता, अधीरता, उतावली, हड़बड़ी।

घबराना (क्रि० अ०) देखो "घबड़ाना"।

घबराहट (सं० स्त्री०) देखो "घबड़ाहट"।

घबरी (सं० स्त्री०) गुच्छा, फूलों का गुच्छा, स्तवक।

घमंका (सं० पु०) मुष्टि प्रहार, घूंसा।

घमंड (सं० स्त्री०) अभिमान, अहंकार, गर्व।

घमंडी (वि०) अभिमानी, अहंकारी, गर्वीला। [घमस।
घमका (सं० पु०) घूसे का शब्द, आघात, ध्वनि, उमस
घमखोर (वि०) धूप खाने वाला, धूप में रहने वाला।
घमघमाना (क्रि० अ०) घम घम शब्द होना, गम्भीर नाद करना, मुष्टि प्रहार करना, घूंसा लगाना।
घमरौल (सं० पु०) हल्ला, शोर, कोलाहल।
घमस (सं० स्त्री०) उमस, वायु न चलने के कारण जो गरमी हो, गरमी।
घमसान (वि०) भयङ्कर समर, घोर युद्ध, विकट लड़ाई।
घमाका (सं० पु०) भारी आघात होने का शब्द।
घमाघम (सं० पु०) घम घम ध्वनि, भारी आघात का शब्द, चहल पहल, धूम धाम।
घमाघमी (सं० स्त्री०) घमा घम मार पीट। [खाना।
घमाना (क्रि० अ०) घाम लेना, घमौनी करना, धूप
घमासान (सं० पु०) देखो "घमसान"।
घमोई, घमोर (सं० स्त्री०) अम्हौरी, अंधौरी।
घमौरी (सं० स्त्री०) अम्हौरी, अंधौरी।
घर (सं० पु०) मकान, गृह, भवन, निवास स्थान।
मुहा०—घर करना =बसना, रहना। आँख में घर करना=प्रिय होना, प्रेमपात्र होना। घर का=अपना, निज का। घर का उजाला=कुल की कीर्ति बढ़ाने वाला, बहुत प्यारा, अति सुन्दर। घर का भेदिहा=ऐसा मनुष्य जो घर का सब रहस्य जानता हो। घर का नाम डुबोना=कुल को कलंकित करना। घर की खेती=अपनी ही वस्तु। घर के घर रहना =न हानि उठाना न लाभ। घर घलना=घर बिगड़ना। घर घाट मालूम होना=दशा का पूर्ण परिचय होना। घर चलाना=घर का प्रबन्ध करना। घर होना=स्त्री पुरुष का आपस में प्रणय होना।
घरऊ (वि०) घरेलू, घर का। [कुल, परिवार।
घरघराना (क्रि० अ०) घर घर शब्द करना, (सं० पु०)
घरघराहट (सं० स्त्री०) घर घर शब्द की आहट।
घरघालन (वि०) कुल कलङ्कित करने वाला, कुल बिगाड़ने वाला, घर नाश करने वाला। [संपत्ति।
घरद्वार (सं० पु०) ठौर, ठिकाना, गृहस्थी, अपनी सब
घरछारी (सं० स्त्री०) वह कर जा पहले घर पीछे लिया जाता था।
घरनई (सं० स्त्री०) बेड़ा, चौघाड़ा बेड़ा।
घरना (क्रि० स०) घिसना, रगड़ना, गढ़ना, बनाना।
घरनी (सं० स्त्री०) गृहिणी, भार्या, पत्नी।
घरफोरी (सं० स्त्री०) घर में झगड़ा लगाने वाली, घर में बिगाड़ कराने वाली।
घरबसी (सं० स्त्री०) सुरैतिन, रखेलिन।
घरबार (सं० पु०) देखो "घरद्वार"।
घरबारी (वि०) गृहस्थी, कुटुंबी।
घरण (सं० पु०) खरखराहट, दुःख, पीड़ा।
घररय (सं० पु०) ध्वनि विशेष, नाक का शब्द।
घरवाला (सं० पु०) गृही, घर का मालिक, स्वामी।
घरवाली (सं० स्त्री०) भार्या, पत्नी, गृहिणी।
घराऊ (वि०) घर का, आपस का।
घराती (सं० पु०) विवाह में दुलहिन के कुटुम्ब या कन्या की ओर के न्योतरिया।
घराना (सं० पु०) वंश, कुल, परिवार। [वाला।
घरामी (सं० पु०) छवैया, छाजन करने वाला, घर छाने
घरियार (सं० पु०) मगर, ग्राह, घड़ियाल।
घरिक (सं० स्त्री०) एक घड़ी, थोड़ी देर, कुछ देर।
घरिया (सं० स्त्री०) देखो "घड़िया"।
घरियाना (क्रि० स०) कपड़े की तह लगा कर रखना, घड़ी लगाना, वस्त्रों को तह लगाना।
घरी (सं० स्त्री०) परत, तह, लपेट, चुन्नट, घड़ी।
घरू (वि०) घर का, गृहस्थी से सपर्क रखने वाला।
घरेला (वि०) पालू, पालतू, घरेलू।
घरेलू (वि०) घरेला, पालू, पालतू।
घरैया (वि०) स्वकुटुम्बी, घनिष्ट संबन्धी, घर का।
घरौंदा (सं० पु०) छोटा घर, खेलने के लिये बच्चों का बनाया घर।
घरौना (सं० पु०) घरौंदा, घर, मकान।
घर्घर (सं० पु०) घरघराहट, घर घर का शब्द।
घर्घरा (सं० स्त्री०) घाघरा, एक नदी का नाम, सरयू।
घर्म (सं० पु०) घाम, धूप गरमी, सूर्यताप।
घर्मद्युति (सं० पु०) दिवाकर, सूर्य।
घर्मविन्दु (सं० पु०) पसीना।
घर्माक्त (वि०) पसीना से भीगा।
घर्राटा (सं० पु०) गहरी नींद में जो नाक से घर घर शब्द निकलता है।
घर्षण (सं० पु०) रगड़, मर्दन, घिस्सा।

घर्षित (वि०) घिसा हुआ।

घलुआ / घलुवा (सं० पु०) सेंतमेंत, बलौना, घास, किसी वस्तु खरीदने में जो खरीदार को उचित वज़न से अधिक मिलता है।

घवद (सं० स्त्री०) फलों का गुच्छा, गौद, घौद।

घवर्द (सं० स्त्री०) फलों का गुच्छा, घवद।

घवरि (सं० पु०) घौर, घौद, गुच्छा, समूह (क्रि० वि०) एकत्रित होकर। [होना।

घसकना (क्रि० अ०) खिसकना, हटना, स्थानान्तरित

घसना (क्रि० स०) घिसना, रगड़ना।

घसिटना (क्रि० अ०) किसी वस्तु को इस प्रकार खींचना कि वह ज़मीन पर रगड़ जाय। [वाला।

घसियारा (सं० पु०) घास छीलने वाला, घास बेंचने

घसीटना (क्रि० स०) खींचना, जल्दी में लिखना, किसी को किसी काम में ज़बरदस्ती खींच लाना।

घसैला (वि०) अधिक घास।

घस्मर (वि०) पेटू, खाऊ।

घस्र (सं० पु०) दिन, दिवस।

घस्रा (वि०) हिंसक।

घहरात (क्रि०) टूटते हैं, टूट पड़ती हैं।

घहराना (क्रि० अ०) गर्जना, चिग्घाड़ना, घर्घराना।

घाँघरा (सं० पु०) लहँगा, घँघरा।

घाँटी (सं० स्त्री०) कौआ, नरेटी। [जाता है।

घाँटो (सं० पु०) एक राग विशेष जो चैत मास में गाया

घाई (सं० स्त्री०) दांव, घात, मौका, दो अँगुलियों के मध्य का संधिस्थान, आघात, चोट।

घाईन (सं० स्त्री०) ओसरी, बेर, बार।

घाउ (सं० पु०) घाव, क्षत, चोट, फोड़ा।

घाऊघप्प (वि०) दूसरे का माल हड़प जाने वाला, जिसकी चालबाज़ी का पता न चले, खाने वाला।

घाघ (सं० पु०) इस नाम का एक कवि था, यह किसान था और गोंडे का रहने वाला था यह बड़ा चतुर और अनुभवी था खेती बारी के विषय में इसकी उक्तियां खूब घटती हैं आज भी इसकी उक्तियां लोग कहा करते हैं, एक प्रकार का पक्षी, (वि०) चतुर, अनुभवी, होशियार, बुद्धिमान, निपुण, दक्ष, खुर्राट, सयाना।

घाघरा (सं० पु०) लहँगा, घाँघरा, एक तरह का कबूतर, पौधा विशेष, एक नदी का नाम।

घाट (सं० पु०) नदी तालाब आदि का किनारा जहाँ पर लोग नहाते धोते हैं और जल भरते हैं, या धोबी कपड़े धोते हैं, डौल डौल, रंग ढंग, सूरत, शकल आकृति, बनावट, धोखा, छल कपट, बुराई (वि०) कम, थोड़ा, न्यून, अल्प।

घाटवाल (सं० पु०) घाटिया, गंगा पुत्र।

घाटा (सं० पु०) हानि, घटी, टोटा, नुकसान।

घाटिया (सं० पु०) देखो "घटवाल"।

घाटी (सं० स्त्री०) पहाड़ों के बीच की ज़मीन, पहाड़ी रास्ता, पहाड़ पर चढ़ने की सकरी राह, दर्रा, पहाड़ी ढाल, चढ़ाव उतार वाला पहाड़ी रास्ता।

घाड़ (सं० पु०) गला, घांटी, गले का पिछला भाग।

घात (सं० पु०) प्रहार, मार, चोट, आघात, वध, हत्या, दांव, सुअवसर, सुयोग।

मुहा०—घात करना=धोखा देना, किसी के साथ बुराई करना। घात में ताकना=मौका ढूंढ़ना। घात में फिरना=अनिष्ट साधने के लिये अनुकूल अवसर ढूँढ़ना। घात में रहना=किसी के विरुद्ध कार्य करने के लिये सुअवसर ढूँढ़ते रहना।

घातक (सं० पु०) हत्यारा, वधिक, जल्लाद, चाण्डाल।

घाता (सं० पु०) अनुकूलता, सस्ते दाम में किसी वस्तु का मिलना।

घातिनि (सं० स्त्री०) हत्यारिन, चाण्डालिन।

घातिया (सं० पु०) घाती, घातक, हत्यारा, वधिक।

घाती (सं० पु०) घातक, हत्यारा, संहारक। [जल्लाद।

घातुक (सं० पु०) घातक, घाती, हत्यारा, वधिक,

घात्य (वि०) मारने योग्य।

घान (सं० पु०) उतनी वस्तु जितनी एक बार कोल्हू, चक्की, ओखल आदि में डाली जाय, उतनी वस्तु जितनी एक बार कड़ाही आदि में डाल कर निकाली जाय।

घानी (सं० स्त्री०) देखो "घान"।

घाबरा (वि०) व्याकुल, उद्विग्न।

घाम (सं० पु०) घर्म, धूप, सूर्यातप। [बोदा, आलसी।

घामड़ (वि०) घाम न सहने वाला, सीधा, भोंदू, मूर्ख,

घाय (सं० पु०) फोड़ा, घाव, ज़ख्म।

घायल (वि०) ज़ख्मी, आहत, क्षत प्राप्त, चोटाया हुआ।
घाये (क्रि० स०) दिये। [गढ़ा।
घार (सं० स्त्री०) पानी के धार से कट कर बना हुआ
घाल (सं० स्त्री०) घलुआ।
घालक (सं० पु०) घातक, नाशक, अपकारक।
घालन (सं० पु०) हनन, मारण।
घालना (क्रि० स०) चलाना, फेंकना, छोड़ना, रखना, डालना, कर डालना, रख लेना, मारना, पटकना, गोला दागना।
घालमेल (सं० पु०) मिलावट, गड़बड़, मिश्रण, घनिष्ठता, हेल मेल। [किया।
घाला (सं० पु०) घघुआ, (क्रि० स०) मिलाया, नाश
घालि (वि०) डालकर, फेंककर।
घालित (वि०) मारा हुआ, नष्ट किया हुआ, उजाड़ा हुआ।
घाली (वि०) डाल दिया, फेंक दिया।
घाव (सं० पु०) क्षत, व्रण, फोड़ा, ज़ख्म, चोट।
घास (सं० पु०) चारा, तृण, खर, फूस।
घासी (सं० स्त्री०) घास, चारा, तृण।
घिग्घी (सं० स्त्री०)हिचकी।
घिघाना (क्रि०) स्वर भंग होना।
घिघियाना (क्रि० अ०) गिड़गिड़ाना, चिल्लाना, लल्लो-पत्तो करना, रो रो कर विनय करना। [निकलना।
मुहा०—घिग्घी बँध जाना—भय और लज्जा से शब्द न
घिचपिच (सं० स्त्री०) भीड़ भाड़, संकीर्णता, स्थान की कमी, (वि०) घना, गिचपिच।
घिन (सं० स्त्री०) घृणा, खिन्नता, अरुचि, ग्लानि।
घिनाना (क्रि० अ०) घृणा करना, अरुचि होना।
घिनावना (वि०) घृणित, गंदा।
घिनौना (वि०) घिनावना, घृणित। [में होता है।
घिनौरी (सं० स्त्री०) ग्वालिन नाम का कीड़ा जो बरसात
घिया (सं० पु०) नगेई, नेनुआ।
घिरना (क्रि० अ०) घेरे में आना, घिर जाना, बादलों का उमड़ना, चारों ओर छाना।
घिरनी (सं० स्त्री०) गगड़ी, चरखी, चक्कर।
घिराई (सं० स्त्री) घेरने का कृत्य, पशुओं को चराना।
घिराना (क्रि० स० बेड़ा बनाना, सीमा बाँधना।
घिराव (सं० पु०) घेरा।
घिव (सं० पु०) घृत, घी।
घिसकना (क्रि० स०) घसकना, खसकना।
घिसघिस (सं० पु०) इधर उधर देर लगाना, अनिश्चय, गड़बड़ी, अनावश्यक विलम्ब।
घिसना (क्रि० स०) रगड़ना, घसना, मलना।
घिसपिस (सं०स्त्री०) मेल जोल, घिसघिस।
घिसवाना (क्रि० स०) रगड़वाना, घसवाना।
घिसाई (सं०स्त्री०) घिसने का कृत्य, रगड़ाई।
घिसाना (क्रि० स०) रगड़ाना।
घिसाव (सं० पु०) रगड़।
घिसावट (सं० स्त्री०) घिसाव, रगड़।
घिसियाना (क्रि० स०) घसीटना।
घिस्समघिस्सा (सं० पु०) धक्कमधुक्की, भीड़भाड़।
घिस्सा (सं० पु०) रगड़, घिसाव।
घी (सं० पु०) घृत, घिव। [से लाभ होना।
मुहा०—घी में पाँचों अंगुलियाँ होना=हर प्रकार
घीकुवार (सं०पु०) ग्वारपाठा।
घुँइयां (सं० स्त्री०) अरुई, अरवी।
घुँघची (सं० स्त्री०) रत्ती, गुंजा। [आदि।
घुँघनी (सं० स्त्री०) घी तेल में तला हुआ मटर, चना
घुँघराले (वि०) छल्लेदार बाल, अंगुठिया बाल, कुंचित, घुंघर वाले।
घुँघराले (वि०) देखो "घुँघराले"।
घुँघरू (सं० स्त्री०) गोल खोखली गुरिया जिसके भीतर कंकड़ या और कोई वस्तु भरी रहती है जो झम-झम बजती है।
घुँघरूदार (वि०) घुंघरू लगे हुए।
घुंडी (सं० स्त्री०) गोपक कपड़े का गोल बटन।
घुंडादार (वि०) जिसमें घुंडी लगी हो।
घुग्घू (सं० पु०) उल्लू नाम का पक्षी।
घुघुआ (सं० पु०) उतान हो दोनों पैर बटोर उस पर बच्चों को बैठा ऊपर नीचे ला कर बच्चों को खेलाने की क्रिया, उल्लू नाम की चिड़िया।
घुटकना (क्रि०स०) पी जाना, घटक जाना, घूंट घूंट पीना।
घुटकी (सं० स्त्री०) घोंटने वाली नली, वह नली जिसमें होकर खाना पीना पेट में जाता है।
घुटना (सं० पु०) ठेहुना, टांग और जांघ के बीच का जोड़, (क्रि० अ०) सांस रुकना, दम रुकना, फँसना, रुकना, घोंटना, पीसना।

घुटनों चलना (सं० पु०) ठेहुने से चलना जैसे बालक चलते हैं।
घुटन्ना (सं० पु०) घुटनों तक का पाजामा।
घुटवाना (क्रि० स०) घुटाना, बाल मुड़ाना।
घुटाई (सं० स्त्री०) गढ़ाई, रगड़ाई, चिकनाहट, सफ़ाई।
घुटाना (क्रि० स०) बाल बनवाना, मुड़वाना, सफ़ाचट कराना, घुटवाना।
घुटी, घुट्टी (सं० स्त्री०) छोटे बच्चों को पाचन के लिए पिलाने वाली औषधि।
घुड़ (सं० पु०) घोड़ा अश्व, घोटक।
घुड़कना (क्रि०अ०) डांटना, डपटना, कड़क कर बोलना।
घुड़की (सं० स्त्री०) धमकी, डाट डपट।
घुड़चढ़ा (सं० पु०) अश्वारोही, सवार।
घुड़चढ़ी (सं० स्त्री०) विवाह की वह रीति जिसमें वर घोड़े पर चढ़ कर कन्या के घर जाता है, एक तरह की छोटी तोप, देहाती रंडा। [घोड़ा दौड़ाना।
घुड़दौड़ (सं० स्त्री०) घोड़ों की दौड़, बाज़ी लगा कर
घुड़बहल (सं० पु०) घोड़े का रथ। [किन्नर।
घुड़मुहा (सं० पु०) घोड़े के समान मुंह वाला व्यक्ति,
घुड़सना (वि०) घुंगर करना, पेच देना।
घुड़साल (सं० पु०) अस्तबल, घोड़ों के रहने का स्थान।
घुड़ुकना (क्रि० अ०) घुड़कना डांटना, डपटना।
घुण (सं० पु०) घुन, एक प्रकार का कीड़ा।
घुणाक्षर न्याय (सं० पु०) अकस्मात् सिद्ध, ऐसी रचना या कृति जो घुनों के खाने से लकड़ियों में अक्षर के समान बन जाती है, अज्ञात और अनभीष्ट कार्यों का आकस्मिक रूप से हो जाना।
घुण्डी (सं० स्त्री०) बटन, बताम या बोताम, बन्ध।
घुन (सं० पु०) एक प्रकार के कीड़े जो अन्न लकड़ी आदि में लगते हैं। [बजाने का खिलौना, झुनझुना।
घुनघुना (सं० पु०) बच्चों का एक हाथ से हिला कर
घुनना (क्रि० अ०) घुन लगना, घुनों से लकड़ी अन्न आदि का खा जाना।
घुना (वि०) घुना हुआ, घुन द्वारा खाया हुआ।
घुनाक्षर (सं० पु०) घुन के काटे हुए चिह्न।
घुनिया (वि०) घुना कपटी।
घुप (सं० पु०) गहरा, निविड़, अंधकार, अंधियारा।
घुमघुमा (सं० पु०) घुमाव, लौट पौट।
घुमघुमाना (क्रि०) घुमाना, बात उलटना।
घुमण्ड (सं०पु०) मेघों का घिर आना, दुर्दिन आना।
घुमंडना (क्रि० अ०) उमड़ना, मेघों का इधर उधर से एकत्रित होना, बादलों का घिर आना, छा जाना, एकत्रित होना।
घुमक्कड़ (वि०) बहुत घूमने वाला, आवारा।
घुमटा (सं० पु०) सिर में चक्कर आना।
घुमड़ (सं० स्त्री०) बादलों का छाना, मेघों का घेर घार।
घुमड़ना (क्रि० अ०) देखो "घुमंडना"।
घुमड़ाना (क्रि०स०) देखो "घुमडना"।
घुमना (वि०) इधर उधर घूमने वाला।
घुमरी (सं० स्त्री०) तिर्मिरी, चक्कर, मूर्च्छा, बेहोशी, एक प्रकार का रोग जिससे सिर में चक्कर आकर आदमी बेहोश हो जाता है। [देना, बहकाना।
घुमाना (क्रि० स०) टहलाना, फिराना, सैर कराना, चक्कर
घुमाव (सं० पु०) चक्कर, फेर।
घुरकना (क्रि० अ०) देखो "घुड़कना"।
घुरकी (सं० स्त्री०) धमकी, घुड़की, डांट, डपट।
घुरघुरा (सं० पु०) कीट विशेष, रोग विशेष।
घुरघुराना (क्रि० अ०) घुर घुर शब्द होना।
घुरघुराहट (सं० स्त्री०) घुर घुर शब्द।
घुरना (क्रि० स०) शब्द करना, पिघलना, हल होना।
घुरनी (सं० स्त्री०) घुमरी, तिर्मिरी, चक्कर।
घुरविनिया (सं० स्त्री०) घुर पर से दाना बिनना, गली कूचा में टूटी फूटी कोई चीज़ चुनना।
घुरुका (सं०पु०) भीमसेन का एक पुत्र, देखो "घटोत्कच"।
घूर्मित (क्रि० वि०) चकराता हुआ, घूमता हुआ।
घुलना (क्रि०अ०) पिघलना, गलना, सड़ना, हल होना।
घुलवाना (क्रि० स०) पिघलवाना, गलवाना।
घुलाऊ (वि०) सड़ने योग्य, गलने योग्य, पिघलने योग्य।
घुलाना (क्रि० स०) गलाना, पिघलाना, धीरे धीरे चूसना, चुभलाना, सड़ाना, लगाना, बिताना।
घुलावट (सं० स्त्री०) गलावट पिघलावट।
घुवा (सं० पु०) सेमर की रूई। [चुभना, धँसना।
घुसना (क्रि० अ०) प्रवेश करना, पैठना, गड़ना,
घुसपैठ (सं० स्त्री०) पहुंच, पैसार, प्रवेश, गति।
घुसाना (क्रि० स०) पैठाना, गड़ाना, डलाना, धंसाना, चुभाना, लगाना, घुसेड़ना।

घुसेड़ना (क्रि० स०) पैठाना, चुभाना, धँसाना, घुमाना, खोसना, ठाँसना।
घुस्की (वि०) कुलटा, व्यभिचारिणी, छिनाल।
घुसृण (सं० पु०) गन्ध द्रव्य विशेष, कुङ्कुम।
घूँघची (सं०स्त्री०) लाल रत्ती, गुञ्जा।
घूँघट (सं० पु०) स्त्रियों की साड़ी या चद्दर का वह भाग जिसे वे लज्जावश मुँह की ओर लटका लेती हैं, वह वस्त्र जिससे स्त्रियाँ मुँह ढँके रहती हैं, घोमटा।
घूँघर (सं० पु०) लच्छेदार बाल, घुंघराले बाल बालों के मरोड़।
घूँघरवारे (सं० पु०) घुंघराले, कुंचित।
घूँघरू (सं० पु०) देखो "घुंघरू"।
घूँट (सं० पु०) पानी आदि तरल पदार्थों का उतना भाग जितना एक बार गले से उतरे।
मुहा०—खून का घूंट पी कर रह जाना=दुःख की बात को सहन करना। घूंट घूंट कर मारना=दुःख पहुँचा कर मारना।
घूँटना (क्रि० स०) पीना, निगलना।
घूँटी (सं० स्त्री०) एक औषधि जो बच्चों को स्वस्थ रहने के लिए प्रतिदिन दी जाती है।
घूँस (सं० स्त्री०) मूसा, चूहा, रिशवत।
घूँसा (सं० पु०) मुक्का, धमाका, मुष्टि।
घूघू (सं० पु०) उल्लू पक्षी, घुग्घू।
घूटना (क्रि० अ०) सांस रोकना, घुटना, दबाना।
घूत (सं० पु०) अनबन, खटपट, द्वेष, विरोध, द्रोह, झगड़ा।
घूता (वि०) अनुभवी, चतुर, छली, कपटी, द्रोही।
घूम (सं० स्त्री०) चक्कर, मोड़, घुमाव, फेर।
घूमना (क्रि० अ०) टहलना, भ्रमण करना, मेड़राना, चकराना, लौटना, मुड़ना। [ताक।
घूर (सं० पु०) कूड़ा, कर्कट, कतवार, राखपात, देख,
घूरची (सं० पु०) उलझन, फँसाव।
घूरना (क्रि० अ०) क्रोध से देखना, ताकना।
घूरा (सं० पु०) कतवार खाना, कूड़ा कर्कट, कतवार।
घूरिया (सं० पु०) कूड़ा, घूरा।
घूर्णन (सं० पु०) सिर हिलाना।
घूर्णित (वि०) घुमाया गया।
घूस (सं० पु०) बड़ा चूहा, मूषिक, रिशवत, घूस।
घूसत (सं० पु०) उल्लू का बच्चा।
घूस्सा (सं० पु०) थप्पड़, मुक्का।
घृणा (सं० पु०) घिन, नफ़रत, ग्लानि।
घृणार्ह (वि०) घृणा योग्य।
घृणास्पद (वि०) घिनौना, निन्दित।
घृणित (वि०) घृणा के योग्य।
घृणय (वि०) घृणा योग्य।
घृत (सं० पु०) घी, घिव।
घृतकुमारी (सं० स्त्री०) घीकुवार, ग्वारपाठा।
घृताक्त (वि०) घी में डुबोया हुआ।
घृताची (सं० पु०) स्वर्ग की अप्सरा।
घृष्ट (वि०) घर्षित, पिसा हुआ।
घृष्टि (सं० पु०) घिसना, मारना, सूकर, सुअर (सं० स्त्री०) विष्णु कान्ता नाम की औषधि।
घेघा (सं० पु०) घेवा, फूली गर्दन वाला।
घेंट (सं० पु०) गला, गर्दन।
घेंटा (सं० पु०) सुअर का बच्चा, छवना।
घेगा, घेघा (सं० पु०) घेघुआ, गलगण्ड।
घेतल, घेलल (सं० पु०) एक प्रकार का जूता जिसे अधिकतर दक्षिणी पहिनते हैं।
घेपना (क्रि०) मिलाना, मिश्रण करना।
घेमना (क्रि० अ०) मिलाना, खुरचना, छिलना।
घेर (सं० पु०) घेरा, परिधि, मण्डल। [विनती।
घेरघार (सं० पु०) चौतरफ़ा घेरा, विस्तार, खुशामद,
घेरना (क्रि० स०) रोकना, छेकना, रूंधना, बेड़ा बांधना, चराना।
घेरनी (सं० स्त्री०) रँहट का हत्था।
घेरा (सं० पु०) पेटा, मण्डल, परिधि।
घेलवा (सं० पु०) घलुआ, रूँक।
घेवर (सं० पु०) एक प्रकार की मिठाई।
घैया (सं० स्त्री०) थन से निकला दूध की धार।
घैला (सं० पु०) घड़ा, गगरा, कलसा, कुम्भ।
घोंघा (सं० पु०) शंबूक, सीप, (वि०) मूर्ख, अनारी, जड़, खोखला।
घोंटना (क्रि० सं०) रगड़ना, मलना, मरोड़ना, पीना, निकलना, (सं० पु०) लोढ़ा, सोंटा। [खोंता, नीड़।
घोंसला (सं० पु०) चिड़ियों का वास-स्थान, वासा,
घोंसुआ (सं० पु०) देखो "घोंसला"।

घोखना (क्रि० स०) रटना, पढ़ना, घोंटना, याद रखना।
घोघी (सं० स्त्री०) थैली, झोली, तीन कोना लपेटा हुआ कंबल आदि जो किसान बरसात में पानी से बचने के लिए ओढ़ते हैं।
घोट (सं० स्त्री०) चिकनाहट, (सं० पु०) घोड़ा।
घोटक (सं० पु०) अश्व, घोड़ा।
घोटना (क्रि० स०) अभ्यास करना, परिश्रम करना, डांटना, डपटना, बिगड़ना, रगड़ना, पीसना।
घोटना (सं० स्त्री०) लोढ़ा, लुढ़िया।
घोटवाना (क्रि० स०) रगड़वाना, बाल बनवाना।
घोटा (सं० पु०) घोटने का सोंटा, कपड़े पर चमक पैदा करने की वस्तु ।
घोटाला (सं० पु०) गड़बड़, गोलमाल।
घोट्ट (सं०पु०) घोंटने वाला, घोटा।
घोड़ रोज़ (सं० पु०) नील गाय।
घोड़ा (सं० पु०) अश्व, तुरंग, हय, घोटक।
घोड़ी (सं० स्त्री०) घोड़े की मादा।
घोप (सं० पु०) ओढ़ने की वस्तु, गुप्त स्थान।
घोर (वि०) भयंकर, विकराल, विकट, भयानक, डरावना, गहरा, गाढ़ा, बुरा, सघन, घना दुर्गम, (सं० स्त्री) ध्वनि, गर्जन, शब्द।
घोरतर (वि०) अत्यन्त भयानक।
घोर रूपा (वि०) भयानक, भीषण, भयंकर।
घोरा (सं० स्त्री०) बुध की वह गति जो श्रवण, चित्र, धनिष्ठा और शतभिखा नक्षत्रों में पड़ने से होती है (सं० पु०) घोड़ा, खूँटा।
घोल (सं० पु०) छाछ, तक्र, मट्ठा।
घोल घुमाव (सं० पु०) टाल मटोल, बनावट, कृत्रिमता।
घोलना (क्रि० स०) मिलाना, हल करना।
घोला (वि०) घोला हुआ, गँदला, (सं० पु०) बरहा।
घोष (सं० पु०) अहीरों की बस्ती, अहीर, बंगाली कायस्थों का एक भेद, गोशाला, तट, आवाज़, नाद, गर्जन, वाह्य प्रयत्न का एक भेद। [गर्जन, नाद, ध्वनि।
घोषणा (सं० स्त्री०) ढिंढोरा, डुग्गी, राजाज्ञा का प्रचार,
घोषणा पत्र (सं० पु०) वह पत्र जिसमें राजा की ओर से प्रजा मात्र की विज्ञप्ति के लिए कोई आज्ञा लिखी हो।
घोषणीय (वि०) प्रचारित करने योग्य।
घोषी (सं० पु०) अहीर। [करते हैं।
घोसी (सं० पु०) वे मुसलमान, जो ग्वालों का काम
घौद (सं० पु०) घवद, फलों का गुच्छा।
घौहा (सं० पु०) चोटैल, घायल। [वास, गंध।
घ्राण (सं० स्त्री०) नाक, गंध, ग्रहण, सूँघने की शक्ति,
घ्राण तर्पण (सं० पु०) सुगन्धि सौरभ।
घ्राणेन्द्रिय (सं० पु०) नाक, नासिका।
घ्रान (क्रि०) पुष्प आदि की गन्ध।
घ्रापक (वि०) सूँघने वाला।

ङ

ङ—यह कवर्ग का पाँचवाँ और अन्तिम वर्ण है, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ और नासिका है।
ङ (सं० पु०) विषयेच्छा, विषय की इच्छा, विषयस्पृहा, विषय वासना, विदप, भैरव, शिव।

च—वर्णमाला के द्वितीय वर्ग का प्रथम अक्षर है, इसी कारण इस वर्ग को चवर्ग कहते हैं। इसका उच्चारण स्थान तालु है, (अव्य०) संस्कृत में नीचे लिखे अर्थों में इसका प्रयोग होता है, समाहार, समुच्चय, पाद पूरण, पक्षान्तर, निश्चय, हेतु, निमित्त, हिन्दी में इसका प्रयोग देखने में नहीं आता।
चंग (सं० स्त्री०) पतंग, गुड्डी, एक बाजा, छोटी डफ, एक प्रकार की मदिरा।
चंगना (क्रि० स०) कसना, कस कर बांधना, दिक करना। [नाम।
चंगवाई (सं० स्त्री०) गँठवाई, वायु जनित एक रोग का
चंगा (वि०) स्वास्थ्य सम्पन्न, नीरोग, रोग रहित।
चंगुल (सं० पु०) पंजा, पक्षियों का पंजा।
मुहा०—चंगुल में फँसना—अधीन होना, विवश होना, लाचार होना। [पात्र।
चंगेरी (सं० स्त्री०) छीटा, डलिया, बांस का बना एक

चंगेली (सं० स्त्री०) छीटा, चंगेरी।

चंचनाना (क्रि०) चनचन करना, बक बक करना।

चंचनाहट (सं० पु०) झुंझलाहट, चसक, टीस।

चंचलाना (क्रि०) चञ्चल होना, अस्थिर होना।

चंचलाहट (सं० स्त्री०) चंचलता। [खाना।

चँचोरना (क्रि० स०) चूसना, दातों से चूस चूस कर

चंट (वि०) धूर्त, ठग, अविश्वसनीय।

चँदवा (सं० पु०) चाँदनी, शामियाना, वितान।

चंदावत (सं० पु०) सिसोदिया की एक शाखा, क्षत्रियों की एक जाति, उदयपुर में चंदावत सर्दार प्रसिद्ध हैं, और इनके पूर्व पुरुषों ने उदयपुर के महाराणाओं की अच्छी सेवा की थी। [खोपड़ी।

चंदिया (सं० स्त्री०) माँथा, सिर की हड्डी, कपाल,

चंदेरी (सं० स्त्री०) बुन्देलखण्ड का एक समृद्धिशाली नगर, इस समय यह ग्वालियर राज्य में सम्मिलित है, यहां कपड़े का व्यापार होता है, रेशमी और सूती कपड़े यहां अच्छे बुने जाते हैं। चंदेरी की पगड़ी प्रसिद्ध है, यह बहुत प्राचीन नगर है, इस पर स्वदेशी और विदेशी अनेक राजाओं ने आक्रमण किये हैं और उस पर अपना अधिकार जमाया है। कुछ लोगों का कहना है कि चन्देल राजाओं की राजधानी इसी नगर में थी। चन्देल राजा यशोवर्मा ने इस नगर पर अपना अधिकार जमाया था।

चंदेल (सं० पु०) क्षत्रियों की एक शाखा, यह शाखा चन्द्रवंशी क्षत्रियों की है। इस वंश के लोग अधिकता से बुन्देलखंड में पाये जाते हैं। प्राचीन समय में चन्देल क्षत्रियों ने भी वीरता दिखाया और राज्य किया है।

चंपई (सं० स्त्री०) चम्पा के समान रंग, चम्पई रंग।

चंबल (सं० पु०) एक नदी का नाम, यह नदी विन्ध्य-पर्वत से निकली है और इटावे के पास जमुना में मिली है।

चँवर (सं० पु०) चमर, यह सुरा गाय की पूंछ के बालों का बनाया जाता है, देवता, राजा, दूल्हा आदि पर हाँका जाता है, यह राजचिह्न समझा जाता है।

चँवरी (सं० स्त्री०) छोटा "चँवर"।

चंसुर (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा, यह दवा के काम आता है। कहीं कहीं इसके पत्ते खाये भी जाते हैं।

चइ (अव्य०) हाथी हाँकने का एक सङ्केत।

चइत (सं०पु०) चैत्र मास।

चउक (सं० पु०) वेदी, व्याह आदि उत्सवों में कुङ्कुम आदि से घेर कर बनाया स्थान।

चउकी (सं० स्त्री०) चौकी, जो लकड़ी के पटरों से बनती है और बैठने सोने आदि के काम में आती है।

चउतरा (सं० पु०) चबूतरा, मिट्टी या पत्थर का बना ऊँचा स्थान, चत्वर।

चउर (सं० पु०) चामर, मोरछल चौंर, चवँर। [स्थान।

चउरा (सं० पु०) ग्राम देवता आदि का मिट्टी का बना

चक (सं० पु०) सीमाबद्ध स्थान, बाड़ा, वह स्थान जहां खरीद बिक्री हो, चकवा, चकई जिससे लड़के खेलते हैं, चक्र, पहिया।

चकनामा (सं० पु०) पट्टा, अधिकार पत्र।

चकई (सं० स्त्री०) चक्रवाकी, चकवा की स्त्री, एक खिलौना।

चकचका (वि०) गहरा, निर्मल, स्वच्छ, प्रकाशमय।

चकचकाना (क्रि० अ०) चमकना, प्रकाशित होना, निकलना, सूचित होना।

चकचका (सं० स्त्री०) कटार, झलाझल।

चकचाल (सं० पु०) भ्रमण, फेरा, घूमना, चक्कर काटना, चक्रचाल, ऊटपटांग, व्यर्थ किसी को कष्ट देने का उपाय सोचना।

चकचौंध (सं० पु०) चकाचौंध, विमूढ़, कर्त्तव्य ज्ञान हीन, हक्काबक्का।

चकचौंधा (सं० स्त्री०) विमूढ़ता, हक्काबक्कापन।

चकछुंदी (सं० स्त्री०) छछुन्दरि, मूसिका।

चकड़वा (सं० पु०) चकल्लस।

चकतारा (क्रि०) दुबचौरा, बैठना।

चकती (सं० स्त्री०) कपड़े का छोटा टुकड़ा, चमड़े का छोटा टुकड़ा, धातु के चद्दर का छोटा टुकड़ा, पेवन्द।

चकत्ता (सं० पु०) शरीर का गोला चिह्न, जो रक्त विकार से उत्पन्न होता है, ददोरा।

चकना (क्रि० अ०) चकित होना, विस्मित होना।

चकनाचूर (वि०) नष्ट भ्रष्ट, चूर चूर, चूरमुर, खण्ड खण्ड, गिरने या आघात पाने से किसी वस्तु के खण्डित होने के विषय में इस शब्द का प्रयोग होता है।

चकपक (वि०) विस्मित, चकित, विस्मय, चहलपहल।

चकपकाना (क्रि० अ०) आश्चर्य युक्त होना, आश्चर्य से इधर उधर देखना, सहसा कोई अपने लिए कर्त्तव्य निश्चित न कर सकना।

चकमक (सं० पु०) प्रकाशित, प्रकाशमान्, एक पत्थर, जिसको रगड़ कर प्राचीन समय में आग निकालते थे।

चकमा (सं० पु०) धोखा, विश्वासघात।

चकरवा (सं० पु०) असमंजस, विकट परिस्थिति, सांप छछून्दर की गति।

मुहा०—चकरवा मचाना = धूम धाम मचाना।

चकरा (सं० पु०) चौड़ा।

चकराना (क्रि० अ०) चकित होना, अचम्भित होना, विस्मित होना, फेर में पड़ना।

चकरानी (सं० स्त्री०) चाकरानी, नौकरानी, दासी।

चकरी (सं० स्त्री०) चक्की, चना आदि दलने का पत्थर का एक यन्त्र।

चकलई (सं० स्त्री०) चौड़ाई, चकला।

चकला (सं० पु०) चौकी, रोटी बेलने की चौकी।

चकलाई (सं० स्त्री०) चौड़ाई।

चकलाना (क्रि०) चौड़ा करना, फैलाना।

चकलादार (सं० पु०) शासक।

चकलेदार (सं० पु०) शासक, किसी प्रान्त या सूबे का शासन करने वाला अधिकारी, कर वसूल करने वाला बड़ा अधिकारी।

चकवँड (सं० पु०) एक पौधा, इसका संस्कृत नाम चाकमर्द है, यह दाद की अनुभूत औषधि है, अन्य औषधियों में भी इसका प्रयोग होता है। कुम्हारों का एक पात्र, जिसमें चाक के पास पानी रक्खा रहता है, और उसी पानी का बर्तन बनाने में उपयोग किया जाता है।

चकवा (सं० पु०) एक पक्षी का नाम जिसे चक्रवाक कहते हैं, इनके जोड़े का रात में वियोग हो जाता है और पुनः सूर्योदय होने पर इनका संयोग होता है, यह हंस जाति का पक्षी है।

चकवी (सं० स्त्री०) चकवा की मादा।

चका (सं० पु०) चक्र, पहिया, कुम्हार का चाक, रोटी पूरी बेलने का चकला।

चकाचक (सं० पु०) भरपूर, पूरेपूर, ध्वनि विशेष, तलवार आदि के मांजने का शब्द।

चकाचौंध (सं० पु०) आंखों का झिलमिलाना, अधिक प्रकाश के कारण आंखों में तिलमिली आना, तिलमिलान, विस्मित होना, कर्त्तव्य-ज्ञान-शून्य होना।

चकाचौंधी (सं० स्त्री०) तिलमिलाहट, विस्मय।

चकाबू (सं० पु०) चक्रव्यूह, प्राचीन युद्ध की एक रीति, चक्राकार मोर्चाबन्दी।

चकार (सं० पु०) "च" अक्षर।

चकावी (सं० स्त्री०) भैंसिया दाद। [सशङ्क, भयभीत।

चकित (वि०) विस्मित, अचम्भित, भौचक्का, डरा हुआ,

चकृत (वि०) चकित।

चकेरा (सं० पु०) बड़ी आंख वाला।

चकोतरा (सं० पु०) एक प्रकार का नीबू, चकोतरा नीबू।

चकोर (सं० पु०) एक पक्षी का नाम, यह पक्षी चन्द्रमा का प्रसिद्ध प्रेमी है, कवियों ने भी इसका बड़ा ही गुण गान किया है, यह पूर्णिमा के दिन आग खा जाता है, गांव वाले कहते हैं कि पूर्णिमा के दिन चकोर यदि चौथिया ज्वर के रोगी की ओर आंख उठा कर देख दे तो उसका रोग छूट जाता है।

चकोरी (सं० स्त्री०) चकोर की मादा। [भँवर।

चकोह (सं० पु०) प्रवाहित पानी का चक्करदार घुमाव,

चकौड़ (सं० पु०) एक प्रकार का पौदा जिससे दाद छूट जाती है। चकवँड, चकौंदा।

चक्क (सं० पु०) पहिया, चक्का, चाक, चक्कर, चक्र। (पद्य में) चकवा, कुम्हार का चाक, दिशा।

चक्कर (सं० पु०) चक्र, मण्डलाकार वस्तु, घोड़े की मण्डलाकार गति, पहिया।

मुहा०—चक्कर खाना = भटकना, सीधे रास्ते न जाकर फेर से जाना। चक्कर बाँधना = अपने चारों ओर के मण्डल को अपने अनुकूल करना, मण्डलाकार घूमना। चक्कर मारना = व्यर्थ घूमना। चक्कर में आना = फँसना, किसी के फेर में पड़ना, विस्मित होना। चक्कर में पड़ना = दुविधे में पड़ना।

चक्कवई (सं० पु०) चक्रवर्ती सम्राट्।

चक्कवत (सं० पु०) चक्रवर्ती राजा।

चक्कवा (सं० पु०) चकवा, चक्रवाक।

चक्कवै (सं० पु०) चक्रवर्ती।

चक्कस (सं० पु०) चिड़ियों का अड्डा। [मोटा टुकड़ा।

चक्का (सं० पु०) पहिया, चाका, मिट्टी आदि का बड़ा

चक्रान (वि०) गाढ़ा, थका, थकित, श्रमित ।
चक्की (सं० स्त्री०) चकरी, दाल आदि दलने का पत्थर का बना यन्त्र विशेष ।
चक्कू (सं० पु०) छुरी, चाकू ।
चक्र (सं० पु०) चक्कर, पहिया, मण्डलाकार वस्तु, सिख सम्प्रदाय का एक धारणीय अस्त्र, इसे सिख लोग सिर के साफे पर बांधते हैं, विष्णु का सुदर्शन चक्र, कुम्हार का चाक ।
चक्रतीर्थ (सं० पु०) दक्षिण के एक तीर्थ का नाम, वह तीर्थ ऋष्यमूक पर्वत में तुंगभद्रा नदी के किनारे है ।
चक्रधर (सं० पु०) विष्णु भगवान, (वि०) चक्र धारण करने वाला, चक्रधारी ।
चक्रपाणि (सं० पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण, (वि०) चक्रधारी ।
चक्र लक्षणा (सं० स्त्री०) गरुच,अमृतलता ।
चक्रवत् (वि०) भुजाकार, गोल मटोल । [भीम राजा ।
चक्रवर्ती (सं० पु०) राष्ट्र का पालन करने वाला, सार्व-
चक्रवाक (सं० पु०) चकवा पक्षी ।
चक्रवात (सं० पु०) हवा का चक्कर ।
चक्रवाल (सं० पु०) लोकालोक नाम का पर्वत, इस पर्वत के द्वारा भूमण्डल घिरा हुआ है, इसके द्वारा अन्धकार और प्रकाश की व्यवस्था होती है ।
चक्रवृद्धि (सं० स्त्री०) ब्याज का एक भेद, ब्याज पर ब्याज, सूद दर सूद, इस प्रथा में नियत समय पर ब्याज भी असल में शामिल कर लिया जाता है और उस पर भी सूद लगता है ।
चक्रव्यूह (सं० पु०) प्राचीन युद्ध का मोर्चा, इसमें मण्डलाकार सेना खड़ी की जाती है, इसकी रक्षा का भार किसी महारथी के हाथ में सौंपा जाता है, युद्ध मण्डल के भीतर होता है, जब किसी मनुष्य की रक्षा करनी होती है उस समय इस मण्डल की रचना की जाती है ।
चक्रा (सं० स्त्री०) समूह, गिरोह, टोली ।
चक्राकार (सं० पु०) गोलाकार, घेरा ।
चक्राकुला (वि०) भँवर वाली ।
चक्राङ्कित (वि०) चक्र चिह्नित, जो चक्र से चिह्नित हुआ हो, रामानुज सम्प्रदाय विशेष, जिस मनुष्य के द्वारका आदि तीर्थों में चक्र का छाप लगाया गई हो ।
चक्राङ्ग (सं० पु०) हंस ।
चक्रान्त (सं० पु०) गुप्त अभिसन्धि, षड्यन्त्र ।
चक्रायुध (सं० पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण ।
चक्राह्व (सं० पु०) चक्रवाक पक्षी ।
चक्रित (वि०) चकित, विस्मित ।
चक्री (वि०) चक्र धारण करने वाला, विष्णु श्रीकृष्ण, कुम्हार, चक्रवर्ती, सूचक, दूत, सर्प, बकरा, चकवा ।
चक्रैला (वि०) गोलाकार ।
चक्षुःश्रवा (सं० पु०) सांप, सर्प, अहि, क्योंकि इसके कान नहीं होते और यह आंख ही से सुनता है ।
चक्षु (सं० पु०) आंख, दृष्टि, यह शब्द संस्कृत में सान्त अर्थात् चक्षुस् है, इस नाम की एक नदी ।
चक्षुरिन्द्रिय (सं० स्त्री०) आंख, नेत्र, दृष्टिशक्ति ।
चक्षुष्य (वि०) आंखों का हितकारी, आंखों को लाभ पहुंचाने वाली औषधि, मनोहर, जो देखने में सुन्दर हो ।
चक्ष (सं० पु०) चक्षु, आंख ।
चखन (सं० पु०) आंख, चख, चक्षु । [से थोड़ा खाना ।
चखना (क्रि० स०) स्वाद जानने के लिये किसी वस्तु में
चखाचखी (सं० स्त्री०) टंटा, विरोध, झगड़ा ।
चखाना (क्रि०) खिलाना, चस्का ।
चगड़ (वि०) चतुर, होशियार, चुस्त, चालाक ।
चगलाना (क्रि०) बगलाना ।
चङ्क्रमण (सं० पु०) धीरे धीरे घूमना, चक्कर करना ।
चङ्ग (वि०) शोभन, सुन्दर, दक्ष, पट, रोग हीन, सुस्थ । (सं० पु०) गुड्डी, पतङ्ग, दुरभिलाषा से मत्त होना ।
चङ्गा (वि०) भला, सुखी, नीरोग, स्वस्थ ।
चङ्गेर (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, सरस, छोला, बढ़िया, मनोहर ।
चङ्गेर (सं० पु०) बांस आदि की बनी छोटी डलिया, फूल रखने का पात्र ।
चङ्गेरा (सं० पु०) खांचा, टोकरा, दौरी ।
चङ्गेरी (सं० स्त्री०) टोकरी, डलिया, तृण आदि का बना पात्र विशेष ।
चचा (सं० पु०) पिता का भाई, चाचा ।
चची (सं० स्त्री०) चचा की प्यारी स्त्री, धर्मपत्नी ।
चचीर (सं० पु०) लकीर ।
चचुलाई (सं० स्त्री०) चचेड़ा ।
चचेरा (वि०) चचा का पुत्र, चचा संबन्धी ।
चचोरना (क्रि०) चूसना, निचोड़ना, निकालना ।

चञ्चनाना (क्रि० अ०) चिल्लाना, चनचन करना, बकना ।
चञ्चनाहट (सं० पु०) टीस, झुंझलाहट, चसक ।
चञ्चरीक (सं० पु०) भ्रमर, मधुकर, अलि ।
चञ्चल (वि०) अस्थिर, चपल, स्थिर नहीं ।
चञ्चलता (सं० स्त्री०) अस्थिरता, नटखटी ।
चञ्चलत्व (सं० स्त्री०) अस्थिरता । [चटपटी ।
चञ्चला (सं० स्त्री०) विद्युत, बिजुली, लक्ष्मी, पिघली,
चञ्चलाई (सं० स्त्री०) धृष्टता, ढिठाई, उद्दण्डता, चपलता, चुलबुलाहट ।
चञ्चलाना (क्रि०अ०) चञ्चल होना, अस्थिर होना ।
चञ्चलाहट (सं० स्त्री०) अस्थिरता, चपलता ।
चञ्चा (सं० स्त्री०) नरकट की चटाई ।
चञ्चापुरुष (सं० पु०) तृण का बना मनुष्य जो पशु पक्षी आदि को डराने के लिए खेत में गाड़ा जाता है ।
चञ्चु (सं० स्त्री०) पक्षी का ओठ, पक्षी का ठोंठ, ठोर, चोंच (पु०) चेंच, रेंड़ का वृक्ष, हिरन ।
चट (सं० पु०) शीघ्र, तुरन्त ।
चटक (सं० पु०) पक्षी विशेष, चमकीला ।
चटकदार (वि०) चटकीला, चमकदार ।
चटकना (क्रि० अ०) टूटना, फूटना, 'चट' शब्द करके फूटना, तड़कना, अपने आप टूट जाना ।
चटकनी (सं० स्त्री०) कुंडी, किवाड़ बन्द करके की कुंडी ।
चटकमटक (सं० स्त्री०) सजधज, चमक, शृङ्गार ।
चट करना (क्रि०अ०) तुरन्त करना, झट निकाल लाना ।
चटकवाही (सं० स्त्री०) शीघ्रता, समय के पहले सावधानी, समय पर शीघ्रता पूर्वक काम ।
चटका (सं० पु०) शीघ्रता, तुरन्त, जल्दी ।
चटकाना (क्रि० स०) तोड़ना, फोड़ना, चिढ़ाना ।
चटकार (सं० पु०) चमकीला, चमक दमक, चटकीला ।
चटकारना (क्रि० सं०) पशुओं को उत्तेजित करना ।
चटकीला (वि०) चटक, गहरा रंग, चमकदार रंग, चमकीला ।
चटखना (क्रि०) टूटना । [कुंडी ।
चटखनी (सं० स्त्री०) चटकनी, किवाड़ बन्द करने की
चटचटना (क्रि० अ०) लसीले पदार्थ के लगने से सटना, चट चट शब्द करना, लकड़ी आदि के जलने का शब्द होना ।
चटचटिया (वि०) हड़बड़िया, उतावला ।
चटना (सं० पु०) चटोरा, पेटू ।
चटनी (सं० स्त्री०) चाटने की वस्तु, हरी धनिया पुदीना मिरचा खटाई आदि की यह बनायी जाती है ।
चटपट (क्रि० वि०) शीघ्र, तत्काल, तुरंत, बिना विलम्ब । [भोजन, स्वादिष्ट भोजन ।
चटपटा (वि०) चरपटा, निमक मिर्च आदि मिला हुआ
चटपटाना (क्रि० अ०) व्याकुल होना ।
चटपटाहट (सं० स्त्री०) व्याकुलता, शीघ्रता ।
चटपटिया (वि०) उतावला, हड़बड़िया, चंचल ।
चटपटी (सं० स्त्री०) शीघ्रता, जल्दबाज़ी, व्याकुलता, आकुलता । [करना ।
चटवाना (क्रि० स०) चटाना, दूसरे को चाटने में प्रवृत्त
चटशाल (सं० स्त्री०) भारतीय मदरसा, पाठशाला, बच्चों के पढ़ने की जगह जहां लाला जी, गुरु जी या मौलवी साहब पढ़ाते हैं । [एक चीज़ ।
चटाई (सं० स्त्री०) घास आदि की बनी बिछाने की
चटाक (सं० स्त्री०) धड़ाका, घोर नाद ।
चटाका (सं० पु०) धड़ाका, तड़ाका ।
चटाचट (क्रि० वि०) लगातार ।
चटान (सं० स्त्री०) पत्थर का टुकड़ा । [वाना ।
चटाना (क्रि० स०) चटवाना, कोई पतली चीज़ चट-
चटापटी (सं० स्त्री०) बहुत ही शीघ्र , बिना बिलम्ब, पूर्व सूचना के बिना किसी काम का शीघ्र हो जाना ।
चटावन (सं० पु०) अन्नप्राशन संस्कार, बालक या बालिका को छः महीने की अवस्था में यह संस्कार किया जाता है ।
चटिया (सं० पु०) विद्यार्थी, शिष्य ।
चटीसार (सं० स्त्री०) ध्यान, स्थिरता । [बिजुली ।
चटु (सं० पु०) खुशामद, सुन्दर, मनोहर (सं० स्त्री०)
चटुल (वि०) चञ्चल, चञ्चलता के कारण प्रिय, मनोहर, प्रायः छोटे छोटे बच्चों की चञ्चलता के अर्थ में इसका प्रयोग होता है ।
चटोर (वि०) जीभ चटाक, अच्छी अच्छी वस्तु खाने की इच्छा रखने वाला, रसना-लोलुप ।
चटोरपन (सं० पु०) अच्छी २ चीज़ें खाने का व्यसन, स्वाद-लोलुपता ।
चटोरा (सं० पु०) देखो " चटोर "
चटोरी (सं० स्त्री०) चाटने वाली, स्वादी स्त्री ।

चट्ट (वि०) निःशेष, समाप्त, समाप्त हो जाना, ग़ायब होना।

मुहा०—चट्ट करना = समाप्त करना, ग़ायब कर देना।

चट्टा (सं० पु०) विद्यार्थी, पाठशाले का लड़का, चेला।

चट्टान (सं०पु०) पत्थर का बड़ा पटरा, शिलाखंड, लम्बा चौड़ा ज़मीन का टुकड़ा जो अलग हो जाता है।

चट्टावट्टा (सं० पु०) एक खिलौने का नाम, छोटे छोटे बालकों के खेलने का एक खिलौना।

मुहा०—चट्टा बट्टा लड़ाना = इधर की बात उधर करना, दो आदमियों में निष्कारण झगड़ा लगाना। एक ही थैली के चट्टे बट्टे = एक ही गुट्ट का होना, एक ही तरह से अन्यायी होना।

चट्टी (सं० स्त्री०) पड़ाव, पन्थशाला, रास्ते में यात्रियों के ठहरने का स्थान, पहाड़ी रास्ते में चट्टियां होती हैं, वहां यात्री ठहरते हैं, वहां दूकानें रहती हैं जिन पर भोजन आदि की वस्तु बिकती हैं।

चट्ठा (सं० पु०) स्वादु, भोजन।

चड़ (सं० स्त्री०) किसी वस्तु के टूटने का शब्द, लकड़ी आदि के टूटने का शब्द, थप्पड़, चटकन।

चड़चड़ (सं० पु०) चटपटा, ध्वनि विशेष।

चड़चड़ाना (क्रि० अ०) टूटना, तड़कना।

चड़पड़ाना (क्रि० अ०) फटना, फूटना।

चड़बड़ (सं० स्त्री०) बकवाद, व्यर्थ की बात न सुनने योग्य बात, बड़बड़।

चड़बड़िया (सं० पु०) गप्पी, बकवादी।

चड़ूढी (सं० स्त्री०) लड़कों का एक खेल, इस खेल में जीतने वाले हारने वाले की पीठ पर चढ़ते हैं।

चढ़ई (क्रि० अ०) चढ़ता है, ऊपर जाता है, सवार होता है, धावा मारता है।

चढ़के (क्रि० वि०) जान बूझ के, चढ़कर, बलात्कार से।

चढ़त (सं० स्त्री०) चढ़ाई हुई वस्तु, देवोपहार, देवता की भेंट।

चढ़ता (वि०) आगे की ओर बढ़ता हुआ, क्रमशः विकसित होता हुआ, निकलता हुआ।

चढ़ती (सं० स्त्री०) लाभ, बढ़वारी, वृद्धि।

चढ़न (सं० स्त्री०) आरोहण, महँगी, आक्रमण, सङ्कोच।

चढ़ना (क्रि० अ०) आरोहण करना, ऊपर जाना, पानी का बढ़ना, उन्नति करना, महँगी होना, सङ्कुचित होना, आक्रमण करना, बलात्कार से धावा करना, बलात्कार से घर में घुसना, अधिक होना, प्रभावान्वित होना, रोब में आना।

चढ़नी (सं० स्त्री०) युद्ध की तैयारी।

चढ़न्दार (सं० पु०) चढ़ने वाला, आरोही, कर्णधार।

चढ़वाना (क्रि० स०) चढ़ने का प्रयत्न, चढ़ने का प्रेरणार्थक रूप, आक्रमण कराना, महँगी कराना।

चढ़वैया (वि०) चढ़ने वाला, आरोही, सवार।

चढ़ाई (सं० स्त्री०) चढ़ने की क्रिया, पर्वत आदि की ऊँचाई। [महँगी सस्ती।

चढ़ा उतरी (सं० स्त्री०) चढ़ना उतरना, घटना बढ़ना,

चढ़ा उपरी (सं० स्त्री०) स्पर्धा, लाग डाँट, एक से आगे बढ़ने की अभिलाषा, दो आदमियों की परस्पर आगे बढ़ने की इच्छा। [खींचतान।

चढ़ा चढ़ी (सं० स्त्री०) चढ़ा उतरी, गरमा गरमी,

चढ़ाना (क्रि० स०) नीचे की वस्तु को ऊपर की ओर ले जाना, क्रुद्ध करना, झूठी प्रशंसा करके अहङ्कार बढ़ाना, झूठी प्रशंसा करना, अधिक खाना या पीना, नीचे ऊँचे पद पर बैठाना, बलिदान करना।

चढ़ानो (क्रि०) निवेदन करना, बलिदान, इसका प्रयोग विशेषतः व्रजभाषा में होता है।

चढ़ाव (सं० पु०) चढ़न, वृद्धि, बढ़न, चढ़ाई, आक्रमण, धावा।

चढ़ावा (सं० पु०) वर की ओर से कन्या के लिए जाने वाला गहना कपड़ा आदि, देवताओं को अर्पित वस्तु।

चढ़े (क्रि०) चढ़ जाय, चढ़ाई करे।

चढ़ैत (वि०) चढ़ने वाला, चढ़वैया, सवार।

चढ़ैता (वि०) घोड़ा सवार, चाबुक सवार, घोड़े की सवारी करने में निपुण।

चढ़ौनी (सं०स्त्री०) बलिदान, ढोल कसना।

चढ़ौवाँ (सं० पु०) उठी एँड़ी का जूता।

चणक (सं० पु०) चना, धान्य विशेष, एक ऋषि, गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

चणकान (सं० पु०) वात्स्यायन मुनि।

चण्ड (सं० पु०) अति क्रोधी, उग्र, तीक्ष्ण, तेज, प्रखर प्रबल, भयङ्कर, भयानक, अपराजेय, दुर्धर्ष, उद्धत, क्रोधी स्वभाव। एक दैत्य, यह मुण्ड का भाई था

और दुर्गा ने इसे मारा था, इसकी कथा मार्कण्डेय पुराण में है। शिव के एक गण का नाम, विष्णु का एक पार्षद, भैरव, कुबेर के एक पुत्र का नाम, मेवाड़ के राजा लाखा का पुत्र, ये बड़े तेजस्वी प्रतिज्ञा पालक थे, कार्तिकेय, ताप, गरमी, इमली का पेड़।

चण्डकर (सं० पु०) तीक्ष्ण किरण वाला, सूर्य।

चण्डकौशिक (सं० पु०) विश्वामित्र मुनि का नाम, अधिक क्रोधी स्वभाव होने के कारण इनका यह नाम पड़ा। संस्कृत में इसी नाम की एक पुस्तक है जिस में विश्वामित्र के उस पराक्रम का वर्णन है जो इन्होंने राजा हरिश्चन्द्र को सत्यच्युत करने के काम में लगाया था और अन्त में इन्हें नीचा देखना पड़ा था।

चण्डता (सं० स्त्री०) प्रचण्डता, प्रखरता, तीक्ष्णता, अधिक क्रोध।

चण्डमुण्ड (सं० पु०) चण्ड और मुण्ड नाम के दो राक्षस, धड़ और सिर।

मुहा०—चण्डमुण्ड लड़ना = आपस में झगड़ा लगाना, लगाना बझाना, वैमनस्य पैदा करना।

चण्डांशु (सं० पु०) तीक्ष्ण किरण, सूर्य, चण्डकर।

चण्डा (सं० स्त्री०) अत्यन्त क्रोधिनी स्त्री, कर्कशा, अत्यन्त कोपवती, काव्य की एक प्रकार की नायिका।

चण्डातक (सं० पु०) लहँगा, स्त्रियों की चोली।

चण्डाल (सं० पु०) चंडाल, डोम, पतित, निन्दित कर्म करने वाला।

चण्डालिनी (सं० स्त्री०) चाण्डाली, चण्डाल जाति की स्त्री, दोहा छन्द का एक दोष, दोहे के आदि के तेरह मात्रा वाले चरण में जगण पड़ने पर यह दोष माना जाता है। इसके लिए एक दोहा प्रसिद्ध है—

दोहा के तेरहनि में, जगण जोहिए जासु।
सो दोहा चण्डालिनी, करे अनेक विनासु॥

चण्डावल (सं० पु०) सेना का पिछला भाग, संतरी, सिपाही।

चण्डिका (सं० स्त्री०) दुर्गा देवी, काली, कर्कशा स्त्री।

चण्डी (सं० स्त्री०) दुर्गा देवी, महिषासुर के मारने के कारण दुर्गा का चण्डी नाम पड़ा, कर्कशा स्त्री, लड़ाकी स्त्री, एक छन्द का नाम।

चण्डी कुसुम (सं०पु०) लाल कनैर का फूल।

चण्डीपति (सं० पु०) महादेव, शिव।

चण्डीमण्डप (सं० पु०) भगवती की पूजा का स्थान, देवीगृह।

चण्डीश (सं० पु०) चण्डीपति, महादेव।

चण्डु (सं० पु०) मूषक, मर्कट, छोटा बन्दर।

चण्डू (सं० पु०) एक मादक पदार्थ, यह अफ़ीम का बनाया जाता है।

चण्डूखाना (सं० पु०) चण्डू पीने का स्थान। [बातें।

मुहा०—चण्डूखाने की गप = निराधार बातें, झूठी

चण्डूबाज (सं० पु०) चण्डू पीने वाला।

चण्डूल (सं० पु०) एक खाकी रंग का पक्षी, इसकी बोली बहुत मधुर होती है, किसी को मूर्ख बतलाने के लिए भी इस शब्द का प्रयोग करते हैं।

चण्डाल (सं० पु०) पालकी विशेष, यह अंबारी की शकल की बनाई जाती है, एक मिट्टी का खिलौना।

चतरभंग (सं० पु०) छत्रभंग, बैलों का एक दोष, इस दोष वाला बैल निकम्मा और हानिकारी होता है। पीठ पर के डिल्ले के एक ओर लटकने से यह दोष समझा जाता है।

चतरभंगा (वि०) चतरभंग रोग वाला बैल।

चतुःपार्श्व (सं० पु०) चतुर्दिक, चारों तरफ।

चतुःशाल (सं० पु०) गृह विशेष, मुनियों का आश्रम।

चतुःषष्टि (सं० स्त्री०) चार अधिक साठ, ६४। कलानामक उपविद्या (देखो "कला") संगीत विद्या।

चतुर (वि०) प्रवीण, दक्ष, अभिज्ञ, टेढ़ी चाल चलने वाला, कार्य-साधन में प्रवीण, चलता पुर्ज़ा, आलस्य रहित, बुद्धिमान्, तीक्ष्ण बुद्धि।

चतुरई (सं० स्त्री०) निपुणता, चतुरता, बुद्धि।

चतुरता (सं० स्त्री०) चतुरई, चतुराई, प्रवीणता, दक्षता।

चतुरंग (सं० पु०) गान विशेष, चार अंगों से युक्त गाना, सेना के प्रधान चार अंग, हाथी, घोड़ा, पैदल और रथ, शतरंज का खेल, शतरंज नाम फ़ारसी का है, इसका संस्कृत नाम चतुरंग है। इस खेल में चार रंग की गोटें होती थीं इस कारण इसे चतुरंग कहते हैं।

चतुरङ्गिणी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की सेना, जिसमें हाथी, घोड़े, पैदल और रथ हों।

चतुरङ्गिनी (सं० स्त्री०) देखो "चतुरङ्गिणी"।

चतुरङ्गुल (सं० पु०) अमलतास नामक औषधि, इसका वृक्ष बड़ा होता है।
चतुरभुज (सं० पु०) चतुर्भुज, विष्णु, चार भुजा वाला।
चतुरमास (सं० पु०) चतुर्मास, चार मास, आषाढ़ सावन भादों और कुआर इन चार महीनों का व्रत, चातुर्मास्य।
चतुरमुख (सं० पु०) चतुर्मुख, ब्रह्मा, चार मुख वाला।
चतुरस्र (सं० पु०) चौकोन, जिसके चारों कोन बराबर हों, ताल विशेष।
चतुरवस्था (सं० पु०) चार अवस्थाएँ, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय, बाल्य, प्रौढ़, यौवन और वृद्ध।
चतुरा (वि०) चतुर का स्त्रीलिङ्ग, प्रवीणा, दक्षा, धूर्ता, नृत्य की एक क्रिया।
चतुराई (सं० स्त्री०) चतुरता, बुद्धिमत्ता, बुद्धिमानी, धूर्तता, चालाकी।
चतुरानन (सं० पु०) ब्रह्मा, चार मुख वाला, चारों वेद ब्रह्मा के चार मुख हैं।
चतुराश्रम (सं० पु०) चार आश्रम, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बानप्रस्थ और संन्यास।
चतुरास (सं० स्त्री०) चारों ओर, चहुँ ओर।
चतुरासी (वि०) अस्सी चार, ८४, संख्या विशेष।
चतुरासी योनि (वि०) चौरासी प्रकार के प्राणी।
चतुरुपवेद (सं० पु०) चार उपवेद, ये हैं गान्धर्व वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद और धर्म शास्त्र।
चतुर् (वि०) चार की संख्या, चार।
चतुर्गुण (वि०) चौगुना, चार गुण वाला।
चतुर्थ (वि०) चौथा, चार की संख्या पर का।
चतुर्थक (सं० पु०) एक प्रकार का ज्वर, यह ज्वर तीन दिन बीच लगा कर चौथे दिन आता है, चौथिया।
चतुर्थकाल (सं० पु०) शास्त्र निर्दिष्ट भोजन का समय, दोपहर का समय, वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
चतुर्थभाज् (सं०पु०) प्रजा के धन से अपना भाग-स्वरूप चौथा हिस्सा लेने वाला राजा, महीपति, हिन्दू धर्मशास्त्रों का मत है कि राजा प्रजा से छठवां भाग उसकी उपज में से ले, पर विशेष आवश्यक होने पर राष्ट्र के किसी कार्य के लिए प्रजा की भलाई के लिए वह उपज का चौथा हिस्सा तक ले सकता है।
चतुर्थावस्था (सं० स्त्री०) बुढ़ापा, बुढ़ाई, मरण काल।
चतुर्थांश (सं० पु०) चौथाई, किसी वस्तु के चार भाग में से एक भाग, किसी वस्तु के चार भाग में से एक भाग के मालिक।
चतुर्थाश्रम (सं० पु०) संन्यास। [तिथि।
चतुर्थी (सं० स्त्री०) चौथ, शुक्ल या कृष्ण पक्ष की चौथी
चतुर्दन्त (सं० पु०) ऐरावत हाथी जिस के चार दाँत हैं।
चतुर्दश (सं० पु०) चौदह।
चतुर्दशविद्या (सं० स्त्री०) चौदह विद्या, छः अंगों से युक्त चार वेद, धर्म शास्त्र पुराण, मीमांसा और न्याय ये चतुर्दश विद्या हैं।
चतुर्दश रत्न (सं० पु०) चौदह रत्न जो समुद्र से निकाले गये थे, वे ये हैं अमृत, चन्द्रमा, लक्ष्मी, धन्वन्तरि, ऐरावत, कौस्तुभ मणि, उच्चैश्रवा, शंख, अप्सरा, कामधेनु, कल्प द्रुम, मदिरा, धनुष और विष।
चतुर्दशमनु (सं० पु०) चौदह-सृष्टि कर्ता।
चतुर्दश लोक (सं० पु०) चौदह लोक।
चतुर्दशी (सं० स्त्री०) चौदह, कृष्ण या शुक्ल पक्ष की चौदहवीं तिथि। [तरफ़।
चतुर्दिक् (सं० पु०) चारों दिशाएँ, (क्रि० वि०) चारों
चतुर्दिश (सं० पु०) देखो "चतुर्दिक्"।
चतुर्धाम (सं० पु०) चारों धाम।
चतुर्भुज (सं० पु०) विष्णु, नारायण, रेखा गणित का वह क्षेत्र जिस में चार भुजाएं और चार कोण होते हैं।
चतुर्भुजा (सं० स्त्री०) चार भुजा वाली देवी, भगवती।
चतुर्भुजी (सं० पु०) वैष्णव संप्रदाय का एक भेद, (सं० स्त्री०) चार भुजा वाली देवी, (वि०) चार बांह वाली। [लेह्य, चोष्य।
चतुर्भोजन (सं० पु०) चार प्रकार का भोजन, भोज्य, भक्ष्य,
चतुर्मास (सं० पु०) चौमासा, वर्षा ऋतु के चार महीने।
चतुर्मुख (सं० पु०) ब्रह्मा, विधाता, (वि०) चार मुंह वाला, (वि०) चारों ओर।
चतुर्मुक्ति (सं० स्त्री०) चार प्रकार की मुक्ति।
चतुर्युगी (सं० पु०) चारों युगों का समय।
चतुर्योनि (सं० पु०) चार प्रकार से उत्पन्न जीव।
चतुर्वर्ग (सं० पु०) अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।
चतुर्वर्ण (सं० पु०) ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चार वर्ण हैं।

चतुर्विंश (वि०) चौबीसवां।
चतुर्विंशति (सं० स्त्री०) चौबीस।
चतुर्विध (वि०) चार प्रकार, चार तरह ।
चतुर्वेद (सं० पु०) साम, यजुर, ऋग् और अथर्व।
चतुर्वेदी (सं० पु०) चार वेद जानने वाला व्यक्ति, ब्राह्मणों की एक जाति।
चतुष्क (वि०) चौपहला, (सं० पु०) एक प्रकार का घर।
चतुष्कोण (वि०) चौकोना, चौपर।
चतुष्टय (सं० पु०) चार की संख्या, चार वस्तुओं का [समूह।
चतुष्पथ (सं० पु०) चौराहा, चौक, ब्राह्मण।
चतुष्पद (सं० पु०) चौपाया. पशु, चार पैर वाला।
चतुष्पद धर्म (सं० पु०) चार अंगों से युक्त धर्म।
चतुष्पदी (सं० स्त्री०) चौपाई, चार पाद का गीत।
चतुष्फल (वि०) चौपहला, चार फल वाला।
चतुःषष्ठि (सं० स्त्री०) चौंसठ की संख्या, एक देवी का [नाम।
चतुस्संप्रदाय (सं० पु०) वैष्णवों के चार प्रधान संप्रदाय श्री, माध्व, रुद्र और सनक के चार संप्रदाय।
चतुस्सहस्र (वि०) चार हजार, संख्या विशेष, ४०००।
चत्वर (सं० पु०) चौमुहानी, चौराहा यज्ञ स्थान।
चदरा (सं० पु०) चादर।
चदिर (सं० पु०) चन्द्रमा, हाथी, सांप, कपूर।
चद्दर (सं० पु०) चादर, किसी धातु का चौकोर पत्तर।
चनक (सं० पु०) चना, रहिला ।
चनकना (क्रि० अ०) चटकना, तड़कना, कड़कना, टूटना, प्रस्फुटित होना, फट जाना, फूट जाना, खिलाना।
चनखना (क्रि० अ०) चिटकना, चिढ़ना, नाराज़ होना।
चनन (सं० पु०) चन्दन।
चना (सं० पु०) बूंट, रहिला, चणक, एक प्रकार का [अन्न।
चनाव (सं० स्त्री०) पञ्जाब की पांच नदियों में से एक नदी जो लद्दाख़ के पहाड़ों से निकलती है और सिन्ध में गिरती है।
चन्द (सं० पु०) चन्द्रमा, शशि, चन्द्र, एक प्राचीन हिन्दी कवि का नाम ये लाहौर के निवासी थे जो पृथ्वीराज चौहान की सभा में रहते थे इन्होंने पृथ्वीराज रासो नामक एक बहुत बड़े काव्य की रचना की है।
चन्दन (सं० पु०) एक सुगंधित वृक्ष विशेष, श्री खण्ड, मलयज।
चन्दनहार (सं० पु०) चन्द्रहार, गले में पहिनने का एक गहना।
चन्दना (सं० स्त्री०) चन्दन, शारिका।
चन्दनादि तैल (सं० पु०) लाल चन्दन अगर आदि कई एक औषधियों के योग से बना हुआ तेल।
चन्दला (वि०) गंजा, खल्वाट, जिसके सिर पर बाल न हों।
चन्दवा (सं० पु०) चांदनी, छाया, मेघाडम्बर, गोल आकार की चकती, पैवंद, मोरपंख की चन्द्रिका।
चन्दा (सं० पु०) चन्द्रमा, उगाही, बेहरी।
चन्दिया (सं० स्त्री०) चांदी, खोपडी, छोटी रोटी।
चन्दिहा (वि०) रुपहला, रुपये का बना, चांदी का बनाया, सफ़ेद, श्वेत।
चन्देला (सं० पु०) चन्देल क्षत्री, क्षत्रियों की एक जाति, चन्देल नगर के रहने वाले, चन्दवा।
चन्देरी, चन्देरी (सं० स्त्री०) एक नगर विशेष (वि०) चन्देल नगर के कपड़े।
चन्द्र (सं० पु०) चन्द्रमा, सुवर्ण, सोना, कपूर, सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगायी जाने वाली बिन्दी, मृगशिरा नक्षत्र, हीरा, पर्वत विशेष, एक नदी का नाम, (वि०) कमनीय, सुन्दर, रमणीय, आनन्ददायक।
चन्द्रकला (सं० स्त्री०) चन्द्रमा का सोलहवां अंश, चन्द्रकिरण, एक वर्ण वृत्त का नाम, सिर पर पहनने का एक भूषण।
चन्द्रकान्त (सं० पु०) एक मणि विशेष, चन्दन, कुमुद, चन्द्रकेत की राजधानी।
चन्द्रकुंड (सं० पु०) कामरूप का प्रसिद्ध एक तीर्थ, [सरोवर।
चन्द्रकूप (सं० पु०) काशी का एक प्रसिद्ध कुआं।
चन्द्रगुप्त (सं० पु०) मौर्य वंश का एक प्रसिद्ध राजा, इस की माता का नाम मुरा और पिता का महानन्द था महानन्द मगध के राजा थे इनकी दूसरी स्त्री का नाम सुनन्दा था जो उनकी पटरानी थी उसके गर्भ से नव लड़के थे महानन्द ने उन्हीं को राज्य-भार दिया उन्होंने चन्द्रगुप्त को राज्य से निकाल दिया। यह बड़ा पराक्रमी और प्रतापी था। इसने अपने उद्योग और कौटिल्य की सहायता से नन्द का नाश कर पाटलिपुत्र पर अपना अधिकार जमा लिया इसने बलख़ के यवनराज सिल्यूकस को हराया और उसकी कन्या

से विवाह किया था यह ईसा से ३२१ वर्ष पहले राजसिंहासन पर बैठा और २४ वर्ष तक राज्य किया ।
चन्द्रग्रहण (सं० पु०) चन्द्रमा का ग्रहण, चन्द्रमा को राहु का ग्रसना ।
चन्द्रघण्टा (सं० स्त्री०) देवी विशेष ।
चन्द्रचूड़ (सं० पु०) शिव, महादेव, शम्भु ।
चन्द्रप्रभा (सं० स्त्री०) चांदनी, ज्योत्स्ना, चंद्रिका ।
चन्द्रबिन्दु (सं०पु०) अर्द्ध अनुस्वार की बिन्दी, ँ ।
चन्द्रभागा (सं० स्त्री०) देखो "चनाव" ।
चन्द्रभाल (सं० पु०) शिव ।
चन्द्रमणि (सं० पु०) चन्द्रकान्त मणि ।
चन्द्रमण्डल (सं० पु०) चन्द्रमा की परिधि ।
चन्द्रमल्लिका (सं० स्त्री०) पुष्प विशेष, लता विशेष, इलाइची । [सुमुखी, सुन्दर मुख वाली स्त्री ।
चन्द्रमा (सं० पु०) चांद, निशाकर, शशि ।
चन्द्रमुखी (सं० स्त्री०) चन्द्रमा के समान मुख वाली स्त्री
चन्द्रमौलि (सं० पु०) शिव ।
चन्द्ररेखा (सं० स्त्री०) चन्द्रकला, चन्द्रकिरण ।
चन्द्ररेणु (सं० पु०) काव्य चोर, शब्द चोर, बाण बहारी ।
चन्द्रलोक (सं० पु०) चन्द्रमा का लोक ।
चन्द्रलोह (सं० पु०) चांदी, रूपा ।
चन्द्रवंश (सं० पु०) क्षत्रियों का प्रधान वंश ।
चन्द्रवंशी (वि०) चन्द्रवंश में उत्पन्न
चन्द्रवाला (सं० स्त्री०) बड़ी इलाइची ।
चन्द्रव्रत (सं० पु०) चांद्रायण व्रत ।
चन्द्रशाला (सं० स्त्री०) अटारी । [भाग ।
चन्द्रशिखा (सं० स्त्री०) चन्द्रमा की कला का अग्र
चन्द्रशेखर (सं० पु०) शिव, एक पर्वत का नाम, एक प्राचीन नगर का नाम ।
चन्द्रसिता (सं० स्त्री०) कपूर । [था ।
चन्द्रसेन (सं० पु०) प्राचीन भारत का एक वीर राजा
चन्द्रहार (सं० पु०) गले में पहनने का आभूषण ।
चन्द्रहास (सं० पु०) खड्ग, असि, तलवार, रावण के खड्ग का नाम, चांदी ।
चन्द्रा (सं० पु०) गुर्च, बुद्धिमान, होशियार, स्त्री, वितान, चँदवा, छोटी इलायची, मरने के समय की दशा ।
चन्द्रातप (सं० पु०) चांदनी, चँदवा, वितान ।
चन्द्राना (क्रि० अ०) सूखना ।
चन्द्रापीड़ (सं० पु०) शिव, महादेव, काश्मीर का एक राजा, इसके पिता का नाम प्रतापादित्य था, यह बड़ा धर्मात्मा था । एक उज्जैनी राजा, इनके पिता का नाम तारापीड़ था और माता का बिलासवती, बाण भट्ट कृत संस्कृत के गद्य काव्य कादम्बरी में लिखा है कि शाप वश चन्द्रमा को ही बिलासवती के गर्भ में जन्म लेना पड़ा था, इनके मित्र का नाम वैशम्पायन था ।
चन्द्रावली (सं० स्त्री०) एक गोपी का नाम, राधा की चचेरी बहिन और चन्द्रभानु की लड़की थी ।
चन्द्रिका (सं० स्त्री०) चाँदनी, ज्योत्स्ना, चन्द्रकिरण, मोर के पूंछ पर की गोल गोल आंखें, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, जुही, चमेली, मेथी, एक प्रकार की मछली, वर्ण वृत्त विशेष, कनफोड़ा घास, चनसुर, एक देवी, चन्द्रकला, स्त्रियों का एक आभूषण ।
चन्द्रोदय (सं० पु०) चन्द्रमा का उदय, एक रस विशेष, वितान, चन्दोवा, चँदवा ।
चन्द्रोपल (सं० पु०) चन्द्रकान्त मणि ।
चन्सुर (सं० पु०) एक शाक विशेष ।
चपकन (सं० पु०) एक प्रकार का अंगा, लम्बा अंगरखा ।
चपकना (क्रि० अ०) चिपकना, मिलना, सटना जुड़ना । [मिलाना ।
चपकाना (क्रि० स०) चिपकाना, सटाना, जोड़ना,
चपटना (क्रि० अ०) चिपटना, चिमटना, चपटा होना, सट जाना, लग जाना, मिल जाना ।
चपटा (सं० पु०) चिपटा, चौरस, चौखुंटा ।
चपटाना (क्रि० स०) चिपटाना, चिमटाना, चपटा करना, मिलाना, बैठाना ।
चपटी (सं० स्त्री०) चिपटी, संयुक्ता, एक प्रकार की किलनी जो चौपायों के अङ्ग में लपट जाती हैं, अँठई, योनि, ताली, थपोड़ी ।
चपड़गट्टू (वि०) आफ़त का मारा, गुत्थमगुत्था ।
चपड़ चपड़ (सं० पु०) कुत्तों के खाते समय का शब्द ।
चपड़ा (सं० पु०) साफ़ किया हुआ लाख, कोई चिपटी वस्तु, पत्तर ।
चपड़ाऊ (वि०) निर्लज्ज, बेहया, ढीठ ।

चपड़ाना (क्रि० स०) ढीठ बनाना, बहकाना, दुष्ट बनाना।
चपड़ी (सं० स्त्री०) तख्ती, पटिया, कण्डी।
चपत (सं० पु०) थप्पड़, तमाचा, धक्का, हानि, क्षति।
चपना (क्रि० अ०) दबना, शर्माना, लजाना, झेंपना, सिर नीचे करना, चौपट होना, नष्ट होना, कुचल जाना।
चपनी (सं० स्त्री०) कटोरी, ढकनी, चक्की, घुटने की हड्डी।
चपरगट्टू (वि०) अभागा, गुत्थमगुत्था, चौपटा।
चपरास (सं० पु०) बैज, बिल्ला।
चपरासी (सं० पु०) नौकर, हरकारा, सिपाही, प्यादा।
चपरि (वि०) तेज़ी से, शीघ्रता से, सहसा।
चपल (वि०) चञ्चल, विकल, उद्विग्न, अस्थिर, चुलबुला, उतावला, जल्दबाज, (सं० पु०) पारा, मत्स्य, मछली, पपीहा, राई, एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, एक प्रकार का पत्थर, एक प्रकार का चूहा।
चपलता (सं० स्त्री०) उतावली, चंचलता, ढिठाई।
चपला (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, विद्युत, बिजली, जीभ, भांग, मदिरा, पीपल, प्राचीन समय की एक नौका।
चपलाई (सं० स्त्री०) चंचलता, चुलबुलाहट, चपलता।
चपाट (सं० पु०) चपौर पनही, (वि०) लम्बा चौड़ा, भयंकर मूर्ख।
चपाती (सं० स्त्री०) पतली रोटी जो हाथ से बढ़ाई जाती है।
चपाना (क्रि० स०) छिपाना, लज्जित करना, दबाना, लजाना, कांपना।
चपेट (सं० पु०) झोंका, आघात, धक्का, रगड़ा दबाव, संकट, थप्पड़, तमाचा।
चपेटना (क्रि० स०) डाटना, भगाना, रगड़ डालना, दबोचना, दबाना।
चपेटा (सं० पु०) चपेट, झोंका, आघात, रगड़ा, दबाव, थप्पड़, तमाँचा, वर्णसंकर, दोगला।
चपेटिका (सं० स्त्री०) वर्णसंकर, धोखा।
चपेटी (सं० स्त्री०) भाद्र शुक्ल षष्ठी।
चपोटी (सं० स्त्री०) छोटी पगड़ी, छोटी टोपी।
चपौर (सं० पु०) एक जल पक्षी विशेष।
चपौरा (सं० पु०) चपटा जूता, वह जूता जिसकी एँड़ी उठी न हो। [ढप्पन।
चप्पन (सं० पु०) छिछला कटोरा, चपटे बाढ़ का कटोरा,
चप्पल (सं० पु०) चपौरा जूता।
चप्पा (सं० पु०) चौथाई भाग, चतुर्थांश, कम भाग, अल्प भाग।
चप्पी (सं० स्त्री०) पैर दबाना।
चप्पू (सं० पु०) कलवारी, नाव खेने का डंडा।
चफाल (सं० पु०) दलदल के बीच की भूमि। [उठना।
चबकना (क्रि० स०) टीसना, चिलकना, रह रह कर दर्द
चबलाई (सं० स्त्री०) चबलाना, दाँतों से पीसना।
चबलाना (क्रि०) चबाना, कुचलना, पीसना।
चबवाना (क्रि० स०) कुचलवाना, दांत से कटवाना।
चबाई (सं० स्त्री०) चर्वण, कुचलाई।
चबाऊ (सं० पु०) बातूनी, बतकहा।
चबाना (क्रि० स०) कुचलना, चाबना, जुगलाना।
चबारा (सं० पु०) चौबारा। [चौकी।
चबूतरा (सं० पु०) चौतरा, बैठक, थाना, कोतवाली,
चबेना (सं० पु०) भूंजा, भुजना, चर्वण।
चबेनी (सं० स्त्री०) जलपान जो बरातियों को दिया जाता है, जलपान का सामान।
चब्भी (सं० पु०) जल में का वह गोता जो एक दूसरों को देता है, डुब्बी।
चव्य (सं० स्त्री०) औषधि विशेष, चाव। [शब्द, डंक।
चभक (सं० पु०) पानी में किसी वस्तु के गिरने का
चभड़ चभड़ (सं० स्त्री०) खाते समय मुंह से निकलने का शब्द, कुत्ते आदि के पानी पीने का शब्द।
चभाना (क्रि० स०) भोजन करना, खिलाना।
चभोकना (क्रि० स०) गोता खाना, भिगोना। [करना।
चभोरना (क्रि० स०) गोता देना, भिगोना, आप्लावित
चमक (सं० स्त्री०) प्रकाश, आभा दीप्ति, ज्योति झलक, चटक, दमक।
चमकता (क्रि०) उजागर, जगर-मगर, उजाला।
चमकदमक (सं० स्त्री०) आभा, दीप्ति, ठाट बाट, तड़क भड़क, झलक।
चमकदार (वि०) भड़कदार, चमकीला।
चमकना (क्रि० अ०) प्रकाशित होना, जगमगाना, कीर्ति प्राप्त करना, उन्नति करना, झलकना, दमकना।
चमकनी (वि०) टिहुकनी, जल्दी चिढ़ने वाली, कटाक्ष करने वाली।
चमकवाना (क्रि० स०) चमकाने में प्रवृत्त करना।

चमकाना (क्रि० स०) झलकाना, साफ़ करना, उज्ज्वल करना, चिढ़ाना, मटकाना ।
चमकाव (सं० पु०) चमक, उजागर, उज्ज्वल ।
चमकाहट (सं० पु०) झलक, चमकाव । [शानदार ।
चमकीला (वि०) भड़कदार, चमकदार, भड़कीला,
चमकौवल (सं० पु०) मटकौवल ।
चमगादड़ (सं० पु०) चमगादुर, एक पक्षी ।
चमगादुर, चमगीदड़ (सं० पु०) देखो "चमगादड़"।
चमगुदड़ी (सं० स्त्री०) रात में चलने वाली चिड़िया ।
चमचड़क (वि०) क्षीण, कृश, दुर्बल, सकरा ।
चमचम (वि०) चमकता हुआ, झलकता हुआ, (सं०पु०) एक प्रकार की बंगला मिठाई । [प्रकाशमान होना ।
चमचमाना (क्रि० अ०) चमकना, झलकना, दमकना,
चमचा (सं० पु०) चम्मच, छोटी कलछी, चिमटा ।
चमची (सं० स्त्री०)छोटा चम्मच, छोटा चिमटा, आचमनी ।
चमटना (क्रि० अ०) चिपकना, लपटना ।
चमटा (सं० पु०) चिमटा ।
चमड़ा (सं० पु०) खाल, चर्म ।
चमत्कार (सं० पु०) विस्मय, आश्चर्य, विचित्र, अनूठापन, अलौकिक बात, करामात, विलक्षणता, विचित्रता, अद्भुत व्यापार, डमरू, चिचड़ा ।
चमत्कारक (वि०) विस्मयकारक, आश्चर्यजनक ।
चमत्कारी (वि०) विस्मित, आश्चर्यान्वित, अद्भुत ।
चमत्कृत (वि०) विस्मित, आश्चर्यित, अद्भुत ।
चमत्कृति (सं० स्त्री०) विस्मय, आश्चर्य ।
चमन (सं० पु०) हरा भरा बाग़, फुलवारी, रमणीय नगर । [नाम ।
चमर (सं० पु०) चवँर, चामर, सुरा गाय, एक दैत्य का
चमरख (सं० पु०) एक प्रकार का खट्टा फल, मूंज आदि की चकती जो चरखे में लगी रहती है और जिससे होकर टेकुआ घूमता है । (वि०) दुबली, पतली ।
चमरी (सं० स्त्री०) सुरा गाय, चँवरी ।
चमरू (सं० पु०) खाल, चमड़ा, छाल, चरसा ।
चमरौट (सं० पु०) फसल आदि का वह भाग जो गृहस्थों के यहां से चमारों को उनकी सेवा के बदले में दिया जाता है ।
चमरौटी (सं० स्त्री०) चमारों का महल्ला ।
चमरौधा (सं० पु०) देशी चमड़े का बना भद्दा जूता ।
चमस (सं० पु०) चमचे के आकार का सोम रस पीने का एक पात्र, चम्मच, कलछा, लड्डू, पापड़, धुंआंस, एक ऋषि का नाम, नौ योगीश्वरों में से एक ।
चमसा (सं० पु०) यज्ञपात्र, चम्मच, चौमासा ।
चमाऊ (सं० पु०) चँवर, चमरौधा ।
चमाचम (वि०) उज्ज्वलित, झलकता हुआ, चमकता हुआ । [मोची ।
चमार (सं० पु०) चर्मकार, चमड़े का काम करने वाला,
चमारनी (सं० स्त्री०) चमार की स्त्री ।
चमारिन (सं० स्त्री०) चमार जाति की स्त्री ।
चमारी (सं० स्त्री०) चमारिन, चमार जाति की स्त्री, चमार का काम, चमार का पेशा ।
चमू (सं० स्त्री०) सेना, कटक, वह सेना जिसमें ७२९ हाथी ७२९ रथ २१८७ घोड़े और ३६४५ पैदल रहते हैं । [वाली एक प्रकार की किलनी ।
चमूकन (सं० पु०) चौपायों के अङ्ग में लपटी रहने
चमूचर (सं० पु०) सिपाही, सेनापति ।
चमेटा (सं० पु०) थप्पड़, चपेटा, धौल ।
चमेठी (सं० स्त्री०) पालकी के कहारों की एक बोली जब रास्ते में अरहर आदि की खूंटियां पड़ती हैं तो आगे वाले कहार पिछले कहार को सावधान करने के लिए 'चमेठी' कहते हैं । [चम्पक बेलि ।
चमेली (सं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध सुगंधित फूलों का पौधा,
चमोटा (सं० पु०) चमड़े का वह टुकड़ा जिस पर नाई अपने छुरे तेज़ करता है ।
चमोटी (सं० स्त्री०) कोड़ा, चाबुक, पतली छड़ी, बेंत ।
चम्पक (सं० पु०) चम्पा, चम्पा के फूल जिस पर भौंरे नहीं बैठते, सांख्य में एक सिद्ध ।
चम्पककलिका (सं० स्त्री०) चम्पा की कली ।
चम्पकमाला (सं० पु०) चम्पा के पुष्पों की माला, एक वर्ण वृत्त का नाम इसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण, सगण और एक गुरु होता है ।
चम्पत (सं० पु०) भाग जाना, छिप जाना ।
मुहा०—चम्पत होना = भग जाना ।
चम्पन (सं०स्त्री०) पीत रंग, पीत वर्ण, पीले रंग से रँगा हुआ ।

चम्पा (सं० स्त्री०) एक प्राचीन नगर का नाम, यह अङ्ग-देश की राजधानी थी, कर्ण यहीं का राजा था, यह वर्त्तमान भागलपुर के आस पास में कहीं था। एक प्रकार का मीठा केला, घोड़े की एक जाति, एक प्रकार का रेशम का कीड़ा, बहुत बड़ा सदाबहार का वृक्ष जो दक्षिण में होता है।

चम्पाकली (सं० पु०) एक प्रकार का गहना।

चम्पावती (सं० पु०) एक प्राचीन नगर का नाम।

चम्पी (सं० पु०) पीला रंग, पीत वर्ण, पीले रंग से रंगा हुआ।

चम्पू (सं० पु०) गद्य-पद्य मय काव्य।

चम्बल (सं० पु०) भिक्षा-पात्र, एक नदी का नाम।

चम्बा (सं० पु०) भिक्षुकों की एक जाति।

चम्बू (सं० पु०) करवा, टोंटीदार पात्र।

चम्बेली (सं० पु०) चमेली का फूल, एक प्रकार की लता।

चम्मच (सं० पु०) चमचा, छोटा कलछी।

चम्मल (सं० पु०) तुम्बा, एक नदी का नाम।

चय (सं० पु०) ढेर, समूह, राशि, टीला, गढ़, क़िला, धुस्स, कोट, चहारदीवारी, नींव, चबूतरा, चौकी, ऊंचा आसन, यज्ञ के लिए अग्नि-संस्कार।

चयन (सं० पु०) संग्रह, संचय, चुनाई, एकत्रित करने का काम, क्षेम कुशल, आनन्द मंगल।

चर (सं० पु०) दूत, गूढ़ पुरुष, राजा से नियुक्त किया हुआ वह पुरुष, जो अपने राज्य या दूसरे राज्य के भीतरी भेद का पता लगाता है। कौड़ी, खंजन पक्षी, भौम, छिछला पानी, मंगल, दलदल, कीचड़, (वि०) चलने वाला, भोजन करने वाला।

चरई (सं० स्त्री०) पशुओं के चारा पानी के लिए ईंट पत्थर का बना हुआ गड्ढा।

चरक (सं० पु०) वैद्यक शास्त्र के प्रधान आचार्य, चरक संहिता के कर्त्ता जो शेष के अवतार माने जाते हैं, चर, दूत, जासूस, बटोही, पथिक, बौद्धों का एक सम्प्रदाय, भिक्षुक।

चरकटा (सं० पु०) हाथी ऊंट आदि का चारा काटने वाला मनुष्य, ओछा आदमी, तुच्छ विचार का मनुष्य।

चरक संहिता (सं० स्त्री०) वैद्यक का सर्वमान्य ग्रन्थ जिसके रचयिता चरक मुनि हैं। [क्षति, नुकसान।

चरका (सं० पु०) श्वेत कुष्ट, दागने का चिह्न, धक्का, हानि,

चरकी (सं० पु०) कुष्ठ रोग वाला।

चरख (सं० पु०) चक्कर, चाक, घेरा, खराद, पहिया।

चरखा (सं० पु०) लकड़ी का बना हुआ सूत कातने का यन्त्र, कुएँ से पानी निकालने का रहट।

चरखी (सं० स्त्री०) रहटी, बेलनी, ओटनी, गराड़ी, घिरनी, एक प्रकार की आतिशबाज़ी।

चरचना (क्रि० स०) लीपना, पोतना, भाँपना, ताड़ना, पूजा करना।

चरचर (सं० पु०) ध्वनि विशेष, बकबक। [गड़बड़िया।

चरचरा (सं० पु०) पक्षी विशेष, (वि०) चिड़चिड़ा,

चरचराना (क्रि० अ०) चर चर शब्द करके टूटना, चट-कना, चर्राना, कड़कना।

चरचराहट (सं० स्त्री०) चर चर करके टूटने या फूटने का शब्द, खटिया आदि टूटने का शब्द।

चरचा (सं० स्त्री०) चर्चा, ज़िक्र, वर्णन, बयान, लेपन, पोतना, दुर्गा।

चरचेला (वि०) बक्की, गप्पी।

चरचैत (वि०) कीर्तिमान, चरचा करने वाला।

चरट (सं० पु०) खञ्जन, खंडलीच।

चरण (सं० पु०) पाद, पैर, पग, पांव किसी वस्तु का चौथाई भाग, चतुर्थांश, किसी छन्द, श्लोक आदि का एक पद, दल, बड़ों की समीपता, जाना, घूमने का स्थान, अनुष्ठान, क्रम, आचार, गोत्र, जड़, मूल, किरण। [चरण।

चरणकमल (सं० पु०) कमल के समान चरण, कोमल

चरणतल (सं० पु०) पैर का तलुआ।

चरणदास (सं० पु०) एक महात्मा साधु, जो दिल्ली के रहने वाले और जाति के ढूसर बनिया थे, इन्होंने कई एक ग्रन्थों की रचना की है, इन्होंने अपना एक अलग संप्रदाय चलाया था, इनके संप्रदाय वाले अब भी हैं। [स्त्री, भार्या, पत्नी, जूता।

चरणदासी (वि०) चरणदास के अनुयायी, (सं० स्त्री०)

चरणपीठ (सं० पु०) पाद-पीठ, चरणासन।

चरणव्यूह (सं० पु०) ग्रन्थविशेष।

चरणयुगल (सं० पु०) दोनों पैर।

चरणसेवा (सं० स्त्री०) उपासना, पैर दबाना।

चरणाद्रि (सं० पु०) वर्तमान चुनार, यहां के पर्वत की एक शिला पर बुद्ध भगवान के चरण-चिह्न हैं, जो

एक मसजिद में रक्खा है, इस चिह्न को मुसलमान रसूल के पैर का चिह्न मानते हैं।

चरणामृत (सं० पु०) पादोदक, देवादि और गुरु जनों का पाद-धोवन।

चरणायुध (सं० पु०) मुर्गा।

चरणारविन्द (सं० पु०) चरण कमल।

चरणि (सं० पु०) मनुष्य।

चरणोदक (सं० पु०) चरणामृत।

चरणापान्त (सं० पु०) चरण के समीप, पद प्रान्त।

चरर्नी (सं० पु०) व्रत के दिन उपवास न करने वाला, अव्रती।

चरन (सं० पु०) देखो "चरण"।

चरना (क्रि० स०) पशुओं का घूम फिर कर घास खाना।

चरनी (सं० स्त्री०) कठरा, बैलों को घास खाने के लिये मिट्टी का लम्बा बनाया जाता है। [चौथाई भाग।

चरन्नी (सं० स्त्री०) चवन्नी, सूका, चार आना, रुपये का

चरपट (सं० पु०) चपत, थप्पड़, घाई।

चरपरा (वि०) तीक्ष्ण, तीता, कड़वा, कटु, तीखा, खट्टा, साहसी, फुर्तीला, चुस्त।

चरपराना (क्रि० अ०) घाव का चर्राना, दर्द होना, झंझनाना, परपराना। [ईर्ष्या, द्वेष।

चरपराहट (सं० पु०) झंझनाहट, परपराहट, झाल,

चरपरिया (वि०) सुन्दर, सुघर, मनचला।

चरफर (सं० पु०) प्रवीणता, निपुणता।

चरफरा (वि०) देखो "चरपरा"।

चरफराना (क्रि० अ०) तड़फना, तड़फड़ाना।

चरफराहि (क्रि०) चरचराते हैं, टूटते हैं, चर्राते हैं।

चरबन (सं० पु०) चर्वण, चबैना, भूंजा दाना।

चरबरायगी (सं० स्त्री०) फुर्तीलापन, चतुरता, साहस।

चरबाना (क्रि० स०) ढोल पर चमड़ा मढ़वाना।

चरबी (सं० स्त्री०) मेद, वसा, पीह।

चरम (वि०) अन्तिम, अन्त का, पराकाष्ठा का, (सं० पु०) पश्चिम, अन्त, अवसान।

चरमकाल (सं० पु०) अन्तिम समय, मृत्यु-समय।

चरमर (सं० पु०) किसी चिमड़ी वस्तु के दबने या मुड़ने का शब्द।

चरमराना (क्रि० अ०) चर मर शब्द होना।

चरमाचल (सं० पु०) अस्त पर्वत, अस्तगिरि।

चरमाद्रि (सं० पु०) अस्त पर्वत, अस्ताचल।

चरवा (सं० पु०) एक प्रकार का बारहमासी चारा जो गाय बैल घोड़ा आदि बड़े चाव से खाते हैं।

चरवाई (सं० स्त्री०) चराने की मजूरी।

चरवाना (क्रि० स०) चराने का काम करना।

चरवाह (सं० पु०) चराने वाला, पशुओं का रखवाला।

चरवाहा (सं० पु०) चराने वाला, रखने वाला, रखवाहा, गड़रिया।

चरवाही (सं० स्त्री०) चरवाई।

चरवैया (वि०) चराने वाला, चरने वाला।

चरस (सं० पु०) चमड़े का एक बड़ा थैला, जिससे सिंचाई के लिए कुएँ में से पानी निकाला जाता है, मोट, पुर, मादक द्रव्य विशेष।

चरसा (सं० पु०) चमड़ा, खाल, मोट, चरस।

चरसी (वि०) पुरवट हांकने वाला, चरस पीने वाला।

चरही (सं० स्त्री०) चरनी, ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि का बना हुआ गड्ढा, जिसमें पशुओं को चारा पानी खिलाया जाता है।

चरई (सं० स्त्री०) चराने की मजदूरी, चराई का काम।

चराई (सं० स्त्री०) चरने का काम, चराने का मूल्य।

चराक (सं० पु०) एक प्रकार का पक्षी, चरवाहा।

चरागाह (सं० पु०) चरने का स्थान।

चराचर (वि०) चर अचर, जड़ चेतन, स्थावर जंगम, संसार, जगत, कौड़ी।

चरान (सं० पु०) चरागाह तराई, समुद्र तट का वह स्थान जहां से नमक निकलता है।

चराना (क्रि० स०) पशुओं को मैदान, खेत, जंगल आदि में ले जाकर चारा खिलाना, चरना।

चराव (सं० पु०) चरागाह।

चरावना (क्रि० स०) चराना।

चरिंदा (सं० पु०) पशु, चरने वाला जीव।

चरि (सं० पु०) पशु।

चरित (सं० पु०) चाल-चलन, रहन-सहन, आचरण, व्यवहार, चरित्र, करतूत, करनी, काम, जीवनी।

चरितनायक (सं० पु०) वह प्रधान पुरुष जिसके आधार पर किसी पुस्तक की रचना की जाय।

चरितार्थ (वि०) जो ठीक घटे, कृतार्थ, कृत्य कृत्य, जिसका मनोरथ सफल हो गया हो।

चरितार्थता (सं० स्त्री०) कृतार्थता, प्रयोजन सिद्ध, इष्ट लाभ। [कार्य।

चरित्र (सं० पु०) स्वभाव, चरित, करतूत, कृत्य, करनी,

चरित्रनायक (सं० पु०) देखो "चरितनायक"।

चरित्रबन्धक (सं० पु०) भाट, कवि, ग्रन्थकार, चरित्र-लेखक।

चरित्रवान् (वि०) सदाचारी, नेक चाल-चलन वाला।

चरिष्णु (वि०) जंगम, चलने वाला।

चरी (सं० स्त्री०) वह ज़मीन जो किसानों को ज़मींदार बिना लगान के उनके पशुओं को चरने के लिए देता है, पशुओं की कड़बी।

चरु (सं० पु०) हविष्यान्न, यज्ञान्न, पशुओं के चरने की जगह, यज्ञ, मेघ, बादल।

चरुआ (सं० पु०) मिट्टी का वह पात्र जिसमें प्रसूता स्त्री के स्नान के लिए कुछ औषधि डाल कर पानी गरम किया जाता है, मिट्टी का चौड़े मुंह का कलसा।

चरुस्थाली (सं० स्त्री०) हविष्यान्न रखने या पकाने का पात्र।

चरेरा (वि०) कर्कश, रूखा, (सं० पु०) वृक्ष विशेष।

चरैया (वि०) चराने वाला, चरने वाला।

चरैला (सं० पु०) ऐसा चूल्हा जिसमें चार चीज़ें एक साथ पकायी जायँ। एक प्रकार का जाल जिसमें पक्षी पकड़े जाते हैं।

चरोखर (सं० स्त्री०) चरी, पशुओं के चरने का स्थान।

चरोतर (सं० पु०) किसी के जीवन भर के लिए दी हुई ज़मीन।

चर्खा (सं० पु०) देखो "चरखा"।

चर्खी (सं० स्त्री०) देखो "चरखी"।

चर्चक (सं० पु०) चर्चा करने वाला।

चर्चन (सं० पु०) लेपन, चर्चा।

चर्चना (क्रि० स०) सोचना, विचारना।

चर्चर (सं० पु०) चलने वाला, गमनशील, चर चर शब्द।

चर्चरिका (सं० स्त्री०) वह गाना जो नाटक में एक अङ्क की समाप्ति और दूसरे अङ्क के आरम्भ के मध्य में दर्शकों के मनोरञ्जनार्थ गाया जाता है।

चर्चरी (सं० स्त्री०) वह गाना जो बसंत में गाया जाता है, चाँचर, फाग, होली का उत्सव, एक वर्णवृत्त विशेष, गाना बजाना, नाचना, आनन्द मङ्गल मनाना।

चर्चरीक (सं० पु०) शिव, कालभैरव, साग, भाजी, बाल सँवारना, केशविन्यास।

चर्चा (सं० स्त्री०) वर्णन, बयान, ज़िक्र, लेपन, दुर्गा।

चर्चित (वि०) चन्दनादि के द्वारा लिपा हुआ, पोता हुआ, लिपा हुआ, चर्चा किया हुआ।

चर्पट (सं० पु०) थप्पड़, चपत, हथेली, (वि०) अधिक।

चर्पटी (सं० पु०) एक प्रकार की रोटी।

चर्म (सं० पु०) छाल, खाल, चमड़ा, ढाल, सिपर।

चर्मकार (सं० पु०) चमार।

चर्मचक्षु (सं० स्त्री०) चर्म दृष्टि, साधारण दृष्टि।

चर्मचटिका (सं० स्त्री०) चमगुदड़ी।

चर्मज (सं० पु०) रोआँ, खून, रक्त, लहू, बाल, पशम।

चर्मण्वती (सं० स्त्री०) चम्बल नदी, यह विन्ध्याचल से निकल कर इटावा के पास यमुना में गिरती है।

चर्मदण्ड (सं० पु०) चमड़े का कोड़ा, चमड़े का चाबुक।

चर्मदृष्टि (सं० स्त्री०) आंख, नेत्र।

चर्मपादुका (सं० स्त्री०) जूता, पनही।

चर्मपुट (सं० पु०) चमड़े का कुप्पा जिसमें घी तेल आदि द्रव पदार्थ रक्खे जाते हैं।

चर्मपुटक (सं० पु०) चर्म-निर्मित पात्र विशेष, कुप्पा, जिसमें घी, तेल आदि रक्खा जाता है।

चर्म वस्त्र (सं० पु०) चमड़े का बना वस्त्र।

चर्मी (वि०) ढाल रखने वाला, चर्म धारी, ढाल वाला।

चर्य (वि०) कर्तव्य, करने योग्य। [भक्षण, गमन।

चर्या (सं० स्त्री०) आचरण, आचार, काम काज, जीविका,

चर्वण (सं० पु०) भुना हुआ दाना, चबेना, बहुरी।

चर्वित (वि०) चबाया हुआ, खाया हुआ।

चर्वित चर्वण (सं० पु०) कही बात कहना, पुनरुक्ति।

चर्व्य (वि०) चबाने योग्य।

चल (वि०) चञ्चल, अस्थिर, अस्थायी, चलायमान।

चलकना (क्रि० अ०) चमकना, झलकना, चमचमाना, रह रह कर दर्द उठना, चिलकना। [हाथी।

चलकर्ण (सं० पु०) पृथ्वी से ग्रहों का वास्तविक अन्तर,

चलकेतु (सं० पु०) पुच्छल तारा विशेष। [चली।

चलचलाव (सं० पु०) यात्रा, प्रस्थान, मौत, मृत्यु, चला-

चलचाल (वि०) चंचल, अस्थिर, चल विचल।

चलचित (वि०) अस्थिर मन, चञ्चल।

चलचूक (सं० पु०) छल कपट, धोखा।

चलत (क्रि०) चलते हैं, चलते ही।
चलता (वि०) घूमता हुआ, प्रचलित, चलता हुआ।
चलती (सं० स्त्री०) प्रभाव, अधिकार, मर्यादा, प्रतिष्ठा।
चलदल (सं० पु०) पीपल का वृक्ष।
चलदेना (क्रि० अ०) भाग जाना, उपेक्षा करना।
चलन (सं० पु०) चाल, गति, रीति, रस्म, व्यवहार, आचरण, कंपन, भ्रमण, गति।
चलन कलन (सं० पु०) ज्योतिष में एक गणना विशेष, जिससे दिन रात का घटना बढ़ना मालूम होता है।
चलनसार (वि०) बहुत दिन तक टिकने वाला, ठहरने वाला, टिकाऊ, जो प्रचलित हो।
चलना (क्रि० अ०) गमन करना, जाना, हिलना डोलना, बहना, प्रवाहित होना, ठहरना, टिकना।
चलनिकलना (क्रि० अ०) निकल चलना, सीमा को अतिक्रम करना।
चलनी (सं० स्त्री०) छलनी, आंधी।
चलपत्र (सं० पु०) पीपल का वृक्ष।
चलपूंजी (सं० पु०) चल धन, एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने लायक धन।
चलफेर (सं० पु०) घूम घाम, गमन, गति, डुलाव।
चलविचल (वि० अव्यवस्थित, बे ठिकाने, अण्ड बण्ड, उखड़ा पुखड़ा। [चलाना।
चलवाना (क्रि० स०) चलने का काम दूसरे से कराना,
चलविधारा (वि०) अड़ियल, मचलने वाला, अवसर जानने वाला।
चलवैया (वि०) चलने वाला।
चला (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, पृथ्वी, बिजली, पीपल, (पु०) व्यवहार, रीति, रस्म, प्रभुत्व, अधिकार।
चलाई (सं० स्त्री०) चलने की क्रिया। [घूमने वाला।
चलाऊ (वि०) टिकाऊ, ठहराऊ, मज़बूत, दृढ़, बहुत
चलाक (वि०) चालाक, चतुर, धूर्त, दक्ष।
चलाकी (सं० स्त्री०) दक्षता, चतुरता, पटुता, धूर्तता।
चलाचल (सं० स्त्री०) चाल, गति, (वि०) चपल, चञ्चल।
चलाचली (सं० स्त्री०) चलने की तैयारी, चलने का समय, चलते समय की हड़बड़ी।
चलान (सं० पु०) पहुँचाव, भेजाव, किसी अपराधी को न्यायालय में भेजना, वह पत्र जो किसी वस्तु के साथ उसका विवरण लिख कर भेजा जाता है।
चलानदार (सं० पु०) वह मनुष्य जो चलान के साथ माल की रक्षा के लिये जाता है।
चलाना (क्रि० स०) चलने में प्रवृत्त करना, हिलाना डुलाना, हाँकना, दौड़ाना, प्रचलित करना, व्यवहृत करना।
चलायमान (वि०) चञ्चल, विचलित, अस्थिर।
चलाव (सं० पु०) चाल चलन, रीति, रस्म, यात्रा, पयान, रवानगी।
चलावना (क्रि० स०) चलाना। [चलौवा।
चलावा (सं० पु०) रीति, रस्म, गौना, द्विरागमन,
चलित (वि०) चलायमान, चञ्चल, अस्थिर।
चलितव्य (वि०) चलने योग्य, गमन करने के उपयुक्त।
चलित्रा (वि०) खिलाड़ी, रसिक, चञ्चल।
चलेन्द्रिय (वि०) अजितेन्द्रिय, इन्द्रिय परवश, इन्द्रिय सुखासक्त।
चले (क्रि० अ०) जाने लगे, चल निकले।
चलो (क्रि० अ०) जाओ। [हिलाने का कलछा।
चलौना (सं० पु०) चरखा चलाने का डंडा, द्रव पदार्थ
चलौवा (सं०पु०) देखो "चलावा"।
चवन्नी (सं० पु०) चरन्नी, चार आना।
चवई (क्रि० अ०) चुवे, बहै, टपकै, टपकता है।
चवय (क्रि०) देखो 'चवई'।
चवर्ग (सं० पु०) च, छ, ज, झ, ञ, यह अक्षर चवर्ग हैं।
चवाई (सं० पु०) निन्दक, चुगलखोर, दुर्जन।
चवालीस (वि०) संख्या विशेष, चालीस और चार।
चवाव (सं० पु०) निन्दा, दुर्यश, अपवाद, चुगली, झूठा कलङ्क।
चश्म (फ़ा० सं० स्त्री०) आँख, नेत्र, नयन।
चश्मदीद (फ़ा० वि०) आँखों से देखा हुआ, दृष्ट।
चश्मा (फ़ा० सं० पु०) ऐनक, सोता, नदी।
चष (सं० पु०) आँख, चक्षु।
चषक (सं० पु०) मद्यपान करने का बर्तन, आबखोरा, मधु, मदिरा, मद्य।
चषण (सं० पु०) भोजन, खाना, क्षय करना, मारना।
चषणि (सं० पु०) भोजन, मारण (सं०स्त्री०) मूर्छा, क्षय, दुर्बलता।
चषाल (सं० पु०) यज्ञ के खम्भे के ऊपर रक्खा हुआ एक प्रकार का काष्ट, मधुकोष।

चसक (सं० स्त्री०) टीस, हलका दर्द, कसक।

चसकना (क्रि० अ०) टीसना, दर्द होना, टपकना।

चसका (सं० पु०) चाट, लत, लालसा, शौक़।

चसना (क्रि० अ०) मरना, मसकना, प्राण त्यागना, कसकना, चपकना, सटना।

चस्का (सं० पु०) चसका, चाट, शौक़।

चस्मी (सं० पु०) एक प्रकार का रोग जिसमें हथेली और पैर के तलवों में खुजली होती है, अपरस।

चह (सं० पु०) अभिमान, घमण्ड, दम्भ, दर्प, पाट पुल, (सं० स्त्री०) गड़हा, गड्ढा, (वि०) कपटी, पाखण्डी, अहङ्कारी, छली।

चहक (सं० स्त्री०) पक्षियों की चहचह ध्वनि।

चहकना (क्रि० अ०) गहगहाना, चहचहाना।

चहका (सं० पु०) लुआठ, लूक, बनैठा, जलन, ईंट या पत्थर का फ़र्श।

चहकार (सं० स्त्री०) पक्षियों की चहचह ध्वनि, चहक।

चहचहा (सं० पु०) हँसी, मज़ाक़, ठठोली, (वि०) चटक रङ्गा हुआ।

चहचहाना (क्रि० अ०) चहकना।

चहचहाहट (सं० स्त्री०) पक्षि-समूह का शब्द।

चहनना (क्रि० स०) रौंदना, कुचलना, दबाना।

चहना (क्रि० स०) चाहना, इच्छा करना, प्रेम करना, खोजना, मांगना।

चहल (सं० स्त्री०) कीच, कीचड़, आनन्द की धूम।

चहलक़दमी (सं० स्त्री०) आहिस्ते आहिस्ते घूमना, धीरे धीरे टहलना।

चहलना (क्रि० स०) कूटना, कांड़ना, थकाना।

चहलपहल (सं० स्त्री०) धूम धाम, आनन्द मंगल, उत्सव, हँसी खुशी।

चहला (सं० पु०) कांच, कीचड़, कांदो, पङ्क।

चहसि (क्रि० स०) इच्छा करता है, चाहता है।

चहारदिवारी (सं० स्त्री०) परिखा, प्राचीर, चारों ओर की दीवार।

चहिय (क्रि० अ०) चाहिए, ज़रूरत है, आवश्यकता है।

चहुँ (वि०) चतुर्दिश, चारों ओर, चारों।

चहुँक (सं० स्त्री०) चिहुंक, चौंक।

चहुँचक (वि०) चतुर्दिक, चारों ओर, चारों कोर।

चहुँदिश (वि०) चतुर्दिश, चारों ओर।

चहुँधा (सं० पु०) सब ओर, चारों ओर।

चहुँयुग (सं० पु०) चारों युग।

चहुवान (सं० पु०) क्षत्रियों की एक जाति, चौहान।

चहूँ (वि०) चार, चौथा।

चहेटना (क्रि० स०) दबा कर किसी चीज़ से रस निकालना, निचोड़ना, भगाना।

चहों (क्रि० स०) इच्छा करता हूँ, माँगता हूँ।

चांई (वि०) ठग, गिरहकट, उचक्का, छली, चोर, चुस्त, चालाक।

चांईचूंई (सं० स्त्री०) एक रोग जिसमें सिर के बाल गिर [जाते हैं।

चांकना (क्रि० स०) गोंठना, हद बांधना।

चांगड़ा (सं० पु०) एक प्रकार का बकरा जो तिब्बत देश में पाया जाता है।

चांचर (सं० स्त्री०) एक राग विशेष जो फागुन में गाया जाता है, होली, फाग, परती जगह, टट्टी या टट्टर जो दरवाज़े पर बांधा जाता है।

चांचु (सं० पु०) चोंच।

चांट (सं० पु०) जलकण का प्रवाह जो तूफ़ान के समय समुद्र में से उठता है और हवा में उड़ता है।

चांटना (क्रि० स०) निशान बनाना, दबोचना, चापना।

चांटा (सं० पु०) थप्पड़, चपत, चिउँटा।

चांटी (सं० स्त्री०) चींटी।

चांड़ (सं० स्त्री०) खम्भा, टेक, थूनी, अत्यन्त आवश्यकता, अत्यधिक इच्छा, दबाव, पेंच, (वि०) बलवा।

चांड़ना (क्रि० स०) उजाड़ना, उपाड़ना, खोदना।

चाँद (सं० पु०) चन्द्रमा, चन्द्र, (स्त्री०) खोपड़ी।

मुहा०—चाँद का खेत करना = चन्द्रमा निकलने के पहिले उसका प्रकाश फैलना। चाँद का टुकड़ा = बहुत सुन्दर मनुष्य। चाँद पर थूकना = किसी श्रेष्ठ पुरुष को कलङ्क लगाना। चाँद पर धूल डालना = किसी निर्दोष पर कलङ्क लगाना।

चांदना (सं० पु०) उजाला, प्रकाश।

चांदना पक्ष (सं० पु०) शुक्ल पक्ष, उजेला पाख, सुदी।

चांदनी (सं० स्त्री०) चन्द्रिका, प्रकाश, उजाला।

चांदनी चौक (सं० पु०) चौड़ा बाजार, चौक।

चांद मारना (क्रि०) लक्ष्य वेध, निशाना मारना।

चांदमारी (सं० स्त्री०) बन्दूक चलाने का अभ्यास, निशानाबाज़ी।

चांद रात (सं० स्त्री०) पूर्णिमा की रात ।
चांदी (सं० स्त्री०) खनिज पदार्थ विशेष, रजत, रौप्य ।
चांप (सं० स्त्री०) धनुष, दबाव ।
चांपना (क्रि० स०) दबोचना, दबाना । [झक झक ।
चांव चांव (सं० स्त्री०) अनर्थक बकवाद, बकबक,
चा (सं० स्त्री०) चाय । [तण्डुल ।
चाउर (सं० पु०) चावल, छिलका निकाला हुआ धान,
चाऊ (सं० पु०) चाव, शौक (वि०) मनोहर, मन भावन, पसंदीदा । [मिट्टी के बर्तन बनाता है ।
चाक (सं० पु०) एक गोलाकार पत्थर, जिस पर कुम्हार
चाकचक्य (सं० स्त्री०) स्वच्छता, उज्ज्वलता, चमचमाहट, सुशोभित, सौन्दर्य । [बांधना ।
चाकना (क्रि० स०) गोठना, निशान लगाना, सीमा
चाकर (सं० पु०) नौकर, चाकर, भृत्य, सेवक ।
चाकरनी (सं० स्त्री०) नौकरानी, लौंडी ।
चाकरानी (सं० स्त्री०) देखो "चाकरनी" ।
चाकरी (सं० स्त्री०) सेवा टहल, नौकरी ।
चाका (सं० पु०) चाक, गाड़ी आदि का पहिया ।
चाकी (सं० स्त्री०) जांता, चक्की ।
चाकू (सं० पु०) छुरी ।
चाक्रायण (वि०) चक्र ऋषि के वंशज जिनका उल्लेख छांदोग्य उपनिषद में है ।
चाक्षुष (वि०) नेत्र से संबन्ध रखने वाला, नेत्र संबन्धी, छठे मनु का नाम, न्याय का वह प्रत्यक्ष प्रमाण जो नेत्रों द्वारा देखा गया हो ।
चाख (सं० पु०) नेत्र, आंख, नयन नीलकण्ठ पक्षी ।
चाखना (क्रि० स०) चखना, स्वाद लेना, जांचना ।
चाङ्ला (सं० पु०) घोड़े का रंग विशेष ।
चाचर (सं० स्त्री०) देखो "चांचर" ।
चाचा (सं० पु०) पितृव्य, पिता का भाई, काका ।
चाची (सं० स्त्री०) चाचा की पत्नी, काकी ।
चाञ्चल्य (सं० स्त्री०) चपलता चंचलता, अस्थिरता ।
चाट (सं० स्त्री०) चाह, चसका, लालसा, चाव ।
चाटक (सं० पु०) मण्डली, विद्या, इन्द्रजाल ।
चाटकी (वि०) चाटक विद्या जानने वाला, ऐन्द्रजालिक ।
चाटना (क्रि० स०) स्वाद लेना, चीखना सफ़ाचट कर देना, खा जाना । [मटकी ।
चाटी (सं० स्त्री०) मोटे दल की मटकी, माठा मथने की
चाटु (सं० पु०) प्रिय बचन, मधुर बचन, चापलूसी ।
चाटुकार (सं० पु०) खुशामदी, बिनयी, चापलूस, मधुर बचन बोलने वाला ।
चाटुकारी (सं० स्त्री०) चापलूसी, ख़ुशामद ।
चाटुपटु (सं० पु०) भांड़, मसख़रा, विदूषक ।
चाटुवादी (सं० पु०) चापलूसी, ख़ुशामदी ।
चाड़ (सं० स्त्री०) चाव, सहारा, आवश्यकता ।
चाणक (सं० पु०) मुनि विशेष, गोत्र विशेष, उभाड़ने वाली बात, क्रोध उत्पन्न करने वाली बात ।
चाणक्य (सं० पु०) एक मुनि का नाम, ये चणकवंश में उत्पन्न हुए थे, इससे इनको चाणक्य कहा जाता है, इनका दूसरा नाम विष्णुगुप्त था, ये कुटिल नीति के एक धुरंधर विद्वान् थे इससे कौटिल्य नाम से भी प्रसिद्ध हैं, महाराज नन्द ने इनका अपमान किया था इस कारण चन्द्रगुप्त से मेल कर इन्होंने अपनी कुटिल नीति से नन्दवंश का नाश कर डाला, चन्द्रगुप्त को राजा बनाया, इन्होंने संस्कृत के नीति-विषयक कई एक ग्रन्थ बनाए हैं, इनके बहुत से ग्रन्थों का पता भी नहीं चलता, जितने का पता चला है उनमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है और भारतीयों के प्राचीन गौरव का एक रत्न है ।
चाणूर (सं० पु०) एक राक्षस का नाम ।
चाण्डाल (सं० पु०) ब्राह्मणी माता और शूद्र पिता से उत्पन्न एक अन्त्यज जाति, डोम, श्वपच, चण्डाल, निर्दयी मनुष्य, घातक, पतित, कुकर्मी ।
चाण्डाली (सं० स्त्री०) चाण्डाल जाति की स्त्री ।
चातक (सं० पु०) पक्षी विशेष, पपीहा ।
चातकानन्दन (सं० पु०) बरसात, बादल, मेघ ।
चातकिनी (सं० स्त्री०) चातकी । [जाल, षड्यन्त्र ।
चातर (सं० पु०) मछली मारने का बड़ा जाल, महा
चातुर (वि०) दक्ष, कुशल, चतुर, चतुष्टय, चाह, चापलूस, धूर्त्त । [चापलूसी ।
चातुरता (सं० स्त्री०) कुशलता, दक्षता, बुद्धिमानी,
चातुराश्रम्य (सं० पु०) चार आश्रम, ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, बानप्रस्थ, संन्यास । [धूर्तता, शठता ।
चातुरी (सं० पु०) चालाकी, बुद्धिमानी, दक्षता, चतुरता,
चातुर्थिक (सं० पु०) चौथिया ज्वर ।
चातुर्दश (सं० पु०) चौदश को जन्मने वाला, राक्षस ।

चातुर्मास (वि०) वह जो चार महीने में हो, चार महीने का।
चातुर्य (सं० पु०) निपुणता, चतुराई, शठता, धूर्त्तता।
चातुर्वर्ण्य (सं० पु०) चारों वर्णों का धर्म।
चातुर्वेद्य (सं० पु०) चार वेदों का ज्ञाता, चतुर्वेदी ब्राह्मण का भेद विशेष।
चातृक (सं० पु०) पपीहा, चातक।
चात्वाल (सं० पु०) गर्त, गढ़ा, गह्वर, अग्निहोत्र की सामग्री।
चादर (सं० स्त्री०) दुपट्टा, एकलाई, पिछौरी, चद्दर।
चादरा (सं० पु०) मरदानी चादर, दुपट्टा।
चान्द्र (वि०) चाँदसंबन्धी।
चान्द्रमास (सं० पु०) चन्द्र गति के अनुसार पड़ने वाला मास।
चान्द्रायण (सं० पु०) व्रत विशेष, वह व्रत एक महीने में होता है, इस व्रत का करने वाला, चन्द्रमा के कला के घटने बढ़ने के अनुसार, एक ग्रास से लेकर अपना भोजन घटाता बढ़ाता है, अर्थात् शुक्ल प्रतिपदा को एक ग्रास द्वितीया को दो, इसी तरह बढ़ाता जाय, पूर्णमासी को पन्द्रह और कृष्ण प्रतिपदा को चौदह इस तरह घटाता जाय और कृष्ण चतुर्दशी को एक ग्रास खाय, अमावस्या को कुछ न खाय।
चाप (सं० पु०) धनुष, दबाव।
चाप कर्ण (सं० पु०) धनुष का रोदा, धनुष की प्रत्यंचा।
चाप खण्ड (सं० पु०) धनुष का टुकड़ा।
चापट (सं० स्त्री०) चोकर, भूसी।
चापड़ (वि०) चिपटा, चिपड़ा, चौपट, बराबर, समतल।
चापत (क्रि०) दबाता है, दबाते ही।
चापन (सं० पु०) दबाना, मींजना।
चापना (क्रि० स०) मींजना, दबाना।
चापल (सं० पु०) चञ्चलाहट, चपलता।
चापलता (सं० स्त्री०) चपलता, चंचलता, धृष्टता।
चापलूस (सं० पु०) ख़ुशामदी, ठकुरसोहाती कहने वाला, हां में हां मिलाने वाला।
चापलूसी (सं० स्त्री०) लल्लो चप्पो, ख़ुशामद।
चापल्य (सं० पु०) चपलता, जल्दीबाजी।
चापी (सं० पु०) धनुष धारण करने वाला व्यक्ति, धनुर्धर, धनु राशि, शिव।
चाफंद (सं० पु०) मछली फँसाने का जाल।
चाबना (क्रि० स०) चबाना, दांतों से कुचल कर खाना, भोजन करना।
चाबी (सं० स्त्री०) ताली, कुंजी।
चाबुक (सं० पु०) कोड़ा, सोंटा।
चाबुक सवार (सं०पु०) घोड़े को चाल सिखाने वाला।
चाभना (क्रि० स०) चबाना, भोजन करना।
चाभी (सं० स्त्री०) ताली, कुंजी, चाबी।
चाम (सं० पु०) चमड़ा, छाला, खाल, चर्म।
चामर (सं० पु०) चवँर, वर्ण वृत्त विशेष।
चामर पाटना (क्रि०) दाँतों से होठ काटना, दाँत कटकटाना।
चामरी (सं० स्त्री०) सुरा गाय, एक बनैली गाय जिसकी पूंछ के बालों का चवँर बनता है।
चामीकर (सं० पु०) सोना, धतूरा।
चामुण्डराय (सं० पु०) एक राजा का नाम, ये पृथ्वीराज के एक सामन्त थे, इनका वर्णन 'पृथ्वीराज रासो' में मिलता है।
चामुण्डा (सं० स्त्री०) एक देवी का नाम, इन्होंने चण्ड मुण्ड नाम के दैत्यों का वध किया था, इसी से इनका नाम चमुण्डा पड़ा, दुर्गा, देवी, भवानी, योगिनी।
चाम्पेय (सं० पु०) चम्पा पुष्प, चम्पा का फूल।
चाय (सं० स्त्री०) एक प्रकार का पौधा, यह आसाम में अधिकता से होता है, खौलते पानी में इसकी पत्तियाँ डाल कर उबाली जाती हैं इस रस में दूध शक्कर मिला कर लोग पीते हैं।
चायक (सं० पु०) प्रेमी, चाहने वाला।
चार (वि०) संख्या विशेष, तीन और एक।
(सं० पु०) गुप्तचर, दूत, गति, चाल, कारागार, बन्धन, नौकर, सेवक, चाकर, प्रेम, पियार, आचार, कृत्रिम विष, रस्म, रीति, चलन।
चारक (सं० पु०) सईस, चरवाहा, चराने वाला।
चारकर्म (सं० पु०) छिपकर देखना।
चारखाना (सं० पु०) एक प्रकार का वस्त्र जिसमें चौखूंटी धारियों का घेरा बना रहता है।
चारचक्षु (सं० पु० राजा।
चारजामा (सं० पु०) काठी, ज़ीन।
चारटूक (वि०) टुकड़े टुकड़े, साफ़ साफ़ दिल।
चारण (सं० पु०) राजपूताने की एक जाति जिसका काम राजा महाराजाओं का यश गान कर उनको

उत्तेजित करना था, भाट, बंदीजन, भ्रमण करने वाला।

चारदिवारी (सं० स्त्री०) चहारदिवारी, प्राचीन कोट।

चारना (क्रि० स०) चराना।

चारपाई (सं० स्त्री०) खटिया, खाट।

चारपाया (सं० पु०) चार पैर वाला जानवर, चौपाया, [पशु।

चारा (सं० पु०) पशुओं का खाद्य घास डंठल आदि, तदबीर, उपाय।

चाराजोई (सं० स्त्री०) दोहाई देना, नालिश, फ़रयाद।

चारि (सं० पु०) चार की संख्या, चतुर, गर्भी, युगल, लबार।

चारि अवस्था (सं० स्त्री०) चार अवस्थाएँ यथा जाग्रत, [स्वप्न, सुपुप्ति, तुरीय।

चारित (वि०) चलाया हुआ, खींचा हुआ, उतारा हुआ (अर्क)।

चारित्र (सं० पु०) स्वभाव, चाल चलन।

चारी (वि०) गमन करने वाला, चलने वाला।

चारु (वि०) रमणीय, सुन्दर, मनहरण, मनोहर, शोभायमान, (सं० पु०) बृहस्पति, कृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, केशर।

चारुता (सं० स्त्री०) शोभा, सुन्दरता, मनोहरता।

चारुपर्णी (सं० स्त्री०) गंधसार, पसरन।

चारुफला (सं० स्त्री०) अङ्गूर, दाख, द्राक्षा लत्ता, किसमिस।

चारुमती (सं० स्त्री०) कृष्ण की एक कन्या का नाम जो रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

चारुबाहु (सं० पु०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारुविक्रम (वि०) बलवान, पराक्रमी, बली।

चारु लोचन (वि०) सुन्दर आंखवाला (सं० पु०) हरिण, मृगा।

चारुशिला (सं० स्त्री०) मणि विशेष, हीरा।

चारुशीला (वि०) सुन्दर स्वभाव, सुरूप।

चारुहासिनी (वि०) सुन्दर मुसकान वाली, सुन्दर हँसने वाली।

चार्वाक (सं० पु०) एक ऋषि का नाम, ये नास्तिक मत के प्रवर्तक थे, कोई इनको देव गुरु बृहस्पति मानता है और कोई बृहस्पति का शिष्य, वेद के संबन्ध में इनकी बड़ी बुरी सम्मति है, ये ईश्वर, मोक्ष, स्वर्ग आदि को नहीं मानते थे।

चाल (सं० स्त्री०) गमन, गति, चलन, व्यवहार, आचरण, बर्ताव, बनावट, गढ़न, आकृति, रस्म, रीति, परिपाटी, प्रथा, छल, कपट, धोखेबाजी, धूर्तता, आहट, खटका, हलचल (पु०) छत, छप्पर, छाजन।

चालक (सं० पु०) संचालक, चलाने वाला, उद्धत हाथी।

चालचलन (सं० पु०) व्यवहार, आचरण, बर्ताव, चरित्र।

चाल ढाल (सं० स्त्री०) व्यवहार, बर्ताव, आचरण, ढंग।

चालन (सं० पु०) गति, गमन, परिचालन, प्रेरणा, छलनी, चलनी, आंधी।

चालनहार (सं० पु०) चलाने वाला, आनयन करने वाला, ले जाने वाला।

चालना (क्रि० स०) झारना, छानना, पछोड़ना, भुगताना, हिलाना, डोलाना, द्विरागमन कराना, बात उठाना, ज़िक्र करना।

चालनी (सं० स्त्री०) छलनी, चलनी, चालन।

चालबाज़ (वि०) रंगबाज़, धूर्त्त, धोखेबाज़।

चालबाज़ी (सं० स्त्री०) छल, कपट, धोखा, शठता।

चाला (सं० पु०) यात्रा, प्रस्थान, मुहूर्त्त।

चालाक (वि०) चालबाज़, चतुर, धूर्त्त, शठ। [शठता।

चालाकी (सं० स्त्री०) चतुराई, चालबाज़ी, धूर्तता,

चालान (सं० पु०) बीजक, भेजे हुए माल का विवरण पत्र, अपराधी को न्यायालय में सिपाही द्वारा भेजना।

चालिया (वि०) शठ, कपटी, छली।

चालिस (वि०) संख्या विशेष, बीस और बीस।

चाली (वि०) धूर्त, शठ, चालबाज़, धोखेबाज़।

चालीस (वि०) देखो "चालिस"

चालीसवाँ (वि०) उनतालीसवाँ के बाद का स्थान, (सं० पु०) चहल्लुम, श्राद्धादि में चालीसवें दिन का कर्म। [वस्तुओं का संग्रह।

चालीसा (वि०) चालीस साल का समय, चालीस

चालुक्य (सं०पु०) दक्षिण का एक प्रबल पराक्रमी राजवंश।

चावँ चावँ (सं० पु०) देखो "चांव चांव"।

चाव (सं० पु०) अभिलाषा, इच्छा, लालसा, चास, प्रेम, उत्साह, उमंग। [स्थान।

चावड़ी (सं० स्त्री०) चट्टी, पड़ाव, यात्रियों के ठहरने का

चावल (सं० पु०) चाउर, तण्डुल।

चाशनी (सं० स्त्री०) चीनी, शक्कर आदि पानी में मिला कर चुराया हुआ गाढ़ा रस, चसका, चाट।

चाष (सं०पु०) नीलकण्ठ पक्षी,चाहा पक्षी, आँखें, नेत्र।
चाषु (सं० पु०) नीलकंठ।
चास (सं० पु०) जोताई, जोत, खेती।
चासना (क्रि० अ०) जोतना।
चासा (सं० पु०) खेतिहर, किसान, हरवाहा।
चाह (सं० स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा, चाह, लालसा, माँग, आवश्यकता, आदर, प्रेम, प्रीति, समाचार।
चाहक (सं० पु०) प्रेमी, हितू, चाहने वाला।
चाहत (सं० स्त्री०) प्रेम, अभिलाषा, चाह, इच्छा।
चाहना (क्रि० स०) इच्छा करना, अभिलाषा करना, प्रेम करना, प्रीति करना, प्यार करना, प्रयत्न करना, मांगना, ढूंढना, अनुसंधान करना, देखना, निहारना।
चाहा (सं० पु०) बगुले की जाति का एक पक्षी जो पानी के किनारे रहता है।
चाहा चाही (सं० स्त्री०) परस्पर प्रीति।
चाहि (अव्य०) से, अपेक्षा से अधिक।
चाहित (वि०) इच्छित, अभिलाषित। [वाजिब है।
चाहिए (अव्य०) योग्य है, उचित है, उपयुक्त है,
चाही (वि०)प्रिय, प्यारी, इच्छित।
चाहे (अव्य०) या, अथवा, किम्बा।
चाहो (अव्य०) देखो "चाहे"।
चिआँ (सं० पु०) इमली का बीज। [पसन्द करता है।
चिउँटा (सं० पु०) चींटा, एक कीड़ा जो मीठा बहुत
चिउँटी (सं० स्त्री०) पिपीलिका, चींटी।
चिगुरना (क्रि० अ०) जकड़ जाना, ऐंठ जाना।
चिगुरा (सं० पु०) ऐंठन, बगुले की एक जाति।
चिघाड़ (सं० पु०) हाथी की बोली। [चीख़ना।
चिघाड़ना (क्रि० अ०) हाथी का गर्जना, चिल्लाना,
चिंदी (सं० स्त्री०) टुकड़ा, खण्ड।
चिउरा (सं० पु०) उबाले धान का कूट कर चापर किया हुआ चावल, चूरा, चिवड़ा।
चिउली (सं० स्त्री०) एक वृक्ष विशेष, चिकनी सुपारी, एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
चिक (सं० स्त्री०) बांस आदि का बना हुआ परदा, कसाई, चिलक, लचक, (अं०) हुंडी।
चिकट (वि०) लसाला, चिपचिपा, मैला कुचैला।
चिकटना (क्रि० अ०) चिपचिपाना, लसलसाना। [वस्त्र।
चिकटा (सं० पु०) एक प्रकार का रेशमी, या टसर का
चिकठा (सं० पु०) तेली, तेल बनाने वाली एक जाति विशेष। [सूती वस्त्र।
चिकन (सं० पु०) एक प्रकार का बेल बूटेदार महीन
चिकना (वि०) साफ़, सुन्दर, तेलौंस, स्निग्ध, स्नेही, प्रेमी, चापलूस, लम्पट, निर्लज्ज।
चिकनाई (सं० स्त्री०) स्निग्धता, चिकनापन, घी, तेल, चर्बी इत्यादि चिकने पदार्थ।
मुहा०—चिकनाया घड़ा = जिसके दिल पर किसी के कहने का कुछ भी प्रभाव न पड़े। चिकना चाँद = सुन्दर, रमणीय, मनोज्ञ, सुहावना।
चिकनाना (क्रि० स०) सँवारना, साफ़ करना, उज्ज्वल करना, तेलौंस करना, चिक्कन करना, मोटाना, अनुरक्त होना, फुसलाना, बहकाना।
चिकनापन (सं० पु०) चिकनाहट, चिकनाई।
चिकनावट (सं० पु०) चिकनापन, चिकनाई। [वट।
चिकनाहट (सं० स्त्री०) चिकनाई, चिकनापन, चिकना-
चिकनिया (वि०) छैलछबीला, बांका, लम्पट, शौक़ीन।
चिकरना (क्रि० अ०) चिल्लाना, चिंघाड़ना।
चिकलना (क्रि० स०) मसलना, चूर चूर करना।
चिकवा (सं० पु०) कसाई, मांस बेचने वाला।
चिकार (सं० पु०) चिंघाड़, चिल्लाहट, कोलाहल।
चिकारना (क्रि०अ०) चिंघाड़ना, चिल्लाना, चीख़ मारना।
चिकारा (सं० पु०) सारंगी की तरह एक प्रकार का बाजा, हरिण की जाति का एक जानवर।
चिकारी (सं० स्त्री०) छोटा चिकारा, मच्छड़।
चिकित्सक (सं० पु०) वैद्य, भिषक्, व्याधि दूर करने वाला। [का प्रतिकार।
चिकित्सा (सं० स्त्री०) व्याधि दूर करने का प्रयत्न, रोग
चिकित्सालय (सं० पु०) औषधालय, अस्पताल।
चिकित्सा शास्त्र (सं० पु०) चिकित्सा करने का शास्त्र।
चिकित्सित (वि०) जिसका इलाज हुआ हो, जिसकी चिकित्सा हुई हो।
चिकीर्ष (सं० पु०) करने का अभिलाषी।
चिकीर्षा (सं० पु०) करने की अभिलाषा, इच्छा।
चिकीर्षित (वि०) अभिलषित, इष्ट, चाहा हुआ।
चिकुटी (सं० स्त्री०) चुटकी।
चिकुर (सं० पु०) सिर के बाल, केश, कुन्तल, पर्वत, रेंगने वाले जीव सर्प आदि, छछूंदर, गिलहरी,

चिखुरी, एक का प्रकार पक्षी, (वि०) चपल, चंचल, अस्थिर ।

चिकुरपाश (सं० पु०) बालों का समूह, केश पाश ।

चिकोटी (सं० पु०) चुटकी, चिकुटी, हाथ की दो अंगुलियों का मेल, अंगूठा के साथ बीच की या और किसी अंगुली का मेल । [याना ।

चिकोरना (क्रि० अ०) चिल्होरना, खंखोरना, कोचि-

चिकोरा (वि०) चपल, चञ्चल, अस्थिर, तरल, द्रव ।

चिक्क (वि०) चपटी नाक वाला, जिसकी नाक चिपटी हो (सं० पु०) बकरी, छछूंदर ।

चिक्कट (वि०) कीट, मैल, तलौंस ।

चिक्कण (वि०) चिकना, स्निग्ध, (सं० पु०) हर्रे, सुपारी थोड़ी तेज़ आंच ।

चिक्कन (वि०) चिकना, कीट, मैल, तलौंस, चिक्कण ।

चिक्कना (वि०) चिकना, फिसलनदार ।

चिक्कनी (सं० स्त्री०) दक्खिनी सुपारी ।

चिक्करना (क्रि० अ०) चिंघाड़ना, चीखना, चिल्लाना ।

चिक्करहिं (क्रि०) चिकारते हैं, चिंघाड़ते हैं ।

चिक्कस (सं० पु०) जव या गेहूं का महीन आटा, जव का आटा और हल्दी मिला हुआ उबटन, बुकवा ।

चिक्कहा (सं० पु०) चिकवा, कसाई । [सुपारी ।

चिक्का (सं० पु०) मूसा, चूहा, छछूंदर, (सं० पु०)

चिक्कार (सं० पु०) चीख, चिंघाड़, गर्जन, चिल्लाहट ।

चिक्की (सं० स्त्री०) सड़ी सुपारी ।

चिखुरन (सं० स्त्री०) खेत में से निराई हुई घास ।

चिखुरना (क्रि० अ०) निराना, साफ़ करना, खेत से घास निकालना ।

चिङ्गड़ा, चिङ्गड़ा (सं०पु०) कीट विशेष, पतिङ्गा, झींगा, झींगा मछली ।

चिङ्गनी (सं० स्त्री०) मुरगी का बच्चा ।

चिङ्गा (सं० पु०) मुरगी का बच्चा ।

चिङ्गी (सं० स्त्री०) चिङ्गारी, पतङ्ग, कीट ।

चिङ्घाड़ (सं० पु०) चिकार, भयङ्कर शब्द, हाथी का शब्द । [का शब्द करना ।

चिङ्घाड़ मारना (क्रि०) भयङ्कर शब्द करना, हाथी

चिङ्घाड़ना (क्रि०) किलकारना, चिङ्घाड़ मारना ।

चिचड़ी (सं० स्त्री०) किलनी, अँठई ।

चिचिड़ा (सं० पु०) एक प्रकार की तरकारी ।

चिचियाना (क्रि० अ०) चिल्लाना, हल्ला करना, ज़ोर से पुकारना, चीखना ।

चिचियाहट (सं० स्त्री०) चिल्लाहट, चीख ।

चिचोड़ना (क्रि० स०) चूसना, निचोड़ना, निकालना ।

चिचोड़वाना (क्रि० स०) चूसवाना, चिचोड़वाना, निचोड़वाना ।

चिट (सं० स्त्री०) टुकड़ा, धज्जी, पुरज़ा ।

चिटकना (क्रि० अ०) दरकना, चटकना ।

चिटका (सं० पु०) चिता ।

चिटकाना (क्रि० स०) तड़काना, चटकाना, दरकाना, चिढ़ाना, खिझाना ।

चिटकारा (सं० पु०) चिन्ह, अंग, छोटा दाग ।

चिटकी (सं० स्त्री०) धूप, घाम, ताप, गर्मी ।

चिटुकी (सं० स्त्री०) चिट, कागज़ का छोटा टुकड़ा, पुरज़ा, रुक्का ।

चिट्ट (वि०) सफ़ेद, गोर, स्वेत, रुपया, भभकी, बढ़ावा, लगाना बझाना ।

चिट्ठा (सं० पु०) खाता, लेखा बही, जमा खर्च, वह पत्र जिस पर वर्ष भर के लाभ हानि का विवरण रहता है, फ़र्द, सूची, उजरत, मज़दूरी, वह रुपया जो रोज़ाना, आठवें दिन या महीनेवार मेहनताना या मज़दूरी के तौर पर दिया जाय, रसद, सीधा, ब्योरा, विवरण ।

चिट्ठी (सं० स्त्री०) पत्र, पाती, खत ।

चिट्ठी पत्र (सं० स्त्री०)पत्र व्यवहार, खत खतूत ।

चिट्ठी पाती (सं० स्त्री०) पत्र व्यवहार ।

चिट्ठीरसा (सं० स्त्री०) हरकारा, डाकिया ।

चिड़ा (सं० पु०) धान्य चमस, चिपिरक, गौरैया ।

चिड़ (सं० पु०) अरुचि, क्रोध, घृणा, ग्लानि, कुढ़न, जलन, खिजाव ।

चिड़चिड़ा (वि०) शीघ्र अप्रसन्न होने वाला, चिटकने वाला, चिढ़ने वाला, तुनक मिज़ाज़ी, खुनसहा ।

चिड़चिड़ाना (क्रि० अ०) तड़कना, दरकना, चटकना, चिढ़ना, झुंझलाना, खुनसाना ।

चिड़पिड़ा (वि०) तीखा, चरपरा ।

चिड़वा (सं० पु०) चिउरा ।

चिड़ा (सं० पु०) गौरैया, चटक । [नाराज़ करना ।

चिड़ाना (क्रि० स०) चिढ़ना, खिझाना, छेड़छाड़ करना,

चिड़िया (सं० स्त्री०) पंछी, पक्षी, पखेरू।
चिड़ियाखाना (सं० पु०) तुमायशी चिड़िया के रखने का स्थान।
चिड़ी (सं० स्त्री०) चिड़िया, पंछी, पक्षी, ताश का वह पत्ता जिस पर काली पंखड़ीदार बूटियां बनी रहती हैं।
चिड़ीमार (सं० पु०) व्याधा, बहेलिया।
चिढ़ (सं० स्त्री०) झुंझलाहट, खिजलाहट, अप्रसन्नता, कुढ़न। [क्रुद्ध होना, झुंझलाना।
चिढ़ना (क्रि० अ०) कुढ़ना, बिगड़ना, अप्रसन्न होना,
चिढ़वाना (क्रि० स०) चिटकवाना, खिझवाना, अप्रसन्न करवाना, कुढ़वाना, बिगड़वाना।
चिढ़ाना (क्रि० स०) क्रुद्ध करना, अप्रसन्न करना, कुढ़ाना, हँसी उड़ाना, उपहास करना।
चिरिड (सं० स्त्री०) नृत्य विशेष।
चित् (सं० पु०) ज्ञान चैतन्य, चित्तवृत्ति, अग्नि चुनने वाला, संस्कृत का अनिश्चयवाचक प्रत्यय।
चित (सं० पु०) चित्त, मन, हृदय, दिल, अन्तःकरण, (वि०) उतान।
चितकबरा (वि०) कबरा, रङ्ग बिरङ्गा, चितला, शबल।
चितचाटा (वि०) मनभावना।
चित चेला (वि०) मनमाना।
चितचोर (सं० पु०) मनहरण, मनभावन, मनोहर, प्रिय, चित्त चुराने वाला। मुहा०—चित देना—ध्यान देना, मन लगाना। चित लगना—मनोहर, सुहावना, मनभावना। चित लाना—सावधान हो जाना, सचेत हो जाना। चित करना—उलटना, उतान गिराना, जीतना, हराना, पराजित करना।
चितना (क्रि०) देखना, ताकना।
चितपट (सं० पु०) एक खेल जिसमें कोई वस्तु ऊपर फेंकी जाती है और उसके चित या पट गिरने पर हार जीत निर्भर रहती है। [बूटे बनाना।
चितरना (क्रि० स०) चित्र बनाना, चित्रित करना, बेल
चितरवा (सं०पु०) एक पक्षी विशेष।
चितला (वि०) चितकबरा, कबरा।
चितव (वि०) देखता है, घूरता है।
चितवत (क्रि०) देखता है, ताकता है।
चितवन (सं० स्त्री०) निगाह, दृष्टि, कटाक्ष।
चितवना (क्रि०स०) ताकना, अवलोकन करना, देखना।
चितवाना (क्रि० स०) रक्षा करने का भार सौंपना, तकाना, दिखाना।
चितहट (सं० स्त्री०) खींच, अनिच्छा, घृणा।
चिता (सं० स्त्री०) लकड़ियों का ढेर जिस पर मुर्दा जलाया जाता है।
चिताखा (सं० स्त्री०) चिता, मृतक-शय्या।
चिताङ्ग (वि०) चित्त, उतान।
चितान (सं० पु०) उतान, चित्त, निगाह, दृष्टि।
चिताना (क्रि० स०) जताना, सावधान करना, जगाना, जलाना।
चिताभूमि (सं० स्त्री०) मरघट, श्मशान।
चितावना (क्रि०) चिताना।
चितावनी (सं० स्त्री०) सावधानी, चेतावनी, आगाही।
चिताशायी (वि०) मुर्दा, मरा हुआ।
चिति (सं० स्त्री०) समूह, चिता, चुनाई, अग्नि-संस्कार, चैतन्य, दुर्गा, भवानी, धब्बा, बुंदकी। [वाला।
चितेरा (सं० पु०) चित्रकार, मुसौविर, चित्र बनाने
चित्कार (सं० पु०) चीत्कार, चिल्लाना, चीख।
चित्त (सं० पु०) मन, अन्तःकरण की वृत्ति।
मुह०—चित्त उचटना—मन न लगना। चित्त पर चढ़ना—किसी समय न भूलना। चित्त से उतरना—अनादर होना, भूल जाना।
चित्तविक्षेप (सं० पु०) उद्विग्नता, व्याकुलता।
चित्तविभ्रम (सं० पु०) उन्माद, भ्रम, भ्रान्ति।
चित्तवृत्ति (सं० स्त्री०) चित्त की स्थिति।
चित्तसमुन्नति (सं० स्त्री०) दम्भ, अहङ्कार।
चित्तल (सं० पु०) एक प्रकार का हिरन, चीतल।
चित्तापहारक (वि०) मनहरण, सुन्दर, मनमोहन।
चित्ति (सं० स्त्री०) कर्म, ख्याति, बुद्धिवृत्ति, अथर्व ऋषि की स्त्री का नाम।
चित्ती (सं० स्त्री०) बुन्दकी, धब्बा।
चित्तौर (सं० पु०) उदयपुर के राणाओं की प्राचीन राजधानी, इस नगर के संस्थापक बाप्पा रावल समझे जाते हैं यह भारतीय इतिहास में एक प्रसिद्ध नगर है, इसी नगर में महाराणी पद्मावती अपने सतीत्व की रक्षा के लिए कई सौ क्षत्राणियों के साथ आग में जल मरीं। इसी नगर के उद्धार के लिए महाराणा प्रताप ने आत्मत्याग किया।

चित्य (सं० पु०) समाधि-स्थान, चिता अग्नि।

चित्र (सं० स्त्री०) तिलक, तसवीर, आलेख्य, विस्मय, विचित्र, आश्चर्य, कबरा, रंगबिरंगा, अशोक वृत्त, चित्रक रेण्डी, एक यम का नाम, कुष्ट विशेष।

चित्रकण्ठ (सं० पु०) परेवा, कबूतर।

चित्रकर (सं० पु०) चित्रकार, विश्वकर्मा और शूद्रा स्त्री से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति।

चित्रकला (सं०स्त्री०) चित्रविद्या, चित्र बनाने की विद्या।

चित्रकार (सं० पु०) चित्रकर, चितेरा।

चित्रकारी (सं० स्त्री०) चित्रकला, चित्रविद्या।

चित्रकाव्य (सं० पु०) वह काव्य जिसका अक्षर लिखने से चित्र बन जाय।

चित्रकूट (सं० पु०) एक पर्वत का नाम, यह बाँदा ज़िला में है, वनवास के समय श्रीरामचन्द्र जी यहां पर कुछ दिन ठहरे थे।

चित्रकेतु (सं० पु०) एक राजा का नाम, वह राजा जिसके पास चित्रित झण्डा हो।

चित्रगुप्त (सं० पु०) यमराज का सहायक, कायस्थों के आदि पुरुष, इनकी उत्पत्ति के विषय में भविष्य पुराण में लिखा है कि ये ब्रह्मा के अङ्ग से उत्पन्न हुए हैं, जब ब्रह्मा सृष्टि रचना के बाद ध्यान में मग्न थे उस समय हाथ में क़लम दवात लिए अनेक प्रकार से चित्रित एक पुरुष उत्पन्न हुआ। ब्रह्मा का ध्यान टूटने पर उसने कहा 'मुझे क्या करना होगा' ब्रह्मा ने कहा 'तुम मेरे अङ्ग से उत्पन्न होने के कारण कायस्थ हुए और तुम्हारा नाम चित्रगुप्त रक्खा, तुम प्राणियों के पाप पुण्य कर्म का लेखा रक्खो और यमराज के पास रहो' कार्तिक सुदी द्वितीया को इनकी पूजा होती है।

चित्रदेवी (सं० स्त्री०) महेन्द्र वारुणी, इन्द्रा।

चित्रपक्ष (सं० पु०) तीतर।

चित्रपट (सं० पु०) मूर्ति, चित्राधार।

चित्रभानु (सं० पु०) सूर्य अग्नि, अश्विनी कुमार, अर्जुन की स्त्री, चित्रांगदा के पिता, भैरव, मदार, अर्क।

चित्रभेषजा (सं० स्त्री०) कठूमरी, कठगूलर।

चित्ररथ (सं० पु०) एक गंधर्व, ये कश्यप और दक्ष कन्या के पुत्र थे, इनकी स्त्री का नाम कुम्भीनसी था, इनके पास एक चित्रित रथ था, इससे इनका नाम चित्ररथ पड़ा, इनका दूसरा नाम अङ्गारपर्ण था, इनके रथ को अर्जुन ने जला दिया था, इससे इनका नाम दग्धरथ पड़ा, गद नाम के राजा का पुत्र जो श्रीकृष्ण के पौत्र थे, अङ्ग देश के एक राजा का नाम।

चित्रलेखा (सं० स्त्री०) एक छन्द, इसके प्रत्येक पद में एक एक मगण, भगण, नगण, और तीन यगण होते हैं, एक अप्सरा का नाम, कुम्भाण्ड की कन्या, यह बाणासुर की कन्या उषा की सखी थी, यह चित्रविद्या में बड़ी दक्ष थी, यह उषा के कहने से श्रीकृष्ण के यहां से अनिरुद्ध को हर ले गयी थी।

चित्रलोचना (सं० स्त्री०) मैना, सारिका।

चित्रविचित्र (वि०) रङ्ग बिरङ्ग, बहुरङ्गी, अनेक प्रकार [का।

चित्रविद्या (सं० स्त्री०) चित्रकला, चित्र बनाने की विद्या।

चित्रवीर्य (सं० पु०) लाल रेंड़, (वि०) चित्रावली।

चित्रशाला (सं० स्त्री०) चित्र बनाने का घर, वह स्थान जहां पर बहुत से चित्र रक्खे हों, वह स्थान जहां पर चित्र बनाने का काम सिखाया जाता हो।

चित्र शिखण्डिज (सं० पु०) बृहस्पति, देवताओं के गुरु।

चित्रसारी (सं० स्त्री०) रंगमहल, वह घर जो चित्रों से खूब सजाया गया हो।

चित्रसेन (सं० पु०) एक गंधर्व का नाम, यह अद्वैत बन में एक तालाब के पास रहता था, बनवासी पाण्डव भी इसी बन में रहते थे, एक बार दुर्योधन अपने इष्ट मित्र और सेना के साथ पाण्डवों को अपना वैभव दिखाने को चले, तालाब पर पहुंच कर दुर्योधन ने इस गंधर्व को वहां से हट जाने को कहा, इसने भी उचित उत्तर दिया दोनों पक्ष में युद्ध हुआ, कौरव हार गये और दुर्योधन कर्णादि वीर क़ैद कर लिए गये, दुर्योधन का एक आदमी युधिष्ठिर के पास सहायता के लिए गया, तब युधिष्ठिर ने भीमादि वीरों को भेजा, इन लोगों ने गंधर्व को हरा कर कौरवों को मुक्त किया, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, परीक्षित के एक पुत्र का नाम।

चित्रा (सं० स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में से चौदहवां नक्षत्र, एक अप्सरा का नाम, श्रीकृष्ण की एक सखी, एक नदी का नाम, चितकबरी गाय, मजीठ, वायविडङ्ग, अजवाइन।

चित्राङ्ग (वि०) चित्रित अङ्ग वाला, (सं० पु०) ईंगुर, हरताल, चीता, चित्रक, सर्प ।

चित्राङ्गद (सं० पु०) एक चन्द्रवंशी राजा, ये शान्तनु और सत्यवती के पुत्र थे, शान्तनु के पश्चात ये ही राज-सिंहासन पर बैठे, ये बड़े प्रजा-प्रिय राजा थे ।

चित्राङ्गदा (सं० स्त्री०) एक राज कन्या का नाम, यह राजा चित्रवाहन की कन्या थी, इसका विवाह अर्जुन से हुआ था, वभ्रुवाहन इसी का पुत्र था, रावण की एक स्त्री जो वीरबाहु की माता थी ।

चित्रायुध (सं० पु०) धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम, एक विलक्षण अस्त्र ।

चित्रावसु (सं० स्त्री०) नक्षत्र सम्पन्न रात ।

चित्राश्व (सं० पु०) सत्यवान का दूसरा नाम ।

चित्रिणी (सं० स्त्री०) स्त्रियों के चार भेदों में से एक ।

चित्रित (वि०) जो चित्र में खींचा गया हो । [आकाश ।

चित्रोक्ति (सं० स्त्री०) अलंकृत भाषा में कहना, व्योम,

चिथड़ा (सं० पु०) गूदड़, फटा पुराना वस्त्र ।

चिथड़ना (क्रि० अ०) फट जाना, गुदड़ी हो जाना ।

चिथड़िया (वि०) गूदड़िया, गूदड़ बाबा, चिरकुटिया ।

चिथाड़ना (क्रि० स०) फाड़ना, चिथड़ा करना, नीचा करना, लज्जित करना, अपमान, करना, अप्रतिष्ठा करना ।

चिथोड़ना (क्रि० अ०) भभोरना, फाड़ खाना, फाड़ना ।

चिद्रूप (सं० पु०) चैतन्यमय परब्रह्म, ज्ञान स्वरूप परमात्मा ।

चिद (सं० पु०) जीव वाला, चैतन्य, सजीव ।

चिदाकाश (सं० पु०) परब्रह्म, परमात्मा । [परमात्मा ।

चिदात्मा (सं० पु०) ज्ञान स्वरूप परब्रह्म, चैतन्य स्वरूप

चिदानन्द (सं० पु०) चैतन्य और आनन्द स्वरूप परब्रह्म ।

चिदाभास (सं० पु०) ज्ञान ज्योति, ज्ञान का प्रकाश, जीवात्मा ।

चिनक (सं० पु०) वह जलन या पीड़ा जो मूत्रनाली में होती है, चुनचुनाहट, जलन के साथ दर्द ।

चिनग (सं० पु०) चिनक, मूत्रकृच्छ्र रोग ।

चिनगना (क्रि०) टीसना, जलन होना, चिल्लाना ।

चिनगारी (सं० स्त्री०) स्फुलिंग, अग्निकण, जलती आग का टुकड़ा ।

चिनगी (सं० स्त्री०) देखो "चिनगारी" ।

चिनचिनाना (क्रि०) चिल्लाना, चीखना, आह मारना ।

चिनाना (क्रि० स०) बिनवाना, चुनाना, घर उठाना, ईंट आदि से घर की जोड़ाई कराना ।

चिनाव (सं० पु०) पञ्जाब की एक नदी का नाम ।

चिनिया (वि०) चीनी, चीनी के समान सफ़ेद ।

चिनियाबदाम (सं० पु०) मोंगफली मूंगफली ।

चिन्त (सं० स्त्री०) चिन्ता, सोच, फ़िक्र, ध्यान ।

चिन्तवन (सं० पु०) देखो 'चिन्तन' ।

चिन्तक (वि०) चिन्ता करने वाला, ध्यान करने वाला ।

चिन्तन (सं० पु०) विवेचना, बिचार, ध्यान, अभ्यास, मनन । [चना करना, अभ्यास करना ।

चिन्तना (क्रि० स०) ध्यान करना, मनन करना, विवे-

चिन्तनीय (वि०) विवेचनीय, सोचनीय, मनन करने योग्य, अभ्यास करने योग्य, भावनीय ।

चिन्ता (सं० स्त्री०) सोच, फ़िक्र, ध्यान, खटका, भावना उत्कण्ठा, भय, डर, उद्वेग । [अवस्था ।

मुहा०—चिन्ता की मुद्रा=ध्यान-मग्नता, सोच की

चिन्ताकुल (वि०) फ़िक्रमंद, चिन्ता से घबड़ाया हुआ, चिन्ता से उद्विग्न, चिन्ता से व्याकुल ।

चिन्तातुर (वि०) चिन्ता से व्यग्र, फ़िक्रमंद ।

चिन्ताना (क्रि०) अभ्यास करना ।

चिन्तान्वित (वि०) चिन्तित, उदास ।

चिन्तापद (वि०) चिन्तित ।

चिन्तामणि (सं० पु०) एक कल्पित मणि विशेष, ब्रह्मा, परमेश्वर, एक बुद्ध का नाम, एक गणेश इनका जन्म कपिल के यहाँ हुआ, महाबाहु नामक राक्षस ने चिन्तामणि कपिल से छीन लिया था परन्तु गणेश ने उस राक्षस को मार मणि ले लिया, एक रस विशेष, सरस्वती का एक मन्त्र, वह घोड़ा जिसके भौंरी हो ।

चिन्तावेश्म (सं० पु०) मन्त्रणागृह, परामर्श-भवन ।

चिन्तित (वि०) चिन्तायुक्त । [योग्य ।

चिन्त्य (वि०) चिन्तनीय, विचारणीय, विचार करने

चिन्मेय (सं० पु०) परब्रह्म, परमात्मा, (वि०) चैतन्यमय ।

चिन्ह (सं० पु०) निशान, दाग, पहिचान, अङ्क, लक्षण ।

चिन्हवाना (क्रि० स०) पहिचनवाना, पहिचान कराना ।

चिन्हाना (क्रि० स०) पहिचनवाना ।

चिन्हानी (सं० स्त्री०) चिह्न, लकीर, रेखा, स्मारक, पहचान, लक्षण ।

चिन्हार (वि०) परिचित, मुलाक़ाती, जान पहिचान वाला।
चिन्हारी (सं० स्त्री०) परिचय, जान पहिचान।
चिन्हित (वि०) चिह्न किया हुआ।
चिपकना (क्रि० अ०) सटना, चिमटना, लिपटना, लगना, किसी लसीली वस्तु के संयोग से दो वस्तुओं का आपस में मिल जाना।
चिपकाना (क्रि० स०) सटाना, लिपटाना, चपकाना।
चिपचिप (सं० पु०) लसलस, लसदार वस्तुओं के छूने का अनुभव या शब्द।
चिपचिपा (वि०) लसदार, चपचपा, लसीला, लसलसा।
चिपचिपाना (क्रि० अ०) लसलस करना, लसलसाना।
चिपटना (क्रि० अ०) चिपकना, सटना, लिपटना, चिमटना।
चिपटा (वि०) बैठा हुआ, पचका हुआ, चिपका हुआ।
चिपटाना (क्रि० स०) लिपटाना, चिपकाना, सटाना, चिमटाना, आलिङ्गन करना।
चिपड़ाहा (वि०) किचराई हुई आंख।
चिपड़ी (सं० स्त्री०) कण्डी, गोहरी, उपला।
चिपरक (सं० पु०) धान्य, चमसा।
चिपरा (सं० पु०) लासा, गोंद।
चिपरी (सं० स्त्री०) देखो "चिपड़ी"।
चिप्पक (वि०) छिछलाहा (सं० पु०) पक्षि विशेष।
चिप्पा (सं० पु०) चोप, जोड़, पेवन्द।
चिप्पी (सं० स्त्री०) किसी वस्तु का वह टुकड़ा जो किसी टूटी या फटी वस्तु में जोड़ा जाता है, थेकरी, पेवन्द, टिकरी।
चिबावाला (सं० पु०) लड़कपन।
चिबिल्ला (वि०) चिलबिला, नटखट।
चिबुक (सं० पु०) ठुड्डी, ओठ के नीचे का भाग।
चिमगादर (सं० पु०) चमगादड़, बादुर।
चिमचिमा (वि०) तेलछट जमा हुआ तेल।
चिमटना (क्रि० अ०) लिपटना, चिपटना, सटना, प्रगाढ़ आलिङ्गन करना, पीछे पड़ना।
चिमटा (सं० पु०) आग उठाने के लिए या रोटियां आग पर सेकने के लिए लोहा या पीतल का बना बर्तन। [वाना।
चिमटवाना (क्रि० स०) चिपटवाना, चिपकवाना, सट-
चिमटाना (क्रि० स०) चिपटाना, चिपकाना, लिपटाना, आलिङ्गन करना, सटाना।
चिमटी (सं० स्त्री०) छोटा चिमटा, चिमोटी।
चिमड़ा (वि०) चिमड़ा।
चिमड़ा (वि०) चीमड़, लचीला।
चिमड़ी (वि०) लचीली, चीमड़ी।
चिमनी (सं० स्त्री०) मकान के ऊपर का वह सूराख जिसमें से होकर धुआं निकलता है, लैंप के ऊपर का वह शीशा जिस में से धुआं बाहर निकलता है।
चिमस (सं० पु०) पानी का सरेस, लसलसा।
चिर (वि०) बहुत दिनों वाला, दीर्घ कालवर्ती, (क्रि० वि०) दीर्घ काल तक, अधिक समय तक, बहुत दिन तक।
चिरई (क्रि० स्त्री०) पक्षी, पंछी, चिड़िया।
चिरकना (क्रि० अ०) थोड़ा थोड़ा पाखाना फिरना।
चिरकारी (वि०) दीर्घसूत्री, आलसी, काम में देर लगाने वाला।
चिरकाल (सं० पु०) विलम्ब, बहुत देर, दीर्घकाल।
चिरकुट (सं० पु०) चिथड़ा, गूदड़, फटा पुराना वस्त्र।
चिरचिरा (सं० पु०) चिड़चिड़ी, अपामार्ग, पौधा विशेष। [कटकटाना, बकबक करना।
चिरचिराना (क्रि० अ०) चिड़चिड़ाना, चरचराना,
चिरचिराहट (सं० स्त्री०) चरचरापन, झन-झनाहट।
चिरजीवक (वि०) चिरंजीवी।
चिरजीवी (वि०) दीर्घायु, दीर्घजीवी, (सं० पु०) विष्णु, काक, कौवा, जीवक वृक्ष, सेमर का वृक्ष, मार्कण्डेय ऋषि, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, बाल व्यास, हनुमान, विभीषण, परशुराम ये लोग चिरंजीवी माने जाते हैं।
चिरञ्जीव (वि०) इसका प्रयोग आशीर्वादादि में होता है।
चिरञ्जीवी (वि०) देखो 'चिरजीवी'।
चिरंटी (सं० स्त्री०) युवती, पिता के घर रहने वाली जवान स्त्री।
चिरंतन (वि०) प्राचीन, पुराना, पुरातन।
चिरना (क्रि० अ०) कटना, फटना।
चिरवाना (क्रि० स०) फड़वाना, कटवाना।
चिरस्थायी (वि०) बहुत दिन तक टिकने वाला, बहुत दिन तक रहने वाला, नित्य।
चिरस्मरणीय (वि०) पूज्य, प्रशंसनीय।

चिराइता (सं० पु०) एक पौधा विशेष जो दवा के काम आता है, चिरायता, कटुतिक्ता।
चिराई (सं० स्त्री०) फड़ाई, कटाई।
चिराक (सं० पु०) दीपक, दिया, प्रदीप।
चिराग (सं० पु०) देखो "चिराक"
मुहा०—चिराग गुल पगड़ी गायब - अवसर मिलते ही धन का उड़ा लिया जाना। चिराग तले अंधेरा - ऐसे स्थान पर बुराई होना जहां उसके रोकने का प्रबन्ध हो।
चिरातन (वि०) जीर्ण, प्राचीन, पुराना।
चिराट्ट (सं० पु०) गरुड़।
चिराना (क्रि० स०) चिरवाना, फड़वाना, (सं० पु०) जीर्ण, प्राचीन, पुराना।
चिरायता (सं० पु०) चिराइता, कटुतिक्ता।
चिरायु (वि०) दीर्घायु, चिरजीवी, (सं० पु०) देवता।
चिरु (सं० पु०) कंधे और बांह का जोड़, मोढ़ा।
चिरैया (सं० स्त्री०) पक्षी, चिड़िया, वर्ष का पुष्य नक्षत्र।
चिरौंजी (सं० स्त्री०) पियार वृक्ष के फलों के बीच की [गिरी, बीज विशेष।
चिरौरी (सं० स्त्री०) प्रार्थना, बिनती, खुशामद।
चिर्मटी (सं० स्त्री०) ककड़ी।
चिल (सं० पु०) पक्षी विशेष।
चिलक (सं० स्त्री०) कांति, द्युति, दीप्ति, झलक, चमक।
चिलकना (क्रि० अ०) दीप्त होना, झलकना, चमकना, टीसना, थम थम कर दर्द होना।
चिलगोज़ा (फ़ा० सं० स्त्री०) अबरक, अभ्रक।
चिलचिल (सं० स्त्री०) अबरक, अभ्रक। [याना।
चिलचिलाना (क्रि०) चिल्लाना, शोर मचाना, किकि-
चिलड़ाहा (वि०) चिल्लर भरा।
चिलबिला (वि०) चपल, चंचल, नटखट।
चिलम (फ़ा० सं० स्त्री०) एक मिट्टी का बर्तन जिसमें लोग तम्बाकू गांजा चरस आदि रख और ऊपर से आग डाल कर पीते हैं।
चिलमचट (वि०) चिलम चाट जाने वाला, ऐसा दम लगाने वाला कि एक फूंक में चिलम में कुछ न रह जाय।
चिलमची (फ़ा० सं० स्त्री०) देग के आकार का एक बर्तन जिस में हाथ मुंह धोया जाता है।
चिलमन (सं० स्त्री०) चिक, परदा।
चिलमदार (फ़ा० सं० पु०) चिलम चढ़ाने वाला, हुक्का पिलाने वाला नौकर।
चिलमबरदारी (सं० स्त्री०) चिलम पिलाने का काम, चिलम भरना।
चिलहला (वि०) किचड़ाहा।
चिलहोरना (क्रि०) ठोकराना।
चिलिक (सं० स्त्री०) मोच, हेंच, दर्द।
चिलिम (सं० स्त्री०) चिलम।
चिल्लड़ (सं० पु०) चीलर, एक प्रकार का कीड़ा जो गन्दे कपड़ों में पड़ जाता है।
चिल्लपों (सं० स्त्री०) चिल्लाहट, शोर, गुल, ऊधम, दोहाई, पुकार।
चिल्ला (सं० पु०) चालीस दिन का समय, पगड़ी का वह छोर जिसमें कलाबत्तू का काम रहता है, चालीस दिन का व्रत, धनुष की डोरी, प्रत्यंचा।
चिल्लाना (क्रि० अ०) हल्ला करना, ज़ोर से बोलना, शोर गुल करना।
चिल्लाहट (सं० स्त्री०) हल्ला, पुकार, शोर गुल।
चिल्ली (सं० स्त्री०) बथुआ का साग, लोध्र, वज्र, विद्युत, झिल्ली नाम का कीड़ा।
चिलहवाड़ा (सं० पु०) लड़कों का एक खेल जिसमें लड़के पेड़ पर चढ़ते हैं, ओल्हापाती।
चिवुक (सं० पु०) ठुड्डी।
चिहटना (क्रि०) लगना, चिपटना।
चिहाना (क्रि०अ०) सिहाना, विरक्त होना, तंग होना।
चिहिकना (क्रि० अ०) चौंकना।
चिहुंटना (क्रि० स०) चिकोटी काटना, चुटकी काटना, लिपटना, सटना, विसुखना।
चिहुंटनी (सं० स्त्री०) चिरमिटी, घुंघुची, गुंजा।
चिहुंटी (सं० स्त्री०) चिकोटी, चुटकी।
चिहुर (सं० पु०) बाल, चिकुर।
चिह्न (सं० पु०) लक्षण, निशान, दाग़, पताका।
चिह्नित (वि०) चिह्न किया हुआ।
चीं चपड़ (सं० स्त्री०) सबल या बड़े के सामने प्रतिकार या विरोध में किया जाने वाला कार्य या शब्द।
चींटा (सं० पु०) चिउटा।
चींटी (सं० स्त्री०) चिउटी, पिपीलिका।
चींथना (क्रि० स०) चीथना, फाड़ना।

चीक (सं०स्त्री०) चीत्कार, चिल्लाहट । [मिट्टी, मटियार ।
चीकट (सं० पु०) तलछट, तेल का मैल, कीट, लसार
चीकन (वि०) चिकना ।
चीख (सं० पु०) चिल्लाहट ।
चीखना (क्रि० स०) स्वाद लेना, ज़ायक़ा लेना, चखना, (क्रि० अ०) चिल्लाना, चिघाड़ना ।
चीखर (सं० पु०) कीचड़, कीच, गारा ।
चीखल (सं० पु०) देखो "चीखर" ।
चीखा (क्रि०) चखा, स्वाद लिया ।
चीखुरा (सं० पु०) गिलहरी ।
चीज़ (सं० स्त्री०) वह वस्तु जिसकी सत्ता हो, द्रव्य, पदार्थ, वस्तु, गहना, अलङ्कार, राग, गीत, विलक्षण वस्तु ।
चीठा (सं० पु०) चिट्ठा ।
चीठी (सं० स्त्री०) चिट्ठी ।
चीड़ (सं० पु०) चित्त, मन ।
चीतना (क्रि० स०) विचारना, सोचना, चाहना, अभिलाषा करना, स्मरण करना, चैतन्य होना, चित्र बनाना, बेल बूटे काढ़ना ।
चीतल (सं०पु०) हिरन की एक जाति जिसके अङ्ग पर सफेद रंग की चित्तियां बनी रहती हैं, एक प्रकार का सर्प, एक सिक्का विशेष ।
चीता (सं० पु०) एक हिंसक जन्तु विशेष, चित्रक, मन, हृदय, चित्त, ज्ञान, संज्ञा, चेतनता ।
चीत्कार (सं० पु०) चीख़, चिल्लाहट, चिघाड़ ।
चीथड़ा (सं० पु०) फटे पुराने वस्त्र, चिथड़ा ।
चीथना (क्रि०स०) चोंथना, फाड़ना, चिथड़ना, बकोटना ।
चीन (सं० पु०) भारत के उत्तर पूर्व स्थित एक पहाड़ी प्रदेश, एक अस्त्र विशेष, पताका, सूत, सीमा, नाग, रेशमी वस्त्र विशेष ।
चीनना (क्रि० स०) चीन्हना, पहिचानना ।
चीनांशुक (सं० पु०) रेशमी वस्त्र, एक प्रकार का चीन का बना लाल बनात ।
चीना (सं० पु०) एक प्रकार का साँवा, चीन निवासी ।
चीनाबदाम (सं० पु०) मूंगफली । [चीन देश का ।
चीनी (सं० स्त्री०) शक्कर, खांड़, (वि०) चीन देशीय,
चीन्हना (क्रि० स०) पहिचानना ।
चीन्हा (सं० पु०) देखो "चिह्न" ।
चीपड़ (सं० पु०) नेत्र मल, आंख का कीचड़ ।
चीमड़ (वि०) जो खींचने से, एंठने से, दबाने से, मोड़ने से और नवाने से न टूटे ।
चीर (सं० पु०) कपड़ा, वस्त्र, चिथड़ा, गुदड़, वृक्ष की छाल, गौ का थन, धूप का पेड़, पक्षी विशेष ।
चीरना (क्रि० स०) फाड़ना, विदीर्ण करना, टुकड़ा टुकड़ा करना ।
चीरफाड़ (सं० स्त्री०) चीरना फाड़ना ।
चीरम (सं० पु०) चिरौंजी ।
चीरा (सं० पु०) लहरियादार रंगीन वस्त्र जो पगड़ी बनाने के काम में लाया जाता है, नगर या गांव की सीमा पर गड़ा हुआ पत्थर, वह घाव जो चीर कर बनाया गया हो ।
मुहा०—चीरा उतारना = किसी पुरुष का किसी स्त्री के साथ समागम ।
चीराबंद (सं०पु०) वह जो चीरा बांधे, (वि०) कुमारी ।
चीरी (सं० पु०) झींगुर, झिल्ली नाम का कीड़ा, चिड़िया, एक प्रकार की छोटी मछली ।
चीरैता (सं०पु०) औषधि विशेष ।
चीर्ण (वि०) विदीर्ण, फटा हुआ, चीरा हुआ ।
चीर्णपर्ण (सं० पु०) नीम का वृक्ष, खजूर का पेड़ ।
चील (सं० पु०) पक्षी विशेष ।
मुहा०—चील का मूत = वह चीज़ जिसका मिलना बहुत कठिन हो। [वस्त्रों में पड़ जाता है ।
चीलड़ (सं० पु०) एक प्रकार का सफेद जूं जो मैले कुचैले
चीलर (सं० पु०) देखो "चीलड़" ।
चीला (सं० पु०) मूंग की पीठी या मीठे आटे के घी में सिके एक प्रकार के कढ़ाई में हाथ से पसार कर बनाये गये पुरायठे ।
चील्ह (सं० पु०) चील । [लिए स्त्रियां किया करती हैं ।
चील्ही (सं० पु०) तंत्रोपचार जो बच्चों के कल्याण के
चीवर (सं० पु०) कौपीन । [बिनना ।
चुंगना (क्रि० स०) चुगना, पक्षियों का चोंच से दाना
चुंगल (सं० पु०) बकोटा, चंगुल । [खिलाना ।
चुंगवाना (क्रि० स०) चुगवाना, पक्षियों को दाना
चुंगी (सं० स्त्री०) चुटकी भर कोई वस्तु, बाहर से किसी शहर के भीतर आने वाले माल पर लगने वाला महसूल या कर ।

चुंगीघर (सं० पु०) वह स्थान जहां चुंगी वसूल की जाती है।
चुंच (सं० स्त्री०) चोंच, ठोर, टोंट।
चुँदरी (सं० स्त्री०) रंगीन कपड़ा जिस पर सफ़ेद या रंगीन छोटी छोटी बूटियां बनी रहती हैं, चुनरी।
चुंदी (सं० स्त्री०) चुनई, चुटैया, चोटी, कुटनी, दूती।
चुँधलाना (क्रि०अ०) चकचौंधा होना, नेत्रों का चौंधना, नयनों का तिलमिलाना।
चुअना (क्रि० अ०) टपकना, चूना।
चुआई (सं० स्त्री०) टपकाई।
चुआना (क्रि० स०) अर्क उतारना, अर्क खींचना, टपकाना, चिकनाना, चुपड़ना, रसदार बनाना।
चुकता (वि०) सफाई, बेबाक़।
चुकती (वि०) चुकता, बेबाकी, अदायगी।
चुकना (क्रि० अ०) खतम होना, समाप्त होना, चुकना, निबटना, चुकता होना, भुगतान होना, असफल होना, व्यर्थ होना।
चुकाई (सं० स्त्री०) चुकता, चुकती, चुकौता। [ने करना।
चुकाना (क्रि०स०) भुगताना, निपटाना, चुकना करना, ठहराना,
चुकिया (सं० स्त्री०) कुल्हिया।
चुकौता (सं० पु०) निपटारा, चुकता।
चुक्कड़ (सं० पु०) पुरवा, कुल्हिया।
चुक्कार (सं० पु०) गरजन, गर्जना।
चुक्की (सं० स्त्री०) छल, धोखा, कपट, चाईपन।
चुक्ती (सं० स्त्री०) नियम, निरूपण, परिमित, परिणाम, समाधान, फैसला। [साग।
चुक्र (सं० पु०) चुक, अमलवेद, अम्लरस, कांजी, खट्टा
चुखाना (क्रि० अ०) गाय के थन में दूध उतारने के लिए पहिले बछड़े को पिलाना, गाय लगाना।
चुगना (क्रि० स०) पक्षियों का टोंट से दाना बिनना, टूँगना। [पिशुन।
चुगल (सं० पु०) पीठ पीछे निन्दा करने वाला,
चुगलखोर (सं० पु०) देखो "चुगल"।
चुगलखोरी (सं० स्त्री०) चुगली खाना, निन्दा करना, पीठ पीछे झूठी शिकायत करना।
चुगली (सं० स्त्री०) देखो "चुगलखोरी"।
चुगाना (क्रि० स०) पक्षियों को चारा खिलाना, पक्षियों को दाना डालना।

चुङ्गी (सं० स्त्री०) बन्धान, अन्नदान, भिक्षा, एक प्रकार का सरकारी कर जो बाहर से आने वाली वस्तुओं पर लगता है।
चुङ्गीघर (सं० पु०) जहाँ चुङ्गी वसूल की जाती है।
चुचकारना (क्रि० स०) चुमकारना, पुचकारना, प्यार करना, चुचकारी भरना।
चुचकारी (सं० स्त्री०) चुमकारी, पुचकारी।
चुचाना (क्रि० अ०) टपकना, बूंद बूंद बहना, गिरना।
चुचुआना (क्रि० अ०) चुवाना, टपकना, बहना।
चुचुकना (क्रि० अ०) दुर्बल होकर सूख जाना, चिहुरना, संकुचित होना, नीरस होकर मुरझाना।
चुच्चड़ (सं० पु०) बड़ा चूंची, मोटा स्तन, बड़ी छाती।
चुञ्च (सं० पु०) मुनि विशेष, चोंच।
चुञ्चक (सं० पु०) भेड़, मेष। [चुटकी से ताड़ना।
चुटकना (क्रि० स०) चाबुक से मारना, कोड़ा मारना,
चुटकी (सं० स्त्री०) अंगूठे या अन्य किसी अंगुलियों का ऐसा मिलान जिससे कोई वस्तु पकड़ी या उठाई जा सके।
मुहा०—चुटकी देना = चुटकी बजाना। चुटकी लेना = हँसी उड़ाना, दिल्लगी करना। चुटकी बजाते = बहुत जल्द। चुटकी बैठना = अभ्यास होना। चुटकी बजाने वाला = खुशामदी।
चुटकुला (सं० पु०) विचित्र बात, रस भरी बात, हँसी मज़ाक की बात, अनोखी बात, लटका, गुणकारक औषधियों का छोटा नुसखा।
मुहा०—चुटकुला छोड़ना = विलक्षण बात करना, कोई ऐसी बात कहना जिससे नई बात पैदा हो।
चुटफुट (सं० स्त्री०) फुटकर वस्तु।
चुटला (सं० पु०) एक आभूषण जो स्त्रियां वेणी पर पहनती हैं, वेणी, चोटी जूड़ा, (वि०) चोट खाया हुआ, चुटीला। [होना।
चुटाना (क्रि० अ०) चोट खाना, आहत होना, घायल
चुटिया (सं० स्त्री०) चूंदी, चुनैया, शिखा। [काटना।
चुटियाना (क्रि० स०) चोटैल करना, घाव करना, डंसना,
चुटीला (वि०) घायल, चोटैल, चोट खाया हुआ, आहत। [वाला।
चुटैल (वि०) घायल, आहत, आक्रमणकारी, चोट करने
चुड़िहारा (सं० पु०) वह जो चूड़ी बनावे या बेंचे।

चुड़ैल (सं० स्त्री०) डायन, भूतनी, पिशाचनी, विकराल स्त्री, दुष्टा स्त्री, वह स्त्री जो क्रूर स्वभाव की हो।
चुनचुनाना (क्रि० अ०) परपराना, जलन के साथ चुभने का सा दर्द होना।
चुनचुनाहट (सं० स्त्री०) परपराहट।
चुनन (सं० पु०) चुनट, चुनत, तह, परत।
चुनना (क्रि० स०) बिनना, छांट छांट कर अलग करना स्वेच्छानुसार पसंद करना, जोड़ाई करना, मकान बनाना, चुनट डालना।
चुनरी (सं० स्त्री०) स्त्रियों के पहिनने की रंगीन साड़ी, जिस पर सफ़ेद या रंगीन बिन्दी बनी रहती है।
चुनवाना (क्रि० स०) चुनाना।
चुनाई (सं० स्त्री०) चुनने का काम, चुनने का मूल्य।
चुनाना (क्रि० स०) चुनवाना, बिनवाना, संग्रह करवाना, छँटवाना, जुड़वाना, सजवाना, चुनाई करवाना।
चुनाव (सं० पु०) कई एक व्यक्तियों में से एक को किसी पद के लिए चुनना, चुनने का कार्य, बिनने का काम।
चुनावट (सं० स्त्री०) चुनना।
चुनौटी (सं० स्त्री०) गोल चूना रखने का वह बर्तन जिसमें से चूना निकाल कर सुरती के साथ मिलाया जाता है या पान में लगाया जाता है। [ललकार।
चुनौती (सं० स्त्री०) बढ़ावा, चिट्टा, उत्तेजना, प्रचार,
चुन्धला (वि०) तिरमिरा, चकचौंधा, नेत्ररोगी।
चुन्धलाना (क्रि०) चौंधियाना, तिरमिरा होना।
चुन्धा (वि०) जिसे न सूझे, छोटी आंखों वाला।
चुन्ना (क्रि० स०) चुनना, चुगना, बिनना, (सं० पु०) चुनचुना, गुन।
चुन्नी (सं० स्त्री०) मानिक रत्नादि के छोटे टुकड़े, अन्न का चूर, लकड़ी का बुरादा, कनाई, ओढ़नी।
चुप (वि०) मौन, अवाक्।
मुहा०—चुपचाप = बिना चंचलता के। चुपके से = छिपा कर, शांत भाव से।
चुपका (वि०) चुप्पा, मौन, अवाक्।
चुपकाना (क्रि० स०) अवाक् करना, मौन कराना।
चुपचाप (क्रि० वि०) मौन, अवाक्, चुपके से, निरुद्योग।
चुपचुप (वि०) सहसा, गुप्त रूप से।
चुपड़ना (क्रि० स०) चिकनाना, घी आदि रोटी में लगाना, मलना, पोतना।
चुपड़ा (सं० पु०) जिसके नेत्रों में कीचड़ भरा हो।
चुपाना (क्रि० अ०) मौन रहना, चुप रहना।
चुप्पा (वि०) बहुत कम बोलने वाला, अपनी बात मन में लिए रहने वाला।
चुप्पी (सं० स्त्री०) मौन, निःशब्दता, ख़ामोशी।
चुभकना (क्रि० अ०) चुभ चुभ करके पानी में डूबना और उतराना, गोता खाना। [डुबाना।
चुभकाना (क्रि० स०) गोता खिलाना, जल में बार बार
चुभकी (सं० स्त्री०) गोता, डुब्बी।
चुभना (क्रि० अ०) धँसना, गड़ना, छिदना, मन में पैठना, दिल में खटकना, लीन, मग्न।
चुभर चुभर (क्रि० वि०) वह शब्द जो बच्चों के दूध पीने से होता है।
चुभलाना (क्रि० स०) मुंह में लेकर धीरे धीरे घुलाना।
चुभाना (क्रि० स०) गड़ाना, धँसाना।
चुभोना (क्रि० स०) चुभाना, गड़ाना, धँसाना।
चुमकार (सं० पु०) पुचकार, चुचकार। [रना।
चुमकारना (क्रि० स०) चुचकारना, पुचकारना, दुला-
चुमाना (क्रि० स०) दूसरे से चुम्मा लिवाना।
चुम्बक (सं० पु०) एक प्रकार का लोहा या पत्थर जिसमें आकर्षण शक्ति होती है। धूर्त आदमी, कामी, पुस्तकों को इधर उधर उलट पुलट करने वाला, चुम्बन करने वाला।
चुम्बन (सं० पु०) चुम्बा, बोसा, चुम्मा।
चुम्बा (सं० पु०) देखो "चुम्बन"।
चुम्बित (वि०) चुम्बन किया हुआ, प्यार किया हुआ।
चुम्मा (सं० पु०) चूमा, चूमन।
चुरका (सं० स्त्री०) चोटी, शिखा, चोटिया।
चुरकुट (सं० पु०) चूरन, चूर्णित, चूरचूर, चिथड़ा, गूदड़, फटा पुराना वस्त्र।
चुनना (क्रि० अ०) चहकना, चहचहाना।
चुरचुराना (क्रि० अ०) चुरचुर शब्द होना।
चुरना (क्रि० अ०) सीझना, पकना।
चुरमुर (सं० पु०) किसी खरी चीज़ के टूटने का शब्द।
चुरमुरा (वि०) करारा।
चुराना (क्रि० स०) चोरी करना, आंख बचा कर कोई वस्तु ले लेना, छिपाना, आंख के ओझल करना।
चुरी (सं० स्त्री०) चूड़ी।

चुरगाना (क्रि०) बकना, बड़बड़ाना।
चुरैल (सं० स्त्री०) देखो "चुड़ैल"। [मस्ती।
चुल (सं० स्त्री०) खाज, खजुलाहट, काम का वेग,
चुलकना (क्रि० अ०) खुजलाना, बिलबिलाना।
चुलचुल (सं० पु०) चंचलता। [बुलाना।
चुलचुलाना (क्रि० अ०) कुलबुलाना, खुजलाना, चुल-
चुलचुलाहट (सं० स्त्री०) कुलबुलाहट, खुजलाहट।
चुलबुला (वि०) चपल, चंचल, नटखट।
चुलबुलाना (क्रि० अ०) कुलबुला, चुलबुल करना, चपल होना, चंचलपन करना।
चुलबुलाहट (सं० पु०) चपलता, चंचलता।
चुलबुलिया (वि०) चुलबुला, चपल।
चुलहाई (वि०) कामी, व्यभिचारी, लम्पट।
चुलहारा (वि०) देखो "चुलहाई"।
चुलाना (क्रि० स०) टपकाना, चुवाना, गिराना।
चुल्ला (वि०) चुधला, तिरमिरा।
चुलुक (सं० पु०) एक ऋषि का नाम जो गोत्र प्रवर्तक थे, चुल्लु, दलदल, कीचड़।
चुल्लू (सं० पु०) पसर, एक हाथ की हथेली का गड्ढा।
चुल्लि } (सं० स्त्री०) चूल्हा।
चुल्ली }
चुवना (क्रि० अ०) टपकना, चूना।
चुवाना (क्रि० स०) गिराना, टपकाना।
चुसकी (सं० स्त्री०) दम, घूँट, सुड़क।
चुसकर (वि०) खून पीने वाला।
चुसवाना (क्रि० स०) चूसने में प्रवृत्त करना।
चुसाना (क्रि० स०) चूसने का काम कराना।
चुसौअल (सं० स्त्री०) कई एक आदमियों का चूसना।
चुस्त (वि०) कसा हुआ, पोख्ता, तत्पर, चलता।
चुस्सी (सं० स्त्री०) किसी फल का रस।
चुहचुहा (वि०) गहगहा, रसीला, मनोहर।
चुहचुहाना (क्रि० अ०) चहचहाना, गहकना, चहकना, चमकीला मालूम होना।
चुहल (सं० स्त्री०) मनोरंजन, ठठोली, विनोद।
चुहला (वि०) ठठोलिया, मसखरा।
चुहली (सं० स्त्री०) चहला।
चुहिया (सं० स्त्री०) मुसटी।
चूँकि (फ़ा० क्रि० वि०) क्योंकि, इस कारण।
चूँचहार (सं० पु०) पक्षियों का शब्द।
चूँची (सं० स्त्री०) स्तन, कुच। [रहता है।
चूँटा (सं० पु०) चोंटा, कीड़ा विशेष जो ज़मीन में
चूँथना (क्रि०) तोड़ना, नष्ट करना फोड़ना, बकोटना।
चूआना (क्रि०) चुलाना, चुवाना, निकालना, झारना, टपकाना।
चूक (सं० स्त्री०) ग़लती, भूल।
चूकना (क्रि० अ०) ग़लती करना, भूल करना. खोना।
चूका (वि०) भूला, भटना, (सं० पु०) एक प्रकार का खट्टा साग।
चूड़ (सं० पु०) कलँगी, शङ्खचूड़ नामक दैत्य, छोटा कूप आभरण विशेष, सोना या चांदी की चूड़ी जिसे विधवा पहनती हैं, हाथी के दाँतों में पहनाने की चूड़ी।
चूड़ा (सं० स्त्री०) शिखा, चुटैया, चुटकी, मयूर, शिखा मस्तक, प्रधान नायक, कुँआ, कड़ा, कंकड़, चिउरा, मुण्डन संस्कार।
चूड़ाकरण (सं० पु०) मुण्डन, हिन्दुओं के षोड़श संस्कार में से संस्कार विशेष। [अत्यन्त।
चूड़ान्त (वि०) पराकाष्ठा, (क्रि० वि०) अत्यधिक,
चूड़ामणि (सं० पु०) सिर पर पहनने का एक गहना, घुँघची, गुंजा, अग्रगण्य, सर्वश्रेष्ठ।
चूड़ामणि योग (पु०) रविवार या सोमवार को सूर्य ग्रहन पड़ने पर यह योग लगता है।
चूड़ाल (वि०) शिरो रत्न युक्त, चूड़ावान्।
चूड़ाला (सं० स्त्री०) श्वेत गुंजा, सफेद घुंघुची, नागरमोथा।
चूड़ावान् (वि०) चूड़ाल।
चूड़िया (सं० स्त्री०) ओढ़नी।
चूड़ी (सं० स्त्री०) गोलाकार वस्तु जिसके बीच का स्थान खाली रहता है, स्त्रियों के हाथ में पहनने का एक गोलाकार गहना, जो कांच, लोह, सोना, चांदी आदि का बनता है, और यह सौभाग्य का चिह्न समझा जाता है।
चूड़ीदार (वि०) चूड़ी के समान घेरा वाला।
चूण (सं० पु०) चूर्ण, बुकनी, मैदा।
चूणाड़ा (सं० पु०) वर्ण सङ्कर जाति विशेष। [योनि।
चूत (सं० पु०) आम वृक्ष, आम का पेड़, (सं० स्त्री०) भग,
चूतक (सं० पु०) आम।
चूतड़ (सं० पु०) नितंब, पुट्ठा, चूतर।

चूतर (सं० पु०) देखो "चूतड़"।
चूतिया (वि०) मूर्ख, नासमझ, उजबक।
चूतिया चक्कर (वि०) चूतिया, बेवकूफ, पका बेवकूफ।
चूतियापन्थी (सं० स्त्री०) बेवकूफी, मूर्खता, नासमझी।
चून (सं० पु०) पिसान, आटा।
चूना (सं० पु०) कंकड़, पत्थर, सीप, शंख आदि का भस्म, जो मकान बनाने या पोतने या खाने के काम आता है। (क्रि० अ०) टपकना, गिरना, झरना, बहना, फलों का अपने आप नीचे गिरना।
चूनादानी (सं० स्त्री०) चुनौटी।
चूनी (सं० स्त्री०) कराई, भूसी।
चूभ (सं० पु०) दर्द, टीस, व्यथा।
चूमना (क्रि० अ०) चुम्बन करना, बोसा लेना।
चूमा (सं० पु०) चुम्बा, चुम्बन।
चूमाचाटी (सं० स्त्री०) चूम चाट कर प्रेम करना।
चूर (सं० पु०) किसी वस्तु के बहुत बारीक टुकड़े, चूर्ण, बुरादा, (वि०) नशे में बदमस्त, मग्न, तन्मय, तल्लीन।
मुहा०—चूर करना=टुकड़े टुकड़े करना। चूर रहना=आसक्त रहना। चूर चूर=टूक टूक।
चूरन (स० पु०) बुकनी, बुरादा, आटा, पिसान, चूना, धूल, गर्द, रेत, सतुआ। [औषधि के काम में आती है।
चूरनहार (सं० पु०) एक प्रकार की जंगली लता जो
चूरमूर (सं० पु०) जवा, गेहूँ आदि के पौधों की खूंटियाँ।
चूरा (सं० पु०) बुकनी, बुरादा, रेत, भुरभुर।
चूरी (सं० स्त्री०) चूड़ी।
चूर्ण (सं० पु०) किसी वस्तु के महीन कण, बुरादा, चूना, बुकनी, रेत, गर्द, धूल, आटा, पिसान, सतुआ, कई पाचक औषधियों की महीन बुकनी। [जाति।
चूर्णकार (सं० पु०) चूना बनाने वाला, एक वर्णसङ्करी
चूर्ण कुंतल (सं० पु०) लट, अलक, जुल्फ, केश-विन्यास।
चूर्णा (सं० पु०) आर्या छन्द का एक भेद।
चूर्णिका (सं० स्त्री०) सत्तू, सतुआ, गद्य का एक भेद जिसमें सामासिक शब्द नहीं रहते और वाक्य छोटे छोटे रहते हैं।
चूर्णित (वि०) चूर्ण किया हुआ।
चूर्मा (सं० पु०) एक प्रकार का खाद्य पदार्थ जो रोटी या पूरी आदि को चूर चूर करके घी चीनी डाल कर बनाया जाता है।

चूल (सं० पु०) शिखा, चोटी, रीछ का बाल, लकड़ी का वह नोकीला भाग जो किसी अन्य लकड़ी में ठोंका जाय।
चूला (सं० स्त्री०) चूड़ा।
चूलिका (सं० स्त्री०) हाथी की कनपटी, हाथी के कान की मैल, खंभे आदि के ऊपर का भाग, नाटक का वह अंग जिसमें किसी घटना के हो जाने की सूचना नेपथ्य से दी जाती है।
चूल्हा (सं० पु०) मट्टी या लोहे का वह पात्र जो अर्द्ध चन्द्राकार होता है और उसमें आग जला कर भोजनादि पकाया जाता है।
चूल्ही (सं० स्त्री०) छोटा चूल्हा।
चूवना (क्रि० अ०) टपकना, बहना, झरना।
चूसना (क्रि० स०) जीभ और होंठ से किसी वस्तु का रस खींच कर पीना, किसी वस्तु का सार भाग खींच लेना। [बच्चे चूसते हैं।
चूसनी (सं० स्त्री०) लकड़ी का बना खिलौना जिसे
चूहड़ (सं० पु०) भंगी, मेहतर, श्वपच, चाण्डाल।
चूहड़ा (सं० पु०) देखो "चूहड़"।
चूहड़ी (सं० स्त्री०) भंगिन।
चूहना (क्रि०) चूसना।
चूहा (सं० पु०) मूसा, मूषिक।
चूहादान (सं० पु०) चूहों को फसाने के लिये पिंजड़ा।
चेंचपेंच (वि०) कचबच, शोरगुल, घिसपिस।
चेंचान (सं० पु०) चीत्कार।
चेंची (सं० स्त्री०) सुई रखने के लिए घर।
चेंचें (सं० पु०) चिड़ियों का शब्द, चहचहाना।
चेंचपड़ (क्रि० वि०) घिचपिच, स्पष्ट कहना।
चेंड़ा (सं० पु०) छोटा बच्चा, बालक।
चेंप (सं० पु०) लासा, गोंद। [बांस का टोकरा।
चेङ्गड़ा (वि०) अदक्ष, अप्रवीण अर्वाचीन (सं०पु०) छोकरा,
चेङ्गड़ाभि (सं० स्त्री०) अज्ञता, बालकत्व, अप्रवीणता।
चेङ्गा (वि०) निरोग, सबल।
चेङ्गारी (सं० स्त्री०) बांस का बना पात्र।
चेचको (फ़० सं० स्त्री०) शीतला नाम की बीमारी।
चेट (सं० पु०) नोकर, दास, गुलाम, पति, कुटना, भांड़, भँडुआ। [जल्दी, फुरती, चाट, चसका।
चेटक (सं० पु०) दास, नौकर चाकर, दूत, चटक, मटक,

चेटका (सं०स्त्री०) मरघट,श्मशान,मुरदा जलाने की चिता ।
चेटकी (सं० पु०) जादूगर, इन्द्रजाली, कौतुकी ।
चेटल (वि०) चौड़ा, प्रशस्त ।
चेटिका (सं० स्त्री०) सेविका, दासी, सेवा करने वाली स्त्री ।
चेटिकी (सं० स्त्री०) चेटिका, दासी ।
चेटरि (सं० पु०) तरुण ।
चेटा (सं० स्त्री०) दासी, चेरी ।
चेटुवा (सं० स्त्री०) युवती ।
चेड़क (सं० पु०) चेला, शिष्य, दास, भृत्य ।
चेड़चड़क (सं० पु०) नौकर, दास ।
चेड़ा (सं० पु०) नौकर, चेला ।
चेड़िका (सं० स्त्री०) दासी ।
चेड़ी (सं० स्त्री०) दासी । [स्मरण, चित, सावधानी ।
चेत (सं० पु०) मन, ज्ञान, बोध, संज्ञा, चेतना, सुध बुध,
चेतक (वि०) चैतन्य, चेतन ।
चेतकी (सं० स्त्री०) हर्रे, हरीतकी, जाति पुष्प ।
चेतन (सं० पु०) जीव, जीवधारी, प्राणी, आत्मा, परमात्मा ।
चेतनता (सं० स्त्री०) सज्ञानता, चैतन्य ।
चेतना (सं० स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान ।
चेतन्य (वि०) देखो "चैतन्य" ।
चेतावनी (सं० स्त्री०) सावधान होने की सूचना, सतर्क करने के लिए कोई बात कहना ।
चेतौनी (सं० स्त्री०) वह बात जो किसी को होशियार करने के लिये कही जाय ।
चेदि (सं० पु०) एक प्राचीन देश, वर्तमान चंदेरी नगर जो बुंदेलखण्ड में है ।
चेदिराज (सं० पु०) शिशुपाल जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारे गये थे, एक वसु का नाम इनको इन्द्र से एक विमान मिला था, जिस पर चढ़ कर आकाश मण्डल में ही घूमा करते थे और पृथ्वी पर नहीं उतरते थे ।
चेप (सं० पु०) चिपचिपा, लसीला, लसदार, उत्साह, चाव, चाट ।
चेपटा (वि०) चौड़ा, प्रशस्त । [आदि से जोड़ना ।
चेपना (क्रि० स०) चपकाना, सटाना, लगाना, लासा
चेय (वि०) संग्रह करने योग्य, चुनने योग्य, चयनीय, (सं० स्त्री०) विधि पूर्वक संस्कार की हुई अग्नि ।
चेरा (सं० पु०) नौकर, चाकर, सेवक, दास, भृत्य, शिष्य, विद्यार्थी ।
चेरी (सं० स्त्री०) दासी, लौंडी, नौकरानी ।
चेल (सं० पु०) कपड़ा, वस्त्र ।
चेलना (सं० पु०) वस्त्र विशेष ।
चेलवा (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली ।
चेलहाई (सं० स्त्री०) शिष्य मण्डली, शिष्यों का समूह ।
चेला (सं० पु०) शिष्य, दीक्षा प्राप्त, धार्मिक उपदेश प्राप्त, विद्यार्थी, छात्र ।
चेलिन (सं० स्त्री०) शिष्या, चेला की स्त्री । [वस्त्र ।
चेवली (सं० स्त्री०) रेशमी वस्त्र विशेष, चेली का बना
चेष्टा (सं० स्त्री०) प्रयत्न, आन्तरिक भाव का द्योतन करने वाला, कायिक व्यापार, कामना, परिश्रम, इच्छा ।
चेष्टानाश (सं० पु०) प्रलय, सृष्टि का अन्त ।
चेष्टावान (वि०) यत्नवान ।
चेष्टित (वि०) यत्न, चेष्टा ।
चेहरा (फ़ा० सं० पु०) बदन, शक्ल, मुखड़ा, मिट्टी कागज़ आदि की बनी देव दानवों की तसवीर ।
चेंटा (सं० पु०) काला चींटा । [प्रथम मास ।
चैत (सं० पु०) चैत्र, साल का पहला महीना, वर्ष का
चैतन्य (सं० पु०) परमात्मा, जीवात्मा, चेतन आत्मा, ज्ञान, बोध, प्रवृत्ति, विचार, विवेचन, एक धर्म प्रचारक बङ्गाली वैष्णव, इनके पिता का नाम जगन्नाथ और माता का शची था, इनका जन्म नवद्वीप में हुआ था, बाल्यकाल से ही इनकी अलौकिक लीलायें देखने में आने लगीं, इनका विवाह हो गया था पर ये संन्यासी हो गये, भगवत भजन में लगे रहते थे, धीरे धीरे इनके शिष्यों की संख्या बढ़ने लगी और भगवान् के अवतार माने जाने लगे, इनका पूरा नाम श्रीकृष्ण चैतन्यचन्द्र था, इस समय भी इनके अनुयायी बंगाल में बहुत से लोग हैं, ४८ वर्ष की उम्र में इनकी मृत्यु हुई ।
चैता (सं० पु०) एक पक्षी विशेष, एक प्रकार का चलता गाना जो चैत मास में गाया जाता है ।
चैती (सं० स्त्री०) चैत में काटी जाने वाली फ़सल, रबी, चैता, (वि०) चैत्र मास संबन्धी ।
चैत्य (सं० पु०) मन्दिर, देवालय, घर, गृह, मकान, यज्ञशाला, यज्ञ करने का स्थान, बुद्ध, बौद्ध संन्यासियों का मठ, चिता, पीपल का वृक्ष, बेल का पेड़ ।

चैत्र (सं० पु०) वर्ष का प्रथम मास जिसकी पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र पड़ता है, चैत, यज्ञ स्थान, बौद्ध, भिक्षुक, एक पर्वत का नाम, देवालय, मन्दिर, चित्रा के गर्भ से उत्पन्न बुध का पुत्र।

चैत्ररथ (सं० पु०) चित्ररथ का बनाया हुआ कुबेर का एक बाग, एक प्राचीन ऋषि का नाम।

चैत्री (सं० स्त्री०) वह पूर्णिमा जिसमें चित्रा नक्षत्र पड़े, चैत की पूर्णिमा।

चैद्य (सं० पु०) शिशुपाल।

चैन (सं० पु०) सुख, आनन्द, आराम, हर्ष।

चैल (सं० पु०) वस्त्र, पहनने योग्य बना हुआ कपड़ा।

चैला (सं पु०) चीरी हुई लकड़ी जो जलाने के काम आती है।

चैली (सं० स्त्री०) लकड़ी के चिरे हुए छोटे टुकड़े।

चोंकना (क्रि० अ०) चौंकना, चोभना, गड़ाना, गोभना।

चोंगा (सं० पु०) बाँस की पोली नली जो एक तरफ़ बन्द और एक तरफ़ खुली रहती है, कागज़ आदि की पोली नली। [हवा बाहर निकलती है।

चोंगी (सं० स्त्री०) नली, भाथी की वह नली जिससे

चोंच (सं० पु०) टोंट, ठोर, चञ्चु, तुंड।

चोंचला (सं० पु०) नाज़ वो नख़रा, हाव भाव, बिलास, हँसी दिल्लगी।

चोंड़ा (सं० पु०) जूरा, झोंटा। [हगा हुआ गोबर।

चोंथ (सं० पु०) गाय भैंस, बैल आदि का एक बार का

चोंथना (क्रि० स०) चीथना, नोचना, फाड़ना।

चोंप (सं० पु०) इच्छा, चाह, उत्साह, उत्तेजना, बढ़ावा।

चोआ (सं० पु०) सुगंधित द्रव्य विशेष, टपका फल, फली।

चोआड़ (सं० पु०) पहाड़ी जाति विशेष, पहाड़ी डाकू।

चोआन (सं० पु) गलावन।

चोआरि (सं० स्त्री०) मण्डप, गृह विशेष।

चोई (सं० स्त्री०) दाल का छिलका जो दाल धोकर अलग किया जाता है।

चोकर (सं० पु०) आटे की भूसी, रवा, रई।

चोख (सं० स्त्री०) तेज़, तीक्ष्ण, वेग।

चोखा (वि०) विशुद्ध, शुद्ध, खरा, उत्तम, तीक्ष्ण, तेज, भरता, भुने हुए आलू, भाँटा आदि जिसमें नोन, मिर्च, खटाई आदि मिला कर खाया जाता है।

चोखाई (सं० स्त्री०) शुद्धता, खराई, उत्तमता, तीक्ष्णता।

चोखी (सं० स्त्री०) गाने बजाने का सुर।

चोग़ा (तु० सं० पु०) एक प्रकार का लम्बा ढीला जामा, जिसका आगे का भाग खुला रहता है, चिड़ियों का दाना। [दालचीनी, नारियल।

चोच (सं० पु०) खाल, छाल, चमड़ा, केला, तेजपात,

चोचला (सं० पु०) देखो "चोंचला"।

चोज (सं० पु०) व्यंगपूर्ण उपहास, मनोविनोद करने वाली बातें, सुभाषित, वे बातें जिससे दूसरों का मनोविनोद हो।

चोजी (वि०) तीखा पतला, उत्तम।

चोट (सं० स्त्री०) घाव, ज़ख़्म, आक्रमण, आघात, शोक, संताप, हृदय विदारक दुःख।

मुहा०—चोट खाना = मार खाना, हानि उठाना। चोट पर चोट = दुःख पर दुःख।

चोटइल (वि०) देखो "चुटैल"।

चोटहा (वि०) घायल।

चोटा (सं० पु०) गुड़ का मैल, छोआ, लपटा, माठ।

चोटाना (क्रि० अ०) घाव लगना, घायल होना, चोट खाना।

चोटार (वि०) चुटैल, चोट करने वाला, आक्रमणकारी।

चोटियाना (क्रि० स०) चोटी पकड़ना, चोट मारना।

चोटी (सं० स्त्री०) शिखा, चुनैया, चिरकी, शिखर, झोंटा, जूरा।

मुहा०—चोटी आकाश पर घिसना = अहंकार करना। चोटी कट = दासा अधीन। चोटी कटवाना = दास होना।

चोटीपोटी (सं० स्त्री०) लल्लो पत्तो, चिकनी चुपड़ी, बनावटी बात।

चोट्टा (सं० पु०) चोर।

चोड़ (सं० पु०) उत्तरीय वस्त्र, एक प्राचीन देश का नाम जिसको चोल कहते हैं, अंगिया, स्त्रियों की कुर्ती।

चोत (सं० पु०) देखो "चोंथ"।

चोथ (सं० पु०) देखो "चोंथ"।

चोथना (क्रि० स०) देखो "चोंथना"।

चोप (सं० पु०) देखो "चोंप"।

चोपना (क्रि० अ०) मुग्ध होना, मोहित होना, आसक्त होना, लट्टू हो जाना।

चोबकारी (सं० स्त्री०) ज़रदोज़ी का काम।

चोबचीनी (सं० स्त्री०) काष्ठौषधि विशेष ।
चोबदार (सं०पु०) आसाबरदार, वह नौकर जिसके पास चोब रहता है ।
चोभा (सं० पु०) वह पोटली जिससे आँख सकते हैं,
चोया (सं० पु०) सुगंधित द्रव्य विशेष ।
चोर (सं० पु०) वह व्यक्ति जो किसी का माल मालिक से आँख छिपा कर ले जाय, चोट्टा, तस्कर ।
चोरकट (सं० पु०) चाई, उचक्का, चोर ।
चोर कवि (सं० पु०) यह संस्कृत के कवि काश्मीर निवासी थे इनके तीन ग्रन्थ आज तक मौजूद हैं। ये गुजरात के राजा वीर सिंह की लड़की को पढ़ाते थे, उसकी सुन्दरता पर ये मोहित हो गये और उससे गान्धर्व विवाह भी हो गया। जब राजा को मालूम हुआ तो उन्होंने वध की सजा देदी, जब वध होने के लिये चले तब प्रेमिका के वर्णन में इन्होंने ५० श्लोक बना डाले जब राजा को यह मालूम हुआ और उनका ऐसा शुद्ध प्रेम देखा तो अपनी लड़की की शादी इनके साथ कर दी। इनका समय ११ वीं सदी का अन्त और बारहवीं सदी का आदि कहा जाता हैं।
चोरखाना (सं० पु०) तहखाना, गुप्तस्थान ।
चोरगली (सं० स्त्री०) पतली और तंग गली ।
चोरताला (सं० पु०) वह ताला जिसका पता औरों को न चले ।
चोरदन्त (सं० पु०) बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त निकला हुआ दाँत ।
चोरदरवाज़ा (सं० पु०) गुप्त और छोटा दरवाज़ा जिसका पता बहुतों को मालूम न हो ।
चोरमहल (सं० पु०) वह मकान जिसमें राजा महाराजा और रईस अपनी प्रेमिका को रखते है ।
चोरमार्ग (सं० पु०) छिपा राह, खिड़की का मार्ग ।
चोरा (सं० स्त्री०) चोरपुष्पी ।
चोराना (क्रि० अ०) चोरी करना, चुराना, अपहरण करना ।
चोरी (सं० स्त्री०) आँख बचा कर किसी की कोई वस्तु लेना, अपहरण ।
चोरीला (सं० पु०) एक प्रकार की घास, इसमें से दाने भी निकलते हैं इसके दाने को ग़रीब खाते भी हैं ।
चोल (सं० पु०) कर्नाटक देश का प्राचीन नाम, चोली, अँगिया, कवच, ज़िरह बख़्तर, छाल, बलकल, मजीठ ।
चोलक (सं० पु०) छाल, वल्कल ।
चोलकी (सं० स्त्री०) नारंगी, करीर ।
चोलना (सं० पु०) चोला, ढीला लम्बा कुर्ता जो साधु पहनते हैं ।
चोला (सं० पु०) शरीर, तन, देह बदन, चोलना ।
चोली (सं० स्त्री०) अंगिया के ढंग की स्त्रियों की एक प्रकार की कुर्ती ।
चोवा (सं० पु०) एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, अरगजा ।
चोष (सं० पु०) एक प्रकार का रोग ।
चोषण (सं० पु०) चूसना ।
चोष्य (सं० पु०) चूसने योग्य ।
चोसा (सं० पु०) एक प्रकार की रेती जिससे लकड़ी रेती जाती है ।
चोहड़ (सं० पु०) जबड़ा, ठोढ़ी ।
चोहला (सं० पु०) खोंचा, कीला ।
चोहान (सं० पु०) क्षत्रियों की एक जाति ।
चौंक (सं० स्त्री०) अचंभा, झिझक, भड़क, डर, भय, आश्चर्य, दर्द, दुःख साहस आदि से उत्पन्न होने वाली चंचलता ।
चौंकना (क्रि० अ०) झिझकना, अचंभित होना, सहसा किसी बात से कांप उठना, भौंचक्का होना, विस्मित होना, भड़कना, हिचकना ।
चौंकाना (क्रि० स०) झिझकोना, भड़काना, चकित करना ।
चौंकैल (वि०) बनैला, जंगली, भड़कने वाला ।
चौंगा (सं० पु०) फुसलाहट, छल, कपट ।
चौंगी (सं० स्त्री०) देखो "चौंगा" ।
चौंड़ (वि०) मूढ़, नासमझ, अनारी ।
चौंतरा (सं० पु०) चबूतरा, थाना, चौका ।
चौंतास (वि०) संख्या विशेष, तीस और चार ।
चौंध (सं० स्त्री०) तिलमिलाहट, चकाचौंध ।
चौंधियाना (क्रि० अ०) तिलमिलाना, चकाचौंध होना, तेज, चमक, प्रकाश आदि के कारण आंख का न ठहरना ।
चौंरा (सं० पु०) अन्न रखने का गड्ढा, खात, गाड़ ।
चौंरी (सं० स्त्री०) चवँर, घोड़े की दुम के बालों का गुच्छा जो काठ की लकड़ी या बांस की डंडी आदि में लगा कर मक्खियाँ हाँकते हैं, चोटी बाँधने की डोरी, चँवरी गाय, वह गाय जिसकी पूछ सफ़ेद होती है ।
चौंसठ (वि०) संख्या विशेष, साठ और चार ।

चौसर (सं० पु०) चौपड़, जुए का एक खेल।
चौअन (वि०) संख्या विशेष, पचास और चार।
चौआ (सं० पु०) चौपाया, गाय बैल आदि पशु, चार अंगुल की नाप, ताम का वह पत्ता जिस पर चार बूटियां बनी रहती हैं। [उड़ती खबर, किंवदन्ती।
चौआई (सं० स्त्री०) चारों ओर से बहने वाली हवा,
चौआना (वि०) चकित होना, विस्मित होना।
चौक (सं० पु०) आँगन, चौराहा, चौमुहानी, बड़ा बाजार, चौहट्टा।
चौकठा (सं० पु०) आइना तसवीर आदि का ढाँचा जो चार लकड़ियों का बना होता है, चौखटा।
चौकड़ (वि०) उत्तम, अच्छा, बढ़िया, मनोहर, सुन्दर।
चौकड़ा (सं० पु०) भूषण विशेष।
चौकड़ी (सं० स्त्री०) छलांग, उछल कूद, कुलांच, चार जने का गुट्ट, चार आदमियों की मण्डली, चतुर्युगी, पलथी, चार घोड़ों वाली गाड़ी।
मुहा०—चौकड़ी भरना=कूद कूद कर चलना, उछलना, कूदना, चौकड़ी भूलना=अक्ल गुम होना, मोह में पड़ना। चौकड़ी मार बैठना=पशुओं का सुखासन, पैर मोड़ कर बैठना।
चौकन्ना (वि०) सावधान, सतर्क सचेत, चौकस।
चौकस (वि०) सावधान, चौकन्ना, सचेत, ठीक, पूरा।
चौकसी (सं० स्त्री०) सावधानी, खबरदारी, निगरानी।
चौका (सं० पु०) लिपा पोता स्थान जहाँ पर हिन्दू रोटी बनाते, खाना खाते हैं। रसोई संध्या वेदनादि का स्थान, चौकोर स्थान, चौकोर पत्थर चकला जिस पर रोटी बेला जाता है, सीस फूल, चार सींग का जंगली बकरा, चार बूटियों का ताम का पत्ता, चौवा। [दवा के काम आती है।
चौकिया सोहागा (सं० पु०) एक औषधि विशेष जो
चौकी (सं० स्त्री०) पत्थर काठ आदि का चौखूंटा आसन जिसमें पाये लगे रहते हैं, कुरसी, रक्षा, थाना, पहरा, चौकसी, एक प्रकार का भूषण जो गले में पहना जाता है।
चौकीदार (सं० पु०) पहरुआ, गोड़ैत, सिपाही।
चौकीदारी (सं० स्त्री०) पहरा का काम, पहरा देने का मेहनताना। [महसूल मारना।
चौकी मारना (क्रि०) छिप कर महसूल को न चुकाना,
चौके (सं० पु०) चकले, दुरसे, पवित्र, लीपा हुआ स्थान।
चौकोना (वि०) चार कोना वाला, चतुष्कोण, चौखूटा।
चौकोर (वि०) चतुष्कोण, चौखूंटा, चौकोना।
चौखंड (सं० पु०) चार खंड का मकान, चौमंज़िला घर।
चौखट (सं० पु०) द्वार पर लगे चार लकड़ियों का ढाँचा, देहरी, देहली, दहलीज।
चौखटा (सं० पु०) चौकठा, चार लकड़ियों का ढाँचा।
चौखना (वि०) चार खंड वाला।
चौखा (सं० पु०) जहां पर चार गावों की सीमा मिले।
चौखूँट (क्रि० वि०) चारों ओर, चारों तरफ़, (सं० पु०) चतुर्दिश, पृथ्वी मण्डल।
चौखूँटा (वि०) चौकोन, चौकोर।
चौगड़ा (सं० पु०) खरगोश, खरहा।
चौगड्डा (सं० पु०) चौखा, चार वस्तुओं का समूह।
चौगान (फ़ा० सं० पु०) लकड़ी के बल्ले से गेंद मार कर खेलने वाला एक खेल, चौगान खेलने का डंडा, चौगान खेलने का स्थान, नगाड़ा बजाने की लकड़ी, उद्यान, बाग, निर्जन स्थान।
चौगानी (सं० स्त्री०) हुक्के की नली, सटक, निगाली।
चौगिर्द (क्रि० वि०) चतुर्दिक, चारों ओर।
चौगुना (वि०) चतुर्गुण, एक वस्तु को चार बार करना।
चौगोड़ा (वि०) चार पाँव वाला खरहा।
चौघड़ा (सं० पु०) चार खाने वाला बर्तन, गुजराती लाची। [चौपर।
चौड़ (सं० पु०) चूड़ा करण संस्कार, (वि०) सत्यानाश,
चौड़ चपेट (वि०) दुष्ट, भ्रष्ट, निकाला हुआ।
चौड़ा (वि०) चकला, प्रस्था, लंबा का उलटा।
चौड़ाई (सं० स्त्री०) चकलाई, पाट, फैलाव।
चौड़ान (सं० स्त्री०) चौड़ाई, फैलाव।
चौड़ाना (क्रि० स०) फैलाना, चौड़ा करना, चकलाना।
चौडोल (सं० पु०) चौपलिया पालकी, चंडोल।
चौतनिया (सं० स्त्री०) चार बन्द वाली बच्चों की टोपी, चौतनी। [की टोपी।
चौतनी (सं० स्त्री०) चौतनियां, चार चदवा वाली बच्चों
चौतरका (सं० पु०) तम्बू, रावटी, पट, मण्डप।
चौतरा (सं० पु०) चबूतरा।
चौतही (सं० स्त्री०) खेस का बना मोटा बिछौना।
चौतारा (सं० पु०) चार तार का बाजा।

चौताल (सं० पु०) मृदंग का एक ताल।
चौतुका (सं० पु०) चार तुक का छन्द विशेष, (वि०) चार तुक वाला।
चौथ (सं० स्त्री०) चतुर्थी, चतुर्थांश, चौथा भाग, मराठों का लगाया हुआ कर जिसमें उपज का चौथा भाग लिया जाता था।
चौथपन (सं० स्त्री०) बुढ़ापा, बुढ़ाई।
चौथा (वि०) चतुर्थ, क्रमानुसार चार के स्थान पर का।
चौथाई (सं० स्त्री०) चतुर्थ भाग, चतुर्थांश।
चौथापन (सं० पु०) चौथी अवस्था, बुढ़ाई।
चौथि (सं० स्त्री०) चतुर्थी।
चौथिया (सं० स्त्री०) चौथे दिन आने वाला ज्वर, चतुर्थांश का अधिकारी।
चौथिया ज्वर (सं० पु०) चौथे दिन आने वाला ज्वर।
चौथी (सं० स्त्री०) चौठारी, बिवाह की एक रीति जो बिवाह से चौथे दिन होती है जिसमें वर कन्या के हाथ के कंगन खोले जाते हैं।
चौदन्त (वि०) चार दाँत वाला, उभड़ती जवानी वाला, उद्दण्ड, अल्हड़। [अल्हड़पन।
चौदन्ती (सं० स्त्री०) अक्खड़पन, ढिठाई, उद्दण्डता,
चौदश }
चौदस } (सं० स्त्री०) चतुर्दशी।
चौदह (वि०) संख्या विशेष, दश और चार, चतुर्दश।
चौदानिया }
चौदानी } (सं० स्त्री०) कर्णभूषण विशेष।
चौधर (वि०) बलवान, मोटा ताज़ा।
चौधराई (सं० स्त्री०) सेठपन, नेतृत्व, अगुवाई।
चौधराना (सं० पु०) चौधराई, वह द्रव्य जो चौधरी के काम के लिए मिले। [मुखिया।
चौधरी (सं०पु०) नेता, प्रधान, सेठ, समाज का
चौपई (सं० स्त्री०) एक छन्द विशेष।
चौपखा (सं० स्त्री०) परिखा, खाई।
चौपट (वि०) तहस नहस, नष्ट, ध्वस्त, सत्यानाश, चारों ओर से खुला। [करना।
मुहा०—चौपट करना = उजाड़ना, उजाड़ देना, नष्ट
चौपटहा (वि०) सत्यानाशी, चौपट करने वाला
चौपटा (वि०) चौपटहा, सर्वनाशी, सत्यानाशी।
चौपड़ (सं० पु०) चौसर, पासा।
चौपताना (क्रि० अ०) वस्त्रों की तह लगाना।
चौपतिया (सं० स्त्री०) गेहूं के फसल को हानि पहुंचाने वाली घास, उटंगन, चार पत्तियों वाली बूटी।
चौपल (सं० पु०) पत्थर विशेष।
चौपहल (वि०) चारों ओर से समान, लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई आदि जिसमें बराबर हो।
चौपहला (वि०) देखो "चौपहल"। [चरण होते हैं।
चौपाई (सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसमें चार
चौपाड़ (सं० पु०) बैठका, चौपाल। [भैंस आदि।
चौपाया (वि०) चार पैर वाला जानवर, पशु, गाय, बैल,
चौपाल (सं० पु०) बैठक जो चारों ओर से खुला और ऊपर से छाया होता है, दालान, बैठका।
चौपुरा (सं० पु०) चार मोट एक साथ चल सकने योग्य कुआँ।
चौपैया (सं० पु०) चार पद वाला एक छन्द, चारपाई।
चौबच्चा (सं० पु०) हौज़, कुण्ड, पोखरा।
चौबरसी (सं० स्त्री०) वह श्राद्ध उत्सवादि जो किसी घटना के चौथे वर्ष किया जाता है।
चौबारा (सं० पु०) चौपाल।
चौबीस (वि०) संख्या विशेष, बीस और चार।
चौबे (सं० पु०) चतुर्वेदी, ब्राह्मणों की एक शाखा।
चौबोला (सं० पु०) एक मात्रिक छन्द।
चौभड़ (सं० स्त्री०) दाढ़, चहूँ।
चौमंज़िला (वि०) चार खंड वाला।
चौमहला (वि०) चार खंड वाला, चौमंज़िला।
चौमासा (सं० पु०) चतुर्मास, पावस, बरसात के चार महीने।
चौमुख (क्रि० वि०) चतुर्दिक्, चारों ओर।
चौमुखा (वि०) चार मुँह वाला, चारों ओर मुँह वाला।
चौमुखी (सं० स्त्री०) चतुर्मुखी देवी, रुद्राक्ष का फल।
चौमुहानी (सं० स्त्री०) चौराहा, चतुष्पथ।
चौर (सं० पु०) चोरी करने वाला, चोर, चोट्टा।
चौर कार्य (सं० पु०) चोरी का काम।
चौर भय (सं० पु०) चोर का भय।
चौरङ्ग (सं० पु०) चित्त, उतान।
चौरस (वि०) समतल, बराबर, समभूमि, तुल्य, समान।
चौरसाई (सं० स्त्री०)तुल्यता, समता, सिधाई।
चौरहा (सं० पु०) चौराहा, चौरास्ता।

चौरा (सं० पु०) चबूतरा, देवी देवता, भूत प्रेतादि का स्थान जहां इनकी स्थापना कर चबूतरा बना दिया जाता है। [कहते हैं।

चौराई (सं० स्त्री०) एक प्रकार का साग जिसको चौलाई

चौरानवे (वि०) संख्या विशेष, नब्बे और चार।

चौरासी (वि०) संख्या विशेष, अस्सी और चार।

चौराहा (सं० पु०) चौमुहानी, चौरास्ता।

चौरी (सं० स्त्री०) वेदी, छोटा चबूतरा।

चौलड़ा (वि०) चार लड़ वाला, माला आदि।

चौला (सं० पु०) बोड़ा, लोबिया।

चौलाई (सं० स्त्री०) एक प्रकार का साग जिसकी तरकारी बनाई जाती है, चौराई।

चौवन (वि०) संख्या विशेष, पचास और चार।

चौवर (वि०) बलवान, साहसी, शक्तिशाली।

चौवा (सं० पु०) चार अंगुलियों के विस्तार का माप।

चौवाई (सं० स्त्री०) चारों ओर से बहने वाली हवा, अंधड़।

चौवार (सं० पु०) पंचायती घर, सर्वसाधारण की बैठक।

चौवालीस (वि०) संख्या विशेष, चालीस और चार।

चौस (सं० पु०) वह खेत जो चार बार का जोता हो, चूर्ण, चूरन, बुकनी, पिसान, आटा।

चौसर (सं० पु०) एक प्रकार का खेत, चौपड़।

चौसठ (वि०) संख्या विशेष, चार और साठ।

चौहट (सं० पु०) चौराहा, चौहट्टा, चौमुहानी।

चौहट्ट (सं० पु०) चौरास्ता, चौराहा।

चौहट्टा (सं० पु०) चौक बाज़ार, चौराहा, चौरास्ता।

चौहड़ (सं० पु०) जबड़ा।

चौहत्तर (वि०) संख्या विशेष, सत्तर और चार।

चौहद्दी (सं० स्त्री०) चारों ओर की सीमा।

चौहरा (वि०) चौगुना, चार परत या तह वाला, चौघड़।

चौहान (सं० पु०) क्षत्रियों की एक शाखा जो अग्निकुल के अंतर्गत है, इसके आदि पुरुष के विषय में कहा जाता है कि चार हाथ वाला एक पुरुष वशिष्ठ जी के यज्ञकुण्ड से राक्षसों के विनाश के लिए उत्पन्न हुआ, इस जाति के अन्तिम राजा पृथ्वीराज चौहान थे।

च्यवन (सं० पु०) टपकना, चूना, गिरना, झरना, एक ऋषि का नाम, इनके पिता का नाम भृगु और माता का पुलोमा था, जब ये गर्भ में थे उस समय इनकी माता को अकेली देख एक राक्षस हरने आया, यह देख ये गर्भ से निकल आये और राक्षस को अपने तेज से भस्म कर डाला। गर्भ से स्वयं निकल आने के कारण इनका नाम च्यवन पड़ा, एक बार ये तप में ऐसे लीन हो गये कि इनका शरीर दीमक की मिट्टी से ढक गया, केवल आँखें चमकती थीं, राजा शर्याति शिकार खेलने आये उनके साथ कन्या सुकन्या भी थी, उसने च्यवन की आँखों को कोई चमकीला पदार्थ समझ कौतूहल से उनकी आँखों में कांटे घुसेड़ दिये, उससे इन्होंने कुपित होकर शर्याति के सेना का मलमूत्र बंद कर दिया, शर्याति ने आकर इनसे क्षमा मांगी और अपनी कन्या सुकन्या का ब्याह कर दिया, सुकन्या भी प्रसन्नता से इनकी सेवा करने लगी, अश्विनी कुमारों ने सुकन्या के पातिव्रत की परीक्षा किया और प्रसन्न होकर च्यवन ऋषि को बूढ़े से जवान बना दिया।

च्यवन प्राश (सं० पु०) आयुर्वेदीय प्रसिद्ध अवलेह, इसी को खाकर च्यवन ऋषि बूढ़े से जवान हो गये।

च्युत (वि०) गिरा हुआ, चुआ हुआ, पतित, भ्रष्ट, पराङ्मुख। [दोष।

च्युतसंस्कारता (सं० स्त्री०) काव्य में व्याकरण संबन्धी

च्युति (सं० स्त्री०) स्खलन, पतन, खिन्नता, अभाव, पराङ्मुखता, गुदाद्वार, भग।

च्यूड़ा (सं० पु०) चिउरा।

छ

छ—चवर्ग का दूसरा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान तालु है। [उँगलियों वाला।

छंगा (वि०) जिसके हाथ या पांव में छः उँगली हों, छः

छँगुलिया (सं० स्त्री०) छोटी उँगली, कनिष्ठा।

छँटना (क्रि० अ०) कट कर पृथक् होना, निकल जाना, दूर होना, छिन्न भिन्न होना, साथ त्यागना।

छँटवाना (क्रि० स०) चुनवाना, कटवाना, अलग करना, पृथक् करना।

छूँटा (वि०) पिछले पैर बाँध कर चरने को छोड़ा हुआ पशु ।

छूँटाई (सं० स्त्री०) पृथक् करने की क्रिया, अलग करने का काम, चुनाई, छटाई, छाँटने की मज़दूरी, सफ़ाई या उसका काम ।

छूंद (सं० पु०) वेदों के मत से गणनानुसार किया हुआ भाग, वेद, वर्ण, मात्रा के अनुसार विराम आदि नियम वाला वाक्य, छन्दों के लक्षण आदि के नियम विचार, बोली, विद्या, अभिलापा, स्वेच्छाचार बन्धक, संघात, छल, कपट, चाल, कला, युक्ति, रंगढंग, अभिप्राय, एकान्त, विष, निर्जन, ढक्कन, पत्ती ।

छूंद बन्द (सं० पु०) धोखा, दगा, छल, कपट ।

छूई (सं० स्त्री०) एक रोग विशेष ।

छकड़ा (सं० पु०) लढ़ी, बैल गाड़ी, सग्गड़ ।

छकड़ाना (क्रि०) चौंधियाना, घबराना, चकराना, अजा का गर्भ संस्कार कराना । [पालकी ।

छकड़िया (सं० स्त्री०) छः कहारों से उठाई जाने वाली

छकड़ी (सं० स्त्री०) छः का समूह, चारपाई बुनने की एक विधि, पालकी जिसे छः कहार उठाने हों ।

छकना (क्रि० अ०) तृप्त होना, खा पी कर अघा जाना, लज्जित होना ।

छकाछक (वि०) परिपूर्ण, भरापूरा, भरा हुआ, तृप्त, अघाना ।

छकाना (क्रि० स०) हैरान करना, दिक़ करना, तंग करना, चक्कर में डालना, खिला पिला के तृप्त करना, खूब खिलाना पिलाना ।

छक्कड़ (सं० पु०) धौल, थप्पड़, पेटू, खाने वाला ।

छक्का (सं० पु०) जुए का दांव विशेष, छः का तृप्त समूह । मुहा०—छक्का पंजा करना=इधर उधर करना, ठगना, धोखा देना । छक्का छूटना या छक्का छूट जाना=निराश होना, हताश होना, घबड़ाना ।

छग (सं० पु०) बकरी, अज ।

छगरी (सं० स्त्री०) बकरी ।

छगल (सं० पु०) नीला वस्त्र, बकरी ।

छगलक (सं० पु०) छगल, अज ।

छगली (सं० स्त्री०) पाठो, छागी ।

छगुनी (सं० स्त्री०) कनिष्ठा, छोटी उँगली ।

छगुली (सं० स्त्री०) छः अंगुलियाँ ।

छछिया (सं० स्त्री०) तक्र, मट्ठा, छाछ अथवा उसके नापने या पीने का छोटा पात्र ।

छछूंदर (सं० पु०) चूहे के आकार का एक जन्तु विशेष, एक प्रकार की आतिशबाज़ी ।

छज (वि०) झाड़, पताई ।

छजना (क्रि० अ०) अच्छा लगना, शोभा देना, ठीक जँचना, उचित जान पड़ना ।

छज्जा (सं० पु०) ओलती, मकान के बाहर दीवार से निकला हुआ किनारा, बरामदा, उसारा । [छोटा ।

छटंकी (सं० स्त्री०) बटखरा, सेर का सोलहवाँ भाग, बहुत

छटई (वि०) छठवीं, छठी, छठा ।

छटकना (क्रि० अ०) अलग हो जाना, दूर दूर होना निर्वंश हो जाना, कूदना, उछलना, हाथ न आना ।

छटना (सं० पु०) एक प्रकार की चलनी (क्रि०) घटना, बिछुड़ना, अलग होना । [फटने की क्रिया ।

छटपट (सं० पु०) बन्धन वा पीड़ा के कारण हाथ पैर

छटपटाना (क्रि० अ०) तड़पना, तड़फड़ाना, बेचैन होना, अधीर होना । [घबड़ाहट ।

छटपटी (सं० स्त्री०) आकुल, चाह विशेष, अधीरता,

छटवाँ (वि०) निकृष्ट, अलग किया हुआ, समाज से निकाला हुआ, छः नम्बर का, छटा ।

छटहा (वि०) चिड़चिड़ा, कड़ुआ, एकान्त अनुरागी ।

छटाँक (सं० स्त्री०) सेर का सोलहवाँ भाग । [कान्ति ।

छटा (सं० स्त्री०) प्रभा, दीप्ति, शोभा, झलक, छबि,

छटाना (क्रि०) चुनवाना, कटवाना ।

छटे (सं० पु०) चुने, चतुर, चालाक ।

छट्ठ (सं० स्त्री०) छठ, षष्ठी ।

छट्ठी (सं० स्त्री०) छठी, छठवीं ।

छठ (सं० स्त्री०) षष्ठी, तिथि विशेष ।

छठा (वि०) छठवाँ, पाँच के बाद का नम्बर ।

छठी (सं० स्त्री०) जन्म की षष्ठी पूजा, छट्ठी ।

छठे (वि०) छठवाँ ।

छड़ (सं० स्त्री०) धातु या लोहे का डंडा ।

छड़ना (क्रि० स०) छाँटना, अनाज आदि ओखली में डाल कर कूटना । [लच्छा, गुच्छा ।

छड़ा (सं० पु०) पैर में पहिनने का आभूषण विशेष,

छड़ाना (क्रि०) बकला छुड़ाना ।

छड़िया (सं० पु०) पहरेदार, गली, आसाबरदार ।

छुड़ियाना (क्रि०स०) छड़ी मारना, छड़ी के समान करना।
छुड़ी (सं० स्त्री०) लम्बी पतली लकड़ी, गोखरु की सीधी टँकाई जो पजामें या लहँगे पर की जाती है, एकाकिनी, अकेली।
छुड़ीबरदार (सं० पु०) चोबदार, सोने चाँदी की छड़ी लेकर चलने वाला सेवक।
छुड़ीला, छरीला (सं० पु०) जटामाँसी, पुष्प विशेष, (वि०) एकाकी, अकेला।
छण (सं० पु०) क्षण, पल, मुहूर्त्त, छिन, अल्प काल।
छँटवाना (क्रि०) किसी वस्तु का फ़ालतू (बेकार) भाग कटवाना, चुनवाना, कटवाना, छिलवाना।
छँटाई (सं० स्त्री०) छाँटने की मजूरी, छाँटने का काम।
छँटाव (सं० पु०) धान की कुटाई, कूटना, बकला निकलाई।
छँड़ना (क्रि०) छोड़ना, त्याग करना।
छण्डुआ (सं०पु०) छूटा, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।
छण्डौती (सं०स्त्री०) छुट्टी, छोड़ना, अवकाश युक्त, छूट।
छत (सं० स्त्री०) मकान के ऊपर का फ़र्श, कोठा।
छतकुम्भज (सं० पु०) कनेर, करवीर, कन्देल।
छतज (सं० पु०) रक्त, रुधिर, लोहू, पीव।
छतना (सं० पु०) पत्तों द्वारा बनाया हुआ छाता।
छतनार (वि०) छाते के समान फैला हुआ, विस्तृत, प्रस्तारित।
छतरी (सं० स्त्री०) मण्डप, महात्माओं का स्मारक मण्डप, पत्तों का बनाया हुआ छाता, छाता, डोली के ऊपर की छाया, जहाज के ऊपर का भाग, कुकुरमुत्ता।
छतलोट (सं० स्त्री०) छत पर लोट लगाना, गच पर लोटना, यह एक प्रकार की कसरत है।
छता (सं० पु०) छाता।
छति (सं० स्त्री०) क्षति, हानि, घाटा, नुकसान, टोटा।
छतिया (सं० स्त्री०) सीना, छाती, वक्षस्थल।
छतियाना (क्रि० स०) छाती के समीप ले जाना, बन्दूक तानना।
छतिवन (सं० पु०) एक वृक्ष विशेष। [विशेष, मक्कार।
छतीसा (वि०) चतुर, सयाना, चालाक, धूर्त्त, चतुर
छतीसापन (सं० पु०) मक्कारी।
छत्त (सं० पु०) छत।
छत्तर (सं० पु०) छत्र, छाता, छतरी जो भूसे आदि पर छाई जाती है भोजन स्थान, क्षेत्र, अन्न सत्र।
छत्ता (सं० पु०) छाता, छतरी, पटाव, मधुमक्खी आदि विषैले पक्षियों का घर, छाते के समान दूर तक फैला पदार्थ, कमल का बीजकोश, झुण्ड।
छत्तीस (वि०) तीस छः के योग को प्रकाशित करने वाली संख्या, तीस छः के योग की गिनती।
छत्तीसवाँ (वि०) पैंतीस के बाद का अङ्क या गणना।
छत्तासा (सं० पु०) चालाक, नाई, हज्जाम, नाऊ।
छत्तीसी (सं० स्त्री०) छिनाल, व्यभिचारिणी, दुराचारिणी पर पुरुष-रता स्त्री।
छत्र (सं० पु०) देखो "छत्तर"।
छत्रक (सं० पु०) खुमी, भूँफोड़, कुकुरमुत्ता, छाता, शहद का कोश, मिश्री का कूजा, तालमखाने के समान एक पौधा या उसका फल।
छत्रचक्र (सं० पु०) शुभाशुभ सूचक ज्योतिष का एक चक्र।
छत्रधर (सं० पु०) राजा, छाता लगाने वाला सेवक, छत्र धारण करने वाला व्यक्ति।
छत्रधारी (सं० पु०) नृपति, राजा।
छत्रपति (सं० पु०) देखो "छत्रधारी"।
छत्रबन्धु (सं० पु०) अधम क्षत्री।
छत्रभंग (सं० पु०) अराजकता, ज्योतिष का योग विशेष जिसके फल से राजा का नाश होता है, वैधव्य, स्वतन्त्रता। [रासन।
छत्रा (सं० स्त्री०) धनिया, धरती का फूल, सोवा, मजीठ,
छत्राक (सं० पु०) खुमी, ढिंगरी जलबबूल, कुकुरमुत्ता।
छत्राकी (सं० स्त्री०) औषधि विशेष।
छत्री (सं० पु०) क्षत्रिय, दूसरा वर्ण, वीर जाति, नाई, नापित, (स्त्री०) छोटा छत्ता, श्मशान में निर्मित गृह विशेष।
छत्वर (सं० पु०) घर, गृह, कुञ्ज, कुटी, पर्ण कुटी।
छत्तुर (सं० पु०) अन्न की राशि, गोला, ढेर।
छद (सं० पु०) आवरण, ढक्कन, चिड़ियों के पंख, पत्ता, ग्रन्थिपर्णी वृक्ष, गठबन्धन, तमाल वृक्ष, तेजपात।
छदन (सं० पु०) देखो "छद"।
छदाम (सं० पु०) पैसे का चतुर्थांश।
छर्दि (सं० स्त्री०) छप्पर, छानी, पाटन।

छर्दिकारिपु (सं० पु०) छोटी इलायची, वमन रोकने की औषधि।

छद्म (सं० पु०) छल, छिपाव, बहाना, धोखा, चाल।

छद्मवेश (सं० पु०) कृत्रिम वेश, बनावटी वेश।

छद्मवेशी (वि०) बहुरूपिया, वेश बदलने वाला, कपटी।

छद्मिका (सं० स्त्री०) गुडूची, मर्जाठ।

छद्मी (वि०) देखो " छद्म वेशी "।

छन (सं० पु०) क्षण, समय का अत्यन्त छोटा भाग।

छनक (सं० स्त्री०) झनकार, झनझनाहट, झनझन शब्द।

छनकना (क्रि० अ०) गरम धातु पर पानी छोड़ने का शब्द, खनकना।

छनकमनक (सं० स्त्री०) आभूषणों की ध्वनि, साजबाज।

छनकाना (क्रि० स०) बलकाना, चौंकाना, भड़काना।

छनछनाना (क्रि० अ०) देखो " छनकना "।

छनछवि (सं० स्त्री०) क्षण प्रभा, बिजली, विद्युत् छवि।

छनदा (सं० स्त्री०) रात्रि, रात।

छननमनन (सं०पु०) गरम कढ़ाव में घी डालने का शब्द।

छनना (क्रि० अ०) छोटे २ छिद्रों में आना, किसी नशीले पदार्थ को पीना। [करना।

छनवाना (क्रि० स०) छनाना, पिलाना, छानने का काम

छनाक (सं० पु०) किसी वस्तु के टूटने का शब्द, गरम घी या तेल में पानी पड़ने का शब्द।

छनाका (सं० पु०) ठनाका, झनाका, रुपयों का शब्द।

छनाना (क्रि० स०) देखो "छनवाना"।

छनिक (सं० पु०) क्षणिक, एक क्षण, एक मुहूर्त्त, क्षणिक विचार वाला।

छनेक (सं० पु०) क्षणिक, एक क्षण।

छन्द (सं० पु०) कविता, पद्य विशेष।

छन्द शास्त्र (सं० पु०) पिङ्गल मुनि प्रणीत शास्त्र जिसमें छन्दों का वर्णन किया है।

छन्दना (क्रि०) गठना, बन्धना, उलझन में पड़ना।

छन्दपातन (सं० पु०) कपटी तपस्वी, तापस वेशधारी धूर्त्त।

छन्दबंद (सं० पु०) छलबल, कपट।

छन्दानुवर्ती (सं० पु०) आधीन, आज्ञा पालन करने वाला।

छन्दी (वि०) कपटी, धूर्त्त, छली, ठग।

छन्दोग (सं० पु०) सामवेदी।

छन्दोग परिशिष्ट (सं० पु०) सामवेदी गोभिल आदि सूत्रों का परिशेष शास्त्र जिसे महर्षि कात्यायन ने बनाया है।

छन्दोबद्ध (वि०) पद्यात्मक, पद्यबद्ध, श्लोक युक्त। [पद्य।

छन्दोभंग (सं०पु०) रचना का दोष, दूषित रचना, अशुद्ध

छन्न (वि०) ढका हुआ, गुम, गायब, लुप्त, (सं० पु०) गुप्त स्थान, एकान्त स्थान, तपी हुई या गर्म वस्तु पर पानी पड़ने का शब्द, धातुओं के पत्तरों के परस्पर टकर से उत्पन्न शब्द, बजरी।

छन्नमति (वि०) कमअक्ल, जड़, मूर्ख, भ्रष्ट बुद्धि।

छन्ना (सं० पु०) छनना, दूध आदि छानने का वस्त्र।

छन्नी (सं० स्त्री०) छोटा छन्ना।

छन्नू (वि०) छानने वाला।

छप (सं० स्त्री०) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द, पानी की छींटों का शब्द, पानी के एक बारगी गिरने का शब्द।

छपई (सं० स्त्री०) छः पद का छन्द, छप्पय।

छपकली (सं० स्त्री०) विसतुइया।

छपकना (क्रि० स०) छड़ी से मारना, कटारी या छुरी से काटना, पतली कमची से मारना, छिन्न करना।

छपकाना (क्रि०) पानी में डालना, चपटाना।

छपकी (सं० स्त्री०) जन्तु विशेष।

छपछपाना (क्रि० अ०) पानी पर हाथ पाँव पटकना, थोड़ा तैर लेना। [चिपकाना।

छपटाना (क्रि० स०) चिपटाना, छाती से लगाना,

छपद (सं० पु०) भ्रमर, भौंरा। [नाश, संहार।

छपन (वि०) गुप्त, गायब, लापता, (सं० पु०)

छपना (क्रि० अ०) छापा जाना, दाब का चिह्न पड़ना, मुद्रित होना, शीतला का टीका लगाना।

छपरखट (सं० स्त्री०) मसहरीदार पलङ्ग, मसहरी तना हुआ पलङ्ग।

छपरबन्द (वि०) बसे हुए, आबाद, छप्पर छाने वाला, पूना के समीप बसने वाली एक जाति जो अपने को राजपूत बतलाती है। [का एक विख्यात नगर।

छपरा (सं० पु०) बाँस का टोकरा, छप्पर, विहार प्रान्त

छपरिया (सं० स्त्री०) छोटा छप्पर, झोपड़ी, मढ़ी।

छपरी (सं० स्त्री०) देखो "छपरिया"।

छपवाई (सं० स्त्री०) छपाने की मज़दूरी या काम।

छपवाना (क्रि० स०) छपाना, मुद्रित कराना।
छपा (सं० स्त्री०) रात्रि, हलदी।
छपाई (सं० स्त्री०) देखो "छपवाई"।
छपाकर (सं० पु०) शशि, चन्द्र, कर्पूर, कपूर।
छपाखाना (सं० पु०) वह स्थान जहां छपाई होती है।
छपाना (क्रि० स०) देखो "छपवाना"।
छपाव (सं० पु०) छिपाव, गोपना।
छप्पन (वि०) पचास और छः की संख्या।
छप्पय (सं० पु०) देखो "छपाई"।
छप्पर (सं० पु०) छान, बाँस या लकड़ी की टट्टियों पर डाला हुआ फूस।
छप्परखट (सं० पु०) देखो "छपरखट"।
छब (सं० पु०) शोभा, आकार, चित्र, तसवीर।
छबड़ा (सं० पु०) टोकरा, छबरा, झावा, खाँचा।
छबि (सं० स्त्री०) शोभा, आभा, कान्ति।
छबीला (वि०) शोभा युक्त, सुन्दर, सजधज का, बाँका।
छबुन्दा (सं०पु०) कीड़ा विशेष जिसकी पीठ पर छः सफ़ेद बुँदकियां होती हैं यह बहुत ज़हरीला होता है।
छब्बीस (वि०) बीस और छः का योग या उतनी संख्या।
छब्बीसवाँ (वि०) पच्चीस के बाद की संख्या या अङ्क।
छब्बीसी (सं० स्त्री०) छब्बीस वस्तुओं का समूह।
छम (सं० स्त्री०) घुँघरू आदि के बजने या पानी बरसने का शब्द। [ठाटबाट, ठसक।
छमक (सं० स्त्री०) चाल चलन की बनावट, चालढाल,
छमकट (सं० स्त्री०) कपटी, छिनाल।
छमकना (क्रि० अ०) झनकार करना, ठसक करना, आभूषणों की झनकार करना।
छमछम (सं० स्त्री०) पैर में पहिने हुए भूषणों का शब्द होना, झमझम होना, छौंकना, जेवर आदि बजाना।
छमछमाना (क्रि०)चमचमाना, झमकाना, शोभित होना।
छमना (क्रि० अ०) माफ़ करना, क्षमा करना।
छमहु (क्रि०) क्षमा करो, माफ़ करो।
छमा (सं० स्त्री०) देखो "क्षमा"।
छमाछम (सं० स्त्री०) छमछम, झमझम, आभूषणों की ध्वनि, वर्षा का शब्द, पानी बरसने की आवाज़।
छमापन (सं० पु०) क्षमापन, दयालुता, कृपालुता, मिहरबानी। [किया जाता है, छमाही।
छमासी (सं० स्त्री०) श्राद्ध विशेष जो मृत्यु के छठे महीने
छमाही (सं० स्त्री०) प्रत्येक छः छः मास का।
छमि (क्रि०) क्षमा करके।
छमिच्छा (सं० स्त्री०) इशारा, संकेत, थोड़ा चिह्न।
छमिच्छित (सं० स्त्री०) इशारा, सङ्केत, समस्या।
छमिहहिं (क्रि०) क्षमा करेंगे।
छमुख (सं० स्त्री०) छः मुख वाला षडानन, कार्तिकेय।
छय (सं० पु०) ह्रास, क्षय, नाश, विनाश।
छर (सं०पु०) कपट, छल, जटामांसी।
छरकना (क्रि० अ०) छलकना, छिटकना, बिखरना, छलकना, धीरे २ गिरना, झरना। [वट।
छरछन्द (सं०पु०) छलछन्द, धोखेबाज़ी, कपटपन, बना-
छरछन्दी (वि०) बनावटी, छलछन्द, धोखेबाज़, कपटी।
छरछराना (क्रि० अ०) छलछलाना, झरना, थोड़ा २ पानी गिरना। [पानी गिरने की ध्वनि।
छरछराहट (सं० स्त्री०) झन्नाहट, छलछलाहट, थोड़ा २
छरछवि (सं० स्त्री०) शौच स्थान, पाखाना, पोखरा।
छरना (क्रि०अ०) झरना, टपकना,छलकना, चूना,बहना।
छरस (सं० पु०) छः रस, षट रस। [फुर्तीला।
छरहरा (वि०) चतुर, होशियार चुस्त, पतले शरीर का,
छरा (सं० पु०) रस्सी, लर, लड़ी।
छरिन्दा (वि०) एकाकी, असहाय, अकेला, रीते हाथ।
छरी (सं० स्त्री०) देखो "छड़ी"।
छरे (वि०) छटे, चुने हुए, बीने हुए।
छर्दन (सं० पु०) वह वायु का प्रबल वेग जिसके कारण मुँह के ओर से खाया हुआ पदार्थ निकल जाय, कै होना, कय करना, वमन करना या होना, उलटी, छाँट, कय।
छर्दायन (सं० स्त्री०) खीरा, ककरी। [गार।
छर्दि (सं० स्त्री०) खाँसी, कै, वमन, वमि, वांति, उद्-
छर्रा (सं० पु०) छोटा कङ्कड़, या कङ्कड़ का टुकड़ा, छोटी गोलियाँ, वेग से फेंका हुआ जल-बिन्दु-समूह।
छल (सं० पु०) कपट, बहाना, छिपाव।
छलक (सं० स्त्री०) छलकने की क्रिया, छल करने वाला, छली, उफान, उभाड़।
छलकना (क्रि० अ०) देखो "छरकना"।
छलकाना (क्रि० स०) गिराना, छरकाना।
छलकारी (वि०) छल करने वाला।
छलङ्गना (क्रि०) कूदना, फांदना।

छलछन्द (सं० पु०) चालबाजी, धूर्तता ।

छलछन्दी (वि०) कपटी, छली, धूर्त ।

छलछलाना (क्रि० अ०) जल प्रवाह की गति, पानी गिरते हुए या बहते हुए शब्द की ध्वनि, सशब्द गति, झलझलाना, झरझरना, छरछराना ।

छलछिद्र (सं० पु०) बनावटी व्यापार, छलबल, कपट, धोखा, छलछन्द । [व्यवहार ।

छलन (सं० पु०) कपट करने का काम, छल करने का

छलना (क्रि० स०) ठगना, धोखा देना, भुलावे में डालना, दगा करना

छलनी (सं० स्त्री०) चलनी, किसी वस्तु छानने का पात्र ।

छलबल (सं० पु०) कपट, धोखा, शठता ।

छल बिनय (सं० पु०) कपट से बड़ाई, धोखा देने के लिए प्रशंसा ।

छलांग (सं० स्त्री०) फलांग, कुदान, उछाल ।

छलाना (क्रि० स०) भूल में डलवाना, धोखा दिलवाना, दगा कराना, भुलावे में डलवा देना ।

छलावा (सं० पु०) लूक, लूका, भूत प्रेतादि का उपद्रव ।

छल्ला (सं० पु०) आभरण विशेष, मण्डलाकार आभूषण ।

छलिक (सं० पु०) नाट्यकला में रूप का एक भेद ।

छलित (वि०) भुलावित, वंचित, छला हुआ ।

छलिया (वि०) भुलावा देने वाला, कपटी, छल करने वाला, धोखा देने वाला ।

छली (वि०) धोखेबाज, कपटी ।

छल्लेदार (वि०) कड़ी लगी हुई, छल्ला लगी हुई वस्तु, छल्लायुक्त ।

छवड़ा (सं० पु०) बांस आदि की बनी टोकरी ।

छवना (सं० पु०) छौना, शिशु, बच्चा, बालक, शूकर का बच्चा ।

छवाई (सं० स्त्री०) पटाई या उसकी मिहनत, छवाने का कार्य, घर छाने की मज़दूरी । [कराना ।

छवाना (क्रि० स०) ढकाना, पटाना, छाने का काम

छवि (सं० स्त्री०) आभा, कान्ति, चमक, दीप्ति ।

छवैया (सं० पु०) छाने वाला, ढकने वाला, पाटने वाला ।

छह (वि०) छः ।

छहर छहर (सं० पु०) अधिक वर्षा होने का शब्द ।

छहरना (क्रि० अ०) तितर बितर होना, बिखरना, फैलना, छिटकना ।

छहरा (वि०) छः तह वाला, जिसमें छः परत हों, छठा भाग ।

छहराना (क्रि० स०) बखेरना, छितराना, फैलाना, छिटकाना ।

छहियां (सं० स्त्री०) छाया, छाँह ।

छाँ (सं० स्त्री०) छाँह, छाया, प्रतिविम्ब ।

छाँई (सं० स्त्री०) मुँह पर का लहसन, छाप, रोग विशेष ।

छाँगुर (सं० पु०) छः उँगलियों वाला व्यक्ति, छंगा ।

छाँछ (सं० स्त्री०) मही, छाछ, मट्ठा, तक्र ।

छाँट (सं० स्त्री०) ब्योंत, छाटने काटने की क्रिया, कतरने का ढंग ।

छाँटन (सं० स्त्री०) उलटी करना, वमन करना । [करना ।

छाँटना (क्रि० स०) कै करना, कतरना, काटना, अलग

छाँड़ना (क्रि० स०) त्यागना, छोड़ना, तजना, पृथक् करना ।

छाँद (सं० स्त्री०) पगहा, पशु बाँधने की छोटी रस्सी ।

छाँदना (क्रि० स०) कसना, जकड़ना, बांधना, वेग की गति को रोकना ।

छाँवड़ा (सं० पु०) लघु शिशु, छोटा बच्चा, बालक ।

छाँह (सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर धूप न हो ।

छांहरा (वि०) छायादार ।

छांही (सं० स्त्री०) परछाहीं ।

छाई (सं० स्त्री०) खाद, राख, पांस । [छाया, साया ।

छाक (सं० स्त्री०) मस्ती, नशा, कलेवा, जलपान, तृप्ति,

छाग (सं० पु०) बकरा, पाठा ।

छागल (सं० पु०) बकरे के चाम से बनी हुई चीज़, बकरा ।

छाछ (सं० स्त्री०) माठा, मही, वह मट्ठा जो मक्खन तपाने पर नीचे रह जाता है ।

छाछठ (वि०) साठ और छः का योग या उतनी संख्या ।

छाज (सं० पु०) शोभा, सजित, मार्ग, छप्पर, कोचवान के बैठने की जगह, छज्जा, सूप ।

छाजन (सं० स्त्री०) कपड़ा, छान, रोग विशेष जो रक्त विकार से होता है ।

छाजना (क्रि० अ०) फबना, सोहना, खुलना, शोभायुक्त, उपस्थित होना, छाना ।

छाजा (सं० पु०) कगर, छज्जा शोभा, शोभित, सूप ।

छाजाना (क्रि०) ढक जाना, छाया होना, पट जाना ।

छाड़ (सं० पु०) त्याग, छोड़ कर, भिन्न

छाड़ना (क्रि० अ०) उलटी या क़ै करना, वमन करना (क्रि० स०) त्याग करना, तजना, छोड़ना।

छाड़े (क्रि०) छोड़े हुए।

छात (सं० पु०) पतला, दुर्बल, छत।

छाता (सं० पु०) छत्र, छत्ता, विशाल वक्षस्थल।

छाती (सं० स्त्री०) छोटा छत्र, उर, वक्षस्थल, सीना, हृदय, स्तन, साहस।

मुहा०—छाती पर धर कर कोई नहीं जायगा=अपने साथ परलोक ले जाना, अथवा यह वस्तु ऐसी अच्छी नहीं जिसे कोई ले जायगा, (तुच्छ वस्तु का ज्यादा आदर करते देख इस वाक्य का प्रयोग किया जाता है) छाती पर तो हाथ रक्खो=इस बात की सत्यता को तुम्हारा दिल स्वीकार करता है। छाती पर चढ़ कर कौन पी जायगा=किसी वस्तु के रक्षित होने के विषय में यह कहा जाता है। छाती पर पत्थर रखना=किसी वस्तु की अभिलाषा छोड़ देना, धीरज बांधना। छाती पर मूंग दलना=दुःख देने के अभिप्राय से उसके सामने ही अप्रिय कहना। छाती फटना=चित्त से घबराना। छाती पीटना=विलाप करना, दुःखित होना। छाती ठोंकना=साहस दिखलाना, प्रतिज्ञा करना, भरोसा देना। छाती ठंडी होना=आनन्दित होना, प्रसन्न होना। छाती का पत्थर=दुःखद, शत्रु, कण्टक। छाती खोल कर मिलना=प्रेम से मिलना, उत्साह से मिलना। छाती से लगाना=प्रेम करना, छोटों के प्रति बड़ों का प्रेम। छाती निकाल कर चलना=अकड़ कर चलना, अहङ्कार से चलना। छाती भर=परिमाण विशेष, छाती के बराबर। छाती भर आना=कहते कहते कण्ठ रुक आना, मोह के वश होने से बात न निकलना। छाती पर बाल होना=साहस वीरता और दृढ़ता का अनुमान होना।

छात्र (सं० पु०) विद्यार्थी, पढ़ने वाला, शहद, मधु मक्खी विशेष, सरघा।

छात्रगण्ड (सं० पु०) तीक्ष्ण बुद्धि वाला विद्यार्थी।

छात्रवृत्ति (सं० स्त्री०) विद्याध्ययन की दशा में मिली सहायता।

छात्रालय (सं० पु०) वह स्थान जहां विद्यार्थी रहते हैं, बोर्डिङ्ग हाउस।

छादन (सं० पु०) ढकने या छाने का कार्य्य, छिपाव ढक्कन, नीलकांटैया वृक्ष।

छादित (वि०) आच्छादित, ढका हुआ, आवरणित।

छान (सं० स्त्री०) छप्पर, फूस की छाई हुई छाजन।

छानना (क्रि० स०) निकालना, देख भाल करना।

छानबीन (सं० स्त्री०) गहरी खोज, पूर्ण अनुसन्धान, बिचार, विस्तृत विवेचना, तहक़ीक़ात।

छानवे (वि०) नब्बे और छः की संख्या या उसका योग।

छानस (सं० स्त्री०) मसा, चोकर, अन्न की भुस्सी।

छाना (क्रि० अ०) ढकना, पाटना, धूप, पानी आदि से बचाव करना।

छान्ना (क्रि०) निखारना, गारना, ढूंढना, खोजना।

छाप (सं० स्त्री०) दबा कर बनाया हुआ चिह्न, मुहर, मुंदरी।

छापना (क्रि० स०) चिह्नित करना, मुद्रित करना।

छापा (सं० पु०) एक प्रकार की कल, प्रेस, ठप्पा, सोते हुए मनुष्यों पर आक्रमण। [होता हो।

छापाखाना (सं० पु०) वह स्थान जहाँ छपाई का काम

छापा लगाना (क्रि०) टिकट लगाना, कोटर लगाना।

छापी (सं०पु०) कपड़े छापने वाला, जाति विशेष, छीपी।

छाम (वि०) दुर्बल, दुबला, अशक्त, बलहीन, निर्बल।

छामोदरी (वि०) छोटे पेट वाली।

छायल (सं० पु०) एक जनाना पहनावा।

छाया (सं० स्त्री०) धूप का जहां अभाव हो, प्रतिबिम्ब, परछाईं, सूर्य भगवान् की स्त्री का नाम, शोभा, कान्ति, आश्रय, घूँस, रिशवत, पंक्ति, कात्यायनी, भूत प्रेतादिक देवताओं का प्रभाव, आर्या छन्द का एक भेद, अँधेरा।

छायाग्राही (सं० पु०) आकर्षण करने वाला।

छायाग्राहिणी (सं० स्त्री०) एक राक्षसी, छाया ग्रहण करने वाली स्त्री। [जाता है।

छायादान (सं० पु०) दान विशेष जो छाया देख कर दिया

छायानट (सं० पु०) एक रागिनी।

छायापथ (सं० पु०) आकाश, आकाश-गङ्गा, देवमार्ग, आकाश का जनेऊ, हाथी की डहर।

छायापाद (सं० पु०) देवपद, आकाश, नभोभाग।

छायापुरुष (सं० पु०) दृष्टि स्थिर हो जाने पर आकाश में दिखाई देने वाली पुरुष की मूर्ति।

ढाँकी (क्रि०) तोपी, ढाँक दी, छिपा दी।
ढाँग (सं० स्त्री०) कन्दला, शिखर, पहाड़ की चोटी।
ढाँचा (सं० पु०) ढंग, ढब, किसी बनायी जाने वाली वस्तु का पूर्व रूप।
मुहा० ढाँचा खड़ा करना=बनाना, स्वरूप निश्चय करना, बनाई जाने वाली वस्तु का रूप नियत करना।
ढांपना (क्रि०स०) छिपाना, ढाँकना, किसी की त्रुटि छिपाना।
ढांसना (क्रि० स०) खांसना, खोंखना।
ढाँसा (सं०पु०) दोष, कलंक, अपवाद, खांसी की ठसक।
ढाई (वि०) अढ़ाई, दो और आधा।
ढाक (सं० पु०) वृक्ष विशेष, पलास का पेड़।
मुहा०—ढाक के तीन पात=सदा एक रूप में रहना, सदा दुःख भोगना।
ढाटा (सं० पु०) एक प्रकार का कपड़ा जो दाढ़ी बांधने के काम में आता है।
ढाठी (सं०स्त्री०) घोड़े का मुंह बांधने की रस्सी, कसन।
ढाड़ (सं० स्त्री०) चीख, चिघाड़।
ढाढ़ना (क्रि० स०) डाढ़ना, जलाना, आग लगाना।
ढाढ़स (सं०पु०) धैर्य, विपत्ति के समय चित्त की स्थिरता, आश्वासन।
मुहा०—ढाढस देना=धैर्य देना, भरोसा देना। ढाढस बंधाना=साहस देना, शान्ति धराना, धैर्य रखने का उपदेश देना।
ढाढ़िन (सं०स्त्री०) नाचने गाने वाली स्त्री, ढाढ़ी की स्त्री।
ढाढ़ी (सं० पु०) एक जाति, इस जाति के लोग नाचने गाने का काम करते हैं, ये प्रायः नाच जाति के होते हैं।
ढाढ़ी लीला (सं० स्त्री०) एक खेल, भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीला का अभिनय।
ढान (सं० पु०) हाता, घेरा, बाड़ा।
ढाना (क्रि० स०) ढाहना, गिराना, मकान आदि का नष्ट करना।
ढापना (क्रि०स०) ढाँपना, ढाँकना, बन्द करना, छिपाना।
ढाबर (सं० पु०) मटमैला पानी, गंदला पानी, कीचड़ मिला हुआ पानी।
ढाबा (सं० पु०) ओसारा, ओलती, परछती, बराण्डा, भोजनाश्रम, मारवाड़ी लोग भोजन की दूकान को ढाबा कहते हैं
ढामक (सं० पु०) ढोल आदि बाजे का शब्द, ढोल।
ढार (सं० पु०) भांति, तरीका, रीति, भेद, प्रकार, ढाल, ढलुई ज़मीन जो नीचे से क्रमशः ऊपर ऊँची होती गयी हो। ढांचा, ढंग, बनावट, गठन, गढ़न।
ढारना (क्रि० स०) पानी गिराना, एक बर्तन से दूसरे बर्तन में पानी डालना।
ढारस (सं० पु०) आश्वासन, ढाढ़स।
ढारी (सं० स्त्री०) ढार, ढाल।
ढाल (सं० स्त्री०) तलवार के वार रोकने का अस्त्र, यह चमड़े धातु तथा गैंडे की हड्डियों का बनता है। आवरण, आच्छादन, रोक, रुकावट, ढलुई ज़मीन, ढालवाँ।
ढालना (क्रि० स०) गिराना, एक बर्तन से दूसरे बर्तन में पानी लेना।
मुहा०—बोतल ढालना=खूब शराब पीना।
ढालवाँ (सं० पु०) वह ज़मीन जो नीचे से क्रमशः ऊपर की ओर ऊँची होती गयी हो।
ढालिया (सं० पु०) एक जाति जो सांचे में ढाल कर बर्तन बनाता है।
ढालू (सं० पु०) ढालवाँ।
ढास (सं० पु०) ठग, डाकू, विश्वासघाती।
ढासना (क्रि० अ०) खांसना, सूखी खोंखी खोखना, (सं० पु०) तकिया, उढ़कन।
ढाहति (क्रि०) ढाहती है, गिराती है।
ढाहना (क्रि० स०) ढाना, मकान आदि का तोड़ना।
ढाहा (सं० पु०) करार, कगार, नदी का किनारा।
ढिँढोरना (क्रि० स०) टटोलना, भरना, मथन करना, हाथ डाल कर ढूँढ़ना।
ढिँढोरा (सं० पु०) डुगडुगी, मुनादी वह ढोल जो राजाज्ञा प्रचारित करने के लिए या और किसी प्रकार की सूचना देने के लिए बजाया जाता है।
ढिग (अव्य०) पास, समीप, निकट, नियरे।
ढिठाई (सं०स्त्री०) धृष्टता, अनुचित साहस, बड़ों के सामने अविनय प्रकाशित करना।
ढिडिम (सं० पु०) टिटिहरी पक्षी, टिट्टिभ।
ढिबका (सं० पु०) गुमड़ा, गिल्टी, फोड़े का गड्ढा।
ढिबरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की डिबिया जिसमें मिट्टी का तेल रख कर जलाते हैं, पेंच के सिरे पर रोक के लिए लगाई जाने वाली अंगूठी, चरखे में लगाई जाने वाली चमड़े या मूँज की चकती।
ढिमका (सर्व०) अमुक, अमका, फ़लाँ, फ़लाना।
ढिमढिमी (सं०स्त्री०) डमरू, खंजरी आदि बाजों का शब्द।
ढिलाई (सं०स्त्री०) शिथिलता, कसा न रहना, विलंब, सुस्ती।

ढिलाना (क्रि० स०) शिथिल करना, ढील करना।
ढिल्लड़ (वि०) सुस्त, आलसी। [प्रवृत्त होना, झुकना।
ढिसरना (क्रि० अ०) सरकना, खसकना, फिसलाना,
ढींगर (सं० पु०) उपपति, जाट।
ढींढ (सं० पु०) बड़ा पेट, निकला हुआ बड़ा पेट।
ढीट (सं० स्त्री०) लकीर, रेखा।
ढीठ (सं० स्त्री०) धृष्ट, अविनयी, बड़ों का अदब न करने वाला, कुमार्गी, बुरे काम करने वाला, साहसी, निर्भय, न डरने वाला।
ढीठा (सं० पु०) धृष्ट, मगरा।
ढीढ़स (सं० पु०) एक प्रकार का शाक, ढिंढा। [होना।
ढील (सं० स्त्री०) शिथिलता, किसी कार्य में उत्साह न
मुहा०—ढील देना = उपेक्षा करना, ध्यान न देना।
ढीलना (क्रि० स०) ढीला करना, शिथिल करना, छोड़ देना, उपेक्षा करना, ध्यान न देना, विलम्ब करना।
ढीला (वि०) जो तना या कसा नहीं, छुटा हुआ, शिथिल, असावधान, अचेत। [कालक्षेप।
ढीलाई (सं०स्त्री०) शिथिलता, छुटकारा, मोचन, विलम्ब,
ढीहा (सं० पु०) टीला, डूँगर, पहाड़।
ढुँढवाना (क्रि० स०) ढुंढाना, खोजाना, तलाश करना, पता लगाना।
ढुंढि (सं० पु०) गणेश, विनायक, विघ्नराज।
ढुकी (सं० स्त्री०) ताक, पीछा करना, किसी के चरित्र का गुप्त अनुसन्धान करना।
ढुकना (क्रि० अ०) भीतर जाना, भीतर प्रवेश करना।
ढुनमुनिया (सं० स्त्री०) लड़कों का एक खेल, इसमें लड़के लुढ़कते हैं, कजली गाने का एक ढंग जिसमें स्त्रियाँ घेरा बाँध कर गाती हैं।
ढुरकना (क्रि० अ०) लुढ़कना, खिसकना, गिरना पड़ना।
ढुरना (क्रि० अ०) नाचना, कबूतर आदि का चलाना, बहना, आना जाना।
ढुरहुरी (सं० स्त्री०) लुढ़कन, इधर उधर जाना।
ढुराना (क्रि० स०) हिलाना, डुलाना, नचाना, चलाना फिराना, पलना डुलाना।
ढुरी (सं० स्त्री०) पगडंडी, रास्ता।
ढुलकना (क्रि० अ०) लुढ़कना, गिरना, ढलुईं ज़मीन पर गिरना, बेवश होकर नीचे की ओर आना।
ढुलकाना (क्रि० स०) गिराना, लुढ़काना, ढँगलाना।
ढुलना (क्रि० अ०) बहना, ढलना, गिर कर बहना, पानी आदि का बहना।
ढुलवाई (सं० स्त्री०) बोझा आदि ढोने की मजूरी, ढोना, ढोने का काम। [कराना।
ढुलवाना (क्रि० स०) ढोआई कराना, ढोने का काम
ढुलाई (सं० स्त्री०) ढुलवाई।
ढुलाना (क्रि०) देखो "ढुलवाना"।
ढूंढ (सं० स्त्री०) तलाश, खोज, अन्वेषण।
ढूँढ ढाँढ (क्रि०) पूँछताछ, खोज, अनुसन्धान, टोह।
ढूँढन (क्रि०) खोज, टोह, सन्धान। [पता लगाना।
ढूंढना (क्रि० स०) खोजना, पता लगाना, भूली वस्तु का
ढूआ (सं० पु०) मेंड़, बांध।
ढूक (सं० पु०) ताक, ढुक्की।
ढूकना (क्रि०) पैठना, घुसना, पास आना।
ढुंढना ढाँढ़ना (क्रि०) खोजना, तलाश करना, प्रयत्न पूर्वक ढूंढना।
ढूँढार (सं० पु०) राजपूताने के अन्तर्गत एक प्रान्त विशेष, जयपुर राज्य का प्रान्त।
ढूका (सं० पु०) दस पूले घास का परिमाण, किसी की बात सुनने के लिए छिपना, छिप कर बातें सुनना।
ढूँढ़िया (सं० पु०) जैन सम्प्रदाय, इस संप्रदाय के साधू भी ढूढ़िया कहे जाते हैं। यह सम्प्रदाय श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय का अंग है (वि०) ढूंढने वाला।
ढूसर (सं० पु०) बनियों की एक जाति।
ढूह (सं० पु०) टीला, भीटा, ढीह, ऊँची जगह।
ढेक (सं० पु०) सारस पक्षी।
ढेकली (सं० स्त्री०) पानी निकालने का एक यन्त्र, यह कुएँ में लगाया जाता है।
ढेका (सं० पु०) धान आदि कूटने का एक यन्त्र।
ढेकिया (सं० स्त्री०) छोटा ढेका, एक प्रकार की सिलाई।
ढेकी (सं० स्त्री०) देखो "ढेका"।
ढेंउस (सं० पु०) तरकारी विशेष।
ढेंडी (सं० स्त्री०) पोस्ता का फूल, कर्णभूषण विशेष।
ढेढ (सं० पु०) नीच जाति विशेष, ढोंक, कौआ।
ढेढर (सं० पु०) आँख का एक रोग, इस रोग में आंख का कोआ ऊपर की ओर निकल आता है।
ढेंढा (सं० स्त्री०) फली, कपास मटर आदि की फली।
ढेऊ (सं० पु०) लहर, ऊँची उठने वाली पानी की लहर।

ढेबुवा (सं० पु०) पैसा, गोरखपुरी या गजरशाही पैसा, पुराना पैसा।

ढेर (सं० पु०) राशि, गांज, टाल, अन्न आदि की राशि।

ढेरा (सं० पु०) रस्सी एंठने का यंत्र, चिह्न विशेष।

ढेरी (सं० स्त्री०) थाक, राशि, ढेर।

ढेलवांस (सं०स्त्री०) ढेला चलाने का रस्सी का बना एक यन्त्र, कौआ आदि के भगाने के काम में यह आता है।

ढेला (सं० पु०) ईंट पत्थर मिट्टी आदि का टुकड़ा।

ढेलाचौथ (सं० पु०) भादों शुक्ल की चतुर्थी, उस दिन चन्द्रमा के देखने से कलङ्क लगने की शङ्का होती है, अतएव कोई चन्द्रमा को नहीं देखता। यदि कोई देख ले तो उसके लिए किसी के घर में पंद्रह ढेला फेंकना प्रायश्चित है, इसी प्रायश्चित करने के लिए लोग ढेला फेंकते हैं। इसी कारण इस तिथि का नाम ढेलाचौथ पड़ गया।

ढैया (सं० पु०) अढ़ाई सेर का बाट, पहाड़ा जिसमें अढ़ाई गुना अंकों की वृद्धि होती है।

ढैया टेकर (वि०) जनशून्य, ऊजड़, शून्य, रिक्त।

ढोका (सं० पु०) पत्थर आदि का बड़ा टुकड़ा, अनगढ़ मोटा पत्थर।

ढोंग (सं० पु०) दम्भ, आडम्बर, ढकोसला, कपट व्यवहार, बनावटी आचार व्यवहार, कपटता का व्यवहार।

ढोंगधतूर (सं० पु०) छल कपट, धूर्त्तई, ठगई।

ढोंगी (सं० पु०) पाखंडी, धूर्त्त, दाम्भिक।

ढोंढ (सं०पु०) पोस्ता आदि की फलियां। [गोल भाग।

ढोंढी (सं० स्त्री०) नाभी, पेट के नीचे की ओर गहरा और

ढोक (सं० स्त्री०) प्रणाम, एक प्रकार की मछली।

ढोआ (सं० पु०) उपहार भेंट।

ढोकना (क्रि०) घूँटना, पीना।

ढोकार (सं० पु०) पत्थर का बड़ा टुकड़ा, पाँच की संख्या।

ढोटा (सं० पु०) पुत्र, बेटा, आत्मज, तनय।

ढोटी (सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री।

ढोटौना (सं० पु०) पुत्र, बेटा, ढोटा।

ढोना (क्रि०स०) बोझा ले जाना, एक स्थान से ले जाकर बोझ दूसरी जगह पहुँचाना।

ढोर (सं० पु०) पशु, बैल, गाय, भैंस आदि।

ढोरना (क्रि० स०) पानी आदि का गिराना, बहाना।

ढोरा (सं० पु०) ताजिया।

ढोरा (सं० स्त्री०) दाह, ताप।

ढोल (सं० पु०) एक प्रकार का बाजा, एक जाति, इस जाति के लोग नाचते गाते हैं।

ढोलक (सं० पु०) ढोल।

ढोलकिया (सं० पु०) ढोलक बजाने वाला।

ढोलकी (सं० स्त्री०) छोटी ढोल, ढोलक जिसे गाने वाली स्त्रियाँ बजाती हैं।

ढोलन (सं० पु०) रसिक, प्रियतम। [की स्त्री।

ढोलनी (सं० स्त्री०) पलना, बच्चों का झूला, ढोल जाति

ढोला (सं० पु०) एक प्रकार का कीड़ा।

ढोलिनी (सं० स्त्री०) ढोलिया, ढोल जाति की स्त्री, ढोल बजाने वाली स्त्री।

ढोलिया (सं० पु०) ढोल बजाने वाला।

ढोली (सं० स्त्री०) दो सौ पानों की गड्डी।

ढोलैन (सं० पु०) ढोलिया।

ढोव (सं० पु०) उपहार, वह पदार्थ जो किसी मंगल के अवसर पर राजा को भेंट देते हैं।

ढौंचा (सं० पु०) एक पहाड़ा, जिसमें साढ़े चारगुना अधिक अंक बढ़ते हैं। [ध्वनि करना।

ढौंसना (क्रि० स०) आनन्द प्रकाश करने के लिए अव्यक्त

ढौकन (सं० पु०) नजराना, घूस, उत्कोच।

ढौरी (सं० स्त्री०) रट, धुन।

ण

ण—टवर्ग का पाँचवाँ वर्ण, मूर्द्धा से इसका उच्चारण होता है। संस्कृत के एकाक्षर कोष में इसके ये अर्थ हैं। (सं० पु०) शिव, ज्ञान, बुद्ध, दान, निर्णय

णगण (सं० पु०) छन्द शास्त्र का एक गण।

त

त—भारतीय लिपि के व्यञ्जन का १६ वाँ वर्ण है, इसका उच्चारणस्थान दन्त है, यह तवर्ग का आदि अक्षर है।

तंग (सं० पु०) घोड़े पर ज़ीन कसने का तस्मा, घोड़े की पेटी, (वि०) सक्रेत, दुखित, कड़ा, छोटा।

मुहा०—तंग आना=घबरा जाना। तंग करना—सताना। हाथ तंग होना—धन हीन होना।

तंगदिल (फ़ा० वि०) सकुंचित हृदय, ओछे विचार वाला, अनुदार। [आपत्ति-ग्रस्त।

तंगहाल (फ़ा० वि०) दरिद्री, मुसीबत वाला, रोगयुक्त,

तंगदस्त (फ़ा० वि०) दीन, गरीब, दरिद्री, धन रहित, कंजूस। [मुसीबत, धनहीनता।

तंगी (फ़ा० सं० स्त्री०) न्यूनता, कमी, दरिद्रता, ग़रीबी,

तंज़ेब (सं० स्त्री०) महीन मलमल की एक जाति।

तंत (सं० पु०) धागा, तंतु, डोरा, तागा, (स्त्री०) शीघ्रता, आतुरता, तारदार सितार आदि बाजे, तन्त्रशास्त्र, लालसा, इच्छा, मर्ज़ी, आधीनता, वशता।

तंतरी (सं० पु०) तारोक्त बाजों को बजाने वाला व्यक्ति।

तंत्रमंत्र (सं० पु०) तन्त्र मंत्र, उपाय, योजना।

तंद्रा (सं० स्त्री०) अवस्था विशेष, तन्द्रा। [होती है।

तंदुआ (सं० पु०) बारहमासी घास जो जङ्गल में पैदा

तंदुल (सं० पु०) तण्डुल, चावल, या चावल का पानी जो वैदिक में हितकारी समझा गया है।

तंदूर (सं० पु०) एक प्रकार का बड़ा चूल्हा, भट्ठी विशेष अथवा बाजारू दूकान जहाँ मुसलमानी खाना बनता हो। [रेशम।

तंदूरी (सं० स्त्री०) भट्ठी संबन्धी, मालदह से आने वाला

तंदेही (सं० स्त्री०) परिश्रम, ताकीद, कार्यार्थ चेतावनी, प्रयत्न।

तंबा (सं० स्त्री०) गैया, गाय, गौ।

तंबाकू (सं० पु०) एक प्रकार की गर्मी उत्पन्न करने वाली नशीली पत्तियाँ जिन्हें लोग खाया, पिया और सूँघा भी करते हैं, तमाकू, सुरती।

तंबिया (सं० स्त्री०) ताँबे की बनी हुई कटोरी या छोटा तसला या बर्तन। [दण्ड, शिक्षा।

तंबीह (सं०स्त्री०) चैतन्य करने वाली सूचना या क्रिया,

तंबू (सं० पु०) कपड़े का बना हुआ घर, डेरा, खेमा, शामियाना।

तंबूरा (सं० पु०) छोटा ढोल, तमूरा।

तंबोलिन (सं० स्त्री०) पान का व्यापार करने वाली एक जाति की स्त्री, तम्बोली की पत्नी, बरइन, बरई की स्त्री।

तंबोली (सं० पु०) बरई, पान बेचने वाला पुरुष।

तअल्लुक़ (अ० सं० पु०) सम्बन्ध, लगाव, रिश्ता, इलाक़ा।

तअल्लुक़ा (अ० सं० पु०) ज़मीदारी का वह हिस्सा जो किसी एक के आधीन हो, इलाक़ा, हद, सीमा।

तअल्लुक़ेदार (अ० सं० पु०) किसी तअल्लुक़े का स्वामी, गाँव आदि सम्पत्ति का अधिकारी।

तअस्सुब (अ० सं० पु०) पक्षपात, जो जाति या धर्म से सम्बन्ध रखता हो।

तइसा (वि०) तैसा, जैसा, वैसा।

तईं (सं० पु०) लिए।

तई (सं० स्त्री०) थाली की भाँति की कढ़ाई।

तऊ (अव्य०) तथापि, तौभी, तिस पर, जिस पर, तब भी।

तक (अव्य०) काल या सीमा सूचित करने वाली विभक्ति, (सं० स्त्री०) तकड़ी, तराज़ू का एक पलड़ा, पल्ला।

तक तक (सं० पु०) पशु आदि के हाँकने का शब्द।

तक़दीर (अ० सं० स्त्री०) प्रारब्ध, भाग्य, क़िस्मत, नसीब।

तकना (क्रि० स०) निगाह करना, देखना, शरण लेना।

तकरार (सं० स्त्री०) झगड़ा, लड़ाई, फ़सल समाप्ति के पश्चात् खाद डाल कर जोता जाने वाला खेत, कविता में विषय का दुहराना।

तक़रीर (अ० सं० स्त्री०) वार्तालाप, भाषण, गुफ़्तगू।

तकला (सं० पु०) तकुआ, टेकुआ, लोहे की वह सलाई जिसमें कुकड़ी बनती है, कलाबत्तू लपेटने का यन्त्र, जिसे टेकुरी कहते हैं।

मुहा०—तकले से बल निकलना=सीधा करना, ऐब दूर कर देना, यथोचित रूप में ला देना।

तकली (सं० स्त्री०) देखो "तकला"।

तकलीफ़ (अ० सं० स्त्री०) दुःख, आपत्ति, विपत्ति, मुसीबत ।
तकवाहा (सं० पु०) चौकीदार, पहरुआ ।
तकवाही (सं० स्त्री०) चौकीदारी, पहरा ।
तक़सीम (अ० सं० स्त्री०) बटाई, विभक्त करने की क्रिया, भाग । [या भाव ।
तकाई (सं० स्त्री०) ताकने की मजूरी, ताकने की क्रिया
तक़ाज़ा (अ० सं० पु०) माँग, तगादा, प्रेरणा ।
तकान (सं० पु०) भाव भंगी, ढब ।
तकाना (क्रि० स०) किसी के द्वारा तकाई कराना, दिखाई, किसी तरफ भगाना, भेजना ।
तक़ावी (अ० सं० स्त्री०) ज़मीदार या राज की ओर से दरिद्र कृषकों को मिली हुई आर्थिक सहायता, जो पीछे ऋण की भाँति वापिस ले ली जाती है ।
तकि (अव्य०) ताक कर, लक्ष्य कर, देखकर ।
तकिया (सं० पु०) कपड़े की बनी रुईदार थैली जिसे सिर के नीचे रख कर सोते हैं, आश्रय-स्थान, यवन साधुओं के रहने का एकान्त स्थान ।
तकीनी (सं० स्त्री०) छोटा उसीसा ।
तकुआ (सं० पु०) नोकदार सलाई, तकला ।
तकैया (सं० पु०) देखने या ताकने वाला ।
तक्र (सं० पु०) घृत रहित पतली दही, छाछ, मट्ठा ।
तक्ष (सं० पु०) वृक सुत, भरत का बड़ा पुत्र, पतला करने का काम ।
तक्षक (सं० पु०) एक नाग विशेष, जिसने परीक्षित को डसा था, एक वर्णसंकर जाति, विश्वकर्मा, सूत्रधार, वायु विशेष ।
तक्षशिला (सं० स्त्री०) एक प्राचीन नगर विशेष, रावलपिंडी के पास इसके ध्वंसावशेष हैं ।
तख़मीना (अ० सं० पु०) अनुमान, अटकल ।
तखरी (सं० स्त्री०) तराजू, लकड़ी, अन्नादि सामग्री तौलने का तुला ।
तख़लिया (अ० सं० पु०) एकान्त स्थान, निर्जन स्थान ।
तखान (सं०) तक्षण, बढ़ई, लकड़ी काटने वाला, खाती ।
तखिहा (वि०) दो प्रकार की आँखों वाला बैल ।
तख़्त (फ़ा० सं० पु०) बड़ी चौकी, राज्यासन, राजाओं के बैठने की जगह, सिंहासन ।
तख़्तताऊस (सं० पु०) एक बढ़िया सिंहासन, जिसे मुगल सुल्तान शाहजहाँ ने बनवाया था ।
तख़्तनशीन (फ़ा०वि०) राज्याधिकार प्राप्त, सिंहासनारूढ़।
तख़्ता (सं० पु०) लकड़ी का वह चिरा हुआ भाग जिसकी लम्बाई चौड़ाई से मुटाई बहुत कम हो, पटरा, बड़ा पल्ला । [मज़बूत ।
तगड़ा (वि०) बलिष्ट, बलवान, शक्तिशाली, मोटा,
तगड़ी (सं० स्त्री०) करधनी, कटिसूत्र ।
तगण (सं० पु०) छन्द शास्त्रानुसार वह वर्ण-समूह जिसमें दो दीर्घ और एक ह्रस्व हो ।
तगना (क्रि० स०) सीना, तागा जाना, सिलाई करना ।
तगमा (सं० पु०) तमगा, सम्मान में मिला चिह्न विशेष ।
तगर (सं० पु०) एक वृक्ष विशेष या उसकी जड़ जो औषधियों के व्यवहार में लाई जाती है, मैनफल ।
तगा (सं० पु०) धागा, डोरा रुहेलखण्ड में रहने वाली एक जाति ।
तगाई (सं० स्त्री०) तागने का काम या उसकी मज़दूरी, सिलाई, या उसके परिश्रम का धन ।
तगादा (सं० पु०) देखो " तक़ाज़ा " ।
तगाना (क्रि० स०) सिलाना, दूसरे के द्वारा तागने का काम कराना, या किसी अन्य को तागने की प्रेरणा करना ।
तागा (सं० पु०) सूत, डोरा ।
तचना (क्रि० अ०) गरम होना, दुखी या दुखित होना ।
तङ्ग (सं० पु०) हैरान, चुस्त, ओछा, घोड़े की जीन की पेटी, कसन ।
तङ्का (सं० पु०) दो पैसे, टका ।
तङ्गी (सं० स्त्री०) संकीर्णता, क्लेश, ग़रीबी ।
तचा (सं० स्त्री०) चमड़ा, चर्म्म, छाल । [झुलसाना ।
तचाना (क्रि० स०) गर्म करना, तपाना, जलाना,
तज (सं० पु०) तेजपत्र, तेजपात या उसका वृक्ष, एक सुगन्धित औषधि ।
तजई (क्रि०) त्यागता है, छोड़ देता है ।
तजन (सं० पु०) त्याग या उसकी क्रिया, कोड़ा, चाबुक, पशु हाँकने का डण्डा । [सम्बन्ध तोड़ना ।
तजना (क्रि० स०) त्याग करना, त्यागना, छोड़ना,
तजरबा (सं० पु०) अनुभव, ज्ञान विशेष जो अपने साथ संघटित हो चुका हो, अनुष्ठान के बाद का ज्ञान ।
तजरुबत (सं०पु०) अनुभव, विचार, यथार्थ ज्ञान, तजरुबा ।

तजवीज़ (सं० स्त्री०) उपाय, राय, सम्मति, निर्णय, प्रबन्ध ।
तजि (क्रि०) छोड़ कर, त्याग कर ।
तजिये (क्रि०) छोड़िये, छोड़ ।
तजी (क्रि०) छोड़ कर, त्याग कर ।
तज्ञ (सं०पु०) तत्ववेत्ता, आत्मज्ञानी, तत्व जानने वाला ।
तट (सं० पु०) किनारा, कछार, क्षेत्र, महादेव, प्रदेश (वि०) समीप, निकट, पास ।
तटस्थ (वि०) समीपवर्ती, निकट रहने वाला, निरपेक्ष संकुचित ।
तटका (वि०) देखो " टटका " ।
तटाक (सं० पु०) तड़ाग, तलाव ।
तटिनी (सं० स्त्री०) नदी ।
तटी (सं० स्त्री०) नदी तीर ।
तड़ (सं० पु०) समाजिक दल, विभाग, टोली, स्थलीय शुष्कता, थप्पड़, आयोजन, अव्यक्त शब्द ।
तड़क (सं० स्त्री०) टूटने की ध्वनि, चटक, खिलने के हेतु किसी चीज़ पर पड़ा हुआ चिह्न, तड़काव, दीवार से मुँड़ेर तक लगाई जाने वाली लकड़ी ।
तड़कना (क्रि० अ०) चटकना, टूटना ।
तड़का (सं० पु०) सूर्योदय काल, सबेरा, प्रातःकाल, सुबह, छौंक, बघार, या वह वस्तु जिसका बघार दिया जाय ।
तड़काना (क्रि० स०) बघार देना, छौंका देना, छौंकना, बघारना, चिढ़ाना, पत्थर आदि का तोड़ना ।
तड़कीला (वि०) कट जाने वाला, तड़क जाने वाला, चटकने वाला, चमकदार, भड़कीला ।
तड़के (अव्य०) सवेरे, प्रातःकाल के समय ।
तड़तड़ (सं० पु०) लकड़ी आदि टूटने का शब्द ।
तड़तड़ाना (क्रि० अ०) कड़कड़ाना, तड़तड़ शब्द होना, ज़ोर से शब्द होना ।
तड़तड़ाहट (सं० स्त्री०) कड़कड़ाने की क्रिया या भाव ।
तड़प (सं० स्त्री०) चमक, झपट, भड़क, कड़क ।
तड़पड़ा (सं० पु०) वृष्टि गिरने का शब्द, पानी बरसने का शब्द ।
तड़पना (क्रि० अ०) वेदना के कारण व्याकुल होना, बबड़ाना, फड़फड़ाना, तलमलाना, हाथ पैर पटकना, छटपटाना ।
तड़पवाना (क्रि० स०) तड़पाने की क्रिया दूसरे से कराना ।
तड़पाना (क्रि० स०) वेदना पहुंचाकर घबड़ा देना, व्याकुल करना, ऐसा व्यवहार करना जो दूसरे को गर्जने के लिए मजबूर होना पड़े ।
तड़पीला (वि०) प्रभावशाली, फुर्तीला, चटपटिया ।
तड़फ (सं० स्त्री०) व्याकुलता, बेचैनी ।
तड़फड़ाना (क्रि० अ०) देखो " तड़पना " ।
तड़फड़ाहट (सं० स्त्री०) छटपटाहट, धड़क, तड़क ।
तड़फड़ी (सं०स्त्री०) छटपटी, धुकधुकी, शङ्का से छटपटी ।
तड़फना (क्रि०) तड़फड़ाना, व्याकुल होना, छटपटाना ।
तड़फाना (क्रि०) तड़पाना, व्याकुल करना, उद्विग्न करना ।
तड़बंदी (सं० स्त्री०) दलबन्दी, पक्ष बनाना, पृथक् समाज एकत्रित करना ।
तड़ा (सं० पु०) टापू, उपद्वीप, दोआब ।
तड़ाक (सं० स्त्री०) शीघ्र, तुरन्त, भड़कदार ।
तड़ाकपड़ाग (अव्य०) बहुत जल्दी, अति शीघ्र, अत्यन्त शीघ्रता से ।
तड़ाका (सं० पु०) ज़ोर से मारने या टूटने की आवाज़, तड़ शब्द की ध्वनि, (क्रि० वि०) शीघ्र, झटपट, चटपट, तुरन्त, त्वरित ।
तड़ाकातोर (सं०पु०) मारने का शब्द, टूटने की ध्वनि ।
तड़ाग (सं०पु०) ताल, तलाव, तालाब, सरोवर, पोखर, पुष्कर ।
तड़ाघात (सं०पु०)ऊपर उठे हुए हस्ति शुण्ड का आघात ।
तड़ातड़ (वि०) जल्दी जल्दी, तड़ातड़ शब्द के साथ, शीघ्रता से ।
तड़ाना (क्रि० स०) दिखाना, झँपाना, तड़ाने में दूसरे को शामिल करना ।
तड़ापा (सं० पु०) छैलापन, चटक मटक, तड़क भड़क ।
तड़ावा (सं०स्त्री०) अभिमान, तड़क भड़क, छल, कपट ।
तड़ित (सं० स्त्री०) चपला, बिजली, विद्युत ।
तड़ितकुमार (सं० पु०) जैनियों का एक राजकुमार ।
तड़ितपति (सं० पु०) बादल ।
तड़ितप्रभा (सं० स्त्री०) कार्त्तिकेय की एक मात्रिका ।
तड़ितवान (सं० पु०) बादल, नागरमोथा ।
तड़ितसमाचार (सं० पु०) बिजुली के द्वारा समाचार भेजना ।
तड़िया (सं० स्त्री०) समुद्र तट का पवन ।
तड़िल्लता (सं० स्त्री०) विद्युल्लता, बिजुली ।

तड़ी (सं० स्त्री०) हलका थप्पड़, चपत, धौल, कपट, धोखे से मारने की क्रिया, बहाना, हीला।
तण्डु (सं०पु०) शिव का द्वारपाल, कर्त्तव्य कर्मों का उपदेशक
तण्डुक (सं० पु०) खंजन पक्षी, खंडर्लीच, भारद्वाज पक्षी, धरन, धन्न।
तण्डुल (सं० पु०) चावल, छिलका रहित धान, चाउर।
तण्डुलिया (सं० स्त्री०) चावल की बनाई सामग्री।
तत (सं० पु०) वायु, विस्तार, पिता, पुत्र, बाजा जो तारों से बजे।
ततक्षन (अव्य०) तत्क्षण, उसी समय, तत्काल।
ततताथेई (सं० स्त्री०) नाच की गति, नृत्य की बोली।
ततर्बार (सं० स्त्री०) युक्ति, तदबीर।
ततरी (सं० स्त्री०) अठखेलन, चपला युवती, फलदार वृक्ष विशेष। [जाति।
ततवा (सं०पु०) जाति विशेष, कपड़ा बिनने वाली हिन्दू
ततहरा (सं०पु०) गर्म करने का हंडा।
तताई (सं० स्त्री०) गरमाही, तप्त होने की क्रिया या भाव, गरमाहट, गर्मी, ताप।
तताना (क्रि०) गरम करना, तपाना, सेंकना।
ततराना (क्रि० अ०) गरम जल से धोना, धार देकर धोना, ततेरा देकर धोना।
ततेड़ा (सं० पु०) पानी आदि गर्म करने का पात्र, हंड।
ततैया (सं०स्त्री०) एक ज़हरीला उड़ने वाला कीड़ा, बर्रै, भिड़, अधिक कड़ुवी मिर्च, (वि०) तेज, तीव्र, फुरतीला, होशियार, चञ्चल, चालाक।
तत् (अव्य०) वह, वही, ब्रह्मा का विशेषण, प्रसिद्धार्थक वायु।
तत्कन्द (सं० पु०) अदरक, बाराही कन्द। [हुआ।
तत्कर्तृक (वि०) उसका बनाया, उसके द्वारा बनाया
तत्कर्म (सं०पु०) वह कर्म, जाना हुआ कार्य, वही कर्म।
तत्कार्य (सं० पु०) वह कार्य, सो काम।
तत्काल (वि०) अभी, फौरन, शीघ्र, तुरन्त, उसी समय, उसी क्षण।
तत्कालिक (वि०) उसी समय का।
तत्कालीन (वि०) उसी काल या समय का।
तत्कालोत्पन्न (वि०) उस समय का उत्पन्न।
तत्कृत (वि०) उसका बनाया, उसके द्वारा बनाया हुआ।
तत्क्षण (वि०) देखो "तत्काल"।
तत्तुल्य (सं० पु०) उसके समान, उसके बराबर।

तत्ता (वि०) तप्त, जलता, गरम। [बहलाव।
तत्ताथंबा (सं० पु०) धीरज, दिलासा, बीचबिचाव,
तत्व (सं० पु०) दरअसल, असलियत, वास्तविक स्थिति, यथार्थता, जगत का मुख्य कारण, पञ्चभूत, परब्रह्म, सार, मतलब, अर्थ।
तत्वकारक (सं०पु०) यथार्थ वितर्क करने वाला, पंडित।
तत्वज्ञ (सं० पु०) दार्शनिक, ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान रखने वाला, तत्वों को पहिचानने वाला, ज्ञानी, तत्वज्ञाता। [ब्रह्मज्ञान कहते हैं।
तत्वज्ञान (सं० पु०) वास्तविक या मूल ज्ञान जिसे
तत्वज्ञानी (सं० पु०) देखो "तत्वज्ञ"।
तत्वदर्शी (सं० पु०) जिसे तत्वों का ज्ञान हो, रैवतमनु के पुत्र का नाम।
तत्ववादी (सं० पु०) तत्ववाद का जानने वाला और तत्समान भाषण करने वाला, यथार्थ स्पष्ट बात कहने वाला।
तत्वविद्या (सं० स्त्री०) ब्रह्मज्ञान, दर्शनशास्त्री विद्या।
तत्ववेत्ता (सं० पु०) दार्शनिक, तत्वज्ञाता, ज्ञानी, तत्वज्ञ। [पड़ताल।
तत्वावधान (सं० पु०) निरीक्षण, देख भाल, जाँच
तत्वावधानक (सं० पु०) होशियारी करने वाला, निरीक्षक, देखरेख कर्ता, देख भाल करने वाला।
तत्वावधायक (सं० पु०) रक्षक, निगरक्षक, रखवाली करने वाला।
तत्वावधायकता (सं० स्त्री०) अभिभावकता, सहायता।
तत्पर (वि०) कटिबद्ध, होशियार, तय्यार, उद्यत, निपुण, चतुर।
तत्परायण (वि०) उसके अनुरक्त, उसके अनुवर्ती।
तत्पुरुष (सं० पु०) समास विशेष, कल्प विशेष, एक रुद्र, परमात्मा, देव, ईश्वर, ब्रह्म।
तत्फल (सं० पु०) पीलू वृक्ष, जामुन वृक्ष, श्वेत कमल।
तत्र (क्रि० वि०) वहाँ, उस स्थल पर, उस ठावँ पर, उस जगह।
तत्रत्य (वि०) उस स्थान का, उस स्थान सम्बन्धी।
तत्रभवती (सं० स्त्री०) आर्या, माननीया, पूजनीया, पूज्य स्त्री का सम्बोधन। [श्रेष्ठ
तत्रभवान (सं० पु०) पूज्यवर्य, श्रद्धालु, मान्य, उत्तम,
तत्रापि (अव्य०) तब भी, तौभी।

तत्सम् (सं० पु०) वह शब्द जो हिन्दी भाषा में संस्कृत के समान व्यवहार होता हो ; जैसे—स्वरूप, दया ब्रह्म इत्यादि ।

तथा (अव्य०) वैसे, और, उस प्रकार, इस भाँति, इसी तरह, (सं० पु०) अन्त, सीमा, हद, निश्चय, ठीक, सामान्य, समानता, (स्त्री०) तत्व, सत्य, सच ।

तथागत (सं० पु०) महात्मा बुद्ध देव का नाम है, जिन, जैन ।

तथात्र (अव्य०) जैसे ।

तथापि (अव्य०) तौभी, तब भी ।

तथास्तु (अव्य०) वैसाही, वैसाही हो ।

तथैव (अव्य०) वैसाही, उसी प्रकार, उसी भाँति ।

तथ्य (सं० पु०) सत्यता, यथार्थता, तत्वार्थ

तथ्यवादी (वि०) सत्यवक्ता, ज्ञानी, यथार्थ भाषण करने [वाला ।

तथ्यानुसंधान (सं० पु०) सत्य का अनुसंधान, यथार्थ की जांच करना ।

तद् (वि०) तत, वह, सो ।

तदंश (सं० पु०) वह अंश, उसका अंश ।

तदकरण (सं० पु०) वैसा नहीं, उसको नहीं करना ।

तदतिपात (सं० पु०) उसका अतिक्रम करना, उल्लङ्घन करना ।

तदधिक (वि०) उसके अतिरिक्त, उससे अधिक ।

तदनन्तर (वि०) तिसके बाद, उसके पश्चात्, उसके उपरान्त ।

तदनु (अव्य०)उसके बाद,उसके अनन्तर ।

तदनुग (वि०) उसके पीछे चलने वाला, उसके पश्चात् [चलने वाला ।

तदनुगत (वि०) उसका अनुगत, उसका अनुवर्ती ।

तदनुयायी (वि०) उसका अनुगामी ।

तदनुरूप (वि०) तत्समान, उसी प्रकार, वैसाही, उसी [भाँति ।

तदनुसार (वि०) उसके अनुकूल,उसके समान,तदनुरूप ।

तदन्त (अव्य०) शेष, सीमा, अवधि ।

तदन्तः (अव्य०) उसके मध्य, उसके अभ्यन्तर ।

तदन्तःपाति (वि०) तन्मध्यवर्ती, उसके बीच में का ।

तदपि (अव्य०) तिस पर भी, तौभी, तब भी ।

तदबीर (सं० स्त्री०) सफलता का साधन, तरकीब, उपाय, प्रयत्न, इलाज ।

तदर्थ (अव्य०) तन्निमित्त, उस कारण । (वि०) वह [अभिप्राय ।

तदवस्थ (वि०) उसी प्रकार की अवस्था को प्राप्त, एक प्रकार की अवस्था वाले ।

तदवाध (अव्य०) उस समय से, उसी समय से ।

तदा (अव्य०) उस समय, उस काल, तब ।

तदाकार (वि०) वैसा ही, तन्मय, तद्रूप ।

तदात्व (सं० पु०) वह काल, उस समय ।

तदादि (अव्य०) तब से, उस समय से ।

तदानीम (अव्य०) उस समय, उस काल ।

तदीय (सर्व०) तत्सम्बन्धी, उसका ।

तदुक्ति (सं० स्त्री०) उसका वचन, उसकी युक्ति ।

तदुत्तम (वि०) उसकी अपेक्षा उत्तम ।

तदुत्तर (सं० पु०) उसका उत्तर, वह उत्तर, उसके बाद, उसके अनन्तर ।

तदुपरान्त (वि०) तत्पश्चात्, उसके बाद, उसके पीछे, [तदनन्तर ।

तदुपरि (अव्य०) उसके ऊपर, उसके मध्य ।

तदेक चित्त (वि०) समान स्वभाव, उसका अनुरक्त, उसका अनुवर्ती ।

तदेव (अव्य०) वही ।

तद्गत (वि०) उसके अन्तर्गत ।

तद्धन (वि०) कृपण, कम खर्च करने वाला, उतना ही [धन ।

तद्गुण (सं० पु०) अलङ्कार विशेष जिसमें अपना गुण त्याग किसी अन्य वस्तु का गुण धारण किया जाय ।

तद्धित (सं० पु०) प्रत्यय विशेष, जिसे अन्त में लगाने से शब्द बन जाता है ।

तद्वत् (वि०) उसी के समान ।

तर्धा (अव्य०) तभी, तब ही, त्यों ही ।

तद्भव (सं० पु०) संस्कृत का अपभ्रंश रूप जो भाषा में व्यवहार हो; जैसे—हस्त का हाथ, अर्द्ध का आधा इत्यादि ।

तद्यपि (अव्य०) तौभी,तथापि,तब भी, तिस प्रकार भी ।

तन (सं० पु०) देह, बदन, शरीर, जिस्म ।

मुहा०—तन लगना=जी में आना, हृदय ग्राह्य होना । भोजन तन नहीं लगता=शरीर को लाभदायक नहीं होता । तन तोड़ना=अकड़ना, अँगड़ाई लेना । तन दो=ध्यान दो, जी लगाओ । तनमन वशकर=इन्द्रिय रोक कर, अवयव और जी लगाकर । तन दिखाना=विषय कराना, प्रसङ्ग करना ।

तनक (वि०) अल्प, थोड़ी ।

तनकाऊ (वि०) थोड़ा भी, ज़रा भी, कुछ भी ।

देवान्तक (सं० पु०) रावण का पुत्र जिसका बध हनुमान ने किया था।
देवान्न (सं० पु०) चरु, हवि।
देवारि (सं० पु०) दैत्य, राक्षस, असुर। [देने वाला।
देवाल (सं० पु०) दीवार, चारदीवारी, (वि०) दाता,
देवालय (सं० पु०) देवस्थान, स्वर्ग।
देवाला (सं० पु०) दिवाला, टाट उलटना।
देवालिया (वि०) जिसका देवाला हो गया हो, निर्धन।
देवाली (सं० स्त्री०) देखो "दिवाली"।
देवालेई (सं० स्त्री०) देन लेन। [नाम।
देविका (सं० स्त्री०) वर्तमान घाघरा नदी का प्राचीन
देवी (सं० स्त्री०) दुर्गा, भवानी, देव-पत्नी, सुशील और सदाचारिणी स्त्रियों के लिए आदर-सूचक शब्द, ब्राह्मण की स्त्री, राजमहिषी, पटरानी, श्यामा पक्षी।
देवी पुराण (सं० पु०) वह उपपुराण जिसमें देवी महात्म्य का वर्णन है।
देवी भागवत (सं० पु०) एक पुराण का नाम।
देवी सूक्त (सं० पु०) ऋग्वेद शाकल संहिता का एक सूक्त जिसका देवता देवी है।
देवेन्द्र (सं० पु०) इन्द्र।
देवैया (सं० पु०) देने वाला, दाता।
देवोत्तर (सं० पु०) देव अर्पित धन।
देवोत्थान (सं० पु०) कार्तिक शुक्ल एकादशी, जिस दिन विष्णु भगवान् शेष शय्या से उठते हैं।
देवोद्यान (सं० पु०) देवताओं का उपवन, नन्दन वन।
देवोन्माद (सं० पु०) वह उन्माद जिसमें रोगी पवित्र रहता है, सुगन्धित फूलों की माला पहनता है, आँखें बन्द नहीं करता और संस्कृत बोलता है, यह देवता के कोप से होता है।
देवोपासना (सं० स्त्री०) देव-पूजा, देवाराधना।
देश (सं० पु०) पृथ्वी का विभाग, मण्डल, लोक, स्थान।
देशकार (सं० पु०) एक राग विशेष।
देशज (सं० पु०) वह शब्द जो किसी भाषा का अपभ्रंश न हो पर किसी देश के लोगों के बोलचाल का हो, (वि०) देश में उत्पन्न।
देशज्ञ (सं० पु०) देश-दशा का ज्ञाता।
देशना (सं० पु०) उपदेश।
देशभक्त (सं० पु०) देश की सेवा करने वाला।
देशभाषा (सं० स्त्री०) किसी देश या प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा। [लगते हैं।
देशमल्लार (सं० पु०) एक राग विशेष जिस में सब स्वर
देशस्थ (सं० पु०) महाराष्ट्र ब्राह्मणों का एक भेद, (वि०) देश में रहने वाला।
देशाचार (सं० पु०) देश की रीति नीति, देश की प्रथा।
देशाटन (सं० पु०) देश-भ्रमण।
देशाधिप (सं० पु०) अधिराज, राज्याधिकारी।
देशाधीश (सं० पु०) राजा।
देशान्त (सं० पु०) देश की सीमा।
देशान्तर (सं० पु०) परदेश, विदेश, सुमेरु और लङ्का के मध्यस्थ भूमि-भाग, मध्य रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी। [जो ब्रह्मज्ञान का उपदेश दे।
देशिक (सं० पु०) बटोही, पथिक, गुरु, आचार्य, वह गुरु
देशिनी (सं० स्त्री०) तर्जनी अंगुली, सूची।
देशी (सं० पु०) एक रागिनी जो दीपक राग की भार्या है, (वि०) देश का।
देशीय (वि०) देशी।
देसवाल (वि०) स्वदेशी, (सं० पु०) पटसन।
देह (सं० स्त्री०) शरीर, तन, गात्र, काय।
देहकानी (फ़ा० वि०) गँवार, देहाती।
देहज (सं० पु०) शरीर से उत्पन्न।
देहत्याग (सं० पु०) मरण, मृत्यु।
देह धारण (सं० पु०) जन्म, जीवन रक्षा।
देहधारी (वि०) शरीर धारण करने वाला।
देहपात (सं० पु०) मरण, मृत्यु।
देहभृत (सं० पु०) जीव। [भोजन, निर्वाह।
देहयात्रा (सं० स्त्री०) मृत्यु, मरण, भरण, पोषण,
देहरा (सं० पु०) देवालय, देवघर, नर देह। [लकड़ी।
देहरी (सं० स्त्री०) पटडेहरी, द्वार के चौखटे के नीचे वाली
देहली (सं० स्त्री०) देहरी।
देहली दीपक (सं० पु०) वह दीपक जो देहली पर रक्खा जाता है और उसका प्रकाश बाहर भीतर दोनों ओर जाता है, अर्थालङ्कार विशेष जिसमें मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनों ओर घटाया जाता है।
देहवंत (वि०) तनुधारी, (सं० पु०) प्राणी, शरीरी।
देहात (सं० स्त्री०) गाँव, गँवई।
देहाती (वि०) गँवार, ग्रामीण, देहात का।

देहातीत (वि०) जो शरीर से परे हो, जिसे देहाहङ्कार न हो।
देहात्मवादी (सं० पु०) शरीर ही को आत्मा मानने वाला। [समझने से हो।
देहाध्यास (सं० पु०) वह भ्रम जो देह धर्म को आत्मा
देहान्त (सं० पु०) मृत्यु, मरण, मौत।
देही (सं० पु०) जीवात्मा।
दैजा (सं० पु०) दहेज, यौतुक। [दैत्य।
दैतेय (वि०) दिति से उत्पन्न, (सं०पु०) असुर, दानव,
दैत्य (सं० पु०) दानव, असुर, दिति की सन्तान।
दैत्यगुरु (सं० पु०) शुक्राचार्य।
दैत्यपुरोधा (सं० पु०) शुक्राचार्य।
दैत्यमाता (सं०स्त्री०) दिति। [युगों के बराबर होता है।
दैत्ययुग (सं० पु०) दैत्यों का युग जो मनुष्य के चार
दैत्यसेना (सं० स्त्री०) प्रजापति की कन्या जिसको केशी दानव हर ले गया था और विवाह किया था।
दैत्याचार्य (सं० पु०) शुक्राचार्य।
दैत्यारि (सं० पु०) विष्णु, इन्द्र, देव गण।
दैत्येन्द्र (सं० पु०) दैत्यों का राजा, गंधक।
दैनंदिन (सं० पु०) प्रतिदिन होने वाला, प्रात्यहिक।
दैनिक (वि०) प्रतिदिन का, प्रात्यहिक।
दैनिक पत्र (सं० पु०) प्रतिदिन प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र। [की मजूरी।
दैनिक वेतन (सं० पु०) प्रतिदिन का वेतन, प्रत्येक दिन
दैनिकी (सं० स्त्री०) एक दिन का वेतन, एक दिन की मजूरी।
दैन्य (सं० पु०) दरिद्रता, दीनता, ग़रीबी।
दैया (सं० पु०) दैव, दई, (स्त्री०) दाई।
दैर्घ्य (सं० पु०) दीर्घता, लम्बान, चौड़ान।
दैव (सं० पु०) भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, भवितव्यता, होनी, वह अर्जित शुभाशुभ कर्म जो फल देने वाला हो।
दैवगति (सं० स्त्री०) भाग्य, प्रारब्ध, अदृष्ट, दैवी घटना।
दैवज्ञ (सं० पु०) ज्योतिषी।
दैवत (वि०) देव संबन्धी।
दैवतीर्थ (सं० पु०) अंगुलियों का अग्र भाग।
दैव दुर्विपाक (सं० पु०) दुर्भाग्य, भाग्य की प्रतिकूलता।
दैवतन्त्र (वि०) प्रारब्धानुकूल, भाग्याधीन।
दैवयुग (सं० पु०) देवताओं का युग जो मनुष्य के चार युगों के बराबर होता है।
दैवयोग (सं० पु०) संयोग, अकस्मात्।
दैववर्ष (सं० पु०) देवताओं का वर्ष जो १३१५२१ सौर दिनों का होता है।
दैववश (वि०) संयोगवश, हठात्, दैवा, अकस्मात्।
दैववशात् (वि०) "दैववश"।
दैववादी (सं०पु०) अदृष्टवादी, अकर्मण्य, आलसी।
दैव विवाह (सं० पु०) अष्ट विधि बिवाहों में से एक।
दैवश्राद्ध (सं० पु०) देवोद्देश्य से किया हुआ श्राद्ध।
दैवागत (वि०) आकस्मिक, दैवी।
दैवात् (वि०) हठात्, अकस्मात्।
दैवाधीन (सं० पु०) ईश्वराधीन।
दैवानुरागी (सं० पु०) ईश्वर का प्रेमी, ईश्वर भक्त।
दैवानुरोधी (वि०) भाग्य पर निर्भर रहने वाला।
दैवायत (सं० पु०) दैवाधीन, ईश्वराधीन।
दैविक (वि०) देव संबन्धी।
दैवी (सं० स्त्री०) ईश्वरीय, देव संबन्धी।
दैवीगति (सं० स्त्री०) प्रारब्ध, अदृष्ट, भावी, होनहार।
दैवोत्पात (सं० पु०) दैववशात्, उपद्रव।
दैवोपहत (वि०) हतभाग्य, दुर्भाग्य।
दैव्य (वि०) देव सम्बन्धी, प्रारब्ध, भाग्य, अदृष्ट।
दैशिक (वि०) देश सम्बन्धी।
दैहिक (वि०) शारीरिक, कायिक।
दैहौं (क्रि०) दूंगा।
दोंकना (क्रि० अ०) गुर्राना, गरजना।
दोंचना (क्रि० स०) दबाव डालना, वश में लाना।
दो (वि०) द्वि, एक और एक।
दोआब (फ़ा० सं० पु०) दो नदियों के बीच का देश।
दोऊ (वि०) दोनों।
दोक (सं० पु०) दो दाँत का बछड़ा।
दोकड़ा (सं० पु०) देखो "दुकड़ा"।
दोकला (सं० पु०) वह ताला जिसमें दो कल हों।
दोकोहा (सं० पु०) दो कूबर वाला ऊँट, जिस ऊँट की पीठ पर दो कूबर हों।
दोख (सं० पु०) दोष, दुर्गुण।
दोखना (क्रि० स०) दोष देना, कलङ्क लगाना।
दोखी (वि०) दोषी, अपराधी, ऐबी, बैरी, शत्रु। [न हो।
दोगला (वि०) वर्णसङ्कर, वह जो अपने असली बाप का
दोगाड़ा (सं० पु०) दो नली बंदूक।

दोगाना (वि०) दोहरा, द्विगुण, दोलड़ा ।
दोगुना (वि०) दुगुना ।
दोचंद (फ़ा० वि०) द्विगुणित, दुगुना ।
दोचना (क्रि० स०) दबाव डालना, बाध्य करना ।
दोचर (वि०) दूसरा, दुहरा ।
दोचित्ता (वि०) अस्थिर चित्त वाला, उद्विग्नमना ।
दोचित्ती (सं० स्त्री०) चित्त की अस्थिरता, द्विचित्त ।
दोजख (फ़ा० सं० पु०) नरक, एक प्रकार का पौधा ।
दोजा (सं० पु०) वह जिसका दो बिवाह हुआ हो ।
दोजिया (सं० स्त्री०) गर्भिणी स्त्री, गर्भवती स्त्री ।
दोजीवा (सं० स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।
दोतरफ़ा (वि०) दोनों ओर, दोनों ओर का ।
दोतल्ला (वि०) दो मंज़िला । [का बाजा ।
दोतारा (सं० पु०) एक प्रकार का दोशाला, एक प्रकार
दोदना (क्रि० स०) कही हुई बात का पलट जाना, मुकरना, झुठाना । [पेड़ ।
दोदिन (सं० पु०) रीठे की जाति का एक प्रकार का
दोदिला (वि०) दोचित्ता, अस्थिर चित्त वाला ।
दोधक (सं० पु०) एक छन्द विशेष जिसमें तीन भगण और अन्त में दो गुरु होते हैं ।
दोधपमान (वि०) बराबर कांपने वाला ।
दोने (सं० पु०) दो पर्वतों के मध्य का स्थान, दोआबा, वह स्थान जहाँ दो नदियों का संगम होता है, दो वस्तुओं का मेल, दो नदियों का संगम, काठ का लम्बा खोखला टुकड़ा जिसमें सिंचाई की जाती है ।
दोनली (वि०) जिसमें दो नल हों । [पात्र ।
दोना (सं० पु०) पत्ते का गोलाकार कटोरे के समान
दोनिया (सं० स्त्री०) छोटा दोना ।
दोनी (सं० स्त्री०) छोटा दोना ।
दोनों (वि०) दो, उभय ।
दो पलका (सं० पु०) एक प्रकार का कबूतर, दोहरा नगीना, नकली और असली मिला हुआ नगीना ।
दोपल्ली (वि०) दो पल्ले वाला ।
दोपहर (सं० पु०) मध्याह्न । [का समय ।
दोपहरी (सं० स्त्री०) मध्याह्न सबेरे और संध्या के बीच
दोपीठा (वि०) दो रुखा, एक तरफ़ छाप कर दूसरे तरफ़ छापना ।
दोफसली (वि०) जिसका संबंध दोनों फसल से हो ।
दोबर (वि०) दोहरा, दो बार, दोतह ।
दोबारा (क्रि०वि०) दूसरी बार ।
दोबे (सं० पु०) दुबे, ब्राह्मणों की एक पदवी ।
दोभाषिया (वि०) दुभाषिया ।
दोमंज़िला (फ़ा० वि०) दो तल्ला, दो खण्ड वाला ।
दोमट (सं० स्त्री०) बालू मिली हुई ज़मीन, वह मिट्टी जिसमें बालू का अंश भी हो ।
दोमहला (वि०) दो मंज़िला ।
दोमुँहा (वि०) दो मुँह वाला ।
दोय (वि०) दो ।
दोयम (फ़ा० वि०) दूसरा, दूसरे श्रेणी का ।
दोरंगा (वि०) दो रंग वाला ।
दोरंगी (वि०) छल, कपट ।
दोरक (सं० पु०) सितार का तार, अनन्त चतुर्दशी के दिन का सूत्र रूप प्रसाद जिसे अनन्त कहते हैं ।
दोरस (सं० पु०) दोमट, दूमट ज़मीन ।
दोरसा (वि०) दो प्रकार के स्वाद वाला । [हों ।
दोराहा (सं० पु०) वह स्थान जहां से दो राहें निकली
दोरी (सं० स्त्री०) डोरी, रस्सी । [बेल बूटे हों ।
दोरुखा (फ़ा० वि०) जिसके दोनों ओर समान रंग या
दोर्दण्ड (सं० पु०) बाँह रूपी दण्ड, भुज दण्ड ।
दोल (सं० पु०) हिंडोला, झूला, डोली ।
दोलड़ा (वि०) दो लड़ वाला ।
दोलत्ती (सं० पु०) देखो " दुलत्ती " ।
दोलन (सं० पु०) झूलन, हिलन ।
दोला (सं० पु०) दोल, हिंडोला, झूला, नील का पेड़ ।
दोलायन्त्र (सं० पु०) अर्क खींचने का एक प्रकार का यन्त्र ।
दोलायमान (वि०) चलायमान, चंचल, झूलता हुआ ।
दोलिका (सं० स्त्री०) दोला, झूला ।
दोलोत्सव (सं० पु०) वैष्णवों का वह उत्सव जो ये फाल्गुनी पूर्णिमा को मनाते हैं ।[काम लिया जाता है ।
दोश (सं०पु०) एक प्रकार का लोह जिससे रंग बनाने का
दोशाला (सं० पु०) दुशाला । [राध, चूक, भूल ।
दोष (सं० पु०) ऐब, दुर्गुण, बुराई, खोटापन, पाप, अप-
दोषक (सं० पु०) निन्दक, गाय का बछड़ा ।
दोषकर (सं० पु०) अनिष्टकर, निन्दकर ।
दोष-खण्डन (सं० पु०) अपराध-मार्जन, कलङ्क-मार्जन ।

दोषगायक (सं० पु०) निन्दक।
दोषग्राहक (सं०पु०) अपराध-कारक, निन्दक, छिद्रान्वेषी।
दोषग्राही (सं० पु०) दुर्जन, दुष्ट।
दोषघ्न (सं० पु०) कुपित बात पित्तादि को शान्त करने वाली औषध।
दोषज्ञ (सं० पु०) पण्डित, चिकित्सक।
दोषत्रय (सं० पु०) बात, पित, कफ।
दोषना (क्रि० स०) दोखना, दोष लगाना, कलङ्कित करना, अपराध लगाना।
दोषनाश (सं० पु०) पाप-मोचन, अपवाद-हरण।
दोषभाक् (सं० पु०) अपराधी, निन्दा के योग्य।
दोषा (सं० स्त्री०) रात, रजनी, संन्ध्या, निशा, बाँह।
दोषाकर (सं० पु०) चन्द्रमा।
दोषातन (वि०) रात्रि भव, रात में उत्पन्न।
दोषादोष (सं० पु०) भलाई बुराई, उत्तम निकृष्ट।
दोषारोपण (सं० पु०) अपराध लगाना, दोष लगाना।
दोषावह (वि०) दोषपूर्ण, जिसमें दोष हों।
दोषिन (सं० स्त्री०) अपराधिनी, वह कन्या जो अविवाहित दशा में ही पुरुष के साथ प्रसंग किये हो।
दोषी (वि०) पापी, बुरा, ऐबी।
दोसरा (वि०) दूसरा।
दोसाध (सं० पु०) देखो 'दुसाध'।
दोसूती (सं० स्त्री०) दो परत की चादर जो बिछाने के काम आती है।
दोस्त (फ़ा० सं० पु०) मित्र, सुहृद, स्नेही।
दोस्ताना (फ़ा० सं० पु०) मित्रता, मैत्री (वि०) दोस्ती का, मित्रता का।
दोस्ती (फ़ा० सं० स्त्री०) मैत्री, स्नेह।
दोहगा (सं० स्त्री०) रखनी, वह स्त्री जिसका पति मर गया हो और उसको किसी दूसरे पुरुष ने रख लिया हो।
दोहड़िका (सं० स्त्री०) छन्द विशेष।
दोहतड़ (सं० स्त्री०) ताली।
दोहता (सं० पु०) बेटी का बेटा।
दोहत्थड़ (सं० स्त्री०) दोनों हाथ से मारा हुआ चपत।
दोहत्था (वि०) दोनों हाथों से।
दोहद (सं० स्त्री०) गर्भ का चिह्न, गर्भिणी की इच्छा।
दोहदवती (सं० स्त्री०) गर्भवती।
दोहन (सं० पु०) दुहना, दोहनी।
दोहनी (सं० स्त्री०) दूध की हाँड़ी, दुग्धपात्र।
दोहर (सं० स्त्री०) दोहरी चद्दर।
दोहरना (क्रि० स०) दोहरा करना, दो परत करना, आवृत्ति करना (क्रि० अ०) दोहरा होना, दूसरी आवृत्ति होना।
दोहरा (वि०) दो तह, दो परत, दुगुना।
दोहराना (क्रि० स०) दोबारा करना, पुनरावृत्ति करना।
दोहराव (सं० पु०) दोहराने का काम, तह।
दोहला (वि०) दो बार की ब्याई हुई गौ आदि।
दोहली (सं० स्त्री०) अशोक वृक्ष, आक, मदार।
दोहा (सं० पु०) चार चरण का एक छन्द, जिसके प्रथम और तृतीय चरण में १३ १३ मात्रा और द्वितीय चतुर्थ में ११-११ मात्राएँ होती हैं।
दोहाई (सं० स्त्री०) शपथ, कसम, गुहार, पुकार।
दोहान (सं० पु०) दो वर्ष का बछवा।
दोहाव (सं० पु०) काश्तकारों की गौओं का वह दूध जो ज़मीदारों को नज़र करना पड़ता है।
दोहिता (सं० पु०) दौहित्र, बेटी का बेटा।
दोही (सं० पु०) एक चार चरण का छन्द जिसके प्रथम और तृतीय चरण में १५-१५ मात्राएँ और द्वितीय और चतुर्थ चरण में ११-११ मात्राएँ होती हैं।
दौंकना (क्रि०अ०) चमकना, चमचमाना, दमकना।
दौंगरा (सं० पु०) हलकी वर्षा जो गरमी में होती है।
दौंचना (क्रि० स०) दांव पेंच से लेना, दबा कर लेना।
दौंरी (सं० स्त्री०) दंवरी करने वाले बैलों का झुण्ड।
दौड़ (सं० स्त्री०) धावा, द्रुतगति, वेग सहित गमन।
दौड़धूप (सं० स्त्री०) परिश्रम, उद्योग, धंधा, प्रयत्न।
दौड़ना (क्रि० अ०) धावना, वेग से चलना, द्रुत गमन करना।
दौड़ाक (वि०) दौड़ने वाला।
दौड़ादौड़ (वि०) अथक, अविश्रान्त।
दौड़ा दौड़ी (सं० स्त्री०) दौड़धूप।
दौड़ाना (क्रि० स०) वेग के साथ चलाना।
दौड़ाहा (सं० पु०) दौड़ने वाला, हरकारा।
दौत्य (सं० पु०) दूत का काम।
दौना (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा।
दौर (सं० पु०) भ्रमण, फेर।
दौरना (क्रि० अ०) दौड़ना।
दौरा (सं० पु०) फेरा, चक्कर, भ्रमण, टोकरा।

दौरात्म्य (सं० पु०) दुष्टता, दुर्जनता ।
दौरादौर (वि०) अविश्रान्त, लगातार ।
दौरान (फ़ा० सं० पु०) चक्कर, फेरा, झोंक, सिलसिला ।
दौरी (सं० स्त्री०) डलिया, चँगेली, टोकरी ।
दौर्जन्य (सं० स्त्री०) दुष्टता, दुर्जनता ।
दौर्बल्य (सं० पु०) दुर्बलता, नाताक़ती ।
दौर्भाग्य (सं० पु०) अभाग्य, दुर्भाग्य ।
दौर्मनस्य (सं० पु०) दुर्जनता, चित्त की खोटाई ।
दौर्हृद (सं० पु०) दुष्टता ।
दौलत (सं० स्त्री०) संपत्ति, धन ।
दौवारिक (सं० पु०) द्वारपाल ।
दौहित्र (सं० पु०) नाती, कन्या का पुत्र ।
दौहित्री (सं० स्त्री०) बेटी की बेटी ।
दौहृद (सं०पु०) स्त्रियों के गर्भावस्था की इच्छा, दोहद ।
द्युति (सं० स्त्री०) आभा, दीप्ति, प्रकाश, कान्ति, चमक, किरण, रश्मि, तेज ।
द्युतिधर (वि०) द्युतिमान, आभायुक्त, दीप्त ।
द्युतिमान् (वि०) द्युतियुक्त, दीप्त, प्रकाशमान् ।
द्युपथ (सं० पु०) आकाश-मार्ग ।
द्युमणि (सं० पु०) सूर्य, रवि, आक वृक्ष, अकुआ का पेड़ ।
द्युमत्सेन (सं० पु०) एक राजा, ये शाल्व देश के रहने वाले थे, अभाग्य वश ये अंधे हो गये, कुछ कर्मचारियों ने षड़यन्त्र रच कर इनको गद्दी से उतार दिया, ये अपनी स्त्री और बालक सत्यवान् को लेकर वन में चले गये ।
द्युलोक (सं० पु०) स्वर्ग लोक । [रहने वाला ।
द्युसद (सं० पु०) देवता, देव, सुर (वि०) स्वर्ग में
द्युसिंधु (सं० स्त्री०) मंदाकिनी ।
द्यूत (सं० पु०) जुआ, वह खेल जिसमें दाँव बदा जाय और हारने वाला जीतने वाले को कुछ दे ।
द्यूतकार (सं० पु०) जुआरी ।
द्यूतक्रीड़ा (सं० स्त्री०) जुए का खेल ।
द्यूत पूर्णिमा (सं० स्त्री०) आश्विन पूर्णिमा, इस दिन प्राचीन समय में लोग जुआ खेलते थे ।
द्यूत समाज (सं० पु०) जुआ खेलने का स्थान, जुआ खेलने वाली मण्डली ।
द्यो (सं० स्त्री०) स्वर्ग, आकाश, अन्तरिक्ष, नभ ।
द्योत (सं० पु०) प्रकाश, ताप, धूप ।
द्योतक (वि०) प्रकाशक, दर्शक ।
द्योतन (सं० पु०) प्रकाशन, दर्शन, दीप ।
द्योतित (वि०) प्रकाशित, दर्शित ।
द्योरानी (सं० स्त्री०) देवरानी ।
द्यौस (सं० पु०) दिन, दिवस ।
द्रढ़िमा (सं० पु०) दृढ़ता ।
द्रम्म (सं० पु०) सोलह पण मूल्य की एक मुद्रा ।
द्रव (सं० पु०) द्रवण, रस, रसीला पदार्थ, तरल वस्तु, बहाव, पलायन, दौड़ ।
द्रवण (सं० पु०) बहाव, दौड़, गमन, गति ।
द्रवत्व (सं० पु०) बहाव, द्रवण, द्रवने का धर्म ।
द्रवना (क्रि०) बहना, पिघलना ।
द्रवहु (क्रि०) दया करो, कृपा करो । [रहने वाला ।
द्रविड़ (सं० पु०) दक्षिण का एक प्रदेश, दक्षिण देश का
द्रविण (सं०पु०) धन, द्रव्य, रुपया, पैसा, काञ्चन, सुवर्ण ।
द्रवित (वि०) बहता हुआ, नम्र ।
द्रवीकरण (सं० पु०) कठिन द्रव्य को तरल करना, पिघलाना, गलाना । [दयार्द्र ।
द्रवीभूत (वि०) गला हुआ, पिघला हुआ, दयालु,
द्रवौ (क्रि०) देखो " द्रवहु " ।
द्रव्य (सं० पु०) धन, पदार्थ, मद्य, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन, नैयायिकों के मत से ये नव द्रव्य हैं ।
द्रव्यवान् (वि०) धनी, धनवान् ।
द्रष्टव्य (वि०) दर्शनीय, देखने योग्य ।
द्रष्टा (वि०) दर्शक, देखने वाला ।
द्राक्षा (सं० स्त्री०) दाख, अंगूर ।
द्राक्षालता (सं० स्त्री०) अंगूर की लता ।
द्राघिमा (सं० स्त्री०) दीर्घता, भूमध्य रेखा के समानान्तर पूर्व पश्चिम को मानी हुई कल्पित रेखाएँ ।
द्राव (सं० पु०) गलाव, पिघलाव, गमन, अनुताप ।
द्रावक (वि०) गलने वाला, पिघलने वाला, सुहागा ।
द्रावण (सं० पु०) गलाना ।
द्राविड़ (सं० पु०) द्रविड़ देश निवासी ।
द्राविड़ी (सं० स्त्री०) छोटी लाची, द्राविड़ जाति की स्त्री ।
द्रावित (वि०) गलाया हुआ, पिघलाया हुआ ।
द्रुत (वि०) गला हुआ, पिघला हुआ, शीघ्र, वेग ।
द्रुतगति (सं० स्त्री०) शीघ्रगामी ।

द्रुतगामी (वि०) शीघ्रगामी ।

द्रुतपद (सं० पु०) छन्द विशेष ।

द्रुपद (सं० पु०) चन्द्रवंशी पञ्चाल देश का एक राजा, इसके पिता का नाम वृषत था, द्रोणाचार्य और इस से बचपन में गाढ़ी मैत्री थी, पिता के मरने पर इसको राज्य मिला, उस समय द्रोण उसके पास बचपन की मैत्री की याद दिलाने गया, पर द्रुपद ने द्रोण का अपमान किया, द्रोणाचार्य ने कौरव और पाण्डवों को अस्त्र की शिक्षा दी और गुरु दक्षिणा में द्रुपद को बाँध कर लाने को कहा, कौरव तो द्रुपद को न बाँध सके पर पाण्डव बाँध लाये, द्रोण ने द्रुपद को गङ्गा का दक्षिण भाग राज्य करने को दिया, उत्तर का अपने अधिकार में रक्खा, उसने एक ऐसा यज्ञ आरम्भ किया जिससे ऐसा पुत्र हो कि द्रोण को मार सके, यज्ञ फल से धृष्टद्युम्न नाम का पुत्र और कृष्णा या द्रौपदी नाम की कन्या उत्पन्न हुई, कृष्णा का ब्याह पञ्च पाण्डवों से हुआ ।

द्रुपदात्मज (सं० पु०) द्रुपद-सन्तान, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न ।

द्रुपदी (सं० स्त्री०) द्रौपदी ।

द्रुम (सं० पु०) वृक्ष, पेड़, तरु, पारिजात ।

द्रुमव्याधि (सं० पु०) लाक्षा, लाह, पेड़ का रोग ।

द्रुमश्रेष्ठ (सं० पु०) ताड़ वृक्ष ।

द्रुमारि (सं० पु०) हाथी, गज ।

द्रुमालय (सं० पु०) वन, जंगल ।

द्रुमालिक (सं०पु०) राक्षस विशेष, एक राक्षस का नाम ।

द्रुमाश्रय (सं० पु०) गिरगिट, (वि०) पेड़ पर रहने वाला । [३२ मात्रायें होती हैं ।

द्रुमिला (सं० स्त्री०) छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में

द्रुमेश्वर (सं० पु०) चन्द्रमा, पारिजात, ताड़ वृक्ष ।

द्रुहिण (सं० पु०) ब्रह्मा ।

द्रेक्काण (सं० पु०) राशि का तृतीय अंश ।

द्रोण (सं० पु०) लकड़ी का एक पात्र, जिसमें सोमरस रक्खा जाता था चार आढ़क या ३२ सेर का एक प्राचीन माप, पत्तों का दोना, नाव, लकड़ी का रथ, कौआ, वृक्ष नील का पौधा ।

द्रोणकाक (सं०पु०) काला कौआ, वनकौआ, डोमकाक ।

द्रोणगिरी (सं० स्त्री०) एक पर्वत का नाम ।

द्रोणपुष्पी (सं० स्त्री०) गूमा ।

द्रोणमुख (सं० पु०) चार सौ गाँवों में प्रधान गाँव ।

द्रोणाचल (सं० पु०) द्रोणगिरी पर्वत ।

द्रोणाचार्य (सं० पु०) ये महर्षि भारद्वाज के पुत्र थे, एक दिन भारद्वाज ने गङ्गा स्नान करते समय घृताची नाम की अप्सरा को देखा और इनका वीर्यपात हो गया, घृताची ने उस वीर्य को द्रोण नामक पात्र में रख दिया, जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ, द्रोण से उत्पन्न होने के कारण इनका नाम द्रोण, रक्खा, इनका विवाह शरद्वान की पुत्री कृपी से हुआ था, जिस के गर्भ से अश्वत्थामा नामक एक बीर पुत्र उत्पन्न हुआ, बचपन में द्रुपद से इनकी मैत्री थी, पर राज्य पाने पर द्रुपद ने इनका अपमान किया था, कौरव और पाण्डवों को अस्त्र की शिक्षा दी और गुरु दक्षिणा में द्रुपद के अपमान का बदला चुकाया, महाभारतीय युद्ध में ये मारे गये थे, पुत्र के मरने का सम्बाद पा ये मूर्च्छित हो गये उस समय धृष्टद्युम्न ने इनका सिर काट लिया । [द्रोण की स्त्री ।

द्रोणी (सं० स्त्री०) डोंगी, दोनी, कठवत, काठ का प्याला,

द्रोह (सं० पु०) द्वेष, वैर, शत्रुता ।

द्रोहकारी (सं० पु०) वैरी, विरोधी ।

द्रोहचिन्तन (सं० पु०) दूसरों के अनिष्ट करने की चिन्ता किसी की बुराई सोचना ।

द्रोहिया (वि०) वैरी, विरोधी, शत्रु ।

द्रोही (वि०) शत्रु, वैरी ।

द्रौणायन (सं० पु०) अश्वत्थामा ।

द्रौपद (सं० पु०) द्रुपद का पुत्र ।

द्रौपदी (सं० स्त्री०) द्रुपद राज की कन्या, लक्ष्य वेध करके अर्जुन ने स्वयंवर में पाया था, माता की आज्ञा से पाँचों भाइयों ने विवाह किया था, पाण्डव जुआ में इनको हार गये थे, दुःशासन ने भरी सभा में इनका वस्त्र खींचना चाहा पर खींच न सका, इस बेइज़्ज़ती का बदला लेने के लिए भीम ने दुःशासन के वक्षस्थल के रक्तपान की प्रतिज्ञा की थी, जिसे पूरा भी किया, पुराणों में द्रौपदी की गणना पञ्च कन्याओं में है ।

द्वन्द्व (सं० पु०) युग्म, जोड़ा, मिथुन, युगल, प्रतिद्वंदी, द्वंदयुद्ध, कलह, झगड़ा, बखेड़ा, रहस्य, भय, डर, एक समास का नाम ।

द्वन्द्वकारी (वि०) झगड़ा करने वाला ।

द्वन्द्वचर (सं० पु०) चकवा।
द्वन्द्वचारी (सं० पु०) चकवा।
द्वन्द्वज (सं० पु०) दो दोषों से उत्पन्न रोग, कलह आदि [से उत्पन्न।
द्वन्द्वयुद्ध (सं० पु०) मल्लयुद्ध, कुश्ती, हाथापाई।
द्वय (वि०) दो।
द्वाःस्थ (सं० पु०) नन्दिकेश्वर, द्वारपाल।
द्वाचत्वारिंशत् (वि०) बयालीस।
द्वात्रिंशत् (वि०) बत्तीस।
द्वात्रिंशत्अक्षरी (सं० पु०) ग्रंथ,पुस्तक।
द्वात्रिंशत्लक्षण (सं० पु०) बत्तीस लक्षण।
द्वादश (वि०) बारह।
द्वादशकर (सं० पु०) बृहस्पति, कार्तिकेय।
द्वादशपत्र (सं० पु०) योनि विशेष।
द्वादशभानु (सं० पु०) बारह सूर्य।
द्वादशभानुकला (सं० पु०) बारह सूर्य।
द्वादश लोचन (सं० पु०) कार्तिकेय।
द्वादश वन (सं० पु०) बारह वन जो ब्रज में हैं।
द्वादशांशु (सं० पु०) बृहस्पति।
द्वादशाक्ष (सं० पु०) कार्तिकेय।
द्वादशाक्षर (सं० पु०) १२ अक्षर का विष्णु का एक मन्त्र अर्थात् "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय"।
द्वादशाङ्ग (सं० पु०) बारह सुगंधित द्रव्यों के मेल से बना हुआ धूप।
द्वादशाङ्गुल (सं० पु०) एक बीता।
द्वादशात्मा (सं० पु०) सूर्य, आक।
द्वादशाह (सं० पु०) १२ दिन में समाप्त होने वाला यज्ञ, मृतक व्यक्ति के बारहवें दिन का कृत्य।
द्वादशी (सं० स्त्री०) दोनों पक्ष की बारहवीं तिथि।
द्वापर (सं० पु०) तृतीय युग, यह ८६४००० वर्ष का होता है।
द्वापञ्चाशत् (वि०) बावन।
द्वार (सं० पु०) दरवाज़ा, घर से निकलने का मार्ग।
द्वारकण्टक (सं० पु०) कपाट, किवाड़।
द्वारका (सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण का नगर, इसी नाम का प्रसिद्ध पुराना नगर जो काठियावाड़ गुजरात में है, हिन्दू लोग इसे चार धामों में मानते हैं। पुराणों से ज्ञात होता है कि श्रीकृष्ण के देहत्याग के पश्चात् द्वारका समुद्र में मग्न हो गई।
द्वारकेश (सं० पु०) श्रीकृष्ण।
द्वारछेकाई (सं० स्त्री०) बिवाह की एक रीति, बिवाह के बाद जब बधू के साथ वर घर में जाता है तब द्वार पर बहन रोकती है और वर के कुछ नेग देने पर जाने देती है।
द्वारपण्डित (सं० पु०) किसी राज्य का प्रधान पण्डित।
द्वारपाल (सं० पु०) दरवान।
द्वारपूजा (सं० स्त्री०) वैवाहिक एक रस्म जो दरवाज़े पर बरात आने पर कन्या का पिता कलशादि का पूजन कर वर की पूजा करता है।
द्वारयन्त्र (सं० पु०) द्वार बन्द करने का यंत्र, ताला, [कुफुल।
द्वारवती (सं० स्त्री०) द्वारकापुरी।
द्वारस्थ (वि०) द्वार पर बैठा हुआ, (सं० पु०) द्वारपाल।
द्वारा (सं० पु०) द्वार, दरवाज़ा।
द्वारावती (सं० स्त्री०) द्वारका।
द्वारिका (सं० स्त्री०) देखो "द्वारका"।
द्वारिकाधीश (सं० पु०) श्रीकृष्ण जी।
द्वारी (सं० स्त्री०) द्वारपाल, छोटा द्वार।
द्वाषष्टि (वि०) दो अधिक साठ, ६२।
द्वासप्तति (वि०) संख्या विशेष, ७२, दो अधिक सत्तर।
द्वास्थ (सं० पु०) द्वारपाल।
द्वि (वि०) दो।
द्विकर्मक (वि०) जिसके दो कर्म हों।
द्विगु (सं० पु०) एक समास का नाम।
द्विगुण (वि०) दूना, दुगुना।
द्विघटिका (सं० स्त्री०) वह मुहूर्त जो दो घड़ियों से [निकाला गया है।
द्विचत्वारिंशत (वि०) संख्या विशेष, ४२, बयालीस।
द्विज (सं० पु०) दो बार उत्पन्न, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन वर्णों की उत्पत्ति जन्म और संस्कार से माना जाता है अतः ये द्विज कहे जाते हैं। अण्डज, पक्षी, दाँत।
द्विजन्मा (सं०पु०) द्विज, जिसका दो बार जन्म हुआ हो।
द्विजपति (सं० पु०) ब्राह्मण, चन्द्रमा, गरुड़, कर्पूर।
द्विजप्रिय (सं० स्त्री०) सोम।
द्विजबंधु (सं० पु०) नामधारी ब्राह्मण।
द्विजराज (सं० पु०) चन्द्रमा।
द्विजाति (सं० पु०) ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य जिनको शास्त्रानुसार यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है, अण्डज, पक्षी।

द्विजातीय (वि०) त्रिवर्ण सम्बन्धी।
द्विजालय (सं० पु०) वृक्ष-कोटर, ब्राह्मण-गृह।
द्विजिह्व (वि०) दो जिह्व वाला, खल, दुष्ट, चोर, चुगलखोर, (सं० पु०) सर्प, सांप, एक रोग विशेष।
द्विजोतम (सं० पु०) ब्राह्मण, गरुड़।
द्विज्या (सं० पु०) गोलार्द्ध की एक रेखा विशेष।
द्वितय (वि०) दो, दोहरा।
द्वितीया (वि०) दूसरा।
द्वितीयान्त (वि०) जिसके अन्त में द्वितीया विभक्ति का प्रत्यय हो। [संख्या।
द्वित्रा (सं० स्त्री०) दो या तीन को पूरण करने वाली
द्वित्व (सं० पु०) दोहराना, दोहरे होने का भाव।
द्विदैवत्या (सं०स्त्री०) विसाखा नक्षत्र इसके दो देवता हैं।
द्विधा (वि०) दो प्रकार से, दो भांति से।
द्विधाकल्प (सं०पु०) सन्देहकर विषय, शक वाली बात।
द्विप (सं० पु०) हाथी, गज, नागकेसर।
द्विपञ्चाशत (वि०) संख्या विशेष, ५२।
द्विपथ (सं० पु०) दोराहा।
द्विपद (वि०) दो पैर वाला, (सं० पु०) दो पैर वाले जीव, मनुष्य, पक्षी। [धन, का पूर्वभाग।
द्विपदराशि (सं० पु०) मिथुन, तुला, कुम्भ कन्या और
द्विपदी (सं० स्त्री०) दो पद का छंद, दो पदों का गाना।
द्विपाद (वि०) दो पैर वाला, (सं० पु०) दो पैर वाले जीव, मनुष्य पक्षी आदि।
द्विपास्य (सं० पु०) गणेश।
द्विभाव (सं० पु०) दुराव, दो भाव।
द्विभाषी (सं० पु०) दुभाषिया।
द्विमुख (सं० पु०) दूमुँहा साँप।
द्विमुखी (सं० स्त्री०) वह गाय जो बच्चा दे रही हो।
द्विरद (सं० पु०) हाथ, दुर्योधन का एक भाई।
द्विरदान्तक (सं० पु०) सिंह, केशरी।
द्विरसन (सं० पु०) सर्प।
द्विरागमन (सं० पु०) पुनरागमन, गौना। [है।
द्विरात्र (सं० पु०) एक यज्ञ जो दो रात में समाप्त होता
द्विरुक्त (वि०) दोबार कहा हुआ।
द्विरुक्ति (सं० स्त्री०) दो बार कहना। [हो।
द्विरूढ़ा (सं० पु०) वह स्त्री जिसका दो बार ब्याह हुआ
द्विरूढ़ापति (सं० पु०) विधवा स्त्री का पति।
द्विरेफ (सं० पु०) भौंरा। [वचन।
द्विवचन (सं० पु०) दो संख्या वाचक विभक्ति, दूसरा
द्विविध (वि०) दो प्रकार से, दो भाँति से।
द्विविधा (सं० पु०) दुबिधा, खटका।
द्विवेद (वि०) जो दो वेद पढ़े।
द्विवेदी (सं० पु०) दूबे, ब्राह्मणों की एक उपजाति।
द्विशीर्ष (सं० पु०) अग्नि, (वि०) दो सिर वाला।
द्वीप (सं० पु०) वह स्थान जो चारों ओर से जल से घिरा हो, टापू, जज़ीरा,व्याघ्रचर्म।
द्वीपवती (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम, पृथ्वी।
द्वीपवान (सं० पु०) सागर, समुद्र।
द्वीपशत्रु (सं० पु०) सतावर।
द्वीपसम्भवा (सं० स्त्री०) पिण्डी खजूर।
द्वीपस्थ (सं० पु०) द्वीप में रहने वाला, द्वीप वासी।
द्वीपिका (सं० स्त्री०) सतावर।
द्वीपी (सं० पु०) व्याघ्र, चीता, चित्रक वृक्ष।
द्वेष (सं० पु०) बैर, शत्रुता।
द्वेषी (वि०) बैरी शत्रु।
द्वेष्टा (वि०) बैरी, विरोधी, द्वेषकर्त्ता।
द्वेष्य (वि०) द्वेष योग्य।
द्वै (वि०) दो।
द्वैत (सं० पु०) युग्म, मिथुन, दो।
द्वैतवन (सं० पु०) वह वन जिसमें युधिष्ठिर वनवास के समय कुछ दिन रहे। [जीव को दो माना जाता है।
द्वैतवाद (सं० पु०) वह सिद्धान्त जिसमें आत्मा और
द्वैतवादी (वि०) द्वैतवाद मानने वाला।
द्वैध (सं० पु०) द्विविधा, खटका, संशय, दो टुकड़ा।
द्वैधीकरण (सं० पु०) भेदन,छेदन,खण्डन। [अनिश्चय।
द्वैधीभाव (सं०पु०)अलगाव,पार्थक्य,विश्लेष,आपस का झगड़ा
द्वैपायन (सं० पु०) व्यास का एक नाम।
द्वैमातुर (सं० पु०) गणेश। [के जल से होती हो।
द्वैमातृक (सं० पु०) जहाँ की खेती मेघ और नदी दोनों
द्वैरथ (सं० पु०) दो रथारोहियों का परस्पर युद्ध।
द्वैविध्य (सं० पु०) दुबधा।
द्वैष (सं० पु०) द्वेष, हिंसा, बैर, विरोध।
द्व यङ्गुल (वि०) दो अंगुलियों के बराबर की वस्तु।
द्व यञ्जलि (वि०) दो अञ्जलियों से नापी हुई वस्तु।
द्व यक्षर (सं० पु०) दो अक्षर, दो अक्षर का मंत्र।

पनेरी (सं० पु०) तमोली, बरई, पान बेचने वाला ।
पनैरिन (सं० स्त्री०) तमोलिन, बरइन ।
पन्थ (सं० पु०) मार्ग, रास्ता, राह, मत, धर्म, पदवी ।
पन्था (सं० पु०) मार्ग, बाट, पैंड़ा, राह, रास्ता ।
पन्थाई (वि०) पन्थ का अनुयायी, मतावलम्बी ।
पन्थी (सं० पु०) धर्म पथ को मानने वाला, मार्ग चलने वाला ।
पन्नग (सं० पु०) सूर्य, नाग, सर्प ।
पन्नगपति (सं० पु०) शेष, सर्पराज, अनन्त ।
पन्नगारी (सं० पु०) गरुड़ ।
पन्नगाशन (सं० पु०) पन्नगारी, गरुड़ ।
पन्नगी (सं० स्त्री०) सर्पिणी, मनसा देवी ।
पन्ना (सं० पु०) पत्र, पत्रा, रत्न विशेष, नीलमणि ।
पन्नी (सं० स्त्री०) तबक, सोना, चाँदी आदि का महीन पत्तर । [टुकड़ा, चूर्ण, छिलका ।
पपड़ा (सं० पु०) किसी वस्तु के ऊपर का छिलका,
पपड़ियाँ (सं० स्त्री०) छोटा पपड़ा ।
पपड़िया कत्था (सं० पु०) सफ़ेद कत्था, सफ़ेद खैर ।
पपड़ी (सं० स्त्री०) देवली, छिलका, परत, पापड़ ।
पपड़ीला (वि०) परतीला, रसीला ।
पपनी (सं० पु०) बरौनी, आँख का पक्ष्म, बरनी ।
पपरा (सं० पु०) पपड़ा ।
पपरी (सं० स्त्री०) पपड़ी ।
पपीता (सं० पु०) एक फल विशेष ।
पपीहा (सं० पु०) चातक, एक पक्षी विशेष जो स्वाती का ही पानी पीता है ।
पपैया (सं० पु०) खिलौना, पपीता ।
पपोटा (सं० स्त्री०) पलक, अक्षिपुट, आँख का पुट ।
पम्पा (सं० स्त्री०) दक्षिण देशस्थ नदी विशेष, सरोवर विशेष ।
पय (सं० पु०) पानी, नीर, जल, दूध ।
पयद (सं० पु०) बादल, स्तन, थन ।
पयनिधि (सं०पु०) सागर, समुद्र ।
पयमुख (सं० पु०) दुधमुहाँ ।
पयस्विनी (सं० स्त्री०) नदी, दूध देने वाली गाय, बहुदुग्धा गौ, दुधैल गाय, बकरी, भेड़ी ।
पयान (सं० पु०) चलना, कूच, बिदा, प्रस्थान, यात्रा ।
पयाल (सं० पु०) पुआर, खर, नेरुआ, सूखी घास, तिनका ।
पयोद (सं० पु०) बादल, मेघ ।
पयोधर (सं० पु०) स्तन, चूँची, मेघ, बादल, नारियल, गन्ना, महकदार घास, पहाड़, दूध वाला पेड़, दुग्ध वृक्ष । [पानी रखने का बर्तन ।
पयोधि (सं० पु०) समुद्र, सागर, जलधि, जलाधार,
पयोनिधि (सं० पु०) समुद्र ।
पयोराशि (सं० पु०) समुद्र, सागर ।
पर (वि०) दूसरा, पराया, अन्य, भिन्न, विदेशी, परदेशी, दूर, परे, अन्तर पर, पिछला, उत्तम, श्रेष्ठ, शिरोमणि, प्रधान, सब से बड़ा, विरोध, प्रतिकूल, बहुत, अत्यन्त, अधिक, तत्पर, लगा हुआ (सं० पु०) बैरी, शत्रु (अव्य०) केवल, इसके पीछे, परन्तु, किन्तु, लेकिन, ऊपर, पै, नित्य ।
परकना (क्रि० अ०) चसकना, सधना, अभ्यासी होना ।
परकाज (सं० पु०) पराया काम, दूसरे का काम ।
परकाजी (वि०) परोपकारी, उपकारी, परार्थी ।
परकाना (क्रि० स०) साधना, सिखाना, परचाना ।
परकीय (वि०) अन्य संबन्धीय, दूसरे का ।
परकीया (सं० स्त्री०) नायिका विशेष, पर पुरुष के साथ रमण करने वाली स्त्री, पराई स्त्री ।
परख (सं० स्त्री०) परीक्षा, जाँच, कसौटी, इम्तिहान, निरख । [निरखना ।
परखना (क्रि० स०) जाँच करना, परीक्षा करना, देखना,
परखवाना (क्रि० स०) जाँच कराना, परखाना ।
परखाई (सं० स्त्री०) निरखाई, जँचावट, परखने का मेहनताना या मज़दूरी । [निरखवाना ।
परखाना (क्रि० स०) जाँच कराना, परीक्षा कराना,
परखी (सं० स्त्री०) एक छोटा लोहा, जिससे बोरे में का अन्न निकाल कर देखा जाता है ।
परखैया (सं० पु०) परीक्षक, कुतवैया, जँचवैया ।
परघनी (सं० स्त्री०) चाँदी सोना ढालने की परघी ।
परघरी (सं० स्त्री०) सोना ढालने का साँचा, कछौईं ।
परचा (सं० पु०) परीक्षा, जाँच, परिचय ।
परचून (सं० पु०) आटा, दाल, हल्दी, मसाला आदि ।
परचूनिया (सं० पु०) परचून बेचने वाला, मोदी, आटा, दाल, नून, मिर्च आदि फुटकर सौदा बेचने वाला ।
परचूनी (सं० स्त्री०) मोदी का व्यवसाय ।
परचौ (सं० पु०) परख, जाँच ।

परछती (सं० स्त्री०) हलका छप्पर।
परछना (क्रि०स०) दुलहा दुलहिन की आरती उतारना।
परछांई (सं० स्त्री०) प्रतिबिम्ब, प्रतिछाया।
परछिद्र (सं० पु०) दूसरे का दोष, पर दोष।
परजकर (सं० पु०) वह कर जो ज़मीन में बसने के कारण उस ज़मीन के मालिक को दिया जाता है।
परजवट (सं० पु०) कर, शुल्क।
परजात (सं० पु०) अन्य से उत्पन्न, दूसरे से पैदा हुआ, वर्णसंकर, दोगला, दूसरी जाति का, दूसरे क़ौम का।
परत (सं० स्त्री०) पुट, तह, लड़, थाक, पपड़ा, फाँकी।
परतन (वि०) बड़े से बड़ा, सब से बड़ा। [मातहत।
परतन्त्र (वि०) पराधीन, परवश, दूसरे के वश,
परतल (सं० पु०) डेरा डण्डा, लद्दू घोड़ा की पीठ पर रखने का बोरा।
परतला (सं० पु०) डाब, बन्धनी, पट्टी, तलवार की पट्टी।
परता (सं० पु०) परेता, चरखी, भाव, निरख।
परती (सं० स्त्री०) पड़ी धरती, बिना बोयी धरती, बंजर, ऊसर भूमि।
परतीन (सं० स्त्री०) विश्वास, भरोसा, प्रतीति।
परत्र (वि०) दूसरी दुनिया में, परलोक में, और जगह।
परत्व (सं० पु०) भिन्नता, जुदाई, फ़ासला, शत्रुता, श्रेष्ठता, महत्व।
परदादा (सं० पु०) बाप के बाप का बाप, प्रपितामह।
परदादी (सं० स्त्री०) परदादा की स्त्री, प्रपितामही।
परदार (सं० स्त्री०) पराई स्त्री, दूसरे की स्त्री।
परदुःख (सं० पु०) पराया दुःख, दूसरे का दुःख दर्द।
परदेश (सं० पु०) विदेश, अन्य देश, पराया देश, ग़ैर मुल्क।
परदेशी (वि०) विदेशी, परदेश में रहने वाला।
परद्रोह (सं० पु०) परपीड़न, दूसरे की बुराई।
परधन (सं० पु०) दूसरे का धन।
परन (सं० स्त्री०) प्रतिज्ञा, नियम, हठ।
परनाना (क्रि० अ०) ब्याह करना, शादी करना (सं०पु०) नाना का बाप।
परनानी (सं० स्त्री०) परनाना की स्त्री।
परन्तप (वि०) परतापी, श्रेष्ठ तपस्वी, विजयी, फ़तहयाब, बैरियों को दुःख देने वाला, जितेन्द्रिय।
परन्तु (अव्य०) अधिकन्तु, लेकिन, किन्तु।
परपराना (क्रि०अ०) परपराना, भंभनाना, जलना।
परपराहट (सं० स्त्री०) चरपराहट, भाल।
परपुष्ट (सं० पु०) कोकिल (वि०) जिसका पोषण किसी दूसरे ने किया हो।
परपूर (वि०) पूर्ण, भरपूर।
परपैठ (सं० पु०) खोई हुई हुण्डी की तीसरी नक़ल, जो पैठ के खोने पर लिखी जाती है।
परब (सं० पु०) उत्सव, अध्याय, पर्व।
परबस (वि०) पराधीन, परतन्त्र, परवश।
परब्रह्म (सं० पु०) परमात्मा।
परबा (सं० स्त्री०) प्रतिपदा, एकम।
परभुक्ता (वि०) दूसरे की भोगी हुई स्त्री।
परभृत (सं० पु०) कोकिल, कोइल (वि०) दूसरे से पाला हुआ। [सर्दार, पहिला, अगुवा।
परम (वि०) उत्कृष्ट, प्रधान, आद्य, ओंकार, अग्रगण्य,
परमगति (सं० स्त्री०) मोक्ष, मुक्ति, उत्कृष्टता, उत्तम दशा। [सम्मति।
परमत (सं० पु०) दूसरे की सलाह, भिन्न मत, दूसरे की
परमधाम (सं० पु०) वैकुण्ठ, परमपद, स्वर्ग।
परमपद (सं० पु०) मुक्ति पद, उत्तम पद।
परमपुरुष (सं० पु०) परमात्मा।
परमब्रह्म (सं० पु०) परमात्मा।
परमल (सं० पु०) ज्वार या गेहूँ का एक प्रकार का भुना हुआ दाना। [शोभा, कान्ति, छबि।
परमहंस (सं० पु०) संन्यासी विशेष, योगी (सं० स्त्री०)
परमाणु (सं० पु०) अति सूक्ष्म वस्तु, कन, कनिका, ज़र्रा, रेज़ा, पल, बहुत थोड़ा समय, विशेष काल, ख़ास एक वक़्त।
परमात्मा (सं० पु०) परब्रह्म, परमेश्वर, ईश्वर।
परमानन्द (सं० पु०) अत्यानन्द, बहुत ख़ुशी।
परमान्न (सं० पु०) पायस, खीर, पकवान।
परमायु (सं० पु०) जीवन काल, आयु भर।
परमार्थ (सं० पु०) उत्कृष्ट बुद्धि, यथार्थ धन, उत्तम पदार्थ, सत्य परोपकार, उत्तम कार्य, सब से अच्छा विषय या प्रयोजन, यथार्थ ज्ञान, पवित्र ज्ञान, धर्म, पुण्य, धर्मार्थ। [मान्, परमात्मा, ईश्वर।
परमेश्वर (सं० पु०) शिव, विष्णु, परब्रह्म, सर्व शक्ति-
परमेश्वरी (सं० स्त्री०) परमेश्वर की शक्ति, दुर्गा, पार्वती, लक्ष्मी।

परमेष्ठी (सं० पु०) ब्रह्मा, गुरु विशेष, शालग्राम विशेष।
परम्पर (सं० पु०) प्रपौत्रादि, उत्तरोत्तर, मृग विशेष।
परम्परा (सं० स्त्री०) संप्रदाय, परिपाटी, संतान, वंश, रीति, क्रम, अनुक्रम, पुराने समय की रीति, आनुपूर्वी, क्रमशः (क्रि० वि०) पहले से, अगले समय से।
परम्परागत (सं० स्त्री०) क्रमागत, वंशानुक्रम।
परला (वि०) दूसरी ओर का, उस तरफ़ का।
परलोक (सं० पु०) परकाल, उत्तर काल, स्वर्ग, मोक्ष, दूसरा लोक, वैकुण्ठ, मृत्यु, शत्रुजन, श्रेष्ठजन, अन्यजन।
परवल (सं० पु०) पलवल, परोरा।
परवश (वि०) अस्वाधीन, पराधीन, परतन्त्र।
परवा (सं० स्त्री०) प्रतिपदा, दोनों पक्ष की पहली तिथि।
परश (सं० पु०) रत्न विशेष, पारस मणि।
परशु (सं० पु०) अस्त्र विशेष, फरसा, कुल्हाड़ी, टाँगी।
परशुधर (सं० पु०) परशुराम, गणेश (वि०) परशु धारण करने वाला।
परशुराम (सं० पु०) रेणुका के गर्भ से उत्पन्न जमदग्नि के पुत्र, ये विष्णु के अवतार समझे जाते हैं, ये पिता के बड़े भक्त थे, पिता की आज्ञा से इन्होंने अपनी माता रेणुका का सिर काट डाला था, इक्कीस बार इन्होंने क्षत्रियों का संहार किया है।
परस (सं० पु०) छून, स्पर्श।
परसत (वि०) छूते ही, स्पर्श करते ही।
परसना (क्रि० स०) स्पर्श करना, छूना।
परसिया (सं० स्त्री०) हँसिया, दात्र, दराँती।
परसून (सं० पु०) एक प्रकार का रोग जो स्त्रियों को प्रसव के बाद होता है, इसमें सिर में वेदना और ज्वर रहता है।
परसूती (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसने हाल में बच्चा जना हो, वह जिसको प्रसूत रोग हुआ हो।
परसैया (सं० पु०) परोसने वाला।
परसों (वि०) आगे या पीछे का तीसरा दिन।
परस्थी (सं० पु०) रहना, वास करना, ठहरना।
परस्पर (वि०) देखादेखी, आपस में, अन्योन्य, एक दूसरे को, दोनों में।
परस्मैपद (सं० पु०) व्याकरण में धातुओं का एक चिह्न।
परहेलु (क्रि० वि०) तिरस्कार कर।
परा (सं० पु०) विमोक्ष, प्राधान्य, प्रतिलोभ्य, धर्षण, अभिमुख्य, विक्रम, गति, वध, भङ्ग, अनादर, प्रत्यावृत्ति, द्योतक (सं० स्त्री०) ब्रह्मविद्या (उपसर्ग) उलटा, पीछे, विपरीत, प्रभुता, बड़ाई, विरोध, अहंकार, अनादर, तिरस्कार, बहुत अधिक बल, सामर्थ्य।
पराक्रम (सं० पु०) बल, साहस, सामर्थ्य, ज़ोर, ताक़त।
पराक्रम शून्य (वि०) शक्ति हीन, दुर्बल, निर्वीर्य।
पराक्रमी (वि०) बलवान्, बली, सामर्थ्यवान्, बलवंत, साहसी, शूरवीर, ज़ोरावर, ताक़तवर।
पराग (सं० पु०) पुष्पधूलि, पुष्परज, उपराग, चन्दन, स्वच्छन्द गमन, पर्वत विशेष।
परागत (वि०) प्राप्त, विस्तृत, नष्ट, निरस्त।
पराङ्कद (सं० पु०) शिव।
पराङ्कत्र (सं० पु०) समुद्र, महानद।
पराङ्मुख (वि०) विमुख, मुँहफिरा, रहित, भिन्न, लज्जित, अधोमुख, शरमिन्दा, बाग़ी।
पराचीन (वि०) प्राचीन, पुराना।
पराजय (सं० पु०) पराभव, तिरस्कार, अजय, जयरहित, हार, शिकस्त। [शिकस्त।
पराजित (वि०) हारा हुआ, पराजय प्राप्त, पराभूत,
पराजिता (सं० स्त्री०) विष्णुकान्ता लता।
पराजेता (सं० पु०) पराजयकर्ता, जीतने वाला, विजयी।
पराठा (सं० पु०) उलटा, एक प्रकार की रोटी जो कई एक परत में घी लगा कर बेल कर घी चुपड़ कर पकाई जाती है।
परात (सं० स्त्री०) थाल, बड़ी थाली, पराती।
पराती (सं० स्त्री०) थाली, परात, एक प्रकार का गाना जो प्रातःकाल गाया जाता है।
परात्पर (वि०) सर्वश्रेष्ठ, जिसके परे कोई न हो (सं० पु०) परमात्मा, विष्णु।
परात्मा (सं० पु०) परमात्मा।
परादन (सं० पु०) फ़ारस देश का घोड़ा।
पराधीन (सं० स्त्री०) परतन्त्र, परवश, अस्वाधीन।
पराधीनता (सं०स्त्री०) परतन्त्रता, दूसरे के वश में रहना।
परान (सं० पु०) प्राण। [दिखाना, चंपत होना।
पराना (क्रि० अ०) भाग जाना, पीठ देना, पीठ
परानी (सं० पु०) जीवधारी, प्राणी, जीव।
परान्न (सं० पु०) परभोजन, पराये का अन्न।

परापर (वि०) पहिला और पिछला, अच्छा और बुरा, शत्रुमित्र, उ माधम ।

पराभव (सं० पु०) तिरस्कार, विनाश, अनादर, पराजय, हार, मलामत, बेइज़्ज़ती, बरबादी । [खाया हुआ ।

पराभूत (वि०) पराजित, परास्त, हारा हुआ, शिकस्त

परामर्श (सं० पु०) युक्ति, विचार, मन्त्र,उपदेश, मन्त्रणा, सलाह, भेद, राय, दलील, ग़ौर करना ।

परामर्शक (सं० पु०) मन्त्री, सलाही, वज़ीर ।

परामर्शित (सं० पु०) विवेचित, उपदेशित । [क्षमा ।

परामर्ष (सं० पु०) क्रोध, ग़ुस्सा, ग्रीष्म, तीव्र, सहन,

परामोध (सं० पु०) फुसलावा, भुलावा, झाँसा, पट्टी।

परामृष्ट (वि०) पकड़ कर खींचा हुआ, पीड़ित, विचारा हुआ, निर्णीत । [लगा हुआ, अनुराग ।

परायण (सं० पु०) तत्पर, आशक्त, अभीष्ट, शक्त, लगन,

पराया (वि०) दूसरा, और का, दूसरे का, अन्य, ऊपरी, बाहरी, विदेशी ।

परायु (सं० पु०) ब्रह्मा ।

परार (वि०) पराया, दूसरे का ।

परारि (वि०) गया हुआ या आने वाला तीसरा वर्ष ।

परारु (सं० पु०) करेला ।

परार्थ (सं०पु०) पर के लिए, अन्य के निमित्त, अन्यार्थ।

परार्द्ध (सं० पु०) ब्रह्मा की आधी आयु, आखिरी शुमार, संख्या का अन्त ।

परार्द्धि (सं० पु०) विष्णु ।

परार्ध्य (वि०) प्रधान, श्रेष्ठ, सर्वोत्तम ।

पराल (सं० स्त्री०) पलास, न्यार, घास ।

परालब्ध (सं० पु०) भाग्य, नसीब, प्रारब्ध।

परावत (सं० पु०) फालसा ।

परावर्त (सं० पु०) पलटाव, अदल बदल, लेन देन ।

परावसु (सं० पु०) असुरों के पुरोहित का नाम, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

परावह (सं० पु०) सप्त प्रकार के वायुओं में से एक।

परावेदी (सं० स्त्री०) भटकटैया, कटई ।

पराशर (सं० पु०) एक मुनि का नाम, ये महर्षि वशिष्ठ के पौत्र और शक्ति के पुत्र थे, इनकी माता का नाम अदश्यन्ती था, इन्होंने पराशर संहिता नाम की एक स्मृति वा ग्रन्थ बनाया है ।

पराश्रय (वि०) पराधीन, परतन्त्र, परवश ।

पराश्रयन्ति (वि०) परतन्त्र ।

परासी (सं० स्त्री०) एक रागिनी का नाम ।

परासु (वि०) प्राण-हीन, गत प्राण ।

परास्त (वि०) पराजित, निरस्तर, निकाला हुआ, हराया हुआ, हारा हुआ ।

पराह (सं० स्त्री०) भागाभागी, देश-त्याग, परौवल ।

पराहिं (क्रि०अ०) भागते हैं, भाग जाते हैं, चले जाते हैं ।

पराह्न (सं० पु०) दिन का पिछला भाग, तीसरा भाग, से-पहर ।

परि (उप०) सर्वतः, वर्जन, व्याधि, शेष, किञ्चित, निरसन, पूजा, भूषण, उपरम, शोक, अतिशय, त्याग, नियम, चारों ओर से, बहुत, सब तरह से, सम्पूर्ण रूप से, पहले, पास, आस पास, आपस में, बुरा ।

परिक (सं० स्त्री०) खोटी चाँदी ।

परिकर (सं० पु०) पर्यङ्क, पलंग, खाट, समारम्भ, वृन्द, कटिबन्ध, विवेक, नौकर, चाकर, सेवक, सहकारी, कमरबन्द, पटुका ।

परिकरमा (सं० स्त्री०) परिक्रमा ।

परिकर्म (सं० पु०) शरीर संस्कार मात्र ।

परिकर्मा (सं० पु०) सेवक, टहलुआ ।

परिकल्पन (सं० पु०) दग़ाबाज़ी, धोखाधड़ी । [क्रिया ।

परिकल्पना (सं० स्त्री०) उपाय, चिन्ता, चेष्टा, कर्म,

परिकीर्ण (वि०) व्याप्त, विस्तृत, समर्पित ।

परिकीर्तन (सं० पु०) प्रस्ताव, बड़ाई, सर्व प्रकार प्रशंसन, गल्प ।

परिकूट (सं० पु०) शहर के फाटक की खाईं ।

परिक्रम (सं० पु०) टहलना, फेरी देना, परिक्रमा ।

परिक्रमण (सं०पु०) टहलना, घूमना ।

परिक्रमा (सं० स्त्री०) प्रदक्षिणा, चारों तरफ घूमना ।

परिक्षत (वि०) नष्ट, भ्रष्ट ।

परिक्षव (सं० पु०) छींक ।

परिक्षा (सं० स्त्री०) कीचड़, परीक्षा, जाँच ।

परिक्षित (सं० पु०) एक राजा,परीक्षित ।

परिक्षीद्रा (वि०) निर्धन, कंगाल ।

परिखना (क्रि० स०) पहचानना, आँचना।

परिखा (सं० पु०) खंभ, खाईं, ख़न्दक, क़िला के चारों ओर का नाला, थाला, मेंड़ ।

परिखाना (क्रि० स०) जाँचना, परखाना।
परिख्यात (वि०) विख्यात, मशहूर, प्रसिद्ध।
परिगणन (सं० पु०) गिनना, मापना।
परिगणित (क्रि० वि०) गणना किया हुआ।
परिगत (वि०) प्राप्त, विस्तृत, ज्ञात, चेष्टित, गत, वेष्टित।
परिगभ (सं० पु०) अनुसंधान, परिवेष्टन, वेठन।
परिग्रह (सं० पु०) सेना का पश्चात् भाग, पत्नी, भार्या, स्त्री, आदान, मूल, शाप, शपथ, कुटुम्ब, दास, नौकर, चाकर, परिजन, सूर्य-ग्रहण।
परिग्राहक (सं० पु०) ग्राहक, स्वीकारक।
परिघ (सं० पु०) लोहे का भल्ला, लोहे का डण्डा, लोहा मढ़ा हुआ डण्डा, गदा, गृह, घर, निष्कुम्भ आदि २७ योगों में से १९ वाँ, चटकनी, मोहल्ला, शहर का फाटक।
परिघात (सं० पु०) हत्या, हनन, वह अस्त्र जिससे किसी की हत्या की जा सकती हो। [बादल का गरजना।
परिघोष (सं० पु०) कटु वचन, गाली, मेघ शब्द,
परिचय (सं० पु०) जान पहचान, मेल, मित्रता।
परिचर (सं० पु०) लड़ाई के समय शत्रु के प्रहार से रथ को बचाने वाला, सेवक, सेनानी, पूजन, सिपहसालार, हमराही। [ताबेदारी।
परिचर्या (सं० स्त्री०) सेवा, पूजा, उपासना, आधीनता,
परिचायक (वि०) परिचय कराने वाला, बोधक, ज्ञापक।
परिचारक (सं० पु०) सेवक, नौकर, चाकर, दास, टहलुआ।
परिचारिका (सं०स्त्री०) दासी, सेविका, लौंड़ी, मज़दूरिन।
परिचारे (क्रि० स०) ललकारे, प्रचारे, बुलाये।
परिचित (वि०) चिन्हार, जाना हुआ, पहिचाना हुआ।
परिच्छद (सं० पु०) वेश, वस्त्र, भूषण, गहना, हाथी, घोड़ा वग़ैरह का सामान। [सीमाबद्ध।
परिच्छन्न (वि०) सब ओर से ढँका हुआ, परिमित,
परिच्छिन्न (वि०) परिच्छेद विशिष्ट, कटा हुआ।
परिच्छेद (सं० पु०) ग्रन्थ विच्छेद, सीमा, काण्ड, विभाग, अध्याय, टुकड़ा, व्यवधान।
परिछाहीं (सं० स्त्री०) परछाईं।
परिजंक (सं० पु०) पर्यंक।
परिजटन (सं० पु०) पर्यटन।
परिजन (सं० पु०) परिवार, कुटुम्ब।
परिज्ञान (सं०पु०) निश्चय, बोध।
परिणत (वि०) परिपक्व, अवस्थान्तर प्राप्त (सं० पु०) राजधानी, भक्त, नम्र, गज, हाथी। [प्राप्ति।
परिणय (सं० पु०) विवाह, ब्याह, निकाह, नम्रता
परिणाम (सं० पु०) विकार, चरम, शेष, उत्तर काल, फल।
परिणामदर्शी (वि०) अग्रसोची, दूरंदेश, बुद्धिमान।
परिणायक (सं० पु०) पासा खेलने वाला, पति, वर। [संबंध।
परिणाह (सं० पु०) विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, निबन्धन,
परिणीता (सं० स्त्री०) विवाहिता, ब्याही हुई, पाणिगृहीता।
परिणेता (सं० पु०) पति, स्वामी, कर्त्ता।
परिणेया (वि०) विवाहने योग्य।
परितः (अव्य०) सर्वतः, चारों तरफ़, चारों ओर।
परिताप (सं० पु०) दुःख, शोक, भय, कम्प, ज़्यादह गरम, अधिक उष्ण।
परितुष्ट (वि०) सन्तुष्ट, आनन्दित, हर्षित।
परितुष्टि (सं० स्त्री०) सन्तोष, अह्लाद, ख़ुशी।
परितृप्त (वि०) सन्तुष्ट।
परितृप्ति (सं० स्त्री०) आसूदा, सन्तोष। [न्नता।
परितोष (सं० पु०) सन्तोष, तृप्ति, हर्ष, आनन्द, प्रस-
परितोषक (सं० पु०) सन्तुष्टि करने वाला, प्रसन्न करने वाला।
परितोषण (सं० पु०) परितुष्टि, सन्तोष। [छोड़ा गया
परित्यक्त (सं० पु०) छोड़ा गया, सम्यक् त्यक्त, जल्द
परित्यक्ता (सं० पु०) परित्याग करने वाला, त्यागने वाला।
परित्याग (सं० पु०) सम्यक् त्याग, छोड़ना, तर्जना।
परित्रस्त (वि०) भीत, डरा हुआ। [निष्कृति।
परित्राण (सं० पु०) रक्षा, बचाव, उद्धार, छुड़ाना,
परित्रात (वि०) रक्षित, रक्षा किया हुआ, पालित।
परित्राता (सं०पु०) रक्षक, पालक। [परिवर्तन, विनिमय।
परिदान (सं० पु०) लेन देन, अदलौवल बदलौवल,
परिदेवक (सं० पु०) विलाप कर्ता, रोनेवाला, जुआरी, जीतने वाला, व्यवहारी, स्तुति कर्ता, शोभायमान।
परिदेवन (सं० पु०) अनुशोचन, विलाप, पछतावा, रोदन, क्रीड़ा, जिगीषा, द्यूतकर्म, जूआ खेलना, स्तुति।

परिधान (सं० पु०) परिधेय वस्त्र, वस्त्रादि धारण, नाभी से नीचे पहनने का वस्त्र।

परिधि (सं० स्त्री०) घेरा, मण्डल, सूर्य या चन्द्र का मण्डल, परिवेश, दायरा, गूलर के पेड़ की टहनी।

परिधेय (वि०) पहनने योग्य।

परिध्वंश (सं० पु०) नाश, बिगाड़, हानि, क्षति।

परिपक्क (वि०) सुपक्व, पटु, ख़ूब पका हुआ, चतुर, बुद्धिमान्, होशियार।

परिपण (सं० पु०) मूल धन, पूँजी।

परिपन्थी (सं० पु०) शत्रु, दुश्मन, बैरी, ठग, चोर।

परिपाक (सं० पु०) नैपुण्य, फल, उत्तम पाक, होशियारी, हाज़मा। [शैली, प्रणाली, दस्तूर, क़ायदा।

परिपाटी (सं० स्त्री०) अनुक्रम, रीति, परम्परा की रीति,

परिपालक (सं० पु०) रक्षा करने वाला व्यक्ति, भरण पोषण करने वाला मनुष्य।

परिपालन (सं० पु०) पोषण, भरण, रक्षण।

परिपालित (वि०) रक्षित, आश्रित।

परिपिष्टक (सं०पु०) सीसक, सीसा, धातु विशेष।

परिपूत (वि०) पवित्र, बिना छिलके का धान, शुद्ध।

परिपूरन (वि०) देखो "परिपूर्ण"।

परिपूर्ण (वि०) पूरा, पूर्ण, भरा हुआ, सम्पूर्ण, समाप्त।

परिव्राजक (सं० पु०) संन्यासी।

परिभव (सं० पु०) अनादर, पराजय, तिरस्कार।

परिभाव (सं०पु०) देखो "परिभव"।

परिभाषण (सं० पु०) निन्दापूर्वक कथन।

परिभाषा (सं० स्त्री०) सूत्र विशेष, लक्षण, व्याख्या, संज्ञा शास्त्र सांकेतिक नियम।

परिभूत (वि०) अनादृत, पराजित, हराया हुआ।

परिभ्रमण (सं० पु०) घूमना, पर्यटन, फिरना, मटरगश्ती करना, भटकना।

परिभ्रष्ट (वि०) नष्ट, पतित, बरबाद।

परिमण्डल (सं० पु०) चक्कर, घेरा, दायरा, परिधि, एक प्रकार का विषैला मच्छर।

परिमल (सं० पु०) मलने से उत्पन्न मनोहर गंध, कुंकुमादिगंध, सुगंध, सुवास, सौरभ, पंडितों का समुदाय।

परिमाण (सं० पु०) प्रमाण, समता, परिसर, माप, माप, तौल, अरज अंदाज़ा, पैमाना।

परिमान (सं० पु०) देखो "परिमाण"।

परिमार्जित (वि०) शुद्ध, संशोधित, साफ़।

परिमित (वि०) युक्त, परिच्छिन्न, नियमित, नापा हुआ, मापा हुआ।

परिमितव्ययी (सं०पु०) समझ बूझ कर ख़र्च करने वाला।

परिमिति (सं० स्त्री०) परिमाण, हद, किनारा, अवधि।

परिरम्भ (सं० पु०) आलिङ्गन, भेंटना, गले से गला या छाती से छाती लगा कर मिलना।

परिवर्जन (सं० पु०) परिहार, त्याग, मारना।

परिवर्त (सं० पु०) विनिमय, युगान्तकाल, ग्रन्थ विच्छेद, बदल, किसी काल का अन्त।

परिवर्तन (सं० पु०) हेराफेरी, लेनदेन, बदल, पलटना।

परिवा (सं० पु०) दोनों पक्ष की पहली तिथि। [दुर्वाद।

परिवाद (सं० पु०) अपवाद, बदनामी, गाली, निन्दा,

परिवादक (सं० पु०) निन्दक, द्वेषी।

परिवार (सं० पु०) परिजन, घराना, कुटुम्ब।

परिवारण (सं० पु०) माँगना, तक़ाज़ा करना, रोकना, बाधा डालना।

परिवाह (सं०पु०) जलोच्छ्वास, जल का उछलना, बहाव, मेघ पथ, चहबच्चा, तरंग, लहर। [परिवेष्टित।

परिवृत (सं० पु०) रक्षित, आच्छादित, घिरा हुआ,

परिवेषण (सं० पु०) परोसना, भोजन परोसना।

परिवेष्टन (सं० पु०) आच्छादन, चारों ओर से घेरना।

परिव्राजक (सं० पु०) संन्यासी, यती, योगी, गुसाँई।

परिशिष्ट (सं० पु०) पुस्तक या लेख का वह अंश जिसमें ऐसी बातें लिखी गई हों जो यथास्थान देने से छूट गई हों और जिनके देने से पुस्तक की पूर्ति होती हो (वि०) बचा हुआ, छूटा, अवशिष्ट।

परिशुद्ध (वि०) पवित्र, शुद्ध, उज्ज्वल, परिशोधित।

परिशेष (सं० पु०) अन्त, सीमा, समाप्ति, हद।

परिशोध (वि०) ऋण चुकाना, क़र्ज़ अदा करना, चुकता, ऋण-शुद्धि। [चेष्टा।

परिश्रम (सं० पु०) श्रम, थकावट, मिहनत, उद्योग,

परिश्रमी (वि०) मेहनती, श्रमी, उद्योगी।

परिश्रान्त (वि०) थका हुआ, श्रमित, क्लान्त।

परिश्रेय (सं० पु०) आश्रय, अवलम्ब।

परिषद् (सं० पु०) सभा, मजलिस, समूह, समाज।

परिष्कार (सं० पु०) संस्कार, सफ़ाई, शुद्धता।

परिष्कृत (वि०) अलंकृत, भूषित, शुद्ध, स्वच्छ।

परिष्वङ्ग (सं० पु०) आलिङ्गन, भेंटना।
परिसंख्या (सं०स्त्री०) गणना, सीमा, काव्यालंकार विशेष।
परिसर (सं० पु०) नदी, नगर, पर्वतादि निकट भूमि, मृत्यु, विधि, घर, चौड़ाई, निकास, कगर।
परिहर (क्रि०स०) छोड़ कर, त्याग कर। [अलग करना।
परिहरना (क्रि० स०) छोड़ना, त्यागना, दूर करना,
परिहरहीं (क्रि० स०) छोड़ते हैं, त्यागते हैं।
परिहार (सं० पु०) अवज्ञा, अपमान, मोचन, त्याग, हटना, लेना, छीनना, छुड़ाना, ले लेना। [मसख़री।
परिहास (सं० पु०) हँसी, ठट्ठा, कौतुक, खेल, कुतूहल,
परिहास्य (वि०) हँसने योग्य, मसख़री के लायक़।
परिहित (वि०) आच्छादित, ढका हुआ, आच्छन्न, गुप्त, घिरा हुआ, पोशीदा।
परी (सं० स्त्री०) देवाङ्गना, अप्सरा, एक प्रकार की कलछी, जिससे बर्तन में से तेल निकालते हैं।
परीक्षक (सं० पु०) परीक्षा करने वाला, परखने वाला, इम्तहान लेने वाला।
परीक्षा (सं० स्त्री०) जाँच, परख, इम्तिहान।
परीक्षित (सं० पु०) उत्तरा के गर्भ से उत्पन्न अभिमन्यु का पुत्र, जब इनके राज्य में कलियुग ने प्रवेश किया तो इन्होंने उसको जुआ, मद्य, हिंसा और सुवर्ण में वास करने की आज्ञा दी, एक रोज़ ये अहेर खेलने गये इनको प्यास बहुत ज़ोर से लगी, ये एक मुनि के आश्रम में पहुँचे पर मुनि ध्यान में थे इनकी बातों का उत्तर नहीं दिया, इन्होंने क्रुद्ध होकर मुनि के गले में एक मरा सर्प जो वहाँ पड़ा था, डाल दिया, जब मुनि के पुत्र ने जिसका नाम श्रृङ्गी था, सुना तो राजा को शाप दिया कि जिसने मेरे पिता के गले में सर्प डाला है उसको आज से सातवें दिन तक्षक काटेगा, इसके ठीक सातवें दिन, राजा को तक्षक ने काटा और राजा मर गये।
परु (सं० पु०) पोर, गाँठ, ग्रन्थि।
परुष (सं० पु०) निठुर वाक्य, कठोर बचन (वि०) चित्र वर्ण, कठोर, कड़ा, टेढ़ा, व्यङ्ग, रुक्ष, तीक्ष्ण, कुवचन
परुषता (सं० स्त्री०) निष्ठुरता का कार्य।
परुषभाषी (सं० पु०) कटु भाषी।
परुषोक्ति (सं० स्त्री०) कटु वाक्य। [उस पार, अन्त में।
परे (अव्य०) परलोक में, पीछे, आगे, दूर, अलग, उधर,
परेखा (सं० पु०) पछतावा, पश्चात्ताप।
परेत (सं० पु०) भूत, पिशाच, शैतान (वि०) मृत, मुर्दा, मृतक, मरा हुआ।
परेतना (क्रि० अ०) ओटना, फेंटी बनाना।
परेतराज (सं० पु०) यम, मलकुलमौत।
परेता (सं० पु०) अरेरना, चर्खी, रहट, जुलाहों का एक औज़ार जिस पर वे सूत लपेटते हैं।
परेवा (सं० पु०) कबूतर, कपोत, प्रतिपदा।
परेश (सं० पु०) परमेश्वर।
परेशान (फ़ा० वि०) घबड़ाया हुआ, उद्विग्न, व्याकुल।
परेह (सं० पु०) पलेव, कढ़ी, जूँस, शूर्वा, रसा।
परोक्ष (सं० पु०) भूतकाल का एक भेद, अप्रत्यक्ष, तपस्वी, गायब।
परोपकार (सं० पु०) पराये का हित, दूसरे का भला।
परोपकारी (वि०) पराया हित चाहने वाला, दूसरे की भलाई करने वाला।
परोपदेश (सं० पु०) दूसरे के लिये सम्मति।
परोस (सं० पु०) समीपता, गोंयड़ा, नज़दीक, पड़ोस।
परोसना (क्रि०स०) भोजन की वस्तु थाली या पत्तल आदि में लगाना, भोजन चुनना, पत्तल लगाना, परसना। [या पत्तल।
परोसा (सं० पु०) खाद्य वस्तुओं से सजाया हुआ थाली
परोसी (वि०) पड़ोसी, अपने घर के बगल में रहने वाला।
परोसैया (वि०) परोसने वाला।
परोहन (सं० पु०) बाहन, रथ, बहल, गाड़ी, सवारी।
परोहा (सं० पु०) चरस, मोट, पुर।
पर्करी (सं० स्त्री०) प्लक्ष वृक्ष, पाकड़ का दरख़्त।
पर्चा (फ़ा० सं० पु०) काग़ज़ का टुकड़ा, पुरज़ा, खत, परीक्षा में आने वाला प्रश्न-पत्र, परिचय, जानकारी।
पर्चाना (क्रि० स०) भेंट कराना, मिलाना।
पर्चूनिया (सं० पु०) देखो "परचूनिया"।
पर्चूनी (सं० स्त्री०) देखो "परचूनी"।
पर्छती (सं० स्त्री०) छोटी छपरिया।
पर्छा (सं०पु०) वह कपड़ा, जिससे तेली कोल्हू के बैल की आँखों में अँधोटी बाँधते हैं, बड़ी कलाई, बड़ा देग, मिट्टी का मझोला बर्तन, भीड़ का छँटाव
पर्छाँ (सं० स्त्री०) प्रतिबिम्ब, प्रतिरूप।
पर्छाईं (सं० स्त्री०) प्रतिबिम्ब, प्रतिछाया।

पर्ज (सं० स्त्री०) ढोल का एक बोल ।
पर्जन्य (सं० पु०) इन्द्र, मेघ, मेघ-शब्द ।
पर्ण (सं० पु०) पत्र, पत्त, पता, पंख, पर, पान, पलाश।
पर्णकार (सं० पु०) तम्बोली, बरई, बारी ।
पर्णकुटी (सं० स्त्री०) पत्तों आदि से बनी झोपड़ी।
पर्णखण्ड (सं० पु०) वनस्पति, जिसमें फूल न लगते हों।
पर्णचोरक (सं० पु०) गन्ध द्रव्य विशेष । [रहे, बकरी।
पर्णभोजन (सं० पु०) वह जीव जो केवल पत्ते खाकर
पर्णमणि (सं० स्त्री०) पन्ना, अस्त्र विशेष ।
पर्णमाचल (सं० पु०) कमरख का वृक्ष ।
पर्णमृग (सं० पु०) वृक्षों पर रहने वाले बानर आदि जीव-जन्तु । [मारा गया।
पर्णय (सं० पु०) एक असुर का नाम, जो इन्द्र द्वारा
पर्णराह (सं० पु०) वसन्त ऋतु ।
पर्णलता (सं० स्त्री०) पान की बेल।
पर्णवल्क (सं० पु०) ऋषि विशेष ।
पर्णशवर (सं० पु०) देश विशेष ।
पर्णास (सं० पु०) तुलसी ।
पर्णिक (सं० पु०) पत्ते बेचने वाला ।
पर्णिका (सं० स्त्री०) मानकन्द, अग्नि मथने की अरणी ।
पर्णशाला (सं० स्त्री०) पत्तों की बनी कुटी, झोपड़ी ।
पर्णी (सं० स्त्री०) पलाश वृक्ष, छिउल, ढाक ।
पर्दा (सं० पु०) आड़, ओट, परदा ।
पर्पट (सं० पु०) दवन पापड़ा, पित्तपापड़ा ।
पर्पटा (सं० स्त्री०) पापड़, पापर ।
पर्परी (सं० स्त्री०) पद्मावती, सुगंध द्रव्य, मुलतानी मिट्टी।
पर्यङ्क (सं०पु०) पलंग, खाट, चारपाई, योग का एक आसन।
पर्यटन (सं०पु०) भ्रमण, घूमना, सैर करना, सफ़र करना ।
पर्यनुयोग (सं० पु०) जिज्ञासा, प्रश्न, सवाल ।
पर्यन्त (सं० पु०) अन्त, शोभा (वि०) चर्म, हद, आख़िर का (अव्य०) तक, तलक । [णाम।
पर्यवसान (सं० पु०) समाप्ति, राग, क्रोध, अन्त, परि-
पर्याप्त (सं० पु०) पूर्ण, पूरा, यथेष्ट, काफ़ी।
पर्याय (सं० पु०) अनुक्रम, प्रकार, अवसर, निर्माण, बनने का काम, द्रव्य का धर्म, तरकीब, क़ायदा, ओसरी, बारी, डोल, सम्पर्क ।
पर्यायवाचक (सं० पु०) एकार्थवाची, एकार्थ बोधक ।
पर्यालोचना (सं०स्त्री०) बिचार करना, ग़ौर करना, इहतियात करना, चौकसी करना, सब प्रकार से देखना, जाँच-पड़ताल । [व्याकुल ।
पर्युत्सुक (वि०) शोक-विह्वल, उद्विग्न, चिन्तित,
पर्युषित (वि०) बासी, पिछले दिन की बनी हुई चीज़ें।
पर्ला (वि०) उस पार का, परले सिरे का ।
पर्व (सं० पु०) त्योहार, उत्सव, अध्याय, परिच्छेद, वह स्थान जहाँ दो अङ्ग जुड़े हों, संधिस्थान।
पर्वणी (सं० स्त्री०) त्योहार, उत्सव, तिहवार।
पर्वत (सं० पु०) गिरि, पहाड़, मुनि विशेष, मत्स्य भेद, वृक्ष विशेष, शाक विशेष ।
पर्वतज (सं०पु०) पर्वत से उत्पन्न।
पर्वतनन्दिनी (सं० स्त्री०) पार्वती ।
पर्वतराज (सं० पु०) हिमालय पर्वत ।
पर्वतारी (सं० पु०) इन्द्र । [पहाड़ी।
पर्वतिया (सं० स्त्री०) लौकी, लौआ (वि०) पर्वतीय,
पर्वतीय (वि०) पहाड़ी, पहाड़ का ।
पर्वाल (सं० पु०) काजल वाली ।
पल (सं०स्त्री०) घड़ी का साठवाँ भाग, निमेष, क्षण, तृण, कर्ष चतुष्टय परिमाण, चार तोला।
पलक (सं० पु०) पल, पपनी, निमेष ।
पलंग (सं० पु०) खाट, चारपाई, शय्या ।
पलंगड़ी (सं० स्त्री०) छोटा पलंग, खटोला ।
पलंजी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की घास । [फौज़ ।
पलटन (सं० स्त्री०) हज़ार सिपाहियों का थोक, सेना,
पलटना (क्रि० अ०) फिरना, लौटना, बहुरना । [परिवर्तन ।
पलटा (सं० पु०) बदला, प्रतिफल, पलटने की क्रिया या भाव,
पलटाना (क्रि० स०) फिराना, फेरना, बदलाना, लौटाना ।
पलटाव (सं० पु०) विरोध, लौटाव, फिराव ।
पलड़ा (सं० पु०) पल्ला, तखड़ी, तुला।
पलथा (सं० पु०) लोट, पोट ।
पलथी (सं० स्त्री०) बैठने की चाल, दोनों पैरों को मोड़ कर एक दूसरे पर चढ़ा कर बैठने की क्रिया।
पलना (क्रि० अ०) प्रतिपालित होना, पनपना, बढ़ना ।
पलल (सं० पु०) मांस, कीचड़, तिल चूर्ण, तिल का फूल, शव, लाश, राक्षस । [विशेष ।
पलवल (सं० पु०) पटोल, परवल, परोरा, तरकारी
पलवाना (क्रि० स०) पालने की क्रिया दूसरे से कराना, रक्षा कराना, पोसवाना ।

जात्य त्रिभुज (सं० पु०) समकोण त्रिभुज।
जात्यन्ध (वि०) जन्म से अन्धा, दृष्टिहीन, जन्मान्ध।
जात्रा (सं० स्त्री०) यात्रा, प्रस्थान, गमन।
जादव (सं० पु०) यादव, यदुवंशी, यदुकुलोत्पन्न।
जादवपति (सं० पु०) माधव, श्रीकृष्ण।
जादा (वि०) अधिक, पुत्र, सन्तान, यथा—शाहज़ादा-शाह का पुत्र, गरीबज़ादा-गरीब का पुत्र।
जादू (फ़ा० सं० पु०) आश्चर्योत्पादक क्रिया, इन्द्रजाल, टोना, तिलस्म, मोहनी। [करना।
मुहा०—जादू जगाना=प्रयोग से पूर्व जादू को सचेत
जादूगर (फ़ा० सं० पु०) मदारी, जादू करने वाला।
जादूगरी (फ़ा० सं० स्त्री०) जादू की क्रिया, जादू का कार्य, जादूगर का पेशा। [शक्ति, मज़ेदार।
जान (सं० स्त्री०) ज्ञान, परिचय, जानकारी, प्राण, दम,
मुहा०—मेरे जान में=मेरी समझ में या मेरे ज्ञान में।
जानकार (वि०) ज्ञान रखने वाला, परिचित, विज्ञ, चतुर।
जानकारी (सं० स्त्री०) विज्ञता, निपुणता, चतुरता।
जानकी (सं० स्त्री०) जनक-सुता, सीता।
जानकीजानि (सं० पु०) श्री रामचन्द्र।
जानकीजीवन (सं० पु०) रामचन्द्र, जानकी के आधार।
जानकीनाथ (सं० पु०) श्री रामचन्द्र।
जानकीमङ्गल (सं० पु०) ग्रन्थ विशेष जिसमें सीता के विवाह का वर्णन है।
जानत (वि०) ज्ञानी, ज्ञान से जानता है। [धारी।
जानदार (फ़ा० वि०) जीवित, शक्तिशाली, प्राणी, जीव-
जाननहार (सं० पु०) जानने वाला, समझने वाला।
जानना (क्रि० स०) ज्ञात करना, समझना, मालूम करना। बोध प्राप्त करना, परिचित होना।
जाननौ (वि०) जानना, समझना।
जानपद (सं० पु०) जनस्थान, देश, लोक, जन, मनुष्य, कर, दस्तावेज, (लेख्य) जो अपने हाथ से लिखा गया हो या दूसरे से लिखवाया गया हो। [चतुराई।
जानपना (सं० पु०) जान पहचान, जानकारी, अभिज्ञता,
जानपनी (सं० स्त्री०) चतुराई, बुद्धिमानी, जानकारी।
जान पहचान (सं० पु०) परिचय, चिह्न, पहचान।
जानब (क्रि०) जानना, समझना, जाना, समझा।
जानराय (सं० पु०) जानवरों में उत्तम, सुजान, ज्ञानी मनुष्य।

जानवर (फ़ा० सं० पु०) जीव, जन्तु, प्राणी, पशु, पक्षी।
जानहार (वि०) जवैया, जाने वाला, गमनशील, नष्ट होने वाला।
जानहु (अव्य०) मानो।
जाना (क्रि० अ०) गमन करना, प्रस्थान करना, खोना, गुज़रना, नष्ट होना, बहना, मरना।
जानि (सं० स्त्री०) पत्नी, भार्या, जोरू, (वि०) जानने वाला, (क्रि० वि०) जान कर, समझ कर। [प्यारी।
जानी (फ़ा० वि०) जान संबन्धी, (सं० स्त्री०) प्राण-
जानु (सं० पु०) घुटना, जांघ।
जानुपाणि (क्रि० वि०) घुटने के बल, बैंया, पैंया।
जानुफलक (सं० पु०) खुटिया, चकित, मोटा घुटना, पटरे के समान जानु।
जानो (अव्य०) मानो।
जान्ना (वि०) पहचानना, समझना। [जपना।
जाप (सं० पु०) किसी मन्त्र को बार बार मन में पढ़ना,
जापक (सं० पु०) जप करने वाला, जपने वाला।
जापान (सं० स्त्री०) एक द्वीप-समूह का नाम जो देश के पूरब में है।
जापानी (वि०) जापान का, जापान का रहने वाला।
ज़ाफत (सं० स्त्री०) दावत, भोज।
ज़ाफ़रान (अ० सं० पु०) केसर।
ज़ाफ़रानी (वि०) केसरिया।
जाब (सं० पु०) जाल विशेष, जाना।
जाबजा (फ़ा० क्रि० वि०) इधर उधर, ठौर ठौर।
जाबता (अ० सं० पु०) नियम, व्यवस्था, क़ानून, क़ायदा।
जाबाल (सं० पु०) एक मुनि का नाम, इनकी माता का नाम जाबाला था, ये ऋषियों के पास वेदाध्ययन के लिये गये, आचार्य ने इनका गोत्र और पिता का नाम पूछा, ये न बता सके, लौट कर इन्होंने अपनी माँ से पूछा, उसने कहा मैं जवानी में बहुत से पुरुषों के पास गयी थी उसी समय तुम्हारा जन्म हुआ, मुझे मालूम नहीं तुम किस के हो, जा कर आचार्य से कह दो मेरी माँ का नाम जाबाला और मेरा नाम जाबाल है, इसने आचार्य से सच सच कह सुनाया, आचार्य इसकी सत्यता से प्रसन्न हुए और यह निश्चय कर लिया कि अवश्य यह ब्राह्मण का पुत्र है, उसका यज्ञोपवीतादि संस्कार कर दिया।

जाबाली (सं० पु०) एक ऋषि का नाम, ये दशरथ के गुरु और मन्त्री भी थे।

जाम (सं० पु०) प्रहर, पहर, (फ़ा०) प्याला।

जामदग्न्य (सं० पु०) परशुराम, जमदग्नि का पुत्र।

जामदानी (सं० पु०) कपड़े या चमड़े की बनी पेटी शीशे अबरक आदि का बना हुआ छोटा संदूक, एक प्रकार का बूटेदार वस्त्र। [के लिए डाला जाता है।

जामन (सं०) जोरन, वह थोड़ा सा दही जो दूध में जमने

जामना (क्रि० अ०) जमना, किसी तरल पदार्थ का गाढ़ा होना, उगना। [प्रधान सेनापति।

जामवन्त (सं० पु०) ऋक्षराज, रामचन्द्र की सेना का

जामवन्ती (सं०स्त्री०) जाम्बवान की पुत्री, श्री कृष्णचन्द्र जी की प्रधान रानियों में से एक रानी।

जामात (सं० पु०) दामाद।

जामाता (सं० पु०) दामाद, कन्या का पति।

ज़ामिन (अ० सं० पु०) प्रतिभू, ज़मानत करने वाला।

ज़ामिनदार (फ़ा० सं० पु०) ज़ामिन, ज़मानत करने वाला। [अरबी, फ़ारसी, चार पहर की रात।

जामिनी (सं०स्त्री०) यामिनी, रात्रि, रात, यवनों की भाषा,

जामुन (सं० पु०) एक प्रकार का वृक्ष, इसमें बेर के बराबर फल लगते हैं और पकने पर काले रंग के हो जाते हैं, इसका फल खाया जाता है, खाने में कसैला और मीठा होता है।

जामुना (वि०) जामुन के समान, जामुन के रंग का।

जामेवार (सं० पु०) एक प्रकार का दुशाला, एक प्रकार की छींट।

जाम्बवान (सं० पु०) एक ऋक्ष यह ब्रह्मा का पुत्र माना जाता है यह सुग्रीव का सेनापति था राम रावण युद्ध में इसने राम को बहुत सहायता दी थी, द्वापर में इसकी कन्या जामवन्ती का विवाह श्रीकृष्ण के साथ हुआ था।

जाम्बुवन्त (सं० पु०) कल्पित भालु।

जाम्बूनद (सं०पु०) सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्यमय, काञ्चन।

ज़ायक़ा (अ० सं० पु०) लज्ज़त, स्वाद।

ज़ायक़ेदार (वि०) लज़्ज़तदार, स्वादिष्ट।

जायज़ (अ० वि०) उचित, यथार्थ।

ज़ायद (फ़ा० वि०) अधिक, ज़्यादा।

जायदाद (फ़ा० सं० स्त्री०) संपत्ति, भूमि।

जायफल (सं० पु०) फल विशेष, एक प्रकार का गरम मसाला।

जाया (सं० स्त्री०) पत्नी, भार्या, स्त्री।

जायाजीव (सं० पु०) नट, वेश्यापति, बगला पक्षी।

जायानुजीवी (सं० पु०) देखो "जायाजीव"।

जायापति (सं० पु०) दम्पत्ति, पति, पत्नी, नर नारी।

जाये (क्रि०) उत्पन्न किये हुए, (सं० पु०) बेटा, बालक, सन्तान। [उपपति, रूस सम्राट की उपाधि।

जार (सं० पु०) वह पुरुष जो पर स्त्री से प्रेम करे, यार,

जारकर्म (सं० पु०) व्यभिचार। [गर्भ।

जारगर्भ (सं० पु०) व्यभिचारी, लम्पट, दूसरे पति का

जारज (सं० पु०) जार से उत्पन्न सन्तान।

जारण (सं० पु०) भस्म करना, जलाना।

जारन (सं० पु०) ईंधन, जलाने की क्रिया।

जारना (क्रि० स०) जलाना, बारना, झुलसना।

जारल (सं० पु०) काष्ठ विशेष, एक प्रकार की लकड़ी।

जारा (सं० पु०) सोनार आदि के भट्टी का आग रखने वाला भाग, जाला।

जारिणी (सं० स्त्री०) दुराचारिणी, व्यभिचारिणी।

जारी (अ० वि०) प्रवाहित, बहता हुआ।

जारोब (फ़ा० सं० स्त्री०) झाड़।

जारोबकश (फ़ा० सं० पु०) झाड़ देने वाला।

जाल (सं० पु०) सूत तार आदि का दूर दूर बिना हुआ पट, जो मछली या चिड़िया फँसाने के काम आता है, पाश समूह, अहंकार, अभिमान, जंगला, झरोखा, मक्कारी, फरेब, धोखा, बनावट।

जालगि (सर्व०) जिसके लिए, जिस कारण, जिस हेतु।

जालगोणिका (सं० स्त्री०) दधिमन्थन, मथेड़ो, मथनी।

जालदार (वि०) जाल के समान छेद वाला।

जालन्धर (सं० पु०) एक ऋषि का नाम, एक राक्षस का नाम जिसको जलन्धर भी कहा जाता है।

जालन्धरी विद्या (सं० स्त्री०) इन्द्रजाल।

जालबंद (सं० पु०) वह ग़लीचा जिसमें जाल के समान बेलें बनी हों।

जालरन्ध्र (सं० पु०) जाली का झरोखा।

जालसाज़ (सं० पु०) दूसरों को धोखा देने के लिये झूठी कार्रवाई करने वाला मनुष्य, फ़रेब करने वाला आदमी।

जालसाज़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) दगाबाज़ी, फरेब।
जाला (सं० पु०) मकड़ी का बुना हुआ जाल, नेत्र रोग विशेष, पानी रखने का बर्तन, मटका।
जालिक (सं० पु०) जाल बुनने वाला, कैवर्त, मछुवा, धीवर, मकड़ी, बाजीगर, मदारी।
जालिका (सं० पु०) समूह, झुण्ड।
जालिनी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का रोग, परवर की लता, तरोई, घिया, चित्रशाला।
ज़ालिम (अ० वि०) अत्याचारी, अन्यायी, निर्दयी।
जालिया (वि०) जालसाज़, फरेबी।
जाली (सं० स्त्री०) परवर, तरोई, झंझरी, एक प्रकार के कसीदे का काम, कच्चे आम के गुठली की झिल्ली (वि०) बनावटी, नकली।
जालीदार (वि०) जाली बना हुआ।
जालीलेट (सं० पु०) एक प्रकार का वस्त्र जिसमें छोटे छोटे छेद बने रहते हैं। [मूर्ख।
जाल्म (सं० पु०) नीच, नृशंस, पामर, कुटिल, क्रूर,
जाल्मक (सं० पु०) गुरु, मित्र या ब्राह्मण के साथ द्वेष करने वाला व्यक्ति।
जावक (सं० पु०) यावक, महावर, अलता।
जावन (सं० पु०) जामन, जोरन।
जावनी (सं० स्त्री०) अजवाइन।
जावा (सं० पु०) हिन्द महासागर का एक उपद्वीप।
जावां (सं०पु०) यमज, यमल, एक साथ दो सन्तान होना।
जावित्री (सं० स्त्री०) जायफल के ऊपर का छिलका।
जासु (सर्व०) जिसका, जिसको। [मिलाये जाते हैं।
जासू (सं० पु०) पान मादक बनाने के लिये अफ़ीम में
जासूस (अ० सं० पु०) भेदिया, गुप्तचर।
जासूसी (सं० स्त्री०) जासूस का काम, गुप्त रीति से किसी बात के पता लगाने की क्रिया।
जाह (सं०पु०) आपत्ति, झञ्झट, फँसाव।
जाहा (सं० पु०) देखा, निरीक्षण किया।
जाहि (सर्व०) जिसको। [हुआ।
ज़ाहिर (अ० सं० पु०) प्रकट, विदित, प्रकाशित, खुला
ज़ाहिरा (अ० क्रि० वि०) प्रत्यक्ष रूप से, प्रकट में।
जाहिल (अ० वि०) मूर्ख, अनाड़ी, अज्ञानी, निर्बोध।
जाही (सं० स्त्री०) चमेली की जाति का एक प्रकार का पुष्प।
जाह्नवी (सं० स्त्री०) गंगा।
जिंद (अ० सं० पु०) मुसलमान जाति का भूत।
ज़िंदगानी (फ़ा० सं० स्त्री०) जीवन।
ज़िंदगी (फ़ा० सं० स्त्री०) जीवन।
ज़िंदा (फ़ा० वि०) जीवित।
ज़िंदादिल (फ़ा० वि०) खुशदिल, हँसमुख, हँसोड़।
जिंस (फ़ा० सं० स्त्री०) रसद, सामान, सामग्री, वस्तु, द्रव, भांति, प्रकार।
जिअत (क्रि० अ०) जीवित है।
जिआऊ (सं० पु०) जीवन दान।
जिआन (फ़ा० सं० पु०) नुकसान, हानि।
जिआये (वि०) पाला पोसा।
जिउका (सं० पु०) जीविका।
जिउकिया (सं० पु०) रोज़गारी, व्यापारी।
जिउतिया (सं० स्त्री०) पुत्रवती स्त्रियों का एक व्रत जो आश्विन कृष्णाष्टमी के दिन होता है।
ज़िक्र (अ० सं० पु०) प्रसंग, चर्चा।
जिगजिगिया (वि०) चापलूस। [अंग।
जिगजिगी (सं० स्त्री०) चिरौरी, खुशामद, स्त्री का गुप्त
जिगना (सं० पु०) वृक्ष विशेष।
जिगमिषा (सं० स्त्री०) गमन करने की इच्छा। [वाला।
जिगमिषु (वि०) जाने की इच्छा वाला, जाना चाहने
जिगर (फ़ा० सं० पु०) कलेजा, हृदय, मन, जीव, चित्त, हिम्मत, साहस, सार, सत्त, सार भाग, लड़का, पुत्र।
जिगरी (फ़ा० वि०) भीतरी, हार्दिक, दिली, अभिन्न हृदय।
जिगिया (सं० स्त्री०) जीतने की इच्छा।
जिगीषा (सं० स्त्री०) विजय की इच्छा, जय पाने की इच्छा, उद्यम, उद्योग, व्यवसाय। [वाला।
जिगीषु (वि०) जय चाहने वाला, जय की अभिलाषा करने
जिघत्सा (सं० स्त्री०) भोजन की इच्छा, भोजन करने की चेष्टा।
जिघत्सु (वि०) भोजन करने की इच्छा रखने वाला, क्षुधित।
जिघांसु (वि०) वध-करणेच्छुक, घातक, क्रूर, वधोद्यत।
जिघासा (सं० स्त्री०) क्षुधा, भूख, भोजन करने की इच्छा।
ज़िच (सं० स्त्री०) तंगी, मजबूरी, (वि०) तंग, विवश।
जिजिया (सं० स्त्री०) बहिन, (फ़ा० सं० पु०) कर, महसूल, वह कर जो मुसलमानी अमलदारी में उन

लोगों से लिया जाता था जो मुसलमान नहीं थे, चूंची, स्तन। [जीवनेच्छुक।
जिर्जीविषु (सं० पु०) जीने की इच्छा करने वाला,
जिज्ञातन (सं० पु०) प्रश्न करना, जानने की इच्छा प्रगट करना। [प्रश्न, अनुसंधान।
जिज्ञासा (सं०स्त्री०) ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा,पूंछताछ,
जिज्ञासु (वि०) ज्ञान प्राप्ति की इच्छा रखने वाला, जानने की इच्छा रखने वाला।
जिज्ञास्य (वि०) पूछने योग्य, प्रश्न करने योग्य।
जिञ्जीरा (सं० पु०) बेड़ी, श्रृङ्खला, सिक्कड़।
जिठाई (सं० स्त्री०) जेठाई, बड़ाई, जेठापन।
जिठानी (सं० स्त्री०) जेठानी, पति के बड़े भाई की स्त्री।
जित् (वि०) जेता, जीतने वाला।
जित (सं० पु०) जय, जीत, विजय, (वि०) पराजित, जीता हुआ, (क्रि० वि०) जहां, जिधर, जिस तरफ़।
जितना (वि०) जिस परिमाण का, जिस मात्रा का, (क्रि० वि०) जिस परिमाण में, जिस मात्रा में।
जितनी (सं० स्त्री०) परिमाणार्थक, खेत की जोताई।
जितयोनि (सं० पु०) हिरन, हरिण, मृग।
जितवना (क्रि० स०) प्रकट करना, जताना।
जितवाना (क्रि० स०) जिताना, जीतने देना।
जितवार (वि०) जीतने वाला, विजयी।
जितवैया (वि०) जीतने वाला।
जितशत्रु (सं० पु०) शत्रु पराजित करने वाला, विजयी।
जितहु (क्रि०) जीतो, जीत लो।
जिता (सं० पु०) एक प्रकार की सहायता जो किसान आपस में जोताई बोआई के समय एक दूसरे को देते हैं, हूंड़। [जिसको श्राद्ध में भाग मिलता है।
जितात्मा (वि०) जितेन्द्रिय, (सं० पु०) वह देवता
जिताना (क्रि० स०) जितवाना, जीतने देना।
जितामित्र (वि०) विष्णु, नारायण, विजयी, जिसने शत्रु जीत लिये हैं। [जीतने वाला।
जितारि (सं० पु०) बुद्ध देव, (वि०) कामादि शत्रुओं को
जिताहार (सं० पु०) अन्न जयी, जिसने अन्न को अधीन कर लिया है। [कर (सं० स्त्री०) जीत।
जिति (सर्व०) जितनी, जिधर, जिस तरफ़ (क्रि०) जीत
जितेन्द्रिय (वि०) इन्द्रियों को जीतने वाला, इन्द्रियों को वश में रखने वाला, शान्त, अकामी।
जितेन्द्री (सं० पु०) देखो "जितेन्द्रिय"।
जितै (वि०) जिस ओर, जिस तरफ, जिधर।
जितो (वि०) जितना।
जित्व (वि०) विजयी, जीतने वाला।
जित्वर (वि०) विजयी, जीतने वाला। [दुराग्रह, हठ।
ज़िद (अ० सं० स्त्री०) विरुद्ध बात या वस्तु, शत्रुता,
ज़िदियाना (क्रि० अ०) हठ करना, ज़िद करना।
जिद्द (सं० स्त्री०) ज़िद, हठ, दुराग्रह।
जिद्दी (वि०) हठी, दुराग्रही।
जिधर (वि०) जहां, जिस ओर।
जिन (सं० पु०) विष्णु, बुद्ध, सूर्य, जैन धर्म प्रवर्तक, जैन तीर्थंकर, (सर्व०) जिस का बहुवचन, (अ० सं० पु०) मुसलमानों का भूत प्रेत।
जिनकेरे (सर्व०) जिनके, जिस किसी के।
ज़िनाकार (फ़ा० वि०) व्यभिचारी।
ज़िनाकारी (फ़ा० सं० स्त्री०) व्यभिचार।
ज़िनाबिज्जब्र (अ० सं० पु०) किसी स्त्री के साथ बलात्-कार व्यभिचार करना।
जिनिस (सं० स्त्री०) देखो "जिंस"।
जिन्दगानी (सं० स्त्री०) जीवन, जिन्दगी, जन्म।
जिन्स (सं० पु०) द्रव्य, वस्तु, प्रकार।
जिन्ह (सर्व०) जिन। [पतली रस्सी।
जिबरिया (सं० स्त्री०) जेवरी, मूंज या सन की बटी हुई
जिब्भा (सं० स्त्री०) जीभ, जिह्वा।
जिभ्या (सं० स्त्री०) देखो "जिब्भा"।
जिम (अव्य०) यथा, जैसे, यादृश।
जिमाना (क्रि० स०) भोजन कराना, खिलाना।
जिमि (वि०) जैसे, यथा।
जिमीकन्द (सं० पु०) सूरन।
ज़िमींदार (सं० पु०) वह जो जमीन का मालिक हो, भूम्याधिकारी। [प्रतिज्ञा।
जिम्मा (अ० सं० पु०) जवाबदेही, उत्तरदायित्व पूर्ण
ज़िम्मादार (सं० पु०) उत्तरदाता, जवाबदेह।
जिम्मेदारी (सं० स्त्री०) उत्तरदायित्व, जवाबदेही।
जिय (सं० पु०) जी, मन, चित्त, हृदय।
जियरा (सं० पु०) जीव, प्राण।
जियाजन्तु (सं० पु०) जीव जन्तु, कीड़ा मकोड़ा।
जियादती (सं० स्त्री०) बहुतायत, अधिकता।

जियान (अ० सं० पु०) टोटा, घाटा, हानि, नुक़सान।
जियाना (क्रि० स०) जिलाना, पोसना, पालना।
जियार (वि०) साहसी, उत्साही, वीर।
जिरह (अ० सं० पु०) प्रश्न जिससे उत्तरदाता घबड़ाकर सच्ची बातें कह दे।
जिला (सं० पु०) प्रदेश, प्रान्त।
जिलादार (फ़ा० सं० पु०) वह अफ़सर जिसे ज़मींदार अपने इलाक़े के किसी भाग में लगान वसूल करने के लिये नियत करता है।
जिलाना (क्रि० स०) जीवित करना, पोसना, पालना।
जिलासाज़ (फ़ा० सं०पु०) वह जो हथियारों पर पानी या ओप चढ़ाता है।
जिलेबी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई, जलेबी।
जिल्द (अ० सं० स्त्री०) खाल, चमड़ा, दफ़्ती जो किसी किताब पर उसकी रक्षा के लिए चढ़ाई जाती है।
जिल्दगर (सं० पु०) जिल्द बांधने वाला, पुस्तक बंधन कर्त्ता, दफ़्तरी।
जिल्दबंद (फ़ा० सं० पु०) जिल्द बांधने वाला।
जिल्दबंदी (फ़ा० सं० स्त्री०) जिल्द बांधने का काम।
जिल्दसाज़ (फ़ा० सं० पु०) जिल्दबंद।
जिल्दसाज़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) जिल्दबंदी।
जिव (सं० पु०) जीव, प्राण, आत्मा।
जिवनमूरी (सं० स्त्री०) संजीवनी बूटी।
जिवाना (क्रि०) जीवित करना। [विष्णु, अर्जुन।
जिष्णु (वि०) विजली, (सं० पु०) विष्णु, इन्द्र, सूर्य,
जिस (सर्व०) जो का विभक्ति युक्त होने पर रूप।
जिसु (सर्व०) जिस का सम्बन्धार्थ वाची।
जिस्म (फ़ा० सं० पु०) शरीर, देह।
जिह (सं० स्त्री०) ज्या, रोदा, चिल्ला।
जिहाद (अ० सं० पु०) धार्मिक युद्ध, वह लड़ाई जो मुसलमान लोग अन्य धर्मावलंबियों से अपने धर्म-प्रचार के लिये करते थे।
जिहि (सर्व०) जो, जिस, जिसको।
जिह्म (वि०) कुटिल, क्रूर, वक्र, टेढ़ा, मन्द, अप्रसन्न, (सं० पु०) अधर्म, तगर का फूल।
जिह्मकर (वि०) कपटी, छली, धूर्त्त।
जिह्मग (वि०) वक्र गति वाला, टेढ़ी चाल वाला, कुटिल, छली, कपटी, (सं० पु०) सर्प।
जिह्मगामी (वि०) टेढ़ा चलने वाला, मन्द, धीमा, कुटिल, कपटी।
जिह्वल (वि०) चटोरा, लोभी, लोलुप, चट्टू।
जिह्वा (सं० स्त्री०) जीभ।
जिह्वाग्र (सं० पु०) जीभ की नोक।
जिह्वामूल (सं० पु०) जीभ की जड़।
जिह्वामूलीय (वि०) जीभ के मूल से संबंध रखने वाला, (सं० पु०) जिह्वामूल से उच्चारण होने वाला वर्ण।
जिह्वास्वाद (सं० पु०) चाटना, लेपन करना।
जींगन (सं० पु०) जुगनू, खद्योत।
जी (सं० पु०) मन, हृदय, प्राण, चित्त, दम, साहस, विचार, इच्छा, संकल्प, चाह।
मुहा०—जी उकताना = मन न लगना, मन उचटना। जी का बोझ हलका होना = दुःख या चिन्ता का दूर होना। जी भर आना = दया आना। जी के पीछे पड़ना = घेर घार करना। जी बहलाना = मन बहलाना, चित्त प्रसन्न करना। जी छोटा करना = उत्साह रहित होना। जी छोड़ कर भागना = साहस छोड़ कर भागना। जी चुराना = आलस करना। जी दुखाना = सताना। जी धड़कना = घबड़ाना, शङ्कित चित्त होना। जी पर खेलना—प्राण आपत्ति में डालना। जी खोल कर कहना = साफ़ साफ़ कहना। जी में जी आना = संकट से छुटकारा पाना। जी हारना = व्याकुल होना, अधीर होना।
जी (अव्य०) सम्मान सूचक शब्द, यह सम्मानार्थक व्यक्ति-वाचक संज्ञाओं के अन्त में लगता है जैसे रामचन्द्रजी, कृष्णजी, किसी के प्रश्नों के उत्तर में जो प्रतिसंबोधन होता है उसमें प्रयुक्त होता है जैसे क्या तुमने भोजन किया ? जी हाँ।
जीअन (सं० पु०) जीवन।
जीका (सं० स्त्री०) जीविका।
जीङ्गराना (क्रि०) सिकोड़ना, समेटना।
जीजा (सं० पु०) बड़ी बहिन का पति।
जीजी (सं० स्त्री०) बड़ी बहिन।
जीत (सं० स्त्री०) जय, विजय, लाभ।
जीतना (क्रि० स०) विजय पाना, जय प्राप्त करना।
जीतव (सं० पु०) जीवन, जिन्दगी, स्थिति काल।
जीतवना (सं०पु०) जयो, विजयी, जयमान, जितवैया।

जीतवैया (वि०) देखो "जितवैया"।
जीता (वि०) जीवित, तौल में ठीक से कुछ अधिक।
जीति (क्रि०) जीतकर, जय प्राप्त करके।
जीतिया (सं० स्त्री०) व्रत विशेष, आश्विन शुक्लाष्टमी का महालक्ष्मी का व्रत, यह व्रत प्रायः स्त्रियां संतान जीवित रहने के लिये किया करती हैं।
जीतू (वि०) जयी, विजयी, जीते जी, जब तक जीना है।
ज़ीन (फ़ा० सं० पु०) चारजामा, काठी कजावा, एक प्रकार का मोटा सूती वस्त्र। [जाता है।
ज़ीनपोश (फ़ा० सं० पु०) वह वस्त्र जिससे ज़ीन ढाका
ज़ीनसवारी (सं० स्त्री०) घोड़े पर ज़ीन कस के चढ़ना।
जीना (क्रि० अ०) जीवित रहना, सजीव रहना।
जीभ (सं० स्त्री०) जिह्वा, ज़बान।
मुहा०—जीभ चाटना = लालायित होना। जीभ निकालना = थक जाना। जीभ पकड़ना = बोलने न देना, बात काटना। जीभ बढ़ाना = चटोरपन सीखना।
जीभा (सं० पु०) जीभ के समान कोई वस्तु, पशुओं का एक प्रकार का रोग।
जीभारा (वि०) चटारा, लोभी।
जीभी (सं० स्त्री०) धातु निर्मित धनुपाकार एक चीज़ जिस से जीभ की मैल साफ़ की जाती है।
जीमट (सं० पु०) वृक्ष और पौधों की टहनी, डाल, धड़ आदि के भीतर का गूदा।
जीमना (क्रि० स०) भोजन करना, खाना।
जीमार (वि०) घातक, नृशंस, मारने वाला।
जीमूत (सं० पु०) मेघ, बादल, पहाड़, पर्वत, मोथा नागरमोथा, सूर्य, इन्द्र, देव ताड़ का वृक्ष, पोसने वाला, जीविका देने वाला, एक ऋषि का नाम, विराट की सभा में रहने वाला एक पहलवान का नाम, दशार्ह के पौत्र का नाम, शाल्मली द्वीप के एक राजा का नाम, यह वपुष्मत का पुत्र था, शाल्मली द्वीप के एक खण्ड का नाम।
जीमूतवाहन (सं० पु०) इन्द्र, मनुस्मृति भाष्यकार, शालिवाहन राजा का पुत्र, नागानन्द नामक नाटक का नायक।
जीयत (सं० पु०) जीवित, जीते हुए।
जीर (सं० पु०) जीरा, केसर, अणु, तलवार, खड्ग।
जीरक् (सं०पु०) जीरा।
जीरा (सं० पु०) सौंफ के समान एक गरम मसाला, जीर, जीरक्। [परिपक्व।
जीर्ण (वि०) पुराना, जरा, बहुत वृद्ध, जर्जर, फटा पुराना,
जीर्णज्वर (सं० पु०) पुराना ज्वर।
जीर्णता (सं० स्त्री०) बुढ़ाई, वृद्धता, जठरता।
जीर्णवस्त्र (सं० पु०) फटा पुराना वस्त्र, सड़ा गला कपड़ा।
जीर्णि (सं० स्त्री०) जीर्णता, परिपाक, पचाव, अन्नपाक।
जीर्णोद्धार (सं० पु०) पुरानी टूटी फूटी वस्तुओं की मरम्मत, पुनः संस्कार।
जील (सं० स्त्री०) धीमा स्वर, मध्यम शब्द।
जीला (वि०)महीन, पतला।
जीव (सं० पु०) आत्मा, प्राण, जान, प्राणी, जीवधारी, कीड़ा मकोड़ा, जानदार, वृहस्पति, विष्णु, बकायन का पेड़, अश्लेषा नक्षत्र।
जीवक (सं० पु०) जीवधारी, क्षपणक, संपेरा, सूदखोर, सेवक, एक प्रकार का पौधा। [आश्रय,अनादि पुरुष।
जीवखानि (सं० पु०) परमात्मा, ईश्वर, जीवों का
जीवगर (सं० पु०) सूरमा, वीर, निर्भय।
जीवड़ा (सं० पु०) प्राणी, जानवर, जन्तु।
जीवत (वि०) जीवित, चेतन, वर्तमान।
जीवत्पति (सं० स्त्री०) सौभाग्यवती स्त्री, सधवा स्त्री।
जीवत्पतिका (सं०स्त्री०)सधवा, जिसका पति जीता हो।
जीवत्पितृक (सं० पु०) जिसका पिता ज़िन्दा हो।
जीवदान (सं० पु०) अभयदान, प्राणदान।
जीवधन (सं० पु०) जीवन-सर्वस्व, प्राण, प्राणप्रिय।
जीवधारी (सं० पु०) प्राणी।
जीवन (सं० पु०) ज़िंदगी, प्यारा, प्राणाधार, ईश्वर, गंगा, पुत्र, ताज़ा घी, मक्खन, वायु, मज्जा, जल, जीविका, जीवक नाम की औषधि।
जीवनचरित (सं० पु०) जीवन-वृत्तान्त, जीवन का हाल वह पुस्तक जिसमें जीवन की घटनाएँ हों।
जीवनचरित्र (सं० पु०) देखो "जीवन चरित"।
जीवनबूटी (सं० स्त्री०) संजीवनी। [डर।
जीवनभास (सं० पु०) जीवन का भय, न जीने का
जीवनमूरी (सं० स्त्री०) जीवनबूटी, संजीवनी।
जीवनमृत (सं० पु०) जीते जी मरा, जीता हुआ भी मृत के सामान।

जीवयोनि (सं० पु०) रत्न विशेष, शरीर में प्राण संचार करने वाला एक रत्न ।

जीवनवृत्त (सं० पु०) जीवनी, जीवनचरित ।

जीवनवृत्तान्त (सं० पु०) जीवनी ।

जीवना (सं० स्त्री०) जीवन्ती नाम की लता, महौषधि ।

जीवनी (सं० स्त्री०) संजीवनी बूटी, जीवन वृत्तान्त, जीवन चरित ।

जीवनोपाय (सं० पु०) वृत्ति, जीविका । [औषध ।

जीवनौषध (सं० स्त्री०) मरते हुये को जिलाने वाली

जीवन्त (वि०) जीता, जीवित, जीव युक्त । [महौषधि ।

जीवन्ती (सं० स्त्री०) संजीवन बूटी, जीव रक्षा करने वाली

जीवमन्दिर (सं० पु०) शरीर, देह, काय, तन ।

जीवन्मुक्त (वि०) जिसने जीवित दशा में ही ज्ञान के द्वारा परब्रह्म को जान लिया हो और सांसारिक बंधनों से छुटकारा पा गया हो ।

जीवन्मृत (वि०) जो जीते ही मरने के समान है ।

जीवलोक (सं० पु०) मर्त्यलोक, भूलोक ।

जीवसंक्रमण (सं० पु०) जीव का एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश । [बध का पातक ।

जीवहत्या (सं० स्त्री०) जीव-बध, प्राणियों का बध, जीव-

जीवहिंसा (सं० स्त्री०) जीव-हत्या ।

जीवा (सं० स्त्री०) वह सीधी रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हो, ज्या, रोदा, जीवंती, जीविका, वृत्ति, जीवन भूमि, बालवच ।

जीवाजून (सं० पु०) जीव जंतु, प्राणी मात्र ।

जीवात्मा (सं० पु०) जीव, आत्मा, प्राण ।

जीवान्तक (सं० पु०) जीव-नाशक, जी मारने वाला, बहेलिया, व्याध, घातक ।

जीवाधार (सं० पु०) आत्मा का आश्रय, हृदय ।

जीविका (सं० स्त्री०) जीवनोपाय, वृत्ति ।

जीवित (सं० पु०) जीवन, आयु, (वि०) जीता हुआ ।

जीविता (सं० पु०) जीने वाला, सजीव, प्राणधारी ।

जीवितेश (सं० पु०) प्राणप्रिय, प्राणनाथ, इन्द्र, यम, सूर्य, शरीरस्थ ईड़ा और पिंगला नाम की नाड़ियाँ ।

जीवी (वि०) प्राणधारी, जीने वाला ।

जीह (सं० स्त्री०) जीभ, ज़बान ।

जीहा (सं० स्त्री०) जीह, जीभ ।

जुआँ (सं० पु०) एक छोटा कीड़ा जो मैलेपन के कारण सिर के बालों में पड़ जाता है ।

जुआँरी (सं० स्त्री०) ढील, जूँ, ज्वार, बाजरा ।

जुआ (सं० पु०) एक प्रकार का खेल जिसमें हारने वाला जीतने वाले को कुछ देता है, चक्की, जाँता आदि की मूठ ।

जुआचोर (सं० पु०) ठग, धोखेबाज, वंचक, कपटी ।

जुआचोरी (सं० स्त्री०) ठगी, धोखेबाजी, कपट ।

जुआठ (सं० पु०) लकड़ी का ढांचा जो बैलों के कंधों पर रख कर हल या पुरवट में जोता जाता है ।

जुआरभाठा (सं० पु०) समुद्र के जल का चढ़ाव उतार ।

जुआरा (सं० पु०) उतनी जमीन जितनी एक दिन में एक जोड़ी बैल जोत सकते हैं ।

जुआरि (सं० स्त्री०) अन्न विशेष, जोन्हरी ।

जुआरी (सं० पु०) जुआ खेलने वाला ।

जुकाम (सं० पु०) वह बीमारी जो सरदी गरमी लग जाने के कारण हो जाती है जिसमें शरीर अस्वस्थ हो जाता है और नाक से पानी बहता है ।

जुग (सं० पु०) युग, जोड़ा, जत्था, दल, गुट्ट ।

जुगजुगाना (क्रि० अ०) टिमटिमाना, मन्द मन्द ज्योति से चमकना ।

जुगजुगी (सं० स्त्री०) पक्षी विशेष ।

जुगत (सं० स्त्री०) युक्ति, उपाय, ढंग ।

जुगनी (सं० स्त्री०) खद्योत, जुगनू, एक प्रकार का गाना जो पंजाब में गाया जाता है ।

जुगनू (सं० पु०) गले में पहनने का स्त्रियों का एक गहना पटवीजना, खद्योत, एक कीड़ा विशेष जो बरसात में रात के समय चमकता हुआ दीख पड़ता है ।

जुगल (वि०) जोड़ा, दो ।

जुगलिया (सं० पु०) जैन कथाओं के अनुसार वह मनुष्य जिसके ४०९६ बाल मिलकर वर्तमान समय के मनुष्य के एक बाल के बराबर हों ।

जुगवत (क्रि०) यत्न करते, प्रतीक्षा करते । [करना ।

जुगवना (क्रि० स०) सुरक्षित करना, संचित करना, एकत्र

जुगविध (सं० स्त्री०) दोनों प्रकार से, दोनों रीति से ।

जुगवैया (वि०) बचाने वाला, रक्षा करने वाला । [तक ।

जुगानजुग (सं० पु०) युगानुयुग, कई वर्ष, बहुत दिनों

जुगाना (क्रि० स०) जुगवना, बचाना, रक्षा करना ।

जुगालना (क्रि० अ०) पागुर करना, पगुराना ।

जुगाली (सं० स्त्री०) पागुर, रोमथ। [अनुमान।
जुगुति (सं० स्त्री०) युक्ति, रीति, तरकीब, चतुराई
जुगुप्सक (वि०) निरर्थक पर निन्दा करने वाला।
जुगुप्सा (सं० स्त्री०) निंदा, बुराई, घृणा।
जुगुप्सित (वि०) घृणित, निन्दित।
जुङ्ग (सं० स्त्री०) उमङ्ग, साहस, उत्साह।
जुङ्गित (वि०) जाति-पतित, जाति-बहिष्कृत।
जुजु (सं० पु०) भयङ्कर, मूर्त्ति विशेष, कल्पित भूतयोनि।
जुझ (सं० स्त्री०) लड़ाई, युद्ध।
जुझवाना (क्रि०स०) लड़ा देना, लड़ा कर मरवा डालना।
जुझाऊ (वि०) युद्ध संबन्धी। [का वाद्य विशेष, रण भेरी।
जुझाऊ बाजा (सं० पु०) युद्ध के लिए प्रस्तुत होना, युद्ध
जुझार (सं० पु०) वीर, योद्धा भट, बहादुर, बाँकुरा।
जुझावट (सं० स्त्री०) युद्ध, समर, युद्ध के लिए उभड़ाव, कलह।
जुझावना (क्रि० स०) लड़ा भिड़ा के मरवा डालना।
जुट (सं० स्त्री०) जोड़ा, थोक, मंडली, गुट, दल, समूह।
जुटना (क्रि०अ०) जुड़ना, मिलना, इकट्ठा होना, एकत्रित होना, लड़ना, प्रवृत्त होना, सम्भोग होना।
जुटाना (क्रि० स०) एकत्रित करना, जोड़ना, मिलाना, सटाना, जमा करना।
जुट्टी (सं० स्त्री०) जूटी, अँटिया, पूला, गड्डी, समूह।
जुटैया (सं० पु०) जुट जाने वाला, भिड़ने वाला, मिलने वाला, लड़ने वाला। [खा कर छोड़ देना।
जुठारना (क्रि० स०) जूठा करना, किसी वस्तु में से कुछ
जुठारि (क्रि०) जूठा कर के, उच्छिष्ट कर के। [वाला।
जुठिहारा (सं० पु०) उच्छिष्ट खाने वाला, जूठा खाने
जुड़ना (क्रि० अ०) संयुक्त होना, सटना, संबद्ध होना, मिलना, संश्लिष्ट होना।
जुड़पित्ती (सं० स्त्री०) एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर में चकत्ते पड़ जाते हैं और खुजलाहट होती है।
जुड़वाँ (वि०) जुड़े हुये। [करना।
जुड़वाना (क्रि० स०) शान्त करना, सुखी करना, ठंढा
जुड़हा (सं० पु०) युग्म, जोड़ा।
जुड़ाई (सं० स्त्री०) जोड़ाई।
जुड़ाना (क्रि० अ०) संतुष्ट होना, शान्त होना, तृप्त होना, ठंढा होना, शीतल होना। [सन्तान।
जुड़िया (सं० पु०) एक साथ उत्पन्न दो लड़के, यमज

जुतना (क्रि० अ०) नधना, जुटना, गुथना।
जुताई (सं० स्त्री०) घास, जोतने की मज़दूरी।
जुताना (क्रि० स०) घास कटाना, जोताना।
जुतियाना (क्रि० स०) जूतों से मारना, जूता लगाना, अपमान करना, अप्रतिष्ठा करना।
जुत्थ (सं० पु०) युथ, झुण्ड, समूह, दल।
जुदा (वि०) अलग, पृथक, निराला, भिन्न।
जुदाई (सं० स्त्री०) वियोग, विछोह।
जुद्ध (सं० पु०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई।
जुधिष्ठिर (सं० पु०) युधिष्ठिर, स्वनाम प्रसिद्ध चन्द्रवंशीय राजा, पांडवों में यही सब से बड़े थे (देखो युधिष्ठिर)।
जुन (सं० पु०) समय, काल, अवसर, मौका।
जुन्हरी (सं० स्त्री०) छोटी मकाई, जुआर।
जुन्हाई (सं० स्त्री०) चन्द्रमा, चन्द्रिका, चाँदनी।
जुन्हैया (सं० स्त्री०) चाँदनी, चन्द्रमा।
जुबान (सं० स्त्री०) जीभ, मुख।
जुबानी (सं० स्त्री०) ज़बानी, मौखिक।
जुमना (सं० पु०) खेत में खाद डालने का एक तरीका, इसमें घास फूस झाँखड़ आदि को खेत में फैला कर जला दिया जाता है और राख मिट्टी में मिलादी जाती है।
जुमला (फ़ा० वि०) सम्पूर्ण, सब, (सं०पु०) पूर्ण वाक्य।
जुरना (क्रि० अ०) जुड़ना, एकत्र होना, मिलना।
जुरवाना (सं० पु०) देखो "जुरमाना"।
जुरमाना (सं० पु०) अर्थ दण्ड, धन दण्ड।
जुरुआ (सं० स्त्री०) भार्या, पत्नी, स्त्री, मेहरारू, जोरू।
जुरै (क्रि०) मिले, प्राप्त हो, मिल जाय, लब्ध हो।
जुर्म (अ० सं० पु०) अपराध, दोष।
जुल (सं० पु०) उत्तेजना, बढ़ावा, चिट्टा, झाँसा, धोखा।
जुलना (क्रि० अ०) मिलना, भेंट करना।
जुलाहा (सं० पु०) कपड़ा बुनने वाला, तंतुवाय, एक प्रकार का बरसाती कीड़ा, जल पर तैरने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
जुलूस (अ० सं० पु०) समारोह के साथ उत्सव, धूमधाम से सवारी निकालना। [पीठ पर लटकते हैं।
जुल्फ (फ़ा० सं० स्त्री०) सिर के लम्बे लम्बे केश जो
जुल्म (अ० सं० पु०) अन्याय, अत्याचार।
जुल्लाब (अ० सं० पु०) रेचन, रेचक औषधि।

जुवती (सं० स्त्री०) युवती, जवान स्त्री।
जुवराज (सं० पु०) युवराज।
जुवा (सं० पु०) युवा, जवान।
जुवानी (सं० पु०) मौखिक।
जुवार (सं० पु०) ज्वार।
जुवारी (वि०) जुआरी, छली।
जुहाना (क्रि० स०) एकत्रित करना, संग्रह करना।
जुहार (सं० स्त्री०) अभिवादन, प्रणाम,सलाम, राम राम, इस शब्द का प्रयोग राजपूत आपस में करते थे।
जुहारना (क्रि० स०) किसी से सहायता लेना, किसी का एहसान लेना।
जुही (सं० स्त्री०) एक प्रकार का सुगंधित पुष्प वृक्ष।
जुहोता (सं० पु०) आहुति देने वाला।
जूँ (सं० स्त्री०) ढील, चीलर।
जूँठ (सं० पु०) उच्छिष्ट, जूठा।
जूँठन (सं०पु०)जूठन, जूठा, खाने के बाद बची खुची चीज़।
जू (अव्य०)यह शब्द सम्मानार्थ नामों के अन्त में लगाया जाता है जैसे कन्हैया जू, (सं०स्त्री०) वायु, वायुमण्डल, सरस्वती, अश्व के मस्तक पर का तिलक या टीका।
जूआ (सं० पु०) यून, जुआ, गाड़ी आदि के आगे की जुआठ जिसमें बैल जोते जाते हैं, जांता या चक्की की वह लकड़ी जिसको पकड़ कर घुमाया जाता है।
जूआठ (सं० पु०) देखो "जुआठ"।
जूआर (सं० पु०) समुद्र के जल का बढ़ाव।
जूआरी (वि०) देखो "जुआरी"।
जूजू (सं० पु०) हउआ, एक काल्पनिक भयंकर जीव जिसका नाम लेकर छोटे बालकों को लोग डराते हैं।
जूझ (सं० स्त्री०) युद्ध, झगड़ा, लड़ाई, संग्राम।
जूझना (क्रि० अ०) लड़ मरना. लड़ना. युद्ध करना, लड़ कर मर जाना।
जूट (सं० पु०) जूड़ा, लट, जटा, पटसन, पटसन का बना वस्त्र।
जूठ (सं० पु०) जूठा, उच्छिष्ट।
जूठन (सं० पु०) उच्छिष्ट, जूठा, खाने के बाद बची खुची चीज़।
जूठा (वि०) उच्छिष्ट, जूठन, भुक्त पदार्थ।
जूड़ (वि०) ठंढा, शीतल, जूड़ा।
जूड़ा (सं० पु०) बेणी, चोटी, सिर के बंधे हुए बाल।
जूड़ी (सं० स्त्री०) शीत ज्वर, कंप ज्वर, वह ज्वर जिसमें जाड़ा मालूम हो।
जूता (सं० पु०) पनही, चर्म पादुका, उपानह, पदत्राण।
जूताखोर (वि०) जूता खाने वाला, बेहया, निर्लज्ज।
जूती (सं० स्त्री०) जूता, स्त्रियों के पहनने का जूता।
जूतीखोर (वि०) देखो "जूताखोर"।
जूतीपैजार (सं० स्त्री०) मारपीट, झगड़ा, बखेड़ा, टंटा।
जूथ (सं० पु०) यूथ, समूह, झुण्ड, दल।
जूथप (सं० पु०) यूथपति, सेनाध्यक्ष, फौज का अफ़सर, दल का नायक।
जूदा (वि०) पृथक, अलग।
जून (सं० पु०) अवसर, मौका, समय, अंग्रेज़ी साल का छठवाँ मास।
जूना (सं० पु०) बीड़ा, गेडुरी, लंडा, उबसन, उसकन।
जूप (सं० पु०) द्यूत, जूआ, यज्ञस्तम्भ, यूप।
जूपो (सं० पु०) जूआरी।
जूमना (क्रि० अ०) एकत्रित होना, जुटना।
जूरना (क्रि० स०) जोड़ना, मिलाना।
जूरा (वि०) जूड़ा, चोटी, बेणी।
जूरी (सं० स्त्री०) जुट्टी, समूह, झुण्ड, एक प्रकार के पञ्च जो मुक़दमा फ़ैसला करने में जजों को राय देते हैं।
जूष (सं० पु०) रसा, झोल, किसी उबाली हुई वस्तु का पानी।
जूस (सं० पु०) चुरी हुई दाल का पानी, रसा, झोल।
जूह (सं० पु०) समूह, झुण्ड, जत्था।
जूहर (सं० पु०) युद्ध समय के राजपूतों की एक प्रथा, जब राजपूत देखते थे कि अब रक्षा करना कठिन हो गया है तब स्त्रियों को आग में जलने की आज्ञा देकर आप मैदान में निकल पड़ते थे।
जूही (सं० स्त्री०) एक प्रकार का पुष्प वृक्ष विशेष।
जृम्भण (सं० पु०) जंभाई लेना।
जृम्भा (सं० स्त्री०) जंभाई, आलस्य।
जृम्भिका (सं० स्त्री०) जम्भाई, आलस्य।
जे (सर्व०) जो का बहुवचन।
जेई (सर्व०) जो कोई।
जेऊ (सर्व०) जो कोई।
जेट (सं० पु०) ढेर, समूह, कोरा, गोद।
जेठ (सं० पु०) वर्ष का तीसरा मास, ज्येष्ठ, पति का बड़ा भाई, भसुर, (वि०) अग्रज, बड़ा।
जेठरा (वि०) जेठ।
जेठा (सं० पु०) ज्येष्ठ, बड़ा, पहलौठा, अग्रज।

जेठानी (सं० स्त्री०) पति के बड़े भाई की स्त्री।
जेठी (सं० स्त्री०) बड़ी, जेठ संबन्धीय।
जेठीमधु (सं० पु०) मुलेठी।
जेठौत (सं० पु०) जेठ, जेठानी का लड़का, पति के बड़े भाई का पुत्र। [जितना।
जेता (सं० पु०) जीतने वाला, विजयी, विष्णु, (वि०)
जेते (वि०) जितने, जिस क़दर।
जेती (वि०) जितना।
जेब (सं० पु०) थैली, खलीता, खीसा।
जेबकट (सं० पु०) गिरहकट, चाई।
जेबकतरा (सं० पु०) जेबकट, गिरहकट।
जेबखर्च (सं० पु०) वह धन जो भोजनादि के अलावा मिलता है और जिसका हिसाब किसी को नहीं देना पड़ता, ऊपरी और निज का ख़र्च। [रखने योग्य।
जेबी (सं० स्त्री०) छोटी थैली, खीसा, (वि०) जेब में
जेमन (सं० पु०) जीमना, खाना, भोजन करना।
जेया (वि०) जीत जाने योग्य, जीने के योग्य।
जेर (सं० स्त्री०) जरायु, खेढ़ी, झिल्ली जिसमें गर्भगत बालक रहता और पुष्ट होता है (फ़ा०वि०) पराजित।
जेरबंद (फ़ा० सं० पु०) घोड़े की मोहरी में का कपड़ा या तस्मा जो तंग में फँसा रहता है।
जेरबार (फ़ा० वि०) आपद्ग्रस्त, क्षतिग्रस्त।
जेल (अ० सं० पु०) बंदीगृह, कारागार।
जेलखाना (फ़ा० सं० पु०) कारागार, बंदीगृह।
जेवड़ा (सं० पु०) रस्सा, डोरी।
जेवड़ि (सं० स्त्री०) रस्सी, डोरी।
जेवड़ी (सं० स्त्री०) रस्सी, डोरी।
जेवना (क्रि० स०) जीमना, खाना, भोजन करना।
जेवनार (सं० स्त्री०) भोज, भोजन, रसोई।
ज़ेवर (फ़ा० सं० पु०) गहना, आभूषण, अलङ्कार।
जेवरी (सं० स्त्री०) जेवड़ी, रसरी, रस्सी।
जेष्ट (सं० पु०) ज्येष्ट, जेठ, पति का बड़ा भाई, जेठ महीना, वर्ष का तीसरा मास।
जेष्ठा (सं० स्त्री०) ज्येष्ठा।
जेहड़ (सं०स्त्री०)तर ऊपर रखे पानी से भरे कई एक घड़े।
ज़ेहन (अ० सं० पु०) धारण शक्ति, बुद्धि। [पायजेब।
जेहर (सं० स्त्री०) स्त्रियों के पैर में पहनने का गहना,
जेहल (सं० पु०) जेल, कारागार, (सं० स्त्री०) हठ, दुराग्रह, ज़िद।
जेहलखाना (सं० पु०) कारागार, जेलखाना।
जेहि (सर्व०) जिसको, जिसने।
जै (सं० स्त्री०) विजय, जय, (वि०) जितना।
जैकार (सं० स्त्री०) जयकार, मङ्गल कामना।
जैगीषव्य (सं० पु०) योग शास्त्रज्ञ एक मुनि का नाम, ये असित देवल के गुरु थे।
जैत (सं० पु०) जीत, विजय (अ०) जैतून नाम का वृक्ष।
जैतून (अ० सं० पु०) एक वृक्ष विशेष।
जैत्र (सं० पु०) विजयी, पारा, औषधि।
जैन (सं० पु०) जिन प्रवर्तित धर्म इसका मूल सूत्र "अहिंसा परमो धर्मः" है, इस धर्म में ईश्वर को या किसी सृष्टिकर्ता को नहीं मानते।
जैनी (वि०) जैन धर्मावलम्बी।
जैमाल (सं० स्त्री०) जयमाला, स्वयम्बर माला।
जैमिनि (सं० पु०) प्रसिद्ध हिन्दू दार्शनिक, ये व्यास के शिष्य थे, पूर्व मीमांसा नाम का दर्शन इन्होंने बनाया है, इसके अतिरिक्त भारत संहिता नाम का ग्रन्थ भी इन्होंने बनाया है। [पिता।
जैयट (सं० पु०) महाभाष्य पर टीका करने वाले कैयट के
जैवातृक (सं० पु०) चन्द्रमा, कपूर, औषध, (वि०) दीर्घजीवी।
जैसा (वि०) जिस प्रकार, यथा, जितना।
जैसी (वि०) जैसा का स्त्रीलिङ्ग।
जैसे (क्रि० वि०) जिस प्रकार से, जिस तौर से।
जैसो (वि०) जैसा।
जैहैं (क्रि०) जायेंगे, गमन करेंगे।
जों (वि०) जैसे, ज्यों।
जोंई (सर्व०) जो, जो कोई, (क्रि०) देखा, देखकर।
जोंक (सं० स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा जो जीवों के अङ्ग में चपक कर रक्त चूसता है।
जोंकर (क्रि० वि०) जिस प्रकार।
जोंधरी (सं० स्त्री०) छोटी मकाई।
जोंधैया (सं० स्त्री०) चाँदनी।
जोंहीं (अव्य०) जिस समय में, जिस काल में, जभी।
जो (सर्व०) संबन्ध वाचक सर्वनाम, (अव्य०) यदि।
जोकर (वि०) ठठोलिया, हँसोड़।
जोख (सं० स्त्री०) तौल, नाप, वजन।

जोखना (क्रि० स०) तौलना, नापना, वज़न करना।
जोखा (सं० पु०) हिसाब, लेखा। [संभावना, आशङ्का।
जोखिम (सं० स्त्री०) ख़तरा, अनिष्ट हानि आदि होने की
जोखों (सं० स्त्री०) घाटा, बीमा, जोखिम।
जोगंधर (सं० पु०) शत्रु के चलाये हुए अस्त्र से अपने को बचाने की एक युक्ति। [हटाना (वि०) योग्य।
जोग (सं० पु०) योग, चित्त वृत्तियों को बाह्य वस्तुओं से
जोगड़ा (सं० पु०) पाखंडी।
जोगनिया (सं० स्त्री०) योगनी।
जोगमाया (सं० स्त्री०) भगवान की एक शक्ति।
जोगवत (क्रि०) रखते, रक्षा करते।
जोगवना (क्रि० स०) किसी वस्तु को सुरक्षित रखना, आदर करना, बटोरना, पूर्ण करना, पूरा करना।
जोगसाधन (सं० पु०) योग-साधन, तपस्या।
जोगाभ्यास (सं० पु०) योग-साधन।
जोगिन (सं०स्त्री०) योगी की स्त्री, साधुनी, पिशाचिनी।
जोगिनिया (सं० स्त्री०) लाल रंग का ज्वर, एक प्रकार का आम, अगहनिया धान विशेष। [गैरिक।
जोगिया (वि०) जोगी संबन्धीय, जोगी का गेरुआ रंग,
जोगी (सं० पु०) योगी, योग करने वाला, योगाभ्यासी।
जोगीड़ा (सं० पु०) एक प्रकार का चलता गाना।
जोगीश्वर (सं० पु०) योगी, सिद्ध, तपस्वी।
जोगेश्वर (सं० पु०) शिव, श्रीकृष्ण, सिद्धयोगी।
जोग्य (वि०) योग्य, समर्थ, उत्तम, श्रेष्ठ।
जोजन (सं० पु०) योजन, चार कोस का माप।
जोट (सं० पु०) जोड़ा, साथी, संगी, संघाती।
जोटा (सं० पु०) समान, साथी, सहचर, युग, जोड़ा।
जोटी (सं० स्त्री०) समान, युग्म, जोड़ी।
जोड़ (सं० पु०) मेल, ठीक, मीज़ान, कई संख्याओं का योग, ग्रन्थि, गांठ। [योग या जोड़।
जोड़ती (सं० स्त्री०) गणित, गिनती, कई संख्याओं का
जोड़न (सं० स्त्री०) जामन, जोरन, सोहागा।
जोड़ना (क्रि० स०) दो वस्तुओं को एक में मिलाना, टूटी फूटी चीज़ को एक में मिलाना, एकत्रित करना, गांठना, जोड़ लगाना, गांठ लगाना, द्रव्य संग्रह करना, सटाना, चिपटाना, लगाना।
जोड़वाँ (सं० पु०) दो बच्चे जो एक ही समय में एक ही गर्भ से उत्पन्न हुये हों, यमज।
जोड़वाना (क्रि०स०) जोड़ने का काम दूसरे से करवाना।
जोड़ा (सं० पु०) दो समान वस्तु, युगल, युग्म, जूता, पनही, एक साथ पहनने के सब वस्त्र।
जोड़ाई (सं० स्त्री०) जोड़ने का काम, जोड़ने की मज़दूरी।
जोड़ी (सं० स्त्री०) दो समान वस्तु, युग्म, स्त्री पुरुष, नर मादा, ताल मंजीरा।
जोड़ू (सं० स्त्री०) औरत, स्त्री, जोरू।
जोत (सं० पु०) चमड़े का तस्मा या रस्सी जिससे घोड़े बैल आदि नाधे जाते हैं, तराज़ू के पलरे में की रस्सी, किसी असामी को जोतने बोने के लिये मिली हुई ज़मीन, (स्त्री०) प्रकाश, किरण, ज्योति।
जोतना (क्रि० स०) हल चलाना, नाधना।
जोतमान (वि०) चमकदार, ज्योतिष्मान।
जोता (सं० पु०) वह रस्सी जो जुआठ में लगी रहती है और उससे बैल जुआठ में नाधे जाते हैं।
जोताई (सं० स्त्री०) जोतने का काम, जोतने की मज़दूरी।
जोतार (सं० पु०) हरवाहा, जोतने वाला।
जोति (सं० स्त्री०) घी का वह दीपक जो किसी देवी देवता के नाम से जलाया जाता है।
जोतिष (सं० पु०) ज्योतिष, नजूम।
जोतिषी (सं० पु०) ज्योतिष जानने वाला, दैवज्ञ, नजूमी।
जोतिस्वरूप (सं० पु०) भगवान, आत्मा का प्रकाश, जिसका योगी लोग ध्यान करते हैं।
जोती (सं० स्त्री०) जोता, घोड़े की रास, लगाम, तराज़ू के पलरों में की रस्सी, ज्योति, प्रकाश।
जोत्स्ना (सं० स्त्री०) चन्द्रिका, चाँदनी।
जोत्स्नी (सं० स्त्री०) रैन, रात्रि, रात।
जोधन (सं० पु०) वह रस्सी जिससे बैल के जुए की ऊपर नीचे की लकड़ियाँ बँधी रहती हैं।
जोधा (सं० पु०) योद्धा, वीर, भट।
जोनराज (सं० पु०) एक विख्यात ऐतिहासिक पण्डित, ये काश्मीर के रहने वाले थे, इनका समय चौदहवीं सदी माना जाता है, इन्हों ने राजतरङ्गिणी को पूरा किया और वह द्वितीय राजतरंगिणी के नाम से प्रसिद्ध है। किरातार्जुनीय की इन्होंने टीका भी लिखी है। पृथ्वी- राज विजय नामक ग्रन्थ भी इन्होंने लिखा है।
जोनि (सं० स्त्री०) योनि, भग।
जोन्ह (सं० पु०) चन्द्रमा, चन्द्रिका, चाँदनी।

जोन्हरी (सं० स्त्री०) छोटी मकाई, ज्वार ।
जोन्हाई (सं० स्त्री०) चन्द्रमा, चाँदनी।
जोपै (अव्य०) यद्यपि, यदि ।
जोबन (सं० पु०) यौवन, स्तन, चूँची, जवानी, पयोधर ।
जोबनवती (सं० स्त्री०) यौवनवती, युवती, तरुणी, युवावस्थावाली स्त्री, जवान स्त्री ।
जोबना (क्रि० स०) राह देखना, ताकना, ढूंढ़ना, देखना. (सं० पु०) जोबन, यौवन ।
जोम (अ० सं० पु०) उत्साह, उमंग, घमंड, अभिमान ।
जोय (सं० स्त्री०) जोरू, जोड़, स्त्री ।
जोर (फा० सं० पु०) शक्ति, बल, अधिकार, वश, आसरा, सहारा, आवेग, आवेश, झोंका, कसरत, व्यायाम ।
ज़ोरशोर (फा०सं० पु०) प्रबलता, प्रचण्डता, अत्याधिक ।
ज़ोरदार (फा० वि०) बलवान, ताकतवर ।
जोरन (सं० पु०) जोमन, जोड़न ।
जोरना (क्रि० स०) देखो "जोड़ना" ।
जोराजोरी (सं० स्त्री०) धींगाधींग, बल पूर्वक ।
जोरावर (वि०) बलवान्, जबरदस्त ।
जोरी (सं० स्त्री०) जोड़ा, जोड़ी ।
जोरू (सं० स्त्री०) स्त्री, जोड़ ।
जोलहा (सं० पु०) देखो "जुलाहा" ।
जोला (सं०पु०) कपट, छल, ठगाई, धोखा, धूर्त्तता, ठगी ।
जोलाहा (सं० पु०) देखो "जुलाहा" ।
जोवत (क्रि०) अभिलाष करते, चाहते, देखते ।
जोवना (क्रि० स०) प्रतीक्षा करना, राह देखना, ताकना, ढूंढ़ना, चितवना ।
जोश (फा० सं० पु०) उबाल, उफान, आवेग, आवेश, [मन का वेग ।
जोशन (फा० सं० पु०) बांह पर पहनने का एक प्रकार का गहना, कवच, ज़िरहबख़्तर ।
जोशीला (फा० वि०) आवेश पूर्ण, आवेग से भरा हुआ ।
जोषिता (सं० स्त्री०) स्त्री, औरत ।
जोषी } जोसी } (सं०पु०) ज्योतिषी,देवता,ज्योतिःशास्त्र, वेत्ता ।
जोहन (सं० स्त्री०) प्रतिक्षण देखने की क्रिया ।
जोहना (क्रि० स०) राह देखना, प्रतीक्षा करना, देखना, ताकना, पता लगाना, ढूंढ़ना ।
जोहार (सं० पु०) प्रणाम, नमस्कार, राम राम ।
जोहारना (क्रि० स०) राम राम करना, प्रणाम करना ।
जौं (अव्य०) यदि, जो, जब ।
जौंकना (क्रि० अ०) डांटना, डपटना, गाली देना, [बड़बड़ाना ।
जौंलग (क्रि० वि०) जबतक, जिस समय तक ।
जौंलौं (क्रि० वि०) जबतक ।
जौ (सं० पु०) जवा, यव, अन्न विशेष ।
जौकेराई (सं० स्त्री०) मटर मिला हुआ जव ।
ज़ौजा (अ० सं० स्त्री०) स्त्री, पत्नी, जोड़ ।
जौतुक (सं० पु०) दायज, दहेज ।
जौन (सर्व०) जो ।
जौनार (सं० पु०) जेवनार, भोजन, उत्सव का भोज ।
जौपै (अव्य०) यदि, अगर ।
जौरा (सं० पु०) वह अन्न जो गृहस्थ नाऊ बारी आदि को उनके काम के बदले में देते हैं ।
जौलाई (अ० सं०स्त्री०) अंग्रेज़ी सातवें महीने का नाम ।
जौहर (सं० पु०) रत्न, जवाहिरात, तत्व, सारांश, उत्कर्ष, उत्तमता, गुण, खूबी, शस्त्रों की ओप, राजपूतों का जुहार व्रत ।
जौहरी (फ़ा० सं० पु०) रत्न पारखी, विक्रेता । [बुधग्रह ।
ज्ञ— (सं० पु०) बोध, ज्ञान, ज्ञानी, बुध, मङ्गल, ब्रह्मा,
ज्ञात (वि०) अवगत, विदित, जाना हुआ ।
ज्ञातयौवना (सं० स्त्री०) वह नायिका जिसको अपने यौवन का ज्ञान हो ।
ज्ञातसार (अव्य०) विदित, मालूम ।
ज्ञातसिद्धान्त (सं० पु०) शास्त्र का यथार्थ मर्म जानने वाला, शास्त्रतत्वज्ञ ।
ज्ञातव्य (वि०) ज्ञेय, बोधगम्य, जानने योग्य, जो जाना [जा सके ।
ज्ञाता (सं० पु०) जानकार, ज्ञान रखने वाला व्यक्ति ।
ज्ञाति (सं० पु०) सजाति, भाई बंधु, कुटुम्ब ।
ज्ञातिपुत्र (सं० पु०) जैन तीर्थंकर, महावीर का दूसरा नाम, स्वगोत्र वाले का पुत्र ।
ज्ञान (सं० पु०) बोध, जानकारी, चैतन्य, चेतनता, अनुमान, आत्मा का गुण विशेष ।
ज्ञानकाण्ड (सं०पु०) वेद के भागों में से एक जिसमें ब्रह्म आदि सूक्ष्म विषयों के ज्ञान प्राप्त करने की विधि है ।
ज्ञानकृत (वि०) जो ज्ञान पूर्वक किया गया हो ।
ज्ञानगम्य (सं०पु०) ज्ञातव्य,बोधगम्य, जो जाना जा सके ।
ज्ञानगोचर (वि०) ज्ञानगम्य,ज्ञानेन्द्रियों से जानने योग्य ।
ज्ञानदाता (सं० पु०) वह जो ज्ञान दे, गुरु ।

ज्ञानयोग (सं० पु०) ज्ञान-प्राप्ति द्वारा मोक्ष-साधन।
ज्ञानवान् (वि०) ज्ञानी।
ज्ञानवृद्ध (वि०) ज्ञान में बड़ा।
ज्ञानी (वि०) ज्ञानवान, जिसे ज्ञान हो।
ज्ञानेन्द्रिय (सं० स्त्री०) वे इन्द्रियाँ जिनसे ज्ञान प्राप्त होता है, ये पाँच हैं—आंख, कान, नाक, जीभ और त्वक्।
ज्ञापक (वि०) बताने वाला, सूचक।
ज्ञापन (सं० पु०) सूचना, जनाना।
ज्ञापित (वि०) सूचित, जताया हुआ।
ज्ञेय (वि०) ज्ञातव्य, जानने योग्य।
ज्या (सं० स्त्री०) माता, पृथ्वी, रोदा, धनुष की डोरी।
ज्यादती (फ़ा० सं० स्त्री०) बहुतायत, अधिकता।
ज्यादा (फ़ा० वि०) बहुत, अधिक।
ज्याना (क्रि०) जिलाना, पालना, पोसना, रक्षण करना।
ज्यामिति (सं० स्त्री०) रेखा गणित, क्षेत्र गणित।
ज्यायान (वि०) अग्रज, बड़ा, जेठा, प्रधान, वर्षीयान्।
ज्येष्ठ (सं० पु०) जेठा, बड़ा, वृद्ध, ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्णिमा के चन्द्रमा का उदय होने वाला मास, जेठ महीना, वर्ष का तीसरा महीना।
ज्येष्ठा (सं० स्त्री०) अठारहवां नक्षत्र।
ज्येष्ठाश्रम (सं० पु०) गृहस्थाश्रम।
ज्यों (क्रि० वि०) जैसे, जिस प्रकार।
ज्योति (सं० स्त्री०) दृष्टि, सूर्य, अग्नि, विष्णु, प्रकाश, द्युति, दीप्ति, चमक, नक्षत्र, मेथी।
ज्योतिःशास्त्र (सं० पु०) ज्योतिष्।
ज्योतिरिङ्गण (सं० पु०) खद्योत, जुगनू।
ज्योतिर्गण (सं० पु०) आकाश-स्थित पदार्थ।
ज्योतिर्मय (वि०) दीप्तिमय, प्रकाशपूर्ण।
ज्योतिर्लिङ्ग (सं० पु०) शिव, शम्भु।
ज्योतिर्लोक (सं० पु०) ध्रुव लोक।
ज्योतिर्विद (सं० पु०) ज्योतिषी, दैवज्ञ, गणक।
ज्योतिर्विद्या (सं० स्त्री०) ज्योतिःशास्त्र।
ज्योतिर्वेत्ता (सं० पु०) गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषी।
ज्योतिश्चक्र (सं० पु०) राशि चक्र, शशि और नक्षत्र मण्डल।
ज्योतिष (सं० पु०) खगोल, वह विद्या जिससे ग्रह [नक्षत्रादि का ज्ञान हो।
ज्योतिषी (सं०पु०) दैवज्ञ, गणक, ज्योतिष जानने वाला।
ज्योतिष्क (सं० पु०) ग्रह नक्षत्रादि का समूह, चीता, चित्रक का पेड़, मेथी, मेरु पर्वत के एक शिखर का नाम।
ज्योतिष्टोम (सं० पु०) एक प्रकार का यज्ञ।
ज्योतिष्पथ (सं० पु०) आकाश।
ज्योतिष्मती (सं० स्त्री०) मालकंगनी, रात, रात्रि, वैदिक छन्द विशेष, एक प्रकार का प्राचीन बाजा।
ज्योतिष्मान् (वि०) तेजस्वी, प्रतापी।
ज्योतिरथ (सं० पु०) ध्रुव नक्षत्र।
ज्योत्स्ना (सं० स्त्री०) चन्द्रिका, चाँदनी रात, सौंफ।
ज्योत्स्नाकाली (सं० स्त्री०) सोम की कन्या जिसका ब्याह वरुण के पुत्र पुष्कर से हुआ था।
ज्योत्स्नाप्रिय (सं० पु०) चकोर।
ज्योत्स्नावृक्ष (सं०पु०) दीवट, दीपाधार, बैठकी, फ़ानूस।
ज्योनार (सं० स्त्री०) पका हुआ भोजन, रसोई।
ज्योरा (सं० पु०) वह अन्न जो गृहस्थ फसल तैयार होने पर नाई, धोबी, चमार आदि को उनके काम के बदले में देते हैं, जौरा।
ज्योरी (सं० स्त्री०) रस्सी, डोरी।
ज्योहत (सं० पु०) जौहर, आत्मघात।
ज्योहर (सं० पु०) देखो "जुहार"।
ज्यों (वि०) ज्यों, जैसे।
ज्वर (सं० पु०) बुखार, ताप, शरीर की वह गरमी जो स्वाभाविक स्थिति से अधिक हो। ज्वर की सृष्टि शिव जी ने की थी, जब कृष्ण अपने पौत्र अनिरुद्ध को बाणासुर से छोड़ाने को गये और बाणासुर से युद्ध होने लगा तब शिव ने ज्वर की सृष्टि की, ज्वर ने बलराम आदि को गिरा कर श्रीकृष्ण के शरीर में प्रवेश किया, श्रीकृष्ण ने दूसरे ज्वर की सृष्टि की और शिव के ज्वर को निकाल बाहर किया। शिव के ज्वर ने श्रीकृष्ण की प्रार्थना की तब श्रीकृष्ण ने अपना ज्वर लौटा लिया और शिव के ज्वर को पृथ्वी पर रहने दिया।
ज्वरविनाशिनी (सं० स्त्री०) ज्वर, नाशक औषधि।
ज्वरांकुश (सं० पु०) ज्वर की एक औषधि, एक प्रकार की सुगंधित घास।
ज्वरार्त (वि०) ज्वर से पीड़ित।
ज्वरित (वि०) जिसे बुखार चढ़ा हो।
ज्वल (सं० पु०) ज्वाला, लपट, अग्नि, प्रकाश।
ज्वलन (सं०पु०) दाह, जलन, अग्नि, लपट।

ज्वलना (वि०) प्रकाशमान ।
ज्वलन्त (वि०) दीप्त,प्रकाशमान् । [हुआ ।
ज्वलित (वि०) दग्ध, दीप्तिमान्, प्रकाश युक्त, चमकता
ज्वान (वि०) जवान, युवा ।
ज्वानी (सं० स्त्री०) जवानी, तरुणाई । [का उफान ।
ज्वार (सं० पु०) बजड़ी, जुआर, लहर का उठान, समुद्र
ज्वारभाटा (सं० पु०) समुद्र के जल का चढ़ाव उतार ।
ज्वारी (सं० पु०) जुआरी, जुवा खेलने वाला ।
ज्वाला (सं० स्त्री०) लौ, लपट, आंच, ताप, जलन ।
ज्वालादेवी (सं० स्त्री०) शारदापीठ में स्थित एक देवी जो काँगड़ा ज़िले में है । [की ज्वाला निकलती है ।
ज्वालामुखी (सं०स्त्री०) वह स्थान या पर्वत जहां से अग्नि

झ

झ—यह चवर्ग का चौथा वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान तालु है ।
झंकार (सं० पु०) झनझन शब्द ।
झंकारना (क्रि० अ०) झनझन शब्द होना ।
झंकोरना (क्रि० अ०) हवा का झोंका मारना ।
झंकोलना (क्रि० अ०) देखो "झंकोरना" ।
झंख (सं० स्त्री०) देखो "झख" ।
झँखकेतु (सं० पु०) कामदेव, मदन । [होकर पछताना ।
झंखना (क्रि० अ०) झीखना, पश्चात्ताप करना, दुःखी
झंखाड़ (सं० पु०) काँटेदार सघन झाड़ी, पत्ता झड़ा हुआ वृक्ष, निकम्मी लकड़ी, खपड़ों का ढेर । [कुर्ता ।
झंगा (सं० पु०) छोटे बच्चों के पहिनने के लिए ढीला
झंगिया (सं० स्त्री०) देखो "झंगा" । [चूड़ी ।
झंगुआ (सं० पु०) हाथ में पहिनने की एक प्रकार की
झंगुला (सं० पु०) झंगा, झंगिया ।
झंगुली (सं० स्त्री०) झंगा ।
झंझ (सं० पु०) झांझ । [के शब्द ।
झंझकार (सं० पु०) झन् झन् शब्द, झींगुर आदि कीड़ों
झंझट (सं० स्त्री०) टंटा, बखेड़ा, प्रपंच, झगड़ा ।
झंझटी (वि०) झगड़ालू, बखेड़िया ।
झंझना (वि०) कड़वा, चिड़चिड़ा ।
झंझनाना (क्रि० अ०) झनझन शब्द होना, झंकारना ।
झंझनाहट (सं० स्त्री०) झंकार ।
झंझर (सं० पु०) झज्झर, (स्त्री०) झंझरी ।
झंझरा (सं० पु०) जालीदार ढकना, (वि०) झीना ।
झंझरी (सं० स्त्री०) जालीदार खिड़की, जाली, झरोखा ।
झंझरीदार (वि०) जालीदार ।
झंझोड़ना (क्रि०अ०) झकझोरना, ज़ोर से झटका देना ।
झंडा (सं० पु०) फरहरा, पताका, ध्वजा, निशान ।
झंडी (सं० स्त्री०) छोटा झंडा ।
झँडूला सं०पु०) वह बच्चा जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों, वह बालक जिसका मुण्डन संस्कार न हुआ हो (वि०) बिना मुण्डन संस्कार वाला, जिसके सिर पर गर्भ के बाल बने हों । [झेंपना ।
झँपकना (क्रि० अ०) झपकना, ऊँघना, लज्जित होना,
झँपकी (सं० स्त्री०) झपकी, ऊँघाई ।
झंपताल (सं० पु०) संगीत का एक ताल ।
झंपना (क्रि० अ०) छिपना, ढँकना, झेंपना, लज्जित होना, टूट पड़ना, झपटना, लपकना, कूदना, उछलना ।
झंपान (सं०पु०) एक प्रकार की खटोली जिस पर चढ़ कर लोग पहाड़ पर चढ़ते हैं, खटोली के दोनों ओर दो लंबे बाँस बँधे होते हैं, इन्हीं बाँसों को चार आदमी अपने कंधों पर रख कर सवारी ले चलते हैं ।
झंवराना (क्रि० अ०) कुम्हलाना, मुर्झाना, बदन का कुछ काला पड़ना । [जाना ।
झंवाना (क्रि०अ०) मुर्झाना, कुम्हलाना, झांवर पड़ना, घट
झ (सं० पु०) झंझावात, वर्षायुक्त आँधी, तेज हवा अंधड़, ध्वनि, सुरगुरु, बृहस्पति, दैत्यराज ।
झई (सं० स्त्री०) प्रतिबिम्ब, छाया, आभा, झलक, अंधेरा, छल, धोखा ।
झउवा (सं० पु०) टोकरा, खांचा ।
झक (सं० स्त्री०) सनक, धुन, मौज, उमंग, तरंग, लहर ।
झकझक (सं०स्त्री०) व्यर्थ का तकरार,किचकिच,बकवाद ।
झकझोर (सं० पु०) झटका, झोंका ।
झकझोरना (क्रि० स०) झटका देना, झोंका देना ।
झकझोरा (सं० पु०) झोंका, झटका ।
झकझोरी (सं० स्त्री०) खैंचातानी, लूट-खसोट, झपटा-झपटी, छीनाछीनी ।

झकझोलना (क्रि०स०) झकझोरना, झटकना, झोंका देना ।
झकना (क्रि० अ०) बकना, क्रोध के आवेश में अनुचित बातें कहना, बकवाद करना ।
झकरी (सं० स्त्री०) दूध दूहने का बर्तन, दोहनी ।
झकाझक (वि०) चमकीला, झलाझल, उज्ज्वल, साफ़ सुथरा, चमकता हुआ ।
झकोर (सं० पु०) पवन का झोंका, हिलकोरा, धक्का, झटका, झोंका ।
झकोरना (क्रि० अ०) पवन का झोंका मारना, हिलोरना । [का हिलकोर ।
झकोरा (सं० पु०) पवन का वेग, वायु का झोंका, हवा
झकोलना (क्रि० स०) झकोरना, हिलकोरना ।
झक्क (वि०) चमाचम, साफ़ सुथरा, चमकता हुआ ।
झक्कड़ (सं० पु०) अंधड़, तूफान, (वि०) झक्की, सनकी ।
झक्की (वि०) बकवादी, सनकी, प्रलापी, उन्मत्त, पागल, गर्म प्रकृति वाला ।
झख (सं० स्त्री०) मछली, मीन, माही, मच्छी ।
झखकेत (सं० पु०) कामदेव, कंदर्प ।
झखना (क्रि० अ०) झीखना । [करना ।
झगड़ना (क्रि० अ०) लड़ना, तकरार करना, झगड़ा
झगड़ा (सं० पु०) लड़ाई, कलह, तकरार, बखेड़ा, वैर, विरोध ।
झगड़ाना (क्रि०) लड़ाई कराना ।
झगड़ालिन (सं० स्त्री०) झगड़ा कराने वाली स्त्री ।
झगड़ालू (वि०) झगड़ा करने वाला, लड़ाकू ।
झगरना (क्रि० अ०) देखो "झगड़ना" ।
झगरा (सं० पु०) झगड़ा, लड़ाई, टंटा, बखेड़ा ।
झगरी (वि०) अपने नेग के लिये लड़ने वाली ।
झगा (सं० पु०) बच्चों के पहनने का ढीला कुर्ता ।
झगुला (सं० पु०) देखो "झगा" ।
झगुलिया (सं० स्त्री०) देखो "झगा" ।
झझ (सं० पु०) लम्बी दाढ़ी । [गंध, झझकना ।
झझक (सं०स्त्री०) झुंझलाहट, ठिठक, भड़क, चमक, अप्रिय
झझकन (सं० स्त्री०) झझक, झझकने का भाव ।
झझकना (क्रि० अ०) ठिठकना, चमकना, भड़कना, चौंक पड़ना, झुँझलाना ।
झझकाना (क्रि० अ०) भड़काना, चौंकाना, चमकाना ।
झझकारना (क्रि० अ०) डपटना, डांटना, फटकारना ।
झझला (सं० पु०) एक प्रकार की मिठाई ।
झज्झर (सं० पु०) मिट्टी का बर्तन जिसमें कुछ बालू मिला रहता है और उसमें पानी रखने से ठंढा रहता है ।
झज्झरी (सं० स्त्री०) जाली, जालीदार झरोखा, कटाव ।
झञ्झा (सं० स्त्री०) वृष्टि के साथ आंधी, अंधड़, तेज हवा ।
झञ्झानिल (सं० पु०) प्रचण्ड पवन, अंधड़ ।
झञ्झावात (सं०पु०) झञ्झा, प्रचण्ड पवन, प्रबल वायु, आँधी, अंधड़ ।
झञ्झी (सं० स्त्री०) फूटी कौड़ी ।
झट (वि०) तत्क्षण, शीघ्र, तुरंत ।
झटक (सं० पु०) लूट खसोट, उछाल ।
झटकना (क्रि० अ०) झटका देना, धक्का देना, सूखना, दुर्बल होना, फीका पड़ना, चकमा देकर कोई चीज़ किसी से ले लेना ।
झटका (सं० पु०) झोंका, धक्का, खींच, लूट ।
झटकारना (क्रि० स०) झटकना, झोंका देना ।
झटपट (वि०) बहुत जल्दी, फ़ौरन, तत्क्षण ।
झट से (वि०) तुरन्त, शीघ्र, जल्दी ।
झटास (सं०स्त्री०) बौछार ।
झाटि (सं० पु०) झाड़, झाँधी ।
झटित (क्रि० वि०) शीघ्र, तुरन्त ।
झड़ (सं० स्त्री०) झड़ी, लगातार झरना, बराबर पानी की बूँदें टपकना, अंधड़, पानी के साथ प्रचण्ड वायु, ताले के भीतर का खटका ।
झड़कना (क्रि० अ०) अपमान पूर्वक किसी से कुछ बात कहना, फटकारना, झटकना, दुत्कारना ।
झड़झड़ाना (क्रि० अ०) झड़कना, झिड़कना, झंझोड़ना, झटका देना । [चीज़ ।
झड़न (सं० स्त्री०) पतन, गिरन, झड़ कर गिरने वाली
झड़ना (क्रि० अ०) टपकना, गिरना, झरना ।
झड़प (सं० स्त्री०) दो प्राणियों का परस्पर मुठभेड़, आवेश, क्रोध, गुस्सा, लड़ाई । [झपटना ।
झड़पना (क्रि० स०) लड़ना, आक्रमण करना, टूट पड़ना,
झड़पाझड़पी (सं० स्त्री०) लड़ाई दङ्गा, फसाद, डपटा डपटी । [परस्पर लड़ाना विशेष कर पक्षियों को ।
झड़पाना (क्रि० स०) लड़ाना, भिड़ाना, दो जीवों को
झड़बरना (क्रि०) सब का सब जल जाना, सभी नष्ट होना, समस्त जलना ।

झड़बेर (सं० पु०) जंगली बेर, झरबेरी।
झड़बेरी (सं० स्त्री०) जंगली बेर।
झड़वाना (क्रि० स०) झाड़ने का काम दूसरे से कराना।
झड़ाक (वि०) शीघ्र, चटपट, फौरन, तुरन्त।
झड़ाका (सं० पु०) देखो "झड़प" (क्रि० वि०) देखो "झड़ाक"।
झड़ाझड़ (क्रि०वि०) एकपर एक, लगातार, झटपट, जल्दी जल्दी। [तन्तर मन्तर करवाना।
झड़ाना (क्रि० स०) झड़वाना, साफ सुथरा करवाना,
झड़ी (सं० स्त्री०) लगातार पानी बरसना, बराबर वर्षा होना, बिना रुके हुये बराबर बातें करते जाना।
झड़ौता (सं० पु०) फल के समय की समाप्ति, फलझार।
झण्डा (सं० पु०) ध्वजा, पताका, राजचिह्न विशेष, सीमा, निर्देशक। [हुआ लड़का।
झण्डूला (वि०) बहुपत्र, बहु केश, बिना मुण्डन किया
झन (सं० स्त्री०) किसी धातु खण्ड के आघात से उत्पन्न ध्वनि, नूपुर, पायजेब, झांझ आदि का शब्द।
झनक (सं० स्त्री०) झनझन शब्द, धातुओं के आपस में टकराने का शब्द।
झनकना (क्रि० अ०) झनझन शब्द होना, झनझनाना, क्रोध के आवेश में आकर हाथ पैर पटकना, झिखना, चिड़चिड़ाना। [झनकार ध्वनि।
झनकमनक (सं० स्त्री०) अलंकारों से उत्पन्न मंद मंद
झनकार (सं० स्त्री०) ध्वनि, शब्द। [बजाना।
झनकारना (क्रि०) बजाना, शब्द करना, झन झन
झनझन (सं० स्त्री०) झनझनाहट, झनकार।
झनझनाना (क्रि०अ०) झनझन शब्द होना।
झनझनाहट (सं० स्त्री०) झंकार। [पड़ जाना।
झनझनी (सं० स्त्री०) सनसनी, किसी अंग का सुन्न
झनवा (सं० पु०) एक प्रकार का धान।
झनाझन (सं० स्त्री०) झंकार, झनझनाहट।
झप (क्रि० वि०) चटपट, तुरन्त, झट।
झपकना (क्रि० अ०) ऊँघना, झपकी लेना, पलक गिरना, झेंपना, लज्जित होना, झपटना। [लज्जित करना।
झपकाना (क्रि०स०) पलक बंद करना, मटकाना, डराना,
झपकी (सं०स्त्री०) क्षणिक निद्रा, ऊँघाई, हलकी नींद।
झपट (सं० स्त्री०) लपक, आक्रमण, झपेट।
झपटना (क्रि० अ०) टूटना, धावा करना, तेजी से कोई वस्तु लेने के लिए आगे बढ़ना, आक्रमण करना, झपट कर किसी वस्तु को छीन लेना।
झपट लेना (क्रि० स०) छीन लेना, बलात्कार से ले लेना, जबरदस्ती छीनना।
झपटाना (क्रि० स०) आक्रमण कराना, धावा कराना, उसकाना, उत्तेजना देना, उभारना।
झपट्टा (सं० पु०) चढ़ाई, आक्रमण, धावा।
झपट्टा मारना (क्रि०) झपटना, झपट कर छीन लेना, बलात्कार से छीनना।
झपताल (सं० पु०) संगीत में एक प्रकार का ताल।
झपना (क्रि० अ०) पलकों का गिरना या बंद होना, झुकना, झेंपना, लज्जित होना।
झपनी (सं० स्त्री०) ढकन, ढकना, पिटारी।
झपलाना (क्रि० स०) पानी में डाल कर खूब धोना, खंगालना। [लज्जित कराना।
झपवाना (क्रि० स०) झेंपवाना, पलक गिरवाना,
झपसना (क्रि० अ०) वृक्ष लतादिकों का सघन होकर फैलना।
झप से (क्रि० वि०) शीघ्रता पूर्वक, झटपट, झट से।
झपाझपी (सं० स्त्री०) हड़बड़ी, शीघ्रता।
झपाट (क्रि० वि०) तुरन्त, झटपट, चटपट।
झपाना (क्रि० स०) झिपाना, मूंदना, बंद करना।
झपास (सं० स्त्री०) छोटी छोटी पानी की बूँदें, झींसी, फुहारा, धूर्त्तता, शठता, ठगाई।
झपासिया (वि०) धूर्त्त, शठ, कपटी, छली।
झपेट (सं० स्त्री०) झपट, लपक, आक्रमण।
झपेटना (क्रि० स०) धावा करना, दबोचना, चपेटना।
झपेटा (सं० पु०) आक्रमण, झपट, चपेट, झकोरा, झोंका।
झपोला (सं० पु०) छोटा झाबा, झबड़ा।
झपोली (सं० स्त्री०) छोटा झपोला।
झप्पड़ (सं० पु०) थप्पड़, चपत।
झप्पान (सं० पु०) झपान नाम की सवारी। [करना।
झबकाना (क्रि०) घबड़ाना, चकित करना, अचम्भित
झबड़ा (वि०) टेढ़े मेढ़े बिखरे बाल वाला, बझरा।
झबरा (वि०) बड़े बड़े घुँघराले बिखरे बाल वाला।
झबरीला (वि०) झबरा।
झबा (सं० पु०) फफूंदा, गुच्छा, लटकन।
झबिया (सं० स्त्री०) स्त्रियों का एक प्रकार का गहना।

झबुआ (वि०) झबरा, बड़े बड़े बाल वाला।
झब्बा (सं० पु०) देखो " झबा "।
झम (सं० पु०) भोक्ता, भोजनकर्ता, स्वादक।
झमक (सं०स्त्री०) झलक, चमक, प्रकाश, दीप्ति, शोभा।
झमकड़ा (सं० पु०) देखो " झमक "।
झमकना (क्रि० अ०) दमकना, प्रज्वलित होना, गहनों की झनकार करते हुये नाचना, अकड़ दिखाना, झमझम शब्द होना।
झमका (सं० पु०) प्रभाव, प्रताप, तेज, ज्ञान।
झमकाना (क्रि० स०) चमकाना, दमकाना, नचाना, खनखनाना, ठनठनाना।
झमकी (सं० स्त्री०) झमक, झलक, चमक, शोभा।
झमझम (सं० स्त्री०) चमक दमक, छमछम, झमाझम।
झमझमाना (क्रि०अ०) चमचमाना, चमकना, चमकाना।
झमना (क्रि०अ०) झुकना, दबना, विनीत होना, नम्र होना।
झमरझमर (वि०) बूँद बूँद से।
झमाका (सं० पु०) झमझम ध्वनि, झड़ी, मटक, नखरा।
झमाझम (वि०) चमक दमक के साथ, झमझम ध्वनियुक्त।
झमाना (क्रि० अ०) रोकना, घेरना, छाना, झमकना।
झमेला (सं० पु०) झगड़ा, बखेड़ा, झंझट।
झम्प (सं० पु०) उछाल, कुदान, छलांग।
झम्पा (वि०) झपा हुआ, ढका हुआ, आच्छादित।
झर (सं० पु०) सोता, झरना, निर्झर, झड़ी, समूह, वेग।
झरकना (क्रि० अ०) चमकना, झलकना, दमकना।
झरझर (सं० स्त्री०) जल अन्न आदि गिरने की ध्वनि।
झरझराना (क्रि० अ०) किसी वस्तु के गिरने से झर झर शब्द होना।
झरना (सं० पु०) सोता, निर्झर, जलप्रपात, बड़े छेद की बड़ी चलनी जिसमें अन्न झारा जाता है।
झरप (सं० स्त्री०) झकोर, झोंका, वेग, टेक, परदा।
झरबेर (सं० पु०) जंगली बेर, झड़बेर।
झरहिं (क्रि०) झरते हैं, चूते हैं, बहते हैं।
झरि (सं० स्त्री०) देखो " झड़ी "।
झरी (सं० स्त्री०) सोता, पानी का झरना, झड़ी।
झरोखा (सं० पु०) जंगला, गौखा, जालीदार खिड़की।
झर्झर (सं० पु०) कलियुग, हिरण्याक्ष का पुत्र, एक नदी का नाम, हुडुक नामक लकड़ी का बाजा, छन्ना, छनौटा, झाँझ, झाँझर नाम का गहना।
झर्झरा (सं० स्त्री०) रण्डी, वेश्या, कुलटा, नाग देवी का एक नाम।
झर्झरी (सं० स्त्री०) खंजरी, डफली (पु०) शिव।
झर्रा (सं० पु०) एक प्रकार का सूप जिसमें बहुत छेद बने रहते हैं।
झल (सं० पु०) जलन, दाह, आँच, प्रबल इच्छा, क्रोध कोप, समूह, झुण्ड। [प्रतिबिम्ब।
झलक (सं० स्त्री०) चमक, दमक, आभा, दीप्ति, प्रकाश,
झलकत (क्रि०) चमकते हैं, साफ़ साफ़ मालूम होते हैं।
झलकना (क्रि०अ०) चमकना, प्रकाशमान होना, आभास होना, उज्ज्वल होना।
झलका (सं० पु०) छाला, फफोला।
झलकाना (क्रि० स०) चमकाना, दमकाना, दिखलाना।
झलकार (सं० पु०) दाह, जलन, आभा, झलक, चमक।
झलकी (सं० स्त्री०) झलक, कटाक्ष, झाँकी, दृष्टि।
झलझल (सं० स्त्री०) चमक दमक, पतला, स्वच्छ।
झलझलाना (क्रि० अ०) चमचमाना, चमकना।
झलझलाहट (सं० स्त्री०) झलक, चमक, आभा, प्रकाश।
झलना (क्रि० स०) पंखा आदि से हवा करना, हिलाना डुलाना, ठेलना, ढकेलना।
झलमल (सं० पु०) हलका उजाला, हलकी रोशनी।
झलमलाना (क्रि० अ०) चमचमाना, बीच बीच में चमकना, हिलना डुलना।
झलवाना (क्रि० स०) झलने का काम दूसरे से करवाना।
झलहया (वि०) सन्देही, चकित, शङ्कित। [समूह।
झला (सं० पु०) बौछार, हलकी वृष्टि, बेना, पंखा, धूप,
झलाझल (वि०) चमाचम।
झलाझला (वि०) चमकदार, चमकीला।
झलाना (क्रि० स०) सुधरवाना, साफ़ कराना।
झलाबोर (वि०) भड़कीला, चमकीला।
झलामल (वि०) चमकीला, (सं० स्त्री० चमक दमक।
झलार (सं० पु०) कानन, घना वन, झाड़ी।
झल्ल (सं०पु०) ब्रात्य, विदूषक, भाँड़, हुडुक या पटह नामक बाजा, ज्वाला, लपट, बाजा विशेष।
झल्लक (सं० पु०) झाँझ, मजीरा।
झल्लकरठ (सं० पु०) कबूतर, परेवा।
झल्लरी (सं० स्त्री०) हुडुक बाजा, झांझ, स्वेद, पसेव, पसीना।

झल्ला (सं०पु०) बड़ा टोकरा, खाँचा, बौछार, वर्षा (वि०) बहुत तरल या पतला, पागल, बड़ा मूर्ख ।

झल्लाना (क्रि० अ०) झुंझलाना, चिढ़ना, किरकिराना, खिजलाना । [मीन लग्न, वन, ताप, गरमी ।

झष (सं० पु०) मीन, मत्स्य, मछली, मगर, मीन राशि,

झषकेतु (सं० पु०) कामदेव, कंदर्प, मदन ।

झषाङ्क (सं० पु०) कामदेव, कंदर्प ।

झषाशन (सं० पु०) सूंस, शिशुमार नामक जलजन्तु ।

झषोदरी (सं० स्त्री०) मत्स्यगंधा, व्यास की माता, योजन गन्धा ।

झहनाना (क्रि० स०) झनकारना, झनकार शब्द करना ।

झहरना (क्रि० अ०) झरझर ध्वनि करना, शिथिल पड़ना (सं०) झल्लाना, झिड़कना ।

झहराना (क्रि० अ०) लड़खड़ा कर गिरना, किट किटाना, झल्लाना । [झिलमिलाहट ।

झँई (सं० स्त्री०) तिरमिराहट, धुंधलापन, छाया, आभा,

झाँई (सं० स्त्री०) छाया, प्रतिबिम्ब, परछाँई, आभा ।

झाँऊ (सं० पु०) गंगा आदि नदियों के कच्छार में उगने वाला एक प्रकार का वृक्ष ।

झाँक (सं० स्त्री०) देख ताक, झाँकने की क्रिया या भाव ।

झाँकड़ } (सं०पु०) काँटेदार झाड़ी, करीले के सूखे झाड़ ।
झाँकर }

झाँकना (क्रि० अ०) किसी वस्तु के ओट में होकर देखना, छिप कर ताकना, झुक कर देखना ।

झाँका झाँकी (स्त्री०) देखा देखी, परस्पर देखना ।

झाँकी (सं० स्त्री०) अवलोकन, दर्शन ।

झाँख (सं० पु०) एक प्रकार का बनैला हिरण ।

झाँखना (क्रि० अ०) पश्चात्ताप करना, अधिक दुःख के कारण पछताना ।

झाँखर (सं० पु०) झंखाड़ ।

झाँगला (वि०) ढीला ढाला ।

झाँगा (सं० पु०) झगा ।

झाँजन (सं० स्त्री०) स्त्रियों के पैर में पहनने के कड़े जो खोखले होते हैं और उनमें कंकड़ आदि भरा रहता है जिससे चलते समय झनझन बजते हैं ।

झाँझ (सं० स्त्री०) एक प्रकार का बाजा, मजीरा ।

झाँझट (सं० स्त्री०) झगड़ा, कलह, विरोध, टण्टा ।

झाँझन (सं०स्त्री०) कड़ा जिसमें छर्रे भरे रहते हैं, झाजन ।

झाँझर (वि०) बहुत से छेद वाला, छिद्रयुक्त, जीर्ण, छिन्न भिन्न ।

झाँझरी (सं० स्त्री०) झाल, झांझ । [झंझट ।

झाँझा (सं० पु०) एक प्रकार का कीड़ा, झींगुर, बखेड़ा,

झाँझिया (सं०पु०) वह जो झांझ बजाता है, (वि०) क्रोधी ।

झाँझी (सं० स्त्री०) खेल विशेष ।

मुहा०—झाँझी कौड़ी = फूटी कौड़ी, निरर्थक ।

झाँट (सं० पु०) गुह्यांङ्ग के ऊपर के बाल, पशम, शष्प, अत्यन्त क्षुद्र वस्तु ।

झाँटा (सं० पु०) झंझट, टंटा, बखेड़ा ।

झाँप (सं० स्त्री०) ढक्कन, झपकी, परदा, चिक ।

झाँपना (क्रि० स०) ढांकना, आड़ में करना, तोपना ।

झाँपी (सं० स्त्री०) मूंज की बनी हुई पिटारी ।

झाँपो (सं० स्त्री०) धोबिन नाम का पक्षी, खंजन पक्षी, पुंश्चली, छिनाल औरत, व्यभिचारिणी स्त्री ।

झाँवर (सं० स्त्री०) नीची ज़मीन जिसमें बरसाती पानी भर जाता है, डाबर, (वि०) कुम्हलाया हुआ, मलिन, सुस्त, शिथिल ।

झाँवली (सं० स्त्री०) कनखी, झलक, नखरा, हाव भाव ।

झाँवा (सं० पु०) जली हुई ईंट जो जल कर काली हो गई हो । [बहकाना ।

झाँसना (क्रि० स०) धोखा देना, ठगना, फुसलाना,

झाँसा (सं० पु०) धोखा, बहकाव, फुसलाव, छल ।

झाँसू (वि०) ठग, धूर्त, धोखेबाज ।

झा (सं० पु०) मैथिल ब्राह्मणों की पदवी ।

झाऊ (सं० पु०) झाँऊ, एक प्रकार का झाड़ जो नदियों के किनारे रेतीले मैदान में होता है ।

झाग (सं० पु०) फेन, गाज ।

झाझा (सं० पु०) गाँजा, भाँग, एक प्रकार की नशीली पत्ती, जिसका आजकल के महात्मा बड़ा आदर करते हैं, मादक वस्तु विशेष । [स्थान ।

झाट (सं० पु०) निकुंज, मडवाँ, लता आदि से घिरा हुआ

झाटल (सं० पु०) एक प्रकार का वृक्ष ।

झाड़ (सं० पु०) सघन कांटेदार ज़मीन से सटकर फैला हुआ पेड़, झाड़ के आकार का रोशनी करने का सामान ।

मुहा०—झाड़ डालना = साफ़ कर देना, स्पष्ट कर देना ।
झाड़ पछाड़ कर देखना = परखना, जाँचना, कसौटी

कसना। झाड़ बाँधना=सर्वदा पानी बरसना, किसी वस्तु का ताँता बाँध देना। [पूर्व में है।

झाड़खण्ड (सं० पु०) जंगल, एक वन जो बिहार के

झाड़ झंखाड़ (सं० पु०) कांटेदार सूखी झाड़ी, वीरान, जङ्गल, व्यर्थ और निकम्मी वस्तुओं का ढेर।

झाड़झटक (सं०पु०) बहारना, साफ़ सुथरा करना।

झाड़झूड़ (सं० पु०) झाड़न, सफाई, ऊपरी आमदनी।

झाड़न (सं० स्त्री०) कतवार, कूड़ा, बहारन, कचरा, वह कपड़ा जिससे कोई चीज़ साफ़ की जाय।

झाड़ना (क्रि०स०) गरदा आदि साफ़ करना, झाड़ देना, बुहारना, डाँटना, फटकारना, झाड़ फूँक करना। मुहा०—झाड़ना फूँकना=टोटका करना, मंत्र करना।

झाड़न्त (अव्य०) सम्पूर्ण, सब के सब, अखिल।

झाड़ बुहार (सं० स्त्री०) सफाई।

झाड़ा (सं० पु०) विष्ठा, मैला, तलाशी। [बरौंछा।

झाड़ी (सं० स्त्री०) सघन और छोटे पौधे, झुरमुट,

झाड़ीदार (वि०) झाड़ी के समान, कांटेदार, कंटीला।

झाड़ू (सं० पु०) बढ़नी, कूंचा, बुहारी।

झाड़ूकश (सं० पु०) मेहतर, भंगी, हलाल खोर।

झाड़ूबरदार (सं० पु०) भंगी, चमार, झाड़ू देने वाला।

झापड़ (सं० पु०) थप्पड़, तमाचा।

झापा (सं० पु०) दौरा, टोकरा।

झाबर (सं० पु०) दलदल ज़मीन।

झाबा (सं० पु०) खाँचा, टोकरा, चमड़े का बर्तन जिसमें घी तेल रक्खा जाता है।

झाम (सं० पु०) गुच्छा, कुएँ से मिट्टी निकालने के लिए एक प्रकार की बड़ी कुदाल, छल, कपट, डांट, डपट।

झामर (सं० पु०) सिल्ली, पथली, शान।

झामी (सं० पु०) धूर्त, चालाक, ठग, धोखेबाज़।

झायँझायँ (सं० स्त्री०) झनझन ध्वनि, झनकार।

झावँ झावँ (सं० स्त्री०) बकबक, झकझक, तकरार, टंटा।

झार (वि०) केवल, एक मात्र, सब, सम्पूर्ण, समस्त, झुण्ड, समूह, (सं० स्त्री०) दाह, जलन, ईर्ष्या, द्वेष, आँच, लपट, ज्वाला, झाल, झरना, पौना, एक पेड़ का नाम।

झारखण्ड (सं० पु०) एक पर्वत जो वैद्यनाथ से पुरी तक चला गया है। [छाँटना।

झारना (क्रि० स०) बालों में कंघी करना, अलगाना,

झारफूँक (सं० स्त्री०) तन्तर मन्तर कराना, भूत प्रेतादि बाधा में झड़वाना फुंकवाना।

झारि (सं० स्त्री०) देखो "झार"। [कमण्डल, झाड़ी।

झारी (सं० स्त्री०) टोंटीदार लोटा, करवा, गडुआ,

झाल (सं० पु०) झालने की क्रिया, रहठे का बड़ा खाँचा, झांझ, (सं० स्त्री०) लगातार बारिश, दो तीन दिन तक बराबर वर्षा, तीक्ष्णता, चरपराहट, तीतापन, कटु, चुल, कामेच्छा, प्रसंग करने की इच्छा।

झालना (क्रि० स०) टूटे फूटे धातु के पात्रों को टाँका देकर जोड़ना, चिकनाना, घोरना, ठंढा करना।

झालड़ (सं० स्त्री०) वह घड़ियाल जो पूजा के समय बजाया जाता है, झालर।

झालर (सं० स्त्री०) शोभा के लिए वस्त्रादि के किनारे पर जोड़ा या लिया हुआ हाशिया, गुच्छेदार किनारा, गोट, झांझ, झाल, घड़ियाल।

झालरदार (वि०) झालर युक्त, जिसमें झालर लगी हो।

झालरा (सं० पु०) बावली, कुण्ड, झरना, एक प्रकार का रुपहला हार, हुमेल।

झाला (सं० स्त्री०) राजपूतों की एक शाखा या जाति।

झापा (सं० पु०) झाँपा, बड़ा जालीदार टोकरा।

झिंगवा (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली।

झिंगिना (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष।

झिंझा (सं० स्त्री०) फूटी कौड़ी, कानी कौड़ी।

झिंझोंग्री (सं० स्त्री०) जिगना वृक्ष।

झिझक (सं० स्त्री०) झझक, चौंक, अचम्भा, डर, भय।

झिझकना (क्रि०अ०) चौंकना, भड़कना, डरना, झझकना।

झिझका (वि०) भयभीत, चौंका, डरा।

झिझकाना (क्रि० स०) चौंकाना, झझकाना, डराना।

झिझकी (सं० स्त्री०) भड़क, चौंक, डर, भय।

झिञ्झा (सं० स्त्री०) फूटी कौड़ी, कानी कौड़ी, जिगना नामक एक वृक्ष।

झिञ्झार्या (सं० स्त्री०) जिगना वृक्ष विशेष।

झिड़क (सं० स्त्री०) डाँट, डपट, फटकार, धमकी, घुड़की।

झिड़कना (क्रि० स०) धमकाना, फटकारना, घुड़कना, झटकना।

झिड़का झिड़की (सं० स्त्री०) झगड़ा, टंटा, लड़ाई।

झिड़की (सं० स्त्री०) डाँट, फटकार, झिड़क, घुड़की, धमकी।

झिड़झिड़ाना (क्रि० स०) चिड़चिड़ाना, भली बुरी बात कहना, क्रोध करना।

झिनझिना (सं० स्त्री०) सनसनी, किसी अङ्ग के दब जाने से उस अङ्ग में एक प्रकार की सनसनी।

झिनवा (सं० पु०) महीन चावल वाला धान।

झिनहड्डा (वि०) दुर्बल, सुकटा, पतली हड्डी वाला।

झिपना (क्रि० अ०) झेंपना, लज्जित होना।

झिपाना (क्रि० स०) लज्जित करना, शरमाना।

झिरझिर (वि०) धीरे धीरे, मंद मंद।

झिरझिरा (वि०) झीना, झँझरा, पतला, बारीक।

झिरझिराना (क्रि० स०) टपकना, झरना, बहना।

झिरी (सं० स्त्री०) दरार, छोटा सूराख जिसमें से द्रव पदार्थ धीरे धीरे बह जाता है, गढ़ा जिसमें झिरझिर का पानी एकत्रित होता है, कुएँ के पास का छोटा सोता, पाला, तुषार, पाला मारी हुई फसल।

झिलंगा (सं० पु०) टूटी चारपाई, वह चारपाई जिसकी बुनावट ढीली पड़ गयी हो।

झिलम (सं० स्त्री०) लोहे का टोप जो युद्ध में सिर पर पहना जाता था, एक प्रकार का लोहे का पहनावा जो युद्ध में शरीर पर पहना जाता था, बख्तर, कवच, सन्नाह। [प्रकार का धान।

झिलमा (सं० पु०) संयुक्त प्रान्त में उत्पन्न होने वाला एक

झिलमिल (सं० पु०) कांपता हुआ प्रकाश, हिलती हुई रोशनी, प्रकाश या ज्योति की अस्थिरता, एक प्रकार का महीन मुलायम वस्त्र।

झिलमिला (वि०) चमकता हुआ, झलकता हुआ, झीन, झांझर, महीन, पतला।

झिलमिलाना (क्रि० अ०) जुगजुगाना, रह रह कर चमकना, रोशनी का हिलना, प्रकाश का अस्थिर होना, काँपना, हिलना।

झिलमिली (सं० स्त्री०) एक प्रकार की तिरछी आड़ी पटरियां जो किवाड़ों में जड़ी रहती हैं, जिसको कुछ नीचे दबाने से ज़रा ज़रा पटरियां अलग हो जाती हैं जिसमें से भीतर का मनुष्य बाहरी चीज़ों को देख सकता है और बाहर का मनुष्य भीतर के आदमी को नहीं देख सकता, खड़खड़िया, चिक, परदा।

झिल्लड़ (वि०) दूर दूर पर बुनावट वाला वस्त्र।

झिल्लिका (सं० पु०) झींगुर, कीट विशेष।

झिल्ली (सं० पु०) झींगुर, (स्त्री०) अत्यन्त सूक्ष्म चमड़ा, बहुत बारीक चमड़ा, आँख का जाला।

झिल्लीदार (वि०) जिस पर झिल्ली हो, झिल्ली वाला।

झींकना (क्रि० अ०) झींखना, पश्चात्ताप करना, दुःख से पछताना।

झींका (सं० पु०) अन्न का उतना परिमाण जितना एक बार चक्की में पीसने के लिए डाला जाय।

झींखना (क्रि० अ०) दुःखड़ा रोना, झींकना, खीजना।

झींगट (सं० पु०) कर्णधार, मल्लाह, केवट।

झींगा (सं० पु०) एक प्रकार की मछली।

झींगुर (सं० पु०) झिल्ली, एक प्रकार का कीड़ा।

झींझना (क्रि० अ०) खिजलाना, झुंझलाना।

झींझी (सं० पु०) एक प्रकार की रस्म जो आश्विन शुक्ल चतुर्दशी को होती है, बहुत से छेद वाली कच्ची मिट्टी की हाँडी में दिया जला कर कुमारी कन्यायें अपने संबन्धियों के यहां जाती हैं और उस दिये का तेल उनके सिर में लगाती हैं, इसके बदले वे उनको कुछ द्रव्य देते हैं।

झीन (वि०) महीन, पतला, दुर्बल।

झीना (सं० पु०) झिरझिर।

झीनी (सं० स्त्री०) झिरझिर, महीन, पतली। [बूँदें।

झीसी (सं० स्त्री०) फुहार, फुही, पानी की छोटी छोटी

झीखना (क्रि० अ०) झींखना, दुखड़ा रोना।

झीना (वि०) बारीक, पतला, झँझरा, मंद, धीमा, दुर्बल।

झींगुर (सं० स्त्री०) झींगुर, कीट।

झील (सं० स्त्री०) प्राकृतिक जलाशय, जो बहुत बड़ा और चारों ओर ज़मीन से घिरा रहता है, तलाव, सरोवर, ताल।

झुंझलाना (क्रि०) क्रोध करना, खिसयाना।

झुंड (सं० पु०) समुदाय, समूह, गिरोह, दल, यूथ।

झुंडी (सं० स्त्री०) पौधों के काट लेने पर खेतों में लगी हुई खूंटी।

झुकना (क्रि० अ०) नवना, निहुरना, लचना, लज्जित होना, नम्र होना, प्रणाम करना, रिसाना, क्रोध करना।

झुकवाना (क्रि० स०) झुकाने में प्रवृत्त करना।

झुकाना (क्रि० स०) निहुराना, नवाना, विनीत बनाना, प्रवृत्त करना, मुखातिब करना, प्रणत करना।

झुकाव (सं० पु०) निहुराव, ढाल, उतार, प्रवृत्ति।

भुकावट (सं० स्त्री०) झुकाव, निहुराव, चाह, प्रवृत्ति ।
भुञ्झलाना (क्रि०) क्रोध करना, चिड़चिड़ाना, शीघ्र क्रोध करना ।
भुट्ठा (वि०) झूठा, असत्यवादी । [करना ।
भुठलाना (क्रि० स०) झूठ बनाना, असत्य प्रमाणित
भुठाई (सं० स्त्री०) झूठापन, मिथ्या (क्रि०) झूठा करके, मिथ्या बनाकर ।
भुठामूठा (वि०) झूठमूठ,असत्य । [बताना, जूठा करना ।
भुठालना (क्रि०) अशुद्ध बनाना, झूठा ठहराना, झूठा
भुड, भुगट (सं०पु०) स्तवक, गुच्छा, झोंप, छोटा झाड़ ।
भुण्ड (सं० पु०) समूह, समुदाय, साधुओं का अखाड़ा, मण्डल ।
भुण्डा (सं० पु०) पताका, वैजयन्ती, झंडा ।
भुण्डी (सं० स्त्री०) झाड़ी, वृक्ष का समूह, झुण्ड के अधीनस्थ रहने वाला, साधुदल, साधुओं का एक दल विशेष ।
भुन (सं० स्त्री०) समानता, सादृश्य, लगाव, एक प्रकार का पत्ता । [बजने से होता है ।
भुनभुन (सं० पु०) झुनझुन शब्द जो पैंजनी आदि के
भुनझुना (सं० पु०) बच्चों का एक प्रकार का खिलौना जो झुनझुन बजता है, घुनघुना ।
भुनभुनिया (सं० स्त्री०) पैर में पहनने का एक गहना ।
भुनभुनी (सं० स्त्री०) झनझनी, सनसनी, नूपुर, पैजनी ।
भुमका (सं० पु०) एक प्रकार का कान में पहनने का गहना, कनफूल, कर्णफूल, गुच्छा, फफूंदा, स्तवक, एक प्रकार का पौधा ।
भुमना (वि०) हिलने डुलने वाला, झूमने वाला ।
भुमरी (सं० स्त्री०) पिटना, काठ की मुंगरी ।
भुमाना (क्रि० स०) हिलाना, डोलाना ।
भुरकुर (वि०) कुम्हलाया हुआ, सूखा हुआ, दुर्बल ।
भुरकुरी (सं० स्त्री०) कँपकँपी । [दुर्बल होना ।
भुरना (क्रि० अ०) मुरझाना, कुम्हलाना, सुखाना, घुलाना,
भुरभुट (सं० पु०) समुदाय, समूह, मण्डली, गरोह, दल ।
भुरसना (क्रि० अ०) झुलसना, जल जाना । [होना ।
भुराना (क्रि० अ०) कुम्हलाना, मुरझाना, सूखना, दुर्बल
भुराने (वि०) सूखे, मुरझाए हुए ।
भुरावन (सं० स्त्री०) किसी वस्तु का वह अंश जो सुखाने में चला जाता है, सुखावन ।

भुरियाना (क्रि० स०) बीनना, निराना, सोहना ।
भुर्ना (क्रि०) कुम्हलाना, मुरझाना ।
भुर्री (सं० स्त्री०) समेट, सिकोड़, सिकुड़न ।
भुलकाना (क्रि०) दग्ध करना, जला देना, भस्म करना ।
भुलभुली (सं० स्त्री०) कान के पात, स्त्रियों के कान में पत्ता के आकार का पहनने का गहना विशेष ।
भुलना (सं० पु०) झूला, पलना । [का गुच्छा ।
भुलनी (सं०स्त्री०) नथनी में डाल कर पहनने का मोतियों
भुलवाना (क्रि० स०) झूलने में प्रवृत्त कराना ।
भुलसना (क्रि० अ०) झौंसना, जल जाना ।
भुलसाना (क्रि० स०) झौंसवाना, भुनवाना ।
भुलाना (क्रि० स०) पलना या झूला पर हिलाना, लटकाना, अटकाना, निपटारा न करना ।
भुल्ला (सं० स्त्री०) स्त्रियों के पहिनने की कुर्ती, झूला ।
झूंकना (क्रि० स०) झोंकना, झटके से आग में फेंकना, झखना ।
झँझ (सं० पु०) घोंसला, पक्षियों के रहने का स्थान ।
झँझल (सं० पु०) झुंझलाहट, रिस, क्रोध, कोप ।
झँटर (सं० स्त्री०) दो फसली भूमि ।
झँठनझाँठन (सं० पु०) भोजन से बचा खुचा, जूठा ।
झूझना (क्रि०अ०) जूझना, लड़ना, युद्ध में प्राण त्यागना ।
झूठ (सं० पु०) मिथ्या, असत्य ।
झूठन (सं० स्त्री०) जूठन, उच्छिष्ट, जूठ ।
झूठमूठ (वि०) निरर्थक, योंही, व्यर्थ, निरा असत्य ।
झूठा (वि०) झूठ बोलने वाला, असत्यवादी, मिथ्या बोलने वाला ।
झूना (सं० पु०) झीना, सूक्ष्म, पतला ।
झूमक (सं० स्त्री०) कनफूल, समूह, एक प्रकार का गीत जिसे होली में स्त्रियाँ झूमझूम कर गाती हैं, गुच्छा ।
झूमकसाड़ी (सं० स्त्री०) झालरदार साड़ी, वह ओढ़नी जिसमें सिर के पल्ले पर मोती के गुच्छे टंके हों ।
झूमका (सं० पु०) देखो "झुमका" ।
झूमझूम (सं० पु०) बादलों का उमड़ना, हिलमिल कर अहङ्कार के साथ हिलना ।
झूमना (क्रि० अ०) हिलना डुलना, लहराना, ऊँघना ।
झूमर (सं० पु०) सिर में पहनने का एक प्रकार का गहना अधिकतर रण्डियाँ ही इसको पहनती हैं, एक प्रकार का गीत ।

झूर (वि०) सूखा, व्यर्थ, जूठा, (सं० स्त्री०) जलन, दाह।
झूरना (क्रि० अ०) सूखना, दुर्बल होना, पछताना, कूटना, चूर करना, पेड़ों से फल तोड़ना।
झूरा (वि०) सूखा, जलाभाव, (सं० पु०) सूखी जगह, सूखा, जल वृष्टि का अभाव।
झूल (सं० स्त्री०) वह चौकोर वस्त्र जो हाथी घोड़ा आदि के पीठों पर ओढ़ाया जाता है, ओहार, ढीला ढाला कुर्ता।
झूलन (सं० पु०) डोल, हिंडोल, चलना गाना।
झूलना (क्रि० अ०) हिलना, डोलना, लटकना, किसी कार्य में बहुत दिन तक फँस जाना, (सं० पु०) छन्द विशेष।
झूला (सं० पु०) पालना, हिंडोला।
झूँसी (सं० स्त्री०) एक प्राचीन नगर का नाम, इसका प्राचीन नाम प्रतिष्ठानपुर था, पुरूरवा की राजधानी यहीं थी, चौपट राजा यहीं के थे, इसी का नाम अँधेर नगरी पड़ा था, यह प्रयाग के सामने पूरब की ओर है।
झेंपना (क्रि० अ०) लजाना, शरमाना।
झेलना (क्रि० अ०) सहना, बरदाश्त करना, भुगतना, भोगना, सहारना, ऊपर लेना, पचाना, डोलना।
झोंक (सं० स्त्री०) प्रवृत्ति, झुकाव, भार, बोझ, झटका, वेग, प्रचण्ड गति, आघात, धक्का, ठाट बाट, साज, चाल, अन्दाज़, पानी का हिलकोरा।
झोंक देना (क्रि०) आग में लगाना, भस्म करना, आपत्ति में डालना, खतरे में डालना, जला देना।
झोंकना (क्रि० स०) फेंक कर छोड़ना, भाड़ में पत्ती फेंकना, आग में लकड़ी डालना, लगाना, डालना, घसेड़ना।
झोंकवाई (सं० स्त्री०) झोंकने की क्रिया।
झोंकवाना (क्रि० स०) झोंकने में प्रवृत्त करना।
झोंका (सं० पु०) झकोरा, झटका, धक्का।
झोंकी (सं० स्त्री०) बोझ, भार, उत्तरदायित्व, जवाबदेही।
झोंटा (सं० पु०) बिखरे हुए बड़े बड़े बाल।
झोंटी (सं० स्त्री०) झोंटा।
झोंपड़ा (सं० पु०) कुटी, मढ़ा, पर्णशाला।
झोंपड़ी (सं० स्त्री०) कुटी, मढ़ी।
झोंपा (सं० पु०) गुच्छा, झब्बा, स्तवक।
झोंरा (सं० पु०) गुच्छा, झब्बा।
झोक (सं० स्त्री०) धक्का, ठोकर, सहसा चक्कर आना, मरते मरते बच जाना, आफ़त आना, किसी प्रकार का उपद्रव।
झोका (सं० पु०) आघात, झकोरा, बलात्कार से खिंचाव, धक्का देकर खींचना, गिरने की इच्छा से खींचना।
झोझ (सं० पु०) घोंसला, खोता, घवद।
झोझा (सं० पु०) बड़पेटा, बड़े पेट वाला, स्थूलोदर।
झोटिंग (सं० पु०) झोंटे वाला, भूत, प्रेत, पिशाचादि।
झोटियाना (क्रि०अ०) झोंटा पकड़ कर खींचना। [समूह।
झोटी (सं० स्त्री०) छोटा झोंटा, चोटी, पिछले बाल, केश
झोल (सं० पु०) तरकारी आदि का गाढ़ा रसा, शोरबा, माँड़, कपड़े की सिकुड़न, वह थैली या झिल्ली जिसमें गर्भ से निकले हुये बच्चे या अंडे रहते हैं, जैसे कुतिया का झोल, मुर्गी का झोल।
झोलझाल (सं० पु०) ढीला ढाला, चरपरा, रसा।
झोलना (क्रि० स०) भूनना, झौंसना, जलाना।
झोला (सं० पु०) थैला, पक्षाघात, लक़वा।
झोली (सं० स्त्री०) थैली, झोला।
झोर (सं० पु०) कढ़ी, तरकारी का रसा।
झौंरा (वि०) झांवर, कृष्ण, सांवर, गुच्छा, झुंड।
झौंराना (क्रि०अ०) साँवला पड़ना, कुम्हलाना, मुरझाना।
झौंसना (क्रि० अ०) झुलसना, जलना,झोलना। [हुआ।
झौंसा (वि०) जला हुआ, भस्म किया हुआ, जलाया
झौर (सं० पु०) टंटा, बखेड़ा, तकरार, झंझट, विवाद।
झौरना (क्रि०स०) झपट कर पकड़ना,दबा लेना, छापना।
झौरा (सं० पु०) तकरार, विवाद, झंझट, झौर।
झौरी (सं० स्त्री०) खेती की घास।
झौवा (सं० पु०) टोकरी, खाँची।
झौहाना (क्रि० अ०) चिड़चिड़ाना, गुर्राना।

ञ

ञ—यह चवर्ग का पाँचवां और अन्तिम वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान तालु और नासिका है।

ट

ट—यह टवर्ग का पहला अक्षर है, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है, इस कारण यह मूर्द्धन्य कहा जाता है ।

टई (सं० स्त्री०) टट्टी, घात ।

टंक (सं० पु०) एक तौल जो चार माशे की होती है, सिक्का, मोती की तौल जो २१ 1/8 रत्ती की मानी जाती है, पत्थर काटने या गढ़ने का औज़ार, फरसा, कुदाल, तलवार, कोप, क्रोध कोप, खज़ाना, एक कँटीदार पेड़, म्यान ।

टंकक (सं० पु०) चाँदी का सिक्का । [का एक जाति ।

टंकण (सं० पु०) सुहागा, टाँका लगाने का काम, घोड़े

टँकना (क्रि० अ०) जोड़ना, वस्तुओं को सीकर या कील आदि के द्वारा जोड़ना, चढ़ना, अंकित होना, निशान लगना, सिल, चक्की, जांता आदि का टाँकी के द्वारा सुधारा जाना । [रूप ।

टँकवाना (क्रि० स०) टकाना, "टँकना" का प्रेरणार्थक

टँकाई (सं० स्त्री०) टंकाव, टांकने की मजूरी ।

टँकाना (क्रि० स०) टाँका लगवाना, सिलवाना, जुड़वाना, परखना, टाँकी लगा कर सिक्कों को परखना ।

टंकार (सं० स्त्री०) टनटन की आवाज़, धनुष के रोदे का शब्द, धातु के पात्रों पर आघात लगने से होने वाला शब्द, ठनाका, झनकार, कीर्ति, नाम ।

टंकारना (क्रि० स०) धनुष के रोदे का शब्द करना ।

टंकी (सं० स्त्री०) पानी रखने का छोटा चौबच्चा, चारों तरफ पत्थर की पटिया लगा कर या पक्की दीवार बना कर यह बनाई जाती है । मारवाड़ में टंकी बनाने की बहुत चाल है ।

टंकोर (सं० पु०) धनुष का शब्द ।

टंकोरना (क्रि० अ०) धनुष का शब्द करना, टनटन शब्द होने के लिए आघात करना ।

टंकौरी (सं० स्त्री०) टाँका, सोना चांदी आदि मूल्यवान् वस्तुओं के तौलने का तराजू ।

टंगड़ी (सं० स्त्री०) टांग, पैर ।

टंगना (क्रि० अ०) लटकना, ऊपर किसी आधार के सहारे किसी वस्तु को लटका देना, अधर में लटकना, फँसना ।

टंगरी (सं० स्त्री०) टंगड़ी, टांग, पैर । [हथियार ।

टंगारी (सं० स्त्री०) कुल्हाड़ा, लकड़ी आदि चीरने का

टंच (वि०) चतुर, छँटा, कृपण, कठोर ।

टंट घंट (सं०पु०) प्रारम्भ, प्रारम्भिक कार्य, सामग्रियों को एकत्रित करना । [ऊधम, कलह ।

टंटा (सं० पु०) झगड़ा, बखेड़ा, लड़ाई, प्रपंच, उपद्रव,

टंडर (अ० सं० पु०) खरीद या बिक्री का निर्ख सहित इक़रारनामा ।

टक (सं० स्त्री०) पलक, दृष्टि, स्थिर दृष्टि, निश्चल दृष्टि ।

टकटक (सं० स्त्री०) लगातार, निरंतर देखना ।

टकटका (सं० पु०) टकटकी, आंखों का खुला रह जाना, पलकों का न गिरना, निश्चल दृष्टि होना ।

टकटकाना (क्रि० स०) टकटक ताकते रहना, निश्चल दृष्टि होकर देखना, एकटक होकर ताकना ।

टकटकी (सं० स्त्री०) आंखों की एक अवस्था, पलकों का न गिरना, निश्चल दृष्टि ।

टकटोना (क्रि० स०) टटोलना, ढूँढ़ना, छूना, अन्वेषण करना । [हाथों से ढूँढ़ना ।

टकटोरना (क्रि० स०) टटोलना, ढूँढ़ना, अँधेरे में

टकटोलना (क्रि० स०) टकटोरना, पता लगाना, स्पर्श के द्वारा ढूँढ़ना ।

टकटोहन (सं० पु०) टटोलन, अन्वेषण, हाथ से इधर उधर छू छू कर देखना, पता लगाना ।

टकटोहना (क्रि० स०) ढूँढ़ना, अन्वेषण करना ।

टकना (क्रि०) सीना, टाँकना ।

टकराना (क्रि० अ०) रगड़ना, दो वस्तुओं में सङ्घर्ष होना, आमने सामने आते हुए दो मनुष्यों का मुठभेड़ होना, बिना पते के इधर उधर घूमना फिरना, किसी काम के लिए बार बार आना, धक्के खाना ।

टकवाना (क्रि०) तगवाना, जुड़वाना, सिलवाना ।

टकसाल (सं० स्त्री०) सिक्के ढालने की जगह, इसमें चाँदी, सोने तांबे आदि के सिक्के ढाले जाते हैं ।

टकसालिया ⎫
टकसाली ⎭ (वि०) उत्तम, निर्दोष, परखा हुआ, टकसाल संबन्धी, जँचा हुआ, परीचित ।

टकहाई (सं० स्त्री०) टके की, नीच व्यभिचारिणी स्त्री, हरजाई ।

टका (सं० पु०) जोड़ा, दो वस्तुओं का विशेष कर पैसों का एक टका होता है, रुपया, चाँदी का सिक्का, धन, द्रव्य ।

टकाई (स्त्री०) सिलाई, टाँकने की मजूरी । [टँकाना ।

टकाना (क्रि० स०) चिह्नित कराना, लिखवाना, जुड़वाना,

टकासी (सं० स्त्री०) एक रुपया पर एक टका ब्याज, दो पैसे रुपये का सूद ।

टकाही (सं० स्त्री०) देखो "टकहाई" ।

टकी (सं० स्त्री०) ताक, लुकाव, टुकी ।

टकुआ (सं० पु०) चरखे का सुआ, जिसमें रुई लगाकर सूत काता जाता है । [धन हो ।

टकैत (वि०) धनी, टकावाला, धनवान, जिसके पास

टकोर (सं० स्त्री०) टंकार, चुमकारी, ढोल का शब्द ।

टकोरना (क्रि० स०) बजाना, बजाने के लिए घड़ी आदि पर आघात करना, ठोकर मारना, ठोकर लगाना, सेंकना । [का शब्द ।

टकोरा (सं० पु०) आघात से उत्पन्न शब्द, घड़ी आदि

टकौना (सं० पु०) टका, दो पैसा ।

टकौरी (सं० स्त्री०) कांटा, छोटा तराज़, सोना, चांदी आदि के तौलने का तराज़ । [आघात हो ।

टक्कर (सं० स्त्री०) रगड़, दो वस्तुओं के सङ्घर्षण से जो

मुहा०—टक्कर खाना = आघात प्राप्त होना, ठोकर खाना । टक्कर का = जोड़ का, बराबरी का । टक्कर मारना = सिर से धक्का लगाना ।

टखना (सं० पु०) गुल्फ, एँड़ी के ऊपर का निकला हुआ भाग । [का होता है ।

टगण (सं० पु०) पिंगल का एक गण जो छः मात्राओं

टगर (सं० पु०) सुहागा, तगर का वृक्ष ।

टगरना (क्रि०) डगरना ।

टगरा (वि०) टेढ़ा, बाँका, तिरछा ।

टगराना (क्रि०) घुमाना, फिराना, लचाना ।

टघरना / टघलना (क्रि० अ०) पिघलना, द्रवित होना, जमे हुए घी आदि का पिघलना, शरीर से पसीना निकलना ।

टघराना / टघलाना (क्रि० स०) पिघलाना, द्रवित कराना, धीरे धीरे चलाना, घी आदि पिघलाना ।

टङ्क (सं० पु०) परिमाण विशेष, चार माशे की तौल, टांकी, छेनी, खङ्ग, तलवार, क्रोध, सुहागा, खुरपी, दर्प मुद्रा, सिक्का, खनित्र, फरहा, तलवार का म्यान, कोश, पर्वत का खड्ड, कुदाल, खटाई, नीला कैथ, कुल्हाड़ा ।

टङ्कक (सं० पु०) रजत, मुद्रा, सिक्का ।

टङ्कक पति (सं० पु०) मुद्राध्यक्ष, टकसाल का मालिक ।

टङ्कशाला (सं० स्त्री०) मुद्रा निर्माण गृह, टकसाल ।

टङ्कण (सं० पु०) सुहागा, उपधातु विशेष, जिससे सोना चांदी आदि गलाई जाती है ।

टङ्कना (क्रि०) टाँकना, सीना, लटकाना, झूलना ।

टङ्कार (सं० पु०) ज्या का शब्द, धनुष के रोदे का शब्द, अचम्भा, विस्मय ।

टङ्की (सं० स्त्री०) पानी रखने का छोटा चहबच्चा ।

टङ्कोर (सं० स्त्री०) रोदे को पीछे खींच कर छोड़ देने पर जो आवाज़ होती है उसे टङ्कोर कहते हैं ।

टङ्कोरना (क्रि०) झाड़ना, धनुष के रोदे को झाड़ना, ज्या को खींचना ।

टङ्गड़ी (सं० स्त्री०) पैर, पाँव, टँगरी, गोड़, फिल्ली ।

टचनी (सं० स्त्री०) लोहे का एक औज़ार, इससे ठठेरे तथा सोनार नक्काशी का काम करते हैं ।

टञ्च (सं० पु०) कृपण, सूम, कंजूस, मक्खीचूस ।

टटका (वि०) ताजा, बासी नहीं, उसी समय का बना हुआ, जैसे टटका भोजन ।

टटरी (सं० स्त्री०) टट्टी, घास आदि की बनी टट्टी ।

टटपूंजिया (वि०) थोड़ी पूंजी वाला, अल्प मूल धन वाला ।

टटवाली (सं० स्त्री०) छोटा घोड़ी, टटुई ।

टटाना (क्रि० अ०) सूखना, सूख कर काँटा होना, खूब सूख कर नीरस होना ।

टटिया (सं० स्त्री०) टट्टी ।

टटीहरी (सं०स्त्री०) पक्षी विशेष, टिटिभ ।

टटुआ (सं० पु०) घोड़ा, छोटा घोड़ा ।

टटुई (सं० स्त्री०) टटुवाई, छोटी घोड़ी । [पता लगाना ।

टटोरना (क्रि० स०) ढूँढ़ना, खोजना, हाथ से छू छूकर

टटोलना (क्रि० स०) ढूँढ़ना, पता लगाना, ढूँढ़ डालना, छानबीन करना । [बाँस की बनी टट्टी ।

टट्टर (सं० पु०) बड़ी टटिया, दूकान बन्द करने के लिए

टट्टरा (सं० पु०) डींग, ढोल या नगारे का शब्द, ठट्ठा।
टट्टा (सं० पु०) बड़ा टट्टर।
टट्टी (सं० स्त्री०) टट्टर, रुकावट, परदा, आड़।
मुहा०—टट्टी की ओट शिकार खेलना = छिप कर बुराई करना, छिप कर किसी को तंग करना। धोखे की टट्टी = निःसार वस्तु, हानिकारी वस्तु।
टट्टू (सं० पु०) घोड़ा, छोटा घोड़ा।
टटाट घराट (सं० पु०) पूजा का भारी आडम्बर।
टगटा / टंटा (सं० पु०) लड़ाई झगड़ा, बखेड़ा, उपद्रव।
टठिया (सं० स्त्री०) छोटी थाली, टाठी। [शब्द।
टन (सं० स्त्री०) ध्वनि का अनुकरण, घंटा आदि का
टनक (सं० स्त्री०) तेज़, तीक्ष्ण स्वर, गम्भीर शब्द।
टनकना (क्रि० अ०) टनटन होना, टनटन शब्द होना, टनटन बजना।
टनटन (सं० स्त्री०) घंटा बजने की ध्वनि।
टनटनाना (क्रि० स०) टनटन शब्द करना, घंटा बजाना, किसी को आशा देकर उसे अंटका रखना, झाँसा पट्टी देना। [तन्दुरुस्त, हरी तबीयत वाला।
टनमन (सं० पु०) तंत्रमंत्र, टोना, जादू, (वि०) स्वस्थ,
टनमना (वि०) स्वस्थ, तन्दुरुस्त, चंगा। [कड़ा शब्द।
टनाका (सं० पु०) टनटन शब्द, घंटा आदि का शब्द,
टनाटन (सं० पु०) क्रमशः टनटन शब्द होना।
टनाना (क्रि०) विस्तार करना, फैलाना, खींच कर बाँधना।
टप (सं० स्त्री०) छतरी, छत जो गाड़ी मोटर आदि के ऊपर लगायी जाती है, एक प्रकार का बड़ा बर्तन जिसमें पानी रख कर अंग्रेज़ नहाते हैं।
टपक (सं० स्त्री०) टपकाव, धीरे धीरे गिरना, टपटप शब्द कर गिरना, धीरे धीरे होने वाला दर्द, टपकना।
टपकना (क्रि० अ०) धीरे धीरे गिरना, शनैः शनैः चूना, टपटप शब्द करके गिरना, पके आम आदि के फलों का गिरना, मकान की छत से होकर पानी का धीरे धीरे गिरना।
टपका (सं० पु०) पानी की बूँद, अलग अलग होकर गिरना, पके फलों का वृक्ष से आप ही आप गिरना, आम का पक्का फल।
टपकाटपकी (सं० स्त्री०) कहीं कहीं थोड़ा बहुत, इधर उधर बिखरी हुई थोड़ी वस्तु, कहीं कहीं छत का चूना।
टपकाना (क्रि० स०) गिराना, चुआना।
टप जाना (क्रि०) कूद जाना, उछल जाना, पीछे की बात भूल जाना, पहले की बात भूल जाना।
टपना (क्रि० अ०) कूदना, फांदना, उछलना, भूखा रहना, उपवास करना।
टप पड़ना (क्रि०) बीच में कूद पड़ना, दूसरों के काम के बीच आ पड़ना, अविचार से किसी काम को उठाना, अचानक आ जाना। [छप्पर।
टपरा (सं० पु०) छप्पर, घास फूस आदि का बना
टपाटप (वि०) टपटप करके शीघ्र पानी का बरसना, लगातार पेड़ से आम का गिरना, एक के बाद एक किसी वस्तु का चुनना।
टपाना (क्रि०) कुदाना, फँदवाना, नँघवाना।
टप्पा (सं० स्त्री०) जलहीन स्थान, दो गाँवों के बीच कई कोस तक जल और छायाहीन भूमि को टप्पा कहते हैं, किसी वस्तु का उछल कर ऊपर जाना तथा भूमि पर गिरना। [आकार का एक खुला बर्तन, नाद।
टब (अ० सं० पु०) टप, पानी रखने के लिये नाँद के
टब्बर (सं० पु०) परिवार, कुटुम्ब, वंश।
टभक (सं० स्त्री०) पीड़ा, दर्द, टीस।
टभकना (क्रि०) दर्द होना, गिरना, टपकना।
टमकी (सं० स्त्री०) एक बाजा का नाम, इसे बजा कर ढिंढोरा फेरा जाता है।
टमटम (अ० सं० स्त्री०) एक प्रकार की घोड़ागाड़ी, इसमें एक घोड़ा जोता जाता है।
टमटी (सं० स्त्री०) एक बर्तन विशेष।
टर (सं० स्त्री०) अप्रिय शब्द, कठोर शब्द, कठिन शब्द।
टरई (क्रि०) हटती है, टलती है। [त्याग करना।
टरकना (क्रि० स०) हटना, हट जाना, चला जाना, स्थान
टरकाना (क्रि० अ०) हटाना, खिसकाना, छिपाना, चुरा कर छिपाना, आंखों से ओझल करना।
टरटर (सं० स्त्री०) बड़बड़।
टरटराना (क्रि० स०) टरटर शब्द करना, कर्णकटु शब्द करना, मेंढक आदि का शब्द करना, अप्रिय बात बोलना, बकवाद करना, बड़ों की इज़्ज़त का ख्याल न करके बोलना।
टरटर्रा (वि०) बकवादी, बड़बड़िया। [जाना।
टरना (क्रि० अ०) टलना, हटना, स्थान छोड़ कर चला

टराना (क्रि०) हटाना, टल जाना, दूर हो जाना, भग जाना।

टर्रा (वि०) क्रोधी, बकवादी।

टर्राना (क्रि० अ०) क्रोध करना, क्रोध पूर्वक बातें करना, किसी सुनने वाले के न रहने पर भी बोलते जाना, ढिठाई से बोलना।

टर्रापन (सं० पु०) उद्दण्डता, अविनय।

टलना (क्रि० अ०) खिसकना, हटना, अपने स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। [रन।

टलप (सं० स्त्री०) छाँट, टुकड़ा, खण्ड, भाग, अंश, कत-

टलमलाना (क्रि०) डगमगाना, ललचना, स्थिति का अनिश्चित होना।

टलाटली (सं० स्त्री०) बहाना, मिस, हीला हवाला।

टलाना (क्रि०) लुकाना, छिपाना, लुकवा देना, हटवा देना। [निरर्थक।

टल्ला (सं० पु०) झूठ मूठ, असत्य, सारहीन वस्तु,

टल्ली (सं०पु०) एक प्रकार का बाँस। [निठल्लापन।

टल्लेनवीसी (सं० स्त्री०) व्यर्थ का काम, टालमटूल,

टवर्ग (सं० पु०) ट आदि पाँच अक्षर ट, ठ, ड, ढ, ण।

टवाई (सं० स्त्री०) व्यर्थ घूमना। [खिसकने का शब्द।

टस (सं० स्त्री०) टसकन, खिसकन, किसी भारी चीज़ के

मुहा०—टस से मस न होना=अपनी जगह न छोड़ना, अपनी ज़िद पर अड़े रहना।

टसक (सं० स्त्री०) पीड़ा, फोड़ा आदि में होने वाली पीड़ा जो रह रह कर होती है, यह पीड़ा फोड़े के पकने पर होती है।

टसकना (क्रि०अ०) हटना, कष्ट पूर्वक हटना, मोटे आदमी या भारी चीज़ के हटने में कष्ट होता है और उन्हीं के हटने के अर्थ में इसका प्रयोग होता है।

टसकाना (क्रि० स०) हटाना, दूर करना, किसी वर्ज़नी वस्तु को हटाना।

टसना (क्रि०) मसकना, फटना।

टसर (सं० पु०) एक प्रकार का रेशम, इसकी बनी धोतियाँ चादर आदि पूजा के समय उपयोग में लाई जाती हैं, टसर के साफे भी बनते हैं, मध्य प्रदेश में इसके कारखाने हैं।

टहक (सं० स्त्री०) गांठ की पीड़ा, व्रण की वेदना।

टहकना (क्रि० अ०) टघरना, पिघलना, धीरे धीरे पीड़ा होना, ठहर ठहर कर दर्द होना, घी आदि का गरमी पाकर टघलना।

टहकाना (क्रि० स०) पीड़ा देना, तपा कर टघलाना।

टहटह }
टहटहा } (वि०) सुन्दर, नवीन, मनोहर, रमणीय, ताजा।

टहना (सं० पु०) पेड़ की शाखा, शाख, डाल।

टहनी (सं० स्त्री०) छोटे वृक्षों की पतली शाखा, लचीली और कोमल शाखा।

टहरना (क्रि० अ०) घूमना, फिरना, पादचारण करना।

टहल (सं० स्त्री०) काम, धन्धा, ख़िदमत, सेवा।

टहलना (क्रि० अ०) घूमना, धीरे धीरे घूमना, सन्ध्या सबेरे वायु सेवन के लिए नगर के बाहर नदी तीर तथा बाग़ आदि में जाना।

टहलनी (सं० स्त्री०) नौकरानी, दासी, मजूरिन। [देना।

टहलाना (क्रि० स०) घुमाना, फिराना, दूर करना, हटा

टहलुआ (सं० पु०) नौकर, टहल करने वाला।

टहलुई (सं० स्त्री०) टहलनी, मजूरिन, नौकरानी।

टहलू (सं० पु०) नौकर, चाकर।

टहो (सं० स्त्री०) युक्ति, जोड़ तोड़, ताक, बालक का शब्द, रुलाई, जन्मते बालक का शब्द।

टहूका (सं० पु०) पहेली, चुटकुला।

टहोका (सं० पु०) घूँसा, चपेटा। [चिह्न।

टांक (सं० स्त्री०) एक तौल, चार माशे, लेख, लेखन,

टांकना (क्रि० स०) लिखना, चिह्नित करना, सीना, जोड़ना, दो वस्तुओं को सीकर मिलाना, टांका देना, फटे कपड़े को सीना, टूटे हुए जूते को बनाना।

टांकर (सं० पु०) लम्पट, लुच्चा, बदमास।

टांका (सं० पु०) सीअन, जोड़न, वह व्यापार जो दो वस्तुओं को सीकर मिलाता है, शरीर के दोनों भाग के चमड़े को सीकर मिलाने को टांका देना कहते हैं।

टांकी (सं० स्त्री०) पत्थर काटने का शब्द, रुखानी, नासूर, पानी जमा करने का छोटा हौज़।

टांकू (वि०) टाकने वाला, पत्थर काटने वाला।

टांग (सं० स्त्री०) पैर, चरण, कमर के नीचे का भाग।

मुहा०—टांग अड़ाना=अनधिकार चर्चा करना, बिना जानी हुई बात में दख़ल देना। टांग तले से निक-

लना=आधीन होना, हार मानना । टाँग तोड़ना=निकम्मा करना, अशुद्ध बोलना । टाँग पसार कर सोना=निश्चिन्त सोना । टाँग बढ़ाना=आगे बढ़ना, उन्नति करना । टांगे रह जाना=थक जाना, आगे न बढ़ सकना ।

टांगन (सं० पु०) घोड़े की एक जाति, छोटी जाति का घोड़ा, वरमा, भूटान, नैपाल आदि का घोड़ा । ये छोटे सुन्दर और मज़बूत होते हैं और क़दम खूब चलते हैं ।

टांगना (क्रि० स०) लटकाना, खूंटी आदि के सहारे किसी वस्तु को रखना, फांसी चढ़ाना, फांसी के द्वारा प्राणदण्ड देना । [औज़ार ।

टांगा (सं० पु०) कुल्हाड़ा, लकड़ी चीरने का बड़ा

टांगी (सं० स्त्री०) छोटी कुल्हाड़ी ।

टांगुन (सं० स्त्री०) धान्य विशेष, कँगुनी ।

टांघन (सं० पु०) टांगन जाति का घोड़ा । [बात ।

टांच (सं० स्त्री०) व्यङ्ग वचन, ताना, दिल दुखाने वाली

टांचना (क्रि० अ०) अड़चन उपस्थित करना, ताना मारना, सीना, जोड़ना, खोंचना, छेदना, काटना ।

टांट (सं० स्त्री०) सिर के बीच का भाग ।

टांठ (वि०) सूखा, कड़ा, दिलेर ।

टांठा (वि०) पोढ़ा, ठोस, उत्साही ।

टांठाई (सं० स्त्री०) पोढ़ापन, उत्साह ।

टांड (सं० पु०) पट्टा, दीवार के सहारे सामान रखने के लिये बनाया गया स्थान । [समूह ।

टांडा (सं० पु०) बनजारों का दल, व्यापारियों का

टांडी (सं० स्त्री०) टिड्डी, कीट विशेष ।

टांयटांय (सं० स्त्री०) निरर्थक शब्द, कौए की बोली, अप्रिय शब्द, कठोर शब्द । [कुछ नहीं ।

मुहा०—टांय टांय फिस=बकवाद बहुत पर फल

टांस (सं० स्त्री०) पीड़ा विशेष, हाथ या पैरों की एक प्रकार की पीड़ा, हाथ या पैरों के दबने से या भूठा पड़ने से वहां रुधिर की गति बन्द हो जाती है, पुनः दबाव के हट जाने से या आघात का वेग कम होने से वहां रुधिर का संचार होने लगता है, उस समय उस हाथ या पैर में विशेष पीड़ा होती है उसे टांस कहते हैं ।

टांसना (क्रि० अ०) पीड़ा होना, झिनझिनाना ।

टाट (सं० पु०) सन का बना हुआ मोटा कपड़ा जो बिछाने के काम आता है ।

मुहा०—टाट में मूंज का बखिया=जैसे को तैसा । एक टाट के=भाई बन्धु, एक कुल के । टाट पलटना =दिवाला निकालना, किसी वस्तु के लिए नाहीं करना ।

टाटक (वि०) टटका, ताजा, बासी नहीं ।

टाटिक (सं० स्त्री०) टाटी ।

टाटी (सं० स्त्री०) टट्टी, छोटी टट्टी ।

टाठी (सं० स्त्री०) थाली, धातु का बना भोजन-पात्र ।

टाड़ी (सं० स्त्री०) लकड़ी काटने का अस्त्र विशेष, फरसी, छोटा फरसा । [झुकाव ।

टान (सं० स्त्री०) आवश्यकता, खैंच, झुकाव, मानसिक

टानना (क्रि० स०) खींचना, तानना, फैलाना ।

टाप (सं० स्त्री०) घोड़े का पैर जो ज़मीन पर पड़ता है, घोड़े के पैर का शब्द ।

टापना (क्रि० अ०) उपवास करना, भूखा रहना ।

टापा (सं० पु०) टप्पा, मैदान, दो गांवों के बीच की कई कोस की ऊसर भूमि । [जिसके चारों ओर जल हो ।

टापू (सं० पु०) द्वीप, जल के बीच का भूमि, वह देश

टाबर (सं० स्त्री०) छोटी झील (पु०) बच्चा ।

टार (सं० पु०) दुराचारी मनुष्य, भँडुआ, गाँडू, कुटना ।

टारन (सं० पु०) हटाना या हटाने की वस्तु, किसी वस्तु को उठा कर अलग करने का साधन, हटाने योग्य वस्तु ।

टारना (क्रि० स०) हटाना, टालना, सरकाना ।

टारि (सं० स्त्री०) अन्तर, दूर ।

टाल (सं० स्त्री०) समूह, ढेर, राशि, लकड़ी अन्न आदि की ढेर । [साफ़ साफ़ न कहना ।

टालटूल (सं० पु०) बहानेबाजी, स्पष्ट उत्तर न देना,

टालना (क्रि० स०) सरकाना, हटाना, आगे बढ़ाना, स्तम्भित करना, रोकना ।

टालमटूल (सं० पु०) बहाना, कपट ।

टाला (सं० पु०) छल, कपट, धोखा, उड़नझाँई ।

टाली (सं० स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी ईंट । [दासी ।

टाहली (सं० स्त्री०) टहल करने वाली, सेवा करने वाली,

टिंड (सं० पु०) टिंडसी, एक प्रकार की लता, इसमें गोल गोल फल लगते हैं इनकी तरकारी बनती है ।

टिंडसी (सं० स्त्री०) टिंड, टिंडा, एक प्रकार की लता।
टिंडा (सं० पु०) टिंड, टिंडसी।
टिकई (सं० स्त्री०) वह गाय जिसके माथे में टीका हो, टिकइ, (क्रि० अ०) टिकता है, ठहरता है, विश्राम करता है।
टिकटिकी (सं० स्त्री०) अपराधियों को दण्ड देने का एक साधन, यह तीन लकड़ियों को जोड़ कर तिरछी बनायी जाती है।
टिकठी (सं० स्त्री०) टिकटिकी, एक तरह की ऊँची चौकी, जिस पर अपराधियों को बैठा कर फाँसी देते हैं।
टिकड़ा (सं० पु०) टुकड़ा, खण्ड, किसी वस्तु का छोटा हिस्सा। [करना, डेरा करना।
टिकना (क्रि० अ०) ठहरना, मार्ग में या विदेश में विश्राम
टिकरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का पकवान, टिकिया।
टिकली (सं० स्त्री०) बिन्दी, एक तरह की छोटी टिकिया जिसे स्त्रियाँ माथे पर धारण करती हैं, सूत बटने की एक वस्तु।
टिकस (अ० सं० पु०) कर, किराया, भाड़ा।
टिकाऊ (वि०) ठहरने वाला, चिरस्थायी, जो कुछ दिन चले, शीघ्र नष्ट न होने वाला।
टिकान (सं० पु०) ठहरने का स्थान, मार्ग का विश्राम-स्थान, विदेश का विश्राम-स्थान। [स्थान देना।
टिकाना (क्रि० स०) ठहराना, डेरा देना, विश्राम के लिए
टिकाव (सं० पु०) ठहराव, विश्राम, दृढ़ता, पड़ाव।
टिकासर (सं० पु०) ठहरने का स्थान, वासस्थान।
टिकासा (सं० पु०) पथिक, राही (वि०) टिकने वाला।
टिकिया (सं० स्त्री०) गोली चिपटी वस्तु, पीसे हुए कोयले की बनी एक वस्तु जो तमाकू पीने वालों के आग सुलगाने के काम आती है, गोल टुकड़ा।
टिकुरा (सं० पु०) टीला, भीटा।
टिकुरी (सं० स्त्री०) सूत बटने की फिरकी।
टिकुली (सं० स्त्री०) टिकली, पन्नी या काँच की बहुत छोटी बिन्दी के आकार की टिकिया जिसे स्त्रियाँ श्रृङ्गार के लिये माथे पर चिपकाती हैं।
टिकैत (सं० पु०) जिसका अभिषेक होने वाला हो, राज्य का अधिकारी, राजपुत्र, युवराज, नाथद्वार के गोस्वामी की एक उपाधि।
टिकोर (सं० पु०) लेई, पुलटिस, लोवदो, लेप।
टिकोरा (सं० पु०) अंबिया, आम का छोटा फल।
टिक्कड़ (सं० पु०) मोटी रोटी, हाथियों के खाने की रोटी, साधुओं की रोटी।
टिक्का (सं० पु०) तिलक, रोरी चन्दन आदि का माथे में लगाना, बिवाह के पहले होने वाली एक रस्म।
टिक्की (सं० स्त्री०) टिकिया, छोटा टुकड़ा। [पिघलना।
टिघलना (क्रि० अ०) पिघलना, द्रव होना, घी आदि का
टिघलाना (क्रि०) गलाना, पिघलाना।
टिचन (वि०) तय्यार, प्रस्तुत, ठीक।
टिटकार (सं० पु०) पशु हाँकने का शब्द।
टिटकारना (क्रि० अ०) बैल आदि को वेग से चलने के लिए टिक शब्द के द्वारा बढ़ावा देना।
टिटकारी (सं० स्त्री०) देखो, "टिटकार"।
टिटिह (सं० पु०) एक पक्षी, नर टिटिहरी।
टिटिहरी (सं० स्त्री०) पानी के किनारे रहने वाली एक छोटी चिड़िया, इसका सिर लाल, गर्दन सफ़ेद और पर चितकबरे होते हैं।
टिट्टिभ (सं० पु०) पक्षी विशेष, टिटिहरी। [पहुँचाता है।
टिड्डा (सं०पु०) एक कीड़े का नाम, यह खेतों को नुक़सान
टिड्डी (सं० स्त्री०) टिड्डे की जाति का एक कीड़ा, यह भी खेतों को नुकसान पहुँचाने वाला है।
टिपका (सं० पु०) दाग, तिलक।
टिपटिप (सं० स्त्री०) बूँद बूँद पानी बरसने का शब्द।
टिपवाना (क्रि० स०) दबवाना, उठवाना, धीरे धीरे प्रहार करवाना। [मुकुट।
टिपारा (सं० पु०) ऊँची दीवार की टोपी के अन्दर का
टिप्पणी (सं० स्त्री०) अभिप्राय-प्रकाश, किसी विषय पर अपनी संक्षिप्त सम्मति प्रकाशित करना, टिप्पनी।
टिप्पन (सं० पु०) स्मरण के लिए लिख रखना, जन्मपत्र, जन्मकुण्डली।
टिप्पनी (सं० स्त्री०) देखो "टिप्पणी"।
टिप्पस (सं० स्त्री०) स्वार्थ, मतलब।
टिप्पी (सं० स्त्री०) चिह्न, निशान, पेवन्द।
टिभाना (क्रि०) लालच देना, ललचाना।
टिभाव (सं० पु०) थोड़ी सी जीविका।
टिमटिम (सं० पु०) मन्द मन्द वृष्टि।
टिमटिमाना (क्रि० अ०) मन्द मन्द प्रकाश होना, दीपक का धीरे धीरे जलना, झिलमिलाना।

टिमाक (सं० पु०) अहङ्कार, अकड़, एंठ,श्रृङ्गार।
टिर्राना (क्रि० अ०) एंठ से बोलना, क्रोध करना, क्रोध पूर्वक बोलना।
टिलटिलाना (क्रि०) छेड़ना, चिढ़ाना, दस्त आना।
टिलवा (सं०पु०) ठिंगना, छोटा क़द, लकड़ी का कुन्दा।
टिलिया (सं० स्त्री०) छोटी मुर्गी, मुर्गी का बच्चा।
टिलुआ (वि०) खुशामदी, चिरौरी करने वाला। [धक्का।
टिल्ला (सं० पु०) ऊंची जगह, मिट्टी का ढेर, आघात,
टिहरा (सं० पु०) पुरवा, छोटा गाँव।
टिहरी (सं० स्त्री०) टिहरा, छोटी बस्ती। [चला जाना।
टिहुकना (क्रि० अ०) रूठना, नाराज़ होना, नाराज़ होकर
टिहुनी (सं० स्त्री०) घुटना, कोहनी।
टिहूक (सं० स्त्री०) क्रोध, नाराज़गी।
टींट (सं० पु०) करील का फल। [तरकारी बनती है।
टींड़सी (सं० स्त्री०) टिंडा, एक गोल फल जिसकी
टीक (सं० स्त्री०) स्त्रियों के एक गहने का नाम, यह दो तरह का होता है एक गले में पहना जाता है और दूसरा माथे पर।
टीकना (सं० स्त्री०) टीका लगाना, स्त्रियों का सिन्दूर आदि लगाना, देवी देवताओं को सिन्दूर आदि लगाना।
टीका (सं०पु०) चन्दन, तिलक, माथे पर चन्दन लगाना, ब्याह की एक रस्म, टिका, व्याख्या, अर्थ का विवरण।
टीकाकार (सं० पु०) किसी ग्रन्थ की व्याख्या करने वाला, व्याख्याकार, व्याख्यानकर्त्ता।
टीकैत (वि०) अभिषिक्त।
टीटली (सं० स्त्री०) औषधि विशेष।
टीटा (सं० पु०) स्त्रियों के गुप्त अंग के बीच का मांस जो कुछ बाहर निकला रहता है।
टीड़ी (सं० स्त्री०) टिड्डी, पतङ्ग।
टीन (सं० पु०) धातु विशेष।
टीप (सं०स्त्री०) दबाव,उड़ाव,चुराने की क्रिया,उड़ा लेना।
टीपटाप (सं० स्त्री०) ठाट बाट, तड़क भड़क, सजावट।
टीपन (सं० पु०) जन्मपत्र, चुराना, दीवार की दरार बंद करना, टिपकारी करना, गाँठ, टाँका, घट्टा।
टीपना (क्रि० स०) दबाना, मसलना, चुराना, टिपकारी करना।
टीपू सुलतान (सं० पु०) मैसूर के सुलतान हैदर अली का पुत्र था उसके मरने के बाद खुद गद्दी पर बैठा इसका जन्म सन् १७४९ ई० में हुआ था, इससे और अंग्रेजों से कई लड़ाइयाँ हुईं और अन्तिम लड़ाई में मारा गया।
टीबा (सं० पु०) देखो "टीला"। [दिखावा।
टीमटाम (सं० स्त्री०) आडम्बर, सजावट, तड़क भड़क,
टील (सं० स्त्री०) छोटी मुर्गी। [भीटा।
टीला (सं० पु०) ऊँची भूमि, मिट्टी का प्राकृतिक स्तूप,
टीस (सं० स्त्री०) पीड़ा, दांतों की पीड़ा।
टीसना (क्रि० अ०) पीड़ा होना, दांतों में दर्द होना।
टीसमारना (क्रि०) पीड़ा होना।
टुगना (क्रि० स०) चोंच से कुतुर कुतुर कर खाना, थोड़ा थोड़ा खाना, फलियों को कुतुर कुतुर कर खाना।
टुंच (वि०) टुच्चा, छोटा, क्षुद्राशय, क्षुद्र, नीच।
टुंटा (वि०) बिना हाथ का, हथकटा।
टुंड (सं० पु०) ठूठ, स्थाणु, शाखाहीन वृक्ष, रुण्डमुण्ड।
टुंडा (वि०) ठूठा, बिना हाथ का मनुष्य, हथकटा, लूला, शाखाहीन वृक्ष, बिना सींग का बैल।
टुंडी (सं० स्त्री०) नाभि, ढोंढी।
टुक (वि०) थोड़ा, स्वल्प, नेक।
टुकड़तोड़ (सं० पु०) टुकड़ा खाने वाला, पराश्रित, दूसरों के अन्न से पलने वाला। [छोटा भाग।
टुकड़ा (सं० पु०) खंड, किसी वस्तु का टूटा भाग,
टुक सा (वि०) थोड़ा सा, जरा सा।
टुङ्गा (सं० पु०) छोटी पूछें, बड़ी पूछें। [भोजन।
टुङ्गार (सं० स्त्री०) बिना इच्छा के खाना, अरुचि पूर्वक
टुच्च (सं० पु०) छोटा, छोटे क़द का, ठेंगना, नन्हा।
टुच्चा (वि०) छोटा आदमी, क्षुद्राशय, नीच मनुष्य।
टुटका (सं० पु०) टोटका।
टुटपुंजिया (वि०) जिसके पास पूंजी थोड़ी हो, थोड़ी पूंजी से व्यापार करने वाला, छोटा आदमी।
टुटरूँ (वि०) निर्बल, निस्सहाय, अकेला, असहाय, असमर्थ, (सं० स्त्री०) पंडुक नामक पक्षी की बोली का अनुकरण शब्द।
टुड़ी (सं० स्त्री०) नाभि, बोड़री।
टुनटुक (सं० पु०) वृक्ष विशेष, स्योना वृक्ष। [अलापना।
टुनटुनाना (क्रि०) गुनगुनाना, धीरे धीरे गाना, शनैः शनैः
टुण्ड (सं०पु०) हथकटा, स्थाणु, अङ्ग भङ्ग, शाखा रहित।

टुण्डा (वि०) हथकटा, लूला, जिसका हाथ कट गया हो।
टुण्डि (सं० स्त्री०) तोंद, नाभी, हथकटी स्त्री, बिना हाथ की स्त्री। [मुश्क चढ़ाना।
टुण्डियाना (क्रि०) पीठ पर हाथ बांधना, मुश्क कसना,
टुण्डिया कसना, टुण्डिया चढ़ाना, टुण्डिया बांधना (क्रि०) मुश्क चढ़ाना, मुश्क कसना, अपराधी के हाथों को पीठ की ओर खींच कर बांधना।
टुनकी (सं० स्त्री०) एक कीड़ा, यह अन्न में लगता है।
टुनगी (सं० स्त्री०) फुंनगी, वृक्षों पौधों आदि के सिरे का भाग, कोमल पत्तियाँ, कोपल, जिसमें से पत्तियाँ निकलती हैं।
टुनटुनाना (क्रि०) धीरे धीरे घंटी को लगातार बजाना।
टुपकना (क्रि० अ०) टपकना, धीरे धीरे दर्द होना, बीच में बोल देना, बात के बीच में धीरे से बोल देना।
टुसकना (क्रि० अ०) पीड़ा होना, टसकना, हटना, खसकना, फोड़ा आदि में धीरे धीरे पीड़ा होना।
टुहुकना (क्रि०) सिसकना, रोना।
टूँ (सं० स्त्री०) अपान वायु का शब्द, पादने का शब्द।
टूँगना (क्रि० स०) कुतुर कुतुर कर खाना।
टूँड (सं० पु०) धान, जौ, गेहूं आदि की फलियों पर की पतली और नुकीली बाल, मसा आदि की नुकीली मूँछ।
टूंडी (सं० स्त्री०) नाभी, बुन्द। [भाग।
टूक (सं० पु०) टुकड़ा, खंड, किसी वस्तु का तोड़ा हुआ
टूकसा (अव्य०) थोड़ा सा, ज़रा सा, अल्प परिमाण में।
टूका (सं० पु०) खण्ड, टूक, टुकड़ा।
टूट (सं० स्त्री०) टूटा हुआ भाग, भ्रम वश ग्रन्थ का छूटा हुआ अंश, टोटा, घाटा, नुक़सान, हानि।
टूटना (क्रि० अ० टूक टूक होना, अलग अलग होना, बिखर जाना, बनी हुई वस्तु का टुकड़ा होना, आक्रमण करना, शरीर की किसी जोड़ का उखड़ जाना, अधिक हो जाना, भीड़ जमा होना, आकस्मिक आना, जातिच्युत होना, नीचे गिरना।
टूटा (वि०) खण्डित, कटा हुआ।
मुहा०—टूटा फूटा = नष्ट भ्रष्ट, पुराना, काम चलाऊ।
टूठना (क्रि०अ०) सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना।
टूठनि (सं० स्त्री०) प्रसन्नता, सन्तोष, तुष्टि।
टूम (सं० स्त्री०) वस्त्राभूषण, गहना गंठा, अल्प, नकल शृङ्गार, सुन्दरी स्त्री, धनी स्त्री।
मुहा०—टूम उतारना = नक़ल करना, पहनावे की नक़ल करना। टूमटाम = आडम्बर, आयोजन, सजावट, झटका, धक्का।
टूसा (सं० पु०) फुनगी, मदार का फल, कुश की जड़, कोमल और नुकीली पत्ती, पाकड़ पीपल बट का फूल।
टूसी (सं० स्त्री०) कोमल पत्ती, फुनगी।
टें (सं० स्त्री०) तोते की बोली का अनुकरण।
टेंगर (सं० पु०) मछली विशेष।
टेंगरा (सं० पु०) मछली का एक भेद।
टेंघुना (क्रि० अ०) घुटना।
टेंघुनी (सं० स्त्री०) अवलम्ब, सहारा, छप्पर आदि को ठहराने के लिए जो बाँस आदि लगाये जाते हैं।
टेंट (सं० स्त्री०) धोती की ऐंठन जो कमर से लिपटी रहती है। [होना।
मुहा०—टेंट का गरम होना = पास में रुपया पैसा
टेंटर (सं० पु०) रोग के कारण या शीतला प्रकोप से आँख के ऊपर निकला हुआ मांस, ढेंढर।
टेंटा (सं० पु०) पक्षी विशेष, इसकी चोंच लम्बी होती है, (वि०) ज़िद्दी मनुष्य, किसी की बात न सुनने वाला।
टेंटी (सं० स्त्री०) करील का फल और वृक्ष।
टेंटुआ (सं० पु०) मटई, गले की नस, गले की घांटो।
टेंटें (वि०) प्रलाप, अनर्थक शब्द, व्यर्थ की बकवाद, तोते की बोली का अनुकरण।
टेंई (सं० स्त्री०) ओट, लुकाव, छिपाव।
टेउ (सं० स्त्री०) टेंव, अभ्यास, आदत, बान, स्वभाव।
टेक (सं० स्त्री०) सहारा, किसी वस्तु को स्थिर रखने के लिए लगाया हुआ सहारा, प्रतिज्ञा, प्रण।
टेकड़ी (सं० स्त्री०) धुस्स, टीला, छोटा पहाड़।
टेकन (सं० पु०) अवलम्ब, सहारा, ओठगन।
टेकना (क्रि० अ०) सहारा लेना, थकावट दूर करने के लिए किसी वस्तु का अवलम्ब लेना, प्रणाम करना, जैसे माथा टेकना।
टेकनी (सं० स्त्री०) थूनी, टेकन, सहारा।
टेकर (सं० पु०), टेकरा (सं० पु०), टेकरी (सं० स्त्री०) टीला, स्तूप।

टेकला (सं० स्त्री०) धुन, रटन।

टेकान (सं० पु०) अवलम्ब स्थान, सहारा, थकान दूर करने का साधन, किसी वस्तु को ठहराने के लिये लगा हुआ खम्भा।

टेकाना (क्रि० स०) ठहराना, ऊपर उठाये रहना, किसी भारी वस्तु को उठाने में सहायता देना। [वाला।

टेकी (सं० पु०) दृढ़ प्रतिज्ञ, अपनी बात पर अड़ा रहने

टेकुआ (सं० पु०) चरखे का सूआ जिसमें सूत काता जाता है। [देना, दण्ड देकर बदमाशी दूर करना।

मुहा०—टेकुआ सा सीधा करना=बदमाशी का दण्ड

टेकुरा (सं० पु०) पान, ताम्बूल। [टेकुआ।

टेकुरी (सं० स्त्री०) सूत बटने की एक वस्तु, चरखे का

टेड़ा (सं० पु०) पेड़ी, एक प्रकार का चर्खा। [नटखटी।

टेढ़ (सं० स्त्री०) वक्रता, ऊबड़ खाबड़, टेढ़ापन, शरारत,

मुहा०—टेढ़ करना=झुकाना तिरछा करना,बांका करना।

टेढ़ा (वि०) वक्र, कुटिल, सीधा नहीं।

टेढ़ाई (सं० स्त्री०) बांकापन, तिरछापन, बक्रता।

टेढ़ापन (सं० पु०) टेढ़, वक्रता।

टेढ़ी (सं० स्त्री०) गर्व, दर्प, अभिमान, अहंकार, निचाई।

टेना (क्रि० स०) तीक्ष्ण करना, तीखा करना, हथियार पर शान चढ़ाना, मूँछ खड़ी रखना, मूँछ टेना। [हैं।

टेनी (सं० स्त्री०) छोटी लठिया, छिकुनी जो चरवाहा रखते

टेबुल (सं० पु०) मेज़, चौकोर ऊँची चौकी।

टेम (सं० स्त्री०) दीपक की लौ, लाट।

टेर (सं० स्त्री०) गाने में ऊँचा स्वर, ज़ोर का शब्द, दुखित मनुष्य की रक्षा के लिए पुकार करना, बार बार चिल्ला कर प्रार्थना करना।

टेरना (क्रि० अ०) प्रार्थना करना, विनती करना, ऊँची आवाज़ से दुःख सुनाना।

टेरी (सं० स्त्री०) पतली डाल, छोटी टहनी।

टेरे (क्रि०) बुलाए, पुकारे, हँकारे। [हटाना।

टेलना (क्रि०) हटाना, टालना, घुसेड़ना, बल पूर्वक पीछे

टेव (सं० स्त्री०) आदत, स्वभाव, अभ्यास।

टेवकी (सं०स्त्री०) थूनी, सहारा।

टेवना (क्रि०) पैनाना, धार देना।

टेवा (सं० पु०) लग्न-पत्री, बिवाह की तिथि, समय आदि बतलाने वाला पत्र।

टेवैया (सं० पु०) तेज करने वाला, हथियार तेज करने वाला, सिल्ली पर धार तेज़ करने वाला।

टेसू (सं० पु०) पलास का फूल, पलास का पेड़, लड़कों का उत्सव विशेष।

टेहरा (सं० पु०) गँवई, पुरवा।

टेहला (सं० पु०) बिवाह की एक रीति।

टैक्स (सं० पु०) कर, महसूल।

टैंटी (सं० पु०) देखो "टींट"।

टैया (सं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी और चपटी कौड़ी।

टोंक (सं० पु०) छोर, अन्त का भाग।

टोंचना (क्रि० अ०) खरोचना, चुभाना, गड़ाना।

टोंट (सं० स्त्री०) पक्षियों का मुख ठोर, चोंच।

टोंटा (सं० पु०) नली, ठोर के आकार की वस्तु, एक पानी आदि के गिरने के लिए बनायी हुई नली।

टोंटी (सं० स्त्री०) नली, पानी गिराने की नली जो लोटे आदि में लगी रहती है, लम्बी नुकीली वस्तु।

टोआई (सं० स्त्री०) स्पर्श, छुआई।

टोआ टोई (सं० स्त्री०) ढुंढ़ाई, टटोलाई।

टोइयाँ (सं० स्त्री०) तोते की एक जाति।

टोई (सं० स्त्री०) पर्व, पोर, अंगुलियों की एक गांठ से दूसरी गांठ तक का भाग, बांस ऊख आदि की एक गांठ से दूसरी गांठ के बीच का भाग।

टोक (सं० पु०) प्रश्न, किसी को किसी कार्य के लिए उद्यत देख, या जाने के लिए उद्यत देख उसके कार्य या यात्रा के सम्बन्ध में प्रश्न करना, हिन्दू सदाचार के अनुसार किसी कार्य के प्रारम्भ करने या यात्रा के समय टोकना अशुभ समझा जाता है। टोकने से कार्य यात्रा में अशुभ की सूचना समझी जाती है, और उस टोक के दोष को मिटाने के लिए थोड़ी देर के लिए वह कार्य रोक दिया जाता, यात्रा स्थगित कर दी जाती है, रुकावट, बाधा। [(सं० पु०) टोकरा।

टोकना (क्रि० स०) पूछताँछ करना, रोकना, विघ्न डालना,

टोकनी (सं० स्त्री०) तृण आदि का बना छोटा पात्र, डलिया, छोटा दौरा। [आदि का बना बड़ा पात्र।

टोकरा (सं० पु०) बड़ा दौरा, झाबा, तृण, बांस, बेत

टोकरी (सं० स्त्री०) झाँपा, छोटा टोकरा।

टोकाटोकी (सं०स्त्री०) पूछ ताछ, छेड़ छाड़, रुकाव।

टोटका (सं० पु०) जन्तर मन्तर, भूत बाधा आदि दूर करने का उपचार, तन्त्र शास्त्र की क्रिया।

टोटकेहाई (सं० स्त्री०) टोटका करने वाली।
टोटरू (सं० पु०) एक प्रकार का घुग्घू, पण्डुक विशेष।
टोटल (अं० सं० पु०) एकत्रीकरण, एकीकरण, मीज़ान, समस्त राशि, जोड़।
टोटा (सं० पु०) बांस के छोटे छोटे मज़बूत टुकड़े, घाटा, हानि, व्यापार में नुक़सान। [मंत्री थे।
टोडरमल (सं० पु०) सम्राट अकबर के प्रधान राजस्व
टोडा (सं० पु०) लकड़ी की बनी हुई घोड़े के मुँह के समान एक वस्तु जो घर की दीवार के बाहर की ओर पंक्ति में बढ़ी हुई छाजन को सहारा देने के लिये लगाई जाती है।
टोड़ी (सं० स्त्री०) एक राग का नाम।
टोनगोटी (सं० स्त्री०) चुंगी, कर।
टोनवा (सं० पु०) बाज, पक्षी, लक्कड़, टोटका।
टोनहा (सं० पु०) टोना करने वाला, जादूगर।
टोनहाई (सं०स्त्री०) टोना, टोना करना, डायन, जादू करने वाली स्त्री।
टोनही (सं० स्त्री०) टोना करने वाली स्त्री।
टोनहैया (सं० स्त्री०) जादूगरनी। [का व्यापार।
टोना (सं० पु०) यन्त्र मन्त्र करना, जादू करना, जादू
टोनाटानी (सं० स्त्री०) मंत्र यंत्र का प्रयोग।
टोनाटमना (सं० स्त्री०) टोटका।
टोप (सं० पु०) बड़ी टोपी, कनटोप, साहब की टोपी।
टोपन (सं० पु०) टोकरा, दौरा।
टोपरा (सं० पु०) टोकरा, दौरा।
टोपरी (सं० स्त्री०) छोटा टोकरा, टोकरी।
टोपा (सं० पु०) बड़ा टोप, कंटोप।
टोपी (सं० स्त्री०) सिर पर पहनने की वस्तु, बन्दूक का टोटा, पड़ाका, लिङ्ग का अग्र भाग, मस्तूल का सिरा।
टोपीदार (वि०) जिस पर टोपी हो या जो टोपी लगाने पर काम में आवे।
मुहा०—टोपी उछालना = बेइज़्ज़त करना, निरादर करना, तिरस्कार करना। टोपी बदलना = भाई भाई का सम्बन्ध जोड़ना, दूसरे राजा का राज्य होना।
टोपीवाला (सं० पु०) टोपी पहने हुए आदमी, टोपी बेचने वाला।
टोर (सं० स्त्री०) कटारी, कटार।
टोरना (क्रि० स०) तोड़ना।
टोरा (सं० पु०) जुलाहों का तराज़ू, इससे सूत तोला जाता है। [भाग।
टोल (सं० स्त्री०) समूह, यूथ, महल्ला, बस्ती का एक
टोला (सं० पु०) नगर का एक भाग, महल्ला। [बस्ती।
टोली (सं० स्त्री०) छोटा मुहल्ला, छोटा पुरवा, छोटी
टोवना (क्रि० स०) टोना, छूना, स्पर्श करना, छूकर परिचय प्राप्त करना, छूकर जानना, छूकर ढूंढ़ना।
टोह (सं० स्त्री०) खोज, ढूँढ़, पता, तलाश।
मुहा०—टोह में रहना = पता लगाने की फ़िक्र में रहना, सदा ढूंढ़ते रहना। टोह रखना = देख भाल करना, ख़बरगीरी करना।
टोहना (क्रि० स०) ढूंढ़ना, खोजना, पता लगाना।
टोहा टाई (सं० स्त्री०) छानबीन, तलाश।
टोहिया (सं० पु०) पता लगाने वाला, टोह रखने वाला।
टोही (वि०) तलाश करने वाला।
टौंस (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम, अयोध्या के पास इस नाम की एक नदी है, जिसे तमसा भी कहते हैं। तमसा नाम की एक दूसरी नदी मिरज़ापुर के पास है।
ट्रङ्क (सं० पु०) लोहे का हल्का सन्दूक। [ट्रेन कहते हैं।
ट्रेन (सं० स्त्री०) रेलगाड़ी के कई एक जुड़े हुए डब्बों को

ठ—टवर्ग का दूसरा वर्ण, इसका मूर्द्धा से उच्चारण होता है। दृश्यमान पदार्थ, शून्य, रिक्त मण्डल, चन्द्रमा, शिव। [जन बन्धुजन-हीन।
ठठ (वि०) शाखा-पत्र-हीन, ठूंठा, असहाय, अकेला, परि-
ठंठार (वि०) रिक्त, दरिद्र, छूँछा।
ठंढ (सं० स्त्री०) सर्दी, जाड़ा, ठंढक।
ठंढई (सं० स्त्री०) ठंढक पहुंचाने वाली वस्तु, बूटी, भंग।
ठंढक (सं० स्त्री०) सर्दी, शीत, ठंढ।
ठंढा (वि०) सर्द, शीतल।
मुहा०— ठंढा करना = शीतल करना, क्रोध शान्त करना, उपद्रव करने की इच्छा को दबाना, दीपक बुझाना। ठंढा होना = समाप्त होना, मर जाना।

बाजार ठंढा होना = बाजार का सुस्त होना, बाजार का काम काज मंदा पड़ना।
ठंढाई (सं० स्त्री०) ठंढक पहुँचाने वाली दवा, बूटी, भंग।
ठंढी (सं० स्त्री०) चेचक, शीतला।
मुहा०—ठंढी ढलना = शीतला के दानों का अच्छा होना। [हुई।
ठई (सं० स्त्री०) ठहराई, निश्चित की हुई, नियमित की
ठक (सं० स्त्री०) दो वस्तुओं के रगड़ने का शब्द, किसी वस्तु पर किसी वस्तु के आघात का शब्द।
मुहा०—ठक रह जाना = अवाक् रह जाना, आश्चर्य से चुपचाप देखते रह जाना, अपना कुछ कर्तव्य निश्चित न कर सकना। [टंटा, बखेड़ा, लाठी बजने का शब्द।
ठकठक (सं० स्त्री०) ठकठक शब्द, झगड़ा, मन मोटाव,
ठकठकाना (क्रि० स०) ठकठक करना, लाठी बजाना, लाठी से लड़ाई करना।
ठकठकिया (वि०) झगड़ालू, बखेड़िया।
ठकठेला (सं० पु०) धक्का मुक्की, बखेड़ा।
ठकठौवा (सं० स्त्री०) डोंगी, छोटी नाव।
ठकार (सं० पु०) 'ठ' अक्षर।
ठकुरसुहाती (सं० पु०) खुशामदी बात, मालिक को प्रसन्न करने वाली बात, खुशामद, चाटुकारिता।
ठकुराइन (सं० स्त्री०) स्वामिनी, मालकिन, ठाकुर की स्त्री, क्षत्रिय जाति की स्त्री, ज़मीदारिन।
ठकुराई (सं० स्त्री०) मालिकाई, प्रभुताई, अधिकारी।
ठकुरानी (सं० स्त्री०) ठकुराइन।
ठकुरायत (सं० स्त्री०) आधिपत्य।
ठक्कर (सं० स्त्री०) टक्कर, दो वस्तुओं का ज़बरदस्त आघात, बड़े बड़े दाने की माला, रुद्राक्ष का कंठा।
ठक्कुर (सं० स्त्री०) शालिग्राम की प्रतिमा, देवता की मूर्ति, ठाकुर, मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि।
ठग (सं० पु०) धूर्त, चालाक, धोखेबाज़, धोखा देकर किसी की वस्तु छीन लेने वाला, धूर्तता से लोगों का धन लेने वाला। [की अधिकता होना।
मुहा०—ठग लगना = ठगों का आक्रमण करना, ठगों
ठगई (सं० स्त्री०) धूर्तता, धोखाबाज़ी।
ठगना (क्रि० स०) भुलावा देकर माल लेना, धोखा देना, छल करना।
ठगनी (सं० स्त्री०) ठग की स्त्री, ठगई करने वाली स्त्री।
ठगबाज़ी (सं० स्त्री०) धोखेबाजी।
ठगलाना (क्रि०) धोखा देना, बहकाना, बहका कर ले जाना। [लेना।
ठगलेना (क्रि०) कपट करना, धूर्तता करना, छल से ले
ठगविद्या (सं० स्त्री०) धूर्तता, छल, कपट।
ठगहाई (सं० स्त्री०) ठगपन, ठगी।
ठगाई (सं० स्त्री०) ठगहाई, ठगपन।
ठगाना (क्रि० अ०) ठग के चपेट में आना, ठग के धोखे में आकर माल असबाब दे देना, उचित से अधिक मूल्य पर कोई वस्तु खरीदना।
ठगाही (सं० स्त्री०) ठगई, ठग का काम, ठगी।
ठगिन (सं० स्त्री०) ठग की स्त्री या ठगी करने वाली स्त्री, धोखेबाज़ स्त्री, विश्वासघातिनी।
ठगिनी (सं० स्त्री०) देखो "ठगिन"। [वाला।
ठगिया (सं० पु०) प्रतारक, धोखेबाज़, धोखा देने
ठगी (सं० स्त्री०) ठग का काम, धूर्तता, विश्वासघात।
ठगे (क्रि०) छले, धोखा दिए, बहकाए।
ठगौरी (सं० स्त्री०) ठगाई, धोखा, छल, भुलावा, ठगना।
ठचरा (सं० पु०) झगड़ा, कलह, वैरविरोध, टण्टा।
ठट (सं० स्त्री०) समूह, जमावड़ा, जमात, पंक्ति, झुंड।
ठटरी (सं० स्त्री०) शरीर का ढांचा, शरीर की हड्डियाँ।
ठट्ट (सं० पु०) समूह, ठट, पंक्ति की पंक्ति।
ठट्टर (सं० पु०) चाल, खपरैल।
ठट्ठा (सं० पु०) हँसी, दिल्लगी, उपहास, तफ़रीह। [चिढ़ाना।
ठट्ठा करना (क्रि०) हँसी ठठोली करना, उपहास करना,
ठट्ठा मारना (क्रि०) हँसी करना, उपहास करना, हँसना।
ठट्ठेबाज़ (वि०) परिहास शील, हँसोड़ा।
ठट्ठेबाज़ी (सं० स्त्री०) ठट्ठा करना, हास्य करना।
ठठ (सं० पु०) भीड़, मण्डली, समूह, कतार।
ठठक (सं० स्त्री०) रुकाव, अटकाव, भय, भीति।
ठठकना (क्रि० अ०) भौंचक हो जाना, सहसा अपने काम से रुक जाना, स्तिमित हो जाना, हाथ पैर का न चलना, किसी काम में प्रवृत्ति न होना। [पीटना।
ठठना (क्रि०) निर्माण करना, संशोधन करना, मारना,
ठठरा (सं० पु०) ठट्टर, घेर, घिराव, ओट, वृत्ति।
ठठरी (सं० स्त्री०) ठठरी, मांस रहित शरीर की हड्डियाँ, शरीर का ढाँचा। [उत्साह से।
ठठाई (क्रि०) मार कर, पीट कर, मोर मार कर अति

ठठाना (क्रि० स०) पीटना, खूब पीटना, अधिक मार के अर्थ में इसका प्रयोग होता है, प्रायः निर्जीव पदार्थों पर आघात करने के अर्थ में इसका प्रयोग होता है। (क्रि० अ०) ठठा कर हँसना, अट्टहास करना, खूब हँसना।

ठठुकि (क्रि०) रुक कर, अटक कर, ठठक कर।

ठठेरा (सं० पु०) जाति विशेष, इस जाति के लोग धातु का बर्तन बनाने का काम करते हैं, कसेरा।

मुहा०—ठठेरे ठठेरे बदलौवल = जैसे को तैसा, धूर्त धूर्त का साथ। [स्त्री।

ठठेरिन, ठठेरी (सं० पु०) ठठेरे का काम, ठठेरा जाति की

ठठोर, ठठोल (सं० पु०) हँसोड़, दिल्लगीबाज़, मसखरा।

ठठोली (सं० स्त्री०) हँसी, मसख़री।

ठड़ा (वि०) खड़ा।

ठड्ढा (सं० पु०) गुड्डी के बीच की लकड़ी, मुड्ढा।

ठढ़ा (वि०) खड़ा, ठड़ा।

ठण्ढ (सं० स्त्री०) जाड़ा, शीत, शीतकाल, सर्दी।

ठण्ढक (सं० स्त्री०) शीतलता, जाड़े का समय।

ठण्ढा (वि०) शीतल, सर्द।

ठण्ढाई (सं० स्त्री०) शीतलता; शैल्य, सौंफ, कासनी, गुलाब की पत्ती, खरबूजे की मींगी, बादाम आदि को पीस कर बनाते हैं।

ठण्ढा करना (क्रि०) शीतल करना, शान्त करना।

ठण्ढा होना (क्रि०) ठण्डा पड़ना, शान्त होना।

ठण्ढी (सं० स्त्री०) जाड़ा, शीत, शीतलता।

मुहा०—ठण्ढी साँस भरना = पश्चात्ताप करना, हाथ मारना, लम्बी साँस भरना।

ठन (सं० स्त्री०) शब्द विशेष, धातु का शब्द।

ठनक (सं० स्त्री०) ध्वनि, शब्द, बाजा आदि की ध्वनि।

ठनकना (क्रि० अ०) ठनठन करना, तबला, मृदङ्ग आदि का बजना, मन्द मन्द पीड़ा होना, धीरे धीरे व्यथा होना। [ठनक।

ठनका (सं० पु०) शब्द, ध्वनि, मेघ गर्जन, रुपये की

ठनकाना (क्रि० स०) ठनठन शब्द कराना, ठनठन बजा कर रुपये परखना।

ठनकार (सं० पु०) रुपये का शब्द, धातु की ध्वनि।

ठनगन (सं० पु०) नटखटी, दुलार से मचलना।

ठनठन-गोपाल (सं० पु०) छूछी वस्तु, निर्धन मनुष्य।

ठनठनाना (क्रि० स०) ठनठन शब्द करना, रुपये का शब्द करना।

ठनाका (सं० पु०) मेघ-गर्जन, मेघ-शब्द, ठनठन शब्द।

ठनाठन (सं० पु०) लगातार ठनठन शब्द, लगातार रुपयों का बजबा रहना, रुपयों की अधिकता।

ठन्ना (क्रि०) परखना, ठहराना, निश्चय होना।

ठपका (सं० पु०) उलहना, आघात, धक्का।

ठपना (क्रि० अ०) प्रारम्भ करना, शुरू करना, छानना, उद्योग शुरू करना, दृढ़ता के साथ काम में लग जाना।

ठप्पा (सं० पु०) छापने का सांचा, यह लकड़ी का होता है, इस पर तरह तरह के बेल बूटे बने रहते हैं और रंग में डुबो कर कपड़े छापे जाते हैं।

ठभोली (सं० स्त्री०) ताना, व्यंग, ठठोली।

ठमक (सं० स्त्री०) रुकावट, ठहराव, चलते चलते रुक जाना, चलते चलते ठहर जाना।

ठमकना (क्रि० अ०) ठहरना, रुकना, चलते चलते ठहर जाना, किसी कार्य को करते करते रुक जाना, लचकना लचक के साथ चलना, मटकते हुए चलना।

ठमकाना (क्रि० स०) रोकना, चलते चलते रोकना।

ठरक (सं० पु०) खुर्राटा, नासिका ध्वनि।

ठरन (सं० स्त्री०) अधिक शीत, बहुत जाड़ा, ठिठुरन।

ठरना (क्रि०) ठिठुर जाना, शिथिल होना (सं० पु०) मादक वस्तु विशेष।

ठरिया (सं०पु०) एक प्रकार की मट्टी का बना हुआ हुक्का।

ठर्रा (सं० पु०) बटा हुआ सूत, यज्ञोपवीत बनाने के लिए कड़ा बटा हुआ सूत।

ठलुआ, ठलुवा (वि०) निकम्मा, बेकाम।

ठवनि (सं०स्त्री०) स्थिति, आसन, बैठना, बैठने का ढंग।

ठवर (सं० पु०) ठौर, स्थान।

ठस (वि०) जो पोला न हो, छिद्र शून्य, ठोस।

ठसक (सं० स्त्री०) अभिमान, अहङ्कार, गर्व, ऐंठ।

ठसकदार (वि०) शानदार, घमंडी।

ठसकना (सं० पु०) पटकना, टूटना, टूट जाना।

ठसका (सं० पु०) खांसी का एक भेद, इसमें केवल ठसका होता है, कफ नहीं निकलता, सूखी खाँसी।

ठसनी (सं० स्त्री०) ठाँसने की वस्तु, बन्दूक का गज, शलाका।

ठसाठस (वि०) कसमकस, खूब भरा हुआ, इतना भरा हुआ कि तिल रखने की भी जगह न हो; जैसे रेल के डब्बे में ठसाठस आदमी भरे हैं।

ठस्सा (सं० पु०) साँचा, आकृति। [की पोताई।

ठहर (सं० पु०) स्थान, जगह, चौका, भोजन के स्थान

ठहरना (क्रि० अ०) रुक जाना, चलना बंद कर देना, कार्य बन्द कर देना, प्रतीक्षा करना, विश्राम करना, गिरते गिरते रुक जाना, निश्चित होना, किसी वस्तु का भाव ठहरना, कोई विचार निश्चित होना, निवास करना।

ठहराई (सं० स्त्री०) ठहराने की क्रिया या मज़दूरी, अधिकार।

ठहराऊ (वि०) ठहराने वाला, निश्चय करने वाला, निवास करने वाला, प्रतीक्षा करने वाला, टिकाऊ, बहुत दिनों तक रहने वाला, मज़बूत।

ठहराना (क्रि० स०) रोकना, गति बन्द करना, किसी बात के लिए किसी को राज़ी करना, टिकाना, विश्राम कराना, रहने के लिए स्थान देना, स्थिर कर देना, चलने फिरने न देना, किसी वस्तु का मूल्य ठहराना, कन्या या पुत्र का संबन्ध स्थिर करना।

ठहराव (सं० पु०) निश्चय, स्थिरता, पक्का विचार, प्रस्ताव।

ठहरौनी (सं० स्त्री०) बिवाह संबन्धी लेन देन, जो पहले ही ठहरा दिया जाता है। [क़हक़हा।

ठहाका (सं० पु०) ज़ोर की हँसी का शब्द अट्टहास,

ठाँ (सं० पु०) बन्दूक की आवाज़, ठाँव, ठौर, ठिकाना, भूमि।

ठाँई (सं० पु०) स्थान, जगह, समीप, नियरे।

ठाँऊँ (सं० पु०) स्थान, ठौर, जगह। [गाय या भैंस।

ठाँठ (सं० पु०) सूखा पेड़, बिना रस का, दूध न देने वाली

ठाँयँ (सं० स्त्री०) जगह, स्थान, ठौर।

ठाँयँठाँयँ (सं० स्त्री०) बन्दूक से गोली छूटने की प्रतिध्वनि, व्यर्थ बकवाद, प्रयोजन हीन बकवाद, प्रलाप, झगड़ा। [स्थान।

ठाँव (सं० पु०) स्थान, जगह, रहने की जगह, विश्राम-

ठाँसना (क्रि० स०) खूब भरना, कस कस कर भरना, रोकना, मना करना।

ठाकुर (सं० पु०) शालिग्राम प्रतिमा, ईश्वर, देवता, पूज्य, क्षत्रियों की उपाधि, ज़मींदार, ज़मींदारी रखने वाला, स्वामी, मालिक।

ठाकुरद्वारा (सं० पु०) देव-मन्दिर, विष्णु का मन्दिर, जगन्नाथ का मन्दिर जो पुरी में है।

ठाकुरवाड़ी (सं० स्त्री०) देवता का मन्दिर, विष्णु-मन्दिर, देव-पूजन स्थान।

ठाकुरसेवा (सं० स्त्री०) देवता का पूजन।

ठाट (सं० पु०) बाँस की फट्टियों का बना टट्टर, जिस पर खपड़े की छावनी होती है, ढांचा सजावट, श्रृङ्गार, आडम्बर, ढङ्ग, शैली, दृश्य, वेश-विन्यास।

मुहा०—ठाट बदलना = नया बनाव बनाना, नया रूप धारण करना, अभिप्राय बदलना, रंग पलटना। ठाट करना = सामान एकत्रित करना।

ठाटना (क्रि० स०) ठाट करना, वेश-विन्यास करना, दृढ़ होना, अकड़ना, सामग्रियों का ढेर लगाना, ठाट बाट करना, मुक़ाबिला करना, मुक़ाबिले के लिए खड़ा होना।

ठाटबन्दी (सं० स्त्री०) खपड़ा छाने के लिए ठाट करना।

ठाटबाट (सं० पु०) आडम्बर, शोभा, श्रृङ्गार, सजावट।

ठाटर (सं० पु०) टट्टर, टट्टी, ढाँचा, बनाव।

ठाठ (सं० पु०) देखो "ठाट"।

ठाड़ (वि०) ऊँचा, उपस्थित, खड़ा, स्थित।

ठाड़ा (वि०) खड़ा, सीधा। [समूचा।

ठाढ़ (वि०) खड़ा, दंडायमान, जो पिसा कुटा न हो,

ठाढ़ठाढ़ी (अव्य०) बहुत शीघ्र, जल्दी से, खड़े खड़े, तुरन्त।

ठाढ़ा (वि०) समूचा, बिना टूटा फूटा, बिना कूटा पीसा।

ठाढ़ेश्वरी (सं० पु०) एक प्रकार के तपस्वी साधु, ये खड़े रह कर तपस्या करते हैं।

ठान (सं० स्त्री०) प्रारम्भ, कार्य का आयोजन, यज्ञ उत्सव आदि का प्रारम्भ करना, बड़े काम का प्रारम्भ, ज़िद, हठ, दृढ़ संकल्प, चेष्टा, मुद्रा।

ठानठ (सं० पु०) पत्थर आदि तोड़ने का शब्द।

ठानना (क्रि० स०) किसी काम को प्रारम्भ करना, यज्ञ उत्सव आदि का प्रारम्भ करना, तत्परता के साथ किसी काम में जुट जाना, ज़िद करना, किसी कार्य की सिद्धि का हठ करना, मन में कोई विचार दृढ़ कर लेना। [किया।

ठाना (क्रि०) आरम्भ किया, प्रतिज्ञा किया, निश्चय

ठानी (सं० स्त्री०) ठहराई, विचारी।

ठाम (सं० स्त्री) स्थान, ठाँव।

ठार (सं० पु०) अधिक सर्दी, खूब जाड़ा, हिम, पाला।

ठाल (सं०स्त्री०) सूखा, काम धन्धे का अभाव, रोज़ी की कमी, खाली वक्त, अवकाश।

ठाला (सं०पु०) महँगी, अकाल, काम काज का अकाल।

मुहा०—बैठा ठाला=निकम्मा, बेकार, जिसके पास कुछ काम काज न हो।

ठाली (वि०) खाली, रीता।

ठासना (क्रि०) देखो "ठाँसना"।

ठाहर (सं० स्त्री०) स्थान, जगह, ठिकाना।

ठाहरू (सं० स्त्री०) ठाहर। [मनुष्य

ठिँगना (सं० पु०) नाटा, छोटे क़द वाला, छोटे क़द का

ठिक (सं०स्त्री०) स्थान या अवसर विशेष,थिगली,चकली।

ठिकड़ा (सं०पु०) ठीकरा, मिट्टी के बर्तन का फूटा टुकड़ा।

ठिकठौर (सं० स्त्री०) वह भूमि जहां ठीकरे की अधिकता हो, ठीकरा वाली जगह।

ठिकरा (सं० पु०) देखो "ठिकड़ा"। [आश्रय।

ठिकान (सं० पु०) पता, वास-स्थान का पता, चिह्न,

ठिकाना (सं०पु०) स्थान, जगह, पता, वास-स्थान, रहने की जगह चिट्ठियों पर लिखा सिरनामा।

ठिकाना ढूँढ़ना (क्रि०) रहने के लिये स्थान खोजना, रोजगार ढूँढ़ना।

मुहा०—ठिकाना करना=आश्रय ढूँढ़ना, रहने का स्थान ढूँढ़ना। ठिकाना लगाना=प्रबन्ध करना, व्यवस्था करना, समाप्त करना, खटका मिटा देना।

ठिकानी (वि०) ठिकाने वाला, जिसका ठिकाना लग गया हो।

ठिकाने लगना (क्रि०)मारा जाना,अन्त तक पहुंच जाना, समाप्त कर देना, नष्ट भ्रष्ट करना,अवधि प्राप्त करना।

ठिठक (सं० स्त्री०) भयभीत होना, आश्चर्य होना।

ठिठकजाना (क्रि०) आश्चर्य से घबड़ा जाना।

ठिठकना (क्रि० अ०) रुक जाना, कर्तव्य भूल जाना, सहसा बीच में रुक जाना। [जाना।

ठिठक रहना (क्रि०) आश्चर्य में आकर ज्ञान-शून्य हो

ठिठर (सं० स्त्री०) अकड़ाई, जाड़ा। [जाड़े का लगना।

ठिठरना (क्रि० अ०) जाड़े से सङ्कुचित होना, ठिठुरना,

ठिठुर (सं० स्त्री०) जकड़,अकड़ाई। [सङ्कुचित होना।

ठिठुरना (क्रि० अ०) ठिठरना, जाड़ा लगना, जाड़े से

ठिठुरा (वि०) ठिठरा हुआ, पाले का मारा हुआ।

ठिठुराहट (सं० स्त्री०) ठिठुर, ठंडक, जकड़।

ठिनकना (क्रि०) धीरे धीरे रोना, सिसकी लेना, शनैः शनैः रोना।

ठिया (सं० पु०) सीमा, सीमा का चिह्न, दो गावों की सीमा बतलाने वाला, लट्ठे आदि जो इसी काम के लिए गाड़े जाते हैं।

ठिर (सं० स्त्री०) पाला, कड़ी सर्दी। [होना।

ठिरना (क्रि० अ०) सरदी से ठिठुरना, जाड़े से सङ्कुचित

ठिलना (क्रि० स०) ढकेलना, ठेलना, आघात के द्वारा आगे बढ़ाना।

ठिलवा(सं०स्त्री०)छोटा घड़ा, मिट्टी का बना छोटा घड़ा।

ठिलिया (सं० स्त्री०) गगरी, छोटा घड़ा, मटकी।

ठिलुआ (वि०) बेकाम, जिसके पास कोई काम न हो, निठल्ला। [का मिट्टी का बर्तन।

ठिल्ला (सं० पु०) घड़ा, बड़ा घड़ा, गगरी, पानी भरने

ठीक (वि०) निश्चय, यथार्थ, स्वीकारार्थक। [होना।

ठीकआना (क्रि०) बराबर होना, जितना चाहिये उतना

ठीककरना (क्रि०) निश्चित करना, शुद्ध करना, दंड देकर सुधारना।

ठीकठाक (वि०)कृत प्रबन्ध, जिसकी व्यवस्था होगई हो।

मुहा०—ठीक ठाक करना=प्रबन्ध करना,व्यवस्था करना।

ठीकमठीक (अव्य०) बिलकुल ठीक, जोड़ तोड़।

ठीकरा (सं० पु०) मिट्टी के बर्तन का फूटा टुकड़ा।

ठीकरी (सं० स्त्री०) गिटकी,कंकड़।

ठीका (सं० पु०) भाड़ा चुकौता, यथार्थ निश्चय, काम के अनुसार मजूरी का निश्चय काम प्रारम्भ करने के पहले ही कर लेना।

मुहा०—ठीका लेना=मकान आदि बनवाने का भार लेना, जिसके लिए मकान के नक़शे के अनुसार ख़र्च पहले ही तय कर लिया जाता है पर वह रक़म कुछ ज्यादा करके ठीक की जाती है और वही रक़म बचत की होती है।

ठीकेदार (सं० पु०) ठेका लेने या देने वाला।

ठीप (सं० स्त्री०) ठोकर, लात।

ठीलना (क्रि० स०) ठेलना, ढकेलना।

ठीवन (सं० पु०) खखार, थूक, कफ़।

ठीहा (सं० पु०) ज़मीन में गड़ी हुई मोटी और कुछ ऊँची लकड़ी, जिस पर निहाई रख कर लोहार अपना काम करते हैं, बैठने का स्थान।

ठुकना (क्रि० अ०) ठुक जाना, पिट जाना, मार खाना, मारा जाना, गले पड़ना, ज़बरदस्ती फँसना ।

ठुकराना (क्रि० स०) ठोकर मारना, अनादर करना, तिरस्कार करना, अपने यहाँ व्यक्ति की उपेक्षा करना, तिरस्कार कर हटा देना ।

ठुकवाना (क्रि० स०) पिटवाना, ठोकने की आज्ञा देना ।

ठुड्डी (सं० पु०) अ ठ की जड़ का निचला भाग, चिबुक ।

ठुनुक (सं० स्त्री०) सिसक, धीरे धीरे रोना ।

ठुनकना (क्रि० अ०) धीरे धीरे रोना, किसी बात के लिए हठ करना, आघात द्वारा ठुनठुन शब्द होना ।

ठुनकाना (क्रि० स०) ठुनठुन शब्द करना, सता कर रुलाना ।

ठुमक (वि०) गति विशेष, बालक की प्रसन्नता की गति ।

ठुमकना (क्रि० अ०) ठुमक ठुमक चलना, धीरे धीरे प्रसन्नता से चलना ।

ठुमका (वि०) छोटा, नाटा, छोटे क़द का मनुष्य, ठिगना ।

ठुमकी (सं० स्त्री०) धीरे धीरे चाल, दीर्घ सूत्री ।

ठुमरी (सं० स्त्री०) गाने का एक भेद ।

ठुसकना (क्रि० अ०) धीरे धीरे बोलना, कठिन बातें बोलना, जी ऊबने वाली बातें बोलना ।

ठुसकी (सं० स्त्री०) अपान वायु, धीरे से पादना ।

ठुसना (क्रि० अ०) भरना, कस कस कर भरना ।

ठुसाना (क्रि०) भरना, भरवाना, ठुसवाना ।

ठुस्सी (सं० स्त्री०) पाटिया, एक सुवर्ण का आभूषण जो गले में पहना जाता है ।

ठूँठ (सं० पु०) शाखा रहित वृक्ष, कटा हुआ हाथ, एक प्रकार का कीड़ा जो ज्वार बाजरा आदि की फ़सल में लगता है । [हाथ का, लूला ।

ठूँठा (वि०) सूखा, बिना पत्तियों का, हथकटा, बिना

ठूँठिया (वि०) ठूँठ वृक्ष ।

ठूँठी (सं० स्त्री०) खूटी, अन्न का डांठ ।

ठूँसना (क्रि० स०) घुसेड़ना, किसी पोली वस्तु में कोई वस्तु बल पूर्वक डालना, ठूसना ।

ठेंउना (सं० पु०) घुटना ।

ठेंकुर (सं० पु०) देखो "अड़गोड़ा" ।

ठेंगना (सं० पु०) छोटे क़द का आदमी ।

ठेंगा (सं०पु०) डंडा, छोटा डंडा, अंगूठा ।

मुहा०—ठेंगा दिखाना = अंगूठा दिखा कर किसी की हीनता बतलाना, किसी की असमर्थता बतलाना । ठेंगे से = मुझे चिन्ता नहीं, भय नहीं । ठेंगा बजाना = लाठी चलाना, लड़ाई करना ।

ठेंगाठेंगी (अव्य०) परस्पर में मारा मारी ।

ठेंगाबजाना (क्रि०) मारा मारी करना ।

ठेंठ (वि०)शुद्ध,केवल,स्वभाव-सिद्ध । [बन्द किया जाता है ।

ठेंठी (सं० स्त्री०) कान की मैल, डाट जिससे बोतल आदि

ठेक (सं० स्त्री०) सहारा, अवलम्ब, वह वस्तु जो छप्पर आदि को ऊपर उठाये रखने के लिए लगाई जाय, पेंदा, घोड़ों की एक चाल, छड़ी या लाठी की सामी, धातु के बर्तन में लगी हुई चकती ।

ठेकना (क्रि० स०) टेकना, अवलम्ब ग्रहण करना, सहारा लेना । [एक बोल ।

ठेका (सं० पु०) ठेके की चीज़, ठीका, तबला आदि का

ठेकाधिकारी (सं० पु०) ठीकेदार ।

ठेकी (सं० स्त्री०) विश्राम-स्थान ।

ठेकुआ (सं० पु०) मीठी मोटी पूड़ी ।

ठेगना (क्रि० स०) सहारा लेना, विश्राम करना, थकावट दूर करने के लिए बोझ को किसी वस्तु के सहारे रखना, लाठी के सहारे चलना ।

ठेठ (वि०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, निरा, बिलकुल, अकृत्रिम, बनावटी नहीं । [की वस्तु ।

ठेपी (सं० स्त्री०) डाट, काग, बोतल आदि बन्द करने

ठेलना (क्रि० स०) ढकेलना, धक्का देकर आगे बढ़ाना ।

मुहा०—ठेलम ठेल = रेल पेल, अधिकता, प्रचण्डता ।

ठेला (सं० पु०) आघात, दो पहिए की एक गाड़ी जिसे आदमी ठेल कर ले चलते हैं, यह सामान आदि ढोने के काम आती है ।

मुहा०—ठेलाठेली = धकमधका, रेल पेल । ठेलाठेल = अधिक भीड़, अधिकता । [जल गिरे ।

ठेवका (सं०पु०) वह स्थान जहाँ खेत की सिंचाई के लिये

ठेवना (सं० पु०) घुटना, जानु, ठेंहुना ।

ठेस (सं० स्त्री०) चोट, आघात, ठोकर ।

ठेसना (क्रि० स०) ठूसना, दबा दबा कर भरना ।

ठेसरा (सं० पु०) नकचढ़ा, अभिमानी, गर्वीला ।

ठेहरी (सं० स्त्री०) दरवाज़ों के पल्लों के नीचे की वह लकड़ी जिस पर किवाड़ों की चूल घूमती है ।

ठेही (सं० स्त्री०) मारी हुई ईख ।

ठेहुना (सं० पु०) घुटना।
ठैयाँ (सं० स्त्री०) स्थान, जगह, ठांव।
ठैरना (क्रि० अ०) ठहरना।
ठोंक (सं०स्त्री०) मार, आघात, प्रहार।
ठोंकना (क्रि० स०) मारना, पीटना, आघात करना, लकड़ी आदि में काँटा लगाना।
मुहा०—ताल ठोंकना=लड़ने के लिए तय्यार होना।
ठोंकवा (सं० पु०) मोटी पूड़ी।
ठोंग (सं०स्त्री०) चोंच की मार, अंगुली की मार। [करना।
ठोंगना (क्रि० स०) चोंच मारना, चोंच से आघात
ठोंगाना (क्रि०) चोंचियाना, ठोंगना।
ठोंठ (सं० स्त्री०) चोंच, ठोर, ओठ, पक्षियों का ओठ।
ठोंठा (सं० स्त्री०) चने का छिलका।
ठो (अव्य०) संख्या बोधक यथा—एक ठो, दो ठो।
ठोक (सं० स्त्री०) मारकूट, मारने का शब्द, ठोकने का शब्द।
ठोकना (क्रि० अ०) मारना, पीटना।
ठोकर (सं० स्त्री०) चोट जो किसी अङ्ग में किसी कड़ी वस्तु के ज़ोर से टकराने से लगे, रास्ते में पड़ा हुआ पत्थर या कंकड़ जिसमें पैर रुक कर चोट खाता है।
मुहा०—ठोकर खाना=मारा मारा फिरना, असफल होना। ठोकर लगाना=पैर में चोट लगना।
ठोकरा (वि०) कड़ा, कठिन, सख़्त, कठोर।
ठोकराना (क्रि०) आप ही आप ठोकर खाना, घोड़ा आदि का ठोकर खाना।
ठोकरी (सं० स्त्री०) कई महीने की ब्यायी हुई गौ।
ठोका (सं० पु०) एक गहने का नाम जिसे स्त्रियाँ हाथ में पहनती हैं।
ठोट (वि०) निःसार, जड़, अज्ञान।
ठोठ (वि०) जड़, मूर्ख, गावदी।
ठोठरा (वि०) पोपला, बिना दांतों का मुख, तुण्डा।
ठोडी (सं० स्त्री०) चिबुक, ठुड्डी।
ठोप (सं० पु०) बूँदे, बिन्दु।
ठोर (सं० स्त्री०) चोंच, चञ्चु, पक्षियों का ठोठ।
ठोल (सं० स्त्री०) ठोर, चीनी में पगी मोटी सी पूरी।
ठोला (सं० पु०) चिड़ियों का भोजन-पात्र, छोटे छोटे बर्तन, गाँठ। [पोली न हो।
ठोस (वि०) दृढ़, मज़बूत, निःसन्धि, जो वस्तु भीतर से
ठोसना (क्रि०) दबाना, धरना।
ठोसा (सं० पु०) अंगूठे की छाप, देव पूजा के लिए सोना चांदी की बनी गुरिया। [का पता लगाना।
ठोहना (क्रि० स०) टिकाना, ढूँढ़ना, स्थान ढूँढ़ना, स्थान
ठोहर (सं० पु०) अकाल, महँगी का समय।
ठौनी (सं० स्त्री०) ठवनि, स्थिति, स्थान।
ठौर (सं० पु०) स्थान, ठिकाना।
मुहा०—ठौर रहना=मारा जाना, मारा पड़ना, खेत रहना। ठौर ठिकाना=रहने का स्थान, पता ठिकाना। ठौर कुठौर=अनुपयुक्त स्थान, बुरे ठिकाने, बिना अवसर, बे मौक़ा।

ड

ड—टवर्ग का तीसरा वर्ण, इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।
डंक (सं० पु०) कांटा, बिच्छू के पीछे के भाग का ज़हरीला और नुकीला कांटा, मधुमक्खी का डंक, क़लम का मुँह, निब, डंक मारा हुआ स्थान।
मुहा०—डंक मारना=पीड़ा देना।
डंकना (क्रि० अ०) गर्जना, शब्द करना, भयभीत करने वाला शब्द करना।
डंका (सं० पु०) एक बाजे का नाम, युद्ध का बाजा, पहले युद्ध के समय यह बाजा बजाया जाता था, इसके बजने से युद्ध की सूचना समझी जाती थी।
मुहा०—डंके की चोट कहना=निर्भय होकर कहना, सब के सामने कहना। डंका पीटना=किसी बात को फैलाना। डंका बजा कर लेना=बल पूर्वक लेना, ज़बरदस्ती लेना। डंका बजाना=अधिकार की सूचना होना, नाम की दुहाई फिरना।
डंकिनी (सं० स्त्री०) जादू टोना करने वाली स्त्री, चुड़ैल।
डंकियाना (क्रि०) डंक से मारना, ज़हरीला कांटा घुसाना।
डंकीला (वि०) डंक वाला, जिसके डंक हो।

डंगर (सं० पु०) चतुष्पद जन्तु, चौपाया, गाय, बैल, भैंस आदि । [ककड़ी ।
डंगरी (सं० स्त्री०) डंकिनी, एक तरह की चुड़ैल, लंबी
डंठल (सं० पु०) छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा, पौधों का धड़ ।
डंड (सं० पु०) डंडा, छोटी लाठी, कसरत करने की एक प्रक्रिया, सज़ा, दण्ड, अपराध का दण्ड, घाटा ।
डंडपेल (सं० पु०) पहलवान, कसरत करने वाला ज्वान, कसरती जवान, अधिक दण्ड करने वाला ।
डंडवत् (सं० पु०) प्रणाम करने की एक रीति, ज़मीन में पट पड़ कर प्रणाम करना, वैष्णव और वैरागी साधु विशेष कर इसी प्रकार प्रणाम करते हैं ।
डंडवार (सं० पु०) चारदीवारी, चारों ओर की दीवार, ऊँची दीवार ।
डंडवी (वि०) दण्डित, दण्ड देने वाला, करद ।
डंडा (सं० पु०) सोंटा, सीढ़ी का पाया, बाजार का कर उगाहने वाला, मोटी छड़ी, छोटी लाठी ।
मुहा०—डंडा खाना = मार खाना, अपमानित होना । डंडा बजाना = लड़ाई करना, लाठी चलाना ।
डंडाकरन (सं० पु०) दण्डकारण्य, दण्डक नामक वन ।
डंडा डोली (सं० स्त्री०) एक खेल का नाम, यह खेल लड़के खेलते हैं इसमें डंडों की डोली बना कर कुछ लड़के एक लड़के को घुमाते हैं ।
डंडिया (सं० स्त्री०) धारी वाला, डंडा के आकार की लकीर वाला वस्त्र । [कपड़े में डांड़ लगाना ।
डंडियाना (क्रि० स०) दो लंबे कपड़े को एक में सीना,
डंडी (सं० स्त्री०) बेंट, तराजू के पलड़े में लगी हुई लकड़ी जिसमें तराजू के दोनों पलड़े बँधे रहते हैं, मूँठ ।
मुहा०—डंडी मारना = कम तौलना ।
डंडोरना (क्रि० स०) हिंडोरना, ढूँढ़ना, खोजना, उलट पलट कर ढूँढ़ना ।
डंडौत (सं० पु०) प्रणाम को एक रीति, दण्डवत् ।
डंबर (सं० पु०) बड़ा आयोजन, टीमटाम, आडम्बर, छोटी चाँदनी ।
मुहा०—मेघाडम्बर = बड़ा शामियाना, दल बादल ।
डँवाँडोल (वि०) अस्थिर, चञ्चल, विचलित, घबड़ाया हुआ, सन्देह की अवस्था, किसी बात का निश्चय न होना, डोलायमान अवस्था ।
डंस (सं० पु०) बड़ा मच्छर, जंगली मच्छर, पशुओं का मच्छर । [का काटना ।
डंसना (क्रि० अ०) डंक मारना, काटना, साँप आदि
डकई (सं० स्त्री०) एक प्रकार का केला ।
डकरा (सं० पु०) तालाब की सूखी काली मिट्टी ।
डकराना (क्रि० अ०) चिल्लाना, चीखना, गाय भैंस आदि का बोलना । [डाक का चपरासी ।
डकवाहा (सं० पु०) चिट्ठी बाँटने वाला, चिट्ठीरसा,
डकार (सं० स्त्री०) ऊर्ध्व वायु । [लना ।
डकारना (क्रि० अ०) डकार लेना, ऊर्ध्व वायु निका-
मुहा०—डकार जाना = छिपा लेना, पचा लेना, किसी की कोई वस्तु चुपचाप लेकर रख लेना ।
डकैत (सं० पु०) डाकू, डाका मारने वाला, लुटेरा, ज़बरदस्ती किसी का धन ले लेने वाला ।
डकैती (सं० स्त्री०) डाका मारने का काम, डाकूपन, लूट । [भडुरी ।
डकौत (सं० पु०) फलादेश कहने वाला, ज्योतिषी,
डकौतिया (सं० पु०) देखो "डकौत" ।
डग (सं० पु०) कदम, एक स्थान से पैर उठा कर दूसरे स्थान पर रखने की क्रिया, चलने के समय दो पैरों के बीच की दूरी ।
डगडगाना (क्रि० अ०) चञ्चल होना, विचलित होना, हिलना, डोलना, स्थिर न रहना ।
डगना (क्रि० अ०) हिलना, चलना फिरना, विचलित होना, प्रतिज्ञाच्युत होना ।
डगमग (वि०) काँपने वाला, अस्थिर, चलायमान ।
डगमगाना (क्रि० अ०) डगडगाना, विचलित होना, चञ्चल होना, थरथराना, लड़खड़ाना, डाँवाडोल होना ।
डगमगानि (क्रि०) डगमग हुई, डवाँडोल होना ।
डगर (सं० स्त्री०) मार्ग, रास्ता, राह ।
मुहा०—डगर बताना = राह बताना, चले जाने के लिए कहना, केवल उपाय बताना, स्वयं सहायता न देना । [गोली वस्तु का इधर उधर लुढ़कना ।
डगरना (क्रि० अ०) हिलना, डोलना, चलना, किसी
डगरा (सं० पु०) बांस का बना छिछला पात्र, यह गोल और बड़ा होता है, रास्ता, मार्ग ।

डगराना (क्रि० सं०) चलाना, फिराना, सरसों मटर आदि को सूप में डगरा कर मिट्टी आदि अलग करना।
डगरिया (सं० स्त्री०) राह, मार्ग, गली, कूंचा।
डगा (सं० पु०) डुग्गी बजाने की लकड़ी।
डगाना (क्रि०स०) विचलित करना, प्रतिज्ञा भ्रष्ट करना।
डगै (वि०) हिलै, चलै, कम्पै, खसकै सरकै।
डट (सं० पु०) निशाना।
डटना (क्रि० अ०) दृढ़ रहना, विचलित न होना, अड़ना, ठहरा रहना।
डटाना (क्रि० स०) दृढ़ कराना, विचलित न होने देना, दो वस्तुओं को आपस में सटा कर रखना, भिड़ाना, बिखरने वाली वस्तु को सीधी रखने के लिए किस वस्तु को सहारा देना।
डटाई (सं० स्त्री०) डटाने की मजदूरी, डटाने का काम।
डटैया (वि०) उद्यत, तैयार।
डट्टा (सं०पु०) बोतल आदि का मुँह बन्द करने की वस्तु, साँचा, डाट, हुक्के का नैचा।
डढ़न (सं० स्त्री०) जलन, दहन, जलना, बरना, नष्ट होना।
डढ़ना (क्रि०अ०) जलना, बरना, जल कर नष्ट होना, प्रकाशित होना, गरमी होना।
डढ़मुण्डा (वि०) दाढ़ी रहित, जिसकी दाढ़ी मूड़ दी गई हो।
डढ़ार (वि०) लम्बी डाढ़ों वाला, जिसकी दाढ़ें लम्बी हों।
डढ़ियल (वि०) डाढ़ी वाला, जिसकी दाढ़ी बड़ी हो।
डढ़ुआ (सं० पु०) बेरें का तेल, यह गाँवों में चिराग जलाने के काम आता है।
डंठा (सं०पु०) भेंटी, दण्डा, अन्न या फल आदि का डाँठ जिसके सहारे वे लगे रहते हैं।
डण्ड (सं०पु०) अपराध का प्रायश्चित, व्यायाम विशेष।
डण्डपेल (सं० पु०) पहलवान, कसरती ज़वान।
डण्डवत् (सं० पु०) भूमिष्ट होकर प्रणाम करना, अष्टाङ्ग प्रणाम करना।
डण्डवार (सं० पु०) ऊँची दीवार, चार दीवारी।
डण्डवी (वि०) करद, दण्ड देने वाला, दण्डित।
डण्डा (सं० पु०) दण्डा, लाठी, सोंटा, झंडे की लकड़ी।
डण्डाडोली (सं० स्त्री०) बालकों का एक खेल।
डण्डिया (सं० पु०) स्त्री का वस्त्र विशेष, दुपट्टा ओढ़नी, बाज़ार का कर उगाहने वाला।
डण्डी (सं०स्त्री०) दस्ती, कुल्हाड़ी, काष्ट विशेष, (पु०) पगडण्डी, गुप्त मार्ग, चोर गली।
डण्डीर (सं०स्त्री०) सीधी धारी, सीधी रेखा।
डण्डौत (सं० पु०) दण्डवत्, प्रणाम।
डपट (सं० स्त्री०) घुड़की, डांट, झिड़की, घुड़की।
डपटना (क्रि० स०) डांटना, घुड़कना, क्रोध पूर्वक तिरस्कार करना।
डपोरसंख (सं० पु०) बड़ी बड़ी बातें मारने वाला, काम कुछ न करने वाला, मूर्ख, कमसमझ, नालायक, कहते हैं कि एक बार किसी दरिद्र ब्राह्मण ने तपस्या करके समुद्र से शंख पाया, उस शंख में यह गुण था कि वह माँगने से धन दिया करता था, एक बार उस ब्राह्मण के घर कोई सज्जन आये, उस शंख का अद्भुत चमत्कार देख कर वे उस शंख को उठा ले गये। वह ब्राह्मण फिर समुद्र के पास गया और उसने समुद्र से अपनी दशा का वर्णन किया, समुद्र ने उस ब्राह्मण को पुनः एक शंख दिया और उस शंख का नाम डपोरशंख था, वह कहता बहुत था पर करता कुछ नहीं।
डप्प (वि०) बहुत मोटा, बहुत बड़ा।
डफ (सं०पु०) एक बाजे का नाम, बड़ी खंजड़ी, डफला।
डफला (सं० पु०) डफ, बाजा, मारवाड़ी डफ।
डफली (सं० स्त्री०) छोटा डफ।
मुहा०—अपनी डफली अपना राग=भिन्न भिन्न राय, जितने आदमी उतनी राय।
डफारना (क्रि० अ०) चिग्घाड़ मारना, गर्जना, दहाड़ मारना, भयदायक शब्द करना।
डफाली (सं० पु०) एक जाति, इस जाति के लोग डफ बनाने तथा बजाने का काम करते हैं।
डफोरना (क्रि० अ०) चिल्लाना, गरजना, ललकारना।
डब (सं० पु०) बल सामर्थ्य, पराक्रम, तेज।
डबकना (क्रि०) चमकना, जगमगाना।
डबका (सं० पु०) ताजा, मोटा, कुयें का ताज़ा जल।
डबकोहाँ (वि०) अश्रुपूर्ण, आँसू भरा हुआ।
डबगर (सं० पु०) चमार, मोची।
डबडबाना (क्रि०अ०) आँसू आना, आँसू भरना, गद्गद होना, कंठ रुकने से शब्द का न निकलना।
डबरा (सं० पु०) छिछला, उथला, कम गहरा।
डबरिया (वि०) बायें हाथ से काम करने वाला।
डबरी (सं० स्त्री०) छोटा ताल।
डबस (सं० पु०) व्यवस्था, तैयारी, रचना।

डबा (सं० पु०) देखो "डब्बा"।
डबिया (सं०स्त्री०) छोटा डिब्बा। [करना, नष्ट करना।
डबोना (क्रि० स०) भिगोना, डुबाना, गोता देना, ग़ारत
मुहा०—बाप दादों का नाम डबोना=नीच काम करने से कुल की प्रतिष्ठा नष्टकरना, इज़्ज़त बिगाड़ना। वंश डबोना=कुल की रीति नष्ट करना, कुल की मर्यादा नष्ट करना।
डब्बा (सं० पु०) ढक्कनदार छोटा गहरा बर्तन, यह अनेक प्रकार का होता है और अनेक कामों में आता है, संपुट, रेलगाड़ी की एक गाड़ी जो अलग हो सकती है।
डब्बू (सं० पु०) लोहे पीतल आदि का डाँड़ी लगा हुआ एक प्रकार का कटोरा जो दाल आदि पतली चीज़ों के परोसने के काम में आता है। [ऊपर जाना।
डभकना (क्रि० अ०) पानी में डूबना उतराना, नीचे
डभका (सं० पु०) कुएँ का ताज़ा जल, भूना हुआ नया मटर।
डभकौरी (सं० स्त्री०) उरद की बरी।
डमर (सं० पु०) डर के मारे भागना, अख, कलह।
डमरुआ (सं० पु०) एक प्रकार का बात रोग, गठिया।
डमरू (सं० पु०) एक बाजे का नाम, यह शिव जी का प्यारा बाजा है, ताण्डव नृत्य के समय शिव जी यही बाजा बजाते हैं।
डमरूमध्य (सं० पु०) धरती का वह तंग पतला भाग जो दो स्थल खंडों को आपस में मिलाता है।
डमरूयन्त्र (सं० पु०) दवा बनाने का यन्त्र, इससे अर्क़ खींचा जाता है।
डम्फ(सं०पु०) खंजरी के आकार का एक प्रकार का बाजा।
डयन (सं० पु०) उड़ान, पक्षियों की गति।
डर (सं० पु०) भय, भीति, दहशत, अनिष्ट की आशङ्का से उत्पन्न होने वाला एक मानसिक विकार।
डरना (क्रि० अ०) भयभीत होना, अनिष्ट की आशङ्का से व्याकुल होना, सशङ्कित होना।
डरपत (क्रि०) डरता है, भय खाता है।
डरपति (क्रि०) डरती है, भयभीत होती है।
डरपना (क्रि०अ०) डरना, भयभीत होना, शङ्कित होना, अनिष्ट की आशङ्का करना
डरपाना (क्रि० स०) डरपना का प्रेरणार्थक, डराना, भयभीत करना, शङ्कित करना, अनिष्ट करने या होने की आशङ्का उत्पन्न करना।
डरपे (क्रि०) डर गये, भयभीत हुए।
डरपोक (वि०) डरने वाला, बिना कारण डरने वाला, डर के थोड़े कारण से अधिक डरने वाला, भीरु, कादर, कायर।
डरपोकना (वि०) डरने वाला, डरपोक।
डरवैया (वि०) भीरु, डरपोक।
डराऊ (वि०) डराने वाला।
डराक (वि०) डरने वाला, भीरु, भीत।
डराना (क्रि०स०) डर दिखाना, भयभीत करना, डरपाना।
डरालू (वि०) डरपोक, भीरु।
डरावना (वि०) भयानक, भयंकर।
डरावा (सं० पु०) पक्षियों को डराने का एक उपाय, फलदार पेड़ों पर कोई बजने वाली चीज़ बाँध देते हैं और उसमें रस्सी बाँध कर नीचे लटका देते हैं, पेड़ पर पक्षियों के आने पर वह रस्सी खींच दी जाती है और आवाज़ होने से पक्षी उड़ जाते हैं।
डरी (सं० स्त्री०) छोटे छोटे टुकड़े, डर गई, डली।
डरीला (वि०) भीरु, डरने वाला।
डरौना (वि०) डराऊ, भयानक।
डल (सं० पु०) टुकड़ा, खण्ड (स्त्री०) झील।
डलवा (सं०पु०) टोकरा, सींक बेंत आदि का बना बर्तन।
डलवाना (क्रि०स०) डालने के लिए कहना, डालने देना।
डला (सं० पु०) टुकड़ा, बड़ा टुकड़ा, बड़ा टोकरा।
डलिया (सं० स्त्री०) छोटा डला।
डली (सं० स्त्री०) छोटा टुकड़ा, छोटा टोकरा, सुपारी।
डवाँडोल (वि०) चंचल, अस्थिर।
डस (सं० स्त्री०) तराजू की रस्सी, सूत की डोरी, सूत, छीर, काट, छेद।
डसन(सं०स्त्री०) दशन, काटन, मच्छर आदि का काटना, साँप का काटना, डसने की क्रिया।
डसना (क्रि० स०) काटना, साँप आदि विषैले जीवों का दांत से काटना, डंक मारना, चुगली करना, चुगली खाना। [बिछाना, बिस्तर लगाना।
डसाना (क्रि० स०) कटवाना, साँप आदि से कटवाना,
डसि (क्रि०) डस कर, डस के, काट के।
डसौना (सं० पु०) बिस्तर, बिछौना।
डहक (सं० पु०) गुफा, कन्दरा, खोह, छिपने की जगह।

डहकना (क्रि० स०) छल करना, धोखा देना, ठगना, विश्वास से फँसना।

डहकाना (क्रि० अ०) बिगाड़ना, नष्ट करना, गवाँना, धोखा देना, ठगा जाना, हानि उठाना, किसी के विश्वास में फँस कर नुक़सान उठाना।

डहकि (क्रि०) ठगा कर, धोखे में आकर।

डहडहा (वि०) लहलहा, प्रफुल्ल, खिला हुआ।

डहडहाना (क्रि० अ०) लहलहाना, सजीव होना, फलना फूलना, सुन्दर दीखना, वृक्ष में पौधों आदि के नये नये पत्तों का लगना, हरा भरा होना।

डहन (सं० स्त्री०) पंख, पक्षियों के पर, डयन।

डहना (क्रि० स०) जलना, भस्म होना, कुढ़ना, बुरा मानना, (सं० पु०) पंख, पर, डैना।

डहर (सं० स्त्री०) मार्ग, रास्ता, राह, आकाश मार्ग, आकाश गंगा, माँग भरना, स्त्रियों के माथे में सिन्दूर लगाना। [दौड़ना।

डहरना (क्रि० अ०) टहलना, चलना, फिरना, घूमना,

डहराना (क्रि० स०) चलाना, दौड़ाना।

डहरिया (सं० स्त्री०) मार्ग, डगर, डहर।

डहू (सं० पु०) बड़हर का पेड़ और फल।

डाँक (सं० स्त्री०) चाँदी सोने का वरक़, चाँदी सोने का कागज़ के समान पतला पत्तर।

डाँकना (क्रि० स०) पुकारना, कूदना, उछलना, उछल कर नाला गढ़ा आदि का पार होना, नीलाम के लिए बोली बोलना।

डाँकिया (सं० पु०) चिट्ठीरसा।

डाँग (सं० पु०) घना वनखंड।

डांगर (वि०) पशु, गाय बैल आदि।

डांट (सं० स्त्री०) दाब, अधिकार, अधीनता।

मुहा०—डांट बताना = धमकाना, डाटना।

डांटडपट (सं० स्त्री०) तिरस्कार, घुड़की, झिड़की, धमकी।

डांटना (क्रि० स०) तिरस्कार करना, लानत मलामत करना, डराना, शङ्कित करने के लिए धमकाना।

डांठ (सं० पु०) डंठी डंठल, पौधों की सूखी लकड़ी, ज्वार जोन्हरी आदि की सूखी लकड़ी।

डांठल (सं० पु०) डण्डी, डाँडी, दण्डी।

डांठी (सं० स्त्री०) डण्डा, डाँठ, डण्डी।

डांड़ (सं० पु०) नाव चलाने की बल्ली, डंडा, फरी, गदका, गदके का खेल, अंकुश का हत्था, सीधी लकीर, रीढ़ की हड्डी, ऊँची मेंड़।

डांड़भरना (क्रि०) जुर्माना देना दंड देना। [हानि भरवाना।

डांड़ना (क्रि० स०) अर्थ दण्ड देना, जुरमाना करना,

डाँड़र (सं० पु०) बाजरा आदि का डंठल जो खेत कट जाने पर भी खेत में पड़ा रहता है।

डांड़लेना (क्रि०) जुर्माना वसूल करना।

डांड़ा (सं० पु०) डांड, नाव चलाने का बल्ला, लाठा, खेत-का किनारा, नदी का किनारा।

डांड़ी (सं० स्त्री०) लंबी पतली लकड़ी, लंबा दस्ता, तराज़ू की डंडी, एक खेल, बेंट।

मुहा०—डांडी मारना = कम तौलना।

डांढ़री (सं० स्त्री०) चुनी हुई मटर की फली।

डाँमाडोल (वि०) इधर से उधर, अनिश्चित, अव्यवस्थित।

डांवरा (सं० पु०) पुत्र, बेटा, छोटा लड़का।

डांवरी (सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री, छोटी लड़की।

डांवरू (सं०पु०) एक देश का नाम, बाघ का बच्चा।

डांवाडोल (वि०) चंचल, विचलित।

डांस (सं० पु०) मच्छर, बड़ा मच्छर, जंगली मच्छर, पशुओं का मच्छर। [लगाने वाली स्त्री।

डाइन (सं० स्त्री०) जादूगरनी, चुड़ैल, राक्षसी, नजर

डाक (सं० पु०) क्रमबद्ध, क्रमशः, पहले बड़े आदमियों की यात्रा के लिए डाक का प्रबन्ध किया जाता था। नियत दूरी पर घोड़े आदि सवारी का प्रबन्ध पहले ही से कर दिया जाता था, जिससे यात्रा करने वाले को घोड़े आदि के विश्राम के लिए ठहरना नहीं पड़ता था, चिट्ठी पत्री जल्दी भेजने का सरकारी प्रबन्ध, नीलाम की बोली। [करना।

मुहा०—डाक लगाना = संवाद पहुँचाने का प्रबन्ध

डाकखाना (सं०पु०) चिट्ठियों के आने जाने का दफ़्तर।

डाकगाड़ी (सं० स्त्री०) सब से तेज़ चलने वाली गाड़ी, चिट्ठी पत्री पार्सल आदि ले जाने वाली गाड़ी।

डाकघर (सं० पु०) पत्रादि के आने जाने का दफ़्तर।

डाकना (क्रि० अ०) चिल्ला कर बुलाना, दूर से बुलाना दुःख से चिल्लाना, भय से चिल्लाना, कूदना, फांदना, कूद कर नाला आदि का पार करना, वमन करना, क़ै करना।

डाकबंगला (सं० पु०) वह इमारत जो सरकार की ओर से यात्रियों के ठहरने को बनी हो।

डाकमहसूल (सं० पु०) वह व्यय जो डाक द्वारा किसी माल को भेजने या मँगाने में लगे।

डाकमुंशी (सं० पु०) डाकघर का बाबू, पोस्ट मास्टर।

डाकर (सं० पु०) तालों की सूखी हुई काली मिट्टी।

डाकव्यय (सं० पु०) डाक महसूल।

डाका (सं० पु०) ज़बरदस्ती धन हरण, डाकुओं का काम।

डाकाज़नी (सं० स्त्री०) डाका मार कर धन हरण करना, लूटना।

डाका डालना (क्रि०) रास्ता चलते हुए माल बलात्कार से छीन लेना।

डाकदेना (क्रि०) लूटना, छीनना, हस्तगत कर लेना।

डाका पड़ना (क्रि०)डाके से चोरी हो जाना, बलात्कार से अपहरण हो जाना।

डाकिनी (सं०स्त्री०) डाइन, काली की एक गण, प्रेतिनी।

डाकिया (सं० पु०) चिट्ठीरसा।

डाकी (वि०) खाऊ, पेटू, बहुत खाने वाला, शक्ति से अधिक काम करने वाला।

डाकू (सं० पु०) डाका डालने वाला, डाका मार कर ज़बरदस्ती किसी का धन छीनने वाला, बटमार, लुटेरा।

डागा (सं० पु०) नगारा बजाने की लकड़ी।

मुहा०—डागा देना=लकड़ी से नगारे पर मार कर शब्द करना, आक्रमण करने की सूचना देना।

डाट (सं० स्त्री०) बन्द करने की चीज़, ठेपी, टेक, काग, जिससे बोतल आदि बन्द किये जाते हैं।

डाटना (क्रि० स०) ज़ोर से बन्द करना, डाट लगाना, चढ़ाना, कस कर खाना, कस कर भरना, कपड़े आदि पहन कर तय्यार होना, टेकना, सहारा लेना।

डाड़ना (क्रि० अ०) दण्ड लगाना, दण्डित करना, अपराधी को सज़ा देना।

डाढ़ (सं० स्त्री०) चौभड़, चबाने वाले चौड़े दाँत, शाखा, बरोह, जटा।

डाढ़ना (क्रि० स०) जलाना, भस्म करना।

डाढ़ा (सं० पु०) आग, दावानल, वृक्षों के घर्षण से अपने आप आग लगना, स्वयं उत्पन्न आग, वन की आग।

डाढ़ी (सं० स्त्री०) चिबुक, ठुड्ढी, मुँह के नीचे वाला पतला भाग, गाल पर के बाल, मुँह पर के बाल।

डाढ़े (क्रि०) जलाये, (सं० पु०) लपक, कठिन।

डाब (सं०स्त्री०) एक तृण, कुश, नारियल का कच्चा फल।

डाबर (सं० पु०) नीची ज़मीन जहाँ दूसरी जगहों से पानी बह कर ठहरे, छोटा तालाब, गड़ही।

डाभ (सं० पु०) डाब, तृण विशेष, कुश, कुश की जाति का एक तृण, आम की मंजरी।

डामर (सं० पु०) एक तन्त्र शास्त्र, इसके रचयिता शिव हैं, चक्र विशेष, इसके द्वारा दुर्ग का शुभाशुभ जाना जाता है। सीमा के राज्य का आक्रमण भय, क्षेत्र-पाल भय, भैरव विशेष, क्षेत्रपाल भैरव।

डामल (सं० पु०) अंग्रेज़ी राज्य में देश निकाले का दण्ड, जन्म क़ैद।

डामाडोल (वि०) चंचल, विचलित।

डायन (सं० स्त्री०) डाकिनी, चुड़ैल, जादूगरनी।

डायरी (सं० स्त्री०) दिनचर्या, रोजनामचा।

डार (सं० स्त्री०) डाल, शाखा।

डारना (क्रि० स०) डालना, लगाना, घुसाना, किसी पर जल आदि फेंकना।

डारिया (सं० पु०) अनार, दाड़िम, अनार का फल।

डाल (सं० स्त्री०) डार, शाखा, पेड़ के कन्धे के ऊपर का भाग। [नवागत।

मुहा०—डाल का टूटा=ताजा फल, उत्तम, नवीन,

डालना (क्रि० स०) छोड़ देना, गिराना, फेंकना, ऊपर की वस्तु को नीचे गिरा देना, अनावश्यक समझ कर रख छोड़ना।

मुहा०—डाल रखना=किसी वस्तु को रख छोड़ना, काम में न लाना।

डाला (सं० पु०) बड़ी डाली, दौरा, बड़ी डलिया।

डालिम (सं० पु०) अनार, दाड़िम।

डाली (सं० स्त्री०) डलिया, छोटी दौरी, साहब लोगों को प्रसन्न करने के लिए उपहार।

मुहा०—डाली लाना=उपहार की उत्तम वस्तुओं से डाली सजाना।

डावर (सं० पु०) गहरा, गड्ढा।

डावरा (सं० पु०) पुत्र, बेटा।

डावरी (सं० स्त्री०) कन्या, बेटी।

डास (सं० पु०) एक अस्त्र का नाम इससे चमार चमड़े खरोंच कर साफ़ करते हैं।

डासन (सं० पु०) बिछौना, बिछाने का वस्त्र आदि।

डासना (क्रि० स०) बिछाना, बिछौना बिछाना।

डासनी (सं० स्त्री०) खाट, चारपाई।

डासि (क्रि०) बिछाकर, गिराकर, फेंककर।

डासी (सं० स्त्री०) बिछाई हुई।

डाह (सं० स्त्री०) ईर्ष्या, द्वेष, किसी की उन्नति देख मन ही मन जलना, मत्सर, दूसरे की उन्नति का द्वेष।

डाहना (क्रि० स०) जलाना, गर्म तेल आदि में डाल कर जलाना, तंग करना, परेशान करना।

डाही (वि०) द्रोही, दाही, ईर्षा। [अधिक रहता है।

डाहुक (सं० पु०) एक पक्षी का नाम जो जल के पास

डिंगर (सं०पु०) नटखट गाय आदि की बदमाशी छुड़ाने के लिए जो छोटी और मोटी लकड़ी उनके गले में बाँधी जाती है। बदमाश, ठग, मोटा मनुष्य।

डिंगल (सं० पु०) घृणित, नीच, वह भाषा जिसमें राजपूताने के चारण कविता करते हैं।

डिंडसी (सं० स्त्री०) टिंडसी, उच्चारण-भेद के कारण टिंडसी को डिंडसी भी कहते हैं।

डिगना (क्रि० अ०) विचलित होना, पश्चात्पद होना, निश्चित बात को अस्वीकृत करना, हटना, सरकना।

डिगाना (क्रि० स०) विचलित करना, हटाना, स्थान छुड़ाना। [बगीचे का तालाब।

डिग्गी (सं० स्त्री०) तालाब, पोखरा, छोटा तालाब,

डिठार (वि०) प्रत्यक्ष, आंखों के सामने, आंखों वाला, आंखों से देखने वाला, प्रत्यक्षदर्शी।

डिठियार (वि० दृष्टिमान, आंख वाला, जिसकी आंख से सुझाई पड़े। [फल।

डिठोहरी (सं० स्त्री०) एक फल, किसी जंगली पेड़ का

डिठोना (सं० पु०) काजल का टीका यह बच्चों को लगाया जाता है जिससे वे नजर आदि से बचे रहें

डिठौरा (सं० पु०) काजल का टीका, नजर न लगे इस लिये छोटे बच्चों के माथे पर लगाया जाता है।

डिढ़ाना (क्रि० स०) दृढ़ करना, मज़बूत करना, पक्का करना। [ढिंढोरा।

डिण्डिम (सं० पु०) करौंदा, कृष्ण पाक फल डुगडुगी,

डिण्डिर (सं० पु०) समुद्र का फेन, समुद्र झाग।

डित्थ (सं० पु०) काठ का बना हाथी, विशेष लक्षणों वाला पुरुष। [छोटा बर्तन।

डिबिया (सं० स्त्री०) डबिया, डब्बी, ढक्कनदार गोल

डिब्बा (सं० पु०) बड़ी डिबिया।

डिब्बी (सं० स्त्री०) डिबिया।

डिभ (सं० पु०) संग्राम पाखण्ड, धूर्त्त, प्रलय।

डिभगना (क्रि० स०) वश में करना, मोहित करना।

डिभी (वि०) पाखण्डी, दम्भी।

डिम (सं० पु०) दृश्य काव्य का एक भेद।

डिमडिमी (सं० स्त्री०) एक बाजा का नाम। [पुकार।

डिम्ब (सं० पु०) हलचल, हल्ला, व्याकुलता की

डिम्बक (सं० पु०) शालव नगर के राजा, ब्रह्मदत्त का पुत्र इसको महादेव ने अवध्य बनाया था और इसको कोई मार नहीं सकता था इसके अत्याचार से सब ऋषि लोग तंग आगये थे। अंत में श्रीकृष्ण से प्रार्थना करने पर श्रीकृष्ण ने इससे युद्ध किया, इसने अपने सौतेले भाई कंस को मरा समझ कर जमुना में जाकर आत्म हत्या करली।

डिम्बिका (सं० स्त्री०) मतवाली स्त्री, औषधि विशेष।

डिम्भ (सं० पु०) गर्भ, छोटा बच्चा, जनमतुआ बालक।

डिम्भक (सं० पु०) बालक, शिशु। [वाला चक्र।

डिम्भचक्र (सं० पु०) मनुष्यों का शुभाशुभ बताने

डिम्भज (वि०) अण्डज, द्विज, पक्षी, चिड़िया।

डिम्भा (सं० स्त्री०) बच्छा, गदला, दुधमुहाँ बच्चा।

डिला (सं० पु०) एक घास का नाम, मोथा, यह औषधि के काम भी आता है। [उठा हुआ कूबड़।

डिल्ला (सं० पु०) एक छन्द का नाम, बैलों के कंधे पर

डिहरी (सं० स्त्री०) अन्न रखने का बड़ा पात्र, मिट्टी का बना पात्र जिसमें अन्न रक्खा जाता है।

डींग (सं० स्त्री०) शेखी, अभिमान भरी बातें, अपनी बहादुरी बखानना, बढ़ बढ़ कर बातें करना, अपनी झूठी प्रशंसा करना। [करना।

डींगमारना (क्रि०) घमण्ड करना, अपनी बड़ाई आप

डींगहाँकना (क्रि०) अभिमान करना, अपनी प्रशंसा आप करना।

डीठ (सं० स्त्री०) दृष्टि, नज़र, आँख।

मुहा०—डीठ पड़ना = अभिलाष उत्पन्न होना, चाहना।

डीठ बाँधना=ऐसी माया या जादू करना जिसमें सामने की वस्तु ठीक ठीक न सूझै।
डीठना (क्रि०अ०) दिखाई पड़ना, प्रत्यक्ष होना, सूझना।
डीठबंध (सं० पु०) दृष्टिबन्ध, देखने की शक्ति की रोक, जादूगर, जादू टोना करने वाला।
डीठा (क्रि०) देखा, देख पड़ा (सं० पु०) नजर, दीठ।
डीठि, डीठी (सं० स्त्री०) दृष्टि, डीठ, नजर।
डीठियारा (वि०) दृष्टिवान, अच्छी आंख वाला, ताकने वाला, दर्शक।
डीन (सं०पु०) पक्षी का गमन, आकाश पथ में विचरण।
डीमडाम (सं० पु०) टीमटाम, सजावट, शृंगार, ऐंठ।
डील (सं०पु०) शरीर की लंबाई चौड़ाई, डीलडौल, कद।
डीला (सं०पु०) ढीला। [भूमि, गाँव, बस्ती, ग्राम देवता।
डीह (सं० पु०) पूर्व निवास-स्थान, पूर्व पुरुषों के रहने की
डीहा (सं० पु०) टीला।
डुक (सं० पु०) मुक्का, घूसा, मार।
डुकरवा (सं० पु०) वृद्ध, बूढ़ा, पुराना।
डुकरिया (सं० स्त्री०) वृद्धा, बुढ़िया।
डुंग (सं० पु०) टीला, पहाड़ी ऊँचा स्थान।
डुड (सं० पु०) शाखा पत्र रहित पेड़, सूखा पेड़।
डुकियाना (क्रि० स०) मारना, पीटना, घूँसा मारना।
डुगडुगाना (क्रि० स०) डुग्गी बजाना।
डुगडुगी (सं० स्त्री०) देखो "डिगडिगी"।
डुग्गी (सं० स्त्री०) एक बाजे का नाम, डौंडी।
डुण्डु (सं० पु०) सर्प विशेष, जल का साँप।
डुपट्टा (सं०पु०) चादर, दुपट्टा, कन्धे पर रखने का चादर।
डुबकी (सं० स्त्री०) गोता, पानी में स्नान करने के लिये डूबना।
मुहा०—डुबकी लगाना=छिप जाना, गायब होना।
डुबाना (क्रि०स०) बोरना, डुबोना, उजाड़ना, गोता देना।
मुहा०—नाम डुबाना=इज्जत नष्ट करना, लुटिया डुबोना=इज्जत धूल में मिलाना, प्रतिष्ठा खोना।
डुबाव (सं० पु०) अधिक जल, डूबने योग्य जल, पानी की गहराई, अगाध जल।
डुबोना (क्रि०) डुबाना, बोरना, बुड़ाना।
डुमर (सं० पु०) गूलर।
डुरियाना (क्रि०) चलाना, फिराना, घुमाना।
डुलना (क्रि० अ०) हिलना, पंखा हाँकना।
डुलाना (क्रि०) हिलाना, झुलाना, कम्पाना।
डूंगर (सं०पु०) पहाड़, छोटा पहाड़, पहाड़ी, पर्वत, टीला।
डूंडा (सं० पु०) एक सींग का बैल, हथकटा, एक हाथ वाला। [लिए गोता लगाना।
डूबना (क्रि० अ०) गोता लगाना, स्नान करने के
मुहा० डूब मरना=लज्जा के कारण मुँह छिपाना।
डूबते को तिनके का सहारा होना=संकट में पड़े हुए निस्सहाय मनुष्य के लिये थोड़ी सहायता भी बहुत होना। डूबना उतराना=सोच में पड़ जाना। जी डूबना=चित्त व्याकुल होना। नाम डूबना=प्रतिष्ठा नष्ट होना।
डूबा (सं० पु०) डुबकी, गोता।
डेउढ़ा (सं० पु०) ड्योढ़ा, एक और आधा।
डेउढ़ी (सं०स्त्री०) ड्योढ़ी, फाटक, दरवाज़ा। [जाता है।
डेग (सं० पु०) बहुत बड़ी डेकची जिसमें अर्क खींचा
डेगना (सं० पु०) टेंकुर, देखो "अलगोड़ा"।
डेठी (सं०स्त्री०) डंडी, नाल। [समान विषैला नहीं होता।
डेड़हा (सं० पु०) पानी का सांप, यह स्थल के सांपों के
डेढ़ (वि०) एक और आधा।
मुहा०—डेढ़ ईंट की मसजिद बनाना=थोड़ी शक्ति रहने पर भी अलग रहना, किसी में मिल कर कोई काम न करना। डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना=अलग रहना, किसी में मिलना नहीं।
डेढ़गत (सं० स्त्री०) एक प्रकार का नाच। [छटाँक।
डेढ़पाव (सं० पु०) एक पाव और आधा पाव, छः
डेढ़पौवा (सं० पु०) बाँट, जो डेढ़ पाव का हो, डेढ़ पाव की तौल। [इसमें डेढ़गुनी संख्या बढ़ती है।
डेढ़ा (वि०) डेउढ़ा, ड्योढ़ा, डेढ़गुना, पहाड़ा विशेष,
डेढ़ी (सं० स्त्री०) उधार देने की एक प्रथा, मूल से डेढ़गुना अधिक देने के शर्त पर उधार देना।
डेना (सं० पु०) विदेश का वास स्थान, घर, तम्बू, नाचने गाने वालों की मण्डली, कपड़े का मकान (वि०) बाँया हाथ, (डेना हाथ)।
डेरा (सं० पु०) विश्राम करना, ठहरना, प्रवास में विश्राम का स्थान।
मुहा०—डेरा डालना=ठहरना, अधिक दिनों तक रहना, रहने के लिए स्थान बनाना। डेरा उठाना=चलना, यात्रा करना।

डेंगाना (क्रि० अ०) डरना, भयभीत होना, शङ्कित होना।
डेंराहिं (क्रि०) डरते हैं, भयभीत होते हैं।
डेल (सं० स्त्री०) रबी की फ़सल के लिए जोती भूमि
डेला (सं० पु०) रोड़ा, ढेला, आंख का कोण, आंख के भीतर का सफे़द भाग जिसमें पुतली होती है, लोंदा, गोल टुकड़ा। [झांपी।
डेली (सं० स्त्री०) डलिया, बांस या तृण की बनी गोली
डेवढ़ (वि०) डेढ़,डेढ़गुना, (सं० स्त्री०) क्रमशः,लगातार, एक की समाप्ति के पहले दूसरे का प्रारम्भ।
डेवढ़ना (क्रि० अ०) बढ़ना, ड्योढ़ा बड़ा होना, आग पर रोटी का फूलना।
डेवढ़ा (वि०) ड्योढ़ा, डेढ़ गुना। [दरवाज़ा।
डेवढ़ी (सं० स्त्री०) पौरी, द्वार के पास की भूमि, चौखट,
डेहरी (सं० स्त्री०) लतमर्दा, दरवाज़े के नीचे की उठी हुई ज़मीन, दहलीज़, डेवढ़ी, दरवाज़ा।
डेंगरा (सं० पु०) एक प्रकार का लम्बा खूंटा, जो दुष्ट गाय आदि के गले में उन्हें दण्ड देने के लिए बाँधा जाता है। [साधन।
डैना (सं० पु०) पंख, पर, पक्ष, पक्षियों के उड़ने का
डोंगर (सं० पु०) डूँगर, पहाड़ी, टीला।
डोंगा (सं० स्त्री०) नाव, छोटी नाव।
डोंगी (सं० स्त्री०) छोटी नाव, डोंगा।
डोंड़ा (सं० पु०) कोष, फल का कोष जिसमें दाने आदि रहते हैं, बड़ी इलायची।
डोंड़ी (सं० स्त्री०) पोस्ता की फली, टोंटी, उभरा मुँह।
डोंर (सं० पु०) सर्प विशेष। [है।
डोई (सं० स्त्री०) करछी, जिसकी डंडी लकड़ी की होती
डोकना (क्रि०) कै करना।
डोकरा (सं० पु०) वृद्ध, असमर्थ मनुष्य, शक्तिहीन।
डोकरिया (सं० स्त्री०) वृद्धा, बूढ़ी स्त्री।
डोकरी (सं० स्त्री०) वृद्धा स्त्री।
डोका (सं० पु०) डलिया, काठ या सींक आदि की छोटी डलिया जिसमें चबेना रख कर चबाया जाता है।
डोकिया (सं० स्त्री०) डोका, पात्र विशेष।
डोकी (सं० स्त्री०) डोका, डोकिया।
डोड़हा (सं० पु०) पानी का साँप
डोडी (सं० स्त्री०) लता विशेष।
डोब (सं० पु०) डुबकी, बुड़की।
डोबदेना (क्रि०) रङ्ग देना, रंग चढ़ाना, गोता देना।
डोबा (सं० पु०) गोता, डूबा।
डोम (सं० पु०) जाति विशेष, एक अस्पृश्य जाति ये बाँस का काम करते हैं, नाचना गाना भी इनका काम है।
डोमड़ा (सं० पु०) डोम, अस्पृश्य जाति।
डोमनी (सं० पु०) डोम जाति की स्त्री।
डोमिन (सं० स्त्री०) डोमनी, डोम जाति की स्त्री।
डोर (सं० स्त्री०) सूत, रस्सी, पानी खींचने की रस्सी, डोरा।
मुहा०—डोर बढ़ना=आयु का बढ़ना, ज़िन्दगी बढ़ना। डोर होना=मुग्ध होना, लट्टू होना। [सूत।
डोरक (सं० पु०) सूत, तागा, धागा, रक्षा-बन्धन का
डोरा (सं० पु०) सूत, सूत्र, तागा, धागा, कपड़े बनाने का साधन।
मुहा०—डोरा डालना=वश करना, प्रेम से वश करना।
डोरिया (सं० पु०) वस्त्र विशेष, एक प्रकार का कपड़ा।
डोरियाना (क्रि० स०) डोर से बाँधना, डोर में बाँध कर ले चलना, केवल लगाम से घोड़े का ले जाना।
डोरी (सं० स्त्री०) रस्सी, पानी खींचने का डोर।
मुहा०—डोरी खींचना=आकर्षण करना, स्मरण करके बुलाना। डोरी छोड़ना—उपेक्षा करना, असावधान होना। [पात्र, जिससे पानी खींचा जाता है।
डोल (सं० पु०) लोहे पीतल आदि का खुले मुँह का एक
डोलची (सं० स्त्री०) छोटा डोल, फूल डाली, फूल रखने की डलिया।
डोलडाल (सं० पु०) पाखाने जाना, चल फिर।
डोलत (क्रि०) चलता है, फिरता है, हिलता है।
डोलना (क्रि० अ०) हिलना, चलना, फिरना, कम्पित होना, घूमना। [जिसे आदमी ले चलते हैं।
डोला (सं० पु०) मियाना, पालकी, एक प्रकार की सवारी
मुहा० डोला देना=उपहार में अपनी कन्या किसी के यहाँ भेजना, मुसलमानी ज़माने में राजपूताने के कई राजा अपनी कन्याएँ बादशाहों के यहाँ भेजते थे। इस प्रथा का नाम डोला देना है। कन्या को वर के घर ले जाकर ब्याह करना।
डोलाना (क्रि० स०) हिलाना, चलाना, कम्पित करना, चंचल करना, घुमाना, बेचैन करना, तंग करना, व्याकुल करना, पंखे के समान हिलाना।

डोलायन्त्र (सं० पु०) औषधि तैयार करने का एक यन्त्र।
डोली (सं० स्त्री०) डोला, पालकी, स्त्रियों के बैठने का छोटा डोला।
डौंगा (सं०पु०) ऊँचा आसन, मंच, मचान।
डौंड़ी (सं० स्त्री०) ढिंढोरा, घोषणा।
मुहा०—डौंड़ी देना=प्रचारित करना, घोषणा सुनाना। डौंड़ी बजना=दुहाई फिरना, सब को जनाने के लिए राजकीय सूचना देना, मुनादी करना।
डौंढ़ी (सं० स्त्री०) द्वार, दरवाजा।
डौंरू (सं० पु०) वाद्य विशेष, डमरू।
डौल (सं० पु०) ढांचा, रूपरेख, प्रारम्भिक ढाँचा
मुहा०—डौलडाल=अवस्था, तौर तरीक़ा, दशा, हालत। डौल पर लाना=अनुकूल करना, वश में करना।
डौलडाल (सं० पु०) उपाय, प्रयत्न, हालत, दशा।
डौलदार (वि०) डौल डौल वाला, सुन्दर, सुरूप।
डौलना (क्रि० स०) डौलदार बनाना, सुन्दर बनाना, ढाँचा तैयार करना।
ड्योढ़ा (सं० पु०) एक और आधा।
ड्योढ़ी (सं० स्त्री०) दरवाज़ा, फाटक, दरवाज़े के पास का चबूतरा जिस पर दरबान बैठते हैं।
ड्योढ़ीदार (सं० पु०) द्वार-रक्षक, दरबान, द्वार की रक्षा करने वाला सिपाही।
ड्योढ़ीवान (सं० पु०) ड्योढ़ीदार, दरबान।

ढ

ढ—टवर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। (सं० पु०) कुत्ते की पूँछ, ध्वनि, टं टं शब्द, साँप, ढाँख, बड़ा ढोल।
ढँकन (सं० पु०) ढकना, ढक्कन, ढाँकने की वस्तु।
ढंख (सं० पु०) पलास का वृक्ष, ढाक।
ढंग (सं० पु०) रीति, शैली, प्रणाली, ढाँचा, ढब, रीति, तौर, तरीका, बनावट, निर्माण।
मुहा०—ढंग पर चलना=उचित मार्ग का अवलंबन करना, अनुकूल चलना, सीधे राह से चलना। ढंग बताना=बाहरी दिखावा करना, बनावटी बातें बनाना, केवल शिष्टाचार करना।
ढँगलाना (क्रि० स०) लुढ़काना, ढलुई ऊँची जगह से किसी चीज़ को नीचे गिराना।
ढँगिया (वि०) ढंगी, चतुर, मौक़ा साधने वाला, छल कपट करने वाला।
ढंगी (वि०) देखो "ढंगिया"।
ढँढोर (सं० पु०) ज्वाला, आग की धधक, लपट, एक प्रकार का काले मुँह का बानर, लंगूर।
ढँढोरना (क्रि० स०) ढूँढ़ना, खोजना, टटोलना, पानी में गिरी किसी वस्तु के ढूँढ़ने के समय इसका प्रयोग होता है।
ढँढोरा (सं० पु०) डुग्गी फिरना, घोषणा करना, कोई बात सूचित करना, राजाज्ञा प्रचारित करना।
ढँढोरिया (वि०) ढँढोरा पीटने वाली एक नीच जाति।
ढँपना (क्रि० स०) ढांकना, तोपना, किसी पात्र का मुँह बन्द करना, बुराइयों को छिपाना, बुराइयों पर परदा डालना, त्रुटि छिपाना, छिपना, स्वयं छिप जाना।
ढई देना (क्रि० अ०) धरना देना, सत्याग्रह के द्वारा कोई काम करना।
ढक (सं० पु०) तौल विशेष।
ढकई (वि०) ढाके की चीज़, ढाके की बनी वस्तु, ढाके की मलमल, एक तरह का केला।
ढकना (सं० पु०) ढाकने की वस्तु, ढक्कन, (क्रि० अ०) दिखाई न देना, छिपना।
ढकनी (सं० स्त्री०) मिट्टी की परई जो बर्तनों के मुँह ढाँकने के काम आती है, ढक्कन, छोटा ढकना।
ढका (सं० पु०) बाट विशेष, एक प्रकार की तौल।
ढकार (सं०पु०) डकार।
ढकेल (सं० पु०) धक्का, ठेल।
ढकेलना (क्रि० स०) आगे बढ़ाने के लिए धक्का देना।
ढकेला ढकेली (सं०स्त्री०) धकाधुकी, ठेलाठेल, रेलापेल।
ढकेलू (सं० पु०) धक्का देने वाला।
ढकोसना (क्रि० स०) एक बारगी पीना, बेपरमान पीना, अधिक पीना।
ढकोसला (सं० पु०) दम्भ, झूठा बनाव, बनावटी आचार व्यवहार, प्रतिष्ठा पाने के लिये कृत्रिम आचरण, कपट जाल।
ढक्कन (सं० पु०) ढकना, ढाँकने की वस्तु।

ढक्का (सं० पु०) नगारा, भेरी, दुन्दुभी ।
ढक्कारी (सं० स्त्री०) देवी विशेष, दुर्गा का एक नाम ।
ढगण (सं० पु०) छन्द शास्त्र का एक गण जो तीन मात्राओं का होता है । [सहन ।
ढङ्ग (सं० पु०) रीति, प्रकार, चाल चलन, लक्षण, रहन
ढचर (सं० पु०) ढाँचा, खाका, पूर्व रूप, किसी वस्तु के बनाने का ढाँचा । [लगाम ।
ढटिया (सं० स्त्री०) बागडोर, घोड़े की एक प्रकार की
ढटींगड़ (सं० पु०) बेडौल, बेढंगा, मुस्टंडा, निर्गुणी ।
ढट्ठा (सं० पु०) डंठल, ज्वार जोन्हरी आदि का सूखा डंठल, मुरेठा जो सिर से डाढ़ी तक बांधा जाता है ।
ढट्ठी (सं० स्त्री०) एक वस्त्र जिससे डाढ़ी बांधी जाती है ।
ढड्ढा (सं० पु०) बहुत बड़ा, बेढंगा, लम्बा ढाँचा, आडम्बर, दिखावट का सामान । [चीज़ का लुढ़कना ।
ढनगनाना (क्रि० अ०) लुढ़कना, ढुलकना, किसी छोटी
ढनगनी (सं० स्त्री०) लुढ़की, गिरगट ।
ढपढपाना (क्रि०) ढोल बजाना, ढोलक पीटना, बिना ताल के ढोलक बजाना । [वस्तु ।
ढपना (सं० पु०) ढक्कन, ढकना, ढाँकने का बर्तन या
ढपला (सं० पु०) डफली, वाद्य विशेष ।
ढपली (सं० स्त्री०) डफली, छोटा डफ ।
ढप्पू (वि०) बहुत बड़ा ।
ढफ (सं० पु०) बड़ी खँजरी ।
ढब (सं० पु०) ढंग, रीति, तरीक़ा, भांति, कार्य करने की रीति, किसी वस्तु की बनावट, गढ़न ।
ढबरा (वि०) कलुष,गंदला, मैला, मिट्टी मिला हुआ जल।
ढबीला(वि०)चालाक,चतुर, दर्शनीय,सुगठित, ढब वाला।
ढबुआ (सं० पु०) पैसा, गांजरशाही या गोरखपुरी पैसा, मचान के ऊपर का छप्पर ।
ढमढम (सं०पु०) शब्द विशेष, ढोल या नगारे का शब्द ।
ढमलाना (क्रि० स०) लुढ़काना, गिराना ।
ढयना (क्रि० अ०) गिरना, मकान आदि का गिरना ।
ढरक (सं० स्त्री०) बहाव, लुढ़काव ।
ढरकना (क्रि० अ०) गिरना, पानी आदि द्रव पदार्थों का गिरना, ढलना, बहना ।
ढरका (सं० पु०) आँख का एक रोग, बाँस का एक पात्र जिसमें बैलों को विशेष कर बछड़ों को सतुआ मट्टा आदि पिलाते हैं ।
ढरकाना (क्रि० स०) गिराना, पानी आदि का गिराना, बहाना ।
ढरनि (सं० स्त्री०) गिराव, पड़ाव, हिलने डोलने की क्रिया, चित्त की प्रवृत्ति । [ढलना, झुकना ।
ढरहरना (क्रि० अ०) हटना, खसकना, दूर हटना,
ढरहरा (सं० पु०) ढालू ज़मीन । [स्वभाव, अभ्यास ।
ढर्रा (सं० पु०) ढंग, मार्ग, रास्ता, कार्य प्रणाली, आदत,
ढर्री (सं० स्त्री०) ढली, लुढ़की ।
ढलक (सं० स्त्री०) बहाव, लुढ़कन, फिसलन ।
ढलकना (क्रि० अ०) ढरना, बहना, गिरना, पानी आदि का गिरना । [होना ।
मुहा०—ढरक जाना = गिर जाना, बह जाना, सूजन कम
ढलका (सं०पु०)आँख का वह रोग जिसमें पानी गिरता है।
ढलकाना (क्रि० स०) ढलकना का प्रेरणार्थक रूप, गिराना, बहाना ।
ढलना (क्रि० अ०) गिरना, बहना, पानी आदि का अपने आप बह जाना, उतरना, दिन का ढलना ।
मुहा०—जवानी ढलना = युवावस्था का जाता रहना ।
ढल पड़ना = प्रसन्न होना, अपने अनुकूल होना ।
ढलमलाना (क्रि०) चंचल होना, काँपना, डगमगाना ।
ढलवां (सं० पु०) ढाल कर बनाया बर्तन, धातु पिघला कर साँचे में ढाल कर बनाया बर्तन । [काम ।
ढलाई (सं० स्त्री०) ढालने का काम, साँचे में ढालने का
ढलाना (क्रि० स०) ढलवाना, ढालने के लिए कहना, गिराना, बहाना, बर्तन ढलवाना ।
ढलुआ (वि०) उतार, नीचा, ढालू, लुढ़काव । [वाला ।
ढलैत (सं० पु०) वीर, अस्त्रधारी, ढाल तलवार बाँधने
ढवाना (क्रि०) ढहाना, गिरवाना, पड़वाना, तुड़वाना ।
ढहना (क्रि० अ०) मकान आदि का गिरना, नष्ट होना, गिर पड़ना ।
ढहरी (सं० स्त्री०) दरवाज़ा, डेहरी ।
ढहवाना (क्रि० स०) ढहाना, मकान आदि का गिराना, तुड़वाना, नष्ट कराना ।
ढहाए (क्रि०) गिराये, गिरा दिये ।
ढहाना (क्रि० स०) मकान आदि का तोड़ना ।
ढहावहि (क्रि०) गिरवाते हैं, उजड़वाते हैं, तुड़वाते हैं ।
ढाँकना (क्रि० स०) ढक्कन लगाना, छिपाना, ढक्कन से बन्द करना ।

ढाँकी (क्रि०) तोपी, ढाँक दी, छिपा दी।
ढाँग (सं० स्त्री०) कन्दला, शिखर, पहाड़ की चोटी।
ढाँचा (सं० पु०) ढंग, ढब, किसी बनायी जाने वाली वस्तु का पूर्व रूप।
मुहा०—ढाँचा खड़ा करना=बनाना, स्वरूप निश्चय करना, बनाई जाने वाली वस्तु का रूप नियत करना।
ढांपना (क्रि०स०) छिपाना, ढाँकना, किसी की त्रुटि छिपाना।
ढांसना (क्रि० स०) खांसना, खोंखना।
ढाँसा (सं०पु०) दोष, कलंक, अपवाद, खांसी की ठसक।
ढाई (वि०) अढ़ाई, दो और आधा।
ढाक (सं० पु०) वृक्ष विशेष, पलास का पेड़।
मुहा०—ढाक के तीन पात=सदा एक रूप में रहना, सदा दुःख भोगना।
ढाटा (सं० पु०) एक प्रकार का कपड़ा जो दाढ़ी बांधने के काम में आता है।
ढाठा (सं०स्त्री०) घोड़े का मुंह बांधने की रस्सी, कसन।
ढाड़ (सं० स्त्री०) चीख, चिंघाड़।
ढाढ़ना (क्रि० स०) डाढ़ना, जलाना, आग लगाना।
ढाढ़स (सं०पु०) धैर्य, विपत्ति के समय चित्त की स्थिरता, आश्वासन।
मुहा०—ढाढस देना=धैर्य देना, भरोसा देना। ढाढस बंधाना=साहस देना, शान्ति धराना, धैर्य रखने का उपदेश देना।
ढाढ़िन (सं०स्त्री०) नाचने गाने वाली स्त्री, ढाढ़ी की स्त्री।
ढाढ़ी (सं० पु०) एक जाति, इस जाति के लोग नाचने गाने का काम करते हैं, ये प्रायः नीच जाति के होते हैं।
ढाढ़ी लीला (सं० स्त्री०) एक खेल, भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीला का अभिनय।
ढान (सं० पु०) हाता, घेरा, बाड़ा।
ढाना (क्रि० स०) ढाहना, गिराना, मकान आदि का नष्ट करना।
ढापना (क्रि०स०) ढाँपना, ढाँकना, बन्द करना, छिपाना।
ढाबर (सं० पु०) मटमैला पानी, गंदला पानी, कीचड़ मिला हुआ पानी।
ढाबा (सं० पु०) ओसारा, ओलती, परछत्ती, बरामडा, भोजनाश्रम, मारवाड़ी लोग भोजन की दूकान को ढाबा कहते हैं
ढामक (सं० पु०) ढोल आदि बाजे का शब्द, ढोल।
ढार (सं० पु०) भांति, तरीका, रीति, भेद, प्रकार, ढाल, ढलुई ज़मीन जो नीचे से क्रमशः ऊपर ऊँची होती गयी हो। ढांचा, ढंग, बनावट, गठन, गढ़न।
ढारना (क्रि० स०) पानी गिराना, एक बर्तन से दूसरे बर्तन में पानी डालना।
ढारस (सं० पु०) आश्वासन, ढाढ़स।
ढारी (सं० स्त्री०) ढार, ढाल।
ढाल (सं० स्त्री०) तलवार के वार रोकने का अस्त्र, यह चमड़े धातु तथा गैंडे की हड्डियों का बनता है। आवरण, आच्छादन, रोक, रुकावट, ढलुई ज़मीन, ढालवां।
ढालना (क्रि० स०) गिराना, एक बर्तन से दूसरे बर्तन में पानी लेना।
मुहा०—बोतल ढालना=खूब शराब पीना।
ढालवाँ (सं० पु०) वह ज़मीन जो नीचे से क्रमशः ऊपर की ओर ऊँची होती गयी हो।
ढालिया (सं० पु०) एक जाति जो सांचे में ढाल कर बर्तन बनाता है।
ढालू (सं० पु०) ढालवाँ।
ढास (सं० पु०) ठग, डाकू, विश्वासघाती।
ढासना (क्रि० अ०) खांसना, सूखी खोंखी खोखना, (सं० पु०) तकिया, उढ़कन।
ढाहति (क्रि०) ढाहती है, गिराती है।
ढाहना (क्रि० स०) ढाना, मकान आदि का तोड़ना।
ढाहा (सं० पु०) करार, कगार, नदी का किनारा।
ढिँढोरना (क्रि० स०) टटोलना, भरना, मथन करना, हाथ डाल कर ढूँढ़ना।
ढिँढोरा (सं० पु०) डुगडुगी, मुनादी वह ढोल जो राजाज्ञा प्रचारित करने के लिए या और किसी प्रकार की सूचना देने के लिए बजाया जाता है।
ढिग (अव्य०) पास, समीप, निकट, नियरे।
ढिठाई (सं०स्त्री०) धृष्टता, अनुचित साहस, बड़ों के सामने अविनय प्रकाशित करना।
ढिडिम (सं० पु०) टिटिहरी पक्षी, टिट्टिभ।
ढिबका (सं० पु०) गुमड़ा, गिल्टी, फोड़े का गड्ढा।
ढिबरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की डिबिया जिसमें मिट्टी का तेल रख कर जलाते हैं, पेंच के सिरे पर रोक के लिए लगाई जाने वाली अंगूठी, चरखे में लगाई जाने वाली चमड़े या मूँज की चकती।
ढिमका (सर्व०) अमुक, अमका, फ़लाँ, फ़लाना।
ढिमढिमी (सं०स्त्री०) डमरू, खंजरी आदि बाजों का शब्द।
ढिलाई (सं०स्त्री०) शिथिलता, कसा न रहना, विलंब, सुस्ती।

ढिलाना (क्रि० स०) शिथिल करना, ढील करना।
ढिल्लड़ (वि०) सुस्त, आलसी। [प्रवृत्त होना, झुकना।
ढिसरना (क्रि० अ०) सरकना, खसकना, फिसलाना,
ढींगर (सं० पु०) उपपति, जार।
ढींढ (सं० पु०) बड़ा पेट, निकला हुआ बड़ा पेट।
ढीट (सं० स्त्री०) लकीर, रेखा।
ढीठ (सं० स्त्री०) धृष्ट, अविनयी, बड़ों का अदब न करने वाला, कुमार्गी, बुरे काम करने वाला, साहसी, निर्भय, न डरने वाला।
ढीठा (सं० पु०) धृष्ट, मगरा।
ढीढ़स (सं० पु०) एक प्रकार का शाक, ढिढा। [होना।
ढील (सं० स्त्री०) शिथिलता, किसी कार्य में उत्साह न
मुहा०—ढील देना = उपेक्षा करना, ध्यान न देना।
ढीलना (क्रि० स०) ढीला करना, शिथिल करना, छोड़ देना, उपेक्षा करना, ध्यान न देना, विलम्ब करना।
ढीला (वि०) जो तना या कसा न हो, छुटा हुआ, शिथिल, असावधान, अचेत। [कालक्षेप।
ढीलाई (सं० स्त्री०) शिथिलता, छुटकारा, मोचन, विलम्ब,
ढीहा (सं० पु०) टीला, डूँगर, पहाड़।
ढुँढवाना (क्रि० स०) ढुंढ़ाना, खोजाना, तलाश करना, पता लगाना।
ढुंढि (सं० पु०) गणेश, विनायक, विघ्नराज।
ढुकी (सं० स्त्री०) ताक, पीछा करना, किसी के चरित्र का गुप्त अनुसन्धान करना।
ढुकना (क्रि० अ०) भीतर जाना, भीतर प्रवेश करना।
ढुनमुनिया (सं० स्त्री०) लड़कों का एक खेल, इसमें लड़के लुढ़कते हैं, कजली गाने का एक ढंग जिसमें स्त्रियाँ घेरा बाँध कर गाती हैं।
ढुरकना (क्रि० अ०) लुढ़कना, खिसकना, गिरना पड़ना।
ढुरना (क्रि० अ०) नाचना, कबूतर आदि का चलाना, बहना, आना जाना।
ढुरहुरी (सं० स्त्री०) लुढ़कन, इधर उधर जाना।
ढुराना (क्रि० स०) हिलाना, डुलाना, नचाना, चलाना फिराना, पलना डुलाना।
ढुरी (सं० स्त्री०) पगडंडी, रास्ता।
ढुलकना (क्रि० अ०) लुढ़कना, गिरना, ढलुई ज़मीन पर गिरना, बेवश होकर नीचे की ओर आना।
ढुलकाना (क्रि० स०) गिराना, लुढ़काना, ढँगलाना।
ढुलना (क्रि० अ०) बहना, ढलना, गिर कर बहना, पानी आदि का बहना।
ढुलवाई (सं० स्त्री०) बोझा आदि ढोने की मजूरी, ढोना, ढोने का काम। [कराना।
ढुलवाना (क्रि० स०) ढोआई कराना, ढोने का काम
ढुलाई (सं० स्त्री०) ढुलवाई।
ढुलाना (क्रि०) देखो "ढुलवाना"।
ढूंढ (सं० स्त्री०) तलाश, खोज, अन्वेषण।
ढूँढ ढाँढ (क्रि०) पूँछताछ, खोज, अनुसन्धान, टोह।
ढूँढन (क्रि०) खोज, टोह, सन्धान। [पता लगाना।
ढूंढ़ना (क्रि० स०) खोजना, पता लगाना, भूली वस्तु का
ढूआ (सं० पु०) मेंड़, बांध।
ढूक (सं० पु०) ताक, ढुक्की।
ढूकना (क्रि०) पैठना, घुसना, पास आना।
ढुँढना ढाँढ़ना (क्रि०) खोजना, तलाश करना, प्रयत्न पूर्वक ढूँढना।
ढूँढार (सं० पु०) राजपूताने के अन्तर्गत एक प्रान्त विशेष, जयपुर राज्य का प्रान्त।
ढूका (सं० पु०) दस पूले घास का परिमाण, किसी की बात सुनने के लिए छिपना, छिप कर बातें सुनना।
ढूँढ़िया (सं० पु०) जैन सम्प्रदाय, इस संप्रदाय के साधु भी ढूढ़िया कहे जाते हैं। यह सम्प्रदाय श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय का अंग है (वि०) ढूँढने वाला।
ढूसर (सं० पु०) बनियों की एक जाति।
ढूह (सं० पु०) टीला, भीटा, ढीह, ऊँची जगह।
ढेंक (सं० पु०) सारस पक्षी।
ढेंकली (सं० स्त्री०) पानी निकालने का एक यन्त्र, यह कुएँ में लगाया जाता है।
ढेंका (सं० पु०) धान आदि कूटने का एक यन्त्र।
ढेंकिया (सं० स्त्री०) छोटा ढेंका, एक प्रकार की सिलाई।
ढेकी (सं० स्त्री०) देखो "ढेका"।
ढेंड़स (सं० पु०) तरकारी विशेष।
ढेंडी (सं० स्त्री०) पोस्ता का फूल, कर्णभूषण विशेष
ढेढ (सं० पु०) नीच जाति विशेष, ढोंक, कौआ।
ढेंढर (सं० पु०) आँख का एक रोग, इस रोग में आंख का कोआ ऊपर की ओर निकल आता है।
ढेंढी (सं० स्त्री०) फली, कपास मटर आदि की फली।
ढेऊ (सं० पु०) लहर, ऊँची उठने वाली पानी की लहर।

ढेबुवा (सं० पु०) पैसा, गोरखपुरी या गजरशाही पैसा, पुराना पैसा।

ढेर (सं० पु०) राशि, गांज, टाल, अन्न आदि की राशि।

ढेरा (सं० पु०) रस्सी एंठने का यंत्र, चिह्न विशेष।

ढेरी (सं० स्त्री०) थोक, राशि, ढेर।

ढेलवांस (सं०स्त्री०) ढेला चलाने का रस्सी का बना एक यन्त्र, कौआ आदि के भगाने के काम में यह आता है।

ढेला (सं० पु०) ईंट पत्थर मिट्टी आदि का टुकड़ा।

ढेलाचौथ (सं० पु०) भादों शुक्ल की चतुर्थी, उस दिन चन्द्रमा के देखने से कलङ्क लगने की शङ्का होती है, अतएव कोई चन्द्रमा को नहीं देखता। यदि कोई देख ले तो उसके लिए किसी के घर में पंद्रह ढेला फेंकना प्रायश्चित है, इसी प्रायश्चित करने के लिए लोग ढेला फेंकते हैं। इसी कारण इस तिथि का नाम ढेलाचौथ पड़ गया।

ढैया (सं० पु०) अढ़ाई सेर का बाट, पहाड़ा जिसमें अढ़ाई गुना अंकों की वृद्धि होती है।

ढैया टेकर (वि०) जनशून्य, ऊजड़, शून्य, रिक्त।

ढोका (सं० पु०) पत्थर आदि का बड़ा टुकड़ा, अनगढ़ मोटा पत्थर।

ढोंग (सं० पु०) दम्भ, आडम्बर, ढकोसला, कपट व्यवहार, बनावटी आचार व्यवहार, कपटता का व्यवहार।

ढोंगधतूर (सं० पु०) छल कपट, धूर्त्तई, ठगई।

ढोंगी (सं० पु०) पाखंडी, धूर्त्त, दाम्भिक।

ढोंढ (सं०पु०) पोस्ता आदि की फलियां। [गोल भाग।

ढोंढी (सं० स्त्री०) नाभी, पेट के नीचे की ओर गहरा और

ढोक (सं० स्त्री०) प्रणाम, एक प्रकार की मछली।

ढोआ (सं० पु०) उपहार भेंट।

ढोकना (क्रि०) घूँटना, पीना।

ढोकार (सं० पु०) पत्थर का बड़ा टुकड़ा, पाँच की संख्या।

ढोटा (सं० पु०) पुत्र, बेटा, आत्मज, तनय।

ढोटी (सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री।

ढोटौना (सं० पु०) पुत्र, बेटा, ढोटा।

ढोना (क्रि०स०) बोझा ले जाना, एक स्थान से ले जाकर बोझ दूसरी जगह पहुँचाना।

ढोर (सं० पु०) पशु, बैल, गाय, भैंस आदि।

ढोरना (क्रि० स०) पानी आदि का गिराना, बहाना।

ढोरा (सं० पु०) ताजिया।

ढोरी (सं० स्त्री०) दाह, ताप।

ढोल (सं० पु०) एक प्रकार का बाजा, एक जाति, इस जाति के लोग नाचते गाते हैं।

ढोलक (सं० पु०) ढोल।

ढोलकिया (सं० पु०) ढोलक बजाने वाला।

ढोलकी (सं० स्त्री०) छोटी ढोल, ढोलक जिसे गाने वाली स्त्रियाँ बजाती हैं।

ढोलन (सं० पु०) रसिक, प्रियतम। [की स्त्री।

ढोलनी (सं० स्त्री०) पलना, बच्चों का झूला, ढोल जाति

ढोला (सं० पु०) एक प्रकार का कोड़ा।

ढोलिनी (सं० स्त्री०) ढोलिया, ढोल जाति की स्त्री, ढोल बजाने वाली स्त्री।

ढोलिया (सं० पु०) ढोल बजाने वाला।

ढोली (सं० स्त्री०) दो सौ पानों की गड्डी।

ढोलैत (सं० पु०) ढोलिया।

ढोव (सं० पु०) उपहार, वह पदार्थ जो किसी मंगल के अवसर पर राजा को भेंट देते हैं।

ढौंचा (सं० पु०) एक पहाड़ा, जिसमें साढ़े चारगुना अधिक अंक बढ़ते हैं। [ध्वनि करना।

ढौंसना (क्रि० स०) आनन्द प्रकाश करने के लिए अव्यक्त

ढौकन (सं० पु०) नजराना, घूस, उत्कोच।

ढौंरी (सं० स्त्री०) रट, धुन।

ण

ण—टवर्ग का पाँचवाँ वर्ण, मूर्द्धा से इसका उच्चारण होता है। संस्कृत के एकाक्षर कोष में इसके ये अर्थ हैं। (सं० पु०) शिव, ज्ञान, बुद्ध, दान, निर्णय

णगण (सं० पु०) छन्द शास्त्र का एक गण।

त

त—भारतीय लिपि के व्यञ्जन का १६ वाँ वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान दन्त है, यह तवर्ग का आदि अक्षर है।

तंग (सं० पु०) घोड़े पर ज़ीन कसने का तस्मा, घोड़े की पेटी, (वि०) सकेत, दुखित, कड़ा, छोटा।

मुहा०—तंग आना = घबरा जाना। तंग करना—सताना। हाथ तंग होना—धन हीन होना।

तंगदिल (फ़ा० वि०) सकुंचित हृदय, ओछे विचार वाला, अनुदार। [आपत्ति-ग्रस्त।

तंगहाल (फ़ा० वि०) दरिद्री, मुसीबत वाला, रोगयुक्त,

तंगदस्त (फ़ा० वि०) दीन, ग़रीब, दरिद्री, धन रहित, कंजूस। [मुसीबत, धनहीनता।

तंगी (फ़ा० सं० स्त्री०) न्यूनता, कमी, दरिद्रता, ग़रीबी,

तंज़ेब (सं० स्त्री०) महीन मलमल की एक जाति।

तंत (सं० पु०) धागा, तंतु, डोरा, तागा, (स्त्री०) शीघ्रता, आतुरता, तारदार सितार आदि बाजे, तन्त्रशास्त्र, लालसा, इच्छा, मर्ज़ी, आधीनता, वशता।

तंतरी (सं० पु०) तारोक्त बाजों को बजाने वाला व्यक्ति।

तंत्रमंत्र (सं० पु०) तन्त्र मंत्र, उपाय, योजना।

तंदरा (सं० स्त्री०) अवस्था विशेष, तन्द्रा। [होती है।

तंदुआ (सं० पु०) बारहमासी घास जो जङ्गल में पैदा

तंदुल (सं० पु०) तण्डुल, चावल, या चावल का पानी जो वैदिक में हितकारी समझा गया है।

तंदूर (सं० पु०) एक प्रकार का बड़ा चूल्हा, भट्ठी विशेष अथवा बाजारू दूकान जहाँ मुसलमानी खाना बनता हो। [रेशम।

तंदूरी (सं० स्त्री०) भट्ठी संबन्धी, मालदह से आने वाला

तंदेही (सं० स्त्री०) परिश्रम, ताकीद, कार्यार्थ चेतावनी, प्रयत्न।

तंवा (सं० स्त्री०) गैया, गाय, गौ।

तंबाकू (सं० पु०) एक प्रकार की गर्मी उत्पन्न करने वाली नशीली पत्तियाँ जिन्हें लोग खाया, पिया और सूँघा भी करते हैं, तमाकू, सुरती।

तंबिया (सं० स्त्री०) ताँबे की बनी हुई कटोरी या छोटा तसला या बर्तन। [दण्ड, शिक्षा।

तंबीह (सं०स्त्री०) चैतन्य करने वाली सूचना या क्रिया,

तंबू (सं० पु०) कपड़े का बना हुआ घर, डेरा, खेमा, शामियाना।

तंबूरा (सं० पु०) छोटा ढोल, तमूरा।

तंबोलिन (सं० स्त्री०) पान का व्यापार करने वाली एक जाति की स्त्री, तम्बोली की पत्नी, बरइन, बरई की स्त्री।

तंबोली (सं० पु०) बरई, पान बेचने वाला पुरुष।

तअल्लुक़ (अ० सं० पु०) सम्बन्ध, लगाव, रिश्ता, इलाक़ा।

तअल्लुक़ा (अ० सं० पु०) ज़मीदारी का वह हिस्सा जो किसी एक के आधीन हो, इलाक़ा, हद, सीमा।

तअल्लुक़ेदार (अ० सं० पु०) किसी तअल्लुक़े का स्वामी, गाँव आदि सम्पत्ति का अधिकारी।

तअस्सुब (अ० सं० पु०) पक्षपात, जो जाति या धर्म से सम्बन्ध रखता हो।

तइसा (वि०) तैसा, जैसा, वैसा।

तईं (सं० पु०) लिए।

तई (सं० स्त्री०) थाली की भाँति की कढ़ाई।

तऊ (अव्य०)तथापि, तौभी, तिस पर,जिस पर, तब भी।

तक (अव्य०) काल या सीमा सूचित करने वाली विभक्ति, (सं० स्त्री०) तकड़ा, तराजू का एक पलड़ा, पल्ला।

तक तक (सं० पु०) पशु आदि के हाँकने का शब्द।

तक़दीर (अ० सं० स्त्री०) प्रारब्ध, भाग्य, क़िस्मत, नसीब।

तकना (क्रि० स०) निगाह करना, देखना, शरण लेना।

तकरार (सं० स्त्री०) झगड़ा, लड़ाई, फ़सल समाप्ति के पश्चात् खाद डाल कर जोता जाने वाला खेत, कविता में विषय का दुहराना।

तक़रीर (अ० सं० स्त्री०) वार्त्तालाप, भाषण, गुफ़्तगू।

तकला (सं० पु०) तकुआ, टेकुआ, लोहे की वह सलाई जिसमें कुकड़ी बनती है, कलाबत्तू लपेटने का यन्त्र, जिसे टेकुरी कहते हैं।

मुहा०—तकले से बल निकलना = सीधा करना, ऐब दूर कर देना, यथोचित रूप में ला देना।

तकली (सं० स्त्री०) देखो "तकला"।

तकलीफ़ (अ० सं० स्त्री०) दुःख, आपत्ति, विपत्ति, मुसीबत ।

तकवाहा (सं० पु०) चौकीदार, पहरुआ ।

तकवाही (सं० स्त्री०) चौकीदारी, पहरा ।

तक़सीम (अ० सं० स्त्री०) बटाई, विभक्त करने की क्रिया, भाग । [या भाव ।

तकाई (सं० स्त्री०) ताकने की मजूरी, ताकने की क्रिया

तक़ाज़ा (अ० सं० पु०) माँग, तगादा, प्रेरणा ।

तकान (सं० पु०) भाव भंगी, ढब ।

तकाना (क्रि० स०) किसी के द्वारा तकाई कराना, दिखाई, किसी तरफ भगाना, भेजना ।

तक़ावी (अ० सं० स्त्री०) ज़मीदार या राज की ओर से दरिद्र कृषकों को मिली हुई आर्थिक सहायता, जो पीछे ऋण की भाँति वापिस ले ली जाती है ।

तकि (अव्य०) ताक कर, लक्ष्य कर, देखकर ।

तकिया (सं० पु०) कपड़े की बनी रुईदार थैली जिसे सिर के नीचे रख कर सोते हैं, आश्रय-स्थान, यवन साधुओं के रहने का एकान्त स्थान ।

तकीनो (सं० स्त्री०) छोटा उसीसा ।

तकुआ (सं० पु०) नोकदार सलाई, तकला ।

तकैया (सं० पु०) देखने या ताकने वाला ।

तक्र (सं० पु०) घृत रहित पतली दही, छाछ, मट्ठा ।

तक्ष (सं० पु०) वृक सुत, भरत का बड़ा पुत्र, पतला करने का काम ।

तक्षक (सं० पु०) एक नाग विशेष, जिसने परीक्षित को डसा था, एक वर्णसंकर जाति, विश्वकर्म्मा, सूत्रधार, वायु विशेष ।

तक्षशिला (सं० स्त्री०) एक प्राचीन नगर विशेष, रावलपिंडी के पास इसके ध्वंसावशेष हैं ।

तख़मीना (अ० सं० पु०) अनुमान, अटकल ।

तखरी (सं० स्त्री०) तराजू, लकड़ी, अन्नादि सामग्री तौलने का तुला ।

तख़लिया (अ० सं० पु०) एकान्त स्थान, निर्जन स्थान ।

तखान (सं०) तक्षण, बढ़ई,लकड़ी काटने वाला, खाती ।

तखिहा (वि०) दो प्रकार की आँखों वाला बैल ।

तख़्त (फ़ा० सं० पु०) बड़ी चौकी. राज्यासन, राजाओं के बैठने की जगह, सिंहासन ।

तख़्तताऊस (सं० पु०) एक बढ़िया सिंहासन, जिसे मुगल सुलतान शाहजहाँ ने बनवाया था ।

तख़्तनशीन (फ़ा०वि०) राज्याधिकार प्राप्त, सिंहासनारूढ़।

तख़्ता (सं० पु०) लकड़ी का वह चिरा हुआ भाग जिसकी लम्बाई चौड़ाई से मुटाई बहुत कम हो, पटरा, बड़ा पल्ला । [मज़बूत ।

तगड़ा (वि०) बलिष्ट, बलवान, शक्तिशाली, मोटा,

तगड़ी (सं० स्त्री०) करधनी, कटिसूत्र ।

तगण (सं० पु०) छन्द शास्त्रानुसार वह वर्ण-समूह जिसमें दो दीर्घ और एक ह्रस्व हो ।

तगना (क्रि० स०) सीना, तागा जाना, सिलाई करना ।

तगमा (सं० पु०) तमगा, सम्मान में मिला चिह्न विशेष ।

तगर (सं० पु०) एक वृक्ष विशेष या उसकी जड़ जो औषधियों के व्यवहार में लाई जाती है, मैनफल ।

तगा (सं० पु०) धागा, डोरा रुहेलखण्ड में रहने वाली एक जाति ।

तगाई (सं० स्त्री०) तागने का काम या उसकी मज़दूरी, सिलाई, या उसके परिश्रम का धन ।

तगादा (सं० पु०) देखो " तक़ाज़ा " ।

तगाना (क्रि० स०) सिलाना, दूसरे के द्वारा तागने का काम कराना, या किसी अन्य को तागने की प्रेरणा करना ।

तागा (सं० पु०) सूत, डोरा ।

तचना (क्रि० अ०) गरम होना, दुखी या दुखित होना ।

तङ्ग (सं० पु०) हैरान, चुस्त, ओछा, घोड़े की जीन की पेटी, कसन ।

तङ्का (सं० पु०) दो पैसे, टका ।

तङ्गी (सं० स्त्री०) संकीर्णता, क्लेश, ग़रीबी ।

तचा (सं० स्त्री०) चमड़ा, चर्म्म, छाल । [झुलसाना ।

तचाना (क्रि० स०) गर्म करना, तपाना, जलाना,

तज (सं० पु०) तेजपत्र, तेजपात या उसका वृक्ष, एक सुगन्धित औषधि ।

तजई (क्रि०) त्यागता है, छोड़ देता है ।

तजन (सं० पु०) त्याग या उसकी क्रिया, कोड़ा, चाबुक, पशु हाँकने का डण्डा । [सम्बन्ध तोड़ना ।

तजना (क्रि० स०) त्याग करना, त्यागना, छोड़ना,

तजरबा (सं० पु०) अनुभव, ज्ञान विशेष जो अपने साथ संघटित हो चुका हो, अनुष्ठान के बाद का ज्ञान ।

तजरुबत (सं०पु०) अनुभव, विचार,यथार्थ ज्ञान,तजरुबा ।

तजवीज़ (सं० स्त्री०) उपाय, राय, सम्मति, निर्णय, प्रबन्ध।

तजि (क्रि०) छोड़ कर, त्याग कर।

तजिये (क्रि०) छोड़िये, छोड़।

तजो (क्रि०) छोड़ कर, त्याग कर।

तज्ञ (सं०पु०) तत्ववेत्ता, आत्मज्ञानी, तत्व जानने वाला।

तट (सं० पु०) किनारा, कछार, क्षेत्र, महादेव, प्रदेश (वि०) समीप, निकट, पास।

तटस्थ (वि०) समीपवर्ती, निकट रहने वाला, निरपेक्ष संकुचित।

तटका (वि०) देखो "टटका"।

तटाक (सं० पु०) तड़ाग, तलाव।

तटिनी (सं० स्त्री०) नदी।

तटी (सं० स्त्री०) नदी तीर।

तड़ (सं० पु०) समाजिक दल, विभाग, टोली, स्थलीय शुष्कता, थप्पड़, आयोजन, अव्यक्त शब्द।

तड़क (सं० स्त्री०) टूटने की ध्वनि, चटक, खिलने के हेतु किसी चीज़ पर पड़ा हुआ चिह्न, तड़काव, दीवार से बँड़ेर तक लगाई जाने वाली लकड़ी।

तड़कना (क्रि० अ०) चटकना, टूटना।

तड़का (सं० पु०) सूर्योदय काल, सबेरा, प्रातःकाल, सुबह, छौंक, बघार, या वह वस्तु जिसका बघार दिया जाय।

तड़काना (क्रि० स०) बघार देना, छौंका देना, छौंकना, बघारना, चिढ़ाना, पत्थर आदि का तोड़ना।

तड़कीला (वि०) कट जाने वाला, तड़क जाने वाला, चटकने वाला, चमकदार, भड़कीला।

तड़के (अव्य०) सवेरे, प्रातःकाल के समय।

तड़तड़ (सं० पु०) लकड़ी आदि टूटने का शब्द।

तड़तड़ाना (क्रि० अ०) कड़कड़ाना, तड़तड़ शब्द होना, ज़ोर से शब्द होना।

तड़तड़ाहट (सं० स्त्री०) कड़कड़ाने की क्रिया या भाव।

तड़प (सं० स्त्री०) चमक, झपट, भड़क, कड़क।

तड़पड़ा (सं० पु०) वृष्टि गिरने का शब्द, पानी बरसने का शब्द।

तड़पना (क्रि० अ०) वेदना के कारण व्याकुल होना, घबड़ाना, फड़फड़ाना, तलमलाना, हाथ पैर पटकना, छटपटाना।

तड़पवाना (क्रि० स०) तड़पाने की क्रिया दूसरे से कराना।

तड़पाना (क्रि० स०) वेदना पहुंचाकर घबड़ा देना, व्याकुल करना, ऐसा व्यवहार करना जो दूसरे को गर्जने के लिए मजबूर होना पड़े।

तड़पीला (वि०) प्रभावशाली, फुर्तीला, चटपटिया।

तड़फ (सं० स्त्री०) व्याकुलता, बेचैनी।

तड़फड़ाना (क्रि० अ०) देखो "तड़पना"।

तड़फड़ाहट (सं० स्त्री०) छटपटाहट, धड़क, तड़क।

तड़फड़ी (सं०स्त्री०) छटपटी, धुकधुकी, शङ्का से छटपटी।

तड़फना (क्रि०) तड़फड़ाना, व्याकुल होना, छटपटाना।

तड़फाना (क्रि०) तड़पाना, व्याकुल करना, उद्विग्न करना।

तड़बंदी (सं० स्त्री०) दलबन्दी, पक्ष बनाना, पृथक् समाज एकत्रित करना।

तड़ा (सं० पु०) टापू, उपद्वीप, दोआब।

तड़ाक (सं० स्त्री०) शीघ्र, तुरन्त, भड़कदार।

तड़ाकपड़ाक (अव्य०) बहुत जल्दी, अति शीघ्र, अत्यन्त शीघ्रता से।

तड़ाका (सं० पु०) ज़ोर से मारने या टूटने की आवाज़, तड़ शब्द की ध्वनि, (क्रि० वि०) शीघ्र, झटपट, चटपट, तुरन्त, त्वरित।

तड़ाकातीर (सं०पु०) मारने का शब्द, टूटने की ध्वनि।

तड़ाग (सं०पु०) ताल, तलाव, तालाब, सरोवर, पोखर, पुष्कर।

तड़ाघात (सं०पु०)ऊपर उठे हुए हस्ति शुण्ड का आघात।

तड़ातड़ (वि०) जल्दी जल्दी, तड़ातड़ शब्द के साथ, शीघ्रता से।

तड़ाना (क्रि० स०) दिखाना, झँपाना, तड़ाने में दूसरे को शामिल करना।

तड़ाया (सं० पु०) छैलापन, चटक मटक, तड़क भड़क।

तड़ावा (सं०स्त्री०) अभिमान, तड़क भड़क, छल, कपट।

तड़ित (सं० स्त्री०) चपला, बिजली, विद्युत।

तड़ितकुमार (सं० पु०) जैनियों का एक राजकुमार।

तड़ितपति (सं० पु०) बादल।

तड़ितप्रभा (सं० स्त्री०) कार्त्तिकेय की एक मात्रिका।

तड़ितवान् (सं० पु०) बादल, नागरमोथा।

तड़ितसमाचार (सं० पु०) बिजुली के द्वारा समाचार भेजना।

तड़िया (सं० स्त्री०) समुद्र तट का पवन।

तड़िल्लता (सं० स्त्री०) विद्युल्लता, बिजुली।

तड़ी (सं० स्त्री०) हलका थप्पड़, चपत, धौल, कपट, धोखे से मारने की क्रिया, बहाना, हीला ।

तण्डु (सं०पु०)शिव का द्वारपाल,कर्त्तव्य कर्मों का उपदेशक

तण्डुक (सं० पु०) खंजन पक्षी,खंडलीच, भारद्वाज पक्षी, धरन, धन्न ।

तण्डुल (सं० पु०) चावल, छिलका रहित धान,चाउर ।

तण्डुलिया (सं० स्त्री०) चावल की बनाई सामग्री ।

तत (सं० पु०) वायु, बिस्तार, पिता, पुत्र, बाजा जो तारों से बजे ।

ततछन (अव्य०) तत्क्षण, उसी समय, तत्काल ।

ततताथेई (सं० स्त्री०) नाच की गति, नृत्य की बोली ।

ततबीर (सं० स्त्री०) युक्ति, तदबीर ।

ततरी (सं० स्त्री०) अठखेलन, चपला युवती, फलदार वृक्ष विशेष । [जाति ।

ततवा (सं०पु०) जाति विशेष, कपड़ा बिनने वाली हिन्दू

ततहरा (सं०पु०) गर्म करने का हंडा ।

तताई (सं० स्त्री०) गरमाही, तप्त होने की क्रिया या भाव, गरमाहट, गर्मी, ताप ।

तताना (क्रि०) गरम करना, तपाना, सेंकना ।

ततराना (क्रि० अ०) गरम जल से धोना, धार देकर धोना, ततेरा देकर धोना ।

ततेड़ा (सं० पु०) पानी आदि गर्म करने का पात्र, हंड ।

ततैया (सं०स्त्री०) एक ज़हरीला उड़ने वाला कीड़ा, बर्रे, भिड़, अधिक कड़ुवी मिर्च, (वि०) तेज, तीव्र, फुरतीला, होशियार, चञ्चल, चालाक ।

तत् (अव्य०)वह,वही,ब्रह्म का विशेषण,प्रसिद्धार्थक वायु ।

तत्कन्द (सं० पु०) अदरक, वाराही कन्द । [हुआ ।

तत्कर्तृक (वि०) उसका बनाया, उसके द्वारा बनाया

तत्कर्म (सं०पु०) वह कर्म, जाना हुआ कार्य, वही कर्म ।

तत्कार्य (सं० पु०) वह कार्य, सो काम ।

तत्काल (वि०) अभी, फौरन, शीघ्र, तुरन्त, उसी समय, उसी क्षण ।

तत्कालिक (वि०) उसी समय का ।

तत्कालीन (वि०) उसी काल या समय का ।

तत्कालोत्पन्न (वि०)उस समय का उत्पन्न ।

तत्कृत (वि०) उसका बनाया, उसके द्वारा बनाया हुआ ।

तत्क्षण (वि०) देखो " तत्काल " ।

तत्तुल्य (सं० पु०)उसके समान,उसके बराबर ।

तत्ता (वि०) तप्त, जलता, गरम । [बहलाव ।

तत्ताथंबो (सं० पु०) धीरज, दिलासा, बीचबिचाव,

तत्व (सं० पु०) दरअसल, असलियत, वास्तविक स्थिति, यथार्थता, जगत का मुख्य कारण, पञ्चभूत, परब्रह्म, सार, मतलब, अर्थ ।

तत्वकारक (सं०पु०) यथार्थ वितर्क करने वाला, पंडित ।

तत्वज्ञ (सं० पु०) दार्शनिक, ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान रखने वाला, तत्वों को पहिचानने वाला, ज्ञानी, तत्वज्ञाता । [ब्रह्मज्ञान कहते हैं ।

तत्वज्ञान (सं० पु०) वास्तविक या मूल ज्ञान जिसे

तत्वज्ञाता (सं० पु०) देखो " तत्वज्ञ " ।

तत्वदर्शी (सं० पु०) जिसे तत्वों का ज्ञान हो, रैवतमनु के पुत्र का नाम ।

तत्ववादी (सं० पु०) तत्ववाद का जानने वाला और तत्समान भाषण करने वाला, यथार्थ स्पष्ट बात कहने वाला ।

तत्वविद्या (सं० स्त्री०) ब्रह्मज्ञान, दर्शनशास्त्री विद्या ।

तत्ववेत्ता (सं० पु०) दार्शनिक, तत्वज्ञाता, ज्ञानी, तत्वज्ञ । [पड़ताल ।

तत्वावधान (सं० पु०) निरीक्षण, देख भाल, जाँच

तत्वावधानक (सं० पु०) होशियारी करने वाला, निरीक्षक, देखरेख कर्ता, देख भाल करने वाला ।

तत्वावधायक (सं० पु०) रक्षक, निरीक्षक, रखवाली करने वाला ।

तत्वावधायकता (सं० स्त्री०) अभिभावकता, सहायता ।

तत्पर (वि०) कटिबद्ध, होशियार, तय्यार, उद्यत, निपुण, चतुर ।

तत्परायण (वि०) उसके अनुरक्त, उसके अनुवर्ती ।

तत्पुरुष (सं० पु०) समास विशेष, कल्प विशेष, एक रुद्र, परमात्मा, देव, ईश्वर, ब्रह्म ।

तत्फल (सं० पु०) पालू वृक्ष, जामुन वृक्ष, श्वेत कमल ।

तत्र (क्रि० वि०) वहाँ, उस स्थल पर, उस ठाँव पर, उस जगह ।

तत्रत्य (वि०) उस स्थान का, उस स्थान सम्बन्धी ।

तत्रभवता (सं० स्त्री०) आर्या, माननीया, पूजनीया, पूज्य स्त्री का सम्बोधन । [श्रेष्ठ

तत्रभवान (सं० पु०) पूज्यवर्य, श्रद्धालु, मान्य, उत्तम,

तत्रापि (अव्य०) तब भी, तौभी ।

तत्सम् (सं० पु०) वह शब्द जो हिन्दी भाषा में संस्कृत के समान व्यवहार होता हो ; जैसे—स्वरूप, दया ब्रह्म इत्यादि ।
तथा (अव्य०) वैसे, और, उस प्रकार, इस भाँति, इसी तरह, (सं० पु०) अन्त, सीमा, हद, निश्चय, ठीक, सामान्य, समानता, (स्त्री०) तत्त्व, सत्य, सच ।
तथागत (सं० पु०) महात्मा बुद्ध देव का नाम है, जिन, जैन ।
तथाच (अव्य०) जैसे ।
तथापि (अव्य०) तौभी, तब भी ।
तथास्तु (अव्य०) वैसाही, वैसाही हो ।
तथैव (अव्य०) वैसाही, उसी प्रकार, उसी भाँति ।
तथ्य (सं० पु०) सत्यता, यथार्थता, तत्त्वार्थ [वाला ।
तथ्यवादी (वि०) सत्यवक्ता, ज्ञानी, यथार्थ भाषण करने
तत्थ्यानुसंधान (सं० पु०) सत्य का अनुसंधान, यथार्थ की जांच करना ।
तद् (वि०) तत, वह, सो ।
तदंश (सं० पु०) वह अंश, उसका अंश ।
तदकरण (सं० पु०) वैसा नहीं, उसको नहीं करना ।
तदतिपात (सं० पु०) उसका अतिक्रम करना, उल्लङ्घन करना ।
तदधिक (वि०) उसके अतिरिक्त, उससे अधिक ।
तदनन्तर (वि०) तिसके बाद, उसके पश्चात्, उसके उपरान्त ।
तदनु (अव्य०)उसके बाद,उसके अनन्तर । [चलनेवाला ।
तदनुग (वि०) उसके पीछे चलने वाला, उसके पश्चात्
तदनुगत (वि०) उसका अनुगत, उसका अनुवर्ती ।
तदनुयायी (वि०) उसका अनुगामी । [भाँति ।
तदनुरूप (वि०) तत्समान, उसी प्रकार, वैसाही, उसी
तदनुसार (वि०) उसके अनुकूल,उसके समान,तदनुरूप ।
तदन्त (अव्य०) शेष, सीमा, अवधि ।
तदन्तः (अव्य०) उसके मध्य, उसके अभ्यन्तर ।
तदन्तःपाति (वि०) तन्मध्यवर्ती, उसके बीच में का ।
तदपि (अव्य०) तिस पर भी, तौभी, तब भी ।
तदबीर (सं० स्त्री०) सफलता का साधन, तरकीब, उपाय, प्रयत्न, इलाज । [अभिप्राय ।
तदर्थ (अव्य०) तन्निमित्त, उस कारण । (वि०) वह
तदवस्थ (वि०) उसी प्रकार की अवस्था को प्राप्त, एक प्रकार की अवस्था वाले ।
तदवधि (अव्य०) उस समय से, उसी समय से ।
तदा (अव्य०) उस समय, उस काल, तब ।
तदाकार (वि०) वैसा ही, तन्मय, तद्रूप ।
तदात्व (सं० पु०) वह काल, उस समय ।
तदादि (अव्य०) तब से, उस समय से ।
तदानीम (अव्य०) उस समय, उस काल ।
तदीय (सर्व०) तत्सम्बन्धी, उसका ।
तदुक्ति (सं० स्त्री०) उसका वचन, उसकी युक्ति ।
तदुत्तम (वि०) उसकी अपेक्षा उत्तम ।
तदुत्तर (सं० पु०) उसका उत्तर, वह उत्तर, उसके बाद, उसके अनन्तर । [तदनन्तर ।
तदुपरान्त (वि०) तत्पश्चात्, उसके बाद, उसके पीछे,
तदुपरि (अव्य०) उसके ऊपर, उसके मध्य ।
तदेक चित्त (वि०) समान स्वभाव, उसका अनुरक्त, उसका अनुवर्ती ।
तदेव (अव्य०) वही ।
तद्गत (वि०) उसके अन्तर्गत । [धन ।
तद्धन (वि०) कृपण, कम खर्च करने वाला, उतना ही
तद्गुण (सं० पु०) अलङ्कार विशेष जिसमें अपना गुण त्याग किसी अन्य वस्तु का गुण धारण किया जाय ।
तद्धित (सं० पु०) प्रत्यय विशेष, जिसे अन्त में लगाने से शब्द बन जाता है ।
तद्वत् (वि०) उसी के समान ।
तद्भी (अव्य०) तभी, तब ही, त्यों ही ।
तद्भव (सं० पु०) संस्कृत का अपभ्रंश रूप जो भाषा में व्यवहार हो; जैसे—हस्त का हाथ, अर्द्ध का आधा इत्यादि ।
तद्यपि (अव्य०) तौभी,तथापि,तब भी, तिस प्रकार भी ।
तन (सं० पु०) देह, बदन, शरीर, जिस्म ।
मुहा०—तन लगना=जी में आना, हृदय ग्राह्य होना । भोजन तन नहीं लगता=शरीर को लाभदायक नहीं होता । तन तोड़ना=अकड़ना, अँगड़ाई लेना । तन दो=ध्यान दो, जी लगाओ । तनमन वशकर=इन्द्रिय रोक कर, अवयव और जी लगाकर । तन दिखाना=विषय कराना, प्रसङ्ग करना ।
तनक (वि०) अल्प, थोड़ी ।
तनकाऊ (वि०) थोड़ा भी, ज़रा भी, कुछ भी ।

तनक़ीह (अ० सं० स्त्री०) पड़ताल, जाँच, खोज, वास्तविकता का ज्ञान, विचारणीय और विवादप्रद विषयों को प्रगट करने के कार्य को कचहरियों में तनक़ीह कहते हैं। [धन, वेतन, तलब।

तनख़्वाह (फ़ा० सं० स्त्री०) नौकरी के उपलक्ष में प्राप्त

तनगना (क्रि० अ०) क्रोधित होना, चिढ़ना, झल्लाना, नाराज़ होना।

तनज़ेब (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मलमल विशेष।

तनज़्ज़ुल (अ० सं० स्त्री०) अधोगति, अवनति।

तनतनाना (क्रि० अ०) क्रोध दिखाना, दबदबा दिखाना, शान जमाना।

तनना (क्रि० अ०) खिचना, अकड़ना, ऐंठना, अभिमान से रुष्ट या उदासीन होना, बढ़ना।

तनय (सं० पु०) आत्मज, बेटा, लड़का, पुत्र, जन्म लग्न का पञ्चम स्थान। [दुहिता, सुता।

तनया (सं० स्त्री०) लड़की, बेटी, पुत्री, आत्मजा,

तनरुह (सं० पु०) लोम, रोंगटा, रुआँ, पक्षियों का पर, पंख, पुत्र, लड़का।

तनवाना (क्रि० स०) खिंचाना, तनाना या इस कार्य के लिए दूसरों को उत्साहित या प्रवृत्त करना।

तनसुख (सं० पु०) एक प्रकार का फूलदार महीन कपड़ा।

तनहा (फ़ा० वि०) अकेला, केवल, एकाकी।

तनहाई (फ़ा० सं० स्त्री०) अकेलेपन की दशा, एकान्त स्थान जहाँ कोई अन्य न हो।

तना (सं० पु०) वृक्ष के बीच का भाग जिसमें गुच्छे और डालियाँ निकलती हैं, पेड़ का धड़, जड़ और डालों के बीच का भाग।

तनाज़ा (अ० सं० पु०) दुश्मनी, शत्रुता, झगड़ा, बखेड़ा, बैर, वैमनस्य, अदावत। [कराना, तनवाना।

तनाना (क्रि० स०) तानने का काम दूसरों के द्वारा

तनापा (सं० पु०) जवानी, तरुणाई।

तनाव (सं० पु०) तनने की क्रिया, धोबी के कपड़े की रस्सी, डोरी, खिंचाव। [तनिक।

तनि (वि०) थोड़ा, अल्प, तनिक, छोटा, ज़रा, टुक,

तनिक (वि०) देखो "तनि"।

तनिया (सं० स्त्री०) तानने वा कसने की वस्तु, कोपीन, चोली, जाँघिया, लँगोटी आदि।

तनिष्ठा (वि०) छोटा, दुर्बल, अशक्त, कमज़ोर, शक्तिहीन।

तनी (सं० स्त्री०) डोरी के समान सिले या बटे हुए बन्धन, बन्द, तनियाँ।

तनीयान (वि०) सूक्ष्मतर, क्षुद्र, छोटा।

तनु (वि०) क्षीण, पतला, दुर्बल, छोटा, थोड़ा, कम, कोमल, सुन्दर, नाज़ुक, (सं० स्त्री०) देह, बदन, शरीर, चमड़ा, खाल, स्त्री, केंचुली, लग्न स्थान यहां से शरीर की आरोग्यता देखी जाती है।

तनुक (वि०) अल्प, थोड़ा, तनिक, सूक्ष्म।

तनुकूप (सं० पु०) रोम-कूप, रोम-छिद्र।

तनुच्छत् (वि०) नर्म (सं० पु०) कवच, बख़्तर, सन्नाह।

तनुज (सं० पु०) पुत्र, बेटा, आत्मज, सुत, कुण्डली का पाँचवाँ स्थान जहाँ से सन्तान का भाव बतलाते हैं।

तनुजा (सं० स्त्री०) देखो "तनया"। [लघुता।

तनुता (सं० स्त्री०) दुर्बलता, क्षीणता, छोटाई, अल्पता,

तनुत्व (सं० पु०) क्षीणत्व, सूक्ष्मत्व।

तनुत्र (सं० पु०) अङ्गरक्षक, कवच, बख़्तर, शरीर-रक्षक।

तनुत्राण (सं० पु०) देखो "तनुत्र"।

तनुत्याग (सं० पु०) शरीर-त्याग, मृत्यु, मरण।

तनुधारी (वि०) देह वाला, शरीरधारी, बदन रखने वाला।

तनुपात (सं० पु०) शरीरान्त, मृत्यु, मौत।

तनुमध्या (सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके हर चरण में एक तगण और एक यगण होता है।

तनुरस (सं० पु०) स्वेद, पसीना।

तनुराग (सं० पु०) गन्धयुक्त उबटन, या उसके बनाने की सुगन्धित वस्तुएँ।

तनुरुहा (सं० पु०) रोम, बाल, केश।

तनुवत (सं० पु०) एक प्रकार के नरक का नाम।

तनुव्रण (सं० पु०) छोटे २ घाव इसे बल्मीक रोग कहते हैं। [गात्र।

तनू (सं० पु०) शरीर, देह, तन, काया, पुत्र, प्रजापति,

तनूज (सं० पु०) पुत्र, आत्मज।

तनूजा (सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री, लड़की।

तनूनपात (सं० पु०) अग्नि, अनल, चित्रक, प्रजापति के प्रपौत्र का नाम, घी।

तनूभृत् (सं० पु०) मनुष्य, देही, देहधारी।

तनै (सं० पु०) देखो "तनुज"।

तनोतु (क्रि०) फैले, फैलावे, विस्तृत होवे।

तनोरुह (सं० पु०) रोंगटे, लोम।
तन्त (सं०पु०) परिवार, प्रबन्ध, व्यवस्था, तुरन्त, सन्तान।
तन्तनाना (क्रि०) पिनपिनाना, तनना, तीखा, क्रोध से बकना। [तन्तनाना।
तन्तनाहट (क्रि०) पिनपिनाहट, जलने की पीड़ा,
तन्ति (सं० पु०) तानना, कपड़े बिनने वाली एक हिन्दू जाति, तन्तुवाय।
तन्तु (सं० पु०) सूत, तागा, वंश, संतान, धागा।
तन्तुकाष्ठ (सं० पु०) ताँत का काठ।
तन्तुकीट (सं० पु०) रेशम का कीड़ा, पाट-कीट।
तन्तुना (सं० पु०) ततुना, तार।
तन्तुनिर्यास (सं० पु०) ताल वृक्ष। [कोरी।
तन्तुवाय (सं०पु०) कपड़ा बिनने वाला, जुलाहा, ततवा,
तन्तुशाला (सं०स्त्री०) कपड़ा बिनने का घर, ताँत घर।
तन्तुसन्तान (सं० पु०) अति सूक्ष्म सूत, बहुत पतले सूत, महीन सूत।
तन्त्र (सं० पु०) सिद्धान्त, परिवार का काम, दो तरफी बात, शपथ, उपाय, शास्त्र विशेष, बोना।
तन्त्रवाय (सं० पु०) अपने राज्य की व्यवस्था और शत्रु राज्य की दशा तथा राष्ट्र परराष्ट्र का ज्ञान।
तन्त्रि (सं० स्त्री०) निद्रा, नींद, आलस्य, आलस।
तन्त्रिपालक (सं० पु०) राजा जयद्रथ।
तन्त्री (सं० स्त्री०) बीन का तार, शरीर की नाड़ियाँ, युवती भेद (पु०) एक प्रकार का बाजा, सितार।
तन्द्रा (सं० स्त्री०) थकावट, श्रान्ति, झपकी।
तन्द्रालु (वि०) क्लान्त, श्रान्त, आलस, निद्रालु, निद्रातुर।
तन्द्री (सं० स्त्री०) अत्यन्त परिश्रम करने से इन्द्रियों की अपटुता।
तन्ना (सं० पु०) जिस पर कोई चीज़ तानी जाय, बुनने के वास्ते ताने का सूत। [बाहर होना।
तन्नाना (क्रि० अ०) ऐंठना, बिगड़ना, अकड़ना, आपे से
तन्निमित्त (अव्य०) तदर्थ, उसके लिये, उसके कारण।
तन्निष्ठ (वि०) तत्रस्थ, वहाँ स्थित।
तन्मय (वि०) संलग्न, लीन, लवलीन, एकत्रित, दत्तचित।
तन्मात्र (सं० पु०) केवल एक, अद्वितीय, सांख्य के अनुसार पञ्चभूतों का अविशेष मूल।
तन्वंगी (वि०) पतले अंग वाली। [कश्मीर में है।
तन्वि (सं० स्त्री०) चन्द्रकुल्या नदी का एक नाम है, यह
तन्वी (वि०) पतले अङ्ग वाली, कृशाङ्गी, सुन्दरी, (सं०स्त्री०) एक वृत्त विशेष। [करने वाला।
तपःकर (सं० पु०) एक मछली का भेद, तपस्वी, तप
तप (सं० पु०) अग्नि, ताप, चित्त की वृत्तियों के सुधारार्थ नियम विशेष से रहना, साध, नियम, तपस्या।
तपकना (क्रि० अ०) कूदना, उछलना, गिरना, धड़कना, फड़कना। [विशेष, बाँध।
तपड़ी (सं० स्त्री०) डीह, ढूह, मेंड़, लघु टीला, फल
तपत (सं० स्त्री०) गर्मी, उष्णता (क्रि०) जलता है, तपता है। [पुत्री।
तपती (सं० स्त्री०) छाया से उत्पन्न सूर्यतनया, सूर्य की
तपन (सं० पु०) दाह, जलन, जलने की क्रिया या भाव, सूरजभानु, आदित्य, भास्कर, ज्वलित नर्क, मदार, आक, अरनी, भिलावें का पेड़, नायक के वियोग में नायिका की क्रिया या हाव भाव, गरमी, सूर्य-रश्मि, अग्नि विशेष। [वृत्त, सूर्य-पुत्री।
तपनतनया (सं० स्त्री०) कालिन्दी, यमुना नदी, शमी
तपनमणि (सं० पु०) सूर्यकान्त मणि।
तपनांशु (सं० पु०) किरण, रश्मि, सूर्य की किरणें।
तपना (क्रि० अ०) जलना, दहकना, गर्म होना, दुःख झेलना, सन्ताप सहना, सन्तप्त होना, प्रभुत्व दर्शाना, प्रताप दिखाना, तप करना, तेजवान होना, दीप्तिवान होना, तेजस्वी बनना।
तपनात्मज (सं० स्त्री०) गोदावरी नदी, यमुना नदी।
तपनी (सं० स्त्री०) तापने का स्थान, कौड़ा, अलाव, तप, गोदावरी नदी, तपस्या की जगह, धूनी।
तपनीय (सं० पु०) तपाने योग्य, अग्नि में रखने योग्य, सोना, सुवर्ण, कञ्चन।
तपरी (सं० स्त्री०) ढूह, बांध। [करने का लोक।
तपलोक (सं० पु०) तपोलोक, एक लोक विशेष, तपस्या
तपवाना (क्रि० स०) दूसरे के द्वारा गरम कराना, अग्नि दिखाना, गर्मी पहुंचाना, अनावश्यक धन खर्च करना, जलवाना।
तपश्चरण (सं० पु०) तपरूपी आचरण, तपस्या, तप।
तपश्चर्या (सं० स्त्री०) देखो "तपश्चरण"। [लोक।
तपस् (सं० पु०) चन्द्रमा, सूर्य, जन लोक के ऊपर का
तपसो (सं० स्त्री०) तप से, आराधना से, तापती नदी।
तपसाल (सं० पु०) तपस्वी, तप करने वाला।

तपसी (सं० पु०) तप करने वाला, तपस्वी।
तपस्क (सं० पु०) तपस्वी, योगी।
तपस्य (सं० पु०) फागुन का महीना, अर्जुन, तप, मनु के दस पुत्रों में से एक।
तपस्या (सं० स्त्री०) तप के लिए साधन, तपश्चरण, व्रतचर्या फाल्गुण मास, एक प्रकार की मछली, ईश्वराराधन, भगवत्भजन।
तपस्विनी (सं० स्त्री०) तपश्चरण करने वाली नारी, तपस्वी की पत्नी, साध्वी, सती पतिव्रता स्त्री, बड़ी गोरखमुण्डी, कुटकी, जटामासी।
तपस्वी (सं० पु०) तप करने वाला व्यक्ति, दरिद्र, दया करने योग्य जीव, घीकुआर, मूर्ति, मछली विशेष।
तपा (सं० पु०) पूजक, पूज्य, आराध्री, तप करने वाला।
तपात्यय (सं० पु०) वर्षाकाल, वर्षा का समय।
तपाना (क्रि० स०) दुख देना, गरमी पहुँचाना, आग में रख कर लाल कराना, गरम कराना।
तपाव (सं० पु०) गरमाहट, उष्णता, ताप, गर्म करने की क्रिया या उसका भाव।
तपास (सं० पु०) अन्वेषण, खोज, सन्धान, अनुसन्धान।
तपित (वि०) दुखित, गरम किया हुआ, तप्त, गरम, उष्ण।
तपिश (फ़ा० सं० स्त्री०) गर्मी, उष्णता, धूप की तेज़ी, अग्नि, ताप।
तपी (सं० पु०) तपस्वी, आत्म-संयमी, तपश्चर्या करने वाला, साधू।
तपु (सं० पु०) तेज, अग्नि, आदित्य, दुश्मन, शत्रु, गरम।
तपेदिक़ (सं० पु०) रोग विशेष, यक्ष्मा, राजयक्ष्मा, क्षय, क्षयी रोग। [वाला, तपी।
तपेश्वर, तपेश्वरी (सं० पु०) तपस्वी, तपस्या करने
तपै (क्रि०) तप जावे, गरम हो जावे, तपस्या करे।
तपोधन (सं० पु०) तपस्वी, तप में रत रहने वाला मनुष्य।
तपोनिष्ठ (सं० पु०) तपस्वी, तप करने वाला।
तपोबल (सं० पु०) वह बल जो तपस्या द्वारा प्राप्त किया गया हो, तप की शक्ति।
तपोभूमि (सं० स्त्री०) तपस्या-स्थान, तप करने वालों का निवास-स्थान, तपोवन जहाँ साधू रहते थे।
तपोमूर्ति (सं० पु०) तपस्या करने वाला साधू, तपस्वी, परब्रह्म, एक ऋषि विशेष।
तपोरत (सं० पु०) तपस्वी, जिसका तपस्या में प्रेम हो।
तपोराशि (सं० पु०) तपस्वी, जिसकी तपस्या अधिक काल तक व्यापने वाली हो।
तपोलोक (सं० पु०) एक लोक विशेष, ऊपर के सात लोकों में से छठाँ लोक यह लोक तेजोमय है और कठिन तपस्या करने वाले यहाँ भेजे जाते हैं।
तपोवन (सं० पु०) देखो "तपोभूमि"।
तपौनी (सं० स्त्री०) तपनी, तपस्या-स्थल, ठगों की एक रीति जिसमें किसी को लूट लेने के पश्चात् सब ठग मिल कर देवी की पूजा करते हैं और गुड़ चढ़ा कर आपस में प्रसाद बाँट लेते हैं।
तप्त (वि०) सन्तापित, गरम, जलता हुआ, तपाया हुआ, दुखी, दुखित, पीड़ित।
तप्तकुम्भ (सं० पु०) नरक विशेष, तपा हुआ घड़ा।
तप्तकुण्ड (सं० पु०) गरम जल का तालाब या वह नदी जिसमें गरम जल रहता हो, गरम जल का झरना।
तप्तकृच्छ् (सं० पु०) व्रत विशेष जो बारह दिन में समाप्त होता है।
तप्तबालुक (सं० पु०) नरक विशेष।
तप्तभाषक (सं० पु०) एक प्रकार की परीक्षा।
तप्तमुद्र (सं० पु०) शंख चक्रादि से दागा हुआ चिह्न।
तप्पा (सं० पु०) चकला पुरवा, पुरा, ग्राम, गाँव।
तफ़रीह (अ० सं० स्त्री०) प्रसन्नता, हर्ष, खुशी, आनन्द, मनोरञ्जन, हास्य, हवा खाने की क्रिया या भाव, सैर, वायु-सेवन, थोड़ा घूमना, ताज़ापन।
तफ़सील (अ० सं० स्त्री०) ब्योरेवार, विस्तार पूर्वक, टीकायुक्त वर्णन, सूची, विवरण, फ़ेहरिस्त।
तफ़ावत (अ० सं० पु०) दूरी, फासिला, भेद, अन्तर फ़र्क़। [में, इस स्थिति में।
तब (अव्य०) उस काल, उस समय, उस वक्त, ऐसी दशा,
तबक़ (अ० सं० पु०) चांदी आदि के वरक़, परियों की बाधा से बचने की पूजा, परियों की नमाज़, घोड़ों का रोग विशेष, रक्त विकार से उत्पन्न हुआ चकत्ता या दाग़, चौड़ी और छिछली थाली।
तबकिया (सं० पु०) सोने चाँदी आदि का वरक़ बनाने वाला, वरक़ सम्बन्धी, तबक़गर।
तबकिया हरताल (सं० पु०) एक प्रकार की हरताल जिसके तोड़ने पर परत निकलते हैं।

तबदील (अ०वि०) बदला हुआ, जिसकी बदली हुई हो, परिवर्तित ।

तबदीली (अ० सं० स्त्री०) परिवर्तन, बदलन, बदली, एक स्थान से दूसरे स्थान जाने का काम ।

तबलची (सं० पु०) तबला बजाने वाला, तबलिया ।

तबला (सं० पु०) एक प्रकार का बाजा ।

तबहिं (अव्य०) ठीक उसी समय, उसके बाद ।

तबाह (फ़ा०वि०) ख़राब, बरबाद, नष्ट भ्रष्ट, चौपट, नाश को प्राप्त । [नाश, दिक़्क़त, कठिनता ।

तबाही (फ़ा० सं० स्त्री०) मुसीबत, आपत्ति, बरबादी,

तबियत (सं० स्त्री०) चित्त, मन, हृदय, दिल ।

मुहा०—तबियत आना = प्रेम होना, किसी वस्तु के वास्ते इच्छा करना । तबियत उलझना = जी घबराना । तबियत ख़राब होना = बीमार या दुखी होना । तबियत फड़कना = उत्साहित होना, उमङ्ग उठना । तबियत फिरना = जी हटना । तबियत भरना = तृप्त होना, तसल्ली होना, सन्तुष्ट हो जाना । तबियत चाहना = जी चाहना । [कारण ।

तभी (अव्य०) उसी वक़्त, उसी समय, इसी हेतु, इसी

तमंचा (फ़ा० सं० पु०) छोटी बन्दूक़, पिस्तौल, दरवाज़े की दृढ़ता के हेतु लगाया हुआ बग़ल का एक पत्थर ।

तम (सं० पु०) तमोगुण, अंधियारा, अन्धकार, पैर का अग्रभाग, तमाल वृक्ष, पाप, क्रोध, मूर्खता, सुअर, राहु, स्याही, कालिमा, मोह, नरक का एक नाम, नरक विशेष, अभिमान, गर्व, घमंड । [पाप, क्रोध ।

तमः (सं०पु०) प्रकृति का गुण, तमोगुण, अन्धकार, शोक,

तमक (सं० पु०) शेख़ी, जोश, उद्वेग, अहंकार, घमण्ड, तेज़ी, तीव्रता, अभिमान, गुस्सा, श्वास रोग का एक भेद । [उछलना ।

तमकना (क्रि० अ०) क्रोध से चमकना, गुस्से में आकर

तमका (सं० पु०) अधिक गर्मी ।

तमकि (क्रि०) क्रोध में आ के, त्योरी चढ़ा के, खिद के ।

तमगा (तु०सं०पु०) सम्मान चिह्न विशेष, पदक, तगमा ।

तमगुन (सं० पु०) तमोगुण, अहंकार युक्त गुण विशेष ।

तमचर (सं० पु०) रात्रिचर, निशाचर, राक्षस, उल्लू, उलूक ।

तमचुर (सं० पु०) मुर्ग़, मुरगा, कुक्कुट ।

तमत (वि०) अभिलाषी, इच्छुक, आकांक्षी, प्रार्थी ।

तमतमाना (क्रि० अ०) चमकना, दमकना, धूप या क्रोध से रक्त वर्ण हो जाना ।

तमप्रभ (सं० पु०) नरक विशेष ।

तमस (सं० पु०) अंधकार, अज्ञान, तिमिर, पाप, कूप, तमसा नाम की नदी, नरक, राहु, मुनि विशेष ।

तमसा (सं० स्त्री०) टौंस नाम वाली सरिता, नदी विशेष, टौंस ।

तमस्विनी (सं० स्त्री०) हल्दी, निशा, रात्रि, रात ।

तमस्सुक (अ० सं० पु०) ऋणपत्र, एक प्रकार का प्रतिज्ञापत्र, प्रमाणित लेख ।

तमस्तति (सं० स्त्री०) अन्धकार समूह, घोर अंधकार ।

तमहड़ी (सं० स्त्री०) ताँबे का छोटा पात्र, ताँबे की हाँडी, ताँबे का छोटा बर्तन ।

तमा (सं० पु०) राहु (स्त्री०) रात, निशा ।

तमाकू (सं० पु०) तम्बाकू, इसका व्यवहार लोग खाने पीने और सूंघने के कार्य में किया करते हैं, सुरती ।

तमाखू (सं० पु०) देखो " तमाकू " ।

तमाचा (सं० पु०) थप्पड़, लप्पड़ ।

तमादी (अ० सं०स्त्री०) वादे का समय व्यतीत हो जाना, मियाद ख़तम होना, अवधि समाप्त होना ।

तमाम (अ० वि०) सब, सम्पूर्ण, सारा, इति, समाप्त ख़तम । [वाला ।

तमारि (सं० पु०) भानु, भास्कर, सूर्य, तम का नाश करने

तमाल (सं०पु०) वृक्ष विशेष, काले कत्थे का पेड़, तलवार विशेष, तेजपत्ता, महाबल, तिलक का पेड़ ।

तमालपत्र (सं० पु०) तिलक, तेजपत्र ।

तमाशबीनी (सं० स्त्री०) बदकारी, दुष्कर्मता, ऐयाशी ।

तमाशा (सं० पु०) हर्षोत्पादक दृश्य, मनोरञ्जन कराने वाला खेल ।

तमाशाई (सं० पु०) तमाशा देखने वाला ।

तमि (सं० पु०) रात, मोह ।

तमिनाथ (सं० पु०) चन्द्रमा, शशि ।

तमिस्र (सं० पु०) क्रोध, गुस्सा, अंधेरा, नरक विशेष, अन्धकारमय स्थान । [चन्द्रहीन रात्रि का पक्ष ।

तमिस्रपक्ष (सं० पु०) अन्धेरा पक्ष, कृष्णपक्ष बदी,

तमिस्रा (सं० स्त्री०) अन्धकारमय रात्रि, अन्धेरी रात ।

तमी (सं० स्त्री०) काली रात, अन्धकारमय रात्रि, निशा, हल्दी ।

तमोचर (सं० पु०) राक्षस, व्यभिचारी, चोर, दैत्य, दानव। [ज्ञान, विवेक, अदब, क़ायदा, नियम।

तमीज़ (अ० सं० स्त्री०) अच्छा बुरा जानने की शक्ति,

तमीज़दार (वि०) बुद्धिमान, शिष्ट, विवेकी।

तमीश (सं०पु०) शशि, चन्द्र, क्षपाकर, चाँद। [विशेष।

तमूरा (सं० पु०) सितार जैसा एक बाजा, चौतारा, वाद्य

तमोगुण (वि०) मोहादि को उत्पन्न करने वाला, प्राकृतिक गुण, यह तीन हैं। [मानो।

तमोगुणी (वि०) अहंकारी, क्षुद्र वृत्ति वाला, अभि-

तमोघ्न (सं० पु०) तम को दूर करने वाला, चन्द्र, सूर्य, अग्नि, दीप, विष्णु ज्ञान, बुद्धदेव या उनके बनाए हुए नियम।

तमोज्योति (सं० पु०) खद्योत, जुगनू।

तमोनुद (सं० पु०) सूर्य, रवि, ईश्वर, चन्द्र, अग्नि, अज्ञान-नाशक गुरु। [दीपक, ज्ञान।

तमोपह (सं० पु०) अन्धकार-नाशक, सूर्य, चन्द्र, अग्नि,

तमोर (सं० पु०) पान ताम्बूल, नागरबेल के पत्ते।

तमोरुह (सं० पु०) शरीर का बाल।

तमोल (सं० पु०) देखो "तमोर"। [बेचती हो।

तमोलिन (सं० स्त्री०) तम्बोली की स्त्री, जो स्त्री पान

तमोली (सं० पु०) पान बेचने वाला।

तम्बाकू (सं० पु०) देखो "तमाकू"।

तम्बान (सं० पु०) पाजामा, सुथना, जाँघिया।

तम्बू (सं० पु०) छोलदारी, पट-मण्डप, रावटी, कपड़-कोट, खेमा। [विशेष।

तम्बूरा (सं० पु०) तान पूरा, तीन तार की बीन, वाद्य

तम्बेरम (सं० पु०) हाथी, कुञ्जर, दन्ती।

तम्ब्रोलु (सं० पु०) तांबे का बरतन, तांबे का हंडा।

तम्बोली (सं० पु०) ताम्बूल का व्यापारी, पान बेचने वाला, तमोली।

तम्हेड़ा (सं० स्त्री०) तांबे का विशेष प्रकार का हंडा।

तय (वि०) निश्चय, सिद्ध, मुकर्रर, पूर्ण, पूरा, समाप्त, निपटाया हुआ, फैसला, निर्णीत।

तयना (क्रि० अ०) गरम होना, तपना, दुखी होना।

तयार (वि०) तत्पर, कटिबद्ध, तैयार।

तयारी (सं० स्त्री०) तैयार होने का कार्य या प्रयत्न।

तरंग (सं० पु०) उमंग, मौज (स्त्री०) हिलकोरा लहर।

तरंगवती (सं० स्त्री०) तरङ्गोंयुक्त, नदी, तरंगिणी।

तरंगिणी (सं० स्त्री०) देखो "तरंगवती"।

तरंगित (वि०) हिलोरित, हिलोरा मारता हुआ, लहराता, नीचे ऊपर उठता, तरंगें लेता हुआ।

तरंगी (वि०) मौजी, लहरी।

तर (वि०) शीतल, भीगा, गीला, भरापूरा, धनिक, मालदार, परिपूर्ण, (सं० पु०) तैरने की क्रिया, अग्नि, मार्ग, पथ, पेड़, वृक्ष, गति, चाल, नाव का उतार या उतराई, अधिक गुण-सूचक प्रत्यय।

तरई (सं० स्त्री०) नक्षत्र, तरैया, तारा, सितारा।

तरक (सं० पु०) उक्ति, विचार, ऊहापोह, चतुराई का वचन, अड़चन, भूल चूक, (स्त्री०) तड़क भड़क, त्याग।

तरकऊ (सं० पु०) तर्क भी, विचार भी।

तरकना (क्रि० अ०) विचारना, सोच विचार करना, कूदना, उछलना, विस्मित होना, झपटना। [त्रोण।

तरकना (सं० पु०) बाण रखने का भाथा, तूणीर, चोंगा,

तरकस (सं० पु०) तूणीर, बाण रखने का भाथा, एक प्रकार का बांस का चोंगा जिसमें बाण रक्खे जाते हैं।

तरका (सं० पु०) तड़का, मृतक मनुष्य की सम्पत्ति।

तरकारी (सं० स्त्री०) शाक, भाजी, खाने का मांस, सब्ज़ी, हरा साग, व्यंजन बनाने के वास्ते फल, फूल, मूल पत्ते आदि।

तरकि (क्रि०) तर्क करके, टूट के, हुज्जत करके।

तरकी (सं० स्त्री०) स्त्रियों के कान में धारण करने का आभूषण।

तरकीब (अ० सं० स्त्री०) हिकमत, उपाय, इलाज, मिलान, मेल, रचना, निर्माण, बनावट, बनाने की प्रणाली, शैली, तरीक़ा, मार्ग, क्रिया।

तरकुल (सं० पु०) ताड़ का पेड़।

तरक़्क़ी (अ० सं० स्त्री०) उन्नति, बढ़ती, वृद्धि।

तरखा (सं० स्त्री०) प्रबल प्रवाह, जल का अधिक वेग, तेज़ बहाव, ज़ोर। [बर्तन।

तरगुलिया (सं० स्त्री०) अन्न रखने का एक छिछला

तरछट (सं० स्त्री०) पानी या और किसी द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल।

तरछन (सं० स्त्री०) गाद, पानी के नीचे बैठी हुई मैल।

तरछा (सं० पु०) तेलियों के गोबर इकट्ठा करने का स्थान विशेष।

तरछाना (क्रि० अ०) तिरछी आँख से इशारा करना, इंगित करना। [निहार कर।

तरज (सं० पु०) डपट, डांट, तर्ज (क्रि०) डपट कर,

तरजत (क्रि०) तड़पता है, तर्जता है, डांटता है।

तरजन (सं० पु०) गर्जन, तड़प, डांट।

तरजना (क्रि० अ०) डाट बतलाना, फटकारना, ताड़ना देना, ताड़न करना।

तरजनी (सं० स्त्री०) अँगूठे के पास की उँगली, डर, भय।

तरजुई (सं० स्त्री०) छोटी तराजू।

तरजुमा (अ० सं० पु०) उलथा, भाषान्तर, अनुवाद।

तडफ़ना (क्रि०) व्याकुल होना।

तरण (सं० पु०) निस्तार, उद्धार, उत्तरण, बेड़ा, तैर कर पार जाने का तख़्ता, तैरना।

तरणि (सं० पु०) रश्मि, किरन, मदार, आक, मणि, सूर्य, भानु, (स्त्री०) नौका, तरणी, नाव।

तरणिजा (सं० स्त्री०) यमुना, कालिन्दी, एक नगण और एक गुरु वाला वर्णवृत्त।

तरणिरत्न (सं० पु०) माणिक्य, मणि, सूर्यकान्त मणि।

तरणिसुत (सं० पु०) यम, शनि, कर्ण।

तरणिसुता (सं० स्त्री०) यमुना, कालिंदी नदी।

तरणी (सं० स्त्री०) नौका, तरनी, घृतकुमारी।

तरतरा (सं० पु०) एक प्रकार का थाल।

तरतराना (क्रि० अ०) कड़कड़ाना, तड़तड़ाना।

तरदीद (अ० सं० स्त्री०) नष्ट करने या निकालने की क्रिया, खण्डन, मंसूखी।

तरद्दुद (अ० सं० पु०) चिन्ता, फ़िक्र, सोच, खटका।

तरन (सं०पु०) तरण, तैर जाने वाला, पार होने वाला।

तरनतारन (सं० पु०) उद्धार, छुटकारा, मोक्ष, निस्तार, भवसागर से पार करने वाला, निस्तारक, उद्धारक।

तरना (क्रि० अ०) पार होना, मुक्त होना, सद्गति प्राप्त करना, उद्धार होना।

तरनि (सं० पु०) सूर्य, भानु।

तरनी (सं० स्त्री०) नौका, नाव।

तरन्त (सं० पु०) मेडक, कुहासा, झड़।

तरन्ती (सं० स्त्री०) नौका, तरणी, तरी। [सुपास, सुख।

तरपत (सं० पु०) सुविधा, सुभीता, आराम, चैन,

तरपन (सं० पु०) देखो "तर्पण"।

तरपना (क्रि० अ०) तड़पना, तेज होना।

तरपर (क्रि० वि०) ऊपर नीचे, आगे पीछे।

तरपहि (क्रि०) तरपते हैं। [ख्याल, पक्ष।

तरफ़ (अ० सं० स्त्री०) किनारा, ओर, दिशा, पार्श्व,

तरफ़दार (फ़ा०वि०) पक्ष लेने वाला, पक्ष में रहने वाला, पक्षपाती, हिमायती, सहायक।

तरफ़दारी (फ़ा० सं० स्त्री०) हिमायतपन, पक्षपात।

तरफना (क्रि०) तड़फना।

तरबतर (वि०) निमग्न, भीगा हुआ, सराबोर, ख़ूब तर।

तरबूज़ (फ़ा० सं० पु०) एक फल विशेष।

तरल (वि०) अस्थिर, हिलता डोलता, पानी के समान प्रवाहित, द्रव, चमकदार, चलायमान, पोला, खोखला, (सं० पु०) हार के बीच में लगी हुई मणि, लोहा, एक देश और वहाँ के निवासियों का नाम, घोड़ा, पेंदा।

तरलता (सं० स्त्री०) अस्थिरता, चञ्चलता, द्रवत्व।

तरलनयन (सं०स्त्री०) अस्थिर नेत्र, एक वर्णवृत्त विशेष।

तरललोचना (सं० स्त्री०) चंचल नयनी, चपल नेत्रा, नारी, मृगी। [से नीचे वाला।

तरला (सं० स्त्री०) मधुमक्षिका, बांस विशेष (वि०) सब

तरलाई (सं० स्त्री०) देखो "तरलता"।

तरलायित (वि०) जिसमें तरलता उत्पन्न हुई हो (सं० पु०) बड़े तरंग।

तरलित (वि०) विचलित, द्रवीभूत, चलित।

तरवँछ (सं० स्त्री०) जुए की एक लकड़ी जो बैलों के गले के नीचे रहती है, तरौंची, तरवाँची।

तरव (सं० पु०) तरु, वृक्ष, पेड़, गाँछ।

तरवर (सं० पु०) बड़ा वृक्ष, पेड़।

तरवरिया (सं० पु०) तलवार चलाने वाला व्यक्ति।

तरवाना (क्रि०अ०) बैलों का तलवा छिल जाने के कारण लङ्गड़ाना।

तरवार (सं० पु०) तलवार, एक शस्त्र विशेष।

तरवारि (सं० पु०) देखो "तरवार"।

तरस (सं० पु०) करुणा, रहम, कृपा, अनुग्रह, दया।

तरसना (क्रि० अ०) अभिलाषा करना, अभाव की आपत्ति सहना, अप्राप्ति से बेचैन रहना।

तरसाना (क्रि० स०) अभाव का दुख देना, व्यर्थ लालच करना, ललचवाना। [अवस्था, ढंग, युक्ति।

तरह (सं० पु०) भाँति, रीति, किस्म, प्रकार, दशा,

मुहा०—किसी तरह=किसी भाँति, किसी प्रकार। किसी की तरह=किसी के समान। तरह देना=ख़्याल न करना, बचा जाना, क्षमा करना, टाल-मटोल करना।

तरहटी (सं० स्त्री०) तराई, नीचा स्थल, नीची भूमि।

तरहदार (फ़ा० वि०) सुन्दर, मनोहर रचना वाला, मज़ेदार, सुन्दर बनावट का।

तरहेल (वि०) पराजित, आधीन, निकटस्थ, आश्रित।

तरा (सं० पु०) तला, एटुआ, पटसन।

तराई (सं० स्त्री०) देखो "तरहटी"। [यन्त्र।

तराज़ू (सं० स्त्री०) तुला, तकड़ी, तौलने का भारतीय

तरान (सं० पु०) त्रास, तहसीला गया।

तराना (फ़ा० सं० पु०) गान विशेष, उत्तम गाना, चलता गाना, (क्रि० स०) पार कराना, बचाना, उद्धार कराना, निस्तार कराना।

तराप (सं० स्त्री०) बन्दूक़ादि का शब्द, तड़ाक, एकदम शब्द होना।

तरापा (सं० पु०) कोलाहल, कोहराम, हाहाकार, त्राहि त्राहि का शब्द, पानी में तैरता हुआ बेड़ा, नौका, किश्ती।

तराबोर (वि०) सराबोर, तरबतर। [उछाल।

तरारा (सं० पु०) पानी की लगातार गिरने वाली धार,

तरावट (सं० स्त्री०) ठंड, शीतलता।

तराशख़राश (फ़ा० सं० स्त्री०) काटछाँट, बनावट कतर-ब्योंत या उसकी क्रिया

तरास (सं० पु०) त्रास, दुःख, मुसीबत।

तरिंदा (सं० पु०) तैरता हुआ पीपा।

तरि (सं० स्त्री०) नौका, नाव। [तरकी।

तरिको (सं० पु०) कान में पहिनने का आभरण, तरौना,

तरियाना (क्रि० स०) तरी में बैठाना, नीचे बैठाना, तह में डाल देना, पात्र के नीचे मिट्टी चढ़ाना, छिपाना, दुबकाना, ढँकना, ढाँकना।

तरिहँत (वि०) नीचे, तले, पेंदी में।

तरी (सं० स्त्री०) नदी, सील, वह भूमि जहाँ बरसात का पानी भर जाता है, तराई, तलहटी, पेटी, कपड़ा रखने की पिटारी, कपड़े का छोर, धुआँ, गीलापन, ठंढक, जूते का अधोभाग, तला, कर्णफूल।

तरीक़ा (अ० सं० पु०) क़ायदा, नियम, ढंग, विधि, रीति, भाँति, प्रकार, तदबीर, उपाय, हिकमत, चाल चलन, व्यवहार, रिवाज। [विशेष।

तरु (अ० सं० पु०) वृक्ष, पेड़, दरख़्त, एक प्रकार का काष्ठ

तरुआ (सं० पु०) तलवा, भुँजिया चावल।

तरुज (वि०) वृक्ष में उत्पन्न फल फूल आदि।

तरुजीवन (सं० पु०) वृक्ष मूल।

तरुण (वि०) नया, नूतन, जवान, युवक, युवा, बड़ा जीरा, अरंड, कूजा का फूल, मोतिया, अल्प आयु वाला। [गया हो।

तरुणज्वर (सं० पु०) वह ज्वर जो सात दिन का हो

तरुणदधि (सं० पु०) पांच दिन का बासी दही।

तरुणाई (सं० स्त्री०) जवानी, नूतनता, नवीनता।

तरुणी (सं० स्त्री०) युवती, जवान स्त्री, अल्पायु वाली, दन्ती, ज्वार का पट्टा, मेघराग नामक रागिनी, मोतिया, कामिनी।

तरुनाई (सं० स्त्री०) देखो "तरुणाई"।

तरुनी (सं० स्त्री०) देखो "तरुणी"।

तरुराज (सं० पु०) कल्प वृक्ष, कल्पतरु, ताड़ का पेड़।

तरुसार (सं० पु०) कर्पूर, कपूर।

तरेंदा (सं० पु०) पानी पर उतराता हुआ काष्ठ जिसके द्वारा कोई पार हो सके, बेड़ा, किश्ती।

तरे (वि०) नीचे, तले, पेंदी में।

तरेटी (सं० स्त्री०) तलहटी, तराई, तरहटी, पर्वत के नीचे की पृथ्वी, घाटी।

तरेड़ा (सं० पु०) धार बांध कर पानी गिरना।

तरेत (सं० पु०) बया, लङ्गर का चिन्ह।

तरेरना (क्रि० अ०) क्रोधित भाव नेत्रों द्वारा बताना, इशारे से डाटना, फटकारना, त्योरी चढ़ाना, आँख दिखाना, आँख बदलना।

तरैया (सं० स्त्री०) तारा, नक्षत्र।

तरोंस (सं० पु०) तीर पर का, पेंदे का जल।

तरोवर (सं० पु०) तरुवर, पेड़, वृक्ष।

तरौंछी (सं० स्त्री०) हत्थे के नीचे की लकड़ी (जुलाहे की) जुआ के नीचे की लकड़ी जो बैलों के गले के नीचे रहती है।

तरौटा (सं० पु०) चक्की का नीचे का पाट।

तरौंस (सं० पु०) समीप, किनारा, पटरी, तट, तीर।

तरौना (सं० पु०) कान में पहनने का एक गहना।

तर्क (सं० पु०) बुद्धि द्वारा की हुई विवेचना, न्यायशास्त्रीय विचार, कल्पना, अनुमानोक्ति, चातुर्य पूर्ण उक्ति, व्यंग बात, त्याग, तजना, छोड़ना।

तर्कक (सं०पु०) याचक, आकांक्षी, तर्क-कारक। [विचार।

तर्कणा (सं० स्त्री०) राय, विवेचना, दलील, युक्ति, सन्देह

तर्कना (सं० स्त्री०) देखो "तर्कणा"।

तर्कवितर्क (सं० पु०) वादाविवाद, बहस, विवेचना, सोच-विचार, शङ्का-समाधान।

तर्कविद्या (सं० स्त्री०) न्याय विद्या। [तूणीर।

तर्कश (फ़ा० सं० पु०) तीर रखने का खोल, भाथा,

तर्कशास्त्र (सं० पु०) न्याय, वह शास्त्र जिसमें प्रत्येक बात की विवेचना का नियम हो। [उचित न हो।

तर्काभास (सं० पु०) अनुचित तर्क, कुतर्क, जो तर्क

तर्कारी (सं० स्त्री०) साग, भाजी, तरकारी, अरणी-वृक्ष, जैत या उसका पेड़।

तर्कित (वि०) तर्क किया हुआ।

तर्की (सं० पु०) तार्किक, तर्क करने वाला, (स्त्री०) कानों में पहिनने का आभूषण, तरकी।

तर्कीब (सं० स्त्री०) देखो "तरकीब"।

तर्कु (सं०स्त्री०) सूत बनाने का यंत्र, तकुआ, तकला।

तर्कुटी (सं० स्त्री०) सूत बनाने की कल, फिरकी, तकुआ।

तर्कुल (सं० पु०) ताड़ का वृक्ष या फल।

तर्खा (सं० पु०) तीखा, धार।

तर्ज़ (अ० सं० पु०) ढंग, रीति, ढब, प्रकार, क़िस्म।

तर्जन (सं० पु०) ताड़ना, भर्त्सन, गर्जन।

तर्जना (क्रि० अ०) डाटना, डपटना, धमकाना, डर दिखाना, डराना।

तर्जनी (सं० स्त्री०) अँगूठे के पास की उँगली।

तर्जित (वि०) ताड़ित, धमकाया गया, भर्त्सित।

तर्जुमा (सं० पु०) देखो "तरजुमा"।

तर्णक (सं० पु०) तत्काल उत्पन्न बछड़ा, नवीन वत्स।

तर्तराता (वि०) अति चिक्कन, स्निग्ध।

तर्तराना (क्रि०) चंचलता करना, गलफटाकी करना, सन्नाटा भरना।

तर्तराहट (सं० स्त्री०) सन्नाटा, गीदड़भभकी, श्लाघा, गलफटाकी। [तरपण।

तर्पण (सं० पु०) तृप्त करने का कार्य, तृप्त करना, तरपन,

तर्पणी (सं० स्त्री०) सुरसरी, गङ्गा, खिरनी का पेड़, शान्तिदाता, तृप्ति देने वाली।

तर्पणीन (वि०) तृप्ति के लायक़, सन्तुष्टि के योग्य।

तर्पित (वि०) तृप्त, सन्तोषित।

तर्ब (सं० स्त्री०) वाद्य की लय, स्वर, ध्वनि।

तर्रा (सं० पु०) तस्मा, फीता, जो छड़ी में बाँध कर चाबुक बनाया जाता है।

तर्राना (सं० पु०) तराना, गाना विशेष।

तर्वरिया (सं० पु०) तलवार बाँधने वाला, खड्गधारी।

तर्ष (सं०पु०) कामना, इच्छा, अभिलाषा, तृष्णा, असन्तोष।

तर्षण (सं० पु०) तृषा, पिपासा, प्यासा, इच्छा, अभिलाषा।

तर्षित (वि०) इच्छुक, प्यासा, लालसा युक्त।

तर्स (सं० स्त्री०) दया, कृपा, करुणा।

तर्स खाना (क्रि०) दया करना, कृपा करना।

तर्साना (क्रि०) ललचाना, लुभाना।

तर्सों (अव्य०) परसों का पिछला दिन, परसों के आगे का दिन, वर्तमान दिन से अगला वा पिछला चौथा दिन।

तल (सं० पु०) निम्न भाग, पेंदा, तली, तर, हथेली, पैर का तलुवा, थप्पड़, बाह्य विस्तार, स्वभाव, वन, जंगल गड्हा, मकान की छत, गोधा, गोह, तह, मूठ, कलाई, सहारा, आश्रय, शङ्कर, प्रथम पाताल, नरक विशेष।

तलक (सं० पु०) तालाब, ताल, पोखर, एक फल का नाम, अवधि, सीमा, (अव्य०) तक, पर्यंत।

तलघर (सं० पु०) नीचे का मकान, तहख़ाना।

तलछट (सं० स्त्री०) द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल, कीट, गाद, तलौंछ।

तलना (क्रि० स०) भूनना, गर्म घी में सेंकना।

तलपट (वि०) नष्ट, चौपट।

तलफना (क्रि० अ०) पीड़ा से हाथ पैर पटकना, व्याकुल होना, घबड़ाना। [ख़राबी, बुराई।

तलफ़ी (फ़ा० सं०स्त्री०) नुक़सान, बरबादी, हानि, नाश,

तलफोर (अव्य०) ताल फोड़ कर निकाला हुआ।

तलब (अ० सं० स्त्री०) चाह, लालसा, पाने की इच्छा, खोज, माँग, तनख़ाह, वेतन, आवश्यकता।

तलबाना (फ़ा० सं० पु०) साक्षियों की उपस्थिति के लिए कचहरी में जमा किया हुआ धन, समय पर मालगुज़ारी जमा न करने पर ज़मीदार से दण्ड स्वरूप लिया द्रव्य, हर्जाना, बुलाने की फ़ीस।

तलबी (अ० सं०स्त्री०) पुकार, माँग,बुलाहट, उपस्थिति।
तलमल (सं० पु०) नीचे का मैल, गाद।
तलमलाना (क्रि० अ०) घबड़ाना, छटपटाना, बेचैन होना, तड़फाना।
तलवरिया (सं० पु०) तरवरिया।
तलवा (सं० पु०) पाँव का अधोभाग जो चलने और खड़े होने में धरती पर लगता है।
मुहा०—तलवे चाटना=खुशामद करना। तलवे छलनी होना=अधिक चलना जिससे शिथिलता आ जाय। तलवों से मेटना=कुचल कर नाश करना। तलवे धोकर पानी=अधिक सेवा करना। तलवा न टिकना=एक स्थान पर न बैठना, घूमते रहना, आसन न जमाना। तलवों से आग लगना=समस्त शरीर से क्रोध करना, नीचे से ऊपर तक क्रोधित होना।
तलवार (सं० स्त्री०) तलवार, खड्ग, कृपाण।
तलवासना (क्रि०) पैर घिसाना, पैर घिसना। [तराई।
तलहटी (सं० स्त्री०) किनारा, पार्श्व, निकटस्थ भूमि,
तला (सं० पु०) तरा, नीचे का हिस्सा, पेंदा, पेंदी।
तलाई (सं०स्त्री०) छोटा तालाब, तलैया।
तलाक़ (अ० सं० पु०) परस्पर सम्बन्ध, त्याग, पति पत्नी का विधि पूर्वक सम्बन्ध त्यागना।
तलातल (सं० पु०) पाताल विशेष।
तलाब (सं० पु०) तड़ाग, पोखर, वह बड़ा गड़हा जिसमें बरसात में पानी भर जाता है।
तलाश (तु० सं० स्त्री०) खोज, अनुसन्धान, ढूँढ़ढाँढ़, अन्वेषण, चाह, ज़रूरत।
तलाशना (क्रि० स०) खोजना, चाहना, ढूँढ़ना।
तलाशी (फ़ा० सं० स्त्री०) खोई वस्तु के पाने के लिए घरबार देखने का काम।
तलित (वि०) घी तेल में भूना हुआ, तला हुआ।
तलिन (सं० स्त्री०) शय्या (पु०) दुर्बल, निर्बल।
तली (सं० स्त्री०) पेंदा, पेंदी, तलछट, गाद, पाँव की एड़ी, पाणिग्रहण के समय वर वधू के आसन के नीचे रक्खा हुआ रुपया पैसा।
तलुआ } (सं० पु०) पांवके
तलुवा } नीचे का भाग।
मुहा०—तलुवा चाटना—निराश होना खुशामद करना। तलुवे के तले हाथ धरना=लल्लो पत्तो करना।
तले (वि०) नीचे, अधो भाग में।
मुहा०—तले ऊपर=एक के ऊपर एक, गड्डमड्ड, ऊपर नीचे। जी तले ऊपर होना=जी मचलाना,घबराना।
तलेटी (सं० स्त्री०) पेंदी, तराई, तलहटी।
तलेरी (सं० स्त्री०) तराई, किनारा, पेंदी।
तलैया (सं० स्त्री०) छोटा तालाब।
तलैंचा (सं० पु०) महराब के ऊपर का भाग।
तल्प (सं० पु०) पलङ्ग, शयन-स्थान, शय्या, अटारी।
तल्पकीट (सं०पु०) बिछौने का कीट, खटकीरा, खटमल।
तल्ला (सं० स्त्री०) तले का भाग, परत, अस्तर, पास, समीप, निकट।
तल्लिका (सं० स्त्री०) ताली, कुंजी, चाभी।
तल्ली (सं०स्त्री०)गाद, जूते का तल्ला, तरुणी, युवा स्त्री।
तव (सर्व०) तुम्हारा।
तवज्जह (अ० सं० स्त्री०) ध्यान, दृष्टि, रुख़, निगाह।
तवना (क्रि०अ०) गरम होना, गरमी से पिघलना, तपना, तपित होना, दुखी होना, क्रोधित होना, तेज पसारना, कुढ़ना, जलना।
तवराज (सं० पु०) तुरंजबीन, यवास शर्करा।
तवा (सं० पु०) लोहे का छिछला गोल बरतन जो रोटी सेकने के काम में लाया जाता है।
तवाखीर (सं० पु०) बाँस में उत्पन्न होने वाली वस्तु विशेष, बंसलोचन।
तवाज़ा (अ० सं० स्त्री०) ख़ातिर, आदर, सन्मान, अतिथि-सत्कार, महमानदारी, निमन्त्रण।
तवाना (वि०) हृष्ट पुष्ट, मोटा ताज़ा, मुस्तंडा, (क्रि०स०) ढकाना, गरम कराना, तपाना, पिघलाना।
तवायफ़ (अ० सं० स्त्री०) नृत्य करने वाली स्त्री, रंडी, वेश्या, यह शब्द बहुवचन होते हुए भी हिन्दी में एक वचन में ही प्रयोग होता है।
तवारा (सं० पु०) तपन, जलन, दाह।
तवारीख़ (अ०सं०स्त्री०) इतिहास। [इज्ज़त, बड़प्पन।
तशरीफ़ (अ० सं० स्त्री०) आदर, महत्व, मान्यता,
मुहा०—तशरीफ़ लाइए=पधारिए, पदार्पण कीजिए। तशरीफ़ रखना=बैठना, विराजना। तशरीफ़ ले जाना=प्रस्थान करना, चले जाना।
तश्तरी (फ़ा० सं० स्त्री०) एक प्रकार की हलकी छिछली थाली, रकाबी।

तषना (क्रि०) भाग देना, बांटना, भाग करना।
तषरी (सं० स्त्री०) पात्र विशेष।
तष्ट (वि०) दला हुआ, पिसा हुआ, कटा हुआ, छीला हुआ।
तष्टा (सं० पु०) बनाने वाला, गढ़ने वाला, निर्माण करने वाला, विश्वकर्मा, छील छाल करने वाला, एक आदित्य विशेष, पूजा करते समय ठाकुरजी के स्नान कराने का पात्र जो प्रायः ताँबे का होता है।
तस (वि०) तिस प्रकार, तैसा।
तसदीक़ (अ० सं० स्त्री०) जाँच, परीक्षा, अनुसन्धान, सत्य का निश्चय, गवाही, प्रमाणित पुष्टि।
तसमा (फ़ा० सं० पु०) चमड़े की फटी हुई धज्जी।
मुहा०—तसमा खींचना = गला घोट कर मारना। तसमा लगा न रहे = गर्दन बिलकुल कट जाय, साफ़ दो टुकड़े हो जावें। [का एक औज़ार, ढरकी।
तसर (सं० पु०) टसर, एक प्रकार का रेशम, जुलाहों
तसला (सं० पु०) कटोरे की तरह का गहरा लोहे, ताँबे या पीतल का बरतन।
तसली (सं० स्त्री०) छोटा तसला, तसलिया।
तसलीम (अ० सं० स्त्री०) स्वीकार, मानना, प्रणाम, सलाम, बन्दगी, हामी, वन्दना।
तसल्ली (अ० सं० स्त्री०) शान्ति, चैन, आराम, धीरज।
मुहा०—तसल्ली दिलाना = धैर्य धारण कराना। तसल्ली देना, धैर्य देना।
तसवीर (अ० सं० स्त्री०) वह आकृति जो काग़ज़ या शीशे पर यन्त्र से या पेन्सिल आदि से बनाई गई हो, चित्र।
तसवीह (सं० स्त्री०) माला।
तसा (सं० पु०) तीन बार का जुता हुआ खेत।
तस्कर (सं० पु०) बदमाश, चोर, कान, मदन वृक्ष, मैनफल, बुध के पुत्र केतु विशेष, चोर नाम गन्धयुक्त वस्तु। [चोरी, चोर का व्यापार, धन्धा।
तस्करता (सं० स्त्री०) हरण क्रिया, चोरों का काम,
तस्करी (सं० स्त्री०) बदमाशी, चोरी करने वाली स्त्री, या चोर की स्त्री, तस्करता, चोरी।
तस्म (सं० पु०) चमोटा, चमोटी।
तस्मई (सं० स्त्री०) खीर, हविष्य।
तस्मात् (अव्य०) इस वास्ते, इसलिए।
तस्मिन (सर्व०) उसमें, वहां पर।
तस्मै (सर्व०) उसके लिए, उसको।
तस्य (सर्व०) उसका।
तस्सू (सं० पु०) लम्बाई का माप विशेष, जो इमारत बनाने वालों के काम में आता है, जो सवा इञ्च के करीब होता।
तहँ (वि०) तहीं, तहाँ, तिस स्थान, उस स्थान।
तह (सं० स्त्री०) किसी वस्तु की मोटाई का फैलाव जो किसी दूसरी वस्तु के ऊपर हो, परत।
मुहा०—तह करना = समेटना, चौपरत करना। तह कर रक्खो = लिये रहो, मत निकालो। तह तोड़ना = झगड़ा निपटाना। तह देना = हलकी परत चढ़ाना। तह मिलाना = जोड़ा लगाना।
तहवाँ (वि०) देखो "तहँ"। [जाँच।
तहकीक़ात (अ०सं० स्त्री०) तसदीक़, अनुसन्धान, पता,
तहख़ाना (फ़ा० सं० पु०) देखो "तलघर"।
तहज़ीब (अ०सं०स्त्री०) शऊर, शिष्टता, शिक्षा, सभ्यता।
तहदरज (वि०) बिना तह खुला, हाल का, नया, बिल्कुल नया।
तहरीर (अ० सं० स्त्री०) लेखनशैली, लेख, प्रमाण, लेखबद्ध प्रमाण, लिखाई की मज़दूरी, गेरू की छपाई।
तहलका (सं० पु०) घबड़ाहट, हलचल, कोलाहल, खलबली, विनाश, बरबादी, मौत, मृत्यु।
तहवाल (अ० सं० स्त्री०) अधिकार में, आधीनता में, सौंपा हुआ कोष, अमानत में धरा हुआ, धन, ख़ज़ाना, जमा, रोकड़, आय का एकत्रित धन।
तहवीलदार (फ़ा० सं० पु०) खज़ानची, कोषाध्यक्ष।
तहसनहस (वि०) विनाश, नष्टभ्रष्ट।
तहसील (अ० सं० स्त्री०) धन वसूल करने की क्रिया, वसूली, उगाही, कोश, पृथ्वी की वार्षिक आय, सरकारी मालगुज़ारी जमा करने का दफ़्तर, तहसीलदार की कचहरी।
तहसीलदार (फ़ा० सं० पु०) किराया या कर वसूल करने वाला व्यक्ति, कलक्टर से छोटा हाकिम जो मालगुज़ारी सम्बन्धी छोटे मुकदमे फ़ैसला करे।
तहसीलदारी (सं० स्त्री०) तहसीलदार का पद, सरकारी मालगुज़ारी वसूल करने का काम। [उगाहना।
तहसीलना (क्रि० सं०) इकट्ठा करना, वसूल करना,
तहाँ (वि०) उस स्थान पर, उस जगह में।

तहाना (क्रि० स०) लपेटना, चुनना, तह करना।
तहिया (वि०) उसी समय, तभी।
तहियाना (क्रि० स०) तहाना, तह लगा कर लपेटना।
तहीं (वि०) वहीं, उसी स्थान, उसी ठौर, उसी जगह।
ता (प्रत्य०) भाववाचक या भाव प्रकट करने वाला प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा में लगता है।
ताँई (सं० स्त्री०) तक, वास्ते, पर्यन्त, पास, लिए।
ताँगा (सं० पु०) टाँगा, एक प्रकार की सवारी जिसमें इक्के के समान एक घोड़ा जोता जाता है।
तांत (वि०) हारा, थका हुआ, चमड़े की रस्सी, नस, स्नायु, करघा।
तांत बाँधना (क्रि०)चमड़े की रस्सी से बांधना, बकबकी।
तांतरिया (वि०) दुबला, पतला।
ताँता (सं० पु०) कतार, पंक्ति, लैन, श्रेणी। [समान।
ताँतिया (वि०) दूबर पातर, दुबला, पतला, ताँत के
ताँती ((सं० स्त्री०) सन्तान, बच्चे, लैन, पंक्ति, जुलाहा।
ताँबड़ा (सं० पु०) ताँबे की वस्तु, झूठी चुन्नी।
ताँबा (सं० पु०) धातु विशेष, ताम्र, शिकारियों द्वारा शिकारी पक्षियों के आगे डाला हुआ मांस का टुकड़ा।
ताँबी (सं० स्त्री०) फैले मुँह का ताँबे का बर्तन, ताँबे की कलछी।
ताइल (सं० पु०) तन्त्री, तांत, जन्तर, टोटका, गण्डा।
ताई (सं० स्त्री०) थोड़ा ताप, हलका ज्वर, जलेबी की कड़ाही, तई, जेठी काकी या चाची, पिता के बड़े भ्राता की भार्या।
ताईद (अ० सं० स्त्री०) भलीभाँति समर्थन, पुष्टि, पक्षपात, तरफ़दारी, अनुमोदन, सहायक कार्यकर्ता, सहायक।
ताऊ (सं० पु०) बाप का बड़ा भाई, ताया, बड़ा चाचा।
ताऊन (अ० सं० पु०) संक्रामक रोग विशेष, जिसमें गिलटी निकलती और बुख़ार आता है।
ताऊस (अ० सं० पु०) केकी, मयूर, मोर, या उसके आकार का बाजा जो सितार के समान तारदार होता है परन्तु कमानी से बजता है। [प्रतीक्षा,खोज।
ताक (सं० स्त्री०) निगाह, दृष्टि, दीठि, लक्ष्य, दर्शन, मुहा०—ताक रखना = दृष्टि रखना, देख रेख रखना। ताक बाँधना = निश्चेष्ट देखना, टकटकी बाँधना। ताक रखना = मौका देखना।
ताकझाँक (सं० स्त्री०) देख रेख, खोज खाज, तलाश, बार बार देखने का कार्य।
ताक़त (अ० सं० स्त्री०) शक्ति, बल, अधिकार।
ताक़तवर (फ़ा० वि०) बलवान, सामर्थ्य वाला, बलिष्ठ।
ताकना (क्रि०) देखना, झाँकना।
ताकर (सर्व०) उसका, तिसका।
ताका (क्रि०) देखा, निहारा, निशाना बाँधा।
ताकि (फ़ा० अव्य०) इसलिए, अतः, जिससे।
ताकीद (अ० सं० स्त्री०) प्रबलानुरोध, भली भाँति कही हुई बात हुक्म, सख़्ती।
ताखी (वि०) दो प्रकार की आँखों वाला, ऐंची पशु।
ताग (सं० पु०) डोर, सूत।
तागतोड़ (सं० पु०) गोटा, किनारी।
तागना (क्रि० स०) सीना, टाँकना, लगाना, मोटी सिलाई का काम करना।
तागपाट (सं० पु०) आभरण विशेष।
तागा (सं० पु०) धागा, डोरा, तन्तु, कता हुआ सूत।
ताज (अ० सं० पु०) बादशाही टोपी, राजकीय चिह्न, राजा का मुकुट, शिखा, तुर्रा, कलँगी, कुर्री, एक स्तूप विशेष, आगरे की एक शाही इमारत, ताजमहल।
ताजक (सं० पु०) ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।
ताज़गी (सं० स्त्री०) नवीनता, ताज़ा।
ताजन (सं० पु०) कोड़ा, चाबुक।
ताजबीबी (सं० स्त्री०) शाहजहाँ की प्यारी मुमताज बेगम जिसके नाम से ताजमहल मशहूर है।
ताजमहल (सं० पु०) एक प्रसिद्ध शाही मकबरा जो आगरे में है।
ताज़ा (फ़ा० वि०) हाल का, हराभरा, स्वस्थ, नया।
ताज़िया (अ०सं० पु०) काग़ज़ की आकृति जो मुहर्रमों में बनाई जाती है।
ताज़ी (सं०पु०) पहाड़ी घोड़ा, कुत्ते की एक जाति।
ताज़ीम (अ० सं० स्त्री०) सत्कार, आदर, स्वीकार, नम्रता दरसाना।
ताज़ीमी (अ० सं० पु०) अधिक प्रतिष्ठित, आदर के योग्य, जिसके लिए बादशाह या राजा भी सम्मान प्रकट करे।
ताटक (सं० पु०) कर्णफल।
तादस्थ (सं० पु०) उदासीनता, सामीप्य, सन्निकट।

ताड़ (सं० पु०) एक वृक्ष विशेष, तालवृक्ष, प्रहार, ध्वनि, हाथ का एक आभरण। [राक्षसी।

ताड़का (सं० स्त्री०) रामचन्द्र के द्वारा मारी जाने वाली

ताड़कारि (सं० पु०) ताड़का का शत्रु, श्रीरामचन्द्र।

ताड़न (सं० पु०) डाट, डपट, मार, प्रहार, दण्ड, घुड़की, गुणन।

ताड़ना (क्रि० स०) मारना, दुख देना, शासित करना। पीटना, हाँकना, हटाना, (सं० स्त्री०) दंड, धमकी, कष्ट शासन।

ताड़नी (सं० स्त्री०) चाबुक, कोड़ा, कशा।

ताड़नीय (वि०) दण्डनीय, मारने के योग्य।

ताड़पत्र (सं० पु०) ताड़ वृक्ष का पत्ता। [वाला।

ताड़बाज़ (वि०) ताड़ने वाला, भाँपने वाला, समझने

तड़ित (वि०) दण्डित, मारा हुआ। [आभूषण विशेष।

ताड़ी (सं० स्त्री०) छोटा ताड़, ताड़ का नशीला रस,

तांडव (सं० पु०) पुरुषों का नाच, शिव का नृत्य, यह नृत्य शिव को अति प्रिय है। वह नाच जिसमें बहुत उछल कूद हो। [विशेष।

तांडवी (सं० पु०) संगीत के चौदह तालों में से ताल

तांडि (सं० पु०) वह शास्त्र जिसके आद्याचार्य तंडि मुनि हैं, नृत्य शास्त्र। [वाला।

तांडी (सं० पु०) सामवेदान्तर्गत, ताण्ड्य शाखा को पढ़ने

तात (सं० पु०) पूज्यगण, गुरु, पिता, पूज्यजन, दुलार वा श्रद्धा, प्रदर्शक शब्द, इस शब्द का प्रयोग छोटे बड़े सभी को सम्बोधित करने के लिए होता है। (वि०) गरम, तपा हुआ, तप्त।

तातगु (सं० पु०) पिता का भाई, चाचा।

तातनी (वि०) उसकी।

तातनौ (वि०) उसका।

तातल (सं० पु०) पिता के समान सम्बन्धी, रोग, पक्वता, लोहे का काँटा, (वि०) गरम, उष्ण, तप्त।

ताता (वि०) गरम, ताप युक्त। [नृत्य की ध्वनि विशेष।

तातार्थेई (सं० स्त्री०) नाच में पैरों के गिरने की गति,

तादवस्थ्य (सं०पु०) उसी प्रकार से, स्थित, वही भाव।

तादर्थ्य (सं० पु०) समान अभिप्राय, उसके प्रयोजन, उसके लिए।

तातील (अ० सं० स्त्री०) छुट्टी, छुट्टी का दिन।

ताते (वि०) उसहेतु, उससे।

तात्कालिक (वि०) उसी समय का, इसी समय का, तुरन्त का, हाल का। [मतलब, मर्म।

तात्पर्य (सं० पु०) उद्देश्य, अभिप्राय, आशय, भाव,

ताथेई (सं० स्त्री०) देखो "तातार्थेई"। [शुमार।

तादाद (अ०सं०स्त्री०) अनुमान, संख्या, गिनती, गणना,

तादृश (वि०) वैसा, उसके समान।

तादृशी (सं० स्त्री०) उसके समान।

तादात्म्य (सं० पु०) तत्स्वरूपता।

तान (सं० स्त्री०) आलाप, ध्वनि, लय का विस्तार, फैलाव, तनाव, खिंचाव। [करना।

तान तोड़ना (क्रि०) परिहास करना, तान की समाप्ति

तानना (क्रि० स०) फैलवाना, तनवाना, एक दूसरे के बराबर कराना।

मुहा०—तान कर = ज़ोर से, पूर्णतया। तान कर सोना = आराम से खूब सोना।

तानपूरा (सं० पु०) एक बाजा विशेष।

तानव (सं० पु०) क्षीणता, कृशता, दुबलापन, पतलापन।

तानसेन (सं० पु०) अकबर बादशाह के समय का एक प्रसिद्ध गवैया जिसके जोड़ का आज तक कोई नहीं हुआ। यह जाति का ब्राह्मण था पहले इसका नाम त्रिलोचन मिश्र था इसे संगीत में बड़ा प्रेम था परन्तु गाना नहीं आता था। जब वृन्दावन के प्रसिद्ध स्वामी हरिदास के यहाँ गया उनका शिष्य हुआ तब संगीत में कुशल हुआ।

ताना (सं० पु०) कपड़े की बुनावट का लम्बा सूत, दरी गलीचे बुनने का करघा, (क्रि० स०) गरम करना, तपाना, तपाकर परीक्षा करना, गलाना।

तानाबाना (सं० पु०) कपड़ा बुनने में लम्बे चौड़े फैलाये हुए सूत, फेरा फेरी, इधर उधर, अदल बदल।

तानारीरी (सं० स्त्री०) साधारण गाना। [को।

तानि (क्रि०) तानकर, खींच कर (सर्व०) तिनको, तिन्ही

तानी (सं० स्त्री०) ताना बिनने का सूत, रागी, गायक।

तान्त्रिक (सं० पु०) तन्त्र शास्त्र जानने वाला, शास्त्रज्ञ, सुपण्डित। [एक ऋषि हो गए हैं।

तान्व (सं० पु०) बेटा, पुत्र, तनु के पुत्र का नाम जो

ताप (सं० पु०) तेज, उष्णता, तपन, गर्मी, अग्नि, ज्वर, हार्दिक दुःख। [ज्वर, बुखार।

तापक (वि०) ताप कर्त्ता, दुःख देने वाला (सं० पु०)

तापतिल्ली (सं० स्त्री०) ज्वर-युक्त प्लीहा रोग, पिलही बढ़ने का रोग।

तापती (सं० पु०) ताप्ती नाम की नदी।

तापत्रय (सं० पु०) तीन ताप (आध्यात्मिक, आधिदैविक आधिभौतिक)। [का एक बाग।

तापन (सं० पु०) जलाना, एक नरक, सूर्य, कामदेव

तापना (क्रि० अ०) गरम करना, आग के सम्मुख बैठ कर अपने को गरम करना।

तापमान (सं० पु०) एक यन्त्र विशेष जिसके द्वारा गर्मी नापी जाती है, गर्मी ज्ञात करने की कल।

तापस (सं० पु०) तपस्या करने वाला, तपस्वी, तमाल पत्र, ईख विशेष, बगला, बक।

तापसवृक्ष (सं० पु०) तापस तरु, हिङ्गोट का पेड़।

तापसी (सं० स्त्री०) तपस्विनी, तपस्वी की स्त्री, तपस्या करने वाली।

तापहीन (वि०)पीड़ा रहित,गर्मी रहित। [मारने का तख़्ता।

तापा (सं० पु०) कुक्कुटालय, मुर्गों का दरबा, मछली

तापिच्छ (सं० पु०) वृक्ष विशेष, तमाल का पेड़, श्याम।

तापित (वि०) ताप युक्त, तपाया हुआ, दुखी, दुखित।

तापी (वि०) तापदाता, दुःख देने वाला, तापयुक्त, तेजवान (सं०पु०) बुद्धदेव, (सं० स्त्री०) सूर्य्यतनया, तापती व यमुना नाम की नदियाँ।

तापीय (सं० पु०) औषध विशेष, सोनामाखी।

तापूस (सं० पु०) तमाल पत्र, तेजपात।

ताप्य (सं० पु०) तापीय धातु माक्षिक,सोनामाखी।

ताफता (सं० पु०) धूपछाँह वस्त्र विशेष।

ताब (फ़ा० सं० स्त्री०) उष्णता, ताप, गरमी, चमक, रोशनी, आभा, सौन्दर्य, शक्ति, मजाल, अधिकार, धैर्य, शान्ति।

ताबड़तोड़ (वि०) लगातार, क्रमशः, बराबर।

ताबे (अ० वि०) अधिकार में, आधीन, वशीभूत, हुक्म मानने वाला, आज्ञा-पालक।

ताबेदार (फ़ा० वि०) नौकर, सेवक, आज्ञाकारी, हुक्म बजा लाने वाला। [टहल।

ताबेदारी (फ़ा० सं० स्त्री०) आधीनता, नौकरी, सेवकाई,

ताम (सं० पु०) ऐब, विकार, चित्तोद्वेग, घबड़ाहट, क्लेश, ग्लानि, घृणा, भयकारी, डरावना, हैरान, परेशान, रोषित, क्रोधयुक्त।

तामचीनी (सं० स्त्री०) तांबा मिला हुआ धातु, धातु विशेष। [कुर्सी की सवारी जिसे कहार उठाते हैं।

तामजान (सं० पु०) एक प्रकार की सज्जित पालकी या

तामड़ा (वि०) ताँबे या उसके समान रंग का एक प्रकार का काग़ज़, गंज, खल्वाट मस्तक, निर्मलाकाश।

तामरस (सं० पु०) कमल, पद्म, एक वर्णवृत्त विशेष, धतूरा, सुवर्ण, ताँबा, सारस। [पौधा।

तामलकी (सं० स्त्री०) भूमिका, आँवला, एक प्रकार का

तामलिप्ती (सं० स्त्री०) ताम्रलिप्ती, एक नगर का नाम जो दक्षिण बंगाल में है, तामलूक। [वाला।

तामस (वि०) तमोगुण युक्त, तमोगुणी, तामसी प्रकृति

तामसिक (वि०) तामस। [बाल छड़, (वि०) तमोगुणी।

तामसी (सं० स्त्री०) रात्रि, दुर्गा, जटामासी, अँधेरी रात,

तामह (अव्य०) उसमें, उस बीच में, उस मध्य में।

तामा (सं० पु०) तांबा। [उस देश की भूमि।

तामिल (सं० स्त्री०) भारतीय दक्षिण की एक जाति, या

तामीली (सं० स्त्री०) सम्पादन, आज्ञा पालन करना।

तामिस्र (सं० पु०) नरक जिसमें सदा घोर अंधकार बना रहता है, क्रोध, गुस्सा, द्वेष, डाह, अविद्या विशेष।

तामेसरी (सं० स्त्री०) गेरू के योग से बना हुआ एक प्रकार का रङ्ग जिसे तामड़ा भी कहते हैं।

ताम्बूल (सं० पु०) नागर बेल का पात, पान।

ताम्बूलिक (सं० पु०) तमोली, पान बेचने वाला।

ताम्बूली (सं० पु०) ताम्बूल की लता, नागर बेल।

ताम्र (सं० पु०) ताँबा, कुष्टरोग विशेष। [करने वाला।

ताम्रकर (सं० पु०) कसेरा, ठठेरा, तांबे का व्योपार

ताम्रकूट (सं०पु०)तम्बाकू का पौधा। [निकाला जाता है।

ताम्र गर्भ (सं० पु०) तूतिया, नीला थोथा, इनसे तांबा

ताम्रचूड़ (सं० पु०) कुकरौंधा, मुर्गा। [टुकड़ा।

ताम्रपत्र (सं० पु०) ताँबे का पत्तर या उसकी चद्दर का

ताम्रपर्णी (सं० स्त्री०) बावली, एक नदी विशेष जो भारत के दक्षिण मद्रास प्रान्त में बहती है, तालाब, तड़ाग।

ताम्रलिप्त (सं० पु०) तमलूक नाम के स्थान को प्राचीन काल में ताम्रलिप्त कहते थे जो बङ्गाल प्रान्त के मेदिनीपुर ज़िले में बसा है।

ताम्रवर्ण (वि०) ताँबे के रंग का, शरीर का चमड़ा, सीलोन वा लंका नामक द्वीप।

तायदाद (सं० पु०) देखो "तादाद"।

तायफ़ा (फ़ा० सं० स्त्री०) नाचने गाने वाला मण्डल, वेश्या, तवायफ़, रण्डी। [बोलना।

तायना (क्रि० अ०) तपाना, गर्म करना, व्यंग वचन

ताया (सं० पु०) देखो "ताऊ"।

तार (सं० पु०) धातुओं का खिंचा हुआ सूत, धातु का धागा, टेलीग्राम, या उसके द्वारा आया समाचार, सूत्र, सिलसिला, क्रम, ब्योंत, व्यवस्था, ठीक नाप, प्रणव, राम के दल का एक वानर, शुद्ध मोती, नक्षत्र, तारा, सितारा, शिव, शङ्कर, विष्णु, नारायण आँख की पुतली, सिद्धि विशेष, एक वर्णवृत्त, संगीत में एक सप्तक (सात स्वरों का समूह) जिसके स्वरों का उच्चारण कंठ से उठ कर कपाल के आभ्यंतर स्थानों तक होता है।

मुहा०—तार दबकना=गोटे पट्ठे के वास्ते तार पीट कर चौड़ा करना। तार घर=वह स्थान जहाँ चुम्बक और बिजली की शक्ति द्वारा ख़बर आती हो। तार तार करना=अलग अलग करना, उधेड़ना, छिन्न भिन्न करना, नोच कर सूत पृथक् करना। तार तार होना=धज्जियाँ अलग अलग हो जाना, बहुत कटना। तार बँधना या तार न टूटना=क्रमशः लगा रहना। तारबतार=अलग अलग, अक्रम। तार बैठना=सुविधा होना।

तारक (सं० पु०) उद्धारक, मन्त्र विशेष, तारा, नेत्र, आँख की पुतली, इन्द्र का एक शत्रु, तारने वाला, वर्णवृत्त विशेष, भिलावाँ, खेने वाला, नाविक।

तारकब्रह्म (सं० पु०) राम का छः अक्षर का मंत्र, राम-तारक मंत्र, "ओं रामाय नमः"। [व्यक्ति।

तारकश (फ़ा० सं० पु०) तार खींचने या बेचने वाला

तारकशी (फ़ा०सं०पु०) तार बनाने या बेचने का काम।

तारका (सं० स्त्री०) तारा, बालि की पत्नी, तारा नक्षत्र, नाराच नाम का छन्द विशेष, ताड़िका, ताड़का।

तारकारि (सं० पु०) तारकासुर का शत्रु, कार्त्तिकेय, षडानन। [वर्णन शिवपुराण में आया है।

तारकासुर (सं० पु०) दानव विशेष, एक असुर जिसका

तारकित (वि०) तारों युक्त, तारों से सज्जित।

तारकी (वि०) तारका युक्त, तारा सहित।

तारकूट (सं० पु०) ताम्रकूट, रूपा, पीतल।

तारकेश्वर (सं० पु०) एक महादेव का नाम है जो कलकत्ता प्रान्त में हैं, रस औषधि विशेष, शिव, शङ्कर लिङ्ग। [आती जाती हों।

तारघर (सं० पु०) स्थान विशेष जहाँ से तार की ख़बरें

तार टूटना (क्रि०) कारबार नष्ट हो जाना, प्रवेश बन्द होना।

तारण (सं०पु०) तारने का कार्य, निस्तार, मोक्ष, उद्धार।

तारणा (क्रि०) पार करना, उद्धार करना, उबारना।

तारणी (सं० स्त्री०) कश्यप ऋषि की एक पत्नी जो याज और उपयाज की माता कही जाती है। [योग्य।

तारणीय (सं० पु०) तारण करने योग्य, उद्धार करने

तारतण्डुल (सं० पु०) सफ़ेद ज्वार।

तारतम्य (सं० पु०) परस्पर न्यूनाधिक सम्बन्ध, सिल-सिला, थोड़ा बहुत भेद, गुण, परिणाम आदि का परस्पर मिलान। [सिद्ध विशेष।

तारतार (वि०) अलग अलग, पृथक् पृथक्, (सं० पु०)

तारतोड़ (सं० पु०) कारचोबी, कशीदा का एक भेद।

तारन (सं० पु०) देखो "तारण"।

तारना (क्रि०स०) पार करना, उद्धार करना, सांसारिक क्लेशों से छुटाना, सद्गति दान करना, मुक्त करना, मोक्ष देना।

तारपतार (वि०) तितर बितर, छिन्न भिन्न, फटा टूटा।

तारपीन (सं० पु०) चीड़ का तेल।

तारबर्क़ी (अ० सं० पु०) बिजली की शक्ति द्वारा पहुंचाने का काम। [का धर्म, चञ्चलता।

तारल्य (सं०पु०) अस्थिरता, जलादि द्रव पदार्थ बहने

तारा (सं० पु०) नक्षत्र, सितारा, तारा।

मुहा०— तारे गिनना=चिन्ता करना, बेचैनी या आसरे में रहना। तारा जोड़ना=अति कठिन काम करना। तारा चमका—भाग्य खुला, तारे दिखाई दिए। तारा हो जाना=अधिक दूर चला जाना जो दिखाई भी न पड़े, ऊँचा चला जाना। तारा टूटा=आश्चर्यजनक कार्य हुआ।

(स्त्री०) दश महाविद्याओं में से एक, जैन की एक शक्ति, पञ्च कन्याओं में से एक, बालि की स्त्री, शिर बाँधने का चीरा।

तारागण (सं० पु०) नक्षत्र-समुदाय, नक्षत्रों का समूह।

ताराधिप (सं० पु०) शशि, चन्द्रमा, बृहस्पति, अङ्कुर, महादेव, बालि और सुग्रीव।

तारापति (सं० पु०) चन्द्रमा, बृहस्पति, बालि।
तारापथ (सं० पु०) आकाश, गगन, नभोमण्डल।
तारापीड (सं० पु०) चन्द्रमा, विधु, निशाकर।
ताराबाई (सं० स्त्री०) महाराज शिवाजी की पुत्रवधू और राज राम की स्त्री थी पति के १७०० ई० में मरने के बाद गद्दी पर बैठी और १७१३ ई० में परलोक की यात्रा की। [आतशबाजी विशेष।
तारा-मण्डल (सं० पु०) नक्षत्र-समूह या उनका घेरा,
तारिका (सं०स्त्री०) ताली रस, ताड़ी, आँखों की पुतली।
तारिणी (सं० स्त्री०) दश महा विद्या में दूसरी महा विद्या, उद्धार करने वाली स्त्री। [समाधि, ध्यान।
तारी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया, निद्रा,
तारीख़ (अ० सं० स्त्री०) अंग्रेज़ी मासों की तिथि।
तारीफ़ (अ० सं० स्त्री०) परिभाषा, विवरण, लक्षण, प्रशंसा, बखान, परिचय।
तारु (सं० पु०) तालू।
तारुण्य (सं० पु०) युवावस्था, जवानी।
तार्किक (सं० पु०) तर्कशास्त्र को जानने वाला, चतुर।
तार्क्ष्य (सं० पु०) कश्यप और उनके पुत्र गरुड़।
ताल (सं०पु०) हथेली या हथेलियों का शब्द, ताली, नाच में हाथों द्वारा भाव बताने की गति विशेष, हरताल, चश्मे का पत्थर या काँच, ताड़ का फल या उसका पेड़, नरक विशेष, तालाब, जलाशय, मजीरा आदि बाजा विशेष, एक नाप, महेश्वर, शङ्कर।
तालक (सं० पु०) आगुल, सिटकिनी, बिल्ली।
तालकूटी (सं० पु०) झाँझ बजा कर भजन गाने वाला।
तालकेतु (सं० पु०) जिसकी पताका पर ताड़ के वृक्ष का चिह्न हो, भीष्म, बलराम।
तालखजूरी (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष, दुपहरिया वृक्ष।
तालध्वज (सं० पु०) बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई।
तालपर्ण (सं० पु०) कपूर, कचरी। [साग।
तालपर्णी (सं० स्त्री०) सौंफ़, कपूर, कचरी, सोया नाम का
तालबन(सं०पु०)वह स्थान जहाँ ताड़ के पेड़ अधिक हों।
तालबैताल (सं० पु०) दो देवता या यक्ष।
तालमखाना (सं० पु०) एक फल विशेष जो औषधि के काम में आता है। [मिलान, निश्चय, संयोग।
तालमेल (सं० पु०) ठीकठाक, उपयुक्त, ताल सुर का
तालवृंत (सं० पु०) ताड़ के पत्ते का पंखा, एक प्रकार का सोम। [किया जाय।
तालव्य (वि०)तालु सम्बन्धी, जिनका उच्चारण तालु से
ताला (सं० पु०) लोहे य. पीतल का वह यन्त्र जिसके लगाने पर चोरी का भय जाता रहे, जंदरा, कुफ़ुल।
तालाङ्क (सं० पु०) बलदेव, आरा, एक साग, पुस्तक, महादेव। [बन्द करने का यन्त्र।
तालकुंजी (सं० स्त्री०) ताला ताली, किवाड़ या बक्स
तालाब (सं० पु०) जलाशय, तड़ाग।
तालिका (सं० स्त्री०) चाभी, कुञ्जी, ताली, ऊपर लिखा हुआ वस्तु-क्रम, सूची, चपत, मुसली, मजीठ, ताड़ी, तारी, अरहर, ताम्रवल्ली, मेहराब के नीचे का भाग, ताड़ का मद्य, एक वर्णवृत्त, दोनों हथेलियों की ध्वनि या मारने की क्रिया, थपेड़ी करतालध्वनि, तलैया, पाबन्दी, बीच की उँगली का पोरुआ।
ताली (सं० स्त्री०) कुंजी, चाभी, लोहे की कील जिससे ताला खोला और बन्द किया जाता है, दोनों हथेलियों की आवाज़।
मुहा०—ताली पीटना=हँसी उड़ाना। ताली बज जाना=उपहास हो जाना। एक ओर से ताली नहीं बजती=इकतरफा प्रेम नहीं होता। ताली न पिटवा=हँसी न करा।
तालीक़ा (अ० सं० पु०) अर्सी, कुर्की, नीलाम किए हुए माल की सूची, राज द्वारा छीना हुआ माल।
तालीम (अ० सं० स्त्री०) शिक्षा, नसीहत, उपदेश।
तालीश (सं० पु०) तेजपात नाम का पौधा।
तालु (सं० पु०) तलुवा, तालू।
तालुकंटक (सं० पु०) तालू में पैदा होने वाला रोग जो प्रायः बालकों को होता है। [से तालू पक जाता है।
तालुपाक (सं० पु०) एक प्रकार का रोग जिसमें गरमी
तालुशोष (सं० पु०) तालू सूख जाने वाला रोग।
तालेवर (वि०) धनी, धनाढ्य, दौलतमन्द, मालदार।
ताव (सं० पु०) किसी को गर्म करने के निमित्त पहुँचाई हुई गरमी, काग़ज़ का तख़्ता, जोश।
मुहा०—ताव आना=समय आना, आवश्यकतानुसार गरम होना। ताव खाना=आँच में गरम होना, चिढ़ना, द्वेष मानना। ताव खा जाना=अधिक आँच के कारण जल कर ख़राब हो जाना। ताव देना=अग्नि पर रखना। मूछों पर ताव देना=

सफलता का अभिमान करना, पराक्रम के घमण्ड में मूँछ ऐंठना। ताव मारा जाना=समय चूक जाना। ताव दिखाना=बिगड़ना, क्रोधावस्था में अकड़ना, आँख दिखाना। ताव चढ़ना=अति इच्छा होना। ताव पर ताव देना=अधिक क्रोधित करना।

तावत् (क्रि० अ०) उतनी देर तक, तब तक, उस समय तक, उतने वक्त तक।

तावना (क्रि० स०) तपाना, गरम करना, पिघलाना, गलाना, जलाना, क्रोधित करना, दुख देना।

तावभाव (सं० पु०) सुअवसर, मौक़ा, (वि०) हलका, थोड़ा सा, ज़रा सा, अल्प।

तावर (सं० स्त्री०) ताप, दाह, जलन, बुख़ार, ज्वर।

तावरो (सं० पु०) घाम, धूप, ताप, दाह, सूरज का तेज, दहक, गर्मी की विकलता, चक्कर, घबड़ाहट, मूर्छा, बेहोशी। [हड़बड़ी, जल्दी।

तावल (सं० स्त्री०) शीघ्रता, उतावलापन, घबड़ाहट,

तावान (फ़ा० सं० पु०) सज़ा, दण्ड, डाँट, बदला, वह दण्ड जो हानि पूर्ण करने को लिया जाता है।

तावीज़ (अ० सं० पु०) आभरण विशेष, धातु का वह खोखला जिसमें यंत्र, मंत्र रख के पहनते हैं।

ताश (सं० पु०) दफ़्ती के टुकड़े पर लपेटा हुआ धागा, कामदार एक प्रकार का रेशम, खेलने का पत्ता।

तासा (सं० पु०) बाजा विशेष।

तासीर (अ० सं० स्त्री०) गुण, असर, प्रभाव।

तासु (सर्व०) उसकी, उसका।

तासूँ (सर्व०) उससे।

तासों (सर्व०) देखो "तासूँ"। [भी।

ताहम (फ़ा०अव्य०) तो भी, फिर भी, तिस पर भी, तब

ताहि (सर्व०) उसे, उसको।

ताहिरी (सं० स्त्री०) भोजन विशेष, चावल और बरी।

ताहीं (अव्य०) देखो "तईं"।

तितली (सं० स्त्री०) इमली।

तिआ (सं० स्त्री०) खेलने के पत्तों में से एक, जुए का एक दांव, स्त्री, वल्लभा, पत्नी, भार्या, जोरू, औरत।

तिआह (सं० पु०) तृतीय विवाह या उसका करने वाला पुरुष।

तिकड़ी (सं० स्त्री०) तीन कड़ियों वाली, चारपाई आदि की वह बुनावट जिसमें तीन रस्सियाँ प्रति बार उठाई जाती हैं। [शब्द।

तिक तिक (सं० पु०) गाड़ी आदि के बैल चलाने का

तिकानी (सं० स्त्री०) पहिए के रोक के लिए लगी हुई तीन कोने की लकड़ी।

तिकुरी (सं० स्त्री०) तीसरा, तिहाई, एक प्रकार का यंत्र जिससे यज्ञोपवीत का सूत बटा जाता है।

तिकोना (वि०) तीन कोनों वाला, जिसमें तीन कोने हों, (सं० पु०) समोसा, त्रिखूंट, तिकोना, एक नमकीन पकवान, नक्काश के काम का एक औज़ार, (स्त्री०) त्योरी, भृकुटी, भ्रंगी।

तिकोनिया (वि०) देखो "तिकोना"।

तिक्का (सं० पु०) मांस का छोटा टुकड़ा।

तिक्ख (वि०) तिक्त, तीखा, भला, चोखा, तीव्र, तेज, चतुर, चालाक, तीव्रबुद्धि, बुद्धिमान्।

तिक्त (वि०) तीत, कटु, कड़ुआ, (सं० पु०) रस विशेष, पित्तपापड़ा, चिरायता, कुटज, गुरुच, सुगन्ध बाला।

तिक्तक (सं० पु०) चिरायता, परवर, परवल, कृष्ण खैर, नीम, कुरैया।

तिक्तका (सं० स्त्री०) चिरपोटा, कटु तुम्बी।

तिक्तकाण्ड (सं० पु०) चिरायता।

तिक्तगन्धा (सं० स्त्री०) वाराही कन्द, वराहक्रांता।

तिक्तघृत (सं० पु०) कड़ुवी औषधियों से बनाया हुआ घी, जो कि अनेक रोगों पर दिया जाता है।

तिक्तचक्रा (सं० स्त्री०) कुटकी।

तिक्ततण्डुला (सं० स्त्री०) पिप्पली, पीपल।

तिक्तपर्वा (सं० पु०) मुलैठी, अमृता गिलोय, गुरुच, हुलहुल, दूब नामक घास।

तिक्तफला (सं० स्त्री०) खरबूज़ा, भटकटैया, कचरी।

तिक्ता (सं० स्त्री०) कुटकी, यवतिक्तालता, पाठा, ख़रबूज़ा।

तिक्ष (वि०) धारदार, पैना, तीखा, तेज, चटपटा।

तिख (वि०) तीन बार का जोता हुआ तिवहा (खेत)।

तिखरा करना (क्रि०) तीन बार खेत को जोतना, तीन बार स्वीकार करना।

तिखाई (सं० स्त्री०) तीखापन, तीक्ष्णता, कटुता, तेजी।

तिखारना (क्रि० स०) त्रिवाचा कराना, किसी विषय को निश्चय के अर्थ तीन बार पूँछना।

तिखूँटा (वि०) तिकोना, तीन कोनों वाला।

तिगुना (त्रि०) त्रिगुणित, तीन बार अधिक, तीन गुना।

तिग्म (वि०) उग्र, तेज, तीक्ष्ण, खरा, (सं० पु०) वज्र, एक क्षत्रिय विशेष, पिप्पली।
तिग्मता (सं० स्त्री०) तेज़ी, तीक्ष्णता।
तिग्मदीधिति (सं० पु०) भास्कर, सूर्य।
तिग्मांशु (सं० पु०) देखो "तिग्मदीधिति"।
तिघरा (सं० पु०) दूध दही रखने का बर्तन, मटकी।
तिच्छन (वि०) देखो "तीक्ष्ण"। [ज्वर।
तिजरा (सं० पु०) तिजारी, तीसरे दिवस आने वाला
तिजवास (सं० पु०) उत्सव विशेष जो स्त्री के तीन मास की गर्भवती होने के उपलक्ष में कुटुम्बी मनाते हैं।
तिजहरिया (सं० पु०) अपराह्न, तीसरा पहर, दोपहर के बाद का एक पहर, अर्थात् तीन बजे तक का समय।
तिजारत (अ० सं० स्त्री०) व्यापार, वाणिज्य, उद्योग, धन्धा, रोज़गार। [ज्वर।
तिजारी (सं० स्त्री०) तीसरे दिन शीत से आने वाला
तिजिल (सं० पु०) चन्द्रमा, राक्षस। [बेहोश।
तिड़ीबिड़ी (वि०) छितराया हुआ, तितर बितर,
तिणका (सं० पु०) तृण, घास, तिनका। [तरफ़।
तित (क्रि०वि०) तहाँ, तहाँ, वहाँ, उधर, उस ओर, उसी
तितना (वि०) उतना, उसके समान, उसके बराबर।
तितर बितर (वि०) व्यवस्था रहित, फैला हुआ, तिड़ीबिड़ी, बेहोश, अंटसंट।
तितरी (सं० स्त्री०) तितली। [परवाला कीट।
तितला (सं० स्त्री०) कीट विशेष, लघुकीट, रंग विरंग
तितली (सं० स्त्री०) एक उड़ने वाला सुन्दर कीट, छोटा कीड़ा।
तितलौआद (सं० पु०) कटु कद्दू, कड़वा कद्दू।
तितलौका (सं० स्त्री०) देखो "तितलौआ"।
तितारी (सं० स्त्री०) तीन तार की, तीन सूत्र वाली।
तितिंबा (सं० पु०) ढकोसला, पाखण्ड, दिखावा, शेष, उपसंहार। [क्षमावान्।
तितिक्ष (वि०) क्षमाशील, सहन करने वाले, धैर्यशील,
तितिक्षक (सं० पु०) सहनशील, सहिष्णु, क्षमी।
तितिक्षा (सं० स्त्री०) धैर्य, धीरज।
तितिक्षु (वि०) शान्त, सहिष्णु, क्षमावान, क्षमाशील, तितिक्षक।
तितिम्मा (अ० सं० पु०) शेषांश, बचा हुआ भाग, परिशिष्ट, किसी ग्रंथ के अंत में लगाया हुआ प्रकरण।

तितीर्षा (सं० स्त्री०) तरणेच्छा, तर जाने की इच्छा, तैरने की इच्छा, चाह। [भिलाषी।
तितीर्षु (वि०) मोक्षाभिलापी, तरणेच्छुक, उद्धारा-
तितै (वि०) तितने, उतने (संख्या वाचक)।
तितेक (वि०) उतना, उतने।
तितो (वि०) उतना, उस परिमाण का।
तित्तिर (सं० पु०) तीतर नामक पक्षी, यजुर्वेद की तैत्तिरीय नामक शाखा, यास्क मुनि के शिष्य उक्त शाखा को चलाने वाले थे, वैशम्पायन के वे शिष्य जिन्होंने याज्ञवल्क्य के उगले हुए यजुर्वेद को चुगा था।
तिथ (सं० पु०) आग, कामदेव, काल, वर्षा ऋतु।
तिथि (सं० स्त्री०) मिती, चन्द्रमा की कलानुसार गणना होने वाले दिन, तारीख़। [का घट जाना।
तिथिक्षय (सं० पु०) तिथि लोप, तिथि हानि, तिथि
तिथिपत्र (सं० पु०) पत्रा, पञ्चांग जंत्री, तारीख़ देखने की किताब। [द्वार हों।
तिद्रा (सं०पु०) तीन द्वार का दालान, घर जिसमें तीन
तिदरी (सं० स्त्री०) तीन दरवाज़े या खिड़कियों वाली कोठरी। [विशेष।
तिदारा (सं० पु०) जल के किनारे रहने वाले पक्षी
तिधर (वि०) उस ओर, तिस ओर, उधर।
तिधारा (सं० पु०) सेहुड़, थूहड़।
तिन (सर्व०) तिस का बहुवचन, (सं०पु०) तृण, तिनका, घासफूस, अल्प, छोटा।
तिनकना (क्रि० अ०) बिगड़ना, रोषित होना, चिड़चिड़ाना, झल्लाना, अप्रसन्न होना, नाराज़ होना, चिढ़ना, रूठना, फड़फड़ाना। [का सूखा टुकड़ा।
तिनका (सं० पु०) तृण, तृण का छोटा टुकड़ा, घासफूस
मुहा०—तिनका तोड़ना = अलग होना, सम्बन्ध छोड़ना, प्यार करना, बलाय लेना। तिनके चुनना = अचेत होना, पागल बनना, व्यर्थ काम करना। तिनके का सहारा = थोड़ी सहायता, अलग आश्रय। तिनके को पहाड़ करना = छोटे को बड़ा करना, एक बात की बहुत सी बातें बनाना। दांतों में तिनका दबाना = प्रार्थना करना, गिड़गिड़ाना, क्षमा माँगना, शरमिन्दा होना। तिन की ओट पहाड़ = छोटी बात में महान तत्व होना। सिर से तिनका उतारना = थोड़ा उपकार करना।

तिनगना (क्रि० अ०) देखो "तिनकना"।
तिनधरा (सं० स्त्री०) तीन धार वाला या तीन धार की रेती जो आरी को उत्तम करने के काम में आती है।
तिनपहल (वि०) तिपहला, तीन पहलों वाला, जिसके तीन किनारे हों।
तिनपहला (वि०) देखो "तिनपहल"। [होना है।
तिनिष (सं० पु०) वृक्ष विशेष जो शीशम की जाति का
तिन्तिड (सं० स्त्री०) इमली, कुचिया।
तिन्द (सं० पु०) वृक्ष और फल विशेष।
तिन्दुक (सं० पु०) तमाल वृक्ष, तेंदुवा।
तिन्दुला (सं० स्त्री०) औषध विशेष, पीपर।
तिन्नी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का जंगल में उत्पन्न होने वाला धान, नीवी, कुकन्दी।
तिन्ह (सर्व०) देखो "तिन"।
तिपड़ा (सं० पु०) दोनों वैसरों के बीच में रहने वाली कामखाब बुनने वालों के करघे की लकड़ी।
तिपल्ला (वि०) जिसमें तीन पल्ले हों, तीन पार्श्व वाला, तीन किनारे का या तीन तागे का।
तिपाई (सं० स्त्री०) तीन पैरों वाली बैठने की चौकी, पानी रखने की तिनपायी, टिकटी, तिगोड़ी।
तिपाड़ (सं० पु०) जिसमें तीन किनारे हों या जो तीन पाट जोड़ कर बनाया गया हो।
तिपैरा (सं० पु०) बड़ा कूप जिस पर तीन घाट हों, तीन चरसों के एक साथ चलाने के हों। [घर या कोठा।
तिबारा (सं० पु०) तीन बेर, तीसरी वार, तीन द्वार का
तिबास (वि०) तीसरी बार वाला उतरा मद्य, तीसरी बार, तीन दरवाज़ों वाला मकान।
तिबासी (वि०) जिसे बनाए हुए तीन दिन हो गए हों ऐसा खाद्य पदार्थ।
तिब्बत (सं० पु०) हिमालय के उत्तर में बसा हुआ एक देश विशेष, यह त्रिविष्टप का अपभ्रंश है।
तिब्बती (वि०) तिब्बत के निवासी, या वहाँ की भाषा, तिब्बती पुरुष की औरत, तिब्बत की पैदा स्त्री।
तिमंजिला (वि०) तिखाना, तीन खण्डों वाला, जिसके ऊपर क्रमशः तीन भाग हों।
तिमासी (सं० स्त्री०) तीन मासे का मान, चालीस जौ की तौल जो पहाड़ी देशों में प्रचलित है।
तिमिंगिल (सं० पु०) ह्वेल नाम की मछली, एक द्वीप का नाम या उस द्वीप का रहने वाला।
तिमि (सं० पु०) समुद्र में रहने वाला मछली के आकार का एक बड़ा जन्तु। [हीन, भीगा, तर।
तिमित (वि०) स्तिमित, स्थिर, निश्चल, अचल, स्तब्ध-
तिमिर (सं० पु०) तम, अंधकार, ज्योति का मन्द हो जाना, नेत्रों का रोग विशेष, एक वृक्ष विशेष।
तिमिष (सं० पु०) ककड़ी, फूट, सफ़ेद कुम्हड़ा।
तिमी (सं० स्त्री०) दक्ष की कन्या, कश्यप की स्त्री, तिमि नाम का मत्स्य।
तिमुहानी (सं० स्त्री०) वह जगह जहाँ से तीन ओर को मार्ग गया हो या जहाँ तीन फाटक हों, तीन तरफ़ से आकर मिलने वाली तीन नदियों का स्थान।
तिय (सं० स्त्री०) औरत, नारी, त्रिया। [पुत्र।
तियतरा (वि०) तीन बेटियों के बाद का पैदा हुआ
तियला (सं० पु०) नारियों का पहिनावा या स्त्रियों के वस्त्र। [होना, चड़चड़ाना।
तिरकना (क्रि० अ०) तड़कना, अपने आप फटना, दरार
तिरकोना (वि०) त्रिकोण, तीन कोने की वस्तु, तीन कोनिया।
तिरखा (सं० स्त्री०) पियासा, प्यासा।
तिरखित (वि०) तृषित, दुःखी, क्लेशित। [का अस्त्र।
तिरखूँटी (सं० स्त्री०) त्रिकोण, अस्त्र विशेष, तीन कोने
तिरछा (वि०) टेढ़ा, मेढ़ा, जो सीधा न हो।
मुहा०—बाँका तिरछा = छैल छबीला। तिरछी टोपी = टेढ़ी टोपी अर्थात् एक ओर को झुकी हुई टोपी। तिरछा बचन = टेढ़ी बात। तिरछी चितवन = नाराज़ी या बिना सिर फेरे बग़ल को देखना।
तिरछाना (क्रि० अ०) तिरछा होना, टेढ़ा होना।
तिरछापन (सं० पु०) टेढ़ा या तिरछा होने का भाव।
तिरछी (वि०) टेढ़ी, बाँकी।
तिरछौंहा (वि०) कुछ टेढ़ा या तिरछा, जो थोड़ा तिरछापन लिए हो। [के साथ।
तिरछौंहे (वि०) तिरछेपन से, वक्रता से, तिरछेपन
तिरतिराना (क्रि०) रिसाना, झिरझिराना।
तिरना (क्रि० अ०) पानी पर आना या ठहरना, डूबने पर ऊपर आना, तैरना, पार होना, मुक्त होना, तरना, छूटना, उतरना।
तिरपटा (वि०) टेढ़ी दृष्टि वाला, ऐंचाताना, भेगा

तिरपद (सं० पु०)
तिरपदी (सं० स्त्री०) } तिपाई, तीन पैर की ऊँची चौकी।

तिरपन (वि०) पचास और तीन, पचास से तीन अधिक, (सं० पु०) पचास और तीन की संख्या का योग अथवा पचास और तीन की सूचना देने वाला अङ्क विशेष, ५३।

तिरपाई (सं० स्त्री०) तीन पावों वाली ऊँची चौकी, [तिपाई।

तिरपाल (सं० पु०) रोगन चढ़ा हुआ कनवस, राल चढ़ा हुआ टाट, फूस या सरकंडों के लम्बे पूले।

तिरपौलिया (सं० स्त्री०) जहाँ से तीन मार्ग गए हों।

तिरफला (सं० पु०) त्रिफला।

तिरबेनी (सं० स्त्री०) त्रिवेणी।

तिरभङ्गा (वि०) टेढ़ा मेढ़ा, तिरछा, बांका।

तिरभङ्गी (सं०पु०) छन्द विशेष, श्रीकृष्ण का एक नाम।

तिरमिरा (सं० पु०) दुर्बलता के कारण दृष्टि का एक दोष जिसमें प्रकाश के सामने दृष्टि नहीं ठहरती कभी तारे से दीखते हैं अंधेरा प्रतीत होता है। दुर्बलावस्था में तारों का प्रकाश कम दिखाई देना, पानी के ऊपर चिकनाईदार छींटे जो चमकते हैं।

तिरमिराना (क्रि० अ०) चकाचौंधा, प्रकाश के सामने दृष्टि का न ठहरना, चौंधा, तीव्र तेज से नेत्रों का चौंधा जाना।

तिरलोक (सं० पु०) तीनों लोक, त्रिलोक।

तिरवाह (सं० पु०) सरिता तट की भूमि, नदी का किनारा (वि०) किनारे किनारे, तट से, किनारे से।

तिरश्चीन (वि०) बुरा, कुटिल, टेढ़ा, तिरछा, पाजी।

तिरस (वि०) टेढ़ापन से। [तीन अधिक।

तिरसठ (वि०) साठ और तीन का योग या साठ से

तिरस्करिणी (सं० स्त्री०) ओट, आड़, चिक, परदा, मनुष्य को अदृश्य कर देने वाली विद्या।

तिरस्कार (सं० पु०) निरादर, अपमान, अप्रतिष्ठा।

तिरस्कृत (क्रि०) अपमानित, अनादृत, छुपा हुआ, तन्त्र के अनुसार वह मंत्र जिसके मध्य में दकार हो और मस्तक पर दो कवच और अस्त्र हों।

तिरस्क्रिया (सं० स्त्री०) तिरस्कार, अपमान, अनादर, वस्त्र, पहिनावा, ढक्कन।

तिरहुत (सं० पु०) भारतीय सुप्रसिद्ध मैथिल देश, मिथिला प्रान्त, वर्तमान मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिले का भाग।

तिरहुतिया (वि०) तिरहुत सम्बन्धी, वहाँ की भाषा तिरहुत का निवासी। [अधिक।

तिरानबे (वि०) नब्बे और तीन की संख्या, नब्बे से तीन

तिराना (क्रि०अ०) पानी पर तैरना, पार होना, उबरना।

तिराव (सं० पु०) पैराव, थाह, हेलाव।

तिरासना (क्रि० स०) त्रास दिखाना, दुःख देना, डराना, भयभीत करना।

तिरासी (वि०) अस्सी से तीन अधिक या उसे प्रकट करने वाला अङ्क। [विशेष।

तिराहा (सं० पु०) तीन ओर को मार्ग जाने वाला स्थान

तिरिया (सं०स्त्री०) देखो "तिय"। (सं०पु०) नैपाल में पैदा होने वाला एक बाँस विशेष।

तिरिया चरित्र (सं० पु०) स्त्रियों का छल, प्रपञ्च।

तिरीबिरी (वि०) छिन्नभिन्न, तितर बितर।

तिरेंदा (सं० पु०) मछली मारने की बंसी में कटिया से ऊपर बँधी हुई लकड़ी जो पानी पर तैरती रहती है और जिसके डूबने से मछली के फँसने का पता लगता है। [गुप्त, ढकाव, छिपाव।

तिरोधान (सं० पु०) लोप, गोपन, अन्तर्धान, दर्शन

तिरोधायक (सं० पु०) आड़ करने वाला।

तिरोभाव (सं० पु०) देखो "तिरोधान"। [हित।

तिरोभूत (वि०) गुप्त, लोप, छिपा हुआ, गायब, अन्त-

तिरोहित (वि०) देखो "तिरोभूत"।

तिरौंछा (सं० पु०) देखो "तिरछा"।

तिर्मिरा (वि०) चञ्चल, अस्थिर, उद्विग्न चित।

तिर्मिराना (क्रि०) चौंधियाना, लहकना, व्याकुलता से हाथ पैर धुनना, पानी पर तेल का बूँद फैलना।

तिर्मिराहट (क्रि०) चकाचौंधा, व्याकुलता, छटपटाहट।

तिर्मिरी (क्रि०) चकर घुमरी।

तिर्यक् (वि०) तिरछा, टेढ़ा, बाँका, मनुष्य के अतिरिक्त सभी पशु पक्षी तिर्यक कहलाते हैं।

तिर्यक पति (सं० पु०) सिंह, शार्दूल।

तिर्यक्योनि (सं० स्त्री०) पशु पक्षी आदि।

तिर्यक्स्रोता (सं० पु०) पशुपक्षी आदि, ब्रह्मा का आठवाँ सर्ग।

तिलंगा (सं० पु०) अंग्रेज़ी सेना का देशी सिपाही, एक प्रकार का पतङ्ग या कनकौआ।

तिलंगी (वि०) तैलंग देश वाली।

तिल (सं० पु०) एक प्रकार का तेल निकालने वाला पदार्थ, आंख की पुतली की बिन्दी।

मुहा०—तिल की ओट पहाड़=छोटी वस्तु की आड़ में बड़ी वस्तु। तिल का ताड़ करना=छोटे को बड़ा करना। तिलचावले बाल=सफ़ेद और काले केश। तिलभर=थोड़ा सा, ज़रा सा, रुपया भर।

तिलक (सं० पु०) चन्दन के लगाए हुए चिह्न, गद्दी, बिवाह का सम्बन्ध स्थिर करने का नियम, माथे पर पहिनने का स्त्रियों का भूषण, श्रेष्ठ पुरुष, ग्रन्थ की अर्थ-बोधक व्याख्या या टीका, सेंधा या सोंचर नमक, एक प्रकार का ज़नाना कुर्त्ता जिसे मुसलमान स्त्रियाँ पहनती हैं, मूंज का फूल, घोड़े की एक जीन लोध का पेड़, गीता पर विस्तृत टीका करने वाले आधुनिक महात्मा।

मुहा०—तिलक देना=तिलक के साथ धन देना। तिलक भेजना=तिलक की सामग्री भेजना। राज तिलक=राज्याधिकार, गद्दी। तिलक लगाना=चन्दनादिक सुगन्धित वस्तु लेपन करना।

तिलकना (क्रि० अ०) देखो "तिरकना"।

तिलकमुद्रा (सं० पु०) चन्दन आदि का टीका या चक्र आदि छापा जो सम्प्रदायों के अनुसार उनके अनुयायी लगाते हैं।

तिलकुट (वि०) कुटा हुआ तिल, तिल का चूर्ण जिसमें [मीठा मिला हुआ हो।

तिलचटा (सं० पु०) झींगुर विशेष, चमड़ा।

तिलचट्टा (सं० पु०) कीट विशेष, तैल चोरिका।

तिलचावली (सं० स्त्री०) मिला हुआ तिल और चावली, एक प्रकार का चबेना।

तिलचूर्ण (सं० स्त्री०) तिल कुट, मोदक विशेष, कुटा [हुआ तिल।

तिलड़ा (वि०) तीन लड़ों का, जिसमें तीन लड़ हों, तिलरा, पत्थर गढ़ने वालों का एक औज़ार विशेष।

तिलड़ी (सं० स्त्री०) तिन लरी, तिलरी, तीन लरों की वह माला जिसके बीच में एक जुगनू लटकती है।

तिल तैल (सं० पु०) तिल का तेल।

तिलधेनु (सं० स्त्री०) तिल की बनी हुई गाय।

तिलपर्णी (सं० स्त्री०) चन्दन।

तिलपिञ्ज (सं० पु०) तिल का पछोड़।

तिलपिष्टक (सं०पु०) तिल की खली, तिल का उबटन।

तिलबर (सं० पु०) पक्षि विशेष।

तिलभेद (सं० पु०) पोस्त का पौधा, पोस्त का बिरवा।

तिलमिल (सं० स्त्री०) चौंध, चकाचौंध, तिलमिलाहट।

तिलमिलाना (क्रि० अ०) देखो "तिरमिराना"।

तिलमिलाहट (सं० स्त्री०) चकाचौंधसी, तिरमिराहट।

तिलरा (वि०) तीन लड़ों का या टेढ़ी लाइन बनाने वाली संगतराशों की छेनी।

तिलरी (सं० स्त्री०) देखो "तिलड़ी"।

तिलवा (सं० पु०) तिलों का लड्डू।

तिलस्म (अ० सं० पु०) चमत्कार, जादू, इन्द्रजाल आश्चर्यजनक व्यापार, करामात।

तिलहन (सं० पु०) वे पौधे जिनकी फलियों में से तेल निकलता है, सरसों, अरण्डी, तिल आदि।

तिलहा (वि०) तेल के समान चिकना, तेलिया, तेली।

तिला (सं० पु०) तेल विशेष जो औषधियों द्वारा बना कर मूत्रेन्द्रिय के दोषों को दूर करने के लिए बनाया जाय, लिङ्ग-लेपन तेल।

तिलाई (सं० स्त्री०) सोनहली छोटी कराही।

तिलाक़ (अ० सं० स्त्री०) पति और पत्नी का सम्बन्ध विच्छेद, मर्द औरत का नाता टूटना।

तिलाञ्जलि (सं० पु०) तिलाम्बु जो देव ऋषि और पित्रों के अर्थ दिया जाता है।

तिलावा (सं० पु०) तीन पुरवट चलने वाला बड़ा कुआं, रात्रि में पहरेदारों का गश्त लगाना, घूमना, रौंद।

तिलस्मी (अ०वि०) जादू का, इन्द्रजालिक, तिलस्म सम्बंधी।

तिलिया (सं० पु०) विष विशेष, सरपत।

तिली (सं स्त्री०) तिल, जिसका फुलेल बनाया जाता है।

तिलुवा (सं०पु०) तिल का लड्डू, तिल का बना लड्डू।

तिलैहा (सं० पु०) घुग्घू, पण्डुक।

तिलोक (सं० पु०) त्रिलोक, तीन लोक।

तिलोकी (सं० पु०) एक छन्द विशेष, जिसमें २१ मात्रा [होती है।

तिलोचन (सं० पु०) त्रिलोचन, शङ्कर, महादेव।

तिलोत्तमा (सं० स्त्री०) देवाङ्गना, स्वर्गीय सुन्दरी विशेष।

तिलोदक (सं० पु०) तिलाञ्जलि, तिलाम्बु, जल और तिल मिलाकर किया हुआ तर्पण।

तिलौंछना (क्रि० स०) तेल द्वारा चिकना करना, थोड़ा तेल लगा कर चिकना करना।

तिलौंछा (क्रि० स०) तेल के रंग या स्वाद वाला [तिलौंछा फल।

तिलौदन (सं० पु०) मिला हुआ तिल और ओदन, खिचड़ी, कृशरान्न । [कर खाई जाती है ।
तिलौरी (सं० स्त्री०) तिलयुक्त पिट्ठी की बरी, जो भून
तिल्ली (सं० स्त्री०) पिलही, प्लीहा, तिल नाम का अन्न या तिलहन, आसाम और बर्मा में पैदा होने वाला एक प्रकार का बाँस ।
तिवाड़ी (सं० पु०) तिवारी, त्रिपाठी, त्रिवेदी ।
तिवारा (सं० पु०) तिदरी, तीसरे बार, त्रिगुणित ।
तिवारी (सं० पु०) देखो "तिवाड़ी" । [भोजन ।
तिवासी (वि०) तीन दिन का बना हुआ, जैसे तिवासी
तिष (सं० स्त्री०) तृष्णा, पिपासा, प्यास ।
तिष्ठना (क्रि०अ०) ठहरना, चलते हुए खड़े होना, रुकना ।
तिष्ठति (वि०) ठहरा हुआ ।
तिष्य(सं०पु०) आठवां नक्षत्र, पुष्य, पौस मास, कलियुग ।
तिस (सर्व०) उस, 'ता' का एक रूप जो विभक्ति जोड़ने के पूर्व प्राप्त होता है जैसे तिसने, तिसको इत्यादि ।
तिसका (सर्व०) उसका, उसके सम्बन्ध का ।
तिसरा (वि०) तीसरा, दोनों के उपरान्त का, तृतीय ।
तिसराय (क्रि०वि०) तीसरी बार ।
तिसरायत (सं० पु०) वादी और प्रतिवादी से दूसरा मध्यवर्ती, उदासीन, बिचवई ।
तिसरे (वि०) तीसरे, दो के बाद के ।
तिसरैत (सं० पु०) दो झगड़ने वालों से पृथक् तीसरा, तीसरे भाग का अधिकारी । [की इच्छा होना ।
तिसाना (क्रि० अ०) प्यासा होना, प्यास लगना, पानी
तिसून (सं० पु०) औषध विशेष । [उसका जोड़ ।
तिहत्तर (वि०) सत्तर से तीन अधिक वाला अङ्क या
तिहरा (वि०) देखो "तिलरा" । [करना, तिलराना ।
तिहराना (क्रि० स०) दो बार के उपरान्त फिर एक बार
तिहराहट (सं० स्त्री०) तिगुनाव ।
तिहरी (वि०) तीन तह की ।
तिहरे (सर्व०) तुम्हारे, तिहारे ।
तिहवार (सं० पु०) त्यौहार, पर्व्व उत्सव का शुभ दिन ।
तिहवारी (सं०स्त्री०) त्योहारी, उत्सव या खुशी के बदले में मिली सामग्री या धन, एक प्रकार का इनाम ।
तिहाई (सं०पु०) तीसरा भाग, तृतीयांश, तिहावा हिस्सा ।
तिहायत (सं० पु०) तीसरा, उदासीन, मध्यस्थ ।
तिहारा (सर्व०) तुम्हारा ।
तिहारी (सर्व०) तुम्हारा, तुम्हारे सम्बन्ध का ।
तिहारे (सर्व०) तुम्हारे ।
तिहारो (सर्व०) तुम्हारो ।
तिहि (सर्व०) तेहि, उस ।
तिहलोक (सं० पु०) त्रिलोक ।
तिहुं (वि०) तीनों ।
तिहैया (सं० पु०) तृतीयांश, तीसरा भाग ।
ती (सं० स्त्री०) स्त्री, पत्नी, नलिनी । [बनाने का पदार्थ ।
तीअन (सं०स्त्री०) शाक, भाजी, तरकारी, सुस्वादु भोजन
तीकटि (सं० पु०) नितम्ब, कटि का पिछला भाग ।
तीकुर (सं० पु०) फसल बटाई जिसमें तृतीयांश ज़मींदार ले लेता है, तिहाई ।
तीक्षण (वि०) देखो "तीक्ष्ण" ।
तीक्ष्ण (वि०) तेज़ धार वाला, तीव्र, प्रचंड, जो बात सुनने में अप्रिय हो, असह्य (सं० पु०) गरमी, विष, इस्पात लोहा, मृत्यु युद्ध, शास्त्र, समुद्री नमक, बच्छ नाग, महामारी, जवाखार, सफ़ेद कुशा, कुंदुर गोंद, योगी ।
तीक्ष्ण कण्टक (सं० पु०) धतूरा, इंगुदी, करीर ।
तीक्ष्णकन्द (सं० पु०) प्याज, पलाण्ड ।
तीक्ष्णकर्मा (सं० पु०) निपुण, दक्ष, चतुर, कुशल ।
तीक्ष्णगन्ध (सं० पु०) छोटी इलायची, तुलसी, गन्ध-द्रव्या, कुंदरू, सहिजन ।
तीक्ष्णगन्धक (सं० पु०) सहिजन ।
तीक्ष्णता (सं० स्त्री०) तेज़ी, शीघ्रता, तीव्रता ।
तीक्ष्णताप (सं० पु०) अधिक योग करने वाले महादेव, शिव, शम्भु । [बाघ, व्याघ्र, सिंह ।
तीक्ष्णदन्त (वि०) जिसके दाँत तेज़ या पैने हों (सं०पु०)
तीक्ष्णदंष्ट्र (सं० पु०) शार्दूल, बाघ । [चील आदि ।
तीक्ष्णदृष्टि (वि०) जिसकी दृष्टि तेज़ हो जैसे परेवा,
तीक्ष्णबुद्धि (वि०) तेज बुद्धि वाला, कुशाग्र, बुद्धिमान, बुद्धिशाली ।
तीक्ष्णरस (सं० पु०) शोरा, जवाखार, तेज रस ।
तीक्ष्णलोह (सं० पु०) लोह विशेष, इस्पात, फ़ौलाद ।
तीक्ष्णा (सं० स्त्री०) तारा देवी का एक नाम, मिर्च, बच, केवाँच, जोंक, मालकाँगनी । [नोकीला ।
तीक्ष्णाग्र (वि०) पैनी धार वाला, तेज़ नोक वाला,
तीखा (वि०) चोखा, पैना तेज़, प्रचण्ड, उग्र, चरपरा, अप्रिय ।

तीखी (सं० स्त्री०) रेशम के काम करने वालों का औज़ार विशेष।

तीखुर (सं० पु०) अरारोट, एक वृक्ष विशेष, जो दक्षिण भारत में पैदा होता है।

तीछुन (वि०) देखो "तीक्ष्ण"।

तीछुनता (सं० स्त्री०) देखो "तीक्ष्णता"।

तीछी (सं० स्त्री०) तीखी, तीक्ष्ण, पैनी, चोखी, रूखी, खरी।

तीछे (वि०) देखो "तीक्ष्ण"।

तीज (सं० स्त्री०) तृतीया, हर पक्ष की तीसरी तिथि।

तीजा (सं० पु०) मुसलमानों की एक रस्म इसमें मरने के तीसरे दिन मृतक के सम्बन्धी यथासाध्य ग़रीबों को रोटियाँ दान देते हैं और कुछ पाठ भी किया करते हैं, (वि०) तीसरा, तृतीय।

तीजिया (सं० स्त्री०) सावन सुदी तीज का पर्व।

तीजे (वि०) तीसरा।

तीत (वि०) देखो "तीखा"।

तीतर (सं० पु०) एक पक्षी विशेष।

तीतरि (सं० स्त्री०) तीतर की मादा, पतंगा।

तीता (वि०) तीखा, चटपटा, चरपरा, कटु, गीला, भीगा, तर, (सं० पु०) ऊपर भूमि, रहट का अगला भाग, ममीरे का झाड़।

तीन (वि०) दो के आगे की संख्या, संख्या सूचक अङ्क।

तीनतेरह (वि०) तितर बितर, छिन्न भिन्न।

तीनलड़ी (सं० स्त्री०) देखो "तिलड़ी"।

तीनी (सं० स्त्री०) तिन्नी का चावल, एक धान विशेष।

तीमारदारी (फ़ा० सं० स्त्री०) बीमारों की सेवा का काम।

तीय (सं० स्त्री०) देखो "तिय"।

तीयन (सं० पु०) तरकारी विशेष, एक प्रकार की बनी हुई तरकारी (स्त्री०) तीय का बहुवचन।

तीयल (सं० पु०) स्त्रियों के पहनने के तीन कपड़े।

तीया (सं० स्त्री०) देखो "तिय"।

तीर (सं० पु०) किनारा, पास, तट, समीप, बाण, राँगा, सीसा नाम की धातु।

तीरन्दाज़ (फ़ा० सं० पु०) तीर चलाने वाला व्यक्ति, निशानेबाज़।

तीरन्दाज़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) तीर चलाने की क्रिया, धनुर्विद्या।

तीरथ (सं० पु०) पुण्यस्थल, स्नानादि धर्म कार्य करने का स्थान।

तीरथराज (सं० पु०) तीर्थराज, सब तीर्थों के राजा प्रयाग।

तीरभुक्ति (सं० स्त्री०) त्रिहुत भूमि, तीन नदियों अर्थात गंगा, गंडकी और कौशिकी से घिरा स्थान या प्रदेश।

तीरवर्ती (वि०) समीपी, पास रहने वाला, पड़ोसी, तटस्थ।

तीरस्थ (सं० पु०) नदी पर पहुँचा हुआ वह व्यक्ति जो मरणासन्न हो।

तीर्ण (वि०) पार, उत्तीर्ण, पार हुआ व्यक्ति, तर, भीगा।

तीर्थ (सं० पु०) देखो "तीरथ"।

तीर्थंकर (सं० पु०) जैन सम्प्रदाय के उपास्य देव, जिन शास्त्र के रचयिता।

तीर्थकर (वि०) वह कर जो तीर्थ में देना पड़े, (सं० पु०) विष्णु, जिन। अथवा अवतार।

तीर्थङ्कर (सं० पु०) जैनियों के चौबीस धर्माचार्य

तीर्थध्वांक्ष (सं० पु०) तीर्थ काक, तीर्थ में रहने वाले काक प्रकृति के मनुष्य, मिथ्या यात्रिक।

तीर्थपति (सं० पु०) तीर्थराज, प्रयाग।

तीर्थपर्यटन (सं० पु०) तीर्थ-भ्रमण।

तीर्थपाद (सं० पु०) विष्णु।

तीर्थपादीय (सं० पु०) श्रीवैष्णव।

तीर्थयात्रा (सं० स्त्री०) तीर्थ-भ्रमण, तीर्थाटन।

तीर्थराज (सं० पु०) देखो "तीर्थपति"।

तीर्थाटन (सं० पु०) तीर्थयात्रा, तीर्थ भ्रमण स्नानादि धार्मिक कार्य के निमित्त जाना।

तीर्थिया (सं० पु०) जैन, तीर्थंकरों का उपासक।

तीली (सं० स्त्री०) बड़ी सींक, धातु आदि तार की बनी सलाई, पटवों का एक औज़ार।

तीवर (सं० पु०) वर्णसङ्कर, समुद्र, बहेलिया, शिकारी, मछुआ।

तीव्र (वि०) तेज, अतिशय, अधिक, बहुत गरम, बेहद, प्रचण्ड, कड़ुवा, (सं० पु०) लोहा, नदी का कूल, महादेव, इस्पात, फ़ौलाद।

तीव्र कण्ठ (सं० पु०) सूर्ण, ज़मींकन्द, ओल।

तीव्रगति (सं० स्त्री०) प्रबल वेग, वायु, हवा।

तीव्रगंध (सं० स्त्री०) अजवाइन।

तीव्रज्वाला (सं० स्त्री०) धव का पुष्प जिसके छूने मात्र से शरीर में घाव हो जाता है।

तीव्रता (सं० स्त्री०) शीघ्रता, तेज़ी, तीखापन, प्रखरता, तीक्ष्णता।

तीव्रवेदना (सं० स्त्री०) अत्यन्त अधिक कष्ट, महायातना।

तीव्रा (सं० स्त्री०) बड़ी काँगनी, तुलसी, अजवायन, राई, षड़ज स्वरों में प्रथम श्रुति विशेष, गांडर दूब।

तीव्रानुराग (सं० पु०) जैन धर्मानुसार एक प्रकार का

अतिचार विशेष, अधिक प्रेम करना या कामोद्दीपनार्थ पदार्थ विशेष, खाना।

तीस (वि०) संख्या विशेष, ३०।

तीसरा (वि०) तृतीय, सम्बन्ध रखने वालों से पृथक्।

तीसवाँ (सं० पु०) उनतीस के बाद का।

तीसी (सं० स्त्री०) अलसी, एक भांति की लोहा काटने की छेनी, फल आदि तौलने का मन।

तुन्दैल (वि०) लम्बे उदर वाला, लम्बोदर, बड़े पेट वाला, तोंदी, तोंद वाला।

तुन्दैला (वि०) देखो "तुन्दैल"।

तुँबड़ी (सं० स्त्री०) तुम्बी, तुम्बिया।

तुम्बा (सं० पु०) कड़ुआ कद्दू, घीया, या उसका बना हुआ पात्र, एक भांति का धान विशेष।

तुअ (सर्व०) तव, तुम्हारा।

तुअना (क्रि०) चूना, गिर पड़ना।

तुअर (सं० पु०) अरहर, आढ़की, तेरी, तेरा।

तुई (सर्व०) तू, (सं० स्त्री०) एकप्रकार की बेल, चैन, जो पुराने कपड़े पर बनी होती है।

तुक (सं० स्त्री०) खण्ड, भाग, कड़ी, पद के चरण का अन्तिम अक्षर। [तुक जोड़ने की क्रिया।

तुकबन्दी (सं० स्त्री०) दोषपूर्ण कविता, छन्दोभंग पद्य,

तुकला (सं० पु०) }
तुकली (स्त्री०) } कीट विशेष, छोटी पतङ्ग।

तुकान्त (सं० पु०) क़ाफ़िया, अनुप्रासान्त, पद्य का दोनों चरणों का अन्तिम अक्षर का मेल।

तुका (सं० पु०) गाँसी रहित तीर, या गाँसी के स्थान पर घुण्डी के समान बना बरछाल कण।

तुकारना (क्रि० अ०) अनादर सूचक सम्बोधन करना, तू तू कर के पुकारना, अशिष्ट रीति से बुलाना।

तुक्कड़ (सं० पु०) तुकबन्दी या नियमरहित कविता करने वाला, भद्दा कवि, जिसकी कविता में काव्य नियम का भंग हो।

तुक्का (सं० पु०) टीला या छोटी पहाड़ी, सीधी खड़ी वस्तु, गाँसी के स्थान पर घुण्डी बना हुआ तीर।

तुख (सं० पु०) छिलका, भूसी, चोकर।

तुगा (सं० स्त्री०) तुगाचीरी, वंशलोचन।

तुगावंशी (सं० स्त्री०) वंशलोचन।

तुंग (वि०) खास, प्रधान, मुख्य, उन्नत, प्रचण्ड, तेज, ऊंचा, (सं० पु०) वृक्ष विशेष, पुन्नाग पहाड़, पर्वत, कमलकेसर, उच्च राशि, नारियल, वर्णवृत्त विशेष, एक प्रकार का छोटा वृक्ष जो पश्चिम हिमालय पर होता है।

तुङ्गता (सं० स्त्री०) उच्चता, ऊँचाई, महत्ता।

तुङ्गभद्रा (सं० स्त्री०) सह्याद्रि पर्वत से उत्पन्न होने वाली नदी विशेष, कृष्णा की सहायक।

तुङ्ग वृक्ष (सं० पु०) नारियल का पेड़।

तुच्छ (वि०) भीतर से खाली पोला, खाली, निस्सार, अल्प, शून्य, खोखला, हीन, ओछा, खोटा, क्षुद्र, (सं०पु०)तूतिया,नीला थोथा,नील का वृक्ष या पौधा।

तुच्छ ज्ञान (सं० पु०) अनादर, अमान्यता।

तुच्छता (सं० स्त्री०) नीचता, अल्पता, ओछापन, कमीनापन, हीनता। [से भी छोटा।

तुच्छातितुच्छ (वि०) बहुत छोटा, अति हीन, छोटे

तुझ (सर्व०) "तू" का वह रूप जो प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियाँ लगने के पूर्व आता है।

तुझे (सर्व०) "तू" शब्द के कर्म और सम्प्रदान का रूप।

तुट (सं० पु०) युद्ध, संग्राम, रण।

तुट्टना (क्रि० स०) प्रसन्न करना, राज़ी करना।

तुड़वाना (क्रि० स०) दूसरे के द्वारा तोड़ने का काम कराना, अन्य को नष्ट करने की प्रेरणा करना।

तुड़ाई (सं० स्त्री०) तोड़ने का परिश्रम या उससे प्राप्त धन, तुड़ाई का काम। [घटाना।

तुड़ाना (क्रि० स०) बदलना, तोड़ना, छोरना, दाम मुहा०—गाय रस्सी तुड़ा कर भाग गई = गाय पगहा तोड़ भाग गई। उससे तालुक़ तोड़ दिया = उससे सम्बन्ध छोड़ दिया। अब अधिक न तुड़ाओ = अब ज़्यादा कम न करो। रुपया तुड़ा लाओ = पैसा और रेज़गारी बदल लाओ।

तुण्ड (सं० पु०) मुख, मुष्ट, थूथरा, चोंच, चञ्चु, थूथन, खड्ग का आगे का हिस्सा, शिव, राक्षस विशेष।

तुण्डकेशरी (सं०पु०)मुँह में होने वाला एक रोग विशेष।

तुण्डि (सं० स्त्री०) नाभि, चञ्चु, मुख। [पेटल।

तुण्डिल (वि०) बकवादी, ढोढ़, निकले हुए पेट का

तुण्डी (सं० स्त्री०) देखो "तुण्डि"।

तुतरा (वि०) तोतला, जिसकी जिह्वा में स्पष्ट शब्द उच्चारण न हो सके, हकला।

तुतराना (क्रि० अ०) हकलाना, तोतलाना, तुतलाना।
तुतलाना (क्रि० अ०) देखो "तुतराना"।
तुतिया (सं० स्त्री०) उपधातु विशेष, विष विशेष।
तुतुई (सं० स्त्री०) टोंटी लगा हुआ छोटा लोटा, टोंटी युक्त छोटी झारी, वह छोटा पात्र जिसमें टोंटी लगी हो।
तुतुही (सं० स्त्री०) देखो "तुतुई"।
तुनतुनी (सं० स्त्री०) सारंगी या सितार, वह बाजा जिसमें में से तुनतुन शब्द निकलता हो।
तुन (सं० पु०) एक प्रकार का वृक्ष विशेष जो उत्तरीय भारत में होता है।
तुनकी (सं०स्त्री०) पतली,एक प्रकार की रोटी। [बजाना।
तुनतुनाना (क्रि०) सितार आदि बजाना, सूक्ष्म स्वर से
तुन्द (सं० पु०) पेट, उदर, जठर।
तुन्दिल (वि०) लम्बोदर, बड़े पेट वाला।
तुन्न (सं० पु०) तुन वृक्ष विशेष।
तुन्नवाय (सं० पु०) दर्जी, सूचीकार, कपड़े सीने वाला।
तुपक (सं०स्त्री०) छोटी तोप या बन्दूक। [वाला।
तुपकिया (सं०स्त्री०) छोटी तुपक (पु०) बन्दूक चलाने
तुफान (अ० सं० पु०) तूफ़ान, आपत्ति।
तुभना (क्रि० अ०) स्तब्ध रहना, अचल रह जाना।
तुम (सर्व०) "तू" शब्द का बहुवचन या आदर सूचक।
तुमड़ी (सं० स्त्री०) महुअर, महुअर नाम का बाजा, सूखा तूम्बा या कद्दू का फल जो तैरने या भिक्षुकों के जल पात्र बनाने के काम में आता है।
तुमरा (सर्व०) तुम्हारा, तुम का सम्बन्ध कारक में प्रयोग होने वाला रूप।
तुमरी (सं० स्त्री०) तोहरी, तुम्हारी, छोटा सूखा हुआ घिया या कद्दू का फल, तुम्बी, तुमड़ी।
तुमाई (सं० स्त्री०) धुनाई।
तुमाना (क्रि०) धुनवाना।
तुमुल (सं० पु०) युद्ध की तैयारी का हलचल, सैनिक कोलाहल, सम्मुख गहरी मुठभेड़, सेना का शोर, लड़ाई की धूमधाम।
तुम्बरी (सं० स्त्री०) बीन, वीणा।
तुम्बा (सं० पु०) तुमड़ी।
तुम्बिका (सं० स्त्री०) लौका, कद्दू।
तुम्बिया (सं० स्त्री०) तुम्बा, कमण्डलु।
तुम्बी (सं० स्त्री०) लौकी, तुम्बरी।
तुम्बुरू (सं० पु०) गंधर्व विशेष।
तुम्बूर (सं० पु०) वाद्य विशेष, तानपूरा।
तुम्ह (सर्व०) देखो "तुम"।
तुम्हारा (सर्व०) देखो "तुमरा"। [वाला रूप।
तुम्हें (सर्व०) तुम का कर्म और सम्प्रदान में प्राप्त होने
तुरंग (वि०) वेगगामी, शीघ्र चलने वाला, जल्दी जाने वाला, अश्व,घोड़ा, मन,चित्त, सात की संख्या नाम।
तुरंगम (वि०) तीव्रगामी, मन, वृत्त विशेष, अश्व, घोड़ा। [शरीर वाला।
तुरंगवदन (सं० पु०) किन्नर, घुड़मुहाँ, घोड़े के समान
तुरन्त (वि०) अविलम्ब, शीघ्र, फ़ौरन, तत्काल।
तुरन्ता (सं० पु०) शीघ्र नशा लाने वाला, गाँजा।
तुरई (सं० स्त्री०) एक फल विशेष या उसकी बेल।
तुरक (सं० पु०) तुर्क, तुर्किस्तान का वासी, टर्की का रहने वाला।
तुरकटा (सं० पु०) यवन, मुसलमान।
तुरकान (सं० पु०) मुसलमानों के रहने का स्थान, यवन मण्डल। [तुर्कों के रहने की जगह।
तुरकाना (सं० पु०) तुर्क सम्बन्धी, तुर्कों के समान, या
तुरकानी (वि०) तुर्कों की सी, (सं० स्त्री०) तुर्कों की स्त्री या भाषा, तुर्की की जोरू, तुर्की में पैदा होने वाली वस्तु।
तुरकिन (सं० स्त्री०) देखो "तुरकानी"।
तुरग (वि०) शीघ्र चलने वाला, वेगगामी, घोड़ा।
तुरगब्रह्मचर्य (सं० पु०) न मिलने के कारण स्त्री त्याग।
तुरगारोही (सं० पु०) अश्वारोही, घुड़सवार।
तुरगी (सं० स्त्री०) घोड़ी, अश्वगन्धा (पु०) घुड़सवार।
तुरत (अव्य०) चटपट, शीघ्र, जल्दी, वेग से।
तुरतुरा (वि०) तुरतबाज, जल्दी बोलने वाला, शीघ्रता करने वाला।
तुरपन (सं० स्त्री०) टांका, सिलाई, तगाई।
तुरमती (सं० स्त्री०) बाज, पक्षी विशेष, क्रूर पक्षी।
तुरपना (क्रि० स०) एक प्रकार की सिलाई करना, तुरपन की सिलाई करना, लुदियाना। [है।
तुरही (सं० स्त्री०) एक बाजा जो फूंक से बजाया जाता
तुरा (सं० स्त्री०) देखो "त्वरा" (पु०) घोड़ा, मन, चित्त, शीघ्र जाने वाला।

तुराई (सं० स्त्री०) तोशक, गद्दा, गुदगुदा बिछौना।
तुराना (क्रि० अ०) घबड़ाना, घबराना, शीघ्रता करना, आतुर होना, फुर्ती करना, जल्दियाना।
तुराषाट् (सं० पु०) देवराज, इन्द्र, सुरेन्द्र।
तुरिय (सं० पु०) घोड़ा, अश्व।
तुरी (सं० स्त्री०) जुलाहों का एक औज़ार, तोरिया, तुरिया, हत्था, जुलाहों की कूँची, घोड़ी, बाग, लगाम, फूलों या मोतियों का झब्बा, (वि०) वेगवती, वेगवाली।
तुरीय (वि०) चतुर्थ, चौथा (सं० पु०) चेतनावस्था (स्त्री०) जीव की अवस्था विशेष।
तुरीयन्त्र (सं० पु०) सूर्य की गति का ज्ञान कराने वाला यंत्र, वह यंत्र विशेष जिसके द्वारा सूर्य की गति पहिचानी जाय।
तुरीय वर्ण (सं० पु०) चौथा वर्ण, शूद्र।
तुरीयाश्रम (सं०पु०) चौथा आश्रम, संन्यासाश्रम।
तुरुक (सं० पु०) मुसलमान, तुर्किस्तान का वासी।
तुरुप (अ० सं० पु०) तास का एक खेल, रिसाला, सेना का एक समूह, जो एक नायक के आधीन हो।
तुरुपना (क्रि० स०) तुरपना, दुहरा कर सीना, एक प्रकार की सिलाई का काम करना। [बेड़ी।
तुरुम (सं० पु०) पैकड़ा, पैर बांधने की रस्सी, रिकाब,
तुरुष्क (सं० पु०) तुरुक, तुरकी देश, तुर्किस्तान, धूप, लोबान, घुड़सवार, गन्ध द्रव्य विशेष। [वाला।
तुर्क (सं० पु०) तुर्किस्तान का निवासी, टर्की का रहने
तुर्कवान (सं० पु०) तुर्क जाति के मनुष्य, वहाँ का घोड़ा जो बहुत तेज और साहसी होता है।
तुर्किन (सं० स्त्री०) देखो "तुरकिन"।
तुर्की (वि०) तुर्किस्तान का, (सं० स्त्री०) तुर्किस्तान की स्त्री और भाषा, घोड़ा विशेष, तुर्क में रहने वालों का गौरव, तुर्की की अकड़, ऐंठ।
तुर्त (क्रि० वि०) शीघ्र, तुरन्त। [लहमे भर में।
तुर्त फुर्त (क्रि० स०) बात की बात में, बहुत ही शीघ्र,
तुर्ताव (क्रि० वि०) शीघ्र, चटपट।
तुर्ती फुर्ती (क्रि० वि०) शीघ्र, तुरन्त, झटपट।
तुर्तुरा (वि०) सावधान, सतर्क, तेज, प्रखर, वेगवान्।
तुर्याश्रम (सं० पु०) चौथा आश्रम, संन्यासाश्रम।
तुर्रा (अ० सं० पु०) लच्छेदार बालों की लट, कलँगी, झब्बा, फूलों या मोतियों का झब्बा, लच्छा, फुँदना, पक्षियों के शिर की शिखा, किनारा, छज्जा, ऊपर निकला हुआ भाग, एक पुष्प विशेष, मुर्गकेश, जटा धारण करने वाला, चाबुक।

मुहा०—इस पर भी यह तुर्रा=इतने पर भी अहसान। यह तुर्रा=इतने पर भी और। इसमें भी यह तुर्रा=इतने में और मिलाव। तुर्रा करना=कोड़े मारना। तुर्रा चढ़ाना—भांग पीना।

तुर्श (फ़ा० वि०) खट्टा, स्वाद विशेष, अम्ल।
तुर्शी (सं० स्त्री०) खटाई, खट्टापन।
तुल (वि०) समान, ठीक, अन्दाज़, तुल्य।
तुलना (क्रि० अ०) समता, बराबरी करना, मान करना, तौलना, तौला जाना, अनुमान करना, अन्दाज़ बाँधना, पहियों का औंगा जाना, (सं० स्त्री०) मिलान, उपमा, मान, वजन, गणना।
तुलनी (सं० स्त्री०) सुई के दोनों ओर का लोहा।
तुलवाई (सं० स्त्री०) तौलने का परिश्रम या उससे मिला हुआ धान। [अन्दाज़ा कराना।
तुलवाना (क्रि० स०) वज़न कराना, मान कराना,
तुलसी (सं० स्त्री०) एक छोटा पौधा या उसके पत्ते।
तुलसीदास (सं० पु०) रामायण की हिन्दी रचना करने वालों में स्वनाम धन्य कवि। [तुलसीदल।
तुलसीपत्र (सं० पु०) तुलसी नामक वृक्ष की पत्ती,
तुला (सं० स्त्री०) तराज़ू, तौलने का यन्त्र, काँटा, राशि विशेष, तौल, अनाज नापने का पात्र, सत्यासत्य की निर्णयता, एक प्राचीन परीक्षा।
तुलाकोटि (सं०स्त्री०) तखड़ी की डण्डी के दोनों किनारे, तौल विशेष, अरब की संख्या, नूपुर, बिछिया बिछुआ। [बराबर कर दिया जाता है।
तुलादान (सं० पु०) दान विशेष जो मनुष्य के मान के
तुलाधार (सं० पु०) तुलाराशि, तराज़ू के पल्ले बाँधने वाली रस्सी, बनिया, महर्षि जाजलि को उपदेश करने वाला काशी का एक वैश्य, (वि०) तुलाधारी।
तुलाना (क्रि०) बोलना, तोल कराना।
तुलापरीक्षा (सं० स्त्री०) अभियुक्तों की परीक्षा विशेष जो प्राचीन काल में थी, दोषी या निर्दोष होने की दिव्य परीक्षा।
तुलायन्त्र (सं० स्त्री०) तखरी, तकड़ी, तराज़ू।

तुलित (वि०) सम, बराबर, तुला हुआ, समान ।
तुली (सं० स्त्री०) चित्र बनाने की कलम, बत्ती ।
तुले (क्रि०) तौला जा सके, तौला जाय ।
तुल्य (वि०) समान, बराबर, एकसा, सदृश ।
तुल्यता (सं० स्त्री०) समानता, बराबरी ।
तुल्ययोगिता (सं० स्त्री०) अलङ्कार विशेष ।
तुवर (वि०) कसेला, डाढ़ी मूछ रहित, (सं०पु०) अरहर, कसैला रस, इमली के समान नदियों के किनारे पैदा होने वाला एक पौधा ।
तुवरी (सं० स्त्री०) फिटकरी, औषध विशेष । [छिलका ।
तुष (सं० पु०) भुस, भूसी, चोकर, धान आदि का
तुषग्रह (सं० पु०) अग्नि ।
तुषानल (सं० पु०) भूसी या करसी की आग, घास फूस की आग, जो प्रायश्चित विशेष के अर्थ की जाती है ।
तुषार (सं० पु०) बर्फ़, हिम, वायु मिली हुई भाप, पाला, ओस, चीनिया नामक कपूर, हिमालय के उत्तर का एक प्रसिद्ध देश या वहाँ का व्यक्ति ।
तुषित (सं० पु०) गण देवता विशेष, विष्णु भगवान, स्वर्ग विशेष ।
तुष्ट (वि०) तृप्त, प्रसन्न, राज़ी, ख़ुश, तुष्ट ।
तुष्टना (क्रि० अ०) प्रसन्न होना, तृप्त होना ।
तुष्टि (सं० स्त्री०) प्रसन्नता, तृप्ति, हर्ष, सन्तोष, शान्ति ।
तुष्टिकर (वि०) सन्तोषजनक ।
तुष्टिमान (वि०) तुष्ट, संतुष्ट ।
तसार (सं० पु०) तुषार, हिम, पाला ।
तुसी (सं० स्त्री०) भूसी, चोकर ।
तुहमत (सं० स्त्री०) दिक्कत, मुसीबत, आफ़त ।
तुहार (सर्व०) देखो " तुम्हार " ।
तुहि (सर्व०) तुझको । [प्रकाश, चाँदनी रात्रि ।
तुहिन (सं० पु०) तुषार, पाला, बर्फ़, शीत, चन्द्रमा का
तुही (सर्व०) तुमही, (सं० स्त्री०) कोकिल का शब्द ।
तूँ (सर्व०) देखो " तू " ।
तूँबा (सं० पु०) देखो " तुम्बा " ।
तूँबी (सं० स्त्री०) देखो " तुम्बी " ।
तू (सर्व०) मध्यम पुरुष का एक वचन ।
मुहा०—तू ताँ करना = अनादर करना ।
तूकारना (क्रि०) अबे तबे कहना, तू तू कहना ।

तूठना (क्रि० अ०) अघाना, तृप्त होना, राज़ी या प्रसन्न होना ।
तूण (सं०स्त्री०) तरकस, भाथा ।
तूणी (सं० स्त्री०) एक रोग विशेष, जिसमें वायु के कारण मूत्राशय के पास से दर्द उठता है और गुदा और पेंडू तक होता है, नील का पौधा, तरकस ।
तूणीर (सं० पु०) निषंग, तरकस ।
तूनई (सं० स्त्री०) करवा, टोंटीदार मिट्टी का बर्तन ।
तूतन (सं० पु०) कतरन, कटा छटा ।
तूतक (सं० स्त्री०) तूतिया, नीला थोथा ।
तूती (फ़ा० सं० स्त्री०) तोता, छोटा तोता, एक पक्षी विशेष, तुरई नाम का बाजा, मिट्टी की एक टोंटीदार बच्चों के खेलने की घरिया ।
मुहा०—तूती का पढ़ना = मधुर स्वर में बोलना । तूती बोलना = ख़ूब चलती होना । नक्कारख़ाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है = शोर में धीरे से कही हुई बात नहीं सुनाई पड़ती । [बुलाना ।
तूतू (सं० पु०) कुत्ते के बुलाने का एक शब्द, अनादर से
तून (सं० पु०) एक लाल रङ्ग का कपड़ा, तुन नाम का पेड़, तृण ।
तूनना (क्रि०) धुनना, तूमना । [होना, गर्भपात होना ।
तूना (क्रि० अ०) झड़ना, टपकना, चूना, गिरना, पतन
तूनीर (सं० पु०) देखो " तूणीर " ।
तूफ़ान (सं० पु०) दंगा, फ़साद, झगड़ा, बखेड़ा, डुबा देने वाली बाढ़, आँधी मेह का एक साथ आगमन, प्रलय, हलचल, तूलतबील, दोषारोपण, मुसीबत ।
मुहा०—तूफ़ान करना = कलंकित करने वाली बातें बना दोषी ठहराना, झूठा दोष लगाना । [उग्र,टंटेबाज़ ।
तूफ़ानी (वि०) उपद्रवी,ऊधमी, दंगहरी,दंगा करने वाला,
तूबर (सं० पु०) कषाय, रस विशेष ।
तूबरी (सं० पु०) तुम्बी ।
तूमड़ी (सं० स्त्री०) देखो " तुमड़ी " ।
तूमतड़ाक (सं० स्त्री०) सजधज, बनावट, शान शौक, चटक मटक, तड़क भड़क ।
तूमना (क्रि० स०) उधेड़ना, पृथक् २ करना, विथूरना, दलना, रहस्य प्रकट कर देना, बात खोल देना, रुई को इस प्रकार नोंचना कि रेशे निकल आवें ।
तूमरी (सं० स्त्री०) मगर की खोपड़ी ।

तूमिया (सं० पु०) रुई धुनने वाला, धुनी हुई रुई का सूत ।
तूमना (क्रि०) हाथ से रुई सुधारना ।
तूरान (सं० पु०) मध्य एशिया के पूर्व उत्तर पड़ने वाला समस्त भू भाग, देश विशेष ।
तूरानी (सं० स्त्री०) तूरान देश की भाषा या वहाँ की स्त्री, (पु०) वहाँ का निवासी, तूरान सम्बन्धी ।
तूरी (वि०) समान, तुल्य, तुरही, एक बाजा ।
तूर्ण (क्रि०वि०) जल्दी, त्वरित, शीघ्र, तेज़, तुरन्त ।
तूर्य (सं० पु०) नगाड़ा, भेरी ।
तूल (सं० पु०) बिनौला, सीमा, आकाश, शहतूत या उसका पेड़, लाल रंग या लाल रंग का एक कपड़ा, (वि०) तुल्य, समान, सम, बराबर ।
तूलना (क्रि० स०) धुरी में तेल देने के लिये पहिये को निकाल कर गाड़ी को किसी लकड़ी के सहारे ठहराना, उठाना, पहिए को धुरी को चिकना करना ।
तूलनीय (सं० पु०) कदम का पेड़ ।
तूला (सं० स्त्री०) कपास, बिनौले सहित रुई ।
तूलिका (सं० स्त्री०) चित्रकार की कूँची, ब्रुश ।
तूलिनी (सं० पु०) रुई वाला वृक्ष, सेमर का पेड़ ।
तूली (सं०स्त्री०) नील का वृक्ष, तसवीर बनाने की कलम ।
तूवर (सं० पु०) राजपूतों की एक तूँवर नाम की जाति, सींग रहित बैल, दाढ़ी मूँछ रहित मानव, अरहर, कसैला नाम का रस विशेष ।
तूष्णी (वि०) शान्त, मौन, ख़ामोश, चुप ।
तूस (सं० पु०) भूसा, भुस, एक प्रकार की उत्तम ऊन, पशमीना, नमदा ।
तूसी (वि०) एक रंग विशेष करंजई ।
तूख (सं० पु०) जायफल ।
तृखा (सं० स्त्री०) लालसा, तृषा ।
तृण (सं० पु०) घास, तिनका, फूस, तिन ।
मुहा०—तृणवत्=ज़रा सा, तुच्छ, छोटा, नीचा, अल्प । तृण गहना या पकड़ना=हीनता जाहिर करना, गिड़गिड़ाना, नीचता दिखाना । तृण टूटना=किसी वस्तु का इतना सुन्दर होना कि उसे नज़र से बचाने के लिये उपाय करना पड़े । तृण तोड़ना=सम्बन्ध या नाता तोड़ना, प्रेम मिटना, नजर न लगने का उपाय करना ।
तृणकुटी (सं० स्त्री०) घास की बनी झोंपड़ी ।
तृणबिन्दु (सं० पु०) ऋषि विशेष, द्वापर के वेद व्यास ।
तृणराज (सं० पु०) नारियल का पेड़, ऊख, ताल वृक्ष ।
तृणवत् (वि०) तिनके के समान तुच्छ, निकम्मा ।
तृणशय्या (सं० स्त्री०) चटाई, घास का बना हुआ सोने का आसन, साथरी ।
तृणावर्त्त (सं० पु०) दैत्य विशेष, जिसे कंस ने मथुरा से श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल भेजा था, कंस का अनुचर ।
तृणोदक (सं०पु०) घास और पानी, पशुओं का भोजन ।
तृतीय (वि०) तीसरा, तृतीय स्थान वाला, दो के पश्चात् और चार से पूर्व की संख्या बोध कराने वाला अङ्क ।
तृतीयप्रकृति (सं०स्त्री०) नरनारी से भिन्न स्वभाव वाला हिजड़ा, नपुंसक, क्लीव व्यक्ति ।
तृतीया (सं० स्त्री०) व्याकरण के अनुसार करण नामक तीसरा कारक, प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि, तीन ।
तृतीयांश (सं० पु०) तीसरा भाग ।
तृपति (सं० स्त्री०) देखो "तृप्ति" ।
तृप्त (वि०) प्रसन्न, अघाया हुआ, परिपूर्ण । [प्रसन्नता, खुशी ।
तृप्ति (सं० स्त्री०) सन्तोष, इच्छा पूर्ण होने की शान्ति,
तृप्तिकर (वि०) सन्तोषजनक ।
तृप्तिजनक (वि०) तृप्तिकर ।
तृपुण्ड (सं० पु०) तिलक विशेष जैसा शैव लगाते हैं ।
तृपुर (सं० पु०) त्रिपुर के एक दैत्य के नगर का नाम ।
तृफला (सं० स्त्री०) त्रिफला, आंवला, हर्र और बहेड़ा ।
तृविक्रम (सं० पु०) भगवान का वामन अवतार, वामन ।
तृवेनी (सं० स्त्री०) गंगा जमुना और सरस्वती का संगम, त्रिवेणी ।
तृभुवन (सं०पु०) तीन लोक, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ।
तृमुहानी (सं० स्त्री०) तीन मार्गों का योग, त्रिमार्ग ।
तृय (सं० स्त्री०) स्त्री, युवती, त्रिया ।
तृलोक (सं० पु०) त्रिलोक, तीन लोक ।
तृविध (सं० पु०) तीन प्रकार का, तीन रंग का ।
तृवृत्, तृवृता (सं० स्त्री०) औषध विशेष, निसोत ।
तृषा (सं०स्त्री०) लालसा, चाह, लोभ, प्यास, आवश्यकता विशेष, बलिहारी । [अभिलाषी, चाहकर्ता ।
तृषित (वि०) प्यासा, इच्छुक, लालसा रखने वाला,
तृष्णा (सं० स्त्री०) चिन्ता, किसी कार्य में सफल होने की प्रबल इच्छा, उत्कटाभिलाषा, लोभ, चाह ।

तृष्णालु (वि०) प्यासा, लोभी, अभिलाषा रखने वाला, लोलुप ।
तृसङ्कु (सं० पु०) त्रिशंकु, एक सूर्यवंशी राजा ।
तृसूल (सं०पु०) महादेव का प्रसिद्ध अस्त्र, त्रिशूल ।
तैं (प्रत्य०) द्वारा, से, अधिक, ज़्यादा, बढ़कर ।
तैंतरा (सं० पु०) बैल गाड़ी में फड़ के नीचे लगी हुई लकड़ी । [करने वाला अङ्क ४३ ।
तैंतालीस (वि०) चालीस और तीन की संख्या को प्रकट
तैंतालीसवाँ (वि०)क्रम में ४३ के स्थान पर पड़ने वाला, जिसके पहले ४२ और हों । [वाली संख्या ।
तैंतीस (वि०) तीस और तीन "३३" को सूचित करने
तेंदुआ (सं० पु०) एक हिंसक जन्तु जो चीते की जाति का होता है ।
तेंदू (सं० पु०) फल विशेष, वृक्ष और फल ।
ते (सर्व०) वे, वे सब ।
तेऊ (सर्व०) वे सब के सब, वे भी । [वाला अङ्क, २३ ।
तेईस (वि०) बीस और तीन की संख्या प्रकट करने
तेईसवाँ (वि०) क्रम में २३ के स्थान पर पड़ने वाला, जिसके पहले २२ और हों ।
तेकाला (सं० पु०) अस्त्र विशेष, त्रिशूल के आकार का एक अस्त्र, मछली पकड़ने का यंत्र ।
तेग (सं० पु०) तलवार, कृपाण, तरवार ।
तेगबहादुर (सं० स्त्री०) सिक्खों का दसवाँ गुरु ।
तेगा (सं० पु०) कटार, खड्ग, खाँडा, मल्लयुद्ध का एक दाँव विशेष ।
तेज (सं० पु०) प्रताप, दीप्ति, आभा, दमक, पराक्रम, बल, कान्ति, वीर्य, तत्व, सार, सत, गर्मी, ताप, सुवर्ण, कञ्चन, सोना, रोब, दबाव, भय, नैनू, मक्खन, सतोगुणोत्पन्न शरीर, अग्नि, तीसरा महाभूत, जिसमें ताप और प्रकाश होता है, वेग, घोड़े के चलने की तेज़ी, उग्रता ।
तेजधारी (वि०) तेजवान, तेजस्वी, प्रतापी, कान्तियुक्त, चमत्कारी । [मूंज ।
तेजन (सं० पु०) प्रकाश करने का काम, सरपत, बाँस,
तेजपत्ता (सं० पु०) एक वृक्ष विशेष, गन्धजात, जो लङ्का दारजिलिङ्ग काँगड़ा आदि में होता है ।
तेजपत्र (सं० पु०) तेजपात ।
तेजपात (सं० पु०) तज का पत्ता, एक गरम मसाला ।
तेजबल (सं० पु०) एक प्रकार का जंगली पोधा जो पहाड़ी प्रान्त में होता है, तिक्त ।
तेजमान (वि०) प्रतापी, चमत्कारी, वीर्यमान । [सम्पन्न ।
तेजवन्त (वि०)तेजवान, तेजस्वी, बली, दीप्तिशाली, कान्ति-
तेजस (सं० स्त्री०) तीक्ष्णता, अग्नि, सुवर्ण, वीर्य, बल ।
तेजस्कर (वि०)तेज बढ़ाने वाले पदार्थ, पुष्टिकर, पुष्टई ।
तेजसी (वि०) तेजस्वी, तेजपूर्ण, तेजवान ।
तेजस्विता (सं० स्त्री०) दीप्तिवान् होने का भाव ।
तेजस्विनी (सं० स्त्री०) ज्योति युक्त स्त्री, मालकाँगनी नाम का धान विशेष ।
तेजस्वी (वि०) देखो "तेजसी" ।
तेजारत (सं०स्त्री०) व्यापार, तिजारत, उद्यम, कारबार ।
तेज़ी (सं० स्त्री०) उग्रता, प्रबलता, तीव्रता का भाव, शीघ्रता, महँगी, गरानी, बहुमूल्यता ।
तेजोमय (वि०) प्रकाशमय, प्रकाश स्वरूप ।
तेतना (वि०) तितना, उतना ।
तेता (वि०) उस भाँति, उतना, तितना । [अटारी ।
तेताला (सं० पु०) तीन खंड का मकान, तीन खंड की
तेतालीस (वि०) देखो "तैंतालीस"।
तेति (वि०) बस वे ।
तेतिक (वि०) उतना ।
तेतिस (वि०) तीस और तीन ।
तेते (सर्व०) वे वे, जितने, उतने ।
तेतो (वि०) जितना, उतना ।
तेपची (सं० स्त्री०) टाँका, टोप ।
तेमन (सं० पु०) पक्क भोजन, पका व्यञ्जन । [त्रयोदशी ।
तेरस (वि०) दस और तीन की गणना वाली तिथि,
तेरह (वि०) दस और तीन का संख्या-सूचक अंक १३ ।
तेरहवाँ (वि०) जिसके पहले १२ और हों ।
तेरहीं (सं० स्त्री०) प्रेत कर्म की तेरहवीं तिथि, बारह के बाद की संख्या । [सर्वनाम शब्द, तू का सम्बन्ध कारक ।
तेरा (सर्व०) मध्यम पुरुष के एक वचन का षष्ठी-सूचक
तेरुस (सं० पु०) त्यौरुस, (स्त्री०) तेरस ।
तेरे (अव्य०) से ।
तेरो (सर्व०) देखो "तेरा" ।
तेल (सं० पु०) किसी चिकने पदार्थ से निकाला या स्वतः निकला हुआ रस विशेष, बिवाह में रीति विशेष ।

तेलगू (सं० स्त्री०) तैलंग देश में बसने वाले।
तेलवाई (सं० पु०) तेल मसलना, तेल लगाना, तेल मलना, बिबाह में कन्या पक्ष से वर पक्ष वालों के वास्ते तेल लगाने को भेजने की प्रथा विशेष।
तेलहा (वि०) चिकना, जिसमें तेल हो, तेल वाला, तेल सम्बन्धी।
तेलहन (सं० पु०) तेल निकलने वाले दाने, या बीज।
तेलिन (सं० स्त्री०) एक बरसात में उत्पन्न होने वाला कीड़ा, तेल बेचने या निकालने वाले की स्त्री, तेली जाति की स्त्री।
तेलिया (वि०) तेल के समान चिकना या चमकीला, तेल के समान रङ्ग वाला, (सं० पु०) कृष्ण, काला चिकना और चमकीला, छोटी मछली विशेष, एक प्रकार के घोड़े का रंग, सींगिया विष, बबूल विशेष।
तेलियाकुमैत (सं० पु०) कालायुक्त लाल रंग वाला घोड़ा।
तेली (सं० पु०) तेल निकालने का काम करने वाली जाति विशेष। [चितवन।
तेवर (सं० पु०) क्रोधित दृष्टि, कुपित निगाह, क्रोधयुक्त
तेवरस (सं० पु०) तेरुस, तीसरा वर्ष।
तेवराना (क्रि० अ०) अचेत होना, भ्रम में पड़ना, विस्मित अवस्था में होना, त्योरी चढ़ाना।
तेवरी (सं० स्त्री०) त्योरी, निगाह, चितवन, दृष्टि, देखने की क्रिया।
तेवहार (सं० पु०) त्योहार, उत्सव का दिन, प्रसन्नता का दिवस। [अफ़सोस करना।
तेवाना (क्रि० अ०) फ़िक्र करना, सोचना, चिन्ता करना,
तेवां (अव्य०) तैसा, तादृश, उस प्रकार का, वैसा।
तेवोंधा (वि०) धुँधला, अन्धा, रात का अन्धा।
तेह (सं० पु०) कोप, क्रोध, साहस, घमंड, अहंकार।
तेहर (सं० स्त्री०) स्त्रियों के पैर के एक गहने का नाम।
तेहरा (वि०) तीन तह युक्त, तीन परत वाला, तिगुना, त्रिगुणित।
तेहराना (क्रि०स०) तीन तह करना, तीन बार लपेटना।
तेहवार (सं० पु०) त्योहार, जातीय या धार्मिक उत्सव मनाने का दिन।
तेहा (सं० पु०) तेह, क्रोध, कोप।
तेहि (सर्व०) उसको, उसका।
तेही (सं० पु०) क्रोध करने वाला, तेहा करने वाला, घमण्डी, अभिमानी, शेख़ी करने वाला।
तैं (अव्य०) से।
तैंतालीस (वि०) देखो "तेंतालीस"।
तैंतिल (सं० पु०) करण विशेष।
तैंतीस (वि०) देखो "तेंतीस"। [झुण्ड।
तैत्तिर (सं० पु०) पक्षि विशेष, तित्तिर, पक्षियों का
तैत्तिरीय (सं० स्त्री०) यजुर्वेद की शाखा विशेष, शुक्ल यजुर्वेद का विद्वान, यजुर्वेदज्ञ।
तैत्तिरीयक (वि०) यजुर्वेद की एक शाखा का विद्वान।
तैनात (अ० वि०) नियत, नियुक्त, मुक़र्रर। [का कर्तव्य।
तैनाती (अ० सं० स्त्री०) नियुक्ति, मुक़र्ररी, नियत होने
तैयार (वि०) उद्यत, दुरुस्त, ठीक, नितान्त उपयुक्त, मुस्तैद, कटिबद्ध, प्रस्तुत, उपस्थित, मोटा, हृष्टपुष्ट, ताज़ा।
तैयारी (सं० स्त्री०) तत्परता, दुरुस्ती, मुस्तैदी, पुष्टता, मोटाव, मोटाई, सजावट, सजन, धूमधाम, मुक़र्ररी।
तैयो (वि०) तोभी, तऊ, तब भी।
तैरना (क्रि० अ०) पैरना, उतरना, पानी पर ठहरना, पानी पर चलना, तरना, पार जाना।
तैराक (वि०) तैरने वाला, पार जाने वाला, तैरने की क्रीड़ा करने वाला।
तैराना (क्रि०स०) घुमाना, तैरने का काम दूसरे से कराना, धँसाना, गोदना, पानी पर चलाना, पार लगाना।
तैलंग (सं० पु०) कर्णाटक प्रान्त के अन्तर्गत एक देश विशेष। [के सिपाही।
तैलंगा (सं० पु०) तैलंग देश निवासी, अंग्रेज़ी सेना
तैलंगी (सं० पु०) तैलंग देश में वास करने वाला, (वि०) तैलंग देश सम्बन्धी, तैलंग देश का (स्त्री०) तैलंग देश की स्त्री, या वहाँ की भाषा।
तैल (सं० पु०) तिल सरसों आदि चिकने पदार्थों से निकाला हुआ रस विशेष, तेल। [जाति का व्यक्ति।
तैलकार (सं० पु०) तेली, तेल का काम करने वाली
तैलद्रोणी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का काष्ठ पात्र जिसमें तेल भर कर रोगी इलाज के लिए लेटाये जाते थे।
तैलपा (सं० पु०) पक्षि विशेष, तैल चोरिका।
तैलफल (सं० पु०) बहेड़ा, इंगुदी।
तैलमाली (सं० स्त्री०) बत्ती, पलीता, तेल बत्ती।

तैलयन्त्र (सं० पु० कोल्हू ।
तैलाक्त (वि०) तैल पूर्ण, तेल लगा हुआ ।
तैलाटी (सं० स्त्री०) बर्र, भिड़ ।
तैलाभ्यंग (सं० पु०) बदन में तेल लगाने की क्रिया, तेल की मालिश या मलाई । [सम्बन्धी ।
तैलिक (सं० पु०) तेली, तेल निकालने वाला, तेल
तैलिकयन्त्र (सं० पु०) तैलयंत्र, कोल्हू ।
तैलिनी (सं० स्त्री०) पलीता, बत्ती ।
तैली (सं० पु०) तैलकार, तेली (वि०) तैलमय ।
तैष (सं० पु०) पूर्णिमा के दिन पुष्य नक्षत्र होने वाला पौष मास, चान्द्रपौषमास । [मासी ।
तैषी (सं० स्त्री०) पौष पूर्णिमा, पुष्य नक्षत्र युक्त पूर्ण-
तैस (वि०) तैसा, उस प्रकार का, वैसा ।
तैसा (वि०) देखो "तैस" ।
तैसे (वि०) वैसे या उस प्रकार ।
तों (वि०) त्यों, तैसे ।
तोंद (सं० स्त्री०) पेट की फुलावट, मर्यादा से अधिक निकला हुआ पेट । [हुआ हो ।
तोंदल (वि०) बड़े पेट का या जिसका पेट बाहर निकला
तोंदा (सं० पु०) तालाब से पानी निकलने का रास्ता, ढेर, राशि, वह टीला या मिट्टी की दीवार जिस पर तीर या बंदूक चलाने का अभ्यास करने के लिये निशाना लगाते हैं ।
तोंदी (सं० स्त्री०) नाभि, ढोंढी ।
तोंदैल (वि०) देखो "तोंदल" ।
तोंदैल } देखो "तोंदल" ।
तोंदैला }
तोंही (क्रि० वि०) उसी क्षण में, उसी समय में ।
तो (सर्व०) तेरा, (क्रि० वि०) तब, उस हालत में ।
तोक (सं० पु०) श्रीकृष्ण का एक साथी, बालक, अपत्य, सन्तान ।
तोकह (सर्व०) तुमको, तुझको ।
तोख (सं० पु०) देखो "तोप" ।
तोटक (सं० पु०) शंकराचार्य का एक शिष्य विशेष, एक वर्णवृत्त जिसमें चार सगण होते हैं, जिसे सवैया भी कहते हैं । [तान्त्रिक प्रयोग ।
तोटका (सं० पु०) टोटका, टोना टमना, एक प्रकार का
तोड़ (सं० पु०) टूट, खण्डन, नदी का वेग, धारा ।
तोड़जोड़ (सं० पु०) चाल, दांव पेंच, विजय की युक्ति, साधन क्रिया ।
तोड़ना (क्रि० स०) आघात द्वारा खण्डित करना, भंग करना, बेकार करना, किसी के साथ प्रथम समागम करना, कम करना, घटाना, दूर करना, अलग करना ।
तोड़ल (सं० पु०) कड़ा, बाला, कंकण ।
तोड़वाई (सं० स्त्री०) तुड़वाई ।
तोड़वाना (क्रि०) तुड़वाना ।
तोड़ा (सं० पु०) सोने की बनी हुई लच्छेदार चौड़ी ज़ंजीर, आभरण विशेष, रुपये रख कर कमर में बांधने की थैली, नदी का कूल, किनारा, कमी, हानि, रस्सी का छोटा टुकड़ा, हरिस, पलीता, कन्द, तीन बार की ब्याई भैंस ।
तोड़ाना (क्रि० स०) कम कराना, तुड़ाना ।
तोड़ी (सं० स्त्री०) सरसों विशेष ।
तोतना (क्रि०) निवार, दरी आदि बिनना, गूंधना
तोतराना (क्रि० अ०) देखो "तुतलाना" ।
तोतरि (सं० स्त्री०) तोतली, बच्चों की बोली
तोतला (वि०) देखो "तुतला" ।
तोतलाना (क्रि० अ०) देखो "तुतलाना" ।
तोता (फ़ा० सं० पु०) कीर, सुआ, बन्दूक का घोड़ा, सुग्गा, पक्षी विशेष । [हटा लेने वाला ।
तोताचश्म (फ़ा० वि०) बेरहम, निर्दयी, झट से प्रेम
तोताचश्मी (फ़ा० सं० स्त्री०) बेवफ़ाई, निष्प्रियता, बेमुरव्वती, बेरहमी । [मादा ।
तोती (सं० स्त्री०) रखनी, अविवाहित स्त्री, तोते की
तोप (सं० पु०) अस्त्र विशेष ।
तोपखाना (सं० पु०) तोप या तोप के सम्बन्ध का सामान रखने का स्थान, सामान युक्त युद्ध के वास्ते चार से आठ तक तोपों का समूह ।
तोपड़ा (सं० पु०) मकरी, मक्षिका, पक्षि विशेष ।
तोपना (क्रि० अ०) ढकना, दबाना, छिपाना, लोप करना । [छिपवाना ।
तोपवाना (क्रि० स०) किसी अन्य के द्वारा ढँकवाना,
तोपा (क्रि०) ढका, ढाँपा, छिपाया ।
तोपाना (क्रि० स०) देखो "तोपवाना" ।
तोप्यो (क्रि०) देखो "तोपा" । [घोड़े दाना खाते हैं ।
तोबड़ा (सं० पु०) चमड़े या टाट का वह थैला जिसमें

तोमर (सं० पु०) भारतीय प्राचीन राजपूत क्षत्री जाति, एक देश विशेष जो प्राचीन भारत में था जिसका वर्णन पुराणों में है, वर्णवृत्त विशेष जिसमें १२ मात्रा होती हैं, शर्पला, शापल नाम का भाले के समान नोकदार एक प्राचीन अस्त्र ।

तोमरग्रह (सं० पु०) योद्धा जो भाले से लड़ाई लड़ते हैं।

तोमरधर (सं० पु०) अग्नि, अनल, हुताशन ।

तोय (सं० पु०) सलिल, जल, पानी, नक्षत्र विशेष पूर्वापाढ़ । [प्रकार का बेंत ।

तोयकाम (सं० पु०) जल में उत्पन्न होने वाला एक

तोयद् (सं० पु०) जल देने वाले बादल, मेघ, जलदान करने वाला व्यक्ति, घृत, घी, नागरमोथा ।

तोयधर (सं० पु०) जलद, मेघ, तोयद, वारिद ।

तोयधि (सं० पु०) सागर, समुद्र, जलधि ।

तोयनिधि (सं० पु०) समुद्र, सागर,जलधि । [विशेष ।

तोयपिप्पली (सं० स्त्री०) जल पीपल, जलज शाक

तोयप्रसादन (सं० पु०) निर्मली फल जिसको पीस कर जल में डालने से जल साफ होता है, जल चाहने वाला, जल प्रार्थी, जलाभिलाषी ।

तोयसूचक (सं० पु०) मेढक, जिसके बोलने से वृष्टि होने की सूचना मिलती है ।

तोयाधिवासिनी (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, पाटला ।

तोयाशय (सं० पु०) जल-स्थान ।

तोर (सं० स्त्री०) अरहर (सर्व०) तेरा ।

तोरई (सं० स्त्री०) तुरई, शाक ।

तोरण (सं० पु०) नगर या घर का पताका युक्त सज्जित द्वार, बन्दनवार, सजावटी माला आदि सामान, गला, ग्रीवा, कंठ, शम्भु, महादेव, वहिफटिक, कंठी, कन्धरा । [दुःख, व्यथा, कष्ट, एक फल विशेष ।

तोरन (सं० पु०) तोत्र, चमोटी, चाबुक, कोड़ा, पीड़ा,

तोरावान् (वि०) वेगशील, तेजमान, तेज, तीव्र ।

तोरिया (सं० स्त्री०) गोटा या किनारी लपेटने का बेलन या वह लकड़ी जिस पर बनाते समय गोटा लपेटा जाता है ।

तोरी (सं० स्त्री०) तरकारी विशेष, सरसों, राई ।

तोल (सं० स्त्री०) तौल, नाप, परिमाण, जोख ।

तोलक (सं० पु०) अस्सी रत्ती भर बटखरा, बांट, तौलने वाला, तुलवैया ।

तोलन (सं०पु०) तौलने या उठाने की क्रिया, वह लकड़ी जो छत के नीचे सहारे के लिये लगाई जाती है ।

तोलवाना (क्रि० स०) तुलवाना, तुलाना, वजन कराना, अन्दाज़ कराना । [भाग ।

तोला (सं० पु०) एक मान विशेष, छटाँक का पाँचवाँ

तोलाना (क्रि० स०) तुलवाना, तुलाना, तोलवाना ।

तोश (सं० पु०) हिंसा, हिंसक । [रुई भरा हुआ खोल ।

तोशक (सं० स्त्री०) गुदगुदा बिछौना, दुहरी चादर का

तोशकखाना (सं० पु०) तोशकखाना, वह घर जिसमें गुदगुदा बिछौना हो, या जहाँ तोशक रक्खे हों, राजा महाराजादि के बहुमूल्य वस्त्र और आभूषणों का भण्डार ।

तोशा (सं० पु०) मार्ग में भोजन करने की सामग्री ।

तोशाखाना (सं० पु०) वस्त्रों तथा गहनों का भण्डार ।

तोष (सं० पु०) तुष्टि, तृप्ति, प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द, श्रीकृष्ण का एक सखा (वि०) थोड़ा, अल्प, अनेकार्थ वाची । [या आनन्द देने वाला ।

तोषक (वि०) तृप्त करने वाला, सन्तुष्ट करने वाला, हर्ष

तोषण (सं०पु०) सन्तोष, तृप्ति, शान्ति, आनन्द करण ।

तोषना (क्रि० अ०) तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, अघाना ।

तोषित (वि०) तृप्त, शान्त, सन्तुष्ट, हर्षित, आनन्दित ।

तोसक (सं० स्त्री०) तोशक, गद्दा ।

तोहफ़ा (अ० सं० पु०) भेट, उपहार, सौग़ात, (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, उमदा, बढ़िया, अच्छा । [अभियोग ।

तोहमत (अ०सं०स्त्री०) मिथ्यावाद, झूठा कलंक, असत्य

तोहरा (सर्व०) तुम्हार ।

तोहि (सर्व०) तुमको, तुझको । [शान्त न हो ।

तौंस (सं० स्त्री०) धूप लगने से जो प्यास लगे और

तौंसना (क्रि० अ०) उष्णता से सन्तप्त होना, गर्मी से झुलस जाना ।

तौ (वि०) तो ।

तौजा (सं० पु०) वह धन जो खेतिहरों को बिवाहादि में ख़र्च के लिये अगाऊ दिया जाय, वियाही (वि०) हाथ उधार, दस्तगर्दां ।

तौन (सर्व०) वह, सो, (सं० स्त्री०) गाय दुहते समय बछवे को उसके अगले पैर में बाँधने के लिए रस्सी ।

तौर (सं० पु०) यज्ञ विशेष, चालढाल (अव्य०) प्रकार, भाँति ।

तौरेत (सं० पु०) यहूदियों का प्रधान धार्मिक ग्रन्थ जिसमें सृष्टि और आदम की उत्पत्ति आदि का वर्णन है।
तौर्य (सं० पु०) ढोल मजीरा आदि बाजा।
तौर्यत्रिक (सं० पु०) नाच, गाना और बाजा आदि।
तौल (सं० पु०) तुला राशि, तराजू, तुला, तोल, माप, वज़न, जोख।
तौलना (क्रि० स०) वजन करना, जोखना।
तौलवाई (सं० स्त्री०) तौल करने का काम, तौलाई।
तौलवाना (क्रि० स०) वजन कराना जोखवाना।
तौला (सं० पु०) मिट्टी का बर्तन जिसमें दूध नापा जाता है, बया, अनाज तौलने वाला, कमोरा, महुए का मद्य।
तौलाई (सं० स्त्री०) तौलने का काम, तौलने की मज़दूरी।
तौलाना (क्रि० स०) जोखवाना, वजन कराना।
तौलिया (सं० स्त्री०) मोटा गमछा जिससे देह पोंछा जाता है।
तौलैया (सं० पु०) तौलने वाला, बया। [घबड़ाना।
तौसना (क्रि० अ०) उष्णता से व्याकुल होना, गरमी से
तौही (अव्य०) इस पर भी, तौभी, तब भी।
तौहीन (अ० सं० स्त्री०) अनादर, अपमान, अप्रतिष्ठा।
तौहू (अव्य०) तथापि, तौ भी, तोही।
त्यक्त (वि०) त्यागा हुआ, विसर्जित, छोड़ा हुआ।
त्यक्तजीवन (सं० पु०) गत प्राण, मृत।
त्यक्ताग्नि (सं०पु०) अग्नि रहित ब्राह्मण, अग्निहोत्ररहित।
त्यजन (सं० पु०) त्याग, छोड़ना।
त्यजनीय (वि०) त्याज्य, त्यागने योग्य।
त्याग (सं० पु०) उत्सर्ग, विसर्जन, किसी वस्तु से अपना अधिकार या सम्बन्ध छोड़ देना।
त्यागन (क्रि०) त्याग, विराग। [अलग करना।
त्यागना (क्रि० स०) त्याग करना, छोड़ना, तजना,
त्यागपत्र (सं० पु०) वह पत्र जिसमें किसी वस्तु या पद को त्यागने का उल्लेख हो।
त्यागशील (वि०) दाता, दानशील।
त्यागी (वि०) जिसने संसार से नाता तोड़ दिया हो, विरक्त, विरागी।
त्याजित (वि०) छोड़ा हुआ, विसर्जित।
त्याज्य (वि०) त्यागने योग्य।
त्यों (वि०) उस भाँति, उस ढंग, उस प्रकार, उस तरह।
त्यौंधा (वि०) रात का अन्धा, रतौन्धिया।
त्योनार (सं० स्त्री०) दक्षता, निपुणता, चतुराई।
त्योनारी (सं० स्त्री०) कर्म निपुण स्त्री। [धमकी।
त्यौरी (सं० स्त्री०) दृष्टि, निगाह, चितवन, घुड़की, मुहा०—त्योरी चढ़ाना - क्रोध करना, कुपित होना।
त्योरुस (सं० पु०) गत या आगामी तीसरा वर्ष।
त्योहार (सं० पु०) उत्सव का दिन, पर्व का दिन।
त्योहारी (सं० स्त्री०) वह वस्तु या वह द्रव्य जो त्योहार के दिन किसी को दिया जाय।
त्यों (वि०) देखो "त्यों"।
त्यौरी (सं० पु०) त्योरी, घुड़की, धमकी, चितवन।
त्यौराना (क्रि० अ०) सिर घूमना, दिमाग़ में चक्कर आना।
त्रपा (सं० स्त्री०) लज्जा, हया, व्यभिचारिणी स्त्री।
त्रपाकर (वि०) लज्जाकर।
त्रपान्वित (वि०) सलज्ज, लज्जालु।
त्रपाभर (सं० पु०) पूर्ण लज्जा, अधिक लज्जा।
त्रपावान (वि०) लज्जा युक्त, त्रपा युक्त।
त्रपित (वि०) लज्जित, शरमिन्दा।
त्रपिष्ठ (वि०) अत्यन्त लज्जित, सलज्ज।
त्रपु (सं० पु०) सीसा, रांगा।
त्रपुरी (सं० स्त्री०) छोटी इलायची, गुजराती इलाइची।
त्रय (वि०) तीन, तीसरा। [और प्रभावती।
त्रयगङ्गा (सं० स्त्री०) तीनगंगा, मन्दाकिनी, भागीरथी
त्रयताप (सं०स्त्री०) तीन ताप, दैहिक, दैविक व भौतिक।
त्रयपावक (सं० पु०) तीन अग्नि, आहवनीय, दक्षिणाग्नि और गार्हपत्याग्नि अथवा जठरा, बड़वा, दावानल।
त्रयरेखा (सं० स्त्री०) तीन रेखा।
त्रयरोग (सं० पु०) बात, पित्त और कफ से उत्पन्न रोग।
त्रयी (सं० स्त्री०) तीन वस्तुओं का संग्रह या समूह।
त्रयीतनु (सं० पु०) सूर्य, रवि, भास्कर।
त्रयीधर्म (सं० पु०) वैदिक धर्म।
त्रयीमय (सं० पु०) ईश्वरीय, ईश्वर।
त्रयीमुख (सं० पु०) ब्राह्मण, द्विज, विप्र।
त्रयोदश (वि०) तेरह।
त्रयोदशी (सं० स्त्री०) दोनों पक्ष की तेरहवीं तिथि।
त्रस (सं० पु०) अरण्य, वन, जंगल।
त्रसन (सं० पु०) भय, डर, ख़ौफ़, उद्वेग, व्याकुलता।

त्रसना (क्रि० अ०) भयभीत होना, डरना, भय से कांपना।
त्रसरेणु (सं० पु०) तीन परमाणुओं का परिमाण।
त्रसाना (क्रि० स०) भयभीत करना, धमकाना, डराना।
त्रसित (वि०) भयभीत, डरा हुआ, पीड़ित।
त्रस्त (वि०) भीत, डरा हुआ, चकित, पीड़ित।
त्राटक (सं०पु०) योग के षट कर्मों में से छठवाँ साधन।
त्राण (सं० पु०) कवच, बचाव, रक्षा, निस्तार, उद्धार।
त्राणकर्त्ता (सं० पु०) रक्षक, उद्धारक।
त्राणी (वि०) त्राण कर्त्ता, रक्षक रक्षा करने वाला।
त्रात (वि०) रक्षित, परित्राण, कृत रक्षा।
त्राता (सं० पु०) रक्षा करने वाला, रक्षक।
त्रातार (सं० पु०) रक्षक।
त्रायमाण (सं० पु०) रक्षक, एक प्रकार की लता जिसका बीज औषधि के काम में आता है।
त्रास (सं० पु०) शङ्का, भय, डर, मणियों का एक दोष।
त्रासक (सं० पु०) भयतीत करने वाला, डराने वाला।
त्रासदायी (वि०) भय-दाता, भय-दायक।
त्रासा (वि०) शङ्कित, भीत, भयमान।
त्रासित (वि०) भीत, डरा हुआ।
त्राहु (क्रि०) बचाओ, रक्षा करो।
त्राह करना (क्रि०) रक्षा करने के लिए पुकारना।
त्राहि (अव्य०) बचाओ, त्राण करो, रक्षा करो।
त्रि (वि०) तीन। [संख्या।
त्रिंश (वि०) तींसवाँ, तीस संख्या को पूर्ण करने वाली
त्रिंशति (वि०) तीस, ३०।
त्रिक् (सं० पु०) तीन वस्तुओं का समूह, रीढ़ के नीचे का भाग, कमर, त्रिफला, त्रिकुट, त्रिमद, तीन रुपये सैकड़े का सूद या लाभ।
त्रिककुद् (सं० पु०) पर्वत विशेष, त्रिकुट पर्वत।
त्रिकच्छक (सं० पु०) धोती पहनने की रीति।
त्रिकट (सं० पु०) गोखरू, गोक्षरीलता।
त्रिकटु (सं० पु०) तीन कटु वस्तुओं का समूह, वे ये हैं, सोंठ, पीपर और मिर्च। [द्विज।
त्रिकर्मा (वि०) जो पढ़ना, पढ़ाना और यज्ञ ये तीन कर्म करे,
त्रिकाण्ड (वि०) तीन काण्ड वाला, (सं० पु०) अमर कोष, निरुक्त का दूसरा नाम इनमें तीन काण्ड हैं इसी से इनका नाम त्रिकाण्ड पड़ा है।
त्रिकाल (सं० पु०) तीनों काल, प्रातः मध्यान्ह, संध्या, भूत, वर्तमान, भविष्य।
त्रिकालज्ञ (सं० पु०) सर्वज्ञ, तीनों काल का ज्ञाता।
त्रिकाल दर्शक (सं०पु०) तीनों कालों का जानने वाला।
त्रिकालदर्शी (सं०पु०) त्रिकालज्ञ, तीनों कालों की बातों को जानने वाला।
त्रिकुट (सं० पु०) सिंघाड़ा।
त्रिकुटा (सं० पु०) सोंठ, मिर्च, पीपर।
त्रिकुटी (सं० स्त्री०) दोनों भौहों के बीच का स्थान।
त्रिकूट (सं० पु०) वह पर्वत जिस पर लंका बसा था।
त्रिकोण (सं० पु०) वह वस्तु जिसमें तीन कोन हो, त्रिभुज क्षेत्र।
त्रिकोण मिति (सं० स्त्री०) वह विद्या जिसमें त्रिकोण के नापने आदि की विधि विधान हो।
त्रिगण (सं० पु०) त्रिवर्ग, धर्म, अर्थ, काम ये तीन।
त्रिगर्त (सं० पु०) जालंधर काँगड़ा आदि प्रदेश का प्राचीन नाम।
त्रिगुण (सं० पु०) सत्व, रज, तम ये तीन गुण हैं, (स्त्री०) दुर्गा, माया, तन्त्र का एक बीज।
त्रिगुणाकृत (वि०) तीन बार जोता हुआ खेत।
त्रिगुणातीत (सं० पु०) ब्रह्म, परम पुरुष।
त्रिगुणात्मक (वि०) त्रयगुण युक्त, जिसमें तीनों गुण हों।
त्रिजटा (सं० स्त्री०) रावण के अन्तःपुर में रहने वाली एक राक्षसी, यह विभीषण की बहिन थी, अशोक वन में यह सीता की रखवाली करती थी, सीता के साथ इसका व्यवहार दयापूर्ण था, बेल का पेड़, श्रीफल।
त्रिज्या (सं० स्त्री०) आधे व्यास की रेखा।
त्रिणता (सं० स्त्री०) धनुष, कमान।
त्रिणचिकेत (सं० पु०) यजुर्वेद का एक अध्याय।
त्रित (सं० पु०) गौतम मुनि का एक पुत्र।
त्रितय (सं० पु०) धर्म, अर्थ और काम, ये तीन।
त्रिदण्ड (सं० पु०) बाँस का एक दण्डा जिसके सिरे पर दो छोटी लकड़ियाँ बँधी रहती हैं, जो संन्यासाश्रम का चिह्न है।
त्रिदण्डी (सं० पु०) संन्यासी, जनेऊ, यज्ञोपवीत।
त्रिदश (सं० पु०) देवता, जीभ, जिह्वा।
त्रिदश दीर्घिका (सं०स्त्री०) मन्दाकिनी, गंगा।
त्रिदश नदी (सं० स्त्री०) मन्दाकिनी, स्वर्ग गंगा।

त्रिदश वधू (सं० स्त्री०) देव स्त्री, अप्सरा।
त्रिदशमञ्जरी (सं० पु०) तुलसी, बहु मंजरी।
त्रिदशाङ्कुश (सं० पु०) अशनि, वज्र।
त्रिदशाचार्य (सं० पु०) देवगुरु, बृहस्पति।
त्रिदशायुध (सं० पु०) वज्र, अशनि।
त्रिदशारि (सं० पु०) असुर, दैत्य, राक्षस।
त्रिदशालय (सं० पु०) स्वर्ग, सुमेरु पर्वत।
त्रिदशावास (सं० पु०) स्वर्ग, सुरलोक, देवलोक।
त्रिदशाहार (सं० पु०) अमृत।
त्रिदशेश्वर (सं० पु०) इन्द्र।
त्रिदिव (सं० पु०) स्वर्ग, आकाश, अन्तरिक्ष, सुख।
त्रिदेव (सं० पु०) ब्रह्मा, विष्णु और महेश।
त्रिदोष (सं० पु०) बात, पित्त और कफ का विकार, सन्निपात। [दोष, सन्निपात।
त्रिदोषज (सं० पु०) बात, पित्त और कफ से उत्पन्न
त्रिधा (वि०) तीन ढंग से, तीन प्रकार से। [तांबा।
त्रिधातु (सं० पु०) गणेश, तीन धातु, सोना, चांदी और
त्रिधामा (सं० पु०) शिव, विष्णु और अग्नि।
त्रिधारा (सं० स्त्री०) तीन धारा, गंगा। [गम्भीर।
त्रिध्वनि (सं० स्त्री०) तीन प्रकार की ध्वनि, मधुर, मन्द,
त्रिनयन (सं० पु०) शिव, (वि०) तीन नेत्र वाला।
त्रिनेत्र (सं० पु०) शिव।
त्रिपथ (सं० पु०) कर्म, ज्ञान और उपासना।
त्रिपथगा (सं० स्त्री०) गङ्गा। [चरण हों।
त्रिपद (सं० पु०) तिपाई, त्रिभुज, जिसके तीन पद या
त्रिपदा (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष, गायत्री छन्द।
त्रिपदिका (सं० स्त्री०) धातु निर्मित शङ्ख रखने की तिपाई। [गायत्री, तिपाई।
त्रिपदी (सं० स्त्री०) हाथी बाँधने का रस्सा, हंसपदी,
त्रिपर्णी (सं० स्त्री०) वन कपासी, शालपर्णी।
त्रिपाठ (सं० पु०) क्षेत्र विद्या भेद।
त्रिपाठी (सं०पु०) तीन वेदों का ज्ञाता, त्रिवेदी, तिवारी।
त्रिपाद (सं० पु०) विष्णु, नारायण, ज्वर विशेष।
त्रिपादिका (सं० स्त्री०) हंसपदी लता।
त्रिपिटक (सं०पु०) बुद्धदेव के उपदेशों का बृहत् संग्रह।
त्रिपुंसी (सं० स्त्री०) इन्द्र, वरुण, इनारुन।
त्रिपु (सं० पु०) सीसा, राँगा, धातु विशेष।
त्रिपुण्ड (सं० पु०) भस्म की ललाट पर तीन रेखाएँ जो शिव के उपासक लगाते हैं।
त्रिपुण्ड्र (सं० पु०) त्रिपुण्ड। [का समूह।
त्रिपुटी (सं० स्त्री०) छोटी लाची, निसोथ, तीन वस्तुओं
त्रिपुर (सं० पु०) मय दानव निर्मित तीन नगर, बाणासुर का दूसरा नाम।
त्रिपुरदहन (सं० पु०) महादेव, शिव, त्रिपुरारि।
त्रिपुरा (सं० स्त्री०) देवी विशेष, एक देवी का नाम।
त्रिपुरान्तक (सं० पु०) शिव, महादेव।
त्रिपुरारि (सं० पु०) शिव, महादेव।
त्रिपुरुष (सं० पु०) पिता, पितामह और प्रपितामह।
त्रिपुस (सं०पु०) खीरा, फल विशेष। [सिंहद्वार।
त्रिपौलिया (सं० पु०) राजमहल का पहला द्वार,
त्रिफला (सं० पु०) आँवला, हड़ और बहेरा का समूह।
त्रिबली (सं० स्त्री०) पेट पर पड़ा हुआ तीन बल, पेटी।
त्रिबेनी (सं० स्त्री०) त्रिवेणी, गङ्गा यमुना सरस्वती का संगम जो प्रयाग में हुआ है।
त्रिभङ्ग (वि०) तीन अङ्ग से टेढ़ा। [एक मूर्ति।
त्रिभङ्गी (सं० पु०) छन्द विशेष, श्रीकृष्ण भगवान की
त्रिभुज (सं० पु०) त्रिकोण क्षेत्र, तिनकोना। [लोक।
त्रिभुवन (सं० पु०) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों
त्रिभुवन सुन्दरी (सं० स्त्री०) पार्वती, दुर्गा।
त्रिमद (सं० स्त्री०) विद्या, धन और परिवार इन तीन से होने वाला अहंकार, मोथा, वायविडंग और चिरैता इन तीन का समूह। [शहद।
त्रिमधु (सं० पु०) ऋग्वेद का एक अंग, घी, चीनी,
त्रिमधुर (सं० पु०) घी, शहद और चीनी।
त्रिमात्रिक (वि०) तीन मात्रा वाला, प्लुत। [विशेष।
त्रिमुख (सं०पु०) शाक्य मुनि, गायत्री जपने की एक मुद्रा
त्रिमुनि (सं०पु०) पाणिनी, कात्यायनी और पातञ्जली।
त्रिमुहानी (सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर तीन मार्ग मिलते हों।
त्रिमुखा (सं० स्त्री०) बुद्धदेव की माता, माया देवी।
त्रिमूर्त्ति (सं० पु०) ब्रह्मा, विष्णु और शिव, सूर्य, (स्त्री०) ब्रह्म की एक शक्ति, बौद्ध की एक देवी।
त्रिया (सं० स्त्री०) स्त्री, नारी, औरत।
त्रियामा (सं० स्त्री०) रात, रात्रि।
त्रियुग (सं० पु०) विष्णु, सत्य और द्वापर, त्रेता ये तीनों युग, वसन्त, वर्षा, और शरद ऋतु।

त्रियोनि (सं० पु०) लोभ आदि से उत्पन्न कलह ।
त्रिरत्न (सं० पु०) बुद्ध धर्म और संघ का समूह ।
त्रिरात्रि (सं० पु०) एक व्रत विशेष जिसमें तीन दिन उपवास करना होता है, एक यज्ञ विशेष ।
त्रिरूप (सं० पु०) अश्वमेध यज्ञ के लिए एक विशेष प्रकार का घोड़ा ।
त्रिलिङ्ग (सं० पु०) तैलंग शब्द का संस्कृत रूप ।
त्रिलोक (सं० पु०) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल, त्रिभुवन ।
त्रिलोकनाथ (सं० पु०) राम, कृष्ण, विष्णु का अवतार, सूर्य, परमेश्वर ।
त्रिलोकी (सं० स्त्री०) तीन लोकों का समूह, त्रिभुवन ।
त्रिलोकीनाथ (सं० पु०) त्रिलोकनाथ, वह जो तीनों लोक का स्वामी है, परमेश्वर ।
त्रिलोचन (सं० पु०) शिव ।
त्रिलोह (सं० पु०) सोना, चाँदी और ताँबा ।
त्रिवर्ग (सं० पु०) धर्म, अर्थ और काम, सत्व, रज और तम ।
त्रिविक्रम (सं० पु०) वामन का अवतार ।
त्रिविक्रम भट्ट (सं० पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि का नाम ।
त्रिविद् (सं० पु०) तीन वेद का ज्ञाता, वह जिसने तीनों वेदों का अध्ययन कर लिया हो ।
त्रिविध (वि०) तीन प्रकार का, तीन धारा ।
त्रिविष्टप (सं० पु०) स्वर्ग, तिब्बत देश ।
त्रिवेणी (सं० स्त्री०) गङ्गा यमुना और सरस्वती का सङ्गम जो प्रयाग में हुआ है ।
त्रिवेद (सं० पु०) ऋक्, यजु और साम ।
त्रिवेदी (सं० पु०) तीनों वेदों का ज्ञाता ।
त्रिशंकु (सं० पु०) बिल्ली, पपीहा, खद्योत, जुगनू, एक सूर्यवंशी राजा, ये सशरीर स्वर्ग लोक जाना चाहते थे इसके लिए ये अपने गुरु वशिष्ठ के पास गये, पर उन्होंने स्वीकार न किया, तब उनके पुत्रों के पास गये, उन लोगों ने भी अस्वीकार कर दिया और शाप दिया कि जा चाण्डाल हो जा, तब ये विश्वामित्र के पास गये, उन्होंने सशरीर स्वर्ग भेजने को कहा, उन्होंने इसके लिए यज्ञ किया, वशिष्ठ और उनके पुत्रों को छोड़ कर सब ऋषि और देवताओं को निमन्त्रित किया, पर कोई देवता नहीं आये, इस पर क्रोध करके वे त्रिशंकु को सशरीर भेजने लगे, पर इन्द्र ने रोक दिया, इस पर विश्वामित्र दूसरी सृष्टि की रचना करने लगे, उन्होंने सप्तर्षि मण्डल की रचना की, यह देख देव लोग डर गये और विश्वामित्र के पास आये, विश्वामित्र इस शर्त पर राज़ी हुए कि त्रिशंकु जहाँ है वहीं रहेगा और सप्तर्षि मण्डल उनके चारों ओर रहेंगे, इस बात को देवताओं ने मान लिया, तब से त्रिशंकु आकाश में सिर नीचा किये लटके हुए हैं । हरिवंश में एक दूसरे त्रिशंकु का वर्णन है, ये ऐन्द्रावरुण के पुत्र थे, यह दूसरे की स्त्री हर लाये थे और गोमांस खा लिया था, इससे इनका नाम त्रिशंकु पड़ा इनके पिता ने नाराज़ होकर इनको निकाल दिया, इनकी दुर्दशा देख विश्वामित्र ने सशरीर स्वर्ग में भेज दिया और वहाँ इनको देवताओं ने स्थान दिया, इनकी स्त्री सत्यरथा के गर्भ से एक पुण्यात्मा पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम हरिश्चन्द्र था ।
त्रिशिरा (सं० पु०) राक्षस विशेष, ज्वर, कुबेर ।
त्रिशूल (सं० पु०) एक प्रकार का अस्त्र ।
त्रिशूलधारी (सं० पु०) महादेव ।
त्रिशूलपाणि (सं० पु०) शिव ।
त्रिशूली (सं० पु०) शिव ।
त्रिशृङ्ग (सं० पु०) त्रिकूट पर्वत, त्रिकोण ।
त्रिष्टुप् (सं० स्त्री०) एक वैदिक छन्द का नाम ।
त्रिसंधि (सं० स्त्री०) एक प्रकार का फूल जो सफेद, लाल और काला तीन रंग का होता है ।
त्रिसन्ध्य (सं० पु०) सायंकाल, प्रातः और मध्याह्न काल ।
त्रिस्थली (सं० स्त्री०) काशी, गया और प्रयाग ।
त्रिस्रोता (सं० स्त्री०) गङ्गा ।
त्रिस्पृशा (सं० स्त्री०) एक एकादशी जो विशेष योग में पड़ती है ।
त्रुटि (सं० स्त्री०) क्षति, हानि, न्यूनता, कमी, भूल, चूक, संशय, संदेह ।
त्रुटिकारक (सं० पु०) हानिकारी, दोषी, अपराधी ।
त्रुटित (वि०) खण्डित, टूटा हुआ, आहत, क्षत ।
त्रेता (सं० स्त्री०) दूसरा युग, यह युग १२९६००० वर्ष का होता है ।
त्रेताग्नि (सं० पु०) तीन प्रकार की अग्नि अर्थात् दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय ।
त्रेतायुग (सं० पु०) त्रेता ।
त्रैकालिक (सं० पु०) त्रैकाल में होने वाला, सर्वदा होने वाला ।
त्रैगर्त्त (वि०) त्रिगर्त्त वासी, त्रिगर्त्त देश का राजा ।

त्रैगुण्य (सं०पु०) सत्त्व,रज और तम इन तीनों का धर्म ।
त्रैमातुर (सं०पु०) लक्ष्मण । [तीसरे महीने होने वाला ।
त्रैमासिक (वि०) तीन मास पर होने वाला, प्रत्येक
त्रैराशिक (सं० पु०) गणित की वह क्रिया जिसमें तीन ज्ञात वस्तुओं से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है ।
त्रैलोक्य (सं० पु०) त्रिभुवन, ब्रह्माण्ड ।
त्रैवर्णिक (सं० पु०) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का धर्म ।
त्रैवार्षिक (वि०) प्रत्येक तीसरे वर्ष होने वाला ।
त्रोटक (सं०पु०) नाटक का एक भेद, एक छन्द का नाम ।
त्रोटी (सं० स्त्री०) चोंच, टोंट, टोंटी ।
त्रोरत (सं० पु०) तरकस, वाण रखने का घर ।
त्र्यधीश (सं० पु०) त्रिलोकेश, सूर्य, दिवाकर ।
त्र्यंबक (सं० पु०) शिव, महादेव । [भागवत में है ।
त्र्यक्ष (सं० पु०) शिव, महादेव, एक दैत्य जिसका वर्णन
त्र्यक्षर (सं० पु०) प्रणव, एक प्रकार का वैदिक छन्द ।
त्र्यशीति (सं० स्त्री०) तिरासी ।
त्वक् (सं० पु०) त्वचा, छाल, खाल, चमड़ा ।
त्वक् पत्र (सं० पु०) दारचीनी, तेजपात ।
त्वक्सार (सं० पु०) बांस, दारचीनी ।
त्वग्दोष (सं० पु०) कुष्ट, कोढ़ ।
त्वच् (सं०स्त्री०) त्वक्, छाल, चमड़ा, दारचीनी, केंचुली ।
त्वचा (सं० स्त्री०) चर्म, त्वक्, छाल, चमड़ा, ।
त्वदङ्घ्रि (सं० पु०) आप के चरण ।
त्वदीय (सर्व०) तुम्हारा ।
त्वरा (सं० स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी, तुरंत ।
त्वराकारक (वि०) शीघ्रकारक ।
त्वरान्वित (वि०)शीघ्र, तुरंत, त्वरित ।
त्वरित (वि०) शीघ्रता से, जल्दी, (वि०) तेज़ ।
त्वरित गति (सं० पु०) एक वर्णवृत्त का नाम ।
त्वष्टा (सं० पु०) सूर्य, महादेव, विश्वकर्मा, बढ़ई, एक प्रजापति का नाम, चित्रा नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता । [नक्षत्र ।
त्वाष्ट्र (सं० पु०) वज्र, वृत्रासुर का एक नाम, चित्रा
त्विषा (सं० स्त्री०) शोभा, दीप्ति, आभा, शशि किरण ।
त्विषापति (सं० पु०) सूर्य, रवि ।
त्विषि (सं० पु०) प्रभा, आभा, शशि, किरण, तेज ।
त्सरु (सं० पु०) तलवार की मूठ, साँप ।

थ

थ—यह तवर्ग का दूसरा वर्ण है, इसका उच्चारण दन्त है ।
थंब (सं० पु०) खंभा, थूनी, स्तम्भ ।
थंबा (सं० पु०) स्तम्भ, थूनी ।
थंभ (सं० पु०) खंभा, थंब, थूनी ।
थंभना (क्रि० अ०) रुकना, ठहरना, स्थिर होना ।
थंभाना (क्रि० स०) पकड़ाना, धरवाना ।
थ (सं० पु०) पर्वत, भय, भक्षण, आहार, एक व्याधि विशेष, भय, रक्षक, मंगल ।
थइँ (सं० स्त्री०) जगह, ठावँ, अटाला, ढेर ।
थई (सं० स्त्री०) कपड़ों की राशि, वस्त्र समूह, ईंटों की बनी अटारी, थवई ।
थक (सं० पु०) थोक, राशि, ढेर, गांव की सीमा ।
थक थक (वि०) तरबतर, लथ पथ ।
थकना (क्रि० अ०) श्रान्त होना, शिथिल होना ।
थकरी (सं० स्त्री०) खस की बनी कूंची जिसमें स्त्रियां बाल झाड़ती हैं ।
थका (वि०) थकित, श्रान्त, क्लान्त ।
थकान (सं० स्त्री०) शिथिलता, थकावट ।
थकाना (क्रि०स०) क्लान्त करना, श्रान्त करना, हराना ।
थकामांदा (वि०) श्रमित, श्रान्त ।
थकार (सं० पु०) 'थ' वर्ण ।
थकाव (सं० पु०) थकावट, शिथिलता ।
थकावट (सं० स्त्री०) थकाव, थकान, शिथिलता ।
थकि (क्रि०) थक कर, लाचार हो ।
थकित (वि०) थका हुआ, श्रान्त ।
थकैनी (सं० स्त्री०) थकावट ।
थकौहां (वि०) थका हुआ, शिथिल, थका मांदा ।
थक्का (सं० पु०) किसी वस्तु की जमी हुई मोटी तह, जमावट, जमी हुई वस्तु ।
थगित (वि०) रुका हुआ, मन्द, शिथिल ।
थति (सं० स्त्री०) थाती, धरोहर ।

थतिहर (सं०पु०) जिसके पास धरोहर या थाती रक्खी हो।
थती (सं० स्त्री०) अटाला, थोक, राशि, ढेर।
थन (सं० पु०) गाय, भैंस आदि की चूंची, स्तन।
थनटुट्ट (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसके स्तन का दूध रुक गया हो।
थनी (सं० स्त्री०) गलथना, हाथी घोड़ों का एक ऐब, स्तन के आकार की दो थैलियाँ जो बकरियों के गले के नीचे लटकती हैं। [गुबरैले की जाति का एक कीड़ा।
थनेला (सं० पु०) स्त्रियों के स्तन पर होने वाला फोड़ा,
थनेली (सं० स्त्री०) थनेला।
थनेश्वरी (सं० पु०) कुरुक्षेत्र के रहने वाले ब्राह्मण।
थनैत (सं० पु०) गांव का मुखिया, ज़मींदार की ओर से लगान वसूल करने वाला व्यक्ति।
थपक (सं० पु०) थाप, चुमकार, पुचकार।
थपकना (क्रि० स०) प्यार से किसी के शरीर पर हाथ थपथपाना, चुमकारना, पुचकारना, धीरे धीरे ठोंकना। [ठोंकने की क्रिया।
थपकी (सं० स्त्री०) थपक, थापी, हाथ से धीरे धीरे
थपड़ा (सं० पु०) थप्पड़, चपत।
थपड़ी (सं० स्त्री०) दोनों हाथ की हथेलियों को टकरा कर शब्द उत्पन्न करना, करताली।
थपथपी (सं० स्त्री०) थपकी।
थपना (क्रि० स०) स्थापित करना, बैठाना, प्रतिष्ठा करना, ठहराना, जमाना, धीरे धीरे ठोंकना, (सं०पु०) थापी, मुंगरी।
थपा (वि०) स्थापित, थापना किया हुआ।
थपाना (क्रि० स०) स्थापित कराना, स्थापना कराना।
थपुआ (सं० पु०) खपड़ा।
थपेड़ा (सं० पु०) चपेता, थप्पड़।
थपोड़ी (सं० स्त्री०) थपड़ी।
थप्पड़ (सं० पु०) चपत, चमेटा, तमाँचा।
थम (सं० पु०) खम्भा, थूनी, स्तम्भ।
थमकारी (वि०) रोकने वाला।
थमड़ा (वि०) बड़ा पेट वाला, तोंदैल।
थमना (क्रि० अ०) ठहरना, रुकना, धैर्य धरना, थँभना।
थर (सं० पु०) थल, बीहड़ स्थान, सिंह आदि की माँद (स्त्री०) तह, परत।
थरकना (क्रि० अ०) भय से कांपना, थर्राना।
थरकाना (क्रि० स०) भय से कँपाना।
थरथर (सं० स्त्री०) डर से उत्पन्न कंप, हलचल, डगमग।
थरथर कँपनी (सं० स्त्री०) एक छोटी चिड़िया, यह बैठने पर काँपती हुई जान पड़ती।
थरथराना (क्रि० अ०) भय से काँपना, काँपना।
थरथराहट (सं० स्त्री०) कँपकँपी।
थरथरी (सं० स्त्री०) कँपकँपी।
थरहराना (क्रि० अ०) थरथराना।
थरहाई / **थराई** } (सं० स्त्री०) एहसान, निहोरा।
थरिया (सं० स्त्री०) थाली, टाठी।
थरुलिया (सं० स्त्री०) छोटी थाली।
थर्राना (क्रि० अ०) दहलना, भय से काँपना।
थल (सं० पु०) स्थान, स्थल, जगह, ऊँची ज़मीन, बाघ की माँद, फोड़े का घेरा, व्रण-मण्डल।
थलकना (क्रि०अ०) थल थल करना, फड़कना, तलफना, उथल पुथल होना।
थलचर (सं० पु०) पृथ्वी पर रहने वाले जीव, स्थलचर।
थलचारी (वि०) पृथ्वी पर चलने वाला।
थलथल (वि०) मोटेपन के कारण हिलता डुलता हुआ।
थलथलाना (क्रि० अ०) अधिक मोटा होने से शरीर का मांस लटक कर हिलना, सामान्य आघात से भी हिलने लगना।
थलबेड़ा (सं० पु०) वह घाट जहाँ पर नाव लगती हो।
थलिया (सं० स्त्री०) छोटी थाली।
थली (सं० स्त्री०) जगह, स्थान, बैठक, परती, मैदान, रेतीला मैदान, जल के नीचे का तल, टीला, ऊँची ज़मीन। [कारीगर, राज।
थवई (सं० पु०) ईंट पत्थर की जोड़ाई करने वाला
थहराना (क्रि० अ०) थर्राना, काँपना, दुर्बलता के कारण अङ्गों का काँपना।
थहाना (क्रि० अ०) थाह लेना।
थहारना (क्रि० स०) जहाज़ को ठहराना। [सुराग़।
थांग (सं० स्त्री०) चोरों का गुप्त स्थान, भेद, खोज, पता,
थांगी (सं० पु०) चोर वा डाकुओं का भेदिया, चोरी का माल रखने वाला, चोरों को पता देने वाला, चोरों को ठहराने वाला, वह आदमी जो चोरों का अड्डा रक्खे, चोरों का सरदार।

थांभ (सं० पु०) खंभा, स्तम्भ, थूनी ।

थांभना (क्रि०स०) अटकाना, आड़ना, पकड़ना, थामना, गिरने पड़ने से बचाना, सहायता करना ।

थांवला (सं० पु०) आलबाल, थाला, क्यारी ।

था (क्रि० अ०) 'है' का भूतकाल ।

थाई (वि०) स्थायी, बना रहने वाला, (सं० पु०) बैठक, गीत का प्रथम पद जो गाने में बार बार कहा जाता है।

थाक (सं० पु०) गांव की हद, ग्राम सीमा, राशि, ढेर अटाला, थोक, (स्त्री०) थकावट, थकाना ।

थाकना (क्रि० अ०) थकना, श्रान्त होना, क्लान्त होना, शिथिल होना ।

थाति (सं० स्त्री०) ठहराव, टिकान, स्थिरता ।

थाती (सं० स्त्री०) पूंजी, संचित धन, धरोहर, अमानत ।

थान (सं० पु०) जगह, स्थान, ठिकाना, ठौर, कपड़े आदि की बँधी हुई लम्बाई, संख्या, अदद ।

थानक (सं० पु०) जगह, स्थान, नगर, आल बाल, थाला, झाग, फेन ।

थाना (सं० पु०) चौकी, अड्डा, कुछ सिपाहियों के रहने का स्थान जहाँ पर किसी अपराध की सूचना दी जाती है ।

थानापति (सं० पु०) ग्राम देवता, स्थान रक्षक देवता ।

थानी (सं० पु०) स्थान का स्वामी, दिक्पाल, (वि०) पूर्ण, संपन्न ।

थानेदार (सं० पु०) थाने का प्रधान, कोतवाल ।

थानैत (सं० पु०) स्थान का स्वामी, ग्राम देवता ।

थाप (सं० स्त्री०) तमाँचा, थप्पड़, किसी वस्तु के भरपूर बैठने से पड़ा हुआ निशान, ढोल, तबला आदि पर पूरे पंजे की चोट, स्थिति, धाक, मर्यादा, प्रतिष्ठा, क़दर, मान, सौगंध, शपथ, पंचायत । [का कार्य ।

थापन (सं०पु०) स्थापन करने की क्रिया, स्थापित करने

थापना (क्रि० स०) बैठाना, जमाना, स्थापन करना, स्थापित करना, खपड़ा, ईंट आदि बनाना, (सं० स्त्री०) प्रतिष्ठा, स्थापन ।

थापरा (सं०पु०) छोटी नाव, डोंगी । [के पैर का चिह्न ।

थापा (सं० पु०) हाथ के पंजे का निशान, छाप, पशुओं

थापित (वि०) स्थापित ।

थापी (सं० स्त्री०) काठ की बनी चपटी मुंगरी ।

थाम (सं० पु०) खम्भा, थूनी, स्तम्भ ।

थामना (क्रि० स०) संभालना, रोकना, थामनो, अटकाना पकड़ना, देर करना ।

थाम्भना (सं० स्त्री०) सम्भालना, रोकना ।

थाम्हना (क्रि० अ०) थामना, थाम्भना ।

थायी (वि०) स्थायी, ठहराऊ, स्थिर ।

थार (सं० पु०) थाल, बड़ी थाली ।

थारा (सर्व०) तुम्हारा ।

थाल (सं० पु०) बड़ी थाली ।

थाला (सं० पु०) थांवला, क्यारी, आलबाल ।

थाली (सं० स्त्री०) गोल छिछला ऊपर का किनारा कुछ उठा हुआ भोजन करने का पात्र ।

थाव (सं० स्त्री०) थाह ।

थावर (सं० पु०) स्थावर, अचल ।

थाह (सं० स्त्री०) तला, पेंदा, नद, तालाब, समुद्र आदि का नीचे का भाग, सीमा, पार, अन्त, भेद, पता, खोज ।

थाहना (क्रि० स०) थाह लेना, पता लगाना । [हो ।

थाहा (सं० पु०) नदी का वह भाग जहाँ अधिक जल न

थाही (सं० पु०) उथली नदी ।

थिगली (सं० स्त्री०) फटे वस्त्र का छेद बन्द करने के लिए लगाया जाने वाला वस्त्र का टुकड़ा, चकती, पैवन्द ।

थिति (सं० स्त्री०) स्थिति, ठहराव, स्थिरता, रहन, दशा ।

थिर (वि०) स्थायी, अचल, धीरे, शान्त, ठहराऊ, टिकाऊ । [उठना और गिरना ।

थिरक (सं० पु०) नृत्य में पैरों का हिलना डोलना या

थिरकना (क्रि० अ०) ठमक ठमक कर नाचना, अङ्ग विक्षेप पूर्वक नाचना ।

थिरकी (सं०स्त्री०) घूमने की रीति, चमत्कार, विशेषता ।

थिरता (सं०स्त्री०) स्थायित्व, शान्ति, धीरता, अचञ्चलत्व ।

थिरताई (सं० स्त्री०) स्थायित्व, अचञ्चलत्व, थिरता ।

थिरथानी (सं० पु०) लोक पाल आदि स्थिर स्थान के रहने वाले ।

थिरना (क्रि० अ०) निथरना, स्थिर होना, मैल आदि का नीचे बैठ जाना, जल आदि का हिलोरा बंद होना, क्षुब्ध न रहना ।

थिरा (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती ।

थिराना (क्रि० स०) निथारना, गंदले पानी के मैल का नीचे बैठाना, तरल पदार्थों के मैल आदि को नीचे बैठाना ।

थिरु (क्रि०) स्थिर हो, कायम रह।
थी (क्रि०) "था" का स्त्रीलिंग।
थीर (वि०) सुखी, स्थिर।
थुकथुकाना (क्रि०) थूकना।
थुकटाई (वि०) ऐसी औरत जिसे देख सब लोग थूकें या निन्दा करें। [कराना।
थुकवाना (क्रि० स०) थुकाना, थूकने का काम दूसरे से
थुकाई (सं० स्त्री०) थूकने की क्रिया।
थुकाना (क्रि० स०) उगलवाना, थूकने में दूसरे को प्रवृत्त करना, निन्दा कराना, अपमान कराना।
थुक्का फजीहत (सं० स्त्री०) धिक्कार, तिरस्कार, थुड़ी थुड़ी। [सूचक शब्द।
थुड़ी (सं० स्त्री०) लानत, धिक्कार घृणा और तिरस्कार
थुतकारना / थुथकारना } (क्रि०) अनादर के साथ निकाल देना।
थुथना (सं० पु०) लम्बा निकला हुआ मुँह।
थुथनी (सं० स्त्री०) शूकर का मुंह।
थुथाना (क्रि० अ०) मुंह फुलाना, ओंठ बिचकाना, भौं चढ़ाना, अप्रसन्न होना।
थू (अव्य०) थूकने की ध्वनि, छिः धिक्।
थूक (सं० पु०) लार, खखार, कफ़, मुँह का पानी।
थूकना (क्रि० पु०) थूक फेंकना, तिरस्कार करना।
थूणी (सं० स्त्री०) स्थूण, खम्भा, सहारे की लकड़ी जो छप्पर आदि में लगाई जाती है।
थूथड़ा (सं० पु०) शूकर आदि पशुओं का मुख, थूथनी, (वि०) बुरा, खराब। [हुआ मुँह।
थूथन (सं० पु०) सुअर का मुंह, सूअर का सा निकला
थूथुन (सं० पु०) देखो "थूथन"।
थूनी (सं० स्त्री०) खंभा, स्तम्भ।
थूरन (सं० पु०) कुचलन, पीटन। [भोजन करना।
थूरना (क्रि० स०) कूटना, पीटना, मारना, ठूंस ठूंस कर
थूल (वि०) मोटा, भद्दा, भारी।
थूला (वि०) मोटा ताज़ा, मोटा।
थूली (सं० स्त्री०) दलिया, पकाया हुआ दलिया जो हाल की ब्यायी गाय को दिया जाता है। [थुड़ी।
थूवा (सं० पु०) ढूह, टीला, मिट्टी का लोंदा, (स्त्री०)
थूहड़ (सं० पु०) थूहर।
थूहर (सं० पु०) एक प्रकार का कांटेदार पौदा, सेहुँड़।
थूहा (सं० पु०) टीला, ढूह, अटाला।
थूही (सं० पु०) ढूह, मिट्टी का ढेर।
थैथर (वि०) थकामान्दा, श्रान्त। [ध्वनि।
थेईथेई (वि०) थिरक थिरक कर नाचने की मुद्रा और
थेगली (सं० स्त्री०) थिगली, पैवन्द।
थेथा (वि०) थका हुआ, श्रमित।
थेवा (सं० पु०) अंगूठी का नगीना।
थैचा (सं० पु०) खेत के मचान पर का छाजन।
थैथै (सं० पु०) बाजे के समान शब्द निकालना।
थैला (सं० पु०) बोरा, बड़ा बटुआ, तोड़ा, पायजामे का वह भाग जो जंघे से घुटने तक होता है।
थैली (सं० स्त्री०) छोटा थैला, खीसा, बटुआ।
थोक (सं० पु०) समूह, एकत्र, राशि, ढेर, जत्था, झुंड।
थोकदार (सं० पु०) थोक, या इकट्ठा माल बेचने वाला व्यापारी।
थोकबन्दी (सं० पु०) दलबंदी। [ज़रासा, तनिक।
थोड़ा (वि०) अल्प, कम, न्यून, तनिक (क्रि० वि०)
मुहा०—थोड़ा थोड़ा=कुछ कुछ, कमकम, धीरे धीरे। थोड़ा थोड़ा होना=घटना, लज्जित होना, क्रमशः आगे बढ़ना। थोड़ा बहुत=न्यूनाधिक, घटबाढ़। थोड़े से थोड़ा=अल्प से अल्प। थोड़ा ही=नहीं।
थोतरा (वि०) भोथर, कुण्ठित।
थोती (सं० स्त्री०) थूथन, चौपायों के मुँह का अग्रभाग।
थोथ (सं० स्त्री०) खोखलापन, निस्सारता, पेटी, तोंद।
थोथरा (वि०) निःसार, खोखला, निकम्मा।
थोथला (वि०) बिना धार का, भोथला। [कुंठित, बेढंगा।
थोथा (वि०) पोला, खोखला, निकम्मा, बाँड़ा, गुठला,
थोथी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की घास।
थोथी बात (सं० स्त्री०) निरर्थक बात, व्यर्थ की बात।
थोप (सं० पु०) पालकी के बाँस का मुहरा, छाप, मुहर, ढाँप, भूषण।
थोपड़ी (सं० स्त्री०) धौल, चपत, तमाँचा।
थोपना (क्रि० स०) थापना, पोतना, लेपना, बटोरना, ढेर लगाना, सँभालना, माथे मढ़ना।
थोपियाना (क्रि०) चूना, बूँद बूँद गिराना, झिरझिराना।
थोपी (सं० स्त्री०) धौल, चपत, चपेटा।
थोब / थोभ } (सं० पु०) भरन की थूनी, कड़ी का टेकन।

थोबड़ा (सं० पु०) थूथन। [थोड़ा, अल्प, कम, न्यून।
थोर (सं० पु०) थूहर का पेड़, केले का गाभा, (वि०)
थोरा (वि०) थोड़ा, अल्प, न्यून।
थोरी (सं० स्त्री०) हीन, अनार्य जाति, (वि०) न्यून, थोड़ा।
थोहर (सं० पु०) थूहर, सेंहुड़।
थौना (सं० पु०) गौने के पीछे स्त्री की बिदाई।

द

द—यह तवर्ग का तृतीय वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान दन्तमूल है। [भय, डर, घबराहट।
दंग (फ़ा० वि०) चकित, विस्मित, स्तब्ध, (सं० पु०)
दंगई (वि०) लड़ाका, उपद्रवी, झगड़ालू, दंगा करने वाला, उग्र, प्रचण्ड, लंबा चौड़ा।
दंगल (फ़ा० सं० पु०) मल्लयुद्ध, कुश्ती, अखाड़ा।
दंगा (फ़ा०सं०पु०) उपद्रव, टंटा, झगड़ा, बखेड़ा, हुल्लड़, गोलमाल।
दंगैत (वि०) उपद्रवी, बाग़ी।
दंडना (क्रि० स०) सज़ा देना, दण्ड देना।
दंतिया (सं० स्त्री०) छोटे छोटे दाँत।
दंतुरिया (सं० स्त्री०) छोटे छोटे दाँत।
दंतुला (वि०) बड़े बड़े दाँत वाला।
दंदाना (क्रि० अ०) गरमी मालूम होना, गरमी लगना।
दंदी (वि०) उपद्रवी, झगड़ालू। [रौंदवाना।
दंवरी (सं० स्त्री०) अन्न के सूखे डंठलों को बैलों से
दंश (सं० पु०) दंशन, दंतक्षत, सर्पादि का काटा हुआ घाव, व्यंग, कटूक्ति, वैर, दाँत, बख़्तर, वर्म, कवच एक असुर जिसने भृगु के शाप से कीट योनि पाया था और परशुराम से अपनी पुनर्दशा में आ गया।
दंशक (सं० पु०) डांस नाम की मक्खी।
दंशन (सं० पु०) डसना, दाँत से काटना, वर्म, कवच।
दंशभीरु (सं० पु०) भैंस, महिष। [हुआ।
दंशित (सं० स्त्री०) दाँत से काटा हुआ, वर्म से ढका
दंशी (वि०) डंसने वाला, वैरी, द्वेषी, (सं० स्त्री०) छोटा डांस।
दंष्ट्र (सं० पु०) दाँत।
दंष्ट्रा (वि०) बड़ा दाँत, स्थूल दाँत, बिछुआ का पौधा।
दंष्ट्रानखविष (सं०पु०) दाँत और नख में विष वाले जीव।
दंष्ट्रायुध (सं० पु०) सुअर, शूकर। [दाँतों वाला।
दंष्ट्राल (सं० पु०) एक राक्षस का नाम (वि०) बड़े
दंष्ट्री (वि०) बड़े दाँत वाला, (सं० पु०) सर्प, सुअर।
दंस (सं० पु०) दंश।
द (सं० पु०) पहाड़, दाँत, भार्या, स्त्री, पत्नी, खण्डन, रक्षण, किसी शब्द के अन्त में लगने से यह देने वाले का बोधक होता है जैसे सुखद, जलद इत्यादि।
दई (सं० पु०) ईश्वर, विधाता, भाग्य, प्रारब्ध, अदृष्ट।
दईमारा (वि०) मन्दभाग्य, अभागा, प्रारब्ध हीन।
दउरना (क्रि० अ०) दौड़ना, भागना।
दक (सं० पु०) पानी, जल, रस।
दकार (सं० पु०) तवर्ग का तृतीय वर्ण 'द'।
दक्खिन (सं० पु०) उत्तर के सामने की दिशा।
दक्खिनी (वि०) दक्षिण का, दक्खिन देश वासी।
दक्ष (वि०) कुशल, निपुण, चतुर, पटु, प्रवीण, (सं० पु०) अत्रि ऋषि, रुद्र, शिव, विष्णु, शिव का बैल, ताम्रचूड़, मुरगा, राजा उशीनर का पुत्र बल वीर्य, एक प्रजापति, जो ब्रह्मा के मानस पुत्र थे, इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के दाहिने अंगूठे से और इनकी स्त्री की बायें से हुई थी, इन्हें सोलह कन्यायें उत्पन्न हुई, पन्द्रह कन्यायें ब्रह्मा के मानस पुत्रों को सौंपी गयीं और एक सती का शिव से ब्याह हुआ, एक बार दक्ष ने यज्ञ किया और उसमें शिव को नहीं बुलाया, शिव से आज्ञा लेकर सती स्वयं अपने पिता के घर गईं दक्ष ने शिव को निन्दा की। पतिनिन्दा सती न सह सकीं और वहीं अपना प्राण त्याग दिया। यह खबर जब शिव जी को लगी, शिव ने क्रोध से अपनी जटा में से बीरभद्र को उत्पन्न किया बीरभद्र शिव के गणों को लेकर दक्ष के यहाँ पहुंचे, यज्ञ को तहस नहस कर डाला, और दक्ष का सिर काट लिया, ब्रह्मा के स्तुति करने से शिव ने बकरे का मुण्ड लगाने की आज्ञा दी, दक्ष बकरे के मुण्ड जोड़ने से जी उठे और यज्ञ की पूर्णाहुती की।

दक्षकन्या (सं० स्त्री०) सती।
दक्षक्रतुध्वंसी (सं० पु०) शिव, वीरभद्र।
दक्षजा (सं० स्त्री०) सती, दुर्गा, सत्ताइस नक्षत्र, उमा।
दक्षजापति (सं० पु०) चन्द्र, शिव, कश्यप, धर्म, अग्नि, रुद्र।
दक्षता (सं० स्त्री०) पटुता, योग्यता, निपुणता।
दक्षन (सं० पु०) दक्ष का बहु वचन।
दक्ष सावर्णि (सं० पु०) नवें मनु का नाम।
दक्षसुत (सं० पु०) दक्ष प्रजापति के पुत्र प्रचेता।
दक्षसुता (सं० स्त्री०) सती पार्वती, भवानी।
दक्षा (वि०) पटुता, निपुणता, (सं० स्त्री०) पृथ्वी।
दक्षिण (वि०) दक्ष, निपुण, पटु, अनुकूल, दहना, अपसव्य, (सं० पु०) दक्खिन दिशा, वह नायक जो अपनी सब नायिकाओं पर समान प्रेम रखता है, प्रदक्षिण। [शक्ति।
दक्षिणकालिका (सं० स्त्री०) महा विद्या विशेष, आद्या,
दक्षिणकेन्द्र (सं० पु०) बड़वानल, बड़वाग्नि।
दक्षिणखण्ड (सं० पु०) विन्ध्याचल के दक्षिण का देश।
दक्षिण गोल (सं० पु०) विषुवत् रेखा से दक्षिण वाली राशियां, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन।
दक्षिणता (सं० स्त्री०) सरलता, अनुकूलता, सारल्य।
दक्षिण पथ (सं० पु०) दक्षिण दिशा।
दक्षिण परा (सं० स्त्री०) नैऋत्य कोण, पश्चिम।
दक्षिण पश्चिमा (सं०स्त्री०) दक्षिण और पश्चिम का कोन।
दक्षिण पुर्वा (सं० स्त्री०) दक्षिण और पूरब का कोन।
दक्षिणप्रवण (सं० पु०) उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की तरफ़ अधिक नीचा वा ढालुवा स्थान।
दक्षिणा हस्त (सं० पु०) दाहिना हाथ।
दक्षिणा (सं० स्त्री०) दक्खिन दिशा, वह पारितोषिक जो यज्ञादि कराने वाले ब्राह्मणों और पुरोहितों को दिया जाता है, भेंट, पुरस्कार, वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से प्रेम रखने पर भी उस पर वैसा ही प्रेम रक्खे, धर्म कार्य का पारितोषिक।
दक्षिणाग्नि (सं० स्त्री०) गार्हपत्याग्नि के दक्षिण ओर स्थापित अग्नि। [पर्वत विशेष।
दक्षिणाचल (सं० पु०) मलयपर्वत, दक्षिण दिशा का
दक्षिणा पथ (सं० पु०) विन्ध्य पर्वत के दक्षिणस्थ प्रदेश जहां से दक्षिण के लिए मार्ग गया है।
दक्षिणाभिमुख (वि०) दक्षिण ओर का रुख।
दक्षिणामुख (वि०) दक्षिणस्थ, दक्षिण दिशा में कृत मुख
दक्षिणा मूर्त्ति (सं० पु०) शिव की एक मूर्ति।
दक्षिणायन (सं० पु०) छः महीने का वह समय जिसमें सूर्य कर्क राशि से बराबर दक्षिण की ओर मकर राशि तक जाता है, सूर्य की वह गति जो कर्क रेखा से दक्षिण की ओर मकर रेखा तक है।
दक्षिणार्ह (वि०) दक्षिणा योग्य, दक्षिणा के अधिकारी।
दक्षिणावर्त (सं० पु०) एक प्रकार का बहुमूल्य शङ्ख जिसका घुमाव दक्षिण की ओर होता है।
दक्षिणावह (सं० पु०) दक्षिण से आने वाला वायु।
दक्षिणाशा (सं० स्त्री०) दक्षिण दिशा।
दाक्षिणीय (वि०) दक्षिण देश संबन्धी (सं० पु०) दक्षिण देश का रहने वाला आदमी, (स्त्री०) दक्षिण देश की भाषा।
दाक्षिणीय (वि०) दक्षिण देश संबन्धी।
दखन (सं० पु०) दक्षिण दिशा।
दखनी (वि०) देखो "दक्षिणी"।
दख़ल (अ० सं० पु०) क़ब्ज़ा, अधिकार, सत्ता, हस्तक्षेप प्रवेश, पहुँच, गति। [कराना।
दख़लदिहानी (अ०सं० स्त्री०) अधिकार दिलाना, क़ब्ज़ा
दख़लनामा (सं० पु०) वह पत्र जिसमें किसी व्यक्ति को किसी वस्तु पर अधिकार जमाने की आज्ञा हो।
दखिन (सं० पु०) दक्षिण दिशा।
दखिनहा (वि०) दक्षिणी। [आती है।
दखिना (सं० पु०) वह हवा जो दक्खिन से बह कर
दख़ील (अ० वि०) अधिकार रखने वाला।
दख़ीलकार (सं० पु०) वह असामी जिसने किसी खेत पर बारह वर्ष तक अधिकार रक्खा हो।
दख़ीलकारी (सं० स्त्री०) दख़ीलकार का ओहदा, दख़ीलकार के आधीन वाली ज़मीन।
दगड़ (सं० पु०) नगाड़ा, बड़ा ढोल।
दगड़ना (क्रि० अ०) सत्य पर विश्वास न करना।
दगड़ा (सं० पु०) राह, मार्ग, डगर।
दगड़ाना (क्रि०) डगराना, दौड़ना, धवाना, चलना
दगदगा (सं० पु०) भय, डर, एक प्रकार की कंडील।
दगदगाना (क्रि० अ०) चमकना, चमकाना, चहकना।
दगदगाहट (सं० स्त्री०) चमक, प्रकाश।

दगधना (क्रि० अ०) जलना, दुखित होना (क्रि० स०) जलाना, दुःख देना ।
दगना (क्रि०अ०) चलना, छूटना, जलना, झुलस जाना।
दगरा (सं० पु०) राह, रास्ता, विलम्ब ।
दगलफसल (सं० पु०) धोखा, छल ।
दगला (सं० पु०) रुईदार अंगरखा, भारी लबादा।
दगवाना (क्रि० स०) दूसरे को दागने में प्रवृत्त कराना।
दगहा (वि०) दाग वाला, प्रेत क्रिया करने वाला ।
दगा (अ०सं० स्त्री०) छल, धोखा, कपट ।
दगादार (वि०) छली, कपटी, धोखेबाज़ । [आदमी ।
दगाबाज़ (फ़ा० वि०) छली, कपटी, (सं० पु०) छली
दगाबाज़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) धोखा, छल, कपट ।
दगैल (वि०) दगहा, दाग वाला । [दुखित ।
दग्ध (वि०) जलाया हुआ, भस्म किया हुआ,
दग्ध काक (सं० पु०) अंड काक, बुढ़कौआ ।
दग्धयोनि (वि०) नष्ट बीज, उत्पादन शक्ति हीन ।
दग्धरथ (सं० पु०) एक गंधर्व का नाम, ये इन्द्र के सारथी थे, इनका नाम अङ्गारवर्ण था और ये चित्ररथ भी कहे जाते थे, इनसे और अर्जुन से युद्ध हुआ था जिसमें ये हार गये और अपना चित्ररथ जला डाला तभी से इनका नाम दग्धरथ भी पड़ा ।
दग्धा (सं० स्त्री०) अशुभ तिथि, पश्चिम दिशा ।
दग्धाक्षर (सं० पु०) पिंगल में झ, ह, र, भ, ष, ये पांच वर्णों को दग्धाक्षर माना गया है और छन्द के आरम्भ में इनको न रखना चाहिए ।
दग्धिका (सं० स्त्री०) जला भुना, भुजा अन्न, दग्ध अन्न ।
दग्धोदर (वि०) क्षुधापीड़ित (सं० पु०) भोजन की अभिलाषा, भोजन वांच्छा । [का युद्ध ।
दङ्गल (सं० पु०) एक प्रकार की चौकी, मल्ल युद्ध, बदावदी
दङ्गा (सं० पु०) झगड़ा, रौला, बलवा, हुल्लड़ ।
दङ्गैत (वि०) दङ्गा करने वाला, झगड़ालू ।
दघ (सं० पु०) त्याग, हिंसा, नाश ।
दचक (सं० स्त्री०) ठोकर, धक्का, दबाव । [जाना ।
दचकन (क्रि० अ०) ठोकर खाना, झटका खाना, दब
दचना (क्रि० अ०) पड़ना, गिरना ।
दच्छ (वि०) चतुर, निपुण, कुशल, दक्ष ।
दच्छकुमारी (सं० स्त्री०) सती ।
दच्छिण (सं० स्त्री०) दक्खिन दिशा, दक्षिण दिशा ।
दच्छिणा (सं० स्त्री०) दक्षिणा । [नहीं देना ।
दहना (क्रि०) धीरता के साथ सामना करना, पीछे पैर
दड़कना (क्रि०) दरकना, फटना, चिरना ।
दड़ेरा (सं० पु०) प्रचण्ड झड़, झक्का, दरेरा, भारी वृष्टि ।
दड़ोकना (क्रि० अ०) दहाड़ना, गर्जना, चीखना, चिग्घाड़ना । [गई हो ।
दढ़मुड़ा (वि०) बिना दाढ़ी का, जिसकी दाढ़ी मूड़ दी
दढ़ियल (वि०) जो दाढ़ी रक्खे हो, दाढ़ी वाला ।
दण्ड (सं० पु०) डंडा, लाठी, सोंटा, शासन, निग्रह, दमन, अपराधी को अपराध के अनुसार सज़ा, संन्यास धर्म, डंडे के समान कोई वस्तु, एक प्रकार का व्यूह, मथनी, तराजू की डंडी, कोन भूमि नापने का बाँस, काठा, यम, इक्ष्वाकु राजा का पुत्र ।
दण्डक (सं० पु०) दण्ड देने वाला व्यक्ति, शासक, डंडा ।
दण्डकारण्य (सं० पु०) एक प्राचीन वन का नाम, यह विन्ध्य पर्वत से लेकर गोदावरी तक चला गया है, वनवास के समय श्री रामचन्द्र ने इस वन में कुछ दिन तक निवास किया था ।
दण्डदास (सं० पु०) दण्ड भरने वाला, जुरमाने का रुपया नौकरी करके चुकाने वाला ।
दण्डधर (वि०) दण्डा रखने वाला, (सं० पु०) यमराज, संन्यासी, शासक ।
दण्डन (सं० पु०) शासन ।
दण्डनायक (सं०स्त्री०) सेनापति, सूर्य का एक अनुचर ।
दण्डनीति (सं० स्त्री०) दण्ड देकर शासनाधीन रखने वाली राजाओं की नीति ।
दण्डनीय (वि०) दण्ड पाने योग्य । [चौकीदार ।
दण्डपांशुल (सं० पु०) द्वारपाल, द्वाररक्षक, दरवान,
दण्डपाणि (सं० पु०) यमराज, शिव का एक गण, काशी में भैरव की एक मूर्ति ।
दण्डपाशक (सं० पु०) वध, कर्माधिकारी, जल्लाद ।
दण्ड प्रणाम (सं० पु०) दण्डवत्, सादर अभिवादन ।
दण्डप्रणेता (सं० पु०) दण्ड कर्त्ता, दण्ड दाता ।
दण्डमान (सं० पु०) दण्डित, सजा पाया हुआ, दण्ड प्राप्त ।
दण्डवत् (सं० स्त्री०) साष्टाङ्ग प्रणाम ।
दण्ड विधि (सं० स्त्री०) वह नियम या व्यवस्था जिसका सम्बन्ध अपराधों के दण्ड से हो ।

दण्डाजिन (सं० पु०) दण्ड और मृग चर्म ।
दण्डा दण्डी (अव्य०) लाठी की लड़ाई, लाठा लाठी ।
दण्डायमान (वि०) खड़ा, उठा हुआ ।
दण्डाश्रम (सं० पु०) संन्यास धर्म ।
दण्डाश्रमी (सं० पु०) संसार त्यागी संन्यासी, विरागी ।
दण्डित (वि०) दण्ड पाया हुआ ।
दण्डी (सं०पु०) दण्ड धारण करने वाला, यमराज, शासक, दण्ड कमण्डल धारण करने वाला संन्यासी, सूर्य का एक पार्श्वचर, धृतराष्ट्र का एक पुत्र, जैन देव, शम्भु, शिव, दशकुमार के रचयिता संस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान, ये प्रसिद्ध कवि और अलंकारिक भी थे ।
दण्ड्य (वि०) दण्डनीय ।
दतना (क्रि० अ०) सामना करना, डटना । [दन्तधावन ।
दतवन (सं०स्त्री०) मुखारी, दाँत साफ़ करने की लकड़ी,
दतारा (वि०) दाँत वाला ।
दतिया (सं० स्त्री०) छोटे दाँत, एक प्रकार का पहाड़ी तीतर, एक नगर का नाम जो बुन्देलखण्ड में है ।
दतुअन (सं० स्त्री०) दतुवन, मुखारी, दन्तधावन ।
दतुवन (सं० स्त्री०) दाँतों को साफ़ करने के लिये नीम वा बबूल की कूची ।
दतून (सं० स्त्री०) दतुवन, मुखारी ।
दतूना (सं० पु०) पौधा विशेष ।
दतूली (सं० स्त्री०) छोटे छोटे दांत, बच्चों के दांत ।
दतौन (सं० स्त्री०) दतवन ।
दत्त (वि) दिया हुआ, (सं० पु०) दान, दत्तक, दत्तात्रेय, बङ्गाली कायस्थों की अल्ल ।
दत्तक (सं० पु०) वह जो पुत्र न हो पर शास्त्र विधि से पुत्र बनाया गया हो, लिया हुआ पुत्र ।
दत्तकपुत्र (सं० पु०) गोद लिया हुआ पुत्र, मुतबन्ना ।
दत्तगुप्त (सं० पु०) अनसूया और अत्रि के पुत्र ।
दत्तचित्त (वि०) जो किसी कार्य में खूब ध्यान लगावे ।
दत्ता (सं० स्त्री०) बिवाहिता कन्या ।
दत्तात्मा (सं० पु०) वह जिसके माता पिता मर गये हों और वह स्वयं जाकर किसी का पुत्र बने ।
दत्तात्रेय (सं०पु०) चौबीस अवतारों में से एक अवतार ये अत्रि के पुत्र और अनसूया के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और विष्णु के अवतार माने जाते हैं । एक बार एक पतिव्रता स्त्री अपने कुः पति को वेश्या का नाच दिखाने को लेजा रही थी, अंधेरी रात होने के कारण ब्राह्मण का पैर माण्डव्य ऋषि को लग गया उन्होंने क्रुद्ध होकर शाप दिया कि जिसका पैर मुझे लगा है वह सूर्योदय होते ही मर जायगा, पतिव्रता ने कहा सूर्योदय होगा ही नहीं, सूर्य के न उदय होने से देवगण घबड़ा कर ब्रह्मा के पास गये उन्होंने पतिव्रता से सूर्योदय होने देने को कहने के लिए अनसूया को भेजा । अनसूया ने पतिव्रता को समझाया बुझाया और कहा कि तुम्हारे पति को मैं जिला दूंगी, तब उसने सूर्य को उदय होने दिया, सूर्य के उदय होते ही उसका पति मर गया, अनसूया ने उसको जिला दिया, देवगण ने अनसूया से प्रसन्न होकर बर मांगने को कहा, उसने कहा ब्रह्मा विष्णु और शिव मेरे पुत्र हों, तदनुसार ब्रह्मा ने सोम बनकर, विष्णु ने दत्तात्रेय बनकर और शिव ने दुर्वासा बनकर अनसूया के घर जन्म लिया ।
दत्तादत्त (वि०) दिया हुआ लेना ।
दत्तादर (वि०) सेवित, सेव्यमान्, सत्कृत ।
दत्तानयकर्म (सं० पु०) दान करके पुनः नहीं लेना ।
दत्तापहृत (वि०) दान करके छीन लेना, देकर ले लेना ।
दत्ताप्रदानिक (सं० पु०) किसी दान किये हुये पदार्थ को अन्याय पूर्वक फिर से प्राप्त करने का प्रयत्न ।
दत्तेय (सं० पु०) इन्द्र ।
दत्तोलि (सं० पु०) पुलस्त्य मुनि का एक नाम ।
दत्रिम (सं०पु०) दत्तक पुत्र, दिया हुआ पुत्र, गृहीत पुत्र ।
ददन (सं० पु०) दान, वितरण, त्याग देना ।
ददरा (सं० पु०) छानने का वस्त्र, साफी ।
ददरी (सं० स्त्री०) पके तम्बाकू के पत्ते पर का दाग, एक मेले का नाम जो बलिया में कार्तिक शुक्ला को लगता है और भृगु मुनि का पूजन होता है ।
ददरीक्षेत्र (सं० पु०) भृगु मुनि का स्थान जहाँ कार्तिक की पूर्णिमा को मेला होता है ।
ददलाना (क्रि०) डांटना, भर्त्सना करना, साँसना ।
दद्दा (सं० पु०) दादा, आजा । [का घर ।
ददिऔरा (सं० पु०) दादी का मैका, पितामही के पिता
ददिहाल (सं० पु०) दादा का वंश, दादा का घर ।
ददिया ससुर (सं० पु०) ससुर का बाप । [सास ।
ददिया सास (सं० स्त्री०) ददिया ससुर की स्त्री, सास की
दद्दोरा (सं० पु०) चकत्ता, गुमटा, चठखर ।

दद्रु (सं० पु०) खाज, दाद, कच्छप ।
दद्रुघ्न (सं० पु०) चकवड़ ।
दद्रु नाशिनी (सं०स्त्री०) दद्रुनाशक औषधि, तैलिनी कीट ।
दद्रु रोगी (वि०) दद्रु रोग विशेष, दद्रु रोग युक्त ।
दद्रू (सं० पु०) दाद रोग । [समुद्र, सागर ।
दधि (सं० पु०) दही, जोरन डाल कर जमाया हुआ दूध,
दधिकांदो (सं० पु०) एक उत्सव जो जन्माष्टमी या राम नवमी के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, इसमें एक दूसरे पर हल्दी मिला हुआ दही फेंकते हैं ।
दधिधेनु (सं० स्त्री०) पुराण के अनुसार दान के लिए दही के मटके में कल्पना की हुई गाय । [मामा था ।
दधिमुख (सं० पु०) एक बानर का नाम, यह सुग्रीव का
दधि रिपु (सं० पु०) अगस्त्य मुनि ।
दधि वल (सं० पु०) सुग्रीव के एक पुत्र का नाम ।
दधिसार (सं० पु०) मक्खन, नवनीत, घी ।
दधिसुत (सं० पु०) चन्द्रमा ।
दधिसुता (सं० स्त्री०) सीप ।
दधिस्नेह (सं० पु०) दही की मलाई ।
दधिस्वेद (सं० पु०) छाछ, मट्ठा, तक्र ।
दधोच (सं० पु०) देखो "दधीचि" ।
दधीचि (सं० पु०) एक वैदिक ऋषि, वेद में इनको अथर्व का पुत्र कर्दम ऋषि की कन्या शान्ति के गर्भ से उत्पन्न लिखा है, ब्रह्माण्ड पुराण में इनको शुक्राचार्य का पुत्र माना गया है, ये दान वीरों में प्रसिद्ध हैं, कहा जाता है जब वृत्रासुर के युद्ध से देवगण त्रस्त हो गये तब इन्द्र के पास गये, वहाँ यह निश्चित हुआ कि दधीचि ऋषि की हड्डी से वज्र बने तब वृत्रासुर मारा जा सकता है, इसके पहले इन्द्र इनका सिर भी काट चुके थे, दधीचि ऋषि ध्यान में मग्न थे उनका ध्यान भङ्ग होने के लिए अलम्बुषा नाम की अप्सरा को इन्द्र ने भेजा, उसे देख दधीचि का वीर्यपात हुआ, जिससे सारस्वत नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ, इन्द्र के आने पर उदारता पूर्वक दधीचि ने अपनी हड्डी इन्द्र को दे डाली जिससे वृत्रासुर मारा गया । [मनाना ।
दनदनाना (क्रि० अ०) दनदन ध्वनि करना, आनन्द
दनादन (वि०) दनदन शब्द सहित ।
दनु (सं० स्त्री०) दक्ष की एक कन्या, इसका ब्याह कश्यप से हुआ था, इसके गर्भ से चालीस पुत्र उत्पन्न हुए थे जो सब दानव थे ।
दनुज (सं० पु०) दानव, असुर ।
दनुजराय (सं० पु०) हिरण्यकश्यप ।
दनुज द्विष (सं० पु०) देवता, सुर, अमर, देव ।
दनुजारी (सं० पु०) विष्णु, देवता ।
दनुराय (सं० पु०) हिरण्य कश्यप । [चोंटी, कुञ्ज ।
दन्त (सं० पु०) दाँत, दशन, ३२ की संख्या, पर्वत की
दन्तक (सं० पु०) नाग दन्त, पर्वत शृङ्ग ।
दन्तकथा (सं० पु०) जनश्रुति । [दतुवन, दन्तधावन ।
दन्त काष्ठ (सं० पु०) दाँत साफ़ करने की लकड़ी,
दतच्छद (सं० पु०) ओष्ठ, ओठ । [करंज का पेड़ ।
दन्तधावन (सं० पु०) दतुवन, मौलसिरी, खदिर वृक्ष,
दन्तधानी (सं० स्त्री०) धनिया । [गहना, बाली ।
दन्तपद्र (सं० पु०) कर्णालङ्कार विशेष, कान का एक
दन्तपिष्ठ (वि०) कृतचर्वण, चबाया हुआ, चर्वित ।
दन्तमांस (सं० पु०) मसूढ़ा, मस्कुर ।
दन्तमूल (सं० पु०) दाँत का एक रोग विशेष ।
दन्तलेखन (सं० पु०) एक अस्त्र विशेष जिससे दाँत का मसूढ़ा चीर कर मवाद आदि निकाला जाता है ।
दन्तवक्र (सं० पु०) करुष देश का एक राजा, यह वृद्धशर्मा का पुत्र और शिशुपाल का भाई था, श्रीकृष्ण के द्वारा इसका बध हुआ था ।
दन्तबीज (सं० पु०) अनार ।
दन्तवेष्टन (सं० पु०) दन्तमांस, मसूढ़ा, मस्कुर ।
दन्तशठ (सं० पु०) जंभीरी, कपित्थ ।
दन्तशंकु (सं० पु०) एक अस्त्र विशेष जिससे चीरफाड़ किया जाता था ।
दन्तशूल (सं० पु०) दाँत का दर्द । [की टक्कर ।
दन्ताघात (सं० पु०) दांतों का आघात, हाथी के दांतों
दन्तावल (सं० पु०) हाथी, करी, गज, हस्ती ।
दन्तायुध (सं० पु०) सूअर, जंगली सूअर ।
दन्तालिका (सं० स्त्री०) लगाम ।
दन्तिका (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष, बड़ी सतावर ।
दन्तिनी (सं० स्त्री०) हस्तिनी, हथिनी ।
दन्ती (सं० पु०) हाथी, गज, करी (वि०) दाँत वाला ।
दन्तीफल (सं० पु०) पिस्ता, मेवा विशेष ।
दन्तीला (वि०) दांत युक्त वाला, जिसके बड़े बड़े दांत हों ।

दन्तुर (वि०) दन्त युक्त ।
दन्तुरच्छद (सं० पु०) बीजापुर, अनार ।
दन्तुरिया (सं० स्त्री०) बच्चों के छोटे दांत ।
दन्तेल, दन्तैल (वि०) बड़े दांत वाला
दन्तोलूखलिक (सं० पु०) एक प्रकार के संन्यासी जो ओखली में कूटा हुआ अन्न नहीं खाते ।
दन्तोष्ठ्य (वि०) दांत और ओंठ से उच्चारण होने वाले वर्ण । [वाले वर्ण ।
दन्त्य (वि०) दांत की सहायता से उच्चारण होने
दन्दह्यमान (वि०) दहकता हुआ ।
दन्दलाना (क्रि०) निर्भय बैठना, निडर होकर काम करना ।
दन्न (सं० पु०) बंदूक आदि के छूटने का शब्द ।
दपट (सं० स्त्री०) डपट, घुड़की, दपेट ।
दपटना (क्रि० अ०) डांटना, घुड़कना ।
दपेट (सं० स्त्री०) डपट, घुड़की ।
दपेटना (क्रि० अ०) डपटना, घुड़कना ।
दपदपाना (क्रि०) चमकना, दपदप करना ।
दफ़्ती (सं० स्त्री०) गाता, जिल्द, पुट्ठा ।
दफ़न (अ० सं० पु०) मुर्दे को ज़मीन में गाड़ने का काम, किसी वस्तु को ज़मीन में गाड़ने का काम ।
दफ़नाना (क्रि० स०) गाड़ना, मुर्दे को गाड़ना ।
दफ़ा (सं० स्त्री०) कानून की धारा ।
दफ़्तर (सं० पु०) कार्यालय । [वाला ।
दफ़्तरी (सं० पु०) जिल्दसाज, जिल्दबंदी का काम करने
दबंग (वि०) प्रभावशाली ।
दबक (सं० स्त्री०) सिकुड़न, धातु आदि को लंबा करने के लिये पीटने की क्रिया । [डपटना ।
दबकना (क्रि० अ०) लुकना, छिपना, पीटना, घुड़कना,
दबकवाना (क्रि०स०) दबकाने का काम दूसरे से कराना ।
दबकाना (क्रि० स०) छिपाना, ढाँपना, लुकाना ।
दबकी (सं० स्त्री०) घात, दांव, छिपाव, लुकाव ।
दबकौला, दबकैल (वि०) दबङ्ग, दबा हुआ ।
दबदबा (अ० सं० पु०) प्रताप, आतंक, रोब ।
दबना (क्रि० अ०) किसी वस्तु के बोझ के नीचे आ जाना, नम्र होना, धीमा पड़ना, नवना, डरना, लजाना, दबकना । [कराना ।
दबवाना (क्रि० स०) दबवाने का काम किसी दूसरे से
दबा (सं० पु०) दांव, घात, पेंच, (स्त्री०) औषधि, दवाई । [लने का काम ।
दबाई (सं० स्त्री०) दँवरी, मँड़ाई, डंठल से अन्न निका-
दबाऊ (वि०) जिसका अगला भाग पीछे की अपेक्षा अधिक बोझल हो, दबाने वाला, दब्बू ।
दबाना (क्रि० स०) दमन करना, दाबना, शान्त करना, लुकाना, छिपाना, ढांकना ।
दबा मारना (क्रि०) कुचल कर मार डालना, पराधीन को दुख देना । [छीन लेना ।
दबा लेना (क्रि०) अपने अधीन करना, वश करना,
दबाव (सं० पु०) रोब, चाँप, दबाने की क्रिया ।
दबाव मानना (क्रि०) डरना, सहमना, धाक मानना, आज्ञा मानना । [खोवा आदि भूनते हैं ।
दबला (सं० पु०) एक लकड़ी का औज़ार जिससे हलवाई
दबीज़ (फ़ा० सं० पु०) मोटे दल वाला, गाढ़, संगीन ।
दबीला (वि०) प्रभाववान, रोबदार, रोबीला, औषधि विशेष ।
दबे पाँव (सं० पु०) हौले हौले, धीरे धीरे, शनैः शनैः ।
दबैल (वि०) दबा हुआ, दब्बू, परतन्त्र, आधीन ।
दबोचना (क्रि०अ०) धर दबाना, दबाव डालना, छिपाना ।
दबोस (सं० पु०) चकमक पत्थर ।
दबोसना (क्रि० अ०) मद्य पीना, शराब पीना ।
दभ्र (वि०) थोड़ा, कम, अल्प ।
दम (सं० पु०) बाह्येन्द्रियों का दमन, दण्ड, शासन, इन्द्रियों को वश में रखना, दम्भ, अहङ्कार, घर, कीचड़, एक प्राचीन महर्षि का नाम, बुद्ध का नाम, दमयन्ती के एक भाई का नाम, विष्णु, दबाव, (फ़ा० सं० पु०) स्वांस ।
मुहा०—दम उलटना=व्याकुलता होना, जी घबराना । दम खींचना=चुप हो जाना । दम घुटना=साँस न लिया जा सकना । दम चुराना=जान बूझ कर साँस रोकना । दम टूटना=प्राण निकलना । दम फूलना=अधिक परिश्रम के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलना । दम भरना=किसी के प्रेम या मित्रता का भरोसा रखना और अभिमान पूर्वक उसका वर्णन करना । दम मारना=विश्राम करना । दम लगाना=गाँजे या चरस का धुआँ खींचना । दम के दम में=क्षण भर में, थोड़ी देर में ।

दमक (सं० स्त्री०) आभा, दीप्ति, चमक ।
दमकना (क्रि० अ०) चमकना, झलकना, चमचमाना ।
दमकल (सं० पु०) एक प्रकार का यन्त्र विशेष, पंप ।
दमकला (सं० पु०) एक प्रकार की पिचकारी ।
दमघोष (सं० पु०) चेदी देश के एक राजा, ये शिशुपाल के पिता और दमयन्ती के भाई थे ।
दमचूल्हा (सं० पु०) एक प्रकार का चूल्हा जिसमें लकड़ी का कोयला जलाया जाता है ।
दमड़ा (सं० पु०) धन, दौलत, रुपया, पैसा । [पक्षी ।
दमड़ी (सं० स्त्री०) पैसे का आठवां भाग, चिलचिल
दमदमा (सं० पु०) धुस, मोरचा ।
दमदमाना (क्रि० अ०) दमदम करना ।
दमदार (वि०) दृढ़, मज़बूत, चोखा ।
दमन (सं० पु०) दम, निग्रह, शासन, विष्णु, शिव, एक ऋषि का नाम, कुंद, दौना, विदर्भ राजा भीम का पुत्र । [दौना, एक छन्द का नाम ।
दमनक (वि०) दमन करने वाला, दमनशील, (पु०)
दमनी (सं० स्त्री०) लज्जा, सङ्कोच ।
दमनीय (वि०) दमन योग्य ।
दमनू (सं० पु०) दबाने वाला, दमन करने वाला ।
दमबाज (वि०) फुसलाने वाला, बहकाने वाला, बहाना करने वाला ।
दमबाजी (सं० स्त्री०) बहानाबाजी, छल, कपट ।
दमयन्ती (सं० स्त्री०) एक राजकन्या का नाम, यह विदर्भ के राजा भीमसेन की कन्या थी और नल को ब्याही गई थी, इसका जन्म दमन नामक महर्षि के आशीर्वाद से हुआ था, एक प्रकार का बेला ।
दमरक (सं० स्त्री०) कमरख ।
दमरख (सं० स्त्री०) कमरख ।
दमा (सं० पु०) स्वांस का रोग ।
दमाद (सं० पु०) जामाता, कन्या का पति । [साथ ।
दमादम (वि०) बराबर, लगातार, दमादम शब्द के
दमानक (सं० पु०) तोपों की बाढ़ ।
दमाना (क्रि०) नम्र करना, लचकाना, निहुरना ।
दमामा (फ़ा० सं० पु०) नगारा, डंका, धौंसा ।
दमारि (सं० पु०) वनाग्नि, वन की आग ।
दमावति (सं० स्त्री०) दमयन्ती ।
दमी (वि०) दमनीय, दम लगाने का नैचा ।
दम्पति (सं० पु०) स्त्री पुरुष, पति पत्नी का जोड़ा ।
दम्भ (सं० पु०) गर्व, अहङ्कार, घमण्ड, अभिमान, पाखण्ड ।
दम्भी (वि०) पाखण्डी, अहंकारी, अभिमानी ।
दम्भोक्ति (सं० स्त्री०) गर्वोक्ति, अभिमान युक्त वचन ।
दम्भोलि (सं० पु०) इन्द्र का वज्र ।
दम्य (वि०) दमनीय, दमन करने योग्य, वह बैल जो बधिया करने के योग्य हो ।
दया (सं० स्त्री०) करुणा, रहम, स्नेह, अनुग्रह, पर दुःख देख कातर हो उस को दूर करने का भाव, सहानुभूति का भाव ।
दयादृष्टि (सं० स्त्री०) करुणा का भाव ।
दयानत (अ० सं० स्त्री०) ईमान, सत्यनिष्ठा ।
दयानतदार (फ़ा० वि०) ईमानदार, सच्चा ।
दयानतदारी (फ़ा० सं० स्त्री०) ईमानदारी, सत्यता ।
दयानन्द (सं० पु०) आर्यसमाज के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध महात्मा ।
दयाना (क्रि० अ०) कृपालु होना, दयालु होना ।
दयानिधान (सं० पु०) दया का भण्डार, अत्यन्त दयालु व्यक्ति ।
दयानिधि (सं० पु०) ईश्वर, अत्यन्त दयालु पुरुष ।
दयापात्र (सं० पु०) दया के योग्य व्यक्ति ।
दयामय (वि०) करुणामय, दयालु, ईश्वर ।
दयार्द्र (वि०) दया से भरा हुआ, दयालु ।
दयाल (वि०) कृपालु, दयालु ।
दयालु (वि०) दयावान, करुणामय ।
दयालुता (सं० स्त्री०) करुणा, दयालु होने का भाव ।
दयावन्त (वि०) दयालु ।
दयावती (वि०) दया करने वाली ।
दयावान् (वि०) दयालु ।
दयाशील (वि०) दयालु । [दया हो ।
दयासागर (सं० पु०) दयानिधि, जिसके चित्त में अगाध
दयित (सं० पु०) पति, (वि०) प्रिय ।
दयिता (सं० स्त्री०) प्रिया, प्रियतमा, भार्या, पत्नी ।
दयिताधीन (वि०) स्त्री के वशीभूत, स्त्री के अधीन ।
दयौ (क्रि०) दिया हुआ, अर्पित ।
दर (सं० पु०) भय, डर, शङ्का, दरार, गड्ढा, कंदरा, गह्वर, गुफा, समूह, दल, द्वार, जगह, स्थान, खिड़की,

छेद, (स्त्री०) भाव, मोल, निर्ख, ठीक, प्रमाण, (वि०) किञ्चित, अल्प। [हुई चोट।
दरकच (सं० पु०) ठोकर खाने से या रगड़ से लगी
दरकचाना (क्रि० अ०) थोड़ा कुचलना।
दरकना (क्रि० अ०) फटना, विदीर्ण होना, चिरना।
दरका (सं० पु०) दरार, चीर, छिद्र, छेद, फांक।
दरकाना (क्रि० स०) चीरना, फाड़ना, विदीर्ण करना।
दरकार (फा० वि०) ज़रूरी, अपेक्षित, आवश्यक।
दरकिनार (फा०क्रि०वि०) एक ओर, दूर, अलग, पृथक, अलहदा।
दरकी (वि०) फटी।
दरकूच (फ़ा०वि०) बराबर, भ्रमण करता हुआ। [पत्र।
दरख़ास्त (फ़ा० सं० स्त्री०) प्रार्थना, निवेदन, निवेदन-
दरख़्त (फा० सं० पु०) वृक्ष, द्रुम, पेड़।
दरगाह (फा० सं० स्त्री०) कचहरी, दरबार, देहरी मकबरा, किसी सिद्ध पुरुष की समाधि। [जाने देना।
दरगुज़रना (क्रि० अ०) त्यागना, छोड़ना, क्षमा करना,
दरज (सं० स्त्री०) दराज, दरार।
दरजा (सं० पु०) श्रेणी, वर्ग, कक्षा।
दरजिन (सं० स्त्री०) दरजी की स्त्री।
दरजी (सं० पु०) कपड़ा सीने वाला।
दरण (सं० पु०) ध्वंश, विनाश।
दरद (सं० पु०) व्यथा, पीड़ा, दुःख, करुणा, दया, एक म्लेच्छ जाति, सिंगरफ, ईंगुर।
दरदर (सं० पु०) घर घर, द्वार द्वार।
दरदरा (वि०) मोटा पिसा हुआ, जिसके कण मोटे हों।
दरदराना (क्रि० अ०) दलिया दरना, बहुत महीन न पीसना, मोटा दरना। [वाला।
दरदरी (सं० स्त्री०) धरती, पृथ्वी, (वि०) मोटे रवे
दरदवन्त (वि०) दयालु।
दरद्द (सं० पु०) देखो "दरद"।
दरना (क्रि० स०) दलना, पीसना, नष्ट करना।
दरप (सं० पु०) दर्प, गर्व, घमण्ड।
दरपक (वि०) दर्प करने वाला पुरुष, (सं०पु०) कामदेव।
दरपन (सं० पु०) दर्पण, आईना। [करना।
दरपना (क्रि० अ०) घमण्ड करना, गर्व करना, क्रोध
दरपनी (सं० स्त्री०) छोटा आइना।
दरपरदा (फ़ा०क्रि० वि०) छिपा कर, चुपके से।
दरब (सं० पु०) द्रव्य, धन, दौलत, मोटी किनारदार चादर। [सड़ा कर बनाया जाता है।
दरबहरा (सं० पु०) मद्य विशेष, यह बनस्पतियों को
दरबा (सं० पु०) कबूतर आदि रखने के लिए खानेदार काठ का संदूक।
दरबान (फ़ा० सं० पु०) द्वारपाल।
दरबानी (फ़ा० सं० स्त्री०) द्वारपाल का काम।
दरबार (फ़ा० सं० पु०) कचहरी, राजसभा। [सभासद।
दरबारी (फ़ा०सं० पु०) दरबार करने वाला, राजसभा का
दरमा (सं० स्त्री०) बाँस की बनी चटाई।
दरमाहा (फ़ा० सं० पु०) महीना, वेतन, मासिक।
दरमियान (फ़० सं० पु०) बीच, मध्य, (क्रि० वि०) बीच में। [बीच का, मध्य का।
दरमियानी (फ़ा० सं० पु०) मध्यस्थ, बिचवनिया, (वि०)
दरवाज़ा (फ़ा० सं० पु०) द्वार, किवाड़।
दरवेश (फ़ा० सं० पु०) साधु, फ़क़ीर।
दरश (सं० पु०) देखो "दर्श"। [दर्शन।
दरस (सं०पु०) देखादेखी, भेंट, मुलाकात, रूप, सुन्दरता,
दरसना (क्रि० अ०) देख पड़ना, लखना, देखना।
दरसनी हुंडी (सं० स्त्री०) वह हुंडी जिसके भुगतान की तिथि आठ दस दिन या इससे भी कम हो।
दरसाना (क्रि० स०) दिखलाना, प्रकट करना।
दरही (सं० स्त्री०) मछली विशेष।
दरांती (सं० स्त्री०) हँसुआ, घास काटने का औज़ार।
दराई (सं० स्त्री०) दरने का काम, दरने का मेहनताना।
दराज (सं० स्त्री०) दरार, छेद, मेज में लगा संदूक़, (वि०) ज्यादा, अधिक, भारी, लम्बा।
दरार (सं० पु०) शिगाफ़, चीर, फांक।
दरारना (क्रि० अ०) फटना।
दरारा (सं० पु०) शिगाफ़, दरार।
दरि (सं० स्त्री०) पर्वत की गुहा, कन्दरा, भाव, दर।
दरित (वि०) भीत, डरा हुआ, शङ्कित।
दरिद (सं० पु०) कंगाल, गरीब, निर्धन।
दरिद्दर (सं० पु०) दरिद, दरिद्र।
दरिद्र (सं० पु०) निर्धन, ग़रीब, कंगाल।
दरिद्रता (सं० स्त्री०) निर्धनता, दीनता, कंगाली।
दरिद्रनि (वि०) दीन, दुखी, धन हीन, निर्धन।
दरिद्री (वि०) निर्धन, गरीब, दीन, कंगाल।

दरिया (फ़ा० सं० पु०) नदी, सागर, समुद्र, दलिया।
दरियाई (फ़ा० वि०) समुद्री, नदी संबन्धी।
दरियाई घोड़ा (सं० पु०) एक प्रकार के जानवर जो नदियों के दलदल में रहते हैं।
दरियाई नारियल (सं० पु०) एक प्रकार का नारियल।
दरिया दासी (सं० पु०) साधुओं का एक संप्रदाय जो दरिया साहब ने चलाया था।
दरियादिल (फ़ा० वि०) उदार, दानी।
दरियादिली (फ़ा० सं० स्त्री०) उदारता।
दरयाफ़्त (फ़ा० वि०) मालूम, जाना हुआ, ज्ञात।
दरियाव (सं० पु०) सागर, समुद्र, नदी।
दरी (सं० स्त्री०) खोह, गुफा, कन्दरा, एक प्रकार का मोटे सूत का बिछौना, (वि०) विदीर्ण करने वाला, चीरने वाला, डरपोक, डरने वाला।
दरीभृत (सं० पु०) पर्वत, पहाड़, गिरि।
दरीचा (फ़ा० सं० पु०) छोटा दरवाज़ा, खिड़की।
दरीची (फ़ा० सं० स्त्री०) जंगला, खिड़की। [बहुवचन।
दरीन (वि०) ब्रज भाषा के नियमानुसार दरी का
दरीबा (सं० पु०) पान की सट्टी, वह स्थान जहाँ पर पान का बाज़ार लगता है।
दरेती (सं० स्त्री०) अन्न दरने की छोटी चक्की, चकरी।
दरेरना (क्रि० अ०) धक्का देना, रगड़ना।
दरेस (सं० स्त्री०) फूल के छापे का महीन वस्त्र।
दरेसी (सं० स्त्री०) तैयारी, मरम्मत।
दरैया (सं० पु०) दरने वाला व्यक्ति, नाशक, घातक।
दरोग़ (अ० सं० पु०) झूठ, मिथ्या, असत्य।
दरोग़हलफ़ी (अ० सं० स्त्री०) झूठी गवाही देने का अपराध। [थानेदार।
दरोग़ा (सं० पु०) प्रबंधक, देख रेख रखने वाला व्यक्ति,
दर्ज़ (सं० स्त्री०) देखो "दरज"।
दर्जन (सं० पु०) बारह वस्तुओं का समुदाय।
दर्जा (सं० पु०) श्रेणी, कक्षा, वर्ग, कोटि।
दर्ज़िन (सं० स्त्री०) दर्ज़ी की स्त्री। [जाति का पुरुष।
दर्ज़ी (सं० पु०) कपड़ा सीने वाला, कपड़ा सीने वाली
दर्द (सं० पु०) व्यथा, पीड़ा।
दर्दमन्द (फ़ा० वि०) पीड़ित, व्यथित, दयालु, दयावान्।
दर्दी (वि०) पीड़ित, दयालु।
दर्दुर (सं० पु०) मेघ, पर्वत विशेष, मेढक, मेंढा, भेक।
दद्रु (सं० पु०) दाद।
दर्प (सं० पु०) अहंकार, घमण्ड, गर्व।
दर्पक (सं० पु०) कामदेव, मन्मथ, गरूरी, घमंडी।
दर्पकारी (वि०) अभिमानी, अहंकारी।
दर्पण (सं० पु०) आइना, आरसी।
दर्पणी (सं० स्त्री०) दर्पण, आइना।
दर्पणीय (वि०) सुन्दर, मनोहर।
दर्पन (सं० पु०) दर्पण, मुँह देखने का शीशा, चक्षु, आँख, संदीपन, उद्दीपन, उत्तेजना।
दर्पित (वि०) अभिमानी, गर्वीला, घमण्डी।
दर्पी (वि०) घमंडी, अहंकारी, गर्वीला।
दर्बार (सं० पु०) कचहरी, राजसभा।
दर्बारी (सं० पु०) राज सभासद।
दर्भ (सं० पु०) कुश, डाभ, कुशासन।
दर्भकेतु (सं० पु०) कुशध्वज, राजा जनक के भाई।
दर्भट (सं० पु०) भीतरी कोठरी।
दर्भपुष्प (सं० पु०) एक प्रकार का साँप।
दर्मियान (सं० पु०) दरमियान, बीच, मध्य।
दर्मियानी (वि०) बीच का, मध्य का।
दर्र (सं० स्त्री०) कुशा, डाभ, काश।
दर्रा (फ़ा० सं० पु०) पहाड़ी रास्ता, घाटी, दरार।
दर्राज (सं० स्त्री०) लकड़ी सीधी करने का औज़ार।
दर्राना (क्रि०) निर्भयता पूर्वक आगे बढ़ना।
दर्वा (सं०स्त्री०) उशीनर की स्त्री। [पात्र विशेष, गाभी।
दर्विका (सं० स्त्री०) तरकारी आदि चलाने का बर्तन,
दर्वी (सं० स्त्री०) चमची, कर्छी, सर्पफल, साँप का फन।
दर्वीकर (सं० पु०) फनदार साँप।
दर्श (सं० पु०) दर्शन, अमावस्या तिथि, द्वितीया तिथि, सूर्य चन्द्र के एकत्र होने की तिथि, अमावस्या के दिन किये जाने वाले कृत्य। [देखने वाला।
दर्शक (सं० पु०) दरशक, निरीक्षक, प्रधान, तमाशबीन,
दर्शन (सं० पु०) अवलोकन, साक्षात्कार, देखना, भेंट, मुलाक़ात, मिलन, नेत्र, नयन, बुद्धि, स्वप्न, धर्म, दर्पण, तत्त्व ज्ञान बताने वाला शास्त्र, इनकी संख्या १२ है, इनमें छः आस्तिक और छः नास्तिक हैं।
दर्शन प्रतिभू (सं० पु०) किसी को हाज़िर करने का ज़िम्मा लेने वाला व्यक्ति।
दर्शनी (सं० स्त्री०) भेंट, उपहार, दर्शनी हुण्डी।

दर्शनीहुंडी (सं० स्त्री०) देखो " दरसनी हुंडी "।
दर्शनीय (वि०) देखने योग्य, मनोहर, सुन्दर।
दर्शनीय मानी (वि०) अपने रूप का अभिमानी, अपने को सुन्दर समझने वाला। [लाषा।
दर्शनेच्छा (सं० स्त्री०) देखने की इच्छा, दर्शन की अभि-
दर्शयामिनी (सं० स्त्री०) अमावस्या की रात्रि।
दर्शित (वि०) दिखाया हुआ।
दर्शी (वि०) देखने वाला, अवलोकनकर्त्ता, निरीक्षक।
दल (सं० पु०) खण्ड, टुकड़ा, पत्ता, पत्र, पत्ती, समूह, गरोह, समुदाय, मण्डली, स्थूल, मोटापन, धन कोष, म्यान, जल में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का तृण। [गुदड़ी।
दलक (सं० स्त्री०) धमक, थरथराहट, चमक, टीस, दर्द,
दलकन (सं० पु०) झटका।
दलकना (क्रि० अ०) विदीर्ण होना, फट जाना, काँपना, थर्राना, भयभीत होना, डरना।
दलकपाट (सं० पु०) भिड़ा हुआ कपाट, हरी पंखड़ियों का कोश जिसमें अन्दर कोश होता है।
दलकि (क्रि०) दहल कर, थर्रा कर, फट कर।
दलकोश (सं०पु०) कुन्द का पेड़। [योद्धा,धान विशेष।
दलगञ्जन (वि०) सेना को त्रस्त करने वाला, बलवान
दलथंभन (सं० पु०) एक प्रकार का औज़ार जो कमखाब बुनने के काम आता है।
दलदल (सं० स्त्री०) चहला, कीचड़, फँसाव, धसान।
दलदला (वि०) दलदल वाला।
दलदलाना (क्रि० अ०) काँपना, थर्राना।
दलादलाहट (सं० स्त्री०) धमक, थरथराहट, कम्प।
दलदार (वि०) मोटे दल या गूदा वाला।
दलन (सं० पु०) खण्ड खण्ड करना, संहार, नाश।
दलना (क्रि० स०) टुकड़े टुकड़े करना, पीस कर खण्ड खण्ड करना, मलना, कुचलना, रौंदना, जीतना।
दलपति (सं० पु०) अगुआ, सेनापति, सरदार।
दलबल (सं० पु०) सेना, फ़ौज। [बड़ा शामियाना।
दलबादल (सं० पु०) घनघोर घटा, बादलों का झुण्ड,
दलमलना (क्रि० स०) मसलना, मलना, कुचलना, रौंदना, विनष्ट करना।
दलवाना (क्रि० अ०) दलने में दूसरे को प्रवृत्त करना, रौंदवाना, विनष्ट कराना, मलवाना।
दलवैया (वि०) दलने वाला।
दलसूसा (सं० पु०) पत्ते का सिरा, पत्ते की नस।
दलहन (सं० पु०) चना, अरहर, मूँग आदि दाल बनाने वाले अन्न।
दलहरा (सं० पु०) दाल का व्यापार करने वाला व्यक्ति।
दलान (सं० पु०) ओसारा, बरामदा, बैठक।
दलाना (क्रि० स०) दलवाना।
दलाल (सं० पु०) घटक, मध्यस्थ, कुटना, जाट की एक जाति विशेष। [मेहनताना।
दलाली (फ़ा० सं० पु०) दलाल का काम, दलाल का
दलित (वि०) रौंदा हुआ, कुचला हुआ, मर्दित, खण्डित, विनष्ट।
दलिद्र (सं० पु०) दरिद्र।
दलिद्रता (सं० स्त्री०) दरिद्रता, गरीबी।
दलिद्री (वि०) दरिद्री, धनहीन, निर्धन, कंगाल।
दलिया (सं० पु०) दले हुए अन्न के मोटे टुकड़े।
दलिहन (सं० पु०) देखो "दलहन"।
दली (वि०) पत्ते वाला, दल वाला।
दलीप सिंह (सं० पु०) पञ्जाब केशरी महाराजा प्रताप सिंह का छोटा लड़का।
दलील (अ० सं० स्त्री०) तर्क वितर्क, युक्ति।
दलेती (सं० स्त्री०) चक्की, जाँती।
दलेल (सं० स्त्री०) सिपाहियों को वह क़वायद जो सज़ा रूप में दी जाती है।
दलैया (वि०) दलने वाला, नष्ट करने वाला।
दल्भ (सं० पु०) धोखा, छल, पाप, अधर्म, चक्र।
दल्लाल (सं० पु०) दलाल, मध्यस्थ।
दल्लाला (अ० सं० स्त्री०) दूती, कुटनी।
दल्लाली (सं० स्त्री०) दलाली।
दवँरी (सं० स्त्री०) दंवरी, मड़ाई।
दव (सं० पु०) अरण्य, वन, जंगल, दवाग्नि, दवारी।
दवन (सं० पु०) नाश, दौना का पौधा।
दवना (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा।
दवनी (सं० स्त्री०) दंवरी, मँड़ाई।
दवरिया (सं० स्त्री०) दावानल, दावाग्नि।
दवा (फ़ा० सं० स्त्री०) औषध।
दवाई (सं० स्त्री०) दवा, औषध।
दवाईखाना (सं० पु०) औषधालय।

दवाखाना (सं० पु०) औषधालय ।
दवागि (सं० स्त्री०) दवारि. दवानल ।
दवागिन (सं० स्त्री०) दवानल, दवाग्नि ।
दवाग्नि (सं० पु०) बनाग्नि, वन की आग, दवानल ।
दवात (सं० स्त्री०) स्याही रखने का बर्तन, मसिपात्र ।
दवानल (सं० पु०) दवारि, दवाग्नि ! [वाला ।
दवामी (अ० वि०) चिरस्थायी, सदा एक सा रहने
दवामी बन्दोबस्त (फ़ा० सं० पु०) वह प्रबंध जिसमें ज़मीन का सरकारी लगान या भूमिकर सदा एक सा रहे, उसमें कमीवेशी न हो ।
दवारि (सं० पु०) दवाग्नि, दवानल, बन की आग ।
दविष्ठ (वि०) अत्यन्त दूरवर्ती, अतिशय दूरवर्ती ।
दवीयान (वि०) दूर तर, अतिशय दूरवर्ती ।
दश (वि०) संख्या विशेष, दस ।
दशकण्ठ (सं० पु०) रावण ।
दशकण्ठजीत (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र ।
दशकन्ध (सं० पु०) रावण ।
दशकन्धर (सं० पु०) रावण ।
दशकर्म (सं० पु०) गर्भाधान से लेकर विवाह तक के दस संस्कार अर्थात् गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकरण, निष्क्रमण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन और विवाह ये दश कर्म हैं ।
दशक्रिया (सं० स्त्री०) गणित विशेष, दस गण्डे की गणना ।
दशगात्र (सं० पु०) शरीर के दस मुख्य अङ्ग वह कर्म जो मृतक के मरने से लेकर दस दिन तक होता है ।
दशग्रीव (सं० पु०) रावण ।
दशदिक (वि०) दशों दिशा ।
दशदिक्पाल (सं० पु०) दशों दिशाओं के अधिपति ।
दशधा (वि०) दस प्रकार, दस बार, दस तरह का ।
दशन (सं० पु०) दाँत, शिखर, कवच ।
दशनच्छद (सं० पु०) ओष्ठ, ओंठ । [का वर्ग ।
दशनामी (सं० पु०) शङ्कराचार्य के अनुयायी संन्यासियों
दशपुर (सं० पु०) देश भेद, मालावार देश का एक खंड ।
दशभुजा (सं० स्त्री०) दुर्गा ।
दशम (वि०) दसवाँ ।
दशमलव (सं० पु०) दसवाँ भाग, वह भिन्न जिसके हर में दस या दस का कोई घात हो
दश महाविद्या (सं० स्त्री०) दस विधि देवी विशेष ।
दशमांश (वि०) दसवाँ हिस्सा ।
दशमी (सं० स्त्री०) दसवीं तिथि ।
दशमुख (सं० पु०) रावण । [काम में आती हैं ।
दशमूल (सं० पु०) दस वृक्षों की छाल जो औषध के
दशयोगभङ्ग (सं० पु०) ज्योतिष का वह नक्षत्रवेध जिसमें विवाहादि शुभ कर्म नहीं होते ।
दशरथ (सं० पु०) इक्ष्वाकुवंशी एक प्राचीन राजा, ये अज के पुत्र और श्रीरामचन्द्र के पिता थे ।
दशरथसुत (सं० पु०) श्रीराम । [यज्ञ ।
दशरात्र (सं० पु०) दस रात में समाप्त होने वाला एक
दशशीश (सं० पु०) रावण ।
दशहरा (सं० पु०) ज्येष्ठ शुक्ल दशमी, इस तिथि को गङ्गा का जन्म माना जाता है, इसी तिथि को गंगा मर्त्यलोक में आयीं, गंगा दशहरा भी इसे कहते हैं ।
दशमी (सं० स्त्री०) पक्ष का दसवाँ दिन, दसवीं तिथि, विजया दशमी, आश्विन शुक्ल दशमी । [चित्त ।
दशा (सं०स्त्री०) वृति, स्थिति, अवस्था, दीपक की बत्ती,
दशांश (सं० पु०) दसवाँ भाग ।
दशाङ्ग (सं० पु०) सुगंधित द्रव्यों से बना हुआ धूप जो पूजनादि में जलाया जाता है ।
दशाङ्गुल (सं० पु०) हंगरा, खरबूजा ।
दशानन (सं० पु०) रावण ।
दशावतार (सं०स्त्री०) चारों युग में विष्णु के दस अवतार ।
दशाविपाक (सं०पु०) दुःख की अन्तिम अवस्था ।
दशार्ण (सं० पु०) एक प्राचीन देश का नाम, जो विंध्य पर्वत के पूर्व और दक्षिण की ओर था, इसकी राजधानी का नाम विदिशा था जो वर्तमान भिलसा का प्राचीन नाम है । दशार्ण देश का राजा या निवासी, तांत्रिक एक दशाक्षर मन्त्र ।
दशार्द्ध (सं० पु०) पाँच, बुद्धदेव ।
दशार्ह (सं० पु०) बुद्ध, वृष्णिवंशीय पुरुष, देश विशेष ।
दशाश्व (सं० पु०) चन्द्रमा जिसके रथ में दस घोड़े लगते हैं ।
दशाश्वमेध (सं० पु०) दस अश्वमेध यज्ञ, काशी और प्रयाग के अन्तर्गत एक तीर्थ-स्थान, जहाँ शिव-लिंग की मूर्ति है, इनकी स्थापना ब्रह्मा ने की थी और यहाँ दस यज्ञ किया था ।

दशास्य (सं० पु०) रावण।
दशास्यजित (सं० पु०) रघुनाथ, श्रीरामचन्द्र।
दशाह (सं० पु०) दशवां, दस दिन।
दशाहीन (वि०) दुर्भाग्य, दुरवस्था, बिना कोर का कपड़ा।
दशीला (वि०) सुखी, सुभाग्य, श्रीमान्। [दूना।
दस (वि०) संख्या विशेष, पाँच और पाँच, पाँच का
दसखत (सं० पु०) हस्ताक्षर।
दसन (सं०पु०) दाँत, दशन।
दसमाथ (सं० पु०) रावण।
दसवां (वि०) नौ के बाद का स्थान।
दसांग (सं० पु०) दशांग।
दसी (सं० स्त्री०) वस्त्र का छोर, कपड़े के किनारे का सूत, बैल गाड़ी की पटरी, एक औज़ार जिससे चमड़ा छीला जाता है, रॉपी, चिन्ह, पता।
दसोखा (सं० पु०) पंखा का झलना।
दसों द्वार (सं० पु०) दस द्वार, शरीर के मार्ग।
दसौंधी (सं० पु०) चारणों की एक जाति, ब्राह्मण जाति का भाट, चारण, बंदी।
दस्तंदाज़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) हस्तक्षेप, छेड़छाड़।
दस्त (फ़ा० सं० पु०) हाथ, पतला पायखाना।
दस्तकार (फ़ा० सं० पु०) हाथ से कारीगरी का काम करने वाला व्यक्ति।
दस्तकारी (फ़ा० सं० स्त्री०) हाथ की कारीगरी।
दस्तखत (फ़ा० सं० पु०) हस्ताक्षर।
दस्ता (फ़ा० सं० पु०) घट, मूठ, गारद, चपरास, संजाफ, गुच्छा, डंडा, सोटा, हरगिला, धातु विशेष, जस्ता।
दस्ताना (फ़ा० सं० पु०) हाथ में पहनने का मोज़ा।
दस्तावर (फ़ा० सं० स्त्री०) विरेचक, दस्त लाने वाली चीज़। [व्यवहार की शर्तें लिखी हों, ऋण-पत्र।
दस्तावेज़ (फ़ा० सं० स्त्री०) वह कागज़ जिसमें किसी
दस्ती (वि०) हाथ का, (सं० स्त्री०) मूंठ, बेंट, छोटा कलमदान। [पारसियों के पुरोहित।
दस्तूर (सं०पु०) प्रथा, रवाज, रीति, रस्म, विधि, नियम,
दस्तूरी (सं० स्त्री०) वह द्रव्य जो किसी सौदा खरीदने के बदले में मिलता है, कमीशन।
दस्यु (सं० पु०) तस्कर, चोर, डाकू, एक म्लेच्छ जाति।
दस्युता (सं० स्त्री०) डकैती, चोरी, राक्षसपन।
दस्युवृत्ति (सं० स्त्री०) लुटेरापन, डकैती, चोरी।

दस्र (सं० पु०) शिशिर, अश्विनीकुमार, गदहा, युग्म, जोड़ा, (वि०) हिंसक, दोहरा।
दस्र देवता (सं० स्त्री०) अश्विनी नामक नक्षत्र (वि०) दोहरा, हिंसा करने वाला।
दस्रौ (सं० पु०) अश्विनी कुमार, द्वय, देव-वैद्य।
दह (सं० पु०) नदी आदि का वह स्थान जहाँ पर अथाह पानी हो, गर्त, कुण्ड, गह्वर, हौज़, (स्त्री०) लपट, लौ, ज्वाला, (फ़ा० वि०) दस।
दहक (सं० स्त्री०) दाह, ज्वाला, लौ, शर्म, लज्जा।
दहकन (सं० स्त्री०) दहकने का भाव।
दहकना (क्रि० अ०) धधकना, जलना, गरम होना, तपना, पछताना। [क्रुद्ध करना।
दहकाना (क्रि० स०) धधकाना, जलाना, भड़काना,
दहड़ दहड़ (वि०) लौ फेंकते हुए अति वेग से जलना, धधक के साथ जलना।
दहदल (सं० स्त्री०) दलदल, फँसान, धँसान।
दहन (सं० पु०) दाह, आग, भिलावा, भल्लातक, चीता, चित्रक, कृतिका नक्षत्र, ज्योतिष का एक योग, कबूतर, तीन की संख्या, एक रुद्र का नाम, दुर्जन पुरुष, क्रोधित मनुष्य, सताने वाला व्यक्ति।
दहनकेतन (सं० पु०) धुआं। [भार्या।
दहन प्रिया (सं० स्त्री०) स्वाहा और स्वधा अग्नि की
दहनशील (वि०) जलने वाला।
दहना (क्रि० अ०) भस्म होना, जलना, बलना, कुढ़ना, धँसना, (वि०) दहिना, बायें का उलटा। [पानी।
दहनाराति (सं० पु०) जल, सलिल, अग्नि का शत्रु,
दहनीय (वि०) जलने योग्य।
दहनोपल (सं० पु०) सूर्यकान्त मणि, आतशी शीशा।
दहय (क्रि०) जलावे, तप्त करे, सतावे।
दहर (सं० पु०) चुहिया, छछूंदर, वरुण, भाई, बालक, नरक, दह, कुण्ड, हौज, पाल, (वि०) अल्प, सूक्ष्म, दुर्बोध। [फेंकते हुए, धधकते हुए।
दहर दहर (वि०) दहड़ दहड़, धायँ धायँ, लपट
दहराकाश (सं०पु०) चिदाकाश, ईश्वर। [भाव, सशङ्क।
दहल (सं० स्त्री०) डर से सहसा कांप उठने की क्रिया या
दहलना (क्रि० अ०) कांपना, डरना, शङ्कित होना।
दहला (सं० पु०) आलवाल, थाला, ताश का वह पत्ता जिस पर दस बूटियां बनी रहती हैं।

दहलाना (क्रि० स०) कँपाना, शङ्कित करना, भयभीत करना, चौंकाना।

दहशत (फ़ा० सं० स्त्री०) ख़ौफ़, भय, डर।

दहसेरा (सं० पु०) दस सेर का तौल।

दहाई (सं० स्त्री०) दस का मान, दस का भाव, अङ्कों के स्थानों की गणना में दूसरा स्थान।

दहाड़ (सं० स्त्री०) गर्जन, चीख, चिल्लाहट, आर्तनाद।

दहाड़ना (क्रि० अ०) गर्जना, चीखना, भयंकर जीवों का विकट शब्द करना।

दहाना (सं० पु०) मशक का मुँह, द्वार, मुहाना, नाली, मोरी, चौड़ा मुँह (क्रि० स०) भस्म करना, जलाना।

दहिजार (सं० पु०) वह जिसकी दाढ़ी जल गयी हो, स्त्रियों की एक गाली जो क्रोध में पुरुषों को देती हैं।

दहिना (वि०) दक्षिण भाग, दहिना, बायाँ का उलटा।

दही (सं० पु०) दधि, जोरन डाल कर जमाया हुआ दूध।

दहुँ (अव्य०) या, अथवा, किंवा, कदाचित्।

दहेंड़ी (सं० स्त्री०) दही जमाने या रखने की मटकी।

दहेज (सं० पु०) यौतुक, दायज, वह धन जो विवाह के समय कन्या-पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया जाता है।

दहोतरसौ (सं० पु०) एक सौ दस।

दह्यमान (वि०) दग्ध, जला हुआ, पुष्ट।

दह्यो (सं० पु०) दही।

दांज (सं० स्त्री०) समता, बराबरी, तुलना।

दाँड (सं० पु०) दण्ड, शासन, सज़ा, नाव खेने का डंडा।

दाँड़ना (क्रि० स०) दण्ड देना, सज़ा देना।

दाँड़ा मेड़ा (सं० पु०) सीमा, सिवाना, छोर।

दाँड़ी (सं० स्त्री०) नाव खेने का डंडा।

दाँत (सं० पु०) दशन, दन्त, दाढ़।

मुहा०—दाँतों उँगली काटना = विस्मित होना। दाँत किटकिटाना = अत्यधिक क्रोध करना। दाँत खट्टे करना = शत्रु को हटाना। दाँत निपोरना = हार जाना, बेहया होना। दाँत पीसना = क्रोध करना।

दांतन (सं० पु०) दतौन, दतवन।

दांतना (क्रि० अ०) दांत निकलना, जवान होना।

दांता-किटकिट (सं० स्त्री०) गाली-गलौज, वाक्युद्ध, झगड़ा।

दांता-किलकिल (सं० स्त्री०) दांता-किटकिट।

दाँती (सं० स्त्री०) हँसिया, दर्रा, दाँतों की पङ्क्ति, वह बड़ा खूँटा जो नाव के घाट पर गड़ा रहता है और उसमें नाव बाँधते हैं।

दाँना (क्रि० स०) दँवरी करना, मँड़ाई करना।

दाँया (वि०) दायाँ, बायें का उलटा।

दाँव (सं० पु०) घात, अवसर, मौका, उपयुक्त समय।

मुहा०—दाँव चलना = आगे बढ़ना, शतरंज आदि खेलों में गोटी आगे बढ़ना, सफ़ल होना, जीतना। दाँव चलाना = घात करना, चोट पहुँचाना, अधिकार चलाना। दाँव पकड़ना = कुश्ती लड़ना, कुश्ती में दाँव पेच करना। दाँव बैठना = समय चूकना, अवसर खोना।

दाँवरी (सं० स्त्री०) रस्सी, डोरी।

दा (वि०) दानी, दाता, (सं० पु०) सितार का एक बोल।

दाइज (सं० पु०) दायज, यौतुक, वह धन जो कन्या का पिता विवाह के समय वर को देता है।

दाइजा (सं० पु०) दायज, यौतुक।

दाईं (सं० स्त्री०) बारी, पारी, (वि०) दाहिनी।

दाई (वि०) दाता, दानी, किसी शब्द के अन्त में लगने से यह देनेवाले का अर्थ देता है। (सं० स्त्री०) धायी, बच्चों को दूध पिलाने वाली, पिता की माता, बड़ी बूढ़ी स्त्री।

दाउँ (सं० पु०) दाँव।

दाऊ (सं० पु०) बलदेव, कृष्ण के बड़े भाई।

दाऊदिया (सं० पु०) एक प्रकार का नरम छिलके का बढ़िया गेहूँ, गुलदावदी का फूल, कवच विशेष, एक तरह की आतिशबाजी। [उत्तम गेहूँ।

दाऊदी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का नरम छिलके का

दाक्षायण (वि०) दक्ष का, दक्ष संबन्धी, दक्ष के गोत्र का, (सं० पु०) सोना, मोहर, अशर्फ़ी, सुवर्णालङ्कार।

दाक्षायणी (सं० स्त्री०) दक्ष की कन्या, सती, दुर्गा, कश्यप की स्त्री, अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्र, रोहिणी नक्षत्र, दंती वृक्ष, (वि०) सोने का।

दाक्षायणी पति (सं० पु०) शिव, चन्द्रमा।

दाक्षिण (सं० पु०) एक होम का नाम, अधिकार, (वि०) उपाय, दक्षिण संबन्धी, दक्षिणा संबन्धी।

दाक्षिणात्य (वि०) दक्षिणी, दक्षिण देश का, (सं० पु०) नारियल, दक्षिण देश।

दाक्षिण्य (सं० पु०) उदारता, प्रसन्नता, अनुकूलता (वि०) दक्षिण संबन्धी । [नाम ।
दाक्षी (सं० स्त्री०) दक्ष-कन्या, पाणिनी की माता का
दाक्ष्य (वि०) पटुता, निपुणता, दक्षता ।
दाख (सं० पु०) अंगूर, मुनक्का, किशमिश । [शरीक।
दाखिल (फ़ा० वि०) घुसा हुआ, प्रविष्ट, शामिल,
दाखिल-खारिज (फ़ा० सं० पु०) किसी सरकारी कागज़ पर किसी सम्पत्ति के अधिकारी का नाम काट कर किसी दूसरे व्यक्ति या उसके उत्तराधिकारी का नाम चढ़ाना । लड़कों को स्कूल में भर्ती करने और पृथक करने का रजिस्टर ।
दाखिल-दफ़्तर (फ़ा० वि०) दबा रखना, डाल रखना ।
दाखिला (फ़ा० सं० पु०) प्रवेश, पैठ, पहुँच ।
दाग (सं० पु०) दाह, मृतक को जलाना, दाह, जलन, (फ़ा० सं० पु०) धब्बा, चिह्न, आग से जलने का चिह्न, कलङ्क, लांछन, दोष ।
दागदार (फा० वि०) दाग़ वाला, धब्बेदार ।
दागना (क्रि० स०) दग्ध करना, जलाना, किसी तप्त वस्तु से चिह्न लगाना, अङ्कित करना, तोप बन्दूक आदि छोड़ना । [कलङ्कित ।
दागी (वि०) दागदार, चिह्नित, अङ्कित, दण्डित,लांछित,
दाघ (सं० पु०) ताप, दाह, गरमी ।
दाटना (क्रि० स०) डांटना, डपटना ।
दाड़क (सं० पु०) दांत, दाढ़ ।
दाड़स (सं०पु०) एक प्रकार का सर्प ।
दाड़िम (सं० पु०) अनार, इलायची ।
दाड़ी (सं० स्त्री०) अनार । [हट ।
दाढ़ (सं०स्त्री०) चौंह, चौभर, चहू, गरज,दहाड़, चिल्ला-
दाढ़ना (क्रि० स०) भस्म करना, जलाना, दग्ध करना ।
दाढ़ा (सं० पु०) दाढ़ ।
दाढ़ी (सं०स्त्री०) चिबुक, ठुड्डी और गाल पर के बाल ।
दाढ़ीजार (सं० पु०) देखो "दढ़िजार" ।
दात (सं० पु०) दान, दाता, दातव्य ।
दातन (सं० पु०) दतून, दातौन, दन्त-काष्ठ ।
दातव्य (वि०) देने योग्य, (सं०पु०) दान ।
दाता (सं० पु०) देने वाला, दानी ।
दातार (वि०) देने वाला, दानी, दाता ।
दाती (सं० स्त्री०) देने वाली ।
दातुन (सं० स्त्री०) दतुवन । [प्रवृत्ति ।
दातृता (सं० स्त्री०) दानशीलता, वदान्यता, देने की
दातृत्व (सं० पु०) दानशीलता, , वदान्यता ।
दातौन (सं० स्त्री०) दतुवन, दन्तधावन ।
दात्यूह (सं० पु०) चातक, पपीहा, मेघ ।
दात्र (सं० पु०) हँसिया, दांती ।
दात्री (सं० स्त्री०) देने वाली स्त्री ।
दाद (सं० स्त्री०) दद्रु, एक प्रकार का चर्म-रोग जिसमें शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं और खुजली होती है (फ़ा०) न्याय ।
दादनी (फ़ा० सं० स्त्री०) वह जो देना है, वह रक़म जो भरपाई करना है, पेशगी दिया हुआ रुपया, अगवढ़ ।
दादरा (सं० पु०) एक प्रकार का चलता गाना ।
दादस (सं० स्त्री०) ददिया सास, अजिया सास ।
दादा (सं०पु०) पितामह,आजा,बाप का बाप,बड़ा भाई ।
दादि (सं० पु०) मुराद, अभीष्ट, मनोवांछा ।
दादी (सं० स्त्री०) दादा की स्त्री, पितामही, आजी ।
दादुर (सं० पु०) मेढक, मंडूक ।
दादू (सं० पु०) छोटों के प्रति बड़ों का एक प्यार का शब्द, एक साधु का नाम, इनका पूरा नाम दादू-दयाल था, ऐसा कहा जाता है कि ये अहमदाबाद के रहने वाले और जाति के धुनियाँ थे, ये एक पहुँचे हुए साधु थे, इन्होंने अपना एक मत चलाया था जिसका नाम दादूपंथी है, इनके मतानुयायी इस समय भी हैं और दादूपंथी कहाते है ।
दादूदयाल (सं० पु०) देखो " दादू " ।
दादूपंथी (सं० पु०) दादू के अनुयायी ।
दाधना (क्रि० स०) भस्म करना, जलाना, दग्ध करना ।
दाधिक (वि०) दही बड़ा, दधि मिश्रित मिष्टान्न
दाधीचि (सं० पु०) दधीचि के गोत्र वाले मनुष्य ।
दान (सं० पु०) वह वस्तु या द्रव्यादि जो परिवर्त्तन में बिना कुछ चाहे किसी को दे । पुण्यार्थ कुछ देना, उत्सर्ग, त्याग, हस्तिमद, छेदन, शुद्धि, राज नीति के चार उपायों में एक, एक प्रकार का मधु ।
दानधर्म (सं० पु०) दान पुण्य ।
दानपति (सं० पु०) सदा दान करने वाला । [बतलावे ।
दानपत्र (सं०पु०) वह पत्र जो दान की हुई वस्तु का स्वत्व
दानपात्र (सं०पु०) वह व्यक्ति जो दान लेने के योग्य हो ।

दानलीला (सं० स्त्री०) कृष्ण ने एक लीला की थी, इसमें इन्होंने गोरस बेंचने वाली ग्वालिनि से कर वसूल किया था, वह पुस्तक जिसमें इस लीला का वर्णन हो। [असुर, दैत्य, राक्षस।
दानव (सं० पु०) दानु के गर्भ से उत्पन्न कश्यप पुत्र,
दानवगुरु (सं० पु०) शुक्राचार्य।
दानववज्र (सं० पु०) एक प्रकार का अश्व, यह कभी बूढ़ा नहीं होता और देव गंधर्व की सवारी में रहता है और मन की तरह वेगवान होता है।
दानवारि (सं० पु०) विष्णु, देवता, इन्द्र।
दान-वारि (सं० पु०) हाथी का मद। [दानव-संबन्धी।
दानवी (सं० स्त्री०) एक दानव की स्त्री, राक्षसी, (वि०)
दानवीर (सं०पु०) दान देने में जिस के मुँह से किसी भी वस्तु के लिए ना न निकले, बहुत दान देने वाला।
दानवेन्द्र (सं०पु०) राजा बलि।
दानशील (वि०) दानी, दाता।
दानशीलता (सं० स्त्री०) उदारता, वदान्यता।
दानसागर (सं० पु०) महादान जिसमें ज़मीन आदि सोलह वस्तुएं दी जाती हैं इसका प्रचार बंग देश में है।
दाना (सं० पु०) अन्न, अनाज, वह चना जो घोड़े आदि को प्रतिदिन नियत समय और वजन में दिया जाता है, अदद, चबेना, (फ़ा० वि०) बुद्धिमान, अनुभवी।
दानाई (फ़ा० सं० स्त्री०) बुद्धिमानी।
दानाचारा (सं० पु०) भोजन, आहार। [कर्मचारी।
दानाध्यक्ष (सं०पु०) राज्यों में दान का प्रबंध करने वाला
दानापानी (सं० पु०) अन्न जल, खान पान।
दानाबंदी (सं० स्त्री०) खड़ी फ़सल से उपज का अन्दाज़ा करने का काम।
दानिनी (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो दान दे।
दानी (वि०) दाता, दानशील (सं० पु०) कर उगाहने वाला, दान लेने वाला।
दानीय (वि०) दान के योग्य।
दानेदार (वि०) जिसमें दाने हों, रवादार।
दान्त (वि०) वशीभूत, जितेन्द्रिय, तपस्या के क्लेश सहने योग्य। [शक्ति, इन्द्रिय-निग्रह, दमन।
दान्ति (सं० स्त्री०) तपस्या के कष्टों को सहन करने की
दाप (सं० पु०) तेज, प्रताप, गर्व, अहंकार, दर्प, बल, शक्ति, आतंक, रोब, उमंग, उत्साह, क्रोध।
दापक (सं० पु०) दबाने वाला, प्रतापी, अहंकारी।
दापना (क्रि० स०) रोकना, दबाना। [आतंक, शासन।
दाब (सं० पु०) चाँप, भार, बोझ, रोब, अधिकार,
दाबि (क्रि०) दाब कर, कस कर।
दाबी (सं० स्त्री०) कटी हुई फसल के वह पूले जो मज़दूरी में दिये जाते हैं, बन।
दाभ (सं० पु०) एक प्रकार का कुश, डाभ।
दाम्य (सं० पु०) शासन के योग्य।
दाम (सं० स्त्री०) रज्जु, रस्सी, हार, माला, समूह, लोक, मूल्य, क़ीमत, एक पैसे का चौबीसवां भाग (फ़ा०) पाश, जाल, मोल। [भाग, पल्ला, पर्वत।
दामन (फ़ा० सं० पु०) अञ्चल, कुर्ता आदि का नीचे का
दामनगीर (फ़ा० वि०) पीछे पड़ने वाला, दावा करने वाला, ग्रसने वाला।
दामलिप्त (सं० पु०) ताम्रलिप्त देश, देखो "ताम्रलिप्त"।
दामवती (सं० स्त्री०) माला।
दामाञ्चन (सं० पु०) घोड़े की पिछाड़ी।
दामाद (सं० पु०) जामाता, कन्या का पति।
दामासाह (सं० पु०) वह दिवालिया जिसकी सम्पत्ति उससे पाने वालों के बीच हिस्से के अनुसार बँट जाय।
दामासाही (सं० स्त्री०) किसी दिवालिये की जायदाद में से एक एक लहनेदार को मिलने वाली रक़म का निर्णय, यथार्थ भाग।
दामिनी (सं० स्त्री०) बिजली, विद्युत्।
दामी (सं० स्त्री०) कर, लगान, महसूल।
दामी लगाना (क्रि०) कर लगाना, कर ठहराना।
दामी वासिलात (सं०पु०) गाँव के प्रधान ऋण-दाता।
दामीयत (सं० पु०) वस्तु विशेष, जिससे रक्त विकार होता है।
दामोदर (सं० पु०) श्रीकृष्ण, एक बार यशोदा ने श्री कृष्ण के कमर में रस्सी बांध कर ओखल से बांध दिया जिससे ये चिबिल्लयी न करें तभी से इनका नाम दामोदर पड़ा।
दामोदर गुप्त (सं० पु०) ये काश्मीर के रहने वाले संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं। इनका समय सन् ७७२ से ८०३ तक माना जाता है। [लीन हैं।
दामोदर मिश्र (सं० पु०) ये कवि भोजराज के समका-
दाम्पत्य (वि०) स्त्री पुरुष-संबन्धी।

दाम्भिक (वि०) पाखंडी, अहंकारी, आडंबरी, छली, (सं० पु०) बक नाम की चिड़िया ।
दावना (क्रि०) चापना, वश में करना, अधीन करना ।
दांय (सं० पु०) दाव, वार, दफ़ा, अवसर ।
दाय (सं० पु०) देय धन, देने योग्य धन, वह धन जो कन्या का पिता बर को या उसके पिता को बिवाह के समय देता है। पैतृक संपत्ति, बपौती,दाइज, दान।
दायक (सं० पु०) दाता, देने वाला ।
दायजा (सं० पु०) दहेज, यौतुक ।
दायभाग (सं० पु०) पैतृक संपत्ति का विभाग, बाप दादा या सम्बंधो की संपत्ति को पुत्रों पौत्रों या सम्बन्धियों में बाँटे जाने की व्यवस्था । [कला, डफली, खँजड़ी ।
दायरा (अ० सं० पु०) मण्डल, वृत्त, कुण्डल, मण्डली,
दायां (वि०) दाहिना ।
दाया (सं० स्त्री०) दया, दावा, अभियोग ।
दायाद (वि०) दाय भागी, (सं०पु०) पुत्र,सपिंड कुटुम्बी, सगोत्री, उत्तराधिकारी, हिस्सेदार, पट्टीदार ।
दायादी (सं० स्त्री०) उत्तराधिकारिणी, कन्या, पुत्री ।
दायाहं (सं० पु०) पितृधन पाने का अधिकारी ।
दायित (वि०) दिया हुआ, जिसका अपराध निश्चित हो गया है ।
दायित्व (सं० पु०) उत्तरदायित्व, जवाबदेही ।
दायी (वि०) देने वाला, दानशील ।
दार (सं० स्त्री०) भार्या, पत्नी । [विदीर्णकारी ।
दारक (सं० पु०) पुत्र, बेटा, काटने का औज़ार, (वि०)
दारकर्म (सं० पु०) बिवाह, पाणि-ग्रहण ।
दारचीनी (सं० स्त्री०) दालचीनी, एक प्रकार का तज जो दक्षिण भारत, सिंहल द्वीप और टेनासरिम में होता है, इसकी छाल सुगन्धित होती है ।
दारण (सं०पु०) विदीर्ण करने की क्रिया,चीरने का काम ।
दारत्यागी (वि०) अपनी स्त्री को छोड़ देने वाला ।
दारद (सं० पु०) विष विशेष, पारा, ईंगुर, हिंगुल ।
दारना (क्रि० स०) चीड़ना फाड़ना, बरबाद करना ।
दारमदार (फ़ा० सं० पु०) निर्भर, अवलम्ब, आश्रय, ठहराव ।
दार संग्रह (सं० पु०) बिवाह, पाणि-ग्रहण ।
दारा (सं० स्त्री०) भार्या, पत्नी, स्त्री ।
दारिउँ (सं० पु०) दाड़िम, अनार ।
दारिका (सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री, तनया ।
दारित (वि०) चीरा हुआ, फाड़ा हुआ ।
दारिद (सं० पु०) दरिद्रता, निर्धनता, कंगाली ।
दारिद्र (सं० पु०) दरिद्रता, कंगाली, दीनता, ग़रीबी ।
दारिद्र्य (सं० पु०) ग़रीबी, दीनता, दरिद्रता ।
दारी (सं० स्त्री०) लौंडी, दासी, युद्ध में जीती हुई दासी (पु०) वह जिसकी बहुत सी स्त्रियां हों, लम्पट, व्यभिचारी । [दासी-पुत्र ।
दारीजार (सं० पु०) एक गाली, दासी-पति, गुलाम,
दारु (सं० पु०) लकड़ी, काठ, देवदार, शिल्पी, बढ़ई, कारीगर, (वि०) दानी, नष्टवान् , खण्डनीय ।
दारुक (सं० पु०) देवदारु, श्रीकृष्ण का सारथी यह श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त था ।
दारुकदली (सं० स्त्री०) बनकेला, कठकेला ।
दारुगंधा (सं० स्त्री०) विरोजा जो चीड़ से निकलता है ।
दारुचीनी (सं० स्त्री०) दालचीनी । [का बाजा ।
दारुज (वि०) लकड़ी से उत्पन्न, (सं० पु०) एक प्रकार
दारुण (सं० पु०) चित्रक वृक्ष, चीता, रौद्र नक्षत्र, शिव, विष्णु, नरक विशेष, राक्षस, (वि०) रौद्र, भयानक । कठिन, असह्य, दुःसह, विकट, घोर ।
दारुन (वि०) देखो "दारुण" ।
दारुनिशा (सं० स्त्री०) दारुहलदी ।
दारुफल (सं० पु०) पिस्ता, चिलगोजा ।
दारुमय (वि०) काठ का बना हुआ ।
दारुहरिद्रा (सं० स्त्री०) दारुहलदी । [विशेष ।
दारुहलदी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का वृक्ष, एक औषधि
दारू (फ़ा०सं०स्त्री०) औषध, दवाई,मद्य,मदिरा, बारूद ।
दारूड़ा (सं० पु०) शराब, मद्य, मद ।
दारोगा (फ़ा० सं० पु०) देखो " दरोगा " ।
दार्ढ्य (सं० पु०) दृढ़ता, कठिनता ।
दार्ब्बी (सं० पु०) अनार ।
दार्वी (सं० स्त्री०) औषधि विशेष, रसोत ।
दार्वी (सं० स्त्री०) दारुहलदी, दारुहरिद्रा ।
दार्शनिक (वि०) दर्शन शास्त्र जानने वाला ।
दार्ष्टान्तिक (वि०) दृष्टान्त-संबन्धी । [आदि ।
दाल (सं० स्त्री०) दरा हुआ चना, मूंग, उरद, अरहर
दालचीनी (सं० स्त्री०) एक प्रकार के वृक्ष की छाल ।
दालभ्य (सं० पु०) एक मुनि विशेष ।

दालमोठ (सं० स्त्री०) घी तेल आदि में तली हुई और नोन मिर्च मिली हुई दाल।
दालान (सं० पु०) ओसारा, बैठक।
दालि (सं० स्त्री०) अनार, दाल।
दालिद्र (सं०पु०) रंक, गरीब।
दालिम (सं० पु०) अनार।
दालिभ्य (सं० पु०) दल्भ ऋषि के गोत्रज, एक ऋषि का नाम जिनका दूसरा नाम वृक था। [निकालना।
दाँवना (क्रि० स०) दँवरी करना, डंठल से अन्न और भूसा
दाँवनी (सं० स्त्री०) स्त्रियों के सिर पर पहनने का एक गहना, बंदी।
दांवरी (सं० स्त्री०) रस्सी।
दाव (सं० पु०) आग, अग्नि, वन, दावानल, दाह, जलन।
दावन (सं० पु०) दमन, मर्दन, नाश।
दावना (क्रि० स०) दँवरी करना। [बैल बांधे जाते हैं।
दावरि (सं० स्त्री०) एक प्रकार की रस्सी जिससे कतार से
दावा (अ० सं० पु०) स्वत्व, अधिकार, हक़ (स्त्री०) बन में लगने वाली आग जो पेड़ों की डालियों की रगड़ खाने से उत्पन्न होती है और दूर तक फैलती चली जाती है।
दावागीर (सं० पु०) दावा करने वाला।
दावाग्नि (सं० स्त्री०) बन में लगने वाली आग।
दावात (सं० स्त्री०) देखो "दवात"।
दावादार (सं० पु०) अपना स्वत्व जनाने वाला।
दावानल (सं० पु०) वन की आग।
दाविनी (सं० स्त्री०) विद्युत्, बिजली, स्त्रियों के माथे पर पहनने का एक आभूषण।
दार्वी (सं० पु०) धव का वृक्ष।
दाश (सं० पु०) मछुवा, धीवर, मल्लाह, नौकर, दास, सेवक। [दशरथ का।
दाशरथ (सं० पु०) दशरथ-पुत्र, श्रीराम आदि, (वि०)
दाशरथि (सं० पु०) दशरथ के पुत्र श्रीराम आदि।
दाशार्ह (सं० पु०) विष्णु, यदुवंशी।
दाश्व (सं० पु०) दाता। [की पदवी।
दास (सं०पु०) नौकर, सेवक, भृत्य, शूद्र, धीवर, साधुओं
दासता (सं०स्त्री०)परतन्त्रता,दासवृत्ति,सेवकाई,गुलामी।
दासत्व (सं० पु०) दासता, सेवकाई। [थी।
दासनन्दिनी (सं० स्त्री०) सत्यवती जो व्यास की माता
दासपन (सं० पु०) सेवकाई, दासता।
दासा (सं० पु०) आँगन के चारों ओर का चबूतरा जो घर में बरसाती पानी जाने से रोकता है, हँसिया।
दासानुदास (सं० पु०) सेवक का सेवक, शिष्टाचार दिखाने के लिये इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।
दासी (सं० स्त्री०) नौकरानी, लौंडी, परिचारिका, शूद्रा की स्त्री, मल्लाह की स्त्री।
दास्तान (फ़ा० सं० स्त्री०) वृत्तान्त, वर्णन, कथा, हाल।
दास्य (सं० पु०) सेवा, दासता, सेवकाई।
दाह (सं० पु०) भस्मीकरण, दहन, ताप, मृतक को दग्ध करने की क्रिया, शव जलाने की क्रिया।
दाहक (वि०) जलाने वाला, (सं० पु०) चित्रक, चीता, आग, दाह देने वाला।
दाहकता (सं० स्त्री०) जलाने का गुण या भाव।
दाहकर्म (सं० पु०) शव को आग देने की क्रिया।
दाहकाष्ठ (सं० पु०) अगर।
दाहक्रिया (सं० स्त्री०) शव का दाहकर्म।
दाहजनक (क्रि०) जलन पैदा करने वाला।
दाहज्वर (सं० पु०) वह ज्वर जिसमें दाह अधिक हो।
दाहन (सं० पु०) जलाने की क्रिया।
दाहना (क्रि० स०) जलाना, भस्म करना, दुखित करना, संतप्त करना, (वि०) दाहिना।
दाहा (सं० पु०) ताजिया।
दाहात्मक (वि०) दाह स्वरूप, दाहप्रद। [का उलटा।
दाहिना (वि०) अङ्ग का दक्षिण पार्श्व, दक्षिण, बायाँ
दाह्य (वि०) जलाने योग्य।
दिअरी (सं० स्त्री०) बहुत छोटा दीपक, दिआली।
दिअली (सं० स्त्री०) बहुत छोटा दिया।
दिआ (सं० पु०) दीया, चिराग़, दीपक।
दिआबत्ती (सं० स्त्री०) दीया जलाने का समय, दीय जलाने का काम। [पपड़ी, खुरंट।
दिउली (सं० स्त्री०) चेचक आदि के सूखे घाव पर की
दिक़दार (वि०) रोगी, व्यथित।
दिक् (सं० पु०) ओर, दिशा। [हाथी का बच्चा।
दिक्क (अ०वि०) परेशान, हैरान, व्यथित, संतप्त, (सं०पु०)
दिक़्क़त (अ० सं० स्त्री०) परेशानी, तंगी, कठिनाई।
दिक्करी (सं० पु०) आठों दिशाओं के हाथी, दिग्गज।
दिक्पति (सं०पु०) दिशाओं के अधिपति ग्रह, दिग्पाल।

दिक्पाल (सं० पु०) दस दिशाओं के स्वामी।
दिक्शूल (सं० पु०) वे दिन जो किसी दिशा विशेष में यात्रा के लिए वर्जित हों।
दिक्सुंदरी (सं० स्त्री०) दिशारूपी कन्या।
दिखना (क्रि० अ०) दृष्टिगोचर होना, दिखाई देना।
दिखराना (क्रि० स०) दिखलाना, दिखाना।
दिखलाना (क्रि० स०) दिखाना, बताना, मालूम कराना, अनुभव कराना।
दिखलावा (सं० पु०) दिखावा।
दिखाई (सं० स्त्री०) लखाई, दिखाने की क्रिया या भाव, दिखाने के बदले में प्राप्त धन, दिखाने की क्रिया या भाव, दिखाने के बदले में दिया हुआ धन। [बनावटी।
दिखाऊ (वि०) दिखावटी, दर्शनीय, दिखाने योग्य,
दिखाना (क्रि० स०) दिखलाना।
दिखाव (सं० पु०) दृश्य। [बनावटी।
दिखावट (सं० स्त्री०) ऊपरी चमक दमक, तड़क भड़क,
दिखावटी (वि०) बनावटी, दिखौआ।
दिखावा (सं० पु०) तड़क भड़क, आडंबर।
दिखैया (सं० पु०) देखने वाला, दिखाने वाला।
दिखौआ (सं० पु०) बनावटी, तड़क भड़क।
दिग् (सं० स्त्री०) दिशा, दिक्, पक्ष, ओर।
दिगन्त (सं०पु०) दिशा का अन्त,क्षितिज,दशो दिशाएँ।
दिगन्तर (सं० पु०) दो दिशाओं का मध्य, शून्य, व्योम, नभ, आकाश। [महादेव।
दिगम्बर (वि०) नग्न, नंगा (सं० पु०) शिव, संन्यासी,
दिग (सं० स्त्री०) दिशा, ओर, तरफ़।
दिग्गज (सं० पु०) आठ दिशाओं के हाथी, जिनके नाम ये हैं—पूर्व में ऐरावत, पूर्व दक्षिण के कोने में पुण्डरीक, दक्षिण में वामन, दक्षिण-पश्चिम में कुमुद, पश्चिम में अञ्जन, पश्चिम उत्तर के कोने में पुष्पदन्त,उत्तर में सार्वभौम,उत्तर-पूर्व के कोने में सुप्रतीक।
दिग्गी (सं० स्त्री०) तालाब, दिघी, पोखरा।
दिग्जय (सं०स्त्री०) दिग्विजय। [यन्त्र,कुतुबनुमा,कम्पास।
दिग्दर्शकयन्त्र (सं० पु०) दिशा का ज्ञान कराने वाला
दिग्दर्शन (सं० पु०) नमूना, जानकारी।
दिग्भ्रम (सं० पु०) दिशा का ज्ञान न रहना।
दिग्विजय (सं० स्त्री०) देश देशान्तरों की विजय।
दिग्विजयी (वि०) विश्व-विजयी, दिशाओं को विजय करने वाला। [विशिष्ट दिशाओं से संबद्ध माने जाते है।
दिङ्नक्षत्र (सं० पु०) वे नक्षत्र जो फलित ज्योतिष में
दिङ्नाग (सं० पु०) दिग्गज, एक दार्शनिक पण्डित, ये बौद्ध मत के आचार्य थे और कालिदास के सम सामयिक माने जाते हैं।
दिङ्मण्डल (सं० पु०) दिशाओं का समूह, दिगन्त।
दिठवन (सं० स्त्री०) देवोत्थान की एकादशी।
दिठियार (वि०) प्रत्यक्ष, आँख वाला, नेत्र वाला।
दिठौना (सं० पु०) बच्चों के माथे पर की काजल की बिन्दी जो दूसरे की नज़र न लगने के लिये लगाई जाती है।
दिण्ड (सं० पु०) नृत्य विशेष।
दिढ़ाना (क्रि० स०) दृढ़ करना, मज़बूत करना।
दितवार (सं० पु०) आदित्यवार, रविवार, अवतार।
दिति (सं० स्त्री०) प्रजापति की कन्या, यह दक्ष को ब्याही गयी थी और दैत्यों की यह माता थी, जब देवताओं के युद्ध में सब दैत्यों का नाश हो गया तो दिति ने कश्यप से ऐसा पुत्र उत्पन्न करने की कामना की जो इन्द्र को भी दमन कर सके, कश्यप ने कहा कि इसके लिए सौ वर्ष तक शुद्धता पूर्वक मुझको गर्भ धारण करना होगा, दिति ने ९९ वर्ष तक बड़ी पवित्रता से इसका पालन किया,अन्तिम वर्ष में एक दिन बिना पैर धोये सो गयी, इन्द्र ताक में थे ही, इन्हें अपवित्र अवस्था में पाकर उन्होंने इनके गर्भ में प्रवेश किया और अपने बज्र से गर्भ के ४९ टुकड़े कर दिये, ये ४९ टुकड़े मरुत् कहे जाते हैं।
दितिज (सं० पु०) दैत्य, दिति से उत्पन्न।
दिदार (सं० पु०) देखा देखी, दर्शन।
दिदृक्षा (सं० स्त्री०) देखने की चाह, दर्शन की इच्छा।
दिदृक्षु (वि०) देखने की लालसा रखने वाला। [इच्छा।
दिधिक्षा (सं० स्त्री०) दहन करने की इच्छा, जलाने की
दिधिषु (सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका दो बार विवाह हुआ हो, वह कन्या जिसका ब्याह बड़ी बहिन से पहले हुआ हो। [करने वाला व्यक्ति।
दिधिषूपति (सं० पु०) बिधवा का पति, गर्भाधान
दिन (सं० पु०) सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच का समय, दिवस, वासर, समय, काल, नियत समय।
मुहा०—दिन में तारे दिखना = किसी बात का अत्यधिक

दुःख होना। दिन को दिन और रात को रात न समझना=अपने सुख दुःख आराम आदि का ध्यान न रखना। दिन काटना=समय बिताना। दिन का दिन=समस्त दिवस। दिन दहाड़े=सब के प्रत्यक्ष में। दिन दूनी रात चौगुनी होना = बहुत उन्नति होना, बढ़ती होना। दिन फिरना=भाग्योदय होना, शुभ दिन आना।
दिनकर (सं० पु०) सूर्य, मदार, अकवन।
दिनकर-कन्या (सं० स्त्री०) यमुना।
दिनकेशर (सं० पु०) तम, अंधकार।
दिनक्षय (सं० पु०) तिथि की हानि, तिथिक्षय।
दिनचर्या (सं० स्त्री०) दिन भर का काम।
दिनचारी (सं० पु०) दिन को चलने वाला, सूर्य।
दिनज्योति (सं० स्त्री०) धूप, आतप। [रक्षक।
दिनदानी (सं० पु०) प्रतिदिन दान देने वाला, दीन-
दिनांदिन (सं० पु०) प्रति दिन। [हीन, निर्धन।
दिनदुःखित (वि०) चक्रवाक पक्षी, चकवा (वि०) दीन
दिननाथ (सं० पु०) सूर्य।
दिनबल (सं० पु०) फलित ज्योतिष की वे राशियां जो दिन में बली होती हैं, पञ्चम, षष्ट, सप्तम, अष्टम, एकादश और द्वादश ये छः राशियां दिनबल मानी गयी हैं।
दिनमणि (सं० पु०) भानु, सूर्य, रवि।
दिनमनि (सं० पु०) सूर्य। [समय का मान।
दिनमान (सं० पु०) सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच के
दिनमुख (सं० पु०) प्रातः काल, सवेरा, बिहान।
दिनमूर्द्धा (सं० पु०) उदयाचल, पूर्व पर्वत।
दिनशेष (सं० पु०) संध्या, सायंकाल।
दिनांत (सं० पु०) सायंकाल, संध्या। [दिखाई दे।
दिनांध (सं० पु०) उल्लू आदि जिसको दिन को न
दिनांश (सं० पु०) दिन का विभाग, जैसे प्रातःकाल संगव, मध्याह्न, अपराह्न और सायंकाल।
दिनाई (सं० स्त्री०) दाद, कोई ऐसी विषैली वस्तु जिसके खाने से शीघ्र मृत्यु हो जाय।
दिनागम (सं० पु०) प्रात, प्रभात, सवेरा।
दिनादि (सं० पु०) देखो "दिनागम"।
दिनारा (वि०) बासी रखा हुआ, पुराना।
दिनार्द्ध (सं० पु०) मध्यान्ह, दुपहरिया।
दिनालोक (सं० पु०) सूर्य का प्रकाश, सूर्य-किरण, धूप।
दिनी (वि०) प्राचीन, पुराना, बहुत दिनों का।
दिनेर (सं० पु०) सूर्य।
दिनेश (सं० पु०) सूर्य, भानु।
दिनैना (वि०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।
दिनौंधी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का नेत्र-रोग जिससे दिन में दिखाई नहीं पड़ता।
दिपति (सं० स्त्री०) दीप्ति, आभा, झलक। [होना।
दिपना (क्रि० अ०) चमकना, दीप्त होना, प्रकाशमान
दिब (सं० पु०) अपनी निर्दोषता और कथन की सत्यता के लिए दी जाने वाली परीक्षा।
दिमाक (सं० पु०) मस्तिष्क, भेजा, घमंड, शेखी।
दिमाकदार (सं० पु०) प्रबल मानसिक शक्ति वाला।
दिमाग़ (अ० सं० पु०) मस्तिष्क, भेजा, घमंड' अभिमान। [घमण्डी, अहंकारी।
दिमाग़दार (वि०) जिसकी मानसिक शक्ति प्रबल हो,
दियट (सं० स्त्री०) चिराग़दान, जिस पर दिया रक्खा जाता हो।
दियरा (सं० पु०) एक प्रकार का पकवान।
दिया (सं० पु०) दीया, चिराग़, दीपक।
दियानत (सं० स्त्री०) ईमान, सत्यनिष्ठा।
दियाबत्ती (सं० स्त्री०) दिया जलाने का काम।
दियारा (सं० पु०) कछार, खादर।
दियासलाई (सं० स्त्री०) वह लकड़ी की बत्ती जिसको रगड़ने से आग निकल आती है।
दिरमानी (सं० पु०) चिकित्सक, वैद्य। [साहस।
दिल (फ़ा० सं० पु०) हृदय, कलेजा, मन, चित्त, इच्छा,
दिलगीर (फ़ा० वि०) उदास, खिन्न, शोकित।
दिलचला (वि०) बहादुर, साहसी, उदार, दाता, दानी।
दिलचस्प (फ़ा० वि०) मनोरञ्जक, चित्ताकर्षक।
दिलजमई (सं० स्त्री०) संतोष, विश्वास।
दिलजला (वि०) दग्ध हृदय, शोकाकुल।
दिल दरियाव (सं० पु०) उदार, दाता, दानी।
दिलदार (फ़ा० वि०) उदार, दानी, दाता, प्रेमी, रसिक।
दिलपसंद (फ़ा० वि०) सुन्दर, मनोहर, एक प्रकार का बेल बूटेदार वस्त्र, एक प्रकार का आम।
दिलबहार (सं० पु०) एक प्रकार का रंग। [व्यक्ति।
दिलरुबा (फ़ा सं० पु०) प्यारा, प्रेम किये जाने वाला

दिलवाना (क्रि० स०) दिलाना, दान कराना, दूसरे को देने में प्रवृत्त करना। [स्त्री, दाता स्त्री।

दिल वाली (वि०) दिल्ली का वासी, (सं० स्त्री०) उदार

दिलवैया (वि०) दिलाने वाला। [दिलवाना।

दिलाना (क्रि० स०) दूसरे को देने में प्रवृत्त करना,

दिलावर (फ़ा० वि०) साहसी, उत्साही, शूर, वीर।

दिलासा (सं० पु०) ढाढ़स, सान्त्वना, धैर्य, आश्वासन।

दिली (वि०) हार्दिक, अत्यन्त घनिष्ठ।

दिलीप (सं० पु०) इक्ष्वाकुवंशी एक राजा, ये रघु के पिता थे, बालमीकी में इनको सगर का परपोता और भागीरथ का पिता लिखा है, इन्होंने ९९ अश्वमेध यज्ञ किये थे।

दिलेर (फ़ा०वि०) शूर, वीर, उत्साही, साहसी।

दिलेरी (फ़ा०सं०स्त्री०) साहस, उत्साह, शूरता, वीरता।

दिल्लगी (सं० स्त्री०) हँसी, मज़ाक़, ठठोली, मसख़री।

दिल्लगीबाज़ (सं० पु०) मसख़रा, हँसोड़ा।

दिल्ली (सं० पु०) भारत का प्राचीन नगर जो हिन्दू मुसलमानों की बहुत दिनों तक राजधानी रहा है, इस समय बृटिश सरकार की भी राजधानी है। [दिवस।

दिव (सं० पु०) नभ, स्वर्ग, व्योम, आकाश, वन, दिन,

दिवरानी (सं० स्त्री०) पति के छोटे भाई की स्त्री।

दिवस (सं० पु०) दिन, वासर, दिवा।

दिवसमणि (सं० पु०) सूर्य।

दिवसमुख (सं० पु०) प्रभात, प्रातःकाल।

दिवा (सं० पु०) दिन, दिवस, एक वर्णवृत्त, जिसमें २२ अक्षर होते हैं, एक वृत्त जिसके प्रत्येक पद में ७ भगण और एक गुरु होता है। [काक, कौवा।

दिवाकर (सं० पु०) सूर्य, भानु, भास्कर, आक, मदार,

दिवान (सं० पु०) मन्त्री, वज़ीर।

दिवाना (सं० पु०) पागल, विक्षिप्त।

दिवान्ध (वि०) दिनौंधा, जिसको दिन में न दिखाई दे।

दिवाभिसारिका (सं० स्त्री०) वह नायिका जो दिन को सांकेतिक स्थान में अपने प्रेमी से मिलने जाती है।

दिवाभीत (सं० पु०) उल्लू, चोर।

दिवामणि (सं० पु०) सूर्य, अर्क, मदार।

दिवामध्य (सं० पु०) मध्यान्ह।

दिवाल (सं० स्त्री०) दीवार, (वि०) देने वाला।

दिवाला (सं० पु०) वह स्थिति जिसमें मनुष्य अपना ऋण न चुका सके, टाट उलटना।

दिवालिया (वि०) जिसने टाट उलट दिया हो जिसके पास ऋण चुकाने की पूँजी न हो।

दिवाली (सं० स्त्री०) दीवाली, हिन्दुओं का त्योहार विशेष, जो कार्तिक की अमावस्या को होता है।

दिविरथ (सं० पु०) अंग देश का एक राजा जो दधिवाहन का पुत्र था, पुरुवंशी एक राजा जो भूमन्यु का पुत्र था।

दिविषत् (सं० पु०) स्वर्गवासी, देवता।

दिवोदास (सं० पु०) काशी के एक राजा, ये चन्द्रवंशी भीमरथ के पुत्र थे, ये इन्द्र के उपासक थे, ये धन्वन्तरि के अवतार माने जाते हैं। इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने इनको पृथ्वी पालन करने के लिए वर दिया, स्वर्ग से इनको पुष्प और रत्न मिले थे, नागराज की कन्या अनङ्गमोहिनी का इनसे व्याह हुआ था, इसीसे इनका नाम दिवोदास पड़ा, मेनका के गर्भ से उत्पन्न यध्रश्व के एक पुत्र का नाम।

दिवेश (सं० पु०) इन्द्र, दिग्पाल।

दिवौकस (सं० पु०) स्वर्ग-निवासी, देवता, देव।

दिव्य (वि०) स्वर्गीय, अलौकिक, प्रकाशमान, सुन्दर, मनोहर, (सं० पु०) अलौकिक पदार्थ, जौ, गुग्गुल, आँवला, शतावर, ब्राह्मी, सफ़ेद दूब, हड़, लौंग, तत्ववेत्ता, हरिचन्दन, कपूरकचरी, चमेली, जीरा, आकाश में होने वाला एक प्रकार का उत्पात, केतु, तीन प्रकार के नायकों में से एक।

दिव्यकवच (सं० पु०) अलौकिक कवच, वे स्तोत्र जिनके पाठ से शरीर की रक्षा होती है।

दिव्यकारी (वि०) कोषग्राही, शपथ-कर्त्ता।

दिव्यकुण्ड (सं० पु०) काम रूपी कामक नाम पर्वत के पूर्व भागस्थ पुष्करिणी विशेष।

दिव्यगंध (सं० पु०) लौंग, लवंग, गंधक।

दिव्यगायन (सं० पु०) गन्धर्व।

दिव्यचक्षु (सं० पु०) ज्ञान चक्षु।

दिव्यतेज (सं० स्त्री०) ब्राह्मी नाम की बूटी। [मांगे मिले।

दिव्यदोह (सं० पु०) अयाचित वस्तु, वह वस्तु जो बिना

दिव्यदृष्टि (सं० स्त्री०) अलौकिक दृष्टि, ज्ञानचक्षु, सर्वज्ञ।

दिव्यधर्मी (सं० पु०) धार्मिक पुरुष, सुशील।

दिव्यनगर (सं० पु०) ऐरावती नगरी।

दिव्यनदी (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम, आकाश-गंगा।
दिव्यनारी (सं० स्त्री०) स्वर्गाङ्गना, अप्सरा।
दिव्यपुष्प (सं० पु०) कनेर।
दिव्यरत्न (सं० पु०) चिन्तामणि।
दिव्यरथ (सं० पु०) देव-विमान, व्योमयान।
दिव्यरस (सं० पु०) पारा।
दिव्यलता (सं० स्त्री०) दूर्बा, दूब।
दिव्यवस्त्र (सं० पु०) सुन्दर वस्त्र, मनोहर वस्त्र।
दिव्यवाक्य (सं० पु०) आकाश-वाणी।
दिव्यसार (सं० पु०) शाल वृक्ष।
दिव्यस्त्री (सं० स्त्री०) अप्सरा।
दिव्याङ्गना (सं० स्त्री०) देवाङ्गना, अप्सरा, सुन्दर स्त्री।
दिव्यादिव्य (सं० पु०) तीन प्रकार के नायकों में से एक, अलौकिक पुरुष।
दिव्याश्रम (सं० पु०) एक प्रचीन पुण्यक्षेत्र जहाँ पर विष्णु ने तप किया था। [हैं।
दिव्यास्त्र (सं० पु०) वे अस्त्र जो मन्त्र द्वारा चलाये जाते
दिव्योदक (सं० पु०) वर्षा का पानी, हिम, तुषार।
दिश् (सं० स्त्री०) दिशा।
दिशा (सं० स्त्री०) दिक्, ओर, तरफ़।
दिशाभ्रम (सं०पु०) दिक्भ्रम, दिशा का ज्ञान न रहना।
दिशाशूल (सं० पु०) देखो "दिक्शूल"।
दिशि (सं० स्त्री०) दिशा।
दिशिनाथ (सं० पु०) दिशाओं के स्वामी।
दिशिपाल (सं० पु०) दिशाओं के स्वामी।
दिश्य (वि०) दिशा-संबन्धी।
दिष्ट (सं० पु०) दैव, भाग्य, काल, नियत।
दिष्टबंधक (सं० पु०) एक प्रकार का बंधक या रेहन जिसमें रुपये देने वाले को केवल रुपयों का व्याज मिलता है और रेहन रखी हुई वस्तु की आय से उसको कुछ प्रयोजन नहीं रहता।
दिष्टभुक (वि०) भाग्याधीन। [नाम।
दिसंबर (सं० पु०) अंग्रेज़ी साल के बारहवें महीने का
दिस (सं० पु०) दिशा।
दिसना (क्रि० अ०) दिखना, दृष्टिगोचर होना।
दिसा (सं० स्त्री०) दिशा, पाख़ाने जाना, मल-त्याग।
दिसावर (सं० पु०) देशान्तर, परदेश। [हुआ।
दिसावरी (वि०) अन्य देशीय, बाहरी, विदेश से आया
दिसैया (वि०) देखने या दिखाने वाला।
दिहंदा (फ़ा० वि०) दानी, दाता।
दिहरा (सं० पु०) देवालय।
दिहल (क्रि०) दिया।
दिहली (सं० स्त्री०) देहली, देवढ़ी, पटडेहर।
दिहात (सं० स्त्री०) देहात, गाँव, गवँई।
दिहाती (वि०) देहाती, गँवार।
दीअट (सं० पु०) लकड़ी या मिट्टी का बना हुआ ऊँचा डंडा जिस पर दिया रक्खा जाता है, चिराग़दान।
दीआ (सं० पु०) दिया, दीप, चिराग़।
दीक्षक (सं० पु०) वह जो दीक्षा दे, मन्त्रोपदेशक, गुरु।
दीक्षण (सं० पु०) दीक्षा देने का काम।
दीक्षा (सं० स्त्री०) भजन, यजन, पूजन, यज्ञकर्म, गुरु का नियम पूर्वक मन्त्रोपदेश, गुरुमन्त्र।
दीक्षा-कर्ता (सं० पु०) गुरु, उपदेशक।
दीक्षाकारक (सं० पु०) दीक्षा करने वाला गुरु।
दीक्षागुरु (सं० पु०) वह जो मन्त्र का उपदेश दे।
दीक्षित (वि०) उपदिष्ट, मन्त्र लिया हुआ, गुरु मन्त्र प्राप्त। [सूझना।
दीखना (क्रि० अ०) दिखाई देना, दृष्टिगोचर होना,
दीठ (सं० स्त्री०) दृष्टि, नज़र, नेत्र, देखने की शक्ति।
दीठबंद (सं० स्त्री०) नज़रबंद, जादू।
दीठा (वि०) देखने वाला।
दीठि (सं० स्त्री०) दृष्टि, नजर।
दीदा (फ़ा० सं० स्त्री०) दृष्टि, नज़र, नेत्र, नयन।
दीदार (फ़ा० सं० पु०) दर्शन, भेंट, मुलाक़ात।
दीदी (सं० स्त्री०) बड़ी बहन, बड़ी ननद। [उँगली।
दीधिति (सं० स्त्री०) किरण, न्याय के एक ग्रंथ का नाम,
दीन (वि०) ग़रीब, कंगाल, दरिद्र, खिन्न, उदास, (अ०सं० पु०) मत, धार्मिक विश्वास।
दीनता (सं० स्त्री०) दरिद्रता, ग़रीबी।
दीनताई (सं० स्त्री०) दीनता।
दीनदयालु (वि०) दीनों पर दया करने वाला, ईश्वर।
दीनबंधु (सं० पु०) दीन का सहायक, ईश्वर।
दीनवत्सल (वि०) कृपालु दयालु।
दीनानाथ (सं० पु०) दीनों के स्वामी, परमात्मा।
दीनार (सं० पु०) सोने की एक प्राचीन मुद्रा, सोने का गहना, स्वर्णालङ्कार, निष्क की तौल।

दीप (सं० पु०) दिया, अग्नि-शिखा, जलती हुई बत्ती।
दीपक (सं० पु०) दीप, दीया, काव्यालङ्कार जिसमें उपमान उपमेय के सदृश धर्म का वर्णन किया जाय, (वि०) प्रकाशक, दीप्तिकारक, द्योतक।
दीपकज्जल (सं० पु०) दिया की कजली।
दीपकिट्ट (सं० पु०) काजल।
दीपन (सं० पु०) पाचक, दीप्तिकारक। [होना।
दीपना (क्रि० अ०) प्रकाशमान होना, चमकना, दीप्त
दीपनी (सं० स्त्री०) अजवायन, पाठा, मेथी।
दीपनीय (वि०) प्रकाशक, वर्द्धक, उत्तेजक।
दीपमाला (सं० स्त्री०) जलते हुए दीपकों की क़तार।
दीपमालिका (सं० स्त्री०) दिवाली का त्यौहार।
दीपवृक्ष (सं० पु०) झाड़ फानूस, दीवट।
दीपशिखा (सं० स्त्री०) दीप की लौ।
दीपान्वित (वि०) शोभायुक्त, दीप्तियुक्त।
दीपित (वि०) प्रकाशित, प्रज्वलित, दीप्त।
दीपोत्सव (सं० पु०) दीवाली।
दीप्त (वि०) चमकता हुआ, प्रकाशित, प्रज्वलित।
दीप्तजिह्वा (सं० स्त्री०) उल्कामुखी, सितारिन।
दीप्तलोचन (सं० पु०) बिल्ली, बिड़ाल।
दीप्ताक्ष (सं० पु०) देखो "दीप्तलोचन"। [वाला।
दीप्ताग्नि (सं० पु०) अगस्त्य मुनि, (वि०) तीव्र जठराग्नि
दीप्ताङ्ग (सं० पु०) मयूर, मोर।
दीप्ति (सं० स्त्री०) द्युति, आभा, चमक, प्रकाश, उजाला।
दीप्तिमान (वि०) द्युतियुक्त, चमकदार, प्रकाशमान, (सं० पु०) श्रीकृष्ण का एक पुत्र जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
दीप्तोपल (सं० पु०) सूर्यकान्त मणि। [प्रकाशनीय।
दीप्य (सं० पु०) जीरा, मयूर-शिखा, रुद्र-जटा, (वि०)
दीप्यमान् (वि०) प्रकाशमान, चमकता हुआ।
दीमक (सं० पु०) बल्मीकि, एक प्रकार की सफ़ेद चींटी।
दीयट (सं० पु०) दीअट, चिराग़दान।
दीयमान (वि०) जो देने योग्य हो, जो दिया जाता हो।
दीया (सं० पु०) दीपक, दिया, चिराग़।
दीरघ (वि०) देखो "दीर्घ"।
दीर्घ (वि०) आयत, लंबा, चौड़ा, बड़ा, द्विमात्रिक वर्ण, गुरु वर्ण, पञ्च, षष्ठ, सप्तम, और अष्टम राशि।
दीर्घकाय (वि०) लंबे चौड़े अङ्ग वाला।
दीर्घकाल (सं० पु०) अधिक समय, चिरकाल अनेक क्षण, बहुकाल।
दीर्घकेश (वि०) लम्बे बाल वाला।
दीर्घग्रीव (वि०) लम्बी गर्दन वाला, (सं०पु०) ऊँट, सारस।
दीर्घजङ्घ (सं० पु०) ऊंट, बगुला, सारस।
दीर्घजिह्व (सं० पु०) सर्प, दानव विशेष, (वि०) लम्बी जीभ वाला। [की कन्या थी।
दीर्घजिह्वा (सं० स्त्री०) एक राक्षसी जो राजा विरोचन
दीर्घजीवित (वि०) बहुत दिनों तक जीने वाला।
दीर्घजीवी (वि०) चिरंजीवी, चिरायु। [जन्म से ही अंधे थे।
दीर्घतमा (सं० पु०) एक ऋषि, ये उतथ्य के पुत्र थे और
दीर्घतरु (सं० पु०) ताड़ का पेड़।
दीर्घदण्ड (सं० पु०) रेंड़ी का पेड़।
दीर्घदर्शी (वि०) दूरदर्शी, (सं०पु०) भालू, गिद्ध।
दीर्घदृष्टि (वि०) दूरदर्शी, (सं०पु०) गिद्ध।
दीर्घनाद (सं० पु०) शङ्ख।
दीर्घनिद्रा (सं० स्त्री०) मृत्यु, मौत।
दीर्घनिश्वास (सं० पु०) आह, लम्बी श्वांस।
दीर्घपत्रक (सं० पु०) लाल लहसुन, रेंड, पुनर्नवा।
दीर्घपत्रा (सं० स्त्री०) केतकी, शालपर्णी, चित्रपर्णी
दीर्घपुष्पक (सं० पु०) मदार, आक, अकवन।
दीर्घपृष्ठ (सं० पु०) साँप।
दीर्घमूल (सं० पु०) शालपर्णी, जवासा।
दीर्घमूलक (सं० पु०) विधारा।
दीर्घरद (सं० पु०) सूकर, सूअर, बराह।
दीर्घरसन (सं० पु०) सर्प।
दीर्घरोमा (सं० पु०) भालू, रीछ, शिव का एक गण।
दीर्घलोचन (वि०) बड़ी आँख वाला, (पु०) शिव का एक अनुचर, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दीर्घवंश (सं० पु०) नरकट।
दीर्घवक्त्र (सं० पु०) हाथी, हस्ति।
दीर्घवर्ण (सं० पु०) दीर्घ स्वर।
दीर्घसक्थि (सं० पु०) शकट, गाड़ी, रथ।
दीर्घसत्र (सं० पु०) यज्ञ विशेष, तीर्थ विशेष।
दीर्घसन्धानी (वि०) दूरदर्शी, सूक्ष्म मति।
दीर्घसन्ध्यत्व (सं० पु०) नित्य संस्कार-क्रिया।
दीर्घसूत्री (वि०) आलसी, देर से काम करने वाला, हर काम में विलंब करने वाला।

दीर्घाकार (वि०) दीर्घ आकृति युक्त, वृहदा कार ।
दीर्घाध्वा (सं० पु०) लम्बा मार्ग ।
दीर्घायु (वि०) चिरंजीवी, दीर्घजीवी ।
दीर्घिका (सं० स्त्री०) बावली, तालाब ।
दीर्ण (वि०) विदारित, भग्न, कटा, टूटा ।
दीवँक (सं० स्त्री०) दीमक ।
दीवट (सं० स्त्री०) दीपाधार, लकड़ी, मिट्टी, पीतल आदि का बना हुआ डंडे के आकार की एक वस्तु जिस पर दिया रक्खा जाता है ।
दीवली (सं० स्त्री०) छोटा दिया ।
दीवा (सं० पु०) दीपक, दीया ।
दीवान (अ० सं० पु०) राजसचिव, मन्त्री, वज़ीर ।
दीवानखाना (फ़ा० सं० पु०) बैठक । [वाला कर्मचारी ।
दीवानखालसा (अ० सं० पु०) बादशाह की मुहर रखने
दीवाना (फ़ा० वि०) पागल, विक्षिप्त ।
दीवानापन (फ़ा० सं० पु०) पागलपन, विक्षिप्तता ।
दीवाल (सं० स्त्री०) भीत, मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का वह घेरा जिससे मकान बनाया जाता है ।
दीवाला (सं० पु०) दिवाला । [को मनाया जाता है ।
दीवाली (सं० पु०) वह उत्सव जो कार्तिक की अमावस्या
दीसना (क्रि० अ०) दिखाई देना, सूझना ।
दीसा (क्रि०) देखा ।
दीह (वि०) दीर्घ, लंबा, बड़ा ।
दुंद (सं० पु०) उपद्रव, उत्पात, ऊधम, मल्लयुद्ध, द्वंद्वयुद्ध ।
दुंबा (फ़ा० सं० पु०) एक प्रकार का मेढ़ा ।
दुःख (सं० पु०) पीड़ा, व्यथा, क्लेश, शोक, सन्ताप, मनक्षोभ, एक प्रकार का चित्त-विक्षेप ।
दुःखकर (वि०) क्लेश देने वाला, दुःख पहुंचाने वाला ।
दुःखजीवी (वि०) कष्ट से जीवन निर्वाह करने वाला ।
दुःखद (वि०) दुःखदायी, दुःखकर ।
दुःखदायक (वि०) दुःख देने वाला, कष्ट पहुंचाने वाला ।
दुःखदायी (वि०) कष्टकर, दुःखदाता ।
दुःखप्रद (वि०) दुःखद, कष्टकर ।
दुःखबहुल (सं० पु०) दुःखपूर्ण ।
दुःखमय (सं० पु०) क्लेश से भरा हुआ, दुःखपूर्ण ।
दुःखलभ्य (वि०) कष्ट से प्राप्त होने वाला ।
दुःखसाध्य (वि०) बड़ी कठिनाई से होने वाला ।
दुखान्त (वि०) जिसके अन्त में दुःख हो, वह नाटक जिसका दुःख सहित अन्त हुआ हो, (सं०पु०) दुःख का अन्त, दुःख का अवसान ।
दुःखार्त (वि०) दुःख से व्याकुल ।
दुःखित (वि०) पीड़ित, दुखी ।
दुःखिनी (वि०) पीड़ित, दुःखिया ।
दुःखिया (वि०) दुःखी, दरिद्र ।
दुःखियारा (वि०) पीड़ित, दुःखित ।
दुःखी (वि०) क्लेशित, पीड़ित ।
दुःशला (सं० स्त्री०) धृतराष्ट्र की कन्या, इसका जन्म गांधारी के गर्भ से हुआ था, यह जयद्रथ को ब्याही गयी थी इसके पुत्र का नाम सुरथ था, महाभारत के युद्ध में जयद्रथ के मरने पर इसने अपने छोटे बच्चे सुरथ को गद्दी पर बैठा राज काज चलाया था, अश्वमेध यज्ञ के समय जब अर्जुन यज्ञ का घोड़ा लेकर सिंधु देश में पहुँचे, इनके आने की खबर पा उसने प्राण त्याग दिया, अर्जुन ने उसके पुत्र को राजगद्दी पर बैठाया ।
दुःशासन (वि०) जिस पर शासन करना कठिन हो, अबाध्य, (सं० पु०) धृतराष्ट्र का पुत्र, दुर्योधन का छोटा भाई और मन्त्री, प्रत्येक बात में दुर्योधन इससे राय लिया करता था यह क्रूर और दुष्ट स्वभाव का था, जुआ में पाण्डवों के हार जाने पर इसने द्रौपदी का केश पकड़ कर सभा में लाकर उसको नंगी करना चाहा था, भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि इसका वक्षस्थल विदीर्ण कर रक्त पान करूंगा और उसी रक्त में द्रौपदी बालों को रंग कर वेणी बाँधेगी, महाभारत के युद्ध में भीम ने अपनी प्रतिज्ञा को सत्य कर दिखाया ।
दुःशील (वि०) दुश्चरित्र, दुष्ट स्वभाव का ।
दुःश्रव (सं० पु०) काव्य में श्रुति-कटु दोष ।
दुःसंग (सं० पु०) कुसंग, बुरी सोहबत, बुरा साथ ।
दुःसमय (सं० पु०) बुरा समय, दुख का समय ।
दुःसह (वि०) असह्य, जो सहा न जाय, जिसका सहना अत्यन्त कठिन हो । [हो, दुष्कर ।
दुःसाध्य (वि०) जिसकी साधना बड़ी कठिनाई से
दुःसाहस (वि०) अत्यधिक साहस, उत्कट साहस, निर्भयता, व्यर्थ का साहस । [धान, असम साहसी ।
दुःसाहसी (वि०) निरर्थक साहस करने वाला, असाव-

दुःस्थ (वि०) दुर्दशा-ग्रस्त, दुःखी, दरिद्र, मूर्ख।
दुःस्थिति (सं० स्त्री०) दुरवस्था, दुर्दशा।
दुःस्पर्शा (सं० स्त्री०) केवाछ।
दुःस्वप्न (सं० पु०) बुरा स्वप्न, ऐसा स्वप्न जिसके देखने का फल बुरा होता हो। [वाला।
दुःस्वभाव (वि०) बदचलन, बदमिजाज़, बुरे स्वभाव
दुआबा (फ़ा० सं० पु०) वह प्रदेश जो दो नदियों के बीच में हो।
दुआर (सं० पु०) द्वार, दरवाज़ा।
दुआरा (सं० पु०) डेवढ़ी, द्वार।
दुआरी (सं० स्त्री०) छोटा दरवाज़ा।
दुइ (वि०) दो।
दुइज (सं० स्त्री०) दूज, द्वितीया।
दुई (सं० स्त्री०) भेद, बुद्धि, द्वैत।
दुकड़हा (वि०) दो कौड़ी का, नीच, अधम, तुच्छ, कमीना। [छदाम।
दुकड़ा (सं० पु०) समान वस्तुओं की जोड़ी, दो दमड़ी,
दुकड़ी (सं० स्त्री०) दो बूटियों वाला ताश का पत्ता, दो घोड़ों की बग्घी, वह लगाम जिसमें दो कड़ियाँ होती हैं। [लिए रक्खी जाती है, हाट, बाज़ार।
दुकान (सं० पु०) वह स्थान जहाँ पर कोई वस्तु बेचने के
दुकानदार (फ़ा० सं० पु०) दुकान का स्वामी, वह व्यक्ति जो अपनी आमदनी के लिए कोई ढोंग फैलावे। [बाज़ार का काम।
दुकानदारी (सं० स्त्री०) बिक्री बट्टे का काम, हाट
दुकाल (सं० पु०) दुर्भिक्ष, अकाल।
दुकूल (सं० पु०) रेशमी कपड़ा, पट्ट वस्त्र, क्षौम वस्त्र, नदी का दोनों किनारा, माता पिता का कुल।
दुकेल (वि०) जिसके साथ कोई और भी हो।
दुक्कड़ (सं० पु०) एक प्रकार तबले के आकार का बाजा जा सहनाई के साथ बजाया जाता है।
दुक्का (वि०) जो अकेला न हो, जिसके साथ दो हों (सं० पु०) ताश का वह पत्ता जिस पर दो बूटियां बनी रहतो हैं।
दुखंडा (वि०) दो मंज़िला, दो तल्ला।
दुख (सं० पु०) कष्ट, तकलीफ़, दुःख।
दुखद (वि०) दुःखद, दुःखदायी, तकलीफ़ देने वाला।
दुखदाई (वि०) दुख देने वाला।
दुखदुंद (सं० पु०) दुःख का उपद्रव, दुःख सहित उत्पात।
दुखना (क्रि० अ०) दर्द करना, दुःख होना, पीड़ा होना।
दुखवना (क्रि० स०) दुखाना। [पहुँचाना।
दुखाना (क्रि० स०) दुःख देना, पीड़ित करना, कष्ट
दुखारा (वि०) पीड़ित, दुःखिया।
दुखारी (वि०) व्यथित, दुःखो।
दुखिया (वि०) दुःखो।
दुखियारा (वि०) दुःखी।
दुखी (वि०) जो दुःख में हो, जिसे क्लेश हो।
दुगई (सं० स्त्री०) ओसारा, बैठक, कैंची।
दुगुणा (वि०) दुगुना।
दुगुन (वि०) दुगुना, द्विगुण।
दुगुना (वि०) दूना, द्विगुण।
दुग्धप्रद (वि०) दुधार।
दुग्ध (सं० पु०) क्षीर, पय, दूध।
दुग्धफेन (सं० स्त्री०) दूध का झाग, एक पौधा।
दुग्धवती (सं० स्त्री०) दूध देने वाली गाय। [एक।
दुग्धसमुद्र (सं० पु०) क्षीर समुद्र, सात समुद्रों में से
दुग्धाब्धि (सं० पु०) क्षीर समुद्र।
दुग्धिका (सं० स्त्री०) दुधिया घास।
दुग्धिनी (सं० स्त्री०) कड़वी तूंबी।
दुग्धी (सं० स्त्री०) दुधिया घास।
दुघड़िया (वि०) दो घड़ी का।
दुचंद (फ़ा० वि०) दूना, दुगुना।
दुचित (वि०) जिसका चित्त स्थिर न हो, अस्थिर चित्त, द्विचित्त, दुबधैल, उद्विग्न, चिन्तित, शङ्कित।
दुचित्ता (वि०) देखो "दुचित"। [लता, सन्देह।
दुचित्ताई (सं० स्त्री०) द्वैचित्य, चिन्ता, दुबिधा, व्याकु-
दुज (सं० पु०) द्विज, ब्राह्मण।
दुजीह (सं० पु०) देखो "द्विजिह्व"।
दुटूक (वि०) दो टूक, खण्डित। [चला जा।
दुत (अव्य०) तिरस्कारार्थक शब्द जैसे दूर हो, हट जा,
दुतकार (सं० स्त्री०) फटकार, धिक्कार तिरस्कार।
दुतकारना (क्रि० स०) दुतदुत कहके किसी को भगाना, धिक्कारना, अपमान करना।
दुतकारा (सं० स्त्री०) डांट, घुड़की।
दुतर्फ़ा (फ़ा० वि०) दोनों पक्ष का, दोनों ओर का।
दुताना (क्रि०) दबाना, डाटना, आधीन करना, वश करना।

दुति (सं० स्त्री०) द्युति, आभा, झलक, दीप्ति।
दुतिमान् (वि०) द्युतिमान्, प्रकाशित, दीप्त, झलकदार।
दुतिवंत (वि०) चमकीला, भड़कदार, सुन्दर।
दुतीया (सं० स्त्री०) द्वितीया, दूज।
दुदल (वि०) दो बराबर खण्ड, द्विदल।
दुदलाना (क्रि० स०) दुतकारना, फटकारना।
दुदहंडी (सं० स्त्री०) दूध की मटकी।
दुदही (सं० स्त्री०) देखो "दुद्धि"।
दुदुकारना (क्रि० स०) दुतकारना।
दुद्धी (सं० स्त्री०) एक पौधा जो दवा के काम आता है।
दुधमुख (वि०) दुधमुँहाँ।
दुधमुँहाँ (वि०) दुधपीता, चुंची पिउवा।
दुधाँड़ी (सं० स्त्री०) मिट्टी का बर्तन जिसमें दूध रक्खा या औंटा जाता है।
दुधा (अव्य०) दो प्रकार, दो रीति, दो भेद।
दुधार (वि०) दूध देने वाली, जिसमें दूध हो।
दुधारी (वि०) जिसमें दोनों तरफ़ धार हो।
दुधिया (वि०) दूध मिश्रित, दूध मिला हुआ, दूध के समान सफ़ेद।
दुधैल (वि०) बहुत दूध देने वाली, दुधार। [लचाना।
दुनवना (क्रि० अ०) नवना, लचना, (क्रि० स०) नवाना
दुनाली (वि०) जिसमें दो नाली हो, (सं० स्त्री०) दुनली बंदूक।
दुनिया (अ० सं० स्त्री०) संसार, जगत।
दुनियादार (फ़ा० सं० पु०) संसारी, गृहस्थ।
दुनियासाज़ (फ़ा० वि०) स्वार्थी, मतलबी, चापलूस।
दुनियासाज़ी (सं० स्त्री०) बात गढ़ने का ढंग, चापलूसी।
दुन्नी (सं० स्त्री०) रामायण, यह शब्द दुनिया के अर्थ में प्रयुक्त होता है।
दुन्दि (सं० पु०) परस्पर युद्ध कलह, बिवाद।
दुन्दुभि (सं० पु०) नगाड़ा, धौंसा, एक राक्षस जिसको बालि ने मार कर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंका था इस पर मतङ्ग ऋषि ने बालि को शाप दिया था, बालि ऋष्यमूक पर्वत पर नहीं जा सकता था।
दुपट्टा (सं० पु०) चद्दर, वह चद्दर जो दो पाट की हो।
मुहा०—दुपट्टा तान के सोना = निचिन्त हो के रहना, असावधान रहना, आलस में पड़ा रहना। दुपट्टा हिलाना = संकेत द्वारा किसी को बुलाना।

दुपद (सं० पु०) द्विपद, वह जिसके दो पैर हों, मनुष्य।
दुपहर (सं० स्त्री०) मध्याह्न।
दुपहरिया (सं० स्त्री०) मध्याह्न, पुष्प विशेष।
दुफ़सली (वि०) दोनों फसल में पैदा होने वाला, (सं० पु०) संदिग्ध।
दुबकना (क्रि० अ०) दबकना, छिपना, लुकना।
दुबगली (सं० स्त्री०) मालखंभ की एक प्रकार की कसरत।
दुबधा (वि०) संदिग्ध, अस्थिर, अनिश्चित।
दुबराना (क्रि० अ०) दुर्बल होना, क्षीण होना।
दुबला (वि०) दुर्बल, क्षीण, अशक्त
दुबलाई (सं० स्त्री०) दुर्बलता।
दुबारा (वि०) दो बार, दूसरी मर्तबा।
दुबिधा (सं० स्त्री०) सन्देह, शङ्का, भ्रम।
दुबे (सं० पु०) ब्राह्मणों की उपाधि।
दुभाखी (सं० पु०) दो भाषाओं को जानने वाला।
दुभाव (सं० पु०) सन्देह, दुविधा, शंका। [वाला हो।
दुभाषिया (सं० पु०) वह जो दो भाषा का जानने
दुमंज़िला (फ़ा० वि०) दो खण्ड वाला, दो तल्ला।
दुम (फ़ा० सं० स्त्री०) पूंछ।
दुमदार (फ़ा० वि०) पूंछ वाला।
दुमुख (सं० पु०) एक राक्षस का नाम, दो मुख वाला।
दुमुहाँ (वि०) दो मुँह वाला।
दुरंगा (वि०) दो रंग वाला, दो रंग का। [दुष्ट, खल।
दुरन्त (वि०) अपार, घोर, भयंकर, भीषण, प्रचण्ड,
दुर (अव्य०) दूषण, निषेध, दुःख इन अर्थों में इसका व्यवहार होता है।
दुरई (क्रि०) छिपता है, लुकता है।
दुरजन (सं० पु०) दुर्जन, बुरा आदमी, दुष्ट जन।
दुरतिक्रम (वि०) जिसको पार न किया जा सके, प्रबल, दुस्तर, कठिन।
दुरत्यय (वि०) अपार, दुस्तर।
दुरदुराना (क्रि० स०) दुत्कारना, फटकारना।
दुरधिगम (वि०) दुष्प्राप्य, दुर्बोध। [होना, भागना।
दुरना (क्रि० अ०) छिपना, लुकना, आँख के ओझल
दुरबच्चा (सं० पु०) एक मोती वाली छोटी बाली।
दुरभिसंधि (सं० स्त्री०) कुमंत्रणा, मण्डली बाँध कर खोटे मतलब से की हुई सलाह।
दुरभेव (सं० पु०) मनमोटाव, मनोमालिन्य।

दुरमुस (सं० पु०) वह डंडा जिसके नीचे लोहा या पत्थर का टुकड़ा लगा रहता है और जिससे कंकड़ आदि कूट कर बैठाया जाता है।
दुरलभ (वि०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ ,अलभ्य।
दुरवस्था (सं० स्त्री०) बुरी दशा, बिगड़ी हालत।
दुरवाप (वि०) दुष्प्राप्य।
दुरागमन (सं० पु०) द्विरागमन, गौना।
दुराग्रह (सं० पु०) हठ, ज़िद।
दुराग्रही (वि०) हठी, ज़िद्दी।
दुराचरण (सं० पु०) खोटा चाल चलन, दुर्व्यवहार।
दुराचार (सं० पु०) कुनीति, बुरा चाल चलन, दुर्व्यवहार, कदाचार।
दुराचारी (वि०) खोटा कर्म करने वाला,लम्पट,दुःशील।
दुराज (सं० पु०) द्वैराज्य, एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य होने से दुर्व्यवस्था।
दुरात्मा (वि०) दुष्टात्मा, नीचाशय।
दुराधर्ष (वि०) प्रबल, प्रचण्ड, दुर्गम, भयंकर, (सं०पु०) पीली सरसों। [लुकाना।
दुराना (क्रि० स०) दुतकारना, भगाना, हटाना, छिपाना,
दुराप (वि०) दुर्लभ, दुष्प्राप्य। [हो, (सं० पु०) विष्णु।
दुराराध्य (वि०) जिसकी आराधना बड़ी कठिनाई से
दुरारोह (सं० पु०) शाल्मली वृक्ष, खजूर का पेड़,(वि०) जिस पर चढ़ना कठिन हो। [धमासा।
दुरालभा (सं० स्त्री०) हिंगुवा, जवासा, कपास, धमोई
दुरालाप (सं० पु०) खोटा वचन, गाली गुफ़्ता।
दुराव (सं० पु०) छिपाव, कपट, छल।
दुराशय (सं० पु०) दुष्टाशय, बुरी नीयत।
दुराशा (सं० स्त्री०) निरर्थक आशा, झूठी आशा।
दुरासद (वि०) दुर्लभ, दुष्प्राप्य, दुःसाध्य।
दुरित (सं० पु०) पाप, पातक, अधर्म।
दुरियाना (क्रि० स०)दुतकारना, दुरदुराना,दूर भगाना।
दुरिष्ट (सं० पु०) पाप, अधर्म।
दुरी (सं० स्त्री०) जुये के खेल का एक दाव, छिपी।
दुरुखा (फ़ा० वि०) दुमुँहाँ, दुरंगा।
दुरुत्तर (वि०) दुर्लभ, दुरतिक्रम, दुस्तर।
दुरुपयोग (सं० पु०) दुर्व्यवहार।
दुरुस्त (फ़ा० वि०) ठीक, जो अच्छी हालत में हो।
दुरूह (वि०) कठिन, दुर्बोध, गूढ़।

दुरेफ (सं० पु०) द्विरेफ, भौंरा।
दुरोदर (सं० पु०) द्यूत, जूआ, पासा, जुआरी।
दुर्ग (सं० पु०) गढ़, क़िला।
दुर्गत (वि०) दुरवस्थ, दुर्दशाग्रस्त, दरिद्र, ग़रीब।
दुर्गति (सं० स्त्री०) दुर्दशा, दरिद्रता।
दुर्गन्ध (सं० स्त्री०) बदबू, कुवास।
दुर्गन्धि (सं० पु०) दुर्गन्ध।
दुर्गपाल (सं० पु०) दुर्ग रक्षक, क़िलादार।
दुर्गम (वि०) बीहड़, वीरान, औघट, दुस्तर, विकट।
दुर्गमता (सं० स्त्री०) कठिनता, गम्भीरता, दुस्तरता।
दुर्ग रक्षक (सं० पु०) दुर्गपाल, क़िलादार।
दुर्गा (सं० स्त्री०) आदि शक्ति उमा, पार्वती, हिमालय की कन्या, दुर्ग नामक राक्षस का इन्होंने बध किया था इसीसे इनका नाम दुर्गा पड़ा। [नवमी।
दुर्गा नवमी (सं० स्त्री०) कार्तिक, चैत्र, आश्विन शुक्ला
दुर्गामी (वि०) कुमार्गी, दुराचारी। [कन्या।
दुर्गावती (सं० स्त्री०) चित्तौर के महाराना साँगा की
दुर्गाष्टमी (सं० स्त्री०) आश्विन और चैत के शुक्ल पक्ष की अष्टमी।
दुर्गुण (सं० पु०) बुराई, दोष, ऐब। [में होता है।
दुर्गोत्सव (सं० पु०) दुर्गा पूजा का उत्सव जो दशहरा
दुर्ग्रह (वि०) दुर्जेय,जो जल्दी पकड़ा न जा सके, जो कठिनता से समझ में आवे, (सं०पु०) अपामार्ग,चिचड़ी।
दुर्घट (वि०) कष्ट-साध्य, जो बहुत कठिनता से हो।
दुर्घटना (सं० स्त्री०) विपद्,बुरी घटना, दुःखपूर्ण घटना।
दुर्जन (सं० पु०) खल, दुष्ट, क्रूर।
दुर्जनता (सं० स्त्री०) क्रूरता दुष्टता, खोटापन।
दुर्जनताई (सं० स्त्री०) खोटाई, बुराई, क्रूरता।
दुर्जय (वि०) जिसका जीतना सहज न हो, (सं० पु०) प्रबल शत्रु, प्रचण्ड वैरी। [वाला।
दुर्जीव (वि०) पराश्रजीवी, नीच वृत्ति के सहारे जीने
दुर्जेय (वि०) जिसका जीतना बहुत कठिन हो।
दुर्ज्ञेय (वि०) दुर्बोध, कठिनता से जानने योग्य।
दुर्दम (वि०) जिसका दमन बड़ी कठिनाई से हो सके, दुर्दमनीय, प्रबल, प्रचण्ड।
दुर्दमनीय (वि०) प्रबल, प्रचण्ड, दुर्जयी।
दुर्दशा (सं० स्त्री०) दुर्गति, बुरी अवस्था।
दुर्दिन (सं० पु०) कुदिन, बुरा दिन, मेघाच्छादित दिन।

दुर्दान्त (वि०) प्रबल, प्रचण्ड, दुरन्त, भयंकर।
दुर्दैव (सं० पु०) अभाग्य, दुर्भाग्य।
दुर्द्धर्ष (वि०) निर्लज्ज, प्रबल, प्रचण्ड, जिसका दमन करना कठिन हो, (सं० पु०) रावण के दल का एक राक्षस।
दुर्नय (सं० पु०) अन्याय, कुनीति, नियम-विरुद्धाचरण।
दुर्नाम (सं० पु०) बदनामी, बुरा वचन, अयश, निन्दा, अपकीर्ति, सीप, सुतुही, बवासी।
दुर्नामा (सं० पु०) बवासीर, अर्श रोग।
दुर्नामी (वि०) अपयशी, बदनाम।
दुर्निमित (सं० पु०) अनिष्ट सूचक, अपशकुन, असगुन।
दुर्निरीक्ष्य (वि०) जो देखने योग्य न हो,कुरूप,भयंकर।
दुर्निवार्य (वि०) जिसका निवारण सहज में न हो सके, जो हट न सके, जो जल्दी टाला न जा सके।
दुर्नीत (सं० स्त्री०) कुप्रथा, कुनीति, कुचाल, दुर्व्यवहार।
दुर्बल (वि०) निबल, दूबर, बल रहित, असक्त, कृश।
दुर्बलता (सं० स्त्री०) निर्बलता, असामर्थ्य, कमज़ोरी।
दुर्बोध (वि०) दुर्जेय, अगम्य, क्लिष्ट, गूढ़।
दुर्भग (वि०) अभागा।
दुर्भगा (सं० स्त्री०) पति-स्नेह-रहित, पति-प्रेम से वञ्चिता, (वि०) अभागिन, मन्दभाग्य वाली।
दुर्भाग्य (वि०) खोटा भाग्य, मंद भाग्य, अभाग्य।
दुर्भाव (सं० पु०) मनोमालिन्य, मनमोटाव, वैर।
र्भावना (सं० स्त्री०) शंका, खटका, अंदेशा।
दुर्भिक्ष (सं० पु०) क़हत, अकाल, महँगी।
भिच्छ (सं० पु०) देखो "दुर्भिक्ष"।
दुर्भेद (वि०) जो जल्दी छेदा न जा सके, जिसका भेद कठिनता से हो, जिसका पार करना कठिन हो।
दुर्भेद्य (वि०) देखो "दुर्भेद"।
दुर्मति (सं० स्त्री०) कुबुद्धि, दुर्बुद्धि, अज्ञान।
र्मद (वि०) मस्त, उन्मत्त, घमण्डी, मतवाला।
दुर्मना (वि०) अनमना, म्लान, खिन्न, दुष्ट। [विशेष।
दुर्मिल (सं०पु०) भरत के एक पुत्र का नाम, एक छन्द
दुर्मुख (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र की सेना के एक बानर का नाम, महिषासुर का सेनापति, घोड़ा. (वि०) कटुभाषी, अप्रियवक्ता।
दुर्मुट (सं० पु०) देखो "दुर्मुस"। [मुग्दर, मुंगरा।
दुर्मुस (सं० पु०) धुरमुस, सड़क कूटने का एक औज़ार,
दुर्मूल्य (वि०) बहुमूल्य, महँगा।
दुर्मेधा (वि०) दुर्बुद्धि, अज्ञानी।
दुर्यश (सं० पु०) अपयश, बदनामी।
दुर्योग (सं० पु०) बुरा समय, दुःसमय।
दुर्योधन (सं०पु०) धृतराष्ट्र का सब से बड़ा पुत्र,यह अपने चचेरे भाई पाण्डवों से जलता था, सब से अधिक भीम के साथ इसका वैर था, गदा चलाना यह भी जानता था और भीम भी, पर यह भीम की बराबरी नहीं कर सकता था, धृतराष्ट्र ने पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर को युवराज बनाना चाहा, पर इसने ऐसा नहीं होने दिया, अन्त में पाण्डवों ने इन्द्रप्रस्थ में अपनी राजधानी स्थापित की, और एक अश्वमेध यज्ञ किया, पाण्डवों का अभ्युदय दुर्योधन से नहीं देखा गया, उसने पाण्डवों को जुआ खेलने में फँसाया, और अपने मामा शकुनी के छल से पाण्डवों का जुवा में सर्वस्व जीत लिया यहाँ तक कि पाण्डव द्रौपदी को भी हार गये, दुःशासन भरी सभा में द्रौपदी का बाल खेंच कर लाया और उसकी बेइज़्ज़ती करना चाहा, इस पर भीम ने दुःशासन के वक्षस्थल का रुधिर पान करने और उसके रुधिर से बाल रंगने की प्रतिज्ञा की, द्यूत-नियमानुसार पाण्डवों ने तेरह वर्ष ज्ञात और एक वर्ष अज्ञात रूप से वास किया, वनवास पूरा होने पर कृष्ण दूत होकर कौरवों के पास गये। पर कौरवों ने कुछ भी देना नहीं चाहा, इस पर महाभारत का युद्ध हुआ जिसमें कौरवों का नाश और पाण्डवों की विजय हुई। [वंश का।
दुर्योनि (वि०) नीचवंश संभूत, नीच कुल का, नीच
दुर्लक्षण (सं० पु०) अशुभ चिह्न, असगुन।
दुर्लङ्घ्य (वि०) जिसका पार करना सहज न हो
दुर्लभ (वि०) अलभ्य, अप्राप्य, अनोखा, बहुत बढ़िया।
दुर्लभ्य (सं० पु०) अप्राप्य, कष्ट से मिलने योग्य।
दुर्लोभ (सं०पु०) नीच इच्छा,अप्राप्य वस्तु पाने की इच्छा।
दुर्वचन (सं० पु०) कुवाच्य, कुवचन, गाली। [वजनी।
दुर्वह (वि०) जिसका ले जाना सहज न हो, भारी,
दुर्वाक्य (सं० पु०) दुर्वचन, कुवाच्य।
दुर्वाद (सं० पु०) बदनामी, अपवाद।
दुर्वार (वि०) अनिवार्य, जो जल्दी रोका न जा सके

दुर्वासना (सं० स्त्री०) कुवासना, बुरी इच्छा।
दुर्वासा (सं० पु०) एक मुनि का नाम, ये अनसूया के गर्भ से उत्पन्न अत्रि के पुत्र थे, इनका विवाह और्व मुनि की कन्या कन्दली से हुआ था, ये बड़े क्रोधी थे, इन्होंने सौ बार तक अपनी स्त्री का दोष क्षमा करने की प्रतिज्ञा की थी और वैसा ही किया भी, सौ बार से अधिक अपराध होने पर इन्होंने अपनी स्त्री को भस्म कर दिया, इनकी शाप की कथा पुराणों में बहुत जगह मिलती है।
दुर्विज्ञेय (वि०) जिसका ज्ञान सहज में न हो सके।
दुर्विदग्ध (वि०) अधजला, घमण्डी, अभिमानी।
दुर्विनीत (वि०) अशिष्ट, उद्दण्ड, अविनीत।
दुर्विपाक (वि०) दुष्परिणाम, बुरा फल।
दुर्विषह (वि०) असह्य, दुःसह।
दुर्वुद्धि (सं० स्त्री०) नीच बुद्धि, अज्ञान।
दुर्वृत्त (वि०) दुराचारी, दुश्चरित्र।
दुर्वोध्य (सं० पु०) कुमति, अबोध मूढ़।
दुर्व्यवस्था (सं० स्त्री०) कुप्रबंन्ध, बद इन्तज़ामी।
दुर्व्यवहार (सं० पु०) दुष्टाचरण, बुरा बर्त्ताव।
दुर्व्यसन (सं० पु०) कुटेव, बुरी लत।
दुर्व्यसनी (वि०) कुटेवी, ऐबी, बुरी लत वाला।
दुलकी (सं०स्त्री०) घोड़े की वह चाल जिसमें वह अपने पैरों को अलग अलग उठा कर उछलता हुआ चलता है।
दुलखना (क्रि० स०) किसी बात को दोहराना, कोई बात बार बार कहना।
दुलड़ा (सं०पु०) दो लड़ की माला, (वि०) दो लड़ का।
दुलड़ी (सं० स्त्री०) दो लड़ों की माला।
दुलत्ती (सं० स्त्री०) घोड़े आदि जानवरों के पिछले दोनों पैरों की चोट या मार।
दुलना (क्रि० अ०) डुलना, झूलना।
दुलराना (क्रि० स०) बच्चों को बहला कर प्यार करना।
दुलरुवा (वि०) प्यारा, दुलारा। [स्त्री।
दुलहन (सं० स्त्री०) नव विवाहिता बहू, नई ब्याही हुई
दुलहा (सं०पु०) वह पुरुष जो विवाह करने जा रहा हो।
दुलहिन (सं० स्त्री०) दुलहन, नयी वधू।
दुलहिया (सं० स्त्री०) दुलहन।
दुलाई (सं० स्त्री०) ओढ़नी जिसके भीतर रूई भरी हो।
दुलाना (क्रि० स०) डुलाना, झुलाना।
दुलार (सं० पु०) प्यार, लाड़, चाव। [करना।
दुलारना (क्रि० अ०) प्यार करना, चूमना चाटना, लाड़
दुलारा (वि०) प्यारा, लाड़ला, प्रिय।
दुलारी (सं० स्त्री०) प्यारी, लाड़िली, प्रिया।
दुलारे (सं० पु०) मुँह लगे, लाड़िले, प्यार किये हुये।
दुवन (सं० पु०) खल, दुर्जन, शत्रु, वैरी, राक्षस, दैत्य।
दुवार (सं० पु०) द्वार, दरवाज़ा, दुआर।
दुविद (सं० पु०) द्विविद, एक बानर का नाम।
दुवे (सं० पु०) ब्राह्मणों की उपाधि।
दुवो (वि०) दोनों।
दुशमन (फ़ा० सं० पु०) वैरी, शत्रु।
दुशाला (सं० पु०) पशमीने की दोहरी चादर।
दुशालाफरोश (फ़ा० सं० पु०) दुशाला बेचने वाला।
दुशासन (सं० पु०) देखो "दुःशासन"।
दुश्चरित्र (वि०) बदचलन, बुरे चरित्र वाला।
दुश्चरित्रता (सं० स्त्री०) कुचाल, बदमाशी, गुंडापन।
दुश्चरित्रा (सं० स्त्री०) कुलटा, व्यभिचारिणी, छिनाल।
दुश्चिकित्स्य (वि०) दुःसाध्य, जिसकी चिकित्सा कठिन हो।
दुश्चेष्टा (सं० स्त्री०) कुचेष्टा, बुरा काम।
दुश्चेष्टित (वि०) पाप, दुष्कर्म।
दुष्कर (वि०) दुःसाध्य।
दुष्कर्म (सं० पु०) कुकर्म, पाप, खोटा कर्म।
दुष्कर्मी (वि०) पापी, दुराचारी।
दुष्काल (सं० पु०) कुसमय, दुर्भिक्ष, अकाल।
दुष्कीर्ति (सं० स्त्री०) अपयश, बदनामी।
दुष्कुल (सं० पु०) नीच कुल।
दुष्कुलीन (वि०) नीच कुल में उत्पन्न, कुवंशज।
दुष्कृत (सं० पु०) पाप, अपराध, दोष।
दुष्कृती (वि०) पापी, दुराचारी, कुकर्मी।
दुष्ट (वि०) नीच, अधम, खल, बुरा।
दुष्टचारी (वि०) खल, दुर्जन, दुराचारी।
दुष्टचेता (वि०) बुराई सोचने वाला, छली, कपटी।
दुष्टता (सं० स्त्री०) दुर्जनता, खोटापन, बुराई, नीचता।
दुष्टपना (सं० पु०) खोटाई, बुराई, दुष्टता।
दुष्टसाक्षी (सं० पु०) बुरा गवाह, अयोग्य गवाह।
दुष्टा (सं० स्त्री०) भ्रष्टा, कुलटा, व्यभिचारिणी।
दुष्टाचार (सं० पु०) कुकर्म, कुचाल।
दुष्टात्मा (वि०) दुष्ट स्वभाव का, दुष्टाशय, दुराशय।

दुष्पच्य (वि०) जो जल्दी न पचे।
दुष्परिग्रह (वि०) जो सहज में पकड़ा न जा सके।
दुष्पूर (वि०) जो सहज में पूर्ण न हो, अनिवार्य्य।
दुष्प्रवेश (सं० पु०) दुर्गमप्रवेश, बड़ी कठिनता से पैठ।
दुष्प्राप्य (वि०) अलभ्य, दुर्लभ्य, अप्राप्य।
दुष्यन्त (सं० पु०) एक राजा का नाम, ये पुरुवंशी थे, इनके पिता का नाम ऐति था। एक दिन ये वन में अहेर खेलने गये, जाते जाते कण्व मुनि के आश्रम में जा पहुँचे, वहाँ कण्व की पाली हुई कन्या शकुन्तला को देख ये मुग्ध हो गये और शकुन्तला भी इन पर मुग्ध हुई। दोनों में गंधर्व विवाह हुआ, राजा ने अपनी राजधानी में जाकर शकुन्तला को बुलाने को कहा पर शकुन्तला को भूल गये। शकुन्तला को एक पुत्र हुआ, शकुन्तला पुत्र के साथ दुष्यन्त के यहाँ गयी, पर दुष्यन्त विवाह की बातें भूल गये थे उससे कहा मेरा तुम से कोई संबन्ध नहीं है, इस पर आकाश वाणी हुई, राजा यह तुम्हारा पुत्र है, इसका भरण करो इससे उस पुत्र का नाम भरत पड़ा।
दुसह (वि०) कठिनता से सहने योग्य, असह्य। [शमादान।
दुसाखा (सं० पु०) दो कनखे वाला एक प्रकार का
दुसाध (सं० पु०) एक अन्त्यज जाति जो सूअर पालती है।
दुसार (सं० पु०) ऐसा छेद जिसमें से दोनों ओर दिखाई पड़े।
दुसूती (सं० पु०) एक प्रकार का मोटा वस्त्र।
दुस्तर (वि०) दुर्घट, विकट, कठिन।
दुस्त्यज (वि०) जो सहज में त्यागा न जा सके।
दुस्थ (वि०) क्लेशयुक्त, दुखी, दरिद्र।
दुस्थता (सं० स्त्री०) दरिद्रता, दौर्भाग्य।
दुस्सह (वि०) असह्य, दुसह। [वाला।
दुहत्था (वि०) दोनों हाथों से किया हुआ, दो मूठ
दुहत्थी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की कसरत।
दुहना (क्रि० स०) दूध निचोड़ना, गाय आदि के स्तनों से दूध निकालना।
दुहरा (वि०) दोहरा, दो परत का। [करना।
दुहराना (क्रि० स०) दोहराना, दो परत करना, दोबारा
दुहवनी (सं० स्त्री०) दूध दुहने की मज़दूरी।
दुहाई (सं० स्त्री०) गोहार, पुकार, घोषणा।
दुहागिन (सं० स्त्री०) बिधवा।
दुहाना (क्रि० स०) दूध निकलवाना, दूहने में दूसरे को प्रवृत्त करना।
दुहार (सं० पु०) दूध दूहने वाला।
दुहाव (सं० स्त्री०) एक प्रथा जिसके अनुसार ज़मींदार किसानों से जन्माष्टमी आदि त्योहारों में दूध दुहा कर ले जाता है।
दुहि (क्रि०) दुह कर।
दुहिता (सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री।
दुहितापति (सं० पु०) जमाई, दामाद।
दुहेला (वि०) कठिन, दुःसाध्य, दुस्तर।
दुहोतरा (सं० पु०) कन्या का लड़का, पुत्री-पुत्र, नाती (वि०) दो अधिक, दो ऊपर।
दुहू (वि०) दो, दोनों।
दुह्य (वि०) दुहने के योग्य। [करना।
दूंदना (क्रि० अ०) ऊधम मचाना, उपद्रव करना, उत्पात
दूआ (सं० पु०) हाथ में पहनने का एक गहना, पछेली, ताश का पत्ता जिस पर दो बूटियाँ बनी रहती हैं, (स्त्री०) प्रार्थना, आशीर्वाद।
दूइज (सं० स्त्री०) दूज, द्वितीय।
दूकान (सं० पु०) देखो, "दुकान"।
दूकानदार (सं० पु०) देखो "दुकानदार"।
दूकानदारी (सं० स्त्री०) देखो "दुकानदारी"।
दूखन (सं० पु०) दूषण, दोष, ऐब।
दूखना (क्रि० स०) दोष देना, ऐब लगाना।
दूखित (वि०) दूषित, ख़राब, बुरा।
दूगुन (वि०) दुगुना, दूना। [दिन।
दूज (सं० स्त्री०) द्वितिया, दूइज, किसी पक्ष का दूसरा
दूजा (वि०) द्वितीय, दूसरा।
दूजावर (सं० पु०) दूसरा वर जिसके दो बिवाह हुए हों।
दूत (सं० पु०) चर, वसीठ।
दूतकर्म (सं० पु०) दूत का काम, दूतपन।
दूतता (सं० स्त्री०) दूतकर्म दूत का काम।
दूतपन (सं० पु०) दूत का काम।
दूतिका (सं० स्त्री०) देखो "दूती"।
दूती (सं० स्त्री०) कुटनी, वह स्त्री जो पर स्त्री को पर पुरुष और पर पुरुष को पर स्त्री से मिलाने का काम करती है।
दूत्य (सं० पु०) दूतकर्म।
दूध (सं० पु०) पय, दुग्ध, गोरस, क्षीर।

दूधपिलाई (सं० स्त्री०) बिवाह की एक रीति जो बरात जाने के समय माता वर को दूध पिलाती है, दूध पिलाने वाली दाई।
दूधपूत (सं० पु०) धन जन।
दूधबहन (सं० स्त्री०) वह बालिका जिसको कोई दूसरी स्त्री दूध पिला कर पाले, वह उस स्त्री के सन्तानों की दूधबहन होती है।
दूधभाई (सं० पु०) वह बालक जिसको कोई दूसरी स्त्री दूध पिला कर पाले वह उस स्त्री के सन्तानों का दूधभाई होगा।
दूधमुँहाँ (वि०) वह बालक जो माता का दूध पीता हो।
दूधमुख (वि०) दूधमुहाँ। [मटकी।
दूधहंडी (सं० स्त्री०) दूध दुहने या रखने की मिट्टी की
दूधाधारी (वि०) दुग्धाहारी, दूध पी के जीने वाला।
दूधाभातो (सं० स्त्री०) बिवाह की एक रीति। [घास।
दूधिया (वि०) दूध मिश्रित, (सं० पु०) एक प्रकार की
दूधी (सं० पु०) दूधिया।
दून (वि०) दूना।
दूना (वि०) द्विगुण, दुगुना।
दूब (सं० पु०) एक प्रकार की घास, जो गणेश पूजनादि के काम में आती है और घोड़े आदि जानवर बड़े चाव से खाते हैं, दूर्वा।
दूबिया (वि०) दूब के समान रंग।
दूबर (वि०) दुर्बल, निबल, बल रहित।
दूबरा (वि०) दुर्बल, कमज़ोर, कृश, असक्त।
दूबला (वि०) दुबला, दुर्बल।
दूबे (सं० पु०) ब्राह्मणों की अल्ल, द्विवेदी।
दूभर (वि०) कठिन, दुस्तर, दुःसाध्य।
दूभना (क्रि० अ०) हिलाना, झुलाना, डोलाना।
दूमुहाँ (वि०) दो मुँह, दो मुँह वाला।
दूरंदेश (फ़ा० वि०) अग्रशोची, दूरदर्शी।
दूरंदेशी (फ़ा० सं० स्त्री०) दूरदर्शिता, किसी बात को पहले ही से सोच लेना।
दूर (वि०) अन्तर, बीच, व्यवधान, फासला।
दूरगामी (वि०) जो दूर तक चले।
दूरतर (क्रि० वि०) अधिक दूर। [ज्ञानी।
दूरदर्शक (वि०) जो दूर तक देखे (सं० पु०) बुद्धिमान्,
दूरदर्शिता (सं० स्त्री०) दूरंदेशी।
दूरदर्शी (वि०) दूरंदेश, ज्ञानी, गीध।
दूरदृष्टि (सं० स्त्री०) दूरंदेशी, दूरदर्शिता।
दूरवर्ती (वि०) दूर स्थित। [साफ़ दिखाई देती हैं।
दूरबीन (फ़ा० सं० स्त्री०) वह यन्त्र जिससे दूर की वस्तुएँ
दूरवीक्षण (सं० पु०) दूर देखने का यन्त्र।
दूरस्थ (वि०) जो दूर हो, दूरवर्ती।
दूरी (सं० स्त्री०) फासला, अन्तर, व्यवधान।
दूरीकरण (सं० पु०) दूर कर देना, हटा देना।
दूरीकृत (वि०) भगाया हुआ।
दूर्वा (सं० स्त्री०) दूब।
दूर्वाष्टमी (सं० स्त्री०) भादों शुक्ल अष्टमी।
दूलह (सं० पु०) दुलहा, नौशा, पति।
दूल्हा (सं० पु०) दूलह, दुलहा।
दूषक (वि०) दोष लगाने वाला, निंदक।
दूषण (सं० पु०) दोष, अवगुण, ऐब, खोटाई, बुराई, एक राक्षस यह रावण का भाई था, सूर्पणखा के नाक काटने पर पञ्चवटी में रामचन्द्र जी के द्वारा इसका बध हुआ।
दूषणीय (वि०) दोष लगाने योग्य, दूष्य।
दूषना (क्रि० स०) दोष लगाना, कलङ्क लगाना।
दूषित (वि०) निन्दित, कलङ्कित, दोषयुक्त।
दूषीका (सं०स्त्री०) कीचड़, कीचट, आँखों का मैल।
दूष्य (वि०) निन्दनीय, दूषणीय, दोष लगाने योग्य।
दूसर (वि०) दूसरा।
दूसरा (वि०)अन्य, अपर, और, द्वितीय।
दूहना (क्रि० स०) दुहना, दोहना।
दूहा (सं० पु०) दोहा।
दूहिया (सं० पु०) एक बार का चूल्हा।
दृक्पथ (सं० पु०) दृष्टि की पैठ, दृष्टि का मार्ग।
दृक्पात् (सं० पु०) देखना, अवलोकन।
दृग (सं० पु०) आँख, नयन, नेत्र।
दृगञ्चल (सं० पु०) पलक, पपनी।
दृगमिचाव (सं० पु०) अँखमिचौवल।
दृग्गणित (सं० पु०) गणित की वह बिधि जो ग्रहों को वेध कर की जाती है।
दृग्गोचर (वि०) आँख से दिखाई देने वाला।
दृङ्मण्डल (सं० पु०) दृग्गोल।
दृढ़ (वि०) मज़बूत, ठोंस, कड़ा, प्रगाढ़, बलिष्ट।

दृढ़कर्मा (वि०) धैर्यवान्।
दृढ़ग्रंथि (वि०) मज़बूत गाँठ वाला (सं० पु०) बाँस।
दृढ़तम (वि०) अत्यन्त कठिन, अतिशय कठोर।
दृढ़तर (वि०) अधिक कठिन।
दृढ़ता (सं० स्त्री०) पोढ़ापन, स्थिरता, कठिनता।
दृढ़त्व (सं० पु०) दृढ़ता।
दृढ़धन्वा (सं० पु०) वह जो धनुष चलाने में दृढ़ हो।
दृढ़निश्चय (वि०) स्थिर प्रतिज्ञ, दृढ़ प्रतिज्ञ।
दृढ़नेत्र (सं० पु०) विश्वामित्र का एक पुत्र।
दृढ़पद (सं० पु०) एक छंद विशेष।
दृढ़प्रतिज्ञ (वि०) जो अपनी बात पर अटल रहे।
दृढ़भूमि (सं०स्त्री०) योग साधन में मन की एकाग्रता।
दृढ़मूल (सं० पु०) मूंज, नारियल, मथाना।
दृढ़व्रत (वि०) स्थिर संकल्प, धर्म-परायण।
दृढ़हस्त (वि०) अस्त्र ग्रहण में दृढ़, (सं० पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दृढ़ाई (सं० स्त्री०) मज़बूती, दृढ़ता, पोढ़ापन।
दृढ़ाङ्ग (वि०) हृष्टपुष्ट, दृढ़ अङ्गों वाला, (सं० पु०) जीरा, जीरक। [पोढ़ा करना।
दृढ़ाना (क्रि० स०) मज़बूत करना, बलवान बनाना,
दृढ़ायु (सं० पु०) तीसरे मनु सावर्णि के एक पुत्र का नाम, ऐल राजा का पुत्र जो उर्वशी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
दृढ़ायुध (वि०) दृढ़हस्त, युद्ध में तत्पर।
दृढ़ार्ति (सं० स्त्री०) धनुष का अग्र भाग, कोटी।
दृत (वि०) आदृत, आदर।
दृता (सं० स्त्री०) जोरा।
दृप्त (वि०) अभिमानी, गर्वीला, घमण्डी।
दृब्ध (वि०) भयभीत, ग्रथित।
दृश् (सं० पु०) दर्शन, प्रदर्शक, देखने वाला, (स्त्री०) चक्षु, आँख, दृष्टि, ज्ञान, दो की संख्या।
दृशत् (सं० स्त्री०) शिला, सिल, पत्थर।
दृशद्वती (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम, यह नदी थानेश्वर के पास है।
दृश्य (वि०) देखने योग्य, दर्शनीय, सुन्दर, मनहरण, रमणीय, मनोहर, (सं० पु०) वह जो दिखाया जाय, नाटक। [हर।
दृश्यमान (वि०) दर्शनीय, चमकदार, सुन्दर, मनो-
दृष्ट (वि०) दर्शित, देखा हुआ, प्रत्यक्ष, ज्ञात।
दृष्टकूट (सं० पु०) पहेली, कूट प्रश्न, बुझौवल।
दृष्टवत् (वि०) सांसारिक, लौकिक।
दृष्टवाद (सं० पु०) प्रयक्षवाद सिद्धान्त, प्रत्यक्षवाद।
दृष्टान्त (सं० पु०) उदाहरण, उपमा।
दृष्टि (सं० स्त्री०) देखने की शक्ति, नेत्र, नयन, आँख, बुद्धि, विचार, विवेक, समझ, अनुमान, आशा।
दृष्टिक्षेप (सं० पु०) दृक्पात। [गुज़रा हो।
दृष्टिगत (वि०) जो देखा गया हो, जो नज़र से
दृष्टिगोचर (वि०) प्रत्यक्ष, दृग्गोचर।
दृष्टिपात (सं० पु०) चितवन, अवलोकन, ताक, कटाक्ष।
दृष्टिपूत (वि०) देखने में पवित्र, जिसके देखने से नयन पवित्र हो जाय।
दृष्टिबंधु (सं० पु०) जुगनू, खद्योत।
दृष्टिमान् (वि०) नयन वाला, नेत्र वाला, आँख वाला।
दृष्टिरोध (सं० पु०) आड़, ओट, व्यवधान।
दृष्टिवन्त (वि०) दृष्टि वाला, जानकार, ज्ञानी।
दृष्टिविक्षेप (सं० पु०) कटाक्ष, नेत्रपात।
देंआड़ा (सं० पु०) दीमक का बना हुआ घर, वाल्मीक।
देई (सं० स्त्री०) देवी।
देखन (सं० स्त्री०) देखने का भाव, देखने की क्रिया।
देखनहारा (सं० पु०) देखने वाला, दर्शक। [करना।
देखना (क्रि० स०) लखना, ताकना, निहारना, अवलोकन
मुहा०—देखना सुनना=पता लगाना, जानकारी प्राप्त करना। देखना भालना=जाँच पड़ताल करना। देख लूँगा=उपाय करूँगा।
देखभाल (सं० स्त्री०) निरीक्षण, निगरानी, जाँच।
देखरेख (सं० स्त्री०) निगरानी, देख भाल।
देखवैया (वि०) दर्शक, देखने वाला।
देखा (वि०) दर्शन किया। [दमक, भड़कीला, बनावटी।
देखाऊ (वि०) जो देखने ही के लिए हो, ऊपरी चमक
देखादेखी (सं० स्त्री०) दर्शन, भेंट मुलाक़ात, साक्षात्कार।
देखाभाली (सं० स्त्री०) देख भाल, निरीक्षण।
देखावट (सं० स्त्री०) बनावट, चमक दमक, तड़क भड़क।
देखा सुना (वि०) विचार पूर्वक निश्चय किया हुआ।
देखौआ (वि०) देखाऊ, बनावटी।
देग (फ़ा० सं० पु०) चौड़े मुंह और चौड़े पेंदे का खाना पकाने के लिए बड़ा बर्तन।

देगची (सं० स्त्री०) छोटा देग।
देजा (सं० पु०) दायजा, दहेज।
देढ़ (वि०) एक और आधा।
देदीप्यमान (वि०) चमकता हुआ, अत्यन्त प्रकाशमान, चमकदार।
देन (सं० स्त्री०) कर्ज़, ऋण, उधार।
देनदार (सं० पु०) क़र्ज़दार, ऋणी।
देनदारी (सं० स्त्री०) ऋणी होने का भाव या दशा।
देनलेन (सं० पु०) व्यवहार, सूद पर रुपया देने का व्यापार।
देना (क्रि० स०) अर्पण करना, सौंपना, दे देना।
देनापाना (सं० पु०) देन लेन।
देमारना (क्रि०) पटकना।
देय (वि०) दातव्य, परिशोधनीय, देने योग्य।
देर (सं० स्त्री०) विलम्ब, अतिकाल, अबेर।
देरी (सं०स्त्री) विलम्ब, देर, अतिकाल।
देवँक (सं० पु०) दीमक, दीवँक।
देव (सं० पु०) स्वर्ग में रहने वाला अमर जीव, देवता, सुर, आदर सूचक शब्द जिसका प्रयोग बड़ों और राजाओं के लिए होता है, मेघ, बादल।
देवअंशी (वि०) किसी देवता से उत्पन्न, देव अंश से उत्पन्न।
देवऋण(सं० पु०) देवताओं के प्रति कर्त्तव्य, यज्ञादि।
देवऋषि (सं० पु०) देव लोक में रहने वाले ऋषि।
देवक (सं० पु०) देवता, भोजवंशी एक राजा, देवकी के पिता और कृष्ण के नाना, धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
देवकली (सं० स्त्री०) एक रागिनी विशेष।
देवकाण्डर (सं० पु०) एक पौधे का नाम, चनसुर।
देवकार्य (सं० पु०) होम यज्ञादि।
देवकाष्ट (सं० पु०) देवदार, काष्ट चंदन।
देवकी (सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की माता।
देवकीनन्दन (सं० पु०) श्रीकृष्ण।
देवकीपुत्र (सं० पु०) श्रीकृष्ण।
देवकुण्ड (सं० पु०) प्राकृतिक जलाशय।
देवकुल (सं० पु०) एक प्रकार का मन्दिर, इसका द्वार बहुत छोटा होता है।
देवकुसुम (सं०पु०) लवंग,लौंग।
देवखात (सं० पु०) देवकुण्ड, ऐसा तालाब जो आप से आप बन गया हो।
देवगण (सं० पु०) देव वर्ग, देव समूह।
देवगति (सं० स्त्री०) स्वर्ग-प्राप्ति, स्वर्ग-लाभ।
देवगायक (सं० पु०) गंधर्व।
देवगायन (सं० पु०) गंधर्व।
देवगिरि (सं०पु०) हिमालय पर्वत,(स्त्री०) एक रागिनी।
देवगुरु (सं० पु०) बृहस्पति।
देवगृह (सं० पु०) देवालय।
देवघन (सं० पु०) एक प्रकार का वृक्ष।
देवचिकित्सक (सं० पु०) अश्विनीकुमार, दो का अङ्क।
देवठान (सं० पु०) देवोत्थान, कार्तिक शुक्ल एकादशी।
देवतरु (सं० पु०) देव वृक्ष, कल्पतरु, पारिजात, मदार।
देवतर्पण (सं० पु०) देवताओं को जल दान देना।
देवता (सं० पु०) अमर, देव, सुर।
देवताधिप (सं० पु०) इन्द्र।
देवतीर्थ (सं० पु०) अंगुलियों का अग्र भाग जिससे हो कर संकल्प या तर्पण का जल गिरता है, देव पूजा के लिये उपयुक्त समय।
देवतुल्य (वि०) देवता के समान।
देवत्व (सं० पु०) देव-धर्म, देव-भाव, देव पद।
देवदत्त (सं० पु०) बुद्ध का चचेरा छोटा भाई, जीवधारियों के पञ्च प्राणों में से एक, अर्जुन के एक शङ्ख का नाम, (वि०) देव-प्रसाद, देवताओं का दिया हुआ।
देवदारु (सं० पु०) देव-काष्ठ, देवदार।
देवदासी (सं० स्त्री०) अप्सरा, मन्दिरों में नाचने वाली वेश्या।
देवदूत (सं० पु०) आग, अग्नि, पैगम्बर, धर्माचार्य, पवन।
देवदेव (सं० पु०) ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश।
देवदेष्टा (सं० पु०) देव शत्रु, दानव, असुर, पाखण्डी।
देवधान्य (सं० पु०) ज्वार।
देवधुनी (सं० स्त्री०) गंगा नदी।
देवधूप (सं० पु०) गूगुल।
देवन (सं० पु०) खेल, क्रीड़ा, जिगीषा, व्यवहार, लीलोद्यान, द्यूत, जूआ, शोक, निन्दा, देव का बहुवचन।
देवनागरी (सं० स्त्री०) भारतीय प्रधान लिपि।
देवनिन्दक (सं० पु०) ईश्वर-निन्दाकारी, नास्तिक, पाखंडी।
देवनिष्ठा (सं० पु०) ईश्वर-वादी, ईश्वर-भक्त।
देवपति (सं० पु०) इन्द्र, देवराज, सुरपति।
देवपथ (सं० पु०) देव मार्ग, आकाश मार्ग।

देवपूजक (सं० पु०) देवाराधन कर्त्ता, देवोपासक।
देवपूजा (सं०स्त्री०) देवता का पूजन, देवता की आराधना।
देवप्रतिमा (सं०पु०) भगवान की मूर्त्ति, देव प्रतिमूर्त्ति।
देववधू (सं० स्त्री०) देव स्त्री, महारानी।
देवब्रह्मा (सं० पु०) देव ऋषि, नारद मुनि।
देवब्राह्मण (सं० पु०) देव तुल्य ब्राह्मण।
देवभवन (सं० पु०) पीपल का पेड़, स्वर्ग।
देवमणि (सं० पु०) कौस्तुभ मणि, घोड़े की भँवरी, सूर्य। [यक्षी।
देवमाता (सं० स्त्री०) अदिति, देवता की माता, दाक्षा-
देवमातृक (सं० पु०) वह देश जहाँ वृष्टि खेती के लिए यथेष्ट होती हो।
देवमास (सं० पु०) गर्भ का आठवाँ महीना।
देवमुनि (सं० पु०) नारद।
देवयजन (सं० पु०) यज्ञवेदी।
देवयज्ञ (सं० पु०) होम, हवन, अग्नि में घृताहुति प्रदान।
देवयान (सं० पु०) वह मार्ग जिससे आत्मा शरीर से अलग होकर ब्रह्मलोक को जाता है।
देवयानी (सं० स्त्री०) दैत्य गुरु शुक्राचार्य की कन्या, जब बृहस्पति के पुत्र कच शुक्राचार्य से मृतसंजीवनी विद्या सीखने गये थे उस समय देवयानी इनसे बहुत प्रेम रखती थी और उनके विद्या सीख लेने पर इसने विवाह का प्रस्ताव किया, कच ने अस्वीकार कर दिया इस पर देवयानी ने शाप दिया कि तुम्हारी विद्या निष्फल होगी और कच ने शाप दिया कि तुम्हारा ब्राह्मण से विवाह न होगा। देवयानी और दैत्यराज वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा से बड़ी मैत्री थी, एक दिन स्नान के समय शर्मिष्ठा ने देवयानी का वस्त्र पहन लिया, इस पर दोनों में विवाद हुआ, शर्मिष्ठा भला बुरा कह कर उसे कुएँ में ढकेल घर चली गयी, इधर राजा ययाति शिकार खेलने आये थे, कुएँ के भीतर से आदमी का शब्द पाकर देवयानी को निकलवाया, देवयानी घर नहीं गयी और अपने पिता के पास सब हाल कहला भेजा, शुक्राचार्य ये सब सुन वृषपर्वा के पास गये और उसकी राजधानी छोड़ अन्यत्र जाने को तैयार हुए। वृषपर्वा बड़ा दुःखी हुआ और देवयानी को इस शर्त पर प्रसन्न किया कि हजार दासियों के साथ शर्मिष्ठा देवयानी की सेवा करे, शर्मिष्ठा ने इस बात को स्वीकार किया और देवयानी की सेवा करने लगी, देवयानी का विवाह ययाति से हुआ, देवयानी के साथ शर्मिष्ठा भी उसके ससुराल गयी।
देवर (सं० पु०) पति का छोटा भाई।
देवरथ (सं० पु०) देवताओं का विमान, पुष्पक रथ।
देवरा (सं० पु०) छोटे मोटे देवता, एक प्रकार का परसन।
देवराज (सं० पु०) इन्द्र। [इन्द्राणी, शची।
देवरानी (सं० स्त्री०) देवर की स्त्री, देवराज की स्त्री,
देवर्षि (सं० पु०) देवगणों में ऋषि।
देवल (सं० पु०) पुजारी, पण्डा, देवर, धार्मिक व्यक्ति, नारद, असित मुनि के पुत्र, देवालय, मन्दिर।
देवलोक (सं० पु०) स्वर्ग।
देववाणी (सं० स्त्री०) संस्कृत भाषा।
देववृक्ष (सं० पु०) कल्पद्रुम, सतिवन, मदार वृक्ष, गूगल।
देवशुनी (सं० स्त्री०) स्वर्ग की कुतिया, सरमा।
देवसदन (सं० पु०) स्वर्ग, देवालय, मन्दिर।
देवसभा (सं० स्त्री०) सुधर्मा नाम की सभा जिसको मय ने युधिष्ठिर के लिए रचवाया था। [समाज।
देवसमाज (सं० पु०) सुधर्मा सभा, देवताओं का
देवसर (सं० पु०) सात सरोवर।
देवसेना (सं० स्त्री०) सावित्री के गर्भ से उत्पन्न प्रजापति की कन्या जो कार्तिकेय को ब्याही गयी थीं, इनका दूसरा नाम महाषष्ठी है।
देवस्थान (सं० पु०) देवालय, मन्दिर।
देवस्व (सं० पु०) देव धन, वह जायदाद जो किसी देवता की पूजा आदि के लिये अलग कर दी जाय।
देवहा (सं० स्त्री०) सरयू नदी। [अन्न से भरी गाड़ी।
देवहू (सं०पु०) एक ऋषि का नाम, देवाह्वान, बायाँ कान,
देवहूति (सं० स्त्री०) सांख्यकार कपिल की माता, जो स्वायंभुव मुनि की कन्या और कर्दम की स्त्री थी।
देवा (सं० पु०) देव, देवता, (वि०) देने वाला।
देवाङ्गना (सं० स्त्री०) देव स्त्री, अप्सरा।
देवान (फ़ा०सं०पु०) वज़ीर, अमात्य, मन्त्री, राज सभा।
देवानांप्रिय (सं० पु०) वह जो देवताओं को प्रिय हो, मूर्ख, बकरा। [प्रकार का पक्षी।
देवाना (वि०) उन्मत्त, पागल, बावला (सं० पु०) एक
देवानुचर (सं० पु०) विद्याधर आदि उपदेव।

देवान्तक (सं० पु०) रावण का पुत्र जिसका बध हनुमान ने किया था।

देवान्न (सं० पु०) चरु, हवि।

देवारि (सं० पु०) दैत्य, राक्षस, असुर। [देने वाला।

देवाल (सं० पु०) दीवार, चारदीवारी, (वि०) दाता,

देवालय (सं० पु०) देवस्थान, स्वर्ग।

देवाला (सं० पु०) दिवाला, टाट उलटना।

देवालिया (वि०) जिसका देवाला हो गया हो, निर्धन।

देवाली (सं० स्त्री०) देखो "दिवाली"।

देवालेई (सं० स्त्री०) देन लेन। [नाम।

देविका (सं० स्त्री०) वर्तमान घाघरा नदी का प्राचीन

देवी (सं० स्त्री०) दुर्गा, भवानी, देव-पत्नी, सुशील और सदाचारिणी स्त्रियों के लिए आदर-सूचक शब्द, ब्राह्मण की स्त्री, राजमहिषी, पटरानी, श्यामा पक्षी।

देवी पुराण (सं० पु०) वह उपपुराण जिसमें देवी महात्म्य का वर्णन है।

देवी भागवत (सं० पु०) एक पुराण का नाम।

देवी सूक्त (सं० पु०) ऋग्वेद शाकल संहिता का एक सूक्त जिसका देवता देवी है।

देवेन्द्र (सं० पु०) इन्द्र।

देवैया (सं० पु०) देने वाला, दाता।

देवोत्तर (सं० पु०) देव अर्पित धन।

देवोत्थान (सं० पु०) कार्तिक शुक्ल एकादशी, जिस दिन विष्णु भगवान् शेष शय्या से उठते हैं।

देवोद्यान (सं० पु०) देवताओं का उपवन, नन्दन वन।

देवोन्माद (सं० पु०) वह उन्माद जिसमें रोगी पवित्र रहता है, सुगन्धित फूलों की माला पहनता है, आँखें बन्द नहीं करता और संस्कृत बोलता है, यह देवता के कोप से होता है।

देवोपासना (सं० स्त्री०) देव-पूजा, देवाराधना।

देश (सं० पु०) पृथ्वी का विभाग, मण्डल, लोक, स्थान।

देशकार (सं० पु०) एक राग विशेष।

देशज (सं० पु०) वह शब्द जो किसी भाषा का अपभ्रंश न हो पर किसी देश के लोगों के बोलचाल का हो, (वि०) देश में उत्पन्न।

देशज्ञ (सं० पु०) देश-दशा का ज्ञाता।

देशना (सं० पु०) उपदेश।

देशभक्त (सं० पु०) देश की सेवा करने वाला।

देशभाषा (सं० स्त्री०) किसी देश या प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा। [लगते हैं।

देशमल्लार (सं० पु०) एक राग विशेष जिस में सब स्वर

देशस्थ (सं० पु०) महाराष्ट्र ब्राह्मणों का एक भेद, (वि०) देश में रहने वाला।

देशाचार (सं० पु०) देश की रीति नीति, देश की प्रथा।

देशाटन (सं० पु०) देश-भ्रमण।

देशाधिप (सं० पु०) अधिराज, राज्याधिकारी।

देशाधीश (सं० पु०) राजा।

देशान्त (सं० पु०) देश की सीमा।

देशान्तर (सं० पु०) परदेश, विदेश, सुमेरु और लङ्का के मध्यस्थ भूमि-भाग, मध्य रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी। [जो ब्रह्मज्ञान का उपदेश दे।

देशिक (सं० पु०) बटोही, पथिक, गुरु, आचार्य, वह गुरु

देशिनी (सं० स्त्री०) तर्जनी अंगुली, सूची।

देशी (सं० पु०) एक रागिनी जो दीपक राग की भार्या है, (वि०) देश का।

देशीय (वि०) देशी।

देसवाल (वि०) स्वदेशी, (सं० पु०) पटसन।

देह (सं० स्त्री०) शरीर, तन, गात्र, काय।

देहकानी (फ़ा० वि०) गँवार, देहाती।

देहज (सं० पु०) शरीर से उत्पन्न।

देहत्याग (सं० पु०) मरण, मृत्यु।

देह धारण (सं० पु०) जन्म, जीवन रक्षा।

देहधारी (वि०) शरीर धारण करने वाला।

देहपात (सं० पु०) मरण, मृत्यु।

देहभृत (सं० पु०) जीव। [भोजन, निर्वाह।

देहयात्रा (सं० स्त्री०) मृत्यु, मरण, भरण, पोषण,

देहरा (सं० पु०) देवालय, देवघर, नर देह। [लकड़ी।

देहरी (सं० स्त्री०) पटडेहरी, द्वार के चौखटे के नीचे वाली

देहली (सं० स्त्री०) देहरी।

देहली दीपक (सं० पु०) वह दीपक जो देहली पर रक्खा जाता है और उसका प्रकाश बाहर भीतर दोनों ओर जाता है, अर्थालङ्कार विशेष जिसमें मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनों ओर घटाया जाता है।

देहवंत (वि०) तनुधारी, (सं० पु०) प्राणी, शरीरी।

देहात (सं० स्त्री०) गाँव, गँवई।

देहाती (वि०) गँवार, ग्रामीण, देहात का।

देहातीत (वि०) जो शरीर से परे हो, जिसे देहाहङ्कार न हो।
देहात्मवादी (सं० पु०) शरीर ही को आत्मा मानने वाला। [समझने से हो।
देहाध्यास (सं० पु०) वह भ्रम जो देह धर्म को आत्मा
देहान्त (सं० पु०) मृत्यु, मरण, मौत।
देही (सं० पु०) जीवात्मा।
दैजा (सं० पु०) दहेज, यौतुक। [दैत्य।
दैतेय (वि०) दिति से उत्पन्न, (सं०पु०) असुर, दानव,
दैत्य (सं० पु०) दानव, असुर, दिति की सन्तान।
दैत्यगुरु (सं० पु०) शुक्राचार्य।
दैत्यपुरोधा (सं० पु०) शुक्राचार्य।
दैत्यमाता (सं०स्त्री०) दिति। [युगों के बराबर होता है।
दैत्ययुग (सं० पु०) दैत्यों का युग जो मनुष्य के चार
दैत्यसेना (सं० स्त्री०) प्रजापति की कन्या जिसको केशी दानव हर ले गया था और विवाह किया था।
दैत्याचार्य (सं० पु०) शुक्राचार्य।
दैत्यारि (सं० पु०) विष्णु, इन्द्र, देव गण।
दैत्येन्द्र (सं० पु०) दैत्यों का राजा, गंधक।
दैनंदिन (सं० पु०) प्रतिदिन होने वाला, प्रात्यहिक।
दैनिक (वि०) प्रतिदिन का, प्रात्यहिक।
दैनिक पत्र (सं० पु०) प्रतिदिन प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र। [की मजूरी।
दैनिक वेतन (सं० पु०) प्रतिदिन का वेतन, प्रत्येक दिन
दैनिकी (सं० स्त्री०) एक दिन का वेतन, एक दिन की मजूरी।
दैन्य (सं० पु०) दरिद्रता, दीनता, ग़रीबी।
दैया (सं० पु०) दैव, दई, (स्त्री०) दाई।
दैर्घ्य (सं० पु०) दीर्घता, लम्बान, चौड़ान।
दैव (सं० पु०) भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, भवितव्यता, होनी, वह अर्जित शुभाशुभ कर्म जो फल देने वाला हो।
दैवगति (सं० स्त्री०) भाग्य, प्रारब्ध, अदृष्ट, दैवी घटना।
दैवज्ञ (सं० पु०) ज्योतिषी।
दैवत (वि०) देव संबन्धी।
दैवतीर्थ (सं० पु०) अंगुलियों का अग्र भाग।
दैव दुर्विपाक (सं० पु०) दुर्भाग्य, भाग्य की प्रतिकूलता।
दैवतन्त्र (वि०) प्रारब्धानुकूल, भाग्याधीन।
दैवयुग (सं० पु०) देवताओं का युग जो मनुष्य के चार युगों के बराबर होता है।
दैवयोग (सं० पु०) संयोग, अकस्मात्।
दैववर्ष (सं० पु०) देवताओं का वर्ष जो १३१५२१ सौर दिनों का होता है।
दैववश (वि०) संयोगवश, हठात्, दैवा, अकस्मात्।
दैववशात् (वि०) "दैववश"।
दैववादी (सं०पु०) अदृष्टवादी, अकर्मण्य, आलसी।
दैव विवाह (सं० पु०) अष्ट विधि विवाहों में से एक।
दैवश्राद्ध (सं० पु०) देवोद्देश्य से किया हुआ श्राद्ध।
दैवागत (वि०) आकस्मिक, दैवी।
दैवात् (वि०) हठात्, अकस्मात्।
दैवाधीन (सं० पु०) ईश्वराधीन।
दैवानुरागी (सं० पु०) ईश्वर का प्रेमी, ईश्वर भक्त।
दैवानुरोधी (वि०) भाग्य पर निर्भर रहने वाला।
दैवायत (सं० पु०) दैवाधीन, ईश्वराधीन।
दैविक (वि०) देव संबन्धी।
दैवी (सं० स्त्री०) ईश्वरीय, देव संबन्धी।
दैवीगति (सं० स्त्री०) प्रारब्ध, अदृष्ट, भावी, होनहार।
दैवोत्पात (सं० पु०) दैववशात्, उपद्रव।
दैवोपहत (वि०) हतभाग्य, दुर्भाग्य।
दैव्य (वि०) देव सम्बन्धी, प्रारब्ध, भाग्य, अदृष्ट।
दैशिक (वि०) देश सम्बन्धी।
दैहिक (वि०) शारीरिक, कायिक।
दैहों (क्रि०) दूंगा।
दोंकना (क्रि० अ०) गुर्राना, गरजना।
दोंचना (क्रि० स०) दबाव डालना, वश में लाना।
दो (वि०) द्वि, एक और एक।
दोआब (फ़ा० सं० पु०) दो नदियों के बीच का देश।
दोऊ (वि०) दोनों।
दोक (सं० पु०) दो दाँत का बछड़ा।
दोकड़ा (सं० पु०) देखो "दुकड़ा"।
दोकला (सं० पु०) वह ताला जिसमें दो कल हों।
दोकोहा (सं० पु०) दो कूबर वाला ऊँट, जिस ऊँट की पीठ पर दो कूबर हों।
दोख (सं० पु०) दोष, दुर्गुण।
दोखना (क्रि० स०) दोष देना, कलङ्क लगाना।
दोखी (वि०) दोषी, अपराधी, ऐबी, बैरी, शत्रु। [न हो।
दोगला (वि०) वर्णसङ्कर, वह जो अपने असली बाप का
दोगाड़ा (सं० पु०) दो नली बंदूक।

दोगाना (वि०) दोहरा, द्विगुण, दोलड़ा ।
दोगुना (वि०) दुगुना ।
दोचंद (फ़ा० वि०) द्विगुणित, दुगुना ।
दोचना (क्रि० स०) दबाव डालना, बाध्य करना ।
दोचर (वि०) दूसरा, दुहरा ।
दोचित्ता (वि०) अस्थिर चित्त वाला, उद्विग्नमना ।
दोचित्ती (सं० स्त्री०) चित्त की अस्थिरता, द्विचित्त ।
दोजख (फ़ा० सं० पु०) नरक, एक प्रकार का पौधा ।
दोजा (सं० पु०) वह जिसका दो बिवाह हुआ हो ।
दोजिया (सं० स्त्री०) गर्भिणी स्त्री, गर्भवती स्त्री ।
दोजीवा (सं० स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।
दोतरफा (वि०) दोनों ओर, दोनों ओर का ।
दोतल्ला (वि०) दो मंज़िला । [का बाजा ।
दोतारा (सं० पु०) एक प्रकार का दोशाला, एक प्रकार
दोदना (क्रि० स०) कही हुई बात का पलट जाना, मुकरना, झुठाना । [पेड़ ।
दोदिन (सं० पु०) रींठे की जाति का एक प्रकार का
दोदिला (वि०) दोचित्ता, अस्थिर चित्त वाला ।
दोधक (सं० पु०) एक छन्द विशेष जिसमें तीन भगण और अन्त में दो गुरु होते हैं ।
दोधपमान (वि०) बराबर कांपने वाला ।
दोने (सं० पु०) दो पर्वतों के मध्य का स्थान, दोआबा, वह स्थान जहाँ दो नदियों का संगम होता है, दो वस्तुओं का मेल, दो नदियों का संगम, काठ का लम्बा खोखला टुकड़ा जिसमें सिंचाई की जाती है ।
दोनली (वि०) जिसमें दो नल हों । [पात्र ।
दोना (सं० पु०) पत्ते का गोलाकार कटोरे के समान
दोनिया (सं० स्त्री०) छोटा दोना ।
दोनी (सं० स्त्री०) छोटा दोना ।
दोनों (वि०) दो, उभय ।
दो पलका (सं० पु०) एक प्रकार का कबूतर, दोहरा नगीना, नकली और असली मिला हुआ नगीना ।
दोपल्ली (वि०) दो पल्ले वाला ।
दोपहर (सं० पु०) मध्याह्न । [का समय ।
दोपहरी (सं० स्त्री०) मध्याह्न, सबेरे और संध्या के बीच
दोपीठा (वि०) दो रुखा, एक तरफ़ छाप कर दूसरे तरफ़ छापना ।
दोफसली (वि०) जिसका संबंध दोनों फसल से हो ।
दोबर (वि०) दोहरा, दो बार, दोतह ।
दोबारा (क्रि०वि०) दूसरी बार ।
दोबे (सं० पु०) दुबे, ब्राह्मणों की एक पदवी ।
दोभाषिया (वि०) दुभाषिया ।
दोमंज़िला (फ़ा० वि०) दो तल्ला, दो खण्ड वाला ।
दोमट (सं० स्त्री०) बालू मिली हुई ज़मीन, वह मिट्टी जिसमें बालू का अंश भी हो ।
दोमहला (वि०) दो मंजिला ।
दोमुँहा (वि०) दो मुँह वाला ।
दोय (वि०) दो ।
दोयम (फ़ा० वि०) दूसरा, दूसरे श्रेणी का ।
दोरंगा (वि०) दो रंग वाला ।
दोरंगी (वि०) छल, कपट ।
दोरक (सं० पु०) सितार का तार, अनन्त चतुर्दशी के दिन का सूत्र रूप प्रसाद जिसे अनन्त कहते हैं ।
दोरस (सं० पु०) दोमट, दूमट ज़मीन ।
दोरसा (वि०) दो प्रकार के स्वाद वाला । [हों ।
दोराहा (सं० पु०) वह स्थान जहां से दो राहें निकली
दोरी (सं० स्त्री०) डोरी, रस्सी । [बेल बूटे हों ।
दोरुखा (फ़ा० वि०) जिसके दोनों ओर समान रंग या
दोर्दण्ड (सं० पु०) बाँह रूपी दण्ड, भुज दण्ड ।
दोल (सं० पु०) हिंडोला, झूला, डोली ।
दोलड़ा (वि०) दो लड़ वाला ।
दोलत्ती (सं० पु०) देखो "दुलत्ती" ।
दोलन (सं० पु०) झूलन, हिलन ।
दोला (सं० पु०) दोल, हिंडोला, झूला, नील का पेड़ ।
दोलायन्त्र (सं० पु०) अर्क खींचने का एक प्रकार का यन्त्र ।
दोलायमान (वि०) चलायमान, चंचल, झूलता हुआ ।
दोलिका (सं० स्त्री०) दोला, झूला ।
दोलोत्सव (सं० पु०) वैष्णवों का वह उत्सव जो ये फाल्गुनी पूर्णिमा को मनाते हैं ।[काम लिया जाता है ।
दोश (सं०पु०) एक प्रकार का लाह जिससे रंग बनाने का
दोशाला (सं० पु०) दुशाला । [राध, चूक, भूल ।
दोष (सं० पु०) ऐब, दुर्गुण, बुराई, खोटापन, पाप, अप-
दोषक (सं० पु०) निन्दक, गाय का बछड़ा ।
दोषकर (सं० पु०) अनिष्टकर, निन्दकर ।
दोष-खण्डन (सं० पु०) अपराध-मार्जन, कलङ्क-मार्जन ।

दोषगायक (सं० पु०) निन्दक।
दोषग्राहक (सं०पु०) अपराध-कारक,निन्दक, छिद्रान्वेषी।
दोषग्राही (सं० पु०) दुर्जन, दुष्ट। [वाली औषध।
दोषघ्न (सं० पु०) कुपित बात पित्तादि को शान्त करने
दोषज्ञ (सं० पु०) पण्डित, चिकित्सक।
दोषत्रय (सं० पु०) बात, पित, कफ।
दोषना (क्रि० स०) दोखना, दोष लगाना, कलङ्कित करना, अपराध लगाना।
दोषनाश (सं० पु०) पाप-मोचन, अपवाद-हरण।
दोषभाक् (सं० पु०) अपराधी, निन्दा के योग्य।
दोषा (सं० स्त्री०) रात, रजनी, संन्ध्या, निशा, बाँह।
दोषाकर (सं० पु०) चन्द्रमा।
दोषातन (वि०) रात्रि भव, रात में उत्पन्न।
दोषादोष (सं० पु०) भलाई बुराई, उत्तम निकृष्ट।
दोषारोपण (सं० पु०) अपराध लगाना, दोष लगाना।
दोषावह (वि०) दोषपूर्ण, जिसमें दोष हों।
दोषिन (सं० स्त्री०) अपराधिनी, वह कन्या जो अविवाहित दशा में ही पुरुष के साथ प्रसंग किये हो।
दोषी (वि०) पापी, बुरा, ऐबी।
दोसरा (वि०) दूसरा।
दोसाध (सं० पु०) देखो 'दुसाध'। [काम आती है।
दोसूती (सं० स्त्री०) दो परत की चादर जो बिछाने के
दोस्त (फ़ा० सं० पु०) मित्र, सुहृद, स्नेही।
दोस्ताना (फ़ा० सं० पु०) मित्रता, मैत्री (वि०) दोस्ती का, मित्रता का।
दोस्ती (फ़ा० सं० स्त्री०) मैत्री, स्नेह।
दोहगा (सं० स्त्री०) रखनी, वह स्त्री जिसका पति मर गया हो और उसको किसी दूसरे पुरुष ने रख लिया हो।
दोहड़िका (सं० स्त्री०) छन्द विशेष।
दोहतड़ (सं० स्त्री०) ताली।
दोहता (सं० पु०) बेटी का बेटा।
दोहत्थड़ (सं० स्त्री०) दोनों हाथ से मारा हुआ चपत।
दोहत्था (वि०) दोनों हाथों से।
दोहद (सं० स्त्री०) गर्भ का चिह्न, गर्भिणी की इच्छा।
दोहदवती (सं० स्त्री०) गर्भवती।
दोहन (सं० पु०) दुहना, दोहनी।
दोहनी (सं० स्त्री०) दूध की हाँडी, दुग्धपात्र।
दोहर (सं० स्त्री०) दोहरी चद्दर।
दोहरना (क्रि० स०) दोहरा करना, दो परत करना, आवृत्ति करना (क्रि० अ०) दोहरा होना, दूसरी आवृत्ति होना।
दोहरा (वि०) दो तह, दो परत, दुगुना।
दोहराना (क्रि० स०) दोबारा करना, पुनरावृत्ति करना।
दोहराव (सं० पु०) दोहराने का काम, तह।
दोहला (वि०) दो बार की ब्याई हुई गौ आदि।
दोहली (सं० स्त्री०) अशोक वृक्ष, आक, मदार।
दोहा (सं० पु०) चार चरण का एक छन्द, जिसके प्रथम और तृतीय चरण में १३ १३ मात्रा और द्वितीय चतुर्थ में ११-११ मात्राएँ होती हैं।
दोहाई (सं० स्त्री०) शपथ, कसम, गुहार, पुकार।
दोहान (सं० पु०) दो वर्ष का बछवा।
दोहाव (सं० पु०) काश्तकारों की गौओं का वह दूध जो ज़मींदारों को नज़र करना पड़ता है।
दोहिता (सं० पु०) दौहित्र, बेटी का बेटा।
दोही (सं० पु०) एक चार चरण का छन्द जिसके प्रथम और तृतीय चरण में १५-१५ मात्राएँ और द्वितीय और चतुर्थ चरण में ११-११ मात्राएँ होती हैं।
दौंकना (क्रि०अ०) चमकना, चमचमाना, दमकना।
दौंगरा (सं० पु०) हलकी वर्षा जो गरमी में होती है।
दौंचना (क्रि० स०) दांव पेंच से लेना, दबा कर लेना।
दौंरी (सं० स्त्री०) दंवरी करने वाले बैलों का झुण्ड।
दौड़ (सं० स्त्री०) धावा, द्रुतगति, वेग सहित गमन।
दौड़धूप (सं० स्त्री०) परिश्रम, उद्योग, धंधा, प्रयत्न।
दौड़ना (क्रि० अ०) धावना, वेग से चलना, द्रुत गमन करना।
दौड़ाक (वि०) दौड़ने वाला।
दौड़ादौड़ (वि०) अथक, अविश्रान्त।
दौड़ा दौड़ी (सं० स्त्री०) दौड़धूप।
दौड़ाना (क्रि० स०) वेग के साथ चलाना।
दौड़ाहा (सं० पु०) दौड़ने वाला, हरकारा।
दौत्य (सं० पु०) दूत का काम।
दौना (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा।
दौर (सं० पु०) भ्रमण, फेर।
दौरना (क्रि० अ०) दौड़ना।
दौरा (सं० पु०) फेरा, चक्कर, भ्रमण, टोकरा।

दौरात्म्य (सं० पु०) दुष्टता, दुर्जनता ।
दौरादौर (वि०) अविश्रान्त, लगातार ।
दौरान (फ़ा० सं० पु०) चक्कर, फेरा, झोंक, सिलसिला ।
दौरी (सं० स्त्री०) डलिया, चँगेली, टोकरी ।
दौर्जन्य (सं० स्त्री०) दुष्टता, दुर्जनता ।
दौर्बल्य (सं० पु०) दुर्बलता, नाताक़ती ।
दौर्भाग्य (सं० पु०) अभाग्य, दुर्भाग्य ।
दौर्मनस्य (सं० पु०) दुर्जनता, चित्त की खोटाई ।
दौर्हृद (सं० पु०) दुष्टता ।
दौलत (सं० स्त्री०) संपत्ति, धन ।
दौवारिक (सं० पु०) द्वारपाल ।
दौहित्र (सं० पु०) नाती, कन्या का पुत्र ।
दौहित्री (सं० स्त्री०) बेटी की बेटी ।
दौहृद (सं०पु०) स्त्रियों के गर्भावस्था की इच्छा, दोहद ।
द्युति (सं० स्त्री०) आभा, दीप्ति, प्रकाश, कान्ति, चमक, किरण, रश्मि, तेज ।
द्युतिधर (वि०) द्युतिमान, आभायुक्त, दीप्त ।
द्युतिमान् (वि०) द्युतियुक्त, दीप्त, प्रकाशमान् ।
द्युपथ (सं० पु०) आकाश-मार्ग ।
द्युमणि (सं० पु०) सूर्य, रवि, आक वृक्ष, अकुआ का पेड़ ।
द्युमत्सेन (सं० पु०) एक राजा, ये शाल्व देश के रहने वाले थे, अभाग्य वश ये अंधे हो गये, कुछ कर्म-चारियों ने षड्यन्त्र रच कर इनको गद्दी से उतार दिया, ये अपनी स्त्री और बालक सत्यवान् को लेकर वन में चले गये ।
द्युलोक (सं० पु०) स्वर्ग लोक । [रहने वाला ।
द्युसद् (सं० पु०) देवता, देव, सुर (वि०) स्वर्ग में
द्युसिंधु (सं० स्त्री०) मंदाकिनी ।
द्यूत (सं० पु०) जुआ, वह खेल जिसमें दाँव बदा जाय और हारने वाला जीतने वाले को कुछ दे ।
द्यूतकार (सं० पु०) जुआरी ।
द्यूतक्रीड़ा (सं० स्त्री०) जुए का खेल ।
द्यूत पूर्णिमा (सं० स्त्री०) आश्विन पूर्णिमा, इस दिन प्राचीन समय में लोग जुआ खेलते थे ।
द्यूत समाज (सं० पु०) जुआ खेलने का स्थान, जुआ खेलने वाली मण्डली ।
द्यो (सं० स्त्री०) स्वर्ग, आकाश, अन्तरिक्ष, नभ ।
द्योत (सं० पु०) प्रकाश, ताप, धूप ।
द्योतक (वि०) प्रकाशक, दर्शक ।
द्योतन (सं० पु०) प्रकाशन, दर्शन, दीप ।
द्योतित (वि०) प्रकाशित, दर्शित ।
द्योरानी (सं० स्त्री०) देवरानी ।
द्यौस (सं० पु०) दिन, दिवस ।
द्रढ़िमा (सं० पु०) दृढ़ता ।
द्रम्म (सं० पु०) सोलह पण मूल्य की एक मुद्रा ।
द्रव (सं० पु०) द्रवण, रस, रसीला पदार्थ, तरल वस्तु, बहाव, पलायन, दौड़ ।
द्रवण (सं० पु०) बहाव, दौड़, गमन, गति ।
द्रवत्व (सं० पु०) बहाव, द्रवण, द्रवने का धर्म ।
द्रवना (क्रि०) बहना, पिघलना ।
द्रवहु (क्रि०) दया करो, कृपा करो । [रहने वाला ।
द्रविड़ (सं० पु०) दक्षिण का एक प्रदेश, दक्षिण देश का
द्रविण (सं०पु०) धन, द्रव्य, रुपया, पैसा, काञ्चन, सुवर्ण ।
द्रवित (वि०) बहता हुआ, नम्र ।
द्रवीकरण (सं० पु०) कठिन द्रव्य को सरल करना, पिघलाना, गलाना । [दयार्द्र ।
द्रवीभूत (वि०) गला हुआ, पिघला हुआ, दयालु,
द्रवौ (क्रि०) देखो " द्रवहु " ।
द्रव्य (सं० पु०) धन, पदार्थ, मद्य, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन, नैयायिकों के मत से ये नव द्रव्य हैं ।
द्रव्यवान् (वि०) धनी, धनवान् ।
द्रष्टव्य (वि०) दर्शनीय, देखने योग्य ।
द्रष्टा (वि०) दर्शक, देखने वाला ।
द्राक्षा (सं० स्त्री०) दाख, अंगूर ।
द्राक्षालता (सं० स्त्री०) अंगूर की लता ।
द्राघिमा (सं० स्त्री०) दीर्घता, भूमध्य रेखा के समा-नान्तर पूर्व पश्चिम को मानी हुई कल्पित रेखाएँ ।
द्राव (सं० पु०) गलाव, पिघलाव, गमन, अनुताप ।
द्रावक (वि०) गलने वाला, पिघलने वाला, सुहागा ।
द्रावण (सं० पु०) गलाना ।
द्राविड़ (सं० पु०) द्रविड़ देश निवासी ।
द्राविड़ी (सं० स्त्री०) छोटी लाची, द्राविड़ जाति की स्त्री ।
द्रावित (वि०) गलाया हुआ, पिघलाया हुआ ।
द्रुत (वि०) गला हुआ, पिघला हुआ, शीघ्र, वेग ।
द्रुतगति (सं० स्त्री०) शीघ्रगामी ।

द्रुतगामी (वि०) शीघ्रगामी ।

द्रुतपद (सं० पु०) छन्द विशेष ।

द्रुपद (सं० पु०) चन्द्रवंशी पञ्चाल देश का एक राजा, इसके पिता का नाम वृषत था, द्रोणाचार्य और इस से बचपन में गाढ़ी मैत्री थी, पिता के मरने पर इसको राज्य मिला, उस समय द्रोण उसके पास बचपन की मैत्री की याद दिलाने गया, पर द्रुपद ने द्रोण का अपमान किया, द्रोणाचार्य ने कौरव और पाण्डवों को अस्त्र की शिक्षा दी और गुरु दक्षिणा में द्रुपद को बाँध कर लाने को कहा, कौरव तो द्रुपद को न बाँध सके पर पाण्डव बाँध लाये, द्रोण ने द्रुपद को गङ्गा का दक्षिण भाग राज्य करने को दिया, उत्तर का अपने अधिकार में रक्खा, उसने एक ऐसा यज्ञ आरम्भ किया जिससे ऐसा पुत्र हो कि द्रोण को मार सके, यज्ञ फल से धृष्टद्युम्न नाम का पुत्र और कृष्णा या द्रौपदी नाम की कन्या उत्पन्न हुई, कृष्णा का व्याह पञ्च पाण्डवों से हुआ ।

द्रुपदात्मज (सं० पु०) द्रुपद-सन्तान, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न ।

द्रुपदी (सं० स्त्री०) द्रौपदी ।

द्रुम (सं० पु०) वृक्ष, पेड़, तरु, पारिजात ।

द्रुमव्याधि (सं० पु०) लाक्षा, लाह, पेड़ का रोग ।

द्रुमश्रेष्ठ (सं० पु०) ताड़ वृक्ष ।

द्रुमारि (सं० पु०) हाथी, गज ।

द्रुमालय (सं० पु०) वन, जंगल ।

द्रुमालिक (सं०पु०) राक्षस विशेष, एक राक्षस का नाम ।

द्रुमाश्रय (सं० पु०) गिरगिट, (वि०) पेड़ पर रहने वाला ।

द्रुमिला (सं० स्त्री०) छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में [३२ मात्रायें होती हैं ।

द्रुमेश्वर (सं० पु०) चन्द्रमा, पारिजात, ताड़ वृक्ष ।

द्रुहिण (सं० पु०) ब्रह्मा ।

द्रेक्काण (सं० पु०) राशि का तृतीय अंश ।

द्रोण (सं० पु०) लकड़ी का एक पात्र, जिसमें सोमरस रक्खा जाता था चार आढक या ३२ सेर का एक प्राचीन माप, पत्तों का दोना, नाव, लकड़ी का रथ, कौआ, वृक्ष नील का पौधा ।

द्रोणकाक (सं०पु०) काला कौआ, वनकौआ, डोमकाक ।

द्रोणगिरी (सं० स्त्री०) एक पर्वत का नाम ।

द्रोणपुष्पी (सं० स्त्री०) गूमा ।

द्रोणमुख (सं० पु०) चार सौ गाँवों में प्रधान गाँव ।

द्रोणाचल (सं० पु०) द्रोणगिरी पर्वत ।

द्रोणाचार्य (सं० पु०) ये महर्षि भारद्वाज के पुत्र थे, एक दिन भारद्वाज ने गङ्गा स्नान करते समय घृताची नाम की अप्सरा को देखा और इनका वीर्यपात हो गया, घृताची ने उस वीर्य को द्रोण नामक पात्र में रख दिया, जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ, द्रोण से उत्पन्न होने के कारण इनका नाम द्रोण, रक्खा, इनका बिवाह शरद्वान की पुत्री कृपी से हुआ था, जिस के गर्भ से अश्वत्थामा नामक एक वीर पुत्र उत्पन्न हुआ, बचपन में द्रुपद से इनकी मैत्री थी, पर राज्य पाने पर द्रुपद ने इनका अपमान किया था, कौरव और पाण्डवों को अस्त्र की शिक्षा दी और गुरु दक्षिणा में द्रुपद के अपमान का बदला चुकाया, महाभारतीय युद्ध में ये मारे गये थे, पुत्र के मरने का सम्बाद पा ये मूर्छित हो गये उस समय धृष्टद्युम्न ने इनका सिर काट लिया । [द्रोण की स्त्री ।

द्रोणी (सं० स्त्री०) डोंगी, दोनी, कठवत, काठ का प्याला,

द्रोह (सं० पु०) द्वेष, वैर, शत्रुता ।

द्रोहकारी (सं० पु०) वैरी, विरोधी ।

द्रोहचिन्तन (सं० पु०) दूसरों के अनिष्ट करने की चिन्ता किसी की बुराई सोचना ।

द्रोहिया (वि०) वैरी, विरोधी, शत्रु ।

द्रोही (वि०) शत्रु, वैरी ।

द्रौणायन (सं० पु०) अश्वत्थामा ।

द्रौपद (सं० पु०) द्रुपद का पुत्र ।

द्रौपदी (सं० स्त्री०) द्रुपद राज की कन्या, लक्ष्य वेध करके अर्जुन ने स्वयंवर में पाया था, माता की आज्ञा से पाँचों भाइयों ने बियाह किया था, पाण्डव जुआ में इनको हार गये थे, दुःशासन ने भरी सभा में इनका वस्त्र खींचना चाहा पर खींच न सका, इस बेइज्ज़ती का बदला लेने के लिए भीम ने दुःशासन के वक्षस्थल के रक्तपान की प्रतिज्ञा की थी, जिसे पूरा भी किया, पुराणों में द्रौपदी की गणना पञ्च कन्याओं में है ।

द्वन्द्व (सं० पु०) युग्म, जोड़ा, मिथुन, युगल, प्रतिद्वंदी, द्वंदयुद्ध, कलह, झगड़ा, बखेड़ा, रहस्य, भय, डर, एक समास का नाम ।

द्वन्द्वकारी (वि०) झगड़ा करने वाला ।

द्वन्द्वचर (सं० पु०) चकवा।
द्वन्द्वचारी (सं० पु०) चकवा।
द्वन्द्वज (सं० पु०) दो दोषों से उत्पन्न रोग, कलह आदि [से उत्पन्न।
द्वन्द्वयुद्ध (सं० पु०) मल्लयुद्ध, कुश्ती, हाथापाई।
द्वय (वि०) दो।
द्वाःस्थ (सं० पु०) नन्दिकेश्वर, द्वारपाल।
द्वाचत्वारिंशत् (वि०) बयालीस।
द्वात्रिंशत् (वि०) बत्तीस।
द्वात्रिंशत्अक्षरी (सं० पु०) ग्रंथ,पुस्तक।
द्वात्रिंशतलक्षण (सं० पु०) बत्तीस लक्षण।
द्वादश (वि०) बारह।
द्वादशकर (सं० पु०) बृहस्पति, कार्तिकेय।
द्वादशपत्र (सं० पु०) योनि विशेष।
द्वादशभानु (सं० पु०) बारह सूर्य।
द्वादशभानुकला (सं० पु०) बारह सूर्य।
द्वादश लोचन (सं० पु०) कार्तिकेय।
द्वादश वन (सं० पु०) बारह वन जो ब्रज में हैं।
द्वादशांशु (सं० पु०) बृहस्पति।
द्वादशाक्ष (सं० पु०) कार्तिकेय।
द्वादशाक्षर (सं० पु०) १२ अक्षर का विष्णु का एक मन्त्र अर्थात् "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय"।
द्वादशाङ्ग (सं० पु०) बारह सुगंधित द्रव्यों के मेल से बना हुआ धूप।
द्वादशाङ्गुल (सं० पु०) एक बीता।
द्वादशात्मा (सं० पु०) सूर्य, आक।
द्वादशाह (सं० पु०) १२ दिन में समाप्त होने वाला यज्ञ, मृतक व्यक्ति के बारहवें दिन का कृत्य।
द्वादशी (सं० स्त्री०) दोनों पक्ष की बारहवीं तिथि।
द्वापर (सं० पु०) तृतीय युग, यह ८६४००० वर्ष का होता है।
द्वापञ्चाशत् (वि०) बावन।
द्वार (सं० पु०) दरवाज़ा, घर से निकलने का मार्ग।
द्वारकण्टक (सं० पु०) कपाट, किवाड़।
द्वारका (सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण का नगर, इसी नाम का प्रसिद्ध पुराना नगर जो काठियावाड़ गुजरात में है, हिन्दू लोग इसे चार धामों में मानते हैं। पुराणों से ज्ञात होता है कि श्रीकृष्ण के देहत्याग के पश्चात् द्वारका समुद्र में मग्न हो गई।
द्वारकेश (सं० पु०) श्रीकृष्ण।
द्वारछेकाई (सं० स्त्री०) विवाह की एक रीति, विवाह के बाद जब बधू के साथ वर घर में जाता है तब द्वार पर बहन रोकती है और वर के कुछ नेग देने पर जाने देती है।
द्वारपण्डित (सं० पु०) किसी राज्य का प्रधान पण्डित।
द्वारपाल (सं० पु०) दरवान।
द्वारपूजा (सं० स्त्री०) वैवाहिक एक रस्म जो दरवाज़े पर बरात आने पर कन्या का पिता कलशादि का पूजन कर वर की पूजा करता है।
द्वारयन्त्र (सं० पु०) द्वार बन्द करने का यंत्र, ताला, [कुफुल।
द्वारवती (सं० स्त्री०) द्वारकापुरी।
द्वारस्थ (वि०)द्वार पर बैठा हुआ, (सं० पु०) द्वारपाल।
द्वारा (सं० पु०) द्वार, दरवाज़ा।
द्वारावती (सं० स्त्री०) द्वारका।
द्वारिका (सं० स्त्री०) देखो "द्वारका"।
द्वारिकाधीश (सं० पु०) श्रीकृष्ण जी।
द्वारी (सं० स्त्री०) द्वारपाल, छोटा द्वार।
द्वाषष्टि (वि०) दो अधिक साठ, ६२।
द्वासप्तति (वि०) संख्या विशेष, ७२, दो अधिक सत्तर।
द्वास्थ (सं० पु०) द्वारपाल।
द्वि (वि०) दो।
द्विकर्मक (वि०) जिसके दो कर्म हों।
द्विगु (सं० पु०) एक समास का नाम।
द्विगुण (वि०) दूना, दुगुना।
द्विघटिका (सं० स्त्री०) वह मुहूर्त जो दो घड़ियों से [निकाला गया है।
द्विचत्वारिंशत (वि०) संख्या विशेष, ४२, बयालीस।
द्विज (सं० पु०) दो बार उत्पन्न, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन वर्णों की उत्पत्ति जन्म और संस्कार से माना जाता है अतः ये द्विज कहे जाते हैं। अण्डज, पक्षी, दाँत।
द्विजन्मा (सं०पु०) द्विज, जिसका दो बार जन्म हुआ हो।
द्विजपति (सं० पु०) ब्राह्मण, चन्द्रमा, गरुड़, कर्पूर।
द्विजप्रिय (सं० स्त्री०) सोम।
द्विजबंधु (सं० पु०) नामधारी ब्राह्मण।
द्विजराज (सं० पु०) चन्द्रमा।
द्विजाति (सं० पु०) ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य जिनको शास्त्रानुसार यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है, अण्डज, पक्षी।

द्विजातीय (वि०) त्रिवर्ण सम्बन्धी।
द्विजालय (सं० पु०) वृक्ष-कोटर, ब्राह्मण-गृह।
द्विजिह्व (वि०) दो जिह्व वाला, खल, दुष्ट, चोर, चुगलखोर, (सं० पु०) सर्प, सांप, एक रोग विशेष।
द्विजोतम (सं० पु०) ब्राह्मण, गरुड़।
द्विज्या (सं० पु०) गोलार्द्ध की एक रेखा विशेष।
द्वितय (वि०) दो, दोहरा।
द्वितीया (वि०) दूसरा।
द्वितीयान्त (वि०) जिसके अन्त में द्वितीया विभक्ति का प्रत्यय हो। [संख्या।
द्वित्रा (सं० स्त्री०) दो या तीन को पूरण करने वाली
द्वित्व (सं० पु०) दोहराना, दोहरे होने का भाव।
द्विदेवत्या (सं०स्त्री०) विसाखा नक्षत्र इसके दो देवता हैं।
द्विधा (वि०) दो प्रकार से, दो भांति से।
द्विधाकल्प (सं०पु०) सन्देहकर विषय, शक वाली बात।
द्विप (सं० पु०) हाथी, गज, नागकेसर।
द्विपञ्चाशत (वि०) संख्या विशेष, ५२।
द्विपथ (सं० पु०) दोराहा।
द्विपद (वि०) दो पैर वाला, (सं० पु०) दो पैर वाले जीव, मनुष्य, पक्षी। [धन, का पूर्वभाग।
द्विपदराशि (सं० पु०) मिथुन, तुला, कुम्भ कन्या और
द्विपदी (सं० स्त्री०) दो पद का छंद, दो पदों का गाना।
द्विपाद (वि०) दो पैर वाला, (सं० पु०) दो पैर वाले जीव, मनुष्य पक्षी आदि।
द्विपास्य (सं० पु०) गणेश।
द्विभाव (सं० पु०) दुराव, दो भाव।
द्विभाषी (सं० पु०) दुभाषिया।
द्विमुख (सं० पु०) दुमुँहा साँप।
द्विमुखी (सं० स्त्री०) वह गाय जो बच्चा दे रही हो।
द्विरद (सं० पु०) हाथ, दुर्योधन का एक भाई।
द्विरदान्तक (सं० पु०) सिंह, केशरी।
द्विरसन (सं० पु०) सर्प।
द्विरागमन (सं० पु०) पुनरागमन, गौना। [है।
द्विरात्र (सं० पु०) एक यज्ञ जो दो रात में समाप्त होता
द्विरुक्त (वि०) दोबार कहा हुआ।
द्विरुक्ति (सं० स्त्री०) दो बार कहना। [हो।
द्विरूढ़ा (सं० पु०) वह स्त्री जिसका दो बार ब्याह हुआ
द्विरूढ़ापति (सं० पु०) विधवा स्त्री का पति।
द्विरेफ (सं० पु०) भौंरा। [वचन।
द्विवचन (सं० पु०) दो संख्या वाचक विभक्ति, दूसरा
द्विविध (वि०) दो प्रकार से, दो भाँति से।
द्विविधा (सं० पु०) दुबिधा, खटका।
द्विवेद (वि०) जो दो वेद पढ़े।
द्विवेदी (सं० पु०) दूबे, ब्राह्मणों की एक उपजाति।
द्विशीर्ष (सं० पु०) अग्नि, (वि०) दो सिर वाला।
द्वीप (सं० पु०) वह स्थान जो चारों ओर से जल से घिरा हो, टापू, जज़ीरा,व्याघ्रचर्म।
द्वीपवती (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम, पृथ्वी।
द्वीपवान (सं० पु०) सागर, समुद्र।
द्वीपशत्रु (सं० पु०) सतावर।
द्वीपसम्भवा (सं० स्त्री०) पिण्डी खजूर।
द्वीपस्थ (सं० पु०) द्वीप में रहने वाला, द्वीप वासी।
द्वीपिका (सं० स्त्री०) सतावर।
द्वीपी (सं० पु०) व्याघ्र, चीता, चित्रक वृक्ष।
द्वेष (सं० पु०) बैर, शत्रुता।
द्वेषी (वि०) बैरी शत्रु।
द्वेष्टा (वि०) बैरी, विरोधी, द्वेषकर्त्ता।
द्वेष्य (वि०) द्वेष योग्य।
द्वै (वि०) दो।
द्वैत (सं० पु०) युग्म, मिथुन, दो।
द्वैतवन (सं० पु०) वह वन जिसमें युधिष्ठिर वनवास के समय कुछ दिन रहे। [जीव को दो माना जाता है।
द्वैतवाद (सं० पु०) वह सिद्धान्त जिसमें आत्मा और
द्वैतवादी (वि०) द्वैतवाद मानने वाला।
द्वैध (सं० पु०) द्विविधा, खटका, संशय, दो टुकड़ा।
द्वैधीकरण (सं० पु०) भेदन,छेदन,खण्डन। [अनिश्चय।
द्वैधीभाव (सं०पु०)अलगाव,पार्थक्य,विश्लेष,आपस का झगड़ा
द्वैपायन (सं० पु०) व्यास का एक नाम।
द्वैमातुर (सं० पु०) गणेश। [के जल से होती हो।
द्वैमातृक (सं० पु०) जहाँ की खेती मेघ और नदी दोनों
द्वैरथ (सं० पु०) दो रथारोहियों का परस्पर युद्ध।
द्वैविध्य (सं० पु०) दुबधा।
द्वैष (सं० पु०) द्वेष, हिंसा, बैर, विरोध।
द्व्यङ्गुल (वि०) दो अंगुलियों के बराबर की वस्तु।
द्व्यञ्जलि (वि०) दो अञ्जलियों से नापी हुई वस्तु।
द्व्यक्षर (सं० पु०) दो अक्षर, दो अक्षर का मंत्र।

द्वयणुक (सं०पु०) दो अणुओं के संयोग से उत्पन्न वस्तु।
द्वयात्मक (सं० पु०) मिथुन, कन्या, धनु, मीन ये राशियाँ। [वाला।
द्वयाहिक (वि०) दो दिन के अनन्तर उत्पन्न होने

ध

ध—यह तवर्ग का चतुर्थ वर्ण है, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है। [जंजाल, बखेड़ा, एक प्रकार का ढोल।
धंधक (वि०) परिश्रमी, उद्यमी, कामकाजी, (सं० पु०)
धंधकधोरी (सं० पु०) काम काज का भार लेने वाला, कामकाजी, व्यवसायी, उद्यमी।
धंधरकधोरी (सं० पु०) वह जो हर घड़ी काम में लगा रहे। [आडम्बर।
धंधला (सं० पु०) धोखा, छल, कपट, हीला, बहाना,
धंधलाना (क्रि० अ०) ढोंग रचना, चकमा देना, छल कपट करना। [कारबार।
धंधा (सं० पु०) कामकाज, उद्यम, व्यवसाय, व्यापार,
धंधार (वि०) निठल्ला, निकम्मा, अकेला, निराला।
धंधारी (सं० स्त्री०) एकान्त, सुनसान, निर्जनता, शिथिलता, उदासी।
धंधाला (सं० स्त्री०) दूती, कुटनी।
धंधेरा (सं० पु०) राजपूत क्षत्रियों की एक जाति।
धंधोर (सं० पु०) होली, आग की ज्वाला, लपट, लौ।
धँस (सं० पु०) गोता, डुबकी।
धँसन (सं० पु०) पैठ, गति, चाल।
धँसना (क्रि० अ०) घुसना, गड़ना, पैठना, फँसना, किसी वस्तु का कीचड़ आदि में गड़ जाना।
धँसान (सं० स्त्री०) दलदल, फँसाव।
धँसाना (क्रि० स०) गड़ाना, चुभाना, पैठाना।
धक (सं० स्त्री०) हृदय धड़कने का शब्द।
धकधक (सं० पु०) हृदय की धड़कन, कँपकँपी, धुकधुकी।
धकधकाना (क्रि० अ०) धड़कना, दुःख, चिन्ता, भय आदि से हृदय का काँपना, थरथराना, काँपना।
धकधकी (सं० स्त्री०) थरथराहट, घबराहट, फेफड़ा।
धकपक (सं० पु०) धकधकी, हृदय का धड़कना।
धकपकाना (क्रि० अ०) हृदय दहलना, डरना।
धका (सं० पु०) धक्का, आघात।
धकाधकी (सं० स्त्री०) रेलपेल, ठेलमठेल।
धकाना (क्रि० स०) दहकाना, जलाना, सुलगाना।
धकार (सं० पु०) 'ध' वर्ण।
धकियाना (क्रि० स०) धकेलना, ढकेलना, धक्का देना।
धकेलना (क्रि० स०) धकियाना, धक्का देना, ढकेलना, ठेलना।
धकैत (वि०) धक्का देने वाला, ढकेलने वाला।
धक्कमधक्का (सं० पु०) ठेलाठेली, रेलपेल, धक्काधक्की।
धक्का (सं० पु०) प्रतिघात, आघात, टक्कर, ठेल।
धक्काधकी (सं० स्त्री०) धक्कमधक्का।
धक्कामुक्की (सं० स्त्री०) हाथाबांही, मुठभेड़, मारपीट।
धगड़ (सं० पु०) उपपति, जार।
धगड़बाज़ (सं० स्त्री०) कुलटा, व्यभिचारिणी, छिनाल।
धगड़ा (सं० पु०) जार, उपपति।
धगधगाना (क्रि० अ०) धड़कना, धकधकाना। [स्त्री।
धगरिन (सं० स्त्री०) नाल काटने वाली, धांगर जाति की
धगोलना (क्रि०) लोटना, छटपटाना, करवट बदलना।
धचकचाना (क्रि० स०) दहलाना, भयभीत करना, डराना। [फँसना।
धचकना (क्रि० अ०) कीचड़ में फँसना, दलदल में
धचका (सं० पु०) धक्का, आघात, झटका।
धज (सं० पु०) ठाट बाट, सजावट, नखरा, मनमोहिनी चाल, ठसक, आकृति, डीलडौल, रंगरूप, शोभा।
धजभङ्ग (सं० पु०) रोग विशेष, नपुंसकता का एक भेद।
धजा (सं० पु०) पताका, फरहरा, ध्वजा, चीर, कतरन।
धजीला (वि०) स्वरूपवान्, सुन्दर, सुडौल, सजीला।
धज्जी (सं० स्त्री०) कपड़े कागज़ आदि का टुकड़ा, कतरन, चीर।
मुहा०—धज्जियाँ उड़ाना=हँसी उड़ाना, विदीर्ण करना। धज्जियां करना=टुकड़े २ करना।
धटी (सं० स्त्री०) धज्जी, चीर, लँगोटी, कोपीन, वह वस्त्र जो गर्भाधान के बाद स्त्रियों को पहनने को दिया जाता है।
धड़ंग (वि०) नग्न, नंगा।
धड़ (सं० पु०) शरीर का स्थूल अङ्ग, सिर, हाथ, पैर को

छोड़ शरीर का सब अङ्ग, पेड़ी, तना, किसी वस्तु के वेग से जाने, गिरने आदि का शब्द। [खटका।

धड़क (सं० स्त्री०) हृदय स्पंदन, तड़प, आशङ्का, भय,

धड़कन (सं० स्त्री०) हृदय-स्पंदन, धुकधुकी, कंप।

धड़कना (क्रि० अ०) हृदय स्पन्दित होना, हृत्कंप होना, दिल धड़कना।

धड़का (सं० पु०) धड़कन, खटका, अंदेशा, दुबिधा, भय, सन्देह, किसी वस्तु के गिरने पड़ने का शब्द।

धड़काना (क्रि० स०) हृदय में स्पन्दन पैदा करना, दिल धकधक करना, डराना, दहलाना, कँपाना, चिन्तित करना।

धड़क्का (सं० पु०) ठनक, भय, धड़कन, अंदेशा, किसी वस्तु के गिरने पड़ने आघात आदि का शब्द।

धड़धड़ (सं० स्त्री०) किसी भारी वस्तु के एक साथ गिरने का शब्द, किसी वस्तु के फेंके जाने का शब्द, किसी वस्तु के चलाने का शब्द, बेरोक, बेधड़क।

धड़धड़ाना (क्रि० अ०) धड़धड़ शब्द करना।

धड़ल्ला (सं० पु०) धड़ाका, धड़धड़।

धड़वा (सं० पु०) एक प्रकार की मैना, सारिका।

धड़वाई (सं० पु०) तौलने वाला, वज़न करने वाला।

धड़ा (सं० पु०) बाँट, तौल, बटखरा, झुण्ड, समूह, दल।

धड़ाक (सं० पु०) धड़ाका। [धमक, कड़क।

धड़ाका (सं० पु०) किसी वस्तु के गिरने पड़ने का शब्द,

धड़ाधड़ (वि०) बराबर, लगातार, एक के बाद एक, बेरोक। [का शब्द।

धड़ाम (सं० पु०) ऊपर से जोर से कूदने, गिरने आदि

धड़ी (सं० स्त्री०) पाँच सेर की एक तौल।

धत् (अव्य०) दुत, दूर जा, हटजा, चला जा, तिरस्कार पूर्वक भगाने का शब्द।

धत (सं० स्त्री०) हाथी हाँकने का शब्द, लत, कुटेव।

धतकारना (क्रि० स०) दुरदुराना, दुतकारना, धिक्कारना, भगाना।

धता (वि०) हटा हुआ, भगा हुआ, भगाया हुआ।

धतींगड़ (सं० पु०) संड मुसंड, बेडौल मनुष्य, मोटा तगड़ा आदमी। [उसका फूल।

धतूरा (सं० पु०) एक प्रकार का विषैला पौधा और

धतूरिया (वि०) ठगों का वह दल जो पथिकों को धतूरा खिला कर बेहोश करता और लूटता था, छली, कपटी।

धधक (सं० पु०) लपट, लौ, आँच।

धधकना (क्रि० अ०) लहकना, दहकना, बलना, जलना।

धधकाना (क्रि० स०) दहकाना, सुलगाना, भभकाना, जलाना।

धधच्छर (सं० पु०) कविता का एक दोष, कविता के आदि मध्य या अन्त में अशुभ फलदायी अक्षरों का आना दग्धाक्षर या धधच्छर कहा जाता है आदि में ह, ग, न, मध्य में र, ज, स, और अन्त में क, ट, ज्ञ अशुभ हैं।

धन (सं० पु०) वह वस्तु जिससे सांसारिक जीवन का निर्वाह हो, वित्त, रुपया, पैसा, संपति, द्रव्य, दौलत, जीवनोपाय, अङ्क गणित में जोड़ का एक चिह्न।

धनक (सं० पु०) एक प्रकार का पतला गोटा, कारचोबी, धनुष, कमान। [का समय।

धनकटी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का वस्त्र, धान काटने

धनकेलि (सं० पु०) कुबेर। [वाला खेत।

धनखर (सं० पु०) धान का खेत, धान बोये जाने

धनगर्वित (वि०) धनाभिमानी।

धनचेष्टा (सं० स्त्री०) धन पाने की चेष्टा।

धनञ्जय (सं० पु०) अग्नि, अर्जुन शरीरस्थ पोषक वायु, चित्रक वृक्ष, अर्जुन, विष्णु, एक नाग का नाम।

धनतेरस (सं० स्त्री०) कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी जिस दिन लक्ष्मी का पूजन होता है।

धनत्तर (सं० पु०) धनी, धनवान, धनिक।

धनन्तर (सं० पु०) धन्वन्तरी। [देने वाला।

धनद (सं० पु०) कुबेर, अग्नि, वायु, चीता, (वि०) धन

धनदण्ड (सं० पु०) जुरमाना।

धनदानुज (सं० पु०) रावण, दशानन।

धनधान्य (सं० पु०) अन्न और धन आदि।

धनधाम (सं० पु०) घर द्वार और रुपया पैसा।

धनपति (सं० पु०) कुबेर, एक वायु, जो ब्रह्मा के मुख से निकला और उनकी आज्ञा से शरीर धारण कर देवताओं के धन की रक्षा करने लगा। [वाला।

धनपाल (सं० पु०) कुबेर, (वि०) धन की रक्षा करने

धनपिशाचिका (सं० पु०) धनाशा, धन-तृष्णा।

धनबाहुल्य (सं० पु०) धन की अधिकता, धनवान।

धनमद (सं० पु०) धन का मद।

धनलुब्ध (वि०) धन का लोभी।

धनवती (सं०स्त्री०) धनिष्ठा नक्षत्र,धन रक्षा करने वाली।
धनवन्त (वि०) धनवान्, धनाढ्य।
धनवान् (वि०) धनी, धनाढ्य।
धनशाली (वि०) धनी।
धनहर (सं०पु०) लुटेरा, चोर, एक प्रकार का गंध द्रव्य।
धनहीन (सं० पु०) ग़रीब, निर्धन।
धनागम (सं० पु०) धन का आना।
धनागार (सं० पु०) धन रखने का स्थान, भण्डार।
धनाढ्य (वि०) धनी, धनवान्।
धनाधिप (सं० पु०) कुबेर।
धनाध्यक्ष (सं० पु०) कुबेर, कोषाध्यक्ष।
धनाना (क्रि० अ०) गाय का बरदाना।
धनार्थी (वि०) धन चाहने वाला।
धनान्ध (सं०पु०) धन विशेष,अहङ्कार। [सन्दूक आदि।
धनाधार (सं० पु०) धन रखने का स्थान, बैंक, कोष
धनाधिकृत (सं०पु०) कोषाध्यक्ष, खजानची।
धनाधिप (सं० पु०) धनाधिकारी, धनेश्वर।
धनाध्यक्ष (सं० पु०) कुबेर, भंडारी, रोकड़िया।
धनार्जन (सं० पु०) धन-लाभ, धन का उपार्जन।
धनार्थी (सं० पु०) लोभी, लालची, कृपण।
धनाशा (सं० स्त्री०) धन पाने की आशा, धन की चाह।
धनाश्री (सं० स्त्री०) एक रागिनी जिसका प्रयोग वीररस में विशेष कर होता है। [स्वामी, पति, प्रभु,धनिया।
धनिक (सं० पु०) धनी आदमी, ऋणदाता, महाजन,
धनिया (सं० स्त्री०) धान्यक, एक प्रकार के मसाले का पौधा और उसका फल, बधू, युवती।
धनिष्ठा (सं० पु०) तेईसवां नक्षत्र।
धनी (वि०) धनवान्, दौलतमंद।
धनु (सं० पु०) धनुष, चाप, नवीं राशि।
धनुआ (सं० स्त्री०) धनुष,धुनियों के रुई धुनने का यंत्र।
धनुई (सं० स्त्री०) छोटा धनुष।
धनुक (सं० पु०) धनुष, चाप।
धनुकी (सं० स्त्री०) छोटा धनुष।
धनुकधारी (सं० पु०) धनुधारी, तीरंदाज।
धनुर्ग्रह (सं० पु०) धनुर्धर, धनुर्विद्या, बात रोग विशेष जिसमें शरीर जकड़ कर धनुषाकार हो जाता है, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
धनुर्धर (सं० पु०) धनुष धारण करने वाला व्यक्ति।
धनुर्द्धारी (वि०) धनुष धारण करने वाला।
धनुर्विद्या (सं० स्त्री०) धनुष चलाने की विद्या।
धनुर्वेद (सं० पु०) वह शास्त्र जिसमें धनुष सीखने की विधि हो।
धनुर्वी (सं० स्त्री०) छोटा धनुष।
धनुष (सं० पु०) चाप, धनु।
धनुषी (सं० पु०) छोटा धनुष।
धनुष्टङ्कार (सं० पु०) धनुष के रोदे का शब्द।
धनुष्मान् (सं० पु०) उत्तर की ओर का एक पहाड़।
धनुही (सं०स्त्री०) छोटा धनुष,बच्चों के खेलने का धनुष।
धनेश (सं० पु०) कुबेर, विष्णु, लग्न से दूसरा स्थान।
धनोपार्जन (सं० पु०) धन-संग्रह, धन-चेष्टा।
धन्नासेठ (सं० पु०) प्रसिद्ध धनी आदमी, बहुत बड़ा धनी। [जाति।
धन्नी (सं० स्त्री०) गाय की एक जाति, घोड़े की एक
धन्य (वि०) श्लाघ्य, पुण्यवान्, कृतार्थ, श्रेष्ठ, साधु, बड़ाई के योग्य।
धन्यवाद (सं० पु०) साधुवाद, स्तुति, प्रशंसा।
धन्या (सं० स्त्री०) बनदेवी, उपमाता, भाग्यवती स्त्री, धनिया, छोटा आंवला।
धन्याक (सं० पु०) धनिया।
धन्व (सं० पु०) धनुष, चाप, धनु।
धन्वङ्ग (सं० पु०) धामिन का वृक्ष।
धन्वदुर्ग (सं०पु०) जल-शून्य स्थान, मरु देश, मारवाड़।
धन्वन्तरि (सं० पु०) देवताओं के वैद्य, समुद्र-मथन के समय ये भी उत्पन्न हुए थे, समुद्र से निकल कर इन्होंने आगे विष्णु को देखा और उनसे प्रार्थना की कि यज्ञ में मुझे भाग और स्थान मिलना चाहिए, विष्णु ने कहा-यज्ञ-भाग और स्थान तो बँट चुका है, पर दूसरे जन्म में तुम्हारी बड़ी प्रसिद्धि होगी और अणिमादि सिद्धियां गर्भ से ही तुम्हें मिलेंगी, तुम सशरीर देवत्व पाओगे तुम आयुर्वेद को आठ भागों में विभक्त करोगे। यही दूसरे जन्म में काशी के राजा दिवोदास हुए थे, महाराज विक्रम की सभा के नवरत्नों में से एक का नाम।
धन्ववास (सं० पु०) जवासा। [आकाश।
धन्वा (सं० पु०) धनुष, चाप, मरुस्थल, निर्जल देश,
धन्वाकार (वि०) धनुष के आकार वाला।

धन्वी (सं० पु०) धनुर्द्धर, अर्जुन, विष्णु, शिव।
धप (सं० पु०) धौल, तमाचा, थप्पड़, चपत, (स्त्री०) किसी कोमल वस्तु के गिरने का शब्द।
धपना (क्रि० अ०) झपटना, दौड़ना, लपकना।
धपाना (क्रि०स०) दौड़ाना, घुमाना, फिराना, टहलाना।
धप्पा (सं० पु०) धारा, टोटा, थप्पड़, तमाचा, चपत।
धप्पाड़ (सं० स्त्री०) दौड़, धावन, सरपट।
धबधब (सं० स्त्री०) पैर रखने का शब्द, किसी भारी और वजनी वस्तु के गिरने का शब्द।
धब्बा (सं० पु०) दाग, खराब चिह्न या निशान।
धम (सं० स्त्री०) किसी वजनदार वस्तु के गिरने का शब्द, धमाका।
धमक (सं० स्त्री०) किसी वस्तु के आघात का शब्द, आघात आदि से उत्पन्न कंप, दहशत, दहल।
धमकना (क्रि० अ०) धम धम शब्द होना, बीच बीच में दर्द करना। [भय दिखाना।
धमका (सं० पु०) धमक, तिरस्कार।
धमकाना (क्रि० स०) डांटना, डपटना, घुड़कना, डराना,
धमकाहट (सं० स्त्री०) फटकार, घुड़की, तिरस्कार।
धमकी (सं० स्त्री०) भय, डांट डपट, घुड़की।
धमधम (सं० स्त्री०) धम धम शब्द, (पु०) पार्वती के क्रोध से उत्पन्न कार्तिकेय के गण।
धमधमाना (क्रि० अ०) धम धम शब्द करना, धम धम करके ढोल बजाना।
धमधूसर (वि०) तोंदैल, मोटा, स्थूल।
धमनी (सं० स्त्री०) शिरा, नाड़ी।
धमाका (सं० पु०) आघात, धक्का, किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द। [मारपीट।
धमाचौकड़ी (सं० स्त्री०) उछल कूद, गुल गपाड़ा,
धमाधम (सं० पु०) लगातार मारने का शब्द, या वजनदार वस्तु के गिरने का शब्द।
धमार (सं० पु०) होली में गाने का एक ताल।
धमोका (सं० पु०) एक तरह की खंजरी।
धम्मिल्ल (सं० पु०) लपेट कर बांधे हुए बाल, वेणी गूंध कर बांधे हुए बाल, जूड़ा।
धरंता (वि०) पकड़ने वाला, धरने वाला।
धर (वि०) धारण करने वाला, (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती (पु०) धड़।
धरक (सं० पु०) धड़क, भय, डर, खटका, घबराहट।
धरका (सं० पु०) गम्भीर शब्द, डर, खटका।
धरण (सं० पु०) धारण करने की क्रिया, २४ रत्ती का एक तौल, नाभी स्वर, सूर्य, संसार, स्तन, बांध, धान।
धरणी (सं० स्त्री०) पृथ्वी, नाड़ी, सेमर का पेड़।
धरणीतल (सं० पु०) अवनी तल, पाताल। [पहाड़।
धरणीधर (सं० पु०) शेषनाग, कच्छप, शिव, विष्णु,
धरणीसुता (सं० स्त्री०) सीता।
धरत (क्रि०) रखते ही, धरते ही।
धरना (सं० पु०) ऋणी, कर्ज़दार, देनदार।
धरती (सं० स्त्री०) पृथ्वी, संसार, जगत्।
धरधर (सं० स्त्री०) धड़ धड़ (पु०) शेषनाग, विष्णु, पर्वत। [करना।
धरधराना (क्रि० अ०) धड़धड़ाना, धड़ धड़ शब्द
धरन (सं० स्त्री०) कड़ी, धरनी, टेक, हठ, गर्भाशय, पृथ्वी। [ठहराना, स्थित करना, स्थापित करना।
धरना (क्रि० स०) पकड़ना, थामना, रखना, ग्रहण करना,
धरनैत (सं० पु०) धरना देने वाला, दुराग्रही, ज़िद्दी हठी। [धरने में प्रवृत्त करना।
धरवाना (क्रि० स०) रखवाना, थमवाना, पकड़वाना,
धरषना (क्रि०स०) डांटना, डपटना, मर्दन करना, दबाना।
धरहर (सं० स्त्री०) धर पकड़, बीच बिचाव, अवलम्ब, आश्रय, धैर्य, धीरज, बचाव, रक्षा।
धरहरा (सं० पु०) धौरहरा, मीनार।
धरहरिया (सं० पु०) दो मनुष्यों के झगड़े में बीच बिचाव करने वाला, बिचवनिया, रक्षक।
धरा (सं० स्त्री०) धरती, पृथ्वी, संसार, गर्भाशय, भेद, नाड़ी, चार सेर का परिमाण, वजन की बराबरी, बांट, बटखरा।
धराऊ (वि०) रखा हुआ, वह वस्तु जो साधारण से अच्छी हो और किसी विशेष अवसर पर उसका व्यवहार किया जाय। [रकबा।
धरातल (सं० पु०) धरती, पृथ्वी, मर्त्यलोक, सतह,
धराधर (सं० पु०) शेषनाग, कच्छप, विष्णु, पर्वत।
धराधीश (सं० पु०) राजा।
धराना (क्रि० स०) रखवाना, पकड़वाना, थमाना, ठहराना, नियत कराना, निश्चित कराना, स्थिर कराना।
धरित्री (सं० स्त्री०) पृथ्वी।

धरेला (सं० पु०) किसी स्त्री का वह पति जिसको बिना ब्याह के ही उसने ग्रहण कर लिया हो।
धरोहर (सं० स्त्री०) थाती, अमानत, बंधक, गिरवी।
धरौना (सं० पु०) पुनर्विवाह।
धरौली (सं०पु०) एक प्रकार का वृक्ष।
धर्ता (सं० पु०) धारण करने वाला।
धर्त्तव्य (वि०) ग्राह्य, ग्रहण करने योग्य।
धर्म (सं० पु०) स्वभाव, प्रकृति, नियम, नित्य, नीति, न्याय, व्यवस्था, मन की उदार वृत्तियां, पुण्य, सुकृत।
धर्मकर्म (सं० पु०) वह कर्म जिसका करना शास्त्रोक्त आवश्यक हो।
धर्मकाय (सं० पु०) बुद्ध।
धर्मकोष (सं०पु०) धर्म-संचय।
धर्मक्रिया (सं०स्त्री०) धर्म-कर्म।
धर्मक्षेत्र (सं० पु०) कुरुक्षेत्र।
धर्मग्रंथ (सं० पु०) जिसमें किसी समाज के उपासना आदि की विधि हो, धर्म-पुस्तक।
धर्मघट (सं० पु०) सुगंधित जल से भरा घड़ा जिसके वैशाख मास में दान देने का महात्म्य है।
धर्मघड़ी (सं० स्त्री०) ऐसे स्थान पर लगी हुई बड़ी घड़ी जिसको सब कोई देख सकें।
धर्मचक्र (सं० पु०) बुद्धदेव, बुद्ध की धार्मिक शिक्षा, एक प्रकार का अस्त्र।
धर्मचर्या (सं० स्त्री०) धर्माचरण।
धर्मचारी (वि०) धर्माचरण करने वाला।
धर्मचारिणी (सं० स्त्री०) सहधर्मिणी, स्त्री, भार्या।
धर्मचिन्तन (सं० पु०) धर्म-विषयक बातों का विचार।
धर्मजीवन (सं० पु०) वह ब्राह्मण जो धर्म कर्म बराबर जीवन निर्वाह करे।
धर्मज्ञ (वि०) धर्म को जानने वाला, धर्मिष्ट, धार्मिक।
धर्मत (वि०) धर्म से, सत्य सत्य।
धर्मद्रोही (वि०) पापिष्ठ, वेदनिन्दक।
धर्मधुरन्धर (सं० पु०) धर्मात्मा।
धर्मध्वजी (सं० पु०) पाखंडी, दाम्भिक, धूर्त्त।
धर्मनिष्ठ (वि०) धार्मिक, धर्म-परायण।
धर्मपत्नी (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका विवाह धर्म-शास्त्र के अनुसार हुआ हो, विवाहिता स्त्री।
धर्मपाल (सं० पु०) धर्म का पालन करने वाला, दण्ड।
धर्मपीठ (सं० पु०) धर्म-कर्म का मुख्य स्थान, काशी।
धर्मपुत्र (सं० पु०) युधिष्ठिर, नर नारायण, वह पुत्र जिसको वाक्-दान देकर पुत्र मान लिया गया हो।
धर्मबुद्धि (सं० स्त्री०) धर्माधर्म का विचार।
धर्मभिक्षुक (सं० पु०) वह भिक्षुक जिसने धर्म के लिए भिक्षावृत्ति का अवलम्बन किया हो।
धर्मभीरु (वि०) जिसको धर्म का भय हो।
धर्मयुद्ध (सं० पु०) वह युद्ध जिसमें किसी नियमादि का उल्लङ्घन न हो।
धर्मराज (सं० पु०) युधिष्ठिर, यमराज।
धर्मवीर (सं० पु०) धर्म कर्म में साहसी।
धर्मव्याध (सं० पु०) एक व्याध यह पूर्व जन्म में ब्राह्मण था, यह मिथिला का रहने वाला था, शापवश शूद्र हुआ, इसका धर्मज्ञान बहुत बढ़ा चढ़ा था, दूर दूर के लोग इससे धर्मज्ञान सीखने आते थे।
धर्मशाला (सं० स्त्री०) यात्रियों के ठहरने का स्थान, उपासना गृह।
धर्मशास्त्र (सं० पु०) वह शास्त्र जिसमें किसी समाज के आचार व्यवहार उपासना आदि का विधान हो।
धर्मशील (वि०) धार्मिक।
धर्मसभा (सं० स्त्री०) न्यायालय।
धर्मसूत्र (सं० पु०) जैमिनी प्रणीत एक ग्रंथ का नाम।
धर्मसेतु (सं० पु०) धर्म का पालन करने वाला।
धर्माचार्य (सं० पु०) धर्म का आचार्य।
धर्मात्मा (वि०) धार्मिक, धर्मनिष्ठ।
धर्माधिकरण (सं० पु०) विचारालय, न्यायालय।
धर्माधिकारी (सं० पु०) न्यायाधीश, विचारक।
धर्माध्यक्ष (सं० पु०) धर्माधिकारी, विष्णु, शिव।
धर्मारण्य (सं० पु०) तपोवन।
धर्मार्थ (वि०) धर्महेतु, धर्म के लिए। [धार्मिक हो।
धर्मावतार (सं० पु०) धर्म का अवतार, वह जो बहुत
धर्मासन (सं० पु०) वह स्थान या आसन जहाँ पर न्यायाधीश धर्म का विचार करता है।
धर्मिष्ठ (वि०) धार्मिक, सदाचारी।
धर्मी (वि०) धार्मिक, पुण्यात्मा, साधु।
धर्मोपदेश (सं० पु०) धर्मशिक्षा, धर्मशास्त्र।
धर्मोपदेशक (सं० पु०) वह जो धर्म का उपदेश दे।
धर्म्य (वि०) धर्मानुकूल, न्याय-संगत, उचित

धर्ष (सं० पु०) धृष्टता, प्रगल्भता, अविनय । [व्यभिचारी ।
धर्षक (सं० पु०) अविनयी, अहंकारी असहनशील,
धर्षण (सं० पु०) असहनशीलता, अपमान, आक्रमण, दबाव, रति, संभोग, एक अस्त्र का नाम ।
धर्षणा (सं० स्त्री०) अनादर, अपमान, स्त्री-प्रसंग, रति ।
धर्षित (वि०) परास्त, पराभूत, अनादृत, अपमानित ।
धव (सं० पु०) एक प्रकार का जङ्गली वृक्ष, पति, स्वामी, भर्त्ता ।
धवरहर (सं० पु०) धरहरा, मीनार, धौरहरा ।
धवल (सं० पु०) सफ़ेद, शुक्ल, स्वच्छ, निर्मल, उजला, सुन्दर, धव का पेड़ ।
धवलगिरि (सं० पु०) पर्वत विशेष ।
धवलता (सं० स्त्री०) सफ़ेद, शुक्लता, उजलापन ।
धवलपक्ष (सं० पु०) शुक्ल पक्ष, हंस ।
धवला (सं० स्त्री०) सफ़ेद गाय, (वि०) सफ़ेद ।
धवलागिरि (सं० पु०) हिमालय की एक चोटी ।
धवलित (वि०) सफ़ेद किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ । [का रोग ।
धवली (सं० स्त्री०) सफ़ेद गाय, सफ़ेद मिर्च, एक प्रकार
धवलीकृत (वि०) धवलित, जो सफ़ेद किया गया हो ।
धवा (सं०पु०) कहार जाति जिसका पेशा पानी भरना है ।
धवाना (क्रि० स०) दौड़ाना ।
धस (सं० पु०) डुबकी, गोता ।
धसक (सं० स्त्री०) ठसक, डाह, ईर्ष्या । [जाना ।
धसकना (क्रि० अ०) धँसना, पैठना, गड़ जाना, दब
धसन (सं० स्त्री०) दल दल, धसान । [होना ।
धसना (क्रि० अ०) गड़ना, पैठना, नष्ट होना, ध्वस्त
धसमसाना (क्रि० अ०) गड़ना, ज़मीन में धँसना, पृथ्वी में समाना ।
धसान (सं० पु०) फँसाव, दलदल ।
धसाना (क्रि० स०) गाड़ना, चुभोना, पैठाना ।
धसाव (सं० पु०) फँसाव, दलदल, फँसान ।
धाँक (सं० पु०) एक जंगली जाति जो बहुत कुछ भीलों से मिलती जुलती है ।
धांगड़ (सं० पु०) एक जाति जो कुआँ तालाब आदि खोदने का काम करती है, एक अनार्य जाति ।
धांगर (सं०पु०) देखो "धांगड़" । [खाना ।
धांधना (क्रि० स०) वेध करना, क़ैद करना, ठूस ठूस
धांधल (सं० स्त्री०) गुलगपाड़ा, ऊधम, उत्पात, धोखा, मक्कारी ।
धांधलाबाजी (सं० स्त्री०) अन्धाधुन्धी, अत्याचार ।
धांधली (वि०) उत्पाती, उपद्रवी, नटखट ।
धांयधांय (सं० स्त्री०) शब्द विशेष, धड़ाका ।
धांसना (क्रि० अ०) ढाँसना, पशुओं का खाँसना ।
धांसी (सं० स्त्री०) खाँसी, ढाँसी, खोंखी ।
धा (सं० पु०) ब्रह्मा, बृहस्पति (वि०) धारण करने वाला ।
धाई (सं० पु०) धाय, दूध पिलाने वाली ।
धाऊ (सं० पु०) हरकारा, संवाद-वाहक, वह आदमी जो आवश्यक कामों के लिये दौड़ाया जाय ।
धाक (सं० स्त्री०) रोब, डर, भय, आतङ्क, प्रसिद्धि, ख्याति, (पु०) बैल, भेंट, खाना, अन्न, आधार, अवलम्ब, खंभा ।
धाकर (सं० पु०) वर्णसङ्कर जाति, नीच जाति, दोगला ।
धाखा (सं० पु०) पलाश का पेड़ ।
धागा (सं० पु०) डोरा, सूत, तागा ।
धाड़ (सं०पु०) दहाड़, ढाड़, डाढ़, चौ ।
धाड़ना (क्रि० अ०) दहाड़ना, गरजना, डकारना ।
धाड़स (सं० स्त्री०) धैर्य, धीरज, सान्त्वना, आश्वासन, शान्ति ।
धाता (सं० पु०) ब्रह्मा, विष्णु, महेश, विधाता, सूर्य वायुओं में से एक वायु, ब्रह्मा के पुत्र का नाम, भृगु मुनि के पुत्र का नाम, (वि०) पालक, रक्षक ।
धातु (सं० पु०) पारदर्शक मूल द्रव्य जिसमें एक प्रकार की चमक हो, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, सीसा, रांगा, पारा और कांसा ये अष्टधातु हैं, एक खनिज पदार्थ, शरीर को धारण करने वाले द्रव्य ये सात हैं—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र । बुद्ध या किसी महात्मा की अस्थि जिसे बौद्ध लोग डिब्बे में बन्द करके स्थापित करते थे । शुक्र, वीर्य, शब्द का मूल, वह मूल जिससे क्रियायें बनती हैं, परमात्मा । [धातु का नाश होता है ।
धातुक्षय (सं० पु०) खाँसी, प्रमेह आदि रोग जिसमें
धातुपुष्ट (वि०) वीर्यवर्द्धक,जिससे धातु गाढ़ा होकर बढ़े ।
धातुमाक्षिक (सं० पु०) सोनामक्खी नामक उपधातु ।
धातुराग (सं० पु०) धातुओं से निकले हुए रंग गेरू आदि ।

धातुवर्द्धक (वि०) धातु को पुष्ट कर के बढ़ाने वाला ।

धातुवादी (सं० पु०) धातु-परीक्षक ।

धातुवेदी (सं०पु०) धातु द्रव्य-परीक्षक, धातु-विद्या-वेत्ता ।

धातुसाधित (वि०) जिसके बनाने में धातु का प्रयोग किया गया हो, औषधि विशेष ।

धात्वितर (वि०) बिना धातु का, धातु रहित ।

धात्री (सं० स्त्री०) माता, धाय, दाई, पृथ्वी, गंगा, आँवला, गाय, सेना, आर्या छन्द का एक भेद, गायत्री रूपी भगवती ।

धात्रीपत्र (सं० पु० तुलसी पत्र, आँवले की पत्ती ।

धात्रीपुत्र (सं० पु०) नट, दाई का पुत्र ।

धात्रीफल (सं० पु०) आँवला ।

धात्रीविद्या (सं० स्त्री०) वह विद्या जिसमें गर्भवती स्त्रियों के प्रसव और बच्चे के पालन पोषण की व्यवस्था हो ।

धाधना (क्रि० स०) देखना, ताकना । [चावल होता है ।

धान (सं० पु०) धान्य, शाली, व्रीही, वह अन्न जिसका

धानपान (सं० पु०) विवाह की एक रस्म जिसमें वर पक्ष से कन्या वालों के यहाँ धान और हरदी भेजी जाती है । (वि०) पतला, दुबला । [धनिया, सत्तू, धान ।

धाना (क्रि० अ०) दौड़ना, भागना, (सं० स्त्री०) बहुरी,

धानाचूर्ण (सं० पु०) सत्तू, सतुआ, शीतलबुकनी ।

धानी (सं० स्त्री०) स्थान, जगह, धनिया, धान की पत्ती का सा हलका हरा रंग ।

धानुक (सं० पु०) धनुर्धर, एक नीच जाति ।

धान्य (सं० पु०) अन्न, छिलकेदार चावल, चार तिल का एक परिमाण, धनिया ।

धान्यकोष्टक (सं० पु०) गोला, अनाज भरने का बड़ा बर्तन या घर, कोठिला । [जाती है ।

धान्यधेनु (सं० पु०) धान की बनी गाय जो दान की

धान्यपञ्चक (सं० पु०) पाँच प्रकार के धान, शालि, व्रीहि, शूक, शिबी और क्षुद्र ये पाँच प्रकार के धान हैं, पाचक औषधि विशेष ।

धान्यराज (सं० पु०) जव, जौ ।

धान्यवर्ग (सं० पु०) देखो "धान्यपञ्चक" ।

धाप (सं० पु०) उतनी दूरी जितनी तक साँस में दौड़ कर जा सके, लंबा चौड़ा मैदान, पानी की धार, तृप्ति, संतोष । [होना, अघाना ।

धापना (क्रि० अ०) तृप्त होना, जी भरना, सन्तुष्ट

धाभाई (सं० पु०) दूधभाई ।

धाम (सं० पु०) स्थान, आश्रम, घर, प्रभा, दीप्ति, आभा । [बाँस, धामिन सर्प ।

धामन (सं०पु०) एक प्रकार का पेड़, एक प्रकार का

धामनिधि (सं० पु०) सूर्य, रवि । [निमन्त्रण ।

धामा (सं० पु०) बेंत का बना टोकरा, भोजन के लिए

धामिन (सं० पु०) एक प्रकार का सर्प जो दौड़ने में बहुत तेज़ होता है, यह बहुत विषधर होता है और जहाँ पर यह पूँछ से मार देता है उस स्थान का माँस गल गल कर गिर जाता है ।

धायँ (सं० पु०) किसी वस्तु के गिरने या बंदूक आदि छूटने का शब्द । [पिलावे और खेलावे, दाई, धात्री ।

धाय (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो दूसरे के बच्चे को दूध

धार (सं० पु०) धारा, पानी का वेग से बहाव, तीर, तट, किनारा, ऋण, क़र्ज़, अस्त्रों का अग्र भाग जो तीक्ष्ण होता है ।

धारक (वि०) धारण करने वाला, ऋणी, क़र्ज़दार ।

धारण (सं० पु०) थामना, पकड़ना, ग्रहण, अवलम्बन, पहनना, परिधान, ऋण लेना, कश्यप के एक पुत्र का नाम ।

धारणा (सं० स्त्री०) धारण करने की क्रिया, बुद्धि, समझ, स्मृति, स्मरण, उत्साह, विश्वास, पक्का विचार, मर्य्यादा, मन या ध्यान में रखने की वृत्ति, मन की वह स्थिति जिसमें कोई और भाव या विचार नहीं रह जाता, केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है । [का एक भेद ।

धारणी (सं० स्त्री०) नाड़ी, श्रेणी, पृथ्वी, बौद्ध तन्त्र

धारना (क्रि० स०) रखना, स्मरण करना, उधार लेना, क़र्ज़ लेना ।

धारयिता (वि०) धारण करने वाला ।

धारस (सं० पु०) धैर्य, ढाढ़स, सांत्वना ।

धारा (सं० स्त्री०) प्रवाह, जल आदि का वेग से बहाव' सोता, स्रोत, व्यवहार, आचरण, रीति, रस्म, रेखा, कीर्ति, उन्नति, यश, रथ का पहिया, संतान, पहाड़ की चोटी, सेना या उसका अगला भाग ।

धाराधर (सं० पु०) मेघ, खड्ग, तलवार ।

धारायंत्र (सं० पु०) फुहारा, यंत्र विशेष जिससे पानी की धार छूटती है ।

धारावाही (सं० पु०) धारा के समान बहने या बढ़ने वाला।
धारासंपात (सं० पु०) मूसलाधार वर्षा, अधिक वृष्टि।
धारासार (सं० पु०) लगातार पानी बरसना।
धारि (सं० स्त्री०) समूह, झुण्ड, डाकुओं का दल।
धारित (वि०) धारण किया हुआ, पकड़ा हुआ।
धारिणी (सं० स्त्री०) पृथ्वी, सेमर का पेड़, चौदह देवताओं की स्त्रियाँ जिनके नाम शची, वनस्पति, गार्गी, धूम्रोर्णा, रुचिराकृत, सिनीवाला, कुहू, राका, अनुमति, आयाति, प्रज्ञा, सेला, बेला हैं।
धारी (सं० स्त्री०) रेखा, समूह, कर्ज़दार।
धारीदार (वि०) जिसमें लम्बी लकीरें हों।
धारोष्ण (सं० पु०) बिलकुल ताजा दूहा हुआ दूध जो कुछ गर्म रहता है। [प्रकार का साँप।
धार्तराष्ट्र (सं० पु०) धृतराष्ट्र के वंशज, काला हंस, एक
धार्मिक (वि०) धर्मात्मा, पुण्यात्मा, धर्म-संबन्धी।
धार्मिकता (सं० स्त्री०) धर्मभाव, धर्मशीलता।
धार्य (वि०) धारणीय, धारण करने के योग्य।
धार्ष्ट्य (सं० पु०) धृष्टता, ढिठाई। [वृक्ष।
धाव (सं० पु०) एक प्रकार का लंबा और बहुत सुन्दर
धावक (सं० पु०) हरकारा, धोबी, एक संस्कृत कवि का नाम।
धावन (सं० पु०) दूत, हरकारा, दौड़, गमन, गति।
धावना (क्रि० अ०) दौड़ना, भागना, शीघ्रता से चलना।
धावनि (सं० स्त्री०) दौड़, धावा, पिठवन, दूती, एक लता विशेष। [गामी, तेज़ दौड़ने वाला।
धावमान (वि०) दौड़ता हुआ, भागता हुआ, शीघ्र-
धावा (सं० पु०) छापा, आक्रमण, चढ़ाई।
धाह (सं० स्त्री०) चीख़, चिल्लाहट, धाड़। [धूर्त।
धिंगर (सं० पु०) संड मुसंड, हट्टाकट्टा, बदमाश, शठ,
धिंगा (सं० पु०) बदमाश, शठ, बेहया, निर्लज्ज।
धिंगाई (सं० स्त्री०) शठता, बदमाशी, ऊधम, उपद्रव।
धिंगाना (क्रि० अ०) उत्पात मचाना, उपद्रव करना।
धिआन (सं० पु०) ध्यान।
धिक् (अव्य०) घृणा, तिरस्कार-सूचक शब्द।
धिकना (क्रि० अ०) गरम होना, आग की गर्मी से लाल हो जाना।
धिकाना (क्रि० अ०) गरमाना, तप्त करना।
धिक्कार (सं० स्त्री०) तिरस्कार, फटकार। [करना।
धिक्कारना (क्रि० अ०) तिरस्कारना, फटकारना, निंदा
धिक्कारी (वि०) निन्दित, अपमानित, शापित।
धिक्कृत (वि०) तिरस्कृत, जो धिक्कारा जाय।
धिया (सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री, लड़की।
धिरयो (क्रि०) धमकाया, डाँटा, फटकारा।
धिरवना (क्रि० स०) धमकाना, डपटना, घुड़कना।
धिराना (क्रि० स०) धमकाना, त्रसित करना, डपटना, धमकी देना।
धिषण (सं० पु०) बृहस्पति, ब्रह्मा, विष्णु, गुरु, शिक्षक।
धिषणा (सं० स्त्री०) ज्ञान, बुद्धि, पृथ्वी, स्थान।
धींग (सं० पु०) हृष्टपुष्ट मनुष्य (वि०) मज़बूत, बलवान्, दुष्ट, दुराचारी, उपद्रवी, पापी, कुकर्मी।
धींगरा (सं० पु०) देखो "धिंगर"। [हाथाबाहीं।
धींगाधींगी (सं० स्त्री०) उपद्रव, उत्पात, शरारत,
धींगामुश्ती (सं० स्त्री०) धींगाधींगी। [कन्या।
धी (सं० स्त्री०) बुद्धि, समझ, ज्ञान, मन, कर्म, पुत्री,
धीआ (सं० स्त्री०) कन्या, बेटी। [स्वीकार करना।
धीजना (क्रि० स०) संतुष्ट होना, अङ्गीकार करना,
धीति (सं० स्त्री०) प्यास, तृष्णा, पान करने की क्रिया।
धीम (वि०) धीमा, सुस्त, शिथिल, धीर, आलसी।
धीमत (वि०) बुद्धिमान, बुद्धियुक्त।
धीमर (सं० पु०) धीवर, मल्लाह, केवट, काला मनुष्य।
धीमा (वि०) देखो "धीम"।
धीमाई (सं० स्त्री०) धीरता, धैर्य, शिथिलता।
धीमान् (वि०) चतुर, निपुण, बुद्धिमान्।
धीमापन (सं० पु०) देखो "धीमापन"।
धीमेधीमे (क्रि० वि०) शनैः शनैः।
धीय (सं० स्त्री०) धी, बुद्धि, बेटा, कन्या।
धीया (सं० स्त्री०) पुत्री, कन्या।
धीर (वि०) धैर्यवान्, बलवान्, शान्त, नम्र, विनीत।
धीरज (सं० पु०) धैर्य, शान्ति, स्थिरता। [नम्रता।
धीरता (सं० स्त्री०) धैर्य, शान्ति, धीरता, स्थिरता,
धीरत्व (सं० पु०) शान्त भाव। [और प्रसन्न चित्त रहे।
धीरललित (सं० पु०) वह नायक जो सदा सजा धजा
धीरशान्त (सं० पु०) वह नायक जो दयावान्, गुणवान्, पुण्यवान, और शीलवान् हो।
धीरस्कन्ध (सं० पु०) महर्षि, वीर, वृषभ, योद्धा।

धीरा (सं० स्त्री०) धैर्य, धीरज, वह नायिका जो व्यङ्ग से क्रोध प्रकट करे। (वि०) धीमा।

धीराधीरा (सं० स्त्री०) वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देख कर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से क्रोध प्रकट करे।

धीरिया (सं० स्त्री०) दुहिता, कन्या।

धीरी (सं० स्त्री०) आँख की पुतली।

धीरे (क्रि० वि०) मंद मंद, शनैः शनैः।

धीरोदात्त (सं० पु०) वीररस-प्रधान नाटक का मुख्य [नायक।

धीरोद्धत (सं० पु०) वह नायक जो साहसी, घोर, वीर और दूसरे का गर्व न सहने वाला हो।

धीवर (सं० पु०) कैवर्त, मल्लाह।

धीशक्ति (सं० स्त्री०) ज्ञान-शक्ति, बुद्धि की तीक्ष्णता।

धीसचिव (सं० पु०) मंत्री, बुद्धि-जीवी।

धुँआ (सं० पु०) धूम्र, धूआँ।

धुंगार (सं० स्त्री०) छौंक, बघार।

धुंगारना (क्रि० स०) छौंकना, बघारना, पोटना, मारना।

धुंध (सं० पु०) अंधेरा, मैलापन।

धुंधका (सं० पु०) घर दीवार आदि का वह छेद जो धुआँ निकलने के लिए होता है, धोंधका।

धुंधकार (सं० पु०) अंधकार, अंधेरा, हुंकार, गरज।

धुंधमार (सं० पु०) त्रिशंकु का पुत्र, कुवलयाश्व का एक नाम।

धुंधला (वि०) धुएँ के रंग के समान, धुमैला, अस्पष्ट।

धुंधलाई (सं० स्त्री०) अंधेरापन।

धुंधलाना (क्रि० अ०) धुंधला होना, धुमैला होना।

धुंधली (सं० स्त्री०) धुंध।

धुंधु (सं० पु०) एक राक्षस का नाम, यह मधु राक्षस का पुत्र था, सृष्टि के नाश के लिए रेतीली ज़मीन में यह तप करता था और जब उठ कर साँस लेता था तब पर्वत आदि काँप उठते थे, बृहदश्व के पुत्र कुवलयाश्व के द्वारा यह मारा गया।

धुंधेला (वि०) दगाबाज़, बदमाश, धूर्त्त, शठ।

धुआँ (सं० पु०) धूम, धूम्र।

धुआँकश (सं० पु०) स्टीमर, अग्निबोट।

धुआँदान (सं० पु०) धुआँ निकलने का रास्ता।

धुआँना (क्रि० स०) धूआँ निकलना, धूआँ लगने से कोई वस्तु बिगड़ जाना।

धुआँयंध (वि०) धूएँ के समान महकने वाला।

धुक (सं० पु०) वह सलाई जिस पर कलाबत्तू बटा जाता है।

धुकड़पुकड़ (सं० पु०) आगापीछा, घबड़ाहट, कँप- [कँपी।

धुकड़ी (सं० स्त्री०) बटुआ, बसनी, थैली।

धुकधुकी (सं० स्त्री०) हृदय, कलेजा, घबराहट, डर, भय, एक प्रकार का गहना, जुगनू।

धुकना (क्रि० अ०) नवना, निहुरना, झुकना, टूट पड़ना, झपटना, गिर पड़ना।

धुकनी (सं० स्त्री०) धूनी।

धुकाना (क्रि० स०) नवाना, निहुरना, पछाड़ना, [गिराना।

धुकारना (क्रि० अ०) देखो "धुकाना"।

धुजिनी (सं० स्त्री०) सेना, फ़ौज।

धुजा (सं० पु०) ध्वजा, पताका।

धुत (अव्य०) देखो "दुत"।

धुतकार (सं० पु०) दुतकार, फटकार, तिरस्कार।

धुधुकारी (सं० स्त्री०) ज़ोर का शब्द, घोर शब्द, गर्जन।

धुधुकी (सं० स्त्री०) धुधुकार। [कंपन।

धुन (सं० स्त्री०) इच्छा, लगन, लौ, चसका, (सं० पु०)

धुनकना (क्रि० स०) धुनना, रुई का रेशा अलग अलग करना। [धुनते हैं।

धुनकी (सं० स्त्री०) वह औज़ार जिससे धुनिए रूई

धुनना (क्रि० स०) धुनकना, अच्छी तरह मारना।

धुनवाना (क्रि० स०) धुनने का काम दूसरे से कराना।

धुनवी (सं० स्त्री०) धुनकी।

धुना (सं० पु०) धुनिया, बेहना। [बेहना।

धुनिया (सं० पु०) रूई धुनने का काम करने वाला,

धुनिहाव (सं० पु०) हड्डी का दर्द।

धुनीनाथ (सं० पु०) सागर, समुद्र।

धुनेहा (सं० पु०) धुनिया।

धुन्ना (क्रि० स०) धुनना, माथा पीटना।

धुन्धुमार (सं० पु०) देखो "धुंधमार"।

धुपना (क्रि० अ०) धोना, धुलना।

धुपाना (क्रि० स०) धूप देना, धूप जलाना।

धुबला (सं० पु०) लहँगा, घँघरा।

धुमला (वि०) अंधेरा, अंधा।

धुमलाई (सं० स्त्री०) अंधकार, अंधेरा।

धुमैला (वि०) धुंये के रंग का, अस्वच्छ।

धुर (सं० पु०) जुआ, जो बैलों के कंधे पर रक्खा जाता है, गाड़ी आदि का जुआ, धुरा, अक्ष, खूंटी, भार, बोझ, छोर, किनारा, आरंभ, अन्त।

धुरकट (सं० पु०) वह कर या लगान जो असामी ज्येष्ठ में अगाऊ देता है। [प्रचण्ड।

धुरन्धर (वि०) बोझा ढोने वाला, अक्खड़, प्रबल, मस्त,

धुरपद (सं० पु०) एक प्रकार का राग, ध्रुपद।

धुरवा (सं० पु०) मेघ, बादल।

धुरसा (सं० पु०) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा जो जाड़े के दिनों में ओढ़ने के काम आता है, लोई।

धुरसाँझ (सं० स्त्री०) ठीक सन्ध्या समय।

धुरा (सं० पु०) गाड़ी आदि का वह डंडा जिसमें पहिया रहता है और घूमता है, धुरी, कील, भार, बोझ।

धुराधुर (वि०) सीधे, बराबर।

धुरियाना (क्रि० स०) किसी वस्तु को धूल में लपेटना, किसी वस्तु को धूल में गाड़ना, मटियाना।

धुरी (सं० स्त्री०) गाड़ी की कील जिस पर पहिया घूमता है। [धुरंधर।

धुरीण (वि०) बोझ सहने वाला, श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया,

धुरेंडी (सं० स्त्री०) होली का त्योहार, होली जलने का दूसरा दिन जिस रोज लोग अबीर बुक्का उड़ाते हैं।

धुरेटना (क्रि० अ०) धूल में लपेटना, मटियाना।

धुर्य (सं० पु०) ऋषभ नाम की औषधि, वृषभ, बैल, विष्णु, (वि०) अगुआ, धुरंधर, भार-वाहक, बोझ ढोने वाला। [मुआ।

धुर्रा (सं० पु०) किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा, कण,

धुलना (क्रि० अ०) पानी से साफ़ होना, धोया जाना।

धुलवाना (क्रि० स०) धुलाना, साफ़ कराना।

धुलाई (सं० स्त्री०) कपड़ा धोने का काम या मजदूरी।

धुलाना (क्रि० स०) धुलने का काम कराना, साफ़ कराना। [अबीर बुक्का आदि उड़ाते हैं।

धुलेंडी (सं० पु०) होली का दूसरा दिन, इस दिन लोग

धुस्स (सं० पु०) टीला, डीह। [में आता है, लोई।

धुस्सा (सं० पु०) मोटा ऊनी वस्त्र जो ओढ़ने के काम

धूआँ (सं० पु०) धूम, धुआँ।

धूआँधार (सं० पु०) बेशुमार, भरमार।

धूँधरा (सं० पु०) अंधकार, अंधेरा।

धूत (वि०) कँपता हुआ, थर्राता हुआ, त्यक्त, तर्कित, छली, कपटी, धूर्त्त। [गया हो।

धूतपाप (वि०) पापमुक्त, जो पाप या दोष से रहित हो

धूति (सं० स्त्री०) धूर्त्तता, ठगपन, शठता।

धूधू (सं० पु०) आग के दहकने का शब्द।

धूनना (क्रि० स०) धूनी देना, जलाना, सुलगाना।

धूना (सं० पु०) एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य।

धूनी (सं० स्त्री०) धूप, साधुओं के आग तापने का कुण्ड, कुछ औषधियों के संयोग से बना धूप।

मुहा०—धूनी रमाना = तपस्या करना। धूनी लगना = आग जलना। धूनी लेना = आग तपाना।

धूप (सं० स्त्री०) घाम, आतप, सूर्यताप, सुगंधित काष्ठ विशेष, सुगंधित द्रव्य। [को नैवेद्य अर्पण करना।

धूपकाल (सं० पु०) ग्रीष्म काल, गर्मी का समय, भगवान्

धूपघड़ी (सं० स्त्री०) एक यन्त्र जिससे धूप की सहायता से समय का ज्ञान होता है।

धूपछांह (सं० स्त्री०) एक प्रकार का वस्त्र।

धूपदान (सं० पु०) धूप रखने का बर्तन।

धूपदानी (सं० स्त्री०) धूप रखने का छोटा बर्तन।

धूपन (सं० पु०) धूप देने का काम।

धूपना (क्रि० अ०) सुगंधित द्रव्य जलाना, धूप देना।

धूपबत्ती (सं० स्त्री०) सुगंधित द्रव्य लगी हुई सींक जो पूजनादि में जलायी जाती है।

धूपित (वि०) धूप दिया हुआ, संतप्त, श्रान्त।

धूम (सं० पु०) धुआँ, अग्नि का वह भाग जिसमें आँच या लौ न हो।

धूमकेतन (सं० पु०) अग्नि, केतुग्रह।

धूमकेतु (सं० पु०) अग्नि, केतुग्रह, पुच्छलतारा।

धूमधड़क्का (सं० पु०) चहल पहल, भीड़भाड़, समारोह।

धूमधाम (सं० स्त्री०) चहल पहल, हलचल, भीड़भाड़।

धूमध्वज (सं० पु०) अग्नि, आग।

धूमपान (सं० पु०) रोगियों को विशेष प्रकार के धूएँ का सेवन, तम्बाकू आदि पीना। [है।

धूमप्रभा (सं० स्त्री०) नरक जो सदा धुएँ से भरा रहता

धूमयंत्र (सं० पु०) इञ्जिन, जो वाष्प से चले।

धूमरा (वि०) मटमैला, धुयें के रंग का।

धूमवाहिनी (सं० स्त्री०) रेलगाड़ी, रौला, हलचल।

धूमा (वि०) धूमला, मटमैला।

धूमावती (सं० स्त्री०) दस महा विद्याओं में से एक देवी,

इनके उत्पत्ति की कथा इस प्रकार है—एक बार पार्वती को बड़ी भूख लगी, शिव से खाने को माँगा पर वह न दे सके, तब पार्वती जी ने शिव को ही खा लिया, उनके अंग से धुआँ निकलने लगा, शिव ने प्रकट होकर कहा-तुमने मुझे खा लिया, अब तुम विधवा हो गयी,अब तुम्हारी इसी रूप में पूजा होगी।
धूमित (वि०) धुआँइल, जिसमें धुआँ लगा हो।
धूमिल (वि०) धुंधला, धूएँ के रंग का।
धूमी (वि०) उपद्रवी, उत्पाती।
धूम्र (वि) बैंगनी, कृष्ण लोहित वर्ण, काला लाल मिला रंग (सं० पु०) एक गंध द्रव्य, शिव, महादेव, राम की सेना का एक भालू।
धूम्रकेतु (सं० पु०) राजा भरत के एक पुत्र का नाम।
धूम्रकेश (सं० पु०) एक राक्षस का नाम, जो शुंभ का सेनापति था, कबूतर।
धूम्रपान (सं० पु०) तम्बाकू आदि पीना।
धूम्रलोचन (सं० पु०) एक राक्षस का नाम।
धूम्रवर्ण (सं० पु०) धुएँ का रङ्ग, ललाई लिये काला रंग (वि०) धुएँ के रंग का।
धूम्राक्ष (सं० पु०) एक राक्षस का नाम, (वि०) जिसकी आँखें धूमले रंग की हों।
धूर (सं० स्त्री०) धूल।
धूरकाट (सं०पु०) वह लगान या कर जो असामी ज़मींदार को जेठ या अषाढ़ में पेशगी देता है।
धूरधान (सं० पु०) धूल का ढेर।
धूरा (सं० पु०) गर्द, धूल, चूर्ण बुकनी।
धूराधानी (सं० स्त्री०) नष्ट, ध्वस्त, धूल का ढेर।
धूरि (सं० स्त्री०) धूल।
धूरी (सं० स्त्री०) धूल।
धूर्जटि (सं० पु०) शिव।
धूर्त्त (वि०) छली, कपटी, वंचक, मायावी।
धूर्त्तचरित्र (सं० पु०) नाटक का एक भेद।
धूर्त्तता (सं० स्त्री०) दुष्टता, प्रपञ्चता, वञ्चकता, माया, चालबाज़ी, छल। [चूर्ण।
धूल (सं० स्त्री०) रेणु, रज, गर्द, मिट्टी आदि का महीन
धूलधानी (सं० स्त्री०) नष्ट, ध्वस्त, विनाश।
धूलि (सं० स्त्री०) धूल, गर्द।
धूसना (क्रि० स०) ठूंसना, मीजना, मलना, कोसना, अनादर करना, तिरस्कृत करना। [हुआ।
धूसर (वि०) मटमैला, धूल के रंग का, धूल लगा
धूसरा (वि०) देखो "धूसर"।
धूसरित (वि०) धूल लगा हुआ, धूल में लपटा हुआ।
धूहा (सं० पु०) खेत से चिड़ियों को भगाने के लिए कपड़े आदि का पुतला या काली हाँड़ी आदि जो खेत में खड़ी की जाती है, धोखा, ढूह।
धृक् (अव्य०) धिक्।
धृत (वि०) धारण किया हुआ, पकड़ा हुआ गृहीत, ग्रहण किया हुआ, (सं० पु०) तेरहवें मनु रौच्य के पुत्र का नाम।
धृतकार्मुकेषु (वि०) धनुर्बाण-धारी, वीर, योद्धा।
धृतपट (वि०) कपड़ा पहना हुआ, गृहीत वस्त्र।
धृतराष्ट्र (सं० पु०) दुर्योधन का पिता, विचित्रवीर्य का क्षेत्रज पुत्र,विचित्रवीर्य का व्याह काशीराज की कन्या अम्बिका और अम्बालिका से हुआ था, विचित्रवीर्य निःसन्तान मर गये। उनके मरने पर वेदव्यास के साथ नियोग करने पर धृतराष्ट्र अम्बिका के गर्भ से और पाण्डु अंबालिका के गर्भ से उत्पन्न हुए, धृतराष्ट्र जन्म से ही अंधे थे, पाण्डु को राजगद्दी मिली, पाण्डु के मरने पर धृतराष्ट्र राजा हुए, गान्धार के राजा सुबल की कन्या गांधारी से इनका व्याह हुआ था, जिसके गर्भ से सौ पुत्र उत्पन्न हुए थे, ये सौ पुत्र महाभारत के युद्ध में मारे गये, धृतराष्ट्र पुत्रों के मरने पर वन में चले गये और वन में आग लगने से जल मरे। एक नाग का नाम जो कद्रू का पुत्र था, एक प्रकार का हंस।
धृतव्रत (सं०पु०) व्रत धारण किये हुआ व्यक्ति, जयद्रथ के पौत्र का नाम।
धृतात्मा (वि०) धीर, (सं० पु०) विष्णु, धीर पुरुष।
धृति (सं०स्त्री०) धैर्य, धीरता, दृढ़ता।
धृतिमान् (वि०) धीर, गम्भीर।
धृष्ट (वि०) निर्लज्ज, बेहया, प्रगल्भ, उद्धत, ढीठ।
धृष्टकेतु (सं० पु०) शिशुपाल का पुत्र जो पाण्डवों की ओर से लड़ा था, यह महाभारतीय युद्ध में द्रोणाचार्य के द्वारा मारा गया था, जनकवंशीय सुधृति का पुत्र, नवें मनु का पुत्र।
धृष्टता (सं० स्त्री०) निर्लज्जता, बेहयापन, ढिठाई।

धृष्टद्युम्न (सं० पु०) पञ्चाल देश के राजा द्रुपद का पुत्र, महाभारत के युद्ध में इसने द्रोणाचार्य का सिर काटा था और अश्वत्थामा ने छिप कर पाण्डवों के शिविर में इसका सिर काट लिया था।

धृष्णु (वि०) उद्धत, धृष्ट, निर्लज्ज, ढीठ, प्रगल्भ।

धेई (क्रि वि०) ध्यान करके।

धेनु (सं० स्त्री०) दुधार गाय, सवत्सा गौ, वह गाय जिसे बच्चा जने बहुत दिन न हुए हों।

धेनुक (सं० पु०) एक राक्षस जिसका बध बलदेव जी के द्वारा हुआ था। [चौपायों को लगते हैं।

धेनुमक्षिका (सं० स्त्री०) डंक, डांस, बड़े मच्छड़ जो

धेनुमती (सं० स्त्री०) गोमती नदी। [योग्य।

धेय (वि०) धारण के योग्य, पोष्य, पोसने योग्य, पीने

धेर (सं० पु०) एक अनार्य जाति। [सिक्का।

धेलचा (सं० पु०) अधेला, आधे पैसे के बराबर का

धेला (सं० पु०) आधा पैसा, अधेला।

धेली (सं० स्त्री०) रुपये का आधा, अठन्नी।

धैना (सं० स्त्री०) स्वभाव, आदत, काम-धंधा।

धैर्य्य (सं० पु०) धीरता, धीरज, स्थिरता, सहिष्णुता।

धैर्यच्युत (वि०) चञ्चल, अधीर।

धैर्यशाली (वि०) शान्त, धीर।

धैवत (सं० पु०) सात स्वरों में से छठाँ स्वर जो मध्यम के आगे खींचा जाता है। [होकर धुआँ निकलता है।

धोंधका (सं० पु०) घर या दीवार का वह छेद जिसमें

धोंधा (सं० पु०) लोंदा, पिण्ड।

धो (क्रि०) धो डालना, साफ़ करना।

धोआ (सं० पु०) उपहार फल की भेंट। [दाल।

धोई (सं० स्त्री०) बिना छिलके की मूंग या उरद की

धोक (सं० पु०) देवता या गुरु को प्रणाम करना।

धोकड़ (वि०) संडमुसंड, हट्टाकट्टा, हृष्टपुष्ट।

धोखा (सं० पु०) मिथ्या व्यवहार, छल कपट, भुलावा।

धोखेबाज (वि०) छली, कपटी, धूर्त्त।

धोखेबाज़ी (सं० स्त्री०) धूर्त्तता, छल-कपट, वञ्चकता।

धोतर (सं० पु०) एक प्रकार का गाढ़े के समान मोटा कपड़ा।

धोता (वि०) छली, कपटी।

धोती (सं० स्त्री०) लम्बा वस्त्र जो कमर से घुटनों तक पहना जाता है, कटिवस्त्र, पहनने का वस्त्र।

धोना (क्रि० स०) जल डाल कर साफ़ करना, पखारना, पछारना।

धोप (सं० पु०) खड्ग, तलवार, असि।

धोब (सं० पु०) धोने का काम, धुलावट।

धोबन (सं०स्त्री०) धोबिन, धोबी की स्त्री। [स्त्री, रजकी।

धोबिन (सं० स्त्री०) कपड़ा धोने वाली स्त्री, धोबी की

धोबी (सं० पु०) कपड़ा धोने वाला, रजक।

धोबीघास (सं० स्त्री०) बड़ी दूब।

धोबी पछाड़ (सं० पु०) कुश्ती लड़ने का एक पेंच।

धोर (सं०स्त्री०) सामीप्य, सन्निकटता, बाढ़, धार, किनारा।

धोरण (सं० पु०) सवारी, दौड़, सरपट।

धोरणि (सं० स्त्री०) परंपरा, श्रेणी।

धोरी (सं० स्त्री०) भार उठाने वाला, बोझ उठाने वाला।

धोरे (वि०) पास निकट, नज़दीक।

धोवती (सं० स्त्री०) धोती।

धोवन (सं० पु०) धोने की क्रिया।

धोवाना (क्रि० स०) धुलाना।

धोसा (सं० पु०) गुड़ आदि की पिण्डी, भेली। [सेर।

धौं (अव्य०) या, अथवा, (सं० पु०) आधा मन, बीस

धौंक (सं० पु०) ताप, लपट, लू, काश, श्वाँस।

धौंकना (क्रि० स०) आग लहकाने के लिए हवा करना, फूंकना, भाथी चलाना।

धौंकनी (सं० स्त्री०) भाथी, बाँस या धातु की एक नली जिससे लोहार सोनार आदि आग फूँकते हैं।

धौंका (सं० स्त्री०) लू, भाथी।

धौंज (सं० स्त्री०) दौड़-धूप, व्याकुलता, उद्विग्नता।

धौंस (सं० पु०) घुड़की, धमकी, डांट, डपट।

धौंसना (क्रि० स०) डांटना, डपटना, दमन करना, दबाना, डराना।

धौंसपट्टी (सं० स्त्री०) झांसापट्टी, भुलावा।

धौंसा (सं० पु०) डंका, नगारा। [बजाने वाला।

धौंसिया (सं० पु०) धोखेबाज़, छली, कपटी, नगाड़ा

धौ (सं० पु०) एक प्रकार का पेड़, धव का पेड़।

धौत (वि०) साफ़, स्वच्छ, स्नान, धोया हुआ

धौम्य (सं० पु०) एक ऋषि, ये देवल के भाई थे और पाण्डवों के पुरोहित, चित्ररथ की सलाह से पाण्डवों ने इनको अपना पुरोहित बनाया था।

धौयम (सं० पु०) देश विशेष।

धौर (सं० पु०) कबूतर, सफ़ेद परेवा ।
धौरहरा (सं० पु०) बुर्ज, मीनार, धवरहरा ।
धौरा (वि०) सफेद, श्वेत, शुक्ल । [कपिला ।
धौरी (सं० स्त्री०) वह गाय जो सफ़ेद रंग की हो,
धौर्त्य (सं० पु०) धूर्त्तता ।
धौल (सं० स्त्री०) चपत, थप्पड़ ।
धौल धक्कड़ (सं० पु०) दंगा फ़साद, मारपीट, उपद्रव ।
धौल धप्पड़ (सं० पु०) मारपीट, दंगा फ़साद, उपद्रव ।
धौलधप्पा (सं० पु०) "धौल धप्पड़" । [धव का पेड़ ।
धौला (वि०) सफ़ेद, श्वेत, शुक्ल, (सं० पु०) सफ़ेद बैल,
धौलागिरि (सं० पु०) हिमालय पर्वत ।
धौलाना (क्रि०) चपत जमाना ।
धौलियाना (क्रि०) देखो "धौलाना" ।
धौली (सं० स्त्री०) एक प्रकार का पेड़ । [चिंतित ।
ध्यात (वि०) चिन्तन किया हुआ, ध्यान किया हुआ,
ध्यातव्य (वि०) ध्यान देने योग्य, अत्यंत उपयोगी ।
ध्याता (वि०) विचारक, विचार करने वाला, ध्यान करने वाला, ध्यानकर्ता । [चिन्तन, मनन, भावना ।
ध्यान (सं० पु०)हृदय में लाने की क्रिया, सोच, विचार,
ध्यान-योग (सं०पु०) समाधि योग, वह योग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो ।
ध्यानसिंह (सं० पु०) पंजाब-केसरी रणजीतसिंह के प्रधान मंत्री, इनके तीन भाई थे और इनको राजा की उपाधि मिली थी । सिन्ध वालों के साथ इनसे लड़ाई हुई, उसी लड़ाई में ध्यानसिंह और शेरसिंह भेजे गये । शेरसिंह रणजीतसिंह की उप-पत्नी के गर्भ से पैदा हुये थे ।
ध्याना (क्रि० स०) ध्यान करना,सुमिरना, स्मरण करना ।
ध्यानी (वि०) ध्यान करने वाला, समाधिस्थ, ध्यानयुक्त ।
ध्यानीय (वि०) ध्यान देने योग्य ।
ध्यावना (क्रि० स०) ध्यान करना, ध्याना ।
ध्येय (वि०) ध्यान करने योग्य ।

ध्रुपद (सं० पु०) एक प्रकार का राग ।
ध्रुव (वि०) अचल, स्थिर, दृढ़, निश्चल, निश्चित, नित्य, (सं० पु०) विष्णु, हर, फलित ज्योतिष का एक शुभ योग, एक तारा का नाम, भगवान् के एक भक्त का नाम, यह उत्तानपाद के पुत्र थे, इनकी माता का नाम सुनीति था, विमाता के अपमान से तप करने चले गये, भगवान् के प्रसाद से राज्य पाकर सुख भोगने लगे, ध्रुव के सौतेले भाई को एक यक्ष ने मार डाला था उसके साथ बहुत दिन तक युद्ध करते रहे, पर पितामह मनु के कहने से इन्होंने युद्ध बन्द किया और अन्त में ध्रुवलोक में चले गये ।
ध्रुवतारा (सं० पु०) तारा विशेष जो आकाश में सदा उत्तर दिखाई पड़ता है, यह सदा स्थिर रहता है ।
ध्रुवलोक (सं० पु०) मर्त्यलोक के अन्तर्गत एक लोक जहाँ ध्रुव रहते हैं । [ध्रुपद गीत, सती साध्वी स्त्री ।
ध्रुवा (सं० स्त्री०) एक यज्ञ-पात्र, सरिवन, शालपर्णी,
ध्वंस (सं० पु०) नाश, क्षय, क्षति, हानि, विनाश ।
ध्वंसन (सं० पु०) क्षय, नाश ।
ध्वंसित (वि०) विनष्ट, नष्ट किया हुआ ।
ध्वंसी (वि०) नाशक, नष्ट करने वाला ।
ध्वजा (सं० पु०) झंडा, पताका, निशान ।
ध्वजिनी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की सीमा, सीमा पर लगाया हुआ वृक्षादि का निशान, सेना विशेष ।
ध्वजी (वि०) ध्वजा धारण करने वाला, पताकाधारी, (सं० पु०) ब्राह्मण, सर्प, मयूर, घोड़ा, रण, समर ।
ध्वनि (सं० स्त्री०) शब्द, नाद ।
ध्वनित (वि०) शब्दित, वादित ।
ध्वनितध्वस्त (वि०) नष्टभ्रष्ट, टूटा फूटा, च्युत, गलित ।
ध्वांक्ष (सं०पु०) काक,कौआ,तक्षक,भिक्षुक । [का नाम ।
ध्वान्त (सं०पु०) अंधकार,तम,एक नरक विशेष, एक मरुत
ध्वान्तचर (सं० पु०) राक्षस ।
ध्वान्तशत्रु (सं० पु०) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, शुक्लवर्ण ।

न

न—तवर्ग का पाँचवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है, इसके उच्चारण के लिए जीभ को दाँत से लगाना पड़ता है । निषेधार्थक, नहीं, व्रजभाषा के बहुवचन का चिह्न, प्रश्नार्थक, जब यह प्रश्नार्थक होता है तो वाक्य के अन्त में आता है, सोना, बुद्ध का एक नाम ।

नंग (सं० पु०) नंगापन, शरीर पर वस्त्र का न होना, ओछापन।

नंगटा (वि०) नंगा, नंगी।

नंगधड़ंग (वि०) बिलकुल नंगा, शरीर पर एक वस्त्र का भी न होना, नीचे से ऊपर तक नंगा होना, विवस्त्र, दिगम्बर।

नंगर (सं० पु०) लंगर, नाव का लंगर, जो नाव को ठहराने के लिए पानी में छोड़ा जाता है।

नंगा (वि०) वस्त्रहीन, दिगम्बर, जिसके कोई कपड़ा न हो, बेहया, बेशर्म, बदमाश, लुच्चा, संन्यासियों का एक भेद, दिगम्बर संन्यासी।

नंगाझोरी (सं० स्त्री०) शरीर की तलाशी, किसी पर किसी वस्तु के चुराने के सन्देह होने पर उसके शरीर पर के कपड़ों का झाड़ा लेना।

नंगाझोली (सं० स्त्री०) देखो "नंगाझोरी"। [निर्धन।

नंगालुच्चा (वि०) बदमाश, लुच्चा, बेथाप का मनुष्य, दरिद्र,

नंगा मादरज़ाद (क्रि० स०) बिलकुल नंगा, माता के गर्भ से निकलने के समय के समान नंगा।

नंगियाना (क्रि० स०) नंगा करना, सब छीन लेना, कपड़ा तक छीन लेना।

नंदना (क्रि० अ०) आनन्दित होना, प्रसन्न होना।

नंदरानी (सं० स्त्री०) यशोदा, नंद की रानी, श्रीकृष्ण की पालिका माता।

नंदोई (सं० पु०) ननद का पति, पति का बहनोई, पति की बहिन का पति नंदोई कहा जाता है।

नंबर (अं० सं० पु०) संख्या, चिह्न, संख्या करने का चिह्न, अंक। [ज़मींदार।

नंबरदार (सं० पु०) एक प्रकार का ज़मींदार, सहायक

नंबरवार (क्रि० वि०) क्रमशः, लगातार, एक के बाद एक।

नंबरी (वि०) नंबर वाला, जिस पर नंबर लगा हो। प्रसिद्ध, मशहूर।

नंबूरी (सं० पु०) ब्राह्मणों की एक जाति, इस जाति के लोग मद्रास मालाबार प्रान्त में रहते हैं। आदि शङ्कराचार्य जी इसी नंबूरी जाति में उत्पन्न हुए थे बद्रीनाथ के पास वाले देवस्थान की पूजा आदि का अधिकार इन्हीं नंबूरी ब्राह्मणों को है, यह व्यवस्था शङ्कराचार्य के समय से ही चली आती है, ये लोग रावल कहे जाते हैं।

नइहर (सं० पु०) पिता का घर, नैहर, मयका।

नउ (वि०) नव, नवीन, नूतन।

नउआ (सं० पु०) नाऊ, नापित, क्षौर करने वाला।

नउन (वि०) नत, नीचे की ओर झुका हुआ।

नक (सं० पु०) रात्रि, निशा, रजनी।

नकघिसनी (सं० स्त्री०) नाक रगड़ना, अधिक ख़ुशामद, नाक रगड़ कर ख़ुशामद करना, अधिक ख़ुशामद करने के अर्थ में इसका प्रयोग होता है।

नकचढ़ा (वि०) चिड़चिड़ा, क्रोधी।

नकछिकनी (सं० स्त्री०) एक पौधा, जिसका रस नाक में लगाने से खूब छींक आती है। छींकने की एक औषधि।

नकटा (वि०) नककटा, जिसकी नाक कटी हो, अप्रतिष्ठित, प्रतिष्ठा-हीन, बेशर्म, प्रतिष्ठा नष्ट होने पर भी जो समाज में रहे।

नकटापंथ (सं० पु०) इस शब्द का प्रयोग ऐसे स्थान में होता है, जहाँ अधिक बुराई होने के कारण भलाई की पूछ न हो।

नकड़ा (सं० पु०) नाक का एक रोग, मनुष्य और पशुओं को भी यह रोग होता है, इस रोग में नाक में फोड़ा निकलता है, बड़ा कष्ट होता है सिर में पीड़ा होती है, नाक से पानी निकलता है, थोड़ा ज्वर भी आ जाता है।

नकतोड़ा (सं० पु०) अभिमान दिखाने की एक मुद्रा, नाक चढ़ाना, नाक चढ़ा कर अभिमान बतलाना।

नक़द (अ० सं० पु०) कलदार रुपया, केवल सिक्का, नगद, रोकड़। [धन।

नक़दी (सं० स्त्री०) नक़द, नगद, रोकड़, सिक्के के रूप में

नकना (क्रि० स०) नकियाना, नाकों दम आना, तंग आना, व्याकुल होना, डाकना, पार जाना, उल्लङ्घन करना। [की कील या लौंग।

नकफूल (सं० पु०) नाक का एक गहना, नाक में पहनने

नक़ब (अ० सं० स्त्री०) सेंध, चोरी करने के लिए मकान में घुसने का चोरों द्वारा बनाया हुआ मार्ग। [गहना।

नकबेसर (सं० स्त्री०) छोटा नथ, नाक में पहनने का एक

नक़ल (अ० सं० स्त्री०) प्रतिरूप, प्रतिबिम्ब, अनुकरण, अनुकृति, असली पदार्थ का दूसरा रूप, प्रतिलिपि, लिखी बात को अक्षरशः दूसरी जगह लिखना।

नकली (अ० वि०) बनावटी, कृत्रिम, असली नहीं।
नकाना (क्रि० अ०) नकना, नकियाना, नाकों दाम होना तंग होना, व्याकुल होना।
नकाब (अ० सं० स्त्री०) मुँह का परदा, यह जालीदार महीन कपड़े का होता है।
नकार (सं० पु०) 'न' अक्षर, नहीं, निषेधार्थक।
नकारना (क्रि० अ०) अस्वीकार करना, न मानना, स्वीकार न करना।
नकारा (सं० पु०) नक्कारा। [बेल बूटे निकालना।
नकाशना (क्रि० स०) नक़्शा बनाना, किसी पदार्थ पर
नकाशीदार (वि०) बेल बूटे वाला, चित्रित।
नकियाना (क्रि० अ०) नाक से बोलना, अनुस्वार युक्त बोलना, नाकों दम होना, दुःख उठाना, असफल होना, असफलता से दुखी होना।
नकीब (सं० पु०) बन्दी, भाट, चारण, राजाओं का गुण गान करने वाला, धर्माचार्यों का गुण गान करने वाला।
नकुआ (सं० पु०) नोक।
नकुरा (सं० पु०) नाक, लम्बी नाक।
नकुल (सं० पु०) नेवला, नेउर, पाँचों पाण्डवों में का पाण्डव, पाण्डु की छोटी स्त्री के गर्भ से ये उत्पन्न हुए थे। चेदिराज की कन्या करेणुमती से इनका व्याह हुआ था। पाण्डवों के अज्ञातवास के समय इन्होंने अपना नाम तन्त्रिपाल रक्खा था। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय इन्होंने कई प्रदेशों को जीता था और द्वारका के वासुदेव ने इन्हीं के उद्योग से युधिष्ठिर की आधीनता स्वीकार की थी। [रस्सी।
नकेल (सं० स्त्री०) ऊँट की नाक में पहनायी जाने वाली
मुहा०—नकेल घुमाना = बाग मोड़ना, इच्छानुसार काम कराना, विवश करके जैसा कराना चाहे वैसा कराना।
नक्का (सं० पु०) सुई का छेद जिसमें डोरा लगाया जाता है, ताश का एक्का। [नकारा बजने का स्थान।
नक्क़ारखाना (फ़ा० सं० पु०) नौबत बजने का स्थान,
मुहा०—नक्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है = बड़ों के सामने छोटों को कौन पूछता है, जहाँ बड़े बड़े हैं वहाँ छोटों की क्या गिनती।
नक्कारा (सं० पु०) एक बाजा, तबले के समान बहुत बड़ा बाजा, नकारा, नगारा।
नक्क़ाल (वि०) नक़ल करने वाला, मसख़रा, विदूषक।
नक्क़ाली (सं० स्त्री०) भँड़ई, नक़ल करना, नक़ल करने का धन्धा। [का पेशादार।
नक्क़ाश (सं० पु०) नकाशी का काम करने वाला, नकाशी
नक्क़ाशी (सं० स्त्री०) बेल बूटा निकालना, बर्तनों तथा गहनों पर बेल बूटा निकालने का काम।
नक्क़ादार (सं० पु०) वह बर्तन या गहना जिस पर बेल बूटे बने हों।
नक्की (सं० स्त्री०) ताश का एक खेल, (वि०) नाक से उच्चारण करने वाला, नाक से बोलने वाला।
नक्कीमूठ (सं० पु०) जुये का एक खेल।
नक्कू (वि०) नाक वाला, लम्बी नाक वाला, अपमानित, तिरस्कृत, बहिष्कृत।
नक्त (सं० पु०) रात्रि, दिन की समाप्ति का समय।
नक्तञ्चर (सं० पु०) राक्षस, रात में चलने वाला।
नक्तभोज (वि०) रात में भोजन करने वाला, जिसे रात में ही खाने का अभ्यास हो।
नक्तांध (वि०) रात का अन्धा, जिसे रात को दिखाई न दे, (सं० पु०) चमगीदड़। [रतौंधी।
नक्तांध्य (सं० पु०) रात का अन्धापन, रात को न सूझना,
नक्र (सं० पु०) मगर, जल-जन्तु विशेष।
नक्श (वि०) अङ्कित, चित्रित। [बैठा देना।
मुहा०—नक्श करना = बैठाना, जड़ना, हृदय पर कोई बात
नक्शा (अ० सं० पु०) चित्र, प्रतिलिपि, प्रतिमूर्ति, रेखा आदि के द्वारा बनाया मानचित्र।
नक्शानवीस (फ़ा० सं० पु०) नक्शा बनाने वाला।
नक्षत्र (वि०) जो क्षरणशील न हो, अविनाशी, अविनश्वर, (सं० पु०) तारा, इनकी संख्या सत्ताईस है।
नक्षत्र-चक्र (सं० पु०) तारा-मंडल, तारा-चक्र।
नक्षत्रनाथ (सं० पु०) चन्द्रमा, नक्षत्रों का स्वामी।
नक्षत्रविद्या (सं० स्त्री०) ज्योतिष विद्या।
नक्षत्रसूची (सं० पु०) निन्दित ज्योतिषी, जो स्वयं ग्रह गणना करना न जानता हो, दूसरों के कहने से ज्योतिष की बातें लोगों को बतलाता हो उसे नक्षत्रसूची कहते हैं।
नक्षत्री (सं० पु०) प्रतापवान्, भाग्यवान्, जिसका जन्म अच्छे नक्षत्र में हुआ हो, नक्षत्रों का स्वामी, चन्द्रमा।
नक्षत्रेश (सं० पु०) नक्षत्रों का ईश, चन्द्रमा।
नख (सं० पु०) नह, हाथ पैर का नख।

नखक्षत (सं० पु०) नख का चिह्न, नख के गड़ने का चिह्न, स्त्री के स्तनों पर नख के गड़ाने का चिह्न।

नखत (सं० पु०) देखो " नक्षत्र "।

नखर (सं० पु०) नह, नख, कड़े नख।

नखरा (सं० पु०) हावभाव, चोंचला, किसी बात की इच्छा रहने पर भी इनकार करना, अनेच्छा प्रकाशित करना।

नखरातिल्ला (सं० पु०) चोंचला, नखराबाज़ी।

नखरायुध (सं० पु०) व्याघ्र, बाघ, शेर।

नखरेबाज़ (वि०) नखरा करने वाला।

नखरेबाज़ी (सं० स्त्री०) नखरा, नखरा करना।

नखशिख (सं० पु०) नख से शिखा तक, सर्वाङ्ग, वह काव्य या काव्य का अंश जिसमें नख से शिखा तक के प्रत्येक अङ्ग का वर्णन हो।

नखहरणी (सं०स्त्री०) नख कटाने का एक अस्त्र, नहरनी।

नखायुध (सं० पु०) शेर, बाघ, चीता, कुत्ता।

नखियाना (क्रि० अ०) नख से चिह्न करना, नख से खरोंचना। [जिनका नख अस्त्र हो।

नखी (सं० पु०) नख वाला, नख से प्रहार करने वाला,

नग (सं० पु०) नगीना, अँगूठी आदि गहनों पर जड़े जाने वाले रत्न आदि, अदद, संख्या, पर्वत, सूर्य, सर्प पहाड़, वृक्ष, (वि०) गमन न करने वाला, अचल, स्थिर।

नगचाई (सं० स्त्री०) समीप, निकट, पास।

नगचाहट (सं० स्त्री०) निकटता, सामीप्य।

नगचाना (क्रि० अ०) नगिचाना, पास जाना, नियराना निकट जाना।

नगजा (सं० स्त्री०) पर्वत-पुत्री, पार्वती, ये हिमालय की कन्या थीं इस कारण पर्वत-पुत्री कही जाती हैं।

नगण (सं० पु०) छन्द शास्त्र का एक गण जो तीन लघु अक्षरों का होता है जैसे कमल, मदन इत्यादि।

नगण्य (वि०) गणना करने योग्य नहीं, तुच्छ, हेच।

नगदन्ती (सं० स्त्री०) विभीषण की स्त्री का नाम।

नगद (सं० पु०) नकद, सिक्के के रूप में धन।

नगदी (सं० स्त्री०) नकदी।

नगदौना (सं० पु०) नाग-दमन, औषधि विशेष।

नगधर (सं० पु०) गिरिधारी, पर्वत धारण करने वाला श्रीकृष्ण।

नगन (वि०) नग्न, वस्त्रहीन, नंगा, विवस्त्र, दिगम्बर।

नगनी (सं० स्त्री०) छोटी कन्या, जो नङ्गी घूम फिर सकती हो, कन्या। [सुमेरु।

नगपति (सं० पु०) हिमालय, पर्वतराज, चन्द्रमा, शिव,

नगभिद् (सं० स्त्री०) एक लता जो पत्थर छेद कर निकलती है, इन्द्र, पत्थर काटने का अस्त्र।

नगर (सं० पु०) बड़ा गाँव, शहर, वह गाँव जिसमें कई जाति के लोग रहते हों कारीगर रहते हों, कलाकौशल की उन्नति हो और प्रधान न्यायालय हो।

नगरकीर्तन (सं० पु०) वह कीर्तन या उत्सव जो समस्त नगर में घूम कर किया जाय।

नगरनायिका (सं० स्त्री०) नगर भर की स्त्री, वेश्या।

नगरवासी (सं० पु०) नगर में रहने वाले पुरुष 'नागरिक' चतुर मनुष्य, धूर्त। [झगड़ा, नगर-सम्बन्धी विवाद।

नगरविवाद (सं० पु०) नगर का झगड़ा, दूसरों का

नगरहा (सं० पु०) नगरवासी, नागरिक। [धूर्त्तता।

नगराई (सं० स्त्री०) नागरिकता, चतुराई, चतुरता,

नगराध्यक्ष (सं० पु०) प्राचीन समय का एक अधिकारी, जो नगर के शासन तथा न्याय के लिए राजा की ओर से नियत किया जाता था।

नगरी (सं० स्त्री०) छोटा नगर, पुरी।

नगरोपान्त (सं० पु०) नगर का निकास।

नगाड़ा (सं० पु०) नगारा।

नगारा (सं० पु०) नकारा, नक्कारा। [पार्वती।

नगी (सं० स्त्री०) नगीना, नग, छोटा नग, नाग स्त्री,

नगीच (वि०) पास, समीप, नज़दीक।

नगीना (सं० पु०) रत्न, मणि आदि, जो गहनों में जड़ा जाता है, अपनी जाति में श्रेष्ठ। [बनाने वाला।

नगीनासाज़ (फ़ा० सं० पु०) नगीना जड़ने वाला, नगीना

नगेन्द्र (सं० पु०) हिमालय, पर्वतों का राजा।

नग्न (वि०) नंगा, बिना वस्त्र का, जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, बौद्ध संन्यासी विशेष, वैदिक संन्यासियों का एक दल, दिगम्बर।

नघना (क्रि० स०) लांघना, डांकना, पार जाना, पार उतरना, डांक कर जाना। [देना, पार उतार देना।

नघाना (क्रि० स०) पार उतरवाना, लँघा देना, डँका

नचना (क्रि० अ०) नाचना, अपने आप नाचना, लट्टू, चकई आदि का घूमना, नृत्य करना, (वि०) स्थिर न रहने वाला, सदा इधर उधर घूमने वाला।

नचनि (सं० स्त्री०) नाच, नृत्य, नाचने की प्रक्रिया।

नचनिया (सं० पु०) नृत्य करने वाला, नाचने वाला, नाच का पेशा करने वाला।

नचवाना (क्रि०) नाच कराना, नचाना, नृत्य कराना।

नचवैया (सं० पु०) नाचने वाला, नचनिया।

नचहि (क्रि०) नाचता है, नृत्य करता है।

नचाना (क्रि० स०) नचाने का प्रयत्न करना, नृत्य कराना, दूसरे को नाचने के लिए कहना, इधर उधर घुमाना, वश में करके जैसा चाहे वैसा कराना, नृत्य कराना।

मुहा०—नाच नचाना = तंग करना, विवश करना, स्थिर न रहने देना, व्याकुल करना।

नचावत (क्रि०) नचाता है, नाच कराता है।

नचिकेता (सं० पु०) एक ऋषि का नाम जो बाजश्रवा ऋषि का पुत्र था। एक बार बाजश्रवा ने यज्ञ किया। उस यज्ञ में उन्होंने अपना सब कुछ दान कर दिया। उस समय नचिकेता बालक था, उसने पिता से पूछा, मुझको किसे देते हो; पिता ने कुछ उत्तर न दिया। जब नचिकेता बार बार पूछने लगा तब पिता ने कहा तुमको मैं मृत्यु को देता हूं। नचिकेता मृत्यु के यहाँ गया, उस समय मृत्यु अपने घर पर उपस्थित नहीं था, इसलिए तीन दिन तक उपवास करके मृत्यु की प्रतीक्षा करता रहा, तीसरे दिन के बाद मृत्यु आया और नचिकेता को देखा। अतिथि के उपवास रहने से गृहस्थ का अनिष्ट होता है, जिस गृहस्थ के घर अतिथि उपवास करे उसको प्रायश्चित करना चाहिए, इसलिए मृत्यु ने तीन वर देकर नचिकेता के उपवास करने का प्रायश्चित किया। उन वरों से नचिकेता को ब्रह्मज्ञान हुआ, अग्नि।

नछत्र (सं० पु०) नक्षत्र, तारा। [सफलता पाने वाला।

नछत्री (वि०) प्रतापवान, भाग्यवान, सांसारिक कामों में

नज़दीक (वि०) समीप, पास, निकट।

नज़दीकी (वि०) नज़दीक का, समीपी, निकट संबन्धी।

नज़र (अ० सं० स्त्री०) दृष्टि, चितवन, आँख।

मुहा०—नज़र आना = सूझना, दिखाई पड़ना, देखने की शक्ति होना। नज़र करना = देखना। नज़र पर चढ़ना = शत्रुता होना। नज़र रखना = देखरेख रखना, देखते रहना, निगरानी करना। नज़र देना = उपहार देना, भेंट देना, मालिक को भेंट देना।

नज़रबन्द (वि०) वह अपराधी जो नज़र के सामने रक्खा जाय, जो कहीं आ जा न सके।

मुहा०—नज़रबन्द करना = जादू करना। नज़रबन्द होना = नज़रबन्दी की सज़ा पाना।

नज़रबन्दी (सं० स्त्री०) दण्ड विशेष, इस दण्ड के अपराधी को एक ही स्थान पर रहना पड़ता है, अपनी इच्छा से कहीं आता जाता नहीं, यदि बिना पूछे कहीं चला जाय तो उसे दण्ड दिया जाता है। इस दण्ड का प्रधान उद्देश्य है चलने फिरने बोलने आदि की स्वाधीनता का हरण। [बाग़।

नज़रबाग़ (सं० पु०) उद्यान, घर के भीतर का छोटा

नज़रसानी (अ० सं० स्त्री०) पुनः दर्शन, देखी बात को पुनः देखना, एक बार विचार कर लेने पर पुनः विचार करना।

नज़राना (अ० सं० पु०) नज़र देने की सामग्री, भेंट की वस्तु, (क्रि० अ०) नज़र लगाना, जादू करना, देखना, पसन्द करना, मन ही मन निश्चित कर रखना।

नज़ला (अ० सं० पु०) एक प्रकार का रोग जिसमें गर्मी के कारण सिर का विकार-युक्त पानी ढल ढल कर भिन्न भिन्न अङ्गों की ओर प्रवृत्त होता है, जिस अङ्ग की ओर ढलता है उसे खराब कर डालता है। जुकाम, सर्दी। [लता का भाव।

नज़ाकत (फ़ा० सं० स्त्री०) कोमलता, सुकुमारता, कोम-

नज़ारा (सं० पु०) दृश्य, देखने की वस्तु, दर्शनीय वस्तु।

नज़ीक (वि०) पास, समीप, नज़दीक, निकट। [का फैसला।

नज़ीर (अ० सं० स्त्री०) उदाहरण, दृष्टान्त, समान अभियोग

नट (सं० पु०) अभिनेता, अभिनय करने वाला, नाचने वाला, एक जाति, इस जाति के लोगों का पेशा गाना बजाना है, ये प्रायः एक मकान पर नहीं रहते, इधर उधर घूमते फिरते रहते हैं, एक सङ्कर जाति, अशोक वृक्ष, श्योनाक वृक्ष। [इसका प्रयोग करते हैं।

नटई (सं० स्त्री०) गला, ग्रीवा, गरदन ग्रामीण लोग

नटखट (वि०) ऊधम करने वाला, ख़ुराफ़ाती, सदा कुछ न कुछ उपद्रव करने या सोचने वाला।

नटखटी (सं० स्त्री०) धूर्तता, छल, कपट।

नटना (क्रि० अ०) नाचना, नृत्य करना, प्रतिज्ञा तोड़ना, किसी बात को उलट देना, पहले स्वीकार करके पुनः नाहीं करना।

नटनागर (सं० पु०) श्रीकृष्ण,टोनहा।
नट नारायण (सं० पु०) एक राग विशेष।
नटनी (सं० स्त्री०) नट की स्त्री, नट जाति की स्त्री, नाचने गाने वाली स्त्री।
नटभूषण (सं० पु०) हरताल।
नटवर (सं० पु०) महादेव, प्रधान नट, नाट्यकला का पण्डित, श्रीकृष्ण, नाट्याचार्य, चतुर, धूर्त्त।
नटवा (सं० पु०) छोटा, नाटा, छोटा बैल, जादूगर।
नटसाल (सं० पु०) शरीर में गड़े काँटे का वह भाग जो निकाले जाने पर भी टूट कर रह जाय,बाँस की फाँस, जो शरीर में गड़ जाय और निकाली न जा सके।
नटा (क्रि०) नाचा, भागा, फिर गया, हट गया।
नटिन (सं० स्त्री०) नट की स्त्री, नटी, नट जाति की स्त्री।
नटी (सं० स्त्री०) नट जाति की स्त्री, नाटकों की एक पात्रा, जो सूत्रधार के साथ रङ्गस्थल में आती है और नाटक के कथा की बातचीत में सूचना देकर चली जाती है।
नटुआ (सं० पु०) नट की एक जाति विशेष, नट, नटवा।
नठना (क्रि० अ०) विनष्ट होना, बिगड़ना।
नड़ (सं० पु०) तृण विशेष, नरकट, एक जाति, इस जाति के लोग चूड़ी आदि बनाते हैं।
नत (वि०) नम्र, विनीत।
नतइत (सं० पु०) नतैत,संबन्धी, कुटुम्बी, गोत्री, सगोत्र।
नतकुर (सं० पु०) बेटी का बेटा, नसा, नवासा, नाती।
नतरु (अव्य०) नहीं तो, अन्यथा, यदि ऐसा नहीं हुआ तो, वितर्कार्थक। [नायिका।
नताङ्गी (सं० स्त्री०) कोमलाङ्गी, कोमल शरीर वाली स्त्री,
नति (सं० स्त्री०) नमस्कार, प्रणाम, झुकाव, नम्रता।
नतिनि (सं० स्त्री०) कन्या की कन्या, लड़की की लड़की।
नतीजा (फ़ा० सं० पु०) फल, परिणाम, कार्य का परिणाम, दुःख या सुख।
ननु (अव्य०) नहीं तो, ऐसा नहीं तो, अन्यथा।
नतैत (वि०) संबन्धी, सगोत्र, कुटुम्बी। [गहना।
नत्थ (सं० स्त्री०) नथ, नथिया, नाक में पहनने का
नत्थी (सं० पु०) साथ सिलाई करना, एक में मिलाना, कई काग़ज़ों को एक में मिलाना।
नथ (सं० स्त्री०) नत्थ, नाक में पहनने का गहना।
नथना (सं०पु०) नाक, बैल घोड़े आदि की नाक।
नथनी (सं० स्त्री०) छोटी नथ, लड़कियों के पहनने की नथ। [गहना।
नथिया (सं० स्त्री०) नत्थ, नाक में पहनने का गोलाकार
नथुआ (सं० पु०) नाथने वाला।
नथुई (सं० स्त्री०) नाथने वाली। [की नाक।
नथुना (सं० पु०) नथना, नाक, बैल घोड़े आदि पशुओं
नथुनी (सं० स्त्री०) छोटी नथ।
नद (सं० पु०) बड़ी नदी, उत्तर और पश्चिम जिसकी धारा बहती हो, पुल्लिङ्ग नामों वाली नदियाँ।
नदन (सं० पु०) गर्जन, शब्दकरण, बोलना, आवाज़ होना, टंकार होना। [स्वामी।
नदनदीपति (सं० पु०) समुद्र, नद और नदियों का
नदान (फ़ा० वि०) नादान, बेसमझ, निर्बुद्धि, मूर्ख।
नदारद (वि०) अभाव, न होना, उपस्थित न होना, अप्रस्तुत होना, न मिलना, दिखाई न पड़ना।
नदित (वि०) शब्द किया हुआ, जात शब्द।
नदिया (सं० पु०) नन्दी बैल, शिव जी का वाहन, (सं० स्त्री०) पूर्व बंगाल के एक गाँव का नाम, यहाँ प्रसिद्ध प्रसिद्ध विद्वान् उत्पन्न हुए हैं, किसी समय यहाँ विद्या की बड़ी चर्चा थी, विशेषकर न्यायशास्त्र की।
नदी (सं० स्त्री०) जल-प्रवाह, नदियाँ प्रायः पर्वतों से निकलतीं हैं कोई कोई किसी बड़े जलाशय से भी निकलतीं हैं और ये समुद्र में मिलती हैं। जल की उस धारा को नदी कहते हैं जो आठ हज़ार धनुष तक बह कर समुद्र से मिले या और किसी दूसरी बड़ी नदी से मिले। पर्याय—सरित, तरङ्गिणी, शैवलिनी, तरनी, स्रोतस्वता, वेगवती, द्वीपवती निम्नगा, आपगा।
नदीकान्ता (सं० स्त्री०) काक जंघा बूटी।
नदीगर्भ (सं० पु०) नदी के दोनों किनारे के बीच का भाग, नदी की धारा बहने का स्थान।
नदीज (सं० पु०) भीष्म पितामह, अर्जुन नामक वृक्ष, एक प्रकार का नमक, (वि०) नदी से उत्पन्न वस्तु।
नदीमातृक (वि०) नदी के द्वारा पालित, जहाँ खेती बारी नदी के जल से होती हो।
नदीमुख (सं० पु०) नदी का मुहाना, समुद्र में नदी के मिलने का स्थान, संगम स्थान।
नदेश (सं० पु०) सागर, समुद्र।

नदोला (सं० पु०) छोटी नाँद, मिट्टी का एक बर्तन जिसमें बैल आदि को खाने के लिए भूसा देते हैं।

नद्ध (वि०) बँधा हुआ, नधा हुआ, रस्सी आदि के द्वारा बँधा हुआ, रस्सी आदि से जकड़ा हुआ, बद्ध।

नद्युत्सृष्ट (सं० पु०) नदी का छोड़ा हुआ स्थान, वह स्थान जहाँ से नदी की धारा हट गयी हो, गंगबरार।

नधना (क्रि० अ०) जुतना, जुड़ना, घोड़ा बैल आदि का गाड़ी या हल में जुतना, लगना, प्रवृत्त होना।

ननका (सं० पु०) छोटा बच्चा, दुलारा, लाड़ला।

ननद (सं० स्त्री०) पति की बहिन।

ननदिया (सं० स्त्री०) देखो "ननद"।

ननदी (सं० स्त्री०) ननद, पति की भगिनी।

ननदोई (सं० स्त्री०) ननद का पति, पति का बहनोई।

ननसार (सं० स्त्री०) ननसाल, नाना का घर, ननिहाल।

ननिआउर (सं० पु०) नाना का घर, ननसाल, माता के पिता का घर।

ननिहाल (सं० पु०) ननसार, नाना का घर, माता के [पिता का घर।

ननु (अव्य०) निश्चय, अनुमति, उत्प्रेक्षा।

नन्द (सं० पु०) अमोद, हर्ष, आनन्द, सुखकारक, मानसिक विकार विशेष, सर्प विशेष, राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र, वसुदेव के एक पुत्र का नाम, गोपराज, ये गोकुल के रहने वाले थे और इन्होंने श्रीकृष्ण का पालन किया था। इस नाम के मगध के कई राजा जो नवनन्द के नाम से प्रसिद्ध थे और चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त ने जिनका नाश किया था, बुद्धदेव के एक भाई का नाम।

नन्दक (सं० पु०) श्रीकृष्ण की तलवार का नाम, मेंढक, स्कंद का एक अनुचर, धृतराष्ट्र का एक पुत्र, (वि०) आनन्ददायक, कुल-पालक।

नन्दकिशोर (सं० पु०) श्रीकृष्ण, नन्द के पुत्र।

नन्दकुँअर (सं० पु०) नन्दकुमार, नन्द के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नन्दगाँव (सं० पु०) गोकुल का दूसरा नाम, एक गाँव जहाँ नन्द रहते थे।

नन्दन (सं० पु०) इन्द्र के वन का नाम, जो स्वर्ग में माना जाता है यह सब स्थानों से सुन्दर है, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम, एक प्रकार का विष, महादेव, विष्णु, मेंढक, केसर, चन्दन, लड़का, बेटा, मेघ, बादल, एक वर्ण वृत्त विशेष, २६ वाँ सम्वत्सर।

नन्दनन्दन (सं० पु०) श्रीकृष्ण।

नन्दनवन (सं० पु०) देखो "नन्दन"।

नन्दप्रयाग (सं० पु०) उत्तराखण्ड के एक तीर्थ का नाम, यह बदरिकाश्रम के पास है।

नन्दवंश (सं० पु०) मगध का एक विख्यात राजवंश, इस वंश के लोग चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन के पहले मगध का शासन करते थे। इनका शासन-काल ईस्वी सन् से ३२७ वर्ष पहले माना जाता है।

नन्दा (सं० स्त्री०) देवी विशेष, दुर्गा, एक मातृका या बालग्रह जिसके कारण बालक अपने जीवन के पहले दिन पहले मास और पहले वर्ष में ज्वर से पीड़ित होकर बहुत रोता और अचेत हो जाता है, तिथि विशेष, ननद, पति की बहिन, सम्पति, मिट्टी का घड़ा।

नंदात्मज (सं० पु०) नन्द-पुत्र, नन्द के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नन्दादेवी (सं० स्त्री०) एक देवी का नाम, हिमालय पर्वत का एक शृङ्ग।

नन्दि (सं० पु०) शिव का द्वारपाल, जुआ का खेल।

नन्दिकेश्वर (सं० पु०) महादेव का एक गण, बैल।

नन्दिग्राम (सं० पु०) अयोध्या के समीप के एक प्राचीन गाँव का नाम, रामचन्द्र जी के वन जाने के समय भरत जी इसी गाँव में रहते थे और यहीं से रामचन्द्र के प्रतिनिधि होकर राज्य शासन करते थे।

नन्दिघोष (सं० पु०) अर्जुन के रथ का नाम, अर्जुन को यह रथ अग्नि से मिला था, खाण्डव दाह में अर्जुन ने अग्नि को सहायता दी थी और उसी के प्रतिफल स्वरूप यह रथ उन्होंने दिया था, किसी प्रकार की मंगल घोषणा।

नन्दित (वि०) आनन्दित, प्रसन्न, सुखी, शब्दायमान, शब्द करता हुआ।

नन्दिनी (सं० स्त्री०) एक गौ का नाम, कामधेनु, कन्या, [पुत्री, जटामासी, बालछड़।

नन्दीगण (सं० पु०) शिव के गण, एकादश रुद्रों का समूह, साँड़, वृषोत्सर्ग करके छोड़ा हुआ बैल।

नन्दीमुख (सं०पु०) एक श्राद्ध का नाम, पुत्र-जन्म के समय यह यज्ञ किया जाता है।

नन्दीश्वर (सं० पु०) शिव का द्वारपाल, शिव, महादेव, शिव के एक गण का नाम।

नन्हा (वि०) छोटा, बहुत ही छोटा, लघु। [खटी।

नन्हाई (सं० स्त्री०) अमर्याद, अप्रतिष्ठा, छोटापन, मट-

नपाई (सं० स्त्री०) नापने का काम, नापने की मजूरी।
नपाक (वि०) पाक नहीं, पवित्र नहीं, अशुद्ध, अपवित्र।
नपुंसक (सं० पु०) हिजड़ा, क्लीव, नामर्द, वह मनुष्य जिसे न तो स्त्री के लक्षण हों और न पुरुष के, व्याकरण का एक लिंग, हिन्दी व्याकरण में नपुंसक लिंग के शब्द नहीं होते।
नपुंसकता (सं० स्त्री०) हिजड़ापन, नामर्दी।
नपुंसकलिंग (सं० पु०) तीसरा लिंग।
नपुआ (सं० पु०) नापने का पात्र, एक प्रकार का तौल, जिसमें कोई चीज़ भरने से यह मालूम होता है कि यह चीज़ इतनी हुई।
नप्ता (सं० पु०) नाती, कन्या का पुत्र। [व्यक्ति।
नफ़र (फ़ा० सं० पु०) दास, भृत्य, चाकर, नौकर, सेवक,
नफ़रत (फ़ा० सं० स्त्री०) घृणा, घृणा-जनित द्वेष।
नफ़री (सं० स्त्री०) एक मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी, एक दिन का वेतन।
नफ़ा (अ० सं० पु०) लाभ, व्यापार का लाभ, सूद।
नफ़ीरी (फ़ा० सं० स्त्री०) एक बाजे का नाम, तुरही।
नबेड़ना (क्रि० स०) निपटाना, सुलझाना, समाप्त करना, तय करना। [फ़ैसला।
नबेड़ा (सं० पु०) समाप्ति, निपटाव, सुलझाव, निर्णय,
नब्ज़ (अ० सं० स्त्री०) नाड़ी, रक्त बहन करने वाली हाथ की नाड़ी जिससे सुस्थता असुस्थता आदि की पहचान होती है।
मुहा०—नब्ज़ देखाना = वैद्य को नाड़ी बताना, नाड़ी की परीक्षा कराना। [दहाई।
नब्बे (वि०) संख्या विशेष, सौ से दस कम, नौ की
नभःसद (सं० पु०) वायु, मरुत, देवता, आकाशचारी।
नभ (सं० पु०) आकाश, आसमान, व्योम, गगन, अन्तरिक्ष, आश्रय, आधार, शिव, मेघ, बादल, मृणाल-सूत्र, शून्यस्थान, सुआ, शून्य, अंक विशेष, सावन का महीना।
नभग (सं० पु०) पक्षी, देवता, नक्षत्र, ग्रह, पखेरू।
नभगामी (सं० पु०) आकाशचारी, आकाशगामी, चन्द्रमा, देवता, सूर्य, पक्षी, सिद्ध, चारण।
नभगनाथ (सं० पु०) गरुड़, चन्द्रमा।
नभश्चर (सं० पु०) आकाश में चलने वाला, आकाश में चलने की शक्ति रखने वाला, पक्षी।
नभस्थल (सं०पु०) आकाश, आकाशमार्ग, शून्यस्थान।
नभस्य (सं०पु०) भाद्रपद, भादों का महीना।
नभस्वान् (सं० पु०) वायु, हवा, बात, पवन, आकाश-व्यापी हवा। [वाला।
नभोगति (सं० पु०) आकाश में चलने की शक्ति रखने
नभोधूम (सं० पु०) बादल, वारिद, मेघ, घन।
नम (वि०) भीगा हुआ, आर्द्र, तर।
नमक (सं० पु०) लवण, नून, नोन, क्षार विशेष, जो भोजन के काम में आता है।
मुहा०—नमक अदा करना = उपकारी के प्रति उपकार करना, उपकार का बदला उपकार से देना। नमक खाना = पालित होना, आश्रय में रहना। नमक फूटना = बेईमानी का फल पाना।
नमकख्वार (फ़ा० वि०) नमक का बदला चुकाने वाला, उपकार का बदला उपकार से देने वाला।
नमकहराम (फ़ा० वि०) उपकारी के प्रति अपकार करने वाला, जिसके आश्रय में रहे उसी से द्वेष करने वाला।
नमकहलाल (वि०) नमक का बदला देने वाला, अपने आश्रय-दाता का उपकार करने वाला।
नमकीन (वि०) नमक युक्त, नमक मिली हुई वस्तु, पकवान, जिसमें नमक मिला हो।
नमत (क्रि०) नमस्कार करता है, प्रणाम करता है।
नमन (सं० पु०) प्रणाम, नमस्कार, नवना, नमित होना।
नमना (क्रि० अ०) प्रणाम करना, नम्र होना, झुकना, किसी कोमल वस्तु का नवना।
नमनीय (वि०) नमन करने योग्य, प्रणाम योग्य, झुकने योग्य, नवने योग्य। [सत्कार करने की विधि।
नमस्कार (सं० पु०) प्रणाम, अभिवादन, बड़ों के
नमस्य (वि०) नमस्कार करने के योग्य।
नमाज (सं० पु०) मुसलमानों की स्तुति।
नमाना (क्रि० स०) नमित करना, नवाँना, किसी लम्बी चीज़ को टेढ़ी करना।
नमामह (क्रि०) हम लोग प्रणाम करते हैं।
नमित (वि०) नमा हुआ, नवा हुआ, झुका हुआ।
नमी (सं० स्त्री०) नमी, आर्द्रता, गीलापन।
नमुचि (सं० पु०) एक राक्षस का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था, इसके पिता का नाम विप्रचित्ति था।
नमूना (सं० पु०) अधिक वस्तु में की थोड़ी वस्तु,

बानगी, आदर्श, कपड़े,अन्न या और किसी वस्तु में से थोड़ा निकाला हुआ भाग, इसके द्वारा राशि के अच्छा या बुरा होने की पहचान की जाती है।

नमेरु (सं० पु०) वृक्ष विशेष, रुद्राक्ष का पेड़।

नम्र (वि०) विनीत, शिष्टाचार-सम्पन्न।

नम्रता (सं० स्त्री०) विनय, शिष्टाचार, मनुष्य का एक गुण, नम्रता का एक भाव।

नय (सं० पु०) नीति, न्याय, नम्रता, निर्णय, फ़ैसला, नवीन, नव, नया। [नाचने वाला।

नयकारी (सं० पु०) नर्तक, नृत्य करने वाला, नचवैया,

नयन (सं० पु०) आँख, नेत्र, दृष्टि, नज़र।

नयनगोचर (सं० पु०) साक्षात्कार, प्रत्यक्ष, आँखों से दिखाई पड़ने वाला। [होना, झुकना।

नयना (क्रि० अ०) नमना, नवना, नम्र होना, नम्रित

नयनी (सं० स्त्री०) आँख वाली, आँख की पुतली, इसका प्रयोग प्रायः उपमान वाचक शब्दों के साथ होता है, मृगनयनी। [मलमल।

नयनू (सं० पु०) लैनू, मक्खन, वस्त्र विशेष, बूटीदार

नयशील (सं० पु०) नीतिमान्, नीतिज्ञ, विनीत।

नया (सं० पु०) नवीन, अभिनव, जिसको उत्पन्न हुए बहुत दिन न हुए हों, ताज़ा।

नयापन (सं० पु०) नवीनता।

नर (सं० पु०) मनुष्य, आदमी, दक्ष प्रजापति की कन्या के गर्भ से और एक ऋषि से ये उत्पन्न हुए थे। और ईश्वर के अवतार माने जाते थे। बद्रीनारायण के वन में इन्होंने तपस्या की थी, इनके दूसरे साथी या भाई का नाम नारायण था। मर्द, पुरुष जाति का प्राणी, मादा नहीं, नल।

नरक (सं० पु०) स्थान विशेष, जहाँ पापियों को अपने अपने पाप-कर्मों के अनुसार दण्ड भोगने के लिए रहना पड़ता है। नरक कई हैं रौरव, महारौरव, तामिस्र, अन्ध तामिस्र, नरक महानरक आदि इस नाम का एक असुर।

नरककुण्ड (सं० पु०) पाप का फल भोगने का कुण्ड।

नरकगामी (सं० पु०) पापी, नरक जाने का अधिकारी।

नरक चतुर्दशी (सं० स्त्री०) कार्तिक के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी, शास्त्रों में लिखा है कि इस दिन तेल लगा कर स्नान करना चाहिए, घर का सब कतवार साफ करना चाहिए।

नरकट (सं० पु०) तृण विशेष, बेंत की जाति का यह होता है, इसकी चटाई आदि बनायी जाती है।

नरकान्तक (सं० पु०) नरक नामक असुर का मारने वाला, विष्णु, श्रीकृष्ण।

नरकामय (सं० पु०) नरक का रोग, कुष्ट रोग।

नरकासुर (सं० पु०) एक असुर, इसका नाश श्रीकृष्ण ने किया, यह पृथ्वी का पुत्र था, जिस स्थान पर सीता का जन्म हुआ था उसी स्थान पर रावण-बध के पश्चात् इसका जन्म हुआ। राजा जनक ने इसका पालन पोषण किया। सोलह वर्ष की अवस्था होने पर पृथ्वी इसको रामचन्द्र के समीप ले गयी, रामचन्द्र ने प्राग्ज्योतिषपुर (आसाम) का राज्य इसे दिया और सुमार्ग पर चलने का आदेश दिया। कुछ दिनों तक यह रामचन्द्र के उपदेश के अनुसार चलता रहा, पीछे बाणासुर के साथ यह उच्छृङ्खल हो गया, मनमाना करने लगा। साधु ब्राह्मणों को सताने लगा। एक बार वशिष्ठ कामाक्षा देवी का दर्शन करने गये, पर इसने उन्हें नगर में घुसने न दिया। इससे वशिष्ट जी ने शाप दिया कि शीघ्र तुम्हारा राज नष्ट हो जाय। इस बात के सुनने से नरक को भय हुआ और यह तपस्या करने लगा। तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने इसे वर दिया इसने अन्य कई बलवान् राक्षसों को भी अपने साथ कर लिया था पर इसकी रक्षा न हो सकी, श्रीकृष्ण ने इसको मार डाला।

नरकी (वि०) नरक का अधिकारी, पापी, नरकी।

नरकुल (सं० पु०) नरकट नाम का तृण। [पुरुषोत्तम।

नरकेसरी (सं० पु०) नृसिंहावतार भगवान्, पुरुष-श्रेष्ठ,

नरकेहरी (सं० पु०) नरकेसरी, नृसिंह।

नरङ्ग (सं० पु०) नारङ्गी, संतरा, कमला नीबू।

नरत्व (सं० पु०) मनुष्यत्व, नर के गुण, मनुष्य के धर्म।

नरद (सं० स्त्री०) चौसर की गोटी, एक पौधे का नाम।

नरदन (सं० पु०) नर्दन, गर्जन, शब्द करना, नाद करना, हुंकार।

नरदवाँ (सं० पु०) नरदा, पनाला, मोरी, मकान का जल निकलने का मार्ग। [मोरी।

नरदा (सं० पु०) नरदवाँ, घर का जल निकालने की

नरदेव (सं० पु०) राजा, नृपति, मनुष्य में देवता के समान। |नरपाल।

नरनाथ (सं० पु०) राजा, भूपाल, भूमेश्वर, नृपति,

नरनायक (सं० पु०) मनुष्यों में श्रेष्ठ, मनुष्यों का नायक, राजा, नृपति।

नरनारायण (सं० पु०) नर और नारायण नाम के दो ऋषि, ये दोनों भगवान् के अवतार थे, इन लोगों ने तपस्या की और पुनः भागवत धर्म का प्रचार किया, इन्द्र ने इनकी तपस्या नष्ट करने का कई उपाय किया पर इन लोगों से उन्हें हार माननी पड़ी।

नरनारि (सं० स्त्री०) नर की स्त्री, द्रौपदी, अर्जुन नर के अवतार समझे जाते हैं इस कारण उनकी स्त्री द्रौपदी को नरनारि कहते हैं।

नरनाह (सं० पु०) नरनाथ, राजा, भूपाल।

नरपति (सं० पु०) राजा, नरेश, नरपाल।

नरपशु (सं० पु०) नृसिंह, भगवान् का एक अवतार, मूर्ख मनुष्य, पशु के समान मनुष्य, मानवी विचार और बुद्धि से हीन मनुष्य।

नरपाल (सं० पु०) नरपति, नृपति।

नरपिशाच (सं० पु०) क्रूर मनुष्य, मनुष्य के रूप में पिशाच, पिशाच के समान क्रूर कर्म करनेवाला मनुष्य।

नरपुर (सं० पु०) मृत्यु लोक।

नरबदा (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम, नर्मदा।

नरभक्षी (सं० पु०) राक्षस, मनुष्यों को खाने वाला, हिंसक जन्तु।

नरम (वि०) कोमल, सुकुमार। [ज़मीन, बलुही ज़मीन।

नरमट (सं० स्त्री०) मुलायम मिट्टी की ज़मीन, धुस्स

नरमद (वि०) सुख देने वाला, मसख़रा।

नरमाना (क्रि० स०) कोमल करना, क्रोध दूर करना, शान्त करना। [स्त्री, दाढ़ी मूँछ वाली स्त्री।

नरमानिनी (सं० स्त्री०) अपने को पुरुष समझने वाली

नरमी (सं० स्त्री०) कोमलता, सुकुमारता, नरम होना।

नरमेध (सं० पु०) एक यज्ञ जिसमें मनुष्य के अंगों की आहुति दी जाती थी।

नरलोक (सं० पु०) मनुष्य लोक, मृत्युलोक, मर्त्यलोक।

नरवाई (सं० स्त्री०) गेहूँ का डंठल, जिसमें बाल न हो।

नरवाहन (सं० पु०) मनुष्य के द्वारा ढोयी जाने वाली सवारी, एक गन्धर्व राजा का नाम।

नरव्याघ्र (सं० पु०) मनुष्यों में श्रेष्ठ, उत्तम मनुष्य, प्रभावशाली मनुष्य।

नरसिंगिया (सं० पु०) नरसिंगा बजाने वाला।

नरसिंघ (सं० पु०) नृसिंह, नरसिंह, ईश्वर का एक अवतार जो हिरण्यकश्यप को मारने के लिए हुआ था।

नरसिंघा (सं० पु०) एक बाजा, बड़ी तुरही।

नरसिंह (सं० पु०) नृसिंह।

नरसों (सं० पु०) वर्तमान दिन से चौथा दिन, अतरसों।

नरहड़ (सं० पु०) देखो नरहर। [होती है।

नरहर (सं० पु०) पैर की एक हड्डी जो पिंडली के ऊपर

नरहरि (सं० पु०) नृसिंह, भगवान् का एक अवतार। एक साधु का नाम ये तुलसीदास के गुरु थे। एक कवि।

नराच (सं० पु०) बाण, शर, एक छन्द का नाम।

नराज (वि०) नाराज़, अप्रसन्न, क्रोधित, कोपित।

नराधम (सं० पु०) अधम, नीच, दुराचारी, पापी।

नराधिप (सं० पु०) नरपति, नरपाल।

नरिंद (सं० पु०) नरेन्द्र, राजा, मनुष्यों में इन्द्र के समान।

नरिअर (सं० पु०) नारियल।

नरिअरी (सं० स्त्री०) नारियल के खोपड़े का बना पात्र।

नरिया (सं० पु०) खपड़ा, खपरैल, छप्पर छाने के लिए मिट्टी की विशेष प्रकार की बनी एक वस्तु।

नरियाना (क्रि० अ०) चिल्लाना, ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना, व्यर्थ की बकवाद करना।

नरी (सं० स्त्री०) स्त्री, चमड़ा, लौह यन्त्र विशेष।

नरुत्व (सं० पु०) पुल्लिङ्ग, पुरुष।

नरेट (सं० पु०) सांसी, घाँटी, गला, नटई।

नरेटी (सं० स्त्री०) गला, नटई, ग्रीवा, गर्दन, टेंटुवा।

नरेन्द्र (सं० पु०) नरपति, राजा। [पति, नरपाल।

नरेश (सं० पु०) मनुष्यों का स्वामी, राजा, नृप, नृपति, नर-

नरेश्वर (सं० पु०) राजा, नरेन्द्र, नरेश।

नरो (सं० स्त्री०) वर्तमान दिन से पहले वाला चौथा दिन या आगे वाला चौथा दिन।

नरोत्तम (वि०) पुरुषश्रेष्ठ। [अशुद्ध है।

नर्क (सं० पु०) नरक, इस शब्द में 'र' को हल् लिखना

नर्तक (सं० पु०) नाचने वाला, नट, नर्तकाचार्य, अभिनय करने वाला।

नर्तकी (सं० स्त्री०) नाचने वाली स्त्री, वेश्या, रूपाजीवा।

नर्तन (सं० पु०) नाच, नृत्यकला, नटों का काम।
नर्तनप्रिय (सं०पु०) मयूर, मोर, शिखी, (वि०) नाचप्रेमी।
नर्तशाला (सं० स्त्री०) नाचने का स्थान, नाचघर।
नर्दक (सं० पु०) बोलने वाला, शब्द करने वाला।
नर्दन (सं० पु०) गर्जन, हुंकार, चिल्लाने की ध्वनि, बैल आदि के बोलने के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता है।
नर्दा (सं० पु०) नाली, पनाला। [कोमल, मुलायम।
नर्म (सं० पु०) हँसी ठट्ठा, दिल्लगी, ठठोली, (वि०)
नर्मद (वि०) सुख देने वाला।
नर्मदा (सं० स्त्री०) एक नदी, यह अमरकंटक पर्वत से निकली है और भँड़ोच के पास समुद्र में मिली है, सुगन्धित द्रव्य विशेष।
नर्मदेश्वर (सं० पु०) शिव, महादेव, शिवलिङ्ग विशेष, जो नर्मदा में से निकलते हैं।
नर्मसचिव (सं० पु०) राजा का वह मन्त्री जो उसके साथ हँसी ठट्ठा करे, उसके गुप्त से गुप्त काम में सहायता दे, विदूषक, मसख़रा।
नर्मी (सं० स्त्री०) नरमी, कोमलता।
नल (सं० पु०) ख़स नामक तृण, नरकट, कमल, पेट के भीतर की एक नली, जिसमें होकर पेशाब उतरता है। निषध देश के एक राजा का नाम, इनके पिता का नाम वीरसेन था, ये अपने समय में सब से सुन्दर गुणी विद्वान् और पराक्रमी थे। घोड़े की विद्या और पाक-विद्या में भी ये अनुपम थे। इनका विवाह कुण्डिन-पुर के राजा भीम की कन्या दमयन्ती से हुआ था। इस विवाह के कारण देवताओं और नल में कुछ वैमनस्य हो गया, क्योंकि इन्द्र आदि देवता दमयन्ती से व्याह करना चाहते थे। वे दमयन्ती के स्वयंवर में आए भी थे; पर दमयन्ती ने देवताओं से व्याह करना स्वीकार न किया। इससे देवताओं के मन में कुछ दुःख अवश्य हुआ, पर वे परिस्थिति समझ कर चुप हो रहे। कलियुग भी उन्हीं देवताओं के साथ था उसे इस घटना से दुःख हुआ और उसने नल के शरीर में प्रवेश कर इनकी बुद्धि नष्ट कर दी। नल सर्वनाश के मूल जूआ खेलने के लिए तैयार हो गये। इन्होंने अपने भाई से जूआ खेला और राज्य आदि सब हार गये। हार कर दमयन्ती के साथ घर से निकले। रास्ते में इन्होंने दमयन्ती को भी छोड़ा, दमयन्ती भूलती भटकती अपने मौसी के घर पहुँची, वहीं से पुनः उसके स्वयंवर की तैयारी हुई। राजा नल अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहाँ पहुँच गये थे, दमयन्ती के स्वयंवर की ख़बर वहाँ भी पहुँची। पर अयोध्या से एक दिन में घोड़े की सवारी से जाना कठिन था। राजा बड़े व्याकुल हुए। उस समय बाहुक नाम के रथवाह (नल ने रथ-वान की नौकरी उनके यहाँ कर ली थी) ने एक दिन में वहाँ पहुँचा देने के लिए कहा। राजा अयो-ध्या से चले और ठीक समय पर वहाँ पहुँच गये और कोई वहाँ नहीं आया था। दमयन्ती ने दासी भेज कर इस बात का पता लगवाया कि बाहुक नाम का रथवान नल है कि नहीं। अनुसन्धान से निश्चय होने पर नल ने दमयन्ती को ग्रहण किया। ऋतुपर्ण को यह जान कर कि राजा नल ही उनका रथवाह बाहुक है बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने राजा नल के इस अवस्था में पहुँचने का कारण पूछा। मालूम होने पर राजा ऋतुपर्ण ने नल को जूआ खेलना सिखलाया क्योंकि वे इस विद्या में बड़े प्रवीण थे। राजा नल ने बदले में उन्हें अश्व-चालन की विद्या सिखायी। नल दमयन्ती के साथ अपनी राजधानी में आये और अपने भाई से उन्होंने जूआ खेला। इस बार जूए में वे जीत गये और राज्य के अधिकारी हुए। पुण्यश्लोक के नाम से प्रसिद्ध राजाओं में नल की भी गणना है।
मुहा०—नल टलना = एक प्रकार का रोग होना, इस रोग में पेशाब की नली टल जाती है और असह्य पीड़ा होती है।
नलकूबर (सं० पु०) कुबेर के पुत्र का नाम।
नलद (सं० पु०) पुष्परस, मकरंद, उशीर, ख़स।
नलपरिष्टिक (सं० पु०) कलिहारी।
नला (सं० पु०) नल, पेशाब का नल। [निकालना।
नलाना (क्रि० स०) निराना, खेत की घास आदि
नलिका (सं० स्त्री०) छोटा नल, गोली और भीतर से पोली वस्तु, औषध विशेष।
नलिन (सं० पु०) कमल, नीरज, पद्म, पक्षि विशेष।
नलिनी (सं० स्त्री०) कमलिनी, एक प्रकार का कमल, जो रात को फूलता है, कोईं, कुमुद।

नलिया (सं० पु०) व्याध, बहेलिया ।

नली (सं० स्त्री०) औषध विशेष, मैनसिल, छोटा नल, गोलाकार और भीतर से पोली वस्तु, पैर के नीचे का भाग, बन्दूक का मुँह, जिसमें होकर गोली निकलती है ।

नलुआ (सं० पु०) पशुओं का एक रोग, छोटी नली ।

नल्ली (सं० स्त्री०) नली, औषध विशेष, पैर के नीचे की पिंडली ।

नव (वि०) नवीन, अभिनव, (सं० पु०) नौ की संख्या, स्तुति, स्तोत्र, पुनर्नवा, रत्न और ग्रह नव समझे जाते हैं, इस कारण कहीं कहीं केवल नव के प्रयोग से भी नवरत्नों और नवग्रहों का बोध होता है ।

नवकारिका (सं० स्त्री०) नई दुलहिन, पति के घर आई हुई नई दुलहिन ।

नवकुमारी (सं० स्त्री०) नौ कुमारियाँ, इनकी नवरात्र में देवी रूप से पूजा की जाती है, इनके नाम— कुमारिका, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चंडिका, शांभवी, दुर्गा और सुभद्रा हैं ।

नवखंड (सं० पु०) हिन्दू भूगोल के अनुसार पृथ्वी के नौ भाग, उनके नाम ये हैं, भारतखण्ड, इलावृत्त-, खण्ड, किंपुरुषखण्ड, भद्रखण्ड, केतुमालखण्ड हरिखण्ड, हिरण्यखण्ड, रम्यखण्ड और कुशखण्ड ।

नवग्रह (सं० पु०) ग्रह समूह की नौ संख्या, चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नवग्रह कहे जाते हैं । [करना, ख़ैरात करना ।

नवछावरि (सं० स्त्री०) न्योछावर, मङ्गल कामना से दान

नवतन (सं० पु०) नवीन, नव, नया, ताज़ा ।

नवति (वि०) नब्बे, नब्बे की संख्या, सौ से दस कम ।

नवदुर्गा (सं० स्त्री०) नवरात्र में पूजी जाने वाली नौ दुर्गाएँ, नव दुर्गा का नाम इस प्रकार है, शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कुष्माण्डा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धदात्री ।

नवद्वार (सं० पु०) शरीर का दार्शनिक नाम, भगवद्गीता में यह शरीर नवद्वार वाला नगर बतलाया गया है । नव इन्द्रियों के छेद द्वार माने गये हैं ।

नवद्वीप (सं० पु०) नदिया, पूर्व बंगाल का एक नगर, यहाँ पहले संस्कृत विद्या की बड़ी चर्चा थी, लोग दूर दूर से यहाँ पढ़ने आते थे, विशेषकर न्यायशास्त्र के पढ़ने वाले अधिक आते थे ।

नवधाभक्ति (सं० स्त्री०) नव प्रकार की भक्ति, भक्ति के दो भेद हैं, परा और अपरा । पराभक्ति में कोई भेद नहीं, क्योंकि वह अलौकिक है, पर अपराभक्ति लौकिक है और इसमें नौ भेद भक्ति के आचार्यों ने बतलाये हैं ; यथा श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन ।

नवन (सं० पु०) नमन, प्रणाम, झुकाव, नम्रता ।

नवना (क्रि० अ०) झुकना, नम्र होना, प्रणाम करना ।

नवनि (सं० स्त्री०) नम्रता, झुकाव, नीचे आना, सीधे से टेढ़ा होना ।

नवनिधि (सं० पु०) नव ख़ज़ाने, कुबेर के नौ ख़ज़ाने हैं । उनके नाम ये हैं—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और वर्च ।

नवनी (सं० स्त्री०) नवनीत, मक्खन ।

नवनीत (सं० पु०) मक्खन, दूध से निकाला हुआ घी ।

नवम (वि०) नवीं संख्या, नव को पूरण करने वाली संख्या ।

नवमांश (सं० पु०) नव भाग, नव भाग में एक भाग ।

नवमालिका (सं० स्त्री०) एक पुष्प का नाम, वर्णवृत्त विशेष ।

नवमी (सं० स्त्री०) शुक्ल और कृष्ण पक्षों की नवीं तिथि ।

नवयज्ञ (सं० पु०) वह यज्ञ जो नवीन अन्न के निमित्त किया जाय ।

नवयुवक (सं० पु०) नौजवान, युवा, तरुण ।

नवयौवना (सं० स्त्री०) तरुणी, युवती । [शोभा युक्त

नवरंग (वि०) रंगीला, सुन्दर, सुरूप, शोभायमान,

नवरंगी (वि०) नया नया, आनन्द करने वाला, हँसोड़ा हँसमुख, प्रसन्न चित्त, (सं० स्त्री०) एक फल का नाम, नारंगी ।

नवरत्न (सं० पु०) नौ प्रकार के रत्न, ये रत्न नवग्रह बाधा-शान्ति के लिए पहने जाते हैं । कहते हैं कि विक्रमादित्य की सभा में नौ सर्वश्रेष्ठ पण्डित रहते थे इस कारण उनकी यह सभा नवरत्न कही जाती थी उन नौ पण्डितों के नाम, धन्वन्तरि, क्षपणक अमरसिंह, शङ्कु, वैताल भट्ट, घटखर्पर, कालिदास वराहमिहिर, वररुचि, परन्तु अनुसन्धान करने वाले विद्वानों का कहना है कि यह नवरत्न की बात केवल कल्पना ही है, इसमें सत्यांश कुछ भी नहीं है क्योंकि ये नौ पण्डित एक समय के नहीं हैं ।

नवरस (सं० पु०) नवीन रस, काव्य के नौ रस, ये श्रृङ्गार, वीर, करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक, वीभत्स, रौद्र और शान्त हैं।

नवरात्र (सं० पु०) नव रात्रियों का समूह, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नौमी तक और आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नौमी तक को नौ रात्रि या नवरात्र कहते हैं। इन नव रात्रियों में आस्तिक हिन्दू देवी की पूजा करते हैं, पाठ करते हैं, घटस्थापन, कुमारी-पूजन आदि करते हैं। [तरुण, स्वच्छ, शुद्ध।

नवल (वि०) नवीन, नूतन, अभिनव, सुन्दर, युवा,

नवलकिशोर (सं० पु०) श्रीकृष्णचन्द्र। [एक भेद।

नवलबधू (सं० स्त्री०) सुन्दरी स्त्री, मुग्धा नायिका का

नववर्ष (सं० पु०) पृथ्वी के नवखण्ड, हिन्दू भूगोल के अनुसार पृथ्वी के नव भेद, नवीन वर्ष, प्रारम्भ होने वाला वर्ष।

नवबाला (सं० स्त्री०) नव यौवना, युवती, कमसिन स्त्री।

नवविंश (वि०) उनतीसवाँ, उनतीस की संख्या पूर्ण करने वाली संख्या। [नौ।

नवविंशति (वि०) उनतीस, एक कम तीस, बीस और

नवशिक्षित (सं० पु०) नया सीखा हुआ, नौसिखिया, नयी शिक्षा पाया हुआ, नयी प्रणाली के अनुसार शिक्षित। [मिलन।

नवसंगम (सं० पु०) प्रथम समागम, दम्पति का प्रथम

नवसत (सं० पु०) नौ और सात अर्थात् सोलह, यह शब्द सोलह श्रृङ्गार के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

नवसर (सं० पु०) आभूषण विशेष, नौलराहार।

नवाँ (वि०) नवम, नौ की संख्या पूर्ण करने वाली संख्या।

नवांश (वि०) नवम, नवां हिस्सा। [नया।

नवाई (सं० स्त्री०) नवन, नम्रता, विनय, (वि०) नवीन,

नवागत (सं० पु०) नवीन आया हुआ, अतिथि, अभी का आया हुआ।

नवाड़ा (सं० पु०) नाव, नौका।

नवाना (क्रि० स०) नम्र करना, झुकाना।

नवान्न (सं० पु०) नवीन अन्न, फ़सल का नया अन्न।

नवाब (सं० पु०) मुसलमान राजा, मुग़ल सम्राटों के समय सूबों के शासक नवाब कहे जाते थे, अंग्रेज़ी गवर्नमेंट की ओर से दी जाने वाली उपाधि, बना-ठना मनुष्य, शानो शौकत से रहने वाला।

नवाबी (सं० स्त्री०) नवाब का गुण, नवाब का पद, ऐशो आराम, नवाब के राज्य करने का समय, उच्छृङ्खलता, मनमाना व्यवहार, नियमों को न मान कर काम करना।

नवारना (क्रि० अ०) रमना, भटकना, घूमना।

नवारी (सं० स्त्री०) पुष्प विशेष।

नवासा (सं० पु०) नाती, बेटी का बेटा, दौहित्र।

नवासी (वि०) संख्या विशेष, नौ और अस्सी।

नवाह (सं० पु०) नौ दिन का अनुष्ठान, रामायण का पाठ नौ दिन में समाप्त करना, नवीन दिन, वर्ष-प्रारम्भ का नया दिन।

नवी (सं० स्त्री०) नोई, एक रस्सी जिससे दुहते समय गाय के पिछले पैर बाँधते हैं। [उत्पन्न हुआ।

नवीन (वि०) नया, ताज़ा, तत्काल का, थोड़े समय का

नवेद (सं० स्त्री०) निमन्त्रण-पत्र, निवेदन-पत्र, न्योता।

नवेला (वि०) नवीन, सुन्दर, नया, युवा, तरुण।

नवेली (सं० स्त्री०) सुन्दरी स्त्री, युवती स्त्री।

नवोढ़ा (सं० स्त्री०) नयी ब्याही स्त्री, नयी दुलहिन, जिसका नया ब्याह हुआ हो।

नव्य (वि०) नवीन।

नव्वे (वि०) ९०, नव दहाई।

नशना (क्रि० अ०) नष्ट होना, भाग जाना, ग़ायब होना, छिपना, बिगड़ना, ख़राब होना।

नशा (फ़ा० सं० पु०) एक प्रकार की उन्मादावस्था, मत्तता, नशीली चीज़ों के खाने से होने वाली मन की एक अवस्था।

नशाख़ोर (फ़ा० सं० पु०) नशा खाने वाला।

नशाना (क्रि० स०) बरबाद करना, नष्ट करना।

नशीला (वि०) अधिक नशा वाली वस्तु, मादक पदार्थ।

नश्तर (फ़ा० सं० पु०) जर्राहों का एक औज़ार, एक प्रकार की पतली और तेज़ छुरी, जिससे फोड़ा आदि चीरे जाते हैं।

मुहा०—नश्तर देना = फोड़ा चीरना।

नश्वर (वि०) विनाशी, भंगुर, नष्ट होने वाला, विनाशी स्वभाव वाला, कृत्रिम पदार्थ, संसार, परिवर्तन स्वभाव वाला पदार्थ।

नश्वरता (सं० स्त्री०) विनाशिता, भंगुरता।

नष्ट (वि०) बिगड़ा हुआ, ख़राब हुआ, विकृत हुआ,

जिसका रूपान्तर होगया हो, पहली अवस्था बिगड़ गयी हो, बुरा मनुष्य, दुर्जन, दुःस्वभाव वाला।
नष्टचित्त (वि०) हत बुद्धि, अज्ञान, मूढ़।
नष्ट चेतन (वि०) चेतनाहीन, बेहोश, अचेत।
नष्टचेष्ट (वि०) बेहोश, जिसके हाथ पैर फैलाने की शक्ति न रहे, मूर्च्छित।
नष्टचेष्टता (सं० स्त्री०) मूर्च्छा, अचेतनता, बेहोशी, इन्द्रियों की कर्तृत्व शक्ति नष्ट होने की अवस्था।
नष्टता (सं० स्त्री०) दुष्टता, शठता, भ्रष्टता। [हीन।
नष्टदृष्टि (वि०) अन्धा, दृष्टि-हीन, अविवेकी, विचारशक्ति-
नष्टप्रभा (वि०) क्षीणकान्ति, तेजोहीन, प्रभाहीन, वह पदार्थ जिसकी कान्ति नष्ट होगयी हो। [अविवेकी।
नष्टबुद्धि (वि०) बुद्धिहीन, निर्बुद्धि, विपरीत बुद्धि,
नष्टभ्रष्ट (वि०) टूटा फूटा, बिलकुल बेकाम, बिगड़ा हुआ।
नष्टसंस्मृति (वि०) स्मरणशक्ति विहीन।
नष्टा (सं० स्त्री०) भ्रष्टा, दुष्टा, कुलटा। [की तन्तु।
नस (सं० स्त्री०) रुधिर-वाहिनी नलिका, शरीर के भीतर
मुहा०—नस चढ़ना = शरीर की किसी नस का स्थान-च्युत होना, अपने स्थान से हट कर दूसरे स्थान में जाना।
नसकटा (सं० पु०) शक्तिहीन पुरुष, नपुंसक, हिजड़ा।
नसना (क्रि० अ०) नष्ट होना, बिगड़ना, बिगड़ जाना, बरबाद होना।
नसा (सं० स्त्री०) नाक, नासिका, (पु०) मद, नशा।
नसाना (क्रि० अ०) नष्ट होना, बिगड़ना, ख़राब होना।
नसाँठ (सं० पु०) अशकुन, अशुभ शकुन।
नसीनी (सं० स्त्री०) सीढ़ी, ज़ीना।
नसीपूजा (सं० स्त्री०) हल पूजा, खेत जोतने के पश्चात् जो हल की पूजा की जाती है।
नसीब (अ० सं० पु०) भाग्य, प्रारब्ध, तक़दीर।
मुहा०—नसीब होना = प्राप्त होना, मिलना।
नसीबवर (अ० वि०) भाग्यवान्, क़िस्मतवर।
नसीला (वि०) नशा की चीज़ें, अधिक नशा की चीज़ें, नस वाली वस्तु।
नसीहत (अ० सं० स्त्री०) उपदेश, सीख, लानत मलामत।
नसूड़िया (वि०) नसूर वाला, वह फोड़ा जिसमें नासूर होगया हो, संक्रामक रोग वाला अंग।
नसूर (सं० पु०) नासूर, नाड़ी-व्रण, विकृत फोड़ा।
नसैनी (सं० स्त्री०) सीढ़ी, निसेनी।
नस्ता (सं० स्त्री०) नाक का छेद, नथना।
नस्मा (सं० स्त्री०) पशुओं की नाक का छेद, जो नाथने के लिए किया जाता है। [वस्तु।
नस्य (सं० पु०) नस, सुँघनी, तमाकू की बनी सूँघने की
नहँछू (सं० पु०) विवाह की एक रीति जिसमें वर की हजामत बनती है, नाखून काटे जाते हैं और उसे मेंहदी आदि लगाई जाती है।
नह (सं० पु०) नख, नाखून।
नहक (वि०) दुर्बल, पतला।
नहट्टा (सं० पु०) खसोट, बकोट।
नहन (सं० पु०) रस्सा, जिससे पुरवट खींचा जाता है।
नहना (क्रि० अ०) लगाना, जोड़ना, जोतना, बाँधना, बाँध कर जोड़ देना।
नहन्ना (सं० स्त्री०) नहनी, नहरनी।
नहनी (सं०स्त्री०) नहरनी, नख काटने का एक औज़ार।
नहर (सं० स्त्री०) कृत्रिम जल-मार्ग, कुल्या, किसी नदी से काट कर उसमें से जल ले जाने के लिए बनाया हुआ मार्ग।
नहरनी (सं० स्त्री०) नख काटने का एक औज़ार।
नहरुआ (सं० पु०) रोग विशेष, कहते हैं कि कबूतर की बीट पानी के साथ पी जाने से यह रोग होता है। इस रोग के होने के पहले शरीर में सूजन होती है, उस सूजन के किसी स्थान पर घाव होता है और सूत के आकार को कोई चीज़ उसमें से निकलती है इस रोग में बड़ी पीड़ा होती है।
नहलाना (क्रि०स०) नहवाना, स्नान कराना।
नहवाना (क्रि० स०) स्नान कराना, नहलाना।
नहसुन (सं० पु०) नख चिह्न, नख का आकार, नख के गड़ाने का चिह्न।
नहाता (क्रि०अ०) स्नान करता।
नहान (सं० पु०) स्नान, स्नानपर्व, स्नान की तिथि।
नहाना (क्रि० अ०) स्नान करना, बाहरी शुद्धि के लिये जल से समस्त शरीर को धोना।
नहानी (सं० स्त्री०) रजस्वला स्त्री, जिसके लिए स्नान करना आवश्यक हो।
नहारमुँह (सं०पु०) उपवास, बिना खाये, बिना भोजन।
नहारवा, नहारुआ, नहारू (सं०पु०) देखो "नहरुआ"।

नहारी (सं० पु०) प्रातःकाल का जलपान, कलेवा, कलेऊ।

नहियर (सं० पु०) मैका, पीहर।

नहीं (अव्य०) निषेधार्थक, निषेध के अर्थ में इसका प्रयोग होता है, अभाव बोधक।

नहुष (सं० पु०) एक राजा, ये इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए थे। राजा अम्बरीष के पुत्र थे। राजा नहुष बड़े पराक्रमी और प्रतापी थे। एक बार वृहस्पति की सम्मति से इन्हें इन्द्र पद मिला। ये देवताओं पर शासन करने लगे। एक दिन इन्होंने इन्द्राणी को देखा और उस पर मोहित हो गये, इन्द्राणी इस कायम मुकाम इन्द्र की आज्ञा से आश्चर्यित हो गयी। उसने वृहस्पति को बुलाया और उनसे सम्मति पूछी। वृहस्पति की सम्मति से इन्द्राणी ने कहला भेजा कि वे (नहुष) सप्तऋषियों से उठाई हुई पालकी पर चढ़ कर मेरे यहां आवें और मुझे ले जाँय। नहुष ने वैसाही किया। नहुष ने सप्तऋषियों को पालकी में जोता और वे इन्द्राणी के पास चले, उसे जाने की जल्दी थी, इस लिये उसने ऋषियों को कहा "सर्प" (सर्प संस्कृत की क्रिया है और इसका अर्थ है जल्दी चलना) इस बात से सप्तऋषियों को क्रोध आया और अगस्त्य ने शाप दिया कि तुम सर्प हो जाओ। अगस्त्य के शाप से नहुष सर्प हुए। राजा युधिष्ठिर के संसर्ग से नहुष सर्प योनि से मुक्त हुए।

ऋग्वेद में नहुष शब्द आया है, यह बतलाना कठिन है कि वह नहुष शब्द इन्हीं नहुष के लिये आया है या किसी दूसरे राजा के लिए।

नहूसत (अ० सं० पु०) उदासीनता, मनहूसी।

मुहा०—नहूसत बरसना = मनहूसी के चिह्न प्रकट होना। नहूसत टपकना = मनहूसी बरसना। [कर जाना।

नाँघना (क्रि० स०) लाँघना, उल्लङ्घन करना, डाँकना, डाँक

नाँठना (क्रि० अ०) नष्ट भ्रष्ट होना, बिगड़ना, बिगड़ जाना, विपरीत होना, बुराई होना।

नाँद (सं० स्त्री०) बैल आदि पशुओं के खाने का मिट्टी का बड़ा पात्र, हौदा, हौदी। [होना, आनन्दित होना।

नाँदना (क्रि० अ०) शब्द करना, बोलना, गर्जना, प्रसन्न

नाँदिया (सं० पु०) महादेव का बैल, वृषभ, बैल।

नाँव (सं० पु०) नाम।

नाँह (अव्य०) नहीं।

ना (अव्य०) निषेधार्थक, अभाव बोधक, नहीं।

नाइक (सं० पु०) नायक, दल का अगुआ, मुखिया।

नाइत्तफ़ाक़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) विरोध, बैर, फ़ूट, प्रेम नहीं, प्रेम का अभाव।

नाइन (सं० स्त्री०) नाई जाति की स्त्री। [तुल्य।

नाई (सं० स्त्री०) समान, सदृश, उपमा, एक समान,

नाई (सं० पु०) हज्जाम, हजामत करने वाला, नापित, एक जाति, इस जाति के लोग हजामत बनाने का पेशा करते हैं।

नाउन (सं० स्त्री०) नाई की स्त्री, नाई जाति की स्त्री।

नाउम्मेद (फ़ा० वि०) निराश, हताश।

नाऊँ (सं० पु०) नाँव, नाम।

नाऊ (सं० पु०) देखो "नाई"। [आदि।

नाकंद (वि०) अल्हड़, गाड़ी में न निकाले हुए घोड़े

नाक (सं० स्त्री०) इन्द्रिय विशेष, श्वास प्रश्वास लेने की इन्द्रिय, नासिका, नासा।

मुहा०—नाक कटना = अप्रतिष्ठा होना, बेइज़्ज़ती होना। नाक काटना = किसी की प्रतिष्ठा नष्ट करना, भारी दण्ड देना। नाक का बाल = प्यारा, अधिक प्रिय। नाक की सीध में = बिना रोक टोक, बिना सन्देह। नाक चढ़ना = क्रोध आना। नाक चढ़ाना = क्रोध करना। नाकों चने चबवाना = तंग करना, कष्ट देना, दण्ड देना। चाहे इधर से नाक पकड़ो चाहे उधर से = समान फल होना, कोई भी व्यापार किया जाय, फल एक ही होना। नाक पर सुपारी भाँजना = ऐंठना, अभिमान करना, ख़ूब तंग करना। नाक भौं सिकोड़ना = अपनी असम्मति प्रकाशित करना, अप्रसन्नता बतलाना। नाक में दम करना = तंग करना, सताना, व्याकुल करना। नाक रगड़ना = ख़ुशामद करना। नाकों आना = तंग हो जाना, हैरान होना। नाक सिकोड़ना = अप्रसन्नता बतलाना, अपनी असम्मति प्रकट करना।

नाकड़ा (सं० पु०) नाक का एक रोग, नकड़ा, इस रोग में नाक में फोड़ा होता है, नाक पर कुछ सूजन आ जाती है जुकाम हो जाता है और थोड़ा थोड़ा ज्वर भी रहता है।

नाकनटी (सं० स्त्री०) स्वर्ग की नर्तकी, स्वर्ग-वेश्या, अप्सरा।

नाकना (क्रि० स०) नाकों आना, तंग होना, लांघना, [डाँकना, उछल कर कूदना।

नाकपति (सं० पु०) देवराज, इन्द्र।

नाकपृष्ठ (सं० पु०) स्वर्ग, स्वर्ग की भूमि।

नाका (सं० पु०) मुहाना, निकलने का रास्ता, नगर का प्रवेश-द्वार, चौकी, सुई का छेद, मगर, घरियार।

नाकाबन्दी (सं० स्त्री०) घेरा डालना, घिराव, प्रवेश-द्वार का बन्द करना, आने जाने की रुकावट।

नाक़ाबिल (वि०) क़ाबिल नहीं, अयोग्य।

नाकिन (सं० स्त्री०) वह स्त्री, जो नाक से बोले।

नाक़िस (अ० वि०) ख़राब, बुरा, अच्छा नहीं।

नाकेदार (सं० पु०) नाका पर रहने वाला, नाके की रक्षा करने वाला, नगर-द्वार की रक्षा करने वाला हाकिम।

नाखना (क्रि० स०) रखना, रख छोड़ना, नष्ट करना, ख़राब करना, बिगाड़ना, नष्ट-भ्रष्ट करना।

नाखुना (सं०पु०) रोग विशेष, आँख का एक रोग।

नाख़ुश (फ़ा० वि०) अप्रसन्न, क्रोधित, कोपित।

नाख़ुशी (सं० स्त्री०) क्रोध, अप्रसन्नता, कोप।

नाख़ून (सं० पु०) नख, नह।

मुहा०—नाख़ून लेना = नाख़ून काटना।

नाग (सं० पु०) सर्प, योनि विशेष, नाग कश्यप और कद्रु के पुत्र हैं, जाति विशेष, प्राचीन समय में नाग वंश के क्षत्रियों का पता मिलता है। इतिहास-वेत्ता कहते हैं कि नागवंश शकजाति से निकला था। ये नागवंशी विशेषकर हिमालय के उस पार रहते थे, भारत में भी इन के रहने का पता मिलता है।

नागउरग (सं० पु०) धातु विशेष, सीसा।

नागकन्या (सं० स्त्री०) नाग जाति की कन्या, नाग कन्याएँ बड़ी सुन्दरी होती थीं और उनसे भारतीय राजाओं का भी संबन्ध होता था।

नागकेसर (सं० पु०) एक वृक्ष, पुष्प विशेष।

नाग गर्भ (सं० पु०) सिन्दूर।

नागचाम्पेय (सं० पु०) नागकेशर वृक्ष।

नागदन्त (सं० पु०) हाथी का दाँत, गजदंत, खूँटी।

नागदन्तक (सं० पु०) खूँटी, ताख, आला।

नागदन्ती (सं० स्त्री०) श्रीहस्तिनी, इन्द्रवारुणी, विशल्या।

नागदमन (सं० पु०) एक पौधे का नाम।

नागदमनी (सं० स्त्री०) पौधा विशेष।

नागदौन (सं० पु०) नागदमन का पौधा, लोगों का कहना है कि इस पौधे के पास या इसकी लकड़ी जहाँ हो वहाँ साँप नहीं आता।

नागदौना (सं० पु०) एक पौधा जिसमें डालियाँ और टहनियाँ नहीं होतीं।

नागन (सं० स्त्री०) साँपिन, नाग की मादा, सर्पिणी।

नागपञ्चमी (सं०स्त्री०) श्रावण शुक्ल पक्ष की पञ्चमी, इस दिन नाग की पूजा होती है, दूध और खिल्ली से नाग-पूजा की जाती है। इस दिन जो नाग-पूजा करता है उसे सर्प का भय नहीं होता।

नागपाश (सं० पु०) अस्त्र विशेष, यह वरुण का अस्त्र है। मेघनाद ने इन्द्र से नागपाश पाया था। अढ़ाई फेरे के बन्धन को नागपाश कहते हैं।

नागपुर (सं० पु०) पाताल के एक नगर का नाम जिसको भोगवती कहते हैं, नागों की राजधानी, हस्तिनापुर। मध्य प्रदेश का इस नाम का मुख्य नगर।

नागफनी (सं० स्त्री०) थूहर की जाति का पौधा, एक कटीला पौधा

नागफाँस (सं० पु०) नागपाश, वरुणास्त्र।

नागबल (सं० पु०) दस हज़ार हाथियों का बल जिसको हो, भीम को दस हज़ार हाथियों का बल था इस कारण वे नागबल कहे जाते थे।

नागबला (सं० स्त्री०) एक पौधा, गँगेरन, यह पुष्टई की औषधि के काम आता है।

नागबेल (सं० स्त्री०) पान की लता, नागवल्ली, बेलबूटा, [घोड़े की एक चाल।

नागभाषा (सं० स्त्री०) प्राकृत भाषा।

नागमाता (सं० स्त्री०)नागों की माता, कद्रु, रामायण में एक नागमाता का नाम सुरसा लिखा है।

नागमुख (सं० पु०) हाथी के मुख के समान मुख वाला, [गणेश।

नागयष्टि (सं० स्त्री०) एक प्रकार का लट्ठा या खंभा जो तालाब के बीचोबीच गाड़ा जाता है।

नागरंग (सं० पु०) फल विशेष, नारंगी, वृक्ष विशेष।

नागर (सं० पु०) नगर संबन्धी, नगर में रहने वाला, नागरिक, चालाक, चतुर, चलता पुर्ज़ा, लोक व्यवहार में चतुर, गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति, इस जाति के प्रधान दो भेद होते हैं, बड़नगरा और विसनगरा।

नागरबेल (सं० स्त्री०) नागवल्ली, ताम्बूल, पान की लता।

नागरमोथा (सं० पु०) एक पौधे का नाम, यह प्रायः

जलाशयों के पास होता है, इसकी जड़ दवा के काम में आती है। [एक छन्द का नाम।

नागराज (सं० पु०) सर्पराज, वासुकि, अनन्त शेषराज,

नागरिक (वि०) नगर में उत्पन्न, नगर में होने वाला, नागर, नगर संबन्धी, चतुर, चालाक, सभ्य।

नागरिपु (सं० पु०) नकुल, मोर, न्यौला, गरुड़, हाथी का बैरी, सिंह।

नागरी (सं० स्त्री०) नगर की वस्तु, नगर की स्त्री, चतुरा स्त्री, नगर में रहने वाली स्त्री, अक्षर, लिखावट, लिपि जो भारत की प्रधान लिखावट है, इसका पूरा नाम देवनागरी है, पर लोग नागरी भी कहते हैं, भारतवर्ष में इसका सब लिपियों से अधिक प्रचार है।

नागल (सं० पु०) हल, लाङ्गल। [का स्थान।

नागलोक (सं० पु०) पाताल, रसातल, नागों के रहने

नागवंश (सं० पु०) नागकुल, इस वंश के लोग कुछ दिनों तक भारत में प्रान्त विशेष के शासक थे। प्राचीन ग्रन्थों से मालूम होता है कि नौ नागवंशियों ने भारत के प्रान्त विशेष में राज्य किया था यह नागवंश शक जाति की एक शाखा है, जो हिमालय के उत्तर की ओर रहती थी।

नागवंशी (सं० पु०) नागवंश में उत्पन्न, नागवंश में उत्पन्न होने वाले मनुष्य। [अप्रिय।

नागवार (फ़ा० वि०) सहने के अयोग्य, असहनीय, बुरा,

नागशुद्धि (सं० स्त्री०) एक प्रकार की वस्तु शुद्धि, मकान बनाने में नागों का विचार।

नागा (सं० पु०) संन्यासियों की एक शाखा, दशनामी संन्यासी का एक भेद। ये संन्यासी नंगे रहते हैं। पूर्व बंगाल की एक जाति, एक पर्वत का नाम, अनध्याय, अन्तर, बीच, नागा करना, बीच में काम रोक देना, क्रम को रोकना। [सिंह।

नागान्तक (सं० पु०) नागों के शत्रु, गरुड़, मोर, मयूर,

नागारि (सं० पु०) मोर, मयूर, गरुड़, न्यौला।

नागार्जुन (सं० पु०) एक प्रसिद्ध रसायन शास्त्री, ये विदर्भ देश के रहने वाले थे, पहले ये वैदिक धर्म को मानने वाले थे पीछे से बौद्ध धर्म के अनुयायी हो गये थे। ईसा के सौ वर्ष पहले ये वर्तमान थे। रसायन संबन्धी कई ग्रन्थ इन्होंने संस्कृत में लिखे हैं।

नागिन (सं० स्त्री०) नाग की स्त्री, नाग जाति की स्त्री, नागों की अपेक्षा नागिनों में अधिक विष होता है, इनका डसा हुआ मनुष्य जीता नहीं, ये क्रोधिन और घातक होती हैं। क्रूरता के लिए इनकी उपमा दी जाती है। किसी घातक स्त्री को यदि वह क्रूर हुई और उससे कोई बुरा काम हुआ तो लोग उसे नागिन कहते हैं। शरीर पर की भौंरी, यह बालों के गोल हो जाने से बन जाती हैं, अंग विशेष में होने के कारण इनका फल अच्छा भी होता है और बुरा भी।

नागेन्द्र (सं० पु०) सर्पराज, ऐरावत, हिमालय।

नागेश्वर (सं० पु०) शेषनाग, महादेव, वैद्यक का एक प्रसिद्ध रस। [ये काशी निवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण थे।

नागोजी भट्ट (सं० पु०) एक संस्कृत वैयाकरण का नाम,

नागोद (सं० पु०) ढाल विशेष, यह ताँबे का या लोहे का बनता है।

नागौर (सं० पु०) मारवाड़ के एक नगर का नाम, यह गाँव अच्छे बैल और गायों के कारण भारत में प्रसिद्ध है, यहाँ का जलवायु गाय बैलों के लिए बड़ा ही उत्तम है।

नागौरा (सं० पु०) नागौर का बैल, यह उत्तम बैल होता है। [होती है।

नागौरी (सं० स्त्री०) नागौर की गाय, यह अच्छी गाय

नाघना (क्रि०) लाँघना, डाक जाना, डाकना।

नाच (सं० पु०) नृत्य, अंगों के द्वारा भाव प्रकाश करना, नर्तन, संगीत का एक अंग।

मुहा०—नाच काछना = नाचने के लिए उद्यत होना। नाचने वाले को घूँघुट क्या = जिस काम को करना उत्तमता से करना, जब करने ही लगे तो लाज क्यों। नाच नचाना = अधीन करके जैसा चाहे वैसा कराना। [स्थान जहाँ नाच हो।

नाचघर (सं० पु०) नाच का स्थान, नृत्यशाला, वह

नाचना (क्रि० अ०) नाच करना, नृत्य करना।

मुहा०—सिर पर नाचना = उपस्थित होना, सामने आ जाना, प्रत्यक्ष होना, दिखायी पड़ना, ध्यान बना रहना, उछलना, कूदना, क्रोध से हाथ पैर पटकना।

नाचमहल (सं० पु०) नाचघर, नृत्यशाला, राजाओं का नाचघर।

नाचहिं (क्रि०) नाचते हैं।

नाचिकेत (सं० पु०) प्रसिद्ध तपस्वी।

नाचीज़ (फ़ा० वि०) तुच्छ, व्यर्थ, निःसार।

नाज (सं० पु०) अनाज, अन्न।

नाज़ (फ़ा० सं० पु०) कोमलता की ऐंठ,, हावभाव, नख़रा। मुहा०—नाज़ उठाना = नख़रा सहना।

नाजायज़ (अ० वि०) अनुचित, नियम-विरुद्ध, अनियमित, बेक़ानूनी।

नाज़िम (अ० सं० पु०) प्रबन्धकर्ता, राज्य का प्रबन्धकर्ता, प्रधान प्रबन्धकर्ता।

नाज़ुक (फ़ा० वि०) कोमल, सुकुमार, दुर्बल असहनशील प्रकृति वाला, शीत गरमी सहने की शक्ति न रखने वाला।

नाज़ुकदिमाग़ (फ़ा० वि०) दुर्बल मस्तिष्क का मनुष्य जो थोड़े परिश्रम से घबड़ा जाय, जो अधिक परिश्रम न कर सके।

नाज़ुक मिज़ाज (वि०) कोमल स्वभाव का मनुष्य, सुकुमार स्वभाव, तनिक सर्दी गर्मी से जिसकी तबियत ख़राब हो जाय, थोड़ी थोड़ी बातों पर क्रोध करने वाला।

नाट (सं० पु०) वासस्थान, नृत्य, नाच।

नाटक (सं० पु०) काव्य विशेष, दृश्यकाव्य का एक भेद। काव्य दो प्रकार के माने गये हैं, दृश्य और श्रव्य, श्रव्यकाव्य वे हैं जो सुने या पढ़े जाँय और दृश्यकाव्य वे हैं जो अभिनय आदि के द्वारा देखे जाँय। दृश्यकाव्य भी दो प्रकार के होते हैं एक रूपक और दूसरा उपरूपक। रूपक दस प्रकार के होते हैं। रूपक में का एक नाटक है।

नाटक में गद्य और पद्य दोनों होना चाहिए, किसी प्रसिद्ध कथा के आधार पर नाटक का निर्माण करना चाहिए, इसमें पञ्चसन्धियों का समावेश होना चाहिए, ऐश्वर्य का ख़ूब वर्णन, धीरोदात्त सिद्ध कुल का कोई राजा, देवता, मनुष्य या देवयोनि का कोई नायक होना आवश्यक है। हिन्दी में नाटक कहने से प्रायः दृश्यकाव्य मात्र का बोध होता है।

नाटकशाला (सं० स्त्री०) नाटकगृह, वह स्थान जहाँ नाटक खेला जाता है।

नाटकावतार (सं० पु०) एक नाटक की कथा के समाप्त होने के पहले किसी दूसरे नाटक की कथा का प्रारम्भ होकर समाप्त हो जाना। एक नाटक के भीतर दूसरे नाटक का दिखाया जाना।

नाटकी (सं० पु०) नाटक वाला, नाटक करने वाला, नकलची, नक़ल करने वाला, स्वांग दिखाने वाला, मसख़रा।

नाटकीय (वि०) नाटक संबन्धी, नाटक के पात्र, नाटक की कथा।

नाटन (सं० पु०) नाच, नृत्य।

नाटना (क्रि० अ०) नटना, कही बात से फिर जाना, प्रतिज्ञा तोड़ना, एक बार स्वीकार करके पुनः अस्वीकार करना।

नाटा (सं० पु०) छोटा बैल, छोटे क़द और थोड़े दाम का बैल, तेली का नाटा।

नाटिका (सं० स्त्री०) दृश्यकाव्य के उपरूपक का एक भेद, यह नाटक के समान ही होता है, पर इसकी कथा कल्पित होती है।

नाटित (वि०) अभिनीत, नटों के द्वारा अभिनय किया हुआ।

नाटी (वि०) बौनी, छोटी।

नाटेय (सं० पु०) वेश्या-पुत्र, नटी-पुत्री।

नाट्य (सं० पु०) नट-कर्म, अभिनय, शरीर की चेष्टा द्वारा कोई दृश्य प्रकाशित करना।

नाट्यकार (सं० पु०) नाटक का अभिनय करने वाला।

नाट्यमन्दिर (सं० पु०) नाट्यशाला, नाटकगृह।

नाट्यरासक (सं० पु०) एक उपरूपक का नाम, इसमें केवल एक ही अंक होता है।

नाट्यशाला (सं० स्त्री०) नाट्यमन्दिर, अभिनय करने का स्थान।

नाट्यशास्त्र (सं० पु०) नटविद्या का उपदेश देने वाला शास्त्र, यह एक उपवेद है, इसका दूसरा नाम गान्धर्व वेद है। ब्रह्मा, शिव, इन्द्र आदि इस विद्या के आचार्य हैं। इस नाम की एक पुस्तक, इसके कर्ता भरत मुनि हैं।

नाट्यालंकार (सं० पु०) नाटकों की शोभा बढ़ाने वाले अलङ्कार, उन अलङ्कारों की संख्या तेंतीस है।

नाट्योक्ति (सं० स्त्री०) नाटक सम्बन्धी बात।

नाठ (सं० पु०) अभाव, रहित, शून्य।

नाठना (क्रि० स०) नाँठना, नष्ट करना, बिगाड़ना, गाय का दूध देना बन्द होना, अस्वीकार करना, प्रतिज्ञा से हट जाना।

नाठा (सं० पु०) असहाय, अकेला, अनाथ।

नाड़ (सं० स्त्री०) ग्रीवा, गरदन, गला।

नाड़ा (सं० पु०) इज़ारबन्द, पाजामा या स्त्रियों के घाँघरा बाँधने की सूत की डोरी, यह रेशम, कलाबत्तू आदि से भी बनाई जाती है।

नाड़िका (सं० स्त्री०) एक घड़ी, साठ पल।

नाड़िया (सं० पु०) वैद्य, चिकित्सक, दवा देने वाला, नाड़ी परीक्षा करने वाला।

नाड़ी (सं० स्त्री०) जीव से संबन्ध रखने वाली रक्त-वाहिनी नाली, इनके द्वारा बात, पित्त, कफ़ की समता विषमता आदि का ज्ञान होता है। नाड़ी कई हैं और वे शरीर भर में व्याप्त हैं, उनके द्वारा समस्त शरीर में रक्त पहुँचाया जाता है। काल का एक मान, छः क्षण का काल।

मुहा०—नाड़ी छूटना = मर जाना, नाड़ी की गति का बन्द होना। नाड़ी धरना = नाड़ी के द्वारा रोग की परीक्षा करना।

नाड़ीचक्र (सं० पु०) शरीरस्थ षट्चक्रों में का एक चक्र, यह चक्र नाभि के समीप है और यहीं से निकल कर अन्य सब नाड़ियाँ शरीर के अन्य स्थानों में गयी हैं, मूलचक्र।

नाड़ीतिक्त (सं० पु०) औषध विशेष, चिरायता।

नाड़ीधर्म (सं० पु०) सुनार, सुवर्णकार। [एक चक्र।

नाड़ीनक्षत्र (सं० पु०) वर-वधू की गणना करने का

नाड़ीयन्त्र (सं० पु०) नाड़ी के आकार का एक यन्त्र, यह शरीर में घुसी किसी वस्तु के निकालने के काम आता था।

नड़ीव्रण (सं० पु०) घाव की विकृत अवस्था, वह घाव जिसमें भीतर ही भीतर छेद हो जाता और उससे मवाद निकला करता है, नासूर।

नात (सं० पु०) बन्धु, कुटुम्ब, नतइत, नातेदार।

नातर (क्रि० वि०) निश्चित, संशय-रहित।

नातरु (अव्य०) नहीं तो, पक्षान्तर, यह बात नहीं तो और क्या, ऐसा नहीं तो, अन्यथा।

नातवाँ (फ़ा० वि०) दुर्बल, बलहीन, नाताकत।

नाता (सं० पु०) संबन्ध, समान गोत्र वालों का कुल परम्परागत संबन्ध, विवाह आदि के द्वारा उत्पन्न संबन्ध।

नाताक़त (फ़ा० वि०) बलहीन, जिसे ताक़त न हो, दुर्बल।

नातिन (सं० स्त्री०) लड़की की लड़की, कन्या की कन्या।

नाती (सं० पु०) लड़की का लड़का, नप्ता।

नाते (क्रि० वि०) नाता से, संबन्ध से, लिए, वास्ते, निमित्त, हेतु।

नातेदार (सं० पु०) संबन्धी।

नाथ (सं० पु०) प्रभु, स्वामी, मालिक, उपास्य देवता, इष्ट देवता, ईश्वर, भगवान्, एक सम्प्रदाय, कनफटा सम्प्रदाय, इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक गुरु गोरखनाथ हैं। इस सम्प्रदाय वाले साधुओं के नाम के साथ नाथ शब्द जुड़ा रहता है, गोरखनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ आदि।

नाथना (क्रि० स०) बैल, भैंसे आदि की नाक में छेद करना, वश में करना, आधीन करना, उपायों द्वारा अपने अधीन कर लेना। [करना।

मुहा०—नाक पकड़ कर नाथना = बल पूर्वक वश में

नाथद्वारा (सं० पु०) एक नगर का नाम, वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के गोस्वामियों का प्रधान स्थान, वहाँ श्रीनाथजी की मूर्ति स्थापित है, वहाँ के गोस्वामी जी "टिकेत महाराज" कहे जाते हैं।

नाद (सं० पु०) शब्द, ध्वनि, स्वर, गरज, अव्यक्त ध्वनि, शब्दों का मूलरूप ध्वनि।

नादन (सं० पु०) देखो "नाद" । [ध्वनि का होना।

नादना (क्रि० स०) बजना, स्वयं शब्द करना, अव्यक्त

नादान (फ़ा० वि०) मूर्ख, निर्बुद्धि, नासमझ। [अज्ञान।

नादानी (सं० स्त्री०) मूर्खता, नासमझी, अविवेकता,

नादित (वि०) शब्दित, ध्वनित, शब्द कराया हुआ, बजाया हुआ।

नादिरशाह (सं० पु०) फ़ारस के एक बादशाह का नाम, यह बड़ा ही क्रूर और वीर था। उस समय के बादशाहों के समान यह भी ज़बरदस्ती लूट करता था। भारत में भी यह आया था, दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह पर आक्रमण किया, मुहम्मद शाह से तो कुछ होना जाना था नहीं, इसने ख़ूब लूटा और क़तलेआम की आज्ञा दी, बारह घंटे तक इसके ख़ूंख़ार सिपाही यहाँ क़तल करते रहे।

नादिरशाही (सं० स्त्री०) अन्याय, अत्याचार, सताने के लिए लूटपाट करना, धर्म और क़ानून को तोड़ना, प्रसिद्ध क्रूर बादशाह नादिरशाह के गुणों को काम में लाना।

नादिहंद (वि०) लौटाने में असमर्थ, ली हुई वस्तु को लौटाने की शक्ति न रखने वाला, न देने वाला।

नाधना (क्रि० स०) जोतना, जोड़ना, बैल आदि को हल तथा गाड़ी में जोड़ना, बाँधना, बैल आदि को जूए के

साथ बाँधना, लगाना, तत्पर कराना, चलाना, प्रारम्भ करना ।

नाधा (सं० पु०) नाधने की रस्सी, यह चमड़े की रस्सी का बना हुआ होता है, इससे हरिस को जूए में जोड़ते हैं ।

नानक (सं० पु०) सिक्ख सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक, पंजाब के रावी नदी के तीर तिलौंडी नामक गाँव में इनका जन्म हुआ था । इनके पिता का नाम कल्लू था और वे साधारण स्थिति के गृहस्थ थे । उन्होंने अपने पुत्र नानक को पढ़ने के लिए पाठशाला में भेजा, पर नानक ने पढ़ने लि ने में कुछ विशेष ध्यान न दिया, बाल्यावस्था से ही इनके आचरणों से इनमें कुछ विशेषता मालूम होती थी । थोड़ा बड़ा होने पर इन्होंने अपना उपदेश देना प्रारम्भ किया । पञ्जाबी बोली में इनके उपदेश ग्रन्थसाहब के नाम से प्रसिद्ध हैं, सिक्ख सम्प्रदाय में ग्रन्थसाहब का बड़ा आदर है । नानक के मत में कोई भेदभाव न था । हिन्दू और मुसलमान दोनों को ये बराबर उपदेश देते थे, दोनों को बराबर धर्मोपदेश के अधिकारी समझते थे । हिन्दू और मुसलमान दोनों ही इनके शिष्य थे । कहते हैं कि नानक की मृत्यु के बाद इनके अन्त्येष्टि संस्कार के लिए हिन्दू मुसलमान चेलों में भयंकर विद्रोह हो गया था । हिन्दू अपनी रीति के अनुसार इनका अन्त्येष्टि संस्कार करना चाहते थे और मुसलमान अपनी रीति से । इसी मतभेद के कारण इनमें झगड़ा हुआ । इसी बीच में देखा गया तो शव गायब, झगड़ा मिट गया और आधा आधा कफ़न फाड़ कर चेलों ने सन्तोष किया ।

नानकपन्थी (सं० पु०) नानक धर्मोपदेश के अनुसार चलने वाला, नानक सम्प्रदायी, सिख ।

नानकशाही (सं०स्त्री०) सिख, नानक को मानने वाला ।

नानकार (सं० पु०) माफी ज़मीन, कर-रहित भूमि, वह भूमि, जिसके लिए मालगुज़ारी न देनी पड़े ।

नानखताई (सं० स्त्री०) टिकिया के आकार की एक सोंधी खस्ता मिठाई । [कर बेचने वाला ।

नानबाई (सं० पु०) रोटी की दूकान करने वाला,रोटी बना

नानसरा (सं०पु०) ननिया ससुर,पति या स्त्री का नाना ।

नाना (वि०) अनेक, बहुत, विविध, भाँति भाँति, (सं० पु०) माता का पिता, मातामह ।

नानाकार (सं० पु०) अनेक रूप के, अनेक आकार के, विविध भाँति के । [प्रकार के कारण ।

नानाकारण (सं० पु०) भाँति भाँति के कारण, अनेक

नानाजातीय (सं० पु०) अनेक प्रकार, अनेक तरह ।

नानात्मा (सं० पु०) आत्म-भेद, पृथक् पृथक् आत्मा ।

नानाध्वनि (सं० पु०) अनेक प्रकार के शब्द ।

नानाप्रकार (क्रि०वि०) बहुत भाँति, अनेक रीति ।

नानाभाँति (क्रि० वि०) तरह तरह, भाँति भाँति ।

नानामत (सं०पु०)भिन्न भिन्न मत, तरह तरह के विचार ।

नानारूप (सं० पु०) अनेक प्रकार ।

नानार्थ (सं० पु०) अनेक अर्थ, बहुत अर्थ ।

नानाविधि (क्रि० वि०) अनेक प्रकार, अनेक उपाय ।

नानाशास्त्रज्ञ (सं०पु०)विविध विद्या विशारद, षट्शास्त्री ।

नानिहाल (सं०पु०)माता का जन्म-स्थान, नानी का घर ।

नानी (सं० स्त्री०) माता की माता, नाना की स्त्री ।

मुहा०—नानी मरना=दुःख पड़ना, किंकर्तव्य विमूढ़ होना । नानी याद आना=कष्ट होना, दुःख होना ।

नानुकर (सं० पु०) नाहीं, अस्वीकार, सन्देह ।

नान्द (सं० पु०) मट्टी का बड़ा पात्र ।

नान्दिया (सं० पु०) शिव-वाहन, वृषभ ।

नान्ह (वि०) छोटा, बच्चा, बालक । [बालक ।

नान्हरिया (सं० पु०) छोटा बच्चा, बालक, प्यारा

नान्हा (वि०) नान्ह, छोटा ।

नाप (सं० स्त्री०) परिमाण, उँचाई, मोटाई आदि का परिमाण, तौल, वजन, किसी वस्तु के आकार या वजन का निश्चय । [विधि या काम ।

नापजोख (सं० स्त्री०) नापना, तौलना, नापने तौलने की

नापतौल (सं० स्त्री०) नापना, तौलना, नाप तौल कर निर्धारित किया हुआ ।

नापना (क्रि० स०) उँचाई, लम्बाई, चौड़ाई आदि का परिमाण करना, किसी वस्तु का आकार निश्चित करना, पता लगाना, अन्दाज़ करना, कूतना ।

नापसन्द (फ़ा० वि०) अप्रिय, अच्छा न लगने वाला, बुरा मालूम होने वाला ।

नापाक (वि०) पाक नहीं, अपवित्र, अशुद्ध ।

नापाति (सं० पु०) नाऊ,एक जाति, इस जाति के मनुष्य बाल काटने का पेशा करते हैं ।

नाबदान (फ़ा० सं० पु०) पनाला, नाली, पनारा, मोरी, घर का पानी बहने की नाली।

नाबालिग़ (अ० वि०) अवयस्क, बालक जिसका लड़कपन अभी दूर न हुआ हो, जिस पर अभी प्रबन्ध आदि का भार न दिया जा सकता हो, अप्रौढ़ बुद्ध। [गया हो।

नाबूद (फ़ा० वि०) नष्ट, जिसका नामो निशान मिट

नाभा (सं०पु०) प्रसिद्ध भक्तमाल के रचयिता, भक्त और कवि। इनकी जाति के विषय में बड़ी गड़बड़ी है। किसी ने इन्हें हनुमान वंश का बतलाया है, किसी ने डोम वंश का लिखा है और किसी का कहना है कि ये ब्राह्मण-पुत्र थे। गोदावरी के तीर पर किसी गाँव में इनका जन्म हुआ था, इनके पिता का स्वर्गवास इनकी बाल्यावस्था में ही हो गया था। जब इनकी अवस्था पाँच वर्ष की हुई तब उस प्रदेश में बड़ा अकाल पड़ा, इनकी बिधवा माता या तो अन्न के बिना मर गई या इन्हें छोड़ कर चली गई, किसी साधु ने घटनाक्रम से इन्हें देखा और वे उठा ले गये। नाभा जयपुर के पास गलता नामक स्थान में पहुँचे, वहाँ ही ये रहने लगे। साधुओं के साथ से इनको ज्ञान हुआ और इन्होंने भक्तमाल नाम की पुस्तक लिखी, इस पुस्तक में भक्तों के चरित्र का वर्णन किया गया है। ये सोलहवीं सदी के मध्य भाग में हुये।

नाभि (सं० स्त्री०) अंग विशेष, ढोंढी, पेट के नीचे की ओर कुछ गहरा भाग, जहाँ गर्भावस्था में नाल रहता है। उपजाऊ खेत, पृथिवी का मध्य भाग, मध्य भाग, प्रधान, मुख्य। [समय नाल काटने का संस्कार।

नाभिछेदन (सं० पु०) नाल काटना, बालक के जन्म के

नाभिज (सं० पु०) ब्रह्मा, विष्णु-नाभि से उत्पन्न।

नाभिवर्ष (सं० पु०) भारत वर्ष, हिन्दुस्तान।

नामंजूर (अ० वि०) अस्वीकृत, स्वीकार नहीं।

नाम (सं० पु०) अभिधान, संज्ञा, वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, नामधेय।

मुहा०—नाम उठना = नाम मिट जाना, वंश नाश होना, कोई चिह्न न रह जाना। नाम करना = यश फैलाना। नाम के लिये करना = थोड़ा सा करना। नाम का = अनर्थक, व्यर्थ। नाम का कुत्ता पालना = घृणा करना। नाम के लिये = अनुपयोगी। नाम को भी = थोड़ा भी, कुछ भी। नाम चमकना = यश फैलना। नाम जपना = सदा स्मरण करते रहना। नाम धरना = निन्दा करना, दोष निकालना। नाम धराना = निन्दित होना।

नामक (वि०) नाम वाला, यह नाम वाची शब्द के अन्त में लगता है जैसे—जगन्नाथ प्रसाद नामक मनुष्य कहाँ है?

नामकरण (सं० पु०) नाम रखने का संस्कार, बालक का नामकरण संस्कार, जन्म-दिन के दसवें दिन यह संस्कार किया जाता है।

नामकर्म (सं० पु०) नामकरण संस्कार

नामकीर्तन (सं० पु०) भगवान् के नाम का स्मरण करना, नवधाभक्ति का एक भेद। [माल में लिखी है।

नामदेव (सं० पु०) एक भक्त का नाम, इनकी कथा भक्त-

नामधराई (सं० स्त्री०) अप्रतिष्ठा, बदनामी, बेइज़्ज़ती।

नामधाम (सं० पु०) पता ठिकाना, नाम और स्थान।

नामधारक (सं० पु०) नाम धारण करने वाला, केवल नाम का, नाम मात्र का, गुणहीन, कर्महीन।

नामधारी (सं० पु०) नाम धारण करने वाला, प्रतिष्ठित, नामक, नाम वाला। [नाम धाम, नाम और चिह्न।

नामनिशान (फ़ा० सं० पु०) नाम पता, पता ठिकाना,

नामर्द (फ़ा० सं० पु०) नपुंसक, हिजड़ा।

नामलेवा (वि०) नाम लेने वाला, नाम वाला, वंशधर, नाम रखने वाला, उत्तराधिकारी।

नामवर (फ़ा० वि०) नामी, प्रतिष्ठित, यशस्वी, इज़्ज़तदार, कीर्तिवान्। [गया हो, नाम मात्रावशिष्ट, मृत, नष्ट।

नामशेष (सं० पु०) जिसका केवल नाम मात्र बाक़ी रह

नामा (वि०) नामक, नाम वाला, नामधारी।

नामाकूल (अ० वि०) अनुकूल नहीं, अयोग्य, नालायक़।

नामावली (सं० स्त्री०) नामों की श्रेणी, नामों का समूह वह वस्त्र जिस पर चारों ओर भगवान का नाम छपा होता है, रामनामी, शिवनामी, कृष्णनामी।

नामित (वि०) नवाया हुआ, नम्र बना हुआ, झुकाया हुआ। [नामक, जिसका नाम चारों ओर फैला हो।

नामी (वि०) प्रसिद्ध, यशस्वी, कीर्तिवान, नाम वाला,

नामुमकिन (अ० वि०) असम्भव, जिसका होना सम्भव न हो।

नायक (सं० पु०) अगुआ, मुख्य, प्रधान, मुखिया, राजा, स्वामी, काव्य का प्रधान पात्र, यह चार प्रकार का होता है, धीरोदात्त, धीरप्रशान्त, धीरललित और धीरोद्धत।

नायन (सं० स्त्री०) नाइन, नाई की स्त्री, नाई जाति की स्त्री

नायब (सं० पु०) सहायक, सहकारी, बड़े अध्यक्ष के साथ काम करने वाला, बड़े अध्यक्ष के काम में सहायता देने वाला, छोटा अध्यक्ष।

नायिका (सं० स्त्री०) स्त्री, सुन्दरी और चतुरा स्त्री, काव्य का प्रधान स्त्री-पात्र, नायिका के अनेक भेद हैं, पर प्रधान तीन ही भेद माने गये हैं। यथा, स्वकीया, परकीया, सामान्या। स्वकीया के तीन भेद हैं, मुग्धा, मध्या और प्रौढ़ा, परकीया के दो भेद हैं ऊढ़ा और अनूढ़ा। सामान्या एक ही प्रकार की है। इन्हीं भेदों में से गुण और अवस्था के अनुसार नायिका के अनेक भेद किये गये हैं।

नारंगी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का फल, संतरा।

नार (सं० स्त्री०) गला, गरदन।

नारक (वि०) नरक में रहने वाले जीव।

नारकी (वि०) पापी, नरक का अधिकारी, नरक जाने योग्य, पाप करने वाला।

नारद (सं० पु०) प्रसिद्ध देवर्षि, ये ब्रह्मा के मानस पुत्र थे, ब्रह्मा ने सृष्टि में सहायता देने के लिए मानस पुत्रों की सृष्टि की थी, उन्हीं पुत्रों में एक नारद भी हैं। जब ब्रह्मा ने नारद आदि पुत्रों को सृष्टि करने की आज्ञा दी तब नारद ने अपने भाइयों को भड़का दिया, सृष्टि कर के दुःख में फँसना पड़ेगा, सृष्टि दुःखों का मूल है, फिर जान बूझ कर दुःखों में फँसना बुद्धिमानों का काम नहीं है, इसी विचार से सभी मानस पुत्रों ने सृष्टि करने की इच्छा त्याग दी और वे जप ध्यान आदि करने लगे। जब ब्रह्मा को यह बात मालूम हुई तब वे नारद की नटखटी से बहुत अप्रसन्न हुए, उन्होंने नारद को शाप दिया कि तुम सब जगह घूमते फिरोगे। नारद जी एक स्थान पर नहीं रहते, वे सदा लोक लोकान्तरों में घूमा करते हैं। इधर का संवाद उधर पहुँचाया करते हैं। कभी नारद जी के इस कार्य से लोगों में लड़ाई भी हो जाया है, इस कारण लोग नारद जी को 'कलहप्रिय' कहते हैं। नारद भी बड़े ही भगवद्भक्त हैं, भक्तिशास्त्र के आचार्यों में ये भी एक हैं। इन्होंने नारद भक्ति-सूत्र, नारद पंचरात्र आदि भक्तिग्रन्थ बनाये हैं। नारद जी गाने में बड़े ही निपुण हैं। के विषय में और भी अनेक बातें पुराणों में लिखी हैं। कहीं लिखा है ये कश्यप के पुत्र थे, कहीं लिखा है ये कण्व गोत्र के थे। इन बातों से अनेक नारद के होने का अनुमान सहज ही में किया जा सकता है। विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, एक प्रजापति का नाम, २४ बुद्धों में से एक, शाकद्वीप का एक पर्वत।

नारदपुराण (सं० पु०) अठारह पुराणों के अन्तर्गत एक पुराण, इस पुराण के वक्ता सनकादि ऋषि हैं और श्रोता हैं नारद, इस पुराण में व्रत तीर्थ आदि का माहात्म्य बड़े विस्तार के साथ लिखा है।

नारदी (सं० पु०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, एक प्रकार का गाना।

नारदीय (वि०) नारद संबन्धी, (सं० पु०) नारद के बनाये ग्रंथ, नारद का गाना आदि।

नारना (क्रि० स०) अनुसन्धान करना, पता लगाना, थाह लेना, यथार्थ बात जानने का प्रयत्न करना।

नारबेवार (सं० पु०) नार का फैलाव, जन्मते बालक का नाल।

नारा (सं० पु०) सूत की डोरी, जारबन्द, पाजामा, घाँघरा आदि बाँधने की सूत की पतली डोरी, लाल रंग का धागा, जो देव-पूजन आदि के काम आता है।

नाराच (सं० पु०) बाण, शर, लोहे का बाण, अन्य बाणों में चार पंख रहते हैं और इसमें पाँच पंख होते हैं। [नाखुश।

नाराज़ (अ० वि०) अप्रसन्न, क्रुद्ध, विरुद्ध, असन्तुष्ट,

नाराज़गी (फ़ा० सं० स्त्री०) अप्रसन्नता, क्रोध, नाखुशी

नाराज़ी (फ़ा० सं० स्त्री०) क्रोध, अप्रसन्नता।

नारायण (सं० पु०) विष्णु, नर के साथी या भाई, नर और नारायण, इन दोनों ने बदरीक्षेत्र में तपस्या की थी, परमात्मा, परमेश्वर। [हाथ की भूमि।

नारायणक्षेत्र (सं० पु०) प्रयाग क्षेत्र, गंगा तीर की चार

नारायणतैल (सं० पु०) एक प्रकार का तैल, यह वायु रोग की परमौषधि है।

नारायणशक्ति (सं० स्त्री०) नारायण आदि देवताओं के

उद्देश्य से दी जाने वाली बलि । आत्महत्या या अपमृत्यु के द्वारा मृतकों की शान्ति के लिए यह बलि दी जाती है । अपमृत्यु से मरने वालों की नारायण वलि करने के पश्चात् अन्त्येष्टि संस्कार करने की आज्ञा है ।

नारायणी (सं० स्त्री०) एक देवी का नाम, नारायण के अंश से उत्पन्न देवी, वैष्णवी, गंगा, लक्ष्मी, दुर्गादेवी, यादवों की सेना ।

नाराशंसी (सं० स्त्री०) मनुष्य प्रशंसा वाक्य, वेदों में कुछ ऐसे अंश में पाये जाते हैं जिसमें राजाओं का वर्णन आया है, राजाओं के दान आदि का वर्णन है वह भाग नाराशंसी कहा जाता है ।

नारि (सं० स्त्री०) स्त्री, अबला, नाड़ी ।

नारिकेल (सं० पु०) नारियल का वृक्ष और फल ।

नारियल (सं० पु०) नारिकेल वृक्ष, नारिकेल फल, गरी, गरी का गोला, इस का पेड़ बहुत लम्बा होता है । समुद्र के तीर पर यह बहुतायत से होता है । यह अनेक कामों में आता है, हुक्का ।

नारियली (सं० स्त्री०) नारियल का बना पात्र, नारियल का हुक्का, नारियल संम्बन्धी ।

नारी (सं० स्त्री०) अबला, बधू, पक्षी विशेष, वह जल के किनारे रहता है, नार, हरिस को जूए से बाँधने वाली रस्सी । [छः दोष ।

नारीदूषण (सं० स्त्री०) स्त्रियों के मद्यपान कुसंग आदि

नारीधर्म (सं० पु०) स्त्रियों का धर्म, पति-सेवा, पुत्र पालन आदि ।

नारू (सं०पु०)एक रोग, देखो " नाहरुआ " ।

नाल (सं० पु०) जन्मे हुए बालक की नाभि में लगी हुई चमड़े की एक डोरी, कमल आदि जल में उत्पन्न होने वाले फूलों की डंठी, गेहूँ आदि के पौधों के डंठल, गोली और भीतर पोली वस्तु, जूते में घोड़े आदि के पैरों में जड़ी जाने वाली लोहे की एक वस्तु, गोलाकर पत्थर जिसे कसरत करने के लिए पहलवान उठाते हैं । जूआ खेलाने के लिए मिलने वाला रुपया ।

मुहा०—नाल गड़ना = किसी स्थान पर अधिकार होना, कोई स्थान जन्म-स्थान के समान प्रिय होना, किसी स्थान पर सदा बना रहना, जल्दी न हटना ।

नालकटाई (सं० स्त्री०) संस्कार विशेष, नालच्छेदन, जन्म के समय बालक का नाल काटा जाना । नाल काटने के लिए दिया जाने वाला रुपया पैसा आदि ।

नालकी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की पालकी, इसके ऊपर छाजन नहीं होती, इसके ऊपर कारचोबी का टप लगाया जाता है । ब्याह के समय दूल्हे के चढ़ने की नालकी ।

नालन्द (सं० पु०) बौद्धों का एक विद्यापीठ, यह बिहार में पाटलिपुत्र नामक नगर के पास था । इसमें बड़े बड़े आचार्य विद्याध्ययन कराते थे, राजा अशोक ने इसका निर्माण कराया था । चीनी यात्री ह्वेन साँग सातवीं सदी के मध्य भाग में भारतवर्ष में आया था और उसने यहाँ विद्याध्ययन किया था, प्रसिद्ध रसायन शास्त्रज्ञ नागार्जुन ने भी यहीं विद्याध्ययन किया था ।

नालबन्द (सं० पु०) जूते घोड़े और बैल आदि के पैर में नाल जड़ने वाला, नाल जड़िया ।

नालबन्दी (सं० स्त्री०) नालबंद का काम ।

नालबाँस (सं० पु०) एक बाँस का भेद, यह यमुना के तीर पर होता है और मज़बूत तथा सीधा होता है ।

नाला (सं० पु०) नारा, जल बहने का बड़ा पनाला, बरसात का जल जिसमें से होकर बहता है, अकृत्रिम नहर ।

नालायक़ (फ़ा० वि०) अयोग्य, मूर्ख ।

नालायक़ी (सं० स्त्री०) मूर्खता, अयोग्यता ।

नालिक (सं० पु०) कमल, बन्दूक़ के समान एक अस्त्र ।

नालिका (सं० स्त्री०) मृणाल, कमल का डंठल, सूत लपेटने की एक वस्तु, नाली, पनाला ।

नालिकेर (सं० पु०) नारिकेल, नारियल, फल विशेष, वृक्ष विशेष । [डोमकौआ ।

नालिजंघ (सं० पु०) एक जाति का कौआ, डोंडा कौआ,

नालिश (फ़ा० सं० स्त्री०) अभियोग, विवाद-निर्णय के लिए निवेदन, अपराधी को दण्ड देने के लिए दण्डदाता के सामने अपराधी का अपराध-वर्णन ।

नाली (सं० स्त्री०) प्रणाली, जल-प्रणाली, पनाला, मोरी, जल बहने का मार्ग, घर से या अन्य स्थान से जल निकल जाने के लिए बनाया हुआ छोटा नाला, गोली और भीतर से पोली वस्तु ।

नालीक (सं० पु०) कमल, नालिक, अस्त्र विशेष, बंदूक़

के समान एक अस्त्र एक प्रकार का छोटा बाण जो नली में रख कर चलाया जाता था।

नालौट (वि०) वादा ख़िलाफ़, कह कर उलट जाने वाला, प्रतिज्ञा तोड़ने वाला। [धेय।

नावँ (सं० पु०) नाम, संज्ञा, अभिधान, आख्या, नाम-

नाव (सं०स्त्री०) नौका, जलयान, जल की सवारी, तरिका पोत, तरी, लकड़ी आदि की यह बनाई जाती है और इस पर जल-यात्रा की जाती है।

मुहा०—सूखे में नाव का न चलना=बिना परिश्रम और बिना धन खर्चे कोई काम न होना। नाव डूबना=सब किया धरा मिट्टी में मिलना, परिश्रम का व्यर्थ होना, असफल होना।

नावक (सं० पु०) बाण विशेष।

नावघाट (सं० पु०) नाव के ठहरने का स्थान, नदी का वह घाट जहाँ नाव ठहरती है। [पोतना।

नावना (क्रि०स०) नवाना, झुकाना, टेढ़ा करना, लगाना,

नावरि (सं० स्त्री०) नाव पर जल-क्रीड़ा, नाव फेरना।

नावाँ (सं०पु०) वह रक़म जो किसी के नाम लिखी हो।

नावाक़िफ़ (अ०वि०) अनजान,अज्ञान,बेसमझ,अनभिज्ञ।

नाविक (सं० पु०) नाव चलाने वाला, मल्लाह, केवट।

नाश (सं० पु०) अभाव, आँखों से ओझल होना, लुप्त होना, रूपान्तर ग्रहण करना, बर्बाद।

नाशक (वि०) नाश करने वाला, नष्टभ्रष्ट करने वाला, बिगाड़ने वाला, वध करने वाला। [मनुष्य।

नाशकारी (वि०) नाशक, नाश करने वाले पदार्थ और

नाशन (सं० पु०) मारण, हनन, नाश-करण। [करना।

नाशना (क्रि० स०) नष्ट करना, बरबाद करना, नष्टभ्रष्ट

नाशपाती (सं० स्त्री०) इस नाम का प्रसिद्ध फल।

नाशवान् (वि०) विनाशी, विनश्वर, भंगुर, नश्वर, अनित्य, कृत्रिम वस्तु।

नाशित (वि०) नाश किया हुआ, बिगाड़ा हुआ।

नाशितव्य (वि०) नाश, करने योग्य।

नाशी (वि०) नाश करने वाला, इसका प्रयोग प्रायः अन्य शब्दों के साथ होता है, अकेले नहीं होता; जैसे सर्वनाशी, सत्यानाशी आदि। [रस्सी, सुँघनी।

नास (सं० स्त्री०) पशुओं की नाक में पहनाई जाने वाली

नासत्य (सं० पु०) अश्विनीकुमार, स्वर्ग के वैद्य।

नासदानी (सं० स्त्री०) नास रखने की डिबिया।

नासना (क्रि० स०) नष्ट करना, नाशना, किसी वस्तु का रूपान्तर करना,नष्टभ्रष्ट करना। [अविवेकी।

नासमझ (वि०) जिसमें समझ न हो, मूर्ख, अज्ञानी,

नासमझी (सं० स्त्री०) अज्ञानता, मूर्खता।

नासा (सं० स्त्री०) नासिका, नाक, एक लकड़ी जो द्वार के ऊपर लगाई जाती है।

नासापाक (सं० पु०) नाक का एक रोग जिसमें नाक में बहुत सी फुंसियाँ निकल आती हैं और नाक पक जाती है। [जो छेदों के किनारे परदे का काम देता है।

नासापुट (सं०पु०) नासिका, नाक, नाक का वह चमड़ा

नासायोनि (सं० पु०) नपुंसक जो घ्राण करने पर उद्दीपन हो।

नासारोग (सं० पु०) नाक में होने वाले रोग, इनकी संख्या सुश्रुत के अनुसार ३१ और भाव प्रकाश के मत से ३४ है।

नासावंश (सं० पु०) नाक के ऊपर की हड्डी, वह हड्डी जिस पर नथुनों का चमड़ा ठहरा हुआ होता है।

नासिक (सं० पु०) तीर्थ विशेष, बम्बई के पास के एक गाँव का नाम, इसी के पास गोदावरी नदी निकलती है, नासिक के पास ही पंचवटी है। वन-वास के समय यहीं पञ्चवटी में रामचन्द्र ने वास किया था। सुर्पनखा की नाक यहीं लक्ष्मण ने काटी थी।

नासिका (सं० स्त्री०) नाक।

नासिक्य (सं०पु०)नासिका से उच्चारित होने वाले वर्ण, ङ, ञ, ण, न, म, ये वर्ण नासिक्य हैं, नासिका, अश्विनी कुमार, दक्षिण का एक देश (वि०) नासिका से उत्पन्न।

नासीर (सं० पु०) सेना का अग्र भाग, आगे वाला हिस्सा, सेनापति के आगे चलने वाली सेना। [घाव।

नासूर (सं०पु०)नाड़ीव्रण,विकृत घाव,नस का घाव,पुराना

नास्ति (वि०) नहीं है, अभाव।

नास्तिक (सं० पु०) परलोक में विश्वास न करने वाला, वेद की निन्दा करने वाला, ईश्वर की सत्ता में विश्वास न रखने वाला, चार्वाक, इस लोक में सुख को ही परम पुरुषार्थ मानने वाला।

नास्तिकता (सं० स्त्री०) अविश्वास, आध्यात्मिक बातों पर विश्वास न करना, मिथ्यादृष्टि।

नास्तिक दर्शन (सं० पु०) चार्वाक दर्शन, बौद्ध दर्शन,

योगाचार सौत्रान्तिक आर्हत माध्यमिक आदि दर्शन, वे दर्शन शास्त्र जिनमें ईश्वर का अस्तित्व न कहा गया हो या उसका खण्डन किया गया हो।

नास्तिकवाद (सं० पु०) परलोक न मानने वाला सिद्धांत। [आदि में अविश्वास।

नास्तिक्य (सं० पु०) नास्तिकता, ईश्वर परलोक वेद

नास्य (सं०पु०) बैल की नाक में लगाई जाने वाली रस्सी।

नाह (सं० पु०) नाथ, स्वामी, प्रभु, पति।

नाहक़ (वि०) व्यर्थ, बिना प्रयोजन, बे मतलब।

नाहनूह (सं० स्त्री०) अस्वीकार, निषेधार्थक, बहुत कहने पर भी नहीं कहना।

नाहर (सं० पु०) बाघ, व्याघ्र, शेर।

नाहरू (सं० पु०) रोग विशेष, नाहरुआ रोग।

नाहल (सं० पु०) म्लेच्छों की एक जाति विशेष।

नाहीं (अव्य०) नहीं, निषेधार्थक।

निंद (वि०) घृणित, निन्दित, निन्द्य।

निंदना (क्रि० स०) निन्दा करना, दूसना, बुरा भला कहना, गुणों में दोष निकालना, अप्रतिष्ठा करना।

निंदरना (क्रि० स०) निन्दा करना, गुणों में दोष बतलाना, केवल दोष ही देखना, निरादर करना।

निंदरिया (सं० स्त्री०) निद्रा, नींद, ऊँघ।

निंदाई (सं० स्त्री०) निराई, निराने का काम, खेत में से घास आदि का निकालना, खेत में जमी घास आदि को उखाड़ कर फेंकना।

निंदासा (वि०) निद्रित, जिसे नींद आती हो।

निंदिया (सं० स्त्री०) नींद, ऊँघ, मन की एक अवस्था विशेष जिसमें इन्द्रियाँ कार्य-रहित हो जाती हैं और मन निश्चल हो जाता है। [पंक्ति।

निंबरिया (सं० स्त्री०) नीम का बाग़, नीम के पेड़ों की

निः (अव्य०) उपसर्ग विशेष, निषेधार्थक, निश्चयार्थक, निवेश, संशय, कौशल, आक्षेप, सामीप्य, आश्रय, दान, मोक्ष, बंधन, विन्यास, अन्तर भाव।

निःकण्टक (वि०) सुखी, बाधा-रहित, निःशत्रु।

निःकपट (वि०) कपट-शून्य, कपट-रहित, सज्जन, सीधा, उदार, सरल।

निःकाम (वि०) निष्कामना, कामना-शून्य वह कर्म जो कामना से न किया जाय, केवल कर्त्तव्य समझ कर किया जाय।

निःकारण (वि०) निर्हेतुक, कारण के बिना, बेमतलब, निर्निमित्त। [हटाना, निकल जाने के लिए कहना।

निःकासन (सं० पु०) निष्कासन, निकालना, दूर करना,

निःक्षत्रि (वि०) क्षत्रिय-रहित, वह देश, स्थान या गाँव जहाँ क्षत्रिय न हों। [उदार, शुद्ध हृदय, महात्मा।

निःछल (वि०) निश्छल, छल-रहित, कपट-शून्य, सरल,

निःपक्ष (वि०) निष्पक्ष, पक्षहीन, पक्षपात-रहित।

निःप्रयोजन (वि०) निष्प्रयोजन, व्यर्थ, बेमतलब, बिना प्रयोजन। [फल।

निःफल (वि०) निष्फल, फल-रहित, व्यर्थ, वृथा, अल-

निःशङ्क (वि०) निर्भय, निडर, शङ्का-रहित, बेखटके, निश्चिन्त।

निःशब्द (वि०) शब्द-रहित, शब्दहीन, जहाँ शब्द न हो।

निःशेष (वि०) समस्त, सम्पूर्ण, पूरा, अधूरा नहीं।

निःश्रेणी (सं० स्त्री०) सीढ़ी, ज़ीना, काठ बाँस या पत्थर की बनी सीढ़ी, ऊपर चढ़ने का साधन।

निःश्रेयस (वि०) मोक्ष, मुक्ति, सुख दुःखों से अतीत अवस्था की प्राप्ति, ब्रह्मत्व-प्राप्ति, अपवर्ग, नित्य सुख प्राप्ति।

निःश्वास (सं० पु०) प्राण वायु जो नाक से निकलती है, प्राणवायु के निकलने का नाम निःश्वास और पुनः प्रवेश करने का नाम प्रश्वास है।

निःश्वासित (वि०) दीर्घ निश्वासी।

निःसंशय (वि०) जिसे कोई सन्देह न रहे, जिस विषय में कोई सन्देह न रहे, यथार्थ ज्ञाता।

निःसङ्कोच (वि०) बेधड़क, निःसन्देह, बेखटके, बिना सङ्कोच, बिना मीन मेख के।

निःसङ्ग (वि०) अनुराग-रहित, जिसको किसी वस्तु में अनुराग न हो, निर्लिप्त, उदासीन, सब विषयों में समान भाव रखने वाला। [हीन, सत्ताहीन।

निःसत्व (वि०) निःसार, निर्बल, बल रहित, यथार्थता-

निःसन्तान (वि०) सन्तान-रहित, पुत्र-पुत्री हीन।

निःसन्देह (वि०) सन्देह-रहित, निःसंशय, निश्चय।

निःसन्धि (वि०) छिद्र-रहित, सन्धि-शून्य, दृढ़, टिकाऊ, बे छेद की वस्तु।

निःसार (वि०) तत्वहीन, यथार्थता रहित, निःसत्व, निर्बल, तुच्छ वस्तु, छोटी चीज़, वह वस्तु जो भीतर से पोली हो।

निःसारण (सं० पु०) निकालना, भीतर से किसी वस्तु को उपाय द्वारा निकालना। [बाहर निकला हुआ।

निःसृत (वि०) निकला हुआ, निर्गत, बहिर्गत, भीतर से

निःस्नेह (वि०) स्नेह-शून्य, अनुराग-रहित।

निःस्पन्द (सं० पु०) स्तब्धता, गति का अभाव, निश्चल, गतिहीन, स्थिर।

निःस्पृह (वि०) स्पृहा-रहित, इच्छा-हीन, आप्तकाम, तृप्त, जिसकी इच्छा शान्त हो गई हो, जिसे किसी बात की इच्छा न रहे। [न हो।

निःस्व (वि०) निर्धन, दरिद्र, ग़रीब, जिसका अपना धन

निःस्वार्थ (वि०) स्वार्थ रहित, अपने निजी सुख की इच्छा न रखने वाला, अपना अर्थ न चाहने वाला, अपना मतलब न साधने वाला।

निअर (अव्य०) पास, समीप, निकट, नज़दीक।

निअराना (क्रि० स०) पास पहुँचना, पास जाना, समीप पहुँच जाना। [पास, पास पास।

निकट (वि०) पास का, समीपवर्ती, (क्रि० वि०) समीप,

निकटवर्ती (वि०) पास वाला, पास रहने वाला, साथी, साथ वाला, साथ रहने वाला।

निकटस्थ (वि०) निकट रहने वाला, समीपवर्ती।

निकन्द (वि०) उखड़ा, निःस्कन्ध।

निकन्दन (सं० पु०) निर्मूलन, उजाड़ना, उखाड़ना।

निकपट (वि०) शुद्ध मन का।

निकम्मा (वि०) निष्कर्म्मा, कर्महीन, बिना काम का किसी काम के योग्य न हो, आलसी, काम करने के अयोग्य, काम न कर सकने वाला, अनुपयोगी।

निकर (सं० पु०) राशि, समूह, वृन्द, ढेर, झुंड।

निकरना (क्रि० अ०) निकलना, निकसना।

निकलंकी (वि०) निष्कलङ्की, कलङ्क-रहित, (सं० पु०) विष्णु का दशवाँ अवतार, कलि के अवतार, कलियुग के अन्त में होने वाला अवतार। [धातु विशेष।

निकल (सं० स्त्री०) निकास, निर्गम (अ० सं० पु०)

निकलना (क्रि० अ०) बाहर जाना, बहिर्गत होना, भीतर की किसी वस्तु का बाहर निकलना, निःसृत होना।

मुहा०—निकल जाना = ख़र्च हो जाना, घट जाना, आगे चला जाना, समय का बीतना, अपने वश से बाहर होना।

निकलवाना (क्रि० स०) निकलने का प्रयत्न करना, प्रयत्न करके निकालना, बाहर निकालने का उद्योग करना।

निकष (सं० पु०) कसौटी, एक काला पत्थर जिस पर सोने आदि की खराई खोटाई परखी जाती है, सान चढ़ाने का पत्थर, परीक्षा का साधन।

निकषा (सं० स्त्री०) एक राक्षसी, रावण की माता का नाम, इसके पिता का नाम सुमाली था, यह विश्रवा नामक ऋषि से व्याही गई थी। कहीं कहीं रावण की माता का नाम केकसी लिखा मिलता है। एक निकषा शब्द अव्यय है और उसका अर्थ है समीप।

निकसना (क्रि० अ०) निकलना। [उत्तमता।

निकाई (स० स्त्री०) सौन्दर्य, सुन्दरता, लुनाई, सज्जनता,

निकाना (क्रि० स०) निराना, बकले से अन्न अलग करना, जुवार जोन्हरी आदि की बालों में से अन्न अलग करना। [निकम्मा, बेकाम।

निकाम (वि०) यथेष्ट, अधिक, उत्कृष्ट, बेमतलब

निकाय (सं० पु०) समूह, झुंड, राशि, गृह, घर, वास-स्थान। [तिरस्कार, पराजय।

निकार (सं० पु०) निष्कासन, निकालना, अपमान,

निकारना (क्रि० स०) निकालना, बाहर करना।

निकाल (सं० पु०) निकलने का मार्ग, निकास, फन्दे से निकलने की तरकीब, किसी की अधीनता से मुक्त होने का उपाय, कुश्ती का एक पेंच।

निकालना (क्रि० स०) बाहर करना, भीतर न जाने देना, भीतर से निकाल देना। निष्कासन, निकाल बाहर करना, चुभी हुई चीज़ को बाहर करना, इस पार से उस पार करना, प्रकाशित करना, आविष्कार करना, सिखाना, घोड़ा बैल आदि को गाड़ी खींचने की शिक्षा देना।

निकाला (सं० पु०) दण्डरूप में बाहर करना, बाहर हो जाने की आज्ञा, भीतर रहने के अधिकार का अपहरण, निष्कासन यथा, देश निकाला।

निकास (सं० पु०) द्वार, निकलने की विधि, निकल जाने का मार्ग, त्राण पाने का उपाय, मूल स्थान, नदियों का उद्गम स्थान, कठिनाइयों से उद्धार पाने का उपाय।

निकासना (क्रि० स०) देखो "निकालना"।

निकासपत्र (सं० पु०) वह बही जिसमें जमा ख़र्च और बाक़ी का हिसाब हो।

निकासी (सं० स्त्री०) महसूल, कर, परवाना।
निकासू (वि०) निकाला हुआ, बहिष्कृत।
निकाह (सं० पु०) शादी, ब्याह, बिवाह।
निकियाई (सं० स्त्री०) साफ़ करना, बाल से दाना छुड़ाना, मुर्ग़ी आदि का पर नोचना।
निकियाना (क्रि० स०) अलग अलग करना, साफ़ करने के लिए नोचना, निकियाई करना।
निकुच (सं० पु०) बड़हल।
निकुञ्चक (सं० पु०) एक परिमाण वा तौल जो आधी अंजली के बराबर और किसी २ के मत से ८ तोले की होती है, कुड़व का चतुर्थांश।
निकुञ्ज (सं० पु०) लता आदि से घिरने के कारण घर के समान बना स्थान, लतागृह।
निकुञ्जबिहारी (सं० पु०) श्री कृष्ण।
निकुटी (सं० स्त्री०) छोटी इलायची।
निकुम्भ (सं० पु०) एक राक्षस का नाम, यह कुम्भकर्ण का पुत्र और रावण का मन्त्री था। हनुमान के हाथों यह मारा गया।
निकुम्भिला (सं० स्त्री०) एक देवी का नाम, यह लङ्का में थीं। मेघनाद इसके सामने यज्ञ और पूजन करके युद्ध की यात्रा करता था।
निकृत्त (वि०) छिन्न, कटा हुआ, मूल से कटा हुआ, खण्डित, छिन्नभिन्न, बदनाम, वंचित, नीच, तिरस्कृत।
निकृष्ट (वि०) नीची श्रेणी का अधम, नीच, पामर, दीनहीन, अज्ञान, निन्दिताचार, समाज बहिष्कृत, हेठ, तुच्छ।
निकृष्टता (सं० स्त्री०) नीचता, अधमता।
निकेतन (सं० पु०) वास-स्थान, घर, गृह, गेह।
निकोसना (क्रि०) खिसियाना, कोसना।
निक्कण (सं० पु०) वीणा का शब्द।
निक्षिप्त (वि०) बिखेरा हुआ, फेंका हुआ, छोड़ा हुआ, स्मृति से हटा हुआ। [धरोहर, थाती।
निक्षेप (सं० पु०) छोड़ना, फेंकना, रखना, थाती रखना,
निक्षेपण (सं० पु०) रखना, त्यागना, छोड़ना, फेंकना, थाती रखना, किसी के यहाँ धरोहर रखना।
निखट्टर (वि०) क्रूर स्वभाव, कठोरचित्त, कठोर चित्त वाला, कड़े दिल का।
निखट्टू (वि०) सब जगह झगड़ा करने वाला, कहीं न ठहरने वाला, आवारा, इधर उधर घूमने वाला, निकम्मा।
निखण्ड (वि०) बीच, मध्य। [कोई चीज़ गाड़ना।
निखनन (सं० पु०) खोदना, क़बर देना, मिट्टी खोद कर
निखरना (क्रि० अ०) छँट छँट कर आना, मैल का जम जाना और पानी का साफ़ होकर आना, निर्मल होना, साफ़ होना, मैल का हट जाना। [दूर कराना।
निखरवाना (क्रि० स०) साफ़ कराना, धुलवाना, मैल
निखराना (क्रि० स०) साफ़ कराना, धुलाना।
निखरी (सं० स्त्री०) शुद्ध भोजन, रुखरा भोजन नहीं, घी की पक्की पूड़ी आदि।
निखर्व (सं० पु०) संख्या विशेष, दस हज़ार करोड़।
निखबख (वि०) समस्त, सम्पूर्ण, बिलकुल, दूसरा कुछ नहीं।
निखात (सं० पु०) गढ़ा, खाईं, खत्ता।
निखार (सं० पु०) निर्मलता, शुद्धता। [हटाना।
निखारना (क्रि० स०) स्वच्छ करना, साफ़ करना, मैल
निखिल (वि०) समस्त, सम्पूर्ण, अखिल।
निखेध (सं० पु०) निषेध, रुकावट, रोक, असम्मति।
निखेधना (क्रि० स०) निषेध करना, रोकना, मना करना।
निखोट (वि०) निर्दोष, खोटहीन, दोषहीन, स्वच्छ, साफ़।
निखोड़ना (क्रि०) छिलना, उधेड़ना। [नोचना, चचोरना।
निखोरना (क्रि० स०) खरोंचना, नह से खरोचना,
निगड़ (सं० पु०) बेड़ी, हाथी बाँधने की जंजीर।
निगद (सं० पु०) कथन, भाषण, कहना।
निगदित (वि०) कथित, कहा हुआ, भाषित, उक्त।
निगन्दना (क्रि०) तागना, टाँकना।
निगन्दनाई (सं० स्त्री०) तगाई, सिलाई।
निगम (सं० पु०) वेद, वेदोक्त मार्ग, पथ, बाज़ार, सट्टी जहाँ माल आता है और जहाँ से जाता है। मण्डी, कायस्थ जाति की एक उपाधि।
निगमन (सं० पु०) समन्वय, अनुमान की प्रतिज्ञा को सिद्ध करना। [वेदाध्यायी।
निगमवासी (सं० पु०) विष्णु, वेद में रहने वाला,
निगरण (सं० पु०) निगलना, खाना, भोजन करना, किसी वस्तु को गले के नीचे उतारना।
निगरानी (सं० स्त्री०) देखरेख, पर्यवेक्षण, निरीक्षण, देखभाल, रक्षणावेक्षण।

निगलना (क्रि० स०) गले के नीचे उतारना, निगल जाना, खा जाना, पचा जाना, किसी का रुपया लेकर न देना।
निग्रहबानी (सं० स्त्री०) देखरेख, रक्षा करना।
निगार (सं० पु०) भोजन करना, खाना।
निगालिका (सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम।
निगाली (सं० स्त्री०) नैचा, एक प्रकार की नली, जिससे हुक्का पिया जाता है।
निगाह (सं० स्त्री०) दृष्टि, नज़र, चितवन। [करना।
मुहा०—निगाह बचाना = छिपाना, छिप कर कोई काम
निगुण (वि०) निर्गुण, गुण रहित।
निगुनी (वि०) निर्गुणी, गुणहीन, गुणातीत।
निगुरा (वि०) जिसके गुरु न हो, जिसने दीक्षा न ली हो, अशिक्षित, अदीक्षित, अनपढ़।
निगूढ़ (वि०) गुप्त, छिपा हुआ, नितान्त गुप्त।
निगूहन (सं०पु०) छिपाव, गोपन, गुप्त करना, छिपाना।
निगृहीत (वि०) अपराध में पकड़ा गया, बात में पकड़ा गया, चारों ओर से घिरा हुआ।
निगोड़ा (वि०) असहाय, अनाथ, अकेला, जिसके आगे पीछे कोई न हो, मोटा, कुटुम्ब हीन।
निग्रह (सं० पु०) रोक, अवरोध, रुकावट, शास्त्रार्थ में युक्तियों से बोलना बन्द करना, दण्ड, दमन, तिरस्कार, डाँट, रुकावट, रोकथाम, उतार, उतारना, हटाना।
निग्रहना (क्रि० स०) पकड़ लेना, रोकना, टोक देना, आगे न बढ़ने देना, काम न करने देना, अत्याचार करने में रुकावट डालना।
निग्रहस्थान (सं० पु०) शास्त्रार्थ का एक अवसर, जबकि वादी को विवश होकर चुप होना पड़े, पराजय का स्थान, पराजय का अवसर।
निग्राही (सं०पु०) दुःखकर। [शब्दकोष, चिकित्सा कोष।
निघंटु (सं० पु०) कोष विशेष, शब्दों का संग्रह, वैदिक
निघटत (क्रि० अ०) कम होते ही।
निघटना (क्रि० अ०) कम होना।
निघटाना (क्रि० स०) कम कराना, घटवाना।
निघरघट (वि०) जो न घर का हो न घाट का, जिसका कहीं ठिकाना न हो, आवारा, अनाश्रय, आश्रयहीन, मारा मारा फिरने वाला। [संन्यासी, दरिद्र।
निघरा (वि०) निर्गृह, गृहहीन, जिसके घर न हो, योगी
निघर्षण (सं० पु०) घर्षण, घिसना, दो वस्तुओं को रगड़ना।
निचय (सं० पु०) समूह, वृन्द, राशि, ढेर, निश्चय।
निचला (वि०) नीचे वाला, नीचे वाला हिस्सा, अचल, निश्चल, चञ्चल नहीं।
निचाई (सं० स्त्री०) गहराई, नीचता, अधमता, नीचपन, नीच का काम, नीच का स्वभाव।
निचान (सं० पु०) निचाई, नीचता, गहराई।
निचिंत (वि०) निश्चिन्त, चिन्ता रहित, जिसे किसी प्रकार की चिन्ता न हो। [किया हुआ।
निचित (वि०) एकत्रित, मिलित, मिलाया हुआ, इकट्ठा
निचुड़ना (क्रि० अ०) पानी रस आदि का टपकना, धोती आदि का पानी गिरना। [कवि का नाम।
निचुल (सं० पु०) वृक्ष विशेष, बेंत, बेंत का वृक्ष, एक
निचोड़ (सं० पु०) सार, तत्व, समस्त, पदार्थ का असली भाग, सब बातों का यथार्थ तात्पर्य, मुख्य भाव, सारांश।
निचोड़ना (क्रि० स०) ऐंठ कर पानी आदि द्रव पदार्थ निकालना, धोती निचोड़ना, नीबू निचोड़ना।
निचोड़ू (सं० पु०) लोभी, खाऊपन, लुटेरा।
निचोना (क्रि० स०) निचोड़ना, गारना, पानी आदि निकालना। [चचोरना, निचोर निचोर खाना।
निचोरना (क्रि० स०) निचोड़ना, गारना, दाँतों से
निचोल (सं० पु०) वस्त्र विशेष, स्त्रियों की चोली, ओढ़नी, ऊपर ओढ़ने का वस्त्र।
निचौहाँ (वि०) गहरा, नीचा, नीचे की ओर झुका हुआ वह घर जिसमें पानी न टपकता हो, नहीं चूने वाला घर।
निच्छवि (सं०पु०) क्षत्रिय विशेष, ये तिरहुत में अधिकता से रहते हैं। सम्राट् चन्द्रगुप्त के पश्चात् ये पराक्रमी हो गये थे और लूटमार करते फिरते थे।
निछक्का (सं० पु०) छल कपट रहित, चिन्ता रहित, चिन्ता रहित मनुष्य या स्थान, मस्त, निश्चिन्त।
निछत्र (वि०) छत्र रहित, राजा हीन-राज्य, क्षत्रिय हीन, जहाँ क्षत्रिय न हो। [बिना मिलावट का।
निछनिया (सं० स्त्री०) बिलकुल, समस्त, शुद्ध, बेमेल,
निछल (वि०) निश्छल, छल रहित, कपट हीन, शुद्ध।
निछान (वि०) एक ही प्रकार की वस्तु, बेमिलावट, ख़ालिस, शुद्ध, बिलकुल, समस्त।

निछावर (सं० स्त्री०) मंगल कामना से जो वस्तु दी जाती है, बालक तथा अन्य प्रिय मनुष्यों के शरीर पर घुमा कर दिया जाने वाला द्रव्य।

मुहा०—निछावर करना = त्याग देना, छोड़ देना, दे देना। निछावर होना = अनुरक्त होना, प्रेम करना, प्राण देने के लिए उद्यत होना।

निछिद्र (वि०) छिद्र-रहित, बे सुराख़।

निछोह (वि०) निस्नेह, दयारहित, प्रेमरहित, क्रूर, कठिनचित्त, निर्दय, जिसको दया न हो।

निछोही (वि०) निर्मोही, निर्दयी, स्नेह-रहित।

निज (वि०) स्व, स्वकीय, अपना। [अपने लिए।

मुहा०—निज का = आत्मीय, अपना, स्वकीय, ख़ास,

निजआल (वि०) निर्विवाद, कलहहीन, निश्चिन्त, निरापद।

निजतन्त्र (वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्र।

निजमतावलम्बी (वि०) अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला, स्वमतावलम्बी।

निजस्व (सं० पु०) अपनी संपत्ति, स्वकीय धन।

निज़ाम (अ० सं० पु०) प्रबन्ध, इन्तज़ाम, बन्दोबस्त, हैदराबाद के नवाब निज़ाम कहे जाते हैं, यह पदवी उन लोगों की बहुत दिनों की है।

निजू (वि०) निज का, ख़ास, स्वकीय, अपना।

निझनिझ (सं० स्त्री०) शुद्धता, पवित्रता, योग्यता।

निझरना (क्रि० अ०) समाप्त होना, बाक़ी न रह जाना, फलों आदि के समाप्त होने के अर्थ में इसका प्रयोग होता है। [मन्द होना, छिपना, छिप कर देखना।

निझाना (क्रि० अ०) आग का बुझाना, आग का प्रकाश

निझारना (क्रि० स०) समाप्त करना, फाड़ देना, तोड़ कर अलग करना, बलपूर्वक छीनना।

निझोरना (क्रि० स०) खसोटना, साफ़ करना, झारना।

निझोल (वि०) सुडौल, कसा हुआ।

निठल्ला (वि०) निकम्मा, बिना काम-धाम का, निरुद्यमी, जिसको कोई काम धंधा न हो, चुपचाप बैठ कर जीवन नष्ट करने वाला।

निठल्लू (वि०) "देखो निठल्ला"।

निठाला (वि०) अभाव, अकाल, काम धंधा का न मिलना, रोज़गार का मन्दापन, बुरे दिन, आमदनी आदि न होने के दिन।

निठुर (वि०) निष्ठुर, निर्दय, कठोर, जिसके हृदय में दया न हो, दूसरे का कष्ट देख कर भी जिसे दया न आवे।

निठुरई (सं० स्त्री०) निष्ठुरता, निःस्नेह, निर्दयता।

निठुरता (सं० स्त्री०) निर्दयता, कठिनता।

निठुराई (सं० स्त्री०) कठोरता, निठुरता।

निठुराव (सं० पु०) निर्दयता, निठुराई।

निठौर (सं० पु०) बुरा स्थान, अच्छा स्थान नहीं, दुःखद स्थान। [न घबड़ाने वाला।

निडर (वि०) निर्भय, भय-हीन, निशंक, न डरने वाला,

निडरपन (सं० पु०) निर्भयता, साहस, भय का अभाव।

निढाल / **निढोल** (वि०) अचल, स्थावर।

नित (अव्य०) नित्य, प्रतिदिन, रोज़ रोज़, सदा, हमेशा।

नितउठ (अव्य०) प्रतिदिन उठकर, सदा, निरन्तर।

नितनव (वि०) प्रतिदिन नया।

नितप्रति (अव्य०) प्रतिदिन।

नितम्ब (सं० पु०) कमर के पीछे का भाग, चूतड़, पर्वत का किनारा, जो ढलुआ होता है। [नितम्ब वाली।

नितम्बिनी (सं० स्त्री०) सुन्दरी, सुन्दर स्त्री, सुन्दर

नितराम (अव्य०) सदा, सर्वदा।

नितान्त (सं० पु०) अतिशय, अत्यंत।

नित्य (वि०) चिरस्थायी, सदा रहने वाला, अविकारी, वह पदार्थ जिसमें विकार न हो, अविनाशी, ईश्वर, काल, दिक्, आत्मा, आकाश आदि पदार्थ नित्य माने जाते हैं। वे सब पदार्थ नित्य हैं जो कृत्रिम नहीं हैं, जो बनाये नहीं गये हैं, परमाणु नित्य हैं, (अव्य०) प्रतिदिन, रोज़ रोज़, सदा, सर्वदा।

नित्यकर्म (सं० पु०) प्रतिदिन का काम, प्रतिदिन किया जाने वाला निश्चित कर्म, प्रतिदिन की जाने वाली उपासना।

नित्यक्रिया (सं० स्त्री०) नित्य किया जाने वाला कर्म, नित्य कर्म, वह क्रिया जिसका प्रतिदिन किया जाना आवश्यक हो जैसे स्नान, सन्ध्या आदि।

नित्यगति (सं० पु०) वायु, अनिल, पवन।

नित्यता (सं० स्त्री०) दीर्घ कालीनता, सनातनता।

नित्यनियम (सं० पु०) प्रतिदिन का नियम, बँधा हुआ नियम, अभ्यस्त नियम, वह नियम जिसका पालन प्रतिदिन होता हो।

नित्यनैमित्तिक कर्म (सं० पु०) नित्य और नैमित्तिक कर्म, कर्म तीन प्रकार के होते हैं, नित्य, नैमित्तिक और काम्य, जिन कर्मों के प्रतिदिन करने की आज्ञा है और जिनके न करने से पाप होता है वे नित्य कर्म हैं, नैमित्तिक कर्म वे हैं जो किसी निमित्त से करने पड़ते हैं, जैसे ग्रहण-स्नान, पर्व-स्नान आदि, नैमित्तिक कर्म न करने से पाप होता है, कामना सिद्धि की इच्छा से जो कर्म किये जाते हैं वे काम्य हैं और उनके करने से न फल होता है और न करने से न पाप।

नित्यप्रति (अव्य०) प्रतिदिन, सदा, नियमित, नियम से।

नित्यप्रलय (सं० पु०) चार प्रकार के प्रलय में से एक प्रलय, सुसुप्ति दशा, नित्य, प्राकृत, नैमित्तिक और आत्यन्तिक ये चार प्रकार के प्रलय हैं।

नित्ययज्ञ (सं० पु०) नित्य किया जाने वाला यज्ञ, अग्निहोत्र आदि।

नित्ययौवना (सं० स्त्री०) चिरस्थायी यौवन वाली स्त्री, वह स्त्री जिसका यौवन बहुत दिनों तक रहे।

नित्यशः (अव्य०) प्रतिदिन, रोज़ रोज़, सदा, सर्वदा।

नित्यसम (सं० पु०) न्यायशास्त्र का एक प्रकार का दूशित खण्डन का प्रकार, वह अयुक्त खण्डन जो इस प्रकार किया जाय कि अनित्य वस्तुओं में भी अनित्यता नित्य है अतः धर्म के होने से धर्मी भी नित्य हुआ। [रहे।

नित्यानन्द (सं० पु०) जिसका आनन्द सदा वतमान

निथंभ (सं० पु०) स्तम्भ, थूनी, खम्भा।

निथरना (क्रि० अ०) शुद्ध होना, स्वच्छ होना, पानी आदि का मैल नीचे बैठ जाने से साफ़ होना, स्थिर होना, स्थिर होने से गंदलापन दूर होना।

निथार (सं० पु०) स्थिर हो कर पानी का अलग होन, मैल का हट जाना।

निथारना (क्रि० स०) साफ़ करना, स्वच्छ करना, उपाय करके पानी का मैल हटाना, पानी साफ़ करना।

निदई (वि०) निर्दयी, दयाहीन। [अपमान करना।

निदरना (क्रि० स०) निरादर करना, तिरस्कार करना,

निदरहिं (क्रि० स०) नहीं मानते हैं, निन्दा करते हैं।

निदर्शन (सं० पु०) दृष्टान्त, उदाहरण, दिखाना, दिखा कर बतलाना, निरीक्षण करना।

निदर्शना (सं० स्त्री०) एक अर्थालंकार, इसका लक्षण यह है।

सदृश वाक्य युग अरथ को, करिए एक अरोप।
भूषन ताहि निदर्शना, कहत बुद्धि दै ओप॥
(भूषण)

उदाहरण—
जात चंद्रिका चंद्र सह, विद्युत घन सह जाय।
पिय सहगमन जो तियन को, जड़हू देत दिखाय॥

निदाघ (सं० पु०) गरमी, ताप, सूर्य की किरणों की गरमी, अधिक गरमी, ग्रीष्म-ऋतु, गर्मी के दिन, गर्मी की ऋतु।

निदाघकाल (सं० पु०) ग्रीष्म-ऋतु।

निदान (सं० पु०) हेतु, कारण, निमित्त, आदि कारण, किसी वस्तु की उत्पत्ति का आदि कारण, रोग-निर्णय, रोग की उत्पत्ति के प्रधान कारण का निर्णय। [कठिन।

निदारुण (सं० पु०) भयानक, कठिन, कठोर, असहनीय,

निदिध्यासन (सं० पु०) आत्मज्ञान-प्राप्ति का एक उपाय, बारबार स्मरण, संतत स्मरण, संतत ध्यान।

निदेश (सं० पु०) आज्ञा, हुक्म, शासन।

निदेशकारक (सं० पु०) आदेश देने वाला।

निदेसू (सं० पु०) आज्ञाकारक।

निद्धि (सं० स्त्री०) निधि, ख़ज़ाना, कुबेर का ख़ज़ाना।

निद्र (सं० पु०) एक अस्त्र का नाम, संहार करने वाला अस्त्र, यह बड़ा दीप्तिशाली होता है।

निद्रा (सं० स्त्री०) नींद, ऊँघ, स्वप्न, इन्द्रियों की निश्चेष्ट अवस्था का नाम, मन की वह अवस्था जिसमें इन्द्रियों से उसका कुछ देर के लिए संबन्ध टूट जाता है।

निद्राकुल (वि०) निद्रा से व्याकुल।

निद्रान्तु (वि०) सोने वाला, अधिक सोने वाला।

निद्राभङ्ग (सं० पु०) निद्रा-त्याग, जागरण।

निद्रालु (वि०) सोने वाला, सुवैया।

निद्रित (वि०) सोया हुआ, सुप्त। [रोक-टोक।

निधड़क (वि०) निःसंकोच, संकोच-रहित, बेखटका, बिना

निधन (सं० पु०) नाश, मृत्यु, समाप्ति, स्वरूप-परिवर्तन, (वि०) निर्धन, धनहीन, दरिद्र।

निधनता (सं० स्त्री०) दरिद्रता, ग़रीबी।

निधनी (वि०) निर्धनी, धनहीन, दरिद्र ।
निधान (सं० पु०) आधार, आश्रय, यह प्रायः शब्दों के अन्त में जुड़ कर अर्थबोधन करता है ; यथा—दया-निधान, कृपानिधान आदि ।
निधि (सं० स्त्री०) ख़ज़ाना, पृथ्वी में गड़ा हुआ धन, कुबेर के ख़ज़ाने, कुबेर के नौ ख़ज़ाने हैं । उनके नाम ये हैं—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और वर्च ।
निधिजात (सं० पु०) समुद्र से उत्पन्न रत्न ।
निधिनाथ (सं० पु०) कुबेर, धनाधिप ।
निधिपाल (सं० पु०) ख़ज़ाने की रक्षा करने वाला, ख़ज़ांची, कुबेर ।
निधिसुता (सं० स्त्री०) लक्ष्मी ।
निधेय (वि०) रखने योग्य, धारण करने योग्य, स्थापनीय, स्थापन करने योग्य । [घराहट ।
निनद (सं० पु०) शब्द, ध्वनि, घर्षण का शब्द, घर-
निनरा (वि०) पृथक्, अलग, न्यारा ।
निनाद (सं० पु०) ध्वनि, शब्द ।
निनादित (वि०) शब्दित, ध्वनित, संजात-ध्वनि, नाद का होना, शब्द होना, शब्द किया गया ।
निनार (वि०) बिलकुल, सब, समस्त, सम्पूर्ण । [हुआ ।
निनारा (वि०) पृथक्, अलग, न्यारा, पृथग्भूत, दूर हटा
निनावाँ (सं० पु०) रोग विशेष, यह रोग मुख में होता है, इस रोग में मुख में छोटे छोटे लाल दाने पड़ जाते हैं । कसैली चीज़ों के खाने से ये दाने छूटते हैं ।
निनीषा (सं० स्त्री०) ग्रहण करने की अभिलाषा ।
निनीषु (सं० पु०) ग्रहण करने की इच्छा रखने वाला ।
निनेता (सं० पु०) नायक, प्रधान, नेता, मुख्य । [करना ।
निनौना (क्रि० स०) नवाना, झुकाना, नम्र करना, नीचे
निनौरा (सं० पु०) ननिअउरा, नाना नानी का घर, माता के पिता का घर । [वाला ।
निन्दक (वि०) निन्दा करने वाला, दूसरे का दोष ढूँढ़ने
निन्दकाई (सं० स्त्री०) निन्दा करने का स्वभाव ।
निन्दना (क्रि० स०) दोष लगाना, कलङ्क लगाना ।
निन्दनीय (वि०) निन्दा के योग्य ।
निन्दा (सं० स्त्री०) मिथ्या कलङ्क, बुराई ।
निन्दित (वि०) दूषित, कलङ्कित, कुत्सित ।
निन्द्य (वि०) निन्दनीय, तुच्छ ।
निन्द्यकर्म (सं० पु०) निन्दित काम, बुरा काम । [कम ।
निन्नानबे (वि०) संख्या विशेष, नब्बे और नौ, सौ से एक
मुहा०—निन्नानबे के फेर में पड़ना = लोभ होना, लोभ के पंजे में आना ।
निपंग (वि०) पंगु, हाथ-पैर-हीन, हाथ-पैर से निकम्मा ।
निप (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष ।
निपजना (क्रि० अ०) उत्पन्न होना, उपजना, खेत में अन्न आदि का होना, नफ़ा होना, बढ़ना, तैयार होना । [वृद्धि ।
निपजी (सं० स्त्री०) उत्पत्ति, अन्न की उत्पत्ति, लाभ,
निपट (अव्य०) बिलकुल, शुद्ध, खालिस, निरा ।
निपटना (क्रि० अ०) फ़ैसला करना, निर्णय करना, साफ़ कर लेना, झगड़ा तोड़ना, कृत्य समाप्त करना, खतम करना ।
निपटाना (क्रि० स०) निपटना का प्रेरणार्थक, समाप्त कराना, समाप्त करने के लिए उत्तेजित करना ।
निपटारा (सं० पु०) फ़ैसला, निर्णय, समाप्ति ।
निपटेरा (सं० पु०) निपटारा, समाप्ति, फ़ैसला, निर्णय ।
निपतन (सं०पु०) नष्ट होना, मारा जाना, नीचे गिरना ।
निपतित (वि०) गिरा हुआ, स्थानच्युत, स्थानभ्रष्ट, स्थान से नीचे की ओर आया हुआ ।
निपांगुर (वि०) पंगु, निपंगु, हाथ-पैर-हीन ।
निपात (सं० पु०) विनाश, नाश, ध्वंश, पतन ।
निपातक (सं० पु०) नाशक, गिराने वाला, उजाड़ने वाला ।
निपातन (सं० पु०) गिराना, ऊपर से नीचे की ओर किसी वस्तु का गिराना । [नीचे गिराना
निपातना (क्रि० स०) गिराना, ढकेलना, ढकेल कर
निपान (सं० पु०) कठरा, हौदी ।
निपीड़न (सं० पु०) पीड़ा देने वाला, क्रूर, अत्याचार करने वाला, अत्याचारी, क्रूर, क्रूर स्वभाव ।
निपीड़ित (वि०) पीड़ा प्राप्त, अत्याचार प्राप्त, दबाया हुआ, जिसे पीड़ा दी गयी हो, पेरा हुआ । [पटु ।
निपुण (वि०) कुशल, दक्ष, प्रवीण, कार्य करने में प्रवीण,
निपुणाई (सं०स्त्री०) निपुणता, दक्षता, चतुरता, कुशलता ।
निपुत्री (वि०) पुत्रहीन, जिसके पुत्र न हो, निर्वंश ।
निपुन (वि०) निपुण, कुशल, दक्ष ।
निपुनाई (सं० स्त्री०) निपुणाई, चतुरता ।
निपूत (वि०) निपुत्र, पुत्रहीन, जिसके पुत्र न हो ।

निपूता (वि०) अपुत्रक, पुत्रहीन, पुत्रहीन पुरुष या स्त्री।
निपोड़ना (क्रि० स०) दाँत दिखाना, मुँह बाना, दाँत उघारना।
निफल (वि०) फलरहित।
निफोट (वि०) विस्पष्ट, स्पष्ट, साफ़ साफ़, लगाव-रहित।
निबकौरी (सं० स्त्री०) नीम का फल, नीमकौरी, नीबौरी, नीम का बाग़, नीम के पेड़ों की पंक्ति।
निबटना (क्रि० अ०) छुट्टी पाना, समाप्त होना, निर्णय करना, निवृत्त होना, पूरा होना।
निबटाना (क्रि० स०) समाप्त करना, पूरा करना, तै कर देना, निर्णय कर देना।
निबटेरा (सं० पु०) छुटकारा, फ़ैसला, सफ़ाई।
निबद्ध (वि०) बँधा हुआ, गुँथा हुआ, बनाया हुआ, रचा हुआ, रचित।
निबन्ध (सं० पु०) पुस्तक, प्रबन्ध, व्याख्या, जिसमें काम में लाई गई युक्तियाँ अनेक प्रमाणों तथा अनेक मतों के उल्लेख से प्रमाणित की गई हों, लेख।
निबर (वि०) निर्बल, बलहीन, दुर्बल।
निबरना (क्रि० अ०) छूटना, मुक्त होना, त्राण पाना, फन्दे से निकलना, बचना, बच जाना, रक्षा पाना, उद्धार होना, सफल होना, मनोरथ सिद्ध होना।
निबल (वि०) निर्बल, निबर, बलहीन।
निबह (सं० पु०) समूह।
निबहना (क्रि० अ०) निपटना, निर्वाह करना, निकल जाना, बच कर निकलना, पालन होना, एक भाव से पार हो जाना, गुज़र जाना।
निबाह (सं०पु०) गुजारा, पालन, निर्वाह, निपटारा, चल [जाना, रक्षा।
निबाहना (क्रि० स०) निर्वाह करना, पालन करना, रक्षा करना, बराबर चलाते जाना।
निबाहू (वि०) बहुत दिनों तक ठहरने वाला, टिकाऊ।
निबिड़ (वि०) घना, घन, घोर, गहरा।
निबुआ (सं० पु०) नीबू, निम्बू।
निबुकना (क्रि० अ०) निबहना, समाप्त होना, पार [पाना, निपटना।
निबेड़ना (क्रि० स०) निपटाना, त्राण पाना, बचना, बच जाना, फन्दे से मुक्त होना, निर्णय करना, अलगाना, छाँटना, चुनना, सुलझाना।
निबेड़ा (सं० पु०) त्राण, मुक्ति, उद्धार, निवृत्ति, समाप्ति।
निबेरना (क्रि० स०) देखो "निबेड़ना"।
निबेरा (सं० पु०) देखो "निबेड़ा"।
निबेरू (वि०) निबटाने वाला, निर्णय करने वाला।
निबौरी (सं० स्त्री०) नीम का फल।
निभ (वि०) बराबर, समान।
निभना (क्रि० अ०) निबहना, रक्षा होना, पार पाना, चल जाना, निबाह होना, पालना, पालन करना, गुजारा होना।
निभाना (क्रि० स०) निबटाना, चलाते जाना, बनाये रखना, निर्वाह करना, संबन्ध बनाये रखना, पालन करना।
निभाव (सं० पु०) निबाह, निर्वाह।
निभृत (वि०) गुप्त, एकान्त, छिपा हुआ, रक्षित, रक्खा हुआ, निश्चित, स्थिर।
निभ्रान्त (वि०) भ्रान्ति-रहित, भ्रम-हीन, यथार्थ ज्ञान रखने वाला, निःसंशय, सन्देह-रहित।
निमंत्रण (सं० पु०) निवेदन, प्रार्थना, उत्सव आदि में नियत समय पर आने के लिए इष्ट मित्रों तथा स्वजन सम्बन्धियों से निवेदन करना, भोजन के लिए आदर-पूर्वक आने के लिए कहना।
निमंत्रणपत्र (सं० पु०) उत्सव आदि में भेजा जाने वाला पत्र जिसके द्वारा किसी पुरुष को उत्सव या भोज में सम्मिलित होने के लिए अनुरोध किया गया हो।
निमंत्रना (क्रि० स०) न्योता देना, निमन्त्रण देना।
निमंत्रित (वि०) निमन्त्रण प्राप्त, आहूत, बुलाया हुआ।
निमक (सं० पु०) क्षार पदार्थ विशेष, देखो, "नमक"।
निमकहराम (सं० पु०) विश्वासघातक, अविश्वास्त।
निमकहलाल (सं० पु०) विश्वास्त।
निमकी (सं० स्त्री०) नीबू का अचार, नमकीन पकवान।
निमकौड़ी (सं० स्त्री०) निबौरी।
निमग्न (वि०) डूबा हुआ, निमज्जित, तत्पर, तन्मय।
निमज्जन (सं०पु०) स्नान जो डुबकी लगा कर किया जाय।
निमज्जित (वि०) निमग्न, डूबा हुआ।
निमटना (क्रि० अ०) देखो "निबटना"।
निमन (वि०) सुन्दर, रमणीय।
निमनाई (सं० स्त्री०) सुन्दरताई।
निमनाना (क्रि० स०) सुन्दर बनाना।
निमाखा (वि०) सावधान, उन्मत्त नहीं।

निमान (सं० पु०) नीची जगह, ढलुवा स्थान, वह स्थान जो अपेक्षाकृत नीचा हो और जहाँ आसानी से छिपा जा सके।

निमाना (वि०) निमान, नीची जगह, गहरी ज़मीन।

निमि (सं० पु०) एक राजा, ये मिथिला के राजा थे, ये ही मिथिला के प्रसिद्ध विदेह वंश के प्रवर्तक हैं, आँखों की पलक, निमेष। [लिए, वास्ते।

निमित्त (सं० पु०) हेतु, कारण, प्रयोजन, चिह्न, शकुन,

निमित्तकारण (सं० पु०) तीन कारणों में से एक कारण, समवायी और असमवायी कारण से भिन्न कारण, सहायक कारण। [विदेह, राजा जनक।

निमिराज (सं० पु०) मिथिला के एक राजा का नाम,

निमिष (सं० पु०) पलक, आँखों का ढँकना, आँखों का बन्द होना। काल विशेष, वह काल जितने में आँख की पलक एक बार गिरे।

निमिष-क्षेत्र (सं० पु०) तीर्थ विशेष, नैमिषारण्य, पौराणिक सूत के रहने का स्थान। [हुआ।

निमिषित (वि०) मीलित, आँखों का बन्द होना, मिचा

निमीलन (सं० पु०) पलक गिरना, आँखों के पलक का गिरना, आँखों का बन्द होना, मरना, मर जाना, एक क्षण, पलक गिरने का समय।

निमीलित (वि०) निमिषित, सङ्कुचित, सम्पुटित, आँखों का बन्द होना, मृत्यु, मरण।

निमेष (सं० पु०) पलक का गिरना, आँख का झपकना।

निमोना (सं० पु०) चना या मटर की बनाई रसादार तरकारी।

निम्न (वि०) नीचा, गहरा, गंभीर। [जाने वाली नदी।

निम्नगा (सं० स्त्री०) नीचे जाने वाली, गहरी जगह से

निम्नता (सं० स्त्री०) नीचापन।

निम्ब (सं० पु०) वृक्ष विशेष, नीम का पेड़।

निम्बक (सं० पु०) नीम का पेड़, नीबू।

निम्बरक (सं० पु०) नीम का वृक्ष।

निम्बादित्य (सं० पु०) एक वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य, इनका समय १० वीं सदी माना जाता है।

निम्बू (सं० पु०) वृक्ष विशेष, कागजी नीबू। [नुकूल।

नियत (वि०) निश्चित, स्थिर, नियमित, नियमबद्ध, नियमा-

नियतात्मा (वि०) अपनी आत्मा को नियमबद्ध रखने वाला, जो आत्मा को वश में रक्खे, योगी।

नियताहार (सं० पु०) अल्पाहार, परिमित भोजन।

नियति (सं० स्त्री०) भाग्य, आने वाला समय, जो नियत हो, निश्चित, स्थिर किया हुआ।

नियतेन्द्रिय (सं० पु०) जितेन्द्रिय।

नियन्ता (वि०) नियम करने वाला, व्यवस्था करने वाला, नियम को काम में लाने वाला, नियमानुसार व्यवस्था करने वाला, नियम-प्रयोक्ता, नियम-प्रणेता, शासक।

नियन्त्रित (वि०) यन्त्रित, नियमित, रोका गया।

नियम (सं० पु०) कार्य करने की व्यवस्था, दबाव, शासन, बँधा हुआ क्रम, ठहराई हुई रीति, पद्धति, शर्त, एक अर्थालंकार जिसमें किसी बात का एक ही स्थान पर नियम कर दिया जाय, विष्णु, महादेव, योग के आठ अङ्गों में से एक अङ्ग 'नियम' भी है, किसी बात को बराबर करते रहने का संकल्प।

नियमन (सं० पु०) नियमानुकूल संचालन, नियमानुकूल व्यवस्था करना, शासन, उच्छृङ्खलता हटा कर नियमबद्ध करना। [नियमित, व्यवस्थित।

नियमबद्ध (वि०) नियमानुकूल, नियमों से बँधा हुआ,

नियमशाली (वि०) नियमपूर्वक काम करने वाला।

नियमित (वि०) नियमबद्ध, नियमानुकूल, ठीक समय से होने वाला, नियम पालन करने वाला, नियम के अनुसार। [नियमों के अनुसार चलने वाला।

नियमी (वि०) नेमी, नियम का पालन करने वाला,

नियम्य (वि०) नियमित करने योग्य, उच्छृङ्खल, छोटा बच्चा, छोटा घोड़ा।

नियर (अव्य०) समीप, निकट, पास।

नियराई (सं० स्त्री०) समीपता, निकटता।

नियराना (क्रि० अ०) पास होना, निकट पहुँचना, पास पहुँचना, भेद दूर होना।

नियरे (अव्य०) समीप।

नियामक (वि०) नियम करने वाला, नियमानुसार चलाने वाला, शासक, प्रभु, नियम-निर्माता, नियम बनाने वाला, व्यवस्था करने वाला, नाव चलाने वाला, मल्लाह, सारथी।

नियाय (सं० पु०) न्याय।

नियार (सं० पु०) लेहना, चर।

नियारा (वि०) न्यारा, पृथक्, अलग, निर्णय, फ़ैसला।

नियारिया (सं० पु०) सोनार, धातुशोधक ।
नियुक्त (वि०) लगाया गया, जिसको कोई काम सौंपा जाय, नियोजित, जिसको किसी काम का भार सौंपा जाय, पदप्राप्त ।
नियुक्ति (सं० स्त्री०) स्वीकृति, पदप्राप्ति, नियुक्त किया जाना, नियुक्त होने की सूचना, काम का सौंपना ।
नियोक्ता (सं० पु०) काम में लगाने वाला, काम सौंपने वाला, अधिकारी, काम बाँटने वाला, आज्ञा देने वाला ।
नियोग (सं० पु०) काम सौंपना, किसी काम में लगाना, अधिकार देना, किसी काम का भार देना, एक प्रथा, जिसके अनुसार विधवा स्त्री देवर आदि से गर्भ धारण करती है ।
नियोग-धर्म (सं० पु०) पति की मृत्यु होने पर पति के छोटे भाई से पुत्र उत्पन्न कराना ।
नियोगी (वि०) नियुक्त किया हुआ, जिसका नियोग किया गया हो, नियुक्त-पुरुष, नियोजित ।
नियोजक (सं० पु०) नियोग करने वाला, काम पर लगाने वाला, काम सौंपने वाला ।
नियोजन (सं० पु०) काम में लगाना, काम सौंपना, अधिकार देना, किसी को भार सौंपना ।
नियोजित (वि०) नियुक्त किया हुआ, जिसको किसी काम का अधिकार सौंपा गया हो ।
निर् (उप०) नहीं, बिना, निश्चय, बाहर, उचित ।
निरंजन (सं० पु०) माया-रहित ।
निरंश (सं० पु०) अनधिकारी, अंशरहित, भाग-शून्य ।
निरकेवल (वि०) केवल, ख़ालिस, शुद्ध, बिना मिलावट का ।
निरक्ष देश (सं० पु०) भूमध्य रेखा की समीपवर्ती भूमि, यहाँ रात और दिन समान परिमाण के होते हैं ।
निरक्षन (सं० पु०) निरीक्षण, दर्शन । [अनपढ़ ।
निरक्षर (वि०) मूर्ख, अक्षर-ज्ञान-रहित, अशिक्षित,
निरखना (क्रि० स०) देखना, ध्यानपूर्वक देखना, सावधानी से देखना, ताकना ।
निरगुन (वि०) निर्गुण, गुणहीन, जिसमें गुण न हों, मूर्ख, गुणातीत, जो गुणों से परे हो ।
निरङ्कार (सं० पु०) परमेश्वर, (वि०) आकार-रहित ।
निरङ्कुश (वि०) बाधारहित, निडर, स्वेच्छाचारी, स्वतन्त्र ।
निरजोस (सं० पु०) निश्चय ।
निरञ्जना (सं० स्त्री०) पूर्णिमा तिथि, निर्मला ।
निरञ्जन (वि०) तेजोमय, निर्मल, निष्कलङ्क ।
निरत (वि०) संलग्न, तत्पर, लीन, लगा हुआ, आसक्त ।
निरति (सं० स्त्री०) तत्परता, संलग्नता, प्रेमपूर्वक संलग्नता ।
निरतिशय (वि०) उत्कृष्ट, सर्वोत्तम, सब से अच्छा, जिससे अच्छा दूसरा न हो । [ठहराव ।
निरधार (सं० पु०) निश्चय, निर्णय, किसी बात का
निरधारना (क्रि० स०) निश्चय करना, ठहराना, स्थिर करना, समझना, निर्णय करना, चुनना ।
निरनुनासिक (वि०) वे वर्ण, जो नासिका से उच्चारित नहीं होते, जिनके उच्चारण में नासिका की आवश्यकता नहीं होती ।
निरन्त (वि०) अनन्त, अपार । [अभेद, समान, सघन ।
निरन्तर (क्रि०वि०) सर्वदा, सदा, घन, निविड़, असीम,
निरन्तराभ्यास (सं० पु०) स्वाध्याय, वेदाध्ययन ।
निरन्न (वि०) अन्न के बिना, भूखा, निराहार, व्रत जो निराहार रह कर किया जाता है ।
निरपत्य (वि०) सन्तान-हीन, निःसन्तान ।
निरपराध (वि०) अदोष, अपराध-रहित, जिसने अपराध न किया हो ।
निरपवाद (वि०) जिसको कोई कलङ्क न हो, जिस पर कोई दोष न हो, निर्दोष, वह जिसकी कोई बुराई न की जाय, जिसके विरुद्ध कभी कुछ कहा न जा सके ।
निरपाय (सं० पु०) निर्विघ्न, रक्षा, अनुद्वेग ।
निरपेक्ष (वि०) निस्पृह, स्पृहा-रहित, इच्छा-रहित, जिसकी किसी विषय में इच्छा न हो, जिसे किसी बात की आवश्यकता न हो, उदासीन, बेलाग ।
निरपेक्षित (वि०) अनचाहा, अनावश्यक, जिसकी आवश्यकता न हो । [न हो ।
निरबंसी (वि०) निर्वंश, निःसन्तान, जिसे पुत्र आदि
निरबहना (क्रि०अ०) निभना, चलना, निबहना, निर्वाह होना ।
निरभिमान (वि०) अभिमान-शून्य, निरहंकार, सरल ।
निरभिलाष (वि०) अभिलाषा-रहित, जिसको किसी प्रकार की चाह न हो, आप्तकाम, पूर्णमनोरथ ।
निरमोही (वि०) निःस्नेह, मोह-शून्य, जिसे किसी प्रकार का मोह न हो ।

निरय (सं०पु०)नरक, बुरे कर्मों के फलभोग का स्थान।
निरर्थक (सं० पु०) अर्थहीन, बेमतलब का, व्यर्थ, बिना प्रयोजन।
निरवग्रह (वि०) बाधा-रहित, अपने अधीन, अपनी इच्छा के अनुसार, बाधक कारणों से रहित, निर्बाध।
निरवच्छिन्न (वि०) लगातार, क्रमशः, क्रमबद्ध।
निरवद्य (वि०) दोष-शून्य, रूपगत, किसी प्रकार का दोष जिसमें न हो, अनिन्दित, शुद्ध, स्वच्छ।
निरवधि (वि०) निःसीम, सीमा-रहित, अनियमित, जिसका हाता कभी न टूटे, जो कभी समाप्त न हो, जिसका अन्त न हो, अनन्त।
निरवयव (वि०) निराकार, अंग-रहित, अंग-हीन, (सं० पु०) परमात्मा, ब्रह्म।
निरवलंब (वि०) निराश्रय, असहाय, अनाथ, जिसका कोई आश्रय न हो, निराधार।
निरवाना (क्रि० स०) निराई का काम कराना, खेत की घास-पात आदि साफ़ कराना।
निरवारना (क्रि० स०) निवारण करना, टालना, हटाना, आयी हुई विपत्ति को दूर करना।
निरशन (सं० पु०) उपवास, भोजन न करना।
निरसंक (वि०) शङ्का-रहित, बेखटक, निःशङ्क।
निरस (सं० पु०) रस-हीन, नीरस, रसाभाव, शुष्क।
निरसन (सं० पु०) हटाना, दूर कर देना। [उच्चरित।
निरस्त (वि०) हटा हुआ, त्यक्त, त्याग किया हुआ, शीघ्र
निरस्त्र (वि०) अस्त्र-हीन, निरायुध, जिसके हथियार न हो।
निरहंकार (वि०) अहङ्कार-शून्य, अभिमान-रहित, जिसे अभिमान न हो, सादा स्वभाव, सरल।
निरा (क्रि० वि०) बिलकुल, बेमेल, ख़ालिस, केवल, जिसमें किसी दूसरी वस्तु का मेल न हो, शुद्ध।
निराई (सं० स्त्री०) निराने का काम, खेत से घास-पात आदि का निकालना।
निराकरण (सं० पु०) मिली हुई वस्तु को अलग करना, निर्णय करना, फ़ैसला करना, निबटारा, सन्देह को दूर करना, शंका मिटाना, शंका का समाधान करना।
निराकांक्ष (वि०) निस्पृह, आकांक्षा-रहित, जिसे इच्छा न हो, पूर्णमनोरथ।
निराकार (वि०) जिसका कोई आकार न हो, आकार-हीन, निरवयव, अंगहीन, सं० पु०) ब्रह्म, परमात्मा।
निराकुल (वि०) निश्चिन्त, व्याकुल नहीं, निःशङ्क।
निराकृत (वि०) हटाया हुआ, तिरस्कृत, अपमानित, अस्वीकृत, न माना हुआ। [अक्षर न हो।
निराखर (वि०) अक्षर-हीन, बिना अक्षर का, जिसमें
निरागस् (वि०) निरपराध, निष्पाप, पाप-रहित, अपराध-रहित, निर्दोष।
निरातङ्क (वि०) निर्भय, निर्भावना, निःशङ्क।
निरादर (सं० पु०) तिरस्कार, अपमान, अप्रतिष्ठा।
निराधार (वि०) निराश्रय, असहाय, बिना अवलंब का, बिना प्रमाण का, असत्य। [हो।
निरानन्द (वि०) दुःखी, आनन्द-हीन, जिसे आनन्द न
निराना (क्रि० स०) निकाई करना, खेत से घास-पात निकालना, खेत में बोये हुए पौधों को घास-पात से नुक़सान होता है इस कारण वे हटा दिये जाते हैं इसी घास-पात हटाने का नाम है, निराई।
निरापद (वि०) आपत्ति-शून्य, सुखी, जिसे कोई आपत्ति न हो, जिसे किसी प्रकार के ख़तरे की आशङ्का न हो, जिसको किसी आपत्ति आने का डर न हो, जो हानिकारी न हो।
निरापन (वि०) अपना नहीं, अनात्मीय। [हो, सुस्थ।
निरामय (वि०) निरोग, जिसे किसी प्रकार का रोग न
निरामिष (वि०) मांस-रहित, वह भोजन जिसमें मांस न हो, मांस-रहित-आहार।
निरायुध (वि०) निरस्त्र, अस्त्र-हीन, खाली हाथ।
निरार (वि०) न्यारा, पृथक्, अलग।
निरारी (वि०) निराला, अनोखा।
निरालंब (वि०) आलंब-रहित, निराश्रय।
निरालस (वि०) आलस्य-रहित, मुस्तैद, तत्पर।
निरालस्य (वि०) आलसहीन, मुस्तैद, तत्पर, उत्साही।
निराला (सं० पु०) एकान्त, वह स्थान जहाँ भीड़-भड़का न हो, जहाँ कोई दूसरा मनुष्य न हो, (वि०) निर्जन, विलक्षण, अद्भुत, अनुपम, जिसके समान दूसरा न हो, अलौकिक, अनोखा।
निरावलम्ब(वि०)अवलम्ब-हीन, निराश्रय, आश्रयहीन।
निराश (वि०) आशाहीन, हताश, जिसकी आशा टूट गयी हो। [अभाव।
निराशा (सं० स्त्री०) आशा का न होना, आशा का
निराश्रय (वि०) आश्रय-रहित, निरवलंब, निराधार।

निराहार (वि०) आहार का अभाव, भोजनाभाव, भोजन न करने वाला, जिसने भोजन न किया हो, वह व्रत जिसमें भोजन न किया जाय।

निरिच्छ (वि०) इच्छा रहित, निरभिलाष, जिसको किसी बात की इच्छा न हो। [करना।

निरिच्छना (क्रि० स०) देखना, प्रत्यक्ष करना, निरीक्षण

निरिन्द्रिय (वि०) इन्द्रिय-शून्य, जिसके इन्द्रियाँ न हों इन्द्रिय-शक्ति-रहित।

निरी (क्रि० वि०) केवल, निपट, निरा।

निरीक्षक (सं० पु०) दर्शक, देखने वाला, प्रत्यक्ष करने वाला, अच्छी तरह देखने वाला, जाँच करने वाला, देख भाल करने वाला।

निरीक्षण (सं० पु०) दर्शन, देखना। [जाँच किया हुआ।

निरीक्षित (वि०) देखा हुआ, दृष्ट, प्रत्यक्ष किया हुआ,

निरीश्वरवाद (सं० पु०) दर्शन का एक सिद्धान्त, जो ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता, नास्तिक-दर्शन चार्वाक-दर्शन। [वाला।

निरीश्वरवादी (वि०) नास्तिक, ईश्वर को न मानने

निरीह (वि०) जिसे किसी प्रकार की इच्छा न हो, निश्चेष्ट, निरभिलाष, निस्पृह, बंगला में इस शब्द का प्रयोग निरपराध के अर्थ में किया जाता है, पर हिन्दी या संस्कृत में इसका अर्थ निरपराध नहीं है।

निरुक्त (सं० पु०) वेद के छः अंगों में से एक अंग, इसमें शब्दों का अर्थ-निर्णय किया गया है। इस नाम का एक ग्रन्थ, इसके कर्ता यास्क मुनि हैं।

निरुक्ति (सं० स्त्री०) निर्वचन, शब्दों की व्याख्या, व्याकरणानुसार शब्द-व्याख्या।

निरुच्छ्वास (वि०) अधिक भीड़, जहाँ साँस लेने तक को जगह न हो, साँस न ले पकना, साँस का न आना, हर्ष का अभाव।

निरुत्तर (वि०) चुप हो जाने वाला, उत्तर न दे सकने वाला, जो कायल हो जाय, परास्त हो जाने वाला, शास्त्रार्थ में हार जाने वाला, वह जो उत्तर न दे सके, वह जिसका उत्तर न हो। [सिक स्फूर्ति न हो।

निरुत्साह (वि०) निरुत्साही, उत्साह-हीन, जिसे मान-

निरुत्सुक (वि०) अनाकुल, निरुद्वेग।

निरुद्ध (वि०) घेरा हुआ, रोका हुआ, घेरा डाला हुआ।

निरुद्यम (वि०) उद्यमहीन, अनुद्योगी, निकम्मा, जिसे कोई काम धंधा न हो, बेकार।

निरुद्यमी (वि०) बेकार, निकम्मा, उद्योग-हीन।

निरुद्योगी (वि०) जिसको कोई काम न हो, जो कोई काम-धंधा न करे।

निरुद्वेग (वि०) निराकुल, जो व्याकुल न रहे, निश्चिन्त, जिसे किसी प्रकार की चिन्ता न रहे।

निरुपद्रव (वि०) शान्त, उपद्रव-शून्य, जिसमें झगड़ा-टंटा न हो, निरुत्पात। [टंटा न करने वाला।

निरुपद्रवी (वि०) जो उपद्रव न करे, शान्त, झगड़ा-

निरुपम (वि०) अनुपम, बेजोड़, जिसकी समानता करने वाला दूसरा न हो, सर्वोत्तम, उत्कृष्ट।

निरुपयोगी (वि०) अनुपयोगी, जिसका कुछ उपयोग न हो सके, जो किसी काम न आ सके, निकम्मा, व्यर्थ, बेमतलब, निरर्थक।

निरुपाधि (वि०) उपाधि-शून्य, उपद्रव-रहित, निर्बाध, बाधा-रहित, विशेषण-हीन, निर्विशेषण, (सं० पु०) ब्रह्म।

निरुपाय (वि०) जिसको कोई उपाय न हो, लाचार।

निरुवरना (क्रि० अ०) उद्धार पाना, उबरना, सुलझना, छुटकारा पाना, मुक्त होना। [बंधन-मुक्त करना।

निरुवारना (क्रि० स०) मुक्त करना, छोड़ना, उद्धार करना,

निरूढ़ (वि०) विदित, विख्यात, प्रसिद्ध, प्रथित, परम्परागत, बहुत दिनों से चला आया, अंकुरित, अंकुर उगा हुआ।

निरूढ़-लक्षणा (सं० स्त्री०) अशक्ति-कृत लक्षणा, जो प्रयोजन के लिए न हो, जैसे प्रवीण, इस शब्द का अर्थ है अच्छा वीणा बजाने वाला, पर इसका प्रयोग होता है निपुण के अर्थ में।

निरूढ़ि (सं० स्त्री०) प्रसिद्धि, ख्याति, परम्परा, कुलाचार, प्रथा, निरूढ़लक्षणा। [हीन, रूप-रहित।

निरूप (वि०) निराकार, जिसके कोई रूप न हो, रूप-

निरूपक (सं० पु०) निरूपण करने वाला, निश्चय करने वाला तथा निर्णय करने वाला। [पक्ष-समर्थन।

निरूपण (सं० पु०) निर्णय, तत्त्व-कथन, यथार्थता-कथन,

निरूपना (क्रि० अ०) निर्णय करना, तत्त्व कहना, अपना पक्ष समर्थन करना, कोई बात निश्चित करना।

निरेखना (क्रि० स०) निरीक्षण करना, निरखना, प्रत्यक्ष करना, देखना। [न हो।

निरोग (वि०) स्वस्थ, रोग-मुक्त रोग-रहित, जिसे रोग

निरोगी (वि०) रोग-रहित, रोग-मुक्त ।
निरोध (सं० पु०) रुकावट, रोक, घेरा, गति या क्रिया की रोक । [वट डालने वाला ।
निरोधक (वि०) रोकने वाला, घेरा डालने वाला, रुका-
निरोधन (सं० पु०) रुकावट, रोक-थाम ।
निर्ऋति (सं० पु०) एक राक्षसी का नाम, नैर्ऋत्य कोण की स्वामिनी ।
निर्ख (फ़ा० सं० पु०) भाव, दर, बाज़ार का भाव ।
निर्गत (वि०) निकला हुआ, जो भीतर से बाहर निकल आया हो ।
निर्गत्य (क्रि० अ०) निकल कर ।
निर्गन्ध (वि०) गन्धहीन, जिसकी गन्ध निकल गई हो ।
निर्गम (वि०) बाहर निकला हुआ, (सं० पु०) निःसरण, बहिर्गमन, निकास । [प्रस्थान, भीतर से निकलना ।
निर्गमन (सं० पु०) बहिर्गमन, निकलना, बाहर जाना,
निर्गमना (क्रि० अ०) निकलना, बाहर जाना ।
निर्गुण (वि०) गुणहीन, मूर्ख, (सं० पु०) परमात्मा, त्रिगुणातीत, सत्व, रज और तम ये तीन गुण जिसमें न हों । [वाला ।
निर्गुणिया (वि०) निर्गुणोपासक, ब्रह्म की उपासना करने
निर्गुणी (वि०) मूर्ख, अज्ञान, गुणहीन, जिसमें कोई गुण न हो ।
निर्गुण्डी (सं० स्त्री०) इस नाम का एक वृक्ष, यह औषधि के काम आता है, वैद्यों के लिए यह आदर की चीज़ है ।
निर्गुण्डीकल्प (सं० पु०) इस नाम की औषधि, यह निर्गुण्डों के द्वारा तैयार की जाती है और पौष्टिक है, कुष्ठरोग में भी इसका प्रयोग होता है ।
निर्गुन (वि०) निर्गुण, गुणहीन, (सं० पु०) गुणातीत, परमात्मा, परमात्मा-विषयक गान ।
निर्घण्ट (सं० पु०) सूची, निघण्टु, कोष ।
निर्घृण (वि०) क्रूर, बुरे कामों में उत्साह रखने वाला, निन्दित, हेठ, बुरा, जिसे घृणा न हो ।
निर्छल (वि०) निश्छल, छल-हीन, कपट-हीन, जिसे छल-कपट न हो । [वीरान (सं० पु०) जंगल, आरण्य, वन ।
निर्जन (वि०) जन-हीन स्थान, विजन, एकान्त, सुनसान,
निर्जर (वि०) वृद्ध न होने वाला, जो कभी बूढ़ा न हो, (सं० पु०) देवता, अमर, त्रिदश, देवताओं की चौथी अवस्था । [जाता हो ।
निर्जल (वि०) जलहीन, सूखा, जिसमें जल पिया न
निर्जला एकादशी (सं० स्त्री०) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की एकादशी, भीमसेनी एकादशी, उस दिन जल पीने का विधान नहीं है । [हुआ ।
निर्जित (वि०) जीता हुआ, वशीकृत, अधीन किया
निर्जीव (वि०) जीवनहीन, चेतनाशून्य, निष्प्राण, प्राण-हीन, निर्जीव के समान, उत्साहहीन, जड़ ।
निर्झर (सं० पु०) सोता, जलप्रपात, पर्वत से निकलने वाला जल का झरना ।
निर्झरिणी (सं० स्त्री०) नदी, तरङ्गिणी, स्रोतायिनी ।
निर्णय (सं० पु०) सन्देह-दूरीकरण, दो पक्षों में से एक पक्ष को ठीक बतलाना, अवधारण, स्थिरीकरण, सिद्धान्त, निश्चय करना, फ़ैसला, निबटारा ।
निर्णय-कर्ता (सं० पु०) निश्चय-कर्ता ।
निर्णय-कारक (सं० पु०) निश्चय-कर्ता ।
निर्णयोपमा (सं० स्त्री०) एक अलङ्कार का नाम जिसमें उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों की विवेचना की जाती है ।
निर्णीत (वि०) निर्णय किया हुआ, निश्चय किया हुआ ।
निर्णेता (सं० पु०) निर्णय-कर्ता ।
निर्दई (वि०) दयाहीन, निर्दय, क्रूर ।
निर्दय (वि०) दयाहीन, जिसे दया न हो, क्रूर, कठोर ।
निर्दयता (क्रि० अ०) क्रूरता, कठोरता ।
निर्दहना (क्रि० स०) जलाना, भस्म करना, सुलगाना ।
निर्दिष्ट (वि०) बतलाया हुआ, जिसके संबन्ध में कोई बात बतलाई जाय, निश्चित, स्थिरीकृत ।
निर्देश (सं० पु०) शासन, आज्ञा, निश्चय, उल्लेख, किसी के संबन्ध में सम्मति देना, लक्ष्य करना ।
निर्दोष (वि०) दोष-शून्य, अनपराधी, जिसने कोई अपराध न किया हो, जिसमें कोई दोष न हो, निष्कलङ्क । [लङ्क, निर्दोष ।
निर्दोषी (वि०) दोषशून्य, निरपराध, पापहीन, निष्क-
निर्द्वन्द्व (वि०) निश्चिन्त, मानसिक विकारों से हीन, जिसका कोई प्रतिद्वन्द्वी न हो, स्वाधीन, स्वच्छन्द, निर्बाध ।
निर्धन (वि०) धनहीन, दरिद्र, जो धनी न हो ।
निर्धनता (सं० स्त्री०) निर्धनपन, ग़रीबी, दरिद्रता ।

निर्धार (सं० पु०) ठहराव, निर्णय, निश्चय, स्थिरीकरण निर्धारण ।

निर्धारण (सं० पु०) निर्णय, निश्चय ।

निर्धारना (क्रि० स०) निर्णय करना, निश्चय करना, कोई बात रोपना । [कर लिया गया हो ।

निर्धारित (वि०) निर्णीत, निश्चित, जिसका निर्णय

निर्निमित्त (वि०) बिना कारण, अकारण, अकस्मात् ।

निर्पक्ष (वि०) निष्पक्ष, सहायक-हीन, अनाथ, दीन. असहाय,पक्षपात-हीन । [जिसका कोई प्रयोजन न हो ।

निर्फल (वि०) निष्फल, फल-हीन, व्यर्थ, निष्प्रयोजन,

निर्बंश (वि०) वंशहीन, निःसन्तान, पुत्र-पुत्री-हीन ।

निर्बन्ध (वि०) रुकावट, बन्धन, रोक, आग्रह, हठ ।

निर्बल (वि०) बलहीन, दुर्बल, जिसको किसी प्रकार का बल न हो ।

निर्बलता (सं० स्त्री०) बलहीनता ।

निर्बाचन (सं० पु०) निर्णय, चुनाव ।

निर्बाण (सं० पु०) मुक्ति, मोक्ष । [करना ।

निर्बासन (सं० पु०) निष्कासन, निकालना, हटाना, दूर

निर्बुद्धि (वि०) बुद्धि-हीन, असमझ, मूर्ख ।

निर्बोध (वि०) बोध-हीन, अज्ञान, अबूझ, मूर्ख ।

निर्भय (वि०) निडर, ढीठ, भय-हीन, जिसे डर न हो ।

निर्भर (वि०) पूर्ण, भरा हुआ, अवलंबित, आश्रित ।

निर्भर्त्सन (सं० पु०) तिरस्कार, डाँट-डपट ।

निर्भीक (वि०) निडर, निर्भय, जिसे भय न हो ।

निर्भीकता (सं० स्त्री०) निर्भयता, भय का अभाव ।

निर्भ्रम (वि०) ज्ञानी, भ्रान्ति-रहित, निश्चयात्मा, जिसको भ्रम न हो ।

निर्भ्रान्त (वि०) निर्भ्रम, भ्रम-शून्य, भ्रम-रहित ।

निर्मम (वि०) ममता-शून्य, निर्मोही, जिसे मोह न हो ।

निर्मर्यादा (वि०) अनादरकारी, अपमानकारी । [पवित्र ।

निर्मल (वि०) शुद्ध, स्वच्छ, मल-रहित, निर्दोष, निष्कलङ्क,

निर्मलता (सं० स्त्री०) स्वच्छता, शुद्धता, सफ़ाई ।

निर्मला (सं० पु०) नानक पंथ की एक शाखा, इस शाखा के लोग गृहत्यागी होते हैं, इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक का नाम महात्मा रामदास था । निर्मला सम्प्रदायी साधु ।

निर्मली (सं० स्त्री०) कनक नामक वृक्ष का फल, यह गँदला जल साफ़ करने के काम आता है ।

निर्मलोपल (सं० पु०) स्वच्छ पत्थर, स्फटिक ।

निर्माण (सं० पु०) गुथन, गठन, रचना, बनावट ।

निर्माणविद्या (सं० स्त्री०) बनाने की विद्या, रचनाशास्त्र, वस्तु-विद्या, जिसमें घर, पुल, मन्दिर, सड़क आदि बनाने की क्रिया लिखी हो ।

निर्माता (सं० पु०) रचयिता, बनाने वाला ।

निर्मात्रिक (वि०) बिना मात्रा का, मात्रा-हीन अक्षर, छन्दोविशेषण । [करना ।

निर्माना (क्रि० स०) रचना करना, बनाना, निर्माण

निर्मायल (सं० पु०) निर्माल्य, अच्छिष्ट, देव-प्रसाद ।

निर्माल्य (सं० पु०) देव-समर्पित वस्तु, देवता पर चढ़ी चीज़, देवता को समर्पण करने के पश्चात् वह वस्तु निर्माल्य कहलाती है, बासा पुष्प आदि ।

निर्मित (वि०) बनाया हुआ, रचित, कृत, गठित ।

निर्मिति (सं० स्त्री०) निर्माण, रचना, बनावट ।

निर्मुक्त (वि०) मुक्त, बन्धन-हीन, त्यक्त-बन्धन, जो बन्धन से छूट गया हो । [अविश्वासनीय ।

निर्मूल (वि०) बेजड़, जिसकी जड़ न हो, अस्थिर, दद,

निर्मूलन (सं० पु०) निर्मूल होना, निर्मूल करना, जड़ खोदना, किसी को तंग करने का प्रयत्न करना ।

निर्मोक (सं० पु०) केंचुली, साँप की केंचुली, त्वचा ।

निर्मोल (वि०) अनमोल, जिसके मूल्य का अन्दाज़ा न किया जा सके, अनर्घ्य ।

निर्मोह (वि०) निर्मोही, ममता-शून्य, अनुराग-शून्य, जिसको किसी विषय से प्रेम न हो ।

निर्मोहिया (वि०) निर्मोही, ममता-शून्य ।

निर्मोही (वि०) दया-शून्य, अनुराग-रहित, प्रेम-रहित, जिसका किसी वस्तु पर अनुराग न हो ।

निर्याण (सं० पु०) निकलना, प्रस्थान, प्रयाण, यात्रा, आक्रमण के लिए यात्रा ।

निर्यातन (सं० पु०) वैर-शोधन, बदला, अपकारी के प्रति अपकाराचरण, धरोहर लौटाना, ऋण चुकाना ।

निर्यास (सं० पु०) गोंद, क्षरण, निःसरण, क्वाथ, काढ़ा ।

निर्युक्ति (सं० स्त्री०) युक्ति-रहित, अनुचित ।

निर्योग-क्षेम (वि०) निश्चिन्त, चिन्ता-रहित ।

निर्लज्ज (वि०) बेशरम लज्जाहीन, बेहया ।

निर्लज्जता (सं० स्त्री०) बेशरमी, लज्जाहीनता ।

निर्लिप्त (वि०) वासना-शून्य, निर्मोह, किसी विषय में

अनुराग न रखने वाला, जो किसी विषय में आसक्त न हो।

निर्लेप (वि०) बेलाग, निर्लिप्त, सङ्ग-रहित, पाप-शून्य, सुख-दुःख आदि कर्म-फल-भोग से मुक्त, निष्काम।

निर्लेश (वि०) लेश-रहित, सर्वथा अभाव।

निर्लोभ (वि०) लोभ-शून्य, जिसे लालच न हो।

निर्लोभी (वि०) लोभ-शून्य।

निर्वंश (वि०) वंशहीन, निःसन्तान, जिसके वंश का उच्छेद हो गया हो। [नाटकीय सन्धि विशेष।

निर्वहण (सं० पु०) निर्वाह, निवाह, गुज़ारा, समाप्ति,

निर्वाक (वि०) आश्चर्यित, अचम्भित, वाक्-शून्य, जो बोल न सके, जिसकी बोली न निकले। (सं० पु०) गूंगा।

निर्वाचक (सं० पु०) चुनने वाला।

निर्वाचन (सं० पु०) चुनना, निर्दिष्ट करना।

निर्वाचित (वि०) चुना हुआ।

निर्वाण (वि०) बुझा हुआ, डूबा हुआ, शांत, धीमा, मृत, मरा हुआ, शून्यता को प्राप्त, बिना वाण का, (सं० पु०) अस्त, गमन, मुक्ति, मोक्ष। [आनन्द।

निर्वाण-सुख (सं० पु०) मुक्ति का सुख, मोक्ष का

निर्वाणी (वि०) संन्यासियों का एक भेद, रामानन्दी साधुओं का एक दल, एक जैन देवता।

निर्वात (वि०) वातहीन प्रदेश, वह स्थान जहाँ वायु का प्रवेश न हो सके। [तिरस्कार, अपमानजनक संवाद।

निर्वाद (सं० पु०) अपवाद, निन्दा, कलङ्क-घोषणा,

निर्वाध (वि०) बाधाहीन, निष्कण्टक, बे रोक टोक।

निर्वाप (सं० पु०) पितरों के उद्देश्य से दिया हुआ दान, श्राद्धीय दान। [बुझाना, वध।

निर्वापण (सं०पु०) समाप्त होना, दान, त्याग, दीपक का

निर्वास (सं० पु०) निकाल देना, बाहर कर देना, दूरीकरण।

निर्वासक (सं० पु०) निकालने वाला, वहिष्कारक।

निर्वासन (सं० पु०) निष्कासन, निकाल देना, निकल जाने का दण्ड देना, जलावतनी।

निर्वासित (वि०) दण्डित, वहिष्कृत। [योग्य।

निर्वास्य (वि०) निकालने योग्य, अपराधी, निर्वासन

निर्वाह (सं० पु०) समाप्ति, कार्य-साधन, विवाह, चला जाना, पूरा होना।

निर्विकल्प (वि०) जिसमें किसी प्रकार का विकल्प न हो, जिसमें सन्देह न हो, स्थिर, निश्चय, बिना विकल्प का।

निर्विकल्प-समाधि (सं० पु०) समाधि का एक भेद, इस समाधि में ज्ञाता, ज्ञान आदि का भेद नहीं रहता, मन अद्वितीय वस्तु के रूप में परिणत हो जाता है।

निर्विकार (वि०) विकार-रहित, जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न हो। [निर्बाध।

निर्विघ्न (वि०) विघ्न-रहित, जिसमें कोई बाधा न हो,

निर्विवाद (वि०) विवाद-शून्य, झगड़े के कारण से रहित।

निर्विवेक (वि०) विचार-रहित, निर्बोध।

निर्विशंक (वि०) निडर, साहसी।

निर्वीज (वि०) निष्कारण, बीज-हीन, निर्हेतुक।

निर्वीज-समाधि (सं० स्त्री०) समाधि का भेद, इस समाधि में चित्त का पूर्ण रूप से नाश हो जाता है, उसका मान तक नहीं होता।

निर्वीरा (सं० स्त्री०) पति-पुत्र-हीना स्त्री, जिस स्त्री के पति और पुत्र न हो। [निष्पत्ति हो गई हो।

निर्वृत्त (वि०) समाप्त, पूरा हुआ, पूर्ण हुआ, जिसकी

निर्वृत्ति (सं० स्त्री०) सिद्धि, समाप्ति, पूर्णता।

निर्वेद (सं० पु०) आत्म-तिरस्कार, अपने ऊपर घृणा, अपना तिरस्कार, विषम द्वेष, वैराग्य, पश्चात्ताप, पछतावा। [हीन।

निर्वैर (वि०) जिससे किसी की शत्रुता न हो, शत्रुत्व-

निर्व्यलीक (वि०) छल-रहित, निष्कपट।

निर्व्याज (वि०) छल-रहित, कपट-शून्य, सीधा, सरल।

निर्व्याधि (वि०) व्याधि-रहित, रोग-मुक्त, निरोग।

निर्हरण (सं० पु०) शव को निकालना, शव को घर से बाहर ले जाना, जलाना, नाश करना।

निर्हेतुक (क्रि० वि०) अकारण, बिना प्रयोजन।

निल (सं० पु०) एक राक्षस का नाम, यह विभीषण का मन्त्री था।

निलज (वि०) निर्लज्ज, बेशरम।

निलजई (सं० स्त्री०) निर्लज्जता, बेशरमी।

निलज्ज (वि०) निर्लज्ज, बेशरम।

निलय (सं० पु०) घर, गृह, निवास-स्थान।

निलाम (सं० पु०) किसी वस्तु की बोली बोलकर सब से अधिक दाम लगाने वाले के हाथ बेचने की रीति।

निलीन (वि०) गूढ़, छिपा हुआ, गुप्त, बिलकुल छिपा हुआ, बहुत अधिक लीन।
निवपन (सं० पु०) श्राद्ध में पितरों के उद्देश्य से दिया हुआ दान।
निवर (वि०) निवारण करने वाला, पचाने वाला, निर्णय करने वाला।
निवरा (सं० स्त्री०) निर्वरा, वर-हीन कन्या, वह कन्या जिसके लिए वर न मिले।
निवर्तन (सं० पु०) रोकना, रुकावट डालना, लौटाना, वह भूमि या वस्तु जो किसी को जीविका के लिए राजा की ओर से दी जाती है, भूमि की एक नाप जो २१० हाथ लम्बाई और इतनी ही चौड़ाई की होती है।
निवसना (क्रि० अ०) रहना, वास करना, ठहरना।
निवह (सं० पु०) समूह, वृन्द, झुंड।
निवाजना (क्रि० स०) कृपा करना, दया करना, रक्षा करना, अनुग्रह करना।
निवात (सं० पु०) निर्वात, वातहीन प्रदेश, वह स्थान जहाँ वायु न जा सके।
निवात-कवच (सं० पु०) एक दैत्य जो प्रह्लाद का पुत्र था, इसने एक बड़ा भारी दल बनाया था उस दल का भी नाम निवात कवच ही था। इस दल से देवताओं को बड़ा कष्ट होता था। इन्द्र के अनुरोध से अर्जुन ने दल के साथ इस दैत्य का नाश किया।
निवान (सं० पु०) निचान, निचाई, गहराई, जिस स्थान पर पानी जमता हो।
निवाना (क्रि० स०) झुकाना, नवाना।
निवार (सं० स्त्री०) जमवट, यह गोल पहिए के आकार की बनाई जाती है और कुएँ की जुड़ाई करने के लिए नीचे दी जाती है, मोटे सूत की बनी एक पट्टी जो पलंग बुनने के काम आती है।
निवारक (वि०) निवारण करने वाला, दूर करने वाला।
निवारण (सं० पु०) हटाना, आई हुई आपत्ति आदि को दूर करना, रोकना, रुकावट डालना।
निवारत (क्रि०स०) बचाता है, रक्षा करता है, रोकता है।
निवारना (क्रि० स०) हटाना, दूर करना, रोकना, बचाना, रोक कर रक्षा करना।
निवारि (क्रि० स०) बचाकर, रोक कर।
निवारित (क्रि० स०) बचाया हुआ, रक्षा किया हुआ।
निवारी (सं० स्त्री०) पुष्प विशेष, यह चैत्र मास में फूलता है।
निवाला (फ़ा० सं० पु०) ग्रास, कौर, अन्न का वह भाग जो एक बार मुँह में डाला जा सके।
निवास (सं० पु०) रहना, ठहरना, वास करना, विश्राम करना।
निवासस्थान (सं० पु०) रहने का स्थान, ठहरने की जगह, घर, मकान, गृह।
निवासी (सं० पु०) रहने वाला, वास करने वाला।
निविड़ (वि०) देखो "निविर"।
निविर (वि०) सघन, सङ्कीर्ण, एक में सटा हुआ।
निविष्ट (वि०) लगा हुआ, लीन, तत्पर, एकाग्र चित्त होकर किसी काम में लगना, मिला हुआ, लिपटा हुआ।
निवीत (सं० पु०) गले से लटका हुआ कपड़ा, चादर ओढ़ने का कपड़ा, यज्ञोपवीत।
निवुकना (क्रि० स०) पार पाना, बच जाना, त्राण पाना, उद्धार पाना, निबटना।
निवृत्त (वि०) छूटा हुआ, विरक्त, विरत, तृप्त होकर जो अलग हो गया हो।
निवृत्ति (सं० स्त्री०) विरति, उपराम, मुक्ति, मोक्ष के उद्देश्य से धर्मानुष्ठान करने वालों की एक पद्धति, एक प्राचीन तीर्थ का नाम।
निवेदक (सं० पु०) निवेदन करने वाला, प्रार्थना करने वाला।
निवेदन (सं० पु०) प्रार्थना, विनती, अपने मनोगत अभिप्राय का प्रकाशन, नज़र, भेंट, समर्पण।
निवेदन-पत्र (सं० पु०) प्रार्थना-पत्र।
निवेदित (वि०) कथित, उक्त, समर्पित, प्रदत्त।
निवेरना (क्रि० स०) ख़तम करना, झगड़ा निबटाना, झगड़े के मूल को दूर करना, निर्णय करना।
निवेरा (वि०) राशि में से पसन्द कर निकाला हुआ, छाँटा हुआ, चुना हुआ, निर्वाचित।
निवेश (सं० पु०) मार्ग में ठहरने का स्थान, पड़ाव, शिविर, डेरा, रास्ते का मुक़ाम।
निशङ्क (वि०) शंका-रहित, त्रास-रहित, निर्भय, निश्चिन्त जिसे किसी प्रकार का भय या शङ्का न हो।
निशचर (सं० पु०) रात्रिचर, राक्षस, (वि०) रात में चलने वाले प्राणी।
निशमन (सं० पु०) देखना, सुनना।
निशा (सं० स्त्री०) रात्रि, रात, रजनी, यामिनी, हरदी।
निशाकर (सं० पु०) चन्द्रमा, कपूर, एक महर्षि का नाम।
निशाखातिर (वि०) विश्वास किए हुए, निश्चिंत।
निशागम (सं० पु०) रात्रि होना, सन्ध्या, साँझ।

निशाचर (सं० पु०) राक्षस, रात्रिचर, (वि०) रात में चलने वाले प्राणी, उल्लू आदि।
निशाचरी (सं० स्त्री०) राक्षसी, व्यभिचारिणी स्त्री, अभिसारिका, गन्ध द्रव्य विशेष।
निशाचारी (वि०) रात में चलने वाला।
निशाटन (सं० पु०) उल्लू, उलूक। [किया हुआ।
निशात (वि०) पैना किया हुआ, शान धराया हुआ, तेज़
निशाधीश (सं० पु०) चन्द्रमा, रात्रिपति।
निशान (फ़ा० सं० पु०) चिह्न, लक्षण, ध्वजा, पताका। मुहा०—निशान करना = चिह्नित करना।
निशानची (सं० पु०) निशान लेकर चलने वाला, सेना आदि के आगे झंडा लेकर चलने वाला।
निशानदेही (सं० स्त्री०) पहुँचवाना, सम्मन तामील करवाना, पकड़ने के लिए बतलाना।
निशानबरदार (फ़ा० सं० पु०) निशानची, निशान ले चलने वाला, झंडाबरदार। [लक्ष्य।
निशाना (फ़ा० सं० पु०) लक्ष्य, तीर बन्दूक आदि का मुहा०—निशाना मारना = लक्ष्य-बेध करना, किसी को लक्ष्य कर ताना मारना। निशाना बाँधना = लक्ष्य सन्धान करना।
निशानाथ (सं० पु०) चन्द्रमा।
निशानी (सं० स्त्री०) चिह्न, स्मरण करने का साधन।
निशान्त (सं० पु०) रात्रि का अन्त, प्रातःकाल, प्रभात, घर, मकान।
निशापति (सं० पु०) चन्द्रमा, शशि, कपूर।
निशामुख (सं० पु०) प्रदोषकाल, सन्ध्या, रात्रि का आगमन-काल।
निशावसान (सं० पु०) प्रभात काल, सबेरा, रात्रि समाप्त होना। [हल्दी।
निशि (सं० स्त्री०) रात्रि, रात, रजनी, यामिनी, तमिस्रा,
निशिचर (सं० पु०) निशाचर, रात्रिचर, राक्षस।
निशित (वि०) तीक्ष्ण, तीखा, पैना (सं० पु०) लोहा।
निशिदिन (वि०) रात-दिन, अहोरात्र।
निशिनाथ (सं० पु०) चन्द्रमा।
निशिपाल (सं० पु०) एक छन्द का नाम, चन्द्रमा।
निशिभानु (सं० पु०) चन्द्रमा।
निशिमुख (सं० पु०) सन्ध्या-काल, साँझ, प्रदोष।
निशीथ (सं० पु०) आधी रात का समय।
निशीथिनी (सं० स्त्री०) रात्रि, रात, शर्वरी, रजनी।
निशुम्भ (सं० पु०) एक दानव का नाम, यह कश्यप का पुत्र था, इसकी माता का नाम दनु था। शुम्भ निशुम्भ और निमुचि ये तीन भाई थे। निमुचि को इन्द्र ने मार डाला था। शुम्भ निशुम्भ ने कात्यायनी देवी से ब्याह करना चाहा, इसके लिए उन लोगों ने दूत भेजा, कात्यायनी देवी ने कहा जो युद्ध में मुझे हरा देगा, उसीसे मैं ब्याह करूँगी, शुम्भ और निशुम्भ ने देवी की इस प्रतिज्ञा को गर्वोक्ति समझा। इन लोगों ने अपने सिपाहियों को कात्यायनी को पकड़ा कर ले आने के लिए भेजा, सेनापति को भेजा पर वे सब मारे गये, अन्त में वे स्वयं आये और वे भी मारे गये।
निशुम्भमर्दिनी (सं० स्त्री०) कात्यायनी देवी, दुर्गा।
निशेश (सं० पु०) चन्द्रमा, रात्रिपति, निशाकर।
निश्चय (सं० पु०) निःसन्देहात्मक ज्ञान, सन्देह-हीन ज्ञान, दृढ़ धारणा, दृढ़ संकल्प, निर्णय, स्पष्ट, अवश्य।
निश्चयज्ञान (सं० पु०) श्रद्धा, दृढ़ विश्वास।
निश्चयात्मक (वि०) निःसन्देहात्मक, यथार्थ।
निश्चर (सं० पु०) एकादश मन्वन्तर के सप्तर्षियों के एक ऋषि का नाम। [अपने स्थान पर दृढ़ रहे, स्थावर।
निश्चल (वि०) अटल, अचल, न डिगने वाला, जो
निश्चला (सं० स्त्री०) पृथ्वी, अचला, न चलने वाला।
निश्चित (वि०) निःसन्दिग्ध, निर्णीत, निश्चय प्राप्त, दृढ़, जिसके संबन्ध में किसी प्रकार का सन्देह न रहे।
निश्चितकर्मा (वि०) स्थिरकर्मा, दृढ़कर्मा।
निश्चिन्त (वि०) निःशङ्क, चिन्ताहीन, निराकुल, जिसे किसी प्रकार की चिन्ता न रहे।
निश्चिन्तई (सं० स्त्री०) निश्चिन्तता, चिन्ता का अभाव।
निश्चीयमान (वि०) निश्चयकरण। [की चेष्टा न हो।
निश्चेष्ट (वि०) चेष्टा-हीन, अचेत, स्थिर, जिसमें किसी प्रकार
निश्छल (वि०) निष्कपट, छल-हीन, सरल।
निश्छिद्र (वि०) छिद्र बिना, दोष बिना। [साधन।
निश्रेणी (सं० स्त्री०) सीढ़ी, ज़ीना, अटारी पर चढ़ने का
निश्रेयस (सं० पु०) मुक्ति, मोक्ष, अपवर्ग, परम पुरुषार्थ, परमानन्द, दुःख का अत्यन्त अभाव।
निश्वास (सं० पु०) निसाँस, प्राण वायु का बाहर निकलना, नाक से बाहर निकलने वाला प्राण वायु।

निश्शक्त (वि०) शक्तिहीन, असमर्थ, निर्बल।
निश्शेष (वि०) समाप्त, जिसका कुछ भी बाकी न हो।
निषङ्ग (सं० पु०) तूणीर, भाथा, बाण रखने की थैली।
निषध (सं० पु०) एक पर्वत का नाम, एक राजा का नाम, देश विशेष, स्वर विशेष, निषाद स्वर।
निषाद (सं० पु०) जाति विशेष, एक प्राचीन जाति।
निषिद्ध (वि०) निषेध प्राप्त, जिसका निषेध किया गया हो, वर्जित, अनुचित बतलाया हुआ, प्रतिषेधित।
निषिद्धाचरण (वि०) अविहित आचरण, निन्दित आचरण, शास्त्र-विरुद्ध आचरण। [करने वाला।
निषूदन (सं० पु०) नाशक, मारने वाल, हत्या या वध
निषेक (सं० पु०) संस्कार विशेष, गर्भाधान संस्कार, वीर्य्य।
निषेचन (सं० पु०) सींचना, निषेक करना, खेत आदि का सींचना। [न करने की आज्ञा।
निषेध (सं० पु०) निवारण, मना करना, रोकना, वर्जन,
निषेधक (सं० पु०) निषेध करने वाला, रोकने वाला, निवारक, निवारण-कर्त्ता।
निषेधन (सं० पु०) निवारण, रुकावट, रोक।
निषेध-पत्र (सं० पु०) निषेध की आज्ञा, जिस पत्र के द्वारा मना किया गया हो। [हुआ, वर्जित।
निषेधित (वि०) निषेध किया गया, निषिद्ध, मना किया
निष्क (सं० पु०) परिमाण विशेष, एक प्रकार की तौल प्राचीन समय का एक सिक्का, इसके कई परिमाण होते थे, एक सौ आठ रत्ती भर का भी यह होता था। टंक, एक गहने का नाम।
निष्कण्टक (वि०) शत्रुहीन, अकण्टक, बाधा-हीन, निर्बाध।
निष्कपट (वि०) कपट-शून्य, निश्छल, सीधा, भोला।
निष्कपटता (सं० स्त्री०) निष्कपट होना, कपट-हीन होना।
निष्कर (सं० पु०) कर-रहित, वह भूमि जिसकी मालगुज़ारी न देनी पड़ती हो, माफ़ी ज़मीन।
निष्करुण (वि०) करुणा-हीन, निर्दय, कठोर, कठिन।
निष्कर्म (वि०) कर्म-हीन, वासना हीन,-निष्काम, निकम्मा।
निष्कर्ष (सं० पु०) निचोड़, निष्पत्ति, निश्चय, निर्णय।
निष्कलङ्क (वि०) कलंक-हीन, निर्दोष, अपराध-हीन।
निष्कलङ्कित (वि०) कलंक-हीन, लांछन-हीन, जिस पर कलंक न लगा हो, निर्दोष। [भावना-शून्य।
निष्काम (वि०) कामना-हीन, आसक्ति-रहित, निस्वार्थ,
निष्कारण (वि०) कारण-हीन, बिना कारण, निर्हेतु, निर्निमित्त।
निष्काशन (सं० पु०) निकालना, निकाल बाहर करना, निकल जाने का दण्ड देना। [कुछ न हो।
निष्किञ्चन (सं० पु०) दरिद्र, धन-हीन, जिसके पास
निष्कृति (सं० स्त्री०) छुटकारा, मुक्ति।
निष्कृपा (वि०) कृपा-हीन, निर्दय, तीखा, चोख।
निष्क्रमण (सं० पु०) निकलना, बाहर निकलना, घर के बाहर जाना, संस्कार विशेष, लड़के के चौथे या पाँचवें महीने यह संस्कार होता है।
निष्क्रय (सं० पु०) दाम, मूल्य, सिक्के या धन के रूप में बदला, विनिमय, वेतन, तनख़्वाह।
निष्क्रान्त (वि०) बाहर निकला हुआ, निर्गत।
निष्क्रिय (वि०) क्रिया-हीनता, निश्चेष्ट, कर्म का अभाव।
मुहा०—निष्क्रिय प्रतिरोध = बिना शस्त्र का मुक़ाबिला, अनुचित आज्ञा का न मानना, अनुचित आज्ञा या व्यवहार का बिना किसी कार्य द्वारा तिरस्कार।
निष्ठ (वि०) स्थित, ठहरा हुआ, पदार्थ में रहने वाला धर्म, पदार्थ का सहचर गुण।
निष्ठा (सं० स्त्री०) स्थिति, श्रद्धा, अनुराग, तत्परता, झुकाव, पूज्यबुद्धि, मन की एकाग्रता।
निष्ठावान् (वि०) धार्मिक, श्रद्धा-भक्ति रखने वाला।
निष्ठुर (वि०) क्रूर, कठोर, निर्दय, नृशंस।
निष्ठुरता (सं० स्त्री०) क्रूरता, कठोरता, निर्दयता।
निष्णात (वि०) प्रवीण, ज्ञाता, निपुण, किसी विषय का पारंगत।
निष्पक्ष (वि०) पक्ष-हीन, पक्षपातरहित, उदार।
निष्पत्ति (सं० स्त्री०) समाप्ति, निर्णय, फ़ैसला, विवाद की समाप्ति, मीमांसा। [स्थिर।
निष्पन्द (वि०) बिना धड़क का, अचलन, निष्कम्प,
निष्पन्न (वि०) समाप्त, निर्णीत, फ़ैसला किया हुआ, तैयार, पूर्ण किया हुआ।
निष्परिग्रह (सं० पु०) योगी, संन्यासी, तपस्वी।
निष्पादक (वि०) सम्पादक, निष्पन्न करने वाला, बनाने वाला, निर्णय करने वाला, मीमांसा करने वाला।
निष्पादन (सं० पु०) साधन, सम्पादन, नियुक्ति, शेष करना।
निष्पाप (सं० पु०) निरपराध, पापहीन, निर्दोष।
निष्पीड़न (सं० पु०) निचोड़ना, रस निकालने के लिये

किसी वस्तु को दबाना, धोती दबा कर पानी निकालना, अत्याचार, दबाव, उपद्रव, तरह तरह के उपायों से व्याकुल करना।
निष्प्रतिभ (वि०) मूर्ख, निर्बोध, हतबुद्धि। [हो।
निष्प्रभ (वि०) प्रभाहीन, मैला, गन्दा, जिसमें आब न
निष्प्रयोजन (वि०) प्रयोजन के बिना, व्यर्थ, जिसका कोई प्रयाजन न हो, बेमतलब का, लाभ-हीन।
निष्फल (वि०) फल-हीन, व्यर्थ, निरर्थक, जिसका कोई फल न हो, अंडकोश-रहित।
निसंसना (क्रि० अ०) साँस लेना, ज़ोर से साँस लेना, हाँफना, निःश्वाँस लेना।
निसक्क (वि०) असक्त, कमज़ोर, दुर्बल, शक्ति-हीन, निर्बल।
निसङ्कट (वि०) निःसङ्कट, सङ्कट-रहित, अनायास।
निसतरना (क्रि० अ०) निस्तार पाना, छुटकारा मिलना, उद्धार पाना।
निसन्धाई (सं० स्त्री०) निश्छिद्र, ठोस, पोढा।
निसबत (अ० सं० स्त्री०) संबन्ध, विषय, लगाव, ताल्लुक़, मँगनी, बिवाह, संबंध की बात।
निसरना (क्रि० अ०) निकलना, बाहर जाना।
निसर्ग (सं० पु०) स्वभाव, प्रकृति, रूप, आकृति, दान, सृष्टि।
निसवासर (क्रि० वि०) रात-दिन, अहोरात्र।
निसस (वि०) निःश्वाँस-रहित, बेहोश, निष्प्राण।
निसाँस (सं० पु०) दुःख की साँस, दुःख की आह।
निसाँसी (वि०) दुःखी, व्यस्त, उद्विग्न।
निसान (सं० पु०) निशान, झंडा, नगारा। [मुख।
निसामन (सं० पु०) सायंकाल, सन्ध्या का समय, निशा-
निसाफ (सं० पु०) इन्साफ़, निर्णय, फ़ैसला, न्याय।
निसार (सं० पु०) न्योछावर, एक सिक्का जो मुग़लों के राज्य के समय चलता था, समूह, (वि०) सार-हीन।
निसारना (क्रि० स०) निकालना, बाहर करना, बाहर निकालना, निकाल बाहर करना।
निसास (सं० पु०) निःश्वाँस, दुःख का श्वाँस (वि०) श्वाँस-हीन, निष्प्राण।
निसित (वि०) पैनी, तीक्ष्ण, धारदार।
निसिदिन (क्रि० वि०) रात-दिन, अहोरात्र, निसवासर, सदा, हमेशा। [रात।
निसिनिसि (सं० स्त्री०) प्रत्येक रात्रि, रात-रात, आधी
निसिवासर (वि०) रात दिन, अहोरात्र।
निसीठी (क्रि० वि०) निःसार, तत्वहीन, निरस, थोथा।
निसृष्ट (वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ, भेजा हुआ, दिया हुआ, मध्यस्थ।
निसृष्टार्थ (सं० पु०) तीन तरह के दूतों में से एक दूत, वह दूत जिसे परामर्श का समस्त भार दे दिया जाय, वह मनुष्य जो धीर और शूर हो और अपने मालिक का काम तत्परता से करता रहे।
निसेनी (सं० स्त्री०) सीढ़ी, ज़ीना।
निसैनी (सं० स्त्री०) निसेनी, सीढ़ी।
निसोत (वि०) बेमेल का, जिसमें किसी वस्तु की मिलावट न हो, शुद्ध, निरा, ख़ालिस। [में आती है।
निसोथ (सं० स्त्री०) एक प्रकार की लता, यह दवा के काम
निस्तत्व (वि०) तत्व-हीन, निःसार।
निस्तन्द्र (वि०) आलस्य-हीन जिसे आलस्य न हो, बलवान्, दृढ़, मज़बूत।
निस्तब्ध (वि०) क्रिया-हीन, निश्चेष्ट, जिसकी तरलता दूर हो गयी हो, जिसकी कर्तृत्व-शक्ति नष्ट हो गई हो।
निस्तब्धता (सं० स्त्री०) निश्चेष्टता, निष्क्रियता, वर्ष शोक आदि के कारण होने वाली मन की एक निष्क्रिय अवस्था।
निस्तरण (सं० पु०) पार होना, बच जाना, बच निकलना, उबर जाना, निस्तार पाना।
निस्तरना (क्रि० अ०) निस्तार होना, पार पाना, छुटकारा होना, मुक्त होना।
निस्तल (वि०) तल-रहित, गोलाकार, गोल। [टारा।
निस्तार (सं० पु०) छुटकारा, मुक्ति, मोक्ष, निर्णय, निप-
निस्तारना (क्रि० स०) उबारना, उद्धार करना, छुटकारा देना, मुक्त करना।
निस्तारा (सं० पु०) छुटकारा, बचाव, मोक्ष।
निस्तुष (वि०) बिना भूसी का, छिलका-रहित, निर्मल, स्वच्छ, साफ़।
निस्तेज (वि०) निष्प्रभ, बिना तेज का, जिसमें तेज न रहे।
निस्तोक (सं० पु०) निबटेरा, फ़ैसला, निर्णय।
निस्त्रप (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म, जिसको हया न हो।
निस्त्रिंश (सं० पु०) तलवार, खड्ग, एक मन्त्र।
निस्त्रैगुण्य (वि०) त्रिगुणातीत, सत्व, रज, तम इन गुणों से परे।

निस्नेह (वि०) प्रेम-रहित, स्नेह-रहित, तेलहीन।

निस्पन्द (वि०) कम्प-शून्य, अटल, स्थिर।

निस्पृह (वि०) जिसको किसी बात की स्पृहा न हो, विरागी।

निस्फ़ (अ० वि०) आधा।

निस्व (वि०) दरिद्र, ग़रीब।

निस्वन (सं० पु०) शब्द, ध्वनि, वीणा आदि का शब्द।

निस्वाँस (सं० पु०) निःश्वाँस।

निस्वान (सं० पु०) निःस्वन, शब्द, ध्वनि, बीणा आदि का शब्द।

निस्सङ्कोच (वि०) सङ्कोच-रहित, जिसमें किसी प्रकार का सङ्कोच न हो, आगा पीछा बिचार के बिना।

निस्सन्तान (वि०) निर्वंश, सन्तति-हीन, जिसे कोई पुत्र-पुत्री आदि न हो।

निस्सन्देह (वि०) सन्देह-रहित, सचमुच, स्वीकारोक्ति।

निस्सरण (सं० पु०) बहना, निकलना, जल आदि तरल पदार्थों का बहना, निकास। [पोला।

निस्सार (वि०) निस्तत्व, तुच्छ, सार-रहित, भीतर से

निस्सारित (वि०) निकाला हुआ, बाहर निकाला, किसी वस्तु का निकाला हुआ सार।

निस्स्वार्थ (वि०) स्वार्थ-हीन, निष्काम, अभिलाषा-रहित।

निहँग (वि०) फ़क़ीर, साधु, दरिद्र, असहाय, अकेला, नंगा, एक प्रकार के वैष्णव, निस्सङ्ग।

निहँगलाड़ला (वि०) उच्छृङ्खल दरिद्र, मस्ताना दरिद्र, जो दरिद्रता में ही मस्त रहने वाला हो। [रहित।

निहकाम (वि०) निष्काम, कामना-रहित, अभिलाष-

निहकामी (वि०) निष्कामी।

निहठा (सं० स्त्री०) एक मोटी लकड़ी जिस पर बढ़ई गढ़ी जाने वाली चीज़ रख कर गढ़ते हैं।

निहत (वि०) आघात-प्राप्त, मारा हुआ, जो मारा गया।

निहत्था (वि०) हथकटा, जिसके हाथ न हो, शस्त्र-हीन, हाथों का निकम्मापन, निर्धन, रिक्तपाणि, ख़ाली हाथ। [निकली हुई ज़मीन।

निहल (सं० पु०) गंगबरार, नदी के हट जाने के कारण

निहाई (सं० स्त्री०) लोहे की बनी एक वस्तु जिस पर सोनार, लोहार आदि बनाने की चीज़ का पिण्ड रख कर कूटते हैं।

निहानी (सं० स्त्री०) स्त्री का रज, ऋतु, कपड़े से होना।

निहायत (वि०) अत्यन्त, अधिक।

निहार (सं० पु०) पाला, ओस, कुहरा, शीत से होने वाला अन्धकार। [देखना।

निहारना (क्रि० स०) देखना, ताकना, सावधान होकर

निहारा (क्रि० स०) देखा, निरीक्षण किया, ध्यानपूर्वक देखा। [वाष्पमय पदार्थ विशेष।

निहारिका (सं० स्त्री०) कुहरा, शीत-जनित अन्धकार,

निहाल (वि०) जिसका मनोरथ पूर्ण हो गया हो, तृप्त, प्रसन्न। [तोसक, रजाई।

निहाली (वि०) रूई भरा ओढ़ने का कपड़ा, दुलाई,

निहाव (सं० पु०) निहाई, लोहे का बना घन।

निहिश्चिन्त (वि०) निश्चिन्त, चिन्ता-शून्य।

निहित (वि०) रक्खा हुआ, स्थापित, न्यस्त, रक्षित।

निहुरना (क्रि० अ०) नवना, झुकना।

निहुरा (सं० पु०) झुका, नमा, नम्र।

निहुराना (क्रि० स०) झुकाना, नवाना, नम्र करना, नीचे की ओर करना।

निहोर (सं० पु०) कृपा, उपकार, अहसान, विनय, विनती।

निहोरना (क्रि० स०) ख़ुशामद करना, निहोरा करना, विनय करना।

निहोरा (सं० पु०) अनुहार, खुशामद, मनावन, कृतज्ञता उपकार। [स्वच्छता, शुद्धि।

निह्नव (सं० पु०) छिपावट, छिपाव, दुराव, अविश्वास,

निह्राद (सं० पु०) शब्द, ध्वनि, आवाज़।

निह्नुत (वि०) छिपाया हुआ, गोपित।

निह्नुति (सं० स्त्री०) छिपाव, दुराव, निह्नव।

नींद (सं० स्त्री०) निद्रा, शयन, सुप्ति, इन्द्रियों की निष्क्रियावस्था।

मुहा०—नींद उचटना = जागना, नींद का टूट जाना। नींद उचाट होना = नींद का न आना, जागने पर फिर न सोना। नींद खुलना = जागना। नींद पड़ना = सोना, सो जाना। नींद भर सोना = ख़ूब सोना।

नींदड़ी (सं० स्त्री०) नींद, निद्रा, निद्रा के तिरस्कार या अनावश्यकता बतलाने के लिए इसका प्रयोग होता है।

नींदना (क्रि० अ०) सोना।

नींदरी (सं० स्त्री०) नींदड़ी, नींद, निद्रा।

नींदू (सं० पु०) सुवैया, निद्रालु, शयालु।

नींब (सं० पु०) वृक्ष विशेष।

नींद (सं० स्त्री०) निद्रा ।

नींदना (क्रि० अ०) सोना, शयन करना, निद्रा आना, [निन्दा करना ।

नींबू (सं० पु०) निबुआ, नीबू ।

नीक (वि०) सुन्दर, अच्छा, भला, मनोहर, निर्दोष ।

नीके (अव्य०) अच्छी तरह से, अच्छे प्रकार से, भली भाँति ।

नीच (वि०) अधम, छोटा, पामर, क्षुद्र, तुच्छ, बुरा ।

नीचगण (सं० पु०) नीचगामी, पामर, अधम ।

नीचगा (सं० स्त्री०) नदी, जलधारा ।

नीचगामी (वि०) नीचे का ओर चलने वाला ।

नीचट (वि०) एकान्त, निर्जन स्थान, दृढ़, पक्का ।

नीचता (सं० स्त्री०) निचाई, अधमता, ओछापन ।

नीचा (वि०) गहरा, गंभीर, गढ़ा ।

मुहा०—नीचा ऊँचा = छोटा बड़ा, घटबढ़, भला बुरा । नीचा ऊँचा सुझाना = वस्तु स्थिति बतलाना, हानि-लाभ बतलाना ।

नीचाई (सं० स्त्री०) नीचता, ओछापन ।

नीचाशय (वि०) क्षुद्र, स्वार्थी, नीच स्वभाव वाला ।

नीचू (वि०) न चूनेवाला, जिससे जल न गिरता हो, जिसमें से होकर जल न गिरे, जिसमें रक्खा हुआ जल नीचे न गिरे।

नीचे (क्रि० वि०) नीचे की ओर, अधो भाग ।

मुहा०—नीचे ऊपर = स्थिर नहीं, कभी इधर कभी उधर, क्रमशः, एक के ऊपर एक । नीचे गिरना = पतित होना, मर्यादा खोना । ऊपर से नीचे तक = सर्वाङ्ग, सब ओर ।

नीजन (वि०) निर्जन, जन-शून्य स्थान, वीरान ।

नीजू (सं० स्त्री०) पानी भरने की डोरी । [निर्झर ।

नीझर (सं० पु०) स्रोत, झरना, स्वयमुत्पन्न जल-प्रवाह,

नीठ (वि०) तुम्हारा, तुम्हारे सम्बन्ध का ।

नीठि (सं० स्त्री०) अनिच्छा, इच्छा का न होना, अरुचि ।

नीठो (वि०) अनिष्ट, अप्रिय, अनचाहा ।

नीड़ (सं० पु०) घोंसला, पक्षियों के रहने का स्थान ।

नीत (वि०) लाया हुआ, पहुँचाया हुआ, स्थापित, गृहीत, ग्रहण किया हुआ ।

नीति (सं० स्त्री०) व्यवहार शास्त्र, आचार शास्त्र, न्याय पद्धति, एक शास्त्र विशेष जो मानसिक और शारीरिक आचारों को बतलाता है ।

नीति कथा (सं० स्त्री०) ग्रन्थ विशेष, हितोपदेश ।

नीतिज्ञ (वि०) नीति जानने वाला, चतुर, प्रवीण, कुशल ।

नीतिमान (वि०) नीति से चलने वाला, सदाचारी, ईमानदार, नियम पालन करने वाला । [शास्त्र ।

नीतिविद्या (सं० स्त्री०) नीतिशास्त्र, हितोपदेश देने वाला

नीतिशास्त्र (सं० पु०) शास्त्र विशेष, जिसमें आचार व्यवहार की बातें लिखी हों, मनुष्य, मनुष्य-समाज, राज्य और धर्म आदि की सफलता के लिए उपदेश देने वाला शास्त्र ।

नीतिसार (सं० पु०) नीति शास्त्र विशेष ।

नीधना (वि०) निर्धन, ग़रीब ।

नीप (सं० पु०) कदंब का वृक्ष । [का कटि-वस्त्र ।

नीवी (सं० स्त्री०) व्यापार करने वालों का मूलधन, स्त्रियों

नीबू (सं० पु०) स्वनामख्यात फल, यह खट्टा होता है और अनेक कामों में आता है ।

नीम (सं० पु०) वृक्ष विशेष, निम्ब, नीब ।

नीमन (वि०) अच्छा, भला, सुन्दर, निर्दोष ।

नीमर (वि०) दुर्बल, निर्बल, बल-हीन । [है ।

नीमा (सं० पु०) जामा, व्याह आदि में जो दूल्हा पहनते

नीमावन (वि०) निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुयायी, यह सम्प्रदाय वैष्णव सम्प्रदायों के अन्तर्गत है, इस सम्प्रदाय का द्वैताद्वैतवाद सिद्धान्त ।

नीमास्तीन (फ़ा० सं० स्त्री०) आधे बाँह का कुरता ।

नीयत (अ० सं० स्त्री०) चाह, इच्छा, भावना, अभिप्राय, आशय ।

नीर (सं० पु०) जल, पानी ।

मुहा०—नीर ढलना = जल के समान आँसू का बहना ।

नीरज (सं० पु०) कमल (वि०) जल से उत्पन्न ।

नीरथ (वि०) निरर्थक, निष्फल, वृथा, व्यर्थ ।

नीरद (सं० पु०) मेघ, बादल, (वि०) दाँत-हीन, बिना दाँत का ।

नीरधर (सं० पु०) मेघ, बादल, समुद्र ।

नीरधि (सं० पु०) समुद्र सागर ।

नीरनिधि (सं० पु०) समुद्र ।

नीरमय (वि०) जलमय, जलप्लावित ।

नीरस (वि०) रस-हीन, शुष्क, सूखा, स्वाद-रहित, जिसमे किसी प्रकार का स्वाद न हो, अच्छा नहीं ।

नीराजन (सं० पु०) निसर्जन, आरती ।

नीराजना (क्रि० अ०) देवता की आरती करना, अस्त्रों को साफ़ करना, शान धराना।
नीरुज (वि०) स्वस्थ, नीरोग।
नीरोग (वि०) रोग रहित, स्वस्थ, तन्दुरुस्त।
नील (सं० पु०) रंग विशेष, काला रंग।
मुहा०—नील का टीका = कलङ्क। [का प्रमाण विशेष।
नीलक (सं० पु०) नील रंग का मृग विशेष, बीज-गणित
नीलकण्ठ (सं० पु०) शिव, महादेव, पक्षी विशेष।
नीलकमल (सं० पु०) नीला कमल, नील वर्ण का पद्म, कृष्ण कमल। [जंगली जन्तु।
नीलगवय (सं० पु०) नील गौ, गौ के समान एक
नीलगाय (सं० स्त्री०) एक जंगली पशु। [देश में है।
नीलगिरि (सं०पु०) एक पर्वत का नाम, यह पर्वत दक्षिण
नीलग्रीव (सं० पु०) महादेव, शिव, विष पान करने के कारण महादेव का कण्ठ नीला पड़ गया है। इसी से इन्हें नीलकण्ठ कहते हैं।
नीलचक्र (सं० पु०) जगन्नाथ जी के मन्दिर पर का चक्र, "नील चक्र पर ध्वजा बिराजे, मस्तक सोहे हीरा" छन्द विशेष।
नीलम (सं० पु०) रत्न विशेष, इन्द्रकान्त, इन्द्रनील, यह रत्न काले रंग का होता है और हीरे की जाति का है।
नीलमणि (सं० पु०) नीलम, इन्द्रकान्त, इन्द्रनील।
नीलमाधव (सं०पु०) विष्णु, नारायण, जगदीश। [दूत।
नीललोहित (सं० पु०) शिव, महादेव, बैंगनी रङ्ग, मेघ-
नीलवर्ण (वि०) श्याम रंग, आसमानी रंग।
नीला (वि०) काला रंग, नील का रंग।
नीलाई (सं० स्त्री०) श्यामता, नीलापन, नीलता।
नीलाथोथा (सं० पु०) धातु विशेष, तूतिया, इससे ताँबा निकलता है।
नीलाम (सं० पु०) बेचने का एक प्रकार, इसमें दूकानदार दाम बोलता है और ख़रीदने वाले दाम बोलते हैं, जिसके दाम की बोली सब से अधिक होती है वही चीज़ पाता है।
नीलामघर (सं० पु०) नीलाम करने की जगह।
नीलामी (वि०) वह वस्तु जो नीलाम की जाय या नीलाम में ली गई हो।
नीलाम्बर (सं० पु०) काला वस्त्र, नीले रंग का कपड़ा, बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई, शनीचर, राक्षस।
नीलिया (सं० स्त्री०) नीलापन, नीले रंग की आब, कालापन, श्यामता। [वर।
नीलोत्पल (सं० पु०) नील कमल, कमल विशेष, इन्दी-
नीलोपल (सं० पु०) नीलम, नील मणि।
नीलोफ़र (फ़ा० सं० पु०) नील कमल, यह हकीमी दवा के काम आता है। [लिए ज़मीन के भीतर की जुड़ाई।
नींव (सं० स्त्री०) आधार, आश्रय, जड़, दीवार बनाने के
मुहा०—नींव खोदना = जड़ खोदना, जड़ काटना। नींव देना = प्रारम्भ करना। नींव पड़ना = प्रारम्भ होना।
नीवार (सं० पु०) तिन्नी की चावल, धान्य विशेष, यह बिना बोए होता है और फलाहार के काम आता है।
नीवी (सं० स्त्री०) बनियों का मूलधन, पूँजी।
नीवृत् (सं०पु०) देश, जन पद, जन-स्थान। [वसन-गृह।
नीशार (सं०पु०) शीत निवारण करने वाला, पटमण्डप,
नीसानी (सं० पु०) एक छन्द का नाम।
नीसारना (क्रि० स०) निकालना, निकासना।
नीहार (सं० पु०) कुहरा, कुहासा, आकाशीय वाष्प।
नीहारिका (सं० स्त्री०) कुहरा, कुहासा, एक प्रकार का वाष्पीय पदार्थ, जो आकाश में फैला रहता है। पदार्थों की पहली अवस्था। एक दार्शनिक मत, जो कहता है कि ठोस रूप धारण करने के पहले जगत् के पदार्थ वाष्प रूप में थे। इस मत को नीहारिका-वाद कहते हैं। [अनुस्वार आदि के चिह्न।
नुक़ता (सं० पु०) बिन्दी, बिन्दु, अक्षरों पर लगने वाले
नुक़ताचींन (फ़ा० वि०) दोषदर्शी, दोष निकालने वाला।
नुक़ताचींनी (फ़ा० सं० स्त्री०) दोष देखना, दोष निकालना, अच्छी चीज़ों में भी दोष निकालने का स्वभाव।
नुकती (सं० स्त्री०) एक मिठाई का नाम।
नुकटा (सं० पु०) घोड़ों का श्वेत रंग।
नुक़रा (सं० पु०) घोड़ों का सफ़ेद रंग।
नुक़सान (अ० सं० पु०) हानि, घाटा, टोटा।
नुकीला (वि०) नोकदार, जिसका मुँह चोखा हो, सुन्दर, अच्छा। [नुकीला।
नुक्कड़ (सं० पु०) छोर, कोना (वि०) नोक वाला,
नुक़्स (अ० सं० पु०) दोष, ख़राबी, त्रुटि।
नुचना (क्रि० अ०) नोचना, उखड़ना, खुरचना।
नुचवाना (क्रि० स०) उखड़वाना, नुचाना।

नुति (सं० स्त्री०) स्तुति, स्तोत्र, ख़ुशामद, चाटुकारिता।
नुत्फ़ाहराम (अ० वि०) वर्णसंकर, जिसकी उत्पत्ति पिता से न हो।
नुनाई (सं० स्त्री०) लुनाई, सुन्दरता, लावण्य, खरापन।
नुनियाँ (सं० पु०) जाति विशेष, लोनियाँ।
नुनेरा (सं० पु०) जाति विशेष, इस जाति के लोग निमक बनाने का काम करते हैं।
नुमाइश (फ़ा० सं० स्त्री०) प्रदर्शनी, दिखावा, अनेक प्रकार की वस्तुओं को लोगों को दिखाने के लिए एकत्रित करना।
नुमाइशगाह (फ़ा० सं० स्त्री०) वह स्थान, जहाँ दिखाने के लिए चीज़ें एकत्रित की जायँ, प्रदर्शन भवन।
नुसख़ा (अ० सं० पु०) औषधों का योग बतलाने वाला काग़ज़, दवाइयों का योग, काग़ज़ का पुरज़ा जिस पर वैद्य, डाक्टर, हकीम आदि दवा लिखते हैं।
मुहा०—नुसख़ा बाँधना = दवाइयाँ देना, नुसख़े की दवाइयाँ बाँध कर देना।
नूत (वि०) नवीन, नूतन, नहीं देखी हुई वस्तु, अनोखा।
नूतन (वि०) नवीन, अभिनव, ताज़ा, तत्काल का, नई चीज़, अद्भुत वस्तु।
नूतनता (सं० स्त्री०) नवीनता, नयापन।
नूधा (सं० पु०) तम्बाकू विशेष। [कम, थोड़ा।
नून (सं० पु०) लता विशेष, नमक, लवण (वि०) न्यून,
मुहा०—नून तेल = घर गृहस्थी।
नूनी (सं० स्त्री०) पुरुष की इन्द्रिय, बच्चों का लिंग।
नूपुर (सं० पु०) स्त्रियों के पैर में पहनने का एक गहना, पायजेब, पैंजनी। [आभा, ज्योति।
नूर (अ० सं० पु०) शोभा, दीप्ति, प्रकाश, सौन्दर्य की
नृकपाल (सं० पु०) मनुष्य की खोपड़ी।
नृग (सं० पु०) मनु के एक पुत्र का नाम, एक राजा, ये बड़े ही दानी थे। एक बार इन्होंने हज़ार गाय एक ब्राह्मण को दी, उन गायों में किसी दूसरे ब्राह्मण की गाय जाकर मिल गयी थी, राजा ने अनजाने उन गायों के साथ उस गाय को भी दान में दे दी। इसके फल से उन्हें हज़ार वर्ष तक गिरगिट की योनि में रहना पड़ा था, अन्त में श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया। [बताना, उछल कूद कर भाव बताना।
नृत्य (सं० पु०) नर्तन, नाच, अंग के इशारों से भाव
नृत्यकारी (वि०) नाचने वाला, नचैया। [स्त्री, नर्तकी।
नृत्यकी (सं० स्त्री०) नाचने वाली, नाच करने वाली
नृत्यशाला (सं० स्त्री०) नाचने का स्थान, नाचघर।
नृदेव (सं० पु०) मनुष्यों में देवता के समान, राजा, पृथ्वीपाल, नृपति। [वाला।
नृप (सं० पु०) नरपति, राजा, मनुष्यों की रक्षा करने
नृपघाती (सं० पु०) राजवंश-नाशक, भार्गव, परशुराम।
नृपति (सं० पु०) नृप, नरपति, राजा, भूप।
नृपद्रोही (सं० पु०) परशुराम, ये क्षत्रिय वंश के शत्रु थे और इन्होंने इक्कीस बार क्षत्रियों का नाश किया था।
नृपसुता (सं० स्त्री०) राज-कन्या, राजकुमारी, छुछूँदर।
नृपामय (सं० पु०) राज-रोग, राजयक्ष्मा, राजा के होने वाला रोग। [वाला।
नृपाल (सं० पु०) नरपति, मनुष्यों का पालन करने
नृपासन (सं० पु०) राज-सिंहासन।
नृपोचित (वि०) राजा की पद मर्यादा होने के योग्य।
नृबराह (सं० पु०) भगवान् का बराहावतार।
नृयज्ञ (सं० पु०) एक यज्ञ, पञ्च यज्ञों में से एक यज्ञ, अतिथि, अभ्यागत आदि का सत्कार, भोजन, दान आदि इसके प्रधान अंग हैं।
नृलोक (सं० पु०) मर्त्यलोक, भूलोक, मनुष्यों का लोक।
नृशंस (वि०) क्रूर, घातक, हिंसक, स्वभाव से ही दूसरों को पीड़ा पहुँचाने वाला, हत्यारा, पापी, दुराचारी।
नृशंसता (सं० स्त्री०) क्रूरता, कठोरता, घातकता।
नृसिंह (सं० पु०) भगवान् का एक अवतार, मनुष्य और सिंह स्वरूपधारी अवतार। हिरण्यकश्यप के अत्याचार से पीड़ित प्रह्लाद की रक्षा करने के लिए भगवान् ने यह रूप धारण किया था (वि०) जो मनुष्यों में सिंह के समान हो, नरश्रेष्ठ।
नृसिंह चतुर्दशी (सं० स्त्री०) वैशाख शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी, इसी चतुर्दशी को भगवान् नृसिंह का अवतार हुआ था।
नृहरि (सं० पु०) नृसिंह। [साथ लगता है।
ने—कर्ता का चिह्न, यह सकर्मक भूतकालिक क्रिया के
नेइँ (सं० स्त्री०) नींव।
नेउला (सं० पु०) नेवला, नकुल, जन्तु विशेष।
नेऊन (सं० पु०) नैनू, मक्खन। [थोड़ा, अल्प, कुछ।
नेक (वि०) सज्जन, भला, अच्छा, अच्छे आचरण का,

नेकचलन (वि०) सदाचारी, उत्तम आचरण का, अच्छे आचार-व्यवहार वाला। [अच्छा आचरण।
नेकचलनी (सं० स्त्री०) सदाचारिता, उत्तम व्यवहार,
नेकनाम (फ़ा० वि०) प्रतिष्ठित, यशस्वी, नामी, नामवर, प्रसिद्ध, जिसका यश फैला हो।
नेकनामी (सं० स्त्री०) प्रतिष्ठा, यश, नामवरी, कीर्ति।
नेकनीयत (वि०) अच्छे विचारों वाला, अच्छे स्वभाव वाला, परोपकारी, उदाराशय।
नेकबख़्त (फ़ा० वि०) भाग्यवान्, भाग्यशाली।
नेकी (फ़ा० सं० स्त्री०) भलाई, उपकार, सज्जनता।
मुहा०—नेकी और पूँछ पूँछ=भलाई के लिए पूँछने की क्या आवश्यकता।
नेक्ता (सं० पु०) पालक, पोषण-कर्त्ता, पोषक।
नेग (सं० पु०) ब्याह आदि में संबन्धियों, नातेदारों तथा उसमें काम करने वाले ब्राह्मण, नाई आदि को दिया जाने वाला द्रव्य, पुरस्कार विशेष।
नेगचार (सं० पु०) नेग की प्रथा, नेग-जोग।
नेग-जोग (सं० पु०) नेगचार, ब्याह आदि में दिया जाने वाला दान। [चलने वाला।
नेगटी (सं० स्त्री०) नेगी, नेग पाने वाला, दस्तूर पर
नेगी (वि०) नेग पाने का हक़दार। [आदि।
नेगी-जोगी (सं० पु०) जो नेग पा सकते हों, नाई-बारी
नेजक (सं० पु०) धोबी, शुद्ध करने वाला।
नेजन (सं० पु०) शोधन, शुद्ध करना।
नेज़ा (फ़ा० सं० पु०) अस्त्र विशेष, भाला, बरछा।
नेटा (सं० पु०) नाक से निकलने वाला मल।
नेठमी (वि०) स्थिर, एक स्थान पर रहने वाला, स्थायी।
नेत (सं० पु०) निश्चय, निर्णय, स्थिर, ठहराव, मथानी की रस्सी जिससे मथानी घुमाई जाती है।
नेतक (सं० पु०) नरकट।
नेता (सं० पु०) अगुआ, मुखिया, किसी दल का प्रधान, स्वामी, उपदेशक, सत्य मार्ग बताने वाला, मथानी की रस्सी।
नेति (अव्य०) इसका अर्थ है नहीं, यह ब्रह्म के अर्थ में प्रयुक्त होता है, क्योंकि वेदों ने भी ब्रह्म स्वरूप पूँछे जाने पर यही उत्तर दिया कि नहीं, हम लोगों को मालूम नहीं। इसके द्वारा ब्रह्म की अज्ञेयता या दुर्ज्ञेयता बतलायी गयी।
नेती (सं० स्त्री०) वह रस्सी, जिसे लपेट कर मथानी घुमाई जाती है।
नेतीधोती (सं० स्त्री०) हठ योग की एक क्रिया का नाम, जिसमें कपड़े की धज्जी पेट में डाल कर आँतें साफ़ करते हैं। [नेता, वृक्ष-मूल, शाखा, जड़।
नेत्र (सं० पु०) आँख, नयन, दृष्टि, मथानी की रस्सी,
नेत्रकनीनिका (सं० स्त्री०) दृष्टि, आँखों का तारा।
नेत्रजल (सं० पु०) आँसू, अश्रु।
नेत्रबन्ध (सं० पु०) आँखमिचौनी, एक खेल, यह खेल लड़के खेलते हैं। एक लड़के की आँखें बन्द कर दी जाती हैं दूसरे लड़के भाग कर छिप जाते हैं, तब उस लड़के की आँख खोल दी जाती है और वह भगे हुए लड़कों को ढूँढ़ता है, जिसको वह छू लेता है वह चोर बन जाता है और उसकी आँखें बन्द की जाती हैं।
नेत्रबाला (सं० स्त्री०) औषध विशेष, सुगन्ध वाला।
नेत्रभाव (सं० पु०) नेत्रों के द्वारा बतलाया हुआ भाव, नेत्रों के द्वारा हृदय का भाव बतलाना। [रोग।
नेत्ररोग (सं० पु०) आँखों का रोग, आँखों में होने वाला
नेत्राभिष्यन्द (सं० पु०) नेत्र का रोग विशेष, इस रोग में आँखों से जल निकलता है, आँखों का आना, अँख दुखनी।
नेत्राम्बु (सं० पु०) चक्षु का जल, अँसुआ, अश्रु।
नेत्रोत्सव (सं० पु०) नेत्रों का आनन्द, नाच-तमाशा, नेत्रों को आनन्द देने वाला दृश्य।
नेनुआ (सं० पु०) एक तरकारी का नाम।
नेपथ्य (सं० पु०) वस्त्रालङ्कार आदि का धारण, वस्त्रालङ्कार से सज्जित होना, वेशभूषा, सजावट, अलंकार, नाटक में उस भूमि का नाम जो रङ्गभूमि के पीछे होती है, परदे के भीतर का स्थान, जहाँ नाटक के पात्र वेश ग्रहण करते हैं, रङ्गभूमि से अतिरिक्त स्थान।
नेपाल (सं० पु०) एक देश का नाम, यह भारत के उत्तर ओर हिमालय की तराई में है।
नेपाली (वि०) नेपाल का रहने वाला, नेपाल में उत्पन्न होने वाला, नेपाल संबन्धी, नेपाल के मनुष्य आदि (सं० स्त्री०) मैनसिल। [गहना।
नेपुर (सं० पु०) नूपुर, पायजेब, पैजनी, पैर का एक
नेब (सं० पु०) सहायता देने वाला, सहायक, दीवान, मन्त्री, सचिव, कार्यों में हाथ बँटाने वाला।

नेम (सं० पु०) नियम, दृढ़ संकल्प, धर्म संकल्प, बन्धन, क़ानून, आधा, अर्ध, काल, जुदा, दूसरा, अन्य।

नेमधर्म (सं० पु०) शुद्ध व्यवहार।

नेमि (सं० स्त्री०) पहिए की परिधि, पहिए का घेरा, कुएँ के ऊपर की भूमि, जगत्, कुएँ के पास रक्खी हुई लकड़ी जिस पर वस्त्र आदि रक्खे जाते हैं।

नेमिचक्र (सं० पु०) पहिया, रथचक्र, पाण्डुवंश के एक राजा, इनकी राजधानी कौशाम्बी थी।

नेमी (वि०) नियम पालन करने वाला, नियमी, दृढ़व्रत, धर्मानुष्ठान करने वाला, नियमपूर्वक काम करने वाला। [राना।

नेराना (क्रि० अ०) पास पहुँचना, नज़दीक जाना, निय-

नेरी (क्रि० वि०) समीप, नियरा, निकट।

नेरुवा (सं० पु०) डंठल, डंठी, कोल्हू के नीचे का गढ़ा, जिसमें तेल की हँड़िया रक्खी जाती है।

नेरे (क्रि०वि०) पास, समीप, निकट, नियरे।

नेव (सं० पु०) सहायक, नेम, नियम, नींव, दीवार की जड़। [हुआ द्रव्य आदि।

नेवछावर (सं० स्त्री०) निछावर, मङ्गल कामना से उतारा

नेवज (सं० पु०) नैवेद्य, देव समर्पित वस्तु, देव-भोग।

नेवत (सं० पु०) नेवता, निमन्त्रण, न्योता, उत्सव परोजन आदि में स्वजन संबन्धियों को अपने घर आने के लिए आदरपूर्वक आह्वान।

नेवतना (क्रि० स०) निमन्त्रण देना, निमन्त्रित करना, न्योतना। [देकर बुलाए हुए।

नेवतहरी (सं० पु०) नेवता में आये हुए, निमन्त्रण

नेवता (सं० पु०) निमंत्रण, न्योता।

नेवना (क्रि० अ०) नवना। [के पैर का घाव।

नेवर (सं० पु०) नूपुर, पैर के एक गहने का नाम, घोड़े

नेवल (सं० पु०) नेवला, नकुल।

नेवला (सं० पु०) जन्तु विशेष, नकुल।

नेवार (सं० पु०) निवार, सूत की बनी पट्टी, जिसमे पलंग बुने जाते हैं। [करना, हटाना।

नेवारना (क्रि० स०) निवारना, निवारण करना, दूर

नेवारी (सं० स्त्री०) निवारी, पुष्प विशेष, यह चैत्र में फूलता है, इसके फूल बड़े सुगन्धित होते हैं।

नेसुहा (सं० पु०) चारा, कुट्टी आदि काटने के लिए ज़मीन में गड़ी हुई लकड़ी।

नेस्त (फ़ा० वि०) जिसका अभाव हो, नष्ट, लुप्त।

मुहा०—नेस्तनाबूद = जड़-मूल से नाश होना।

नेस्ती (फ़ा० सं० स्त्री०) अभाव, अनास्तित्व।

नेह (सं०पु०) स्नेह, प्रेम, पुत्र शिष्य आदि अपने से छोटों पर का प्रेम, चिकनापन, तेल, घी आदि की चिकनाई।

नेही (वि०) स्नेही, स्नेह करने वाला, नेहो, प्रेमी, हितैषी, शुभचिन्तक।

नैऋत (सं०पु०) राक्षस विशेष, निर्ऋत्य नामक राक्षस के वंशज, दक्षिण-पश्चिम कोण के अधीश्वर, नैर्ऋत्य कोण।

नैऋत्य (सं०पु०) दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा।

नैकट्य (वि०) निकटता, समीपता।

नैगम (वि०) निगम संबन्धी, निगम का, वेद का सिद्धान्त, वेद प्रतिपादित तत्व। [नली।

नैचा (सं० पु०) हुक्का पर चिलम रखने और पीने की

नैची (सं० स्त्री०) नीचा, नीचा मार्ग, कुएँ के पास बना हुआ ढालुआँ रास्ता, जिसमें पुरवट के बैल चलते हैं।

नैज (वि०) आत्मीय।

नैजाना (क्रि० अ०) नवना, झुकना, नम्र होना।

नैतिक (वि०) नीति संबन्धी, नीति शास्त्र का आचार-व्यवहार संबन्धी।

नैन (सं० पु०) नयन, नेत्र, आँख।

नैनसुख (सं० पु०) एक तरह के कपड़े का नाम।

नैना (सं० पु०) आँख, नयन, नेत्र, पगहा, छाँद।

नैनी (सं० स्त्री०) नेत्र वाली।

नैनू (सं० पु०) एक तरह का कपड़ा, बूटी वाला मलमल।

नैपाल (सं० पु०) देश विशेष, नेपाल देश (वि०) नेपाल देश का, नेपाल देश संबन्धी।

नैपाली (वि०) नेपाल वासी, नेपाल में रहने वाला, नेपाल में उत्पन्न, नेपाल संबन्धी। [चतुरता।

नैपुण्य (सं० पु०) निपुणता, प्रवीणता, दक्षता, कुशलता,

नैमित्तिक (वि०) किसी निमित्त से होने वाला, कारण-वश, सकारण, किसी निमित्त से जो काम किये जायँ।

नैमिष (सं० पु०) तीर्थ विशेष, एक तीर्थ का नाम जो हरद्वार के पास है।

नैमिषारण्य (सं० पु०) एक प्राचीन वन, यह तीर्थ है, पहले यहाँ अनेक ऋषि रहा करते थे, यह स्थान अवध के सीतापुर ज़िले में है।

नैया (सं० स्त्री०) नाव, किश्ती, जलयान विशेष, छोटी नाव, अरक्षित नाव । [वाला ।
नैयायिक (वि०) न्यायशास्त्रवेत्ता, न्यायशास्त्र जानने
नैर (सं० पु०) नगर, गाँव, ग्राम, शहर । [अभाव ।
नैराश्य (सं० पु०) निराशा, आशा न होना, आशा का
नैरन्तर्य (सं०पु०) सदा, लगातार, संतत, ताँता न टूटना ।
नैर्ऋत्य (सं० पु०) दक्षिण-पश्चिम का कोण, निर्ऋति देवता का, निर्ऋति सम्बन्धी । [णता ।
नैर्गुण्य (सं० पु०) गुणों का अभाव, गुणहीनता, निर्गु-
नैर्मल्य (सं० पु०) निर्मलता, मल का अभाव, स्वच्छता, शुद्धता । [प्रसाद ।
नैवेद्य (सं० पु०) देव-प्रसाद, देवता को अर्पण करने का
नैषध (वि०) निषध देश का, निषध देश का राजा, निषध देश के वासी, निषध देश में उत्पन्न ।
नैष्ठिक (वि०) निष्ठा-सम्पन्न, धर्म कर्मों में विश्वासी, एक प्रकार के ब्रह्मचारी जो बाल्यावस्था में ही यावज्जीवन ब्रह्मचर्य रहने की प्रतिज्ञा करते हैं ।
नैसर्गिक (वि०) स्वाभाविक, स्वभाव सिद्ध, प्राकृतिक ।
नैसा (वि०) बुरा, अच्छा नहीं, ख़राब ।
नैहर (सं० पु०) मैका, स्त्रियों के पिता का घर ।
नोआ (सं० पु०) एक रस्सी जिससे दूध दुहने के समय गाय के पिछले पैर बाँधे जाते हैं ।
नोई (सं० स्त्री०) नोआ, दूध दुहने के समय गायों के पिछले पैर बाँधने की रस्सी । [अनी ।
नोक (सं० स्त्री०) पतला सिरा, मुँह पर का पतलापन,
नोक चोंक (सं० स्त्री०) लाग-डाट, संकेत से बातें करना ।
नोकझोंक (सं० स्त्री०) चढ़ा उतरी, सजावट, शृङ्गार, स्पर्द्धा, उपराचढ़ी । [जिसके नोक हो ।
नोकदार (वि०) चुभने वाला, कटीला, नोक वाला,
नोकाझोंकी (सं० स्त्री०) विवाद, सङ्घर्ष, चढ़ाउतरी, छेड़छाड़, छेड़खानी । [अलग करना, उखाड़ना ।
नोच (सं० स्त्री०) लूट, खसोट, नोच लेना, नोच कर
नोचखसोट (सं० स्त्री०) छीनाझपटी, लूट, ज़बरदस्ती किसी की वस्तु ले लेना । [वस्तु को उखाड़ना ।
नोचना (क्रि० स०) उखाड़ना, किसी लगी या जमी हुई
नोचानोची (सं० स्त्री०) नोच खसोट, लूट, परस्पर ज़बरदस्ती लूट । [लेने वाला ।
नोचू (वि०) नोचने वाला, लूटने वाला, ज़बरदस्ती छीन

नोट (सं० पु०) टाँकना, लिखना, स्मरण के लिए लिख रखना, टिप्पणी, अभिप्राय-प्रकाशन, काग़ज़ का एक सिक्का, सरकारी हुण्डी ।
नोटिस (अं० सं० स्त्री०) विज्ञापन, सूचनापत्र ।
नोन (सं० पु०) नून, निमक ।
नोनचा (वि०) नमकीन, नमक मिला हुआ आचार आदि, वह भूमि जहाँ लोनी लग गयी हो ।
नोना (सं० पु०) लोना, खार से मिट्टी का गलना, फल विशेष, सीताफल (क्रि० अ०) दूध दुहने के लिए गाय के पिछले दोनों पैर बाँधना ।
नोनाचमारी (सं० स्त्री०) झाड़ फूँक के मन्त्रों में इसकी दुहाई दी जाती है, यह कामाक्षा की रहने वाली थी और जादू-टोना में बड़ी निपुण थी ।
नोनिया (सं० पु०) इस नाम की एक जाति, जो नमक बनाने का काम करती है ।
नोनी (सं० स्त्री०) गली मिट्टी, लोनी मिट्टी, एक घास, जो खट्टी होती है और जिसके पत्ते छोटे छोटे होते हैं ।
नोनो (वि०) सुन्दर, रमणीय, मनोहर, सलोना ।
नोवना (क्रि० अ०) नोना, दूध दुहने के लिए गाय का पैर बाँधना ।
नोहर (वि०) अनोखा, अद्भुत वस्तु, अलभ्य ।
नौ (वि०) नव की संख्या, दस से एक कम । [वाला ।
नौकर (सं० पु०) भृत्य, सेवक, वेतन पर काम करने
नौकरानी (सं० स्त्री०) नौकर की स्त्री, स्त्री नौकर ।
नौकरी (सं० स्त्री०) नौकर का काम, सेवा, भृत्यता, आज्ञापालन । [करना ।
मुहा०—नौकरी बजाना = स्वामी की आज्ञा का पालन
नौका (सं० स्त्री०) नाव, जलयान, जल की सवारी ।
नौगरी (सं० स्त्री०) आभूषण विशेष ।
नौची (सं० स्त्री०) छोटी वेश्या, वह लड़की जो किसी वेश्या के पास रह कर उसका व्यवसाय सीखती है ।
नौछावर (सं० पु०) निछावर । [परवा नहीं ।
नौज (अव्य०) अनिच्छा बोधक, न सही, न होता हो तो
नौजवान (फ़ा० वि०) नवयुवक, तरुण ।
नौतन (वि०) नूतन, नवीन, नया ।
नौतना (क्रि० स०) निमन्त्रण देना, निमन्त्रित करना ।
नौतम (वि०) नवीन, बिल्कुल नया ।
नौता (सं० पु०) नेवता, न्योता, निमन्त्रण ।

नौतेरही (सं० स्त्री०) पुराने ज़माने की एक ईंट का नाम, ककई ईंट, छोटी ईंट ।
नौतोड़ (वि०) नया तोड़ा हुआ, नया जोता हुआ ।
नौध (सं० पु०) अंकुर, बीज का नया अंकुर । [होते हैं ।
नौनगा (सं० पु०) एक गहना, जिसमें नौ नग जड़े हुए
नौना (क्रि० अ०) नम्र होना, झुकना ।
नौनी (सं० स्त्री०) नैनू, मक्खन । [हालत ।
नौबत (फ़ा०सं०स्त्री०) समय, बारी, पारी, अवस्था, दशा,
नौबतखाना (सं० पु०) वाद्य-गृह । [गर्भसंस्कार विशेष ।
नौमासा (सं० पु०) नवें महीने में होने वाला उत्सव,
नौमि (क्रि० स०) मैं प्रणाम करता हूँ ।
नौमी (सं० स्त्री०) नवीं तिथि, कृष्ण और शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि । [बिगाड़ा नाम ।
नौरंग (सं० पु०) एक चिड़िया का नाम, औरंगज़ेब का
नौरंगी (सं० स्त्री०) नारंगी, फल विशेष ।
नौरतन (सं० पु०) एक गहना, जिसमें नवरतन जड़े हुए होते हैं । विक्रमादित्य की सभा के नौ विद्वान्, कालिदास आदि । विक्रमादित्य की सभा के नौ रत्नों की केवल कल्पना ही है ।
नौरोज़ (फ़ा०सं०पु०) वर्षारम्भ का पहला दिन, त्योहार का दिन, फ़ारस में इस दिन बड़ा उत्सव मनाया जाता है । भारतवर्ष में अकबर बादशाह ने भी इस मेले को प्रारम्भ किया था ।
नौल (वि०) नवल, सुन्दर । [दामी, मूल्यवान् ।
नौलखा (वि०) नौलाख का, नौ लाख मूल्य का, बहुमूल्य,
नौला (सं० पु०) नकुल, नेवला (वि०) नवल, सुन्दर ।
नौशा (फ़ा० सं० पु०) वर, दूल्हा ।
नौशिख (सं० पु०) नवशिक्षित ।
नौशेरवाँ (फ़ा० सं० पु०) फ़ारस के एक बादशाह का नाम, यह बड़ा ही प्रतापी और न्यायी था ।
नौसरा (सं० पु०) नौ लड़ का हार, नौलड़ा ।
नौसादर (सं० पु०) एक क्षार द्रव्य विशेष, यह अनेक दवा के काम में आता है ।
नौसिखिया (वि०) नवशिक्षित, अल्पज्ञ, निपुण नहीं ।
न्यक्कार (सं० पु०) निन्दा, घृणा, अवज्ञा ।
न्यग्रोध (सं० पु०) वट वृक्ष, लंबाई की एक नाप, दोनों हाथों के फैलाने की नाप ।
न्यर्बुद (सं० पु०) संख्या विशेष, दस अरब ।
न्यस्त (वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ, रक्खा हुआ, उतार कर रक्खा हुआ, स्थापित, बैठाया हुआ, जमाया हुआ । [परास्त, हारा हुआ ।
न्यस्तशस्त्र (वि०) जिसने शस्त्र छोड़ दिया हो, पराजित,
न्याउ (सं० पु०) न्याय ।
न्याय (सं० पु०) फ़ैसला, निर्णय, उचित बात, सत्यपक्ष, यथार्थ, नीति, तर्क, युक्ति, उपाय, शास्त्र विशेष, तर्कशास्त्र, षट् दर्शनों में से एक दर्शन जिसके कर्ता गौतम ऋषि हैं ।
न्यायक (सं० पु०) विचारक, न्यायकारी, न्यायकर्ता ।
न्यायकर्ता (सं० पु०) न्याय करने वाला, उचित करने वाला, सत्य निर्णय करने वाला ।
न्यायतः (क्रि० वि०) न्याय से, धर्म से, नीतिपूर्वक ।
न्यायपथ (सं० पु०) न्याय का मार्ग, उचित मार्ग ।
न्यायपरता (सं० स्त्री०) न्याय की ओर झुकाव, न्याय का अनुसरण । [पक्षपाती ।
न्यायवान् (वि०) न्यायी, न्याय करने वाला, न्याय का
न्यायसभा (सं० स्त्री०) न्याय करने की सभा, पंचायत ।
न्यायाधीश (सं० पु०) न्यायकर्ता, पंच, जज ।
न्यायालय (सं० पु०) कचहरी, अदालत, वादी प्रतिवादी का झगड़ा निबटाने का स्थान ।
न्याय्य (वि०) न्यायानुकूल, न्यायसंगत, धर्मसंगत ।
न्यायी (वि०) न्यायकर्ता, न्याय करने वाला । [का ।
न्यारा (वि०) पृथक्, भिन्न, संबन्ध-हीन, दूरस्थित, दूर
न्यारे (क्रि०वि०) दूर का, दूर वाला, अलग, भिन्न, पृथक् ।
न्याव (सं० पु०) न्याय, निर्णय, उचित, सत्य निर्णय ।
न्यास (सं० पु०) रखना, धरना, थाती, अर्पण, त्याग, पूजा में मन्त्रपूर्वक अंगों का छूना, पूजा की एक रीति ।
न्यून (वि०) थोड़ा, अल्प, कम, अपूर्ण, किंचित् ।
न्यूनता (सं० स्त्री०) कमी, अल्पता, अपूर्णता ।
न्योछावर (सं० पु०) निछावर ।
न्योतना (क्रि० स०) न्योता देना, निमन्त्रण देना ।
न्योतहरी (वि०) न्योता में आये हुए, निमन्त्रित ।
न्योता (सं० पु०) निमन्त्रण, नेवता ।
न्योला (सं० पु०) नकुल, नागरिपु ।
न्हाना (क्रि० स०) स्नान करना, नहाना-धोना ।

प

प— यह इक्कीसवाँ व्यञ्जन है, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है। [पवित्र, माता-पिता, रक्षक।
प (सं० पु०) वायु, पवन, हवा पत्ता, पर्ण, पान, अण्ड,
पँवार (सं० पु०) राजपूतों की एक जाति, चकोर।
पँवारा (सं० पु०) कथा, कहानी, इतिहास। [लिया।
पँवारिया (सं० पु०) भाट, कहानी कहने वाला, नक-
पँवारी (सं० स्त्री०) पान की बाड़ी।
पंख (सं० पु०) पर, बाजू।
पंखड़ी (सं० स्त्री०) फूल की पत्ती, कली, पखड़ी।
पंखा (सं० पु०) विजना, बेना।
पंखिया (वि०) बखेड़िया, झगड़ालू।
पंखी (सं० स्त्री०) छोटा पंखा, पक्षी।
पंगत (सं० स्त्री०) श्रेणी, पाँत, पाँती।
पंगला (वि०) लँगड़ा, टेढ़े पाँव का, अपंग।
पंचक्की (सं० स्त्री०) आटा आदि पीसने की चक्की, जो पानी के धक्के से चलती है, जलयन्त्र।
पंचशिख (वि०) पाँच चोटी वाला (सं० पु०) छन्द विशेष, सिंह, एक ऋषि, ये कपिल के शिष्य थे।
पंचाङ्ग (सं० पु०) तिथि-पत्र, पत्रा जिससे तिथि वार, नक्षत्र, योग, करण ये पाँच जाने जायँ, पञ्चिका चन्दन, अगर, कर्पूर, केशर, गुग्गुल, फल, मूल, फूल, पत्ता, डार।
पंचाङ्गुल (सं० पु०) पाँच अंगुल परिमाण-सहित।
पंचाध्यायी (सं० स्त्री०) भागवत के अन्तर्गत रास मण्डल के पाँच अध्यायों का समूह।
पंचानन (सं० पु०) शिव, महादेव, सिंह, केशरी, शेर।
पंचामृत (सं० स्त्री०) दूध, खाण्ड, घी, दही, शहद।
पंचाल (सं० पु०) देश विशेष, तद्देश वासी, हिन्दुस्तान का उत्तरी मुल्क, पंजाब देश।
पंचालिका (सं० स्त्री०) कठपुतली, गुड़िया, गंगा, द्रौपदी। [वृद्ध।
पंचावस्था (सं० स्त्री०) बाल्य, कुमार, पौगण्ड, युवा,
पंचाशत् (वि०) संख्याभेद, पचास, पंजाह।
पंचीकरण (सं० पु०) सृष्टि विषयक एक सिद्धान्त, पञ्चभूत के अंशों का मिलाव।
पंचेन्द्रिय (सं० पु०) पञ्चज्ञानेन्द्रिय, यथा—श्रोत्र, त्वच, नेत्र, रसना, घ्राण, पञ्चकर्मेन्द्रिय यथा—वाच, पाद, पाणि, वायु, उपस्थ।
पंछी (सं० पु०) पक्षी, पखेरू, परिन्द।
पकड़ (सं० स्त्री०) ग्रहण, रोक, धरना।
पकड़ना (क्रि० स०) गहना, धरना, गोचना, हाथ में लेना, रोकना, बाधा करना, तर्क करना, दोष निकालना। [थमाना।
पकड़ाना (क्रि० स०) धराना, सौंपना, ग्रहण कराना,
पकना (क्रि० अ०) रंधना, पक्क होना, सीझना।
पकला (सं० पु०) क्षत, घाव, फोड़ा। [दूरी।
पकवाई (सं० स्त्री०) पकाने की क्रिया, पकाने की मज़-
पकवान (सं० पु०) मिठाई, पका हुआ अन्न, तली हुई चीज़, पकवान।
पकवाना (क्रि० स०) पकाने का काम दूसरे से कराना।
पका (वि०) सिद्ध, पूरा, चतुर, पका हुआ, कच्चा नहीं, रींधा हुआ, होशियार, निपुण, प्रवीण, सावधान, दृढ़, मज़बूत, पोढ़ा, सिद्ध किया हुआ, साबित किया हुआ। [तैयारी, सिद्धता।
पकाई (सं० स्त्री०) पकाने की मजूरी, पकाने का काम,
पकाना (क्रि० स०) रींधना, चुराना, सिझाना।
पकाव (सं० पु०) मज़बूती, स्थिरता, दृढ़ता।
पकोड़ा (सं० पु०) देखो पकौड़ी।
पकौड़ी (सं० स्त्री०) पाक विशेष, फुलौरी, बरा।
पक्का (वि०) देखो "पका"।
पक्की (सं० स्त्री०) पोढ़ी, घृत आदि में तली हुई चीज़ें।
पक्क (वि०) परिणत, दृढ़, विनाशोन्मुख, प्रवीण, चतुर, सिद्ध, पका हुआ, मज़बूत, परिपुष्ट, दृढ़।
पक्कान्न (सं० पु०) मिठाई, पकवान। [अन्न-कोष।
पक्काशय (सं० पु०) पाक-स्थली, नाभी का अधोभाग,
पक्ष (सं० पु०) किसी स्थान वा पदार्थ के वे दोनों छोर, जो एक दूसरे से भिन्न हों। तीर में लगा हुआ पर, पाँख, पर्वा, निमित्त, मित्र, गृह-युक्ति, परिणाम, अँधेरा उजेला पाख, आधा महीना, पंख, डैना, सहाय, बल, तरफ़, ओर, अंग, पार्श्व, पाँजर, जत्था, वृन्द,

टोली, राजा का हाथी, जुल्फ़, जूरा, हाथ में पहनने का कड़ा, महाकाल, शिव ।

पक्षक (सं० पु०) सुहृद, मित्र ।

पक्षद्वार (सं० पु०) खिड़की की राह ।

पक्षधर (सं०पु०) चन्द्रमा(वि०) पक्ष धारण करने वाला।

पक्षपात (सं० पु०) अन्याय सहाय, पच्छ, बल्लेदारी, पक्ष-रक्षा, मित्रता, सहायता, तरफ़दारी ।

पक्षपाती (वि०) पक्षपात करने वाला, अन्याय सहाय करने वाला, पक्ष करने वाला, तरफ़दार, सहायक ।

पक्षाघात (सं० पु०) अर्द्धांग रोग, जिसमें शरीर के दाहने या बाँये किसी पार्श्व के सब अंग क्रिया-हीन हो जाते हैं, लक़वे की बीमारी, झोला ।

पक्षान्त (सं० पु०) पूर्णिमा, अमावस्या, पञ्चदशी पर्व ।

पक्षान्तर (सं० पु०) दूसरी ओर, विपक्ष, विषयान्तर ।

पक्षिराज (सं० पु०) गरुड़, एक प्रकार का घोड़ा ।

पक्षिशावक (सं० पु०) पक्षी के बच्चे । [सहायक ।

पक्षी (सं० पु०) पखेरू, परिन्दा, चिड़िया, बाण, तीर,

पक्षीय (वि०) पक्ष का, दल का ।

पक्ष्म (सं० पु०) आँख की बिरनी, बरौनी ।

पख (सं० पु०) पखवारा, आधा महीना, पक्ष, तरफ़, जत्था, सहाय, वह बात जो किसी बात के साथ जोड़ दी जाय और जिसके कारण व्यर्थ कुछ और श्रम या कष्ट उठाना पड़े, बाधक नियम, अड़ंगा, झगड़ा, बखेड़ा, दोष, त्रुटि, नुक़्स ।

पखड़ी (सं० स्त्री०) फूल की पत्ती, कली, पुष्प की पत्ती।

पखरौटा (सं० पु०) सोना आदि का पत्र पान के बीड़े पर लगाने के लिए। [महीन ।

पखवारा (सं० पु०) पाख, पख, पन्द्रह दिन, आधा

पखा (सं० पु०) पंख, पाँख, पर ।

पखान (सं० पु०) पाषाण, पत्थर ।

पखारना (क्रि० स०) प्रक्षालन करना, धोना, खंघालना, शुद्ध करना, साफ़ करना ।

पखारे(क्रि० स०) शुद्ध किये, धोये ।

पखाल (सं० स्त्री०) एक प्रकार के चमड़े का थैला, जिसमें पानी भर कर ऊँट, बैल आदि पर लाद कर लाया जाता है, मशक, पुर ।

पखालना (क्रि० स०) देखो " पखारना "। [बाजा ।

पखावज (सं० स्त्री०) ढोल, मृदङ्ग वाद्य, एक प्रकार का

पखावजी (सं० पु०) पखावज बजाने वाला ।

पखेरा (सं० पु०) छापा, चिह्न, अङ्क, छाप ।

पखेरू (सं० पु०) पक्षी, पंछी, परिन्द, चिड़िया ।

पखेस (सं० पु०) चिह्न, मुद्रा, छाप ।

पखोर (सं० पु०) ठोकर ।

पखोरन (सं० पु०) पखोर का बहुवचन ।

पखोरना (क्रि० अ०) ठोकर मारना, लात मारना ।

पखौड़ा (सं० पु०) काँधे की हड्डी ।

पग (सं० पु०) पाँव, पैर, गोड़ ।

पगडण्डी (सं० स्त्री०) छोटा रास्ता, तंग राह, पद-चिह्न, चोर राह, लीक, गुप्त मार्ग, गल्ली ।

पगड़ी (सं० स्त्री०)पगा, पगिया, चीरा, दस्तार, अम्मामा शमला, साफ़ा ।

पगदण्डो (सं० स्त्री०) देखो " पगडण्डी " ।

पगधारना (क्रि० अ०) सिधारना, जाना-आना ।

पगना (क्रि० अ०) मिलना, लीन होना, रस में डूबना ।

पगला (वि०) पागल, बावला, मूर्ख । [बाँधे जाते हैं।

पगहा (सं० पु०) वह रस्सी जिसमें बैल, गाय आदि

पगहिया, पगही (सं० स्त्री०) छोटा पगहा । [गया ।

पगा (वि०) रस में डुबाया हुआ, चीनी के रस में डुबाया

पगार (सं० पु०) गारा, वह नाली या नदी जिसे पैदल चल कर पार कर सकें, रखवाली की दीवार ।

पगारनि (सं० स्त्री०) मुँडेर ।

पगिया (सं० स्त्री०) पगड़ी, चीरा, पाग, दस्तार, शमला ।

पगु (सं० पु०) पैर, पाँव । [करना ।

पगुराना (क्रि०अ०) जुगाली करना, पागुर करना, रोमन्थ

पङ्क (सं० पु०) कर्दम, कीचड़, काँदा, ओदा, काँदो, दल-दल, पाप, गुनाह ।

पङ्कज (सं० पु०) कमल, पद्म, सारस पक्षी ।

पङ्कनिधि (सं० पु०) सागर, समुद्र।

पङ्करुह (सं० पु०) कमल, पद्म ।

पङ्कार (सं० पु०) शैवाल, सेतु, सोपान, सिवार, पुल, बाँध, सीढ़ी । [कीचड़ वाली जगह ।

पङ्किल (वि०) कर्दमयुक्त देश, (सं० पु०) नौका, नाव,

पङ्क्ति (सं० स्त्री०) ऐसा समूह जिसमें बहुत सी वस्तुयें एक दूसरे के उपरान्त एक सीध में हों, छन्दोभेद, दस की संख्या, एक वर्णवृत्त सेना में दस दस योद्धाओं की श्रेणी ।

पङ्क्तिचर (सं० पु०) कुरर पक्षी, कुलङ्ग ।
पङ्क्तिपावन (सं० पु०) पंक्ति को पवित्र करने वाला, श्रोत्रिय, ब्राह्मण ।
पङ्ग (सं० पु०) पतङ्गा, पाँखी, पखना ।
पङ्गु (सं० पु०) शनैश्चर, शनी (वि०) पाद-विकल, लुंजा, लुहा । [रंग का घोड़ा (वि०) पङ्गु ।
पङ्गुल (सं० पु०) श्वेत वर्ण घोड़ा, श्वेताश्व, सफ़ेद
पचक (सं० स्त्री०) शुष्कता, सुखाई, उतार, पटकन ।
पचकना (क्रि० अ०) सूखना, गलना, उतरना, पटकना ।
पचखना (वि०) जिसमें पाँच खण्ड हों ।
पचघरा (वि०) पाँच घर वाले मकान ।
पचतोलिया (सं० पु०) एक प्रकार का वस्त्र ।
पचना (क्रि०अ०) गलना, हज़म होना, सड़ना, बिगड़ना, मेहनत करना, परिश्रम करना, प्रयत्न करना, जतन करना ।
पचपचाना (क्रि० अ०) पसीजना, गीला होना ।
पचपन (वि०) पाँच कम साठ, पचास और पाँच ।
पचमहला (वि०) पचखना, पचकोठा ।
पचमान (सं० पु०) पकाने वाला ।
पचमेल (वि०) मिश्रित, जिसमें कई प्रकार हों । [हार ।
पचलड़ी (सं० स्त्री०) पाँच लड़ की माला, पाँच लर का
पचलोना (सं० पु०) एक प्रकार की औषध ।
पचहज़ारी (सं० पु०) पाँच हज़ार सिपाहियों के अफ़सर का दर्जा, ओहदा विशेष, बढ़के बातें, डींग ।
पचा (सं० स्त्री०) पाक, पकाना । [जाना, सड़ाना ।
पचाडालना (क्रि० अ०) पचाना, हड़पना, हज़म कर
पचानवे (वि०) नब्बे और पाँच । [हज़म करना ।
पचाना (क्रि० स०) पकाना, जीर्ण करना, सड़ाना,
पचाव (सं० पु०) पकाव, पचना, जीर्णता ।
पचास (वि०) पाँचगुना दस, वह संख्या जो चालीस और दस के योग से बने ।
पचासी (वि०) अस्सी और पाँच ।
पचीस (वि०) बीस और पाँच ।
पचीसी (सं० स्त्री०) कौड़ी से खेलने का एक खेल ।
पचूका (सं० पु०) पिचकारी, दमकला ।
पचोतरा (सं०पु०) पाँच रुपये सैकड़ा । [शय, पक्काशय ।
पचौनी (सं० स्त्री०) ओझ, झोझ, पोटा, ओझरी, आमा-
पच्चर (सं० पु०) फणी, ठेका, कील, खूँटी, मेख ।
मुहा०—पच्चर मारना = खिझाना, सताना, दुःख देना, किसी काम को रोक देना ।
पच्ची (वि०) लगा हुआ, संयुक्त, संलग्न, आसक्त, सटा हुआ ।
मुहा०—पच्ची होना = आपस में सटाना, बहुत प्यार होना । [टाँका मारना ।
पच्चीकारी (सं० स्त्री०) जुड़ाई, खुदाई, रफ़ू करना,
पच्छम (सं० पु०) पश्चिम दिशा ।
पच्छिम (सं० पु०) पश्चिम दिशा । [चिड़िया ।
पच्छी (सं० पु०) सहायी, साथी, सहायक, पखेरू, पक्षी,
पछड़ना (क्रि० अ०) गिर पड़ना, गिरना, पीछे हटना ।
पछताना (क्रि० अ०) पछतावा करना, सोचना, पीछे दुःख करना, हाथ मलना, कुढ़ना, कलपना ।
पछतावा (सं० पु०) खेद, सोच, अनुताप, चिन्ता, शोक, संताप, अफ़सोस ।
पछनी (सं० स्त्री०) छुरा, नहरनी ।
पछपात (सं० पु०) पक्षपात, सिफ़ारिस ।
पछम (सं० पु०) पश्चिम, पच्छिम ।
पछवा (सं० स्त्री०) पश्चिम की वायु, पश्चिम की हवा ।
पछाँह (सं० पु०) पश्चिम दिशा, पश्चिम देश ।
पछाड़ (सं० स्त्री०) पटकन, धड़कन, अचेत होकर गिरना, मूर्छित होकर गिरना ।
पछाड़ना (क्रि० स०) गिराना, पटकना, अधीन करना ।
पछियाव (सं० स्त्री०) देखो "पछवा" ।
पछोड़ना (क्रि० स०) फटकना, सूप से साफ़ करना ।
पछोरना (क्रि० स०) देखो "पछोड़ना" । [की जगह ।
पज़ावा (फ़ा० सं० पु०) आँवा, भट्टा, ईंट आदि पकाने
पज़ेब (सं० स्त्री०) पैर का एक गहना ।
पजोखा (सं० पु०) किसी के मरने पर उसके संबंधियों से शोक-प्रकाश, मातम-पुरसी ।
पजौड़ा (वि०) निकम्मा, अधम, नीच ।
पञ्च (वि०) संख्या विशेष, (सं० पु०) पञ्चायत में बैठ कर विचार करने वाला, सभा, पञ्चायत, मध्यस्थ, विचारकर्ता ।
पञ्चक (सं० पु०) पञ्च संबन्धीय, धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र, पाँच का समूह, ज्योतिष में धनिष्ठादि पाँच नक्षत्रों का एक स्थान पर आना, शकुन शास्त्र ।
पञ्चकषाय (सं० पु०) जामुन, सेमर, खिरैंटी, मौलसिरी और बेर इन पाँच फलों का कषाय ।

पञ्चकोल (सं० पु०) पीपल, पिपरामूल, चव्य, चित्रक-मूल और सोंठ ।

पञ्चकोश (सं० पु०) अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान-मय और आनन्दमय कोष ।

पञ्चगव्य (सं० पु०) गो संबन्धीय पञ्च द्रव्य, गोबर, गोमूत्र, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत ।

पञ्चचामर (सं० पु०) एक प्रकार का छन्द जो सोलह अक्षरों का होता है ।

पञ्चचूड़ा (सं० स्त्री०) अप्सरा विशेष ।

पञ्चजन (सं० पु०) पाताल वासी एक असुर का नाम, इसको श्रीकृष्ण ने मारा था, इसकी हड्डी से शङ्ख बना था, उसका नाम पञ्चजन्य पड़ा और यह श्रीकृष्ण जी की प्रिय वस्तु थी ।

पञ्चज्योनार (सं० पु०) पाँच प्रकार का भोजन, पंचों की ज्योनार ।

पञ्चतत्व (सं० पु०) पाँच पदार्थ, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश ।

पञ्चता (सं० स्त्री०) मौत, मृत्यु, मरण ।

पञ्चत्व (सं० पु०) मौत, मृत्यु, मरण, नाश ।

पञ्चथु (सं० पु०) कोकिल, कोयल ।

पञ्चदश (वि०) संख्या विशेष, पन्द्रह ।

पञ्चधा (वि०) पाँच प्रकार से, पञ्चविधि ।

पञ्चनख (वि०) पाँच नख वाला, (सं० पु०) हस्ती, कच्छप, व्याघ्र, (स्त्री०) बिसुइया, पल्ली, छिपकली ।

पञ्चनद (सं० पु०) पंजाब अर्थात् जिस देश में सतलज, व्यास, रावी, चनाब, झेलम ये पाँच नदियाँ बहती हैं ।

पञ्चपाण्डव (सं० पु०) पाण्डु राजा के पाँच पुत्र, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन आदि ।

पञ्चपात्र (सं० पु०) पाँच पात्रों का समूह, पाँच पात्रों का इकट्ठा होना, श्राद्ध विशेष, एक बर्तन जो पाँच धातुओं का बना होता है और पूजा के समय काम आता है, पञ्चधातु पात्र ।

पञ्चप्राण (सं० पु०) प्राणादि पञ्च वायु, पाँच प्रकार की हवा जिनसे मनुष्य जीता है, उनके नाम ये हैं, प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान ।

पञ्चभद्र (सं० पु०) अश्व विशेष, एक घोड़ा जिसके पाँच शुभ चिह्न हों ।

पञ्चभूत (सं० पु०) पञ्चतत्व अर्थात् पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश ।

पञ्चभूतात्मा (सं० पु०) मनुष्य जो पाँच तत्वों से बना हुआ है, देही, प्राणी, जीव ।

पञ्चम (वि०) पाँचवाँ, (सं० पु०) एक राग का नाम, एक स्वर का नाम ।

पञ्चमकार (सं० पु०) बाम मार्गियों की उपासना, मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन ।

पञ्चमहायज्ञ (सं०पु०) गृहस्थों के पाँच प्रकार के नित्य कर्म ।

पञ्चमी (सं०स्त्री०) पाँचवीं तिथि, दोनों पक्ष की पाँचवीं तिथि ।

पञ्चमुख (सं० पु०) शिव, महादेव ।

पञ्चमुद्रा (सं० स्त्री०) देव पूजा में नित्य की जाने वाली पाँच मुद्राएँ ।

पञ्चरङ्गी (वि०) अनेक प्रकार के रंगों से रंगा ।

पञ्चरत्न (सं० पु०) पाँच रत्न, यथा, सोना, हीरा, मोती, लाल, नीलम, कहीं कहीं सोने के स्थान में मूँगा लिया जाता है ।

पञ्चरात्र (सं० पु०) ग्रन्थ विशेष, श्री वैष्णव शास्त्र का ग्रन्थ ।

पञ्चवक्त्र (सं०पु०) शिव, महादेव ।

पञ्चवटी (सं० स्त्री०) एक जगह का नाम, जो गोदावरी नदी के पास है, जहाँ श्रीरामचन्द्र जी वनवास के समय वास किये थे और जहाँ, पीपल, बिल्व, वट, धात्री और अशोक ये पाँच वृक्ष थे ।

पञ्चबाण (सं० पु०) देखो "पञ्चशर" ।

पञ्चशर (सं० पु०) कामदेव, पाँच शर हैं, मोहन, उन्मादन, शोषण, तापन, स्तम्भन ।

पञ्चशाख (सं० पु०) कर, हाथ, पाँच शाखा अर्थात् अंगुली ।

पञ्चाङ्ग (सं० पु०) पत्रा, यन्त्री, पञ्चिका ।

पञ्चानन (सं० पु०) सिंह, केहरी, शेर शिव, महादेव ।

पञ्चामृत (सं०पु०) शक्कर, दूध, घी, दही और मधु जिनसे भगवान् को नहलाते हैं ।

पञ्चायत (सं०स्त्री०) जातीय सभा, विचार करने की सभा ।

पञ्चाल (सं० पु०) देश विशेष, पंजाब ।

पञ्चेन्द्रिय (सं० पु०) पाँच इन्द्रियाँ ।

पञ्जर (सं० पु०) शरीरस्थ हड्डियों का समुदाय, पसली, ठठरी, पसलियों का समूह, पिञ्जरा ।

पञ्जिका (सं० स्त्री०) पुस्तक विशेष, पंचाङ्ग, तिथिपत्र ।

पञ्जीरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का भगवान् का भोग, जो भुनी हुई धनिये के चूर्ण में शक्कर, मेवा आदि मिला कर बनता है । कृष्ण जन्माष्टमी आदि में भगवान् को भोग लगा कर लोगों को बाँटा जाता है ।

पट (सं० पु०) कपड़ा, वस्त्र, परदा, आड़, ओट, गिरने या मारने का शब्द, किवाड़, झिलमिली (वि०) ऊपर, नीचे, औंधा, उलटा ।

पटक (सं० पु०) डेरा, कनात, पड़ाव, छावनी, फौज के रहने की जगह।

पटकन (सं० स्त्री०) पछाड़, चोट, पटकी। [कड़कना।

पटकना (क्रि० स०) दे मारना, पछाड़ना, गिराना,

पटका (सं० पु०) कमरबन्द, कमर कसने का वस्त्र, पटुका।

पटकाना (क्रि० स०) पछाड़ खिलाना, गिरवाना।

पटकार (सं० पु०) तन्तुवाय, ताँती, जुलाहा, कोरी, वस्त्र बुनने वाला। [चोर, ठग, सेंध देने वाला।

पटच्चर (सं० पु०) जीर्ण वस्त्र, पुराना कपड़ा, चिथड़ा,

पटड़ा (सं० पु०) सिल्ली, तख़्ता, पाटा, पीढ़ा।

पटतर (वि०) बराबर, समान।

पटन (सं० पु०) पाटन, छावन, छत डालना।

पटना (क्रि०अ०) मिलना, भर पाना, सींचना, पनियाना, छापा जाना, ढँक जाना (सं० पु०) एक नगर का नाम, जो बिहार की राजधानी है, इसका प्राचीन नाम पाटलीपुत्र था।

पटनि (सं० स्त्री०) कपड़े, वस्त्र, उढ़ने।

पटनी (सं० पु०) नैया, माँझी, केवट, मल्लाह।

पटपट (सं० पु०) पट, शब्द होना, शब्द विशेष।

पटपर (वि०) बंजर, वीरान, ऊसर।

पटमण्डप (सं० पु०) कपड़े का घर, कनात, शामियाना।

पटवेश्य (सं० पु०) पट-मण्डप।

पटरा (सं० पु०) पटड़ा, पीढ़ा, सिल्ली।

पटरानी (सं० स्त्री०) राणी, राज्ञी, महिषी, पहली और बड़ी रानी, महारानी। [पट्टी, तख़्ती, कच्ची सड़क।

पटरी (सं० स्त्री०) पटिया, छोटा पटरा, लिखने की

पटल (सं० पु०) छप्पर, छान, परदा, परत, तह, पटरा, माथे पर का तिलक, समूह, ढेर, आँख के परदे।

पटली (सं०स्त्री०) पाँत, पंक्ति, श्रेणी। [गूँधना है, पटहेरा।

पटवा (सं० पु०) एक जाति, जिसका पेशा गहनों को

पटवाना (क्रि० स०) सिंचवाना, पनियाना, अदा करवाना, चुकता करवाना, भरवाना, पाटने का काम दूसरे से कराना।

पटवारी (सं०पु०) वह जिसके पास गाँव का हिसाब रहता है, गाँव का लगान आदि का हिसाब रखने वाला।

पटह (सं० पु०) बाजा, पटा, डंका, नक्कारा, नगारा, युद्ध का बाजा, मारण, समारम्भ।

पटा (सं० पु०) पाट, पाटा, आसन, जिस पर हिन्दू लोग बैठ कर पूजा करते हैं, गदका, पीढ़ा, आसन।

पटाक (सं० पु०) किसी छोटी चीज़ के गिरने का शब्द।

पटाका (सं० पु०) एक प्रकार की आतशबाज़ी।

पटाना (क्रि० स०) सींचना, पानी देना, पनियाना, चौका देना, लीपना, थोपना, छत को पीट कर बराबर कराना, भरन लगाना, हुंडी के रुपये चुकता करना, झगड़ा शान्त होना, आग बुझना, आग शान्त होना।

पटापट (सं० पु०) मारने आदि का शब्द। [काठ।

पटाव (सं० पु०) सिंचाई, छत बनाना, द्वार के ऊपर का

पटिया (सं० स्त्री०) पटरी, पट्टी, सलेट, (सं० पु०) पहनने का एक गहना, सिर के गूँधे या सँवारे हुए बाल।

पटीना (सं० पु०) पक्षी विशेष। [हैं, छापने का पटरा।

पटीमा (सं० पु०) वह पटरा जिस पर छीपी कपड़ा छापते

पटीर (सं० पु०) मेघ, बादल, खदिर, तुङ्ग, मूलक, उदर, कंदर्प, कामदेव, चंदन, बंसलोचन, खेत, क्यारी, मूली, बेट, पलनी, रोग, पर्पाहा, उच्च, बुलंद।

पटीलना (क्रि० अ०) मारना, पीटना, निचोड़ना, चूसना।

पटु (सं० पु०) परवर, परवर का पत्ता, करेला, ख़ुशबूदार चीज़ (वि०) दक्ष, चतुर, निरोग, तन्दुरुस्त, तीक्ष्ण निष्ठुर, बेरहम, धूर्त, शरीर।

पटुता (सं० स्त्री०) चतुराई, निपुणता, दक्षता, प्रवीणता।

पटुत्व (सं० पु०) पटुता।

पटुल (सं० पु०) पटुता।

पटुवा (सं० पु०) रेशम का काम करने वाला, रेशम में माला और मोती आदि पिरोने वाला। [कपड़ा।

पटूका (सं० पु०) पटवा, कटिबंध, कमर कसने का

पटूत (सं० पु०) पटुता, चतुरता।

पटूवा (सं० पु०) पाट, सन विशेष।

पटेर (सं० पु०) एक पौधे का नाम, गोंदी।

पटेरा (सं० पु०) बूटा विशेष, घास विशेष।

पटेल (सं० पु०) लठबाजी, कुनबी, चौधरी, गाँव का मुखिया, महाराष्ट्र आदि प्रान्त के कायस्थों की उपाधि। [जिसकी चटाइयाँ बनाते हैं।

पटेला (सं० पु०) नौका विशेष, धरना, हेंगा, एक घास,

पटेली (सं० स्त्री०) छोटा पटेला, छोटी नाव।

पटैत (सं० पु०) लठैत, पटा खेलने वा लड़ने वाला।

पटैला (सं० पु०) देखो "पटेला"।
पटोतन (सं० पु०) तख़्ता से पटना।
पटोर (सं० पु०) रेशमी वस्त्र, पाट के बने कपड़े।
पटोल (सं० पु०) परवर, परवल की लता, परवल।
पटोलिका (सं० स्त्री०) सफ़ेद फूल की तुरई।
पटोहिया (सं० पु०) उल्लू।
पटौनी (सं० पु०) नैया, पटनी, नाविक, माँझी।
पट्ट (सं० पु०) पीढ़ा, पाटा, पट्टी, तख़्ती, लाल रेशमी पगड़ी, राज्य-सिंहासन, उत्तरीय वस्त्र, शिला, पाषाण, रेशमी दुपट्टा, चतुष्पथ, चौराहा।
पट्टन (सं० पु०) नगर, बड़ा शहर।
पट्टमहिषी (सं० स्त्री०) प्रधान महारानी, पटरानी।
पट्टशिष्य (सं० पु०) प्रधान चेला।
पट्टा (सं० पु०) बाल, अलक, पटिया, जो कुत्ते आदि के गले में डाली जाती है, टीका, ज़मीन या जायदाद संबन्धी काग़ज़-पत्र।
पट्टी (सं० स्त्री०) पाठ, पाटी, तख़्ती। [वस्त्र।
पट्टू (सं० पु०) लोई, कम्बल, एक प्रकार का ऊनी गरम
पट्ठा (सं० पु०) युवा, युवक, पाठा, सिरा, नस।
पठन (सं० पु०) अध्ययन, पढ़ना, पाठ, सबक़।
पठनीय (वि०) पढ़ने के योग्य।
पठाना (क्रि०स०) भेजना, रवाना करना, पठवाना।
पठानी (क्रि० स०) भेजना, पठवाना, रवाना करना।
पठावनी (सं० स्त्री०) पठाने की मज़दूरी।
पठित (वि०) पढ़ा हुआ। [छोटी बकरी।
पठिया (सं० स्त्री०) जवान स्त्री, यौवना, तरुणी, युवती,
पठौना (क्रि० स०) पठाना, भेजना, पठवाना।
पठौनी (सं० स्त्री०) देखो "पठावनी"।
पड़ जाना (क्रि० अ०) लेटना, गिरना, थमना।
पड़ना (क्रि० अ०) गिरना, लेटना, पड़ाव डालना, डेरा करना, टपकना, चूना।
पड़पड़ाना (क्रि० अ०) बड़बड़ाना, बकना, मारना, पीटना। [रहना।
पड़ रहना (क्रि० अ०) बेवश रहना, सो रहना, लेट
पड़वा (सं० स्त्री०) प्रतिपदा, परवा, परेवा।
पड़ा (सं० पु०) पड़रा, भैंस का बच्चा।
पड़ापड़ (क्रि०वि०) धमाधम, बार बार शब्द कर के।
पड़ा पाना (क्रि० स०) सहज में पाना।
पड़ाव (सं० पु०) ठहरने की जगह, ठहराव, छावनी, डेरा, कंपू, ख़ेमा, भीड़।
पड़िया (सं० स्त्री०) भैंस की बच्ची।
पड़ोस (सं० पु०) पास बसना, समीपता, सहवास।
पड़ोसी (सं० पु०) पास रहने वाला, समीपी, पड़ोस का रहने वाला।
पढ़न (सं० स्त्री०) पढ़ना, पढ़ने की चाल, अभ्यास।
पढ़ना (क्रि० स०) पाठ करना, बाँचना, सीखना, रटना, जपना, अभ्यास करना। [जादू, अध्ययन, पाठ।
पढ़न्त (सं० स्त्री०) अध्याय, पाठ, सन्ध्या, मन्त्र, टोना,
पढ़ा (वि०) पण्डित, बुद्धिमान, विज्ञ।
पढ़ाना (क्रि० स०) सिखलाना, शिक्षा देना, सिखाना, सीख देना, पाठ पढ़ाना, अध्ययन कराना।
पढ़ा लिखा (वि०) पढ़ा हुआ, प्रवीण, अभिज्ञ।
पढ़िन (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली, मत्स्य विशेष।
पण (सं० पु०) मूल्य, धन, ताम्र, द्रव्य, भृति, द्यूत, जुआ, शाक, व्यवहार, क़ीमत, किराया, मज़दूरी, बाज़ी, लेन देन, प्रतिज्ञा, बचन, अस्सी कौड़ियाँ, प्राचीन काल की एक विशेष नाप जो एक मुट्ठी अनाज के बराबर होती थी।
पणन (सं०पु०)व्यवहार, विक्रय, बेचना, बेचने की क्रिया।
पणव (सं० पु०) वाद्य-यन्त्र विशेष, छोटा नगाड़ा।
पणित (सं० पु०) स्तुत, व्यवहृत, बेचा हुआ, वज़न, (वि०) जिसकी प्रशंसा की गई हो, प्रशंसित।
पण्ड (सं० पु०) हिजड़ा, नपुंसक।
पण्डा (सं० पु०) पुजारी, पुरोहित (स्त्री०) बुद्धि, मति।
पण्डित (सं०पु०) शास्त्रज्ञ, बुद्धिमान, विद्वान, अध्यापक।
पण्डितमन्य (सं० पु०) पण्डिताभिमानी, विद्याभिमानी, जो अपने आपको पण्डित मानता है, मूर्ख।
पण्डिता (सं० स्त्री०) शास्त्रज्ञ स्त्री, बुद्धिमान स्त्री।
पण्डिताइन (सं० स्त्री०) पण्डित की स्त्री।
पण्डिताई (सं० स्त्री०) पण्डित का काम।
पण्डुक (सं० पु०) कबूतर की जाति का एक पक्षी।
पण्डुब्बी (सं०स्त्री०) जल-पक्षी। [की चीज़, फ़रोख़्तनी।
पण्य (सं० पु०) विक्रय-द्रव्य (सं० स्त्री०) वेश्या, बेचने
पण्यवीथी (सं० स्त्री०) हाट, बाज़ार, दुकान।
पण्यशाला (सं० स्त्री०) दूकान, वह घर जिसमें चीज़ें बिकती हों।

पएयस्त्री (सं० स्त्री०) वेश्या, नगर-नारी, पतुरिया, रंडी।

पत (वि०) पालित, पतित, पाला हुआ, गिरा हुआ, (सं०स्त्री०) बड़ाई, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, आबरू, नामवरी, (सं० पु०) स्वामी, प्रभु, धनी, मालिक, भर्ता।

पतग (सं० पु०) पत्ती, परिन्द, चिड़िया।

पतङ्ग (सं०पु०) सूर्य, पत्ती, शलभ, धान्य विशेष, परवाना, पदरञ्जक, चंदन विशेष, अग्निवाण, आफ़ताब, परिन्दह, टिड्डी, मकड़ी, पारा, शरीर, नौका, चिनगारी, संदल की एक क़िस्म। [गुल, चिनगी।

पतङ्गा (सं० पु०) कोई उड़ने वाला कीड़ा, मकोड़ा, फूल,

पतज (सं० पु०) परिंद, पत्ती।

पतझड़ (सं० स्त्री०) शरद काल, शिशिर, पत्ता-रहित, एक ऋतु का नाम जिसमें पत्ते झड़ जाते हैं।

पतञ्जली (सं० पु०) मुनि विशेष, योग शास्त्र कर्ता महाभाष्य कर्ता, एक ऋषि का नाम, जिन्होंने योग शास्त्र और पाणिनी व्याकरण पर भाष्य बनाये हैं। कहते हैं ये आकाश से छोटी सी साँप की मूर्ति धर कर पाणिनी की अंजुली में गिरे थे।

पतत्र (सं० पु०) पत्त, पंख, पर।

पतत्रि (सं० पु०) पत्ती, परिन्दह, चिड़िया।

पतद्ग्रह (सं० पु०) पीकदान, वह कमंडल जिसमें भिक्षुक भिक्षान्न लेते हैं, भिक्षापात्र, सेना, लश्कर।

पतन (सं० पु०) पछाड़, पटकन, पड़ना, गिरना।

पतला (वि०) पतील, झीन, महीन, बारीक, कृश, दुबला।

पतलाई (सं० स्त्री०) दुर्बलता, दुबलापन।

पतली (सं० पु०) मुर्झाया पत्ता। [पताई।

पतलो (सं० पु०) मूँज का सूखा हुआ पत्ता, सरकंडे की

पतवार (सं० स्त्री०) कन्हर, नाव का कर्ण, जहाज़ की एक चीज़ जिससे जहाज़ चलाया जाता है।

पता (सं० पु०) ठिकाना, चिह्न, खोज, संधान।

पताका (सं० स्त्री०) वह डंडा जिसमें पताका पहनाई जाती है, ध्वजा, चिह्न, सौभाग्य, नाटकाङ्क, अंग, केतु, फरहरा, निशान, झण्डा, नेक, दस अरब की संख्या। [अलमबरदार।

पताकी (सं० पु०) पताकाधारी, निशान उड़ाने वाला,

पति (सं० पु०) भर्ता, मालिक, धनी, अधिपति, स्वामी, शौहर, ख़ाविंद, इज़्ज़त।

पतित (वि०) जाति से निकाला हुआ, गलित, स्वधर्मच्युत, अधर्मी, महापापी, दुष्ट, अपने धर्म से गिरा हुआ।

पतितपावन (वि०) पापियों को शुद्ध करने वाला, (सं०पु०) परमेश्वर का नाम और गुण। [है, पतिव्रता।

पतिदेवता (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति ही देवता

पतिध्रुक (वि०) पति को न चाहने वाली स्त्री।

पतिया (सं० स्त्री०) चिट्ठी, पत्री, ख़त, प्रतीत पत्र, जिसमें पण्डित लोग अपनी सम्मति लिख कर देते हैं।

पतियाना (क्रि० स०) भरोसा करना, विश्वास करना, प्रतीत करना।

पतियारा (सं० पु०) भरोसा, विश्वास, प्रतीत।

पतिवरा (सं० स्त्री०) विवाह योग्य अवस्था वाली स्त्री।

पतिव्रता (सं० स्त्री०) सती, कुलवती, पति देवता, पति-सेवी स्त्री।

पतीरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की चटाई।

पतील (वि०) पतला, झीना, महीन, बारीक़।

पतीला (सं० पु०) बटलोही, बटुवा, बटुला।

पतीली (सं० स्त्री०) बटलोई, देगची।

पतुकी (सं० स्त्री०) छोटी हाँड़ी।

पतुरिया (सं० स्त्री०) वेश्या, रामजनी, गणिका।

पतुली (सं० स्त्री०) कलाई में पहनने का एक आभूषण

पतुही (सं०स्त्री०) छोटे छोटे दानों वाली मटर की छीमी।

पतोह (सं० स्त्री०) पुत्रवधू, बेटा की स्त्री, बहू, बधू।

पतौवा (सं० पु०) पत्ता, पल्लव, पात।

पत्तन (सं० पु०) मृदंग, नगर, शहर।

पत्तर (सं० पु०) पता, चिट्ठी, दानपत्र, जो ताँबे पर खोदा जाता है, सोने चाँदी का वर्क़।

पत्तल (सं० स्त्री०) पत्तों का बना बर्तन जिसमें खाना खाया जाता है।

पत्ता (सं० पु०) पात, दल, गहना, धातु की चादर।

मुहा०—पत्ता खड़कना = किसी के पास आने की आहट मिलना। पत्ता तोड़ कर भागना = वेग से भागना। पत्ता न हिलना = हवा में गति न होना।

पत्ति (सं० स्त्री०) पैदल सिपाही, गति, भूल, वीर भेद, सैन्य भेद, गर्त, गड़हा, प्राचीन समय में सेना का वह खण्ड जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों।

पत्ती (सं० स्त्री०) पाती, पंखड़ी, भंग, भाँग, बूटी, सब्ज़ी।

पत्थर (सं० पु०) पाषाण, पत्थर, शिला, पखान।

मुहा०—पत्थर छाती पर रखना=सब्र करना, संतोष करना, बस नहीं चलना। पत्थर पसीजना=पिघलना, कोमलचित्त होना। पत्थर पानी हो जाना=क्रूर हृदय में दया होना, कोमल चित्त होना। पत्थर सा फेंक मारना=किसी बात का बिना समझे उत्तर देना, कड़ी बात कहना। पत्थर से सिर फोड़ना=मूर्ख को शिक्षा देना। पत्थर होना=भारी होना, अचल होना, चुप खड़ा रहना, कठोरचित्त होना।

पत्नी (सं० स्त्री०) वेद विधि से बिवाहिता स्त्री, जोरू, भार्या।

पत्र (सं० पु०) पाती, चिट्ठी, पत्ता, पंख, काग़ज़, समाचार पत्र, पुस्तक का एक पन्ना, बाहन, सवारी।

पत्रदाता (सं० पु०) चिट्ठी देने वाला, चिट्ठी बाँटने वाला, चिट्ठीरसा।

पत्रदारक (सं०पु०) अश्रु, आँसू, बालक, वायु, आरा, आरी।

पत्रपरशु (सं० पु०) सोने आदि काटने की क़ैंची।

पत्रपाश्या (सं० स्त्री०) सोने का टीका, सोने की खौर।

पत्ररंजन (सं० पु०) पत्र लिखना, चित्र लिखना, शृङ्गार करना।

पत्ररथ (सं० पु०) पक्षी, चिड़िया, परिन्द।

पत्ररेखा (सं० स्त्री०) तिलक की रेखा, चन्दन लगाना।

पत्रा (सं० पु०) तिथिपत्र, पञ्चाङ्ग, पन्ना, सफ़हा।

पत्राङ्क (सं० पु०) पुस्तकों के पृष्ठ की संख्या।

पत्रालय (सं० पु०) डाकख़ाना, पोस्ट-आफ़िस।

पत्रिका (सं० स्त्री०) चिट्ठी, पत्र, पक्षी, वृक्ष, कमल।

पत्री (सं० स्त्री०) देखो "पत्रिका"। [सड़क।

पथ (सं० पु०) मार्ग, बाट, पैंडा, राज-मार्ग, रास्ता,

पथर (सं० पु०) पत्थर, पाषाण।

पथरकला (सं० पु०) बंदूक़, तुपक।

पथरचटा (सं० पु०) शाक विशेष, कंजूस, कृपण।

पथरफोड़ (सं० पु०) कठफोड़वा या खोलवा पक्षी।

पथराना (क्रि० अ०) कड़ा होना, ताज़गी न रहना, जड़ हो जाना।

पथरी (सं० स्त्री०) कंकरी, चकमक पत्थर, एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्राशय में पत्थर के छोटे बड़े कई टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं, एक प्रकार की मछली, पत्थर का छोटा बर्तन, कुण्डी, कूँड़ी।

पथरीला (वि०) कंकरीला, पत्थरमय।

पथरौटी (सं० स्त्री०) पथरी। [राही, मुसाफ़िर।

पथिक (सं० पु०) बटोही, यात्री, मार्ग चलने वाला,

पथिवाहक (सं० पु०) कहार, मजूर।

पथ्य (सं० पु०) रोगी-सेव्य वस्तु, हितकारक, रोगी का हितकारी खाना, बीमार के खाने योग्य चीज़, पथ, उचित, हित। [सेंधा निमक, हर्रे, हड़।

पथ्या (सं० स्त्री०) हरीतकी, बीमार की ग़िज़ा, मुफ़ीद,

पद (सं० पु०) व्यवसाय, त्राण, स्थान, चिह्न, पाद, वस्तु, शब्द, वाक्य, जगह, प्रतिष्ठा, आदर, मान, अधिकार, महिमा।

पदक (सं० पु०) तमग़ा।

पदक्रम (सं० पु०) पाँव का फाल, डग।

पदग (सं० पु०) पैदल, पियादा, पैदल चलने वाला।

पदचर (सं० पु०) पदगामी, मनुष्य। [भ्रष्ट।

पदच्युत (वि०) महिमा से च्युत, पदभ्रष्ट, अधिकार-

पदज (सं० पु०) पाँव की अंगुली।

पदत्याग (सं० पु०) अधिकार-त्याग, इस्तीफ़ा।

पदत्राण (सं० पु०) पगरखी, जूता, पनही। [भीरु।

पदना (वि०) पादने वाला, अधिक पादने वाला, डरपोंक,

पदनी (वि०) दुराचारिणी, व्यभिचारिणी।

पदपटी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का नाच, नृत्य विशेष।

पदपत्र (सं० पु०) कमल का पत्ता, पुष्करमूल।

पदपीठ (सं० पु०) खड़ाऊँ, जूता।

पदवृत (सं० पु०) युक्त शब्द, व्युत्पन्न शब्द।

पदस्थ (सं० पु०) अपने पद में, महिमायुक्त।

पदाघात (सं० पु०) पाँव का प्रहार, पैर की चोट, लात।

पदाङ्क (सं० पु०) पाँव का चिह्न, पद-चिह्न।

पदाति (सं० पु०) वह सेना जो पैदल चलती है।

पदाम्भोज (सं० पु०) चरण कमल।

पदारविन्द (सं० पु०) चरण कमल।

पदार्थ (सं० पु०) वस्तु, चीज़, उत्तम वस्तु, न्यायशास्त्र में सात पदार्थ माने गये हैं, जैसे द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य विशेष, समवाय, अभाव, शब्द का अर्थ, पद का अर्थ।

पद्धति (सं० स्त्री०) मार्ग, रास्ता, पंक्ति, पूजा का ग्रंथ।

पद्म (सं० पु०) अम्बुज, कमल, हाथियों के शरीर पर का बिन्द, व्यूह-भेद, निधि-भेद, श्रीराम, बलदेव, सोलह रतिबंधों में से एक धातु, सीसा।

पद्मगर्भ (सं० पु०) ब्रह्मा, विधि, विधाता।

पद्मगुप्त (सं० पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध महा कवि।
पद्मजन्मा (सं० पु०) ब्रह्मा, प्रजापति पद्म से उत्पन्न।
पद्मतन्तु (सं० पु०) मृणाल, पद्म की डंडी।
पद्मनाभ (सं० पु०) विष्णु।
पद्मपत्र (सं० पु०) पुष्कर मूल।
पद्मपलाश (सं० पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु।
पद्मबंध (सं० पु०) चित्रकाव्य विशेष, अलङ्कार विशेष।
पद्मराग (सं० पु०) लालमणि, माणिक, मानिक।
पद्मलांछन (सं०पु०) ब्रह्मा,सूर्य,कुबेर। [श्रीकृष्ण,विष्णु।
पद्म लोचन (वि०) पद्म पत्र के समान विस्तृत लोचन,
पद्मवर्ण (सं० पु०) महाराज यदु के पुत्र, ये नाग कन्या के गर्भ से उत्पन्न हुये थे। [राज-धर्म्मा।
पद्मस्नुषा (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, दुर्गा, गङ्गा, कमला,
पद्मा (सं० स्त्री०) लक्ष्मी,विष्णु की पत्नी,कमला, नारंगी।
पद्माकर (सं० पु०) सूर्य, तालाब, वापी, तड़ाग।
पद्माक्ष (सं० पु०) कमलगट्टा। [का नाम
पद्मावती (सं० स्त्री०) मनसादेवी, जय देव कवि की स्त्री
पद्मालय (सं० पु०) ब्रह्मा।
पद्मालया (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, कमला। [का आसन।
पद्मासन (सं० पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, एक प्रकार का योग
पद्मिनी (सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, उत्तम स्त्री, कमलिनी स्त्रियों के चार भेदों में से एक, इस जाति की स्त्री सब से उत्तम और लक्ष्मी का अवतार समझी जाती है, एक क्षत्राणी वीराङ्गना, यह महाराणा भीमसिंह की प्रधान रानी थी, इसकी सुन्दरता की प्रशंसा देश विदेश में फैली हुई थी, दिल्ली के सम्राट् कामलोलुप अलाउद्दीन के कान में इसकी सुन्दरता की बात पहुँची, उसने इसे पाने के लिए भीमसिंह को क़ैद किया पर पद्मिनी ने अपनी चतुराई से भीमसिंह को छुड़ा लिया, अन्त में अलाउद्दीन ने चित्तौर पर चढ़ाई की महाराणा भीमसिंह बादल गोरा आदि महावीरों के साथ शत्रु का सामना करने के लिए मैदान जङ्ग में आ डटे, उधर महारानी पद्मिनी आदि राजपूत वीराङ्गना आग से जल भुन कर मर गयीं। [छन्द-प्रबंध, शाठ्य, शूद्र।
पद्य (सं० पु०) कवि-कृत काव्य, श्लोक, छन्द, कविता,
पधारना (क्रि० अ०) जाना, सिधारना, पगधारना, आना, तशरीफ़ लाना वा ले जाना।
पन (सं० पु०) बचन, होड़, अवस्था-द्योतक, शर्त, भाव, प्रतिज्ञावाचक, भाववाचक संज्ञा का चिह्न।
पनकपड़ा (सं० पु०) भीगा कपड़ा।
पनगोटी (सं० स्त्री०) शीतला, चेचक।
पनघट (सं० पु०) पानी भरने का घाट, जल भरने का घाट। [प्रत्यंचा, रोदा।
पनच (सं० स्त्री०) चिल्ला, धनुष की रस्सी, धनुगुण,
पनचक्की (सं० स्त्री०) पानी से चलने वाला जाँता, पानी के वेग से चलने वाली चक्की।
पनपना (क्रि० अ०) मोटा होना, बढ़ना, हरियर होना।
पनपनाहट (सं० स्त्री०) सनसनाहट।
पनबट्टा (सं० पु०) पान रखने का डिब्बा, गिलौरीदान।
पनबाड़ी (सं० स्त्री०) बड़हर, पान की बाड़ी।
पनवार (सं० पु०) राजपूतों की एक जाति।
पनवारा (सं० पु०) पत्तल, पतरी, पत्रावली।
पनशाला (सं० स्त्री०) प्याऊ, पौशला, पनसरा।
पनस (सं० पु०) कटहर का पेड़, कटहर का फल, एक बन्दर का नाम।
पनसा (वि०) फीका, अलोना, छाला।
पनसारी (सं० पु०)पसारी, गन्ध-वणिक, गंधी, असार।
पनसाल (सं० पु०) पनशाला, प्याऊ।
पनसोई (सं० स्त्री०) छोटी नाव, डोंगी।
पनहा (सं० पु०) वह दण्ड जो चोरी का माल लौटाने वाले को दिया जाता है, वस्त्र आदि की चौड़ाई।
पनहाना (क्रि० स०) स्तन में दूध लाना। [भरैया।
पनहारा (सं० पु०) पानी भरने वाला नौकर, जल-
पनहारिन (सं० स्त्री०) पानी भरने वाली नौकरानी।
पनहारी (सं० स्त्री०) पानी भरने वाली पनहारिन।
पनही (सं०स्त्री०) जूता, जूती, जोड़ा, पदरखा, पदत्राण।
पनारी (सं० स्त्री०) देखो "पनाली"।
पनाली (सं० स्त्री०) प्रणाली, मोरी, नाली, प्रनाली।
पनिया (सं० पु०) पानी, जल (वि०) पानी का।
पनियाना (क्रि० स०) सींचना, पानी भरना,पानी देना।
पनियाला (सं० पु०) पनियार नाम का फल।
पनी (वि०) प्रण करने वाला, दृढ़प्रतिज्ञ।
पनीर (सं० पु०) छेना से बना हुआ खाद्य, फाड़ कर जमाया हुआ दूध।
पनौहा (सं० पु०) जल के संयोग से बना हुआ पदार्थ, जल से उत्पन्न।

पनेरी (सं० पु०) तमोली, बरई, पान बेचने वाला ।
पनैरिन (सं० स्त्री०) तमोलिन, बरइन ।
पन्थ (सं० पु०) मार्ग, रास्ता, राह, मत, धर्म, पदवी ।
पन्था (सं० पु०) मार्ग, बाट, पैंड़ा, राह, रास्ता ।
पन्थाई (वि०) पन्थ का अनुयायी, मतावलम्बी ।
पन्थी (सं० पु०) धर्म पथ को मानने वाला, मार्ग चलने वाला ।
पन्नग (सं० पु०) सूर्य, नाग, सर्प ।
पन्नगपति (सं० पु०) शेष, सर्पराज, अनन्त ।
पन्नगारी (सं० पु०) गरुड़ ।
पन्नगाशन (सं० पु०) पन्नगारी, गरुड़ ।
पन्नगो (सं० स्त्री०) सर्पिणी, मनसा देवी ।
पन्ना (सं० पु०) पत्र, पत्रा, रत्न विशेष, नीलमणि ।
पन्नी (सं० स्त्री०) तबक, सोना, चाँदी आदि का महीन पत्तर । [टुकड़ा, चूर्ण, छिलका ।
पपड़ा (सं० पु०) किसी वस्तु के ऊपर का छिलका,
पपड़ियाँ (सं० स्त्री०) छोटा पपड़ा ।
पपड़िया कत्था (सं० पु०) सफ़ेद कत्था, सफ़ेद खैर ।
पपड़ी (सं० स्त्री०) देवली, छिलका, परत, पापड़ ।
पपड़ीला (वि०) परतीला, रसीला ।
पपनी (सं० पु०) बरौनी, आँख का पक्ष्म, बरनी ।
पपरा (सं० पु०) पपड़ा ।
पपरी (सं० स्त्री०) पपड़ी ।
पपीता (सं० पु०) एक फल विशेष ।
पपीहा (सं० पु०) चातक, एक पक्षी विशेष जो स्वाती का ही पानी पीता है ।
पपैया (सं० पु०) खिलौना, पपीता ।
पपोटा (सं० स्त्री०) पलक, अक्षिपुट, आँख का पुट ।
पम्पा (सं० स्त्री०) दक्षिण देशस्थ नदी विशेष, सरोवर विशेष ।
पय (सं० पु०) पानी, नीर, जल, दूध ।
पयद (सं० पु०) बादल, स्तन, थन ।
पयनिधि (सं०पु०) सागर, समुद्र ।
पयमुख (सं० पु०) दुधमुहाँ ।
पयस्विनी (सं० स्त्री०) नदी, दूध देने वाली गाय, बहुदुग्धा गौ, दुधैल गाय, बकरी, भेड़ी ।
पयान (सं० पु०) चलना, कूच, बिदा, प्रस्थान, यात्रा ।
पयाल (सं० पु०) पुआर, खर, नेरुआ, सूखी घास, तिनका ।
पयोद (सं० पु०) बादल, मेघ ।
पयोधर (सं० पु०) स्तन, चूँची, मेघ, बादल, नारियल, गन्ना, महकदार घास, पहाड़, दूध वाला पेड़, दुग्ध वृक्ष । [पानी रखने का बर्तन ।
पयोधि (सं० पु०) समुद्र, सागर, जलधि, जलाधार,
पयोनिधि (सं० पु०) समुद्र ।
पयोराशि (सं० पु०) समुद्र, सागर ।
पर (वि०) दूसरा, पराया, अन्य, भिन्न, विदेशी, परदेशी, दूर, परे, अन्तर पर, पिछला, उत्तम, श्रेष्ठ, शिरोमणि, प्रधान, सब से बड़ा, विरोध, प्रतिकूल, बहुत, अत्यन्त, अधिक, तत्पर, लगा हुआ (सं० पु०) बैरी, शत्रु (अव्य०) केवल, इसके पीछे, परन्तु, किन्तु, लेकिन, ऊपर, पै, नित्य ।
परकना (क्रि० अ०) चसकना, सधना, अभ्यासी होना ।
परकाज (सं० पु०) पराया काम, दूसरे का काम ।
परकाजी (वि०) परोपकारी, उपकारी, परार्थी ।
परकाना (क्रि० स०) साधना, सिखाना, परचाना ।
परकीय (वि०) अन्य संबन्धीय, दूसरे का ।
परकीया (सं० स्त्री०) नायिका विशेष, पर पुरुष के साथ रमण करने वाली स्त्री, पराई स्त्री ।
परख (सं० स्त्री०) परीक्षा, जाँच, कसौटी, इम्तिहान, निरख । [निरखना ।
परखना (क्रि० स०) जाँच करना, परीक्षा करना, देखना,
परखवाना (क्रि० स०) जाँच कराना, परखाना ।
परखाई (सं० स्त्री०) निरखाई, जँचावट, परखने का मेहनताना या मज़दूरी । [निरखवाना ।
परखाना (क्रि० स०) जाँच कराना, परीक्षा कराना,
परखी (सं० स्त्री०) एक छोटा लोहा, जिससे बोरे में का अन्न निकाल कर देखा जाता है ।
परखैया (सं० पु०) परीक्षक, कुतवैया, जँचवैया ।
परघनी (सं० स्त्री०) चाँदी सोना ढालने की परघी ।
परघरी (सं० स्त्री०) सोना ढालने का साँचा, कर्छाई ।
परचा (सं० पु०) परीक्षा, जाँच, परिचय ।
परचून (सं० पु०) आटा, दाल, हल्दी, मसाला आदि ।
परचूनिया (सं० पु०) परचून बेचने वाला, मोदी, आटा, दाल, नून, मिर्च आदि फुटकर सौदा बेचने वाला ।
परचूनी (सं० स्त्री०) मोदी का व्यवसाय ।
परचौ (सं० पु०) परख, जाँच ।

परछती (सं० स्त्री०) हलका छप्पर।
परछना (क्रि०स०) दुलहा दुलहिन की आरती उतारना।
परछाँई (सं० स्त्री०) प्रतिबिम्ब, प्रतिछाया।
परछिद्र (सं० पु०) दूसरे का दोष, पर दोष।
परजकर (सं० पु०) वह कर जो ज़मीन में बसने के कारण उस ज़मीन के मालिक को दिया जाता है।
परज़वट (सं० पु०) कर, शुल्क।
परजात (सं० पु०) अन्य से उत्पन्न, दूसरे से पैदा हुआ, वर्णसंकर, दोग़ला, दूसरी जाति का, दूसरे क़ौम का।
परत (सं० स्त्री०) पुट, तह, लड़, थाक, पपड़ा, फाँकी।
परतन (वि०) बड़े से बड़ा, सब से बड़ा। [मातहत।
परतन्त्र (वि०) पराधीन, परवश, दूसरे के वश,
परतल (सं० पु०) डेरा डण्डा, लद्दू घोड़ा की पीठ पर रखने का बोरा।
परतला (सं० पु०) डाब, बन्धनी, पट्टी, तलवार की पट्टी।
परता (सं० पु०) परेता, चरखी, भाव, निरख।
परती (सं० स्त्री०) पड़ी धरती, बिना बोयी धरती, बंजर, ऊसर भूमि।
परतीत (सं० स्त्री०) विश्वास, भरोसा, प्रतीति।
परत्र (वि०) दूसरी दुनिया में, परलोक में, और जगह।
परत्व (सं० पु०) भिन्नता, जुदाई, फ़ासला, शत्रुता, श्रेष्ठता, महत्त्व।
परदादा (सं० पु०) बाप के बाप का बाप, प्रपितामह।
परदादी (सं० स्त्री०) परदादा की स्त्री, प्रपितामही।
परदार (सं० स्त्री०) पराई स्त्री, दूसरे की स्त्री।
परदुःख (सं० पु०) पराया दुःख, दूसरे का दुःख दर्द।
परदेश (सं० पु०) विदेश, अन्य देश, पराया देश, ग़ैर मुल्क।
परदेशी (वि०) विदेशी, परदेश में रहने वाला।
परद्रोह (सं० पु०) परपीड़न, दूसरे की बुराई।
परधन (सं० पु०) दूसरे का धन।
परन (सं० स्त्री०) प्रतिज्ञा, नियम, हठ।
परनाना (क्रि० अ०) व्याह करना, शादी करना (सं०पु०) नाना का बाप।
परनानी (सं० स्त्री०) परनाना की स्त्री।
परन्तप (वि०) परतापी, श्रेष्ठ तपस्वी, विजयी, फ़तहयाब, बैरियों को दुःख देने वाला, जितेन्द्रिय।
परन्तु (अव्य०) अधिकन्तु, लेकिन, किन्तु।
परपराना (क्रि०अ०) परपराना, भंभनाना, जलना।
परपराहट (सं० स्त्री०) चरपराहट, झाल।
परपुष्ट (सं० पु०) कोकिल (वि०) जिसका पोषण किसी दूसरे ने किया हो।
परपूर (वि०) पूर्ण, भरपूर।
परपैठ (सं० पु०) खोई हुई हुण्डी को तीसरी नक़ल, जो पैठ के खोने पर लिखी जाती है।
परब (सं० पु०) उत्सव, अध्याय, पर्व।
परबस (वि०) पराधीन, परतन्त्र, परवश।
परब्रह्म (सं० पु०) परमात्मा।
परबा (सं० स्त्री०) प्रतिपदा, एकम।
परभुक्ता (वि०) दूसरे की भोगी हुई स्त्री।
परभृत (सं० पु०) कोकिल, कोइल (वि०) दूसरे से पाला हुआ। [सर्दार, पहिला, अगुवा।
परम (वि०) उत्कृष्ट, प्रधान, आद्य, ओंकार, अग्रगण्य,
परमगति (सं० स्त्री०) मोक्ष, मुक्ति, उत्कृष्टता, उत्तम दशा। [सम्मति।
परमत (सं० पु०) दूसरे की सलाह, भिन्न मत, दूसरे की
परमधाम (सं० पु०) वैकुण्ठ, परमपद, स्वर्ग।
परमपद (सं० पु०) मुक्ति पद, उत्तम पद।
परमपुरुष (सं० पु०) परमात्मा।
परमब्रह्म (सं० पु०) परमात्मा।
परमल (सं० पु०) ज्वार या गेहूँ का एक प्रकार का भुना हुआ दाना। [शोभा, कान्ति, छबि।
परमहंस (सं० पु०) संन्यासी विशेष, योगी (सं० स्त्री०)
परमाणु (सं० पु०) अति सूक्ष्म वस्तु, कन, कनिका, ज़र्रा, रेज़ा, पल, बहुत थोड़ा समय, विशेष काल, ख़ास एक वक़्त।
परमात्मा (सं० पु०) परब्रह्म, परमेश्वर, ईश्वर।
परमानन्द (सं० पु०) अत्यानन्द, बहुत ख़ुशी।
परमान्न (सं० पु०) पायस, खीर, पकवान।
परमायु (सं० पु०) जीवन काल, आयु भर।
परमार्थ (सं० पु०) उत्कृष्ट बुद्धि, यथार्थ धन, उत्तम पदार्थ, सत्य परोपकार, उत्तम कार्य, सब से अच्छा विषय या प्रयोजन, यथार्थ ज्ञान, पवित्र ज्ञान, धर्म, पुण्य, धर्मार्थ। [मान्, परमात्मा, ईश्वर।
परमेश्वर (सं० पु०) शिव, विष्णु, परब्रह्म, सर्व शक्ति-
परमेश्वरी (सं० स्त्री०) परमेश्वर की शक्ति, दुर्गा, पार्वती, लक्ष्मी।

परमेष्ठी (सं० पु०) ब्रह्मा, गुरु विशेष, शालग्राम विशेष।
परम्पर (सं० पु०) प्रपौत्रादि, उत्तरोत्तर, मृग विशेष।
परम्परा (सं० स्त्री०) संप्रदाय, परिपाटी, संतान, वंश, रीति, क्रम, अनुक्रम, पुराने समय की रीति, आनुपूर्वी, क्रमशः (क्रि० वि०) पहले से, अगले समय से।
परम्परागत (सं० स्त्री०) क्रमागत, वंशानुक्रम।
परला (वि०) दूसरी ओर का, उस तरफ़ का।
परलोक (सं० पु०) परकाल, उत्तर काल, स्वर्ग, मोक्ष, दूसरा लोक, वैकुण्ठ, मृत्यु, शत्रुजन, श्रेष्ठजन, अन्यजन।
परवल (सं० पु०) पलवल, परोरा।
परवश (वि०) अस्वाधीन, पराधीन, परतन्त्र।
परवा (सं० स्त्री०) प्रतिपदा, दोनों पक्ष की पहली तिथि।
परश (सं० पु०) रत्न विशेष, पारस मणि।
परशु (सं० पु०) अस्त्र विशेष, फरसा, कुल्हाड़ी, टाँगी।
परशुधर (सं० पु०) परशुराम, गणेश (वि०) परशु धारण करने वाला।
परशुराम (सं० पु०) रेणुका के गर्भ से उत्पन्न जमदग्नि के पुत्र, ये विष्णु के अवतार समझे जाते हैं, ये पिता के बड़े भक्त थे, पिता की आज्ञा से इन्होंने अपनी माता रेणुका का सिर काट डाला था, इक्कीस बार इन्होंने क्षत्रियों का संहार किया है।
परस (सं० पु०) छूत, स्पर्श।
परसत (वि०) छूते ही, स्पर्श करते ही।
परसना (क्रि० स०) स्पर्श करना, छूना।
परसिया (सं० स्त्री०) हँसिया, दात्र, दराँती।
परसून (सं० पु०) एक प्रकार का रोग जो स्त्रियों को प्रसव के बाद होता है, इसमें सिर में वेदना और ज्वर रहता है।
परसूती (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसने हाल में बच्चा जना हो, वह जिसको प्रसूत रोग हुआ हो।
परसैया (सं० पु०) परोसने वाला।
परसों (वि०) आगे या पीछे का तीसरा दिन।
परस्थौ (सं० पु०) रहना, वास करना, ठहरना।
परस्पर (वि०) देखादेखी, आपस में, अन्योन्य, एक दूसरे को, दोनों में।
परस्मैपद (सं० पु०) व्याकरण में धातुओं का एक चिह्न।
परहेलु (क्रि० वि०) तिरस्कार कर।
परा (सं० पु०) विमोक्ष, प्राधान्य, प्रतिलोम्य, धर्षण, अभिमुख्य, विक्रम, गति, वध, भङ्ग, अनादर, प्रत्यावृत्ति, द्योतक (सं० स्त्री०) ब्रह्मविद्या (उपसर्ग) उलटा, पीछे, विपरीत, प्रभुता, बड़ाई, विरोध, अहंकार, अनादर, तिरस्कार, बहुत अधिक बल, सामर्थ्य।
पराक्रम (सं० पु०) बल, साहस, सामर्थ्य, ज़ोर, ताक़त।
पराक्रम शून्य (वि०) शक्ति हीन, दुर्बल, निर्वीर्य।
पराक्रमी (वि०) बलवान्, बली, सामर्थ्यवान्, बलवंत, साहसी, शूरवीर, ज़ोरावर, ताकतवर।
पराग (सं० पु०) पुष्पधूलि, पुष्परज, उपराग, चन्दन, स्वच्छन्द गमन, पर्वत विशेष।
परागत (वि०) प्राप्त, विस्तृत, नष्ट, निरस्त।
पराक्रन्द (सं० पु०) शिव।
पराङ्कव (सं० पु०) समुद्र, महानद।
पराङ्मुख (वि०) विमुख, मुँहफिरा, रहित, भिन्न, लज्जित, अधोमुख, शरमिन्दा, बाग़ी।
पराचीन (वि०) प्राचीन, पुराना।
पराजय (सं० पु०) पराभव, तिरस्कार, अजय, जयरहित, हार, शिकस्त। [शिकस्त।
पराजित (वि०) हारा हुआ, पराजय प्राप्त, पराभूत,
पराजिता (सं० स्त्री०) विष्णुकान्ता लता।
पराजेता (सं० पु०) पराजयकर्ता, जीतने वाला, विजयी।
पराठा (सं० पु०) उलटा, एक प्रकार की रोटी जो कई एक परत में घी लगा कर बेल कर घी चुपड़ कर पकाई जाती है।
परात (सं० स्त्री०) थाल, बड़ी थाली, पराती।
पराती (सं० स्त्री०) थाली, परात, एक प्रकार का गाना जो प्रातःकाल गाया जाता है।
परात्पर (वि०) सर्वश्रेष्ठ, जिसके परे कोई न हो (सं० पु०) परमात्मा, विष्णु।
परात्मा (सं० पु०) परमात्मा।
परादन (सं० पु०) फ़ारस देश का घोड़ा।
पराधीन (सं० स्त्री०) परतन्त्र, परवश, अस्वाधीन।
पराधीनता (सं० स्त्री०) परतन्त्रता, दूसरे के वश में रहना।
परान (सं० पु०) प्राण। [दिखाना, चंपत होना।
पराना (क्रि० अ०) भाग जाना, पीठ देना, पीठ
परानी (सं० पु०) जीवधारी, प्राणी, जीव।
परान्न (सं० पु०) परभोजन, पराये का अन्न।

परापर (वि०) पहिला और पिछला, अच्छा और बुरा, शत्रुमित्र, उ माधम ।

पराभव (सं० पु०) तिरस्कार, विनाश, अनादर, पराजय, हार, मलामत, बेइज़्ज़ती, बरबादी । [खाया हुआ ।

पराभूत (वि०) पराजित, परास्त, हारा हुआ, शिकस्त

परामर्श (सं० पु०) युक्ति, विचार, मन्त्र,उपदेश, मन्त्रणा, सलाह, भेद, राय, दलील, ग़ौर करना ।

परामर्शक (सं० पु०) मन्त्री, सलाही, वज़ीर ।

परामर्शित (सं० पु०) विवेचित, उपदेशित । [क्षमा ।

परामर्ष (सं० पु०) क्रोध, गुस्सा, ग्रीष्म, तीव्र, सहन,

परामोध (सं० पु०) फुसलावा, भुलावा, झाँसा, पट्टी ।

परामृष्ट (वि०) पकड़ कर खींचा हुआ, पीड़ित, विचारा हुआ, निर्णीत । [लगा हुआ, अनुराग ।

परायण (सं० पु०) तत्पर, आशक्त, अभीष्ट, शक्त, लगन,

पराया (वि०) दूसरा, और का, दूसरे का, अन्य, ऊपरी, बाहरी, विदेशी ।

परायु (सं० पु०) ब्रह्मा ।

परार (वि०) पराया, दूसरे का ।

परारि (वि०) गया हुआ या आने वाला तीसरा वर्ष ।

परारु (सं० पु०) करेला ।

परार्थ (सं०पु०) पर के लिए, अन्य के निमित्त, अन्यार्थ ।

परार्द्ध (सं० पु०) ब्रह्मा की आधी आयु, आखिरी शुमार, संख्या का अन्त ।

परार्द्धि (सं० पु०) विष्णु ।

परार्घ्य (वि०) प्रधान, श्रेष्ठ, सर्वोत्तम ।

पराल (सं० स्त्री०) पलास, न्यार, घास ।

परालब्ध (सं० पु०) भाग्य, नसीब, प्रारब्ध ।

परावत (सं० पु०) फालसा ।

परावर्त (सं० पु०) पलटाव, अदल बदल, लेन देन ।

परावसु (सं० पु०) असुरों के पुरोहित का नाम, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

परावह (सं० पु०) सप्त प्रकार के वायुओं में से एक ।

परावेदी (सं० स्त्री०) भटकटैया, कटई ।

पराशर (सं० पु०) एक मुनि का नाम, ये महर्षि वशिष्ठ के पौत्र और शक्ति के पुत्र थे, इनकी माता का नाम अदृश्यन्ती था, इन्होंने पराशर संहिता नाम की एक स्मृति वा ग्रन्थ बनाया है ।

पराश्रय (वि०) पराधीन, परतन्त्र, परवश ।

पराश्रयन्ति (वि०) परतन्त्र ।

परासी (सं० स्त्री०) एक रागिनी का नाम ।

परासु (वि०) प्राण-हीन, गत प्राण ।

परास्त (वि०) पराजित, निस्तर, निकाला हुआ, हराया हुआ, हारा हुआ ।

पराह (सं० स्त्री०) भागाभागी, देश-त्याग, परौवल ।

पराहिं (क्रि०अ०) भागते हैं, भाग जाते हैं, चले जाते हैं ।

पराह्न (सं० पु०) दिन का पिछला भाग, तीसरा भाग, से-पहर ।

परि (उप०) सर्वतः, वर्जन, व्याधि, शेष, किञ्चित, निरसन, पूजा, भूषण, उपरम, शोक, अतिशय, त्याग, नियम, चारों ओर से, बहुत, सब तरह से, सम्पूर्ण रूप से, पहले, पास, आस पास, आपस में, बुरा ।

परिक (सं० स्त्री०) खोटी चाँदी ।

परिकर (सं० पु०) पर्यङ्क, पलंग, खाट, समारम्भ, वृन्द, कटिबन्ध, विवेक, नौकर, चाकर, सेवक, सहकारी, कमरबन्द, पटुका ।

परिकरमा (सं० स्त्री०) परिक्रमा ।

परिकर्म (सं० पु०) शरीर संस्कार मात्र ।

परिकर्मा (सं० पु०) सेवक, टहलुआ ।

परिकल्पन (सं० पु०) दग़ाबाज़ी, धोखाधड़ी । [क्रिया ।

परिकल्पना (सं० स्त्री०) उपाय, चिन्ता, चेष्टा, कर्म,

परिकीर्ण (वि०) व्याप्त, विस्तृत, समर्पित ।

परिकीर्तन (सं० पु०) प्रस्ताव, बड़ाई, सर्व प्रकार प्रशंसन, गल्प ।

परिकूट (सं० पु०) शहर के फाटक की खाईं ।

परिकम (सं० पु०) टहलना, फेरी देना, परिक्रमा ।

परिक्रमण (सं०पु०) टहलना, घूमना ।

परिक्रमा (सं० स्त्री०) प्रदक्षिणा, चारों तरफ घूमना ।

परिक्षत (वि०) नष्ट, भ्रष्ट ।

परिक्षव (सं० पु०) छींक ।

परिक्षा (सं० स्त्री०) कीचड़, परीक्षा, जाँच ।

परिक्षित (सं० पु०) एक राजा,परीक्षित ।

परिक्षीद्रा (वि०) निर्धन, कंगाल ।

परिखना (क्रि० स०) पहचानना, जाँचना ।

परिखा (सं० पु०) खंभ, खाईं, ख़न्दक, क़िला के चारों ओर का नाला, थाला, मेड़ ।

परिखाना (क्रि० स०) जाँचना, परखाना ।
परिख्यात (वि०) विख्यात, मशहूर, प्रसिद्ध ।
परिगणन (सं० पु०) गिनना, मापना ।
परिगणित (क्रि० वि०) गणना किया हुआ ।
परिगत (वि०) प्राप्त, विस्तृत, ज्ञात, चेष्टित, गत, वेष्टित ।
परिगभ (सं० पु०) अनुसंधान, परिवेष्टन, वेठन ।
परिग्रह (सं० पु०) सेना का पश्चात् भाग, पत्नी, भार्या, स्त्री, आदान, मूल, शाप, शपथ, कुटुम्ब, दास, नौकर, चाकर, परिजन, सूर्य-ग्रहण ।
परिग्राहक (सं० पु०) ग्राहक, स्वीकारक ।
परिघ (सं० पु०) लोहे का भल्ला, लोहे का दण्डा, लोहा मढ़ा हुआ डण्डा, गदा, गृह, घर, निष्कुम्भ आदि २७ योगों में से १६ वाँ, चटकनी, मोहल्ला, शहर का फाटक ।
परिघात (सं० पु०) हत्या, हनन, वह अस्त्र जिससे किसी की हत्या की जा सकती हो । [बादल का गरजना ।
परिघोष (सं० पु०) कटु वचन, गाली, मेघ शब्द,
परिचय (सं० पु०) जान पहचान, मेल, मित्रता ।
परिचर (सं० पु०) लड़ाई के समय शत्रु के प्रहार से रथ को बचाने वाला, सेवक, सेनानी, पूजन, सिपहसालार, हमराही । [तावेदारी ।
परिचर्या (सं० स्त्री०) सेवा, पूजा, उपासना, आधीनता,
परिचायक (वि०) परिचय कराने वाला, बोधक, ज्ञापक ।
परिचारक (सं० पु०) सेवक, नौकर, चाकर, दास, टहलुआ ।
परिचारिका (सं०स्त्री०) दासी,सेविका,लौंडी, मज़दूरिन ।
परिचारे (क्रि० स०) ललकारे, प्रचारे, बुलाये ।
परिचित (वि०) चिन्हार, जाना हुआ, पहिचाना हुआ ।
परिच्छद (सं० पु०) वेश, वस्त्र, भूषण, गहना, हाथी, घोड़ा वग़ैरह का सामान । [सीमाबद्ध ।
परिच्छन्न (वि०) सब ओर से ढँका हुआ, परिमित,
परिच्छिन्न (वि०) परिच्छेद विशिष्ट, कटा हुआ ।
परिच्छेद (सं० पु०) ग्रन्थ विछेद, सीमा, काण्ड, विभाग, अध्याय, टुकड़ा, व्यवधान ।
परिछाहीं (सं० स्त्री०) परछाईं ।
परिजंक (सं० पु०) पर्यंक ।
परिजटन (सं० पु०) पर्यटन ।
परिजन (सं० पु०) परिवार, कुटुम्ब ।
परिज्ञान (सं०पु०) निश्चय, बोध ।
परिणत (वि०) परिपक्व, अवस्थान्तर प्राप्त (सं० पु०) राजधानी, भक्त, नम्र, गज, हाथी । [प्राप्ति ।
परिणय (सं० पु०) विवाह, ब्याह, निकाह, नम्रता
परिणाम (सं० पु०) विकार, चरम, शेष, उत्तर काल, फल ।
परिणामदर्शी (वि०) अग्रसोची, दूरंदेश, बुद्धिमान ।
परिणायक (सं० पु०) पासा खेलने वाला, पति, वर । [संबंध ।
परिणाह (सं० पु०) विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, निबन्धन,
परिणीता (सं० स्त्री०) विवाहिता, ब्याही हुई, पाणिगृहीता ।
परिणेता (सं० पु०) पति, स्वामी, कर्त्ता ।
परिणेया (वि०) विवाहने योग्य ।
परितः (अव्य०) सर्वतः, चारों तरफ़, चारों ओर ।
परिताप (सं० पु०) दुःख, शोक, भय, कम्प, ज़्यादह गरम, अधिक उष्ण ।
परितुष्ट (वि०) सन्तुष्ट, आनन्दित, हर्षित ।
परितुष्टि (सं० स्त्री०) सन्तोष, अह्लाद, ख़ुशी ।
परितृप्त (वि०) सन्तुष्ट ।
परितृप्ति (सं० स्त्री०) आसूदा, सन्तोष । [न्नता ।
परितोष (सं० पु०) सन्तोष, तृप्ति, हर्ष, आनन्द, प्रस-
परितोषक (सं० पु०) सन्तुष्टि करने वाला, प्रसन्न करने वाला ।
परितोषण (सं० पु०) परितुष्टि, सन्तोष । [छोड़ा गया ।
परित्यक्त (सं० पु०) छोड़ा गया, सम्यक् त्यक्त, जल्द
परित्यक्ता (सं० पु०)परित्याग करने वाला,त्यागने वाला ।
परित्याग (सं० पु०) सम्यक् त्याग, छोड़ना, तर्जना ।
परित्रस्त (वि०) भीत, डरा हुआ । [निष्कृति ।
परित्राण (सं० पु०) रक्षा, बचाव, उद्धार, छुड़ाना,
परित्रात (वि०) रक्षित, रक्षा किया हुआ, पालित ।
परित्राता (सं०पु०) रक्षक,पालक । [परिवर्तन, विनिमय ।
परिदान (सं० पु०) लेन देन, अदलौवल बदलौवल,
परिदेवक (सं० पु०) विलाप कर्ता, रोनेवाला, जुआरी, जीतने वाला, व्यवहारी, स्तुति कर्ता, शोभायमान ।
परिदेवन (सं० पु०) अनुशोचन, विलाप, पछतावा, रोदन, क्रीड़ा, जिगीषा, द्यूतकर्म, जूआ खेलना, स्तुति ।

परिधान (सं० पु०) परिधेय वस्त्र, वस्त्रादि धारण, नाभी से नीचे पहनने का वस्त्र।
परिधि (सं० स्त्री०) घेरा, मण्डल, सूर्य या चन्द्र का मण्डल, परिवेश, दायरा, गूलर के पेड़ की टहनी।
परिधेय (वि०) पहनने योग्य।
परिध्वंश (सं० पु०) नाश, बिगाड़, हानि, क्षति।
परिपक्व (वि०) सुपक्व, पटु, ख़ूब पका हुआ, चतुर, बुद्धिमान्, होशियार।
परिपण (सं० पु०) मूल धन, पूँजी।
परिपन्थी (सं० पु०) शत्रु, दुश्मन, बैरी, ठग, चोर।
परिपाक (सं० पु०) नैपुण्य, फल, उत्तम पाक, होशियारी, हाज़मा। [शैली, प्रणाली, दस्तूर, क़ायदा।
परिपाटी (सं० स्त्री०) अनुक्रम, रीति, परम्परा की रीति,
परिपालक (सं० पु०) रक्षा करने वाला व्यक्ति, भरण पोषण करने वाला मनुष्य।
परिपालन (सं० पु०) पोषण, भरण, रक्षण।
परिपालित (वि०) रक्षित, आश्रित।
परिपिष्टक (सं०पु०) सीसक, सीसा, धातु विशेष।
परिपूत (वि०) पवित्र, बिना छिलके का धान, शुद्ध।
परिपूरन (वि०) देखो "परिपूर्ण"।
परिपूर्ण (वि०) पूरा, पूर्ण, भरा हुआ, सम्पूर्ण, समाप्त।
परिव्राजक (सं० पु०) संन्यासी।
परिभव (सं० पु०) अनादर, पराजय, तिरस्कार।
परिभाव (सं०पु०) देखो "परिभव"।
परिभाषण (सं० पु०) निन्दापूर्वक कथन।
परिभाषा (सं० स्त्री०) सूत्र विशेष, लक्षण, व्याख्या, संज्ञा शास्त्र सांकेतिक नियम।
परिभूत (वि०) अनादृत, पराजित, हराया हुआ।
परिभ्रमण (सं० पु०) घूमना, पर्यटन, फिरना, मटर गश्ती करना, भटकना।
परिभ्रष्ट (वि०) नष्ट, पतित, बरबाद।
परिमण्डल (सं० पु०) चक्कर, घेरा, दायरा, परिधि, एक प्रकार का विषैला मच्छर।
परिमल (सं० पु०) मलने से उत्पन्न मनोहर गंध, कुंकुमादि गंध, सुगंध, सुवास, सौरभ, पंडितों का समुदाय।
परिमाण (सं० पु०) प्रमाण, समता, परिसर, माप, नाप, तौल, अरज अंदाज़ा, पैमाना।
परिमान (सं० पु०) देखो "परिमाण"।
परिमार्जित (वि०) शुद्ध, संशोधित, साफ़।
परिमित (वि०) युक्त, परिछिन्न, नियमित, नापा हुआ, मापा हुआ।
परिमितव्ययी (सं०पु०) समझ बूझ कर ख़र्च करने वाला।
परिमिति (सं० स्त्री०) परिमाण, हद्द, किनारा, अवधि।
परिरम्भ (सं० पु०) आलिङ्गन, भेंटना, गले से गला या छाती से छाती लगा कर मिलना।
परिवर्जन (सं० पु०) परिहार, त्याग, मारना।
परिवर्त (सं० पु०) विनिमय, युगान्तकाल, ग्रन्थ विच्छेद, बदल, किसी काल का अन्त।
परिवर्तन (सं० पु०) हेराफेरी, लेनदेन, बदल, पलटना।
परिवा (सं० पु०) दोनों पक्ष की पहली तिथि। [दुर्वाद।
परिवाद (सं० पु०) अपवाद, बदनामी, गाली, निन्दा,
परिवादक (सं० पु०) निन्दक, द्वेषी।
परिवार (सं० पु०) परिजन, घराना, कुटुम्ब।
परिवारण (सं० पु०) माँगना, तक़ाज़ा करना, रोकना, बाधा डालना।
परिवाह (सं०पु०) जलोच्छ्वास, जल का उछलना, बहाव, मेघ पथ, चहबच्चा, तरंग, लहर। [परिवेष्टित।
परिवृत (सं० पु०) रक्षित, आच्छादित, घिरा हुआ,
परिवेषण (सं० पु०) परोसना, भोजन परोसना।
परिवेष्टन (सं० पु०) आच्छादन, चारों ओर से घेरना।
परिव्राजक (सं० पु०) संन्यासी, यती, योगी, गुसाँई।
परिशिष्ट (सं० पु०) पुस्तक या लेख का वह अंश जिसमें ऐसी बातें लिखी गई हों जो यथास्थान देने से छूट गई हों और जिनके देने से पुस्तक की पूर्ति होती हो (वि०) बचा हुआ, छूटा, अवशिष्ट।
परिशुद्ध (वि०) पवित्र, शुद्ध, उज्ज्वल, परिशोधित।
परिशेष (सं० पु०) अन्त, सीमा, समाप्ति, हद्द।
परिशोध (वि०) ऋण चुकाना, क़र्ज़ अदा करना, चुकता, ऋण-शुद्धि। [चेष्टा।
परिश्रम (सं० पु०) श्रम, थकावट, मिहनत, उद्योग,
परिश्रमी (वि०) मेहनती, श्रमी, उद्योगी।
परिश्रान्त (वि०) थका हुआ, श्रमित, क्लान्त।
परिश्रेय (सं० पु०) आश्रय, अवलम्ब।
परिषद् (सं० पु०) सभा, मजलिस, समूह, समाज।
परिष्कार (सं० पु०) संस्कार, सफ़ाई, शुद्धता।
परिष्कृत (वि०) अलंकृत, भूषित, शुद्ध, स्वच्छ।

परिष्वङ्ग (सं० पु०) आलिङ्गन, भेंटना।
परिसंख्या (सं०स्त्री०) गणना, सीमा, काव्यालंकार विशेष।
परिसर (सं० पु०) नदी, नगर, पर्वतादि निकट भूमि, मृत्यु, विधि, घर, चौड़ाई, निकास, कगर।
परिहर (क्रि०स०) छोड़ कर, त्याग कर। [अलग करना।
परिहरना (क्रि० स०) छोड़ना, त्यागना, दूर करना,
परिहरहीं (क्रि० स०) छोड़ते हैं, त्यागते हैं।
परिहार (सं० पु०) अवज्ञा, अपमान, मोचन, त्याग, हटना, लेना, छीनना, छुड़ाना, ले लेना। [मसख़री।
परिहास (सं० पु०) हँसी, ठट्ठा, कौतुक, खेल, कुतूहल,
परिहास्य (वि०) हँसने योग्य, मसख़री के लायक़।
परिहित (वि०) आच्छादित, ढका हुआ, आच्छन्न, गुप्त, घिरा हुआ, पोशीदा।
परी (सं० स्त्री०) देवाङ्गना, अप्सरा, एक प्रकार की कलछी, जिससे बर्तन में से तेल निकालते हैं।
परीक्षक (सं० पु०) परीक्षा करने वाला, परखने वाला, इम्तहान लेने वाला।
परीक्षा (सं० स्त्री०) जाँच, परख, इम्तिहान।
परीक्षित (सं० पु०) उत्तरा के गर्भ से उत्पन्न अभिमन्यु का पुत्र, जब इनके राज्य में कलियुग ने प्रवेश किया तो इन्होंने उसको जुआ, मद्य, हिंसा और सुवर्ण में वास करने की आज्ञा दी, एक रोज़ ये अहेर खेलने गये इनको प्यास बहुत ज़ोर से लगी, ये एक मुनि के आश्रम में पहुँचे पर मुनि ध्यान में थे इनकी बातों का उत्तर नहीं दिया, इन्होंने क्रुद्ध होकर मुनि के गले में एक मरा सर्प जो वहाँ पड़ा था, डाल दिया, जब मुनि के पुत्र ने जिसका नाम शृङ्गी था, सुना तो राजा को शाप दिया कि जिसने मेरे पिता के गले में सर्प डाला है उसको आज से सातवें दिन तक्षक काटेगा, इसके ठीक सातवें दिन, राजा को तक्षक ने काटा और राजा मर गये।
परु (सं० पु०) पोर, गाँठ, ग्रन्थि।
परुष (सं० पु०) निठुर वाक्य, कठोर बचन (वि०) चित्र वर्ण, कठोर, कड़ा, टेढ़ा, व्यङ्ग, रुक्ष, तीक्ष्ण, कुवचन
परुषता (सं० स्त्री०) निष्ठुरता का कार्य।
परुषभाषी (सं० पु०) कटु भाषी।
परुषोक्ति (सं० स्त्री०) कटु वाक्य। [उस पार, अन्त में।
परे (अव्य०) परलोक में, पीछे, आगे, दूर, अलग, उधर,
परेखा (सं० पु०) पछतावा, पश्चात्ताप।
परेत (सं० पु०) भूत, पिशाच, शैतान (वि०) मृत, मुर्दा, मृतक, मरा हुआ।
परेतना (क्रि० अ०) ओटना, फेंटी बनाना।
परेतराज (सं० पु०) यम, मलकुलमौत।
परेता (सं० पु०) अरेरना, चर्खी, रहट, जुलाहों का एक औज़ार जिस पर वे सूत लपेटते हैं।
परेवा (सं० पु०) कबूतर, कपोत, प्रतिपदा।
परेश (सं० पु०) परमेश्वर।
परेशान (फ़ा० वि०) घबड़ाया हुआ, उद्विग्न, व्याकुल।
परेह (सं० पु०) पलेव, कढ़ी, जूँस, शूर्वा, रसा।
परोक्ष (सं० पु०) भूतकाल का एक भेद, अप्रत्यक्ष, तपस्वी, गायब।
परोपकार (सं० पु०) पराये का हित, दूसरे का भला।
परोपकारी (वि०) पराया हित चाहने वाला, दूसरे की भलाई करने वाला।
परोपदेश (सं० पु०) दूसरे के लिये सम्मति।
परोस (सं० पु०) समीपता, गोंयड़ा, नज़दीक, पड़ोस।
परोसना (क्रि०स०) भोजन की वस्तु थाली या पत्तल आदि में लगाना, भोजन चुनना, पत्तल लगाना, परसना। [या पत्तल।
परोसा (सं० पु०) खाद्य वस्तुओं से सजाया हुआ थाली
परोसी (वि०) पड़ोसी, अपने घर के बगल में रहने वाला।
परोसैया (वि०) परोसने वाला।
परोहन (सं० पु०) वाहन, रथ, बहल, गाड़ी, सवारी।
परोहा (सं० पु०) चरस, मोट, पुर।
पर्करी (सं० स्त्री०) प्लक्ष वृक्ष, पाकड़ का दरख़्त।
पर्चा (फ़ा० सं० पु०) काग़ज़ का टुकड़ा, पुरज़ा, ख़त, परीक्षा में आने वाला प्रश्न-पत्र, परिचय, जानकारी।
पर्चाना (क्रि० स०) भेंट कराना, मिलाना।
पर्चूनिया (सं० पु०) देखो "परचूनिया"।
पर्चूनी (सं० स्त्री०) देखो "परचूनी"।
पर्छती (सं० स्त्री०) छोटी छपरिया।
पर्छा (सं०पु०) वह कपड़ा, जिससे तेली कोल्हू के बैल की आँखों में अँधोटी बाँधते हैं, बड़ी कलाई, बड़ा देग, मिट्टी का मझोला बर्तन, भीड़ का छँटाव।
पर्छाँ (सं० स्त्री०) प्रतिबिम्ब, प्रतिरूप।
पर्छाईं (सं० स्त्री०) प्रतिबिम्ब, प्रतिछाया।

पर्ज (सं० स्त्री०) ढोल का एक बोल ।
पर्जन्य (सं० पु०) इन्द्र, मेघ, मेघ-शब्द ।
पर्ण (सं० पु०) पत्र, पत्त, पता, पंख, पर, पान, पलाश।
पर्णकार (सं० पु०) तम्बोली, बरई, बारी ।
पर्णकुटी (सं० स्त्री०) पत्तों आदि से बनी झोपड़ी।
पर्णखण्ड (सं० पु०) वनस्पति, जिसमें फूल न लगते हों।
पर्णचोरक (सं० पु०) गन्ध द्रव्य विशेष । [रहे, बकरी।
पर्णभोजन (सं० पु०) वह जीव जो केवल पत्ते खाकर
पर्णमणि (सं० स्त्री०) पन्ना, अस्त्र विशेष ।
पर्णमाचल (सं० पु०) कमरख का वृक्ष ।
पर्णमृग (सं० पु०) वृक्षों पर रहने वाले बानर आदि जीव-जन्तु । [मारा गया।
पर्णय (सं० पु०) एक असुर का नाम, जो इन्द्र द्वारा
पर्णराह (सं० पु०) वसन्त ऋतु ।
पर्णलता (सं० स्त्री०) पान की बेल।
पर्णवल्क (सं० पु०) ऋषि विशेष ।
पर्णशवर (सं० पु०) देश विशेष ।
पर्णास (सं० पु०) तुलसी ।
पर्णिक (सं० पु०) पत्ते बेचने वाला ।
पर्णिका (सं० स्त्री०) मानकन्द, अग्नि मथने की अरणी ।
पर्णिशाला (सं० स्त्री०) पत्तों की बनी कुटी, झोपड़ी ।
पर्णी (सं० स्त्री०) पलाश वृक्ष, छिउल, ढाक ।
पर्दा (सं० पु०) आड़, ओट, परदा ।
पर्पट (सं० पु०) दवन पापड़ा, पित्तपापड़ा ।
पर्परा (सं० स्त्री०) पापड़, पापर ।
पर्परी (सं० स्त्री०) पद्मावती, सुगंध द्रव्य, मुलतानी मिट्टी।
पर्यङ्क (सं०पु०) पलंग, खाट, चारपाई, योग का एक आसन।
पर्यटन (सं०पु०) भ्रमण, घूमना, सैर करना, सफ़र करना ।
पर्यनुयोग (सं० पु०) जिज्ञासा, प्रश्न, सवाल ।
पर्यन्त (सं० पु०) अन्त, शोभा (वि०) चर्म, हद, आख़िर का (अव्य०) तक, तलक । [णाम।
पर्यवसान (सं० पु०) समाप्ति, राग, क्रोध, अन्त, परि-
पर्याप्त (सं० पु०) पूर्ण, पूरा, यथेष्ट, काफ़ी।
पर्याय (सं० पु०) अनुक्रम, प्रकार, अवसर, निर्माण, बनने का काम, द्रव्य का धर्म, तरकीब, क़ायदा, ओसरी, बारी, डोल, सम्पर्क ।
पर्यायवाचक (सं० पु०) एकार्थवाची, एकार्थ बोधक ।
पर्यालोचना (सं०स्त्री०) विचार करना, गौर करना, इहतियात करना, चौकसी करना, सब प्रकार से देखना, जाँच-पड़ताल । [व्याकुल ।
पर्युत्सुक (वि०) शोक-विह्वल, उद्विग्न, चिन्तित,
पर्युषित (वि०) बासी, पिछले दिन की बनी हुई चीज़ें ।
पर्ला (वि०) उस पार का, परले सिरे का ।
पर्व (सं० पु०) त्योहार, उत्सव, अध्याय, परिच्छेद, वह स्थान जहाँ दो अङ्ग जुड़े हों, संधिस्थान ।
पर्वणी (सं० स्त्री०) त्योहार, उत्सव, तिहवार ।
पर्वत (सं० पु०) गिरि, पहाड़, मुनि विशेष, मत्स्य भेद, वृक्ष विशेष, शाक विशेष ।
पर्वतज (सं०पु०) पर्वत से उत्पन्न ।
पर्वतनन्दिनी (सं० स्त्री०) पार्वती ।
पर्वतराज (सं० पु०) हिमालय पर्वत ।
पर्वतारी (सं० पु०) इन्द्र । [पहाड़ी ।
पर्वतिया (सं० स्त्री०) लौकी, लौआ (वि०) पर्वतीय,
पर्वतीय (वि०) पहाड़ी, पहाड़ का ।
पर्वाल (सं० पु०) काजल वाली ।
पल (सं०स्त्री०) घड़ी का साठवाँ भाग, निमेष, क्षण, तृण, कर्ष चतुष्टय परिमाण, चार तोला ।
पलक (सं० पु०) पल, पपनी, निमेष ।
पलंग (सं० पु०) खाट, चारपाई, शय्या ।
पलंगड़ी (सं० स्त्री०) छोटा पलंग, खटोला ।
पलंजी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की घास । [फौज़ ।
पलटन (सं० स्त्री०) हज़ार सिपाहियों का थोक, सेना,
पलटना (क्रि० अ०) फिरना, लौटना, बहुरना । [परिवर्तन ।
पलटा (सं० पु०) बदला, प्रतिफल, पलटने की क्रिया या भाव,
पलटाना (क्रि० स०) फिराना, फेरना, बदलाना, लौटाना ।
पलटाव (सं० पु०) विरोध, लौटाव, फिराव ।
पलड़ा (सं० पु०) पल्ला, तखड़ी, तुला ।
पलथा (सं० पु०) लोट, पोट ।
पलथी (सं० स्त्री०) बैठने की चाल, दोनों पैरों को मोड़ कर एक दूसरे पर चढ़ा कर बैठने की क्रिया।
पलना (क्रि० अ०) प्रतिपालित होना, पनपना, बढ़ना ।
पलल (सं० पु०) मांस, कीचड़, तिल-चूर्ण, तिल का फूल, शव, लाश, राक्षस । [विशेष ।
पलवल (सं० पु०) पटोल, परवल, परोरा, तरकारी
पलवाना (क्रि० स०) पालने की क्रिया दूसरे से कराना, रक्षा कराना, पोसवाना ।

पलवार (सं० पु०) एक प्रकार की बड़ी नाव, जिस पर माल-असबाब लाद कर भेजते हैं, पटैला।
पलवारी (सं० पु०) खेने वाला, खेवक, माँझी।
पला (सं० पु०) बड़ा चमचा, कलछुल, दर्वी, डोई, तेल आदि निकालने का बर्तन।
पलाण्डु (सं० पु०) प्याज, शलगम, कन्द।
पलाना (क्रि० अ०) भागना, छाना, छाजना।
पलानी (सं० स्त्री०) छावनी, पलाव, छप्पर।
पलाना (क्रि० स०) ज़ीन बाँधना।
पलायक (सं० पु०) भगोड़ा।
पलायन (सं० पु०) भागाभाग, भगेलू, भग्गन।
पलायमान (सं० पु०) भगोड़, भग्गू।
पलायित (वि०) भगोड़ा, भगा हुआ, चम्पत।
पलाव (सं० पु०) पलानी, छावनी, छप्पर।
पलाश (सं० पु०) एक प्रकार का वृक्ष, किंशुक का पेड़, टेसू का दरख़्त, सब्ज़ रंग, हरा रंग।
पलित (वि०) केशपाक, केश शुक्लता-जनक रोग, शैलज, ताप, कर्दम, वृद्ध, बुढ़ापा।
पली (सं० स्त्री०) चमची, कर्छी, डब्बू, दर्वी जिससे तेल आदि निकाला जाता है। [गंदला, मैला।
पलीत (सं० पु०) भूत, प्रेत, पिशाच, भूतयोनि (वि०)
पलीता (फ़ा० सं० पु०) वह बत्ती जो तोप आदि के रंजक में आग धराने के लिये होती है, बत्ती।
पलुवा (वि०) पाला हुआ, पोसा।
पलेथन (सं० पु०) सूखा आटा, जो रोटी पर बेलने के समय लगाया जाता है।
मुहा०—पलेथन निकालना = बहुत मारना, बहुत पीटना।
पलेव (सं० पु०) शोरवा, कढ़ी, जूस, हलकी सिंचाई।
पलोटत (क्रि० स०) धीरे से पाँव दाबता है, चरण-सेवा करता है। [करना।
पलोटना (क्रि० स०) धीरे धीरे पाँव दबाना, सेवा
पलौठा (वि०) पहिलौठा, ज्येष्ठ, प्रथम पुत्र। [गोला।
पल्ल (सं० पु०) धान्य-रक्षण-स्थान, धान रखने का स्थान,
पल्लव (सं० पु०) पत्र, शाखा, अङ्कुर, विस्तार, श्टङ्गार, वन, बलय, चामल्य।
पल्ला (क्रि०वि०) अन्तर, दूरी, टप्पा (सं० पु०) कपड़े का छोर, अंचल, छोर, किनारा, तीन मन का बोझ, चद्दर वा गोन जिसमें अन्न बाँध कर ले जाते हैं।
पल्लादार (सं० पु०) मज़दूर, बोझा ढोने वाला, मोटिया।
पल्ली (सं० स्त्री०) छिपकिली, छोटा गाँव, गवँई, कुटी, झोपड़ी, शतरंजी, जाजिम।
पल्लू (सं० पु०) कपड़े का खूँट, आँचल, अंचल, छोर।
पल्लूदार (सं० पु०) वह कपड़ा जिस पर ज़री का काम किया गया हो, जिस कपड़े का पल्ला सुनहरा या रुपहला हो।
पल्वल (सं० पु०) क्षुद्र जलाशय, पोखरा, तलैया, छोटा तलाव। [की तिपाई।
पल्हिण्डा (सं० पु०) पनहंडा, पानी का घड़ा रखने
पव (सं० पु०) गोबर, वायु, बरसाना।
पवई (सं० स्त्री०) पक्षी विशेष।
पवन (सं० पु०) वात, वायु, हवा।
पवनकुमार (सं० पु०) हनुमान।
पवनतनय (सं० पु०) हनुमान।
पवनरेखा (सं० स्त्री०) उग्रसेन की स्त्री, कंस की माता।
पवनसखा (सं० पु०) अग्नि, आग।
पवनसुत (सं० पु०) हनुमान।
पवनायन (सं० पु०) झरोखा, खिड़की, गौखा, मोखा।
पवनावर्त्ती (सं० स्त्री०) महर्षि कश्यप की एक स्त्री का नाम।
पवनाश (सं० पु०) वायु भक्षक, वायु का आहार करने वाला, सर्प, साँप।
पवमान (सं० पु०) पवन, चन्द्रमा का एक नाम।
पवर्ग (सं० पु०) वर्ण माला का पाँचवाँ वर्ग।
पवाई (सं० स्त्री०) घोड़े के पैर की साँकर, एक जूता, एक पैला।
पवाज (सं० पु०) नीच लोग, गँवार, ग्रामीण।
पवाना (क्रि० स०) खिलाना।
पवारि (क्रि० स०) डार कर, फेंक कर, उछाल कर।
पवाँर (सं० पु०) क्षत्रियों की एक जाति।
पवाँरना (क्रि० स०) फेंकना, डालना, भेजना।
पवि (सं० पु०) वज्र, इन्द्र का शस्त्र, बिजली, वाक्य, थूहर, सेंहुड़।
पवित (वि०) पवित्र, पाक (सं० पु०) सूत्र, सूत। [रहित।
पवित्र (वि०) पुनीत, शुद्ध, स्वच्छ, निष्कलंक, पाप-
पवित्रता (सं० स्त्री०) शुद्धता, निर्मलता, सफ़ाई।
पवित्री (सं० स्त्री०) कुश का बना हुआ एक प्रकार का छल्ला, जो कर्मकांड के समय अनामिका में पहिना जाता है,

सोना चाँदी और ताँबा इन तीनों धातुओं की बनी अँगूठी जिसको हिन्दू लोग। पूजा करते समय पहनते हैं।

पविपात (सं० पु०) वज्रपात, वज्र गिरना।

पशम (फा० सं० पु०) ऊन, पुरुष या स्त्री की मूत्रेंद्रिय पर के बाल। [या चादर।

पशमीना (फा० सं० पु०) पशम का बना हुआ कपड़ा

पशु (सं०पु०) चतुष्पद, चौपाया, जन्तु, जीव, गाय, भैंस, घोड़ा आदि हैवान, देवता।

पशुपति (सं० पु०) शिव, महादेव।

पशुपाल (सं० पु०) ग्वाला, अहीर।

पश्चात् (अव्य०) शेष, पृष्ठ, आखिर में, पीछे से, इसके पीछे, पश्चिम दिशा की ओर।

पश्चात्ताप (सं० पु०) पछतावा, अनुताप।

पश्चिम (सं० पु०) प्रतीची दिक्, पश्चिम दिशा, पछाँह।

पश्यतोहर (सं० पु०) चोर विशेष, जो आँखों के सामने से चीज़ चुरा ले, चोर, गँठकटा।

पषान (सं० पु०) पाषाण, पत्थर, शिला। [होना।

पसरना (क्रि० अ०) फैलना, पसारित होना, विस्तृत

पसराव (सं० पु०) फैलाव।

पसली (सं० स्त्री०) पाँजर, पंजर।

पसा (सं० पु०) मुट्ठी भर, दो मुट्ठी भर, अंजली।

पसाई (सं० स्त्री०) घास विशेष जो तालों में होती है।

पसाउ (सं०पु०) प्रसाद, प्रसन्नता।

पसाना (क्रि० स०) काछना, माँड़ निकालना, रींधे हुए चावलों में से पानी निकालना।

पसारना (क्रि० स०) फैलाना, बिछाना।

पसारा (सं० पु०) फैलाव, विस्तार।

पसारी (सं० पु०) पंसारी, बनिया, गंधी।

पसीजना (क्रि० अ०) स्वेद निकलना, पिघलना, नर्म होना, कोमल चित्त होना।

पसीना (सं० पु०) पसेव, स्वेद, प्रस्वेद।

पसीव (सं० पु०) देखो "पसेव"।

पसूज (सं० स्त्री०) तुर्पन, सीवन। [डालना।

पसूजना (क्रि० स०) तुर्पना, तागना, टाँकना, डोरा

पसेव (सं० पु०) पसीना, प्रसन्नता, घाम।

पस्ताना (क्रि० अ०) पछताना, पश्चात्ताप करना।

पह (सं० स्त्री०) भोर, तड़का, पोह, भिनसार, सवेरा।

मुहा०—पह फटना = सूर्योदय होना, सवेरा होना।

पहचान (सं० स्त्री०) परिचय, जानकारी, चिन्हारी, ज्ञान, लक्षण, चिनहानी, चिह्न।

पहचानना (क्रि० स०) जानना, चीन्हना, लक्षण करना।

पहनना (क्रि०स०) शरीर पर वस्त्र धारण करना, पहिरना।

पहनाव (सं० पु०) पहिराव, पोशाक।

पहर (सं० पु०) दिन का चौथा भाग, दिन-रात का आठवाँ भाग, तीन घंटा, आठ घड़ी।

पहरा (सं० पु०) चौकी, गश्त, फेरा।

पहराना (क्रि० स०) पहिराना, ओढ़ना।

पहरिया (सं० पु०) चौकीदार, चौकी देने वाला, रक्षा करने वाला, रखवाली करने वाला।

पहरुआ (सं० पु०) देखो "पहरिया"।

पहरू (सं० पु०) देखो "पहरिया"। [आदि।

पहल (सं० पु०) रूई का फाहा, प्रारम्भ, आरम्भ, शुरू,

पहला (वि०) प्रथम, आदि, आरम्भ का।

पहाड़ (सं० पु०) पर्वत, शैल, गिरि। [नक़शा।

पहाड़ा (सं० पु०) जोड़ती, संकलन, गुणन, गुना का

पहाड़िया (वि०) पर्वती, पहाड़ का, पहाड़ का रहने वाला।

पहाड़ी (सं० स्त्री०) छोटा पर्वत (वि०) पहाड़िया।

पहिचान (सं० स्त्री०) जान पहचान, चिन्हार।

पहिनना (क्रि० स०) पहिरना, ओढ़ना।

पहिया (सं० पु०) चका, चक्र, चाक, फर्की।

पहिरना (क्रि० स०) धारण करना, पहनना।

पहिरावन (सं० स्त्री०) ओढ़ाव, पहिराव। [जाता है।

पहिरावनी (सं० स्त्री०) वस्त्रादि जो विवाहादि में दिया

पहिला (वि०) प्रथम, अगिला, आगे का।

पहिले (अव्य०) आगे, आदि, प्रथम।

पहिलौंठा (वि०) पहिला, जेठा, ज्येष्ठ।

पहुँच (सं० स्त्री०) आना, आगमन, शक्ति, सयानपन, अच्छी समझ, पैठ, पैसार, प्रदेश, दख़ल, गुज़र, रसीद।

पहुँचना (क्रि०अ०) आ जाना, दाखिल होना, उतरना, आ रहना, जाना, फैलना, चलना, बढ़ जाना, पास जाना।

पहुँचा (सं० पु०) कलाई, मणिबंध।

पहुँचाना (क्रि० स०) पूगाना, भेजना। [एक गहना।

पहुँची (सं० स्त्री०) कङ्कण, कंगना, पहुँचे में पहिनने का

पहुँड़ना (क्रि० अ०) लेटना, सोना, आराम करना, शयन करना।

पहुँड़ाना (क्रि० स०) सुलाना, लेटाना, शयन कराना।

पहुनई (सं० स्त्री०) अतिथि सेवा, पालन, आदर, मान, मेहमानी।

पहुप (सं० पु०) पुष्प, फूल, सुमन। [पूरी की जाती है।

पहेना (सं० पु०) एक रस्म जो बरात के बिदाई के दिन

पहेली (सं० स्त्री०) दृष्टकूट, गूढ़ प्रश्न, श्लेष, बुझौवल।

पन्हेड़ा (सं० पु०) पानी के घड़े रखने का स्थान।

पन्हेड़ी (सं० स्त्री०) छोटा पन्हेड़ा।

पाँक (सं० पु०) कीचड़, दलदल, काँदो।

पाँख (सं० पु०) पंखा, पर।

पाँगल (सं० पु०) ऊँट।

पाँगा (सं० पु०) सामुद्री लवण।

पाँच (वि०) दो और तीन, संख्या विशेष।

मुहा०—पाँच सात=उलझाव, घबड़ाहट, झंझट।

पाँचक (सं० पु०) धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र जिसमें अनेक कार्य वर्जित हैं।

पाँचजन्य (सं० पु०) श्रीकृष्ण का शङ्ख।

पाँचभौतिक (सं० पु०) पाँच तत्वों से बना हुआ शरीर।

पाँचर (सं० स्त्री०) लकड़ी के छोटे टुकड़े।

पाँचवाँ (वि०) पञ्चम, चार के बाद की संख्या का स्थान।

पाँचाल (सं० पु०) भारत के पश्चिमोत्तर का प्रान्त विशेष।

पाँचाली (सं० स्त्री०) द्रौपदी।

पाँजर (सं० पु०) पसली, पार्श्व, वक्षस्थल।

पांडव (सं० पु०) महाभारत के नायक युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, सफ़ेद हाथी, सफ़ेद रंग।

पांडे (सं० पु०) पाठक, अध्यापक, पढ़ने वाला, ब्राह्मणों की पदवी।

पाँत (सं० स्त्री०) श्रेणी, लकीर, अवली, क़तार।

पाँतर (सं० पु०) निर्जन स्थान, वीरान, उजाड़।

पाँती (सं० स्त्री०) देखो "पाँत"।

पाँपती (सं० स्त्री०) पाँपतल, पयताना, बिछौने के पैर की ओर, पाँव की ओर।

पाँपोश (सं० पु०) नारियल के जटा आदि की बनी छोटी चटाइयाँ जो पाँव पोंछने के काम आती हैं।

पाँव (सं० पु०) पैर, पद, चरण, गोड़, पाया।

मुहा०—पाँव उठाना या चलाना=झटझट चलना, जल्दी जल्दी चलना। पाँव उतरना=गाँठ गाँठ से उखड़ना। पाँव काँपना या थरथराना=किसी काम के करने में डरना। पाँव किसी का उखाड़ना=किसी को किसी काम पर जमने नहीं देना। पाँव किसी के गले में डालना=किसी मनुष्य को उसी की बात या तर्क से उसको दोषी ठहराना। पाँव चल जाना=डगमगाना, अस्थिर होना। पाँव जमाना=दृढ़ होकर ठहरना। पाँव ज़मीं पर न ठहरना=बहुत प्रसन्न होना, बहुत घमंड करना। पाँव डालना=किसी बड़े काम के लिए तैयार होना। पाँव डिगना=हिम्मत हारना, खिसकना। पाँव तले मलना=किसी को सताना। पाँव तोड़ना=किसी काम में बाधा डालना, थक जाना। पाँव धो धो पीना=किसी को बहुत मानना या उस का विश्वास करना, बहुत ख़ुशामद करना। पाँव निकलना=अपनी मर्यादा का उल्लंघन करना। पाँव पकड़ना=शरणागत होना। पाँव पड़ना=घिघियाना, गिड़गिड़ाना। पाँव दबे आना=धीरे से आना। पाँव पर पाँव रखना=अनुकरण करना, बड़ा तक़ाज़ा करना। पाँव पीटना=अधीर होना, वृथा कोशिश करना। पाँव पूजना=भक्ति करना, अलग रहना। पाँव फूँक फूँक कर रखना=सावधान होना, सम्हल कर काम करना। पाँव फैला कर सोना=सुखी रहना, बेखटके रहना। पाँव फैलाना=हठ करना, अड़ जाना। पाँव लगना=प्रणाम करना, नमस्कार करना।

पाँवड़ा (सं० पु०) देखो "पाँपोश।"

पाँशव (सं० पु०) लवण विशेष, पाङ्गा नमक।

पाँशु (सं० पु०) धूलि, ख़ाक, खात, कपूर, रजस्वला स्त्री, सूखा गोबर, पाँस।

पाँशुका (सं० स्त्री०) रेणु, धूल, रजस्वला स्त्री, वेश्या।

पाँशुल (सं० पु०) हर, महादेव (वि०) धूल धूसरित।

पाँशुला (सं० स्त्री०) कुलटा, वेश्या।

पाँस (सं० पु०) खाद।

पाँसना (क्रि० स०) खाद डालना, खाद तैयार करना।

पाँसु (सं० स्त्री०) पसली।

पा (फ़ा० सं० पु०) पैर, पद, चरण। [तीसरा भाग

पाई (सं० स्त्री०) एक पैसा, पतली छड़ी, एक

पाउ (सं० पु०) पाँव, पैर।

पाक (सं० पु०) रींधना, पचन, रसो॰

हुई वस्तु, उल्लू, एक दैत्य का नाम, फल-प्राप्ति, दशा, सफ़ेद बाल ।

पाककर्ता (सं० पु०) पाचक, बावरची, रसोइया ।

पाकक्षार (सं० पु०) जवाक्षार ।

पा[illegible] (सं० पु०) एक वृक्ष विशेष, पाकड़िया ।

पाक[illegible] (क्रि० अ०) उबलना, सीझना । [पज़ावा ।

पाकपुटी (सं० स्त्री०) चूल्हा, चूल्ह, आँवा, भट्ठा,

पाकशाला (सं० स्त्री०) रसोईघर ।

पाकशासन (सं० पु०) इन्द्र ।

पाकस्थाली (सं० स्त्री०) बटुई, हाँडी ।

पाका (सं० पु०) गलका फोड़ा ।

पाकी (वि०) परिपक्व, पक्की, पकी हुई, तैयार ।

पाकुक (सं० पु०) पकाने वाला, रसोइया ।

पाक्षिक (वि०) सहायक, हिमायती, मदद देने वाला, पन्द्रहवें दिन होने वाला, अर्द्धमासिक ।

पाख (सं० पु०) पक्ष, पखवारा, दीवार, भीत ।

पाखण्ड (सं० पु०) पामर, दम्भ, डिम्भ, छल, गुनाह ।

पाखण्डी (वि०) दम्भी, छली, मक्कार, धोखेबाज़ ।

पाखर (सं० पु०) घोड़े या हाथी का झिलम, झूल जो लोहे का बना होता है ।

पाखा (सं० स्त्री०) कोना, छोर ।

पाग (सं० स्त्री०) पगड़ी, चाशनी जिसमें मिठाइयाँ या दूसरी खाने की चीज़ें डुबा कर रक्खी जाती हैं, रस ।

पागना (क्रि० स०) रस में सिझाना । [बौड़हा, मूर्ख ।

पागल (वि०) पगला, उन्मत्त, विक्षिप्त, सिड़ी, बावला,

पागा (सं० पु०) घोड़ों का झुण्ड ।

पागुर (सं० पु०) उगाल, जुगाली ।

पागुराना (क्रि० अ०) जुगालना, चाबना, जुगाली करना ।

पाचक (सं० पु०) पित विशेष, अग्नि, हाजमे की दवाई, रसोइया ।

पाचिका (सं० स्त्री०) पकाने वाली, रसोइयादारिन ।

पाछ (सं० पु०) टीका, जन्तु या पौधे के शरीर पर छुरी की धार आदि मार कर ऊपर किया हुआ घाव जो गहरा न हो ।

पाछना (क्रि० स०) टीका देना, चीरा लगाना, चीरना ।

पाछे (अव्य०) पीछे, पश्चात्, परे ।

पाजी (वि०) नालायक़, दुष्ट, दुराचारी, बदमाश ।

पाञ्चजन्य (सं० पु०) विष्णु का शङ्ख ।

पाञ्चभौतिक (सं० पु०) पञ्चतत्वों से बना हुआ ।

पाञ्चाल (सं० पु०) देश विशेष, द्रुपदराज का नगर ।

पाञ्चाली (सं० स्त्री०) द्रौपदी ।

पाट (सं० पु०) कपड़े या नदी आदि की चौड़ाई, सनई, पटुवा, रेशम, चक्की का पत्थर, सिंहासन, चौकी, तख़्ता, पटरा, पाटा ।

पाटकृमि (सं० पु०) रेशम का कीड़ा ।

पाटच्चर (सं० पु०) तस्कर, चोर ।

पाटन (सं० पु०) नगर, शहर, काटना, दो कर डालना, छेदन, छावन, छत, पटन ।

पाटना (क्रि० स०) छाना, छावना, ढँकना, भरना, भरपूर करना, रेल पेल करना, सींचना । [वस्त्र ।

पाटम्बर (सं० पु०) चेवली, रेशमी कपड़ा, रेशम का

पाटरानी (सं० स्त्री०) पटरानी, महारानी ।

पाटल (सं० पु०) एक फूल का नाम, गुलाब का फूल, लाल सफ़ेद रंग, गुलाबी रंग ।

पाटला (सं० स्त्री०) दुर्गा, पार्वती ।

पाटलिपुत्र (सं० पु०) पटना नगर, पटना शहर ।

पाटव (सं० पु०) पटुता, स्वस्थता, निपुणता (वि०) पटु, होशियार, स्वस्थ, चतुर । [का पाट ।

पाटा (सं० पु०) पटरा, तख़्ता, कपड़ा धोने का धोबी

पाटिका (सं० स्त्री०) एक दिन की मज़दूरी, एक पौधा, छाल, छिलका ।

पाटी (सं० स्त्री०) खाट की पटिया, एक तरह की चटाई, तख़्ती जिस पर लड़के लिखना सीखते हैं, बालों की पट्टी ।

पाटीर (सं० पु०) चन्दन, मलय, एक प्रकार का चन्दन ।

पाठ (सं० पु०) पठन, अध्ययन, सबक़ ।

पाठक (सं० पु०) शिक्षक, अध्यापक, पढ़ाने वाला, पण्डित, पढ़ने वाला, विद्यार्थी, शिष्य, ब्राह्मणों की उपाधि ।

पाठक्रम (सं० पु०) पढ़ने की रीति, अध्ययन-क्रम ।

पाठन (सं० पु०) पढ़ाना, अध्ययन, शिक्षण ।

पाठशाला (सं० स्त्री०) विद्यालय, पढ़ने की जगह ।

पाठा (सं० पु०) मल्ल, योद्धा, युवा, जवान, मोटा, तगड़ा

पाठित (वि०) पढ़ाया हुआ ।

पाठी (सं० स्त्री०) युवा बकरी ।

पाठीन (सं० पु०) पाठ्य विशेष, पाठक, गुग्गुल वृक्ष ।

पाठ्य (वि०) पढ़ने योग्य, पठनीय ।
पाड़ (सं० स्त्री०) गरगज, डौंना, मचान। [करना ।
पाड़ना (क्रि० स०) गिराना, पछाड़ना, मारना, पूरा
पाड़ा (सं० पु०) भैंस का बच्चा, टोला। [विशेष ।
पाढ़ा (सं० पु०) एक जंगली जानवर का नाम, मृग
पाढ़ी (सं० स्त्री०) सूत की लच्छी, नाव जो यात्रियों को पार पहुँचाने के लिये नियत हो। [स्तुति ।
पाण (सं० पु०) हस्त, हाथ, पान, क्रम विक्रम, व्यवहार,
पाणि (सं० पु०) हस्त, कर, हाथ। [पकड़ना ।
पाणिग्रहण (सं० पु०) विवाह, व्याह, शादी, हाथ
पाणिनि (सं० पु०) एक मुनि का नाम, इनके पिता का नाम देवल और माता का दाक्षी था, ये गंधार देशस्थ शालातुर गाँव के रहने वाले थे, इन्होंने शिवजी का तप किया और शिव जी की प्रसन्नता से अष्टाध्यायी नामक एक व्याकरण ग्रन्थ इन्होंने बनाया।
पाणिनीय (सं० पु०) पाणिनि के बनाये ग्रंथ।
पाणिपीड़न (सं० पु०) विवाह, व्याह।
पाण्डर (वि०) पीला और धौला, सीठा, फीका, कुन्द फूल, श्वेत पुष्प। [नकुल, सहदेव ।
पाण्डव (सं० पु०) पाण्डु पुत्र, युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम,
पाण्डित्य (सं० पु०) पण्डिताई, विद्या, विद्वत्व।
पाण्डु (सं० पु०) सफ़ेद और पीला मिला हुआ रंग, शुक्ल पीत मिश्रित वर्ण, रक्त पीत मिश्रित वर्ण, श्वेत हस्ती, कुरुवंशी एक राजा का नाम, इनके पिता का नाम विचित्रवीर्य था और माता का नाम अम्बालिका, इनका व्याह कुन्ती और माद्री से हुआ था इन्होंने कई एक राजाओं को पराजित कर बहुत धन संग्रह किया था, उस धन से इन्होंने पाँच यज्ञ किये, एक दिन कामातुर मृग को इन्होंने मार डाला उसने शाप दिया कि जिस दिन तुम भोग करोगे उसी दिन मर जाओगे, मरने के भय से स्त्रियों के साथ प्रसङ्ग करना इन्होंने छोड़ दिया। इनके पाँच पुत्र थे जो पाण्डव कहे जाते हैं, एक दिन इन्होंने कामातुर होकर माद्री के साथ संभोग किया और उसी क्षण मर गये।
पाण्डुर (सं० पु०) सफेद और पीला मिला हुआ रंग, शुक्ल पीत मिश्रित वर्ण।
पाण्डुरा (सं० स्त्री०) माषपर्णी लता।
पाण्डेय (सं० पु०) ब्राह्मणों की एक उपाधि, पाँडे।

पात (सं० पु०) गिराव, पतन, पन्ना, पत्ता, कान का एक गहना।
पातक (सं० पु०) पाप, कलुष, अघ, दोष, अपराध।
पातकी (वि०) पापी, अपराधी, दोषी, अघयुक्त।
पातञ्जल (सं०पु०) पातञ्जली का बनाया हुआ योग दर्शन।
पातर (वि०) दुबला, पतला, दुर्बल, निर्बल (सं० स्त्री०) रण्डी, वेश्या, पतुरिया, गणिका।
पातराज (सं० पु०) सर्प विशेष।
पातशाह (सं० पु०) बादशाह।
पातशाही (सं० स्त्री०) बादशाही।
पाता (सं० पु०) पत्र, पत्ता, पत्ती (वि०) पालित, रक्षित।
पाताला (सं०पु०) अधोभुवन, पृथ्वीतल, नरक, बड़वानल, लग्न से चौथा स्थान, औषधि बनाने का एक यन्त्र विशेष।
पातित्य (वि०) पातक, पाप, दुराचार।
पातिव्रत्य (सं० पु०) पातिव्रत धर्म, पतिव्रता का चिह्न।
पाती (सं० स्त्री०) पत्र, पत्री, चिट्ठी, ख़त।
पात्र (सं० पु०) बर्तन, जलाधार, भाजन, भाण्ड, पुत्र, पता, नट, अनुकरण करने वाला (वि०) योग्य, उचित।
पाथ (सं० पु०) जल, पानी।
पाथना (क्रि० स०) थोपना, थापना, टिकिया बनाना।
पाथर (सं० पु०) पत्थर, पाषाण।
पाथेय (सं० पु०) मार्ग-व्यय, राह-ख़र्च।
पाथोज (सं० पु०) कमल, पद्म।
पाथोद (सं० पु०) बादल।
पाथोधि (सं० पु०) सागर, समुद्र।
पाद (सं० पु०) पैर, पाँव, गोड़, चरण, श्लोक आदि का चौथा भाग, चतुर्थांश। [का होता है।
पादकृच्छ्र (सं० पु०) एक प्रायश्चित्त व्रत जो चार दिन
पादज (सं० पु०) शूद्र।
पादत्राण (सं० पु०) जूता, खड़ाऊँ, मोज़े।
पादप (सं० पु०) वृक्ष, पेड़, दरख़्त।
पादपद्म (सं० पु०) चरण कमल।
पादपीठ (सं० पु०) पादासन, खड़ाऊँ, जूता।
पादप्रक्षालन (सं० पु०) पाँव धोना, पैर धोना।
पादप्रहार (सं०पु०) लात मारना, चरण-प्रहार।
पादनोन (सं० पु०) काला नमक।

पादार्घ्य (सं० पु०) अतिथि का पैर धोने के लिए जल।
पादार्पण (सं० पु०) पैर देना, घुसना, प्रवेश।
पादुका (सं० स्त्री०) जूता, पनही, खड़ाऊँ।
पादोदक (सं० पु०) चरणामृत, पैर का धोवन।
पाद्य (सं० पु०) पैर धोने का जल।
पाधा (सं० पु०) उपाध्याय, पुरोहित।
पान (सं० पु०) द्रव आदि पीने योग्य वस्तु, पीना।
पाना (क्रि० स०) लब्ध होना, प्राप्त होना, मिलना।
पानासक्त (वि०) मद्यपानादि में आसक्त, मद्यपी।
पानी (सं० स्त्री०) जल, नीर, शक्ति, ताक़त, सामर्थ्य, शोभा, सुन्दरता, लावण्यता।
मुहा०—पानी करना=नष्ट करना, लज्जित करना, सहज करना। पानी का बुलबुला=क्षणभङ्गुरता, अस्थिरता। पानी देना=पित्तरों को जल देना, तर्पण करना। पानी न माँगना=ऐसा मारना कि शीघ्र मर जाय। पानी पड़ना=पानी बरसना, वृष्टि होना। पानी पी पीकर कोसना=सदा बुरा मनाना, अत्यन्त अशुभ चाहना। पानी मरना=अधीन होना, घिर पड़ना, तुच्छ होना। पानी में आग लगाना=असम्भव काम करना, शान्त झगड़े को पुनः लगाना। पानी पतला करना=दुःख देना। [फल।
पानीफल (सं० पु०) सिंघाड़ा, पानी में पैदा होने वाला
पान्थ (सं० पु०) राही, बटोही, यात्री, पथिक।
पाप (सं० पु०) पातक, अघ, कल्मष, दोष, अपराध।
पापखण्डन (सं० पु०) पाप-नाशक मंत्रविशेष।
पापग्रह (सं० पु०) अनिष्टकारक ग्रह, अशुभ ग्रह।
पापचेता (सं० पु०) पापात्मा, पापी।
पापजनक (सं० पु०) पापोत्पादक।
पापड़ (सं० स्त्री०) मूँग, उर्द आदि की बहुत पतली बेली हुई रोटी जो घी में छान कर या आग पर सेंक कर खाई जाती है।
पापरूपी (वि०) पाप की मूर्त्ति, अधर्म।
पापरोगव (सं० पु०) कुष्ठ रोग, चेचक।
पापात्मा (वि०) अधर्मी, पापी, पातकी।
पापिन (सं० स्त्री०) पापी स्त्री, पातकी स्त्री।
पापी (वि०) पातकी, पापात्मा, अपराधी, दोषी।
पामर (वि०) नीच, अधम, दुष्ट, खल।
पामरी (सं० स्त्री०) अधमा स्त्री, रेशमी वस्त्र।
पामा (सं० स्त्री०) रोग विशेष, खुजली, खाज।
पामारि (सं० पु०) गन्धक, खुजली नाशक।
पायक (सं० पु०) पदाति, पियाद, पैदल, अनुचर, सेवक।
पायढ़ (सं० पु०) माँच, मचान।
पायजामा (सं० पु०) कटि से पैर तक पहनने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र। [भाग।
पायँती (सं० स्त्री०) पैताना, खाट का पैर की ओर का
पायल (सं० स्त्री०) पायज़ेब, पैर में का गहना।
पायस (सं० पु०) दूध में पकाया हुआ अन्न, खीर, तसमई। [बना खंभा।
पाया (सं० पु०) चारपाई आदि का पैर, ईंट आदि का
पायिक (सं० पु०) पियादा, हरकारा।
पायी (सं०पु०) पीने वाला, पान कर्ता। [मोचन, उद्धार।
पार (सं० पु०) तीर, दूसरा किनारा, शेष, समाप्ति, तरण,
पारख (सं० पु०) परीक्षक, निरीक्षक, परखैया। [वाला।
पारखी (वि०) परखने वाला, जाँचने वाला, परीक्षा करने
पारग (वि०) समर्थ, निपुण, पार उतरने वाला।
पारण (सं० पु०) व्रतादि के दूसरे दिन का भोजन।
पारतन्त्र्य (सं० पु०) पराधीनता, परतन्त्रता।
पारद (सं० पु०) पारा, म्लेच्छ जाति विशेष।
पारदर्शी (वि०) दक्ष, चतुर, होशियार, निपुण, अभिज्ञ।
पारदारिक (सं० पु०) परायी स्त्री पर आसक्त, कामुक।
पारन (सं० पु०) देखो "पारण"। [करना।
पारना (क्रि० अ०) पारन करना, पूरा करना, परिपूर्ण
पारमार्थिक (वि०) पारलौकिक, परमार्थ विषयक।
पारलौकिक (वि०) परलोक विषयक, परलोक संबन्धी। [सोना हो जाता है, देश विशेष, ईरान।
पारस (सं० पु०) मणि विशेष, जिसमें लोहा छुआने से
पारसाल (सं० पु०) गत या आगामी वर्ष, गुज़रा या आने वाला साल।
पारसी (सं० स्त्री०) पारस देश की भाषा, ईरानी भाषा (वि०) पारस देश का रहने वाला, पारस देश का।
पारा (सं०पु०) धातु विशेष, पारद।
पारायण (सं० पु०) नियमपूर्वक पुराण का पाठ।
पारावत (सं० पु०) कबूतर, कपोत।
पारावार (सं० पु०) दोनों ओर का छोर, दोनों ओर का किनारा, सागर, समुद्र।
पाराशर (सं० पु०) वेदव्यास (वि०) पराशर का।

पारिजात (सं० पु०) पुष्प विशेष, हरिचन्दन का पेड़।
पारितोषिक (सं० पु०) पुरस्कार।
पारिन्दु (सं० पु०) शेर, सिंह। [तस्कर।
पारिपन्थिक (सं० पु०) दस्यु, चोर, लुटेरा, डाकू,
पारिपात्र (सं० पु०) विन्ध्य पर्वत के उस भाग का नाम जो मालवा की सीमा पर है।
पारिपार्श्वक (सं० पु०) नाटक का वह पात्र जो सूत्रधार की सहायता करता है। [का पेड़।
पारिभद्र (सं० पु०) पारिजात, निम्ब का पेड़, साखू
पारिभाव्य (सं० पु०) प्रतिभू, ज़मानत।
पारिभाषिक (सं० पु०) वे शब्द जो किसी विशेष विषय के विशेष अर्थ के द्योतक हों, साङ्केतिक।
पारिमाण्डल्य (सं० पु०) सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमाणु, वह परमाणु जिससे छोटा और परमाणु न हो, अत्यन्त सूक्ष्म परिमाणु।
पारिषद (सं०पु०) सभ्य, सभासद (वि०) सभा संबंधी।
पारी (सं० स्त्री०) बारी, क्रम, पर्याय,अवसर। [दुर्वाक्य।
पारुष्य (सं० पु०) परायी निन्दा, परद्रोह, कटुक्ति,
पार्थ (सं० पु०) अर्जुन।
पार्थक्य (सं० पु०) भिन्नता, विभेद, पृथकता।
पार्थिव (सं० पु०) राजा, नृपति (वि०) पृथ्वी का,
पार्वण (सं० पु०) श्राद्ध विशेष। [पृथ्वी संबंधी।
पार्वती (सं० स्त्री०) सती, इन्होंने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में पति के अपमान से प्राण त्याग दिया था, इसके बाद पर्वतराज हिमालय के यहाँ जन्म लिया इससे इनका नाम पार्वती पड़ा, दुर्गा, अबेरा, मुलतानी मिट्टी, एक प्रकार का पत्थर।
पार्श्व (सं० पु०) कंधे के नीचे का भाग, पांजर, पसली (अव्य०) समीप, पास, नज़दीक।
पार्श्वभाग (सं० पु०) पसली।
पार्श्ववर्ती (वि०) साथी, पास रहने वाला।
पार्श्वशूल (सं० पु०) पसली का दर्द।
पाल (सं० पु०) रक्षक, रक्षा करने वाला, पालने वाला, टाट या कपड़ा आदि का बना वह पदार्थ जो नाव पर टाँगा जाता है और जिसके सहारे हवा के ज़ोर से नाव चलती है। कच्चे फल आदि के पकाने की विधि। [एक प्रसिद्ध साग।
पालक (सं० पु०) रक्षा करने वाला, पालने वाला,
पालकी (सं० स्त्री०) डोला, डोली, शिविका, महाफा।
पालन (सं० पु०) पोषण, भरण, रक्षण, परवरिश,निर्वाह।
पालना (क्रि० स०) पोसना, रक्षा करना, निबाहना (सं० पु०) झूला।
पालनीय (वि०) पालने के योग्य, रक्षणीय।
पाला (सं० पु०) हिम, तुषार, ठंडक, ओला, पालित, रक्षित, बारी, पारी, क्रम।
पालागन (सं० पु०) प्रणाम, नमस्कार। [रङ्ग का।
पालाश (वि०) पलाश वृक्ष संबन्धी, पलाश वृक्ष का, हरे
पालि (सं० स्त्री०) भारतीय भाषा विशेष जिसका व्यौहार बौद्ध युग में होता था और बौद्धों का ग्रंथ इसी भाषा में लिखा गया था।
पालिक (वि०) रक्षा करने वाला, पालने वाला।
पालित (वि०) पाला हुआ, रक्षा किया हुआ,पोसा हुआ।
पाली (सं० स्त्री०) श्रेणी, पङ्क्ति, क़तार, अलङ्कार विशेष, कान में पहनने की बाली, वह स्त्री जिसके मूँछ हो, गोदी, कोरा, उत्सङ्ग, सेतु।
पाले (अव्य०) अधिकार में, वश में, मातहती में।
पाव (सं० पु०) किसी वस्तु का चतुर्थांश, चार छटाँक, सेर का चौथाई भाग।
पावक (सं० पु०) आग, अग्नि (वि०) पवित्र करने वाला।
पावड़ा (सं० पु०) देखो "पाँवड़ा"।
पावन (वि०) पवित्र करने वाला, शुद्ध करने वाला।
पावना (क्रि० स०) पाना, मिलना, प्राप्त होना (सं० पु०) बाक़ी।
पावला (सं० पु०) चतुर्थांश, चार आना।
पावस (सं०पु०) बर्षा ऋतु, बरसात।
पाश (सं० पु०) जाल, फंदा, रज्जु, रस्सी।
पाशा (सं० पु०) चौपड़, द्यूत, जुआ।
पाशित (वि०) पाशयुक्त, बँधा हुआ।
पाशुपत (सं० पु०) शैव, शिव के उपासक।
पाशुपतास्त्र (सं० पु०) एक अस्त्र विशेष जो शिव जी ने अर्जुन की तपस्या से प्रसन्न होकर उनको दिया था।
पाश्चात्य (वि०) पश्चिमीय, प्राचीन, पीछे का।
पाषाण (सं० पु०) पत्थर, पाखान।
पास (अव्य०) समीप, सन्निकट।
पासा (सं० पु०) चौपड़, जुआ का खेल विशेष।
पासी (सं० पु०) एक अछूत और नीच जाति।

पाहन (सं० पु०) ढेला, कंकड़, पाथर ।
पाहरु (सं० पु०) पहरुआ, पहरु, पहरिया, चौकीदार ।
पाही (सं० स्त्री०) दूसरे गाँव में काश्तकारी करना, पराये गाँव में खेती करना ।
पाहुन (सं० पु०) अतिथि, मेहमान, नातेदार ।
पाहूँ (सं० पु०) सर्व साधारण, जनता ।
पिंगूर (सं० पु०) झूलना, पालना, हिंडोला ।
पिंजड़ा (सं० पु०) खाँचा, पखेरुओं के रहने का घर, पक्षियों के रहने के लिए लोहा लकड़ी आदि का बना क़ैद घर ।
पिंजरा (सं० पु०) देखो "पिंजड़ा" ।
पिंजियारा (सं० पु०) रूई धुनने वाला, धुनिया ।
पिंडरा (सं० पु०) ठग, डकैत, लुटेरा, चपणक, बौद्ध संन्यासी, महिषी, गोप, रक्षक, चरवाहा, वृक्ष विशेष ।
पिंडरी (सं० स्त्री०) रोग विशेष जिससे शरीर की नसें तन जाती हैं, घुटने के पीछे के गट्ठे से नीचे का भाग जिसमें चढ़ाव उतार होता है ।
पिंडली (सं० स्त्री०) देखो "पिंडरी" ।
पिंडा (सं० पु०) अन्न की वह गोली जो पित्तरों के उद्देश्य से दिया जाता है, अन्न का वह पिण्ड जो पित्तरों को दिया जाता है, एक प्रकार की कस्तूरी, मैनफल ।
पिंडालू (सं० स्त्री०) फल विशेष, एक प्रकार के औषधि की जड़ ।
पिंडोल (सं० पु०) छुई, खड़िया मिट्टी ।
पिआरा (वि०) प्रिय, प्यारा, स्नेही ।
पिऊ (सं० पु०) पति, पिय, स्वामी, भर्ता, प्रियतम ।
पिक (सं० स्त्री०) कोयल, कोकिल ।
पिकदान (सं० पु०) थूकने का बर्तन, पीकदान ।
पिकबयनी (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो कोयल के समान मधुर बोलती है । [स्त्री ।
पिकबैनी (सं० स्त्री०) कोकिल के समान मिष्टभाषिणी
पिघलना (क्रि० अ०) गलना, द्रव होना, टघलना ।
पिघलाना (क्रि० स०) गलाना, टघलाना ।
पिघलाव (सं० पु०) गलाव, टघलाव, द्रवन ।
पिङ्ग (वि०) पीला, पिङ्गलवर्ण युक्त, पीतवर्ण ।
पिङ्गल (सं० पु०) एक छन्द ग्रन्थ का नाम, एक संवत्सर का नाम, एक मुनि का नाम, अग्नि, वानर, कपि, पीतल, हरताल, कपिश रङ्ग, कबार, नीला पीला रंग, नील पीत ।
पिङ्गला (सं० स्त्री०) दक्षिण दिग्गज की हथिनी का नाम, एक रानी का नाम जो राजा भर्तृहरि की स्त्री थी, एक नाड़ी विशेष, कर्णिका ।
पिचकना (क्रि० अ०) दबना, सिमटना, सिकुड़ना ।
पिचकाना (क्रि० स०) दबाना, सिकोड़ना ।
पिचकारी (सं०पु०) पानी फेंकने आदि के लिए एक यन्त्र, दमकला ।
पिचण्ड (सं० पु०) पेट, उदर, जठर ।
पिचण्डिल (वि०) तोंदैल ।
पिचपिचा (वि०) सड़ा गला, पिलपिला ।
पिचु (सं० पु०) कपास, एक प्रकार का कुष्ठ, एक दैत्य का नाम, एक तौल जो दो तोले के बराबर होती है ।
पिचुक्का (सं० पु०) पिचकारी ।
पिचर (सं० पु०) आँख का एक रोग, सीसा, राँगा ।
पिच्छ (सं० पु०) पूँछ, मोर पंख, मुकुट, मोर हिंसा, कपास वृक्ष, केला, सेमर, भात का माँड़, घोड़े के पैर का रोग ।
पिच्छक (सं० पु०) पूँछ, मोचरस ।
पिच्छतिका (सं० स्त्री०) शीशम, शिशपा ।
पिच्छन (सं० पु०) दबाकर चपटा करने की क्रिया ।
पिच्छपाद (सं० पु०) पैरों का एक रोग विशेष ।
पिच्छ बाण (सं० पु०) बाज पक्षी, श्येन ।
पिच्छ भार (सं० पु०) मोर की पूँछ ।
पिच्छलन (सं० पु०) पिछलना, खसकना, गिरना ।
पिच्छा (सं० स्त्री०) मोचरस, सेमर का गोंद ।
पिछलई (सं० स्त्री०) चुड़ैल, भूतनी ।
पिछलगा (सं० पु०) अधीन, अनुगामी, टहलुआ ।
पिछलना (क्रि० अ०) फिसलना, खिसकना, गिरना, पड़ना, पीछे की ओर चलना ।
पिछला (वि०) पीछे का, पिछाड़ी का, नया, अवशेष ।
पिछवाड़ा (सं० पु०) पीछे का, पिछला भाग, पीछा ।
पिछाड़ी (सं० स्त्री०) घोड़े के पिछले पैर में बाँधने वाली रस्सी, वह जिसमें घोड़े के पिछले पैर बाँधे जाते हैं ।
पिछान (सं० स्त्री०) जान पहचान, जानकारी, परिचय ।
पिछाने (वि०) परिचित, जाने हुए, पहचाने हुए ।
पिछूत (अव्य०) पीछे, पश्चात्, उपरान्त ।

पिछेत (अव्य०) घर का पिछला भाग, पिछवाड़ा।
पिछौरा (सं० पु०) दोहर, चद्दर, दुपट्टा।
पिछौरी (सं० स्त्री०) दोहर, दुपट्टा, ओढ़नी, चादर।
पिञ्जन (सं० पु०) रूई का ओटना, रूई धुनना, धनुही, मारण, क़त्ल।
पिञ्जर (सं० पु०) हरिताल, स्वर्ण, नागकेशर, पुष्प, पक्षादि बन्धन, गृह, देहास्थि समूह, अश्व विशेष, नारंगी रंग, बसंती रंग, पिंजर।
पिञ्जल (सं० पु०) कुशपत्र, हरिताल, अति व्याकुल सैन्य, विजायठ, कंकण, जोशन, कुशा।
पिञ्जिका (सं० स्त्री०) रूई का गाला।
पिञ्जूल (सं० पु०) बत्ती, मशाल।
पिञ्जूष (सं० पु०) मोम, संदूक, पिटारा, पिटारी, खीभी, खरी, कान की मैल, खोंट। [फोड़ा।
पिट (सं० पु०) संदूक, टोकरी, पिटारा, शोर, हल्ला,
पिटक (सं० पु०) मञ्जूषा, पिटारी, फोड़ा।
पिटना (क्रि० अ०) मार खाना (सं० पु०) मुग्दर, मुँगरा, गदा। [झोला।
पिटारा (सं० पु०) टोकरा, मञ्जूषा, कपड़ा रखने का
पिटारी (सं० स्त्री०) छोटा पिटारा।
पिट्टक (सं० पु०) दाँत की मैल।
पिट्टस (सं० स्त्री०) शोक में छाती पीले करने की क्रिया।
पिट्टू (वि०) मार खाने का अभ्यासी। [अग्नि विशेष।
पिठर (सं० पु०) मोथा, मथानी, थाली, घर विशेष,
पिठी (सं० स्त्री०) उर्द की भीगी और पिसी हुई दाल।
पिण्ड (सं० पु०) कोई गोल द्रव्यखंड, ठोस टुकड़ा, ढेर, राशि, पके हुये चावल खीर आदि का हाथ से बाँधा हुआ गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है।

मुहा०—पिण्ड छुड़ाना = बचना, पीछा छुड़ाना।

पिण्डित (वि०) गणित, घना, जड़ित, गुणित।
पिण्डूक (सं० पु०) घूग्घू, कपोत विशेष।
पिण्याक (सं० पु०) खल, हींग, पीनस की बीमारी।
पितर (सं० पु०) पुरुषा, पुर्खा, पूर्व पुरुष।
पितराई (सं० स्त्री०) जञ्जाल, कुटुम्ब, पीतल का जङ्ग, पीतल का कसाव।
पितरिहा (वि०) पीतल का।
पितरौ (सं० पु०) माता पिता, माँ बाप, यह शब्द संस्कृत है।
पितरौला (सं० पु०) पात्र विशेष।
पितलाना (क्रि० अ०) ताँबे पीतल के बर्तन में रखने से खट्टी चीज़ का बिगड़ना, पीतल से बिगड़ना।
पिता (सं० पु०) बाप, वालिद।
पितामह (सं० पु०) ब्रह्मा, पिता का पिता।
पितामही (सं० स्त्री०) पितामह की स्त्री, दादी।
पितिया (सं० पु०) चाचा, काका।
पितियानी (सं० स्त्री०) चची, चाची।
पितिया ससुर (सं० पु०) चचिया ससुर।
पितिया सास (सं० स्त्री०) चचिया सास।
पितु (सं० पु०) पिता।
पितू (सं० पु०) जनक, पिता, बाप।
पितृ ऋक्थ (सं० पु०) पितृ धन। [ऋण छूटता है।
पितृ ऋण (सं०पु०) पितरों का ऋण, पुत्रोत्पादन से यह
पितृक (वि०) पितृ संबन्धी।
पितृकर्म (सं० पु०) श्राद्ध, पिण्डदान आदि।
पितृकानन (सं० पु०) श्मशान, मरघट, पितृलोक।
पितृकृत्य (सं० पु०) पितृ श्राद्ध, पितृ क्रिया।
पितृक्रिया (सं० स्त्री०) अन्त्येष्टि क्रिया, श्राद्ध।
पितृगृह (सं० पु०) पितृस्थान, पितृलोक।
पितृघातक (सं०पु०) पिता को मारने वाला, पितृहन्ता।
पितृतर्पण (सं० पु०) पितरों के उद्देश्य से दिया गया जल, पितरों का तृप्ति साधन।
पितृतिथि (सं० स्त्री०) अमावस्या, अमावस, श्राद्ध दिन।
पितृतीर्थ (सं० पु०) तीर्थ विशेष, गया तीर्थ।
पितृदान (सं०पु० पिण्डदान।
पितृपक्ष (सं० पु०) श्राद्धपक्ष, आश्विन का अँधेरा पाख, पितरपख।
पितृपति (सं० पु०) यम, यमराज, काल, दण्डधर।
पितृपैतामह (सं० पु०) पूर्वज, पूर्वपुरुष।
पितृप्रसू (सं० स्त्री०) सन्ध्या, सायंकाल, पितामही।
पितृभ्राता (सं० पु०) चचा, काका, पितृव्य।
पितृयज्ञ (सं० पु०) तर्पण, श्राद्ध।
पितृलोक (सं० पु०) लोक विशेष, पितरों का स्थान।
पितृवन (सं० पु०) श्मशान, प्रेत भूमि, शव-दाह-स्थान।
पितृव्य (सं०पु०) चाचा, काका।
पितृष्वसा (सं०स्त्री०) पिता की भगिनी, बुआ।
पितृसन्निभ (सं० पु०) पितृ तुल्य, पितृ सम।

पित्त (सं० पु०) शरीरस्थ धातु विशेष, शरीर की एक प्रकार की धातु, सफ़रा ।
पित्तघ्नी (सं० स्त्री०) गुडुच ।
पित्तज्वर (सं० पु०) पित्त विकार से उत्पन्न ज्वर ।
पित्तल (सं० पु०) धातु विशेष, पीतल, भोज पत्र का पेड़ । [क्रोध ।
पित्ता (सं० पु०) पित्त, पित्त की थैली, पित्ताधार, मुहा०—पित्ता निकालना = दण्ड देना । पित्ता मारना = क्रोध घटना, क्रोध ठंढा पड़ना ।
पित्पापड़ा (सं० पु०) एक औषध का नाम।
पिदड़ी (सं० स्त्री०) एक छोटा पखेरू, फुदकी पक्षी ।
पिधान (सं० पु०) आच्छादन, ढकना, पिहान ।
पिन (सं० पु०) शराटा, शब्द, ध्वनि ।
पिनकी (सं० स्त्री०) पीनक, ऊँघाहट, अफीम का नशा ।
पिनपिनाना (क्रि० अ०) टङ्कोरना, टनकना, क्रुद्ध होना ।
पिनहाना (क्रि० स०) पहिराना ।
पिनाक (सं० पु०) शिव धनुष, शूल, पाँशु वर्षण ।
पिनाकी (सं० स्त्री०) वीणा, शिव का धनुष, शिव का त्रिशूल, बीन बाजा (सं० पु०) शिव, महादेव ।
पिन्ना (सं० पु०) खली ।
पिन्नी (सं० स्त्री०) चावल का लड्डू ।
पिपड़ा (सं० पु०) कीट विशेष, मकोड़ा ।
पिपा (सं० पु०) लकड़ी का बना गोलाकार बड़ा बर्तन ।
पिपासा (सं० स्त्री०) प्यास, तृषा, तृष्णा ।
पिपासातुर (वि०) बहुत प्यासा ।
पिपासित (वि०) तृषार्त, प्यासा ।
पिपील (सं० स्त्री०) चिउँटी, चींटी ।
पिपीलक (सं० पु०) चिउँटा, चींटा ।
पिपीलिका (सं० स्त्री०) चींटी । [आदमी, जल, वस्त्र खंड ।
पिप्पल (सं० पु०) पीपल का वृक्ष, एक पक्षी, नंगा
पिप्पली (सं० स्त्री०) पीपर ।
पिय (सं० पु०) स्वामी, प्यारा, प्रीतम, भर्ता ।
पियर (सं० पु०) पीला, हल्दी का रंग ।
पिया (सं० पु०) देखो "पिय" ।
पियाना (क्रि० स०) पिलाना, प्यावना । [दुलार, मुहब्बत ।
पियार (सं० पु०) प्रेम, स्नेह, मोह, प्यार, नेह, छोह,
पियारा (वि०) प्रेमी, प्रिय, प्यारा, सनेही, मनोहर ।
पियारी (सं० स्त्री०) प्यारी, प्रिया, मनोहर ।
पियाल (सं० पु०) वृक्ष विशेष, चिरौंजी ।
पियाला (सं० पु०) बेला, कटोरा । [प्यास ।
पियास (सं० स्त्री०) तृषा, तृष्णा, पीने की इच्छा,
पियासा (वि०) प्यासा, तृषावन्त । [का नाम ।
पियासी (सं० स्त्री०) मत्स्य विशेष, ब्राह्मणों के एक स्थान
पियूख (सं० पु०) अमृत ।
पिरकी (सं० स्त्री०) फुड़िया, फोड़ा, फुन्सी ।
पिरथी (सं० स्त्री०) पृथ्वी ।
पिराई (सं० स्त्री०) पीलापन ।
पिराक (सं० पु०) पकवान विशेष, गूझा । [पीड़ा होना ।
पिराना (क्रि० अ०) दुःखना, व्यथना, टपकना, दर्द करना,
पिरीते (वि०) प्यारा ।
पिरोजा (सं० पु०) जंगाली रंग की मणि, मानिक ।
पिरोना (क्रि० अ०) गूँथना, लड़ियाना, नागना, सूई में तागा डालना ।
पिलई (सं० स्त्री०) तापतिल्ली, पिलही, बरवट ।
पिलक (सं० पु०) पीले रंग की एक चिड़िया ।
पिलचना (क्रि० अ०) चिमटना, लिपटना ।
पिलड़ी (सं० स्त्री०) ग्रास, गोली, पिण्डी ।
पिलना (क्रि० अ०) धावा मारना, ठेलना, ढकेलना, ज़ोर करना, कुचल जाना, पिस जाना, चूर होना, लड़ने को आगे बढ़ना ।
पिलपिला (सं० पु०) नर्म, पिचपिचा, ढीला, कोमल ।
पिलपिलाना (क्रि० स०) नरमाना, ढीला करना ।
पिलपिलाहट (सं० स्त्री०) कोमलता, दुर्बलता ।
पिलाना (क्रि० स०) पान कराना, पियाना ।
पिलुवा (सं० पु०) कीड़ा, कीट, कृमि ।
पिल्ला (सं० पु०) कुत्ते का बच्चा ।
पिल्लू (सं० पु०) देखो "पिलुवा" ।
पिशाच (सं०पु०) देव योनि विशेष, प्रेत, भूतना, मलीन, अत्याचारी आदमी, क्रूर मनुष्य ।
पिशाब (सं० पु०) मूत्र, मूत ।
पिशुन (वि०) क्रूर, निन्दक, चुगलखोर, कौवा, नारद ।
पिष्टक (सं० पु०) पूरी, पुवा, मिष्टान्न ।
पिष्टव (सं० पु०) भुवन, जगत, स्वर्ग, दुनिया, बिहिश्त ।
पिष्टिका (सं० स्त्री०) पिष्ट, द्विदल, पीठी ।
पिसाई (सं० स्त्री०) पिसौनी, पीसने की क्रिया या भाव, पीसने की मजदूरी ।

पिसान (सं० पु०) आटा, मैदा, चूर्ण, पीठी, चौरेठा।
पिसाना (क्रि० स०) पिसवाना, पीसने का काम दूसरे से कराना।
पिसू (सं० पु०) पीहू, जन्तु विशेष।
पिसौनी (सं० स्त्री०) पीसने का काम।
पिस्ता (सं० पु०) वृक्ष विशेष। [छिपाया हुआ।
पिहित (त्रि०) आच्छादित, ढँका हुआ, गुप्त,
पींजना (क्रि० स०) रूई धुनना, रूई साफ़ करना।
पी (सं० पु०) पिय, स्वामी, प्रियतम।
पीक (सं० स्त्री०) खखार, थूक, पान का थूक।
पीकदान (सं० पु०) पीतल आदि का वह बर्तन जिसमें थूका जाता है।
पीकदानी (सं० स्त्री०) पीकदान।
पीच (सं० स्त्री०) माँड़, भात का पसाव।
पीचना (क्रि० स०) लतमर्दन करना, कुचलना, पीटना।
पीचू (सं० पु०) फल विशेष, एक प्रकार का झाड़।
पीछा (सं० पु०) पिछला भाग, पश्चात्, पिछवाड़ा, रगेद, खदेड़।
मुहा०—पीछा करना=खदेरना, पीछे पीछे जाना। पीछा फेरना=पीछा दे देना, त्यागना, लौटा देना।
पीछे (क्रि० वि०) पीठ पीछे, परे, इसके बाद, अन्त में, निदान।
मुहा०—पीछे डालना=आगे बढ़ जाना, भूल जाना। पीछे पड़ना=पीछे दौड़ना, बार बार माँगना, सताना। पीछे लगना=साथ लगना, साथी होना, सताना।
पीजन (सं० पु०) भेड़ों के बाल धुनने की धुनकी।
पीजर (सं० पु०) पिंजड़ा।
पीजाना (क्रि० अ०) पी लेना, चूसना, चुप रहना।
पीटना (क्रि० अ०) मारना, कूटना, प्रहारना, ठोंकना, खटखटाना, चूर चूर करना, छाती पीटना, विलाप करना, रोना, पछतावा करना, दुःख करना।
पीठ (सं० स्त्री०) पीछाड़ी का अङ्ग, पीछे, आसन, पिछाड़ी।
मुहा०—पीठ के पीछे डाल लेना=बचाना, रक्षा करना, पीठ के पीछे पड़ना=शरण लेना। पीठ ठोंकना=ढाढ़स देना। पीठ देना=भाग जाना। पीठ पर हाथ फेरना=पीठ थपथपाना, ढाढ़स देना। पीठ फेरना=भाग जाना। पीठ लगना=पछाड़ खाना, मल्लयुद्ध में हार जाना।
पीठा (सं० पु०) एक प्रकार का भोजन। [जुड़ा हुआ।
पीठियाठोंक (वि०) सटे सटे, भिड़ा हुआ, एक दूसरे में
पीठी (सं० स्त्री०) पिसी हुई उरद की दाल।
पीठौता (सं०पु०) पीठ, पत्रे का पृष्ठ।
पीड़ (सं० स्त्री०) बालक के पैदा होने के समय का दुःख जो लुगाई को होता है, व्यथा, वेदना।
पीड़क (वि०) क्लेशकर, दुःखदायी। [देना।
पीड़ना (क्रि० अ०) पीड़ित होना, पीड़ा देना, दुःख
पीड़ा (सं० स्त्री०) दर्द, दुःख, व्यथा, वेदना, तरस।
पीड़ाकर (वि०) पीड़क, क्लेशकर, दुःखदायी। [बीमार।
पीड़ित (वि०) मर्दित, दुःखित, दुःखी, क्लिष्ट,
पीडुरी (सं० स्त्री०) पिंडली।
पीड्यमान् (वि०) पीड़ायुक्त, पीड़ा विशिष्ट।
पीढ़ा (सं० पु०) पटरा, मचिया, मोढ़ा।
पीढ़ाबन्धन (सं० पु०) मङ्गलाचार, भूमिका।
पीढ़ी (सं० स्त्री०) वंशावली, वंश परम्परा।
पीत (वि०) वर्ण विशेष, पीला, पिया हुआ, हड़ताल, ज़र्द रंग (सं० स्त्री०) प्यार, प्रेम, नेह, स्नेह, छोह। [चिरायता, शहद।
पीतक (सं० पु०) केशर, पीला चदंन, सफ़ेद ज़ीरा,
पीतकदली (सं० पु०) चंपक, कदली, सोन केला।
पीतकन्द (सं० पु०) गाजर।
पीतकरवीरक (सं० पु०) पीला कनेर।
पीतगणिका (सं० स्त्री०) स्वर्ण यूथिका, ज़र्द जूही।
पीतम (वि०) प्रियतम, बहुत प्यारा (सं० पु०) स्वामी, भर्ता, पति।
पीतमणि (सं०पु०) पुखराज।
पीतरस (सं० पु०) हाथी।
पीतल (सं० पु०) मिश्रित धातु विशेष, पीली धातु।
पीतला (वि०) पीतल का बना हुआ, पीतल का।
पीताब्धि (सं० पु०) अगस्त्य मुनि, कुम्भज ऋषि।
पीताम्बर (सं० पु०) पीला रेशमी कपड़ा, जिसके कपड़े पीले हों, श्रीकृष्ण, विष्णु।
पीती (सं० पु०) घोड़ा (सं० स्त्री०) प्रीति।
पीतु (सं० पु०) सूर्य, अग्नि, यूथपति।
पीतुदारु (सं० पु०) गूलर, देवदार।

पीथ (सं० पु०) पानी, घी, अग्नि, सूर्य, काल।
पीथि (सं० पु०) घोड़ा।
पीन (वि०) स्थूल, मोटा, पुष्ट।
पीनक (सं० स्त्री०) अफ़ीम के नशे से ऊँघाई, ऊँघास।
पीनना (क्रि० स०) तूमना, रूई को पींजना। [रोग।
पीनस (सं० पु०) खाँसी, जुकाम, पालकी, नाक का एक
पीनसवारे (वि०) पीनस रोग वाला।
पीनस्कंध (सं० पु०) महिष, भैंसा। [(सं० पु०) खली।
पीना (क्रि० स०) पान करना, तम्बाकू का धुआँ खींचना,
पीनी (सं० स्त्री०) पोस्त, तीसी, तिल की खली।
पीप (सं० स्त्री०) मवाद, फोड़े या घाव से जो सफ़ेद लसदार मवाद निकलता है उसे पीप कहते हैं।
पीपर (सं० पु०) देखो "पीपल"।
पीपरी (सं० पु०) छोटा पाकड़, पकरिया।
पीपल (सं० पु०) अश्वत्थ वृक्ष, पीपर का पेड़।
पीपला (सं० पु०) खड्ग, तलवार आदि की नोक।
पीपलामूल (सं० पु०) पीपल की जड़, औषध विशेष।
पीपा (सं० पु०) मद्य रखने का काष्ठ पात्र।
पीब (सं० स्त्री०) मोज, दाद, पूँप, मवाद।
पीबियाना (क्रि० अ०) पकना, गलगलाना।
पीयूष (सं० पु०) अमृत, दुग्ध।
पीर (सं० स्त्री०) पीड़, दर्द, दुःख, व्यथा, वेदना।
पीरा (सं० पु०) दुःख, दर्द, पीड़ा।
पीराई (सं० स्त्री०) ढोल बजाने वाला।
पीलक (सं० पु०) पिपीलिका, चिउँटा, मकौड़ा।
पीला (वि०) पीतवर्ण, पेवड़ी, बसन्ती रंग।
पीलाई (सं० स्त्री०) पीतत्व, पीला रङ्ग।
पीलाम (सं० पु०) साटिन, एक तरह का रेशमी कपड़ा।
पीली (सं० स्त्री०) मोहर, सुवर्ण मुद्रा।
पीलु (सं० पु०) प्रसून, परमाणु, मातङ्गज, अस्थि खण्ड, वाण कृमि, प्रसिद्ध फल विशेष।
पीवकड़ (सं० पु०) मद्यप, पिवैया।
पीवर (वि०) स्थूल, मोटा।
पीवरा (सं० स्त्री०) अश्वगंधा, शतावर। [तरुणी गौ।
पीवरी (सं० स्त्री०) शतमूली, शालपर्णी, युवती स्त्री,
पीसना (क्रि० स०) चूर चूर करना, बुकनी करना, कचेलना, बूकना, चूर्ण करना, आटा करना, दलना, चकनाचूर करना, दाँत की तरह कड़कड़ाना।

पीहर (सं० पु०) मयका, मैका, नइहर, स्त्री के माँ बाप का घर।
पीहू (सं० पु०) कृमि, पिसू।
पुं (सं० पु०) पुरुष, नर, पुमान्।
पुंगनिया (सं० स्त्री०) फुल्ली या लौंग जो नाक में पहनी जाती है। [शब्द।
पुंलिङ्ग (सं० पु०) पुरुष चिह्न, पुरुषत्व, पुरुषवाची
पुंशक्ति (सं० स्त्री०) पुरुषत्व, तेज़।
पुंश्चली (सं० स्त्री०) असती स्त्री, वेश्या, व्यभिचारिणी, छिनाल स्त्री। [दुग्ध, सियौर, दूध।
पुंसवन (सं० पु०) गर्भ संस्कार विशेष, संस्कार विशेष,
पुंस्त्व (सं० पु०) पुरुषत्व वीर्य।
पुआर (सं० पु०) धान आदि का डंठल।
पुआल (सं० पु०) पयाल, पुआरा।
पुकार (सं० स्त्री०) हाँक, गोहार, डाँक, चिल्लाहट।
पुकारना (क्रि० अ०) हाँक मारना, चिल्लाना, गोहराना, बुलाना।
पुखराज (सं० पु०) गोमेदक, पद्मराग।
पुङ्ख (सं० पु०) वाण, मूल, पुष्कल, तीर का वह हिस्सा जो चिल्ले पर जोड़ा जाता है।
पुञ्ज (सं० पु०) ढेर, समूह, राशि, श्रेणी।
पुञ्जफल (सं० पु०) सुपाड़ी।
पुद्गल (सं० पु०) आत्मा।
पुङ्गव (सं० पु०) वृप, बैल, माननीय, श्रेष्ठ, उत्तर पाद श्रेष्ठ वाचक शब्द—जैसे नर पुङ्गव, मनुष्य में श्रेष्ठ।
पुङ्गवकेतु (सं० पु०) शिव, महादेव।
पुचकार (सं० पु०) द्वादस, सान्त्वना, प्यार। [करना।
पुचकारना (क्रि० स०) सान्त्वना देना, दुलार करना, प्यार
पुचारा (सं० पु०) भीत लीपने की कूँची।
पुच्छ (सं० पु०) लाङ्गूल, पूँछ, पोंछ, दुम।
पुच्छल (वि०) पूँछयुक्त, पूँछ वाला। [समझा जाता है।
पुच्छलतारा (सं० स्त्री०) धूम्रकेतु, पूँछदार तारा जो अशुभ
पुछवैया (सं० पु०) खोजनहार, खोजी, अनुसंधानकारी।
पुजना (क्रि० अ०) पूरा होना, प्रतिष्ठा पाना।
पुजवाना (क्रि० स०) पूरा कराना, भराना, पूजा कराना।
पुजाना (क्रि० स०) पुजवाना।
पुजापा (सं० पु०) पूजा की सामग्री।
पुजारी (सं० पु०) पूजा करने वाला, पूजक, अर्चक।

पुञ्ज (सं० पु०) राशि, समूह, ढेर, थोक, तोदा।
पुञ्जदल (अव्य०) बहुतसा।
पुञ्जा (सं० पु०) गुच्छा, समूह।
पुञ्जि (सं० पु०) समूह, पूँजी।
पुट (सं० पु०) युग्म, मिलाव, घुलाव, द्रव्यकारक, दोना, ढँकना, मिलाना, पद्म, कमल, घोड़ों का सुम, औषधि पकाने का पात्र विशेष।
पुटक (सं० पु०) दोना, पद्म।
पुटकिनी (सं० पु०) पद्मिनी, दुनिया।
पुटभेदन (सं० पु०) नगर, ग्राम, शहर, गाँव।
पुटिका (सं० स्त्री०) एला, इलायची। [दित।
पुटित (वि०) प्रणवादि युक्त मन्त्र, युक्त, आच्छा-
पुटी (सं० स्त्री०) कौपीन, लँगोटी, दोना। [कड़ा भाग।
पुट्ठा (सं० पु०) जानवर का चूतड़, चूतड़ का ऊपरी कुछ
पुड़ा (सं० पु०) पुड़िया, गाँठ, पुलिन्दा।
पुड़िया (सं० स्त्री०) कागज़ आदि की छोटी सी गाँठ जिसमें दवा आदि बाँधी जाती है।
पुड़ी (सं० पु०) खाल, ढोलक का चमड़ा।
पुण्ड (सं० पु०) तिलक, टीका।
पुण्डक (सं० पु०) माधवी लता।
पुण्डरीक (सं० पु०) अग्नि कोणस्थ दिग्गज, व्याघ्र, आम्र, सर्व, हस्ति, पर, दमनक वृक्ष, कमण्डलु, श्वेतपर्ण, कुष्ठ विशेष, कीट विशेष, श्वेत पद्म, सित पद्म, श्वेत छत्र, भेषज (वि०) श्वेत।
पुण्डरीकाक्ष (सं०पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, जिसकी आँखें कमल सी हों।
पुण्ड्र (सं० पु०) इक्षु विशेष, दैत्य विशेष, देश विशेष।
पुण्य (सं० पु०) धर्म, सुकृत (वि०) पवित्र, शुद्ध, पावन, सुन्दर, सुगंधित।
पुण्य कर्म (सं० पु०) धर्म कर्म।
पुण्यकृत (सं० पु०) धार्मिक, सुकृत।
पुण्यगंध (सं० पु०) चम्पक, चंपा।
पुण्यजन (सं० पु०) सज्जन, कुबेर, यक्ष।
पुण्यजनेश्वर (सं० पु०) कुबेर, धन का देवता।
पुण्यभूमि (सं०स्त्री०) आर्यावर्त देश, बिन्ध्य और हिमालय की बीच की पृथ्वी, पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक।
पुण्यवान् (वि०) धर्मात्मा, सुकृतिमान, धार्मिक।
पुण्यशील (सं० पु०) धार्मिक, पवित्र।
पुण्यश्लोक (सं० पु०) विष्णु, युधिष्ठिर, नल।
पुण्याई (सं० स्त्री०) सुकृत कर्म, धार्मिकता।
पुण्यात्मा (वि०) पुण्यवान्, धर्मात्मा, पवित्रात्मा। [मूर्ति।
पुतला (सं० पु०) मूर्ति, छबि, प्रतिमा, काठ की बनी
पुतली (सं० स्त्री०) आँख का तारा, छोटा पुतला।
पुताई (सं० स्त्री०) पोतने की क्रिया, पोतने की मजूरी।
पुत्र (सं० पु०) बेटा, सन्तान, अपत्य, सुत।
पुत्रजीव (सं० पु०) पुत्र जीवक वृक्ष, पतजीव।
पुत्रदा (सं०स्त्री०) बंध्या, कर्कोटकी, बाँझ, खेखसा, सफ़ेद भटकटैया।
पुत्रभद्रा (सं०स्त्री०) वृहज्जीवन्ती लता। [सन्तानकांक्षी।
पुत्रार्थी (वि०) पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा रखने वाला,
पुत्रिका (सं० स्त्री०) कन्या, बेटी, गुड़िया, लड़की।
पुत्रिका पुत्र (सं० पु०) पुत्री का पुत्र, दत्तक लिया हुआ कन्या पुत्र।
पुत्रिणी (वि०) पुत्रवती, लड़के वाली।
पुत्रेष्टि (सं० स्त्री०) सन्तानार्थ यज्ञ।
पुदीना (सं० पु०) एक प्रकार का सुगंधित शाक।
पुद्गल (सं० पु०) आत्मा, शरीर (वि०) सुन्दर, सम्पत्तिमान्।
पुन (अव्य०) फिर, बहुरि, पीछे।
पुनः (अव्य०) द्वितीय बार, भेद, अवधारण, अधिकार, प्रथम निश्चय, पक्षान्तर, फिर फिर, और, फिर, लेकिन, यक़ीनन।
पुनः पुनः (अव्य०) बार बार, फिर फिर।
पुनरपि (अव्य०) द्वितीय बार।
पुनरागमन (सं० पु०) दूसरी बेर, और बेर।
पुनराय (सं० स्त्री०) दूसरी बेर, और बेर। [कथन।
पुनरुक्ति (सं० स्त्री०) फिर कहना, दोबारा कहना, पुनः
पुनरुत्थान (सं० पु०) फिर उठना, बहुरना
पुनर्जन्म (सं० पु०) दूसरा जन्म, पुनर्भव।
पुनर्नव (वि०) जो फिर से नया हो गया हो।
पुनर्नवा (सं०पु०) शाक विशेष, पथरी, गदहपुन्ना।
पुनर्भव (सं० पु०) नाख़ून, पुनर्जन्म, फिर पैदायश।
पुनर्भू (सं० स्त्री०) दुबारा ब्याही स्त्री, द्विरूढ़ा।
पुनर्वसु (सं० पु०) सप्तम नक्षत्र, गन्धर्व, मुनि भेद।
पुनर्विवाह (सं० पु०) प्रथम रजोदर्शन, संस्कार विशेष, दोबारा ब्याह।

पुनवाना (क्रि० स०) अनादर करना, अपमान करना, निरादर करना ।
पुनश्च (अव्य०) पुनरपि, फिर भी ।
पुनि (अव्य०) फिर, बहुरि, पुनः ।
पुनिपुनि (क्रि० वि०) बार बार, पुनः पुनः ।
पुनीत (वि०) पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ ।
पुन्ना (क्रि० अ०) गाली देना, तिरस्कार करना ।
पुन्नाग (सं० पु०) वृक्ष विशेष, वायविडङ्ग का पेड़, सफ़ेद कमल, जायफल, नरश्रेष्ठ ।
पुन्नार (सं० पु०) चकवड़ का पेड़ ।
पुमान (सं० पु०) पुरुष, मनुष्य, आदमी ।
पुर (सं० पु०) नगर, ग्राम, शहर, गाँव, घर, देह, एक राक्षस का नाम।
पुरइन (सं० स्त्री०) कुमुदिनी, कुई, नलिनी।
पुरउब (क्रि०स०) पूर्ण करेंगे, पूरा करेंगे ।
पुरखा (सं० पु०) पूर्व पुरुष, पूर्वज ।
पुरजन (सं० पु०) पुर के मनुष्य ।
पुरञ्जन (सं० पु०) रूह, जीव, आत्मा।
पुरञ्जय (सं० पु०) एक सूर्यवंशी राजा, रामचन्द्र जी का जन्म इन्हीं के वंश में हुआ था, इन्होंने बैल की सवारी कर दैत्यों से युद्ध किया था, जिसमें दैत्य हार गये थे तभी से इनका नाम काकुत्स्थ पड़ा और इनके वंशज काकुत्स्थ कहाते हैं ।
पुरट (सं० पु०) स्वर्ण, सोना ।
पुरण (सं० पु०) समुद्र ।
पुरत (अव्य०) आगे ।
पुरनिया (सं० पु०) प्राचीन, बूढ़ा, हितकारी ।
पुरन्दर (सं० पु०) इन्द्र (वि०) चोर ।
पुरबला (वि०) पूर्व का, पहले का, पूर्व जन्म का ।
पुरबहु (क्रि० स०) पूरा करो, भर दो, पूजा दो ।
पुरबा (सं० पु०) पुरवा, करई, कुल्हड़ ।
पुरबासी (सं०पु०) नगर का रहने वाला, नगर निवासी ।
पुरबी (सं० स्त्री०) एक रागिनी का नाम ।
पुरवइया (सं० स्त्री०) पूरब की हवा ।
पुरवट (सं० पु०) चमड़े का एक बड़ा डोल, चरसा, मोट।
पुरवा (सं० पु०) छोटा गाँव, खेड़ा।
पुरवाई (सं० स्त्री०) पूरब की हवा ।
पुरश्चरण (सं० पु०) विधि विहित किसी देवता की [पूजा । [पूजित ।
पुरस्कार (सं० पु०) पारितोषिक, सत्कारपूर्वक दान, साधु वाद, भेंट, इनाम ।
पुरस्कृत (वि०) पारितोषिक प्राप्त, धन्यवाद प्राप्त,
पुरस्तात (अव्य०) आगे आगे, पेश्तर, पूर्व, पूर्व में ।
पुरा (सं० पु०) गाँव, नगर, पुरवा (अव्य०) अतीत, पुराण, भावि, प्राचीन, पुराना, भूत, समीप, निकट ।
पुराकृत (सं० पु०) पहले का किया हुआ, पूर्व जन्म, अदृष्ट, भाग्य ।
पुरार्चीन (अव्य०) प्राचीन, पुराना, दिनी ।
पुराण (सं० पु०) पुराण के ग्रन्थ वे कहे जाते हैं जिनमें पुराने इतिहास के बहाने धर्म तत्व की बातें कही गयी हैं, अधिकांश पुराणों के रचयिता या संग्रहकर्ता व्यास मुनि हैं, इन पुराणों में विशेषकर पाँच बातों का वर्णन है—संसार की उत्पत्ति, प्रलय और प्रलय के पीछे फिर संसार की उत्पत्ति, देवता और शूरवीरों की वंशावली, मनुओं का राजा और उनके वंश के लोगों का व्यवहार और चलन, पुराणों की संख्या अट्ठारह है जिनके नाम ये हैं—ब्रह्मपुराण, पद्म पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, अग्नि पुराण, गरुड़ पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव पुराण, लिङ्गपुराण, नारद पुराण, स्कन्द पुराण, मार्कण्डेय पुराण, भविष्यपुराण, मत्स्यपुराण, बाराहपुराण, कूर्मपुराण, वामन पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, इनके अतिरिक्त अट्ठारह उपपुराण भी हैं, सब से पहला ग्रंथ विशेष (वि०) पुराना, पहले का।
पुराणपुरुष (सं० पु०) विष्णु भगवान्, वृद्ध पुरुष, बूढ़ा आदमी ।
पुराणवेत्ता (सं० पु०) पौराणिक, पुराणादि, पुराणज्ञ ।
पुरातत्व (सं० पु०) प्राचीन समय सम्बन्धी विद्या ।
पुरातन (वि०) प्राचीन, अगला, अगले समय का ।
पुरातन कथा (सं० स्त्री०) इतिहास, प्राचीन, वृत्तान्त ।
पुरातल (सं० पु०) तलातल ।
पुरान (वि०) पुराना ।
पुराना (क्रि० स०) भर देना, भरना, पूरा करना (वि०) अगले समय का, प्राचीन, पुरातन ।
पुरारी (सं० पु०) शिव, महादेव, इन्होंने दैत्यों के पुर नामक नगर को जलाया था इस से इनका नाम पुरारी पड़ा है ।
पुरावती (सं० स्त्री०) एक नदी ।

पुरावसु (सं० पु०) भीष्म।
पुरावृत्त (सं० पु०) पुराना हाल।
पुरासाह (सं० पु०) इन्द्र।
पुरि (सं० स्त्री०) शरीर, नदी, पुरी।
पुरी (सं० पु०) नगरी, गाँव, बस्ती, जगन्नाथ पुरी।
पुरीतत (सं० स्त्री०) नाड़ी भेद, आँत, वह नाड़ी जिसमें सोते समय मन रहता है।
पुरीष (सं० पु०) विष्टा, मल, गूह, गोबर।
पुरु (वि०) प्रचुर (सं० पु०) स्वर्ग, पराग, एक राष्ट्र का नाम, ये शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न ययाति के धौनिष्ठि पुत्र थे, ययाति वृद्ध हो गये थे पर कामवासना नहीं गयी थी इन्होंने अपने पुत्रों से युवावस्था माँगी पर किसी ने न दी सब से कनिष्ठ पुत्र पुरु ने दिया, ययाति ने पुरु को अपना उत्तराधिकारी बनाया। एक चन्द्रवंशी राजा का नाम, इन्होंने अलेकज़ेंडर को वितस्ता नदी पर रोका था, उसमें ये हार गये थे पर अलेकज़ेंडर ने इनकी वीरता से प्रसन्न हो इनका राज्य लौटा दिया था।
पुरुकुत्स (सं० पु०) मान्धाता के पुत्र, ये राजा शशिविन्दु की कन्या इन्दुमती के गर्भ से उत्पन्न हुये थे, महर्षि के शाप से इनकी स्त्री नदी हो गई थी।
पुरुखा (सं० पु०) बड़े, बाप दादे, पूर्वपुरुष।
पुरुखे (सं० पु०) पुरुखा का बहुबचन। [मामा, विष्णु।
पुरुजित् (सं० पु०) कुन्तिभोज का पुत्र, अर्जुन का
पुरुदस्म (सं० पु०) विष्णु।
पुरुबा (सं० पु०) पूर्व दिशा।
पुरुभोजा (सं० पु०) भेड़, मेढ़ा।
पुरुराज (सं० पु०) इला के गर्भ से उत्पन्न बुद्ध का पुत्र. इनकी राजधानी प्रयाग थी, इसने गंगा किनारे पर एक क़िला बनाया था जिसका डीह आज भी पुरानी झूँसी में वर्तमान है, इसकी राजधानी का नाम था प्रतिष्ठानपुर, इन्द्र के शाप से उर्वशी नाम की अप्सरा मृत्युलोक में पुरूरवा की रानी होकर आयी थी, पर पुरूरवा से किसी कारण रूठकर यह चली गयी, उसके गर्भ से पुरुराज को सात सन्तान हुए थे।
पुरुष (सं० पु०) प्रमान, मनुष्य, नर, पुरुखा, परमात्मा, जीव।
पुरुषत्व (सं० पु०) पुंस्त्व, पुरुष होने का भाव।
पुरुषसिंह (सं० पु०) श्रेष्ठ मनुष्य।
पुरुषा (सं० पु०) पूर्व पुरुष, पुरुखा।
पुरुषाकार (वि०) पुरुष चेष्टित, पौरुष, शौर्य।
पुरुषादक (सं० पुं०) नरभक्षी राक्षस।
पुरुषाधम (सं० पु०) नीच, चण्डाल, पामर, निकृष्ट।
पुरुषार्थ (सं०पु०) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, बल, पराक्रम, साहस, परोपकार, वीरता।
पुरुषोत्तम (सं०पु०) नरोत्तम, नारायण, विष्णु, श्रीकृष्ण।
पुरुह (वि०) प्राचीन, बहुत्व, बहुत, अधिक।
पुरुहूत (सं० पु०) इन्द्र।
पुरूरवा (सं० पु०) पुरुराज।
पुरैन (सं० पु०) देखो "पुरइन"।
पुरोचन (सं० पु०) दुर्योधन का मित्र।
पुरोडास (सं० पु०) होम की सामग्री, खीर, हवि।
पुरोधा (सं० पु०) देखो "पुरोहित"।
पुरोवर्ती (वि०) अगुवा, अग्रगामी।
पुरोहित (सं० पु०) पुरोधा, गुरु, कुल गुरु, उपाध्याय, याजक, ऋत्विक्।
पुरोहितानी (सं० स्त्री०) पुरोहित की स्त्री।
पुर्खा (सं० पु०) देखो "पुरखा"।
पुर्चक (सं० स्त्री०) छल, बढ़ावा, ढाढ़स।
पुर्वा (सं० स्त्री०) पूर्व की वायु, पूरब की हवा।
पुर्वाई (सं० स्त्री०) पूर्व की हवा।
पुर्वाना (क्रि० स०) भरना, पूर्ण करना।
पुर्वैया (सं० स्त्री०) पूरब की हवा।
पुर्सा (सं० पु०) मनुष्य के ऊँचाई के बराबर, मनुष्य के डील की ऊँचाई के बराबर, चार हाथ की नाप।
पुल (वि०) विपुल (सं० पु०) एक क़िस्म की पहाड़ी मिट्टी, बंध, बाँध, सेतु।
पुलक (सं० पु०) रोमाञ्च, अङ्गुष्ठ, अंगूठा, मणि, चिन्ह, हस्ति भोजन, हरिताल, गंधर्व विशेष, मद्यपात्र, राई।
पुलकावलि (सं० स्त्री०) आनन्द से प्रफुल्ल रोम।
पुलकित (वि०) हर्षित, आनन्दित, रोमाञ्चित
पुलपुला (वि०) पिलपिला, गुलगुला।
पुलपुलाना (क्रि० अ०) डरना, पोपलाना, ढीला पड़ना
पुलपुलाहट (सं० स्त्री०) भय, डर।
पुलस्त्य (सं० पु०) एक मुनि का नाम, रावण का दादा, ब्रह्मा के मानस पुत्र, सप्त ऋषियों में से एक ऋषि।

पुलह (सं० पु०) ब्रह्मा का मानस पुत्र जो नाभि से उत्पन्न हुए थे, ये सप्तऋषियों के अन्तर्गत हैं। इनकी स्त्री का नाम गति था जिसके गर्भ से कर्दम, अम्बरीष और सहिष्णु नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे।

पुलहाना (क्रि० स०) मनाना, फुसलाना।

पुलाक (सं० पु०) संक्षेप, अल्पता, छोटापन, थोड़ा सा।

पुलापित (सं० पु०) घोड़े की एक चाल।

पुलाव (सं० पु०) मांसोदन।

पुलिन (सं० पु०) तट, किनारा, नदी में बालू का टापू, जज़ीरा, द्वीप।

पुलिन्द (सं० पु०) भिल्ल, निषाद, शबर, म्लेच्छ, चाण्डाल भेद।

पुलिन्दा (सं० पु०) पार्सल, गठरी, गठिया, गाँठ।

पुलोम (सं० पु०) एक दैत्य जिसकी बेटी का नाम शची था जो इन्द्र को ब्याही गयी थी।

पुलोमजा (सं० स्त्री०) शची, इन्द्राणी।

पुलोमही (सं० स्त्री०) अफ़ीम।

पुलोमा (सं० स्त्री०) महर्षि भृगु की पत्नी और च्यवन की माता, दैत्य राज वैश्वानर की ये कन्या थीं। [पीरा।

पुवाल (सं० पु०) खर, तिनका, पिचाली, डाँरी, पयाल,

पुषित (वि०) पाला हुआ।

पुष्कर (सं० पु०) हस्ति शुण्डाग्र, जल, व्योम, मुख, खड्गफल, असिकोष, म्यान, पद्म, तीर्थ विशेष, द्वीप विशेष बुद्ध, भाग, रोग विशेष, भाग विशेष, सारस पक्षी, क्रूरवार, भद्रा तिथि, भ्रमपाद नक्षत्र, चरित, अशुभजनक योग विशेष, एक तीर्थ का नाम जो अजमेर से ३ कोस पर है, पोखरा, तलाव, कमल, ढोल, तुरही। एक दानव का नाम जो नल का छोटा भाई था, जो नल को जुए में हराकर निषध का राजा हुआ था।

पुष्करमूल (सं० पु०) पोहकरमूल, औषधि विशेष।

पुष्करिणी (सं० स्त्री०) स्थल, पद्मिनी, पुष्कर मूल, हस्तिनी, पद्मिनी, शत धनु परिमित समकोण जलाशय, सौ धनुष परिमित चौकोना तालाब, सूरजमुखी फूल।

पुष्कल (सं० पु०) ग्रास चतुष्टयात्मक भिक्षा, आठ मुट्ठी भर (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, नेक, अधिक।

पुष्ट (वि०) मोटा, स्थूल, तगड़ा, पाला, पोषा।

पुष्टई (सं० स्त्री०) पुष्टकर औषधियाँ, तेजकर, ताक़तवर।

पुष्टि (सं० स्त्री०) पोषण, वृद्धि, अश्वगंध, पात्र का भेद।

पुष्टिकर (सं० पु०) बलवर्द्धक, पुष्टई।

पुष्टिका (सं० स्त्री०) जल की सीप, सुतही, सीपी।

पुष्टिवर्द्धक (सं० पु०) बलवर्द्धक, पुष्टई।

पुष्टिमार्ग (सं० पु०) वल्लभ सम्प्रदाय।

पुष्प (सं० पु०) कुसुम, सुमन, फूल, स्त्रीरज, विकाश, रत्नमय, कङ्कण, फूली, रसवत, कुबेर का विमान।

पुष्पक (सं० पु०) कुबेर का विमान।

पुष्पकरण्डक (सं० पु०) बाँस की बनी फूल रखने की चंगेली, फूलों की पिटारी।

पुष्पकेतन (सं० पु०) कुबेर, कामदेव।

पुष्पकेतु (सं० पु०) शिव, महादेव।

पुष्पचाप (सं० पु०) कामदेव।

पुष्पदन्त (सं० पु०) वायुकोणस्थ दिग्गज, एक विद्याधर का नाम जिसने महिम्न स्तोत्र बनाया है।

पुष्पधरी (सं० पु०) फूलों की बाड़ी।

पुष्परस (सं० पु०) फूलों का रस, मकरन्द, मधु।

पुष्पराग (सं० पु०) मणिभेद, पद्मराग, पुखराज।

पुष्परेणु (सं० पु०) पुष्पराज, पराग।

पुष्परोचन (सं० पु०) नागकेशर।

पुष्पवर्त (सं० पु०) सूर्य, चन्द्र।

पुष्पवती (सं० स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

पुष्पविमान (सं० पु०) फूलों का विमान, देवताओं का विमान, कुबेर का विमान।

पुष्पाञ्जलि (सं० स्त्री०) निछावर, भेंट, दोनों हाथों में फूल ले कर और कुछ मन्त्र पढ़ कर देवता को चढ़ाना। [विकसित।

पुष्पित (वि०) फूला हुआ, विकसा हुआ, प्रफुल्ल,

पुष्पिताग्रा (सं० स्त्री०) एक अर्द्धसम वृत्त, एक पहर का नाम।

पुष्पेषु (सं० पु०) कामदेव।

पुष्पोद्यान (सं० पु०) फुलवारी, बाग़।

पुष्य (सं० स्त्री०) आठवाँ नक्षत्र, पूस, कलियुग।

पुस्तक (सं० स्त्री०) ग्रन्थ, पोथी, किताब।

पुस्तकाकार (सं० पु०) पोथी के रूप का। [संग्रह हो।

पुस्तकालय (सं० पु०) वह घर जिसमें पुस्तकों का

पुस्तकी (सं० स्त्री०) पोथी, पुस्तक।
पुस्तिका (सं० स्त्री०) छोटी पुस्तक।
पुहुप, पुहुप (सं० पु०) फूल, पुष्प, सुमन।
पुहुमि (सं० स्त्री०) पृथ्वी।
पूँगी (सं० स्त्री०) बाँसुरी, एक प्रकार की बाँसुरी जिसको साँप पकड़ने वाले बजाते हैं।
पूँछ (सं० स्त्री०) पुच्छ, लांगूल, दुम।
पूँछ ताँछ (सं० स्त्री०) दर्याफ़्त। [करना।
पूँछना (क्रि० स०) पोंछना, पछोंना, झाड़ना, साफ़
पूँछार (वि०) पूँछ वाला, पोंछियार।
पूँजी (सं० स्त्री०) मूलधन, सम्पत्ति, धन, असल धन, सम्पदा।
पूआ (सं० पु०) मीठी पूड़ी। [का वृक्ष।
पूग (सं० पु०) गुवाक वृक्ष, समूह, छन्द, भाव, सुपारी
पूगना (क्रि० अ०) पहुँचना, पास जाना।
पूगीफल (सं० पु०) गुवाक फल, सुपारी।
पूछ (सं० स्त्री०) खोज, अन्वेषण, प्रश्न, आदर, सम्मान।
पूछना (क्रि० स०) प्रश्न करना, जिज्ञासा करना, सवाल
पूछपाछ (सं० स्त्री०) प्रश्न, जिज्ञासा। [करना।
पूछा (सं० स्त्री०) मछली की पूँछ।
पूजक (सं० पु०) पूजा कर्ता, सेवक, पूजने वाला, पुजारी।
पूजन (सं० पु०) अर्चन, अर्चा, पूजा, ख़िदमत।
पूजना (क्रि० स०) पूजा करना, अर्चना, भजना, ध्यान करना, बहुत मानना।
पूजनीय (वि०) पूजने योग्य, पूज्य, मान्य।
पूजयिता (वि०) पूजक, पूजने वाला। [सम्मान।
पूजा (सं० स्त्री०) अर्चा, पूजन, अर्चन, सेवा, आदर,
पूजारी (सं० पु०) अर्चक, आराधक, पूजने वाला सेवक।
पूजित (वि०) पूजा हुआ, अर्चित। [गुरुजन।
पूज्य (वि०) पूजने योग्य, पूजनीय, पूज्यमान (सं०पु०)
पूज्यमान (वि०) पूज्य, पूजनीय।
पूठ (सं० पु०) कूला, पशु के चूतड़ की हड्डी, पुट्ठा।
पूठा (सं० पु०) गाता, गत्ता, जिल्द।
पूड़ा (सं० पु०) पकौड़ा, फुलौड़ी, बड़ा।
पूड़ी (सं० स्त्री०) पूरी।
पूणी (सं० स्त्री०) रूई का पहल, पियुनी।
पूत (सं० पु०) पुत्र, बेटा (वि०) पवित्र, पाक, शुद्ध।
पूतना (सं० स्त्री०) हरड़, जटामासी, रोग विशेष, दानवी, जो बकासुर की बहिन थी, जिसको श्रीकृष्ण ने दूध पीने के काज से मारा था।
पूतनारि (सं० पु०) श्रीकृष्ण।
पूतना सूदन (सं० पु०) श्रीकृष्ण।
पूतली (सं० स्त्री०) गुड़िया, पुत्तलिका।
पूता (सं० स्त्री०) दूर्वा, पवित्रा, दाम, पाक।
पूतात्मा (सं० पु०) निष्पाप, पाक, शुद्ध स्वभाव।
पूति (सं० स्त्री०) पवित्रता, शुद्धता, दुर्गंध, हरद्वारी कुश।
पूति कर्णक (सं० पु०) कर्ण रोग विशेष, कान का पकना।
पूतिगंध (सं० पु०) गंधक, इङ्गुदी वृक्ष, दुर्गन्ध।
पूतीकृत (वि०) शुद्ध किया हुआ, रचित।
पूदीना (सं० पु०) सुगन्धित साग विशेष।
पूनसलाई (सं० स्त्री०) पतली लकड़ी जिस पर रूई की पूनियाँ कातने के लिये बनाते हैं। [का अन्तिम दिन।
पूनियाँ (सं० स्त्री०) पूर्णमासी, पौर्णमा, हिन्दी महीने
पूनयो (सं० स्त्री०) पूनियाँ।
पूनी (सं० स्त्री०) रूई का गाला, धुनी हुई रूई की वह बत्ती जिस से सूत काता जाता है।
पूनो (सं० स्त्री०) पौर्णमा। [फुलका।
पूप (सं० पु०) मिष्टक, बड़ा पुआ, मालपुआ, मीठी पूरी,
पूपला (सं० स्त्री०) पोली नली।
पूय (सं० पु०) पीप, मवाद।
पूर (सं० पु०) जल समूह, ब्रह्म शुद्धि, खाद्य विशेष, बाढ़, वह पदार्थ जो किसी पकवान के भीतर भरा जाय।
पूरक (सं० पु०) बिजौरा नीबू, गुणक, प्राणायाम का एक भेद जिसमें श्वास को भीतर की ओर ले जाते हैं।
पूरण (सं० पु०) पूरक, पिण्ड, वृष्टि, भरने या पूरा करने की क्रिया, अङ्क, गुणन, सेतु, समुद्र (वि०) पूरक, पूरा करने वाला।
पूरणीय (वि०) पूरा करने के योग्य।
पूरना (क्रि० स०) बिनना, बुनना, बनाना।
पूरब (सं०पु०) पूर्व दिशा। [पक्का।
पूरा (वि०) सब, सारा, भरा, समाप्त, ठीक, तमाम,
पूराई (सं० स्त्री०) भराई, पूर्णता।
पूरिया (सं० स्त्री०) रागिनी विशेष।
पूरी (सं० स्त्री०) सुहारी, घी से बनी रोटी। [सब, सारा।
पूर्ण (वि०) पूरित, सकल, पूरा, भरपूर, भरा, समस्त,

पूर्णकुम्भ (सं० पु०) जलपूरित घट, पूर्णकलस ।
पूर्णज्या (सं० स्त्री०) सीधा रोदा, सीधी रेखा ।
पूर्णता (सं० स्त्री०) पूर्ति, पूरण, भरण ।
पूर्णपात्र (सं० पु०) वस्तु पूर्ण पात्र, २५६ मुट्ठी से भरा चावल जो होमादिक पीछे ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जाती है ।
पूर्णभूत (सं० पु०) भूत काल का एक भेद ।
पूर्णमा (सं० स्त्री०) पूर्णमासी ।
पूर्णमासी (सं० स्त्री०) पूर्णिमा, पूनो ।
पूर्णा (सं० स्त्री०) पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या इनकी पूर्ण संज्ञा है ।
पूर्णावतार (सं० पु०) भगवान का अवतार विशेष, श्रीकृष्ण भगवान । [बलि ।
पूर्णाहुति (सं० स्त्री०) होम में सब के पीछे आहुति या
पूर्णिमा (सं० स्त्री०) वह तिथि जिस दिन चन्द्रमा की पूर्ण कला हो, पूर्णमासी ।
पूर्त (वि०) पूरा, समाप्त, पूरित (सं० पु०) बावली, तालाब, कुआँ, बगीचा, देव मन्दिर ।
पूर्त्ति (सं० स्त्री०) भरण, पालन, पुराई, पूर्णता, समाप्ति ।
पूर्व (सं० पु०) पूरब दिशा, प्राचीन दिशा (वि०) पूरब दिशा का, पर्वी, पहला, पहले, प्रथम, आगे ।
पूर्वगङ्गा (सं० स्त्री०) नर्मदा नदी ।
पूर्वज (सं० पु०) ज्येष्ठ भ्राता, पूर्वोत्पन्न, पूर्वभव ।
पूर्व दिन (सं० पु०) गत दिवस, गुजरा हुआ काल ।
पूर्वपक्ष (सं० पु०) कृष्ण पक्ष, मुद्दई का दावा ।
पूर्वपुरुष (सं० पु०) पुरखा, पिता पितामह आदि ।
पूर्वयाम (सं० पु०) पहला पहर । [का भेद ।
पूर्वराग (सं० पु०) नायक और नायिका की अवस्था
पूर्ववत् (वि०) पहले की तरह, पहले के समान ।
पूर्ववर्ती (वि०) आगे वाला, अग्रसर ।
पूर्वा (सं० स्त्री०) प्रथम, प्राची दिशा, पूर्व दिशा (वि०) पूर्व पुरुष (सं० पु०) गोवड़ा गाँव, छोटी बस्ती ।
पूर्वाभिमुख (सं० पु०) पूरब के सम्मुख । [अभ्यास ।
पूर्वाभ्यास (सं० पु०) आगे का अभ्यास, पहले का
पूर्वाषाढ़ा (सं० स्त्री०) बीसवाँ नक्षत्र ।
पूर्वाह्न (सं० पु०) दिन का पहिला याम । [विशेष ।
पूर्वी (वि०) पूर्व देशी, पूर्व का (सं० स्त्री०) रागिनी
पूर्वोक्त (वि०) पहले कहा हुआ ।

पूला (सं० पु०) पूलक, गड्डी, अटिया, घास का बोझा अथवा गट्ठा ।
पूष (सं० पु०) शहतूत का पेड़, पौष, पूस, धनुमास ।
पूषण, पूषन (सं० पु०) सूर्य, सूरज । [मातृका का नाम ।
पूषणा, पूषना (सं० स्त्री०) कार्तिकेय की अनुचरी, एक
पूषा (सं० स्त्री०) चन्द्रकला विशेष, वायु विशेष ।
पूषात्मज (सं० पु०) मेघ, बादल ।
पूस (सं० पु०) पौष, चन्द्रवरस का नवाँ महीना, जिसमें पूरा चाँद पुष्य नक्षत्र के पास रहता है और पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र होता है ।
पृक्त (सं० पु०) अनाज, अन्न ।
पृच्छक (सं० पु०) जिज्ञासु, जिज्ञासक, प्रश्नकर्ता, पूछने वाला, खोजी ।
पृच्छा (सं० स्त्री०) प्रश्न, जिज्ञासा, पूर्व पक्ष, सवाल ।
पृतना (सं० स्त्री०) सेना, सैन्य, कटक, दल, वह सेना जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़ा, १२१५ पैदल हों ।
पृथक् (अव्य०) भिन्न, जुदा, अलग, न्यारा ।
पृथक्करण (सं० पु०) अलग करना, जुदा करना ।
पृथक्क्षेत्र (सं० पु०) भिन्न क्षेत्र, अलग का खेत, जारज पुत्र, वर्ण शङ्कर ।
पृथक्जन (सं० पु०) नीच, मूर्ख, पापी ।
पृथग्विधि (वि०) नाना रूप, बहुरूप ।
पृथवी (सं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि ।
पृथा (सं० स्त्री०) कुन्ती । [ज़मीन ।
पृथिवी (सं० स्त्री०) धारा, क्षिति, धरती, भूमि, धरणी,
पृथिवीपति (सं० पु०) राजा, नृपति, भूपति, बादशाह ।
पृथिवीपाल (सं० पु०) राजा, भूपति, भूपाल ।
पृथिवीपालक (सं० पु०) राजा, भूपति, दण्डधर ।
पृथी (सं० स्त्री०) पृथ्वी ।
पृथु (वि०) महतस्थूल, निपुण, विशाल, मोटा (सं० पु०) अहिफेन, अफ़ीम, हिंगुपची, हिंगोट की पत्ती, सूर्यवंशी एक राजा का नाम जो वेणु राजा के दाहिने हाथ से निकला था, इसने कई एक यज्ञ किया था, पृथ्वी के समस्त वस्तुओं को सोने की बना कर ब्राह्मणों को दान दिया था, इसके समय में पृथ्वी से बिना जोते ही अन्न उत्पन्न होता था, यह बड़ा धार्मिक राजा था ।

पृथुक (सं० पु०) चिउड़ा, बालक, लड़का।
पृथुमा (सं० पु०) मछली, मत्स्य (वि०) रोआँदार।
पृथुल (वि०) महत्, बड़ा, अति विस्तृत।
पृथुशिम्म (सं० पु०) श्येनाक, सोना, पाठा।
पृथूदक (सं० पु०) तीर्थ विशेष।
पृथूदर (सं० पु०) मेढ़ा, मेष, बड़े पेट वाला।
पृथ्वी (सं० स्त्री०) पृथिवी, ज़मीन, पुनर्नवा, बड़ी इलायची, स्याह ज़ीरा।
पृथ्वीका (सं० स्त्री०) बड़ी इलायची, छोटी इलायची, कलौंजी, स्याह ज़ीरा।
पृथ्वीपति (सं० पु०) राजा, नरपति।
पृथ्वीपाल (सं० पु०) राजा, भूपति।
पृथ्वीराज (सं० पु०) चौहान वंशी भारत का अन्तिम राजा, मोहम्मदग़ोरी को इन्होंने कई एक बार क़ैद किया था, और छोड़ दिया था, एक बार मोहम्मदग़ोरी ने इनको क़ैद कर लिया, और इनकी आँखें निकलवा लीं, चंदकवि की चतुराई से ये ग़ोरी को शब्दवेधी बाण से मार कर आत्महत्या कर मर गये।
पृषत् (सं० पु०) बिन्दु, श्वेत बिन्दुयुक्त मृग, राजा द्रुपद के पिता का नाम, एक प्रकार का साँप।
पृषदश्व (सं० पु०) वायु, पवन, एक राजर्षि का नाम, स्वाती नक्षत्र, ४६ की संख्या।
पृषोदर (सं० पु०) सूक्ष्मोदर, कृष्णोदर (वि०) बिन्दु गर्भित, जिसके पेट में निशान हों।
पृष्ट (वि०) जिज्ञासित, पूछा हुआ।
पृष्ठ (सं०पु०) शरीर पश्चाद्भाग, पीठ, पीछा, पिछला भाग।
पृष्ठ ग्रन्थि (सं० पु०) कुब्ज, कुबड़ा।
पृष्ठता (अव्य०) पीठ की ओर, पश्चात्।
पृष्ठ पोषक (सं० पु०) पीठ ठोंकने वाला, सहायक, मददगार।
पेंग (सं० स्त्री०) पलना का हिलाना, झूला का हिलाना, एक प्रकार की चिड़िया।
पेंठ (सं० स्त्री०) बाज़ार, मण्डी, गोला, हाट।
पेंदा (सं० पु०) किसी वस्तु का नीचे का भाग, तला।
पेंदी (सं० स्त्री०) पेंदा, गुदा, गाँठ, गाजर या मूली आदि की जड़।
पेई (सं० स्त्री०) पेटी, पिटारी।
पेखना (क्रि० स०) देखना, ताकना, निरखना, स्वाँग बनाना, कौतुक करना, क्रीड़ा करना।
पेखनिया (सं० पु०) बहुरुपिया, कौतुकी।
पेखवैया (सं० पु०) निरीक्षक, दर्शक, देखने वाला।
पेखित (वि०) भेजा हुआ, प्रेषित।
पेच (सं० पु०) ऐंठन, घुमाव, मरोड़, काँटा, कील।
पेचक (सं० पु०) उल्लू, घुग्घू।
पेचा (सं० पु०) देखो "पेचक"।
पेट (सं० पु०) जठर, उदर।

मुहा०—पेट में पानी न पचना=किसी बात को गुप्त न रख सकना। पेट में पैठना=अंतरङ्ग बनना, भेद लेना। पेट में लेना=सहना, बर्दाश्त करना, झेलना। पेट का पानी न हिलना=किसी बात को गुप्त रखना। पेट की आग=भूख। पेट की आग बुझाना=भोजन करना। पेट की बातें=गुप्त बातें। पेट जलना=क्षुधार्त होना। पेट पालना=जीवननिर्वाह करना। पेट पीठ एक होना=दुबला होना। पेट पोंछना=अन्तिम सन्तान। पेट में पैठना=भेद लेना। पेट रहना=गर्भ रहना।

पेटा (सं० पु०) किसी पदार्थ का मध्य भाग, नदी का पाट, पिटारा, पिटारी।
पेटारा (सं० पु०) टोकरा।
पेटार्थी (वि०) खाऊमल, पेटू।
पेटार्थू (वि०) पेटार्थी।
पेटिया (सं० पु०) एक संध्या के लिए भोजन या सीधा।
पेटी (सं० स्त्री०) पेटारी, मञ्जूषा, कमरबन्द, कटिबन्ध।
पेटू (वि०) पेट पोसू, खाऊ।
पेटौख (सं० पु०) उद्वेग, व्याकुलता, घबराहट, बेचैनी।
पेठा (सं० पु०) कोंहड़ा।
पेड़ (सं० पु०) दरख़्त, वृक्ष, द्रुम।
पेड़ा (सं० पु०) एक प्रकार की मिठाई।
पेड़ी (सं० स्त्री०) छोटा पेड़ा, सुपारी, कसौनी।
पेड़ू (सं० पु०) नाभि और मूत्रेंद्रिय के बीच का भाग।
पेम (सं० पु०) प्रेम, स्नेह, नेह, प्रीति।
पेमी (वि०) प्रेमी, स्नेही, प्रिय।
पेय (वि०) पीने योग्य।
पेरु (सं० पु०) एक प्रकार का पक्षी जो विलायती मुर्ग़ा कहा जाता है।
पेलना (क्रि० स०) घुसेड़ना, ठेलना, ठूसना, तेल चुआना।
पेल्म (सं० पु०) दोष, अपराध (वि०) गर्म।

पेवड़ी (सं० स्त्री०) पीतवर्ण, पीले रङ्ग की बुकनी ।
पेवर्सा (सं० स्त्री०) अमृत, सुधा, हाल की ब्यायी हुई गौ का दूध ।
पेशगी (फ़ा० सं० स्त्री०) अगाऊ, अगबद, अग्रिम ।
पेशाब (सं० पु०) मूत्र, प्रस्राव ।
पेशी (सं० स्त्री०) मास पिण्डी, पकी हुई, एक प्राचीन नदी का नाम, चमड़े की वह थैली जिसमें गर्भ रहता है, तलवार का म्यान, राक्षसी या पिशाची विशेष ।
पेषक (सं० पु०) पीसने वाला ।
पेषण (सं० पु०) तिनारा थूहड़, मर्दन, बाँटना, पीसना ।
पेषणीय (वि०) पीसने योग्य, मर्दनीय ।
पेषन (सं० पु०) तमाशा, निरीक्षण ।
पेंचना (क्रि०स०) पछाड़ना, बनाना, फटकना, बदलना ।
पेंचा (सं० पु०) बदला पलटा, उधार, लेन देन ।
पेंजनी (सं० स्त्री०) पैर का एक गहना, घुँघुरु ।
पैंड़ (सं० पु०) चलने में एक स्थान से पैर उठाकर दूसरी जगह रखना, डग ।
पैंड़ा (सं० पु०) रास्ता, राह, बाट, मार्ग, पथ, गैल ।
पैंताना (सं० पु०) चारपाई का वह भाग जो पाँव की ओर रहता है ।
पैंताला (सं० पु०) पायताना, चारपाई का वह भाग जो पैर की ओर रहता है ।
पैंतालीस (वि०) संख्या विशेष, चालीस और पाँच ।
पैंनी (सं० स्त्री०) पवित्री, कुशा की बनी अँगूठी ।
पैंतीस (वि०) तीस और पाँच ।
पैंसठ (वि०) संख्या विशेष, पाँच अधिक साठ ।
पै (सं० पु०) दूध, पय, जल (सं० स्त्री०) दोष (अव्य०) ऊपर, पर, तौ भी, परन्तु ।
पैकड़ा (सं० पु०) बेड़ी, साँकल ।
पैकड़ी (सं० स्त्री०) वह साँकल जिसमें पैर बाँधा जाता है, ज़ंजीर ।
पैकरहा (सं० पु०) देखो "पैकार" ।
पैकार (सं० पु०) फेरी वाला, घूम घूम कर माल खरीदने या बेचने वाला ।
पैकी (सं० पु०) जो मेले या बाज़ारों में घूम घूम कर लोगों को हुक्का पिलाता है ।
पैख़ाना (सं० पु०) मल, विष्टा, मल त्यागने का स्थान, दिशा जाने की जगह ।
पैग़ंबर (फ़ा० सं० पु०) नबी, दूत, ईश्वर का दूत ।
पैग़ाम (फ़ा० सं० पु०) सन्देशा, बात जो कहला भेजे ।
पैगू (सं० पु०) एक प्रकार का हरा पत्थर, ब्रह्मा का एक प्रांत ।
पैज (सं० पु०) प्रतिज्ञा, होड़, प्रण ।
पैठ (सं० स्त्री०) प्रवेश, पहुँच, हुण्डी की प्रतिलिपि, खोई हुई हुंडी की लिपि ।
पैठना (क्रि० अ०) प्रवेश करना, घुसना, दाख़िल होना ।
पैठालना (क्रि० स०) प्रवेश कराना, घुसाना, दाख़िल कराना ।
पैड़ (सं० पु०) पद चिह्न पाँव का निशान ।
पैड़ा (सं० पु०) एक प्रकार की ऊँची खड़ाऊँ, बधौरा ।
पैड़ा (सं० स्त्री०) सीढ़ी, सोपान, ज़ीना ।
पैतर (सं० पु०) गति विशेष, कुश्ती लड़ने या लट्ठबाज़ी करने में एक चाल ।
पैतला (वि०) उतान, छिछला, उथला ।
पैती (सं० पु०) पाँसा ।
पैतृक (वि०) पिता का, बपौती ।
पैदल (सं० पु०) पैर से चलने वाला, सिपाही, शतरंज की एक गोट, सेना का सिपाही ।
पैदा (वि०) उत्पन्न, प्रकट ।
पैदायश (फ़ा० सं० पु०) उत्पत्ति, जन्म ।
पैदायशी (फ़ा० वि०) स्वाभाविक, जन्म से ही, ज़ाती ।
पैदावार (फ़ा० सं० पु०) उपज, मुनाफ़ा ।
पैदावारी (वि०) पैदावार ।
पैन (सं० पु०) छोटी नाली जो खेतों में पानी ले जाने के लिए बनी रहती है ।
पैना (वि०) तीक्ष्ण, तेज, धार युक्त (सं० पु०) अङ्कुश, बाँस की एक छड़ी जिसके एक छोर पर चमड़ा या रस्सी बँधी रहती है जिससे हल या गाड़ी आदि के बैल हाँके जाते हैं, चाबुक ।
पैनाना (क्रि० स०) तेज़ करवाना, शान धराना, धार खुलवाना, तीक्ष्ण कराना ।
पैनाला (सं० पु०) मोरी, नाली ।
पैनाली (सं० पु०) नाली, मोरी, पनारी ।
पैया (सं० पु०) धान आदि का वह अंश जिसमें छिलके के सिवा भीतर कुछ नहीं रहता, चक्का, पहिया ।
पैयाना (सं० पु०) विदा, यात्रा, प्रस्थान ।
पैर (सं०पु०) पाँव, गोड़, पाद ।
पैरना (क्रि० अ०) तैरना, जल में उतरा कर चलना ।
पैरवी (फ़ा० सं० स्त्री०) ख़ुशामद, बिनती ।

पैराई (सं० पु०) तैरने की क्रिया या भाव, तैराई।
पैराक (सं० पु०) तैरने वाला, पैरने वाला।
पैराव (सं० पु०) गहरा, अधिक जल, पैरने योग्य जल।
पैरी (सं० स्त्री०) पाँव का एक गहना, तेल घी आदि निकालने का एक बर्तन, दाँयने का काम, दवाँई।
पैला (सं० पु०) एक प्रकार का काष्ठ निर्मित पात्र जिससे अन्न आदि नापा जाता है।
पैवन्द (फ़ा० सं० पु०) जोड़, पेंवन, पेंवदा।
पैशाच (फ़ा० सं० पु०) एक आयुधजीवी संघ का नाम, आठ प्रकार के विवाहों में से एक (वि०) पिशाच का, पिशाच संबंधी।
पैशुन्य (सं० पु०) नीचपन, दुष्टता, अधमता, ओछापन, परनिन्दा, चुगलखोरी।
पैसा (सं० पु०) ढेबुआ, ताँबे का एक सिक्का, रुपये का ६४ वाँ भाग।
मुहा०—पैसा उड़ाना=अधिक व्यय करना, अपव्यय करना। पैसे लगाना=धन खर्च करना। पैसे से दरबार बाँधना=घूँस देना।
पैसार (सं० पु०) पैठ, प्रवेश, पहुँच।
पैसेवाला (सं० पु०) धनवान्, धनी।
पैहै (क्रि० स०) पावेगा। [वृस्त होना।
पोंकना (क्रि० अ०) हग मारना, जल्दी जल्दी पतला
पोंका (सं० पु०) कीड़ा, कृमि, कीट।
पोंगा (सं० पु०) बाँस का गाँठ, मूढ़, मूर्ख, अनाड़ी (वि०) शून्य, खाली, छूँछा। [खोखला।
पोंगी (सं० स्त्री०) मूर्ख स्त्री, फूहड़ औरत, नली, छूँछी,
पोंछन (सं० पु०) भाड़न, बहोरन, बटोरन, साफ़ करना।
पोंछना (क्रि० स०) भाड़ना, बुहारना, बटोरना, साफ़
पोंटा (सं० पु०) नाक का मल। [करना।
पोआ (सं० पु०) साँप का छोटा बच्चा, सँपोला।
पोआना (क्रि० स०) रोटी बेलाना, तपाना, घमाना।
पोइस (सं० स्त्री०) सरपट, दौड़।
पोखर (सं० पु०) तलाब, तड़ाग, ताल, सरोवर।
पोखरा (सं० पु०) देखो "पोखर"।
पोट (सं० पु०) गट्ठर।
पोटला (सं० पु०) गट्ठा, गट्ठर।
पोटली (सं० स्त्री०) छोटी गठरी।
पोटा (सं० पु०) पलक, पेट की थैली, उदराशय, कलेजा, उँगली का छोर, चिड़िया का बच्चा जिसके पर न निकले हों, बालक।
पोढ़ा (वि०) मज़बूत, हृष्ट पुष्ट, बलवान, उत्साही, साहसी, वीर। [साहस।
पोढ़ाई (सं० स्त्री०) मज़बूती, दृढ़ता, उत्साह, बल,
पोत (सं० पु०) शिशु, बच्चा, नौका, जहाज़, मालगुज़ारी कर, वह कर जो खेत जोतने बोने के लिए असामी खेत के मालिक को देता है।
पोतक (सं० पु०) बालक, बच्चा, जनमतुआ बच्चा।
पोतड़ा (सं० पु०) बच्चे का बिछौना, गँड़तरा।
पोतड़ी (सं० स्त्री०) हल, झिल्ली, खेड़ी। [वाला।
पोतन (सं० पु०) पवित्र, स्वच्छ, शुद्ध (वि०) पवित्र करने
पोतना (क्रि० स०) लीपना, चौका देना।
पोता (सं० पु०) पौत्र, लड़के का लड़का, पुत्र का पुत्र, अण्डकोश।
पोती (सं० स्त्री०) पुत्र की पुत्री, लड़के की लड़की।
पोथा (सं० पु०) बड़ी पोथी, ग्रन्थ।
पोथी (सं० स्त्री०) पुस्तक, किताब। [आदमी।
पोदना (सं० पु०) एक प्रकार की चिड़िया, बौना, ठेंगना
पोना (क्रि० स०) पिरोना, गाँथना, गूँथना, रोटी पकाना।
पोपनी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का बाजा।
पोपला (वि०) बिना दाँत का।
पोय (सं० स्त्री०) लता विशेष। [बनता है।
पोयी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की लता जिसका साग
पोर (सं० पु०) गाँठ, ग्रन्थि, ईख, बाँस आदि की गाँठ।
पोरी (सं० स्त्री०) छोटा पोर।
पोला (वि०) खोखला, ख़ाली, छूँछा, कोमल, नरम।
पोली (सं० स्त्री०) अज्ञानी, अनारी, मूर्ख (वि०) खोखली।
पोशाक (सं० स्त्री०) वस्त्र, पहिनाव, कपड़ा।
पोशीदा (वि०) गुप्त, छिपा हुआ।
पोष (सं० पु०) परवरिश, पालन।
पोषक (सं० पु०) रक्षक, पालक, रक्षा करने वाला, पालने वाला।
पोषण (सं० पु०) रक्षण, भरण, परवरिश।
पोषणीय (वि०) पालने योग्य, पोषने योग्य।
पोषयित्नु (सं० पु०) कोकिल, पति, स्वामी।
पोष्टा (सं० पु०) पालन करने वाला, पोषण।

पोष्य (वि०) पोसने योग्य, पोषणीय । [पोसपुत ।
पोष्यपुत्र (सं० पु०) दत्तक पुत्र, गोद लिया हुआ पुत्र,
पोष्य वर्ग (सं० पु०) वृद्ध माता-पिता, परिजन वर्ग ।
पोस (सं० पु०) देखो "पोष" ।
पोसना (क्रि० स०) पालना, रक्षण करना ।
पोसपुत (सं० पु०) पोष्य पुत्र ।
पोस्ता (सं० पु०) दाने का पेड़, अफ़ीम का दरख़्त ।
पोह (सं० पु०) प्रभात, बिहान, तड़का, सवेरा ।
पोहना (क्रि० स०) रोटी बनाना, पिरोना, गूँथना, जड़ना, घुसाना ।
पोहारी (वि०) जो केवल दूध के अहार पर रहे ।
पौंचा (सं० पु०) साढ़े पाँच का पहाड़ा, साढ़े पाँच के पहाड़े का नक़शा ।
पौंड़ा (सं० पु०) ईख, ऊख, गन्ना ।
पौंढ़ना (क्रि० अ०) लेटना, सोना, शयन करना ।
पौ (सं० स्त्री०) पनशाला, चौपड़ के पासे का एक दाँव, किरन, ज्योति (सं० पु०) पैर, जड़ ।
मुहा०—पौ बारह = विजय, जीत, चलती ।
पौगण्ड (सं० पु०) पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था ।
पौड़ा (सं० पु०) इक्षु, ईख, ऊख ।
पौण्ड्र (सं० पु०) भीम के शंख का नाम, मोटा पौंड़ा, ईख, चन्देल देश, एक देश का नाम ।
पौण्ड्रक (सं० पु०) एक जाति विशेष, इक्षु, ईख, एक राजा का नाम, पुंड्र देश के राजा वसुदेव का यह पुत्र था, इसकी माता का नाम सुतनु था, यह कृष्ण का द्रोही था, कृष्ण के विरुद्ध द्वारका पर उसने चढ़ाई की और उसी युद्ध में कृष्ण द्वारा मारा गया ।
पौत्तलिक (सं० पु०) मूर्ति पूजने वाला ।
पौत्र (सं० पु०) पोता, लड़के का लड़का, पुत्र का पुत्र ।
पौत्री (सं० स्त्री०) पोती, लड़के की लड़की, पुत्र कन्या ।
पौधा (सं० पु०) छोटा वृक्ष, नया दरख़्त ।
पौन (वि०) किसी वस्तु के चार भाग का तीन भाग, तीन चौथाई । [छाना जाता है
पौना (सं० पु०) लोहे का झरना जिससे सेव आदि
पौने (वि०) पौन ।
पौर (सं० स्त्री०) द्वार, फाटक, दरवाज़ा (वि०) नगर संबन्धी, गाँव का, नगर का ।
पौरक (सं० पु०) घर के बाहर का बाग़ ।
पौरव (सं० पु०) पुरुवंशी राजा दुष्यन्त ।
पौरस्त्य (वि०) प्रथम, पूर्व का । [संबन्धी ।
पौराणिक (सं० पु०) पुराण मतानुयायी (वि०) पुराण
पौरिया (सं० पु०) द्वारपाल, द्वाररक्षक, दरबान । (सं० स्त्री०) छोटी खड़ाऊँ ।
पौरी (सं० स्त्री०) देखो "पौर" ।
पौरुष (सं० पु०) पुंस्त्व, पुरुषत्व ।
पौरुषेय (क्रि० वि०) पुरुष का बनाया हुआ ।
पौरुष्य (सं० पु०) साहस, पुरुषत्व ।
पौरुहूत (सं० पु०) इन्द्र का अस्त्र, वज्र ।
पौरू (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिट्टी या ज़मीन ।
पौरेय (सं० पु०) नगर के समीप का स्थान, देश ग्राम आदि । [शालाध्यक्ष ।
पौरोगव (सं० पु०) बावर्ची ख़ाने का दारोग़ा, पाक-
पौरोहित्य (सं० पु०) पुरोहिताई ।
पौर्णमासी (सं० स्त्री०) पूर्णिमा ।
पौलस्त्य (वि०) पुलस्त्य संबन्धी, पुलस्त्य का (सं० पु०) कुबेर, रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण ।
पौलिया (सं० स्त्री०) पौरिया ।
पौली (सं० स्त्री०) खड़ाऊँ, काष्ठ पादुका ।
पौलोमी (सं० स्त्री०) प्रलोम दानव की कन्या, शची ।
पौवा (सं० पु०) सेर का चौथा भाग, चौथा भाग, चतुर्थांश ।
पौष (सं० पु०) पूस, वर्ष का दशवाँ महीना ।
पौष्टिक (सं० पु०) पुष्टई, पुष्टकर, बलवर्द्धक ।
पौसरा (सं० पु०) देखो "पौसला" ।
पौसला (सं० पु०) वह स्थान जहाँ पर पानी पिलाया जाता है, प्याऊ, पनशाला ।
पौह (सं० पु०) पौसला ।
प्याऊ (सं० पु०) पौसला । [कुछ दुर्गंध आती है ।
प्याज (सं० पु०) पलाण्डु, एक मूल विशेष, जिसमें से
प्याना (क्रि० स०) पिलाना, पान करना, प्यावना ।
प्यार (सं०पु०) प्रेम, स्नेह, छोह, मुहब्बत ।
प्यारा (वि०) प्रिय, प्रेमी, स्नेही, अज़ीज़ ।
प्यारी (सं० स्त्री०) पिया, प्रियतमा ।
प्याला (सं०पु०) कटोरा ।
प्यावना (क्रि० स०) पानी पिलाना ।

प्यास (सं० पु०) तृष्णा, तृषा, पियास।
प्यासा (वि०) तृषित, पिपासित, तृषार्त।
प्र (अव्य०) आरम्भ, आद्य, उत्पत्ति, ख्याति, उत्कर्ष, व्यवहार, सर्वतोभाव, प्रारम्भ।
प्रकट (सं० पु०) व्यक्त, स्पष्ट, प्रकाशित, ज़ाहिर, रौशन।
प्रकटन (सं० पु०) स्पष्टि करण, प्रकाशन, व्यक्त करना।
प्रकटित (वि०) व्यक्त, स्पष्ट, प्रकाशित, ज़ाहिर, रौशन।
प्रकम्प (सं०पु०) कंप, थरथराहट, कंपना।
प्रकम्पन (सं०पु०) वायु, एक नरक का नाम।
प्रकर (सं० पु०) समूह, झुण्ड, दल, गिरोह।
प्रकरण (सं० पु०) प्रस्तावना, भूमिका, अभिनय करने का एक ढंग, रूपक का एक भेद, विषय विभाग, काण्ड, अध्याय, एकार्थ वाची सूत्रों का समूह।
प्रकरी (सं० स्त्री०) नाट्यशाला, रङ्गशाला, नाटक खेलने की वेदी।
प्रकर्ष (सं० पु०) उत्तमता, उत्कर्ष, श्रेष्ठता, प्रशस्त।
प्रकाण्ड (वि०) विशाल,बृहद्, बड़ा (सं०पु०) दरख़्त का तना। [मनमाना।
प्रकाम (वि०) स्वेच्छानुसार, इच्छानुकूल, यथेष्ट,
प्रकार (सं० पु०) रीति, तरह, ढंग, भाँति, क़िस्म।
प्रकारान्तर (वि०) दूसरी रीति, अन्य विधि।
प्रकाश (सं० पु०) स्पष्ट, व्यक्त, विकाश, उदय, ख्यात, प्रसिद्ध, चमकदार, उजाला, चमकीला, चमक।
प्रकाशक (सं० पु०) प्रकाश करने वाला।
प्रकाशन (सं० पु०) स्पष्टि करण, व्यक्त करण, ख्यात करना, प्रसिद्ध करना, दीप्त करना।
प्रकाशित (वि०) प्रकटित, व्यक्त, आविष्कृत, उदित।
प्रकाशी (सं० पु०) चमकता हुआ। [योग्य।
प्रकाश्य (वि०) प्रकाशन के योग्य, प्रकट करने के
प्रकास (सं० पु०) प्रकाश का अपभ्रंश।
प्रकीर्ण (वि०) विस्तृत, बिखरा हुआ।
प्रकीर्तन (सं० पु०) वर्णन, कथन, भूमिका।
प्रकीर्तित (वि०) उक्त, भाषित, कथित।
प्रकुपित (वि०) क्रुद्ध, कुपित, क्रोधान्वित।
प्रकृत (वि०) उचित, यथार्थ, सत्य, वास्तविक।
प्रकृतार्थ (वि०) उचित अर्थ, यथार्थ, उचित व्यवहार।
प्रकृति (सं० स्त्री०) ईश्वर की शक्ति, परमात्मा, स्वभाव, माया, धर्म, स्वभाव, चरित्र, उत्पत्ति स्थान, उद्भव स्थान, योनि, अङ्क, निशान, चिह्न, स्वामी, मालिक, अमात्य, मन्त्री, मित्र, सुहृद, कोष, ख़ज़ाना, राज्य, राष्ट्र, क़िला, दुर्ग, नगर निवासी, समूह, समुदाय, पञ्चभूत शक्ति, परमात्मा, माया, चैतन्य, माया नाम की शक्ति, सत्व, रज, तम इनकी साम्यावस्था, प्रत्यय के पहले का भाग, धातु, इक्कीस वर्ण का छन्द विशेष।
प्रकृति सिद्ध (वि०) स्वाभाविक, स्वभाव जात।
प्रकृष्ट (सं० पु०) उत्तम, प्रधान।
प्रकोप (सं० पु०) क्रोध।
प्रकोष्ठ (सं० पु०) कोठे के नीचे वाला घर, कलाई और कोहनी के मध्य का भाग।
प्रकोष्ण (सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
प्रक्रम (सं० पु०) आरम्भ, अनुष्ठान, अवसर, उद्योग।
प्रक्रमण (सं० पु०) भली भाँति घूमना, आगे बढ़ना, पार करना।
प्रक्रान्त (वि०) आरब्ध। [धारण।
प्रक्रिया (सं० स्त्री०) प्रकार, राजाओं का चमरव्यजनादि
प्रक्लिन्न (वि०) तुष्ट, तृप्त, पसीनायुक्त।
प्रक्लेद (सं० पु०) नमी, तरी।
प्रक्षय (सं० पु०) क्षय, नाश, बरबादी।
प्रक्षाल (सं० पु०) प्रायश्चित।
प्रक्षालन (सं० पु०) शुद्ध करना, धोना, पखारना।
प्रक्षेप (सं० पु०) फेंकना, छोड़ना, त्यागना।
प्रखर (सं० पु०) तीक्ष्ण, तीखा, ज़ीन, चारजामा।
प्रखरता (सं० स्त्री०) तेज़ी, उग्रता।
प्रखरांशु (वि०) तीक्ष्ण किरन, तीव्र किरण।
प्रख्यात (वि०) विख्यात, यशस्वी, प्रसिद्ध।
प्रख्याति (सं० स्त्री०) ख्याति, प्रसिद्धि, यश।
प्रगट (वि०) देखो "प्रकट"। [होना।
प्रगटना (क्रि० अ०) प्रगट होना, सामने आना, ज़ाहिर
प्रगल्भ (वि०) चतुर, होशियार, प्रतिभाशाली, संपन्न बुद्धि वाला, उत्साही, साहसी, गंभीर।
प्रगल्भता (सं० स्त्री०) बुद्धिमत्ता, होशियारी, बेहयाई, बकवाद। [बहुत, अतिशय।
प्रगाढ़(वि०) कठोर, कठिन, सख़्त, दृढ़, अधिक, प्रचुर,
प्रगुण (सं० पु०) उत्तम स्वभाव, उत्तम प्रकृति (वि०) सरल, उदार।

प्रगृहीत (वि०) भली भाँति ग्रहण किया हुआ।
प्रगृह्य (वि०) ग्रहण करने योग्य।
प्रग्राह (सं० पु०) बाँधने की डोरी, रस्सी।
प्रघटक (सं० पु०) सिद्धान्त। [गलाया जाता है।
प्रघरी (सं० स्त्री०) कुलिहया, घरिया जिसमें सोना चाँदी
प्रघसू (सं० पु०) रावण के एक सेनानायक का नाम।
प्रघाण (सं० पु०) द्वार के बाहर का बरामदा या दालान।
प्रचण्ड (वि०) उग्र, तीक्ष्ण, असह्य, भयंकर।
प्रचण्डता (सं० स्त्री०) तेज़ी, प्रचलता, उग्रता।
प्रचण्ड मूर्ति (सं० स्त्री०) प्रतापयुक्त शरीर, भयानक आकार। [सखी।
प्रचण्डा (सं० स्त्री०) दुर्गा, चण्डी, दुर्गा की एक
प्रचलन (सं० पु०) व्यवहार, रीति, बिस्तार, प्रचार, व्यापकता, फैलाव। [प्रचार सर्वत्र हो।
प्रचलित (वि०) व्यवहृत, व्यापक, प्रसिद्ध, जिसका
प्रचार (सं० पु०) प्रचलन, व्यवहार, व्यापकता, विस्तार, व्यक्त, स्पष्ट।
प्रचारक (वि०) प्रचार करने वाला, प्रकाशक।
प्रचारना (क्रि० स०) प्रचार करना, फैलाना, प्रसिद्ध करना, चलाना।
प्रचारित (वि०) प्रचार किया हुआ।
प्रचुर (वि०) यथेष्ट, बहुत्व, बहुत।
प्रचुरता (सं० स्त्री०) अधिकता, बाहुल्य, पूर्ण।
प्रचुरपुरुष (सं० पु०) चोर, डाकू, तस्कर।
प्रचेतसी (सं० स्त्री०) प्रचेता मुनि की कन्या।
प्रचेता (सं० पु०) वरुण, मुनि विशेष।
प्रचेल (सं० पु०) पीला चन्दन।
प्रचेलक (सं० पु०) घोड़ा। [वाला।
प्रचोदक (वि०) प्रेरणा करने वाला, उत्तेजित करने
प्रचोदन (सं० पु०) उत्तेजना, आज्ञा, नियम।
प्रचोदित (वि०) नियोजित, प्रेरित, सम्यक् उक्त, जाने की आज्ञा पाया हुआ।
प्रच्छक (सं० पु०) पूछने वाला, प्रश्नकर्ता।
प्रच्छद (सं० पु०) आच्छादन, चद्दर, उत्तरीयवस्त्र।
प्रच्छदपट (सं० पु०) पिछौरी, उत्तरीय वस्त्र।
प्रच्छन्न (वि०) ढका हुआ, तोपा हुआ, आच्छन्न, गुप्त, छिपा हुआ।
प्रच्छादन (सं० पु०) ओढ़नी, चादर, पिछौरी।
प्रच्युत (वि०) पतित, गिरा हुआ, स्खलित, पदच्युत।
प्रजव (सं० पु०) अतिशय वेग, प्रकृष्ट वेग।
प्रजरण (सं० पु०) जलन, दहन, ज्वलन।
प्रजरित (वि०) जला हुआ, दग्ध।
प्रजल्प (सं० पु०) कथा, कहानी, क़िस्सा, अकबक वाक्य, निरर्थक बचन। [मनुष्य।
प्रजा (सं० स्त्री०) सन्तान, रैयत, राजा से शासित
प्रजाकाम (सं० पु०) पुत्र प्राप्ति की इच्छा रखने वाला।
प्रजाकार (सं० पु०) प्रजा उत्पन्न करने वाला, प्रजापति, ब्रह्मा।
प्रजागर (सं० पु०) अत्यन्त चिन्ता, अतिशय जागरण।
प्रजागरा (सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
प्रजापति (सं० पु०) सृष्टि उत्पन्न करने वाला, सृष्टि-कर्ता, ब्रह्मा, मनु, राजा, सूर्य, आग, विश्वकर्मा, घर का मालिक, एक तारा, जामाता, एक प्रकार का विवाह।
प्रजारी (वि०) जलाकर, भस्म करके। [सन्तान हों।
प्रजावती (सं० स्त्री०) बड़े भाई की स्त्री, वह स्त्री जिसे
प्रजासन (सं० पु०) प्रजा का भोजन, साधारण आहार।
प्रजाहित (सं० पु०) प्रजा का उपकार, प्रजा की भलाई।
प्रजित (सं० पु०) विजय करने वाला।
प्रजेश (सं० पु०) राजा, महिपाल, भूपाल।
प्रजोग (सं० पु०) प्रयोग।
प्रज्ञ (वि०) प्रवीण, दक्ष, विज्ञ।
प्रज्ञता (सं० स्त्री०) विद्वत्ता, पाण्डित्य।
प्रज्ञप्ति (सं० स्त्री०) निवेदन, अर्ज, संकेत, सूचना, विज्ञापन।
प्रज्ञा (सं० स्त्री०) धी, बुद्धि, मति, अक्ल। [धृतराष्ट्र।
प्रज्ञाचक्षु (वि०) ज्ञानी, बुद्धिमान, अंधा (सं० पु०)
प्रज्वलित (वि०) जलता हुआ, ज्वलन्त। [पुरातन।
प्रण (सं० पु०) प्रतिज्ञा, करार, कौल, प्राचीन, पुराण,
प्रणत (वि०) नम्र, विनीत, पैर पर गिरा हुआ।
प्रणति (सं० स्त्री०) प्रणाम, नमस्कार, नम्रता।
प्रणय (सं० पु०) प्रेम, प्रीति, स्नेह, सुहब्बत, निर्वाण, मुक्ति।
प्रणयन (सं० पु०) रचन, ग्रंथन, निर्माण।
प्रणयिनी (सं० स्त्री०) स्त्री, भार्या, प्रिया, प्रियतमा।
प्रणयी (वि०) प्रेमी, स्नेही। [परमेश्वर।
प्रणव (सं० पु०) ॐकार, ब्रह्मबीज, ओंकार, मंत्र, त्रिदेव,
प्रणवना (क्रि० अ०) प्रणाम करना।

प्रणवौं (क्रि० अ०) प्रणाम करता हूँ, नम्र होता हूँ।
प्रणाम (सं० पु०) नमस्कार, दण्डवत, जैराम जी, राम राम, सलाम।
प्रणामी (वि०) देवताओं के प्रणाम के लिये दी जाने वाली दक्षिणा, नमस्कारी।
प्रणायक (सं० पु०) नेता, सेना-नायक।
प्रणाल (सं० पु०) पनाला, मोरी, नाली। [परंपरा।
प्रणाली (सं० स्त्री०) शैली, ढंग, रीति, प्रथा, पद्धति,
प्रणाश (सं० पु०) नाश, उत्पात, ध्वंस।
प्रणाशन (सं० पु०) नाश करने का भाव या क्रिया।
प्रणाशी (सं० पु०) नाश करने वाला।
प्रणिधान (सं० पु०) मनोयोग, ध्यान, प्रयत्न, अवगति, अति अधिक उपासना।
प्रणिपात (सं० पु०) प्रणाम, नमस्कार, राम राम।
प्रणी (वि०) दृढ़ प्रतिज्ञ, अचल प्रण करने वाला।
प्रणीत (वि०) बनाया हुआ, रचा हुआ, प्रस्तुत किया हुआ, तैयार किया हुआ।
प्रणीता (सं० स्त्री०) यज्ञ जल विशेष, यज्ञ पात्र विशेष।
प्रणेता (सं० पु०) स्वामिता, कर्त्ता।
प्रणेय (वि०) अधीन, वशवर्ती।
प्रणोदित (वि०) प्रेरित।
प्रतनु (वि०) दुबला, बारीक, बहुत छोटा।
प्रतपन (सं० पु०) तप्त करना, उत्ताप, गर्मी।
प्रतप्त (वि०) उत्तप्त, प्रभाववान्। [नाम।
प्रतान (सं० पु०) विस्तार, फैलाव, एक प्राचीन ऋषि का
प्रताप (सं० पु०) शूरता, वीरता, प्रभाव, तेज, मदार का पेड़, ताप, गर्मी, एक आत्मत्यागी देश भक्त राजा का नाम, ये महाराणा उदयसिंह के पुत्र थे, जिस समय भारतीय हिन्दू राजा अपनी बहू बेटियों को यवन सम्राट अकबर को दे कर हिन्दुत्व का नाश कर रहे थे उस समय भी महाराणा प्रताप ने अपने गौरव और हिन्दुत्व की रक्षा की, एक बार मानसिंह स्वयं इनके यहाँ आकर मेहमान बना, राणा ने उसके भोजनादि की तैयारी अच्छी तरह कराया पर उसके साथ बैठ कर भोजन नहीं किया क्योंकि मानसिंह अपनी बहन की शादी अकबर के पुत्र सलीम से कर चुका था, मानसिंह ने प्रताप को अपने साथ न खाने से अपना अपमान समझा और अकबर को इनके विरुद्ध चढ़ा लाया, प्रताप मुग़ल सेना का सामना करते गये पर विजय मुग़लों ही की होती गई, ये वन वन मारे फिरे, लड़के बाले भूख भूख चिल्लाया करते थे पर राणा ने अपने हिन्दुत्व गौरव की रक्षा की, और मुसलमानों की शरण में नहीं गये, इनको बहुत कष्ट झेलना पड़ा। पर अन्त में इन्होंने अपने कई एक किले पर अपना अधिकार जमा लिया, पर चित्तौर का उद्धार न कर सके और इसी चिन्ता में उनका शरीर दुर्बल होता गया, अन्त में स्वर्ग लोक को सिधार गये, इनकी कीर्ति भारतीय इतिहास में सुवर्णाक्षर में लिखी रहेगी।
प्रतापवान (वि०) ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी।
प्रतापी (वि०) प्रभावशाली, तेजस्वी।
प्रतारक (वि०) ठग, धूर्त्त, वञ्चक, दुष्ट, खल।
प्रतारण (सं० पु०) धूर्तता, वञ्चकता, दुष्टता।
प्रतारणा (सं० स्त्री०) वञ्चना, धोखा, छल, कपट, धूर्तता।
प्रतारित (वि०) छलित, वञ्चित, मिथ्या भाषित।
प्रतिंचा (सं० स्त्री०) रोदा, धनुष की डोरी, ज्या।
प्रति (उपसर्ग) एक एक, सब, समग्र, भाग, अल्प, सदृश, मुख्य, चिह्न, लक्षण, निश्चय, स्वभाव, विरोध, समाधि, प्रशस्ति।
प्रतिकार (सं० पु०) बदला, पलटा, उपाय।
प्रतिकारक (सं० पु०) प्रतिकार करने वाला, बदला चुकाने वाला।
प्रतिकितव (सं० पु०) जुआरी का जोड़ीदार।
प्रतिकूप (सं० पु०) परिखा, खाई।
प्रतिकूल (वि०) विरुद्ध, विपक्ष, उलटा।
प्रतिकूलता (सं० स्त्री०) विरुद्धता, विपक्षता।
प्रतिकूला (सं० स्त्री०) सौत, सपत्नी।
प्रतिकृति (सं० स्त्री०) तस्वीर, मूर्त्ति, बदला, प्रतिकार।
प्रतिक्रिया (सं० स्त्री०) प्रतिकार, बदला।
प्रतिक्षण (सं० पु०) हर घड़ी, बार बार, क्षण क्षण।
प्रतिग्रह (सं० पु०) विधिवत् दान, स्वीकार, ग्रहण।
प्रतिग्रहण (सं० पु०) एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना, अदला बदला, आदान, ग्रहण, स्वीकार।
प्रतिघात (सं० पु०) आघात, घात के बदले आघात, रुकावट, बाधा।
प्रतिघाती (सं० पु०) शत्रु, बैरी।

प्रतिचिकीर्षु (सं० पु०) बदला चुकाने की इच्छा रखने वाला।
प्रतिचिन्तन (सं० पु०) चिन्तित विषय का चिन्तन।
प्रतिच्छा (सं० स्त्री०) इन्तज़ार, बाट।
प्रतिच्छाया (सं० स्त्री०) प्रतिबिम्ब, परछाईं, छाया।
प्रतिछाँह (सं०पु०) देखो "प्रतिच्छाया"।
प्रतिज्ञा (सं० स्त्री०) वाकूदान, प्रण, पण, शपथ, वादा।
प्रतिज्ञात (वि०) प्रतिज्ञा किया हुआ, स्वीकृत।
प्रतिज्ञान (सं० पु०) अङ्गीकार, प्रतिज्ञा, स्वीकार।
प्रतिज्ञापत्र (सं० पु०) स्वीकार पत्र।
प्रतिदर्शन (सं० पु०) फिर फिर देखना, दर्शनान्तर दर्शन।
प्रतिदान (सं० पु०) दान के बदले दान, धरोहर वापस देना, थाति लौटाना।
प्रतिदिन (सं० पु०) प्रत्यह, नित्य।
प्रतिदेय (वि०) लौटाने योग्य, फेर देने योग्य। [झगड़ा।
प्रतिद्वन्द्व (सं० पु०) बराबर वालों का आपस का
प्रतिद्वन्द्वी (सं० पु०) बराबरी का विरोध।
प्रतिध्वनि (सं० स्त्री०) प्रतिशब्द, गूँज।
प्रतिनिधि (सं० पु०) एवज, प्रतिबिंब, वह व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिए नियुक्त हो, प्रतिभू।
प्रतिपक्ष (सं० पु०) शत्रु, बैरी।
प्रतिपक्षी (सं० पु०) बैरी, शत्रु, दुश्मन, अरि, रिपु।
प्रतिपन्न (वि०) ज्ञात, जाना हुआ, स्वीकृत, मान्य, सम्माननीय।
प्रतिपत्ति (सं० स्त्री०) यश, कीर्ति, ख्याति, आदर, प्रतिष्ठा, गौरव, पदप्राप्ति, निष्पत्ति।
प्रतिपद (सं० स्त्री०) दोनों पक्ष की पहली तिथि।
प्रतिपदा (सं० स्त्री०) प्रतिपद, परिवा।
प्रतिपादक (सं० पु०) अच्छी तरह समझाने वाला, संस्थापक, प्रकाशक, बोधक। [समझाना।
प्रतिपादन (सं०पु०) संपादन, पूर्ति, ज्ञापन, अच्छी तरह
प्रतिपादित (वि०) जो भली भाँति समझा दिया गया हो, निरूपित।
प्रतिपाद्य (वि०) प्रकटित, ज्ञातव्य, प्रतिपादन के योग्य।
प्रतिपाल (सं० पु०) रक्षक, पोषक।
प्रतिपालक (सं० पु०) रक्षा करने वाला, पालने वाला।
प्रतिपालन (सं० पु०) रक्षण, पालन।
प्रतिपालना (क्रि० स०) पोसना, पालना, रक्षा करना।
प्रतिपालित (वि०) रक्षित, पालन किया हुआ।
प्रतिपाल्य (वि०) पालन करने योग्य, पोषणीय।
प्रतिपुरुष (सं० पु०) प्रतिनिधि, हर एक आदमी।
प्रतिप्रसव (सं० पु०) किसी कार्य या वस्तु को एक बार मनाकर पुनः आज्ञा देना। [फल, बदला।
प्रतिफल (सं० पु०) किये का फल, परिणाम, नतीजा,
प्रतिबंध (सं० पु०) बाधा, विघ्न, रुकावट, रोक।
प्रतिबंधक (सं० पु०) बाधा, विघ्न, रोक, निवारण।
प्रतिबंधकता (सं० स्त्री०) रोक, रुकावट, विघ्न, बाधा।
प्रतिबिंब (सं० पु०) परछाईं, चित्र, शीशा।
प्रतिबिंबक (सं० पु०) अनुगामी।
प्रतिभट (सं० पु०) विपक्षी, दुश्मन, रिपु।
प्रतिभा (सं० स्त्री०) बुद्धि, समझ, ज्ञान, प्रगल्भता।
प्रतिभाग (सं० पु०) अंश, अंश पर, राज्य भाग।
प्रतिभाशाली (वि०) प्रभावशाली।
प्रतिभू (सं० पु०) ज़मानतदार, ज़ामिन, लग्नक।
प्रतिम (वि०) सदृश, समान।
प्रतिमा (सं० स्त्री०) प्रतिमूर्ति, प्रतिछाया, तसवीर, छवि, प्रतिबिम्ब, तोलने का बाट, साहित्य का एक अलङ्कार।
प्रतिमान (सं० पु०) परछाईं, प्रतिबिंब।
प्रतिमार्ग (सं० पु०) प्रत्येक मार्ग, प्रति पथ।
प्रतिमास (सं० पु०) प्रत्येक मास, हर महीने।
प्रतिमुख (सं० पु०) किसी चीज़ का पीछे का भाग।
प्रतिमूर्ति (सं० स्त्री०) प्रतिमा।
प्रतियोग (सं० पु०) विरोध, वैर, शत्रुता, चढ़ा उपरी।
प्रतियोगी (वि०) वैरी, विरोधी, शत्रु। [उपरी।
प्रतियोगीता (सं० स्त्री०) वैर, विरोध, शत्रुता, चढ़ा
प्रतिरथ (सं० पु०) बराबर का लड़ने वाला।
प्रतिरात्र (सं० पु०) प्रत्येक रात, प्रति रात्रि।
प्रतिरूप (सं० पु०) प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, आकृति (वि०) समान, सदृश, बराबर। [बाधा।
प्रतिरोध (सं० पु०) फटकार, तिरस्कार, निषेध, रोक,
प्रतिरोधक (सं० पु०) बाधक, चोर, डाकू, तस्कर, लुटेरा।
प्रतिलिपि (सं०स्त्री०) नक़ल, समान लेख। [दुष्ट, नीच।
प्रतिलोम (वि०) उलटा, बिपरीत, बाँया, औंधा,

प्रतिलोमज (सं० पु०) उत्तम वर्ण की स्त्री में अधम वर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान।
प्रतिलोमविवाह (सं० पु०) विवाह विशेष जिसमें वर नीच वर्ण का और वधू उच्च वर्ण की हो।
प्रतिवचन (सं० पु०) प्रत्युत्तर, उत्तर, प्रतिध्वनि।
प्रतिवर्ष (सं० पु०) हर साल, प्रत्येक वर्ष।
प्रतिवाक्य (सं० पु०) प्रत्युत्तर।
प्रतिवाद (सं० पु०) विरोध, आपत्ति, खण्डन।
प्रतिवादी (वि०) विपक्षी, प्रतिपक्षी, आपत्ति करने वाला।
प्रतिबाधक (सं० पु०) बाधा देने वाला, निवारण करने [वाला।
प्रतिवास (सं० पु०) निकटस्थ, पड़ोस, सन्निकट, समीपस्थ।
प्रतिवासर (सं० पु०) प्रतिदिन, नित्यशः, रोज़मर्रा।
प्रतिवासी (सं० पु०) पड़ोसी, समीपी, प्रतिवेशी।
प्रतिविधान (सं० पु०) निवारण, प्रतिकार, प्रतिबाधा।
प्रतिबिम्ब (सं० पु०) परछाँई, प्रतिमूर्ति, प्रतिच्छाया।
प्रतिबिम्बित (वि०) प्रतिछायान्वित, प्रतिबिम्ब [प्राप्त।
प्रतिवेश (सं० पु०) पड़ोस, प्रतिवास।
प्रतिवेशी (वि०) पड़ोसी, प्रतिवासी।
प्रतिशब्द (सं० पु०) प्रतिध्वनि, गूँज।
प्रतिश्याय (सं० पु०) पीनस का रोग, जुकाम, सरदी।
प्रतिश्रव (सं० पु०) प्रतिज्ञा, प्रण, स्वीकार, अङ्गीकार।
प्रतिश्रुत (वि०) प्रतिज्ञात, स्वीकृत, मंजूर किया हुआ।
प्रतिषिद्ध (वि०) निषेध किया हुआ, निषिद्ध।
प्रतिषेध (सं० पु०) रोक, बाधा, निषेध, खंडन।
प्रतिष्क (सं० पु०) दूत।
प्रतिष्ठ (वि०) प्रसिद्ध, प्रख्यात।
प्रतिष्ठा (सं० स्त्री०) कीर्ति, यश, गौरव, इज़्ज़त, मान, आदर, उद्यापन, स्थापन, संस्कार विशेष, चार अक्षर का एक छन्द।
प्रतिष्ठाकारक (वि०) सम्मान कारक, गौरव कारक।
प्रतिष्ठान (सं० पु०) वर्तमान झूँसी का प्राचीन नाम, स्थापित करने की क्रिया, स्थान, देव मूर्ति की स्थापना, जड़, मूल, पदवी।
प्रतिष्ठासूचक (वि०) आदर प्रकाशित करने वाला।
प्रतिष्ठित (वि०) गौरवान्वित, जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो, इज़्ज़तदार।
प्रतिस्पर्द्धा (सं० स्त्री०) मत्सरता, ईर्ष्या, डाह, जलन, उद्दंड, जो मुक़ाबिला या बराबरी करे।
प्रतिहत (वि०) निराश, बाधित, प्रतिबद्ध, निराश, हटाया हुआ। [ड्यौढ़ीदार।
प्रतिहार (सं० पु०) द्वारपाल, मायावी, फाटकदार,
प्रतिहारी (सं० पु०) द्वारपाल, दरबान।
प्रतिहिंसा (सं० स्त्री०) हिंसा का बदला।
प्रतीकार (सं० पु०) देखो "प्रतिकार"।
प्रतीक्षक (वि०) बाट जोहने वाला, राह देखने वाला।
प्रतीक्षा (सं० स्त्री०) बाट देखना, राह जोहना, परखाना।
प्रतीची (सं० स्त्री०) पश्चिम दिशा।
प्रतीचीन (वि०) पश्चिम दिशा में रहने वाला, पश्चिम दिशा में स्थित या उत्पन्न।
प्रतीत (वि०) अवगत, विदित, ज्ञात, सस्नेह, सादर, प्रसिद्ध, विख्यात।
प्रतीति (सं० स्त्री०) कीर्ति, ज्ञान, प्रसिद्धि।
प्रतीयमान (वि०) विदित, अनुभूत, अवगत।
प्रतू (सं० पु०) प्राचीन, पुराण, पुरातन, पुराना।
प्रतोद (सं० पु०) पैना, चाबुक, सामगान विशेष।
प्रत्न (वि०) पुरातन, पुराण। [की विवेचना हो।
प्रत्नतत्व (सं० पु०) वह विद्या जिसमें प्राचीन समय की बातों
प्रत्यक्ष (वि०) सामने, सन्मुख, प्रकट।
प्रत्यङ्ग (सं० पु०) नाक कान आदि अवयव।
प्रत्यन्त (सं० पु०) म्लेच्छदेश, प्रान्त भाग (वि०) सन्निकृष्ट।
प्रत्यन्त पर्वत (सं० पु०) पर्वत के समीप का क्षुद्र पर्वत।
प्रत्यभिज्ञान (सं० पु०) अनुमान, किसी ख़ास कारण से याद आना।
प्रत्यभियोग (सं० पु०) वह अभियोग जो अभियुक्त अपने अभियोग लगाने वाले पर लगावे।
प्रत्यभिलाषा (सं० स्त्री०) पुन इच्छा करना, पुनरभिलाषा।
प्रत्यभिवाद (सं० पु०) वह आशीर्वाद जो किसी पूज्य को प्रणाम करने पर मिले।
प्रत्यय (सं० पु०) निश्चय, विश्वास, हेतु, कारण, प्रकृति के उत्तर पद में आने वाली विपत्ति।
प्रत्यर्थी (सं० पु०) प्रतिवादी, मुद्दाअलेह।
प्रत्यर्पण (सं० पु०) प्रतिदान, लौटाना।
प्रत्यवाय (सं० पु०) पाप, दोष, अनिष्ट, व्याघात।
प्रत्यह (अव्य०) प्रतिदिन, प्रति वासर, दिनदिन।

प्रत्याख्यान (सं० पु०) खण्डन, निराकरण।
प्रत्यागमन (सं० पु०) लौट आना।
प्रत्यादेश (सं० पु०) प्रतिकार, खण्डन, परामर्श, सलाह, उपदेश, दैववाणी। [देखना।
प्रत्याशा (सं० पु०) विश्वास, भरोसा, आशा, राह
प्रत्याशारहित (वि०) आशारहित, वाञ्छाशून्य।
प्रत्याशी (वि०) भरोसा वाला, अभिलाषी।
प्रत्यासन्न (वि०) समीपस्थ, सन्निकटस्थ।
प्रत्याहार (सं०पु०) इन्द्रिय संयम।
प्रत्युत (अव्य०) वरन, वरंच, वैपरीत्य।
प्रत्युत्तर (सं०पु०) जवाब का जवाब।
प्रत्युत्पन्न (वि०) उपस्थित, प्रस्तुत, प्रतिभान्वित।
प्रत्युत्पन्नमति (वि०) सूक्ष्मदर्शी, प्रतिभान्वित।
प्रत्युपकार (सं० पु०) बदला, प्रतिफल।
प्रत्युपकारी (वि०) जो उपकार के बदले उपकार करे।
प्रत्यूष (सं०पु०) प्रभात, सवेरा, सूर्य।
प्रत्यूह (सं० पु०) बाधा, आपदा।
प्रत्येक (अव्य०) हर एक, एक एक, सब।
प्रथम (वि०) पहला, अग्रिम, प्रधान।
प्रथमतः (अव्य०) पूर्व, प्रथम, पहले ही।
प्रथमा (सं० स्त्री०) पहले आने वाली विभक्ति।
प्रथमी (सं० स्त्री०) पृथ्वी। [रिवाज।
प्रथा (सं० स्त्री०) चाल चलन, व्यवहार, रीति, रस्म,
प्रथी (सं० स्त्री०) पृथ्वी।
प्रथु (सं० पु०) विष्णु, पृथु।
प्रद (वि०) दानकर्ता, दानी, देने वाला। [और घूमना।
प्रदक्षिण या प्रदक्षिणा (सं० पु०) देवता आदि के चारों
प्रदत्त (वि०) सादर दिया हुआ, समर्पित।
प्रदर (सं०पु०) स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय से सफ़ेद या लाल रङ्ग का लसदार पानी सा बहता है, बाण, तीर, फोड़ने का भाव।
प्रदर्शक (सं० पु०) दिखाने वाला।
प्रदर्शन (सं० पु०) दर्शन, दिखाना।
प्रदर्शनी (सं० स्त्री०) नुमायश, वह स्थान जहाँ अच्छी अच्छी अनेक भाँति की चीज़ें आती हैं, जो सब से उत्तम चीज़ें होती हैं उन पर इनाम मिलता है।
प्रदल (सं० पु०) बाण, तीर।
प्रदान (सं० पु०) अर्पण, त्याग।
प्रदीप (सं० पु०) दीप, दीया, चिराग़। [हुआ।
प्रदीप्त (वि०) चमकीला, प्रकाशित, चमचमाता
प्रदेश (सं० पु०) प्रान्त, किसी देश का एक भाग, अँगूठा और तर्जनी का परिमाण।
प्रदेशनी (सं० स्त्री०) तर्जनी, अँगुली।
प्रदोष (सं०पु०) सायंकाल, रात्रि का पहला चार दण्ड।
प्रदोष काल (सं० पु०) सायंकाल।
प्रद्युम्न (सं० पु०) कामदेव, ये भस्म होने पर रुक्मिणी के गर्भ से श्रीकृष्ण के पुत्र रूप में उत्पन्न हुए थे, जन्म के सातवें दिन शम्बर नामक राक्षस इनको उठा ले गया, यह बात कृष्ण को मालूम थी पर इनको ले आने के लिए कृष्ण चिन्तित नहीं थे। शम्बर की स्त्री का नाम मायावती था जो पूर्व जन्म में रति थी, यह प्रद्युम्न को देखते ही पहचान गयी, इनको स्वयं दूध न पिलाकर धाय से दूध पिलवाया उनके बड़े होने पर मायावती ने इनको अपना पति बनाना चाहा। प्रद्युम्न ने पूछा, "तुम ऐसा क्यों करना चाहती हो ?" उसने उत्तर दिया, "आप मेरे पूर्व जन्म के पति हैं। आप के पिता श्रीकृष्ण हैं शम्बर आपको यहाँ चुरा कर लाया है। मैं आपके रूप पर मोहित हूँ।" यह सुन कर प्रद्युम्न ने शम्बर के साथ युद्ध किया और उसका नाश कर द्वारका चले गये।
प्रद्योत (सं०पु०) किरण, आभा, चमक, एक यज्ञ का नाम।
प्रद्योतन (सं० पु०) सूर्य, चमक, दीप्ति।
प्रधन (सं० पु०) अधिक धनी, लड़ाई, युद्ध।
प्रधान (वि०) प्रथम, मुख्य, श्रेष्ठ (सं० पु०) माया, प्रकृति, बुद्धि, सेना नायक, मन्त्री, वज़ीर।
प्रधानता (सं० स्त्री०) मुख्यता, श्रेष्ठता।
प्रधाननगर (सं०पु०) राजधानी, प्रसिद्ध नगर, बड़ा नगर, ज़िला।
प्रधि (सं० पु०) पहिये का धुरा।
प्रधी (वि०) उत्तम बुद्धि वाला, अच्छी बुद्धि वाला।
प्रध्वंश (सं० पु०) नाश, क्षय, हानि।
प्रध्वंशक (सं० पु०) नाश करने वाला।
प्रन (सं० पु०) प्रण।
प्रनाम (सं० पु०) प्रणाम।
प्रनाशी (वि०) अनित्य, विनशनशील।

प्रपञ्च (सं० पु०) ढकोसला, धोखा, भव, दुनिया, संसार।
प्रपञ्चित (वि०) प्रतारित, भ्रमयुक्त, विस्तृत।
प्रपञ्ची (वि०) छली, कपटी, बखेड़िया, ढोंगी।
प्रपन्न (वि०) आश्रित, शरणागत।
प्रपा (सं० स्त्री०) प्याऊ, पनशाला।
प्रपात (सं० पु०) झरना, पर्वतों का किनारा।
प्रपितामह (सं० पु०) प्रपिता के पिता, दादा के बाप, आजा के बाप।
प्रपितामही (सं० स्त्री०) प्रपितामह की स्त्री, बाप की आजी, बाप की दादी। [कहते हैं।
प्रपुन्ना (सं० पु०) एक पौधे का नाम जिसको पँवार
प्रपौत्र (सं० पु०) पौत्र का पुत्र, बेटे का पौत्र।
प्रपौत्री (सं० स्त्री०) पौत्र की पुत्री, बेटे की पौत्री।
प्रफुल्ल (वि०) विकसित, खिला हुआ, प्रस्फुटित।
प्रफुल्लता (सं० स्त्री०) विकाश, हर्ष, आह्लाद।
प्रफुल्लवदन (वि०) प्रसन्नमुख, प्रसन्नचित्त।
प्रफुल्लित (वि०) विकसित, खिला हुआ, प्रस्फुटित।
प्रबंध (सं० पु०) निबन्ध, परस्पर संबंधित वाक्य।
प्रबंधक (सं० पु०) प्रबंध लेखक।
प्रबंधकर्ता (सं० पु०) व्यवस्थापक, इन्तिज़ामकार।
प्रबल (सं० पु०) बली, बलवान्, साहसी।
प्रबलता (सं० स्त्री०) शक्ति, प्रबल का भाव।
प्रबाल (सं० पु०) मूँगा।
प्रबोध (सं० पु०) सावधानी, ज्ञान, चेतना, निद्रात्याग, चेतावनी। [सचेत करना।
प्रबोधन (सं० पु०) जागरण, जगाना, सावधान करना,
प्रभञ्जन (सं० पु०) वायु, पवन।
प्रभञ्जनजाया (सं० पु०) हनुमान।
प्रभञ्जनसुत (सं० पु०) हनुमान।
प्रभद्र (सं० पु०) नीम का पेड़।
प्रभव (सं० पु०) जन्म, उत्पत्ति, पैदायश, उत्पत्ति हेतु।
प्रभा (सं० स्त्री०) दीप्ति, आभा, आलोक, कुबेर नगरी, एक गोपी का नाम।
प्रभाकर (सं०पु०) सूर्य, चन्द्र, अग्नि, समुद्र, अकवन का पेड़।
प्रभाकीट (सं० पु०) खद्योत, जुगनू।
प्रभात (सं० पु०) सवेरा, प्रातःकाल।
प्रभाती (सं० स्त्री०) एक रागिनी विशेष जो प्रातःकाल गायी जाती है।
प्रभाव (सं० पु०) प्रताप, तेज, गौरव।
प्रभावती (सं० स्त्री०) तेरह अक्षर का एक छन्द, पाताल गंगा, बज्रनाथ नामक दैत्य की कन्या इसको श्रीकृष्ण हर लाये थे।
प्रभास (सं० पु०) एक तीर्थ का नाम।
प्रभिन्न (सं० पु०) मतवाला हाथी।
प्रभु (सं० पु०) मालिक, स्वामी, रक्षक, पालक, समर्थ।
प्रभुता (सं० स्त्री०) प्रधानता, श्रेष्ठता, अधिपन्य।
प्रभूत (वि०) अधिक, बहुत, ज़्यादा, प्रचुर।
प्रभृति (अव्य०) इत्यादि, वग़ैरह।
प्रमद (सं० पु०) हर्ष, आह्लाद, आनन्द।
प्रमदकानन (सं० पु०) प्रमद वन।
प्रमदवन (सं० पु०) राजाओं के अन्तःपुर का उपवन।
प्रमदा (सं० स्त्री०) सुलक्षणा नारी, उत्तम स्त्री।
प्रमन्थ (सं० पु०) शिव के गण।
प्रमन्थाधिप (सं० पु०) शिव।
प्रमा (सं० पु०) यथार्थ ज्ञान, अनुभव, वास्तविक ज्ञान।
प्रमाण (सं० पु०) साक्षी, दृष्टान्त, उदाहरण, शास्त्र, मर्यादन, नित्य, सत्यवादीयता।
प्रमाण पत्र (सं० पु०) निदर्शन पत्र, दृष्टान्त लिपि।
प्रमाणिक (वि०) प्रमाणयुक्त, विश्वासी।
प्रमाणित (वि०) प्रमाण द्वारा सिद्ध, निश्चित।
प्रमातामह (सं० पु०) परनाना, नाना का बाप।
प्रमातामही (सं० स्त्री०) परनानी, नाना की माता।
प्रमाथ (सं० पु०) बल द्वारा हरण, निकालना।
प्रमाथी (सं० पु०) देह और इन्द्रियों को पीड़ा पहुँचाने वाला।
प्रमाद (सं० पु०) विक्षिप्तता, भूल, भ्रम।
प्रमादिक (वि०) ग़लती करने वाला।
प्रमादिकी (सं० स्त्री०) वह कन्या जिसे किसी ने दूषित कर दिया हो।
प्रमादी (वि०) विक्षिप्त, उन्मत्त, पागल।
प्रमित (वि०) विदित, प्रकट, अवगत, प्रमाणित।
प्रमिति (सं० स्त्री०) देखो "प्रभा"।
प्रमीला (सं० स्त्री०) तन्त्री, तन्द्रा।
प्रमुख (वि०) मुखिया, अगुआ, नेता।
प्रमुदित (वि०) आह्लादित, प्रसन्न, आनन्दित।
प्रमेय (वि०) प्रमाण से सिद्ध होने योग्य, उपपाद्य।

प्रमेह (सं० पु०) पुरुषों का एक रोग ।
प्रमोचन (सं० पु०) उन्मोचन, उद्धरण, त्याग ।
प्रमोद (सं० पु०) आनन्द, आह्लाद ।
प्रमोदक (सं०पु०) प्रमोद करने वाला, ख़ुश करने वाला।
प्रमोदन (सं० पु०) विष्णु का नाम (वि०) हर्षकारक, प्रचुर ।
प्रमोदन्ति (सं० स्त्री०) उत्पत्ति, अधिकता, प्रचुरता ।
प्रयत (वि०) पवित्र, शुद्ध, तैयार, तत्पर ।
प्रयत्न (सं० पु०) चेष्टा, उद्योग, यत्न ।
प्रयाग (सं० पु०) एक तीर्थ स्थान का नाम, जो गंगा यमुना के संगम पर है, तीर्थ-राज ।
प्रयागवाल (सं० पु०) ब्राह्मण विशेष जो सङ्गम तट पर दान लेते हैं ।
प्रयाण (सं० पु०) यात्रा, प्रस्थान, गमन ।
प्रयास (सं० पु०) प्रयत्न, उद्योग, थकावट, परिश्रम ।
प्रयुक्त (वि०) संयमी, योग्य ।
प्रयोग (सं० पु०) व्यवहार, उदाहरण ।
प्रयोजक (सं० पु०) नियोजक, नियोगकर्त्ता, काम में लगाने वाला । [हेतु ।
प्रयोजन (सं० पु०) मतलब, उद्देश्य, अभिप्राय, कारण,
प्ररोचना (सं० स्त्री०) उत्तेजना, फुसलाहट, बढ़ावा ।
प्ररोह (सं० पु०) अङ्कुर, अँखुआ, ऊपर की ओर निकालना, उगना, नंदी वृक्ष, तुन का पेड़ ।
प्रलपित (वि०) अंडबंड कहा हुआ, कथित, उक्त ।
प्रलम्ब (सं० पु०) एक दैत्य का नाम, जिसका बध बलराम ने किया था ।
प्रलय (सं० पु०) लय,कलपान्त, सृष्टि का नाश ।
प्रलयकर्त्ता (सं० पु०) प्रलय करने वाला,शिव, महादेव ।
प्रलाप (सं० पु०) अंडबंड कथन, टाँय टाँय करना, जो कुछ मन में आवे बकना ।
प्रलेप (सं० पु०) औषध आदि का लेप, लेपन ।
प्रलोभ (सं० पु०) अत्याधिक लोभ, स्पृहा, लालसा ।
प्रलोभन (सं० पु०) लालच, लोभ ।
प्रवचन (सं० पु०) अर्थ समझा कर बताना ।
प्रवञ्चना (सं० स्त्री०) धूर्तता, ठगपन, चकमा देकर किसी का कुछ हड़प लेना ।
प्रवण (वि०) झुका हुआ, नवा हुआ, नीची भूमि ।
प्रवर (सं० पु०) गोत्र, वंश, सन्तान, श्रेष्ठ, प्रधान ।
प्रवर्त (सं० पु०) प्रारम्भ, शुरू, तत्पर, तैयार ।
प्रवर्तक (सं० पु०) उत्पादक, प्रयोजक, प्रेरक, सहायक, उत्साह देने वाला ।
प्रवर्तन (सं० पु०) प्रेषण,प्रेरण, आदेश ।
प्रवर्तित (वि०) आदेशित, आज्ञापित, प्रेरित ।
प्रवर्षण (सं० पु०) पर्वत का नाम, जो किष्किंधा के पास है, जहाँ रामचन्द्र ने वनवास के समय कुछ दिन तक वास किया था ।
प्रवाद (सं० पु०) गौगा, किंवदन्ती, बाज़ारू ख़बर ।
प्रवास (सं० पु०) विदेश, परदेश, विदेश वास ।
प्रवासन (सं० पु०) देश निकाला ।
प्रवासी (वि०) विदेशी, परदेशी, परदेशवासी ।
प्रवाह (सं० पु०) धारा, स्रोत, बहाव ।
प्रवाहक (सं० पु०) गाड़ीवान, जो गाड़ी हाँके ।
प्रवाहिका (सं० स्त्री०) अतिसार का रोग ।
प्रविष्ट (वि०) घुसा हुआ, पैठा हुआ ।
प्रवीण (वि०) दक्ष, कुशल, पटु, निपुण, चतुर, होशियार ।
प्रवीणता (सं० स्त्री०) दक्षता, कुशलता, प्रवीणता, निपुणता ।
प्रवृत्त (वि०) तत्पर, तैयार, उद्यत ।
प्रवृत्ति (सं० स्त्री०) किसी कार्य में लगने की अभिलाषा, इच्छा, अभिलाषा, रुचि, चेष्टा ।
प्रवेश (सं० पु०) पैठ, पैसार, पहुँच । [वाला ।
प्रवेशक (सं० पु०) पैठने वाला,पहुँचने वाला, दाख़िल होने
प्रशंसनीय (वि०) प्रशंसा के योग्य ।
प्रशंसा (सं० स्त्री०) गुणगान, श्लाघा, तारीफ़ ।
प्रशम (सं० पु०) वारण, नाश, ध्वंस, निवारण, शान्ति, भागवत के अनुसार रंतिदेव के पुत्र का नाम ।
प्रशमन (सं० पु०) शमता, मारण, वध, निवारण, अस्त्र-प्रहार । [विस्तृत ।
प्रशस्त (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, स्वच्छ, सुन्दर, श्लाघनीय,
प्रशस्ति (सं० स्त्री०) गुण, स्तुति, उत्तमता, अभिनन्दन, वह विशेषण युक्त वाक्य जो पत्र के आरम्भ में लिखा जाता है ।
प्रशान्त (वि०) धैर्यवान, शान्त ।
प्रश्न (सं० पु०) जिज्ञासा, सवाल पूँछना ।
प्रश्राव (सं० पु०) मूत, मूत्र, पेशाब ।

प्रश्वास (सं० पु०) नाक से वायु का निकालना, लम्बा श्वास, दीर्घ निश्वास ।

प्रश्रित (वि०) प्रणयी, एक हाथ में आने योग्य द्रव्य ।

प्रश्लथ (वि०) शिथिल, असक्त ।

प्रष्टा (वि०) प्रश्न पूछने वाला, जिज्ञासु ।

प्रष्ठ (वि०) अग्रगामी, अगुआ ।

प्रष्ठा (सं० पु०) पीठ, अगुआ, श्रेष्ठ ।

प्रसक्त (वि०) असक्त, लग्न, मग्न, प्राप्त, उपस्थित ।

प्रसङ्ग (सं० पु०) संबंध, संभोग, अवसर, उपलक्ष ।

प्रसन्न(वि०) आनन्दित, हर्षित, प्रफुल्ल, निर्मल, स्वच्छ ।

प्रसन्नचित्त (वि०) सन्तुष्टचित्त, दयालु, अनुग्राहक ।

प्रसन्नता (सं० स्त्री०) हर्ष, आनन्द, निर्मलता, स्वच्छता ।

प्रसन्नमुख (वि०) जिसके चहरे से प्रसन्नता प्रकट हो, हँसता हुआ चेहरा ।

प्रसर (सं० पु०) आगे बढ़ना, विस्तार, दृष्टि का फैलाव, व्याप्ति, युद्ध, नाराच, वीरता, समूह, वेग ।

प्रसरण (सं० पु०) सेना का विस्तार ।

प्रसव (सं०पु०) जनना, उत्पन्न करना, कुसुम, फल,पुष्प ।

प्रसवगृह (सं० पु०) सूतिका गृह, सौरी ।

प्रसाद (सं० पु०) नैवेद्य, किसी देवादि को भोग लगाया हुआ द्रव्य, गुरुजनों का उच्छिष्ट, अनुग्रह, प्रसन्नता, सुस्थता ।

प्रसादन (सं० पु०) प्रसन्न करना, मनाना ।

प्रसादी (वि०) प्रसन्नता प्राप्त, कृपायुक्त, प्रसाद ।

प्रसाधन (सं० पु०) सम्पादन, श्रृङ्गार करना, वेश विन्यास, केश रचना ।

प्रसाधनी (सं० स्त्री०) कंघी, कंगही ।

प्रसाधिका (सं० स्त्री०) श्रृङ्गार करने वाली, केश रचना करने वाली, बाल सँवारने वाली ।

प्रसार (सं० पु०) विस्तार, फैलाव, इधर उधर जाना ।

प्रसारण (सं० पु०) विस्तार, प्रसार, फैलाव ।

प्रसारित (वि०) विस्तृत, फैला हुआ ।

प्रसारी (वि०) फैलने वाला ।

प्रसित (सं० स्त्री०) पीव, मवाद ।

प्रसिति (सं० स्त्री०) रस्सी, ज्वाला, लपट ।

प्रसिद्ध (वि०) ख्यात, विख्यात, प्रचलित ।

प्रसिद्धि (सं० स्त्री०) ख्याति, प्रचार ।

प्रसीद (क्रि० अ०) प्रसन्न हो, कृपा करो ।

प्रसुप्त (वि०) खूब सोया हुआ ।

प्रसुप्ति (सं० स्त्री०) गाढ़ निद्रा, नींद ।

प्रसू (सं० स्त्री०) माँ, माता, जननी ।

प्रसूत (वि०) उत्पन्न, उत्पादक ।

प्रसूता (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसने बच्चा जना हो ।

प्रसूति (सं० स्त्री०) उद्भव, उत्पत्ति, जन्म, दक्ष की स्त्री, सती की माता ।

प्रसून (सं० पु०) कुसुम, पुष्प ।

प्रसृत (वि०)फैला हुआ, भेजा हुआ, लगा हुआ, तत्पर ।

प्रसृतज (सं० पु०) व्यभिचार से उत्पन्न पुत्र ।

प्रसेक (सं० पु०) सेचन, निचोड़ ।

प्रस्वेद (सं० पु०) पसीना ।

प्रस्कन्न (वि०) पतित, गिरा हुआ ।

प्रस्तर (सं० पु०) पाषाण, पत्थर ।

प्रस्तरण (सं० पु०) बिछाना, बिछौना ।

प्रस्तरमय (सं० पु०) पाषाणमय, पथरीला ।

प्रस्तार (सं० पु०) फैलाव, विस्तार, समतल ।

प्रस्ताव (सं०पु०) अवसर, चर्चा, ज़िक्र, वृत्तान्त, प्रसङ्ग, सभा समाज में उठाई हुई बात ।

प्रस्तावना (सं० पु०) प्राक्कथन, भूमिका, मुख बंध, अवतरणिका, किसी विषय को आरम्भ करने के पूर्व का वक्तव्य ।

प्रस्ताविक (वि०) यथा समय, समयानुकूल, सामयिक ।

प्रस्तावित (वि०) प्रस्ताव किया हुआ, विचारित, उक्त, कथित ।

प्रस्तिर (सं० पु०) पर्णशय्या, घास पत्ते आदि का बिछौना ।

प्रस्तुत (वि०) उद्यत, तत्पर, तैयार, उपस्थित ।

प्रस्थ (सं० पु०) एक सेर के बराबर की तौल, परिमाण विशेष ।

प्रस्थान (सं० पु०) गमन, यात्रा, कूच, रवानगी, विदा ।

प्रस्थापन (सं० पु०) भेजना, पठाना ।

प्रस्थापित (वि०) भेजा हुआ, पठाया हुआ, प्रेरित ।

प्रस्नुषा (सं० स्त्री०) पोते की स्त्री, पतोहू ।

प्रस्फुट (वि०) खिला हुआ, विकसित ।

प्रस्फुटित (वि०) विकसित, प्रफुल्लित

प्रस्रव (सं० पु०) मूत, पेशाब, मूत्र ।

प्रस्रवण (सं० पु०) बहना, निर्झर, एक पहाड़ का नाम ।

प्रस्राव (सं० पु०) मूत्र, मूत, पेशाब ।
प्रस्वेद (सं० पु०) पसीना, स्वेद ।
प्रहर (सं० पु०) पहर, दिन रात के आठ सम भागों में से एक सम भाग ।
प्रहरण (सं०पु०) अस्त्र, मारण ।
प्रहरी (सं० पु०) पहरुआ, चौकीदार ।
प्रहर्ष (सं० पु०) अतिशय आनन्द, अत्याधिक हर्ष ।
प्रहर्षणी (सं० स्त्री०) तेरह वर्ण का एक छन्द, हल्दी ।
प्रहसन (सं० पु०) हँसी, ठट्टा, मज़ाक, ठठोली, दिल्लगी, परिहास, उपहास।
प्रहस्त (सं० पु०) चपत, थप्पड़, एक राक्षस का नाम, जो रावण का सेनापति था ।
प्रहार (सं० पु०) आघात, चोट, मारण ।
प्रहारी (सं० पु०) मारने वाला, आघात करने वाला ।
प्रहित (वि०) प्रेरित, निरस्त ।
प्रहीण (वि०) छोड़ा हुआ ।
प्रहुत (सं० पु०) वलिवैश्वदेव, भूत, यज्ञ ।
प्रहृष्ट (वि०) आनन्दित, बहुत प्रसन्न, आह्लादित ।
प्रहृष्टमना (वि०) प्रसन्नचित्त ।
प्रहेलिका (सं० स्त्री०) पहेली, बुझौवल, कूट प्रश्न ।
प्रह्लाद (सं० पु०) एक परम विष्णु भक्त, इनका जन्म दैत्य कुल में हुआ था, इनके पिता का नाम हिरण्य कशिपु था । इनकी भक्ति का विकाश बचपन ही से आरम्भ हुआ, दैत्यराज ने इनके पढ़ाने का भार अपने पुरोहित षण्ड और अमरक पर सौंपा, पर भगवद्भक्ति के सिवाय प्रह्लाद और कुछ जानता ही न था, हिरण्य कशिपु विष्णु का कट्टर विरोधी था, उसने बहुत चाहा, कि प्रह्लाद भगवद्भक्ति छोड़ दे, इसके लिए उसने प्रह्लाद को विष पिलवाया, हाथी से कुचलवाया, पहाड़ से गिरवाया, समुद्र में फेंकवाया, आग में जलाया पर प्रह्लाद का बाल बाँका नहीं हुआ वह अपनी भक्ति पर अटल रहा, अन्त में भक्तवत्सलभगवान ने नृसिंह रूप धारण कर कशिपु का वध किया, प्रह्लाद एक कट्टर सत्याग्रही था, उसको कितने ही दुःख झेलने पड़े पर उसने सत्याग्रह नहीं छोड़ा ।
प्राक् (अव्य०) आगे, पहले, प्रथम, आदि, आरम्भ ।
प्राक्तन (सं० पु०) प्राचीन, पुरातन, पुराना ।
प्राकाम्य (सं० पु०) शिव के अष्ट विधि ऐश्वर्यों में से एक, पर्याप्त प्रचुरता, यथेष्ट ।
प्राकार (सं० पु०) वह दीवार जो नगर की रक्षा के लिये नगर के चारों ओर बनी रहती है, चहार दीवारी, कोट की दीवार ।
प्राकृत (सं० पु०) एक भाषा का नाम जिसका व्यवहार प्राचीन समय में था (वि०) स्वाभाविक, वास्तविक, वस्तुतः, नीच, अधम, अन्त्यज ।
प्राकृत भाषा (सं० स्त्री०) एक प्राचीन भाषा ।
प्राक्तन (वि०) पुराना (सं० पु०) वह कर्म जो पहले किया जा चुका हो और आगे जिसका शुभ और अशुभ फल भोगना पड़े, भाग्य, प्रारब्ध ।
प्रागभाव (सं० पु०) सम्भावना, वह अभाव जिसके पीछे उसका प्रतियोगी भाव उत्पन्न होता है, वह पदार्थ जिसका आदि न हो पर अंत हो ।
प्रागल्भ्य (सं० पु०) गर्व, घमण्ड, दर्प, अहंकार, स्त्रियों का प्राकृतिक भाव ।
प्राची (सं० स्त्री०) पूरब दिशा, पूर्व दिशा ।
प्राचीन (वि०) पूर्व का, पुराना, पुराण, पूर्वकालीन ।
प्राचीनता (सं० स्त्री०) पूर्वकालीनता, पुरानापन ।
प्राचीर (सं० पु०) एक प्रकार का कीड़ा ।
प्राचुर्य (वि०) बाहुल्य, अधिकता, प्रचुरता ।
प्राच्य (सं०पु०) वह देश जो शरावती नदी के पूर्व दक्षिण में है (वि०)प्राचीन।
प्राजाक (सं० पु०) रथ चलाने वाला, सारथी ।
प्राजापत्य (सं० पु०) बारह दिन का एक व्रत विशेष, इसमें पहले तीन दिन तक सन्ध्या समय २२ ग्रास फिर तीन दिन तक प्रातःकाल २६ ग्रास फिर तीन दिन तक आपाचित अन्न २४ ग्रास खा कर अन्त के तीन दिन उपवास करना पड़ता है, विवाह विशेष, रोहिणी नक्षत्र ।
प्राज्ञ (वि०) बुद्धिमान, दक्ष, निपुण, विज्ञ, पण्डित ।
प्राज्य (वि०) प्रचुर, यथेष्ट, अधिक ।
प्राञ्जल (वि०) सरल, सीधा, सच्चा ।
प्राञ्जलि, प्राञ्जली (सं० स्त्री०) अंजुली, दोनों हाथों को मिलाकर संपुटाकार बनाना, अञ्जलिबद्ध।
प्राड्विवाक (सं०पु०) वह पुरुष जो राजा द्वारा विचार के लिए नियुक्त किया जाता है, न्यायाधीश, विचारक।

प्राण (सं० पु०)जीव, श्वास, वायु, ब्रह्मा, प्रजापति ।
प्राणत्याग (सं० पु०) मृत्यु, मरण, मौत, जीवन-त्याग ।
प्राणदण्ड (सं० पु०) प्राणनाशक दण्ड ।
प्राणदा (सं०स्त्री०) जीवदाता, प्राण रक्षक ।
प्राणदाता (सं० पु०) जीवन दाता, प्राण रक्षक ।
प्राणनाथ (सं० पु०) स्वामी, पति, प्रभु, नाथ ।
प्राणपण (सं० पु०) प्राण त्याग, अत्यन्त आयास ।
प्राणप्रतिष्ठा (सं० स्त्री०) देवता आदि की प्रतिमा में मन्त्र द्वारा प्राण संस्थापन ।
प्राणप्रिय (वि०) प्रियतम, प्राणतुल्य प्रिय ।
प्राणमय कोष (सं० पु०) कर्मेन्द्रिय सहित प्राण पंचक ।
प्राणसमा (सं० स्त्री०) जाया, भार्या, पत्नी ।
प्राणान्त (सं०पु०) मृत्यु, मौत, मरण । [योगाङ्ग विशेष ।
प्राणायाम (सं०पु०) श्वास को रोकना या ऊपर खींचना,
प्राणी (वि०) प्राणधारी, शरीरी, देही, जीवधारी ।
प्राणेश (सं० पु०) स्वामी, पति, प्राणनाथ ।
प्रातः (सं० पु०) प्रभात, सवेरा, तड़का, भोर ।
प्रातःकाल (सं० पु०) सूर्योदय से लेकर छः दण्ड तक का समय, प्रभात, सवेरा, तड़का ।
प्रातःक्रिया (सं० स्त्री०) सवेरा का कृत्य जैसे शौच, स्नान संध्या आदि । [सवेरे की जाती है ।
प्रातःसंध्या (सं० स्त्री०) वह वैदिक मन्त्रोपासना जो
प्रातराश (सं० पु०) जल खावा, जलपान, खरमिटाव, प्रातःकाल का हल्का भोजन ।
प्रादुर्भाव(सं० पु०) उदय, उत्पत्ति, आविर्भाव,विकाश ।
प्रादेश (सं० पु०) बीता, बालिश्त, तर्जनी और अँगूठे के बीच का भाग ।
प्राधान्य (सं० पु०) श्रेष्ठता, प्रधानता । [भाग, प्रदेश ।
प्रान्त (सं० पु०)सीमा, कगार, छोर, अन्त, शेष, देश का
प्रान्त भूमि (सं० स्त्री०) किसी वस्तु का अन्तिम भाग ।
प्रान्तर (सं० पु०) दूरगम्य पथ, छाया-शून्य पथ, वन, उजाड़ स्थान,कोटर । [करने वाला ।
प्रापक (वि०) पैदा करनेवाला, प्राप्ति संबन्धी, हासिल
प्राप्त (वि०) पाया हुआ, लब्ध, मिला, पाया, उचित वसूल ।
प्राप्तकाल (सं० पु०) निर्दिष्ट काल, उपयुक्त समय ।
प्राप्ति (सं० स्त्री०) वृद्धि, लाभ, समिति, संघ, संगति, अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक जिससे वांछित पदार्थ मिलता है, मिलना, उपार्जन, नाटक का सुखद उपसंहार, उदय, सूद, नफ़ा ।
प्राप्य (सं० पु०) पाने योग्य ।
प्रामाणिक (वि०) विश्वास वाला, अतिमान्य, प्रधान, प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से सिद्ध, शास्त्र सिद्ध ।
प्रामाण्य (सं० पु०) ग्राह्य, विश्वास, प्रमाण करने योग्य, विश्वास के योग्य । [बार बार ।
प्रायः (क्रि० वि०) बहुधा, कभी कभी, लगभग, फेर फेर,
प्रायश्चित (सं० पु०) वह काम जिससे पाप दूर हों, पाप के दूर करने का साधन ।
प्रारब्ध (सं० पु०) भाग्य, पूर्व कृत कर्म, कर्म में लिखा हुआ, दैव योग, संयोग, शुरू किया हुआ काम ।
प्रारम्भ (सं० पु०) आरम्भ, प्रथम, उपक्रम, शुद्ध ।
प्रारम्भिक (वि०) आरम्भ का ।
प्रार्थक (सं० पु०) याचक, माँगने वाला ।
प्रार्थना (सं० स्त्री०) विनती, चाहना, चाहत, वाञ्छा, माँगना, याचना, परमेश्वर से अपने पापों की माफ़ी चाहना । [याचनीय, माँगा हुआ,वाञ्छित, निवेदित ।
प्रार्थनीय (वि०) याचित, शत्रु संरुद्ध, अभिहित,
प्रार्थित (वि०) देखो "प्रार्थनीय" ।
प्रालब्ध (सं० स्त्री०) प्रारब्ध ।
प्रावृट (सं० स्त्री०) वर्षाकाल, वर्षाऋतु, बरसात ।
प्रावृत (सं० पु०) ओढ़ने का कपड़ा, आच्छादन, घूँघट, ओढ़नी ।
प्रासाद (सं० पु०) महल, राजभवन, राजमन्दिर, देव-गृह, देवता का मन्दिर । [प्रेमी ।
प्रिय (सं०पु०) भर्ता,पति,मृगभेद (वि०) हृद्य, प्रियतम,
प्रियतम (सं० पु०) स्वामी, पति, वृक्ष विशेष (वि०) अतिशय प्रिय, बहुत प्यारा, अत्यन्त प्यारा ।
प्रियतमा (सं० स्त्री०) पत्नी, स्त्री (वि०) अधिक प्यारी, अत्यन्त प्यारी ।
प्रियपात्र (वि०) स्नेह भाजन, प्यारा । [मिष्टभाषी ।
प्रियवादी (वि०) मीठी और प्यारी बातें बोलने वाला,
प्रिया (वि०) प्यारी, प्रियतमा (सं०स्त्री०) भार्या, जोरू ।
प्रीत (वि०) प्रीतियुक्त, प्रिय, सन्तुष्ट । [(सं०पु०) पति ।
प्रीतम (वि०) प्रियतम, बहुत प्यारा, अत्यन्त प्यारा
प्रीति (सं० स्त्री०) प्यार, प्रेम, स्नेह, मोह, दुलार, हर्ष, तृप्ति ।

प्रीतिकर (वि०)प्रेम जनक ।
प्रीतिकारक (सं० पु०) प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला ।
प्रीतिपात्र (सं० पु०) प्रेमी, प्रेम भाजन ।
प्रीत्यर्थ (अव्य०) प्रसन्नता के लिये ।
प्रेक्षक (सं० पु०) दर्शक, देखने वाला ।
प्रेक्षण (सं० पु०) देखना, दर्शन, आँख, दृष्टि ।
प्रेक्षणीय (वि०) देखने योग्य, दृश्य । [विशेष ।
प्रेङ्खण (सं० पु०) अच्छी तरह हिलना वा झूलना, रूपक
प्रेत (सं०पु०) नरकस्थ जीव, पिशाच भेद, भूत, सपिण्डी के पहले की हालत,मृतक,मुर्दा(वि०)मरा हुआ,मृत ।
प्रेतकर्म (सं० पु०) अन्त्येष्टि क्रिया ।
प्रेतगृह (सं० पु०) श्मशान, मसान, मरघट ।
प्रेतनदी (सं० स्त्री०) बैतरणी नदी ।
प्रेतनी (सं०स्त्री०) भूतनी, पिशाचनी, डायन, चुड़ैल ।
प्रेतवन (सं० पु०) नरक, गयाक्षेत्र, प्रेतों का स्थान ।
प्रेम (सं० पु०) प्यार, प्रीत ,सनेह, लाड़,दुलार, पियार ।
प्रेमा (सं० पु०) स्नेह, स्नेही, इन्द्र ।
प्रेमालाप (सं० पु०) प्रेम पूर्वक बातचीत ।
प्रेमालिङ्गन(सं०पु०)प्रेम पूर्वक गले लगाना । [स्नेहपात्र ।
प्रेमास्पद (वि०) प्रेमपात्र, प्रणयी, प्रेमभाजन,
प्रेमिक (सं० पु०) प्रेमी, प्रेम करने वाला । [आसक्त ।
प्रेमिका (वि०) प्यार करने वाली, प्यारी, प्रियतमा,
प्रेमी (सं० पु०) प्यार करने वाला, प्यारा, प्रियतम, स्नेही, छोही, आसक्त ।
प्रेयसी (सं० पु०) प्रियतमा नारी, प्राणवल्लभा, प्यारी ।
प्रेरक (सं० पु०) भेजने वाला, पठवैया, प्रेरणा करने वाला, ताकीद करने वाला ।
प्रेरणा (सं०स्त्री०) विधि, आज्ञा, प्रेषण, पठाना, नियोग, भेजना, आज्ञा करना, ताकीद करना, उभाड़ना, नौकरों को काम में लगाना ।
प्रेरना (क्रि० स०) भेजना, पठाना, उभाड़ना ।
प्रेरित (वि०) प्रेषित, भेजा हुआ, पठाया हुआ, नियुक्त, आज्ञा किया हुआ ।
प्रेषण (सं०पु०) प्रेरणा करना, पठावना ।
प्रेषणीय (वि०) भेजने योग्य ।
प्रेषित (वि०) प्रेरित, भेजा गया । [अति प्रिय ।
प्रेष्ठ (सं० स्त्री०) भार्या, जङ्घा, प्राणवल्लभा, जाँघ (वि०)
प्रेष्य (वि०) प्रेषणीय (सं० पु०) दूत, सेवक, पियादा ।
प्रैष (सं० पु०) कष्ट, दुःख, उन्माद, भेजना ।
प्रैष्य (सं० पु०) दास, सेवक ।
प्रोक्त (वि०) कथित, भणित, उक्त, कहा, कहा हुआ ।
प्रोक्षण (सं०पु०) मन्त्र द्वारा जल से शुद्ध करना, धोना ।
प्रोत (वि०) भली भाँति मिला हुआ (सं० पु०) कपड़ा ।
प्रोत्साह (सं० पु०) बड़ा उद्योग, बड़ा उत्साह ।
प्रोत्साहना (सं० पु०) ख़ूब उत्साह बढ़ाना, उत्तेजित करना । [विदेशी, परदेशी, प्रवासी ।
प्रोषित (वि०) जो विदेश में हो, विदेश गया हुआ,
प्रोषित पतिका (सं० स्त्री०) नायिका भेद, विदेशस्थ पति की नायिका, वह नायिका जिसका पति परदेश में हो ।
प्रोष्ठपद (सं० पु०) भाद्र मास, भाद्र पद नक्षत्र ।
प्रोष्ठपदी (सं० स्त्री०) भाद्र मास की पूर्णमासी ।
प्रोहित (सं० पु०) पुरोहित ।
प्रौढ़ (वि०) युवा, विवाहिता, उद्योगी, पूरा जवान, मोटा, बड़ा, साहसी, युवावस्था के बाद की अवस्था ।
प्रौढ़ा (सं० स्त्री०) जवान स्त्री, तीस बरस से ५५ बरस तक की स्त्री, नायिका भेद । [नता, ढिठाई ।
प्रौढ़ी (सं० स्त्री०)प्रास, गरमी, चतुरता, पूर्ति, प्राची-
प्रौष्ठपद (सं० पु०) भादों मास ।
प्लव (सं० पु०) प्लवन, मेंढक, मेढ़ा, बानर, बन्दर, चांडाल, अबाबील, एक प्रकार का बगला, पाकड़ का दरख़्त, आवाज़, दुश्मन, पानी के जानवर सारस वग़ैरह, नागरमोथा, ख़स, नौका, नाव ।
प्लवङ्ग (सं० पु०)मर्कट, बानर, जल-पक्षी, सूर्य का सारथी, सिरस का वृक्ष, मेंढक, मृगा ।
प्लावन (सं० पु०) जलमय, जलमग्न, डूबा हुआ, किसी चीज़ को ऊपर फेंकना, तैरना ।
प्लावित (वि०) पानी से घिरा हुआ ।
प्लीहा (सं० स्त्री०) रोग विशेष, तिल्ली की बीमारी, पिलही, तापतिल्ली, बरवट ।
प्लुत (सं० पु०) वह ताल जो तीन मात्राओं का हो, कम्पन, अश्वगति विशेष,त्रिमात्र वर्ण,स्वरों का तीसरा भेद, जिसके बोलने में ह्रस्व से तिगुना काल लगता है ।
प्लुति (सं० स्त्री०) कूदना, फाँदना, उछलना ।
प्लुष्ट (वि०) दग्ध, जला हुआ ।
प्लोत (सं० पु०) पट्टी, पित्त जो मुँह से गिरता है ।
प्लोष (सं० पु०) दाह, जलन ।

फ

फ—यह व्यञ्जन वर्ण का बाइसवाँ और पवर्ग का दूसरा वर्ण है, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है ।

फंका (सं० पु०) मुट्ठी भर चीज़ जो एक बार मुँह में डाली जावे, ग्रास, कवल ।

फंकी (सं० स्त्री०) बुकनी, चूर्ण ।

फंगा (सं० पु०) कीड़ा, फतिंगा, पतंग ।

फंदना (क्रि० अ०) फँसना, उलझना, अटकना ।

फंदलाना (क्रि० स०) फुसलाना, फुलाना ।

फंदा (सं० पु०) फसड़ी, फाँसी, जाल, जंजाल, झंझट, कठिनाई । [उछालना, कुदाना ।

फँदाना (क्रि० स०) फंदे में लाना, जाल में फँसाना,

फँसना (क्रि० अ०) उलझना, बझना, पकड़ा जाना, दूसरे के वश में आना ।

फँसाना (क्रि०स०) फंदे में लाना व करना ।

फँसाव (सं० पु०) उलझना, अटकाव ।

फँसियार (सं० पु०) बटमार, ठग, जल्लाद ।

फकड़ी (सं०स्त्री०) अनादर, अपमान, दुर्दशा, दुर्गति ।

फकनी (सं० स्त्री०) फंकी, बुकनी ।

फकिया (सं० स्त्री०) फाँक, खण्ड, टुकड़ा । [बकवादी ।

फकोड़िया (सं० पु०) बतक्कड़, बकबकिया, बातूनी,

फकोड़ियात (सं० स्त्री०) बेतुकी बातें, अनर्थक बात, गप्प, अंडबंड बात । [गति, रेंगना ।

फक्क (सं०पु०) असदाचार, बदचलनी, दुराचार, मन्द-

फक्कड़ (वि०) झगड़ालू, बखेड़िया, उद्धत (सं० पु०) झगड़ा, गाली गलौज ।

फक्का (सं० पु०) पतला, पानी सा, वितण्डा । [रहना ।

मुहा०—फक्का मार कर रह जाना = उपवास करना, भूखे

फक्काक (वि०) व्यर्थ, बेफ़ायदा ।

फक्किका (सं० स्त्री०) असद्व्यवहार, न्याय संबन्धी व्याख्या, फाँकी, धोखा, तर्क, लपेट की बात, पेंच, उलझेड़े की बात, चाल, कपट, छल ।

फकी (सं० स्त्री०) औषध की मात्रा ।

फगुआ (सं० पु०) होली, होली का व्यवहार ।

फगुनहट (सं० स्त्री०) फागुन की हवा ।

फगुवा (सं० पु०) देखो "फगुआ" ।

फजर (सं० स्त्री०) सवेरा, प्रातःकाल ।

फज़ल (सं० पु०) कृपा, अनुग्रह ।

फजीहत (सं० स्त्री०) दुर्दशा, दुर्गति ।

फज़ूल (वि०) व्यर्थ ।

फट (सं० स्त्री०) किसी हलकी पतली चीज़ के हिलने या गिरने पड़ने का शब्द, एक तांत्रिक मंत्र, चटाई या टाट का टुकड़ा जो गाड़ी के नीचे रक्खा जाता है ।

फटक (सं० पु०) स्फटिक नामक पत्थर । [कण ।

फटकन (सं० पु०) पछोरन, बिल्लौर पत्थर, बटोरन, अख-

फटकना (क्रि० स०) पछोड़ना, उसाना, जुदा करना, झाड़ना, नाज को पछोरना, छाँटना, पास जाना, जा निकलना ।

फटकार (सं० पु०) तिरस्कार, धुत्कार, दुत्कार ।

फटकिरी (सं० स्त्री०) फिटिकिरी, क्षार ।

फटकी (सं० स्त्री०) चिड़ीमार का जाल, बड़ा पिंजरा, फटा हुआ बाँस जिसमें एक रस्सी बाँधकर खींचने से आवाज़ होती है और उससे खेत आदि में के पक्षी भाग जाते हैं । [फूटना, चिर जाना, टूटना ।

फटना (क्रि० अ०) चिरना, तड़कना, तार-तार होना,

फटफटाना (क्रि० अ०) छटपटाना, काँपना, फड़फड़ाना, हाथ पैर धुनना, घबड़ाना, व्याकुल होना ।

फटा (सं० पु०) छिद्र, दर्क, छेद, फाँक ।

फटाक (क्रि०वि०) तत्क्षण, तत्काल, शीघ्र, उसी समय ।

फटाका (सं० पु०) धड़ाका, भारी आवाज़ ।

फटाना (क्रि० स०) अलग करना, चिरवाना, खण्ड खण्ड करवाना, फड़वाना ।

फटाव (सं० पु०) भेद, अन्तर, टूटना ।

फटिक (सं० पु०) स्फटिक, काँच, बिल्लौर का पत्थर ।

फड़ (सं० स्त्री०) द्यूत स्थान, जुवा घर, जुवा खेलने की जगह, वह जगह जहाँ बेचने के लिए माल असबाब रहता है, गाड़ी का डंडा ।

फड़क (सं० स्त्री०) फड़कने की क्रिया।
फड़कना (क्रि० अ०) फड़फड़ाना, धड़धड़ाना, उछलना, हिलना, टीस मारना, तड़पना, बहुत ख़ुश होना।
फड़की (सं० स्त्री०) ओट, आड़, टट्टी।
फड़फड़ाना (क्रि० अ०) फड़कना, तलफना, हिलना।
फड़फड़िया (वि०) बड़बड़िया, हड़बड़िया।
फड़वाना (क्रि० स०) चिरवाना, चिराना, फराना।
फड़ाना (क्रि० स०) फड़वाना। [झिल्ली।
फड़िङ्गा (सं० स्त्री०) झींगुर, एक प्रकार का पतङ्गा,
फड़िया (सं० पु०) फड़बाज, पैकार, पैकरहा, द्यूत स्थान का मालिक। [मस्तक।
फण (सं० पु०) सर्प का मस्तक, साँप का पसारा हुआ
फणधर (सं० पु०) सर्प, साँप।
फणिक (सं० पु०) सर्प, साँप।
फणिज्झक (सं० पु०) तुलसीदल, छोटा पत्ता।
फणिपति (सं० पु०) शेष नाग, वासुकी।
फणी (सं० पु०) सर्प, साँप, सीसा, मरुवा, केतु नामक ग्रह, सर्पिणी नामक औषधि। [राजा।
फणीन्द्र (सं० पु०) सर्पराज, अनन्त, वासुकी, साँपों का
फतिंगा (सं० पु०) पतंगा, उड़ने वाले छोटे कीड़े।
फदफदाना (क्रि० अ०) बलबलाना, उबलना।
फन (सं० पु०) फण, नाग का मुँह, नाग जाति के सर्प।
फनगा (सं० पु०) टिड्डा, अँखफोड़ा। [फुस्कारना।
फनफनाना (क्रि० अ०) फुफकारना, फिस करना,
फनि (सं० पु०) देखो "फन"।
फनिक (सं० पु०) सर्प, साँप, फन वाला।
फनीश (सं० पु०) सर्पराज, नागेश, साँप।
फफस (वि०) फूला, पोला, फुल्लित, फीका।
फफूँदना (क्रि० अ०) सड़ना, भुअरी लगना।
फफूँदी (सं० स्त्री०) सड़ापन, गुमसाहट, गली सड़ी हुई चीज़ पर एक तरह की सफ़ेद सी तह।
फफोला (सं० पु०) फुलका, झलका, छाला।
मुहा०—फफोले फूटना = दुख पाना। फफोले दिल के फोड़ना = मन की चाह पूरी करना।
फब (सं० स्त्री०) शोभा, सुहावन, सजावट, भूषण।
फबकना (क्रि० स०) डाल निकलना, पनपना।
फबत (वि०) योग्य, सजना, ठीक, सुहाना।
फबती (सं० स्त्री०) फबन, शोभा, शृङ्गार, वेश भूषण।
मुहा०—फबती कहना = चुटकुला कहना, चुहल करना।
फबन (सं० पु०) फबने का भाव, शोभा, छबि, सुंदरता।
फबना (क्रि० अ०) सोहना, छाजना, खुलना, भला लगना, अच्छा लगना, सजना, ठीक होना।
फबि (सं०स्त्री०) छबि, शोभा, फबन।
फबीला (वि०) सजीला, शोभीला, रम्य, शोभायमान।
फर (सं० पु०) फल। [(सं० पु०) अलगाव, अन्तर।
फरक (सं० स्त्री०) फरकने की क्रिया या भाव, चंचलता
फरकना (क्रि० अ०) फड़कना, तलफना, काँपना।
फरकि (क्रि० अ०) फड़क कर, थरथरा कर।
फरचा (सं० पु०) शुद्ध, साफ़, सुथरा, जो जूठा न हो।
फरचाना (क्रि० स०) आज्ञा देना, आदेश देना, चुकाना, ख़तम करना, पवित्र करना, बर्तन आदि को धो कर साफ़ करना।
फरछा (वि०) निर्मल, स्वच्छ। [मलना, शोधना।
फरछाना (क्रि० स०) निर्मल करना, साफ़ करना,
फरजंद (सं० पु०) पुत्र, लड़का, बेटा।
फरजी (सं० पु०) शतरंज का एक मोहरा। [दुष्टता।
फरफ़न्द (सं० पु०) छल, कपट, धाँधली, धोखा,
फरफ़न्दिया (वि०) छलिया, कपटी। [ढाँचा।
फरमा (सं० पु०) कागज़ का पूरा छपा हुआ तख़्ता,
फरमान (सं० पु०) राजकीय आज्ञा।
फरमाना (क्रि०स०) आज्ञा देना, कहना।
फरलाँग (सं० पु०) भूमि की लम्बाई का एक माप, ८ फरलाँग का एक मील होता है।
फरश (सं० पु०) धरातल, समतल भूमि।
फरशी (सं० स्त्री०) हुक्का की नली।
फरस (सं० पु०) बिछौना, दरी, गलीचा।
फरसा (सं० पु०) कुल्हाड़ी, फावड़ा, बसूला।
फरहरा (सं० पु०) ध्वजा, पताका, केतु।
फरहरी (सं० स्त्री०) झंडी का कपड़ा (वि०) अधसूखा।
फरा (सं० पु०) व्यंजन विशेष।
फराक (सं० पु०) मैदान (वि०) लम्बा चौड़ा।
फराखी (सं० स्त्री०) चौड़ाई, विस्तार, फैलाव।
फरागत (सं० स्त्री०) छुटकारा, मुक्ति, छुट्टी।
फराठी (सं० स्त्री०) बाँस आदि की खपाची।
फरामोश (वि०) भूला हुआ, चित्त से उतरा हुआ।
फरार (वि०) भागा हुआ।

फरालना (क्रि० स०) फैलाना, पसारना।
फरास (सं० पु०) फर्राश।
फरिया (सं० स्त्री०) लहँगा, सारी, ओढ़नी।
फरी (सं० स्त्री०) ढाल, गाड़ी का हरसा, फड़।
फरुहा (सं० पु०) मिट्टी बटोरने का औज़ार, फावड़ा।
फर्राटा (सं० पु०) वेग, तेज़ी।
फर्रारा (सं० पु०) बाँस का टुकड़ा, फूँक।
फल (सं० पु०) मेवा, काम की सिद्धि, लाभ, फ़ायदा, प्रयोजन, मतलब, परिणाम, संतान, वंश, सन्तति, प्रतिफल, बदला, प्रतिकार, पारितोषिक, बाण के आगे का भाग, लोहा, फाल, फलक, लब्धि, ढाल, भाले अथवा तलवार की नोक।
फलक (सं० पु०) ढाल, ललाट की हड्डी, मूठी, तह, परत, पटरा, तख़्ता, नागकेसर, काष्ठ, चर्म, पदक।
फलजनक (सं० पु०) फलद, सफल।
फलद (सं० पु०) वृक्षमात्र (वि०) फलदायक, फलदाता।
फलदाता (वि०) फल देने वाला।
फलना (क्रि० अ०) फल देना, फल लगना, सफल होना, सुखी होना, वंश बढ़ना। [मिलना, बदला मिलना।
फल पाना (क्रि० स०) भले या बुरे काम का पलटा
फलफलारी (सं० स्त्री०) नाना प्रकार के फल।
फलफूल (सं० पु०) वनस्पति।
फलबुझौवल (सं० पु०) एक प्रकार का खेल।
फलमूल (सं० पु०) फल और जड़।
फलवान (वि०) सफल, सार्थक, फलयुक्त।
फला (सं० पु०) युक्ताक्षर, सारे स्वर, अस्त्रों की धार, तीर भाला आदि की नोक (सं० स्त्री०) शमी वृक्ष, छीकुरि का पेड़। [प्लुत गति।
फलाङ्ग (सं० पु०) कूद, उछाल, छलाङ्ग, डग, फलास,
फलान (सं० पु०) अमुक।
फलाना (सं० पु०) अमुक।
फलाफल (सं० पु०) लाभालाभ, हिताहित।
फलास (सं० पु०) फाँद, कूद, फलाङ्ग।
फलाहार (सं० पु०) फल-भोजन।
फलित (वि०) फला हुआ, सफल, ज्योतिष विशेष।
फलितज्ञ (सं० पु०) ज्योतिषी, नजूमी।
फलितार्थ (सं० पु०) तात्पर्य, सिद्धि, तात्पर्यार्थ।
फलियाँ (सं० स्त्री०) छीमी, छोटा फल।
फली (सं० पु०) छीमी, फलवान, सफल।
फलूवा (सं० पु०) गठीला, झालर।
फलोत्तमा (सं० स्त्री०) द्राक्षा वृक्ष, मुनक्का।
फलोत्पत्ति (सं० स्त्री०) लाभ, फलोदय।
फलोदय (सं० पु०) लाभ, प्राप्ति, आनन्द, हर्ष।
फलोपदेष्टा (सं० पु०) कार्य का फल बताने वाला।
फल्का (सं० पु०) छाला, फफोला, झलका।
फल्गु (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम जिसके तीर पर गया नामक शहर बसा है, एक प्रकार का अंजीर, गुलाल (वि०) अति सूक्ष्म, असार, तुच्छ, बेफ़ायदा।
फल्गुनी (सं० स्त्री०) नक्षत्र विशेष।
फ़व्वारा (सं० पु०) फुहारा।
फसकड़ (सं० पु०) फैले पाँव की बैठक।
फसकना (क्रि० अ०) फटना, फूटना, दरकना, ढीला होना, शिथिल पड़ना।
फसकाना (क्रि० स०) फाड़ना, ढीला करना।
फसड़ी (सं० स्त्री०) देखो "फसरी"।
फसना (क्रि० अ०) देखो "फँसना"।
फसफसा (वि०) पिलपिला, अलगा, निर्बल, ढीला।
फसरी (सं० स्त्री०) फाँसी, फन्दा।
फसल (सं० पु०) अन्न एकत्रित करने का समय, शस्य।
फसाना (क्रि० स०) उलझाना, बझाना, क़ैद में डालना।
फहरना (क्रि० अ०) देखो "फहराना"।
फहराना (क्रि० अ०) उड़ना, लहराना, हिलना।
फाँक (सं० स्त्री०) टुकड़ा, फल का विभाग, खण्ड, चकती, क़तरा, ककड़ी आदि फल का टुकड़ा। [खाना।
फाँकना (क्रि० स०) फक्का मारना, किसी चूर्ण पदार्थ का
फाँकी (सं० स्त्री०) पूर्व पक्ष, चूर्ण, लपेट की बात, उलझेड़े की बात, तर्क।
फाँड़ (सं० पु०) अंचल, अँचरा।
फाँद (सं० पु०) फंदा, फाँसी, फाँदा।
फाँदना (क्रि० स०) कूदना, उछलना, लाँघना।
फाँदा (सं० पु०) फन्दा, फाँसी, फँसरी।
फाँदी (सं० स्त्री०) गन्नों का बोझा, भार, बोझ।
फाँपना (क्रि० अ०) फूलना, सूजना।
फाँपा (वि०) फूला, सूजा, फोंक।
फाँफड़ (सं० पु०) छेद, मुँह, छिद्र, अवकाश।
फाँफर (सं० पु०) देखो "फाँफड़"।

फाँस (सं०स्त्री०) बाँस आदि का बहुत ही छोटा टुकड़ा।
फाँसना (क्रि० स०) उलझाना, अटकाना, रोकना, पकड़ना।
फाँसा (सं० पु०) फंदा, फाँदा, फाँसड़ी।
फाँसी (सं० स्त्री०) फंदा, फँसड़ी, एक रस्सी जो गले में डाल कर खींच लेते हैं तो गरदन की रग दब कर आदमी मर जाता है।
मुहा०—फाँसी देना = प्राण दण्ड देना, फाँसी डालकर मार डालना। फाँसी लगाना = गले में रस्सी बाँध कर आत्महत्या कर लेना।
फाग (सं० पु०) फगुवा, होली। [वाँ मास।
फागुन (सं० पु०) फाल्गुन वर्ष, हिन्दुस्तानी का बारह-
फाट (सं०पु०) भाग, विभाग, हिस्सा, चौड़ाई।
फाटक (सं०पु०) दरवाज़ा, प्रतिबंध, द्वार। [टूटना, फूटना।
फाटना (क्रि० अ०) दरकना, दराज़ होना, बिगड़ना,
फाटी (क्रि० अ०) फट गई।
फाड़ (सं० पु०) दर्रा, सुराख़, दराज।
फाड़खाऊ (वि०) ख़ूँख़्वार, कटहा, काटने वाला।
फाड़खाना (क्रि०स०) चिल्लाना, नाश करना, चिथरना, काटना, कुपित होना।
फाड़ना (क्रि०स०) चीड़ना, नाश करना, तोड़ना, फोड़ना।
फाड़ा (वि०) शिगाफ, चिरा हुआ, दरका हुआ, फटा हुआ।
फाबी (क्रि० अ०) शोभायमान हुई, सुन्दर लगी।
फ़ायदा (अ० सं० पु०) लाभ।
फारना (क्रि० स०) देखो "फाड़ना"। [ओर है।
फ़ारस (सं० पु०) ईरान देश जो भारतवर्ष के पश्चिम
फ़ारसी (सं०स्त्री०) ईरानी भाषा।
फारा (सं०पु०) टुकड़ा, क़तरा (वि०) देखो "फाड़ा"।
फाल (सं० पु०) लोहे की वह कील जिससे हल चलते समय ज़मीन खुदती है, एक प्रकार का सूती कपड़ा, नव प्रकार के शपथ में से एक सुपारी का टुकड़ा, शिव, बलराम।
फाल खुलना (क्रि० अ०) सगुन विचारना।
फालसा (सं० पु०) एक प्रकार का फल।
फाल्गुन (सं०पु०) फागुन, अर्जुन।
फाव (सं० पु०) घेलवा, घेलुआ, किसी चीज़ के ख़रीदने पर अन्त में कुछ थोड़ा सा भाग दुकानदार बिना दाम के ख़रीदने वाले को दे देता है उसे फाव कहते हैं।
फावड़ा (सं० पु०) मिट्टी खोदने के लिए लोहे का औज़ार, कुदार, कुदाली।
फावड़ी (सं० स्त्री०) छोटा फावड़ा।
फासिला (सं०पु०) अन्तर, दूरी।
फाहा (सं० पु०) रूई का पहल, मलहम की पट्टी, अतर आदि सुगंधित द्रव्यों में डुबाया हुआ रूई का छोटा टुकड़ा।
फिंकना (क्रि० स०) फेंकना, फेंका जाना।
फिंकाना (क्रि० स०) फेंकवाना।
फिकारना (क्रि० स०) सिर नंगा करना, माथ उघारना।
फ़िकिर (फ़ा० सं० स्त्री०) चिन्ता, सोच, कल्पना, उपाय, चेष्टा।
फ़िक्र (फ़ा० सं० स्त्री०) देखो "फिकिर"।
फिट (सं० पु०) फटकार, धुत्कार, छीः, दुत्कार।
फिटकरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का क्षार वस्तु विशेष।
फिटकार (सं० स्त्री०) शाप, बद्दुआ, सराप, गाली गलौज, दुत्कार, धुत्कार। [सरापना, बद्दुआ देना।
फिटकारना (क्रि० स०) कोसना, धिक्कारना, दुत्कारना,
फिटाना (क्रि० स०) सनाना, मिलवाना, फेंटवाना।
फिट्ट (वि०) उदास, लज्जित, शर्मिन्दा, फीका।
मुहा० —फिट्ट पड़ना = उदास होना, लज्जित होना।
फिर (अव्य०) पुनः, तब, अनन्तर, और।
फिरका (अ० सं० पु०) क़ौम, जमात, जत्था।
फिरकी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का खेलौना।
फिर जाना (क्रि० अ०) लौट जाना, वापस जाना।
फिरत (वि०) लौटाया हुआ (सं०स्त्री०) वापसी, चुंगी का वह महसूल जो किसी बाहरी आये हुए माल पर लिया जाता है और उस माल के वापस जाने पर वह महसूल लौटा दिया जाता है।
फिरता (वि०) चलता, घूमता, रमता, भ्रमता।
फिरना (क्रि० अ०) घूमना, टहलना, भ्रमण करना, लौटना, मुड़ना। [मोड़ना।
फिराना (क्रि० स०) लौटाना, वापस करना, घुमाना,
फिराव (सं० पु०) फिरने की क्रिया या भाव।
फिरे (क्रि०अ०) लौटे, वापस आये।
फिर्की (सं० स्त्री०) खेलने की वस्तु। [खेलते हैं।
फिर्नी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की वस्तु जिसको बच्चे
फिल्ली (सं० स्त्री०) घुटना, पिंडली।

फिश (अव्य०) छी, धिक् । [सोच में पड़ना, ढीला पड़ना ।
फिसफिसाना (क्रि० स०) भयभीत होना, चकित होना,
फिसलन (सं० स्त्री०) देखो "फिसलाव" ।
फिसलना (क्रि० अ०) बिछलना, खिसकना, गिरना ।
फिसलहा (वि०) चिक्कन, बिछलाहा । [वाना ।
फिसलाना (क्रि० स०) हिलाना, गिराना, बिछल-
फिसलाव (सं० पु०) बिछलन, रपटन ।
फिसलाहट (सं० स्त्री०) बिछलाहट, चिकनाहट ।
फिहरिस्त (फा० सं० स्त्री०) खाता, बही, सूची ।
फींचना (क्रि० स०) धोना, साफ़ करना, पछारना ।
फीका (वि०) नीरस, स्वाद रहित, ऊसर ।
फीता (अ० सं० पु०) कपड़े की पट्टी ।
फुंकना (क्रि० अ०) मुँह से हवा करना, धौंकना (सं० पु०) हवा फूँकने की वस्तु, धौंकनी ।
फुंकनी (सं० स्त्री०) धौंकनी ।
फुंकार (सं० पु०) सर्प आदि का फुफकारना ।
फुंकारना (क्रि० अ०) फुफकार मारना ।
फुंगी (सं० स्त्री०) कली, फुनगी ।
फुंदना (सं० पु०) गुच्छा, झालर, झब्बा ।
फुंफकारना (क्रि० अ०) फुंकारना ।
फुंसी (सं० स्त्री०) अन्हौरी, छोटी फुड़िया ।
फुंहारा (सं० पु०) फौवारा ।
फुट (वि०) अलग, भिन्न, अकेला, जोड़ा नहीं । [जुदा ।
फुटकर (वि०) अलग अलग, पृथक्, भिन्न भिन्न, जुदा
फुटकल (वि०) देखो "फुटकर" ।
फुटकी (सं० स्त्री०) धब्बा, छिटकी ।
फुटैल (वि०) अकेला, भिन्न, फुट ।
फुड़िया (सं० स्त्री०) फुंसी, छोटा घाव ।
फुत्कार (सं० पु०) दुत्कार, धुत्कार, फुफकार ।
फुदकना (क्रि० अ०) उछलना, कूदना ।
फुदकी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया । [फुंगी ।
फुनगी (सं० स्त्री०) कली, कोमल पत्ती, कोमल पत्ते,
फुनङ्ग (सं० पु०) वृक्षादि का सब से ऊँचा भाग, पुलुई ।
फुनसी (सं० स्त्री०) देखो "फुंसी" । [फूफा ।
फुप्फा (सं० पु०) बुआ का पति, बाप का बहनोई,
फुप्फी (सं० स्त्री०) बुआ, बाप की बहिन । [साँस लेना ।
फुफकार (सं० पु०) फुत्कार, सर्प आदि का ज़ोर से
फुफकारना (क्रि० अ०) फुफकार मारना ।
फुफेरा (वि०) फूफा संबंधी ।
फुर (वि०) सत्यप्रमाणित, सच्चा, यथार्थ, ठीक । [होना ।
फुरफुराना (क्रि० अ०) काँपना, हिलना, रोंगटे खड़ा
फुरफुरी (सं० स्त्री०) थर्राहट, कंप ।
फुरहारी (सं० स्त्री०) कपकपी, हिरन ।
फुरिफुरी (क्रि० अ०) सूझकर, ध्यान में आई ।
फुर्त (वि०) जल्दबाज़, तेज़, वेगवान ।
फुर्ती (सं० स्त्री०) शीघ्रता, झटपट, जल्दी, तेज़ी ।
फुर्तीला (वि०) जल्दबाज़, चटकीला, शीघ्र करने वाला ।
फुर्र (सं० पु०) पक्षी आदि के उड़ने का शब्द ।
फुलका (वि०) हलका (सं० पु०) पतली हलकी रोटी ।
फुलकारना (क्रि० अ०) फुलाना, फुफकारना ।
फुलकारी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का वस्त्र जिसमें फूल का काम किया रहता है, फूल का काम ।
फुलकी (सं० स्त्री०) हलकी पतली रोटी ।
फुलझड़ी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की अग्नि क्रीड़ा, एक तरह की आतिशबाज़ी ।
फुलवाई (सं० स्त्री०) फुलवाड़ी, फूलों का बग़ीचा ।
फुलवाड़ी (सं० स्त्री०) देखो "फुलवारी" । [पुष्प वाटिका ।
फुलवारी (सं० स्त्री०) फूलों का बाग़, पुष्पोद्यान,
फुलहथा (सं० पु०) लट्ठ की मार ।
फुलाना (क्रि० स०) मोटा करना, सुजाना । [चापलूसी ।
फुलासरा (सं० पु०) चिकनी चुपड़ी बात, लल्लोपत्तो,
फुलेल (सं० पु०) फूलों से बासा हुआ तेल ।
फुलौरी (सं० स्त्री०) बेसन आदि की पकौड़ी ।
फुल्ल (वि०) खिला हुआ ।
फुल्ला (वि०) फूला हुआ ।
फुल्ली (सं० स्त्री०) आँख का एक रोग ।
फुसफुस (सं० पु०) धीरे धीरे । [कहना, बुदबुदाना ।
फुसफुसाना (क्रि० स०) कान में कहना, धीरे धीरे
फुसफुसाहट (सं० स्त्री०) फुस फुस करने का भाव ।
फुसलाऊ (वि०) बहकाने वाला ।
फुसलाना (क्रि० स०) बहकाना, झाँसा पट्टी देना, चकमा देना, भुलावा देना ।
फुसलाव (सं० पु०) भुलावा, झाँसा, चकमा ।
फुसलावा (सं० पु०) भुलावा, बहकाव ।
फुसाहिन्दा (वि०) घिनौना, घृणा योग्य ।
फुस्का (सं० पु०) छाला (वि०) ढीला, दुबला ।

फुहारा (सं० पु०) फौवारा।
फूँ (सं० स्त्री०) फुँफकार, सर्प आदि का साँस लेना।
फूँक (सं० स्त्री०) मुँह से निकली हुई हवा, मुँह की हवा, श्वाँस, साँस, दम।
मुहा०—फूँक देना=मन्त्र से रोग व्याधि भूत बाधा आदि झाड़ना, आग लगाना। फूँक कर पैर रखना =सावधानी से काम करना, सोच बिचार कर काम करना।
फूँकना (क्रि० स०) मुँह से हवा निकालना, जलाना।
फूँकारना (क्रि० अ०) फूँ फूँ शब्द करना, फुफकारना।
फूँही (सं० स्त्री०) छोटी छोटी बूँदें।
फूआ (सं० स्त्री०) पिता की बहिन, बुआ।
फूट (सं० स्त्री०) बरसाती पकी ककड़ी जो पक कर फूट जाती है, बैर, विरोध, द्वेष, अलग बिलग।
मुहा०—फूट पड़ना=बैर होना। फूटफूट कर रोना= .खूब रोना। फूट रहना=अलग होना, द्वेष बढ़ना। फूट होना=विरोध होना, अलग होना।
फूटन (सं० पु०) झगड़ा, विरोध, बैर।
फूटना (क्रि० अ०) टूटना, नष्ट होना।
मुहा०—भण्डा फूटना=गुप्त बात प्रकट होना।
फूटला (वि०) टूटा हुआ, नष्ट भ्रष्ट।
फूटा (वि०) टूटा हुआ, खण्डित।
फूटी (क्रि० वि०) टूटी हुई (सं० स्त्री०) फंफी, कौड़ी।
मुहा०—फूटी सहें पर काजल न सहें=छोटे से दुःख से बचने के लिए बड़े दुःख में फँसना।
फूफा (सं० पु०) पिता का बहनोई, बुआ का पति।
फूफी (सं० स्त्री०) बाप की बहन।
फूल (सं० पु०) सुमन, कुसुम, पुष्प।
फूलकोबी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का साग, गोभी।
फूलना (क्रि० अ०) विकसित होना, प्रफुल्लित होना, हर्षित होना, सूजना।
फूलाव (सं०पु०) सूजन, शोथ।
फूली (सं० स्त्री०) आँख का रोग।
फूस (सं० पु०) सूखा हुआ मूँज का छिलका, घास, तृण।
मुहा०—फूस में चिनगारी डालना=झगड़ा लगाना, झगड़ना।
फूसड़ा (सं० पु०) फटा पुराना वस्त्र, चिथड़ा, गुदड़ा।
फूसी (सं० स्त्री०) भूसी, चोकर, अनाज का छिलका।
फूहड़ (वि०) भोंदू, अशिक्षित, बेढंगा।
फूहड़पन (सं० स्त्री०) भद्दापन।
फूहड़ा (वि०) भद्दा, कुत्सित, बुरा, गँवार। [फाहा।
फूहा (सं० पु०) बच्चों को दूध पिलाने के लिए रुई का
फूहार (सं० स्त्री०) झींसी, फूँही।
फेंक (सं० पु०) निक्षेप, त्याग, फेंकने का भाव।
फेंकना (क्रि० स०) झोंकना, अलगाना, दूर करना, त्यागना, निकाल देना।
फेंकाव (सं० पु०) फेंकने का भाव या क्रिया।
फेंकैत (वि०) फेंकने वाला।
फेंट (सं० पु०) कमरबंद, पटुका, पेटी।
मुहा०—फेंट बाँधना=तैयार होना, सर्प आदि का मण्डलाकार बैठना। [कर .खूब सानना।
फेंटना (क्रि० स०) मिलाना, बेसन आदि में पानी डाल
फेंटा (सं० पु०) साफा, मुरेठा, पगड़ी।
फेंटी (सं० स्त्री०) लच्छा, अँटिया।
फेण (सं० पु०) फेन, झाग।
फेन (सं० पु०) झाग।
फेनाना (क्रि० अ०) झाग निकलना, फेन उठना।
फेनदार (वि०) फेन युक्त।
फेनवाही (सं० पु०) जल, पानी, दूध, रस, समुद्र।
फेनी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई। [अमृत।
फेनुस (सं० पु०) नयी वियाई गाय का दूध, पीयूष,
फेफड़ा (सं० पु०) वह अङ्ग जिसके द्वारा साँस ली जाती है।
फेफड़ी (सं० स्त्री०) गमन शक्ति, शून्य।
फेर (अव्य०) पुनः, फिर, पुन (सं० पु०) घुमाव, चक्कर भाग्य, खोटे दिन, कठिनता।
मुहा०—फेर खाना=फटकना, कष्ट उठाना, दुख सहना चक्कर खाना। फेर देना=लौटा देना, पीछे दे देना। फेर पड़ना=मार्ग की दूरी पड़ना, घुमाव पड़ना।
फेरना (क्रि० स०) लौटाना, वापस करना, घुमाना, हटाना। [छल कपट।
फेरफार (सं० पु०) अदल, बदल, इधर उधर, धोखा
फेरा (सं० पु०) घुमाव, घेरा, चक्कर, भाँवर, प्रदक्षिणा।
फेराफेरी (सं० स्त्री०) आवगमन, लेन देन, हेर फेर।
फेरी (सं० स्त्री०) प्रदक्षिणा, घूमना। [बेचने वाला।
फेरीवाला (सं०पु०) पैकार, पैकरहा, गली गली घूम कर

फेरु (सं० पु०) सियार, गीदड़ ।
फेरू (सं० पु०) चक्कर, फेर, घुमाव ।
फैंटा (सं० पु०) देखो "फेंटा" ।
फैलना (क्रि० अ०) बिखरना, छितरना, पसरना ।
फैलाना (क्रि० स०)बिखराना, छितराना, पसारना ।
फैलाव (सं० पु०) फैलने की क्रिया या भाव, छितराव, बिखराव, पसराव ।
फोंक (सं० स्त्री०) बाण का वह छोर जो पँच में लगता है (वि०) पोला, खोखला, खाली, छूँछा ।
फोंकी (सं० स्त्री०) नली, छूँछी ।
फोंफी (सं० स्त्री०) फोंकी, छूँछी, एक प्रकार का बच्चों का बाजा (वि०) पोली, खोखली, खाली ।
फोहार (सं० स्त्री०) झींसी, फूही ।
फोक (सं० पु०) सीठी, जलछूट कण का एक भाग ।
फोकड़ (सं० पु०) कूड़ा, कर्कट, खूद, तलछट ।
फोकर (सं० पु०) दरिद्र, कंगाल, दीन, ग़रीब (वि०) मुफ़्त, बिना दाम का ।
फोड़ना (क्रि० अ०) नष्ट भ्रष्ट करना,तोड़ना, फाड़ना ।
फोड़ा (सं० पु०) घाव,पिरकी, व्रण ।
फोला (सं० पु०) छाला, फफोला, झलका ।
फोल्का (सं० पु०) देखो "फोला" ।
फ़ौज (अ० सं० स्त्री०) सेना, सैन्य ।
फ़ौजदारी (फ़ा० सं० स्त्री०) झगड़ा, टंटा, जुर्म ।
फ़ौजी (वि०) सैनिक ।
फ़ौत (फ़ा० सं० स्त्री०) देहान्त, मृत्यु, मरण, मौत ।
फ़ौरन (अ० अव्य०) शीघ्र, जल्दी ।
फ़ौलाद (सं० पु०) पक्का लोहा ।
फ़ौलादी (वि०) फ़ौलाद का बना हुआ ।

ब

ब—यह व्यञ्जन का तेईसवाँ और पवर्ग का तीसरा वर्ण है । इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है ।
बंक (सं० पु०) झुकाव, झुकावट ।
बंकाई (सं० स्त्री०) झुकाव, टेढ़ापन, बकता, तिरछापन ।
बंग (सं० पु०) राँगे की भस्म, रस विशेष, एक प्रकार की धातु, बंगाल ।
बंगरी (सं० स्त्री०) स्त्रियों के हाथ में पहनने का एक [गहना ।
बंगला (सं० पु०) अंग्रेज़ी ढंग का मकान, खपरैल, नये ढंग का घर ।
बंगाल (सं० पु०) हिन्दुस्तान का एक प्रधान पूर्वी प्रदेश, [पूर्वी सूबा ।
बंगालिन (सं० स्त्री०) बंगाल देश की स्त्री ।
बंगाली (सं० पु०) बंगाल का रहने वाला ।
बंगी (सं० स्त्री०) लटूटू, भौंरा ।
बंजर (वि०) उजाड़, बीरान, ऊसर ।
बंजारा (सं० पु०) व्यापारी, रोज़गारी, व्यवसायी, वह व्यापारी जो बैल आदि पर माल लाद कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर बेचता है ।
बंजारी (सं० स्त्री०) बंजारा की स्त्री ।
बँझोटी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की औषध ।
बँटवाना (क्रि० स०) विभाग कराना, बखरा लगवाना, हिस्सा कराना, पिसवाना ।
बँटवैया (सं० पु०) बाँटने वाला, विभाग करने वाला ।
बँटाना (क्रि० स०) हिस्सा लगवाना, बखरा लगवाना, विभाग करवाना ।
बँटैत (वि०) बाँटने वाला ।
बंडी (सं० स्त्री०) छोटा कुरता ।
बँड़ेरी (सं० स्त्री०) घर के छाजन का सब से ऊपर का [भाग ।
बंद (सं०पु०) बंधन ।
बंदगी (फ़ा० सं० स्त्री०) सलाम, पूजा,नम्रता, गुलामी ।
बंदनवार (सं० पु०) किसी उत्सव आदि में दरवाज़े पर लगाई जाने वाली पत्तियों और फ़ूलों की माला, तोरण ।
बंदर (सं० पु०) बानर, कपि ।
मुहा०— बन्दर की सी आँख बदलना=बहुत जल्दी क्रोधित होना । बंदर घुड़की=झूठा भय दिखाना । बन्दर की तरह नाच नचाना=अपने अधीन को काम के मारे परेशान करना । बन्दर क्या जाने आदी का स्वाद=निर्गुणी गुणी का आदर करना क्या जाने ।

बंदर खत (सं० पु०) कठिन घाव, असाध्य घाव।
बंदरी (सं० स्त्री०) बानरी, बन्दर की मादा।
बंदी (सं०पु०) भाट, चारण, बँधुआ, क़ैदी।
बंदीगृह (सं० पु०) जेलख़ाना।
बंदीजन (सं० पु०) चारण, भाट।
बंदूक़ (सं० पु०) अस्त्र विशेष।
बंदूरा (सं० पु०) तूफ़ान, अंधड़।
बंदोड़ (सं० स्त्री०) बाँदी, नौकरानी।
बंदोबस्त (फ़ा० सं० पु०) प्रबन्ध, इन्तिज़ाम, व्यवस्था।
बंदोल (सं० पु०) ग़ुलाम का लड़का, भृत्य-पुत्र, दास-पुत्र।
बंदोरी (सं० स्त्री०) दासी, नौकरानी, चेरी।
बंध (सं० पु०) बन्धन, गिरो, गाँठ, ग्रंथि।
बंधक (सं० पु०) रेहन, गिरो, थाती, धरोहर, गिरवीं।
बंधकदाता (सं० पु०) ऋणदाता, रेहनदार।
बंधकधारी (सं० पु०) रेहन रखने वाला।
बंधक पत्र (सं० पु०) रेहननामा।
बंधन (सं०पु०) बंध, गिरो, गाँठ।
बँधना (क्रि० अ०) गाँठ पड़ना, बंद होना, क़ैद होना।
बँधवाना (क्रि० स०) बाँधने का काम दूसरे से कराना, गिरह दिलवाना, गाँठ पड़वाना।
बँधाई (सं० स्त्री०) बाँधने की क्रिया, बाँधने की मज़दूरी।
बंधान (सं० पु०) नियत भत्ता, नियत वृत्ति, किसी बात का नियम।
बँधाना (क्रि० स०) बाँधना, गाँठ देना, गाँठ डालना।
बंधाना (सं० स्त्री०) कुली, मजदूरी, अफ़ीमची।
बँधुआ (सं० पु०) क़ैदी, बंदी। [हंस।
बंधुर (वि०) ढालू, चढ़ाव उतार (सं० पु०) विहङ्गम,
बंधुल (सं० पु०) वेश्यापुत्र।
बंधेज (सं०पु०) बधान, नियत। [जो बाँस का होता है।
बंसी (सं०स्त्री०) एक प्रकार का मुँह से बजाने का बाजा,
ब (सं० पु०) वरुण, समुद्र, जल।
बक (सं० पु०) बगुला, एक प्रकार का मछली खाने वाला पक्षी (सं० स्त्री०) निरर्थक बात, बकवाद, बड़बड़ाहट।

मुहा०—बकध्यान लगाना = पाखण्ड करना।

बकची (सं० स्त्री०) एक औषध का नाम।
बकझक (सं० पु०) वितण्डावाद, बकवाद।
बकना (क्रि० स०) बकवाद करना, बकझक करना।
बकबक (सं० पु०) बकवाद, बड़बड़ाहट, निरर्थक बात।
बकबकिया (वि०) बकबक करने वाला, बकवादी।
बकवाद (सं० पु०) व्यर्थ की बातें, बकबक, बकझक।
बकवादी (वि०) बकवाद करने वाला, बातूनी, गप्पी।
बकवास (सं० पु०) बकबक, बकझक।
बकवाहा (सं० पु०) बातूनी, बतक्कड़, गप्पी।
बकरा (सं० पु०) खसी, बोकरा, छागल, छाग।
बकरी (सं० स्त्री०) बकरा की मादा, छागी।
बकला (सं० पु०) छाल, खाल, चमड़ा, त्वचा, छिलका।
बकसा (वि०) कड़ुआ (सं० पु०) समेट, बंधान।
बकसूआ (सं०पु०) चपरास आदि का काँटा, तस्मा।
बकसैला (वि०) कषाय, तल्ख़।
बकासुर (सं० पु०) एक असुर का नाम, जो श्रीकृष्ण को निगल गया था और उनका तेज न सह सकने के कारण उगल दिया तब श्रीकृष्ण ने उसको मार डाला।
बकिया (सं० स्त्री०) चाकू, छुरा (वि०) बकवादी।
बकी (सं० स्त्री०) एक राक्षसी का नाम, पक्षी विशेष।
बकेलू (सं० पु०) मूँज, काँस का बकला।
बकोटना (क्रि० अ०) नोचना, नख़ून से घात करना, खसोटना। [में आता है।
बक्कम (सं० पु०) एक प्रकार का काष्ठ जो रँगने के काम
बक्कल (सं० पु०) देखो "बकला"।
बक्की (वि०) बकबक करने वाला, बकवादी।
बक्रदन्त (सं०पु०) असुर विशेष।
बख (सं० पु०) पृथ्वी, संसार, जगत्, दुनिया।
बखरी (सं० स्त्री०) मकान, गृह, घर, भवन, झोपड़ी, बखरा। [गुणगान।
बखान (सं० पु०) बयान, वर्णन, कथन, स्तुति, प्रशंसा,
बखानना (क्रि० स०) गुणगान करना, स्तुति करना, बयान करना, वर्णन करना।
बखार (सं० पु०) खाद, खत्ता, अन्न रखने का गढ़ा।
बखिया (सं० पु०) एक प्रकार की सिलाई, एक प्रकार का सीवन। [सिलाई करना।
बखियाना (क्रि० स०) बखिया करना, बखिया की
बखा (सं० स्त्री०) बगल।
बखेड़ा (सं० पु०) झगड़ा, लड़ाई, टंटा, फ़साद।
बखेड़िया (वि०) झगड़ालू, फ़सादी।

बखेरना (क्रि० स०) छितराना, छींटना, फैलाना।
बखोर (सं० पु०) असगुन, अपशकुन, अशुभ लक्षण।
बखोरना (क्रि० अ०) टोकना, तंग करना, पूछना।
बखौरा (सं० पु०) कंधा।
बख़्शिश (फा० सं० पु०) दान, ईनाम, पारितोषिक।
बग (सं० पु०) बगुला, बक। [चलना।
बगचाल (सं० स्त्री०) बगले की सी चाल, धीरे धीरे
बगछुट (सं० स्त्री०) दौड़, सरपट। [क़िस्म।
बगड़ (सं० पु०) एक प्रकार का चावल, चावल की एक
बगड़ा (सं० पु०) छल, कपट, धोखा।
बगड़िया (वि०) कपटी, छली, धोखेबाज़, धूर्त।
बगदना (क्रि० अ०) भूलना, लौटना, फिरना, बिगड़ना।
बगदाना (क्रि० स०) भुलाना, लौटाना, फिराना, बिगाड़ना।
बगपाँती (सं० स्त्री०) देखो "बग़ल"।
बगमेल (क्रि०अ०) इकट्ठे होकर चलना, बगलों की तरह पाँति बाँधकर चलना।
बगरे (क्रि० अ०) फैले, छींटे गये, बिखरे।
बग़ल (सं० पु०) कक्ष, काँख, किनारा।
बगला (सं० पु०) बक, बगुला, पक्षी विशेष जो मछलियों का शिकार करता है।
मुहा०—बगला भगत=पाखण्डी, धूर्त। बगला मारे पखना हाथ=निरर्थक परिश्रम करना।
बगलाना (क्रि० अ०) एक किनारे होना, एक ओर होना, बग़ल में हट जाना, दाँये या बाँये हटना।
बगली (सं० स्त्री०) कुर्ते आदि की जेब, थैली।
बगहंस (सं० पु०) एक प्रकार की चिड़िया।
बगारना (क्रि० स०) फैलाना, बिखेरना, छितराना।
बग़ावत (अ० सं० स्त्री०) बलवा, फ़साद, अराजकता।
बगिया (सं० स्त्री०) बगीचा, फुलवाड़ी।
बगीचा (सं० पु०) उद्यान, फुलवाड़ी।
बगुर (सं० पु०) फंदा, जाल, पाश, फाँसी।
बगुला (सं० पु०) देखो "बगला"।
बगूला (सं० पु०) अंधड़, तूफ़ान, बवंडर।
बग़ैर (अव्य०) बिना।
बग्घी (सं०स्त्री०) एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी। [कानाखून।
बघनहा (सं० पु०) एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, बाघ
बघना (सं० पु०) बाघ का नख।
बघार (सं० पु०) छौंक।
बघारना (क्रि० अ०) छौंकना।
बघी (सं० स्त्री०) मक्खी, डाँस।
बघेल (सं० पु०) क्षत्रियों की एक जाति।
बघेलखंड (सं०पु०) बघेलों का प्रदेश। [जाति के क्षत्री।
बघेला (सं० पु०) बाघ का बच्चा, डाँकू, बघेल
बङ्ग (सं० पु०) धातु विशेष, रस विशेष, राँगे की भस्म, देश विशेष। [पहनने का गहना।
बङ्गरी (सं० स्त्री०) अलङ्कार विशेष, स्त्रियों का हाथ में
बङ्गसेन (सं० पु०) अगस्त का पेड़।
बङ्गा (सं० पु०) बाँस की गाँठ, बाँस के जड़ की गाँठ या पोर (वि०) मूर्ख, अनारी, अनभिज्ञ, अदक्ष।
बङ्गाल (सं० पु०) देश विशेष, जो गया जी से पूर्व है, गौड़ देश। [की स्त्री।
बङ्गालिन (सं० स्त्री०) बङ्गाल देश की स्त्री, बंगाली जाति
बङ्गाली (सं० पु०) बङ्गाल देश का वासी, बङ्गवासी।
बच (सं०स्त्री०) एक औषध विशेष (सं०पु०) बचन, बोली।
बचकाना (वि०) छोटे बच्चों के योग्य।
बचकानी (सं० स्त्री०) लौंडी (वि०) छोटी।
बचत (सं० स्त्री०) शेष, बाक़ी, बचा हुआ।
बचती (सं० स्त्री०) बाक़ी, शेष, अवशिष्ट, अवशेष।
बचन (सं० पु०) बात, बोली, कथन, वाक्य, प्रतिज्ञा, क़ौल, होड़, क़रार।
मुहा०—बचन छोड़ना=इनकार करना। बचन तोड़ना=कही हुई बात की रक्षा न करना। बचन देना=प्रतिज्ञा करना। बचन निभाना=प्रतिज्ञा-पालन करना। बचन बद्ध होना=प्रतिज्ञा करना। बचन लेना=प्रतिज्ञा कराना। बचन हारना=प्रतिज्ञा करना।
बचनचूक (वि०) अविश्वासी। [रहना।
बचना (क्रि० अ०) संरक्षित रहना, अलग रहना, बचा
बचपन (सं० पु०) लड़कपन, लड़काई, बालपन।
बचाना (क्रि० स०) रक्षा करना, शेष रखना।
बचाव (सं० पु०) युक्ति, छुटकारा, उपाय, रक्षा, उद्धार।
बच्चा (सं० पु०) बालक, छोटा लड़का।
बछनाग (सं० पु०) एक प्रकार का विष।
बछल (सं०पु०) वत्सल, दयालु, प्रेमी।
बछड़ा (सं०पु०) गाय का बछड़ा।

बच्छासुर (सं० पु०) एक असुर का नाम, जिसका बध श्रीकृष्ण ने किया था।
बछड़ा (सं० पु०) गाय का बच्चा।
बछरू (सं० पु०) गाय का बच्चा, बछड़ा।
बछिया (सं० स्त्री०) गाय का मादा बच्चा।
बछेड़ा (सं० पु०) घोड़े का बच्चा।
बछेड़ी (सं० स्त्री०) घोड़ी का मादा बच्चा।
बजका (सं० पु०) पकौड़ी, फुलौरी।
बजना (क्रि० अ०) आवाज़ होना, शब्द निकलना, कुश्ती लड़ना (सं० पु०) झगड़ा, बखेड़ा, टंटा।
बजनिया (सं० पु०) बाजा बजाने वाला।
बजनी (सं० स्त्री०) बाजा बजाने की वस्तु।
बजन्त्री (सं० पु०) बाजा बजाने वाला। [उफनाना।
बजबजाना (क्रि०अ०) सड़ना, जलना, उबलना, खौलना,
बजरंग (सं० पु०) हनुमान।
बजरंगी (सं० पु०) महाबीरी तिलक।
बजरबट्टू (सं० पु०) एक प्रकार का फल।
बजरा (सं० पु०) एक प्रकार का नाव, अन्न विशेष।
बजवाना (क्रि० स०) बाजा बजाने का काम दूसरे से कराना।
बजाक (सं० पु०) एक प्रकार का साँप।
बजाज (सं० पु०) कपड़ा बेचने वाला व्यापारी।
बजाना (क्रि० अ०) बाजे से शब्द निकालना।
बजाय (क्रि० वि०) स्थान में, बदले में, एवज़ में।
बजा लाना (क्रि० स०) निबाहना, पालन करना, हुकूमत करना, पूरा करना।
बझना (क्रि० स०) फँसना, उलझना, अटकना, लगना।
बझाना (क्रि० स०) फँसाना, उलझाना, अटकाना, अलगाना।
बट (सं० पु०) बरगद का वृक्ष।
बटई (सं० स्त्री०) सोने का तागा बनाने का काम, ज़री बादला का काम, पक्षी विशेष।
बटखरा (सं० पु०) बाँट, तौलने की वस्तु, सेर आदि।
बटना (क्रि० अ०) ऐंठना, रस्सी आदि को ऐंठना, विभक्त होना, मोड़ना।
बटमार (सं० पु०) लुटेरा, डाकू, तस्कर, चोर।
बटमारी (सं० स्त्री०) ठगी, डकैती, लूट, राहज़नी।
बटरी (सं० स्त्री०) पियाली, कटोरी।
बटलोही (सं० स्त्री०) भात दाल आदि पकाने का बरतन, डेगची, छोटा बटुआ।
बटवार (सं० पु०) मार्ग का कर लेने वाला।
बटवारा (सं० पु०) हिस्सा, भाग, बखरा, अंश, विभाग
बटाई (सं० स्त्री०) बाँटने की क्रिया, बाँटने की मज़दूरी।
बटाऊ (सं० पु०) पथिक, राही, यात्री, मुसाफ़िर।
बटिया (सं० स्त्री०) छोटा बाँट, बटखरा।
बटुआ (सं० पु०) एक प्रकार की थैली, भात दाल पकाने का बड़ा बरतन। [पढ़ने वाला, ब्रह्मचारी, लवंग।
बटुक (सं० पु०) एक भैरव का नाम, ब्रह्मचारी, विद्या
बटेर (सं० पु०) एक प्रकार की चिड़िया। [समूह।
बटोर (सं० पु०) ढेर, जमाव, जत्था, झुण्ड, समुदाय,
बटोरना (क्रि० स०) किसी बिखरी वस्तु को एकत्रित करना, घर से कूड़ा आदि एकत्रित करके बहाना, समेटना, एकत्रित करना। [वाला, बटाऊ।
बटोही (सं० पु०) पथिक, यात्री, मुसाफ़िर, भ्रमण करने
बट्टा (सं० पु०) वह द्रव्य जो सिक्का बदलने के बदले में दिया जाता है, भाँज, डिबिया, आईना, दर्पण, लोढ़ा, लोढ़िया।
बड़ (सं० पु०) बट वृक्ष, बरगद का पेड़।
बड़पन (सं० पु०) बड़ाई, महत्व, उच्चता, शान।
बड़बड़ (सं० पु०) बकबक, झकझक।
बड़बड़ाना (क्रि० अ०) प्रलाप करना, बकबक करना।
बड़बड़िया (सं० पु०) बातूनी, बक्की, बकवादी।
बड़वानल (सं० पु०) समुद्र के भीतर की अग्नि।
बड़हल (सं० पु०) फल विशेष, वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाख।
बड़हेला (सं० पु०) जंगली सूअर, बनैला शूकर।
बड़ा (वि०) वृहद, विशाल, प्रधान, मुख्य, महान्, ऊँचा।
बड़ाई (सं०स्त्री०) बड़पन, विशालता, श्रेष्ठता, उच्चता।
बड़ापा (सं० पु०) देखो "बड़पन"। [की वस्तु, बरी।
बड़ी (वि०) मूँग, चना आदि की बनी एक खाने
बड़ूखा (सं० पु०) ईख, गन्ना, पौंड़ा, इक्षु, ऊख।
बड़ेमियाँ (सं० पु०) बूढ़े बड़े आदमी, बुजुर्ग आदमी।
बढ़इन (सं० स्त्री०) बढ़ई की स्त्री।
बढ़ई (सं० पु०) एक जाति विशेष जो लकड़ी का काम बनाने का पेशा करती है।

बढ़ती (सं० स्त्री०) वृद्धि, प्राप्ति, लाभ, अगाऊ।
बढ़न (सं० स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, प्राप्ति, लाभ।
बढ़ना (क्रि० अ०) वृद्धि होना, बढ़ती होना, उन्नति होना, बड़ा होना, अधिक होना, उगना, आगे चलना।
बढ़नी (सं० स्त्री०) झाड़ू, बुहारी, कूँची।
बढ़न्त (सं० स्त्री०) बढ़ती, वृद्धि, उपज, लाभ।
बढ़ाना (क्रि० स०) ऊँचा करना, अधिक करना, वृद्धि करना, फैलाना, बंद करना।
बढ़ा लाना (क्रि०स०) आगे लाना, सामने लाना।
बढ़ाव (सं० पु०) चढ़ाव, उमड़ाव, बढ़न, वृद्धि।
बढ़ावा (सं० पु०) उत्तेजना, उत्साह, झाँसा पट्टी, भड़की। [रमणीक।
बढ़िया (वि०) बहुमूल्य, उमदा, उत्तम, महँगा, सुन्दर,
बढ़ेला (सं० पु०) बनैला सूअर।
बढ़ोतर (सं० पु०) ब्याज, सूद, नफ़ा, लाभ।
बढ़ोतरी (सं० स्त्री०) बढ़ोतर।
बणिक (सं० पु०) एक जाति भेद, व्यापारी, सौदागर, बनिया।
बणिकपथ (सं० पु०) हाट, बाज़ार। [देन।
बणिज (सं० पु०) व्यापार, सौदागरी, क्रय विक्रय, लेन
बणिया (सं० पु०) बणिक, व्यापारी। [कीड़ा।
बत (सं० पु०) बात, वचन, वाक्य, कौल, एक प्रकार का
बतक (सं० पु०) एक पक्षी विशेष।
बतकहा (सं० पु०) बातूनी, गप्पी, बक्की, बकवादी।
बतकहाव (सं० पु०) बातचीत, कहासुनी, बार्तालाप।
बतकही (सं० स्त्री०) बतकहाव, बातचीत।
बतक्कड़ (सं०पु०) बकबक करने वाला, गप्पी, बातूनी।
बतराना (क्रि० स०) बार्तालाप करना, कथोपकथन करना, बतियाना, बातचीत करना।
बतलाना (क्रि० स०) बार्तालाप करना, समझाना बुझाना, सीख देना, सिखाना।
बता (सं० पु०) बाँस की खपाची, बाँस की झराठी।
बताई(क्रि०स०)बतलाकर,समझाकर।[झाना, सिखाना।
बताना (क्रि० स०) कहना, बोलना, प्रकट करना, सम-
बतास (सं० पु०) हवा, पवन, वायु।
बतासा (सं० पु०) एक प्रकार की मिठाई।
बतियाई (सं० स्त्री०) बातचीत।
बतियाना (क्रि० स०) बातचीत करना, बार्तालाप करना, बतराना।
बतूनी (वि०) बकवादी, बतक्कड़।
बतोली (सं० स्त्री०) भँबैती। [टूटने से हो जाता है।
बतौरी (सं० स्त्री०) बरतोर, वह फोड़ा जो बालों के
बत्ती (सं० स्त्री०) चिराग़ जलाने की बत्ती, बाँस की टहनी, लाह की डंडी, मोम की बत्ती, घाव आदि में भरने की बत्ती, योग साधन की एक क्रिया।
बत्तीस (वि०) संख्या विशेष, तीस और दो।
बत्तीसा (सं० पु०) औषध विशेष, जिसमें बत्तीस दवायें रहती हैं और जो घोड़े आदि जानवर को दी जाती है। [बत्तीस वस्तुओं का समूह।
बत्तीसी (सं० स्त्री०) दाँतों की पंक्ति, दाँतों की क़तार, मुहा०—बतीसी दिखाना = हँसना, दाँत निकालना, विनती करना। [चावल।
बत्सा (सं० पु०) चावल का एक भेद, एक प्रकार का
बथुआ (सं० पु०) एक प्रकार का साग। [बाघी।
बद (फ़ा० वि०) बुरा, ख़राब (सं० स्त्री०) एक रोग,
बदइ (सं० स्त्री०) बैर का वृक्ष, बैर का फल।
बदना (क्रि० अ०) होड़ लगाना, शर्त करना, दाँव लगाना, नियत करना, निश्चित करना।
बदनाम (फ़ा० सं० पु०) बेइज़्ज़त, अपमानित।
बदनामी (फ़ा० सं० स्त्री०) बेइज़्ज़ती।
बदमाश (फ़ा० सं० पु०) पाजी, धूर्त, लुच्चा, दुराचारी, शरारती। [कुकर्म।
बदमाशी (फ़ा० सं० स्त्री०) धूर्तता, लुच्चापन, शरारत,
बदर (सं० पु०) फल विशेष, बेर, कपास का बीज, बिनौला, तोड़ा, एक हज़ार रुपये की थैली।
बदरी (सं०पु०) बेर, बेर का पेड़।
बदरीकाश्रम (सं० पु०) एक तीर्थ का नाम।
बदल (सं०पु०) बदला, प्रतिकार, पलटा।
बदलइ (सं० पु०) फेरफार, पलटा, परिवर्तन।
बदलई (सं० स्त्री०) बदलने की क्रिया, बदलने की मजदूरी।
बदलना (क्रि० स०) फेरफार करना, एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना, उलटा करना, परिवर्तन करना।
बदला (सं० पु०) परिवर्तन, पलटा, बदल।
बदलाई (सं० स्त्री०) तुड़वाई, भुनवाई, पलटाई।

बदलाना (क्रि० स०) बदला करना, पुरानी वस्तु के स्थान में नयी वस्तु लेना।
बदली (सं० स्त्री०) बादल, मेघ, स्थानपरिवर्तन।
बदा (वि०) भावी, होनहार, अदृष्ट, भाग्य, दैव, भविष्य।
बदाबदी (अव्य०) देखादेखी, मुक़ाबिले में, हिर्स, ईर्षा।
बदी (सं० स्त्री०) अँधियारा पाख, कृष्ण पक्ष, होड़, दाव।
बदौलत (क्रि० वि०) सबब से, भाग्य से, कारण से।
बद्दल (सं० पु०) बादल, घटा, मेघ।
बद्ध (वि०) बँधा हुआ।
बद्धी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का गहना।
बध (सं०पु०) हिंसा, हत्या, हनन, क़तल।
बधना (क्रि० स०) मारना, हिंसा करना, हत्या करना, क़तल करना (सं० पु०) टोंटीदार लोटा, मिट्टी का लोटा, गड़ुआ।
बधस्थान (सं० पु०) प्राणियों के मारे जाने का स्थान।
बधाई (सं० स्त्री०) सन्तानोत्पत्ति के समय मांगलिक गीत, भेंट आदि जो बांधव लोग करते हैं, आनन्दोत्सव, हर्षोत्सव। [बधाई।
बधावा (सं० पु०) माङ्गलिकोत्सव, मङ्गलाचार, आनन्द-
बधिक (सं० पु०) व्याधा, जल्लाद, हत्यारा।
बधिया (सं०पु०) आख़्ता, अण्डकोश निकाला हुआ बैल बकरा आदि जानवर।
बधिर (वि०) बहरा, जिसको सुनाई न पड़े।
बधू (सं० स्त्री०) बहू, स्त्री, पत्नी, भार्या, पुत्र की बहू।
बधूटी (सं० स्त्री०) जवान स्त्री, पुत्र बधू।
बध्य (वि०) बध करने योग्य।
बन (सं० पु०) जंगल, झाड़खण्ड।
बनज (सं० स्त्री०) व्यापार, रोज़गार, वाणिज्य।
बनजर (वि०) देखो "बंजर"।
बनजारा (सं० पु०) देखो "बंजारा"।
बनजारी (सं० स्त्री०) देखो "बंजारी"।
बनत (सं० स्त्री०) गोटा।
बनना (क्रि० अ०) पटना, मेल रहना, प्रेम होना, नक़ल उतारना, स्वाँग रचना। [होना, सुधाना।
बन पड़ना (क्रि० अ०) निबहना, योग होना, कामयाब
बनमानुष (सं० पु०) एक प्रकार का जंगली जीव जो बहुत कुछ मनुष्यों से मिलता जुलता है।
बनमाला (सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण भगवान के धारण करने वाली माला जो तुलसी, मदार, पारिजात, कमल आदि की बनती हैं।
बनमाली (सं० पु०) श्रीकृष्ण।
बनरपकड़ (सं० पु०) हठ, दुराग्रह, ज़िद्द।
बनरा (सं० पु०) बर, दूल्हा।
बनरी (सं० स्त्री०) दुलहिन। [मज़दूरी।
बनवाई (सं० स्त्री०) बनाने की क्रिया, बनाने की
बनवाना (क्रि० स०) बनाने का काम दूसरे से कराना।
बनवैया (सं० पु०) बनाने वाला।
बनसी, बन्सी (सं० स्त्री०) मछली पकड़ने का काँटा।
बना (सं० पु०) बर, दुलहा।
बनात (सं० पु०) एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।
बनाना (क्रि० स०) तय्यार करना, प्रस्तुत करना, निर्माण करना, रचना, मकान आदि उठवाना, सँवारना, सुधारना, सिरजना, उत्पन्न करना।
बनाव (सं० पु०) तैयारी, सजावट, शृंगार, मेलमिलाप।
बनावट (सं० स्त्री०) संगठन, डौलडौल, निर्माण, रचना।
बनावटी (वि०) नक़ली, कृत्रिम, काल्पनिक, मिथ्या, असत्य, झूठ। [निर्माण करना, रचना।
बनावना (क्रि० स०) तैयार करना, प्रस्तुत करना,
बनिज (सं० स्त्री०) बनज, व्यापार, रोज़गार, वाणिज्य, सौदागरी। [गारी।
बनिया (सं० पु०) व्यापारी, वणिक, सौदागर, रोज़-
बनियायन (सं० स्त्री०) बनिये की स्त्री, गंजी।
बनी (सं० स्त्री०) दुलहिन। [सिरे पर लट्टू लगे रहते हैं।
बनेठी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की लाठी जिसके दोनों
बनैनी (सं० स्त्री०) बनियायन।
बनैला (वि०) जंगली।
बनौटिया (वि०) कपासी रंग का।
बन्दनवार (सं० पु०) तोरण।
बन्दर (सं० पु०) बानर, कपि, मर्कट।
बन्दरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की छींट, बन्दर की स्त्री।
बन्दी (सं० पु०) क़ैदी, बँधुआ, भूषण विशेष।
बन्दीगृह (सं० पु०) जेलख़ाना, कारागार।
बन्दी जन (सं० पु०) भाट, गुण बखान करने वाला।
बन्दोज (सं० पु०) दास का लड़का।
बन्दोही (सं० स्त्री०) दासी, सेविका, चेरी।

बन्ध (सं० पु०) बाँधना, गाँठ, ग्रन्थि ।
बन्धक (सं० पु०) धरोहर, थाती ।
बन्धकदाता (सं० पु०) ऋणदाता, रेहनदार ।
बन्धकधारी (सं० पु०) गिरवी रखनेवाला, न्यासधारी ।
बन्धक पत्र (सं० पु०) रेहननामा ।
बन्धन (सं० पु०) बाँधना, गिरह लगाना, क़ैद करना ।
बन्धना (क्रि० अ०) बन्ध होना, जोड़ा जाना, अटकना ।
बन्धाई (सं० स्त्री०) बाँधने का काम, बाँधने की मजूरी ।
बन्धानी (सं० पु०) पत्थर ढोनेवाला, अफ़ीमची ।
बन्धु (सं० पु०) मित्र, भाई, संबन्धी, प्रेमी, सुहृद ।
बन्धुआ (वि०) बँधा हुआ, क़ैदी, बन्दी ।
बन्धुर (वि०) उतराव, चढ़ाव (सं० पु०) हंस, विहंग ।
बन्धुल (सं० पु०) वेश्यापुत्र, छिनाल का बेटा, भड़ुआ ।
बन्धेज (सं० पु०) बन्धान, नियमित । [शक्ति न हो, बाँझ ।
बन्ध्या (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसमें सन्तानोत्पत्ति की
बन्ना (क्रि० स०) देखो "बनना" (सं० पु०) दुलहा ।
बन्नी (सं० स्त्री०) दुलहिन, बनरी । [जादूगर, टोनहा ।
बन्हा (सं० पु०) यन्त्र, मन्त्र, टोटका, टोना, नज़र,
बन्हाई (सं० स्त्री०) जादूगरिन, टोनहिन ।
बपंश (सं० पु०) पैतृक धन, बपौती ।
बपुरा (वि०) बेचारा, असहाय, अनाथ, दीन, दरिद्र ।
बपौती (सं० स्त्री०) पैतृक सम्पत्ति, पिता की जायदाद ।
बफ़ारा (सं० पु०) भाफ, वाष्प ।
बबुआ (सं० पु०) देखो "बबुवा" ।
बबुवा (सं० पु०) लड़का, दुलारा पुत्र, लाड़ला लड़का ।
बबूर (सं० पु०) एक काँटेदार वृक्ष ।
बबूल (सं० पु०) बबूर ।
बबेसिया (सं० पु०) गप्पी, गप्पोड़ी, बातूनी, फ़ुजूल बकने वाला, वह जिसको बवासीर का रोग हुआ हो ।
बबेसी (सं० स्त्री०) बवासीर, रोग विशेष ।
बब्बी (सं० स्त्री०) चुम्मा, माठी, चुम्बन । [का माप ।
बम (सं० स्त्री०) पानी का चश्मा, सोता, स्रोत, चार हाथ
बमकना (क्रि० अ०) चिल्लाना, नाराज़ होना, उभरना, फूलना, ऊपर उठना ।
बम्बा (सं० पु०) पानी का नल, छोटी नहर ।
बया (सं० पु०) एक प्रकार की चिड़िया, तौलने का काम करने वाला ।
बयान (सं० पु०) वर्णन, कथन, कहना ।
बयाना (सं० पु०) साई, किसी वस्तु का मूल्य आदि तय हो जाने पर कुछ पेशगी देना ।
बयार (सं० पु०) हवा, पवन, वायु, बतास ।
बयाला (वि०) बातूनी, बकवादी ।
बयालीस (वि०) संख्या विशेष, दो अधिक चालीस ।
बयासी (वि०) संख्या विशेष, अस्सी और दो ।
बरंडा (सं० पु०) दलान, बैठक । [दूलहा ।
बर (सं० पु०) आशीर्वाद, वरदान, इष्ट, सिद्धि, पति,
बरई (सं० पु०) तमोली, पान बेचने वाला ।
बरखना (क्रि० अ०) बरसना, वृष्टि होना ।
बरगद (सं० पु०) बड़ वृक्ष ।
बरगा (सं० पु०) धरन, धन्नी, कड़ी ।
बरजना (क्रि० स०) मना करना, रोकना, वारण करना ।
बरजोरी (सं० स्त्री०) ज़बरदस्ती ।
बरटा (सं० स्त्री०) हंसी, एक प्रकार की चिड़िया ।
बरत (सं० स्त्री०) रस्सी, डोरी (सं० पु०) व्रत, उपवास ।
बरतन (सं० पु०) बासन, पात्र ।
बरतना (क्रि० स०) व्यवहार करना, उपयोग में लाना
बरतनी (सं० स्त्री०) वर्णमाला । [करना, विभाग करना ।
बरताना (क्रि० अ०) बखरा लगाना, बाँटना, हिस्सा
बरद (सं० पु०) वर देने वाला, वरदाता ।
बरदान (सं० पु०) आशीर्वाद, उपहार, इनाम ।
बरदी (सं० स्त्री०) लदा हुआ बैल ।
बरदैत (सं० पु०) दसौंधी, भाट, शायर, गवैया ।
बरध (सं० पु०) बैल, वृषभ, बरधा । [धारण कराना ।
बरधना (क्रि० स०) पालना, बढ़ाना, गाय का गर्भ
बरधा (सं० पु०) बैल ।
बरधाना (क्रि० स०) गाय भैंस का गर्भ धारण कराना, गाय भैंस को जोड़ा खिलवाना ।
बरन (सं० पु०) अक्षर, लिखावट, रंग, वर्ण, भाँति (अव्य०) प्रत्युत, बल्कि, किन्तु ।
बरना (क्रि० अ०) स्वीकार करना, वरण करना ।
बरनी (सं० स्त्री०) पलकों के आगे का बाल, बरौनी ।
बरफ़ (सं० पु०) अधिक मात्रा में जमा हुआ पानी, बर्फ़ ।
बरब (सं० पु०) पक्षी विशेष ।
बरबट (सं० पु०) रोग विशेष, एक प्रकार का सर्प ।
बरबनी (सं० स्त्री०) बरौनी ।

बरबस (सं० पु०) बल, प्रबलता।
बरबाद (वि०) ध्वस्त, नष्ट, सत्यानाश। [किया जाता है।
बरमा (सं० पु०) एक औज़ार जिससे लकड़ी में सूराख़
बरमाना (क्रि० स०) बरमे से सूराख़ करना।
बरराना (क्रि० अ०) बकबक करना, बड़बड़ करना, बुदबुदाना।
बरवट (सं० पु०) तिल्ली, पिलही।
बरवा (सं० पु०) एक छन्द का नाम।
बरस (सं० पु०) वर्ष, साल, संवत्।
बरसगाँठ (सं० पु०) सालगिरह।
बरसना (क्रि० अ०) बरखना, वृष्टि होना, पानी पड़ना।
बरसावन (वि०) वार्षिक वर्षा, सांवत्सरिक।
बरसौड़ी (सं० स्त्री०) वार्षिक कर, सालाना महसूल।
बरहा (सं० पु०) चारागाह, गोचर भूमि, मोटा रस्सा, खेत में पानी ले जाने के लिए नाली। [पूरी।
बरा (सं० पु०) उर्द आदि की छोटी और कुछ मोटी
बराई (क्रि०स०) छाँटकर, चुनकर। [साथियों का जमाव।
बरात (सं० स्त्री०) विवाह का जलूस, वर और वर के
बराती (सं० पु०) बर पक्ष वाले, बरात में जाने वाले।
बराना (क्रि० अ०) अलग रहना, बचा रहना, पृथक् रहना, बचावना।
बराबर (वि०) साथ साथ, लगातार, समान।
बराबरी (सं० स्त्री०) सामना, मुक़ाबिला।
बरामदा (सं० पु०) दालान, बैठका।
बराय (क्रि० स०) चुन चुनकर।
बरारा (सं० पु०) रस्सी, डोरी।
बराव (सं० पु०) परहेज, बचाव, संयम।
बराह (सं० पु०) सुअर।
बरियाई (सं० स्त्री०) बलात्कार, बरज़ोर, हठ।
बरियार (वि०) मज़बूत, बलवान। [नाम।
बरियारा (वि०) बरियार (सं० पु०) एक पौधे का
बरी (सं० पु०) चूने की कली, बड़ी।
बरुण (सं० पु०) जलदेवता, दिक्पाल।
बरुणालय (सं० पु०) समुद्र।
बरुणी (सं० स्त्री०) बरौनी।
बरेज (सं० पु०) पान का भीटा, पनवाड़ी।
बरेठन (सं० स्त्री०) धोबिन, बरेठा की स्त्री।
बरेठा (सं० पु०) धोबी, कपड़ा धोने वाला।
बरेरा (सं० पु०) बिरनी, हाड़ा।
बरै (सं० पु०) तमोली, बारी।
बरैन (सं० स्त्री०) तमोलिन, बारिन। [डंठल।
बरोठा, बरौठा (सं० पु०) धोबी, डेवढ़ी, ज्वार आदि का
बरौनी (सं० स्त्री०) आँख की पपनी पर के बाल।
बर्छा (सं० पु०) भाला, अस्त्र विशेष।
बर्छी (सं० स्त्री०) भाला, बर्छा।
बर्छैत (सं० पु०) भलैत, बर्छा लेने वाला।
बर्त (सं० पु०) देखो "बरत"।
बर्तन (सं० पु०) बासन, पात्र, बर्तन।
बर्तना (क्रि० अ०) देखो "बतना"।
बर्ताव (सं० पु०) व्यवहार, आचरण।
बर्द्धा (सं० पु०) बैल, बरधा। [बरफ़।
बर्फ़ (सं० पु०) अधिक मात्रा में जमा हुआ पानी,
बर्मा (सं० पु०) देखो "बरमा"।
बर्माना (क्रि० स०) देखो "बरमाना"।
बर्राना (क्रि० स०) सोते समय बकना, सयनाना।
बर्राहट (सं० स्त्री०) बड़बड़, बकबक, बकझक।
बर्वै (सं० पु०) छन्द विशेष।
बर्ष (सं० पु०) साल, सम्वत।
बर्षासन (सं० पु०) बरष भर का भोजन, वर्ष भर पर भोजन करने वाला। [दिन किया जाय।
बर्षी (सं० स्त्री०) वार्षिक कृत्य, वह काम जो बरसवें
बर्सात (सं० पु०) वर्षा ऋतु, बरषा काल।
बर्ही (सं० पु०) मोर, मयूर।
बल (सं० पु०) शक्ति, ताक़त, सामर्थ्य, ऐंठन।
बलकना (क्रि० अ०) खौलना, उफनाना, उबकना, अपने मुँह अपनी बड़ाई करना।
बलग़म (सं० पु०) कफ़।
बलताड़ (सं० पु०) वृक्ष विशेष। [टूटने से होता है।
बलतोड़ (सं० पु०) एक प्रकार का फोड़ा जो बाल के
बलद (सं० पु०) बैल, बरध।
बलदाऊ (सं० पु०) बलराम।
बलछी (सं० पु०) बरछी।
बलना (क्रि० अ०) जलना, लहकना, सुलगना।
बलबकरा (सं० पु०) अकारण मारा जाने वाला, बलिदान के लिये निर्दिष्ट बकरा। [उबलना, ऊँट का बोलना।
बलबलाना (क्रि० अ०) कामासक्त होना, खौलना,

बलबीर (सं० पु०) बलदेव, श्रीकृष्ण, श्रीरामचन्द्र ।
बलभद्र (सं० पु०) बलदेव, बलराम ।
बलम (सं० पु०) पति, स्वामी ।
बलमि (सं० पु०) बलम, पति ।
बलराम (सं० पु०) रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्ण के बड़े भाई ।
बलवन्त (वि०) बलवान, शक्तिशाली, ताक़तवार ।
बलवान् (वि०) ताक़तवर, ज़ोरावर । [भार, आँटी, बोझ ।
बलही (सं० स्त्री०) लग्गा, लम्बी और पतली लकड़ी,
बलहीन (वि०) निर्बल, कमज़ोर ।
बलाई (वि०) बलैयाँ, आशीर्वाद, असीस, उदासीन ।
बलात्कार (सं० पु०) बलपूर्वक, ज़बरदस्ती, बरबस, हठात् ।
बलि (सं० पु०) आहुति, नैवेद्य, अंश, पूजा, देवभोग, दानवों के एक राजा, ये प्रह्लाद के पौत्र और विरोचन के पुत्र थे । इन्होंने एक अश्वमेध यज्ञ किया था, जिसमें भगवान् बामन रूप धर कर आये और बलि से तीन पैर ज़मीन माँगी, बलि ने ज़मीन देने का वचन दे दिया, भगवान् ने विराटरूप धर कर दो पैर में स्वर्ग पाताल नाप लिया, तीसरे पैर के लिये बलि से जब ज़मीन माँगी तो बलि ने अपना शरीर उपस्थित कर दिया, भगवान् इनसे बहुत सन्तुष्ट हुये और सर्वाधि मन्वन्तर में इनको इन्द्र होने का बरदान दिया और तब तक सुतल नामक पाताल में रहने को कहा ।
बलिदान (सं० पु०) किसी देवता के निमित्त जीव-हिंसा ।
बलिष्ठ (वि०) बलशाली, बलवान्, समर्थ, मज़बूत, दृढ़, हट्टाकट्टा ।
बलिहारी (सं० स्त्री०) बधाई, निछावर ।
बली (वि०) बलवान्, पराक्रमी, मज़बूत, ज़ोरावर (सं० पु०) वानर, कपि ।
बलीयान् (वि०) पराक्रमी, बली । [भभक जा, बर जा ।
बलु (सं० पु०) ताक़त, बल (क्रि० अ०) सुलग उठ,
बलुआ (वि०) बालुमय, रेतीला । [खखोरना ।
बलूरना (क्रि० स०) खसोटना, बकोटना, नोचना,
बलूला (सं० पु०) बुल्ला, बुलका, बुदबुदा ।
बलेंडी (सं० स्त्री०) बड़ेरी, मगरा ।
बलैयाँ (सं० स्त्री०) आशीर्वाद, असीस, बाहरी, उदासीन ।

बल्लम (सं० पु०) बर्छा, नेज़ा, भाला ।
बल्ली (सं० स्त्री०) नाव खेने के लिए लंबा बाँस, लग्गी ।
बवंडर (सं० पु०) अंधड़ ।
बवाई (सं० स्त्री०) पैर का फटना ।
बवासीर (सं० पु०) एक प्रकार का रोग ।
बस (सं० पु०) अधिकार, शक्ति, क़ाबू (अव्य०) पूर्ण, पर्याप्त, यथेष्ट, अलम् ।
बसगित (सं० स्त्री०) रहन, बसी ।
बसन (सं० पु०) वस्त्र, कपड़ा लत्ता ।
बसना (क्रि० अ०) ठहरना, रहना, निवास करना ।
बसनी (सं० स्त्री०) रुपये रखने की वह थैली जो कमर में लपेट कर बाँध ली जाती है ।
बसन्त (सं० पु०) एक ऋतु का नाम, जिस ऋतु में फागुन और चैत दो महीने पड़ते हैं, कोई कोई चैत और बैसाख को बसन्त ऋतु मानते हैं । [पीत ।
बसन्ती (सं० पु०) पीत वर्ण, पीला रंग (वि०) पीला,
बसराना (क्रि० स०) समाप्त करना, पूर्ण करना ।
बसाना (क्रि० स०) आबाद करना, ठहराना, टिकाना ।
बसूला (सं० पु०) बढ़इयों का एक औज़ार ।
बसूली (सं० स्त्री०) थवइयों का एक औज़ार ।
बसैंधा (वि०) सड़ा, बदबूदार, दुर्गन्धमय ।
बसेरा (सं० पु०) पक्षियों के रहने का स्थान, खोंता, घोंसला । [वास ।
बसोवास (सं० पु०) रहने की जगह, मुल्क, घर, स्थान,
बस्ती (सं० स्त्री०) नगर, गाँव, ग्राम ।
बस्तु (सं० स्त्री०) पदार्थ, चीज़, द्रव्य । [वेठन ।
बस्ना (सं० पु०) स्थिति, बसन, बसना, लपेटना,
बहँगी (सं० स्त्री०) बोझ ढोने के लिये एक लकड़ी का डंडा जिसमें दोनों ओर सिकहर लटके रहते हैं ।
बहकना (क्रि० अ०) भूलना, भटकना, भ्रम में पड़ना, धोखा खाना । [चकमा देना ।
बहकाना (क्रि० स०) भुलाना, भटकाना, धोखा देना,
बह जाना (क्रि० अ०) बहना, बिगड़ना ।
बहत्तर (वि०) संख्या विशेष, सत्तर और दो, ७२ ।
बहन (सं० स्त्री०) बहिन, भगिनी ।
बहना (क्रि० अ०) पानी, हवा आदि का चलना ।
बहनेऊ (सं० पु०) बहनोई ।
बहनेली (सं० स्त्री०) बहिन ।

बहनोई (सं० पु०) भगिनी पति, बहिन का पति ।
बहर (सं० स्त्री०) नावों की भीड़, नौका समूह ।
बहरा (वि०) जिसकी श्रवण शक्ति नष्ट हो गयी हो, जो सुन न सके ।
बहरिया (सं० पु०) छुतिहर, अपवित्र बरतन ।
बहरी (सं० स्त्री०) बाज पक्षी ।
बहल (सं० पु०) बैलगाड़ी । [बहकना ।
बहलना (क्रि० स०) प्रसन्न होना, खेलना कूदना, भूलना,
बहलाना (क्रि० स०) फुसलाना, खिलाना, फिराना, प्रसन्न करना ।
बहलिया (सं० पु०) गाड़ी हाँकने वाला ।
बहली (सं० स्त्री०) छोटी बैलगाड़ी ।
बहादुर (वि०) शूर, बीर ।
बहादुरी (सं० स्त्री०) शूरता, बीरता । [फेंकना ।
बहा देना (क्रि० अ०) उजाड़ना, बिगाड़ना, नष्ट करना,
बहाना (क्रि० स०) चलाना, भगाना, बहा देना ।
बहाव (सं० पु०) चढ़ाव, बाढ़ ।
बहिन (सं० स्त्री०) बहन, भगिनी ।
बहिरा (वि०) बहर, बधिर, न सुनने वाला । [करना ।
बहिराना (क्रि० स०) बाहर निकालना, घर से दूर
बहिर्देश (सं० पु०) बाहर का देश ।
बहिर्मुख (सं० पु०) अधर्मी, उदासीन ।
बहिला (सं० स्त्री०) भेड़ गाय भैंस आदि जिनको जोड़ा खाने पर भी गर्भ न रहे, बाँझ, बंध्या । [खसरा ।
बही (सं० स्त्री०) हिसाब लिखने की किताब, खाता,
बहीर (सं० स्त्री०) सैनिकों की सामग्री, फ़ौजी सामान ।
बहु (अव्य०) अधिक, ज़्यादा, बहुत, बिशाल, बड़ा ।
बहुत (वि०) अधिक, ढेर, ज़्यादा, काफ़ी ।
बहुतात (सं० स्त्री०) अधिकता, ज़्यादती ।
बहुतायत (सं० स्त्री०) अधिकता, बहुतात ।
बहुतिथि (वि०) बहुत दिन, बहुत समय, अनेक समय ।
बहुतेरा (वि०) बहुत, अधिक, अनेक ।
बहुदर्शी (वि०) दूरदर्शी, अभिज्ञ, पण्डित ।
बहुधा (अव्य०) प्रायः, अकसर, अनेक वार, अनेक समय ।
बहुबचन (सं० पु०) एक से अधिक वाक्य, जमा ।
बहु बाहु (सं०पु०) रावण, सहस्र बाहु, कार्तवीर्य ।
बहुबिधि (वि०) अनेक प्रकार, अनेक भाँति ।
बहुमूल्य (वि०) अधिक दाम का, बेश क़ीमत ।
बहुरंगी (वि०) विविध रंग का, रंग विरंगा, चपल, चंचल ।
बहुर (क्रि० वि०) फिर, पुनः, पुन ।
बहुरना (क्रि० अ०) लौटना, वापस आना । [लाना ।
बहुराना (क्रि० स०) लौटालना, वापस करना, फेर
बहुरि (अव्य०) फिर, पुनः, और ।
बहुरिया (सं० स्त्री०) बहू, बधू, पतोहू, पुत्र की स्त्री ।
बहुरुपिया (सं० पु०) अनेक रूप धारण करनेवाला, स्वांगी ।
बहुरूपा (सं० पु०) गिरगिट, जन्तु विशेष ।
बहुल (वि०) अधिक, प्रचुर, ज़्यादा ।
बहुल गन्धा (सं० स्त्री०) इलायची ।
बहुब्रीहि (सं० पु०) समास का एक भेद ।
बहू (सं० स्त्री०) पुत्रवधू, पतोहू, बहुरिया ।
बहेड़ा (सं० पु०) फल विशेष ।
बहेलिया (सं० पु०) व्याधा, चिड़ीमार ।
बहैत (सं० पु०) रमता, दुष्ट, दुर्जन, फिरनेवाला ।
बहोर बहोरी (अव्य०) फिर, लौटाने वाला, फेरी ।
बह्मनेटा (सं० पु०) तिरस्कारसूचक शब्द, ब्राह्मण का बेटा ।
बंचना (क्रि०स०) बाँचना, समझना । [का, तरकारी विशेष ।
बंडा (वि०) बे पूँछ का, पूँछ रहित, अकेला, बिना परिवार
बाँक (सं० स्त्री०) टेढ़ापन, झुकाव, वक्रता, एक प्रकार का गहना जो बाँह के बीच में पहना जाता है, अस्त्र विशेष ।
बाँकपन (सं० पु०) शोहदापन, गुंडई, तिरछापन । [बैत ।
बाँका (वि०) छैल छबीला, शोहदा, लुच्चा, टेढ़ा, अक-
बाँगा (सं० पु०) कच्ची रूई, बिनौला सहित रूई ।
बाँचना (क्रि० स०) पढ़ना, पाठ करना ।
बांछा (सं० पु०) मनोरथ, अभिलाषा, इच्छा, आकांक्षा ।
बांछित (वि०) इच्छित, अभीष्ट, ईप्सित, अभिलाषित ।
बाँजर (सं० पु०) ऊसर, पटपर, बंजर ।
बाँझ (सं० स्त्री०) बंध्या ।
बाँट (सं० पु०) अंश, हिस्सा, भाग, बखरा, दुहने के पहले का गाय भैंस का चारा, संध्या समय का बँधा भोजन । [करना, तक़सीम करना, विभाग करना ।
बाँटना (क्रि० स०) भाग करना, बखरा लगाना, हिस्सा
बाँड़ा (वि०) बिना पूँछ का, असहाय, निराश्रय ।
बाँड़ी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का आधा बाँह का कुरता, बच्चों के लिये एक बहुत छोटा डंडा ।

बाँद्र (सं० पु०) बन्दर ।
बाँदा (सं० पु०) अमरबेल, एक प्रांत का नाम ।
बाँदी (सं० स्त्री०) लौंड़ी, नौकरानी, दासी ।
बाँध (सं० पु०) बंध, मेंड़, आड़, नदी आदि के ऊपर का रास्ता जो लकड़ी आदि से बनाया जाता है ।
बाँधना (क्रि० स०) रोकना, तैयार करना, जकड़ना, बनना ।
बाँधनू (सं० पु०) वस्त्रादि रँगने की एक विधि ।
बाँबी (सं० स्त्री०) साँप की बिल ।
बाँस (सं० पु०) एक प्रकार का लंबा और पतला पेड़, बंश।वृक्ष, ज़मीन नापने की लग्गी ।
मुहा०—बाँस पर चढ़ना = बदनाम होना ।
बाँसफोड़ा (सं० पु०) एक जाति जो बाँस की चीज़ें बनाकर अपनी जीविका चलाती है ।
बाँसली (सं० स्त्री०) एक बाजा का नाम, मुरली ।
बाँसा (सं० पु०) नाक की हड्डी ।
बाँसी (सं० स्त्री०) बाँसुली, मुरली ।
बाँसुरी (सं० स्त्री०) बंसी, मुरली ।
बाँह (सं० स्त्री०) हाथ, बाहु, भुजा ।
मुहा०—बाँह टूटना = निस्सहाय होना । बाँह चढ़ाना = लड़ाई करना । बाँह पकड़ना = सहायता करना । बाँह गहे की लाज = रक्षा करने की प्रतिज्ञा अनेक कष्टों को झेल कर पालना ।
बाई (सं० स्त्री०) अजीर्ण, अपच, बात ।
बाईस (वि०) संख्या विशेष, बीस और दो ।
बाईसी (सं० पु०) सेना विशेष, शाही फ़ौज ।
बाईहा (सं० पु०) बात रोगवाला ।
बाउर (वि०) पागल, अनुचित ।
बाकला (सं० पु०) एक प्रकार की तरकारी ।
बाक़स (सं०पु०) पेटी, मंजूषा, पेटारी, अड़ूसा ।
बाक़ी (वि०) अवशिष्ट, बचा हुआ ।
बाखर (सं० पु०) आँगन, चौक, सहन ।
बाग (सं० स्त्री०) लगाम, फुलवाड़ी, बाटिका ।
बागडोर (सं० स्त्री०) बाग, लम्बा लगाम ।
बागा (सं० पु०) ख़िलअत, वस्त्रादि जो पारितोषिक में दिये जाते हैं ।
बाग़ी (अ० सं० पु०) उपद्रवी, शत्रु, विद्रोही ।
बागुर (सं० पु०) फंदा, जाल, पाश, फाँसी ।

बाघंबर (सं०पु०) बाघ की खाल, बघछाला ।
बाघ (सं० पु०) व्याघ्र, एक हिंसक जानवर ।
बाघनी (सं० स्त्री०) बाघ की स्त्री ।
बाघा (सं० पु०) चीता, शेर, व्याघ्र । [गिल्टी ।
बाघी (सं० स्त्री०) पीठ में होनेवाली एक प्रकार की
बाछ (सं० स्त्री०) निर्वाचन, चुनाव । [बिनना ।
बाछना (क्रि० स०) निर्वाचन करना, चुनना, छाँटना,
बाछी (सं० स्त्री०) बछिया ।
बाजन (सं० पु०) बाजा ।
बाजना (क्रि० अ०) बाजे का शब्द होना । [नाज ।
बाजरा (सं० पु०) अन्न विशेष, ज्वार की क़िस्म का
बाजा (सं० पु०) वाद्य, बाजन ।
बाज़ीगर (फ़ा० सं० पु०) नट, जादूगर ।
बाज़ीगरनी (सं० स्त्री०) नटिन, जादूगरनी ।
बाज़ू (सं० पु०) बाहु, हाथ, हाथ का गहना ।
बाज़ूबन्द (सं० पु०) हाथ का गहना ।
बाट (सं० पु०) राह, रास्ता, पथ, मार्ग, डगर, डहर ।
बाटिका (सं० स्त्री०) बगीचा, उपवन, फुलवाड़ी ।
बाटी (सं० स्त्री०) फुटेहरी, गोल रोटी, उर, गृह, मकान ।
बाड़ (सं० स्त्री०) तलवार आदि की धार, क़तार, पङ्क्ति, किनारा ।
मुहा०—बाड़ छड़ाना = एक साथ कई एक बंदूक़ दागना । बाड़ दिलवाना = सान चढ़वाना ।
बाड़व (सं० पु०) ब्राह्मण, घोड़ों का समूह ।
बाड़वानल (सं० पु०) समुद्र की अग्नि, समुद्र की आग ।
बाड़ा (सं० पु०) घेरा, हाता ।
बाड़िया (सं० पु०) शान चढ़ानेवाला । [वास-स्थान ।
बाड़ी (सं० स्त्री०) उपवन, बाटिका, बगीचा, घर,
बाढ़ (सं० स्त्री०) नदी आदि में जल की अधिकता, बढ़ती, वृद्धि, तलवार आदि की धार ।
बाढ़ना (क्रि० अ०) उमड़ना, उफनाना, बढ़ना ।
बाण (सं० पु०) तीर, शर, अस्त्र विशेष, मूँज की रस्सी, पाँच की संख्या ।
बाणगंगा (सं० स्त्री०) कहते हैं किसी कारण से रावण ने सोमेश्वर नामक पर्वत में बाण मारा था जिससे उस पर्वत के दो टुकड़े हो गये और उसमें से एक नदी निकली जिसे बाणगंगा कहते हैं ।
बाणभट्ट (सं० पु०) संस्कृत के एक कवि और ग्रन्थकार ।

बाणलिङ्ग (सं० पु०) नर्मदा नदी में उत्पन्न शिवलिङ्ग विशेष। [गरी, बनिज।

बाणिज्य (सं० पु०) व्यापार, व्यवसाय, लेन देन, सौदा-

बाणी (सं० स्त्री०) वचन, बात-कथन, भाषण, सरस्वती।

बात (सं० स्त्री०) शब्द, कथन, भाषण, बचन (सं० पु०) बात का रोग, गठिया, बाई।

मुहा०—बात करना=बोलना। बात काटना=कहने का खण्डन करना। बात का बतङ्गड़ करना=साधारण बात पर लड़ बैठना। बात की बात में=शीघ्र, झटपट। बात गढ़ना=बात बनाना। बात चबाना=बोलते वक्त चुप हो जाना, रुक रुक कर बोलना। बात चलाना=बात छेड़ना, ज़िक्र करना। बात टालना=आज्ञा का भङ्ग करना। बात पर बात याद आना=प्रसङ्गवश कोई बात कह उठना। बात पी जाना=कठिन बात को भी सह लेना। बात फेंकना=हँसी उड़ाना। बात बढ़ाना=झगड़ा करना। बात बिगाड़ना=बने कार्य को नष्ट करना। बात मानना=आज्ञापालन करना। बात लगाना=झगड़ा लगाना। बातें बनाना=झूठी बातें कहना। बातें मारना=डींग हाँकना। बातें सुनाना=कड़ी बातें कहना। बातों में उड़ाना=किसी की बात हँसी में उड़ाना। बातों में धर लेना=निरुत्तर करना।

बाती (सं० स्त्री०) बत्ती, पलीता, ऐंठी हुई रूई या कपड़े का छोटा टुकड़ा जो दिया में जलाया जाता है।

बातूनिया (वि०) बातूनी, बकवादी।

बातूनी (वि०) बकवादी, बाचाल, बकबकिया।

बादल (सं० पु०) मेघ घटा।

बादला (सं० पु०) एक प्रकार का ज़री का तार।

बादिनि (सं० स्त्री०) बोलनेवाली, झगड़ालू।

बादुर (सं० पु०) चमगीदड़।

बाध (सं० पु०) बाधा, रोक, रुकावट, निवारण, मूंज की रस्सी।

बाधक (सं० पु०) विघ्न डालनेवाला, रोकनेवाला।

बाधा (सं० स्त्री०) दुःख, क्लेश, कष्ट, मानसिक व्यथा।

बाधित (वि०) रोका हुआ, बाधा दिया हुआ, निवारण किया हुआ।

बाध्य (वि०) बाधा के योग्य, रोकने के योग्य।

बान (सं० स्त्री०) टेव, आदत, लत, अभ्यास (सं० पु०) शर, बाण, तीर, मूंज की रस्सी।

बानगी (सं० स्त्री०) नमूना, आदर्श।

बानबे (वि०) संख्या विशेष, नब्बे और दो, ९२।

बाना (सं० पु०) टेव, बान, आदत, स्वभाव, प्रकृति, प्रतिज्ञा, व्यवहार, परिच्छेद, वेष-विन्यास, भरनी जिससे सूत की चौड़ाई भरी जाती है, अस्त्र विशेष, विस्तार (क्रि० अ०) पसरना, पटना, खुलना, दो भाग होना।

बानी (सं० स्त्री०) वाणी, बोली, कपड़ा बुनने का सूत।

बानी बोनी (सं० स्त्री०) बिनवाई, बिनावट।

बानूवा (सं० पु०) जल में रहने वाला एक पक्षी विशेष।

बानूसा (सं० पु०) एक प्रकार का वस्त्र।

बानैत (वि०) बनाने वाला, धनुर्धर। [बंधु।

बान्धव (सं० पु०) परिवार, कुटुम्ब, नाता गोता, भाई

बाप (सं० पु०) पिता, जनक, जन्म-दाता।

मुहा०—बाप रे बाप=आश्चर्य, भय, दुःखादिसूचक शब्द। बाप न मारी पेड़की बेटा तीरंदाज़=अयोग्य पिता के अयोग्य पुत्र का घमण्ड करना।

बापड़ा (वि०) बपुरा, असहाय, निराश्रय, दीन, दरिद्र।

बापरा (वि०) बापड़ा। [मर्थ।

बापरो (वि०) दीन, दुःखी, असहाय, निराश्रय, अस

बाफ (सं० पु०) भाप, वाष्प।

बाबनी (सं० स्त्री०) सर्प की बिल, बावन संख्या का।

बाबर (सं०पु०) एक प्रकार की मिठाई। [बाप का बाप।

बाबा (सं० पु०) दादा, बाप, बूढ़ा, साधु, संन्यासी,

बाबाजी (सं० पु०) योगी, संन्यासी, साधु आदि।

बाबी (सं० स्त्री०) साँप की बिल।

बाबू (सं० पु०) आदर प्रदर्शक शब्द, बाप, पिता।

बाम (वि०) बायाँ, उलटा (सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, एक प्रकार की मछली (सं० पु०) शिव, कामदेव।

बामा (सं० स्त्री०) पत्नी, भार्या, स्त्री, जोरू।

बाम्हन (सं० पु०) ब्राह्मण।

बाम्हनी (सं० स्त्री०) ब्राह्मणी।

बाय (क्रि०स०)फैलाकर, प्रसारकर (सं०पु०) बाई, बात।

बायन (सं०पु०) वह वस्तु जो किसी आनन्द मंगल आदि के उपलक्ष्य में भाई बन्धुओं के यहाँ भेजी जाती है।

बायना (सं० पु०) देखो "बायन"। [पश्चिम का कोना।
बायब (वि०) अन्य, दूसरा, भिन्न (सं० पु०) उत्तर
बायव्य (सं० पु०) उत्तर पश्चिम का कोना।
बाँया (वि०) बामाङ्ग, उलटा।
मुहा०—बाँया पाँव चूमना = पाखंडियों के धोके में आना।
बाया (क्रि० स०) फैलाया, पसारा।
बार (सं०स्त्री०) देर, विलम्ब, अवसर, समय, बेला।
बारण (सं० पु०) रुकावट, बाधा, विघ्न, हाथी।
बारन (सं० पु०) देखो "बारण"। [अलग करना।
बारना (क्रि० स०) रोकना, बाधा देना, बिलगाना,
बारनारी (सं० स्त्री०) वेश्या, रण्डी, पतुरिया।
बारंबार (अव्य०) हर घड़ी, प्रतिपल, लगातार।
बारह (वि०) संख्या विशेष, दस और दो, १२।
मुहा०—बारह बाँट होना = बिगड़ना, नष्ट होना।
बारहखड़ी (सं० स्त्री०) बारह मात्राओं का व्यंजनों के साथ मेल। [बंगला।
बारहदरी (सं० स्त्री०) हवादार मकान, खुलता मकान,
बारहबाँट (सं० पु०) चौपट, अंडबंड।
बारहसिंहा (सं० पु०) मृग विशेष।
बाराह (सं०पु०) सुअर।
बाराहाँबर (सं० पु०) एक औषध का नाम, नेत्रवाला।
बारिश (सं०स्त्री०) वृष्टि, वर्षा, मेह।
बारी (सं० स्त्री०) क्वारी कन्या, नाक कान में पहनने की बाली, बग़ीचा, बाटिका, झरोखा, जंगला (सं० पु०) एक जाति जिसका काम पत्तल बनाना और मशाल दिखाना है (अव्य०) पारी, ओसरी।
बारीक (वि०) झीना, महीन, पतला।
बारीदार (सं० पु०) नियत समय का नौकर।
बारुणी (सं० स्त्री०) मद्य, शराब, मदिरा, पश्चिम दिशा, शतभिषा नक्षत्र।
बारूद (सं० स्त्री०) गंधक, शोरा, दारू और कोयला से बनी एक वस्तु जो गर्माहट पाकर भभक उठती है।
बारे (सं० पु०) बच्चे, लड़के।
बाल (सं० पु०) बच्चा, बालक, केश।
मुहा०—बाल गोपाल = लड़के बाले। बाल ग्रह = पूतना आदि ग्रह। बाल बाँधी कौड़ी मारना = निशाना जमाना। बाल बाल बच जाना = ज़रा रेफ न लगना। बाल बैरी होना = सबसे शत्रुता होना। बाल बाल गज मोती पिरोना = सोरहो श्रृंगार करना, ख़ूब श्रृंगार करना। बाल बाँका न होना = कुछ न बिगड़ना।
बालक (सं० पु०) लड़का, बच्चा, छोटा छोकरा।
बालकपन (सं० पु०) लड़काई, लड़कपन।
बालका (सं० पु०) योगी संन्यासियों का चेला।
बालक्रीड़ा (सं० स्त्री०) बच्चों का खेल।
बालछड़ (सं० स्त्री०) सुगंधवाला नाम की औषधि।
बालतोड़ (सं०पु०) फोड़ा जो बाल टूटने से हो जाता है।
बालधि (सं० स्त्री०) पूँछ।
बालना (क्रि० स०) जलाना, लहकाना, सुलगाना।
बालभोग (सं० पु०) भगवान का प्रातः काल का नैवेद्य।
बालम (सं० पु०) बलमा, पति, स्वामी, भर्ता।
बालमखीरा (सं० पु०) एक प्रकार का खीरा।
बालमीकि (सं० पु०) एक मुनि का नाम, आदि कवि, रामायण के कर्त्ता। [राँड़ हो।
बालराँड़ (सं० स्त्री०) बाल विधवा, जो बालकपन से
बाल-लीला (सं० स्त्री०) बालक का खेल, बाल-चरित्र।
बालवत्स (सं० पु०) कबूतर, बालकों पर कृपा, बालकों पर दयालु।
बालसुख (सं० पु०) बालकपन का सुख।
बाला (सं० स्त्री०) बालिका, छोटी अवस्था की कन्या, कान में पहनने का एक गहना।
बालाचाँद (सं०पु०) दुइज का चाँद, द्वितीया का चन्द्रमा।
बालापन (सं० पु०) बालकपन, लड़काई।
बालि (सं० पु०) एक बानर का नाम, यह किष्किन्धा का राजा था, इसके भाई का नाम सुग्रीव था, इसकी स्त्री का नाम तारा था, एक बार यह एक दैत्य को मारने के पीछे पताल चला गया, उसके लौटने में देर देख सुग्रीव राजा बन बैठा, जब बालि लौट कर आया तो सुग्रीव की करतूत पर उसको बड़ा बुरा लगा, इसने सुग्रीव की स्त्री को रख लिया और सुग्रीव को मार भगाया, यह रामचन्द्र के द्वारा मारा गया।
बालिका (सं० स्त्री०) कन्या, छोटी अवस्था की लड़की।
बालिकुमार (सं० पु०) अङ्गद।
बालिस (वि०) मूर्ख, अनाड़ी।
बाली (सं० स्त्री०) कान में पहनने का एक गहना।

बालुका (सं० स्त्री०) देखो "बालू"। [पत्थर आदि का कण।
बालू (सं० स्त्री०) रेत, नदियों के धारा से घिसा हुआ
बालूचर (सं० पु०) गाँजे का एक भेद।
बालूचरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
बालूशाही (सं० स्त्री०) एक मिठाई का नाम।
बाल्य (सं० पु०) लड़कपन।
बाव (सं० पु०) वायु, पवन, हवा।
मुहा०—बाव बाँधना=ढोंग रचना। बाव बहना—किसी बात का प्रचार होना। बाव के घोड़े पर सवार होना=घमंड करना। बाव बतास=भूतादि बाधा।
बावग (सं० पु०) बोआई, बोने का काम।
बावगोला (सं० पु०) पेट का दर्द, पेट में एक गोलाकार वस्तु का उठना और उससे दर्द होना।
बावझक (वि०) बकवादी, बाचाल, गप्पी।
बावड़ी (सं० स्त्री०) बापी, तड़ाग, छोटा तलाब।
बावना (वि०) बामन, बवना।
बाव बतास (सं० पु०) भूतबाधा, दैवी आपद।
बावला (वि०) पागल, उन्मत्त, विक्षिप्त।
बावली (सं० स्त्री०) बावड़ी।
बावशूल (सं० पु०) बायगोला, पेट का दर्द। [डेरा।
बास (सं० पु०) महक, गंध (सं० पु०) बसेरा, स्थान,
बासन (सं० पु०) बरतन, पात्र।
बासना (क्रि० स०) सुगंधित करना, बास देना (सं० स्त्री०) इच्छा, मनोरथ, चाह, बांछा।
बासा (सं० पु०) स्थान, डेरा, बहस।
बासी (वि०) रहने वाला, एक दिन से अधिक का, कई एक दिन का बना हुआ।
मुहा०—बासी बचे न कुत्ता खाय=झगड़े की जड़ नष्ट हो जाना। बासी फूलों बास नहीं परदेशी बालम आस नहीं=किसी काम के उपयुक्त समय से बीत जाने पर उसकी आशा करना व्यर्थ है।
बाहक (सं० पु०) ढोने वाला, मोटिया, मजदूर।
बाहन (सं० पु०) सवारी आदि।
बाहना (क्रि० स०) चलाना, फेंकना, छोड़ना, गाय भैंस आदि का गर्भाना। [स्थान।
बाहर (अव्य०) अन्यत्र, भीतर का उलटा, परदेश, दूसरा
मुहा०—बाहर के खा जायँ घर के गीत गावें=अधिकारी को कुछ न मिले दूसरे लाभ उठावें।

बाहु (सं० पु०) हाथ, भुजा, बाँह।
बाहुज (सं० पु०) क्षत्रिय वर्ण। [मल्ल युद्ध।
बाहु युद्ध (सं० पु०) पहलवानों की लड़ाई, कुश्ती,
बाहुल्य (सं० पु०) अधिकता, बहुतायत।
बिंजन (सं० पु०) भाजी, साग, तरकारी।
बिंदी (सं० स्त्री०) दाग़, नुक़ता, शून्य।
बिंधना (क्रि० स०) डंक मारना, डँसना।
बिंबोट (सं० स्त्री०) बालमीक, दीमक।
बिक (सं० पु०) हुंडार, भेड़िया, एक प्रकार का हिंसक जानवर। [कठिन, कठोर।
बिकट (वि०) भयंकर, डरावना, खूँख़ार, भयानक,
बिकना (क्रि० अ०) बेचा जाना, बिक्री होना, खतम होना।
बिकराल (वि०) देखो "बिकट"। [हुआ।
बिकल (वि०) व्यग्र, उद्विग्न, व्याकुल, बेचैन, घबड़ाया
बिकसना (क्रि० अ०) स्फुटित होना, खिलना, फूलना, प्रसन्न होना, विकसित होना। [हुआ, फूला हुआ।
बिकसित (वि०) प्रफुल्लित, आनन्दित, हर्षित, खिला
बिकाऊ (वि०) बेचने के लिए, बिक्री के लिये। [होना।
बिकाना (क्रि० स०) बिक्री हो जाना, बिक जाना, खपत
बिकाव (सं० पु०) बिक्री, खपत।
बिकास (सं० पु०) हर्ष, आनन्द, प्रकाश, चमक, आभास।
बिक्री (सं० स्त्री०) बिकाव, विक्रय, खपत।
बिखरना (क्रि० अ०) छितरना, पसरना, फैलना, कुपित होना, क्रुद्ध होना। [नष्ट होना।
बिगड़ना (क्रि० अ०) ख़राब होना, तहस नहस होना,
बिगर्ड़ी (सं० स्त्री०) लूट, लड़ाई, झगड़ा, फ़साद।
बिगसना (क्रि० स०) बिकसना।
बिगहा (सं० पु०) बीस बिस्वा, बीघा।
बिगाड़ (सं० पु०) बैर, बिरोध, दुश्मनी, शत्रुता, लड़ाई, झगड़ा, हानि, क्षति, तोड़, भङ्ग।
बिगाड़ना (क्रि० स०) बैर करना, बिरोध ठानना, क्षति पहुँचाना, हानि करना, तोड़ना।
बिगोई (सं० स्त्री०) छिपाव, भुलावा, चकमा।
बिघन (सं० पु०) विघ्न, बाधा, रोक, रुकावट, अड़चन।
बिच (अव्य०) बीच, अन्तर, फ़रक़ व्यवधान। [होना।
बिचकना (क्रि० अ०) भड़कना, सावधान होना, सतर्क
बिचकन्ना (वि०) भड़कने वाला, सावधान।

बिचकाना (क्रि० स०) भड़काना, सावधान करना, सतर्क करना। [बिछलना।

बिचलना (क्रि० अ०) बिचलित होना, खसकना,

बिचली (सं० स्त्री०) मध्यमा, बीच वाली, बीच की, दर्मियानी।

बिचवई (सं० पु०) मध्यस्थ, पंच, घटक, दलाल।

बिचवाई (सं० स्त्री०) दलाली।

बिचार (सं० पु०) ध्यान, ख़्याल, निर्णय। [निरीक्षक।

बिचारक (सं० पु०) न्यायकर्ता, निर्णय करने वाला,

बिचारना (क्रि० स०) चिन्तन करना, सोचना, समझना, ध्यान करना, ख़्याल करना।

बिचारालय (सं० पु०) न्याय का स्थान, कचेहरी।

बिचारित (वि०) बिचार किया हुआ, सोचा हुआ, निर्णित।

बिचारी (सं० पु०) देखो विचारक।

बिचाली (सं० स्त्री०) पयाल, बाँस के खपाची की बनी चटाई। [घटक, दलाल।

बिचौनिया (सं० पु०) मध्यस्थ, दर्मियानी, बिचवई,

बिच्छू (सं० पु०) वृश्चिक, एक डंक मारनेवाला जन्तु।

बिछना (क्रि० अ०) पसरना, छितरना, फैलना।

बिछलना (क्रि० अ०) फिसलना, रपटना, अलग होना, पृथक होना।

बिछलाहट (सं० स्त्री०) फिसलाहट। [कराना।

बिछवाना (क्रि० स०) फैलवाना, पसरवाना, बिछौना

बिछाना (क्रि० स०) बिछौना करना, फैलाना, पसारना।

बिछिया (सं० पु०) पैर की अँगुलियों में पहनने का एक गहना, नूपुर।

बिछुआ (सं० पु०) बिछिया। [पृथक् होना।

बिछुड़ना (क्रि० अ०) अलग होना, वियोग होना,

बिछुरना (क्रि० अ०) देखो "बिछड़ना"।

बिछुवा (सं० पु०) एक प्रकार का ख़ंजर, बिछिया।

बिछोह (सं० पु०) बियोग, जुदाई, अलगाव।

बिछोहना (सं० पु०) अलगाना, वियोग करना

बिछौना (सं० पु०) बिस्तरा।

बिजना (सं० पु०) पंखा।

बिजय (सं० पु०) फ़तह, जीत।

बिजया (सं० स्त्री०) भंग।

बिजली (सं० स्त्री०) विद्युत, मेघों के टक्कर से उत्पन्न अग्नि, एक गहने का नाम जो कान में पहना जाता है।

बिजान (वि०) मूर्ख, अज्ञान, अनारी।

बिजायठ (सं० पु०) हाथ में पहनने का एक गहना, बाजूबंद।

बिजारी (सं० पु०) साँड़, बैल।

बिजोग (सं० पु०) बियोग, बिछुड़ना।

बिज्जु (सं० स्त्री०) विद्युत्।

बिज्जू (सं० पु०) जन्तु विशेष।

बिझकना (क्रि० अ०) चमकना, चौंकना, भयभीत होना, डरना, भड़कना। [डराना।

बिझकाना (क्रि० स०) चमकना, चौंकना, भयभीत करना,

बिट (सं० पु०) बिष्टा, मैला, गुह, पायख़ाना।

बिटचर (सं० पु०) शूकर, गाँव का सूअर।

बिटना (क्रि० अ०) छितरना, छिटकना, बिथुरना।

बिटप (सं० पु०) वृक्ष, पेड़, दरख़्त।

बिटाना (क्रि० स०) छिटकाना, फैलाना, पसारना।

बिटौरा (सं० पु०) उपरी, उपला, कंडा, गोइठा।

बिठाना (क्रि० स०) बैठाना, रोकना, ठहराना।

बिड़कन (सं० पु०) पक्षी विशेष।

बिड़रना (क्रि० अ०) भागना, डरना, भयभीत होना।

बिड़ार (सं० पु०) जंगली बिल्ली, बनबिलाव॥

बिड़ारी (सं० स्त्री०) भगाई, पटाऊ, भगगड़।

बिड़ौजा (सं० पु०) इन्द्र, देवराज।

बिढ़ना (सं० स्त्री०) कमाई, उपार्जन।

बितरण (सं० पु०) त्याग, दान।

बितरना (क्रि० स०) त्यागना, बाँटना, दे देना।

बिताना (क्रि० स०) व्यतीत करना, काटना, गँवाना।

बितीत (वि०) व्यतीत, गत, गुजरा हुआ, बीता हुआ।

बित्त (सं० पु०) धन, द्रव्य, रुपया पैसा, संपत्ति।

बित्ता (सं० पु०) बितस्ति, बालिश्त।

बित्तिया (वि०) ठिगना, बचना।

बिथकना (क्रि० अ०) पड़ा रहना, जहाँ के तहाँ रह जाना, अचम्भे में आना, आश्चर्यान्वित होना

बिथरना (क्रि० अ०) बिखरना, छिटकना, फैलना।

बिथा (सं० पु०) व्यथा, पीड़ा, दुःख, दर्द, संताप

बिथुरना (क्रि० अ०) देखो "बिथरना"।

बिदरना (क्रि० अ०) फट जाना, चिर जाना, बिहरना

बिदा (सं० पु०) रुखसती, गमन।

बिदारना (क्रि० स०) फाड़ना, चीरना, चिथड़ा चिथड़ा करना। [बराबर करना, हेंगाना।

बिदाहना (क्रि० अ०) जोते हुए खेत को हेंगा चलाकर

बिदुषन (सं० पु०) तत्व के जानने वाले, विद्वान लोग।

बिद्यारना (क्रि० स०) चिढ़ाना, खिझाना, बिराना।

बिध (सं० स्त्री०) विधि, रीति, रस्म, व्यवहार, चालचलन। [विधाता।

बिधना (क्रि० अ०) छेदना, भिदना (सं० पु०) ब्रह्मा,

बिधवा (सं० स्त्री०) राँड, बेवा, वह स्त्री जिसका पति मर गया हो।

बिधावट (सं० स्त्री०) सास, छेद।

बिन (अव्य०) बिना, अतिरिक्त, छोड़कर, रहित।

मुहा०—बिन रोये लड़का दूध नहीं पाता = बिना प्रयत्न कुछ नहीं मिलता। बिन भय प्रीति नहीं = बिना भय के प्रभुता नहीं जमती। बिन माँगे दे दूध बराबर माँगे दे सो पानी = बिना माँगे मिलना उत्तम है, बनिस्बत माँगने के।

बिनती (सं० स्त्री०) विनय, प्रार्थना, चिरौरी, अर्ज।

बिनना (क्रि० स०) चुनना, बटोरना, संग्रह करना, एकत्रित करना।

बिनवाई (सं० स्त्री०) बिनने की क्रिया, बिनने की मज़दूरी।

बिनवाना (क्रि० स०) बटोरवाना, एकत्रित करवाना, संग्रह करवाना, कपड़े आदि की बुनाई कराना। [होना।

बिनसना (क्रि० अ०) नष्ट होना, बिगड़ना, तहस नहस

बिना (अव्य०) बिन, बग़ैर, अतिरिक्त, रहित।

बिनाई (सं० स्त्री०) बिनने की क्रिया, बिनने की मज़दूरी।

बिनास (सं० पु०) नाश, संहार। [पूजना।

बिनौना (क्रि० अ०) विनय करना, मनाना, ध्यान करना,

बिनौला (सं० पु०) कपास का बीज, रूई का बिया।

बिन्दी (सं० स्त्री०) विन्दु, शून्य।

बिन्धना (क्रि० अ०) डसना, डङ्क मारना।

बिन्ना (क्रि० अ०) कपड़े आदि में बेल बूटे काढ़ना।

बिपत (सं० स्त्री०) विपत्ति, आपत्ति, क्लेश, दुःख।

बिपता (सं० स्त्री०) आपत्ति, विपत्ति, दुःख, क्लेश।

बिपरना (क्रि० अ०) धावा करना, छापा पड़ना, चढ़ाई करना, आक्रमण करना।

बिफरना (क्रि० अ०) धृष्ट होना, ढीठ होना, चिढ़ना, खिझना।

बिफै (सं० पु०) बृहस्पतिवार, गुरुवार।

बिमाता (सं० स्त्री०) सौतेली माता।

बिम्बोट (सं० स्त्री०) दीमक, वाल्मीक।

बियत (सं० पु०) आकाश।

बिया (सं० पु०) बीज, गुठली।

बियारी (सं० स्त्री०) ब्यालू, रात का भोजन।

बियाह (सं० पु०) विवाह, ब्याह, शादी। [रहित।

बिरक्त (सं० पु०) विरक्त, वैरागी, आप्तकाम, कामना-

बिरचन (सं० पु०) बेर का चूर्ण, बेर का आटा।

बिरद (सं० पु०) कीर्ति, यश, ख्याति, प्रसिद्धि। [करना।

बिरमना (क्रि० अ०) विश्राम करना, ठहरना, बिलम्ब

बिरमाना (क्रि० अ०) ठहराना, बिलमाना, रोकना।

बिरला (सं० पु०) अनूठा, अपूर्व, अद्भुत।

बिरवा (सं० पु०) छोटा पेड़, दरख़्त, वृक्ष, पौधा।

बिरसता (सं० स्त्री०) मनमोटाव, लड़ाई झगड़ा।

बिरसना (क्रि० अ०) रुकना, ठहरना, टिकना, रहना।

बिरह (सं० पु०) बिछोह, बियोग।

बिरहनी (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति से बिछोह हो, बियोगिनी, बिरहणी।

बिरहा (सं० पु०) बिछोह, वियोग, अहीरों का गाना।

बिरहिया (वि०) बियोगिनी, बिरही, बिरहिणी।

बिरही (सं० पु०) बियोगी, बिछोही।

बिराजना (क्रि० अ०) आनन्दपूर्वक रहना, सुख भोगना, सुन्दर लगना, शोभा पाना।

बिराना (क्रि० स०) चिढ़ाना, खिजाना (वि०) पराया, दूसरे का। [समाप्तिसूचक चिह्न।

बिराम (सं० पु०) आराम, विश्राम, वाक्यपूर्ति वाक्य,

बिरिया (सं० स्त्री०) बारी, पारी, दाँव, अवसर, समय।

बिरोग (सं० पु०) बिछोह, बियोग, बिरह।

बिरोगन (सं० स्त्री०) बियोगिनी, बिरहिणी।

बिर्नी (सं० स्त्री०) बर्रे।

बिल (सं० पु०) माँद, बाँबी, सेंध, छेद।

बिलकना (क्रि० अ०) बिलखना, सिसकना, रोना।

बिलखना (क्रि० अ०) सिसकना, रोना, उदास होना, देखना।

बिलग (वि०) अलग, भिन्न, न्यारा, जुदा।

बिलगना (क्रि० अ०) अलग होना, जुदा होना, पृथक् होना।
बिलगाना (क्रि० अ०) अलगाना, पृथक् करना।
बिलगाव (सं० पु०) अलगाव, पृथक्करण, जुदाई, भेद।
बिलगाहिं (क्रि०अ०) अलग होते हैं।
बिलचना (क्रि० स०) बिलगाना, छाँटना, चुनना, बिछना।
बिलटना (क्रि० अ०) नष्ट होना, बरबाद होना, बिगड़ना, धर्मच्युत होना।
बिलनी (सं० स्त्री०) अति सूक्ष्म कीट विशेष, आँख पर की फुंसी।
बिलन्द (वि०) ऊँचा।
बिलबिल (सं० पु०) बिल्ली को भगाने का शब्द।
बिलबिलाना (क्रि० अ०) बिलबिल करना, बिलपना, तड़पना, तड़फड़ाना, व्याकुल होना।
बिललाना (क्रि० अ०) रोना, बिलाप करना।
बिलल्ला (वि०) अवारा, मूर्ख, नासमझ।
बिलसना (क्रि० अ०) बिलास करना, सुख भोगना, शोभना।
बिलस्त (सं० पु०) बित्ता, बालिश्त, वितस्ति।
बिलहरा (सं० पु०) पनबट्टा, पनडब्बा।
बिलहरी (सं० स्त्री०) छोटा बिलहरा।
बिलाई (सं० स्त्री०) बिल्ली, कद्दूकस, किवाड़ बन्द करने की किल्ली जो किवाड़ में लगी रहती है।
बिलाना (क्रि०अ०) नष्ट होना, बरबाद होना, बिगड़ना।
बिलाप (सं० पु०) रोना, रोआई।
बिलापना (क्रि० अ०) रोना, बिलाप करना।
बिलार (सं० पु०) बिल्ली, मार्जार, बिलाई।
बिलावल (सं० स्त्री०) एक रागिनी का नाम।
बिलोना (क्रि० स०) मथना, महना, मंथन करना।
बिलोवना (क्रि० स०) बिलोना।
बिल्ला (सं० पु०) बिलार, बड़ी बिल्ली।
बिल्ली (सं० स्त्री०) बिलार, मार्जार।
मुहा०—बिल्ली भी लड़ती है तो मुँह पर पंजा रख लेती है = किसी का सामना करने में अपनी रक्षा का उपाय पहले कर लेना। बिल्ली के भागे सिकहर टूटा = अनायास किसी कार्य की सिद्धि होना।
बिवाई (सं०स्त्री०) बेवाई, पैर का फटना।

बिषखोपरा (सं० पु०) गोधा, गोह, एक प्रकार का विषैला जन्तु।
बिसन (सं० पु०) व्यसन, ऐब, दोष, बुराई।
बिसनी (वि०) व्यसनी, लम्पट, लुच्चा, दुर्गुणी।
बिसबिसाना (क्रि० अ०) बजबजाना, सड़ना, गलना।
बिसर (सं० पु०) बिस्मरण, भूल, चूक।
बिसरना (क्रि० स०) बिस्मरण होना, भूलना, भटकना, याद न रहना। [पड़ना।
बिसराना (क्रि० स०) भुलाना, स्मरण न होना, याद न
बिसाँत (सं० स्त्री०) मूल धन, पूँजी।
बिसाती (सं० पु०) कागज़ पेन्सिल, सुई तागा आदि फुटकर चीज़ें बेचनेवाला, फेरीवाला।
बिसाँध (सं० पु०) बदबू, दुर्गंध।
बिसाना (क्रि०स०) मोल लेना, ख़रीदना। [से हटाना।
बिसारना (क्रि० स०) भुला देना, स्मरण न रखना, चित्त
बिसाह (सं०पु०) ख़रीदी हुई चीज़ें, मोल ली हुई वस्तु।
बिसाहना (क्रि०स०) ख़रीदना, मोल लेना, क्रय करना।
बिसुरना (क्रि० अ०) बिलपना, धीरे धीरे रोना।
बिस्तुइया (सं० स्त्री०) छिपकली।
बिस्तुई (सं० स्त्री०) छिपकली।
बिहंग (सं० पु०) पक्षी, पखेरू, चिड़िया।
बिहन (सं०पु०) खेत में बोने के लिये रक्खा हुआ बिया।
बिहनौर (सं० स्त्री०) बिया बोने की क्यारी।
बिहरना (क्रि० स०) बिहार करना, बिचरना, आनन्द करना, टहलना।
बिहरी (सं० स्त्री०) चन्दा, उगाही।
बिहरुना (क्रि० अ०) मध्य से फटना, दरकना।
बिहसना (क्रि० अ०) मुसकराना।
बिहाग (सं० पु०) एक रागिनी का नाम।
बिहाने (सं० पु०) भोर, तड़का, प्रातःकाल, सवेरा, भिनसार। [काल काटना।
बिहाना (क्रि० अ०) छोड़ना, त्यागना, समय बिताना,
बिही (सं० स्त्री०) अमरूद, सफरी का फल।
बींड़ा (सं० पु०) गेंडुरी, एंडुरी, जो मूँज की बनती है और जिस पर भरा हुआ घड़ा रक्खा जाता है।
बींधड़ (सं० पु०) धान आदि के वे पौधे जो उखाड़-कर फिर रोपे जाते हैं।
बींधना (क्रि० स०) छेदना, भेदना, बेधना।

बीघा (सं० पु०) भूमि की एक नाप विशेष, बीस बिस्वा का क्षेत्रफल । [बैर, विरोध ।

बीच (अव्य०) मध्य, भीतर, अन्तर (सं० पु०) द्वेष, मुहा०—बीच पड़ना=विरोध होना । बीच बिचाव करना=झगड़ा निपटाना । बीच में पड़ना=मध्यस्थ होना । बीचोबीच=मध्य में ।

बीछा (सं० पु०) वृश्चिक, बिच्छू ।

बीज (सं० पु०) वीर्य, तुख़्म, बिया ।

बीजक (सं० पु०) भेजे हुए माल की सूची जिसमें उसकी तादाद मूल्य आदि का ब्योरा रहता है, चालान, रवानगी ।

बीजना (सं० पु०) पंखा ।

बीजार (सं० पु०) जिसमें अधिक बीज हों ।

बीजी (सं० स्त्री०) नकुल, नेवला । [पेलना ।

बीझना (क्रि० स०) रेलना, ठेलना, खोदना, घुसेड़ना,

बीट(सं० स्त्री०) चिड़ियों की विष्ठा, मैला, बिट ।

बीटना (क्रि० स०) बिथरना, छलकना, उफनाना ।

बीड़ा (सं० पु०) पान की खिल्ली, लगा हुआ पान, तलवार की मूठ में बँधा हुआ एक प्रकार का सूत । मुहा०—बीड़ा उठाना=किसी काम के लिए प्रतिज्ञा करना ।

बीणा (सं० स्त्री०) एक बाजा का नाम, बीन बाजा ।

बीतना (क्रि० अ०) व्यतीत होना, गुज़रना, समाप्त होना ।

बीता (सं० पु०) बित्ता, बालिश्त, फैलाये हुये हाथ का पंजा (क्रि० अ०) बीतना का भूत काल ।

बीन (सं० पु०) एक प्रकार का बाजा, बीणा । [करना ।

बीनना (क्रि० स०) बुनना, बनाना, तैयार करना, निर्माण

बीबी (सं० स्त्री०) स्त्री, जोरू, औरत ।

बीमा (सं० पु०) राजकीय एक व्यवस्था जिसमें डाक द्वारा भेजी हुई वस्तुओं की ज़िम्मेदारी डाक-विभाग पर रहती है और उस वस्तु के खोने या नष्ट भ्रष्ट होने पर जितने का बीमा रहता है उतना द्रव्य डाक-विभाग को बीमा भेजनेवाले को देना पड़ता है, एक प्रकार का व्यवसाय जिसमें जीने आदि का बीमा व्यापारी लेते हैं । [अस्वस्थ ।

बीमार (सं० पु०) रोगी, रुग्न, मरीज़, व्याधियुक्त,

बीमारी (सं० स्त्री०) रोग, व्याधि, रुग्नता, अस्वस्थता ।

बीयर (सं० पु०) बिल, माँद, बाँबी, छिद्र, सूराख़ ।

बीर (सं० पु०) शूर, बहादुर, उत्साही, अध्यवसायी, भाई, कान में पहनने का एक गहना ।

बीरता (सं० स्त्री०) बहादुरी, शूरता ।

बीरबहूटी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का लाल रंग का बरसाती कीड़ा । [की खिल्ली ।

बीरा (सं० पु०) भाई, बीड़ा, लगा हुआ पान, पान

बीरासन (सं० पु०) बीरों के बैठने का आसन, बीरों की बैठक ।

बीरी (सं० स्त्री०) पान खाने से ओंठ पर की ललाई, गुलाबी रंग की मिस्सी, बीड़ा, पान की खिल्ली ।

बीस (वि०) संख्या विशेष, दस और दस, २० ।

बीसा (सं० पु०) बीस नाख़ूनवाला कुत्ता, यह कुत्ता बड़ा भयानक और विषैला होता है ।[नापा जाता है ।

बीसी (सं० स्त्री०) कोड़ी, एक भाव विशेष, जिससे अन्न

बुंद (सं० पु०) कान का एक गहना ।

बुंदा (सं० पु०) विन्दु, नुक़्ता, शून्य ।

बुंदिया (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।

बुंदेला (सं० पु०) राजपूतों की एक जाति, बुंदेलखण्ड के रहनेवाले राजपूत ।

बुकटा (सं० पु०) मुट्ठी भर, उतना परिमाण जितना एक बार मुट्ठी में आ सके, मुष्टिपरिमित ।

बुकनी (सं० स्त्री०) चूर्ण, सफ़ूफ़ ।

बुकलाना (क्रि० अ०) बकना, बकबकाना ।

बुक्का (सं० पु०) अभरक का चूर्ण ।

बुजना (सं० पु०) स्त्रियों का वह वस्त्र जो मासिक धर्म आदि के समय पहनती हैं । [पात्र ।

बुजहारा (सं० पु०) पानी गर्म करने का एक प्रकार का

बुझना (क्रि० अ०) गुल होना, ठंडा होना ।

बुझाना (क्रि० स०) गुल करना, ठंडा करना, समझाना ।

बुझौवल (सं० स्त्री०) पहेली, कूट प्रश्न, प्रहेलिका ।

बुड़ाना (क्रि० अ०) डुबाना, बोरना, पानी में मग्न करना ।

बुड्ढा (सं० पु०) वृद्ध, बुज़ुर्ग (वि०) पुराना, प्राचीन, जीर्ण । [सा चाल चले ।

बुढ़भस (वि०) जो बूढ़ा अपने को युवा समझे या उसका

बुढ़वा (वि०) वृद्ध, बूढ़ा, पुराना ।

बुढ़ाई (सं० स्त्री०) वृद्धावस्था ।

बुढ़ापा (सं० पु०) वृद्धावस्था, बुढ़ाई, तरुणाई का अभाव ।

बुढ़िया (सं० स्त्री०) वृद्धा, बूढ़ी स्त्री ।

बुगडा (सं० पु०) कान के एक गहने का नाम।
बुतना (क्रि० अ०) बुझना, गुल होना, ठंडा होना।
बुताना (क्रि० स०) बुझाना, गुल करना, ठंडा करना।
बुत्त (सं० पु०) वह वस्तु जिस पर जुआ खेलते समय पाँसा फेंका जाता है।
बुत्ता (सं० पु०) झाँसा पट्टी, छल, कपट, धोखाबाज़ी, धूर्तता।
मुहा०—बुत्ता देना=छलना, धोखा देना, चिट्ठा [मरना।
बुदबुद (सं० पु०) पानी का बबूला, बुल्ला, बुलबुला, बुलका।
बुदबुदाना (क्रि० अ०) गुनगुनाना, मन में भुनभुनाना, [धीरे धीरे कुछ कहना।
बुद्ध (वि०) बुद्धिमान्, प्राज्ञ, सर्वज्ञ, ज्ञात, विदित, प्रत्यक्ष (सं० पु०) भगवान् के अवतारों में से एक, इनका दूसरा नाम गौतम था, इनका जन्म कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन के यहाँ हुआ था, इनकी स्त्री का नाम गोपा था, जिस धर्म का इन्होंने प्रचार किया था उसका नाम बौद्ध धर्म है, इस धर्म का प्रचार समस्त भारत के अलावा तिब्बत जापान आदि देशों में भी हुआ था।
बुद्धि (सं०स्त्री०) धीषणा, धी, अक़ल, विवेक-शक्ति।
बुद्धिमान (वि०) समझदार, अक़्लमंद, विवेकी।
बुद्धिहीन (वि०) मूर्ख, नासमझ, अज्ञान।
बुद्धीन्द्रिय (सं० पु०) बुद्धि नाम की इन्द्रिय।
बुध (सं० पु०) विद्वान, पण्डित, अभिज्ञ, दक्ष, चौथा ग्रह, सप्ताह का चतुर्थ दिन।
बुधजन (सं० पु०) बुद्धिमान्।
बुधवार (सं० पु०) हिन्दी सप्ताह का चौथा दिन।
बुधान (सं० पु०) गुरु, पंडित।
बुनना (क्रि० स०) बिनना, वस्त्र आदि बनाना, जाली काढ़ना, कपड़े में बेल बूटे निकालना।
बुभुक्षा (सं० स्त्री०) भूख, क्षुधा।
बुभुक्षित (वि०) भूखा, क्षुधार्त।
बुरा (वि०) दुष्ट, ख़राब, नीच।
मुहा०—बुरा भला कहना=गाली देना। बुरा बेटा खोटा पैसा भी काम आता है=कोई तुच्छ वस्तु भी किसी समय काम आ जाती है। बुरा मानना=नाराज़ होना। बुरा लगना=दुःख मानना, अनुचित मालूम होना।
बुराई (सं० स्त्री०) ख़राबी, खोटापन, नीचता, दुष्टता।
मुहा०—बुराई पर कमर बाँधना=नीच काम करने में प्रवृत्त होना।
बुर्ज (सं० पु०) धरहरा, मीनार।
बुलका (सं० पु०) बुल्ला, बुलबुला।
बुलबुला (सं० पु०) बुल्ला, बबूला, बुलका, बुदबुदा।
बुलवाना (क्रि० स०) बुला भेजना।
बुलाक (सं० पु०) औरतों के नाक में पहनने का एक [गहना।
बुलाना (क्रि०स०) गोहरवाना, पुकरवाना, किसी को ले आने के लिए आदमी भेजना।
बुलाहट (सं० स्त्री०) पुकार, तलबी, आह्वान।
बुल्ला (सं० पु०) बबूला।
बुहनी (सं० स्त्री०) पहली बिक्री।
बुहरी (सं० स्त्री०) भुना अन्न, भुना हुआ जव।
बुहारन (सं० पु०) झाड़न, कूड़ा।
बुहारना (क्रि० स०) झाड़ना, झाड़ू देना, बटोरना, [साफ़ करना।
बुहारी (सं० स्त्री०) झाड़न, झाड़ू, बढ़नी।
बूंद (सं० स्त्री०) जलकण, बिंदु, छींटा, क़तरा।
बूंदा (सं० पु०) बड़ी बूँद।
बूंदी (सं० स्त्री०) वृष्टि, वर्षा की झड़ी।
बूआ (सं० स्त्री०) पिता की बहिन, फूआ।
बूई (अव्य०) छोटे बच्चों को डराने का शब्द।
बूकना (क्रि० अ०) कूटना, पीसना, चूर्ण करना।
बूका (सं० पु०) चूर्ण, बुकनी, सफ़ूफ़, चूरण।
बूचा (वि०) जिसके कान कट गये हों या कान न हों।
बूझ (सं० स्त्री०) समझ, ज्ञान, बुद्धि।
बूझना (क्रि० स०) समझना, सोचना, जानना, मालूम [करना।
बुझाई (सं० स्त्री०) सीख, परिचय, शिक्षा, बुझावट।
बूट (सं० पु०) चना, रहिला, चणक, अन्न विशेष, एक प्रकार का अंगरेज़ी जूता।
बूटा (सं० पु०) कसीदा का फूल, बेल।
बूटी (सं० स्त्री०) जड़ी, फूल, छोटा बूटा।
बूड़ना (क्रि० अ०) डूबना, जल मग्न होना।
बूड़िया (वि०) जल में गोता लगानेवाला, गोताखोर, [पनडुब्बा।
बूड़ी (सं० स्त्री०) भाले आदि की नोक।
बूढ़ा (सं० पु०) वृद्ध, बुड्ढा (वि०) प्राचीन, पुराना, [जीर्ण।
बूढ़ी (सं० स्त्री०) बुढ़िया, पुरानी स्त्री।
बूता (सं० पु०) बल, शक्ति, सामर्थ्य, ताक़त।

बूबू (सं० स्त्री०) भगिनी, बहिन।
बूर (सं० स्त्री०) छिलका, भूसी, कराई।
मुहा०—बूरे के लड्डू जो खाय सो पछताय न खाय सो भी पछताय=वे काम जो देखने में अच्छे पर फल कुछ नहीं।
बूरा (सं० पु०) साफ़ की हुई चीनी, लकड़ी का बारीक चूर्ण जो आरा से चीरते समय निकलता है।
बेंग (सं० पु०) मेंढक, भेक।
बेंट (सं० पु०) मूठ, हथकड़ा।
बेंड़ना (क्रि० स०) घेरना, रोकना, बंद करना।
बेंड़ा (वि०) टेढ़ा, तिरछा, बाँका (सं० पु०) दरवाज़ा बंद करने की लकड़ी। [गोंचना।
बेंधना (क्रि० स०) गूंदना, विधाना, चुभाना, गड़ाना,
बे (अव्य०) अरे, अबे, अनादरसूचक शब्द।
बेईमान (वि०) अविश्वासी, झूठा, जिसे ईमान न हो।
बेईमानी (सं० स्त्री०) अधर्म, अविश्वास, झूठ।
बेकार (वि०) बेमतलब, फ़जूल, बिना काम।
बेग (सं० पु०) तेज़ी, शीघ्रता। [काम कराना।
बेगार (सं० पु०) बलपूर्वक बिना कुछ मेहनताना दिये
बेगारी (सं० स्त्री०) बेगार का काम।
बेचना (क्रि० स०) बिक्री करना, फ़रोख़्त करना, मूल्य लेकर कोई वस्तु देना।
बेचारा (वि०) बिचारा, असहाय, दुःखी।
बेचू (वि०) बेचनेवाला।
बेजू (सं० पु०) नकुल, नेउला।
बेजोड़ (वि०) अतुल्य, बिना जुड़ा हुआ।
बेझा (सं० पु०) लक्ष्य, निशाना, ताक, चिह्न।
बेटवा (सं० पु०) बेटा, लड़का, पुत्र।
बेटा (सं० पु०) लड़का, पुत्र, बालक।
बेटी (सं० स्त्री०) पुत्री, लड़की, कन्या।
बेठन (सं० पु०) वेष्ठन, खोल, ढाकन, आच्छादन।
बेड़ (सं० पु०) बाड़ा, घेरा।
बेड़ही (सं० स्त्री०) कचौड़ी।
बेड़ा (सं० पु०) चौघड़ा, इटला, नावों या जहाज़ों का समूह।
मुहा०—बेड़ा पार लगाना=कष्ट निवारण करना, दुःख दूर करना। बेड़ा पार होना=दुःख से छुटकारा पाना।
बेड़िया (सं० पु०) एक जाति विशेष।
बेड़ी (सं० स्त्री०) पाँव या हाथ बाँधने के लिये लोहे की ज़ंजीर, बंधन, हथकड़ी, सींचने के लिए पात्र विशेष।
बेडौल (वि०) बदशक्ल, कुरूप।
बेढ़ना (क्रि० अ०) बाड़ा बनाना, घेरना, बंद करना।
बेढ़ा (सं० पु०) कठघरा, कठहरा।
बेढब (वि०) भद्दा, कुरूप, अजीब।
बेणु (सं० पु०) बंशी, मुरली। [लकड़ी।
बेत (सं० स्त्री०) एक प्रकार की लचीली और चिमड़ी
बेदखल (वि०) बहिष्कृत, निकालना, अधिकार उठाना।
बेदम (वि०) बिना साँसवाला, बिना दमवाला।
बेदसिरा (सं० पु०) एक मुनि का नाम।
बेध (सं० पु०) नक्षत्रयुक्त योग विशेष, छिद्र, सूराख़, छेद।
बेधड़क (वि०) निधड़क, बेरोक, बेखटके, निर्भय, निडर।
बेधना (क्रि० स०) छेदना, भेदना, गड़ाना, चुभोना।
बेन (सं० पु०) बाँसुरी।
बेना (सं० पु०) पंखा।
बेनी (सं० स्त्री०) बेणी, जूड़ा, चोटी।
बेबस (वि०) बेचारा, पराधीन, परवश।
बेबसी (सं० स्त्री०) बेचारगी, पराधीनता, परवशता।
बेबाक (वि०) सफ़ाई, चुकता, विशेष।
बेमात (सं० स्त्री०) सौतेली माता, विमाता।
बेलबूटा (सं० पु०) कपड़े पर फूल पत्ती काढ़ने का काम।
बेर (सं० पु०) एक वृक्ष और फल विशेष।
बेरबेर (अव्य०) बार बार, अनेक बार।
बेल (सं०पु०) बूटा फूल पत्ती, जो वस्त्र पर काढ़ा जाता है, एक फल और वृक्ष विशेष।
बेलदार (सं० पु०) मज़दूर, फावड़ा चलानेवाला।
बेलन (सं० पु०) रोटी बेलने के लिये काठयंत्र।
बेलना (क्रि० स०) बढ़ाना, फैलाना, रोटी बढ़ाना।
बेलनी (सं० स्त्री०) टहनी, लता, छोटी पतली डाल।
बेल बूटा (सं० पु०) चित्रकारी का काम।
बेला (सं० पु०) एक प्रकार का सुगंधित पुष्प।
बेलि (सं० स्त्री०) लता, बँवर।
बेलू (सं० पु०) लुढ़काव लुढ़कन।
बेलौ (वि०) निराश, ग्लान, उदास।
बेवकूफ़ (वि०) मूर्ख, मूढ़, अज्ञानी, अनारी।

बेवकूफ़ी (०स्त्री०) मूर्खता, मूढ़पन, अज्ञानता, अनारीपन ।
बेवरेवार (अव्य०) साफ़ साफ़, यथाक्रम ।
बेवहर (सं० पु०) ऋण, क़र्ज़, उधार, लेन देन ।
बेवहरिया (सं० पु०)ऋण देनेवाला, उधार देनेवाला ।
बेवहार (सं० पु०) चाल चलन, व्यवहार, रीति, रस्म ।
बेवान (सं० पु०) विमान,मृतक की अर्थी ।
बेसन (सं० पु०) चना का आटा ।
बेसनौरी (सं० स्त्री०) बेसन मिली वस्तु या रोटी ।
बेसर (सं० पु०) नाक का एक गहना ।
बेसरा (सं० पु०) सिकरा, बाज, एक शिकारी पक्षी ।
बेसुरा (वि०) बेराग, बेताल ।
बेस्वा (सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी ।
बेह (सं० पु०) वेध, छिद्र, साल । [नाहमवार, उजाड़ ।
बेहड़ (सं० पु०) ऊसर, बन, जंगल (वि०) असमतल,
बेहना (सं० पु०) धुनिया, रूई धुननेवाला ।
बेहोश (वि०) अचेतन, चेतनारहित, ज्ञान-शून्य ।
बेहोशी (सं० स्त्री०) अचेतनता, ज्ञानशून्यता ।
बैंगन (सं०पु०) भाँटा, तरकारी विशेष । [रंग के समान ।
बैंगनी (वि०) नीला, भाँटे के रंग के समान, बैंगन के
बैंजनी (वि०) बैंगनी ।
बैंटा (सं० पु०) हथकड़ा, मूठा, बेंट ।
बैंदा (सं० पु०) टीका, टिकुली, बिन्दी ।
बैंदी (सं० स्त्री०) टिकुली, बिंदी ।
बैकाल (सं० पु०) तीसरा पहर ।
बैगन (सं०पु०) भाँटा, बैंगन । [माला ।
बैजन्ती माल (सं० स्त्री०) पचरंगी माला, भगवान की
बैठक (सं० पु०) बैठने का स्थान, आसन, दालान ।
बैठका (सं० पु०) बैठक ।
बैठना (क्रि० अ०) उपविष्ट होना, उपवेशन करना, आसन मारना, दिवार आदि का गिर जाना ।
बैठवा (वि०) चपटा, बैठा हुआ ।
बैठा (सं० पु०) बैठा हुआ, चपटा, चिपटा ।
बैठाना (क्रि० स०) उपवेशन कराना, बैठने को कहना, स्थापन करना, टूटी हुई हड्डी आदि को यथास्थान करना ।
बैठालना (क्रि० स०) बैठना । [पर मानी जाती है ।
बैतरणी (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम जो यम के द्वार
बैतरा (सं० स्त्री०) एक किस्म की सोंठ ।
बैद (सं० पु०) वैद्य, चिकित्सक ।
बैदक (सं० पु०)वैद्यक, चिकित्सा शास्त्र ।
बैन (सं० स्त्री०) शब्द, ध्वनि, कथन, बचन, बोली ।
बैना (सं० पु०) बायन, पाहुर, भाजी, माथ में पहनने का एक गहना ।
बैपार (सं० पु०) व्यवसाय, व्यापार, वाणिज्य, सौदागरी ।
बैपारी (सं० पु०) व्यापारी, व्यवसायी, सौदागर ।
बैयान (सं० पु०) जन्म, उत्पत्ति ।
बैयाना (क्रि० स०) ब्याना, उत्पन्न करना ।
बैयाला (वि०) बादी, वायुवाला ।
बैरंग (सं० पु०) महसूल तलब, वह पत्र आदि जिन का महसूल न दिया गया हो, जिसके नाम जाय उसको उसका महसूल देना पड़े ।
बैर (सं० पु०) शत्रुता, दुशमनी, विरोध ।
बैरक, बैरख (सं० पु०) झंडा, पताका
बैरखी (सं० स्त्री०) स्त्रियों के बाँह में पहनने का आभूषण ।
बैरागड़ा (सं०पु०) बैरागी, वैष्णव साधु ।
बैरागा (सं०पु०) बैरागी का भेष ।
बैरी (सं० पु०) शत्रु, दुशमन, विपक्षी ।
बैल (सं० पु०) वरध, बर्द्धा, वृषभ ।
बैसंदर (सं० पु०) वैश्वानर, अग्नि, आग ।
बैस (सं० पु०) वैश्य (सं० स्त्री०) उमर, अवस्था, वय ।
बैसाख (सं० पु०) वर्ष का दूसरा महीना ।
बैसाखी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का अस्त्र जिसके सहारे से लँगड़े लोग चलते हैं, थूनी ।
बैसाँदू (सं० पु०) आलसी, अलहदी, आसकती ।
बोंट (सं० पु०) डंठल, डार ।
बोआई (सं० स्त्री०) बोने का समय ।
बोआना (क्रि० स०) खेत में बिया डलवाना ।
बोआरा (सं० पु०) बोने का समय ।
बोइया (सं० स्त्री०) छोटी टोकरी ।
बोक (सं० पु०) बकरे की बोली ।
बोकरा (सं० पु०) बकरा, छाग, अज, खैंसी ।
बोकरी (सं० स्त्री०) बकरी, छेरी ।
बोच (सं० पु०) जल जन्तु विशेष, मगर ।
बोचा (सं० पु०) एक प्रकार की पालकी ।
बोझ (सं० पु०) लादी, भार ।

मुहा०—बोझ सिर पर होना=कोई कठिन काम आ पड़ना।

बोझना (क्रि० स०) लादना, उठवाना, भरना।

बोझल (वि०) भारी, वज़नी। [भेजने के लिये सम्मति।

बोट (सं० स्त्री०) छोटी नाव, डोंगी, संस्थाओं में प्रतिनिधि

बोटी (सं० स्त्री०) मांस का टुकड़ा।

बोठा (सं० पु०) फल के ऊपर की डंठी, डंठा।

बोड़ना (क्रि० स०) बोरना।

बोड़ी (सं० स्त्री०) कली, बिना खिला फूल।

बोताम (सं० पु०) बटन।

बोतू (सं० पु०) बकरा, बोकरा।

बोदली (सं० स्त्री०) भोली भाली। [निर्बल।

बोदा (वि०) बेसमझ, असकर्ता, असमर्थ, निर्जीव,

बोध (सं० पु०) समझ, ज्ञान, विवेक, बुद्धि।

बोधक (सं० पु०) शिक्षक, उस्ताद, वाचक।

बोधन (सं० पु०) ज्ञान, समझ, जागृति, विवेक, बोध।

बोधना (क्रि० स०) समझाना, बुझाना, फुसलाना, बहलाना।

बोधनीय (वि०) बोध के योग्य।

बोना (क्रि० स०) खेत में बीज डालना, बीज छींटना।

बोनी (सं० स्त्री०) बोआई।

बोर (सं० पु०) पायजेब का घुँघुरू (वि०) गहरा।

बोरना (क्रि० स०) डुबाना, मग्न करना।

बोरा (सं० पु०) टाट का थैला, गोन, बड़ा थैला।

बोरिया (सं० पु०) बोरा, थैला, टाट, चटाई।

बोरो (सं० पु०) एक प्रकार का मोटा चावल, इन्द्र धनुष।

बोल (सं० पु०) बात, कथन, गाने का राग, बाजे का शब्द।

मुहा०—बोल बाला होना=सफल होना। बोल मारना =चिढ़ाना, हँसी उड़ाना।

बोल चाल (सं० स्त्री०) बातचीत, वार्तालाप।

बोलता (वि०) बोलनेवाला।

बोलना (क्रि० स०) कहना, बात करना, संभाषण करना।

बोली (सं० स्त्री०) बात, वाणी, कथन, भाषा।

मुहा०—बोली बोलना=ताना मारना। बोली ठोली सुनना=ताना सहना।

बोहित (सं० पु०) जहाज़, जलयान, नौका, नाव।

बौंड (सं० पु०) लता, बँवर, बेल।

बौंड़ना (क्रि० अ०) लिपटना, चमकना, बल खाना, चकराना, भँवराना।

बौंड़ियाना (क्रि० स०) चक्कर खाना, घूमना।

बौछार (सं० पु०) पानी का झोंका, हवा के साथ वृष्टि का झोंका। [वाले

बौद्ध (सं० पु०) बुद्ध धर्म के अनुयायी, बुद्ध धर्म के मानने-

बौना (वि०) नाटा, ठिगना, वामन।

बौर (सं० पु०) आम का फूल, मञ्जरी, मौर, फूल, कली।

बौरहा (वि०) पागल, उन्मत्त, सिड़ी, बावला। [होना।

बौराना (क्रि० अ०) उन्मत्त होना, पागल होना, बावला

बौरापन (सं० पु०) पागलपन।

बौराहा (वि०) पागल, बौरहा, बावला।

बौराहापन (सं० पु०) पागलपन, बावलापन।

बौला (वि०) बिना दाँतवाला, पोपला।

बौहा (वि०) कँकरीला, पथरीला।

बौहाई (सं० स्त्री०) उपदंश, रोगी स्त्री।

ब्यञ्जन (सं० पु०) पंखा।

ब्याज (सं० पु०) सूद।

ब्यान (सं० पु०) बिआना, चौपायों का प्रसव।

ब्याना (क्रि० स०) बिआना, पैदा करना, पशुओं का प्रसव करना।

ब्यालू (सं० पु०) रात का भोजन।

ब्याह (सं० पु०) बिवाह, शादी, परिणय।

ब्याहता (सं० स्त्री०) ब्याही हुई, विवाहिता।

ब्याहना (क्रि० स०) विवाह करना, शादी करना, पाणिग्रहण करना।

ब्याहा (वि०) विवाहिता, बिवाहा।

ब्योंगा (सं० पु०) चमड़ा छीलने को एक औज़ार।

ब्योंत (सं० पु०) कपड़े की काट, काट छाँट, गढ़न।

ब्योंतना (क्रि० स०) नाप कर कपड़ा काटना, छाँटना, कतरना।

ब्योपार (सं० पु०) ब्यापार, लेन देन, सौदागरी।

ब्योपारी (सं० पु०) ब्यापारी, सौदागर, व्यवसायी।

ब्योमासुर (सं० पु०) एक राक्षस का नाम।

ब्योरा (सं० पु०) विवरण, वृत्तांत, समाचार।

ब्योहार (सं० पु०) व्यवहार, चाल चलन, रीति, रस्म।

व्रज (सं० पु०) देश विशेष जिसमें मथुरा, गोकुल, वृन्दावन आदि देश हैं।

ब्रजबाल (सं० स्त्री०) ब्रज की स्त्री, गोपी।
ब्रजभाषा (सं० स्त्री०) ब्रज की बोली। [तपस्या।
ब्रह्म (सं० पु०) परमेश्वर, परमात्मा, विराट्, वेद, तप,
ब्रह्मकुण्ड (सं० पु०) तीर्थ विशेष।
ब्रह्मघाती (सं० पु०) ब्राह्मण मारनेवाला।
ब्रह्मचर्य (सं० पु०) प्रथम आश्रम, वेदध्ययन का समय।
ब्रह्मचारी (सं० पु०) प्रथमाश्रमी, यज्ञोपवीत संस्कार के बाद नियमपूर्वक गुरुकुल में वेदाध्ययन करनेवाला।
ब्रह्मज्ञ (वि०) ब्रह्मज्ञानी, वेदज्ञ, ब्रह्म को जाननेवाला।
ब्रह्मज्ञान (सं० पु०) परमात्मा संबन्धी ज्ञान।
ब्रह्मण्य (सं० पु०) वेद बोधित कार्य।
ब्रह्मतत्व (सं० पु०) आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान। [विशेष।
ब्रह्मतीर्थ (सं० पु०) पुष्कर मूल, पोहकर मूल, औषध
ब्रह्मभोजन (सं० पु०) ब्राह्मणों को खिलाना।
ब्रह्मपुरी (सं० स्त्री०) सुमेरु पर्वत पर ब्रह्मा की पुरी।
ब्रह्मभूति (सं०स्त्री०) ब्राह्मण का धर्म, वेदाधिकार।
ब्रह्मयज्ञ (सं० पु०) वेदाध्ययन।
ब्रह्म योग (सं० पु०) परमेश्वर-प्रार्थना, उपासना, भक्ति।
ब्रह्मरंध्र (सं० पु०) मस्तक का मध्य भाग।
ब्रह्मराक्षस (सं० पु०) योनि विशेष।
ब्रह्मरात्रि (सं० स्त्री०) ब्रह्मा की रात्रि जो १००० युग की होती है, वह रात्रि जिसमें श्रीकृष्ण ने रास-क्रीड़ा की थी।
ब्रह्मलोक (सं० पु०) ब्रह्मा का निवास-स्थान।
ब्रह्मवादी (सं० पु०) ब्रह्मज्ञानी, वेदान्ती।
ब्रह्मश्रव (सं० पु०) वेद।
ब्रह्मसूत्र (सं० पु०) जनेऊ, यज्ञोपवीत, वेदान्त, सूत्र।
ब्रह्महत्या (सं० स्त्री०) ब्राह्मण-बध।
ब्रह्मर्षि (सं० पु०) ऋषि, मुनि, ब्राह्मण, ऋषि, ब्रह्मज्ञानी।
ब्रह्मा (सं० पु०) विधाता, विधना, देश विशेष।
ब्रह्माण्ड (सं० पु०) संसार, जगत, भूमण्डल, दुनिया।
ब्रह्मास्त्र (सं० पु०) एक प्राचीन प्रसिद्ध शस्त्र का नाम।
ब्रात (सं०पु०) झुण्ड।
ब्राह्म (सं० पु०) ब्राह्मण-सभा, अचम्भा। [समय।
ब्राह्ममुहूर्त (सं० पु०) सूर्योदय से पहले चार घड़ी का
ब्राह्मण (सं० पु०) विप्र।
ब्राह्मणी (सं० स्त्री०) ब्राह्मण की स्त्री।
ब्राह्मण्य (सं० पु०) ब्राह्मण का धर्म, सातवाँ ग्रह।

भ

भ—यह व्यञ्जन का चौबीसवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण है इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
भंगड़ (वि०) भाँग पीनेवाला।
भंगड़ा (सं० पु०) एक प्रकार की बूटी।
भंगना (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली।
भंगरा (सं० पु०) भृङ्गराज।
भंगराज (सं० पु०) पक्षी विशेष।
भंगा (सं०पु०) भाँग, पक्षी विशेष।
भंगार (सं० पु०) भँगरा।
भंगिन (सं० स्त्री०) मेहतरानी।
भंगी (सं० पु०) मेहतर (वि०) भाँग पीनेवाला।
भंगेरा (सं० पु०) भाँग बेचनेवाला।
भंगेरिन (सं० स्त्री०) भाँग बेचनेवाली स्त्री। [करना।
भंजना (क्रि० स०) तोड़ डालना, खण्ड करना, टुकड़ा
भंजाना (क्रि० अ०) रुपया नोट आदि तोड़वाना, भुनाना, बदलाना।
भंटमास (सं० पु०) अन्न विशेष।
भंटा (सं० पु०) भाँटा, बैंगन, एक तरकारी का नाम।
भंड (सं० पु०) मसखरा, निर्लज्ज, नीच, दुश्चरित्र, बेहया।
भंडा (सं० पु०) मिट्टी का बड़ा बर्तन, मटका, बर्तन, पाट। [खाने की सामग्रियाँ रक्खी जाती हैं।
भंडार (सं० पु०) बखार, वह घर जिसमें अन्न आदि
भंडारा (सं० पु०) साधु संन्यासियों का भोजन, किसी साम्प्रदायिक जत्था का भोज।
भंडारी (सं० पु०) भंडार का मालिक।
भँड़ेरिया (सं०पु०) मसखरा, भाँड़, भँडुआ।
भंडेला (सं० पु०) मसखरा, भाँड़, भँडुआ, भँड़ेरिया।
भँड़ौवा (सं० पु०) फक्कड़।

भँभुआ (सं० पु०) वह फ़क़ीर या साधु जो भूख के कारण लूटने का काम करे।

भंभोरना (क्रि० अ०) काटना, फाड़ खाना, कुत्ते का [काटना।

भँवर (सं० पु०) चक्कर, भौंर, आवर्त।

भँवरकली (सं० स्त्री०) गलाची, डोरी।

भँवरा (सं० पु०) भ्रमर, भौंरा।

भँवेरी (सं० स्त्री०) भ्रमरी, भौंरी।

भँसार (सं० पु०) भाट।

भई (क्रि० अ०) हो गई, हुई (सं० पु०) भाई, भैया।

भकसी (सं० स्त्री०) काल कोठरी, अँधेरा घर, गुफा, कंदरा, खोह।

भकुआ (वि०) भोंदू, मूढ़, मूर्ख, बोदा।

भकुवा (वि०) भकुआ, लपठ, निर्बुद्धि। [कर्तव्यशून्य होना।

भकुवाना (क्रि० अ०) अकचकाना, मूढ़ होना, भुलाना,

भकोसना (क्रि० स०) ठूस ठूस कर खाना, भोजन करना।

भक्त (सं० पु०) सेवक, दास, अनुगत।

भक्तकार (सं० पु०) अग्नि, पावक, रसोइयादार, रसोई बनानेवाला। [परमात्मा।

भक्तवत्सल (सं० पु०) भक्त पर दया करनेवाला,

भक्ताई (सं० स्त्री०) भक्ति का भाव, ईश्वर की सेवकाई।

भक्ति (सं० स्त्री०) ईश्वर में प्रेम, श्रद्धा, सेवा, पूजा, अर्चा, बंदना, स्मरण, श्रवण, कीर्तन।

भक्तिवन्त (सं० पु०) भक्त, सेवक, पूजक।

भक्ष (सं० पु०) खाने योग्य वस्तु।

भक्षक (वि०) खानेवाला।

भक्षण (वि०) आहार, भोजन, खाना।

भक्षणीय (वि०) खाने योग्य, भोजन के योग्य।

भक्षित (सं० पु०) खाया हुआ, भोजन किया हुआ।

भक्ष्य (वि०) खाने योग्य, भोजन के योग्य।

भग (सं० पु०) योनि, वीर्य-ज्ञान, वैराग्य, कीर्त्ति, धर्म, मोक्ष, यश, सौभाग्य, माहात्म्य, ऐश्वर्य, चेष्टा, इच्छा।

भगण (सं० पु०) नक्षत्र मण्डल, एक गण जिसमें तीन अक्षर होता है और आदि का अक्षर गुरु।

भगत (सं० पु०) भक्त, भक्ति करनेवाला, कथिक, नाचने गानेवाला।

मुहा०—भगत खेलना=स्वांग रचना, रूप उतारना।

भगतन (सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी, पतुरिया।

भगताई (सं० स्त्री०) भक्ति।

भगतिया (सं० पु०) एक जाति विशेष, कत्थक, कथिक।

भगदत्त (सं० पु०) एक राजा का नाम।

भगन्दर (सं० पु०) एक प्रकार का फोड़ा जो गुदा के आस पास होता है।

भगल (सं० पु०) छल कपट, धोखा, धूर्तताई।

भगलिया (वि०) छली, धोखाबाज़, धूर्त, शठ, ठग।

भगवत (सं० पु०) भगवान, परमात्मा।

भगवन्त (सं० पु०) भगवत, ईश्वर, परमात्मा, भगवान्।

भगवा (सं० पु०) काषाय वस्त्र, गेरुआ कपड़ा, साधु संन्यासियों का वस्त्र।

भगवान (सं० पु०) परमेश्वर, परमात्मा, ईश्वर।

भगाना (क्रि० स०) खदेड़ना, खेदना, दुराना, हकाना, हाँकना, हटाना।

भगिनी (सं० स्त्री०) बहन, बहिन।

भगीरथ (सं० पु०) एक सूर्यवंशी राजा का नाम ये दिलीप के पुत्र थे, राज्य-भार मन्त्रियों को सौंप अपने साठ हज़ार प्रपितामहों के उद्धार के निमित्त बन में तप करने चले गये, इनके तप से ब्रह्मा प्रसन्न होकर वर देने के लिए आये, इन्होंने दो वर माँगे एक तो कपिल के शाप से भस्म साठ हज़ार प्रपितामह गंगा जल से पवित्र होकर स्वर्ग सिधारें और दूसरा यह कि उनका वंश कभी नष्ट न हो, ब्रह्मा ने वरदान दिया, पर गंगा आकाश से गिरने पर धरती में न चली जायँ उनको रोकने के लिए शिवजी को प्रसन्न करने को कहा, भगीरथ ने शिव जी को भी प्रसन्न किया, गंगा आकाश से शिव की जटा पर गिरीं, वहाँ से भगीरथ के साथ साथ चलीं, इसी से गंगा को भागीरथी भी कहते हैं।

भगेल (सं० स्त्री०) हार, पराजय, शिकस्त (सं० पु०) भागनेवाला।

भगोड़ (वि०) भागनेवाला, भग्गू, भगेल। [वाला।

भग्गुल (सं० पु०) हरकारा, दूत, धावन (वि०) भागने-

भग्गू (वि०) भागनेवाला, भगेल, कायर, डरपोंक।

भग्न (वि०) टूटा हुआ, नष्ट भ्रष्ट, खण्डित।

भग्नांश (सं० पु०) टूटा हुआ भाग, खण्डित भाग, टूटा हुआ हिस्सा।

भग्नाशा (वि०) हताश, निराश।

भङ्ग (सं० पु०) खण्डन, भेद, टूटा, लहर, तरंग, हिलोर,

कुटिलता, भय, डर, रचना, बेल बूटे निकालना, एक रोग विशेष (सं० स्त्री०) एक नशीली पत्ती ।
भचक (वि०) विस्मित, अचम्भित, घबड़ाया हुआ ।
भचकना (क्रि० अ०) अचम्भित होना, विस्मित होना, घबड़ाना ।
भच्छन (सं० पु०) भोजन, आहार, खाना ।
भच्छहिं (क्रि० स०) भोजन करते हैं, खाते हैं ।
भजई (क्रि० स०) भजन करे, ध्यान करे, सेवे ।
भजन (सं० पु०) ईश्वरी प्रार्थना और स्तुति के गीत, स्मरण, कीर्तन, ध्यान । [धरना, जपना ।
भजना (क्रि० स०) भजन करना, स्मरण करना, ध्यान
भजनीक (सं० पु०) भजन करनेवाला, पूजक, अर्चक ।
भजहिं (क्रि०स०) सुमिरते हैं, भजन करते हैं ।
भजहु (क्रि० स०) भजन करो, स्मरण करो ।
भजि (क्रि० स०) भजन करके, स्मरण करके ।
भजिय (क्रि० स०) स्मरण कीजिये, भागिये, भाग जाना चाहिए, हटिये । [पराई ।
भजी (क्रि० स०) स्मरण करो (सं०स्त्री०) दौड़ी, भागी,
भजे (क्रि० स०) भजन करने से ।
भञ्जक (वि०) तोड़नेवाला । [खण्डन ।
भञ्जन (सं० पु०) तोड़ना, नष्ट करना, नाश करना,
भञ्जनहार (वि०) तोड़नेवाला, खण्ड करनेवाला ।
भञ्जित (वि०) तोड़ा हुआ, खण्डित ।
भट (सं० पु०) शूर, वीर, योद्धा, सैन्य, वीर, लड़ाका, निशाचर, एक वर्णसंकर जाति ।
भटई (सं० स्त्री०) भाट का काम ।
भटकना (क्रि० अ०) भूलना, बहकना, भ्रम में पड़ना ।
भटकाना (क्रि० स०) भुलवाना, बहकाना, डराना ।
भटकीला (वि०) भटकनेवाला, डरावना ।
भट पड़ना (क्रि० अ०) अभागा होना, निराश्रय होना, अनाथ होना । [पीट ।
भटभेरे (सं० पु०) धक्कम धक्का, घात, प्रतिघात, मार-
भटियारा (सं० पु०) मुसलमानों का खाना पकाने और सराय में ठहरानेवाली एक जाति ।
भट्टू (सं० स्त्री०) सखी, सहचरी, प्रणयिनी, प्रिया, प्रियतमा । [विशेष, भाट ।
भट्ट (सं० पु०) दक्षिणी ब्राह्मणों की एक उपाधि, जाति
भट्टनारायण (सं० पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान ।
भट्टलोल्लट (सं० पु०) काश्मीरनिवासी एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि ।
भट्टाचार्य (सं० पु०) विद्या सम्बन्धी एक उपाधि, बंगालियों का एक अल्ल । [पूजनीय ।
भट्टार (सं० पु०) सूर्य (वि०) मान्य, पूज्य, श्रद्धास्पद,
भट्टारक (सं० पु०) सूर्य, देव, तपोधन, नाटकोक्ति में राजा को कहते हैं ।
भट्टारकवार (सं० पु०) रविवार, ऐतवार ।
भट्ठी (सं० स्त्री०) भाड़, कजावा, पजावा ।
भठाना (क्रि० स०) तोपना, गाड़ना, छिपाना, गड्ढा आदि को भरना । [में बहना ।
भठियाना (क्रि० अ०) नदी के प्रवाह में बहना, धार
भठियारा (सं० पु०) देखो "भटियारा" ।
भठियारिन (सं० स्त्री०) भठियारे की जोरू ।
भठियाल (वि०) प्रवाह, बहाव, घटाव ।
भड़ (सं० पु०) बड़ी नौका । [हट ।
भड़क (सं० स्त्री०) चमक, दमक, झलक, झझक, घबड़ा-
भड़कना (क्रि० अ०) चौंकना, झिझकना, झलकना, चमकना, बिचकना । [चमकाना, घबड़ाना ।
भड़काना (क्रि० स०) चौंकाना, झिझकाना, बिचकाना,
भड़की (सं० स्त्री०) घुड़की, धमकी, भभकी ।
भड़कीला (वि०) चमकीला, चटकीला, सजीला ।
भड़केल (वि०) बनैला, जंगली ।
भड़ङ्ग (वि०) सीधा, सरल, निष्कपट, निश्छल ।
भड़भड़िया (वि०) साफ़ कहनेवाला, फड़फड़िया, उतावला, जल्दबाज़ ।
भड़भूँजा (सं० पु०) अन्न भूजनेवाला, काँदू, भुरजी ।
भड़भूँजिन (सं०स्त्री०) भड़भूँजे की स्त्री ।
भड़रिया (सं० पु०) हाथ देखकर जीविका चलाने-वाली जाति, छली, टोनही, तीर्थ स्थानों में यात्रियों को दर्शन करानेवाला ब्राह्मण, निषिद्ध दान लेने-वाला ब्राह्मण ।
भड़साई (सं० स्त्री०) भड़भूँजा की भट्ठी, भाड़ ।
भड़िहा (सं० पु०) जीभ चाटनेवाला, चटोरा, चोर ।
भड़िहाई (सं० स्त्री०) कुटिलपन, ठगहाई, छल कपट, धोखा, दगा, चोरी । [के साथ रहनेवाला, कुटना ।
भड़ुआ (सं० पु०) वेश्या के साथ रहनेवाला, रण्डी
भड़ुवा (सं० पु०) देखो "भड़ुआ" ।

भड़ैत (सं० पु०) किरायादार, भाड़े के मकान में रहनेवाला।
भणन (सं० पु०) कथन, पढ़न, कहना।
भणित (वि०) उक्त, कथित, पठित।
भगडन (सं० पु०) बंधन,प्रतारण, छलन।
भगडा (सं० पु०) बर्तन, मटकी, बड़े बड़े बर्तन।
भगडार (सं० पु०) कोठा, बखार।
भगडारा (सं० पु०) साधुओं का भोज, साधुओं की जेवनार। [रसोइया।
भगडारी (सं० पु०) भगडारे की देख रेख करनेवाला,
भगडेला (सं० पु०) भाँड़, भँडुवा।
भतार (सं० पु०) भर्ता, स्वामी, पति, खसम।
भतीजा (सं० पु०) भाई का लड़का।
भतीजी (सं० स्त्री०) भाई की कन्या। [दी जाती है।
भत्ता (सं० पु०) ख़ोराको जो कहीं जाने पर किसी को
भद (सं० स्त्री०) किसी गुलगुल वस्तु के ऊपर से गिरने का शब्द जैसे पके आम का।
भदभदाना (क्रि० अ०) भदभद शब्द करना या होना।
भदभदाहट (सं० स्त्री०) भदभद का शब्द।
भदाक (सं० पु०) किसी वस्तु के ऊपर से गिरने का शब्द, पड़ाक, धड़ाक।
भदेसल (वि०) कुरूप, बेडौल, कुढंगा। [निर्बोध।
भद्दा (वि०) बदशक्ल, कुरूप, बेडौल, अज्ञानी, अनारी,
भद्र (सं० पु०) अच्छा, मंगल, कल्याण, शुभ, शुभम, खञ्जन नाम की पक्षी, जाति विशेष।
भद्रक (सं०पु०) देवदारु वृक्ष(वि०) देश विशेष, मनोज्ञ।
भद्रकाली (सं० स्त्री०) महामाया, दुर्गा।
भद्रश्री (सं० स्त्री०) चन्दन, केसर, शोभा।
भद्रा (सं० स्त्री०) एक प्रकार की लता, नील वृक्ष, नदी विशेष, तिथि विशेष।
भद्राक्ष (सं० पु०) कृत्रिम रुद्राक्ष।
भद्रिका (सं० स्त्री०) दशा विशेष, कल्याणी।
भद्री (सं० पु०) सामुद्रिक शास्त्र जाननेवाला, डकौतिया, हस्तरेखा देखनेवाला।
भनई (क्रि० स०) कहता है,वर्णन करता है।
भनक (सं० पु०) ध्वनि, आहट, शब्द, आवाज़।
भनित (क्रि० स०) कहा हुआ, वर्णित, रचित।
भबकना (क्रि० अ०) उछल पड़ना, किसी बर्तन में रक्खी हुई किसी चीज़ का इकबारगी गिर पड़ना, तड़पना, कुपित होना, जल उठना।
भबका(सं०पु०)अर्क खींचने का एक प्रकार का पात्र विशेष।
भबकाना(क्रि०स०)उड़ेलना,गिराना,कुपित करना,तड़पाना।
भबकी (सं० पु०) धमकी, घुड़की, भड़की, डपट।
भब्बल (वि०) तोंदैल, मोटा, स्थूल।
भभ्भड़ (सं०पु०) शोर, ग़ुल, हल्ला, अव्यवस्था,खटका।
भभक (सं० पु०) भबक।[उठना, उछलना, खलबलाना।
भभकना (क्रि० अ०) भभकना, गिरना, टपकना, भभक
भभर (सं० पु०) भीड़ भाड़, शोर ग़ुल, खटका, अंदेशा, डर, ख़ौफ़,घबड़ाहट,व्याकुलता,उद्विग्नता।[खटकना।
भभरना(क्रि० स०) फूलना, सूजना, अंदेशा होना,
भभूका (सं०पु०) चमक, झलक, सुन्दर, मनोहर, साफ़।
भभूत (सं० स्त्री०) भस्म, विभूति, क्षार।
भभोरना (क्रि० अ०) फाड़ खाना, काट खाना।
भय (सं० पु०) डर, शंका, भीति, ख़ौफ़।
भयकारक (वि०) भयंकर, भयानक। [वना।
भयङ्कर (वि०) भयावह, भयानक, भयकारक, डरा-
भयत्रक (सं०पु०) भयभीत,डरा हुआ।[घबड़ाया हुआ।
भयभीत (वि०) डरा हुआ, भयातुर, ख़ौफ़ज़दा,
भयातुर (वि०) भयभीत, डरा हुआ, ख़ौफ़ज़दा।
भयानक (वि०) भयङ्कर, डरावना।
भयापह (सं० पु०) भय को दूर करनेवाला।
भयापा (सं० पु०) मातृत्व, बंधुत्व, अपनापन।
भयावना (वि०) भयंकर, भयानक।
भयावह (वि०) भयानक, भयंकर।
भयावहिं (क्रि०स०)डराते हैं,शङ्कित करते हैं,त्रास देते हैं।
भयाहू (सं० स्त्री०) छोटे भाई की स्त्री।
भर (वि०) पूर्ण, पूरा (सं० पु०) एक जाति विशेष।
भरका (सं० पु०) बुझाया हुआ चूना।
भरकाना (क्रि० स०) चूना बुझाना।
भरण (सं० पु०) पालन, पोषण, रक्षण।
भरणी (सं० स्त्री०) एक नक्षत्र का नाम।
भरत (सं० पु०) एक ऋषि का नाम जिन्होंने नाट्यशास्त्र की रचना की है, कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र, शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न राजा दुष्यन्त का पुत्र, इन्होंने ही इस देश का नाम भारतवर्ष रक्खा है।

भरत पुत्रक (सं० पु०) नट, बाजीगर, बहुरुपिया, भाँड़।
भरताग्रज (सं० पु०) श्री रामचन्द्र जी।
भरद्वाज (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम, ये इतथ्य की स्त्री ममता के गर्भ से बृहस्पति द्वारा उत्पन्न हुए थे, मरुत्गण ने इनको पाला पोसा था, द्रोणाचार्य इन्हीं के वीर्य से उत्पन्न हुये थे (देखो "द्रोणाचार्य") इन्होंने स्वर्ग लोक में जा इन्द्र से आयुर्वेद शास्त्र का अध्ययन कर मर्त्यलोक में प्रचार किया। [धार बारिश।
भरन (सं० पु०) पूर्ति, पूरन, पोषण (सं० स्त्री०) मूसला-
भरना (क्रि० स०) चुकाना, पूरा करना, सहना, देना, दुःख झेलना, कुएँ आदि से पानी निकालना।
भरनी (सं० स्त्री०) बाना, पूरना। [दाम वसूल होना।
भरपाना (क्रि० स०) कौड़ी कौड़ी पाना, दाम पाना,
भरपूर (वि०) अत्यन्त भरा हुआ, मुहाँमुह, पूर्ण।
भरभराना (क्रि०स०) भसकना, छिड़कना, फूलना, सूजना।
भरभरी (सं०स्त्री०) सूजन, फुलावा।
भरम (सं०पु०) भ्रम, संदेह, संशय, अंदेशा, खटका, भेद, रहस्य, तत्व।
मुहा०—भरम खुलना=रहस्य प्रकट होना। भरम खोल देना=भ्रम दूर करना। भरम निकल जाना =सन्देह दूर होना। [छलना।
भरमाना (क्रि० स०) भुलावा देना, बहकाना, ठगना,
भरमीला (वि०) संदेही, भ्रमवाला, संशयवाला।
भरवना (क्रि० स०) पूर्ण कराना, पूरा करवाना।
भरा (वि०) पूर्ण, पूरा।
भराई (सं० स्त्री०) भराने की क्रिया या मज़दूरी।
भराना (क्रि० स०) भरवाना, पूरा कराना, पूर्ण करवाना।
भरावट (सं० पु०) भरने का भाव, भर्ती, पूर्ति, समाप्ति, पूर्णता।
भरी (सं० स्त्री०) तोला, बारह मासा की एक तौल।
भरैत (सं० पु०) किरायादार।
भरोठा (सं० पु०) भार, मोट, बोझ।
भरोसा (सं० पु०) आशा, आसरा, प्रतीति, विश्वास।
भर्ता (सं० पु०) पति, स्वामी, भतार, एक प्रकार की तरकारी जो आलू भाँटा आदि को भून कर उसमें नमक तेल खटाई मिरचा आदि मिलाकर बनायी जाती है (वि०) पालनेवाला, रक्षक।
भर्तिया (सं० पु०) एक जाति, ठठेरा, कसेरा।
भर्ती (सं० स्त्री०) दाखिला, पूर्णता, समाप्ति, भरावट।
भर्तृहरि (सं० पु०) राजा विक्रमादित्य के भाई, ये अपनी स्त्री की दुश्चरित्रता के कारण घरबार छोड़ विरक्त हो गये थे। इन्होंने श्रृङ्गार, वैराग्य, नीतिशतक आदि ग्रन्थों की रचना की है।
भर्त्सना (सं० स्त्री०) निन्दा, तिरस्कार, अपवाद, धमकी, दुत्कार।
भल (वि०) अच्छा, उत्तम, भला, श्रेष्ठ, सुन्दर, सोहावना।
भलका (सं० पु०) एक गहने का नाम, सोने की टिकुली।
भलमनसाहत (सं०स्त्री०) मनुष्यत्व, पुरुषत्व, इनसानियत।
भलमनसी (सं० स्त्री०) नेकी, सुशीलता।
भला (वि०) अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, गुणवान, नेक।
मुहा०—भला कर भला हो सौदा कर नफ़ा हो=जैसा करेगा वैसा पावेगा।
भलाई (सं० स्त्री०) नेकी, अच्छापन, श्रेष्ठता, उत्तमता।
भलूक (सं० पु०) भालू, रीछ।
भल्ल (सं० पु०) भाला, बर्छा। [दुनिया।
भव (सं० पु०) शिव, जन्म, प्राप्ति, जगत, संसार,
भवदीय (वि०) आपका।
भवन (सं० पु०) घर, गृह, मंदिर, मकान, वासस्थान।
भवादृश (वि०) आपके समान।
भवानी (सं० स्त्री०) पार्वती, दुर्गा, काली।
भवार्णव (सं० पु०) संसार सागर, भयंकर समुद्र।
भवितव्यता (सं०स्त्री०) भावी, होनहार, होनेवाला।
भविष्य (वि०) भावी, भवितव्यता, आगामी, आनेवाला।
भविष्यत् (सं० पु०) आगामी समय, आने वाला काल।
भविष्यद्वक्ता (सं० पु०) भावी कहनेवाला, होनहार बताने वाला।
भवैया (सं० पु०) कत्थक, नाचनेवाला।
भव्य (वि०) सुन्दर, सुहावना, रमणीय, भावी, योग्य, सत्य।
भसकना (क्रि० अ०) गिरना, पड़ना, फसकना।
भसना (क्रि० अ०) तैरना, पँवरना, गिरना, भसकना।
भसभसा (वि०) पोला, खोखला, थोथला।
भसाना (क्रि० स०) बहाना, गिराना, चलाना।
भस्म (सं० स्त्री०) विभूत, भभूत, राख, क्षार।

भस्मक (सं० पु०) एक रोग जिसमें रोगी खाना तो ख़ूब खाता है पर दुबला होता जाता है।
भस्मसात् (वि०) बिलकुल जला हुआ, समस्त दग्ध।
भस्मा (सं० स्त्री०) धौंकनी, भाथी।
भहराना (क्रि० अ०) गिरना, पड़ना, डगमगाना।
भाँग (सं० पु०) भंग, विजया, बूटी।
भाँज (सं० पु०) बल, ऐंठन, मोड़, बराव।
भाँजना (क्रि० अ०) ऐंठना, मोड़ना, लपेटना, तोड़ना।
भाँजा (सं० पु०) बहिन का बेटा।
भाँजी (सं० स्त्री०) बहिन की बेटी।
भाँटा (सं० पु०) बैंगन, भंटा।
भाँड़ (सं० पु०) निर्लज्ज, बेहया, बहुरूपिया, हंडा, तमाशा करने वाली जाति विशेष। [बिगड़ना।
भाँड़ना (क्रि० अ०) गाली देना, बुरी बातें कहना,
भाँड़ा (सं० पु०) मिट्टी का बड़ा घड़ा, मटका।
भाँड़िन (सं० स्त्री०) भाँड़ की स्त्री।
भाँड़ैती (सं० स्त्री०) भाँड़ का काम।
भाँति (सं० स्त्री०) प्रकार, रीति, तरीक़ा, डौल, ढब।
भाँपना (क्रि० स०) देखना, ताड़ना, जानना।
भाँवर (सं० स्त्री०) दुलहा दुलहिन का वेदी की परिक्रमा करना, घुमाव, भाँवरी।
भाँवरी (सं० स्त्री०) देखो "भाँवर"।
भा (क्रि० अ०) हुआ, भया (सं० पु०) चमक, प्रकाश।
भाई (सं० पु०) भ्राता, सहोदर, संगी, साथी, बंधु।
भाई चारा (सं० पु०) भाई का सम्बन्ध।
भाई बन्द (सं० पु०) भाई बन्धु, बिरादरी।
भाकसी (सं० स्त्री०) भट्टी, काल कोठरी, हवालात।
भाखना (क्रि० स०) कहना, बोलना, भाषण करना।
भाखा(सं०पु०)भाषा, बात, बोली, कथन, भाषण। [अदृष्ट।
भाग (सं०पु०) हिस्सा, बटवारा, बाँट, अंश, भाग्य, प्रारब्ध,
भागग्राही (सं० पु०) हिस्सादार, भागी।
भागड़ (सं० स्त्री०) देश-त्याग, भगेल, पलायन।
भागधेय (सं० पु०) भाग्य, प्रारब्ध।
भागना (क्रि० अ०) पलाना, दौड़ना, चला जाना, भग जाना, चम्पत होना, नौ दो ग्यारह होना।
भागमान (वि०) भाग्यवान्, क़िस्मतवर।
भागमानी (सं० स्त्री०) सौभाग्यवती। [का भक्त।
भागवत (सं० पु०) एक पुराण का नाम (वि०) भगवान्
भागहार (सं० पु०) भाग का अधिकारी।
भागाभाग (सं० पु०) चला चली, दौड़ा दौड़।
भागिनेय (सं० पु०) भांजा, बहिन का पुत्र।
भागी (वि०) हिस्सेदार, साझीदार, अंशी।
भागीरथी (सं० स्त्री०) गङ्गा, सुर नदी।
भाग्य (सं० पु०) प्रारब्ध, अदृष्ट, दैव, शुभाशुभकर्म।
भाग्यवन्त (वि०) भाग्यवान्।
भाग्यवान (वि०) अच्छे भाग्यवाला।
भाग्यहीन (वि०) अभाग, दुःखी, दीन, दरिद्र। [बासन।
भाजन (सं० पु०) पात्र, योग्य, परिमाण, आढ़क, बरतन,
भाजना (क्रि० अ०) भुनना, तलना, भागना।
भाजर (सं० स्त्री०) भागनेवाली, भगेल।
भाजी (सं० स्त्री०) साग, सब्ज़ी, तरकारी।
भाज्य (वि०) वह संख्या जिसका भाग हो सके।
भाट (सं० पु०) चारण, बंदी, गायक, एक जाति जिसका काम सत्य प्रशंसा करना है।
भाटा (सं० पु०) समुद्र का उतराव।
भाटिन (सं० स्त्री०) भाट की स्त्री। [व्यापार करना है।
भाटिया (सं० पु०) एक जाति विशेष जिसका पेशा
भाटियाना (सं० स्त्री०) भाटिया की स्त्री।
भाठा (सं० पु०) समुद्र का उतार।
भाठियाल (सं० पु०) उतराव, गिराव।
भाठी (सं० स्त्री०) भाथी, धौंकनी।
भाड़ (सं० पु०) भड़भूँजा का चूल्हा, भट्टी।
भाड़ा (सं० पु०) मकान आदि का किराया, महसूल, किराया, शुल्क।
भाड़ैत (वि०) भाड़े पर रहनेवाला।
भाड़ैती (सं० स्त्री०) भाड़े का काम।
भाण्ड (सं० पु०) बर्तन, बासन, पात्र।
भाण्डार (सं० पु०) देखो "भंडार"।
भात (सं० पु०) ओदन, भक्त, पका हुआ चावल।
भाता (वि०) मन भावन, सुहावना, सुन्दर, रमणीय।
भाथा (सं०पु०) तरकस, वह वस्तु जिसमें तीर रखते हैं।
भाथी (सं० स्त्री०) चमड़े की बनी धौंकनी।
भादों (सं० पु०) भाद्र मास।
भाद्रपद (सं० पु०) वर्ष का छठवाँ महीना।
भान (सं० पु०) सूर्य, दिवाकर।
भानमती (सं० स्त्री०) इन्द्रजाल जाननेवाली स्त्री।

भाना (क्रि० अ०) अच्छा लगना, शोभना, सुन्दर लगना।
भानु (सं० पु०) सूर्य, रवि।
भानुज (सं० पु०) अश्विनी कुमार, शनैश्चर, यम, कर्ण।
भानुजा (सं० स्त्री०) यमुना।
भानुमती (सं० स्त्री०) प्रसिद्ध कवि कालिदास की स्त्री और भोज राजा की कन्या जो इन्द्रजाल विद्या में बड़ी निपुण थी इसी से इन्द्रजाल विद्या को भानुमती का खेल भी कहते हैं।
भापना (क्रि० स०) ताड़ जाना, अटकल लगाना, कूतना।
भाफ (सं० पु०) वाष्प, धुआँ।
भाभी (सं० स्त्री०) बड़े भाई की स्त्री, भौजाई, भावज।
भामर (सं० स्त्री०) विवाह के समय वर वधू का सात बार मँड़वा के चारों ओर फिरना।
भामिन (सं० स्त्री०) क्रोधी, क्रोध करने वाला।
भामिनी (सं० स्त्री०) कामिनी, स्त्री, बनिता, भार्या, सुन्दरी।
भार्या (सं० स्त्री०) पत्नी, स्त्री, जोरू।
भार (सं० पु०) बोझ, गुरुत्व, किसी कार्य के संपादन का अधिकार, आठ हज़ार तोला का परिमाण।
भारवि (सं० पु०) संस्कृत कवि, किरातार्जुनीय के कर्त्ता।
भारत (सं० पु०) महाभारत, भरत का लड़का, आग, अग्नि, भट।
भारतवर्ष (सं० पु०) जम्बूद्वीप के अन्तर्गत एक खण्ड, हिन्दुस्तान। [वर्ष का।
भारतवर्षीय (वि०) भारतवर्ष का रहनेवाला, भारत-
भारती (सं० स्त्री०) सरस्वती, वाक्य, बचन, वाणी, काव्य का एक वृत्त, भारु नाम की एक पक्षी।
भारतीय (वि०) भारत सम्बन्धी, भारत का।
भारद्वाज (सं०पु०) मुनि विशेष, द्रोणाचार्य, मंगल ग्रह, अगस्त्यमुनि। [मज़दूर।
भारवाहक (सं० पु०) बोझा ढोने वाला, मोटिया,
भारा (सं० पु०) किराया, बोझ, भार।
भारी (वि०) गरुव, गुरु, बोझैल, महँगा।
भार्या (सं० स्त्री०) स्त्री, पत्नी, जाया।
भार्यातिक्रम (सं० पु०) स्त्री-त्याग, स्त्री-नाश, परस्त्रीगमन।
भाल (सं० पु०) मस्तक, ललाट, भाले की नोक।
भाला (सं० पु०) बर्छा, बर्छी, साँग।
भालू (सं० पु०) भल्लूक, रीछ।
भालैत (सं० पु०) वह जो भाला चलावे।
भाव (सं० पु०) मन का विचार, चेष्टा, अभिप्राय, सत्ता, स्वभाव, विभूति, पदार्थ, लीला, तात्पर्य, क्रिया, जन्म, योनि, संसार, उपदेश।
भावई (सं० स्त्री०) भवितव्यता, भावी, होनहार, भविष्य।
भावक (सं०पु०) भाव, मनोविकार (वि०) सोचनेवाला।
भावज (सं०स्त्री०) भौजाई, भाभी, बड़े भाई की स्त्री।
भावज्ञ (वि०) भाव का जानने वाला, मर्मज्ञ।
भावता (वि०) प्रिय, अभिलषित, इच्छित, वांछित।
भावना (सं० पु०) चिन्ता, पर्यालोचन, ध्यान (क्रि० स०) पसन्द आना, अच्छा लगना, शोभना।
भाववाचक (सं० पु०) वस्तुओं का धर्मगुण बताने वाली संज्ञा।
भावह (सं० स्त्री०) छोटे भाई की स्त्री, भवहो।
भावान्तर (सं०पु०) प्रकारान्तर, अन्य तरह, दूसरे प्रकार।
भावार्थ (सं० पु०) तात्पर्य, अभिप्राय, मतलब।
भाविक (वि०) चिन्ताशील, अभिप्रायज्ञ। [हुआ।
भावित (वि०) चिन्तन किया हुआ, सोचा हुआ, विचारा
भावी (वि०) भवितव्य, होनहार, आगामी।
भावुक (सं० पु०) कल्याण, मंगल, कुशल।
भावे (अव्य०) मन में, विचार में, ध्यान में, लेखे।
भाव्य (वि०) भवितव्य, होनहार, भावी, विचारणीय, चिन्तनीय।
भाषा (सं० स्त्री०) वाणी, बोली, बचन, वाक्य, कथा।
भाषित (वि०) कथित, भणित, उक्त।
भाषी (वि०) कहनेवाला, वक्ता। [टिप्पणी।
भाष्य (सं० पु०) सूत्रार्थ, बृहत् टीका, विस्तृत टीका,
भाष्यकार (सं० पु०) भाषा बनानेवाला।
भासना (क्रि० अ०) मालूम होना, जान पड़ना, ज्ञात होना, विदित होना, प्रकट होना।
भासन्त (वि०) मनोहर, सुन्दर, सुहावना, रमणीय, शोभित (सं० पु०) सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, एक प्रकार की चिड़िया।
भास्कर (सं० पु०) सूर्य, अग्नि।
भास्कराचार्य (सं० पु०) प्रसिद्ध ज्योतिर्वित और गणितज्ञ ये सन् १११४ ई० में पैदा हुये थे इनके पुत्र का नाम लक्ष्मीधर और कन्या का नाम लीलावती था।
भास्करानन्द स्वामी (सं० पु०) प्रसिद्ध संन्यासी इनका

जन्म १८३३ ई० में कानपुर ज़िले के मैथेलालपुर में हुआ था। [दीप्तिमान।

भास्वर (वि०) तेजस्वी, प्रतापी, उज्ज्वल, स्वच्छ,

भिंड (सं० स्त्री०) एक तरकारी का नाम, रमतोरई।

भिंसार (सं० पु०) प्रातःकाल, प्रभात, सवेरा, तड़का, भोर।

भिक्षा (सं० स्त्री०) भीख, चाह, सेवा, नौकरी।

भिक्षाटन (सं० पु०) भिक्षा के लिए इधर उधर घूमना, भीख माँगना। [भिखारी।

भिक्षु (सं० पु०) बौद्ध संन्यासी, परिव्राजक, याचक,

भिक्षुक (सं० पु०) याचक, भीख माँगने वाला, भिखारी।

भिखरी (वि०) पोपला, ख़ाली, शून्य, रिक्त।

भिखारी (सं० पु०) भीख माँगने वाला, भिक्षुक।

भिगोना (क्रि० स०) गीला करना, तर करना, आर्द्र करना, ओदा करना।

भिगोना (क्रि० स०) देखो "भिगाना"।

भिजाना (क्रि० स०) देखो "भिगाना"।

भिटनी (सं० स्त्री०) भेंटी।

भिटाई (सं० स्त्री०) वह द्रव्य जो भाई आदि बहिन भतीजी आदि को मिलने के समय देते हैं।

भिड़ना (क्रि० अ०) लड़ना, झगड़ना, सामना करना, मिलना, सटना। [सटाना।

भिड़ाना (क्रि० स०) लड़ाना, झगड़ा कराना, मिलाना,

भित्ति (सं० स्त्री०) दीवार, मूल, जड़।

भिनकना (क्रि०अ०) भिनभिनाना, घृणा करना, मक्खियों का भिनभिन शब्द करना। [करना।

भिनभिनाना (क्रि० अ०) भिनकना, घिनाना, घृणा

भिन्न (वि०) पृथक्, अन्य, अलग, अतिरिक्त।

भिन्नकारी (वि०) भिन्न करने वाला, विभेदक। [करना।

भिन्नगुणन (सं० पु०) अंक विशेष, न्यून अंक की वृद्धि

भिन्नाना (क्रि० अ०) सिर ठनकना, दिमाग़ चकराना।

भिन्नार्थक (वि०) दूसरे अर्थवाला, अन्य आशय।

भिलावाँ (सं० पु०) एक औषधि का नाम।

भिलौंजा (सं० स्त्री०) भिलावा का बीज।

भिल्ल (सं० पु०) भील, एक पहाड़ी जाति।

भिषक् (सं० पु०) वैद्य, चिकित्सक।

भींगा (वि०) गीला, ओदा। [वाक्यों को जोड़ने का काम दे।

भी (सं० स्त्री०) भय, डर, त्रास (अव्य०) वह शब्द जो

भीख (सं० स्त्री०) भिक्षा, याचा।

भीगना (क्रि० अ०) भीजना, गीला होना।

भीचना (क्रि० स०) दबाना, निचोड़ना, चूसना।

भीजना (क्रि० अ०) भीगना, गीला होना, ओदा होना।

भीजा (वि०) गीला, आर्द्र, ओदा, भीगा हुआ।

भीटा (सं० पु०) गिरा पड़ा पुराना मकान, खंडहर।

भीड़ (सं० स्त्री०) जमाव, जत्था, समुदाय, कष्ट, आपद्, दुःख।

भीड़ा (वि०) संकेत, संकीर्ण।

भीत (वि०) डरा हुआ, ख़ौफ़ज़दा (सं० स्त्री०) दीवार।

भीतर (अव्य०) में, अन्दर, बीच, मध्य।

भीतरिया (सं० पु०) अन्दर रहनेवाला, रसोइया।

भीति (सं० स्त्री०) भय, त्रास, डर, शङ्का, खटका।

भीम (वि०) भयंकर, भयानक, डरावना, भीषण, भय जनक (सं० पु०) पाण्डु पुत्र, युधिष्ठिर के छोटे भाई, ये बड़े बलवान थे, दुर्योधन आदि कोई इनका सामना नहीं कर पाता था, इससे दुर्योधन ने इनको कई बार छल से विष आदि खिला कर मारना चाहा पर ये बच गये। हिडिम्ब नामक राक्षस को इन्होंने मारा था और उसकी बहिन हिडिम्बा से ब्याह किया था जिसके गर्भ से घटोत्कच नामक एक पुत्र हुआ था, भरी सभा में द्रौपदी का अपमान करने के कारण दुःशासन के वक्षस्थल का रक्त पान और दुर्योधन की जंघा तोड़ने की इन्होंने प्रतिज्ञा की थी, इसे महाभारत के युद्ध में इन्होंने पूर्ण कर दिखाया, पाण्डवों के महाप्रस्थान के समय इन्होंने पृथ्वी पर गिर कर प्राण-त्याग किया था।

भीमसेनी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का कपूर।

भीरु (वि०) कायर, डरपोक, डरनेवाला।

भील (सं० पु०) एक असभ्य पहाड़ी जाति।

भीषण (वि०) भयंकर, भयानक, घोर, डरावना (सं०पु०) बाज नाम की चिड़िया, सेंहुड़, भटकटैया।

भीषा (सं० स्त्री०) त्रास, भयंकरता, भय।

भीष्म (वि०) भयानक, भयंकर, भयजनक, डरावना (सं० पु०) गङ्गा के गर्भ से उत्पन्न राजा शान्तनु के पुत्र, ये गाङ्गेय भी कहे जाते हैं, इन्होंने पिता की कामोवासना की पूर्ति के लिये आजन्म ब्रह्मचर्य

और राज्य न लेने की प्रतिज्ञा की थी, जिसको पूर्ण कर दिखाया।
भीष्मक (सं० पु०) विदर्भ के राजा, रुक्मिणी के पिता।
भीष्मपञ्चक (सं० पु०) कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक का एक व्रत विशेष।
भुंडली (सं० स्त्री०) एक कीट विशेष, एक प्रकार की घास जो दवा के काम आती है।
भुआल (सं० पु०) भूपाल, राजा।
भुक्त (वि०) खाया हुआ, भोगा हुआ।
भुक्तभोगी (वि०) विशेष रूप से अनुभव किया हुआ।
भुगतना (क्रि० अ०) भोगना, सहना, दुःख उठाना, दुःख झेलना। [करना, बेबाक करना।
भुगताना (क्रि० स०) भोगवाना, सहवाना, चुकता
भुग्गा (वि०) सीधा साधा, भोला।
भुग्न (वि०) कुटिल, तिरछा, टेढ़ा, बक्र।
भुच्च (वि०) मूर्ख, भद्दा, अनारी, बे समझ।
भुज (सं० पु०) हाथ, भुजा, बाहु।
भुजङ्ग (सं० पु०) सर्प, साँप।
भुजङ्गम (सं० पु०) साँप, सर्प। [का एक गहना।
भुजबंद (सं० पु०) बिजायट, बाजूबंद, हाथ में पहनने
भुजा (सं० स्त्री०) हाथ, बाँह।
भुजिया (वि०) उसना हुआ, भुंजा हुआ।
भुट्टा (सं० पु०) मक्का की बाल, बाली।
भुणडली (सं० स्त्री०) कीट विशेष, एक कीट का नाम।
भुतना (सं० पु०) भूत, प्रेत, पिशाच।
भुतहा (वि०) भूतवाला, भूत के समान, फूहड़, बोदा।
भुनना (क्रि० अ०) भुजना, सेंकना। [भुनाना।
भुनवाना (क्रि० स०) भुनने का काम दूसरे से करवाना,
भुनाई (सं० स्त्री०) भुनने की क्रिया या मज़दूरी, रुपये नोट आदि तोड़ाने का बट्टा।
भुनाना (क्रि० स०) भुनवाना, भँजाना, तोड़वाना।
भुरभुरा (वि०) कुरकुरा, सूखा और सफूफ (सं० पु०) एक प्रकार का चर्वन। [छींटना, छिड़कना।
भुरभुराना (क्रि० स०) सूखी हुई चीज़ को गिराना,
भुलक्कड़ (वि०) भूलने वाला।
भुलसाना (क्रि० स०) जलाना, झुलसाना, दग्ध करना।
भुलाना (क्रि० स०) भूल जाना, खोना, फुसलाना, बहकाना, धोखा देना, छलना।
भुलावा (सं० पु०) धोखा, छल, कपट।
भुव (सं० पु०) स्वर्ग, आकाश, पृथ्वी।
भुवङ्ग (सं० पु०) भुजङ्ग, सर्प, साँप। [प्राणी।
भुवन (सं० पु०) जगत्, पृथ्वी, संसार, लोक, जीव,
भुवपाल (सं० पु०) राजा, पृथ्वी का पालन करनेवाला भूपति।
भुस (सं० पु०) चोकर, छिलका।
भुसेरा (सं० पु०) भूसा रखने का घर।
भूँकना (क्रि० स०) भौं भौं करना, कुत्ते का बोलना।
भूँजा (सं० पु०) भुर्जी, भड़भूँजा।
भूँड़पैरा (सं० पु०) अपशकुन, असगुन।
भू (सं० स्त्री०) धरती, धरणी, पृथ्वी, भूमि, ज़मीन।
भूइ (सं० स्त्री०) भू, पृथ्वी, धरती, धरणी, भूमि, ज़मीन।
भूइँडोल (सं० पु०) भूकंप, भूचाल पृथ्वी का हिल जाना।
भूईसी (सं० स्त्री०) वह द्रव्य जो किसी माङ्गलिकोत्सव में बिना संकल्प किये ब्राह्मणों को दिया जाता है।
भूकम्प (सं० पु०) भूडोल, भूइँडोल, भूचाल।
भूख (सं० स्त्री०) क्षुधा, खाने की इच्छा, भोजन करने की इच्छा। [लगी हो, बुभुक्षित, क्षुधातुर।
भूखा (वि०) जिसे भोजन करने की इच्छा हो, जिसे भूख
भूगर्भ (वि०) पृथ्वी के भीतर, ज़मीन के अन्दर।
भूगोल (सं० पु०) वह विद्या जिससे पृथ्वी सम्बन्धी सब बातों का ज्ञान हो, महीमण्डल। [भूमि रेखा।
भूचक्र (सं० पु०) भूमण्डल, मध्य रेखा, विषुवत रेखा,
भूचर (सं० पु०) स्थलचर, मनुष्य आदि, धरती पर चलनेवाले जीव।
भूचाल (सं० पु०) भूइँडोल, भूकम्प। [स्थान।
भूड़ (सं० स्त्री०) बलुई धरती, रेतीली धरती, रेगि-
भूडल (सं० पु०) अभ्रक, अबरख, स्वच्छपत्र।
भूडोल (सं० पु०) भूचाल।
भूत (सं० पु०) योनि विशेष, प्रेत, पिशाचादि, अतीत समय, अतीत काल, बाल ग्रह, कृष्ण चतुर्दशी।
भूतकाल (सं० पु०) अतीत काल।
भूतनी (सं० स्त्री०) भूत की स्त्री।
भूतल (सं० पु०) पृथ्वी, धरती, धरातल।
भूतात्मा (सं० पु०) जीवात्मा, देही, ब्रह्मा, शिव, विष्णु।
भूति (सं० स्त्री०) अणिमा आदि अष्ट प्रकार की सिद्धियाँ, वैभव, शिव भस्म, हस्ति शृंगार, जाति, संपत्ति, ऋद्धि नामक औषधि, सेंधिया घास, ज्वरांकुश।

भूतेश (सं० पु०) शिव।
भूदार (सं० पु०) शूकर, सूअर।
भूदेव (सं० पु०) ब्राह्मण, विप्र, भूसुर।
भूधर (सं० पु०) पर्वत, गिरि, पहाड़।
भूप (सं० पु०) राजा, नृप, बादशाह।
भूपति (सं० पु०) बटुक, राजा, ऋषभ नाम की औषधि। [करनेवाला।
भूपाल (सं० पु०) राजा, नरपति, भूप, भूमि पालन
भूभल (सं० स्त्री०) गर्म राख, अङ्गार।
भूभुरि (सं० पु०) छोटा काँटा, गरम धूर, उष्ण भूमि।
भूभृत (सं० पु०) राजा, नरपति, पहाड़, पर्वत।
भूमि (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती, धरातल।
भूमिकम्प (सं० स्त्री०) भूचाल, भूँडोल।
भूमिका (सं० स्त्री०) आभास, प्रसंग, प्रकरण, मुखबंध, प्रस्तावना, छद्म वेश, भूमि, चितावस्था विशेष।
भूमिजा (सं० स्त्री०) जानकी, सीता।
भूमिपा (सं० पु०) ज़मींदार, भूमिहार, पृथ्वी का देवता।
भूमिपाल (सं० पु०) महीपति, भूपाल, राजा। [बारंबार।
भूया (अव्य०) पुनर्थ, बारबार, पुनः, फेर, फिर,
भूयोभूयः (अव्य०) पुनः पुनः, बारबार, फिर फिर।
भूर (सं० स्त्री०) दक्षिणा, दान, भीख, बाड़ा।
भूरसी (सं० स्त्री०) देखो "भूईसी"।
भूरा (वि०) खैरा, कपिल, पिङ्गल, एक तरह का रंग।
भूरि (सं० पु०) विष्णु, ब्रह्मा, शिव, इन्द्र (वि०) प्रचुर, अनेक, अधिक, ज़्यादा, बहुत।
भूरिप्रेमा (सं० पु०) चक्रवाक, चकई, चकवा।
भूरिभाय (सं० पु०) शृगाल, गीदड़।
भूरिलाभ (सं० पु०) बहुत प्राप्ति, बहुत लाभ, अधिक प्राप्ति, ज़्यादह फ़ायदा।
भूरिश्रवा (वि०) यशस्वी, कीर्तिमान् (सं० पु०) चन्द्रवंशी राजा सोमदत्त का पुत्र जो महाभारत के युद्ध में सात्यकी द्वारा मारा गया।
भूरुह (सं० पु०) वृक्ष, पेड़, दरख़्त।
भूर्ज (सं० पु०) भोज पत्ते का पेड़।
भूर्जपत्र (सं० पु०) भोज पत्र।
भूर्लोक (सं० पु०) मर्त्यलोक।
भूल (सं० स्त्री०) भ्रम, विसरण, विस्मृति, त्रुटि, चूक।
भूलना (क्रि० स०) विसरना, चूकना, याद न रखना।
भूला भटका (वि०) भटका हुआ, विपथ, पतित।
भूलोक (सं० पु०) भूर्लोक, मर्त्यलोक,।
भूष (क्रि०स०) भूषित करता है, सजाता है।
भूषक (वि०) अलंकार कारक, भूषण धारी।
भूषण (सं० पु०) अलंकार, गहना, आभूषण, हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि, इनकी कवितायें वीर रस-पूर्ण होती थीं।
भूषित (वि०) अलङ्कृत, सज्जित, शोभित, शोभायमान। [का चारा।
भूसा (सं० पु०) तुष, चोकर, भूसी, जानवरों के खाने
भूसी (सं० स्त्री०) चोकर, अनाज के ऊपर का छिलका, पछोड़न।
भूसुर (सं० पु०) ब्राह्मण, विभु, भूदेव।
भृकुटी (सं० स्त्री०) त्यौरी, भौंह, भौं।
भृगु (सं० पु०) मुनि विशेष, शिव, शुक्र ग्रह, यमदग्नि, एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जिसने विष्णु की छाती में लात मारी थी, ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजापति, शृङ्ग, पहाड़ के नज़दीक का मैदान।
भृगुपति (सं० पु०) परशुराम।
भृङ्ग (सं० पु०) भ्रमर, भौंरा, भृङ्गराज, अभरक।
भृङ्गराज (सं० पु०) भङ्गरा, गरगवा पक्षी। [गण विशेष।
भृङ्गी (सं० स्त्री०) कीट विशेष, भौंरी (सं० पु०) शिव-
भृतक (सं० पु०) वेतनीय जीवी, कार्यकर्ता, नौकर।
भृति (सं० पु०) वेतन, मूल्य, कमाई, मज़दूरी।
भृतिभुक (सं० पु०) वेतनग्राही, वैतनिक।
भृत्य (सं० पु०) दास, सेवक, टहलुआ, नौकर, चाकर।
भृष्ट (वि०) भूँजा हुआ, बिना जल के पकाया हुआ।
भृष्टि (सं० स्त्री०) भूजना।
भेंगा (वि०) स्वर्ग पताली, टेढ़ा देखनेवाला, तिरछा, टेढ़ा। [डाली, नज़र।
भेंट (सं० स्त्री०) दर्शन, मिलाप, मुलाक़ात, सौगात,
भेंटना (क्रि० स०) मिलना, मिलाप करना, दर्शन करना, मुलाक़ात करना।
भेंटनी (सं० स्त्री०) नज़र, उपहार। [लगा रहता है, डंठी, डंठल।
भेंटी (सं० स्त्री०) फल आदि के ऊपर का भाग जो डाल में
भेक (सं० पु०) मेंढक, वेंग, दादुर।
भेख (सं० पु०) भेष, वेष, परिच्छद, आकार, लिबास, रूप बदलना, कपट वेश, डौल, स्वरूप बनाना।

भेखधारी (सं० पु०) भेष बनानेवाला।
भेजना (क्रि० स०) पठाना, पहुँचाना।
भेजा (सं० पु०) सिर का गूदा, सिर का मग़ज़।
भेट (सं० स्त्री०) भेंट, दर्शन, सौग़ात, डाली।
भेटना (क्रि० स०) मिलना, देखना, भेंट देना।
भेटी (सं० स्त्री०) डंठल।
भेटू (सं० स्त्री०) डंठल।
भेड़ (सं० पु०) मेष, भेड़ा, मेढ़ा।
भेड़ा (सं० पु०) मेढ़ा, मेष।
भेड़िया (सं० पु०) हुँडार, एक जंगली जन्तु विशेष।
मुहा०—भेड़िया धसान=बिना समझे बूझे देखा-देखी काम करना।
भेड़ी (सं० स्त्री०) भेड़, गाडर, मेढ़ी।
भेद (सं० पु०) शत्रु को वश में करने के चार उपायों में से एक, छिपी बात, गुप्त बात, पृथक्, भिन्नता, अलगाव, अन्तर, प्रकार, जाति, भाँति, विरोध, विच्छेद, अनमेल।
भेदक (वि०) फोड़नेवाला, विदारक, विरेचक औषधि।
भेदकिया (सं० पु०) भेदी, खोजी, गुप्तचर।
भेदन (सं० पु०) हींग, काटना, तोड़न, फोड़न, अमल वेद, सूअर।
भेदिया (सं० पु०) चर, संधानी, पता लगानेवाला।
भेदी (सं० पु०) गुप्तचर, दूत, मर्मज्ञ, भेद लेनेवाला।
भेदू (वि०) भेद जाननेवाला, भेदी, भेद लेने हारा।
भेद्य (वि०) भेद के योग्य।
भेना (सं० स्त्री०) बहिन, भगिनी, दीदी।
भेर (सं० पु०) भेरी, दुंदुभी।
भेरी (सं० स्त्री०) दुंदुभी, नगारा, धौंसा, तुरही, सहनाई।
भेला (सं० पु०) भिलावाँ।
भेली (सं० स्त्री०) गुड़ का ढेला।
भेव (सं० पु०) भेद, भाव, प्रकृत, स्वभाव, तरह।
भेष (सं० पु०) आकृत, चाल, डौल, स्वरूप, बनावट, रूप बदलना।
भेषज (सं० पु०) औषधि, दवाई, दारू, दवा।
भैंस (सं० स्त्री०) महिषी, एक पशु का नाम।
भैंसा (सं० पु०) महिष, भैंस का पुल्लिङ्ग शब्द।
भैंसादाद (सं० पु०) एक प्रकार का दाद, दिनाई।
भैचक (अव्य०) भयाचक, धड़ाका, अचरज, आश्चर्य।
भैमी (सं० स्त्री०) भीम की कन्या, दमयन्ती, माघ शुक्ल की एकादशी।
भैया (सं० पु०) भ्राता, भाई, दादा।
भैयापा (सं० पु०) भाईचारा, बिरादरी, बंधुत्व।
भैरव (सं० पु०) शिव, शङ्कर, रागिनी विशेष, शिव के गणों का नायक (वि०) भयंकर, भयानक, विकराल, भीषण। [का नाम।
भैरवी (सं० स्त्री०) दुर्गा, काली, देवी, एक रागिनी
भैरवीचक्र (सं० पु०) वाम मार्गियों का शराब पीने के लिए मण्डली विशेष।
भैरों (सं० पु०) भूत, देवता विशेष।
भैहुँ (सं० स्त्री०) अनुज वधू, छोटे भाई की स्त्री।
भोंकड़ा (वि०) बड़ा, मोटा, स्थूल।
भोंकना (क्रि० अ०) भूकना, हौं हौं करना, कुत्ते का शब्द करना, हूलना, ठोकना, चुभाना।
भोंकस (सं०पु०) ओझा, भूतहा, टोनहा।
भोंघरा (सं०पु०) तलघरा, तलकोठा।
भोंड़ा (वि०) कुडौल, कुरूप, कुत्सित। [हुआ।
भोंथरा (वि०) कुण्ठित, तीखा नहीं, कुंद, गोठल, मुरा
भोंथा (वि०) देखो "भोथरा"।
भोंदू (वि०) गँवार, अनजान, सीधा, भोला।
भोंपू (सं० पु०) नरसिंघा, एक प्रकार का बाजा।
भोई (सं० पु०) कहार, पालकी उठानेवाला, धीमर।
भोकस (सं० पु०) ओझा, मन्त्र तन्त्र करने वाला, गुनी, टोनहा।
भोक्तव्य (वि०) भोजनीय, खाने लायक़।
भोक्ता (सं० पु०) खाने वाला, खाऊ, अधिक खवैया।
भोक्तृ (वि०) खादक, खानेवाला (सं० पु०) विष्णु, भर्ता, मालिक।
भोग (सं० पु०) सुख दुःखादि का अनुभव, संभोग, सुख, सर्प-फण, सर्प शरीर, धन, पालन, तिरस्कार, अपमान। [पाना।
भोगना (क्रि० अ०) दुःख सुख उठाना, भुगतना, सहना,
भोग राग (सं० पु०) देवता का सेवन-पूजन।
भोगा (सं० पु०) छल, कपट, ठगाई, धोखा।
भोगावती (सं० स्त्री०) नाग नगरी।
भोगी (सं० पु०) भोग विलासी, आनन्दी, सुखी, प्रारब्धी।
भोग्य (वि०) भोगने योग्य (सं० पु०) धन, धान्य।

भोज(सं० पु०) ज्योनार, आहार, राजा, उज्जैन के एक राजा का नाम जो विद्या-प्रचार के लिए प्रसिद्ध हैं, संस्कृत भाषा के स्वयं यह बड़े विद्वान थे, संस्कृत के अधिकांश साहित्य ग्रन्थ कवियों ने इन्हीं के आश्रित बनाये हैं। [राजा थे।

भोजदेव (सं० पु०) मालवा के अन्तर्गत एक प्रसिद्ध

भोजन (सं० पु०) ख़ूराक, आहार, खाना।

भोजनीय (वि०) भोजन के योग्य ।

भोजपत्र (सं० पु०) एक वृक्ष की छाल जिसपर प्राचीन समय में पुस्तकें लिखी जाती थीं। [लायक।

भोज्य (सं० पु०) भोजनीय, भोजन के योग्य, खाने

भोड़ल (सं० पु०) अभ्रक, धातु विशेष।

भोता (सं० पु०) कुन्द, कुण्ठित, अतीक्ष्ण।

भोपा (सं० पु०) टोनहा, ओझा, मन्त्र तन्त्र करनेवाला।

भोभीरा (सं० पु०) मूँगा, विद्रुम, प्रवाल।

भोर (सं० पु०) प्रभात, प्रातः, सवेरा। [कम अक्ल।

भोला (वि०) सीधा सादा, निष्कपट, छलहीन, अज्ञान,

भौं (सं० स्त्री०) भृकुटी, भ्रूकुटी, भ्रू।

मुहा०—भौं चढ़ाना = ग़ुस्सा होना। भौं टेढ़ी करना = त्यौरी चढ़ाना। [भूँकना, बकना।

भौंकना (क्रि० अ०) हौं हौं करना, कुत्ते का बोलना,

भौंचाल (सं० पु०) भूमिकंप, भूचाल, भुईंडोल।

भौंर (सं० पु०) भँवर, घुमर, आवर्त, पानी का चक्कर।

भौंरा (सं० पु०) भ्रमर, मधुप, अलि, एक तरह की काली बड़ी मक्खी।

भौंरियाना (क्रि० स०) फिराना, घुमाना।

भौंरी (सं० स्त्री०) घोड़े का एक दोष, भ्रमर की स्त्री।

भौंषना (क्रि० अ०) भौंकना, भूँकना, हौं हौं करना।

भौ (सं० पु०) डर, भय, भीति, त्रास।

भौचक (अव्य०) अयाचक, अचानक, अकस्मात्, हठात्।

भौजाई (सं० स्त्री०) भाभी, बड़े भाई की स्त्री।

भौजी (सं० स्त्री०) भाभी, भौजाई।

भौतिक (सं० पु०) भूत सम्बंधी, अलौकिक।

भौना (क्रि० अ०) फिरना, घूमना। [है।

भौनास (सं० पु०) वह खूँटा जिसमें हाथी बाँधा जाता

भौमवार (सं० पु०) मङ्गलवार।

भ्रंश (सं० पु०) ध्वंस, नाश, बिगाड़, नीचे गिरना।

भ्रम (सं० पु०) मिथ्या ज्ञान, भ्रान्ति, भूल, चूक, संशय, संदेह, पानी का झरना, कुन्द, फूल, भ्रमण, घूमना।

भ्रमण (सं० पु०) फिरना, घूमना, पर्यटन, भाँवर।

भ्रमर (सं० पु०) मधुकर, मधुप, अलि, भौंरा, तिर्मिरी।

भ्रष्ट (वि०) पतित, अधर्मी, धूर्त, दुष्ट।

भ्रष्टता (सं० स्त्री०) दुष्टता, शरारत।

भ्राता (सं० पु०) भाई, भैया, सहोदर।

भ्रातृ (सं० पु०) सगा भाई।

भ्रान्त (वि०) भूला, भटका।

भ्रान्ति (सं० स्त्री०) भ्रम, भूल, चूक, घूमना, भ्रमण।

भ्रामक (सं० पु०) मूर्छा का रोग, मिर्गी, गीदड़, शरीर, चुंबक (वि०) संदेहात्मक, संदेह उत्पन्न करने वाला, घूमनेवाला।

भ्रू (सं० स्त्री०) भृकुटी, भौं, भौंह।

भ्रूण (सं० पु०) गर्भस्थ बालक, स्त्री गर्भ।

भ्रूणहत्या (सं० स्त्री०) गर्भपात, गर्भनाश।

भ्रूभङ्ग (सं०पु०) कटाक्ष, घुड़की, त्योरी चढ़ाना, भौं चढ़ाना।

म

म—भारतीय लिपि का पच्चीसवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

म (सं० पु०) शङ्कर, शिव, चन्द्रमा, शशि, ब्रह्मा, वरुण, भास्कर, सूर्य, यमराज, मधुसूदन, बैकुण्ठ, काल, समय, विष (सं०स्त्री०) लक्ष्मी, माता, माँ, चाँद, वक्र, जादू।

मंका (सं० पु०) माला, सुमिरनी।

मँगती (सं० पु०) माँगनेवाला, भिक्षुक, भिखारी।

मँगनी (सं० स्त्री०) उधार, निस्बत, सगाई, मुसलमानों की सगाई का यही नाम प्रख्यात है।

मँगवाना (क्रि० स०) मँगाना, पास लाने के लिये कहना।

मँगसिर (सं॰पु॰) अगहन, मार्ग शीर्ष नाम का मास विशेष।
मंगाना (क्रि॰ स॰) माँग भेजना, मँगवाना।
मँगूला (सं॰ पु॰) माला गूँथना।
मँगेहर (सं॰ स्त्री॰) माँग, बचनदत्त।
मँजीरा (सं॰ पु॰) एक बाजा विशेष, झाँझ।
मँडुआ (सं॰ पु॰) अन्न विशेष।
मँढ़ना (क्रि॰ स॰) ढकना, छिपाना, लगाना, आवरण करना, ढोल, डफ, आदि बाजों पर चमड़ा लगाना (सं॰ पु॰) ढोलक मढ़ना, आसे पर कागज़ मढ़ना।
मइके (सं॰ पु॰) माता के घर, नैहर, पीहर।
मइत्री (सं॰स्त्री॰) दोस्ती, मित्रता, मुहब्बत।
मकड़ा (सं॰ पु॰) एक कीड़े का नाम जो जाल पूरता है।
मकड़ाना (क्रि॰ अ॰) विरुद्ध चलना, उलटा रहना, काम से जी चुराना।
मकड़ी (सं॰ स्त्री॰) छोटा मकड़ा, जाल पूरनेवाला छोटा कीड़ा।
मकर (सं॰ पु॰) जल में रहनेवाला एक जन्तु, मगर, कामदेव की ध्वजा का चिह्न, बारह राशियों में दसवीं राशि, कुबेर की सम्पत्ति, कपट, चाल, छल, धोखा।
मुहा॰—उसने मकर गाँठ लिया = उसने चाल चली। मकर न कर = छल कपट न कर। यह बड़ा भारी मकरापन्न है = अर्थात् कुबेर के समान सम्पत्तिशाली है। [का चिह्न हो।
मकरकेतु (सं॰ पु॰) कामदेव, जिसके झण्डे पर मकर
मकरध्वज (सं॰ पु॰) कामदेव, चन्द्रोदय रस।
मकरन्द (सं॰ पु॰) मधु, फूल का रस, केशर, कोकिल, मधुकर, पराग, कोकिल, कोयल, भ्रमर, भौंरा।
मकराक्ष (सं॰ पु॰) मगर के समान आँखोंवाला एक राक्षस जो खर का बेटा और रावण का प्रसिद्ध सेनापति था जिसे लंकायुद्ध के समय रामचन्द्रजी ने मारा था। [आभूषण।
मकराकृत (सं॰ पु॰) मकर के समान आकृतिवाला
मकरिन (सं॰ पु॰) समुद्र, सागर।
मकरी (सं॰ स्त्री॰) मछली, मगर की स्त्री, नाकी, जाल पूरनेवाली कीड़ी, मकड़ी।
मकरोना (क्रि॰ स॰) भिगोना, तर करना, गीला करना।
मकुट (सं॰ पु॰) किरीट, सेहरा, मौर, राजाओं का ताज, शिर पर धारण करने का एक आभरण विशेष।
मकुर (सं॰ पु॰) कचनार का पुष्प, आरसी, आइना,
मकुल (सं॰ स्त्री॰) कोपल, कली। [आदर्श।
मकोड़ा (सं॰ पु॰) चिउँटा, बड़ा कीड़ा।
मकोय (सं॰पु॰) एक छोटा पौधा या उसका फल। [माखन।
मक्खन (सं॰पु॰) कच्चे दूध में से निकाला हुआ घी, नवनीत,
मक्खी (सं॰ स्त्री॰) माँखी, मक्षिका।
मुहा॰—किसी की मक्खी उड़ाना = किसी की ख़ुशामद या गुलामी करना। मक्खी मारना = आलस में व्यर्थ बैठे रहना। मक्खी चूस = लोभी, कञ्जूस।
मख (सं॰ पु॰) यज्ञ, ऋतु।
मखन (सं॰ पु॰) माखन, मक्खन, नैनू, कच्चे दूध से निकाला हुआ घृत विशेष। [जाति विशेष।
मखना (सं॰ पु॰) एक प्रकार का छोटा हाथी, हाथी की
मखनिया (सं॰ पु॰) मक्खन बेचनेवाला व्यक्ति।
मखाना (सं॰ पु॰) एक फल विशेष।
मखी (सं॰ स्त्री॰) बन्दूक का घोड़ा जिसके दबाने से फैर हो जाता है, मक्खी, मक्षिका।
मग (सं॰ पु॰) मार्ग, रास्ता, रस्ता, डगर, बाट, राह।
मुहा॰—बाट जोहना = इन्तज़ार करना। बाट दिखाना = मार्ग दिखाना। राह निहारना = मार्ग देखना।
मगध (सं॰ पु॰) बिहार का दक्षिणी भाग मगध देश कहलाता था, बन्दी, भाट (सं॰ स्त्री॰) राजा दिलीप की रानी।
मगधेश्वर (सं॰ पु॰) मगध देश का राजा, जरासंध।
मगन (वि॰) प्रसन्न, मग्न, आनन्दित, निमग्न।
मगनता (सं॰ स्त्री॰) प्रसन्नता, प्रफुल्लता।
मगर (सं॰ पु॰) देखो " मकर "
मगरमच्छ (वि॰) मस्त, स्वतन्त्र। [हो गया है।
मुहा॰—बड़ा मगर मच्छ हो गया है = बड़ा स्वेच्छाचारी
मगरा (वि॰) अभिमानी, घमण्डी, ढीठ, मचलनेवाला।
मगराई (सं॰ स्त्री॰) ढिठाई, धृष्टता, मचलने की क्रिया, स्वेच्छा धर्मरत।
मगरापन (सं॰ पु॰) मचलाई, मगराई, ढीठपन।
मगरी (सं॰ स्त्री॰) मगर की स्त्री, मकरी, मत्स्य विशेष।
मगरेला (सं॰ पु॰) औषधि विशेष, बीज विशेष।
मगसिर (सं॰ पु॰) देखो "माँगसिर"।
मगही (वि॰) मगह का, बनारस ज़िले में होने वाले पान की एक विख्यात जाति।

मगहैया (सं० पु०) मागधी, मगध देशनिवासी, ब्राह्मणों की वह जाति जो मगध देश में रहती थी ।
मगुरी (सं० स्त्री०) मत्स्य विशेष ।
मग्न (वि०) देखो, "मगन" ।
मघना (सं० पु०) सुगन्धि, महक, खुशबू ।
मघवा (सं० पु०) सुरपति, इन्द्र ।
मघा (सं० स्त्री०) नक्षत्र विशेष, दशवाँ नक्षत्र ।
मघोनी (सं० स्त्री०) सची, इन्द्राणी, इन्द्र की स्त्री ।
मङ्गल (सं० पु०) आनन्द, कल्याण, शुभ, अर्थसिद्धि, नवग्रहों में से तीसरा ग्रह, तीसरा दिन (सं० स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, पतिव्रता, हल्दी, प्रसन्नता, सौभाग्यता ।
मङ्गलवार (सं० पु०) भौमवार, मङ्गल का दिन ।
मङ्गलसमाचार (सं० पु०) अच्छा संवाद ।
मङ्गलाचरण (सं० पु०) कार्य सिद्धि के अर्थ इष्ट देव की वन्दना, शुभ कामनार्थ अनुष्ठान, मंगल कृत्य ।
मङ्गलाचार (सं० पु०) विवाहादिक उत्सवों के गीत, उत्सव ।
मङ्गलामुखी (वि०) गाने वाला, गवैया, उत्सवादि समय में मंगल गीत गाने वाली स्त्री, वेश्या, रण्डी ।
मङ्गली (वि०) मंगलकारी, कल्याणदायक, जन्म, अष्टम् और द्वादश स्थान में जिसके मंगल पड़ा हो ।
मङ्गल्य (सं० पु०) बेल, मसूर, जीरा, दधि, चन्दन, स्वर्ण, सिन्दूर, पीपल, नारियल, सफ़ेद चंदन, गोरोचन, कैथ (सं० स्त्री०) जीवन्ती, शाक विशेष ।
मङ्गसिर (सं० पु०) अगहन का महीना, मार्ग शीर्ष ।
मचक (सं० स्त्री०) धीमा दर्द, गाँठ की पीड़ा ।
मचकना (क्रि० अ०) धमकना, चर्राना, पीड़ा पहुँचाना ।
मचकाना (क्रि० अ०) मटकाना, पलक मारना, सेन चलाना, दबाना, दुःख पहुँचाना ।
मचना (क्रि० अ०) होना, रचना, उठाना, किया जाना ।
मचमच (अव्य०) चरमर, मरमर, एक प्रकार की अव्यक्त ध्वनि ।
मचमचाना (क्रि० स०) कँपाना, हिलाना, चर्राना, मचकाना ।
मचलना (क्रि० अ०) अड़ना, दुराग्रह करना, हठ करना, ज़िद करना, अहंकार करना ।
मचलपन (सं० पु०) हट, मगरापन, मगराई, ज़िद ।
मचला (वि०) मगर, ज़िद्दी, हठी, ढीठ, हठीला ।
मचलाई (सं० स्त्री०) देखो "मगराई" ।
मचलाना (क्रि० अ०) वमन का इच्छा होना, बहाना करना, हठ करना ।
मचलाहा (वि०) हठीला, ज़िद्दी, घमण्डी, मग़रूर ।
मचवा (सं० पु०) खाट का पाया ।
मचान (सं० पु०) खेत की रक्षा के वास्ते बनाई हुई ऊँची बैठक जिस पर रखवाली करनेवाला बैठता है ।
मचाना (क्रि० स०) करना, उठाना, रचना, बनाना, आरम्भ करना । [घचापच ।
मचामच (अव्य०) खचाखच, लदालद, परिपूर्ण, झटपट,
मचिया (सं० स्त्री०) छोटी खटिया, पीढ़ी, चौकी, मोढ़ा, कुर्सी । [गारना, मरोरना ।
मचोड़ना (क्रि० स०) निचोड़ना, ऐंठकर पानी निकालना,
मच्छ (सं० पु०) मीन, बड़ी मछली, विष्णु का प्रथमावतार, मत्स्य अवतार ।
मच्छर (सं० पु०) मसा, माछर, मशक, कुटकी ।
मच्छी (सं० स्त्री०) चुमा, मीठी, चुम्बा, मीठिया ।
मछुन्दर (सं० पु०) मूसा, चूहा, मूर्ख ।
मछली (सं० स्त्री०) मच्छी, मछरी, मीन, मत्स्य, पानी में रहने वाला पशु विशेष ।
मछुआ (सं० पु०) धीवर, मछली पकड़ने वाला, कहार ।
मजीठ (सं० पु०) एक वृक्ष विशेष, जिसकी लकड़ी से लाल रङ्ग बनाते हैं । [निकम्मा ।
मजीत (वि०) सस्ता, प्राचीन, पुराना, कुत्सित,
मजीरा (सं० पु०) झाँझ, मँजीरा ।
मजूर (सं० पु०) सेवक, नौकर, काम करने वाला, कमेरा, भृत्य, दास, परिचारक, दैनिक वेतन पर काम करने वाला । [द्रव्य, मिहनताना, दैनिक वेतन ।
मजूरी (सं० स्त्री०) काम करने के बदले में मिला हुआ
मज्जक (सं० पु०) स्नान करने वाला व्यक्ति, नहाने वाला ।
मज्जन (सं० पु०) स्नान, नहान । [का सत ।
मज्जा (सं० पु०) हाड़ के भीतर का गूदा, चर्बी, पेड़
मज्जासार (सं० पु०) जायफल, जाती-फल ।
मज्जित (वि०) डूबा हुआ, नहाया हुआ ।
मझला (वि०) बीच का, मध्यम, मझोला, बिचला ।
मझार (सं० पु०) बीच, मध्य, माँझ । [वार की चीनी ।
मझारी (सं० स्त्री०) बीच की, मँझली, बिचली, दूसरी
मझेली (सं० स्त्री०) मझोली बहली, हलकी गाड़ी ।

मझोला (सं० पु०) बिचला, मध्य का ।
मझोली (सं० स्त्री०) देखो " मझेली " ।
मञ्च (सं० पु०) खाट, मचान, उच्चासन, चबूतरा, चौतरा, ऊँचा स्थान, सिंहासन ।
मञ्चा (सं० पु०) खाट, चौकी, सिंहासन ।
मञ्जन (सं० पु०) मार्जन, माजन, दाँत धोने का चूर्ण विशेष ।
मञ्जना (क्रि० स०) साफ़ करना, फरछाना । [फुनगी ।
मञ्जरी (सं० स्त्री०) बौर, मुकुल, कली, मोती, बेल
मञ्जार (सं० पु०) बिलाव, बिलार, बिड़ाल ।
मञ्जि (सं० स्त्री०) मञ्जरी, बेल, छागी, लता, बकरी ।
मञ्जिका (सं० स्त्री०) छिनाल, वेश्या ।
मञ्जीर (सं० पु०) पाँव में पहिनने का आभरण विशेष, मथानी की रस्सी बाँधने का खम्भा ।
मञ्जु (वि०) मनोहर, सुन्दर, दिलचस्प, ख़ूबसूरत, रमणीय, मनोज्ञ । [व्याकरण के एक ग्रन्थ का नाम ।
मञ्जूषा (सं० स्त्री०) पिटारी, पेटी, सन्दूक़ची, सन्दूक़,
मटक (सं० स्त्री०) चोचला, नखरा, हाव भाव ।
मटकना (क्रि० अ०) पलक मारना, झपकना, आँखें लड़ाना, ताकना, आँख मारना, तिरछी चितवन से देखना, इठलाना, इतराना ।
मटका (सं० पु०) गगरा, घड़ा, कुम्भ । [कटाक्ष करना ।
मटकाना (क्रि० अ०) आँख घुमाना, आँख मारना,
मटकी (सं० स्त्री०) गगरी, घड़िया, ठिलिया ।
मटकोठा (सं० पु०) मिट्टी का बना घर ।
मटर (सं० पु०) एक अनाज का नाम, कविली ।
मटरा (सं० पु०) बड़ी मटर, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।
मटरी (सं० स्त्री०) छोटी मटर, मटर की छीमी ।
मटियाना (क्रि० अ०) टाल देना, आँख झपकाना, सहना, मिट्टी लगाना । [खेत ।
मटियारा (सं० पु०) जुनाऊ खेत, कठोर मिट्टी वाला
मटियाव (सं० पु०) उपेक्षा, उदासीनता, प्रदर्शन, आना कानी, सहना ।
मटुका (सं० पु०) मटका, बड़ी गगरी । [रहित शरीर ।
मट्टी (सं० स्त्री०) माँटी, माटी, मृत्तिका, मिट्टी, जीव-मुहा०—मट्टी करना = नाश करना, बिगाड़ना । मट्टी खाना = मांस खाना । मट्टी देना = गाड़ना, मृतक शरीर को दफ़न करना । मट्टी डालना = दूसरे के दोष को छिपाना, ऐब पोशीदा करना, दोष दुराना । मट्टी पर लड़ना = भूमि के लिये झगड़ना । मट्टी में मिलना = नष्ट हो जाना । मट्टी होना = दुर्बल होना, निबल होना, नाश को प्राप्त होना ।
मट्ठा (सं० पु०) छाछ, मठा, तक्र, मही ।
मठ (सं० पु०) विद्यार्थियों और संन्यासियों के रहने का मकान, पाठशाला, देवालय ।
मठर (सं० पु०) एक मुनि विशेष ।
मठरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का मीठा पकवान ।
मठा (सं० पु०) धीमा, ढीला, शिथिल, मट्ठा, मही, छाछ ।
मठार (सं० पु०) घी का मैल ।
मठोर (सं० पु०) मटका, घड़ा, भाँड़ ।
मड़वा (सं० पु०) वह लकड़ी का खंभा जिसके पास विवाह कृत्य पूरा किया जाता है ।
मड़ियाना (क्रि० स०) पिचकाना, जमाना, चिपकाना ।
मड़ुआ (सं० पु०) एक प्रकार को अन्न ।
मड़ोड़ (सं० पु०) पेट का एक रोग, बल, पेंच ।
मड़ोड़ना (क्रि० अ०) ऐंठना, बल देना, पेट में ऐंठ कर दर्द होना ।
मड़ोड़ा (सं० पु०) मरोरा, शूल की बीमारी ।
मढ़न (सं० स्त्री०) आवरण, ढाँकन, खोल, अस्तर ।
मढ़ना (क्रि० अ०) लेसना, ढाँपना, तोपना, कपड़ा चढ़ाना ।
मढ़ा (सं० पु०) मण्डप, विवाह संस्कार का वह स्थान जहाँ पर वेदी बनाते हैं, यज्ञ स्थल ।
मढ़ी (सं० स्त्री०) कुटी, झोपड़ी, बखरी, छोटा छप्पर, मड़ैया, छोटा घर ।
मढ़ैया (सं० स्त्री०) छोटा छप्पर, छोटी झोंपड़ी ।
मणि (सं० पु०) पाषाण विशेष, जवाहिर, नग ।
मणिक (सं० पु०) पानी का बड़ा बर्तन ।
मणिकर्णिका (सं० स्त्री०) काशी का एक तीर्थ विशेष ।
मणिकार (सं० पु०) जौहरी, चिन्तामणि नाम के न्याय ग्रन्थ का रचयिता । [गले में मणि थी ।
मणिग्रीव (सं० पु०) मणिकन्धर, कुबेर का बेटा जिसके
मणिपूर (सं० पु०) षटचक्र के अन्तर्गत नाभिचक्र स्थित तीसरा चक्र, देश विशेष ।
मणिबन्ध (सं० पु०) कलाई, पौंचा, मध्य स्थान ।

मणिमण्डप (सं० पु०) रत्नमय गृह ।
मणिमय (वि०) मणिनिर्मित, जवाहर से बना हुआ ।
मणिमाल (सं०स्त्री०) मणि की बनी माला, हार, दन्तक्षत विशेष, लक्ष्मी, कान्ति, दीप्ति, प्रकाश ।
मणियान (सं० पु०) कुबेर के एक कर्मचारी का नाम ।
मणियार (सं० पु०) चूड़ी वाला, चूड़ी बनाने और बेचने वाला ।
मणिहार (सं० पु०) चूरी वाला, चुड़िहार, मनिहार ।
मण्ड (सं० पु०) माँड़, जूस, सार, शाक विशेष, कलार, कलवार, मदिरा । [होने की वस्तु ।
मण्डन (सं० पु०) अलङ्कार, भूषण, गहना, सजित
मण्डप (सं० पु०) तृणादि से छाया हुआ गृह, जन विश्राम स्थान, वेदी, विवाहादि उत्सवों में वह सज्जित स्थान जहाँ संस्कार होता है ।
मण्डल (सं० पु०) गोल, कुण्डल,आकाश, गोल स्थान, गोल तम्बू, चक्कर, गोला, चन्द्र सूर्य के बाहर की परिधि, घेरा, देश, जिला, सूबा जिसका चालीस योजन का चारों ओर फैलाव हो, व्याघ्रनख नाम की गन्ध द्रव्य, समूह, सैनिकों की स्थिति, सिपाही वग़ैरः का पैंतरा, फ़ौज की क़िलाबन्दी, कुत्ता, साँप ।
मण्डलाकार(वि०) गोला, गोलाकार, कुण्डली, चक्राकार ।
मण्डलाधीश (सं० पु०) मण्डलेश्वर, छोटा राजा, सूबेदार, चार सौ योजन का मालिक, कमिश्नर ।
मण्डलाना (क्रि० अ०) चक्कर काट कर घूमना, चक्कर करना, चक्कर काटना, घूमना ।
मण्डलिन् (सं० पु०) बिलाव, बिड़ाल, बट वृक्ष, गोनाश ।
मण्डलिया (सं० पु०) कपोत विशेष, परेवा की एक जाति । [गिरोह, मजलिस, गिलोय, गुरुच ।
मण्डली (सं० स्त्री०) समूह, समाज, सभा, थोक,
मण्डलीक (सं० पु०) दश लक्ष की आय वाला ।
मण्डवा (सं० पु०) देखो "मण्डप" ।
मण्डवी (सं० स्त्री०) अन्न विशेष ।
मण्डहारक (सं० पु०) शौण्डिक, कलाल, कलवार ।
मण्डा (वि०) सज्जित, मण्डित, अलङ्कृत, शोभित, एक मिठाई विशेष, शराब, आमला, संदेश ।
मण्डित (वि०) जड़ित, सुशोभित, सज्जित, शोभायमान, लपेटा हुआ, जैनों के एक देवता, बौद्ध-गणाधिप विशेष ।
मण्डियाना (क्रि० अ०) लेई लगाना, कलप करना, मड़ियाना, कलप चढ़ाना ।[अन्नादिक बिकने का बाज़ार ।
मण्डी (सं० स्त्री०) हाट, बज़ार, गोला, गञ्ज, घी
मण्डूक (सं० पु०) भेक, मेढ़क, शोणक, मुनि विशेष ।
मण्डूकी (सं० स्त्री०) ब्राह्मी, मजीठ की लता, प्रगल्भा नारी, मण्डूक पत्नी, होशियार औरत, मेंघी, मेंढ़की ।
मत (सं० पु०) सम्मति, सलाह, अभिप्राय, सिद्धान्त, आशय, रीति, धर्म शास्त्र विचार, धर्मपन्थ, ज्ञान, निषेधवाचक, नहीं ।
मतङ्ग (सं० पु०) हाथी, गज, बादल, एक मुनि का नाम ।
मतना (सं० पु०) एक प्रकार की ईख, ऊख विशेष ।
मतभेद (सं० पु०) विरुद्ध अभिप्राय, सिद्धान्त विरोध ।
मतमतान्तर (वि०) अन्य धर्म, दूसरी राह, दूसरा मार्ग, दूसरा मज़हब ।
मतराना (क्रि० स०) समझाना, मनाना, बुझाना, जनाना, बताना । [मचलना ।
मतलाना (क्रि० अ०) मचलाना, जी घिनाना, जी
मतवाला (वि०) उन्मत्त, माता, मदमाता, अहङ्कारी, मस्त । [में विपरीत ।
मतविरुद्ध (वि०) धर्म विरुद्ध, मजहब के खिलाफ़, धर्म
मतहीन (वि०) बुद्धि हीन, मति हीन, निर्बुद्धि ।
मता (सं० पु०) उपदेश, परामर्श, बिचार, सम्मति, सलाह । [खिलाफ़ राय, विरुद्ध सम्मति ।
मतान्तर (सं० पु०) भिन्न मत, दूसरा मार्ग, और तरह,
मतावलम्बी (सं० पु०) मत पर चलने वाला, मताश्रयी, धर्म मानने वाला, सलाह पर चलने वाला ।
मति (सं० स्त्री०) बुद्धि, समझ, ज्ञान, इच्छा, चाह, स्मृति, स्मरण रखने की शक्ति, मोती, शाक विशेष ।
मतिधीर (वि०) दृढ़ बुद्धि । [उलटी मति ।
मतिभ्रम (सं० पु०) भूल, चूक, अन्यथा, विपरीत बुद्धि,
मतिमन्द (वि०) कम अक़्ल, कुन्द ज़ेहन, मन्द बुद्धि ।
मतिमान (सं० पु०) चतुर, बुद्धिमान, विज्ञ, प्रज्ञावान ।
मतिष्ठ (वि०) अतिशय बुद्धिमान, महान् चतुर ।
मतिहीन (वि०) बे समझ, ना समझ, मूर्ख, निर्बुद्धि, बुद्धिहीन ।
मत्त (वि०) उन्मत्त, मस्त, मतवाला, पागल, बाताह, घमण्डी, धतूरा, कोयल नाम का पक्षी, भैंसा, शराब ।

मत्स (सं० पु०) मीन, मछली, माही, भगवान् का प्रथम अवतार, एक ऋषि विशेष।

मत्सर (सं० पु०) द्वेष, डाह, कुढ़न, ईर्षा, जलन।

मत्सरता (सं० स्त्री०) घमण्डीपन, आत्मधिक्कार विशेष, शहद, गुस्सा, क्रोध, कमीनापन, नीचता, लालचपन, कञ्जूसी।

मत्स्य (सं० स्त्री०) मछली, मच्छ, एक पुराण, अवतार विशेष, भारतीय एक प्राचीन प्रदेश जिसे आजकल दीनाजपुर और रङ्गपुर कहते हैं।

मत्स्यगन्धा (सं० स्त्री०) मच्छोदरी, व्यास की माता, मछेछी का पौधा, सकुलादिनी, पनिसगा, जलपिपली।

मत्स्यवित्ता (सं० स्त्री०) कुटकी।

मत्स्याण्ड (सं० पु०) मछली का अंडा।

मथन (सं० पु०) बिलोवन, मथना, लोड़न, बिडोलन, गड़ेरी का पेड़।

मथना (क्रि० अ०) महना, बिलोना, घी निकालना।

मथनिया (सं० स्त्री०) मथने का दण्डा, दही मथने का यन्त्र, मथानी, रई, महानी।

मथा (सं० पु०) कपाल, शिर, खोपड़ी, मस्तक।

मथानी (सं० स्त्री०) दूध की हाँडी, मटकी, मथनिया, दही मथने की हँड़िया। [हुआ दही।

मथित (वि०) बिलोडित, मट्ठा, छाछ, मही, बिलोया

मथुरा (सं० स्त्री०) सप्त पुरियों में से एक पुरी, श्रीकृष्ण का जन्मस्थान, ब्रजमण्डल का प्रधान नगर, कंस का राजस्थान, मधुपुरी। [ब्राह्मणों की एक जाति।

मथुरिया (वि०) मथुरा निवासी, चौबे ब्राह्मण, माथुर,

मथुरेश (सं० पु०) श्रीकृष्ण चन्द्र, बृजेश।

मथौर (सं० पु०) चन्दा, सूरजमुखी।

मद (सं० पु०) आनन्द, हर्ष, ख़ुशी, हाथी की कनपटी, वृक्षों से चूता हुआ रस, मदिरा, नशा, मस्ती, घमण्ड, गर्व, अहंकार, मोह, वीर्य्य, बीज, कस्तूरी, मुश्क नाफ़ह। [नशीली चीज़ें।

मदक (सं०पु०) अफ़ीम के संयोग से बनाया हुआ नशा,

मदकट (सं० पु०) खाण्ड, चीनी।

मदन (सं० पु०) कामदेव, बसन्त, धतूरा, मैनफल, भौंरा, उड़द, खैर का पेड़, मौलसिरी, शराब, मैना पक्षी।

मदनगोपाल (सं० पु०) श्रीकृष्ण का नाम।

मदनचतुर्दशी (सं० स्त्री०) चैत्र शुक्ला चतुर्दशी, चैत सुदी चौदस। [विशेष।

मदनपाठक (सं० पु०) कोयल, कोकिल, एक पक्षी

मदनबाण (सं० पु०) एक पुष्प विशेष।

मदनमोहन (सं० पु०) श्रीकृष्ण भगवान्।

मदनललित (सं० पु०) एक छन्द विशेष।

मदनशलाका (सं० स्त्री०) सारिका पक्षी, कोकिल, मयना, कोयल। [ग्रह, कौल फूल।

मदनालय (सं० पु०) उभयास्थान, पद्म, लग्न से सातवाँ

मदमाता (वि०) मतवाला, पागल, मत्त, मस्त।

मदयन्ती (सं० स्त्री०) मल्लिका, चमेली। [कलवार।

मदाढय (सं० पु०) कामदेव, मेघ, शराब, कलाल,

मदार (सं० पु०) आक, हस्ती, हाथी, धूर्त्त, शूकर, शहवती, एक राजा का नाम। [वाला, नटवर।

मदारी (सं० पु०) बाज़ीगर, इन्द्रजाली, सँपेरा, साँप

मदालस (सं० पु०) सुस्त, निरुद्यम, आलसी।

मदिक (सं० पु०) अभिमानी, घमण्डी, अहंकारी।

मदिरा (सं० स्त्री०) शराब, मद्य, सुरा, दारू, आसव।

मदीय (वि०) मेरा, हमारा।

मदोन्मत्त (वि०) घमण्डी, मदमाता, मतवाला।

मद्गु (सं० पु०) बगुला, दोगला, वर्ण शङ्कर जाति, नौका, नाव।

मद्गुर (सं० पु०) मङ्गुर नाम की मछली।

मद्य (सं० पु०) मदिरा, शराब, मद, दारू।

मद्यप (सं० पु०) शराबी, मदिरा पीने वाला व्यक्ति।

मद्र (सं० पु०) मारवाड़, हर्ष, आह्लाद, ख़ुशी।

मद्रक (वि०) मारवाड़ी। [नकुल सहदेव की माता।

मद्रसुता (सं० स्त्री०) मद्र राज्य की कन्या, माद्री,

मधु (सं० पु०) मदिरा, पुष्परस, शहद, मधुमास, चैत्र, जीवन्ति नाम का वृक्ष, अशोक वृक्ष।

मधुक (सं० पु०) मधुक नाम का पौधा, चिड़िया, मीठा।

मधुकण्ठ (सं० पु०) कोयल, कोकिल, कोइल।

मधुकर (सं० पु०) भौंरा, भ्रमर, कामी, भृङ्गराज वृक्ष, भीमराज का पेड़।

मधुकरी (सं० स्त्री०) अतिथि भिक्षा।

मधुकोश (सं० पु०) शहद का छत्ता।

मधुगन्ध (सं० पु०) मौलसिरी का वृक्ष।

मधुच्छदा (सं० स्त्री०) मोर की शिखा, बूटी।

मधुज (सं०स्त्री०) पृथिवी, सिता, मोम, ज़मीन, मिसरी ।
मधुजित (सं० पु०) विष्णु, कमलापति ।
मधुतृण (सं० पु०) ईख, ऊख ।
मधुदूत (सं० पु०) आम का पेड़ ।
मधुधातु (वि०) सोना मक्खी, उपधातु विशेष ।
मधुप (सं० पु०) फूलों का रस, शहद, भ्रमर, भौंरा, मधुकर । [हुआ रस ।
मधुपर्क (सं० पु०) दधि, घी और शहद का मिला
मधुपर्णिका (सं० स्त्री०) गिलोय, गुरुच, नील का पौधा ।
मधुपर्श (सं० पु०) पका हुआ रसीला फल । [मधुपुर ।
मधुपुरी (सं० स्त्री०) मथुरा नाम की नगरी, मथुरा,
मधुपुष्प (सं० पु०) महुआ, मौहा ।
मधुबन (सं० पु०) मथुरा के समीप का वन विशेष, सुग्रीव के बाग़ का नाम, कोयल नाम का पक्षी ।
मधुव्रत (सं० पु०) भ्रमर, भौंरा, मधुकर ।
मधुमल (सं० पु०) मोम ।
मधुमाखी (सं० स्त्री०) मधुमक्षिका, शहद की मक्खी ।
मधुमात (सं० स्त्री०) रागिणी विशेष ।
मधुमास (सं० पु०) चैत्र, वसन्त ऋतु का प्रथम मास ।
मधुर (वि०) मीठा, सुस्वादु, प्रिय ।
मधुरता (सं० स्त्री०) मिठास, मीठापन, सुस्वादुता ।
मधुरसा (सं० स्त्री०) दाख, अङ्गूर ।
मधुरा (सं० स्त्री०) मथुरा नगरी, मधुपुरी, सौंफ, काकोली, सतावर । [वनी ।
मधुरी (सं० स्त्री०) मिष्ठा, रसीली, मीठी, प्रिय, सुहा-
मध्य (वि०) माँझ, बीच, भीतर, अन्दर, दर्मियान (सं० स्त्री०) मँझली, जवान औरत, उँगली ।
मध्यदिवस (सं० पु०) मध्याह्न, दोपहर ।
मध्यदेश (सं० पु०) बीच का देश, मध्य स्थान ।
मध्यभाग (सं० पु०) मध्य स्थान, बीचोबीच ।
मध्यम (सं० पु०) स्वर विशेष, राग विशेष, ग्रहों की सामान्य संज्ञा, बीच का वर्ण वृत्ति विशेष, स्त्रीयादि नायिकाओं में से एक ।
मध्यमपाण्डव (सं० पु०) अर्जुन, धनञ्जय, सव्यसाची ।
मध्यमा (सं० स्त्री०) नायिका विशेष, अँगुली विशेष, बीच की उँगली ।
मध्यलोक (सं० पु०) मर्त्यलोक, मनुष्य लोक, पृथिवी ।
मध्यवर्ती (वि०) बिचवैया, मध्यस्थ, बीच में रहने वाला ।
मध्यस्थ (सं० पु०) प्रधान, बीच का, साथी, निर्णय करने वाला ।
मध्यस्थल (सं० पु०) बीच का भाग, कटि भाग, कमर ।
मध्याह्न (सं० पु०) दिन का मध्य भाग, दोपहर, मध्य-दिवस । [जो चालीस सेर की होती है ।
मन (सं०पु०) चित्त, हृदय, दिल, मान विशेष, एक तोल
मनई (सं० स्त्री०) मनुष्य, नर ।
मनका (सं० पु०) माला का दाना, गले की हड्डी ।
मन का ढलकना (क्रि० अ०) मरने के समीप होना ।
मनकामना (सं० स्त्री०) मनोकामना, मन की इच्छा, अभिलाषा, दिली मुराद, ख़्वाहिश ।
मनखरा (सं० पु०) मनफटा, चित्तफटा । [हिम्मतवर ।
मनगड़ा (वि०) बली, शूर, पराक्रमी, बलवान्, साहसी,
मनघटा (सं० पु०) कुएँ की जगत, कुएँ के समीप का चबूतरा ।
मनचला (वि०) चरपरा, चटपटा, शूर, उत्साही ।
मनचोर (वि०) दिल लुभाने वाला, दिलचस्प, मनोहर ।
मनत (सं० स्त्री०) मनौती, मानन, स्वीकार ।
मनता (सं० स्त्री०) मनौती, स्वीकार ।
मनन (सं० पु०) चिन्तन, ध्यान, सुमिरन, ज्ञान, अभ्यास, विचार, भाषण, ध्यान, सोच, धारणा । [ताक़त ।
मननशक्ति (सं० स्त्री०) विचार शक्ति, ग़ौर करने की
मनभाना (क्रि०अ०) भला लगना, सुहाना, पसन्द आना ।
मनभावन (वि०) सुहावन, मनोहर ।
मनमथ (सं० पु०) कामदेव, मदन, कंदर्प ।
मनमाना (वि०) दिल पसन्द, मनचाहा, दिल चाहा ।
मनमारना (क्रि० स०) इच्छा रोकना, चाह को मारना ।
मनमोहन (वि०) मन भावन, मनोहर, दुलार (सं० पु०) श्रीकृष्ण भगवान् ।
मनमौज (सं० पु०) स्वेच्छा, अपमान, घमण्ड, ग़ुरूर ।
मनलाना (सं० पु०) दिल से कार्य करने की क्रिया या भाव । [मन से ।
मनसा (सं० स्त्री०) इच्छा, मनोरथ, विचार, मतलब,
मनसिज (सं० पु०) कामदेव, कंदर्प, अनङ्ग, दिल का पैदा हुआ, दिल का, मन का (वि०) मनमौजी, यथेच्छ ।
मनसेरु (सं०पु०) मनुष्य, नर, पुरुष, मानुष । [तकलीफ़ ।
मनस्ताप (सं० पु०) मानसिक दुःख, मन की पीड़ा, दिली
मनहरण (वि०) चित्त चोर, मनोहर, सुहावना, दिलपसन्द ।

मनहारी (वि०) मन को हरने वाला, मनहैरया, चित्त चुराने वाला।
मनहु (क्रि० वि०) मानो, जानो, जैसे, उपमा बोधक।
मनाग (अव्य०) थोड़ा सा, अल्प, मन करके, कुछ।
मनाना (क्रि० स०) प्रसन्न करना, मनौती करना, समझाना, ख़ुश करना, क्रोध को शान्त करना।
मनार्थ (वि०) विचारार्थ, समझौती।
मनि (सं०पु०) मणि, बहुमूल्य पत्थर, रत्न, जवाहर।
मनित (वि०) अवगत, जाना हुआ, विदित, ज्ञात।
मनिहार (सं० पु०) चुड़िहार, चूड़ी वाला, बिसाती।
मनिहारी(सं० स्त्री०) चूड़ी बेचने वाली स्त्री, बिसातिन, बिसाती की स्त्री।
मनी (फ़ा० सं० पु०) अभिमान। [शरम।
मनीक (सं० स्त्री०) काजल, मूर्खता, अज्ञानता, लज्जा,
मनीषा (सं० स्त्री०) अक़्ल, बुद्धि, प्रज्ञा।[होशियार, दाना।
मनीषी (सं० पु०) बुद्धिमान्, पण्डित, आकिल, चतुर,
मनु (सं० पु०) ब्रह्मापुत्र, मनुष्यों का आदि पुरुष, धर्मशास्त्र का वक्ता, स्मृतिकार मनुष्य, जिन विशेष, प्रत्येक कल्प में चौदह मनु उत्पन्न होते हैं। उनकी संख्या इस प्रकार है—(१) स्वायम्भु, (२) स्वारोचिष, (३) उत्तम, (४) तामस, (५) रैवत, (६) चाक्षुक, (७) वैवस्वत, (८) सावर्णि, (९) दक्षसावर्णि, (१०) ब्रह्मसावर्णि, (११) धर्मसावर्णि, (१२) रुद्रसावर्णि, (१३) देवसावर्णि, (१४) इन्द्रसावर्णि।
मनुज (सं० पु०) मनुवंशीय, मनुष्य, पुरुष, आदमी।
मनुष्य (सं० पु०) पुरुष, आदमी, नर।
मनुष्यगणना (सं० स्त्री०) मर्दुमशुमारी, पुरुषों और स्त्री आदिक जीवों की गिनती, इन्सान शुमारी।
मनुष्यता (सं० स्त्री०) आदमियत, इन्सानियत, पुरुषत्व।
मनुष्यत्व (सं० पु०) मानवधर्म, सौजन्य, आदमीपन, पुरुषत्व। [नियत।
मनुसाई (सं० स्त्री०) मनुष्यता, आदमीपन, इन्सा-
मनुहार (सं० पु०) आदर, सत्कार, सम्मान (सं० स्त्री०) सुन्दरी, मोहनी, मन हरने वाली।
मनूवा (सं० पु०) मन, पियार, बिलार, रूई।
मनो (अव्य०) वैसा ही, समानार्थक।
मनोगत (वि०) मनस्थ, दिल का, मन का।

मनोज्ञ (वि०) सुन्दर, अच्छा, रमणीय, मन के योग्य, स्वरूप, सुडौल, बड़ा जीरा, जायफल, मदिरा, सीधी लकड़ी, बादशाह की कन्या, शराब।
मनोनीत (वि०) मन के योग्य, मन का, दिल पसन्द।
मनोभव (सं० पु०) कामदेव, अनंग, मन्मथ।
मनोभूत (सं० पु०) देखो "मनोभव"।
मनोयोग (सं० पु०) अवधान, ध्यान।
मनोरथ (सं० पु०) इच्छा, बासना, कामना, चाह, अभिलाषा, मुराद, ख़्वाहिश।
मनोरम (वि०) मनोज्ञ, सुन्दर, सुघड़, मनोहर।
मनोरमा (सं० स्त्री०) गोरोचन, बुद्धि, शक्ति विशेष, दिलचस्प, सरस्वती नदी की एक धार, हैहयपति कार्त्तवीर्य की महारानी। [मानसिक भाव।
मनोलौल्य (सं० पु०) मन की तरंग या लहर, ललक,
मनोहत (वि०) व्यग्र, व्याकुल, अस्थिर।
मनोहर (वि०) सुन्दर, सुहावना, मन हर लेने वाला (सं० पु०) कुन्द वृक्ष, सुवर्ण (सं० स्त्री०) जातिपुष्प, मिष्टान्न विशेष, दिलचस्प, ख़ूबसूरत, चमेली।
मनौती (सं० स्त्री०) ज़ामिनी, बिचवई।
मन्तव्य (सं० पु०) मर्म, माननीय, विचारणीय, सलाह, राय, सोचने योग्य।
मन्त्र (सं० पु०) युक्ति, परामर्श, गुप्त उपदेश, लटका, जादू, टोना, छिपी बात, वेदांत विशेष, वेद का एक भाग, जिसमें देवताओं की स्तुति है। [युक्ति।
मन्त्रण (सं० पु०) मंत्र, एकान्त में कर्तव्य अवधारण,
मन्त्रणा (सं० स्त्री०) युक्ति, सम्मति, सलाह।
मन्त्रमहोदधि (सं० पु०) एक मन्त्रशास्त्र की पुस्तक।
मन्त्रज्ञ (सं० पु०) तान्त्रिक, नीतिज्ञ, मंत्र शास्त्रवेत्ता, गुप्तचर, सम्मतिदाता।
मन्त्रित (वि०) मंत्रों द्वारा संस्कारित, सलाह किया हुआ। [उपदेशक।
मन्त्री (वि०) सम्मति दाता, सलाहगीर, वज़ीर, प्रधान,
मन्थ (सं० पु०) कंथन, विडोलन, मथानी, सूर्य, नेत्र रोग विशेष।
मन्थक (सं० पु०) नवनीत, मक्खन।
मन्थज (सं० पु०) मक्खन, माखन, नवनीत।
मन्थन (सं० पु०) बिलोवन, मथन, महन। [वनी।
मन्थनी (सं० स्त्री०) मथानी, मत्थान, महानी, चला-

मन्थर (सं० पु०) कोष्ठ, फल, व्याध ।
मन्थरा (सं० स्त्री०) केकई की दासी, कसुमा ।
मन्द (वि०) सुस्त, काहिल, आलसी, नीच, थोड़ा, कम (सं० पु०) शनि, हाथी की एक जाति, यम, प्रलय । [क्रिया, धीरे चलन ।
मन्दगति (सं० स्त्री०) धीमी चाल, आहिस्ता चलने की
मन्दता (सं० स्त्री०) शिथिलता, मंदत्व, आलस, बुराई, सुस्ती, बदक़िस्मती, दुर्भाग्यता, अभाग्यता ।
मन्दबुद्धि (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, अनाड़ी, अल्पबुद्धि, बुद्धिहीन, कमअक्ल ।
मन्दभाग (वि०) अभागा, कम्बख़्त, दुर्भाग्य ।
मन्द मन्द (क्रि० वि०) धीरे धीरे ।
मन्दर (सं० पु०) मथन पर्वत, मन्थशैल, एक पहाड़ विशेष, स्वर्ग, बहिश्त, हार विशेष, दर्पण, शीशा, आरसी, फूलों का रस, मकरन्द (वि०) स्थूल, मन्द, भारी, मोटा ।
मन्दरा (सं० पु०) गच, बौना, नाटा, ठिगना ।
मन्दा (वि०) धीमा, धीरा, ठंढा, सस्ता, कोमल, कम दाम का ।
मन्दाकिनी (सं० स्त्री०) स्वर्ग की गङ्गा, आकाश गङ्गा ।
मन्दाक्रान्ता (सं० स्त्री०) छन्द विशेष ।
मन्दाग्नि (सं० पु०) बदहज़मी, अजीर्ण, अल्प जठरानल ।
मन्दादर (वि०) कम आदर, अल्प आदर, थोड़ा आदर, निरादर ।
मन्दायु (वि०) थोड़ी आयु, अल्पायु, कमउम्र ।
मन्दार (सं० पु०) स्वर्गीय, पाँच पेड़ में से एक, हाथ, शरीर, पाकजा ।
मन्दिर (सं० पु०) भवन, ग्रह, देवालय, देवगृह, घुटनों का अन्तिम या पिछला भाग, नगर, शहर, अश्वशाला, अस्तबल ।
मन्दिरा (सं० पु०) मँजीरा, झाँझ ।[रावण की रानी ।
मन्दोदरी (सं० स्त्री०) छोटे पेट वाली, पतले पेट की,
मन्दोष्ण (वि०) थोड़ा गरम । [एक प्रकार का बाजा ।
मन्द्र (सं० पु०) हाथी की ध्वनि, हाथी की चिंघाड़,
मन्नत (सं०स्त्री०) मनौती, मनन, स्वीकार । [शम्भो ।
मन्मथारि (सं० पु०) कंदर्प शत्रु, श्री महादेव, शङ्कर,
मन्मन (सं० पु०) गनगनाना, भौंरा की ध्वनि, गदगद ध्वनि ।

मन्वंतर (सं० पु०) एक मनु का राज्यकाल, ३११४४८००० वर्ष । [करना ।
मपना (क्रि० स०) मापना, नापना, तोलना, अन्दाज़
मम (सर्व०) मेरा, हमारा, अपना ।
ममता (सं० स्त्री०) मोह, स्नेह, माया, प्रेम, अभिमान, ग़रूर, घमण्ड, खुदग़र्ज़ी । [का मामा ।
ममियाससुर (सं० पु०) सासु का भाई, पति या स्त्री
ममियासास (सं० स्त्री०) सासु के भाई की स्त्री, पति या पत्नी की मामी । [वाला ।
ममेरा (वि०) मामा सम्बन्धी, मामा से सम्बन्ध रखने
ममोड़ा (वि०) ऐंठन, पीड़ा, मरोड़ा ।
मय (सं० पु०) ऊँट, खच्चर, चिकित्सा, दैत्यों का शिल्पकार, दैत्य विशेष (वि०) युक्त, बना हुआ, साथ, सज्जित ।
मयकल (सं० पु०) पर्वत विशेष ।
मयङ्क (सं० पु०) चन्द्रमा, शशि, चाँद ।
मयतनया (सं० स्त्री०) मय नाम के राक्षस की बेटी, मन्दोदरी, रावण की स्त्री ।
मयत्री (सं० स्त्री०) मिताई, प्रीति, प्यार, स्नेह, दोस्ती ।
मयन (सं० पु०) कामदेव, अनंग, कन्दर्प ।
मयना (सं० स्त्री०) सारी, सारिका, हिमाचल की स्त्री ।
मया (सं० स्त्री०) माया, मोह, प्रीति, ममता ।
मयी (सं० स्त्री०) हेंगा, सरावन, सीढ़ी, एक प्रकार की लकड़ी, जिससे खेत बराबर किया जाता है ।
मयु (सं० पु०) किन्नर, मृग, हरिण, मृगा ।
मयूख (सं० पु०) किरण, दीप्ति, आभा, ज्वाला, शोभा, तेज़, शिखा, चोटी, चन्द्रिका । [केकी ।
मयूर (सं० पु०) मोर नाम का पक्षी, ताऊस, मोर,
मयूरक (सं० पु०) अपामार्ग, तूतिया, लटजीरा ।
मरक (सं० पु०) सर्वव्यापी, महामारी, संक्रामक रोग ।
मरकचा (सं० पु०) बरेंडी, खजरा ।
मरकत (सं० पु०) मणि विशेष, पन्ना, ज़मुर्रद ।
मरकहा (वि०) मारने वाला, मरवैया, मरोक ।
मरखपना (क्रि० अ०) मर मिटना, मर जाना, व्यथा शेष होना, विनष्ट होना ।
मरखाहा (वि०) मारने वाला, हुर पेरने वाला ।
मरगजी (वि०) मुर्झाया हुआ । [शवदाह स्थान ।
मरघट (सं० पु०) श्मशान, मुर्दा जलाने का स्थान,

मर जाना (क्रि० अ०) मरना, प्राण निकल जाना, शक्तिहीन हो जाना, मुरझा जाना, सूख जाना, नष्ट हो जाना। [वस्तु निकालने वाला।

मरजिया (सं० पु०) पनडूबा, नदी आदि से डूब कर

मरण (सं० पु०) मृत्यु, विनाश, प्राण वियोग, मौत, फ़ौत। [प्राणान्त के पास।

मरणप्राय (वि०) मृत्यु के समीप, मरने के निकट,

मरणासन्न (सं० पु०) मृत्यु के सन्निकट।

मरना (क्रि० अ०) जी निकलना, शक्तिहीन होना, प्राण छूटना, मर जाना, किसी की अति अभिलाषा करना।

मरपच (वि०) सड़ा, गन्दा, गला, ख़राब, बुरा, बहुत दुःख सहन, जीर्ण, पुराना। [परिश्रम करना।

मरपचना (क्रि० अ०) अधिक दुःख सहना, महान

मरभूखड़ (वि०) मरभूखा। [पेटू।

मरभूखा (वि०) उपवास, उपास, बिना खाया, खाऊ,

मरम (सं० पु०) आशा, सार, तत्व, भेद, छिपी बात, अभिप्राय, मन्तव्य, रहस्य।

मरमराना (क्रि० अ०) चरचराना, मचमचाना।

मरवाना (क्रि० स०) किसी अन्य के द्वारा मारने का कार्य कराना।

मरवैया (सं० पु०) मृतक, मरने वाला, मरनहार।

मराल (सं० पु०) राजहंस, हंस, मेघ, काजल, बतक, घोड़ा, चिकना, स्वच्छ, साफ़।

मराली (सं० स्त्री०) हंसी, हंसिनी, हंस की मादा।

मरिच (सं० स्त्री०) छोटी मिर्च, काली मिर्च, गोल मिर्च।

मरियल (वि०) दुबला, पतला, कमज़ोर, दुर्बल, निर्बल, निबल।

मरी (सं० स्त्री०) मृत्यु रोग, महामारी, संक्रामक रोग।

मरीच (सं० स्त्री०) देखो "मरिच"।

मरीचि (सं० स्त्री०) किरण, रश्मि (सं० पु०) ऋषि विशेष, ब्रह्मा का बेटा, कृपण, कंजूस, सूम।

मरीचिका (सं० स्त्री०) मृगतृष्णा, जलभ्रम।

मरीचिमाला (सं० स्त्री०) रश्मि समूह, किरणगोट, दीप्ति समुदाय। [शशि।

मरीचिमाली (सं० पु०) सूर्य, भानु, भास्कर, चन्द्र,

मरीची (सं० स्त्री०) देखो "मरीचि"।

मरु (सं० पु०) निर्जल, पानी रहित देश, निर्जल देश, मरुस्थल, मरुआ का पौधा।

मरुआ (सं० पु०) एक सुगन्धित पौधा विशेष।

मरुत् (सं० पु०) वायु, पवन, हवा, देवता।

मरुत्त (सं० पु०) चन्द्र वंशीय राजा परीक्षित का पुत्र।

मरुत्पथ (सं० पु०) आकाश, गगन, अन्तरिक्ष।

मरुत्पुत्र (सं० पु०) भीमसेन, हनुमान, पवनसुत

मरुत्फल (सं० पु०) ओला, बनउरी, घनोपल।

मरुत्सख (सं० पु०) इन्द्र, अग्नि, देवराज।

मरुभूमि (सं० पु०) देखो "मरु"।

मरुस्थल (सं० पु०) देखो "मरु"। [वायुसख।

मरुसख (सं० पु०) देवराज, इन्द्र, अग्नि, अनल,

मरुक (सं० पु०) मृग विशेष, मोर, ताऊस।

मरोड़ (सं० स्त्री०) देखो "मड़ोड़"।

मरोड़ी (सं० स्त्री०) ऐंठन, मरोरी।

मरोलि (सं० पु०) जलजीव, मकर, मगर। [लाड़।

मरोह (सं० स्त्री०) छोह, स्नेह, प्रेम, प्यार, दुलार,

मर्कट (सं० पु०) बानर, कपि, कीश, बन्दर, मकड़ी, मछली, देव, विष विशेष। [का पेड़।

मर्कटी (सं० स्त्री०) बानरी, बन्दरिया, लटजीरा, कञ्जे

मर्कर (सं० पु०) भृङ्गराज नाम का पेड़ (सं० स्त्री०) दरी, भाण्ड, भाँड़, बन्ध्या स्त्री, बाँझ।

मर्जु (सं० स्त्री०) शुद्ध, सफ़ाई (सं० पु०) धोबी, सफ़ाई करने वाली जाति, रजक। [आदमी, इन्सान।

मर्त्य (सं० पु०) मरणधर्मा, मनुष्य, मानव, मनई, पुरुष,

मर्त्यलोक (सं० पु०) मनुष्यलोक, पृथ्वी, संसार।

मर्दक (सं० पु०) एक पौधा विशेष, पँवार (वि०) मर्दन करने वाला, लोढ़ा, मसलने वाला, पीसने वाला।

मर्दन (सं० पु०) शरीर मलना, अङ्गचप्पी करना, मलना, रगड़ना, पीसना, दलना, चूर्ण करना। [हुआ।

मर्दित (वि०) चूर्ण किया हुआ, दलित, चूर्णित, मला

मर्दनिया (सं० पु०) नौकर, सेवक, शरीर में तेल मलने की नौकरी करने वाला। [के जोड़।

मर्म (सं० पु०) मरम, रहस्य, गुप्त भेद, तत्व, शरीर

मर्मज्ञ (वि०) रहस्यज्ञ, तत्त्वज्ञ, मरम जानने वाला, तात्पर्य ज्ञाता, मर्मवेत्ता।

मर्मभित (सं० पु०) मर्म स्थानों को भेदने वाला।

मर्ममिक (वि०) होशियार, दूरन्देश, मर्मज्ञ।

मर्मर (सं० पु०) शब्द विशेष, हरिद्र, हल्दी, सूखे पत्ते का शब्द, खड़खड़ाहट।

मर्मरीक (सं० पु०) दीन, दरिद्र, दुखिया, दुखी, गरीब।
मर्मी (सं० पु०) भेदी, भेद जानने वाला।
मर्यादा (सं० स्त्री०) न्याय, सीमा, प्रतिष्ठा, मान, इज़्ज़त, नियमानुसार रहना, किनारा, हद, टेक। [इज़्ज़तदार।
मर्यादिक (वि०) मानी, प्रतिष्ठित, आदरी, सम्मानी,
मर्शया (सं० पु०) विचार, निश्चय, सलाह, सम्मति, स्मरण।
मर्ष (सं० पु०) क्षमा, शान्ति, सहना, सबर, बर्दाश्त।
मर्षण (सं० पु०) देखो "मर्ष" [संतोष करने वाला।
मर्षित (क्रि० अ०) क्षमायुक्त, अभिमर्दिक, साबिर,
मल (सं० पु०) पाप, विष्ठा, मैल, कर्पूर, बात पित्तादि समूह, स्त्रीपदाभरण, मलिन, कृपणा, गुनाह, मयला, औरतों के पाँव में पहिनने का एक ज़ेवर।
मलकना (क्रि० अ०) मचकना, मटकना, कहार के समान चलना, नखरे से मटक २ कर चलना।
मलग्राही (सं० पु०) भंगी, श्वपच, मेहतर।
मलङ्ग (सं० पु०) पक्षी विशेष।
मलङ्गी (सं० पु०) नोन बनाने वाली जाति विशेष, लोनिया।
मलज (वि०) मल से उत्पन्न, मलोद्भव।
मलत (वि०) मलता, घिसा, सिलपट।
मलद्राविन (सं० पु०) जमालगोटा। [खेमा।
मलन (वि०) मर्दन, दलन, रगड़न (सं० पु०) पटवास,
मलना (क्रि० स०) मींजना, घसना, रगड़ना, मर्दन करना, रगड़ २ कर साफ़ करना।
मलबा (सं० पु०) कूड़ा, करकट, मैल, घास-फूस।
मलभुज (सं० पु०) कौआ, काक। [जो बारीक होता है।
मलमल (सं० पु०) वस्त्र विशेष, एक कपड़े का नाम
मलमास (सं० पु०) अधिमास, लौंद, पुरुषोत्तम मास, अधिक मास जो प्रायः तीसरे वर्ष पड़ता है।
मलमेट (सं० पु०) उजाड़, नाश, सत्यानाश।
मलय (सं० पु०) पर्वत विशेष, उपवन, नन्दन वन, इन्द्र का बाग, नवद्वीपों में एक द्वीप, ऋषभदेव जी का पाँचवाँ पुत्र।
मलयज (सं० पु०) चन्दन, सन्दल, राहु ग्रह।
मलयगिरि (सं० पु०) पहाड़ विशेष, जो दक्षिण में है यहाँ चन्दन अधिकता से पैदा होता है।
मलयागीरी (सं० पु०) चन्दन का रङ्ग, सन्दली रंग।
मलयू (सं० स्त्री०) कठूमरि नामक बूटी, औषधि विशेष।
मलराशि (सं० स्त्री०) पाप की राशि, मल की राशि।
मलवाई (सं० स्त्री०) मलने की क्रिया या उसकी मजदूरी।
मलाई (सं० स्त्री०) दूध की साढ़ी, दूध का सार।
मलाका (सं० स्त्री०) कामिनी, दूती, हस्तिनी, छिनाल, कुटनी, हथिनी। [मलवाना।
मलाना (क्रि० स०) घिसाना, रगड़ाना, मर्दन कराना,
मलिन (वि०) मैला, धुँधला, अस्वच्छ, उदास, मलयुक्त, काला, पापग्रस्त। [मैले मन का।
मलिनचित (वि०) कपटी, दगाबाज़, बुरे दिल का,
मलिनता (सं० स्त्री०) विरसता, अप्रफुल्लता। [हुआ।
मलिनमुख (सं० पु०) क्रूर, खल, म्लान बदन, मुरझाया
मलिनी (सं० स्त्री०) रजस्वला स्त्री, ऋतुमती नारी।
मलिन्द (सं० पु०) भ्रमर, भौंरा, अलि। [पवन, वायु।
मलिम्लुच (सं० स्त्री०) मल मास, तस्कर, अग्नि, चोर,
मलिया (सं० पु०) तेल का पात्र विशेष।
मलीन (वि०) अशुद्ध, मैला, अपवित्र, बुरा, उदास, घबराया हुआ। [घबराहट।
मलीनता (सं० स्त्री०) अशुद्धता, अपवित्रता, उदासी,
मलूक (सं० पु०) एक भाँति का कीड़ा।
मलेछ (सं० पु०) मैली जाति के पुरुष, अशुद्ध भाषा बोलने वाले जिनकी भाषा संस्कृत नहीं है और न हिन्दुओं के शास्त्रों को मानते हैं, वर्णव्यवस्था रहित।
मलेपञ्ज (वि०) दस वर्ष से अधिक उमर वाला घोड़ा।
मल्ल (सं० पु०) बलवान्, पहलवान्, कुश्ती लड़ने वाला, बाहु योद्धा, पात्र, बर्तन, कपोल, गाल, मछली, वर्णसंकर जाति विशेष, देश विशेष (सं० स्त्री०) मालती, मालती की बेल, दृढ़, मज़बूत, सर्व श्रेष्ठ।
मल्लक (सं० पु०) नारियल का पात्र, दिया, दीपक, चिराग, मल्लिभा का फूल।
मल्लक्रीड़ा (सं० स्त्री०) मल्लयुद्ध, व्यायाम विशेष, कुश्ती। [मल्लों की लड़ाई।
मल्लयुद्ध (सं० पु०) भिड़ाभिड़ी, पहलवानों की कुश्ती,
मल्लहम (सं० पु०) एक तरह की दवाई जो फोड़ा होने पर लगाई जाती है। [वसन्त ऋतु की रागिनी।
मल्लार (सं० स्त्री०) रागिनी विशेष, मल्लार, मलार,

मल्लारी (सं० स्त्री०) रागिनी विशेष।
मल्लिक (सं० पु०) हंस विशेष, गाने वालों की एक जाति, बंगाली कायस्थों की एक उपाधि विशेष।
मल्लूर (सं० पु०) बेल, बिल्व, बेल का पेड़।
मल्हार (सं० स्त्री०) रागिनी विशेष, मलार।
मवास (सं० पु०) पाला, शरण, आश्रय, आसरा, भरोसा।
मशक (सं० पु०) मच्छर, मसा, मच्छड़, पखाल (सं० स्त्री०) चमड़े से बना हुआ पानी भरने का थैला।
मशपर्णी (सं० स्त्री०) बनउर्दी, माषपर्णी।
मशहरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का बना हुआ जालीदार वस्त्र जिसे पलंग पर तान देने से मच्छर अन्दर नहीं जा सकते, मसेहरी।
मशान (सं० पु०) कुत्ता, कुक्कुर, श्वान।
मष्ट (अव्य०) चुप, मौन, निश्शब्द, स्थिरता।
मष्टमारना (क्रि० अ०) चुप रहना, स्थिर रहना।
मषि (सं० स्त्री०) स्याही, रोशनाई।
मषिकपी (सं० स्त्री०) दवात, मषि आधार।
मसक (सं० स्त्री०) चमड़े का जलपात्र, पुर।
मसकना (क्रि० अ०) चसना, फटना, टूटना, दरकना, खिल जाना, दबना। [चिरवाना, दरकाना, दबवाना।
मसकाना (क्रि० स०) फड़वाना, तुड़वाना, चीरना,
मसखरी (सं० स्त्री०) दिल्लगी, हँसी, चुलबुलाहट।
मसविंद (सं० स्त्री०) मस्सा, मांस वृद्धि।
मसमसाना (क्रि० अ०) मन ही मन जलना, पिसपिसाना, पितपिताना। [मींजना।
मसलना (क्रि० अ०) कुचलना, रगड़ना, मलना, दबाना,
मसा (सं० पु०) देखो "मसविंद"।
मसान (सं० पु०) मरघट, मुर्दाघाट, श्मशान।
मसानिया (सं० पु०) डोम, डुमार (वि०) श्मशानवासी, मुर्दाघाट पर रहने वाला।
मसिदानी (सं० स्त्री०) दवात।
मसिविंद (सं० पु०) डिठौना।
मसी (सं० स्त्री०) देखो "मषि"।
मसीना (सं० स्त्री०) तीसी, अलसी।
मसीपात्र (सं० पु०) दवात, स्याही रखने का बर्तन।
मसूड़ा (सं० पु०) दाँतों के ऊपर का माँस।
मसूर (सं० पु०) एक अन्न विशेष।
मसूरिया (सं० स्त्री०) चेचक, माता, शीतला, गोटी।
मसोसना (क्रि० अ०) दबाना, मरोड़ना, ऐंठना, निचोड़ना, कुढ़ना, कलपना।
मस्तक (सं० पु०) माथा, शिर, कपाल।
मस्तूल (सं० पु०) नाव के बीच का एक डंडा जिस पर पाल ताना जाता है यह शब्द पोर्तुगाली भाषा का है, जहाज़ का पाल टाँगने का खम्भा।
मस्याधर (सं० पु०) मसीपात्र, मसी का आधार, दवात।
मस्सा (सं० पु०) मसा, मांस वृद्धि।
महँगा (वि०) बहुमूल्यक, बड़े दाम का, बेशकीमत।
महँगी (सं० स्त्री०) अकाल, दुर्भिक्ष, गिरानी, कुसमय।
मह (सं० पु०) उत्सव, तेज, यज्ञ, महिष, शादी, रोशनी, भैंसा।
महक (सं० पु०) पुरुषोत्तम, विष्णु भगवान, नेक आदमी, कछुआ (सं० स्त्री०) सुगन्धि, सुबास, ख़ुशबू।
महकना (क्रि० अ०) सुबास उठना, सुगन्ध आना।
महकाना (क्रि० स०) सुँघाना, बसाना, बास देना।
महकीला (वि०) सुगंधित, सुबासित, सुगन्ध युक्त।
महत् (वि०) श्रेष्ठ, बड़ा, मान्य, माननीय, पूज्यपाद, श्रद्धालु, श्रद्धेय, बड़ाई, प्रतिष्ठा।
महतारी (सं० स्त्री०) माता, माई, अम्मा, वालदा।
महतो (सं० पु०) जाति विशेष, कोइरी, चौधरी, जाति का प्रतिष्ठित व्यक्ति।
महत्व (सं० पु०) श्रेष्ठता, उच्चता, मान, मर्यादा, बड़ाई।
महत्तम (वि०) सबसे बड़ा, अति महत।
महत्तर (सं० पु०) शूद्र, दास, एक की अपेक्षा बड़ा।
महत्ता (सं० स्त्री०) बड़ाई, प्रधानता, प्रधानत्व, श्रेष्ठत्व।
महना (क्रि० स०) मथना, बिलोना, बिलोड़ना।
महन्त (सं० पु०) मठाधीश, गुसाँई अथवा साधुओं का प्रधान, गद्दीधर। [रीति।
महन्ताई (सं० स्त्री०) महन्त का काम, महन्त की
महन्ताना (सं० पु०) परिश्रम के प्रतिफल का धन, मजूरी।
महर (सं० पु०) प्रधान, मुख्य नेता (सं० स्त्री०) भार्या, स्त्री, पत्नी। [धीवँर।
महरा (सं० पु०) कहार, डोली वा पालकी उठाने वाला,
महरी (सं० स्त्री०) कहारी, कहार की स्त्री।
महर्षि (सं० पु०) वेदव्यास आदि बड़े ऋषि, ऋषि श्रेष्ठ।

महर्लोक (सं० पु०) लोक विशेष, सप्त लोकों में से चौथा लोक।
महा (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, निपट, बहुत।
महाकच्छा (सं० पु०) बरुण, पर्वत, पहाड़।
महाकन्द (सं० पु०) लहसुन, मूली, बड़ी प्याज़।
महाकाम (सं०पु०) शिव का द्वारपाल, नन्दीश्वर, हाथी।
महाकपित्थ (सं० पु०) बेल का पेड़।
महाकाय (वि०) बड़े शरीर वाला।
महाकाल (सं० पु०) विष्णु स्वरूप, अखण्ड, दण्डयमान काल, महादेव, शिव पुत्र विशेष, नन्दी, भृङ्गी।
महाकाली (सं०स्त्री०) महाकाल पत्नी, पञ्चवक्त्रा, दुर्गादेवी।
महाकुमारी (सं०स्त्री०) सेवती, गुलाब।
महाकुम्भी (सं० स्त्री०) कर्म फल। [कोढ़ से पीड़ित।
महाकोढ़ (सं० पु०) कुष्ठ विशेष, अतिशय कुष्ठ, महान
महाखाल (सं० पु०) समुद्र की खाड़ी। [तापरोग।
महागद (सं० पु०) ज्वर रोग, बुख़ार की बीमारी,
महागन्ध (सं० पु०) हरिचन्दन, कुरैया का वृक्ष, चन्दन।
महागन्धा (सं० स्त्री०) गुलशंकरी, नागवला, जलवेत।
महागोधूम (सं० पु०) बड़ा गेहूँ, दाऊदी गेहूँ।
महाग्रीव (वि०) बड़ी गर्दन वाला, ऊँट।
महाघोर (वि०) नरक विशेष, डरावना, भयानक, खौफ़नाक, घोर अँधेरा।
महाघोष (वि०) ज़ोर की ध्वनि, काँकड़ा सिंही।
महाज (सं० पु०) प्रसिद्ध, मशहूर, बड़ा बकरा।
महाजन (सं० पु०) साधु, मनु इत्यादि, बड़ा आदमी, धनी, मानी, साहूकार, धनाढ्य, कोठीवाल।
महाजनी (सं० स्त्री०) महाजनों का व्यौपार, कोठी वाली, लेन देन।
महाजम्बू (सं० पु०) बड़ी जामुन, फरेंद जामुन।
महाजाति (सं० स्त्री०) बसन्ती लता, माधवी बेल, बड़ी जात, श्रेष्ठ उत्तम वर्ण।
महातरु (सं० पु०) सेंहुड़ का पेड़।
महातम (सं० पु०) महत्व, उपकारिता, बड़ाई, प्रतिष्ठा, प्रसिद्ध, अत्यन्त अँधेरा, तम विशेष।
महातल (सं० पु०) पाँचवाँ पाताल।
महातीर्थ (सं० पु०) पुण्य स्थल, उत्तम क्षेत्र, पुण्य स्थान, शुभ स्थान।
महातेजा (वि०) प्रतापी, तेजस्वी, भाग्यवान।
महादेव (सं० पु०) शिव, शङ्कर, शम्भु।
महाद्वन्द (सं० पु०) विशेष कलह, वाक्युद्ध, जंगी बाजा।
महाध्वनि (वि०) घोर ध्वनि, ज़ोर की आवाज़, महाघोष।
महाध्वनिक (सं० पु०) हिमालय में जाकर गल मरना।
महान (सं०पु०) महत्व, प्रतिष्ठा (वि०) श्रेष्ठ, बड़ा, मान्य।
महानट (सं० पु०) अद्भुत् नाट्यप्रिय, शिव, महादेव।
महानदी (सं० स्त्री०) गंगा, चित्रोत्पला।
महानन्द (सं० पु०) मोक्ष, मुक्ति, अति आनन्द, निहायत ख़ुशी, परम हर्ष। [सुदी नवमी।
महानवमी (सं० स्त्री०) आश्विन शुक्ला नवमी, असौज
महानस (सं० पु०) रन्धन ग्रह, पाकस्थान, चूल्हे का स्थान, रसोइया, पाचक स्थान, पाकालय, बावरची ख़ाना, अति प्रसन्न, हर्षद।
महानाद (सं० पु०) सिंह, व्याघ्र, हाथी, गज, ऊँट, तेज आवाज़ वाले, घोर ध्वनि करने वाले जीव।
महानिद्रा (सं० स्त्री०) घोर निद्रा, मृत्यु, अचेत नींद जो कभी भंग ही न हो।
महानिम्ब (सं० पु०) बकायन, नैपाली नीम।
महानिशा (सं० स्त्री०) अर्द्ध रात्रि, आधी रात, निशीथ।
महानील (सं० पु०) गूगल, गुग्गल।
महानुभाव (वि०) महाशय, प्रतापी, अनुभवी।
महान्त (सं० पु०) नौ प्रकार की भक्ति करने वाला, सनक सनन्दनादि के समान। [रास्ता, बड़ी सड़क।
महापथ (सं० पु०) चौड़ा मार्ग, प्रधान पथ, ख़ास
महापद्मक (सं० पु०) सर्प विशेष, निधि विशेष।
महापातक (सं० पु०) पाप विशेष या उसका संसर्ग।
महापातकी (सं० पु०) अधर्मी, पापी, महापाप करने वाला, अपराधी। [श्रेष्ठ व्यक्ति।
महापुरुष (सं० पु०) योगी, महात्मा, सज्जन, साधु,
महाप्रभ (वि०) बड़ी चमक वाला, अति चमक वाला, कान्ति पूर्ण, भड़कदार। [अधिक आभायुक्त।
महाप्रभा (सं० स्त्री०) दीप्ति विशेष, निहायत चमक,
महाप्रभु (सं० पु०) परमात्मा, परमेश्वर।
महाप्रलय (सं० पु०) विश्वनाथ, त्रिलोक ध्वंश, सृष्टि का नाश, जो ४३२००००००० वर्षों के बाद होता है।
महाप्रसाद (सं० पु०) देवताओं का भोग, नैवेद्य, मिठाई।

महाप्राया (सं० पु०) पर्वती काक, पहाड़ी कौआ "छ, ऋ, ठ, ढ, थ, ध, फ, श, ष, स, ह" इतने अक्षरों की संज्ञा भी महाप्राया है ।

महाफला (सं०स्त्री०) फरेंदा जामुन, कडुई तोंबी, नेनुआ ।

महाबला (सं० स्त्री०) सहदेवी, सहदेइया, एक पौधा विशेष ।

महाबली (वि०) विशेष बली, परम पराक्रमी ।

महाव्रत (सं० पु०) बारह मास या बारह वर्ष का व्रत ।

महाव्रती (सं० पु०) भगवान, शङ्कर ।

महाब्राह्मण (सं० पु०) निन्दित ब्राह्मण, अन्त्येष्टि कर्म करने वाला ब्राह्मण, महापात्र । [क्रमी, सिपाही ।

महाभा (सं० पु०) शूर वीर, अतिशय योद्धा, महा परा-

महाभारत (सं० पु०) भारत का एक ऐतिहासिक ग्रन्थ जिसमें भारतीय वीर योद्धाओं के घमासान युद्ध का वर्णन पद्य में किया गया है ।

महाभीम (सं० पु०) शान्तनु राजा, भृंगी नामक शिव का द्वार (वि०) डरावना, अति भयानक, निहायत ख़ौफ़नाक । [तेज, वायु, आकाश ।

महाभूत (सं० पु०) महातत्व, तत्व विशेष, पृथ्वी, जल,

महामद (सं० पु०) मत्त हाथी, मस्त हाथी (वि०) बड़ा ख़ुश, अति प्रसन्न ।

महामाया (सं० स्त्री०) अनादि, अविद्या ।

महामारी (सं० स्त्री०) रोग, प्लेग । [समृद्ध ।

महामात्य (वि०) धनवान, प्रधान मंत्री, बड़ा वज़ीर,

महामाया (सं० स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, शक्ति, माता ।

महामुनि (सं० पु०) व्यासादि महर्षि, औषधि, धनियाँ ।

महामूल (सं०पु०) बड़ी प्याज, पाताल गरुड़ी, छुरहटा ।

महामूल्य (वि०) बहुमूल्यवान, बेशक़ीमत ।

महामृत्युञ्जय (सं० पु०) शिव का मन्त्र विशेष ।

महामेदा (सं० पु०) औषधि विशेष ।

महामोही (सं० स्त्री०) धतूरे का पेड़, धतूर वृक्ष ।

महायज्ञ (सं० पु०) वेदपाठादि नित्य क्रिया, वह पाँच हैं—पाठ, हवन, अतिथि पूजा, तर्पण, बलि ।

महायोनेश्वरी(सं०स्त्री०)नागदमनी, नाग दौन का पौधा ।

महारजत (सं० पु०) सुवर्ण, धतूरा, सोना ।

महारण्य (सं०पु०) वृहद्वन, बड़ा जंगल, घना जंगल ।

महारथ (सं० पु०) शिव, दस हज़ार योधाओं का एक नायक, प्रधान योद्धा ।

महारस (सं० पु०) रसराज, कांजी, पारा ।

महाराज (सं० पु०) पूर्व जिन विशेष, नख, सम्राट, राजाधिराज, बड़ा राजा, शाहनशाह ।

महारात्रि (सं० स्त्री०) महा प्रलय रात्रि, असौज सुदी अष्टमी । [राजा की प्रधान रानी ।

महारानी (सं० स्त्री०) महाराजा की स्त्री, पटरानी,

महाराष्ट्र (सं० पु०) बड़ा राष्ट्र, देश विशेष ।

महाराष्ट्री (सं० स्त्री०) मरहठों की भाषा, वहाँ की रहने वाली स्त्री, महाराष्ट्र निवासी स्त्री, वहाँ रहने वाली जाति, वहाँ की भूमि । [सूरत ।

महारूप (सं० पु०) शिव, अति सुन्दर, निहायत ख़ूब-

महारोग (सं० पु०) पाप रोग, दुष्ट रोग, क्रूर रोग, असाध्य रोग, यथा—उन्माद, त्वगदोष, राजयक्ष्मा, श्वास, मधुमेह, भगन्दर, उदर, अश्मरी, इनकी संख्या उपरोक्त अनुसार आठ हैं ।

महारौरव (सं० पु०) नरक विशेष, बड़ा भारी नरक ।

महार्घ्य (वि०) मूल्यवान, बहुमूल्य, बेशक़ीमती ।

महार्णव (सं० पु०) शिव, महासमुद्र, बड़ा सागर, महासागर ।

महालक्ष्मी (सं० स्त्री०) राधा, श्रीकृष्ण शक्ति, सम्पत्ति, सम्पदा, आठ भुजावाली देवी, लक्ष्मी । [का कृष्ण पक्ष ।

महालय (सं० पु०) विहार, तीर्थ, ईश्वराश्रय, आश्विन

महालोल (सं० पु०) काक, कौआ ।

महालोह (सं० पु०) अयस्कान्त, चुम्बक, मक़नातीस ।

महावट (सं०स्त्री०) पौष माघ की वर्षा ।

महावत (सं० पु०) हाथी चलाने वाला, फ़ीलवान ।

महावर (सं० पु०) लाख का रंग, लाखी रंग ।

महावरा (सं०स्त्री०) दूब, दूबी नाम की घास ।

महावराह (सं० पु०) वराह भगवान् का अवतार ।

महाविद्या (सं०स्त्री०)देवी विशेष, दश महाकाली (१) काली, (२) तारा, (३) षोडशी, (४) भुवनेश्वरी, (५) भैरवी, (६) छिन्नमस्ता, (७) धूमावती, (८) बगलामुखी, (९) मातंगी, (१०) कमलात्मिका ।

महाविषुव (सं० पु०) सूर्य का मेष राशि में जाना ।

महावीर (सं० पु०) गरुड़, शूर, सिंह, महमाल, वज्र, श्वेत तुरंग, कोकिल, धनुर्धर, लक्ष्मण, अंगद, हनुमान, वीर विशेष ।

महाशय (वि०) महापुरुष, महोदय, महानुभाव ।

महाशालि (सं० पु०) काला धान।
महाशुक्ल (सं० स्त्री०) सरस्वती देवी, अति श्वेत वर्ण वाली स्त्री। [चाँद।
महाशुभ (वि०) अति श्वेत वर्ण युक्त, चन्द्रमा, शशि
महाशूद्र (सं० पु०) आभीर, अहीर, गोप, ग्वाला।
महाशूद्रा (सं० स्त्री०) गोप स्त्री, अहीरी, अभीरी।
महाश्वेता (सं० स्त्री०) सरस्वती, महाशुक्ला, कादम्बरी का एक पात्र।
महासाहस (सं० पु०) निधड़क, निर्भय।
महात्मा (वि०) महाशय, महानुभाव, धार्मिक, श्रेष्ठ, उत्तम। [महत्तत्व।
महान (वि०) बड़ा, श्रेष्ठ, माननीय, उत्तम (सं० पु०)
महिका (सं० स्त्री०) हिम, बर्फ़।
महित (वि०) पूजित, पूजा किया हुआ, पूज्य, ठीक।
महिदेव (सं० पु०) भूदेव, ब्राह्मण, विप्र।[पृथ्वीपाल।
महिपाल (सं० पु०) राजा, नृप, अधिपति, पृथ्वीपति,
महिमा (सं० स्त्री०) प्रशंसा, बड़ाई, महत्व।
महिला (सं० स्त्री०) नारी, स्त्री, औरत, मालकांगुन।
महिष (सं० पु०) भैंसा, पशु विशेष। [रानी।
महीषी (सं० स्त्री०) भैंस, पटरानी, महारानी, बड़ी
महिषेश (सं०पु०) यमराज. भैंसे का स्वामी, महिषासुर।
महिसुर (सं०पु०) ब्राह्मण, चार वर्णों में प्रथम वर्ण।
मही (सं० स्त्री०) भू, भूमि, धरती, धरणी, पृथ्वी (सं० पु०) मट्ठा।
महीतल (सं० पु०) भूमितल, पृथ्वीतल। [सिक आय।
महीना (सं० पु०) मास, माह या उसकी मज़दूरी, मा-
महीप (सं० पु०) राजा, बादशाह, नरेश, भूपति।
महीपति (सं० पु०) देखो "महीप"।
महीभुज (सं० पु०) राजा, बादशाह, नरेश।
महीभृत् (सं० पु०)पर्वत, राजा।
महीरुह (सं० पु०) वृक्ष, पेड़, तरुवर, दरख़्त।
महीश (सं० पु०) राजा, नृपति।
महीसुर (सं० पु०) ब्राह्मण, भूदेव, भूसुर।
महुआ (सं० पु०) वृक्ष विशेष, मधुक।
महूरत (सं० पु०) दो घड़ी का शुभ समय।
महेन्द्र (सं० पु०) विष्णु, इन्द्र, जम्बूद्वीप का पहाड़, मुख्य राजा, इन्द्र, देवराज।
महेन्द्रनगरी (सं० स्त्री०) अमरावती, इन्द्रपुरी।
महेरी (सं० स्त्री०) महेर, खीर, पायस, मट्ठा में बनाई हुई खीर।
महेला (सं० स्त्री०) स्त्री, नारी (सं० पु०) पकाया हुआ लोबिया, घोड़े का भोजन विशेष।
महेश (सं० पु०) शिव, महादेव।
महेश्वर (सं० पु०) महादेव, शङ्कर, महाप्रभु।
महेश्वरी (सं० स्त्री०) ईश्वरी, पार्वती, देवी, गिरजा, बनियों की एक जाति।
महेष्वास (सं० पु०) महाधनुर्धारी, बड़ा तीरन्दाज़।
महैला (सं० स्त्री०) बड़ी इलायची, स्थूलैला।
महोक्ष (सं० पु०) बड़ा बैल, नन्दिकेश्वर, साँड़, बैल।
महोख (सं० पु०) महोखा, पक्षी विशेष।
महोखा (सं० पु०) पक्षी विशेष।
महोत्पल (सं० पु०) कमल, पद्म, कँवल।
महोत्सव (सं० पु०) बड़ा दिन, ख़ुशी का जलसा, महा प्रसन्नता का दिन, विशेष अधिवेशन।
महोदधि (सं० पु०) समुद्र, सागर, बहर।
महोदय (सं० पु०) महाशय, महानुभाव, श्रेष्ठ, अहंकार, ग़रूर, कन्नौज, कान्यकुब्ज देश।
महोदरी (सं० स्त्री०) महा सतावरी, बड़ी छतावरी।
महोन्नत (सं० पु०) ताड़ का पेड़, ताल वृक्ष, अत्युन्नत।
महोरग (सं० पु०) नगर मूल, नगर कन्द, नगर की जड़, सूर्यगण विशेष, बड़ा साँप।
महोर्ग्री (सं० स्त्री०) बड़ी भटकटैया।
महोसा (सं० पु०) लहसुन, तिल।
महौजस (वि०) अति तेजस्वी, सामर्थ, चमकीला, यशस्वी, यक़बालमन्द, शक्तिशाली।
महौषध (सं० पु०) अतीस, उत्तम औषधि।
महौषधि (सं० स्त्री०) मुण्डी, लहसुन, दूब, लाजवन्ती बेल, नहाने की औषधि, सहदेई, ब्राह्मी, महाबला आदि। [निवारण, मत, नहीं।
मा (सं० स्त्री०) शोभा, लक्ष्मी, माता, माई, मान,
माई (सं० स्त्री०) माँ की भावज, मामा की पत्नी, मामी।
माँ (सं० स्त्री०) माता, मा, माई, अम्मा, मैया (अव्य०) मध्य, बीच, माँझ।
माँग (सं० स्त्री०) केश विन्यास, बचन दान, याचन, नारियों के शिर का मध्य भाग जहाँ से बाल दोनों ओर को पृथक् किए जाते हैं, और उसमें सिन्दूर

लगाया जाता है, वह कुमारी लड़की जिसकी शादी की बातचीत हुई हो, चाह, आवश्यक।
माँग चिकनी (सं० स्त्री०) पक्षी विशेष। [दाम देना।
माँग देना (क्रि० स०) उधार देना, मँगनई में देना, बिना
माँगना (क्रि० स०) याचना, चाहना, उधार लेना, बेमूल्य लेना।
माँगनी (सं० स्त्री०) वाग्दान देना, वचन देना, प्रतिज्ञा बद्ध हो जाना, उधार का व्यवहार, मँगनई।
माँगलेना (क्रि० स०) चाहना, उधार लेना, याचना करना।
माँज (सं० पु०) पीव, कच्चा ख़ून, बिगड़ा रक्त, मवाद जो फोड़े के पकने पर निकलती है, घाव का घटाव।
माँजना (क्रि० स०) साफ़ करना, उज्जलना, स्वच्छ करना, पवित्र करना, जूठन दूर करना।
माँजा (सं० पु०) बर्सात का पहला जल।
माँझ (अव्य०) बीच, मध्य, अन्दर, अन्तर, में।
माँझन (सं० स्त्री०) कान्ति, शोभा, आभा, सजधज, ठाट बाट। [मसाला।
माँझा (सं० पु०) पतङ्ग का डोरा या उस पर रगड़ने का
माँझी (सं० पु०) नौका चलाने वाला, नाविक, मल्लाह, कर्णधार, केवट, नाव को चलाने वाला।
माँड़ (सं०स्त्री०) माण्ड, चावलों का पतला भात, कलप, बीज, नए कपड़ों में लगा हुआ मिल का मसाला।
माँड़ना (क्रि० स०) मलना, कलप देना, हड्डी को बैठा कर ठीक करना, लपेटना, इकट्ठा करना।
माँड़ा (सं०पु०) एक प्रकार की रोटी, कारपट्टिका विशेष।
माँड़ी (सं० स्त्री०) कलप, लेई, लगाव, माण्ड, सुन्दरता के वास्ते मसाला विशेष।
माँढ़ा (सं० पु०) यज्ञस्थान, मण्डप, माँडवा, देवग्रह।
माँद (सं० स्त्री०) खोह, गुफ़ा, ग्रह, पशुशाला।
माँदा (वि०) बीमार, थका।
माँस (सं० पु०) मांस, गोश्त, पलल, आमिष।
माँसल (वि०) मोटा, ताज़ा, स्थूल, भारी, हृष्ट पुष्ट।
माँसाद (वि०) मांसाहारी, मांस खाने वाला, मांस भोग, मांस भक्षी। [मांसाहार करने वाले।
माँसाहारी (सं० पु०) मांस खाने वाला, मांस-भक्षक,
माँहि (अव्य०) मध्य, बीच, में, अन्तर।
माकन्द (सं० पु०) आम, आम्र, रसाल, चूत, सहकार।
माखड़ा (वि०) निर्बुद्धि, मूर्ख, ज्ञान रहित, अज्ञान, अबोध, मन्दबुद्धि। [माँखन।
माखन (सं० पु०) कच्चे दूध से निकाला हुआ घी, मक्खन,
मागध (सं० पु०) हाथ से बाजा बजाने वाला भाट, चारण, चोबदार (वि०) मगध देश में उत्पन्न।
माघ (सं० पु०) हेमन्त ऋतु का आरम्भिक महीना, फाल्गुन से पूर्व का मास, एक मास विशेष, माह, संस्कृत का एक प्रमुख कवि माघ काव्य का निर्माता व उनकी बनाई पुस्तक।
माचा (सं० पु०) खाट, मञ्च, पलंग, सोने के वास्ते ऊँचा बनाया हुआ आसन, स्थान।
माची (सं० स्त्री०) खटोली, खटोलिया, छोटी खाट।
माछर (सं० पु०) मशक, मच्छड़, डाँस, मसा, माँछर।
माछी (सं० स्त्री०) मक्षिका, माँखी, मक्खी, कीट विशेष।
माजाई (सं० स्त्री०) माता से उत्पन्न, सहोदरा।
मुहा०—मा जाई=बहिन, भाई।
माजू (सं० पु०) माजूफल नाम की औषधि।
माझधार (सं० पु०) कठिनाई में, मध्य में, बीच धार में, अनाश्रितावस्था।
माटी (सं० स्त्री०) मृत्तिका, मट्टी, मिट्टी। [दही।
माठा (सं० पु०) छाछ, मट्ठा, मही, घृत निकाला हुआ
माठू (वि०) अद्भुत, कौतुकी, ठठोल, हँसोड़।
माड़नी (सं० स्त्री०) माँड़ी, कलप, लेई, पतला लगाव।
माड़िया (वि०) पतला, बारीक, निबल, दुर्बल, बलहीन, अशक्त। [विशेष, वेदी।
माड़ौ (सं० पु०) मड़वा, मण्डप, सजाया हुआ स्थान
माणवक (सं० पु०) बीस लड़ी का हार, उपनयन किया हुआ ब्राह्मण, बालक, बटु। [का जवाहिर।
माणिक (सं० पु०) मणि विशेष, रत्न विशेष, एक प्रकार
माणिका (सं० पु०) एक प्रकार का रत्न, मणि, जवाहिर विशेष।
माणिक्य (सं० पु०) रत्न विशेष।
मातं पुर्सी (सं० स्त्री०) किसी नातेदार के यहाँ किसी की मृत्यु होने पर समवेदना प्रकाशित करने जाना।
मात (सं० स्त्री०) माता, मा, मात्रा, स्वर, वर्ण, स्वर का आकार जो वर्णों के साथ मिलता है, हार, पराजय।

मुहा०—उसने उससे मात खाई=अर्थात् वह उससे पराजित हो गया।

मातङ्ग (सं० पु०) हाथी, गज, एक मुनि विशेष।

मातङ्गी (सं० स्त्री०) नवीं महा विद्या।

मातना (क्रि० अ०) मतवाला होना, बावला होना, पागल होना, बेहोश होना।

मातलि (सं० पु०) इन्द्र के रथ को हांकने वाला सारथी, सुमुख नामक नाग के श्वशुर या उनकी पत्नी के पिता।

माता (सं० स्त्री०) जननी, माँ, माई, अम्मा।

मातामह (सं० पु०) नाना, माता का पिता, पिता का श्वशुर। [सासु।

मातामही (सं० स्त्री०) नानी, माँ की माँ, पिता की

मातु (सं० स्त्री०) देखो "माता"।

मातुल (सं० पु०) माता का भाई, मामा, पिता का साला। [स्वल्प, न्यून।

मात्र (अव्य०) अल्प, थोड़ा, बस, इतना ही, किञ्चित,

मात्रा (सं० स्त्री०) परिमाण, स्वर, रेखा, चिह्न, मोताद, ख़ूराक, एक बार खाने का परिमाण।

मात्सर्य (सं० पु०) जलन, ईर्षा, डाह, द्वेष।

माथा (सं० पु०) मस्तक, ललाट, सिर के आगे का हिस्सा।

मुहा०—माथा ठनकना=अनिष्ट का अनुमान होना, हानि का सन्देह या भय होना। माथा रगड़ना=विनय करना, प्रार्थना करना, नम्रता से पेश आना, ख़ुशामद करना, चिरौरी करना। माथे पर चढ़ाना=आदर करना, सम्मान करना, अधिक मानना, बड़ी इज़्ज़त करना। माथे लेना=समान बनाना, बराबर करना, एकसा बनाना।

माथुर (सं० पु०) मथुरा का रहने वाला व्यक्ति, ब्राह्मण और क्षत्रियों की भिन्न भिन्न जाति, ब्राह्मणों की जाति वाले चौबे या मथुरावासी कहाते हैं।

मादक (सं० पु०) नशीली द्रव्य, अमली वस्तु, बेहोश करने वाली चीज़।

मादकता (सं० स्त्री०) नशा, अमल, सरूर।

मादा (सं० स्त्री०) जानवरों का जोड़ा पूरा करने वाली, जानवरों की स्त्री। [की पत्नी।

माद्री (सं० स्त्री०) मद्र देश की रानी, राजा पाण्डु

माधव (सं० पु०) किरातार्जुनीय ग्रन्थ का टीका करने वाला व्यक्ति विशेष, कृष्ण, विष्णु, बसन्त ऋतु, बैसाख का महीना।

माधवाचार्य (सं० पु०) सायण के भाई, वेदों के भाष्य-कर्ता, जैमिनि न्यायमाला के रचयिता।

माधवी (सं० स्त्री०) लता विशेष, बसन्ती नाम की बेल। [सुस्वादुता

माधुर्य (सं० पु०) मीठापन, मिठास, मिष्टता, मधुरता,

माध्वी (सं० स्त्री०) महुए की बनी शराब, सुरा, मद्य।

मान (सं० पु०) सम्मान, इज़्ज़त, आदर, प्रतिष्ठा, यश, कीर्ति, बड़ाई, महत्ता, श्रेष्ठता।

मानता (सं० पु०) प्रण, प्रतिज्ञा, संकल्प, मान, प्रतिष्ठा।

मानना (क्रि० स०) प्रण करना, स्वीकार करना, आदर करना, प्रेम करना, इज़्ज़त करना, मोहब्बत करना।

माननीय (वि०) प्रतिष्ठित, मान्य, पूज्य, श्रेष्ठ, आदरणीय, सम्मानीय, पूजनीय।

मानव (सं० पु०) मनुज, मनुष्य, पुरुष, नर, आदमी।

मानस (सं० पु०) मन, हृदय, दिल, मनसा, इरादा, हार्दिक विचार।

मान सम्मान (सं० पु०) आदर, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त।

मानसिंह (सं० पु०) एक प्रतिष्ठ राजा, राजा विशेष, जयपुर का राजा, अकबर के यहाँ का एक विख्यात सरदार। [दो।

मानहु (अव्य०) मानो (क्रि० स०) जानो, समझो, रहने

मानिक (सं० पु०) मणिक, रत्न।

मानिक जोड़ (सं० पु०) पक्षी विशेष, जीव विशेष।

मानिनी (सं० स्त्री०) मान्यवती, मानवती, अभिमानिनी, अहंकार करने वाली स्त्री।

मानी (सं० पु०) प्रतिष्ठित, मान्य, अभिमानी, अहंकारी।

मानुष(सं०पु०)मनुष्य,पुरुष,मानव,मनुज, आदमी,इन्सान।

मानुष्य (सं० पु०)मनुष्यत्व, आदमियत,पुरुषपन, पौरुष।

मानो (क्रि० स०) जानो, समझो, स्वीकार करो, बूझो, ज्ञात करो (सं० पु०) बिल्ली, बिलाव, बिड़ाल (अव्य०) इव, यथा, जैसे।

मान्य (सं० पु०) पूज्य, मानने योग्य।

मान्यता (सं० स्त्री०) सत्कार, सम्मान, पूजा, प्रतिष्ठा।

माप (सं० पु०) नाप, परिमाण, तौल, मान, अन्दाज़।

मापना (क्रि० स०) नापना, तौलना, अन्दाज़ करना, उठाना, परिमाण करना।

मा बाप (सं० पु०) माता पिता, माई बाप, वालिद वालदैन ।
मामा (सं० पु०) माँ का भाई, पिता का साला ।
मामी (सं० स्त्री०) देखो "माई" । [करना ।
मामीपीना (क्रि० अ०) पक्षपात करना, ज़िद खींचना, हठ
मामू (सं० पु०) देखो "मामा" ।
माया (सं० स्त्री०) सांसारिक, जाल, मोह, मया, अनुकम्पा, कृपा, करुणा, प्रेम, स्नेह, छल, झूठ, कपट, धोखा, दग़ा, सम्पत्ति, दुनियावी दौलत, धन, द्रव्य, गुलाबी, योगमाया, इन्द्रजाल विद्या, शक्ति ।
मायाकृत (वि०) माया से निर्मित, जाली, झूठा, माया द्वारा बनाया हुआ । [ईश, ईश्वर ।
मायापति (सं० पु०) परमात्मा, विष्णु, भगवान्, दैव,
मायावी (वि०) छली, कपटी, जालसाज़, राक्षस ।
मायिक (सं० पु०) जादूगर, ऐन्द्रजालिक, नट, नज़रबन्दी का तमाशा करने वाला, बाज़ीगर, मदारी ।
मायी (सं० पु०) माया करने वाला, माया का स्वामी ।
मार (सं० पु०) कामदेव, मन्मथ, कन्दर्प, अनङ्ग (सं० स्त्री०) युद्ध, लड़ाई, प्रहार, झगड़ा, दंगा, बखेड़ा । [मारना कूटना, धुनना धुनाना ।
मारकुटाई (सं० स्त्री०) मारपीट, गुत्थमगुत्था, गुथागुथी,
मारकेश (सं० पु०) लग्न के दूसरे या सातवें ग्रह का स्वामी, शारीरिक कष्ट देने वाले ग्रह, मारक ग्रह ।
मारखाना (क्रि० अ०) पछड़ना, हार जाना, गिर पड़ना, गिरना ।
मारग (सं० पु०) पथ, क़ायदा, मार्ग, नियम, डगर, मत, धर्म सिद्धान्त, धर्म विचार ।
मार गिराना (क्रि० स०) पछाड़ना, गिराना, हरा देना, गिरा देना, पराजित कर देना ।[करना, हानि पहुँचाना ।
मारना (क्रि० स०) पीटना, दुःख देना, बिगाड़ना, नष्ट
मार पड़ना (क्रि० अ०) पिटना, कुटना, मारा जाना ।
मारपीट (सं० स्त्री०) लड़ाई झगड़ा, मारामारी, लड़ाई भिड़ाई, झगड़ा टंटा । [सताना, संहार करना ।
मार मारना (क्रि० स०) अघात पहुँचाना, दुःख देना,
मार लाना (क्रि० स०) मार कर ले आना, छीन लाना, लूट लाना ।
मार लेना (क्रि० स०) मारना, जीतना ।
मार हटाना (क्रि० स०) जीत लेना, मार कर हटा देना, पराजित कर विजय प्राप्त कर लेना ।
मारात्मक (सं० पु०) हिंसक, हिंस्र, मारने वाला ।
मारा पड़ना (क्रि० अ०) मारा जाना, हानि होना, सताया जाना । [व्यर्थ घूमना, निराश्रित होना ।
मारामारा फिरना (क्रि० अ०) डवाँडोल होना, अस्थिर,
मारी (सं० स्त्री०) मृत्यु, मौत, फ़ौत, मृत्युदाता रोग, प्लेग आदि । [राक्षस विशेष ।
मारीच (सं० पु०) रावण का मामा, ताड़का का बेटा,
मारुत (सं० पु०) वायु, हवा, पवन, बयार, पौन ।
मारुतसुत (सं० पु०) हनुमान, महावीर, पवनसुत, भीमसेन ।
मारुतात्मज (सं० पु०) देखो "मारुतसुत" ।
मारू (सं० पु०) लड़ाई का बाजा, राग विशेष, लड़ाई में बजाने का राग (सं० स्त्री०) नल की पुत्रवधू ।
मारे (अव्य०) कारण, निमित्त, से । [लड़ाई से ।
मुहा०—धूप के मारे=धूप से । लड़ाई के मारे=
मार्ग (सं० पु०) देखो "मारग" ।
मार्गण (सं० पु०) बाण, तीर, शर ।
मार्गशीर्ष (सं० पु०) अगहन, मार्गशिर, मगशिर ।
मार्जन (सं० पु०) परिष्कार करना, शोधन, इधर उधर छोड़ा हुआ स्थान । [बिड़ाल ।
मार्जार (सं० पु०) बिलाई, बिल्ली, बिलाव, मंजार,
माल (सं० पु०) पहलवान, योद्धा, मल्ल, पट्ठा, जवान, द्रव्य, धन, असबाब ।
मालगुज़ारी (सं० स्त्री०) राजस्व, लगान, भूमिकर, महसूल, जो खेत के लिये राजा या ज़मींदार को दिया जाय ।
मालती (सं० स्त्री०) पुष्प विशेष, लता विशेष ।
मालपुआ (सं० पु०) पकवान विशेष, मीठी पूरी ।
माला (सं० स्त्री०) सुमरनी, जपनी, पुष्पहार, आभरण विशेष । [माली, पुष्पों का व्यापारी ।
मालाकार (सं० पु०) माली, बाग़बान, माला बनाने
मालादीपक (सं० पु०) अर्थालङ्कार विशेष ।
मालिन (सं० स्त्री०) माली की स्त्री, मालाकार की जोरू, माला बेचने या बनाने वाली । [चता ।
मालिन्य (वि०) मलीनता, मैलापन, अस्वच्छता, अशौ-
माली (सं० पु०) देखो "मालाकार" ।
माल्य (सं० पु०) माला, पुष्पहार ।
मावस (सं० पु०) अमावस्या, मास का अर्द्ध भाग, कृष्ण पक्ष की अन्तिम तिथि ।

मावा (सं० स्त्री०) आहार, अण्डे का पीलापन, खोया, ख़मीर, औंटा कर जलाया हुआ दुग्ध ।
माश (सं० पु०) उरद, उर्द ।
माशा (सं० पु०) तौल विशेष, तोले का बारहवाँ भाग ।
माशूक़ (अ० सं० पु०) प्यारा, प्रिय, महबूब ।
माशूक़ा (अ० सं० स्त्री०) प्यारी, प्रिया, महबूबा ।
माष (सं० पु०) देखो "माश" ।
माषपर्णी (सं० स्त्री०) जंगली उड़द, वन उर्द ।
माषबरी (सं० स्त्री०) बरी, मुँगौड़ी ।
माषा (सं० पु०) देखो "माशा" ।
माषीण (सं० पु०) माष भवन, योग्य क्षेत्र, माष सम्बन्धी, वह खेत जिसमें उर्द पैदा हो । [काल, मांस, गोश्त ।
मास (सं० पु०) महीना, माह, तीस दिन का नियत
मासकबार (सं० पु०) महीने का अन्तिम दिवस, मासिक विवरण, माहवारी नक़शा (यह पुर्तगाल की भाषा का शब्द है ।)
मासन (सं० पु०) सोमराजी, दवाई विशेष ।
मासर (सं० पु०) भक्त, समुद्भव, माण्ड ।
मासान्त (सं० पु०) पूर्णिमा, संक्रान्ति, मास का अन्तिम दिन, मास के अन्त की तिथि ।
मासिक (वि०) मास सम्बन्धीय, माहवारी, तलब ।
मासी (सं० स्त्री०) माँ की बहिन, मावसी, मौसी ।
मासुरी (सं० स्त्री०) दाढ़ी, श्मश्रू ।
मासूम (वि०) छोटा, बच्चा, अल्प आयु । [माहवारी ।
मास्य (वि०) मास सम्बन्धीय, मास का, मासिक,
माह (सं० पु०) महीना, मास, माघ ।
माहर (सं० पु०) एक फल का नाम है, यह नारङ्गी के समान होता है इसकी गन्ध से सर्प नहीं आता ।
माहात्म्य (सं० पु०) महत्व, बड़ाई, प्रभाव, प्रताप ।
माहि (अव्य०) मध्य, बीच में, माँझ ।
माहियत (सं० स्त्री०) दशा, हालत ।
माहिर (सं० पु०) इन्द्र, देवराज ।
माहिष (वि०) भैंस सम्बन्धी दुग्ध घृतादि ।
माहिषघृत (सं० पु०) भैंस का घी ।
माहिष दधि (सं० पु०) भैंस का दही ।
माहिष नवनीत (सं० पु०) भैंस का माखन ।
माहिष्य (सं० पु०) वर्णशङ्कर जाति, वेश्या के गर्भ में क्षत्रिय से पैदा हुई औलाद ।
माही (सं० पु०) मत्स्य, मछली ।
माहीगीर (सं० पु०) मछुवा, मछली मारने वाला ।
माहुर (सं० पु०) विष, हलाहल, ज़हर ।
माहेन्द्र (सं० पु०) शुभ दण्ड, क्षण विशेष, इन्द्र का, इन्द्र की स्त्री, गाय । [वैश्य विशेष ।
माहेश्वरी (सं० स्त्री०) दुर्गा देवी, पार्वती, शिवराणी,
मिक़दार (अ० क्रि० वि०) परिमाण, अंदाज़ ।
मिक़राज़ (अ० सं० स्त्री०) कतरनी, कैंची, अस्तुरा, छुरा ।
मिचकारना (क्रि० स०) निचोड़ना, खंगालना, अवाँलना, गलाना । [होना ।
मिचना (क्रि० अ०) मूँदना, लगना, बन्द करना, बन्द
मिचराना (क्रि० अ०) मिचलाना, अरुचि होना ।
मिचलाना (क्रि० अ०) आँख मूँदना, मींचना ।
मिज़राब (अ० सं० पु०) सितार बजाने का एक औज़ार ।
मिज़ाज (सं० पु०) तबियत, चित्त ।
मिज़ाजदार (वि०) अभिमानी, ग़रूरी ।
मिटना (क्रि० अ०) बिगड़ना, लिखे अक्षरों का बिगड़ना ।
मिटाना (क्रि० स०) बिगाड़ना, दूर करना, मिटालना ।
मिटिया (वि०) एक तरह का रंग, खाकी रंग (सं० स्त्री०) गगरी, घैला, कलशी ।
मिट्टी (सं० स्त्री०) मट्टी, माटी, मृत्तिका, ख़ाक, धूल ।
मिट्ठो (सं० स्त्री०) मच्छि, चुम्मा ।
मिठरी (सं० स्त्री०) पकवान विशेष । [मधुरता ।
मिठाई (सं० स्त्री०) मीठी चीज़, मीठा पकवान, मिठास,
मिठास (सं० पु०) मिठाई, मीठापन, मिष्टता ।
मिठिया (सं० स्त्री०) चूमा, मिट्ठी ।
मिट्ठू (सं० पु०) प्यारा तोता । [हुआ ।
मित (वि०) परिमित, मापा हुआ, खोया हुआ, जाना
मितक्षरा (सं० स्त्री०) स्मृति के एक ग्रन्थ का नाम ।
मितप्रद (सं० पु०) थोड़ा देने वाला, हिसाब से देने वाला ।
मितम्पच (सं० पु०) कृपण, कंजूस, किफ़ायती ।
मितव्ययी (सं० पु०) अल्प व्यय करने वाला, परिमित व्ययी ।
मिति (सं० स्त्री०) परिमाण, विज्ञान, अन्त, मर्य्यादा ।
मिती (सं० स्त्री०) तिथि, ब्याज, सूद ।
मित्र (सं० पु०) सखा, बंधु, प्यारा, सुहृद, हितू, सनेही, दोस्त । [प्यार, हेत ।
मित्रता (सं० स्त्री०) सख्य, मित्राई, मिताई, दोस्ती,

मित्र द्रोही (सं० पु०) विश्वासघाती, दुष्ट, मित्र का बैरी।
मित्रलाभ (सं० पु०) मित्र प्राप्ति।
मित्रवर्ग (सं० पु०) सुहृदगण, मित्रों की मंडली।
मित्रा (सं० पु०) मित्रवत्सल, दोस्त का प्यारा।
मित्राई (सं० स्त्री०) दोस्ती, प्यार।
मिथ (क्रि० वि०) परस्पर, आपस में, एक दूसरे को।
मिथिला (सं० स्त्री०) एक नगर का नाम, जनक राजा की नगरी।
मिथिला पति (सं० पु०) राजा जनक, मिथिला का राजा।
मिथिलेश (सं० पु०) राजा जनक।
मिथिलेश कुमारी (सं० स्त्री०) जानकी, सीता, वैदेही।
मिथिलेशि (सं० स्त्री०) जनक राजा की रानी, सुनयना (कौशल्या कह धीर धरि सुनहु देवि मिथिलेशि)।
मिथुन (सं० पु०) युगल, तृतीय राशि, स्त्री पुरुष।
मिथ्या (क्रि० वि०) असत्य, व्यर्थ, झूठा, अनर्थ।
मिथ्याचार (सं० पु०) कपटाचार, दाम्भिक।
मिथ्या दृष्टि (सं० स्त्री०) नास्तिकता।
मिथ्याभियोग (सं० पु०) मिथ्यावाद, झूठी नालिश।
मिथ्यावादी (सं० पु०) झूठा, झूठ कहने वाला।
मिनति (सं० स्त्री०) विनती, चिरौरी, हाथ जोड़ कर प्रार्थना करना।
मिमियाना (क्रि० अ०) बकरी का शब्द करना।
मिमियाहट (सं० स्त्री०) बकरी आदि का शब्द।
मियाँ (सं० पु०) महाशय, जनाब, साहब।
मिरगी (सं० स्त्री०) एक रोग का नाम।
मिरजई (सं० स्त्री०) कमर तक का अँगरखा।
मिरजा (सं० पु०) मुग़लों की पदवी।
मिरासी (सं० पु०) रंडी का साजिन्दा, रंडी का भँडुआ। [काली मिर्च।
मिर्च (सं० स्त्री०) एक मसाले का नाम, गोल मिर्च,
मिर्चा (सं० पु०) मिर्चाई, लाल मिर्च।
मिर्दंग (सं० पु०) मृदङ्ग, ढोल विशेष।
मिर्दहा (सं० पु०) ग्रामवासी, अर्दली।
मिलन (सं० पु०) मेल, मिलाप, संयोग।
मिलनसार (वि०) मिलापी, मेली, नेक।
मिलना (क्रि० अ०) मिलाप होना, भेंटना, पचमेल होना, गड़बड़ हो जाना।
मुहा०—मिलना जुलना=सफाई से मिलना।
मिलाना (क्रि० स०) मेल करना, जुड़ाना, सहेजना।
मिलाप (सं० पु०) मेल, भेंट, संयोग, बनाव, एकता।
मिलापी (सं० पु०) मिलनसार, सज्जन, मिलने वाला।
मिलाव (सं० पु०) मिला हुआ, मिलौना, मेल, बनाव।
मिलित (सं० पु०) मिला हुआ, मिश्रित, लगा हुआ, मेल।
मुहा०—मिले जुले रहना=मेल से रहना।
मिशि (सं० स्त्री०) शतपुष्पा, सौंफ़।
मिश्र (सं० पु०) एक जाति विशेष, उपाधि विशेष, ब्राह्मणों की पदवी, देश विशेष (वि०) मिला हुआ, संयुक्त।
मिश्रक (सं० पु०) मेलक, मिलाने वाला, देव वन।
मिश्र केशी (सं० स्त्री०) एक स्वर्ग वेश्या।
मिश्रण (सं० पु०) संयोजन, मिलना। [घालमेल।
मिश्रित (सं० पु०) मिला हुआ, जुड़ा हुआ, यौगिक,
मिश्री (सं० पु०) मिठाई विशेष। [अहंकार।
मिष (सं० पु०) छल, कपट, बहाना, हीला, बनावट,
मिष्ट (वि०) मधुर, मीठा।
मिष्टता (सं० स्त्री०) माधुर्य्य, मिठास।
मिष्टान्न (सं० पु०) मधुर द्रव्य, मीठा पकवान, मिठाई।
मिस (सं० पु०) बहाना, सबब, कारण, ब्याज।
मिसकी (सं० पु०) दरिद्र, ग़रीब।
मिस्कीन (अ० सं० पु०) नम्रता।
मिसना (क्रि० स०) पीसना, मलना, चूर्ण करना।
मिसर (सं० पु०) देश विशेष, मिश्र देश।
मिसरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का मीठा पदार्थ जो, चीनी से बनाया जाता है, मिश्री, मिश्र देश का।
मिसल (सं० पु०) मुक़द्दमे के काग़ज़ों का मुट्ठा।
मिसाल (सं० पु०) उदाहरण, दृष्टान्त, नज़ीर।
मिस्त्री (सं० पु०) कारीगर, कारीगरों का सरदार, सरदार।
मिस्सी (सं० स्त्री०) काले रंग का चूर्ण जिसको स्त्रियाँ दाँतों में लगाती हैं।
मिहदी (सं० स्त्री०) एक पौधा जिसके पत्तों से स्त्रियाँ अपने हाथ पाँव रचती हैं।
मिहना (सं० पु०) ताना, बोली।
मिहरा (सं० पु०) नारी रूपी, जनाना, ज़नखा।
मिहरारू (सं० स्त्री०) लुगाई, तिय, नारी, स्त्री, औरत।
मिहरी (सं० स्त्री०) औरत, स्त्री।

मिहाना (क्रि० अ०) भीगना, सीड़ना ।
मिहानी (सं० स्त्री०) मथनियाँ ।
मिहिका (सं० स्त्री०) नीहार, कुहरा । [विक्रमादित्य ।
मिहिर (सं० पु०) सूर्य, अर्क वृक्ष, वृद्ध, मेघ, वायु, चन्द्र,
मींगी (सं० स्त्री०) बीज, गूदा, भेद ।
मींजना (क्रि० अ०) मसलना, मलना, रगड़ना ।
मींजी (सं० स्त्री०) मज्जा, गूदा, भेद ।
मीच (सं० स्त्री०) मौत, मरण, क़ज़ा (जो न समाने बाहु बल अटक कटक के बीच । तीन हाथ धरती तले मीच कियो वहि नीच ॥) ।
मीचना (क्रि० अ०) आँख बन्द करना, मूँदना, ढाँकना ।
मीजना (क्रि० अ०) देखो "मींजना" ।
मीज़ान (अ० सं० पु०) तराजू, तुलाराशि, जोड़ ।
मीजू (सं० पु०) मसूर, कलाई विशेष ।
मीठा (वि०) मधुर, धीमा, शीरा ।
मीठिया (सं० पु०) मीठी, चूमा, मक्खी ।
मीठी (सं० स्त्री०) मक्खि, चुम्मा, बोसा ।
मीढ (वि०) मूत्रित, मूता हुआ ।
मीणा (सं० पु०) जंगली आदमियों की एक जाति जो चोर और डाकू होती है ।
मीत (सं० पु०) सखा, सुजन, सुहृदय, दोस्त ।
मीतन (वि०) सनामी, एक नाम वाला ।
मीन (सं० पु०) मत्स्य, मछली, प्रथम राशि, एक राशि का नाम, मच्छावतार ।
मीन केतन (सं० पु०) कामदेव, मदन ।
मीना (सं० पु०) चोर, तस्कर, जाति विशेष ।
मीनार (सं० पु०) लाट, ऊँचा खम्भा ।
मीमांसक (सं० पु०) मीमांसा शास्त्रवेत्ता, मीमांसा शास्त्र का जानने वाला ।
मीमांसा (सं० स्त्री०) दर्शन शास्त्र विशेष, छः शास्त्रों में एक शास्त्र, सिद्धान्त ।
मीमांसित (वि०) विचारित । [बरों का बोलना ।
मीमियाना (क्रि० अ०) में में करना, बकरी आदि जान-
मीर (सं० पु०) समुद्र, पर्वतैक, देश, सीमा, हद, मीर, सैयद, सरदार । [लम्बाई, वन, जंगल ।
मील (सं० पु०) एक हज़ार सात सौ साठ गज़ की
मालन (सं० पु०) मुद्रण, संकोच, टिमकना, टमटमाना ।
मीसना (क्रि० अ०) पीसना, मलना, सुरेरना ।
मुंड़ना (क्रि० अ०) हजामत बनाना, धोखा खाना ।
मुंड़ासा (सं० पु०) सिर बँधा दुपट्टा ।
मुंडेर (सं० पु०) दीवार का सिरा, दीवार का सब से ऊँचा भाग ।
मुंदना (क्रि० अ०) बन्द करना, बन्द होना ।
मुँह (सं० पु०) बदन, चेहरा, आनन, सूरत, मुखड़ा ।
मुहा०—मुँह अँधेरा = सन्ध्या समय । मुँह अपना सा लेके फिर आना = निरास होकर चला आना । मुँह आना = मुँह फलना । मुँह उतर जाना = उदास होना । मुँह करना = सामने होना । मुँह काला = कलंक । मुँह काला करना = कलंक लगाना । मुँह के कौवे उड़ जाना = उदास दिखाई देना । मुँह खोलना = गाली देना । मुँह चढ़ाना = हिलमिल जाना । मुँह चोर = शरमीला । मुँह छिपाना = लाज से मुँह ढँकना । मुँह ठठाना = किसी के मुँह पर तमाचा मारना । मुँह डालना = माँगना । मुँह तोड़ना = तकलीफ़ देना । मुँह देख कर बात करना = ख़ुशामद करना । मुँह पर गर्म होना = बड़े आदमी के सामने ढिठाई से बोलना । मुँह पर लाना = कहना । मुँह पर हवाई उड़ना = मुँह का रंग बदलना । मुँह फैलाना = घमंड करना, लालच करना । मुँह बन्द करना = जीभ पकड़ना । मुँह बनाना = त्यौरी चढ़ाना । मुँह बिगड़ना = अप्रसन्न होना । मुँह बिगाड़ना = मुँह बनाना । मुँह बोला = माना हुआ, जैसे—मुँह बोला भाई = धर्म का भाई । मुँह भरी = रिश्वत । मुँह माँगा = चाहा हुआ । मुँह मारना = चुप करना । मुँह में पानी भरना = किसी चीज़ को बहुत चाहना, लालच उत्पन्न होना । मुँह मोड़ना = फिर जाना । मुँह लगाना = छोटे आदमी से मेल करना । मुँह लेके रह जाना = शर्म से चुप हो जाना । मुँह सुकड़ना = मुँह का रंग बदलना । मुँह से फूल झड़ना = गाली देना ।
मुअजिज़ा (सं० पु०) अद्भुत, अचंभा, करामात ।
मुअज़्ज़िज़ (वि०) इज़्ज़तदार ।
मुअतबर (वि०) भरोसे वाला ।
मुअत्तर (वि०) सुगन्धित, महकदार ।
मुअस्सिर (वि०) असर रखने वाला ।
मुआ (सं० पु०) मुर्दा, मरा हुआ ।
मुक़द्दम (सं० पु०) प्रधान, पहिला, अगला ।

मुक़द्दमा (अ०सं०पु०) अभियोग, नालिश, काम, मुआमिला।
मुकरना (क्रि० अ०) नकारना, दोदना, इन्कार करना।
मुकरनी (सं० स्त्री०) कह कर मुकरना, एक तरह का छोटा छन्द जो ब्रजभाषा में आता है। [लगाना।
मुकर्रर (सं० पु०) फिर, दूसरी बार, लगाना, नौकर रखाना।
मुक़ाबला (अ० सं० पु०) विरुद्धता, कागज़ पढ़ कर मिलाना।
मुक़ाम (सं० पु०) स्थान, जगह, पड़ाव।
मुकु (सं० पु०) मोक्ष, उत्सर्ग, छोड़ना।
मुकुट (सं० पु०) शिरोभूषण, ताज, कलँगी।
मुकुन्द (सं० पु०) विष्णु, मुक्ति, रत्न विशेष, कुन्दुरु वृक्ष, पारद, एक क़िस्म का जवाहर, पारा।
मुकुम (सं० स्त्री०) निर्वाण, मोक्ष, भक्तिरस, प्रेम।
मुकुर (सं० पु०) दर्पण, बकुल वृक्ष, कुलाल दण्ड, शीशा, कुम्हार का डंडा।
मुकुरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द, अलङ्कार।
मुकुल (सं०पु०)कली, कलिका, बौर, थोड़ी, खिली कली।
मुकुलित (वि०) थोड़ा खिला, अधखिला।
मुकेल (सं० स्त्री०) नकेल, ऊँट का नथना।
मुक्का (सं० पु०) घूँसा, मुष्टि प्रहार, धौल, चपेटा।
मुक्त (क्रि० अ०) खुला, छूटा, मोचित, छूटा हुआ, मुक्ति पाया हुआ, प्रसन्न, आनन्दित, रिहा, बरी।
मुक्तहस्त (वि०) दाता, दानशील।
मुक्ता (सं० पु०) मौक्तिक, मोती।
मुक्ताफल (सं० पु०) कपूर, मौक्तिक, लवली फल, बोपदेव कृत ग्रन्थ विशेष।
मुक्तावली (सं० स्त्री०) मोती की माला, मोती का हार, एक पुस्तक का नाम।
मुक्ति (सं० स्त्री०) संसार के दुख अथवा पाप से छूट जाना, उद्धार होना, मोक्ष गति, त्राण, जन्म मरण से छूटना।
मुक्तिदाता (सं० पु०) मुक्ति देने वाला, उद्धार कर्ता।
मुख (सं० पु०) मुँह, मुखड़ा, वदन, चेहरा, शुरू, तजवीज, पहिला सर्दार, आवाज़, लब, बदहल।
मुखड़ा (सं० पु०) वदन, मुँह (मुखड़ा क्या देखो दरपन में। तेरे दया धरम नहिं तन में)।
मुख़तार (अ० सं० पु०) गुमाश्ता, वकील।
मुख़तारी (सं० स्त्री०) मुख़तार को इख़्तियार, विकालत।
मुखदूषक (सं० पु०) मुखबिगाड़ने वाला, मुख दुर्गन्ध करने वाला, पियाज।
मुख़न्नस (अ० सं० पु०) नपुंसक, हिजड़ा।
मुख पूरण (सं० पु०) गण्डूष, ग्रास, कुली, लुक़्मा।
मुखप्रिय (सं० पु०) नारंगी, कमला नीबू।
मुखभूषण (सं० पु०) पान, ताम्बूल, बीड़ा।
मुखर (सं० पु०) अप्रियवादी, बकवादी, दुर्वचन बोलने वाला।
मुखरता (सं० स्त्री०) अप्रिय वादित्व। [होती है।
मुखरोग (सं० पु०) मुँह की बीमारी, यह ६५ प्रकार की
मुखलांगल (सं० पु०) शूकर, सुअर, जिसका मुँह हल के समान हो।
मुखशोष (सं० पु०) पियास, प्यास।
मुखाग्र (सं० पु०) ज़बानी, मुँह से कहना, लगाम, कण्ठस्थ, कण्ठाग्र।
मुखा मुखी (सं० स्त्री०) मुहाँ मुँही।
मुख़ालिफ़ (अ०सं०पु०) विरुद्ध, दुश्मन, शत्रु, रिपु, वैरी।
मुखिया (वि०) प्रधान, बड़ा, पहला, ख़ास, नेता।
मुख्य (सं० पु०) प्रथम, श्रेष्ठ, प्रधान, पहिला, कल्प, सर्दार। [करने की लकड़ी।
मुगदर (सं० पु०) मुँगरी, मुँगरा, मुग्दर, जोड़ी, कसरत
मुग़ल (सं० पु०) मुसलमानों की एक जाति।
मुग्ध (वि०) मोहित (सं० पु०) मनोहर, सुन्दर, मनोज्ञ।
मुग्धा (सं० स्त्री०) जवान और सुन्दर स्त्री, एक प्रकार की नायकी, (यथा—लोगन को वह घाट है लाल लुगाइन की यह घाट थली है। जैये चले बलबीर उतै अहैं न्हाति अहीरन की अवली है। "शम्भु" सखीन के ओट दुरे जल पैठे लजाति हमारी अली है। कान्ह अन्हान इहाँ मति आओ अन्हाति इहाँ वृषभानु लली है)। र० कु०
मुचक (सं० पु०) लाखा, लाख।
मुचकुन्द (सं० पु०) पुष्प वृक्ष विशेष, मानधाता का बेटा जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने मुक्ति दी।
मुचुटी (सं० स्त्री०) मुष्टि, मुट्ठा, अंगुली का मटकाना।
मुज्ञा (सं० पु०) मांस का टुकड़ा, बोटी।
मुजरा (अ०सं०पु०) प्रणाम, दण्डौत, नमस्कार, सलाम,

राम राम, राजपूताने में "सलाम" वा "प्रणाम" की जगह छोटे बड़े को और बराबरी वाले को "मुजरा" कहते हैं, वेश्या का गाना।

मुजरिम (अ०सं०पु०) अपराधी, कसूरवार, पापी, जिसने अपराध किया हो।

मुञ्ज(सं० पु०) तृण विशेष, मूँज, काँस के छिलके जिसकी रस्सी बनती है, एक राजा का नाम जो राजा भोज के चचा थे।

मुटाई (सं० स्त्री०) मोटापन, मोटा, स्थूलता।

मुटाया (सं० पु०) स्थूलता।

मुट्ठा (सं० पु०) मुट्ठी भर।

मुट्ठी (सं० स्त्री०) हाथ, बुक्का, मुक्का।

मुहा०—मुठभेड़=सामना होना।

मुठिया (सं० स्त्री०) मुट्ठी भर, हाथ भर, मुट्ठी भर अन्न का नियमित दान, बेंट, दस्ता। [होना।

मुड़ना (क्रि० अ०) पीछे हट जाना, झुक जाना, टेढ़ा

मुड्ढ (सं० पु०) प्रधान, मुखिया, मुख्य, बड़ा।

मुढ़ियाना (क्रि० अ०) मुड़ना, फिरना, घुरचियाना, घूमना।

मुण्ड (सं० पु०) सर, माथा, एक दैत्य का नाम जिसको दुर्गा जी ने मारा, नाई, मुंडा, गंजा।

मुण्डक (सं० पु०) माथा, नाई, अथर्ववेद की उपनिषद्।

मुण्डतिका (सं० स्त्री०) मुण्डी, मुण्डी बूटी, गोरख मुण्डी।

मुण्डन (सं० पु०) केशच्छेदन, मूँड़ना, बाल बनाना, हिन्दुओं में एक रीति है कि पहले ही पहल किसी देवता के सामने लड़के का बाल बनवाते हैं जिसे मुण्डन कहते हैं। [धोखा खाना।

मुण्डना (क्रि० अ०) हजामत होना, बाल कटवाना,

मुण्डमाला (सं० स्त्री०) आदमी के शिरों की माला।

मुण्डला (वि०)मुण्डित, मुण्डा हुआ।

मुण्डा (सं० पु०) पतंग का सिरा, चन्दला।

मुण्डासा (सं० पु०) मुरेठा, पगड़ी, साफ़ा, फेंटा, पगिया, लपेटा। [खण्डित भुज बीसा)।

मुण्डित (सं० पु०) लोहा, मुड़ा हुआ (मुण्डित शिर

मुण्डिया (सं० पु०) मुण्ड, शिर, माथा, मस्तक।

मुण्डी (सं० स्त्री०) औषधि विशेष।

मुण्डू (सं० पु०) संन्यासी, मुण्डित।

मुण्डेर (सं० स्त्री०) मेंड़, परछती।

मुण्डेरी (सं० पु०) छोटी भीत, दीवार, दीवार का सिर, दीवार की मगज़बन्दी।

मुतअल्लिक (फ़ा० वि०) सम्बन्धी, लगा हुआ, नातेदार।

मुतास (सं० पु०) लघुशंका लगना, पेशाब की हाजत, पेशाब लगना।

मुतासा (सं० पु०) पेशाब करने की इच्छा रखने वाला।

मुद (सं० पु०) आनन्द, हर्ष।

मुदर्रिस (अ०सं०पु०) अध्यापक, पढ़ाने वाला, पाठक।

मुदित (सं० स्त्री०) आनन्दित, ख़ुशी, ख़ुश औरत।

मुदिर (सं० पु०) मेघ, बादल, मेक, मेंडक।

मुदी (सं० स्त्री०) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, प्रीति, हर्ष।

मुद्द आलेह (अ०सं०पु०) प्रतिवादी, जिस पर नालिश होती है।

मुद्दई (अ०सं०पु०) वादी, दावा करने वाला।

मुद्दत (फ़ा०सं०पु०) अधिक समय, बहुत देर, अति बिलम्ब, अवधि।

मुद्रा (सं० स्त्री०) सिक्का, छापे के अक्षर, वाममार्गियों के पाँच प्रकार में से एक, योगियों के कान के कुण्डल।

मुद्रिका (सं० स्त्री०) सोने, चाँदी की बनी हुई अँगूठी, ऐसी अँगूठी जिस पर अपना नाम खुदा है।

मुद्रित (सं० पु०) छापा हुआ, मोहर लगा हुआ, मूँदा हुआ, छापा।

मुधा (अव्य०) व्यर्थ, बेफ़ायदा, मूँठ, निरर्थक।

मुनक्का (सं० पु०) बड़ी किशमिश, एक फल का नाम।

मुनमुन (सं० पु०) प्यार से बोलने के अर्थ में आता है।

मुनमुनाना (क्रि० अ०) धीरे धीरे बोलना।

मुनाफ़ा (सं० पु०) लाभ, फ़ायदा।

मुनासिब (सं० पु०) उचित, ठीक। [पलाश वृक्ष।

मुनि (सं० पु०) मौन व्रती, ज्ञानी, सत्य वाक्, जिन,

मुनिघरनी (सं० स्त्री०) मुनि की स्त्री, मुनि गृहणी

मुनिन्द्र (सं० पु०) मुनीश, ऋषि राज, श्रेष्ठ मुनि, बड़ा मुनि।

मुनिपट (सं० पु०) बलकल, भोजपत्र।

मुनिपुंगव (सं० पु०) मुनियों में श्रेष्ठ मुनि, मुनिवर।

मुनिया (सं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

मुनिराज (सं० पु०) प्रधान ऋषि, मुनीश।

मुनीब (सं० पु०) मालिक, स्वामी, मुरब्बी।
मुनीम (सं० पु०) हिसाब लिखने वाला।
मुनीश (सं० पु०) मुनिराज, प्रधान मुनि।
मुन्तकिल (अ० सं० पु०) दूसरे को देना, एक जगह से दूसरी जगह जाना।
मुन्तज़िम (अ० सं० पु०) प्रबन्धकर्ता, इन्तिज़ाम करने वाला।
मुन्दन (क्रि० अ०) बन्द होना, मिचना।
मुन्द्री (सं० स्त्री०) अँगूठी, मुनरी, मुद्रिका।
मुन्शी (सं० पु०) लेखक, मुहर्रिर।
मुन्सिफ़ (अ० सं० पु०) न्यायाधीश, क़ाज़ी।
मुफ़लिस (अ० सं० पु०) निर्धन, कंगाल, बेज़र।
मुफ़ीद (फ़ा० वि०) लाभदायक, फ़ायदेमन्द।
मुफ़्त (फ़ा० सं० पु०) बिना मूल्य, संतमेंत, बेदाम।
मुमाखी (सं० स्त्री०) मधुमाखी, शहद की मक्खी।
मुमानअत (अ० सं० स्त्री०) मनाई, रुकावट।
मुमूर्षा (सं० स्त्री०) मरणेच्छा, मौत की इच्छा।
मुर (सं० पु०) दैत्य विशेष, जिसके पाँच सिर थे और जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने मारा, इसी से इनका नाम मुरारि पड़ा था।
मुरई (सं० स्त्री०) मूली, एक जाति विशेष।
मुरकना (क्रि० अ०) ऐंठना, नसों में बल पड़ना, हड्डी आदि का टूटना।
मुरकी (सं० स्त्री०) कान का भूषण विशेष, टेढ़ी, ऐंठी (बहियाँ न पकड़ो मोरी मुरकी कलाई रे)
मुरचंड (सं० पु०) मुँह से बजाने का एक बाजा।
मुरज (सं० पु०) मृदङ्ग बाजा विशेष (सं० स्त्री०) कुबेर की पत्नी।
मुरझाना (क्रि० अ०) सूख जाना, कुम्हलाना।
मुरदा (सं० पु०) मृतक, मुर्दा, लाश, शव।
मुरब्बा (सं० पु०) समकोण, समबाहु, चतुर्भुज, चौखूँटा, आँवला, आम वग़ैरह जो चीनी में पागा गया हो।
मुरमर्दन (सं० पु०) विष्णु, नारायण।
मुरमुरा (सं० पु०) चर्वण विशेष, भुने चावल, लाई।
मुरला (सं० पु०) पोपला, मोर, मोरैला, एक नदी।
मुरली (सं० स्त्री०) बंशी, बाँसुरी।
मुरलीधर (सं० पु०) श्रीकृष्णचन्द्र, बंशीधर।
मुरव्वत (अ० सं० स्त्री०) दयाशीलता।
मुरसा (सं० पु०) देखो "मुँहासा"।
मुरहा (सं० पु०) बदमाश, गुंडा, लुच्चा, नटखट, ऐंठा, बदचलन, मयूर, मोर।
मुराई (सं० पु०) कोयरी, कुँजड़ा, मुरई।
मुराद (सं० स्त्री०) आशा, मिन्नत, प्रार्थना।
मुराधार (वि०) मोंथरा, कुण्ठित, मोथा। [ग्रन्थकर्ता।
मुरारि (सं० पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण, अनर्घराघव के
मुरेठा (सं० पु०) साफ़ा, फेंटा।
मुरेला (सं० पु०) मोर का बच्चा।
मुरैठी (सं० स्त्री०) मुलहठी।
मुर्ग़ (सं० पु०) कुक्कुट, अरुणशिखा, एक पक्षी का नाम।
मुर्ग़ी (सं० स्त्री०) कुक्कुटी, मुर्ग़ की स्त्री।
मुर्दा (सं० पु०) मरा हुआ, शव।
मुर्दार (वि०) हराम, नापाक, मरी लोथ, सूखी डाल।
मुर्मुर (सं० पु०) तुषाग्नि, मन्मथ, रविवाजि।
मुलज़िम (वि०) दोषी, अपराधी, ज़ुल्म करने वाला।
मुलतानी (सं० स्त्री०) रागिणी विशेष, एक रागिनी का नाम (वि०) मुल्तान की, मुल्तानी मिट्टी
मुलम्मा (सं० पु०) झोल, गिलटी, क़लई।
मुलहठी (सं० स्त्री०) जेठी मधु, मुलेठी।
मुलाई (सं० स्त्री०) कूत, ठीक, निरख।
मुलाक़ात (सं० स्त्री०) भेंट, मिलाप।
मुलाज़िम (सं० पु०) दास, सेवक, चाकर, नौकर।
मुलाज़िमत (सं० स्त्री०) चाकरी, नौकरी, सेवकाई।
मुलाना (क्रि० अ०) ठहराना, मोल करना, भाव ठहराना, मिल्र्ना।
मुलायम (वि०) कोमल, नर्म, नाजुक।
मुलाहिज़ा (सं० पु०) अवलोकन, देखना, मुआयना।
मुल्ला (अ० सं० पु०) पाठक, पढ़ाने वाला, मुदर्रिस, शिक्षक, अध्यापक, मास्टर।
मुशाहरा (सं० पु०) मासिक वेतन, तनख़्वाह, तलब।
मुश्किल (सं० स्त्री०) कठिन, कठोर, दुःसाध्य, वह काम जो बहुत परिश्रम से किया जाय।
मुश्की (वि०) काला, स्याह।
मुश्कें (सं० पु०) बाहु, भुजा।
मुहा०—मुश्कें चढ़ाना=हाथ पीठ पीछे बाँधना।
मुषित (वि०) चुराया हुआ, चोरित।
मुष्क (सं० पु०) वृषण, अण्डकोष, पोता, वृक्ष विशेष, चोर, समूह, स्थूल, मोटा, कस्तूरी।

मुष्ट (सं० पु०) हृत, चुराया हुआ, चोरी, चोर कर्म्म।
मुष्टि (सं० स्त्री०) चार तोले, मुट्ठी, मुक्की, मूठी।
मुष्टिक (सं० पु०) कंस राजा का मल्ल विशेष, स्वर्णकार, कंस का पहलवान। [हँसना
मुसकान (सं० स्त्री०) मुसकुराहट, मुसकुराई, धीरे धीरे
मुसकाना (क्रि०) हँसना, मुसकुराना।
मुसकुराई (सं० स्त्री०) मुसकुराहट, धीरे २ हँसना।
मुसकुराना (क्रि० अ०) मुसकाना।
मुसम्मा (अ०सं०पु०) नाम किया गया, नाम लिया गया।
मुसम्मात (अ० सं० स्त्री०) नाम की गई, नाम ली गई।
मुसल (सं० पु०) मूषल, कूटक, चावल आदि नाज कूटने का मोटा सोंटा। [पर विश्वास करने वाला।
मुसलमान (सं० पु०) मुहम्मद साहब पैग़म्बर के मत
मुसलमानी(सं० पु०)सुन्नत की रस्म, सुन्नत (सं०स्त्री०) मुसलमान की स्त्री। [भाई।
मुसली (सं० पु०) बलदेव जी, बलभद्र, कृष्ण के बड़े
मुसाना (क्रि० अ०) चोरी करवाना।
मुसाफ़िर (अ० सं० पु०) पथिक, राही, राहगीर।
मुहा०—मुसाफ़िरख़ाना=सराय, धर्मशाला।
मुसाहिब (सं० पु०) मित्र, यार, दोस्त।
मुसीबत (अ० सं० स्त्री०) आपत्ति, बुरे दिन, दुःख।
मुस्तहक़ (अ० वि०) हक़दार, हिस्सेदार।
मुस्ता (सं० पु०) तृणमूल विशेष, नागरमोथा।
मुस्तैद (अ० सं० पु०) तैयार, प्रस्तुत, तय्यार।
मुहताज (सं० पु०) कंगाल, भूखा, दरिद्र, ग़रीब, अनाथ।
मुहर (सं० पु०) छाप, सोने का सिक्का।
मुहर्रम (अ०सं० पु०) मुसलमानी महीने का पहिला महीना, मुसलमानों का एक त्योहार।
मुहब्बत (अ०सं० स्त्री०) प्यार, प्रीति, दुलार। [खंड।
मुहल्ला (अ० सं० पु०) टोला, गली, कूचा, शहर क एक
मुहाना (सं० पु०) दहाना, वह स्थान जहाँ से नदी निकलती है।
मुहार (सं० स्त्री०) ऊँट की नाक की रस्सी, नकेल।
मुहाल (सं० पु०) असम्भव, नामुमकिन।
मुहावरा (सं० पु०) लोकोपचार।
मुहासा (सं० पु०) फुनसी, फुड़िया, मुँह के ऊपर के दाने, फोड़ा।
मुहिम (सं० पु०) बड़ा काम।
मुहुर्मुहु (सं० पु०) पुनः पुनः, बारम्बार।
मुहूर्त (सं० पु०) दो घड़ी समय का भाग, दिन रात का तीसवाँ भाग, ४८ मिनट का समय।
मूँकना (क्रि० अ०) छोड़ना, त्यागना, आशा का त्याग करना, निराश होना, यथा—(जीवन आस दशानन मूकी)। [है।
मूँग (सं० पु०) एक तरह का अन्न, जिसकी दाल बनती
मूँगची (सं० स्त्री०) मुँगौरी, मूँग की बरी।
मूँगा (सं० पु०) एक चीज़, जो समुद्र में मिलती है और जिसकी गौरत्नों में गिनती है, उसकी माला बनती है, प्रवाल, विद्रुम।
मूँगिया (सं० पु०) रङ्ग विशेष, मूँगा का सा रंग।
मूँछ (सं० पु०) होठ पर के बाल, मोंछ।
मूँज (सं० स्त्री०) एक तरह के घास के छिलके जिसकी रस्सी बनती है।
मूँड़ (सं० पु०) माथा, मस्तक, कपाल, शिर।
मूँड़ना (क्रि० स०) बाल कटाना, हज़ामत बनवाना, चेला करना, फुसलाना, ठगना।
मुहा०—उलटे उस्तरे से मूड़ना=किसी को ठगना, छलना।
मूँड़ी (सं० स्त्री०) शिर, कपाल।
मूँढ़ा (सं० पु०) बिना पीठ की कुर्सी, तिपाई।
मूँदना (क्रि० अ०) बन्द करना, ढँकना, किसी चीज़ से तोपना।
मूँदरी (सं० स्त्री०) छल्ला, अँगूठी।
मूँह (सं० पु०) मुख, मुखड़ा, बदन।
मूँहा (सं० पु०) मुख का रोग।
मूआ (सं० पु०) मरा, मृत, निर्जीव, मुर्दा।
मूक (सं० पु०) मत्स्य, दैत्य, दीन, गूँगा, वाक्यरहित।
मूका (सं० पु०) घूँसा, मुट्ठी, झरोखा।
मूकी (सं० स्त्री०) मुक्की, घूँसा, धक्का।
मूखा (सं० पु०) दीवार, मेंड, मुँडेर।
मूगरी (सं० स्त्री०) कपड़ा पीटने का मुग्दर।
मूचकना (क्रि० अ०) निचोड़ना, ऐंठना।
मूचना (सं० पु०) चिमटा।
मूछ (सं० स्त्री०) मूँछ, मोंछ।
मूछैल (सं० पु०) बड़ी मूँछ वाला, जिसकी बड़ी २ मूँछें हों।

मूठ (सं० स्त्री०) बेंट, कब्ज़ा, दस्ता, मुट्ठी, मुक्की, मुट्ठी भर।
मूठा (सं० पु०) भर मूठ, हाथ भर, मुक्का।
मूठी (सं० स्त्री०) घूँसा, मुक्का।
मूढ़ (सं० पु०) मूर्ख, अनपढ़, अज्ञानी, बालक, लड़का।
मूढ़ता (सं० स्त्री०) मूर्खता, अज्ञानता। [हुआ।
मूत (सं० पु०) लघुशंका, पेशाब (वि०) बद्ध, बँधा
मूतना (क्रि० अ०) पेशाब करना।
मूत्र (सं०पु०) पेशाब, मूत, लघुशंका।
मूत्रकृच्छ्र (सं० पु०) अस्मरी रोग, पथरी रोग, मूत का बन्द हो जाना।
मूत्रदोष (सं० पु०) प्रमेह, मूत्र गतदोष। [की बीमारी।
मूत्राघात (सं० पु०) मूत्रकृच्छ्र रोग, पेशाब बन्द हो जाने
मूत्रित (वि०) जिसने मूत लिया हो, मूता हुआ।
मूना (क्रि० अ०) मरना, मृत होना।
मूनू (वि०) थोड़ा, किञ्चित, अल्प।
मूर (सं० पु०) जड़, असल, पूँजी, मूलधन।
मूरख (वि०) अज्ञानी, अनाड़ी, मूढ़, बेवकूफ़।
मूरत (सं० स्त्री०) पत्थर अथवा लकड़ी की बनी हुई मूरत, प्रतिमा, पुतला, आदमी।
मूर्ख (वि०) अज्ञानी, मूढ़, बेवकूफ़, मूरख।
मूर्खता (सं० स्त्री०) अज्ञानता, मूर्खताई।
मूर्च्छा (सं० स्त्री०) अचेत होना, ग़श, बेहोशी।
मूर्च्छित (वि०) अचेत, मोहित, सुधहीन, बेहोश, बेसुध।
मूर्त्त (सं० पु०) साकार, बेहोश, ग़श खाया हुआ, सख़्त, कठिन। [कड़ाई, देह, तसवीर।
मूर्त्ति (सं० स्त्री०) प्रतिमा, सूरत, मूरत, शक्ल, सख़्ती,
मूर्त्ति पूजक (सं० पु०) मूर्ति की पूजा करने वाला।
मूर्त्तिमन्त (वि०) शरीरधारी।
मूर्द्धज (सं० पु०) केश, बाल।
मूर्द्धन (सं० पु०) शिर, मस्तक, माथा, कपाल, खोपड़ी।
मूर्द्धन्य (सं० पु०) मूर्द्धा से उच्चारित वर्ण ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष शिर सम्बन्धी।
मूर्द्धा (सं० पु०) कपाल, माथा, मस्तक, सिर, खोपड़ी।
मूर्वा (सं० स्त्री०) मूरा, मुरहरी।
मूल (सं० पु०) स्कन्ध, नक्षत्र विशेष, निकुञ्ज, गली, असल, अपना, पाँव, मतन।
मूलक (सं० पु०) कन्द विशेष, मूली।
मूलधन (सं० पु०) मूल द्रव्य, असली पूँजी, मूर।
मूलभूत (सं० पु०) जड़, असलियत, ख़ासियत।
मूलिया (सं० स्त्री०) मूल नक्षत्री, मूलोद्भव, मुरहा।
मूली (सं० स्त्री०) मुरई, एक पौधे की जड़।
मूल्य (सं० पु०) मोल, क़ीमत, दाम, भाव, दर, भाड़ा, इज़्ज़त के लायक़, लगाने के लायक़, ख़रीदने के लायक़।
मूश (सं० पु०) चूहा, मूसा, इन्दुर।
मूष (सं० पु०) मूसा, चूहा, मुँह बँधा, चोर।
मूषण (सं० पु०) चोरी करना, हरण।
मूषल (सं० पु०) मूसल, चावल आदि कूटने की लकड़ी।
मूषा (सं० पु०) मूस, चूहा।
मूषिका (सं० स्त्री०) इन्दुर, चूहा।
मूस (सं० पु०) चूहा।
मूसना (क्रि० अ०) चुराना, लूटना, खसोटना। [मूसर।
मूसल (सं० पु०) चावल आदि नाज कूटने का सोंटा,
मूसला (सं० पु०) वह जड़ जो दूर तक ज़मीन में चली जाती है, किवाड़ों की रोक लगाने की लकड़ी।
मुहा०—मूसलाधार बरसना = बहुत ज़ोर से मेंह बरसना।
मूसली (सं० स्त्री०) छोटा मूसल, एक दवाई का नाम
मूसा (सं० पु०) इन्दुर, चूहा।
मृग (सं० पु०) चौपाया, जानवर, हैवान, एक ख़ास हाथी, पाँचवाँ नक्षत्र, तलाश, माँगना, मँगशिर, कस्तूरी, दशवीं राशि, हरिण। [की खाल।
मृगछाला (सं० स्त्री०) मृगचर्म, हरिण का चमड़ा, हरिण
मृगतृष्णा (सं० स्त्री०) मरु देश में रेतीली जगह पर सूरज की किरणों में मृग को जल का आभास होना। ऐसा मालूम होने पर मृग वहाँ जाते हैं और पानी न मिलने पर निराश होकर लौट आते हैं।
मृगनयनी (सं० स्त्री०) वह स्त्री, जिसके नेत्र हरिणी के समान हों।
मृग-नाभि (सं० पु०) मृगमद, कस्तूरी।
मृग-पति (सं० पु०) सिंह, केशरी, केहरी, शेर।
मृगमद (सं० पु०) मृग-नाभि, कस्तूरी, जिससे हरिण को घमण्ड हो।
मृगया (सं० स्त्री०) आखेट, अहेर, शिकार।
मृगयु (सं० पु०) ब्रह्मा, शृगाल, व्याघ्र, गीदड़। [शेर।
मृगराज (सं० पु०) पशुओं का राजा, मृगपति, सिंह,

मृग-लाञ्छन (सं० पु०) चन्द्र, मृग-चिह्न ।
मृगलोचनी (वि०) वह स्त्री, जिसकी आँखें हरिण की आँख के समान हों, मृगनयनी ।
मृगशिरा (सं० पु०) मृगशीर्ष, पाँचवाँ नक्षत्र ।
मृगा (सं० स्त्री०) इन्द्रवारुणी, इन्द्रोरुणि, इन्द्रारुणि ।
मृगाङ्क (सं० पु०) चन्द्र, कपूर, हवा ।
मृगारि (सं०पु०) सिंह, व्याघ्र, कुत्ता ।
मृगित (सं० पु०) तलाश किया हुआ, पीछा किया हुआ ।
मृगी (सं० स्त्री०) हरिणी, कश्यप की बेटी, तीन अक्षर का छन्द, मिरगी की बीमारी । [मृगपति ।
मृगेन्द्र (सं० पु०) पशुराज, पशुओं का राजा, सिंह,
मृग्य (वि०) अनुसन्धान करने योग्य, दर्शन ।
मृजा (सं० स्त्री०) माँजना, फरछाना ।
मृड (सं० पु०) शिव, महादेव । [कमल की नाल ।
मृणाल (सं० पु०) पद्मनाल, बीरन मूल, कमल की डंडी,
मृत (वि०) मौत, मरा हुआ, मुआ, मुर्दार, मरण, मरना ।
मृतक (सं० पु०) मरण, शौच, शव, पातक, मरा हुआ शरीर । [एक औषध ।
मृतसंजीवनी (सं० स्त्री०) विद्या भेद, विद्या विशेष,
मृत्तिका (सं० स्त्री०) मिट्टी । [श्रीकृष्ण का मामा ।
मृत्यु (सं० पु०) प्राण-वियोग, मौत, मरण, यम, कंस,
मृत्युञ्जय (सं० पु०) महादेव, शिवजी ।
मृदंग (सं० पु०) एक बाजा का नाम ।
मृदु (सं० स्त्री०) कोमल, नर्म, मुलायम, गृहकन्या ।
मृदुता (सं० स्त्री०) कोमलता, नरमई, मुलायमियत, मुलायमी ।
मृदुल (वि०) कोमल, नर्म, नम्र, पानी ।
मृदुला (सं० स्त्री०) सुलेमानी पिंयड खजूर ।
मृद्वी (सं० स्त्री०) कोमलाङ्गी, द्राक्षा, मुनक्का, किशमिश ।
मृण्मय (सं० स्त्री०) मिट्टी का, मिट्टी की तसवीर ।
मृषा (क्रि० वि०) झूठ, मिथ्या, वृथा, झूठमूठ, बेफ़ायदा ।
मृष्ट (वि०) शोधित (सं० पु०) गोलमिर्च ।
में (अव्य०) बीच, अन्दर, भीतर, दरम्यान ।
मेंगनी (सं० स्त्री०) बकरी की लेंड़ी ।
मेंढक (सं० पु०) दादुर, मेंक, बेंग ।
मुहा०—मेंढकी को ज़ुकाम होना = यह बोल चाल में छोटे और नीच आदमी का घमण्ड जतलाने के लिये बोला जाता है ।

मेंड़ (सं० स्त्री०) बाँध, आड़, घेरा, आली, पुस्ता ।
मेंड़ा (सं० स्त्री०) कुएँ का मुँह, मेंड़ ।
मेंड़ियाना (क्रि० अ०) घिरना, बटोरना ।
मेंढ़ा (सं० पु०) भेड़ा, गाडर ।
मेंह (सं० पु०) वर्षा, वृष्टि, पानी, झड़ी, घटा, बरसात ।
मेंहदी (सं० स्त्री०) मिंहदी, पौधा विशेष, मुहर्रम की एक रस्म ।
मेख (सं० पु०) कील, खूँटी, मेष ।
मेखला (सं० स्त्री०) करधनी, तलवार का परतला, पहाड़ का उतार या ढाल, मृगछाला का बना हुआ यज्ञोपवीत, होमकुंड का घेरा ।
मेखली (सं० स्त्री०) टाट, पट्टी ।
मेघ (सं० पु०) अभ्र, घन, बादल, एक राक्षस का नाम, एक राग का नाम ।
मेघ डम्बर (सं० पु०) रावण का छत्र ।
मेघध्वनि (सं० स्त्री०) बादलों का शब्द, गर्ज ।
मेघनाद (सं० पु०) रावण का बेटा, इन्द्रजीत, बादलों का शब्द, पलाश का पेड़, वरुण देवता ।
मेघपति (सं० पु०) देवराज, इन्द्र ।
मेघमाला (सं० स्त्री०) मेघ समूह, मेघों की माला ।
मेघवरण (वि०) जिसका रंग बादल के समान हो ।
मेघवाहन (सं० पु०) इन्द्र, देवताओं का राजा ।
मेघानन्द (सं० स्त्री०) बगुलों की क़तार ।
मेचक (वि०) श्यामल गुणयुक्त, स्याह (सं० पु०) मोर की पूँछ, चाँद, धुआँ, बादल ।
मेचकताई (सं० स्त्री०) कालापन, श्यामता । [चौकी ।
मेज़ (अ० सं० स्त्री०) खाना खाने या लिखने की बड़ी
मेज़बान (फ़ा० सं० पु०) मेहमानदार, मेहमान का आदर सम्मान करने वाला ।
मेटना (क्रि० अ०) मिटा डालना, धो डालना, नष्ट करना, लोप करना, काट डालना ।
मेठ (सं० पु०) फ़ीलवान, कुलियों का सरदार ।
मेढ़ा (सं० स्त्री०) भेड़, मेष, गाडर ।
मेथी (सं० स्त्री०) साग विशेष, एक साग का नाम ।
मेद (सं० स्त्री०) गूदा, चर्बी, मज्जा, वसा, एक बीमारी, जिसमें गले का अथवा और किसी जगह का मांस बहुत मोटा होकर लटक आता है या गाँठ सी हो जाती है ।

मेदा (सं० स्त्री०) एक औषधि का नाम।
मेदिनी (सं० स्त्री०) औषधि विशेष, पृथ्वी, धरा, भूमि, ज़मीन।
मेध (सं० पु०) याग, यज्ञ, क्रतु।
मेधा (सं० स्त्री०) धारणा, मनीषा, बुद्धि।
मेधातिथि (सं० पु०) मनु संहिता पर टीका करने वाला, अरुन्धती का पिता।
मेधावी (वि०) बुद्धिमान्, पंडित, निपुण।
मेधि (सं० पु०) खरिहान में पशु बाँधने का खूँटा।
मेध्य (वि०) पवित्र, यज्ञ के उपयोगी, यज्ञ की हवि।
मेनका (सं० स्त्री०) स्वर्ग, वेश्या, उमा की माता, शकुन्तला की माता।
मेना (सं० स्त्री०) हिमालय की स्त्री, पार्वती की माँ।
मेम (सं० स्त्री०) स्त्री, औरत।
मेमना (सं० पु०) बकरी का बच्चा, मुनमुना।
मेरा (सर्व०) अपना।
मेरु (सं० पु०) पर्वत विशेष, सुमेरु पर्वत, जो हिन्दुओं के मत से धरती के बीच में है।
मेरुदण्ड (सं० पु०) पीठ के बीच की हड्डी।
मेल (सं० पु०) सम्बन्ध, मिलाप, संयोग, एका।
मेलना (क्रि० अ०) ठाँसना, घुसेड़ना, दबाना।
मेला (सं० पु०) भीड़, किसी जगह पर बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना (सं० स्त्री०) स्याही, नील, दुकान।
मुहा०—मेलाठेला = भीड़भाड़।
मेली (सं०पु०) मिलापी, साथी, साझी (क्रि०स०) डाल दी, पहराई यथा—(मेली कंठ सुमन की माला)।
मेव (सं० पु०) जाति विशेष।
मेवाड़ (सं० पु०) राजपूताना का एक प्रान्त।
मेवाती (सं० पु०) मेवात का रहने वाला।
मेष (सं० पु०) पशु विशेष, एक राशि का नाम।
मेह (सं० पु०) प्रमेह रोग, मूत्र रोग, घटा, मेघ।
मेहतर (सं० पु०) भंगी, मिहतर, झाड़ूकश, सफ़ाई करने वाली जाति विशेष।
मेहतरानी (सं० स्त्री०) भंगिन, मेहतर की स्त्री।
मेहनत (अ० सं० पु०) परिश्रम, कोशिश।
मेहना (सं० पु०) ठठोली, हँसी, ताना।
मुहा०—मेहना मारना = ताना देना।
मेहमान (सं० पु०) अतिथि, पाहुन।
मेहरबान (फ़ा० वि०) दयालु, जो दया करता है।
मेहरा (सं० पु०) नपुंसक, जनाना, हिजड़ा।
मेहरारू (सं० स्त्री०) स्त्री, बहू, जोरू।
मैं (सर्व०) आप।
मैका (सं० पु०) माँ का घर, ननिहाल, नैहर, पीहर।
मैत्री (सं० स्त्री०) मित्रता, बन्धुता, स्नेह, मिताई।
मैत्रेय (सं० पु०) मुनि विशेष (वि०) मित्र सम्बन्धीय, मित्र का।
मैथिल (सं० पु०) मिथिला जाति, एक जाति विशेष।
मैथुन (सं० पु०) स्त्री संसर्ग, पुरुष मिलाप, रति, संगम, स्त्री संग।
मैदा (सं०पु०) गेहूँ का महीन आटा। [बड़ा खंड।
मैदान (सं० पु०) ख़ाली पड़ी हुई ज़मीन, सम भूमि का
मैनफल (सं० पु०) औषधि विशेष।
मैना (सं० स्त्री०) सारिका, पार्वती की माता का नाम।
मैनाक (सं० पु०) पर्वत विशेष, हिमालय पहाड़ का पुत्र, एक पहाड़ का नाम, जो इन्द्र के डर से समुद्र में आ रहा था।
मैमा (सं० स्त्री०) सौतेली माँ, विमाता।
मैया (सं० स्त्री०) माँ, अम्ब, माई, महतारी।
मैल (सं० स्त्री०) मुर्चा, गाध, झाग, ख़राब, गाज।
मैला (वि०) अपवित्र, अशुचि, गँदला, अशुद्ध, गंदा, ख़राब।
मैहिका (सं० पु०) महिष, भैंस।
मोढ़ा (सं० पु०) कन्धा, शाना।
मोहरी (सं० स्त्री०) पनाला, नाला, नरदा।
मो (सर्व०) मुझको, मुझे।
मोकना (क्रि० स०) छोड़ना, मेलना, धरना, रखना।
मोक्ष (सं० पु०) मुक्ति, पाटल वृक्ष, मोचन, नजात, छुटकारा।
मोखा (सं० पु०) झरोखा, जंगला, छेद, सूराख़।
मोगरा (फ़ा० सं० पु०) मुग्दर, पुष्प विशेष, कुमोदिनी।
मोगरी (सं० स्त्री०) लकड़ी की बनी हुई एक भारी चीज़, जिसको कसरत करने वाला उठाता है, कुस कूटने की मुगरी।
मोघ (वि०) निरर्थक, हीन, वृथा, निष्फल, पुष्प विशेष।
मोच (सं० स्त्री०) कचक, मचक, लचक।
मोचक (सं० पु०) मोक्ष, कदली, विरागी, मोचनकारी।

मोचन (सं० पु०) उद्धारण, उद्धार, अपहरण ।
मोचरस (सं० पु०) सेमल वृक्ष का गोंद ।
मोचा (सं० पु०) केले का गाभ ।
मोची (सं० पु०) चमार, चर्मकार, जूता बनाने वाला ।
मोछ (सं० पु०) मुख पर के बाल, मूँछ ।
मोट (सं० पु०) गठरी, बोझ ।
मोटकी (सं० स्त्री०) मोटी स्त्री, कुदारी ।
मोटरा (सं० पु०) गठरी, मोट, गाँठ ।
मोटरी (सं० स्त्री०) छोटी गाँठ, पोटरी, (अधिक लजाने मित्र तब कह्यो त्रिया मति खोटरी, जिन दीन्हीं मम साथ करि भरम गवाँवन मोटरी) ।
मोटा (वि०) स्थूल, पुष्ट ।
मोटापा (सं० पु०) स्थूलता, मोटाई ।
मोटिया (सं० पु०) कुली, बोझा ढोने वाला, मोट [ढोवैया ।
मोठ (सं० स्त्री०) गट्टर, चरस, कलाई, एक तरह का अन्न, जिसकी दाल बनती है ।
मोड़ (सं० पु०) बल, ऐंठन, घुमाव ।
मोड़ना (क्रि० अ०) फेरना, ऐंठना, चढ़ाना, घुमाना ।
मोड़ा (सं० पु०) वैरागी, संन्यासी, मुड़िया ।
मोढ़ा (सं० पु०) चौकी, आसन, कन्धा ।
मोतिया (सं० पु०) एक फूल का नाम ।
मोतियाविन्दु (सं० पु०) चक्षु रोग विशेष, आँख की एक बीमारी, जिसमें आँखों की रोशनी जाती रहती है
मोती (सं० पु०) मुक्ता, रत्न विशेष ।
मुहा०—मोती की सी आब उतरना=बेइज़्ज़त होना । मोती कूट कर भरना—ख़ूब चमकीला होना । मोती पिरोना—मोती गूँथना ।
मोतीचूर (सं० पु०) एक तरह की मिठाई ।
मोथरा (सं० पु०) घोड़े का हड्डी रोग ।
मोथा (सं० पु०) नागरमोथा, नगरौथा ।
मोद (सं० पु०) आनन्द, हर्ष, ख़ुशी, ख़ुशबू ।
मोदक (सं० पु०) लड्डू (वि०) हर्षदाता ।
मोदा (सं० पु०) बनिया, दूकानदार, बैपारी, महाजन ।
मोधू (सं० पु०) सीधा, भोला, निश्छल, मूर्ख ।
मोम (सं० पु०) मधुमल ।
मोमिया (सं० पु०) औषधि विशेष, एक दवा का नाम ।
मोर (सं० पु०) एक पखेरू का नाम, मयूर ।
मोरचंग (सं० स्त्री०) एक तरह का बाजा ।
मोरछल (सं० पु०) चौंरी, चमर विशेष ।
मोरनी (सं० स्त्री०) मोर की स्त्री ।
मोरपंखी (सं० स्त्री०) एक तरह की नाव, बजरा ।
मोरमुकुट (सं० पु०) मोर के समान मुकुट, मोर पंख का मुकुट ।
मोरी (सं० स्त्री०) नाली, पनाली ।
मोल (सं० पु०) भाव, क़ीमत, दाम ।
मुहा०—मोल ठहराना=क़ीमत लगाना । मोल तोल =भाव, निर्ख । मोल लेना=ख़रीदना । बिना मोल की चेरी=बे मोल ली हुई दासी ।
मोषक (सं० पु०) ठग, लुटेरा, चोर ।
मोसना (क्रि० अ०) चुराना, ठगना, लूटना ।
मोह (सं० पु०) प्यार, माया, दया, दुलार, लाड़, छोह ।
मोहन (सं० पु०) श्रीकृष्ण का नाम, मोहने वाला, मनमाना, प्यारा ।
मोहनभोग (सं० पु०) हलुआ ।
मोहनमाला (सं० पु०) सोने और मूँगे की माला ।
मोहना (क्रि० अ०) बस करना, मन हरना, लुभाना ।
मोहनी (सं० स्त्री०) मन हरने वाली स्त्री, रूपवती ।
मोहलत (सं० स्त्री०) समय देना, अवकाश ।
मोहाना (सं० पु०) संगम, बेणी, नदी के गिरने का स्थान ।
मोहि (सर्व०) मुझको, मुझे ।
मोहित (वि०) मूर्च्छित, अचेत, लुभाया हुआ ।
मोहिनी (सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, वेश्या, रूपवती ।
मोही (सं० पु०) मुग्ध, अवाच्य ।
मौ (सं० पु०) शहद, मधु ।
मौक़ा (अ० सं० पु०) अवसर, ठीक, जगह ।
मौक़ूफ़ (अ० सं० पु०) बन्द, छुड़ाना ।
मौक्तिक (सं० पु०) मोती ।
मौज (सं० स्त्री०) लहर, तरंग ।
मौञ्जीबन्ध (सं० पु०) उपनयन, जनेऊ डालना ।
मौड़ (सं० पु०) देखो "मौर" ।
मौन (सं० पु०) चुपचाप, नहीं बोलना । स्मृति में लिखा है कि "दिशा फिरते, लघुशंका करते, स्त्री प्रसंग करते, दतवन करते, स्नान करते, भोजन करते इन छः जगह मौन रहना चाहिये ।'
मौना (सं० पु०) डलिया ।

मौनी (सं० पु०) मौनव्रती।
मौमाखी (सं० स्त्री०) मधुमक्खिका।
मौर (सं०पु०) कन्धर, मौढ़, आम की मञ्जरी, फूल, कली।
मौराना (क्रि० अ०) खिलना, फूलना, मौरना, आम के मौर का खिलाना।
मौरूसी (अ० सं० पु०) पीढ़ी दर पीढ़ी, पुश्तैनी।
मौर्ख्य (सं० पु०) मूर्खता। [चिल्ला।
मौर्वी (सं० स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला, कमान का
मौलना (क्रि० अ०) मञ्जरित होना, मौर लगना।
मौलवी (अ० सं० पु०) मुसलमानी धर्म को जानने वाला, स्वामी, मालिक।
मौलसिरी (सं० स्त्री०) पुष्प वृक्ष विशेष।
मौला (सं० पु०) खुदा।
मौलाना (सं० पु०) मुसलमानों का धर्म गुरु।
मौलि (सं० स्त्री०) चूड़ा, किरीट, मस्तक।
मौलिक (वि०) मूल सम्बन्धी (सं०पु०) कुलीन, भिन्न।
मौली (सं० स्त्री०) नारा, मुकुट, मस्तक लाल रंगा हुआ सूत।
मौसा (सं० पु०) माँ की बहिन का पति, खालू।
मौसी (सं० स्त्री०) माँ की बहिन।
मौसेरा (सं० पु०) मौसा के सम्बन्धी।
मौसेरी (सं० स्त्री०) माँ की बहिन की बेटी।
मौहूर्त्तिक (सं० पु०) दैवज्ञ, गणक।
म्रदिमना (सं० स्त्री०) कोमलता, नम्रता, नरमाई।
म्रदीयान (वि०) अतिशय मृदु, अत्यन्त कोमल।
म्रियमाण (सं० पु०) मृतप्राय। [शुष्क।
म्लान (वि०) मलिन, गन्दा, लज्जित, थका हुआ, हैरान,
म्लानता (सं० स्त्री०) खेद, विषाद।
म्लान बदन (सं० पु०) म्लान मुख, उदास।
म्लान मुख (सं०पु०) उदास। [भाव, थकावट, कुम्हलाना।
म्लानि (सं० स्त्री०) कान्तिक्षय, मलिनता, मैलापन, मुर-
म्लिष्ट (सं० पु०) अस्फुट स्वर, अव्यक्त वचन।
म्लेच्छ (सं० पु०) अशुद्ध शब्द, अपशब्द, व्याकरण से अशुद्ध शब्द, अपभ्रंश, अपभ्रष्ट शब्द, चातुर्वर्ण्य व्यवस्था हीन जाति, वह जाति जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की व्यवस्था न हो, नीच जाति।
म्लेच्छदेश (सं० पु०) वह देश, जहाँ म्लेच्छ रहते हैं, जिस देश में चातुर्वर्ण्य की व्यवस्था न हो। भारतवर्ष से भिन्न देश।

य

य—हल् का छब्बीसवाँ वर्ण, इसे अन्त्यस्थ कहते हैं, इसका उच्चारण-स्थान तालु है (सं० पु०) कीर्ति, वायु, यम, यव, योग, म्लेच्छ, याम, धृति, त्यक्, बालक, विष्णु, यत्न, एक की संख्या, पथिक, नामवरी, मिलावट, सवारी, नीच, चला जाने वाला। [अपभ्रंश।
यक (सं० पु०) यक्ष विशेष, कुबेर का खज़ानची, यक्ष का
यक़ीन (अ० क्रि० वि०) भरोसा, निश्चय, विश्वास।
यकृत् (सं० स्त्री०) पेट के दाहिने भाग में रहने वाला एक मांस का पिंड, उदर रोग, तापतिल्ली, बरवट, प्लीहा, पिलई रोग, कलेजे की बीमारी। [विशेष।
यक्ष (सं० पु०) कुबेर के सेवक, गुह्यक देवता, देवयोनि
यक्षधूप (सं० पु०) गुग्गुल, धूप, सर्ज रस, राल, कई प्रकार के वस्तुओं से बनाई हुई धूप। कहते हैं कि इसके देने से भूत प्रेत भग जाते हैं।
यक्षपति (सं० पु०) कुबेर, यक्षों के स्वामी।
यक्षिणी (सं० स्त्री०) कुबेर पत्नी, कुबेर की स्त्री, यक्षभार्या, कुबेर की जोरू।
यक्षेन्द्र (सं० पु०) कुबेर, यक्षराज। [तपेदिक़।
यक्ष्मा (सं० पु०) रोग विशेष, राजरोग, क्षयी रोग,
यख़नी (अ० सं० स्त्री०) पकाये हुए मांस का पानी, वह पानी जो कि मांस के पकने पर बचा रहे।
यजति (सं० स्त्री०) याग, यज्ञ।
यजत्र (सं० पु०) अग्निहोत्री, आतिशपरस्त, जिसने अग्निहोत्र लिया हो। [कर्म।
यजन (सं० पु०) याग, ब्राह्मणों के छः कर्मों में से एक
यजमान (सं० पु०) यज्ञ करने वाला, यज्ञ करने की दीक्षा लेने वाला, दक्षिणा देकर जो देव पितर आदि के लिये कर्म करावे।

यजाक (वि०) दाता, देने वाला, फ़ैयाज़ ।
यजुः (सं० पु०) यज्ञ में गाया जाने वाला वैदिक छन्द, यजुर्वेद के छन्द, यजुर्वेद का छोटा नाम ।
यजुर्वेद (सं० पु०) चार वेदों में एक वेद का नाम, यजुर्वेद की संहिता ४० अध्यायों में समाप्त हुई है, यह वेद यज्ञ के लिये है ।
यजुर्वेदी (सं० पु०) यजुर्वेदवेत्ता, यजुर्वेद का जानने वाला, यजुर्वेद के अनुसार काम कराने वाला ।
यजुर्वेदीय (वि०) यजुर्वेद सम्बन्धी ।
यज्ञ (सं० पु०) हवन, पूजा, होम, बलिदान, विष्णु, भगवान्, याग, देवता के उद्देश्य से दी हुई बलि । [किया जाता है ।
यज्ञकुण्ड (सं० पु०) वह वेदी या कुण्ड, जिसमें हवन
यज्ञपशु (सं० पु०) यज्ञ के पशु, जिसके मांस से यज्ञ में हवन किया जाता है ।
यज्ञपुरुष (सं० पु०) विष्णु, भगवान्, पुरुषोत्तम, नारायण, यज्ञ के आराध्य देवता ।
यज्ञभाजन (सं० पु०) यज्ञार्थ पात्र, यज्ञ के बर्तन ।
यज्ञभूमि (सं० स्त्री०) यज्ञशाला ।
यज्ञवृक्ष(सं० पु०) रेंगनी, कण्टकारि, भटकटैया, कटाई ।
यज्ञवेदी (सं० स्त्री०) यज्ञभूमि ।
यज्ञशाला (सं० स्त्री०) यज्ञ करने का स्थान ।
यज्ञसूत्र (सं० पु०) जनेऊ, यज्ञोपवीत ।
यज्ञाङ्ग (सं० पु०) गूलर का पेड़, खदिर वृक्ष ।
यज्ञाङ्गा (सं० स्त्री०) सोमवल्ली, गूलर, खैर का पेड़, सोमपेड़, बभनेटी ।
यज्ञान्त (सं० पु०) स्नान, यज्ञ के अन्त का स्नान ।
यज्ञारि (सं० पु०) महादेव, त्रिपुरारि, देव, शिव ।
यज्ञिक (सं० पु०) पलाश वृक्ष ।
यज्ञिय (सं० पु०) यज्ञीय हित कर्म, यज्ञ कर्माह, द्वापर युग, यज्ञ करने लायक, यज्ञ के लिये योग्य कार्य, तीसरा युग । [का, गूलर का वृक्ष ।
यज्ञीय (सं० पु०) उदुम्बर वृक्ष, यज्ञ सम्बन्धीय, यज्ञ
यज्ञेश्वर (सं० पु०) विष्णु, परमेश्वर, भगवान्, पुरुषोत्तम, यज्ञ के प्रधान देवता ।
यज्ञोपवीत (सं० पु०) जनेऊ, यज्ञ सूत्र ।
यज्वा (सं० पु०) विधिपूर्वक यज्ञ करयिता, विधि से यज्ञ कराने वाले ।

यत् (अव्य०) हेतु, क्योंकि, जो, जितना, किस लिये ।
यतन (सं० पु०) उपाय, तदबीर, चेष्टा, हिकमत, यत्न ।
यतः (अव्य०) यस्मात्, जिस हेतु, जिस कारण, जहाँ से, अवधिवाचक ।
यति (सं० पु०) संन्यासी, वैरागी, जिसने अपनी सब इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया हो (सं० स्त्री०) विरति, विराम, पढ़ने का ठहराव ।
यतिनी (सं० स्त्री०) संन्यासिनी, अवधूतिनी ।
यतीम (अ० सं० पु०) अनाथ, बे माँ बाप का बालक ।
यत्किञ्चित् (अव्य०) जो कुछ, अल्प, थोड़ा ।
यत्न (सं० पु०) न्याय के चौबीस गुणों में से एक गुण, यतन, उद्योग, उपाय, प्रयास, मनोरथ सिद्ध करने के लिये उद्योग, हिकमत, मेहनत ।
यत्नवान् (वि०) यत्नी, यत्न करने वाला ।
यत्नी (वि०) यत्न करने वाला, उपाय करने वाला ।
यत्र (अव्य०) जहाँ, जिस स्थान पर, जिस जगह, जिस के विषय में । [स्थान पर, बिखरा हुआ ।
यत्रतत्र (अव्य०) जहाँ कहीं, इधर उधर, अनियत
यथा (क्रि० वि०) सादृश्य, जैसे, त्यों, जिस प्रकार, जिस रीति, बराबर, तुल्य । [से, किसी तरह ।
यथा कथञ्चित् (अव्य०) जिस प्रकार से, किसी तरह
यथा काम (क्रि० वि०) यथेच्छ, अभिलाषा से अधिक, इच्छानुसार,मन के मुताबिक,पूरा ।[समय के अनुसार ।
यथा काल (सं० पु०) ठीक समय पर, समय के अनुकूल,
यथाक्रम (सं० स्त्री०) परिपाटी से, सिलसिलेवार, तरतीबवार, क्रमानुसार, क्रमपूर्वक । [ज्यों त्यों ।
यथा तथा (अव्य०) जैसे तैसे, जिस किसी प्रकार,
यथायथम् (अव्य०) यथार्थ, ठीक ठीक । [सिब हो ।
यथायोग्य (वि०) जैसा चाहिये, यथोचित, जैसा मुना-
यथार्थ (वि०) ठीक ठीक, सचमुच, हक़ीक़तन् ।
यथावत् (अव्य०) संपूर्ण, सब, समाप्त ।
यथाविधि (क्रि० वि०) विधिपूर्वक, यथायोग्य, जैसा योग्य हो, मर्यादा के अनुसार ।
यथा शक्ति (क्रि० वि०) जितना हो सके, जैसी सामर्थ्य हो, अपने बल के अनुसार । [सार ।
यथाशास्त्र (क्रि० वि०) शास्त्रानुकूल, शास्त्र के अनु-
यथासाध्य (क्रि० वि०) इच्छापूर्वक, मन के अनुसार, इच्छानुकूल, शक्ति के अनुसार ।

यथा सम्भव (वि०) जैसा होने के योग्य, जैसा हो सकता हो, सम्भव के अनुसार । [जहाँ का तहाँ ।
यथास्थित (अव्य०) जैसा का तैसा, ज्यों का त्यों,
यथेच्छा (सं० स्त्री०) इच्छानुसार, यथेष्ट ।
यथेच्छाचार (सं० पु०) मनमाना आचरण, निन्दित व्यवहार, अच्छृङ्खल आचरण । [माफ़िक़ ।
यथेच्छाचारिता (सं० स्त्री०) इच्छानुसार, मन के
यथेप्सित (क्रि० वि०) यथेच्छ, इच्छानुसार, मनचाहा ।
यथेष्ट (वि०) प्रचुर, बहुतायत से, काफ़ी ।
यथेष्टाचार (सं० पु०) इच्छानुसार व्यवहार ।
यथोक्त (अव्य०) जैसा कहा गया है, कहे के अनुसार ।
यथोचित (सं० पु०) यथायोग्य, जैसा उचित हो, जैसा मुनासिब हो ।
यद (वि०) जो ।
यदपि (अव्य०) यद्यपि, दो वाक्यों को जोड़ने वाला, समुच्चयवाचक शब्द । [तक, जब तक ।
यदवधि (अव्य०) तत्पर्य्यन्त, जब से, जहाँ से, जहाँ
यदा (अव्य०) जब, जिस काल से, जब लग । [अगर ।
यदि (अव्य०) पक्षान्तर, सम्भावना, कदाचित्, शायद,
यदीय (वि०) जिसका ।
यदु (सं० पु०) राजा ययाति का बड़ा बेटा, एक राजा का नाम जो ययाति का बड़ा बेटा और श्रीकृष्ण का पुरुखा था । चन्द्रवंशी राजाओं में से एक राजा ।
यदुकुल (सं० पु०) यदुराज का घराना, यदुवंश ।
यदुनाथ (सं० पु०) श्रीकृष्णचन्द्र, यदुवंशियों के स्वामी ।
यदुवंश (सं० पु०) यदुराज का कुल, यदुराज का घराना ।
यदुवंशी (सं० पु०) यादव, यदु के वंश के लोग ।
यदृच्छा (सं० स्त्री०) स्वतंत्रता, जैसी इच्छा हो ।
यद्यपि (अव्य०) अगरचे, यदपि, समुच्चयवाचक ।
यद्वा (अव्य०) पक्षान्तरबोधक, ज्यों ।
यद्वातद्वा (अव्य०) ऐसा वैसा, भला बुरा ।
यन्ता (सं० पु०) सारथी, हाथीवान्, फ़ीलवान्, हाथी हाँकने वाला (वि०) दमनकारक ।
यन्त्र (सं० पु०) कल, हर प्रकार का हथियार या औज़ार, वाद्य, बाजा, तंत्रशास्त्र में अपने इष्ट देवता का चक्र, देवता का आसन, टोटका, यंत्र मंत्र, ताला, नियंत्रण, रोकना ।
यन्त्रण (सं० पु०) रक्षण, बन्धन, दमन, यातना, संकोच ।
यन्त्रणा (सं० स्त्री०) पीड़ा, कष्ट, दुःख, व्यथा, अधिक दुःख । [यन्त्रिका प्राण जाय केहि बाट) ।
यन्त्रिका (सं० पु०) ताला, कुफ़ुल (लोचन निज पद
यन्त्रित (सं० पु०) बद्ध, रोका हुआ, बंद किया हुआ, बँधा हुआ, सज़ा दिया हुआ ।
यन्त्री (सं० पु०) यन्त्र देने वाला, जंत्र मंत्र करने वाला ।
यम (सं० पु०) दक्षिण दिग्पाल, धर्मराज, अष्टाङ्ग योगान्तर्गताङ्ग विशेष, शरीर साधन मात्र नित्य कर्म, काल, मृत्यु, जोड़ा, युग्म ।
यमक (सं० पु०) शब्दालङ्कार विशेष, अनुप्रास, एक शब्दालङ्कार जहाँ एक ही पद दो तीन बार आते हैं, वहाँ उस पद का अर्थ हर एक जगह जुदा २ होता है (भिन्न अरथ फिरि फिरि जहाँ ओई अक्षर वृन्द । आवत है सो जमक करि वर्णत बुद्धि बिलन्द) ॥ (उ०—पूना बारी सुनि के अमीरन की गति लई भागिबे को मीरन समीरन की गति है । मारयो जुरि जंग जसवन्त जसवन्त जाके संग केते रजपूत रजपूत पति है । भूषन भनै यों कुलभूषन भुसिल सिवराज तोहि दीन्हीं सिवराज वर कति है । नौंहू खंड दीप भूप भूतल के दीप आजु समै के दिलीप दिलीपति को सिदति है) ।
यमकिङ्कर (सं० पु०) यमदूत, रोग, पक्षी विशेष ।
यमघण्ट (सं० पु०) योग विशेष, ज्योतिष का एक योग ।
यमज (वि०) यमक सन्तान, जोड़ा, जो दो लड़के एक साथ जन्मे हों ।
यमदीप (सं० पु०) वह दीपक जो कार्तिक बदी १३ या १४ के दिन यम के नाम से जलाया जाता है ।
यमदूत (सं० पु०) यमराज का दूत, यम का दूत ।
यमदेवता (सं० स्त्री०) भरणी नक्षत्र ।
यमद्वितीया (सं० स्त्री०) भ्रातृ द्वितीया, कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया, भइया दूज ।
यमधार (सं० पु०) कटार ।
यमन (सं० पु०) यवन, बन्धन, संयम, छेदन, बाँधना, रोकना, अन्तर, राग विशेष, जाति विशेष ।
यमनिका (सं० स्त्री०) कनात, यवनिका, परदा, (उ०—हृदय यमनिका बहु बिधि लागी) ।
यमनी (वि०) यमन देश का ।

यमराज (सं० पु०) धर्मराज, मौत का देवता।
यमल (सं० पु०) दो, जोड़ा, युग्म।
यमलार्जुन (सं० पु०) कुबेर के दो पुत्र जिनका नाम नल कूबर था, एक ऋषि के शाप से वृक्ष हुए और इनका उद्धार श्रीकृष्ण ने किया।
यमवाहन (सं० पु०) यमराज की सवारी, महिषी, भैंसा।
यमस्वसा (सं० स्त्री०) यमुना, दुर्गा।
यमानी (सं० स्त्री०) अजवाइन, अजवैन।
यमी (सं० स्त्री०) यमुना नदी, जितेन्द्रिय।
यमुना (सं० स्त्री०) दुर्गा, एक नदी का नाम, जमुना नदी जो यमराज की बहिन और सूर्य की बेटी है।
यमुना भ्राता (सं० पु०) यमराज।
ययाति (सं० पु०) नहुष राजा का बेटा, इनका विवाह शर्मिष्ठा और देवयानी से हुआ था। वृद्ध होने पर भी इनकी भोग की इच्छा नहीं तृप्त हुई तब इन्होंने अपने पुत्र पुरु से यौवनावस्था माँगी और उन्हीं को राज्याधिकारी बनाया।
यलाफैला (वि०) बिथरा, पसरा, फैला।
यव (सं० पु०) स्वनाम ख्यात शुष्क धान्य, जव, इन्द्रजौ।
यवक्षार (सं० पु०) जवाखार।
यवन (सं० पु०) देश विशेष, वेग, वेगातिशय युक्त अश्व, गेहूँ, जाति विशेष, तुरुक, पहले समय में यूनान के रहने वालों को यवन कहते थे पर अब सब विदेशियों को यवन कहते हैं, म्लेच्छ।
यवनपुर (सं० पु०) यवनों का देश या नगर।
यवनानी (सं० स्त्री०) यवन लिपि, तुरकों के दस्तखत।
यवनिका (सं० स्त्री०) देखो "यमनिका"।
यवशा (सं० स्त्री०) अजवाइन।
यवशाक (सं० पु०) वास्तूक, बथुई।
यवस (सं० पु०) तृण, घास।
यवसुरा (सं० स्त्री०) वह मादक जो जव से निकाली जाय।
यवागू (सं० स्त्री०) कढ़ी, लप्सी, रोगी को देने वाला खाद्य विशेष जो खास तरह से बनाया गया हो।
यवाग्रज (सं० पु०) देखो "यवक्षार"।
यवास (सं० पु०) एक तरह का कटीला पौधा, जवास।
यविष्ठ (सं० पु०) अति युवा, कनिष्ठ भ्राता, बड़ा जवान छोटा भाई।
यवीयस (वि०) कनिष्ठ, युवा, छोटा।

यश (सं० पु०) प्रसिद्ध, सुख्याति, कीर्ति, ख्याति, नामवरी, नेकनामी।
यशस्करी (सं० स्त्री०) विद्या, इल्म।
यशस्कार (वि०) कीर्तिकारक, उत्तम कर्म, कीर्ति बढ़ाने वाला काम।
यशस्वी (वि०) प्रतिष्ठित, नामी, कीर्तिमान्।
यशोद (सं० पु०) पारद, पारा। [माता, नन्द की स्त्री।
यशोदा (सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की पालन करने वाली
यष्टि (सं० पु०) डंडा, छड़ी, निशान का बाँस।
यष्टिका (सं० स्त्री०) हार विशेष, लाठी, एक लरा हार।
यष्टी (सं० स्त्री०) मुलेठी, जेठीमधु।
यष्टीमधु (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम में लाया जाता है, जेठीमधु।
यह (सर्व०) निश्चयवाचक सर्वनाम।
यहाँ (अव्य०) इस जगह, इस ठौर, इस स्थान में।
यहीं (अव्य०) इसी स्थान में, यहाँ, इसी ठौर।
यहूदी (सं०पु०) एक जाति विशेष।
या (अव्य०) वा, हे (सर्व०) यह।
याकूत (सं० पु०) एक मणि का नाम, जवाहिर।
याग (सं० पु०) यज्ञ, देवता के उद्देश्य से दी हुई बलि, वैदिक कृत्य विशेष, श्रौत और स्मार्त भेद से यह दो प्रकार का होता है श्रौत यज्ञ के सात भेद होते हैं:—१ अग्निहोत्र, २ दर्शपौर्णमास, ३ पिण्ड पितृयज्ञ, ४ आग्रायण, ५ चातुर्मास निरूढ़, ६ पशु बन्ध, ७ श्रौतामणय, स्मार्त यज्ञ के भी सात भेद हैं—१ उपासन, २ वैश्वदेव, ३ स्थालीपाक, ४ आग्रायण, ५ सर्पबलि, ६ ईशान बलि और ७ इष्टकानुष्टका
यागेष्ट (सं० पु०) सीसक, सीसा
याचक (वि०) माँगने वाला, प्रार्थना करने वाला, भिक्षुक, मँगता, भिखारी।
याचना (क्रि० स०) माँगना, प्रार्थना करना, चाहना, भीख माँगना, किसी वस्तु के पाने की इच्छा से माँगना। [लायक।
याचनीय (वि०) माँगने के योग्य, प्रार्थना करने के
याचित (सं० पु०) याचित वस्तु, माँगी हुई चीज़।
याजक (सं० पु०) याज्ञिक, यज्ञ कराने वाला, पुजारी, पुरोहित, मतवाला हाथी, राजा का हाथी।
याजकता (सं० स्त्री०) पुरोहिताई, पुरोहिती।

याजन (सं० पु०) याजक का काम, यज्ञ कराने का काम।
याजी (सं० पु०) याजक, यज्ञ कराने वाला, यागकर्ता।
याजुष (वि०) यजुर्वेद संबन्धीय, यज्ञ का।
याज्ञवल्क्य (सं० पु०) एक मुनि का नाम जिन्होंने धर्म शास्त्र की एक स्मृति बनाई है। ये राजा जनक के गुरु और उनकी सभा के अध्यक्ष थे। [की पत्नी।
याज्ञसेनी (सं० स्त्री०) यज्ञसेन कन्या, द्रौपदी, पाण्डवों
याज्ञिक (सं० पु०) दर्भ विशेष, यज्ञ करने वाला, पुरोहित, लाल खैर, यज्ञकर्ता। [सके।
याज्य (सं० पु०) यज्ञाधिकारी, जिसका यज्ञ कराया जा
याञ्चा (सं० स्त्री०) याचन, माँगना, चाहना।
यात (वि०) गत, अतीत, लब्ध, अंकुश द्वारा हस्ति चालन, गया हुआ, व्यतीत हुआ।
यातना (सं० स्त्री०) अत्यन्त वेदना, यन्त्रणा, दण्ड देना, नरक का दुःख। [हुआ।
यातयाम (वि०) जीर्ण, मालन, पुराना, व्यवहार किया
यातायात (सं० पु०) आवागमन, जाना आना।
यातुधान (सं० पु०) निशाचर, राक्षस, रावण का भाई।
यात्रा (सं० स्त्री०) प्रस्थान, कूच, उत्सव, उपाय, चलना, तीर्थ को जाना, कोई पर्व या उत्सव जिसमें देवता की मूर्त्ति को रथ आदि में बैठा कर बाहर ले जाते हैं—जैसे रथ यात्रा आदि।
यात्री (सं० पु०) तीर्थ करने वाला, जाने का मुहूर्त।
याथार्थिक (सं० पु०) वास्तविक, ठीक, यथार्थ, जो ठीक काम करे।
याथार्थ्य (सं० पु०) सत्यता, यथार्थता, सचाई।
याद (सं० पु०) कंठ, सुध।
यादव (सं० पु) श्रीकृष्ण, यदुवंशीय, यदुवंश के लोग, गो महिषादि धन (सं० स्त्री०) दुर्गा, पार्वती।
यादस् (सं० पु०) जल जन्तु विशेष।
यादृश (अव्य०) जैसा, जैसी, जिसके समान।
यादोनाथ (सं० पु०) समुद्र, वरुण, पानी का देवता।
यान (सं० पु०) वाहन, सन्धि आदि छः गुणों में से एक सवारी, पालकी।
यान-मुख (सं० पु०) जूआ, रथ का अगला हिस्सा।
यानी (अव्य०) अर्थात्।
यापन (वि०) काल व्यतीत करना, हटाना।
याप्ययात (वि०) शिविका, पालकी।
याबू (सं० पु०) टट्टू, टाँघन।
याभ (वि०) मैथुन, सोहबत।
याम(सं०पु०)प्रहर,पहर,संयम,दिन रात का आठवाँ भाग।
यामघोष (सं०पु०) कुक्कुट, मुर्गा(सं०स्त्री०)यन्त्र विशेष।
यामाता (सं० पु०) जामाता, दामाद, जमाई।
यामि (सं० स्त्री०) स्वसाकुल स्त्री, धर्म पत्नी, धर्म की जोरू। [हरदी।
यामिनी (सं० स्त्री०) रात्रि, रजनी, रात, निशा, शब,
यामिनी भाषा (सं० स्त्री०) यवन लोगों की भाषा, एक भाषा विशेष, फ़ारसी।
यामुना (वि०) अंजन, सुरमा, एक प्रकार का अंजन।
याम्य (सं० पु०) अगस्त्य मुनि, चन्दन का वृक्ष (सं० स्त्री०) भरणी नक्षत्र, दूसरा नक्षत्र। [भीख।
यायावर (सं० पु०) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा, अनमाँगी
यार (सं० पु०) मित्र, दोस्त, साथी, संघी।
यावक (सं० पु०) लाख, कुलमाष, तुलसी, शाली, कुलथ।
यावज्जीवन (अव्य०) मरण लौं, मृत्यु पर्यन्त, जीवन भर, उमर भर। [जहाँ तक, सबब, जितना।
यावत् (अव्य०) जब लग, साकल्य, अवधि, परिमाण,
यावत्तावत् (अव्य०) जितना, इतना।
यावनी (सं० स्त्री०) यवनों की।
यावनी-भाषा (सं० स्त्री०) देखो "यामिनी भाषा"।
याही (सर्व०) इसको, इसे।
यियक्षु (वि०) जो यज्ञ करना चाहे।
युक्त (वि०) उचित, मिला हुआ, योग्य, हस्त चतुष्टय, असक्त, चार हाथ का पैमाना।
युक्ति (सं० स्त्री०) प्रवीणता, हथौटी, तर्क, न्याय, गुण, परामर्श, दलील, तजवीज़, मिलाप, लोक व्यवहार।
युग (सं० पु०) सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि ये चार युग हैं। सत्ययुग १७२८००० वर्ष का, त्रेतायुग १२९६००० वर्ष का, द्वापरयुग ८६४००० वर्ष का और चौथा कलियुग ४३२००० वर्ष का होता है।
युग धर्म (सं० पु०) काल का धर्म, काल माहात्म्य।
युगपत् (अव्य०) एक बेर में।
युगल (वि०) दो, जोड़ा, युग्म।
युगल मंत्र (सं० पु०) लक्ष्मीनारायण का मंत्र।
युगान्त (सं० पु०) युग का अन्त जिसमें सृष्टि का नाश होता है।

युग्म (वि०) युगल, जोड़ा, दो ।
युग्मपत्र (सं० पु०) रक्त काञ्चन वृक्ष ।
युग्यान (सं० पु०) सारथी, गाड़ीवान् ।
युत (वि०) युक्त, मिला हुआ ।
युद्ध (सं० पु०) लड़ाई, संग्राम, विवाद, जंग ।
युद्धनिदेश (सं० पु०) युद्ध घोषणा, लड़ाई का संदेश ।
युद्धसज्जा (सं०स्त्री०) लड़ने का सामान, जंग की तैयारी ।
युधाजित् (सं० पु०) भरत के मामा ।
युधान (सं० पु०) क्षत्रिय जाति, संग्रामकारी ।
युधिष्ठिर (सं० पु०) पाण्डवराज, पाँचों में से बड़ा, कुन्ती और पाण्डु का बड़ा बेटा ।
युयु (सं० पु०) अश्व, घोटक, घोड़ा । [का पिता ।
युयुत्सु (सं० पु०) योद्धा, युद्धेच्छा, धृतराष्ट्र, दुर्योधन
युवक (वि०) तरुण, जवान, नवीन अवस्था वाला ।
युवती (सं० स्त्री०) यौवनवती स्त्री, १६ वर्ष से ३० वर्ष तक की स्त्री ।
युवन (वि०) युवाँ ।[राज्य का अधिकारी हो, राजकुमार ।
युवराज (सं० पु०) राजा का प्रधान पुत्र जो उसके बाद
युवा (वि०) यौवनयुक्त, जवान, तरुण, सोलह वर्ष से अधिक उमर का ।
युष्मद् (सर्व०) तुम, तू, मध्यम पुरुष का कर्ता ।
यूँ (अव्य०) इस प्रकार, इस तरह से, यों, बिना कारण, अकारण, सहज में ।
यूँही (अव्य०) प्रकार ।
यूक (सं० पु०) ढील, जूँ, केशकीट, खटमल ।
यूका (सं० स्त्री०) चिल्लर, जूँ ।
यूथ (सं० पु०) झुंड, जथा, समूह, वृन्द, प्राणियों का समूह, पुष्प वृक्ष विशेष, जूही । [झुंड का सरदार ।
यूथनाथ (सं० पु०) जंगली हाथियों के झुंड का मालिक,
यूथप (सं० पु०) सेनापति, दल का प्रधान ।
यूथपति (सं० पु०) यूथनाथ ।
यूथी (सं० स्त्री०) जूही, पुष्प विशेष । [खैर का पेड़ ।
यूप (सं० पु०) यज्ञ का स्तम्भ, यज्ञ पशु बंधनार्थ खम्भा,
यूष (सं० पु०) जूस, परहे, पथ्य । [यूहा) ।
यूहा (सं० पु०) समूह, झुण्ड (पठवहिं जहँ तहँ बानर
योग (सं० पु०) मेल, लगन, मिलन, भला समय, तपस्या विशेष, चित्तवृत्ति का निरोध, पातञ्जलि रचित शास्त्र विशेष, समाधि, मन का किसी विषय में लगाना, योतिष के विष्कुम्भ आदि सत्ताइस कालों में से एक काल, दवाई, वस्तु, धन, दूत, संबन्ध, समय, भावी, भवितव्यता ।
योगज (सं० पु०) अगरू नामक गंध दोष, प्रत्यक्ष का एक कारण । अलौकिक सन्निकर्ष (वि०) योग से उत्पन्न, योग संबन्धी । [निद्रा, विष्णु की निद्रा ।
योगनिद्रा (सं० स्त्री०) ध्यान, महामाया, योग की
योगपट्ट (सं० पु०) योग के समय पहनने का कपड़ा, पूजा आदि के समय पहनने का वस्त्र ।
योगभ्रष्ट (वि०) योग से गिरा हुआ, समाजच्युत, ध्यानपतित । [पार्वती ।
योगमाया (सं० स्त्री०) विष्णु की माया, महामाया,
योगरूढ़ि (सं० स्त्री०) शब्द विशेष, धातु और प्रत्यय से होने वाले किसी अर्थ विशेष बोधकशब्द जैसे— "पंकज" केवल कमल को ही कहते हैं, पंक से उत्पन्न होने वाले और को नहीं, गिरिधारी, लम्बोदर आदि ।
योगारूढ़ (सं० स्त्री०) योगी, योगयुक्त जिसने विषयों से इन्द्रियों को हटा कर अपने वश में किया है ।
योगिनी (सं० स्त्री०) योग करने वाली स्त्री, दुर्गा की सखियाँ, इनकी संख्या ६४ है । ये चौंसठ योगिनी के नाम से प्रसिद्ध हैं ज्योतिष की दश दशाओं में से एक दशा ।
योगी (सं० पु०) योग करने वाले, योग साधन, तपस्वी ।
योगेश्वर (सं० पु०) सिद्ध, तपस्वी, योगी ।
योग्य (वि०) उपयुक्त, उचित, समर्थ, पवित्र, योग करने की शक्ति रखने वाला, पुष्य नक्षत्र, औषध विशेष ।
योग्यता (सं० स्त्री०) प्रवीणता, निपुणता, क्षमता, क्रिया-कृत, शब्द कारण विशेष । [विशेष ।
योग्या (सं० स्त्री०) सूर्य की स्त्री, शक्ति, मति, औषध
योजक (वि०) योगकारक, मिलाने वाला, दलाल ।
योजन (सं० पु०) चार कोस की दूरी, संयोग, मिलाप ।
योजनगन्धा (सं० स्त्री०) मृगमद, सीता, सत्यवती, कस्तूरी, व्यासदेव जी की माता ।
योजना (सं० पु०) मेल, मिलाप, जोड़ ।
योजनीय (वि०) योग्य, जोड़ने के लायक ।
योतु (सं० पु०) नाप, परिमाण ।

योद्धा (सं० पु०) सावन्त, सूर्मा, लड़ाका, वीर, बहादुर ।
योधन (सं० पु०) लड़ाई, संग्राम, युद्ध ।
योधा (सं० पु०) देखो " योद्धा " ।
योधापन (सं० पु०) वीरता, शूरता, सावन्ती ।
योधेय (सं० पु०) संग्रामकर्त्ता, सूरमा ।
योनि (सं० पु०) उत्पत्ति-स्थान, कारण, भग, कुश ।
योनिज (वि०) वह काया जो योनि से निकलता हो, प्राणि विशेष, मनुष्य आदि ।
योनिदेवता (सं० स्त्री०) पूर्वा फाल्गुणी नक्षत्र ।
योम (सं० पु०) दिन, वार, रोज़ ।
योषित् (सं० स्त्री०) नारी, अबला, स्त्री ।
यौं (अव्य०) इस प्रकार, ऐसा, इस तौर ।
यौगिक (वि०) योगजात, योग संबन्धीय, शब्द विशेष, वे शब्द जो दो शब्दों के योग से अर्थ बोध करते हैं । जो प्रकृति और प्रत्यय के योग से उत्पन्न होने वाले अर्थों का बोधन करता है ।
यौतिक (सं० पु०) ज्योतिष ।
यौतुक (सं० पु०) दैजा, दहेज, ब्याह में बेटी का पिता अपनी बेटी को जो धन वस्त्र आदि देता है ।
यौत्स्ना (सं० स्त्री०) उजेरी रात, शुक्ल पक्ष की रात्रि, चन्द्रिका युक्त रात्रि ।
यौधेय (सं० पु०) संग्रामकारी ।
यौन (सं० पु०) वैवाहिक संबन्ध, ब्याह ।
यौवन (सं० पु०) तरुणावस्था, जवानी ।
यौवन लक्षण (वि०) लावण्य, तारुण्य चिह्न, मूँछों का आना, .खूबसूरती ।
यौवनाश्व (सं० पु०) मान्धाता राजा । [का मिलना ।
यौवराज्य (वि०) बाप के जीते जी बेटे को राजगद्दी

र

र—यह व्यञ्जन का सत्ताइसवाँ अक्षर है और इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है (सं० पु०) पावक, अग्नि, तीक्ष्ण, कामदेव की आग, दान ।
रंस (सं० स्त्री०) रश्मि, किरण, दीप्ति ।
रँहट (सं० पु०) गड़ारी, जल निकालने का यंत्र ।
रंहस (वि०) वेग, शीघ्रता, तेज़ी, जल्दीपन ।
रई (सं० स्त्री०) दही मथने की लकड़ी, मथनी, बिलोनी, कसी ।
रईस (सं० पु०) बड़ा आदमी, धनी, धनवान् ।
रक़बा (अ०सं०पु०) विस्तार, क्षेत्रफल, ज़मीन की माप ।
रक़म (अ०सं०पु०) रुपये की तादाद, लिखावट, तहरीर ।
रक़ाब (सं० स्त्री०) घोड़े की काठी का पायदान ।
रक़ाबी (सं० स्त्री०) छोटी थाली, तश्तरी ।
रक्त (सं० पु०) कुङ्कुम, लोहित वर्ण, केशर, ताम्बा, लाल रंग, शरीर के ७ धातुओं में से एक धातु विशेष, सेन्दुर, रत्ती, पद्मक, लाख, मजीठ ।
रक्तकन्द (सं० पु०) प्याज़, गाजर, मूँगा ।
रक्तकोढ़ (सं० पु०) कुष्ठिरोग, एक तरह का कोढ़ जिससे सारा शरीर लाल हो जाता है । [दूब ।
रक्तघ्न (सं० पु०) लोहितक वृक्ष, लोध औषधि, पूर्वा,
रक्तचन्दन (सं० पु०) लाल चन्दन ।
रक्त चूर्ण (सं० पु०) सिंदूर, सेनुर ।
रक्त जिह्वा (सं० पु०) सिंह, लाल जीभ वाले जानवर ।
रक्ततुण्ड (सं० पु०) शुक, सुआ, जिसकी लाल चोंच हो ।
रक्त दन्तिका (सं० स्त्री०) भगवती, रूप विशेष ।
रक्त धातु (सं० पु०) गेरू, गैरिक ।
रक्तप (सं० पु०) राक्षस, .खून पीने वाला, जोंक, खटमल, मच्छड़ । [मछली ।
रक्तपक्षी (सं० स्त्री०) रोहू मछली, एक प्रकार की
रक्तपा (सं० पु०) जोंक, खटमल, मच्छड़ ।
रक्तपाकी (सं० स्त्री०) बैंगन का पौधा [वाला, नलौक ।
रक्तपात (सं० पु०) .खून का गिरना, जोंक, .खून पीने
रक्तपिण्ड (सं० पु०) जवा का फूल ।

रक्तपित्त (सं० पु०) रक्त स्राव रोग । [जड़ी ।
रक्त पुनर्नवा (सं० स्त्री०) गदहपुर्ना, एक प्रकार की
रक्त फल (सं०स्त्री०) कुन्दुरू,बरगद का फल,सुवर्ण बेली ।
रक्त बात (सं० पु०) रोग विशेष ।
रक्तबीज (सं० पु०) असुर विशेष, एक राक्षस का नाम जो शुम्भ, निशुम्भ का सेनापति था जिसको दुर्गा ने मारा था । दाड़िम, अनार (सं०स्त्री०) सेन्दुरिया, सदा सोहागिन ।
रक्त मष्टिका (सं० स्त्री०) मजीठ ।
रक्त रेणु (सं० पु०) सिन्दूर, पलाश कलिका, पुन्नाग, लौंग ।
रक्त लोचन (सं० पु०) कबूतर, जिसकी आँखें लाल हों ।
रक्तवर्द्धना (सं० स्त्री०) कपोत, कबूतर ।
रक्त वृष्टि (सं० स्त्री०) उत्पात विशेष, .खून की वर्षा ।
रक्तशालि (सं० पु०) लाल रंग का धान विशेष ।
रक्तसार (सं० पु०) खैर का पेड़, लाल चन्दन ।
रक्ता (सं० स्त्री०) गुञ्ज द्वयम, लाल और सफ़ेद घुँघची ।
रक्ताकार (सं० पु०) प्रवाल, मूँगा ।
रक्ताक्ष (सं० पु०) महिष, चकोर पक्षी, कोकिल, सारस पक्षी, पारावत, लाल नेत्र वाला ।
रक्तार्क (सं० पु०) मदार, लाल आक का पेड़ ।
रक्तालू (सं० पु०) रतालू, सकरकन्द, कन्द विशेष ।
रक्तिका (सं० स्त्री०) गुञ्जा, घुँघची, रत्ती, राई, रत्ती भर की तौल ।
रक्तोत्पल (सं० पु०) शल्मली वृक्ष, लाल कमल ।
रक्षक (सं० पु०) रक्षा करने वाला, पालक, पोषक, मालिक ।
रक्षण (वि०) बचाव, हिफ़ाज़त ।
रक्षणीय (वि०) हिफ़ाज़त करने के योग्य ।
रक्षस (सं० पु०) राक्षस, निशाचर ।
रक्षा (सं० स्त्री०) जतु, परित्राण, बचाना ।
रक्षापेलक (सं० पु०) द्वारपाल, दरबान, सिपाही ।
रक्षित (सं०पु०)रक्षा किया हुआ,बचाया हुआ । [करना ।
रखना (क्रि० स०) धरना, त्यागना, बचाना, हिफ़ाज़त
रखवाना (क्रि० स०) धराना, सौंपना ।
रखवारी (सं० स्त्री०) रखवाली । [चरवाहा ।
रखवाला (सं० पु०) रखवाली करने वाला, गड़रिया,
रखवाली (सं० स्त्री०) रखाई, रक्षा, बचाव ।
रखिया (सं० स्त्री०) रखाई, बचाना, रक्षा ।
रखी (सं० स्त्री०) सिक्ख के प्रधान की रक्षा करने के लिये जो कर दिया जाता है, रक्षक ।
रखैया (सं० पु०) रक्षक, रखने वाला ।
रग (सं० स्त्री०) नाड़ी, नस ।
रगड़ (सं० स्त्री०) घिसाव, संघर्ष ।
रगड़ना (क्रि० अ०) घिसना, घोटना, मलना ।
रगड़ा (सं० पु०) घिसाव, झगड़ा, अंजन विशेष ।
रगड़ा झगड़ा (सं० पु०) लड़ाई झगड़ा, दंगा .फसाद ।
रगेद (सं० स्त्री०) खदेड़ ।
रगेदना (क्रि० अ०) खदेड़ना, पीछे दौड़ना ।
रघु (सं० पु०) सूर्यवंशीय राजा, राजा दिलीप का बेटा, रामचन्द्र जी का परदादा, रघु का वंश ।
रघुनन्दन (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र, दशरथ के बड़े पुत्र ।
रघुनाथ (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र ।
रघुपति (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र ।
रघुराज (सं० पु०) रामचन्द्र ।
रघुवंश (सं० पु०) रघु राजा का कुल, कालिदास कवि का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध काव्य जिसमें राजा दिलीप से लेकर राजा अग्निवर्ण तक का वर्णन किया गया है ।
रघुवर (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र जी, रघुनाथ ।
रङ्क (सं० पु०) कृपण, मन्द, दरिद्र, कंजूस, कङ्गाल ।
रङ्ग (सं० पु०) राँगा, रंग, नाच, जंग का मैदान, खेल की जगह, सोहागा ।
मुहा०—रंग उड़ जाना = रंग बदल जाना, डरना । रंग उतर जाना = पीला हो जाना, फीका पड़ जाना । रंग करना = .खुशी करना । रंग चढ़ना = शराब के नशे में मगन होना । रंग देखना = किसी चीज़ की दशा को या उसके परिणाम को जानना ।
रङ्गत (सं० स्त्री०) वर्ण, शोभा, डौल ।
रङ्गद (सं० पु०) सोहागा (सं० स्त्री०) फिटकरी ।
रङ्गना (क्रि० स०) रंग चढ़ाना ।
रङ्ग भंग (सं० पु०) आनन्द में बिगाड़ होना ।
रङ्गभूमि (सं० स्त्री०) नाट्यभूमि, मल्लभूमि, जंग भूमि ।
रङ्गमहल (सं० पु०) क्रीड़ा का स्थान, भोग विलास करने का महल ।
रङ्गमारना (क्रि० अ०) खेल जीतना ।

रङ्गरूप (सं०पु०) वर्ण, आकार, छबि, चमक दमक ।
रङ्गवाई (सं० स्त्री०) रंगने की मजूरी ।
रङ्गवैया (सं० पु०) रंगने वाला, रंगरेज़ ।
रङ्गसाज़ी (सं० स्त्री०) रंग चढ़ाने का काम, चित्रकारी ।
रङ्गाई (सं० स्त्री०) रंगने का पैसा ।
रङ्गाना (क्रि० स०) रंग देना, रंग डालना ।
रङ्गावट (सं० स्त्री०) रँगाई, रंगाई देना ।
रङ्गी (वि०) रंगीला ।
रङ्गीला (वि०) चटकीला, भड़कीला, रसिक, छैला ।
रचक (सं० पु०) रचना करने वाला । [करना ।
रचना (क्रि० स०) बनाना, नई बात निकालना, पैदा
रचयिता (सं० पु०) निर्माता, रचने वाला, निर्माणक ।
रचाना (क्रि० स०) करना, बनाना, मेंहदी से अथवा और किसी चीज़ से हाथ पैर रंगना ।
रज (सं० पु०) धूल, रेत, पराग ।
रजक (सं० पु०) वर्णशंकर जाति, धोबी, धोबिन ।
रजत (सं० पु०) रूपा, चाँदी, हाथी के दाँत, हार, स्वर्ण, श्वेत, शुक्ल वर्ण ।
रजतद्युति (सं० पु०) गौर वर्ण, गोरा ।
रजन (सं० पु०) रंग चढ़ाना, रंगना ।
रजनी (सं० पु०) रात, यामिनी ।
रजनीकर (सं० पु०) चन्द्रमा ।
रजनीचर (सं० पु०) राक्षस, असुर, चोर, चौकीदार ।
रजनीजल (सं० पु०) तुषार, ओस, कुहार ।
रजब (सं० पु०) मुसलमानों का सातवाँ मास ।
रजनीमुख (सं० पु०) सन्ध्या काल ।
रजवाड़ा (सं० पु०) राज्य, राजपूताना ।
रजस (सं० स्त्री०) धूल, रेत, पराग ।
रजस्वल (सं० पु०) भैंसा ।
रजस्वला (सं० स्त्री०) स्त्रियों का मासिक धर्म ।
रज़ामन्दी (अ० सं० स्त्री०) प्रसन्नता, ख़ुशी ।
रजाई (सं० स्त्री०) राजा की आज्ञा ।
रज़ाई (सं०स्त्री०) रूईदार दोहर, लिहाफ़ ।
रज़ामन्दी (सं०स्त्री०) प्रसन्नता, ख़ुशी, अनुमति ।
रजाय (सं० पु०) आज्ञा, अनुशासन ।
रजायसु (सं० पु०) राजा का आदेश ।
रजोगुण (सं० पु०) दूसरा गुण जिससे मोह, क्रोध, प्यार, अहंकार आदि पैदा होते हैं ।
रजोवती (सं० स्त्री०) रजस्वला ।
रज्जु (सं० स्त्री०) रस्सी, डोरी ।
रञ्जक (सं० पु०) चित्रकार, रंग करने वाला ।
रञ्जन (सं० पु०) रंगसाज़ी, चित्रकारी । [करना ।
रटन (सं० पु०) घोषणा, रटना, कण्ठ करना, याद
रटना (क्रि० स०) बोलना, कहना, बार बार दोहराना ।
रण (सं० पु०) लड़ाई, जंग, संग्राम, ध्वनि, पर्यटन ।
रणगढ़ा (सं० पु०) मुर्चाबन्दी, गढ़खाई ।
रणभूमि (सं० स्त्री०) रणक्षेत्र, लड़ाई का मैदान ।
रणवास (सं०स्त्री०) रानियों का महल ।
रणित (वि०) बजता हुआ ।
रण्ड (सं० पु०) रेंड़ ।
रण्डा (सं० स्त्री०) बिधवा, बेवा, राँड़ ।
रण्डापा (सं० पु०) वैधव्य धर्म, बेवापन, दुःखभोग ।
रण्डिया (सं० स्त्री०) राँड़, बिधवा स्त्री ।
रण्डी (सं० स्त्री०) नारी, अबला, बाला । [मर गई हो ।
रण्डुआ (सं० पु०) निरस्त्री, बिना स्त्री का, जिसकी स्त्री
रत (सं० पु०) मैथुन, रात । [के भजन में रात बिताना ।
रतजगा (सं० पु०) उत्सव में रात का जागरण, ईश्वर
रततालिन् (सं० पु०) अध्यापक, परस्त्रीगामी ।
रतताली (सं० स्त्री०) कुटनी, दूती ।
रतन (सं० पु०) जवाहिर, रत्न, हीरा, मानिक, मोती ।
रतनार (सं० पु०) लाल रंग ।
रतनियाँ (सं० पु०) एक प्रकार का चावल ।
रतवाही (सं० स्त्री०) सुरैतन, रात में धावा ।
रतहिण्डक (सं० पु०) वेश्या प्रेमी, लंपट, कामुक ।
रताना (क्रि० अ०) कामातुर होना ।
रतायनी (सं० स्त्री०) वेश्या, कंचनी ।
रतालू (सं० पु०) एक तरकारी का नाम, आलू विशेष, एक जड़ । [राग, मैथुन ।
रति (सं० स्त्री०) कामदेव की स्त्री, सम्भोग, प्यार,
रतिपति (सं० पु०) कामदेव । [स्त्री ।
रती (सं० स्त्री०) आठ यव की तौल, रत्ती, कामदेव की
रतीवन्त (वि०) भाग्यवान्, ख़ुशनसीब ।
रतौंधा (सं० पु०) वह पुरुष जिसे रतौंधी का रोग हो ।
रतौंधी (सं० पु०) जिसको रात को न दिखाई दे ।
रत्ती (सं० स्त्री०) परिमाण विशेष, आठ जौ या चावल भर की तौल, भाग्य, भाग ।

रत्न (सं० पु०) जवाहिर, मणि, बहुमूल्य पत्थर, (नीलम, पन्ना, हीरा, माणिक, लहसनिया, पुखराज, गोमेद, मोती, मूँगा ये रत्न हैं), आँख की पुतली।
रत्नजटित (सं० पु०) रत्नों से जड़ा हुआ। [बनता है।
रत्नजोत (सं० स्त्री०) एक पौधा विशेष जिससे लाल रंग
रत्नराज (सं० पु०) रत्न श्रेष्ठ, मानिक, हीरा।
रत्न सिंहासन (सं० पु०) रत्नों से जड़ा हुआ सिंहासन, राजसिंहासन।
रत्नाकर (सं० पु०) समुद्र, रत्नों की खान।
रत्नावली (सं० स्त्री०) रत्नों की माला, एक नाटिका का नाम, जिसे राजा श्रीहर्ष ने बनाया था।
रथ (सं० पु०) देह, पैर, बेंत का पेड़, युद्ध यान विशेष।
रथकार (सं० पु०) रथ बनाने वाला, बढ़ई, क्षत्री और वैश्य कन्या से उत्पन्न होने वाले को महिष्या कहते हैं, वैश्य और शूद्र कन्या से उत्पन्न होने वाले को करण कहते हैं, महिष्या और करण संज्ञावति कन्या से उत्पन्न पुत्र को रथकार कहते हैं।
रथगर्भक (सं० पु०) शिविका, पालकी, डोली।
रथपाद (सं० पु०) चक्र, पहिया, चाका।
रथयात्रा (सं० स्त्री०) आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की दुइज को जगन्नाथ जी का रथारोहण रूप उत्सव।
रथवान (सं० पु०) सारथी, गाड़ीवान।
रथवाहक (सं० पु०) सारथी, रथवान।
रथाङ्ग (सं० पु०) पक्षी विशेष, पहिया, चकवा पक्षी।
रथी (सं० पु०) रथ का स्वामी, तिकठी, जिस पर मुर्दा को श्मशान में ले जाते हैं। (रावण रथी विरथ रघुबीरा। देखि विभीषण भयो अधीरा॥) [संख्या।
रद (सं० पु०) दन्त, दशन, दाँत, चीरना, बत्तीस की
रदछद (सं० पु०) ओष्ठ, ओठ, होंठ।
रद्द (सं० पु०) निकम्मा, बेकार, इनकार।
रद्दा (सं० पु०) भीत की परत, ईंट पर ईंट धरना।
रद्दी (सं० स्त्री०) निकम्मे और पुराने काग़ज़।
रन (सं० पु०) युद्ध, रण, संग्राम, समर।
रनगढ़ (सं० पु०) छावनी, शिविर।
रनवन (सं० पु०) भयानक वन, महावन।
रनवास (सं० पु०) रानियों के रहने का महल।
रन्तिदेव (सं० पु०) विष्णु, चन्द्रवंशीय नृप विशेष, कूकुर, कुत्ता।
रन्धना (क्रि० स०) पकाना, चुराना, सिझाना।
रन्धु (सं० पु०) छिद्र, बिल, छेद।
रपट (सं० स्त्री०) फिसलना, पतन, खिसलना।
रपटना (क्रि० स०) फिसलना, खिसलना, गिरना।
रपट पाना (क्रि० स०) वेग से दौड़ना।
रपटा (सं० पु०) बान, स्वभाव, अभ्यास।
रपटाना (क्रि० स०) दौड़ना, भागना।
रफूचक्कर (क्रि० अ०) भाग जाना।
रफूगर (सं० पु०) रफू करने वाला।
रबड़ (सं० स्त्री०) श्रम, थकाई, दौड़ धूप।
रबड़ना (क्रि० अ०) थकना, व्यर्थ दौड़ धूप करना।
रबड़ा (वि०) थका, माँदा, श्रान्त, श्रामत।
रबड़ी (सं० स्त्री०) गाढ़ा दूध, खोवा, खोया, बसौंदी।
रबर (सं० पु०) एक पेड़ की गोंद जिसको गन्धक में पकाते हैं। उसके कपड़े जूते आदि बनाते हैं और काग़ज़ पर से अक्षर उड़ाते हैं।
रबी (सं० पु०) नाज की वह फ़सल जो अक्टूबर और नवम्बर में बोई जाती है और मार्च, एप्रिल में कटती है।
रम (सं० स्त्री०) शराब, मदिरा। [(साधुओं की बोली में)।
रमचेरा (सं० पु०) ग़ुलाम, दास, भृत्य, किङ्कर,
रमठ (सं० पु०) हींग। [भतार।
रमण (सं० पु०) क्रीड़ा, मैथुन, कामदेव, गधा, पति,
रमणा (सं० स्त्री०) नारी, उमास्त्री, परवर की जड़, जाँघ, खेल, अच्छी औरत।
रमणी (सं० स्त्री०) उत्तमा स्त्री, सुन्दर स्त्री।
रमणीक (सं० पु०) मनोहर, सुन्दर, मनभावन।
रमणीय (वि०) मनोहर, सुन्दर, ख़ूबसूरत।
रमत (सं० पु०) कौतुक, बिहार, खेल, क्रीड़ा।
रमना (क्रि० अ०) खेलना, भोग करना, आनन्द करना, फिरना, घूमना (सं० पु०) शिकार करने की जगह।
रमन्ना (सं० पु०) बाहर या भीतर घुसने की परवानगी करना।
रमल (सं० पु०) ज्योतिष शास्त्र का अङ्ग विशेष, प्रश्न शास्त्र। [द्युति, राजा शशिध्वज की कन्या।
रमा (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, शोभा, विष्णु की शक्ति, चमक,
रमाना (क्रि० स०) फुसलाना, बहकाना।
रमानाथ (सं० पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, नारायण, भगवान।

रमाना (क्रि० अ०) बझाना, फुसलाना ।
रमापति (सं० पु०) विष्णु, लक्ष्मीपति ।
रमावत (सं० पु०) एक प्रकार के वैष्णव साधु विशेष ।
रम्भा (सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, वेश्या, केला, कदली, पार्वती, विलचा, खेला । [यन का पेड़ ।
रम्य (सं० पु०) चम्पक पुष्प, मनोज्ञा, दिलचस्प, बका-
रय (सं० पु०) धारा, प्रवाह, वेग ।
रयौं (क्रि० स०) रंगे, मिले ।
ररना (क्रि० अ०) बोलना, शब्द करना ।
रराटी (सं० स्त्री०) ललाट, कपार, माथा ।
रलना (क्रि० अ०) मिलना, पिसना ।
रलाना (क्रि० स०) मींचना, मिलाना, पिसाना ।
रल्लक (सं० पु०) कम्मल, पशमीने का कम्बल ।
रव (सं० पु०) शब्द, आहट, ध्वनि, नाद, आवाज़ ।
रवथ (सं० पु०) कोकिल, कोइल ।
रवन्ना (सं० पु०) चुंगी के महसूल की रसीद, रनवास का सेवक, चौगान भेजना, भेजने की रसीद, रवाना करना ।
रवा (सं० पु०) सोने वा चाँदी का रेतन या चूर, धूल, बालू ।
रवि (सं० पु०) सूर्य्य-मदार का पेड़ ।
रविक (सं० पु०) नीम का पेड़ ।
रविकर (सं० स्त्री०) सूर्य की किरण ।
रविज (सं० पु०) शनीचर ग्रह, यम, वैवस्वत, मनु ।
रवितनया (सं० स्त्री०) यमुना नदी ।
रविनन्दिनी (सं० स्त्री०) यमुना ।
रविपुत्र (सं० पु०) करण-सुग्रीव ।
रविमणि (सं० स्त्री०) सूर्यकान्ति मणि, सूर्य की मणि ।
रविमण्डल (सं० पु०) सूर्य्यमण्डल, सूर्य लोक ।
रविवार (सं० पु०) ऐतवार, आदित्यवार । [बाग ।
रश्मि (सं० स्त्री०) किरण, तेज, कान्ति, रास, घोड़े की
रस (सं० पु०) जीभ से जिसका स्वाद मालूम होय, शृंगारादि रस, स्थायी भाव (१ शृङ्गार, २ वीर, ३ करुण, ४ अद्भुत, ५ हास्य, ६ भयानक, ७ रौद्र, ८ वीभत्स, ९ शान्त) ।
रसक (सं० पु०) खपरिया ।
रसकपूर (सं० पु०) कर्पूर रस, पारद, पारा, रस काफ़ूर ।
रसज्ञ (सं० स्त्री०) जिह्वा, रस का जानने वाला, ज़बान ।
रसद (सं० पु०) सेना के भोजन का सामान ।
रसन (सं० पु०) स्वाद, चीखना (सं० स्त्री०) लहसन, कन्द विशेष ।
रसना (सं० स्त्री०) जिह्वा, जीभ, स्वाद, आवाज़ ।
रसनेन्द्रिय (सं० पु०) जिह्वा, जीभ, ज़बान ।
रसमसाना (क्रि० अ०) भीजना, पसीजना ।
रस रस (अव्य०) धीरे धीरे ।
रसरा (सं० पु०) डोरी, मोटा रस्सा ।
रसराज (सं० पु०) पास, चपल, पारा धातु ।
रसरी (सं० स्त्री०) रसरी ।
रसवत (सं० पु०) रसौत, औषध विशेष, अञ्जन विशेष ।
रसवती (सं० स्त्री०) रसीली, सुशीला ।
रसा (सं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, धरती, पाढ़ा ।
रसाञ्जन (सं० पु०) काजल, सुर्मा ।
रसातल (सं० पु०) पाताल, सातवाँ पाताल, नीचे का सातवाँ लोक जहाँ नाग, असुर, दैत्य और राक्षस रहते हैं और शेष जी और बलि राज करते हैं ।
रसाना (क्रि० स०) जोड़ना, मिलाना, गलाना ।
रसायन (सं० पु०) प्राण बचाने वाले रस, विहंग नामौषध (सं० स्त्री०) नीगुडूची, कमर, तड़ागी, छाछ, ज़हर ।
रसायन फला (सं० स्त्री०) हरीतकी, हरड़ ।
रसायन विद्या (सं० स्त्री०) इल्म कीमिया, किमिस्ट्री, रस इत्यादि बनाने की विद्या ।
रसाल (सं० पु०) ईख, आम्र, पनस, गोधूम, रसना पूर्वा, एक ख़ुशबूदार चीज़ ।
रसिक (सं० पु०) सारद पक्षी, तुरंग, हस्ती (सं० स्त्री०) जिह्वा, इक्षुरस, काञ्ची, चन्द्रहार ।
रसिकाई (सं० स्त्री०) धूर्त्तता ।
रसिया (वि०) लुच्चा, लम्पट, विषयी, भोगी ।
रसियाना (सं० पु०) भींगना, गीला होना ।
रसीद (सं० स्त्री०) पहुँच पत्र, संवादपत्र ।
रसीला (वि०) रस युक्त, भोगी, लम्पट, मज़ेदार ।
रसे (क्रि० वि०) धीमे, हौले, गते गते, धीरे धीरे ।
रसेन्द्र (सं० पु०) पारद, पारा, रसराज, रस चपल ।
रसोइया (सं० पु०) रसोई बनाने वाला, बावर्ची ।
रसोई (सं० स्त्री०) पाक-स्थान, भोजन बनाने की जगह ।
रसौत (सं० पु०) रसवत, अंजन विशेष ।
रस्म (सं० स्त्री०) रीति, दस्तूर ।
रस्सा (सं० पु०) जेवड़ा, डोरा ।

रस्सी (सं० स्त्री०) जेवरी, रसरी, डोरी।
रह (क्रि० अ०) ठहर जा, रह जा (सं० पु०) रास्ता, मार्ग।
रहकल (सं० पु०) छोटी तोप, तुपक।
रहकला (सं० पु०) ताँगा, एक गाड़ी, छकड़ा।
रहचोला (सं० पु०) लल्लोचप्पो, मीठी बातें, ख़ुशामद की बातें।
रहजाना (क्रि० अ०) बाट जोहना, सन्तोष करना।
रहट (सं० स्त्री०) गरारी, चर्ख़ी, पानी खींचने की कल।
रहटा (सं० स्त्री०) चरख़ा, सूत कातने की कल।
रहड़ू (सं० पु०) छकड़ा, शकट।
रहत (सं० पु०) टिकाव, वास।
रहते (क्रि० अ०) आँखों सामने, सामने।
रहन (सं० स्त्री०) चलन, रीति, भाँति।
रहना (क्रि० अ०) ठहरना, बसना, निवास करना।
रहम (सं० पु०) दया, तरस, गर्भ-स्थान।
रहमान (सं० पु०) दयालु, रहम करने वाला।
रहमार (सं० पु०) बटमार, चोट्टा, डकैत।
रहला (सं० पु०) चना, बूट, चणक।
रहवा (सं० पु०) चेला, लौंडा, दास।
रहवाई (सं० स्त्री०) घर का भाड़ा।
रहवैया (सं० पु०) बासी, रहने वाला, बाशिन्दा।
रहस (सं० पु०) ठठोलपन, एकान्त, तनहाई।
रहसना (क्रि० अ०) हुलसना, प्रसन्न होना।
रहस्य (सं० पु०) लता विशेष, छिपाने के लायक़।
रहाइस (सं० स्त्री०) पास, टिकाऊ, स्थिति।
रहाव (सं० पु०) रहन, स्थिति, टिकाव।
रहित (सं० पु०) वर्जित, त्यक्त, छोड़ा हुआ।
रहीम (अ० वि०) दयालु, रहम करने वाला (सं० पु०) एक प्राचीन कवि का नाम।
राँगा (सं० पु०) धातु विशेष, एक धातु का नाम।
राँझन (सं० पु०) प्रिय, प्रियतम, एक प्रसिद्ध प्रणयी।
राँझरा (सं० पु०) खिलौने वाला।
राँझा (सं० पु०) प्रियतम, सज्जन, एक मनुष्य का नाम जो हीरा का आशिक था, जिसका स्वाँग राजपूताने में होली के दिनों में होता है।
राँड (सं० स्त्री०) विधवा, जिस स्त्री का पति मर गया हो।
मुहा०—राँड का साँड = विधवा स्त्री का लड़का, बिगड़ा हुआ लड़का।
राँदनी (सं० स्त्री०) शाक विशेष, एक शाक का नाम।
राँद परोस (सं० पु०) अड़ोस पड़ोस, आस पास।
राँधना (क्रि० अ०) रींधना, सिभाना, किसी वस्तु को पानी से पकाना।
राँपी (सं० स्त्री०) खुरपी, लोहे का एक छोटा अस्त्र जो घास काटने के काम आता है।
राँभना (क्रि० अ०) डकरना, बिबियाना, गाय बैल का [बोलना।
राई (सं० स्त्री०) सरसों (सं० पु०) राजा, प्रधान, स्वामी।
राईया (सं० स्त्री०) सरसों।
राउ (सं० पु०) राजा।
राउत (सं० पु०) राज्य पुत्र, मान्य, ठाकुर, अहीरों [की उपाधि।
राउर (सं० पु०) आपका।
राकस (सं० पु०) राक्षस, दानव, दैत्य, रात को दिखाई पड़ने वाला, प्रकाशमान पदार्थ का जीव।
राका (सं० स्त्री०) रात्रि, रात, निशा, पूर्णिमा, पूर्ण-[मासी।
राकापति (सं० पु०) चन्द्रमा, निशाकर।
राख (सं० स्त्री०) भस्म, भभूत, जली हुई लकड़ी का [चूरा।
राखना (क्रि० स०) ठहराना, धरना, रक्षा करना।
मुहा०—पेट राखना, = गर्भ धारण कराना। घर राखना = घर की रखवाली करना, गृहस्थी सम्हालना।
राखी (सं० स्त्री०) सूत की बनी रक्षा जो सावन की पूर्णिमा को बाँधी जाती है, अन्तर, गण्डा।
मुहा०—राखी बाँधना = भाई चारे का नाता स्थापित करना। राखी भेजना = रक्षा के लिये शरण में आना। पहले यह चाल थी कि आपत्ति पड़ने पर स्त्रियाँ किसी भी वीर के पास राखी भेजती थीं और राखी लेने वाला मनुष्य रक्षा करने के लिये बाध्य हो जाता था।
राखी पूनो (सं० स्त्री०) श्रावण पूर्णिमा।
राग (सं० पु०) अनुराग, प्रेम, क्रोध, वर्ण, रंग, लाल रंग, गाने का सुर, गवैयों में ये राग प्रसिद्ध हैं—मेघ, मल्लार, सारंग, हिंडोल, बसन्त, भैरव, श्री और दीपक।
राग छाना (क्रि० अ०) आनन्द होना, आनन्द मनाना।
रागना (क्रि० अ०) गाना, अलापना, गीत गाना, क्रोध करना, क्रोधित होना, क्रोध से लाल होना।
राग रंग (सं० पु०) गाना बजाना।
रागिनी (सं० स्त्री०) राग की स्त्रियाँ, ३६ रागिनी होती [हैं।

रागी (सं० पु०) गाने वाला, अनुरागी, प्रेमी (वि०) क्रोधी, कोपी।

राघव (सं० पु०) रघुनाथ, रामचन्द्र, एक प्रकार की मछली, यह सब से बड़ी मछली होती है।

राचना (क्रि० अ०) प्रेम विह्वल होना, अनुरक्त होना, प्रीति में फँसना।

राछ (सं० पु०) अस्त्र विशेष, शिल्पियों का एक अस्त्र।

राज (सं० पु०) राज्य, राजा का अधिकार, घर बनाने वाला कारीगर, थवई। [कुमारी शाहज़ादी।

राजकन्या (सं० स्त्री०) राजा की बेटी राजकुँवारी, राज-

राजकर (सं० पु०) राजदण्ड, चुंगी, लगान, महसूल, सरकारी मालगुज़ारी। [बादशाही।

राजकीय (वि०) राज सम्बन्धीय, राजा का, सरकारी,

राजकीय महासभा (सं० स्त्री०) राजा का दरबार, शाही दरबार।

राजकुटुम्ब (सं० पु०) शाही ख़ानदान, राजवंश, राजा का घराना। [बेटा।

राजकुमार (सं० पु०) राजपुत्र, शाहज़ादा, राजा का

राजकोष (सं० पु०) बादशाही ख़ज़ाना। [आसन।

राजगादी (सं० स्त्री०) राजगद्दी, राजासन, राजा का

राजत (वि०) चाँदी का, रञ्जित, निर्म्मित, शोभित।

राजत्व (सं० पु०) राजा का काम, प्रभुता।

राजदण्ड (सं०पु०) राज सम्बन्धी दण्ड। [दाँत।

राजदन्त (सं० पु०) सामने के दो दाँत, अगले दोनों

राजद्रोही (सं० पु०) राजा का बैरी, राजविमुखी, राजा से द्रोह करने वाला, राजा की बुराई करने या चाहनेवाला।

राजद्वार (सं० पु०) फाटक, पुरद्वार, राजा की डेवढ़ी।

राजधर (सं० पु०) मंत्री, सचिव।

राजधानी (सं० स्त्री०) राजपुर, वह नगर जहाँ राजा रहे और जहाँ राज का काम काज करे। [होना।

राजना (क्रि० अ०) चमकना, शोभना, अच्छा मालूम

राजनीति (सं० स्त्री०) राजनियम, राज्य करने की चाल, राज-प्रबन्ध, एक ग्रन्थ का नाम।

राजन्य (सं० पु०) क्षत्रिय, राजपुत्र, अग्नि, क्षीरिका वृक्ष, राजा का बेटा।

राजपत्नी (सं० स्त्री०) रानी, पटरानी, महिषी, बेगम।

राजपुत्र (सं० पु०) बुध ग्रह, जाति विशेष, राजकुमार।

राजपूत (सं०पु०) क्षत्री, एक जाति विशेष।

राजभोग (सं० पु०) मध्याह्न काल का नैवेद्य।

राजमन्दिर (सं० पु०) राजभवन, राजा का महल

राजमार्ग (सं० पु०) राज पथ, सड़क, बादशाही रास्ता।

राजराज (सं० पु०) कुबेर, सम्राट्, चन्द्र।

राजराणी (सं० स्त्री०) महाराणी, राज्ञी।

राजरोग (सं० पु०) रोगों का राजा अर्थात् बड़ा रोग, क्षय रोगादि।

राजर्षि (सं० पु०) उत्तम क्षत्रिय।

राजलक्ष्मी (सं० स्त्री०) राज सम्पत्ति, बादशाही धन।

राजशासन (सं०पु०) दण्ड, राजदण्ड, राजा की आज्ञा।

राजस (वि०) रजोगुण से पैदा हुआ, रजोगुण विशिष्ट।

राजसभा (सं० स्त्री०) राजा का दरबार।

राजसी (सं० स्त्री०) दुर्गा, रजोगुणवती (वि०) राजस, रजोगुण युक्त।

राजसूय (सं० पु०) राज कर्त्तव्य, यज्ञ विशेष, एक यज्ञ जिसको केवल चक्रवर्ती राजा ही करता है और इस यज्ञ का सारा काम काज केवल उसके आधीन और राजा करते हैं।

राजस्व (सं० पु०) कर, राज धन, लगान, मालगुज़ारी।

राजहंस (सं० पु०) एक तरह का हंस जिसके पैर और चोंच लाल होती हैं। कदम्ब, कल हंस, यक्ष, इन्द्र, नृपति, नृपोत्तम।

राजा (सं० पु०) नृपति, भूपति, नरपति, बादशाह।

राजाज्ञा (सं० पु०) राजा का आदेश, बादशाही हुक्म।

राजाधिराज (सं० पु०) सम्राट्, शाहंशाह, राजराजेश्वर, चक्रवर्ती। [लाजावर्त।

राजावर्त (सं० पु०) रवटी, रावटी, एक पत्थर विशेष,

राजि (सं० स्त्री०) श्रेणी, रेखा, जमात, लकीर, क़तार।

राजित (सं० पु०) शोभित, शोभायमान।

राजी (सं० स्त्री०) राजिका, राई, पंक्ति, श्रेणी, पाँति, प्रसन्नता, ख़ुशी। [मछली, कमल।

राजीव (सं० पु०) हरिण, हस्ती, सारस पक्षी, एक बड़ी

राजीवलोचन (सं० पु०) पद्म लोचन, कमल के समान जिसकी आँख हो। [का राजा।

राजेन्द्र (सं० पु०) महाराजा, राजाधिराज, राजाओं

राजेश्वर (सं०पु०) महाराज, राजाओं के मालिक, महीपति।

राज्ञी (सं० स्त्री०) राजपत्नी, सूर्यपत्नी, कांस्य, नील।

राज्य (सं० पु०) राजत्व, राजकार्य, राजा का काम।
राज्याङ्ग (सं० पु०) राजा, मंत्री, मित्र, कोष, देश, दुर्ग, सेना ये राजा के अंग हैं। [किनारे का मुल्क।
राठ (सं० पु०) स्वनाम ख्यात देश, गंगा के पश्चिमी
राठौर (सं० पु०) राजपूतों की एक जाति।
राढ़ (सं० पु०) कायर।
राढ़ी (सं० पु०) ब्राह्मण विशेष। [कहते हैं।
राणा (सं० पु०) राजा, उदयपुर के राजा को राणा
राणी (सं० स्त्री०) राज्ञी, राजपत्नी, राजा की स्त्री।
रात (सं० स्त्री०) रजनी, रैन, निशा, निशि।
मुहा०—रात थोड़ी और संग बहुत = काम बहुत समय थोड़ा, थोड़ी आमदनी ख़र्च ज़्यादा।
रातना (क्रि० अ०) रंग देना, राजना, रजना, किसी पर जी लगाना, किसी से बहुत प्यार होना।
राता (वि०) रंगा हुआ, रंगीन।
रातिब (सं० पु०) घोड़े हाथी का दाना, ख़ुराक।
राते (वि०) रक्त, लाल।
मुहा०—रातोंरात = रात ही में, जल्दी में।
रातौंधिया (सं० पु०) धुँधला, रतन्धला, रतौंधी वाला।
रात्र (सं० पु०) ज्ञान, इल्म, शिक्षा।
रात्रि (सं० स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी, शर्वरी, निशा, यामिनी, रात, शब। [रात्रिगमन कर्ता।
रात्रिचर (सं० पु०) राक्षस, प्रेत, भूत, चौर, चोर,
रात्र्यन्ध (सं० पु०) कौआ, तोता, बक, कोकिल आदि, वह जिसे रात में दीख न पड़े।
राद (सं० स्त्री०) पीब, पीप, मवाद, फोड़े की पीप।
राधा (सं० स्त्री०) एक गोपी जो श्रीकृष्णचन्द्र को बहुत प्यारी थी, वृषभानु सुता, एक नक्षत्र, विशाखा नाम नक्षत्र।
राधाकान्त (सं० पु०) श्रीकृष्ण।
राधाकुंड (सं० पु०) वर्द्धन पहाड़ के पास का एक कुण्ड जिसको श्रीकृष्ण ने खुदवाया था और उसमें सब तीर्थ आकर पानी डाल गये थे।
राधावल्लभ (सं० पु०) श्रीकृष्णचन्द्र जी। [पुत्र, कर्ण।
राधासुत (सं० पु०) महाविराट, कर्ण, राधेय, कुन्ती
राधिका (सं० स्त्री०) राधा, गोपी, वृषभानु की कन्या।
रान (सं० पु०) जाँघ, जानू।
रानी (सं० स्त्री०) राजा की स्त्री, बेगम, महारानी।

राब (सं० स्त्री०) ऊख आदि का पका रस, सिरका।
राबड़ी (सं० स्त्री०) ज्वार, बाजरे का आटा जो छाछ में पकाया गया हो।
राम (सं० पु०) परशुराम, राघव, रामचन्द्र, बलराम, ये विष्णु के अवतार हैं (सं० स्त्री०) हिंगु नदी, श्वेत, कण्टकारि, बथुई का साग, तमाल का पत्ता, दिलचस्प, सफ़ेद। [दुःख कथा।
मुहा०—राम कहानी = बड़ी लम्बी बात, बड़ी कथा,
रामकली (सं० स्त्री०) रागिणी विशेष।
रामकहानी (सं० स्त्री०) दुःख कहानी।
रामगिरि (सं० पु०) पर्वत विशेष, चित्रकूट पहाड़ जो बुन्देलखण्ड में है। [के पुत्र, रघुनाथ।
रामचन्द्र (सं० पु०) विष्णु का सातवाँ अवतार, दशरथ
रामजनी (सं० स्त्री०) कंचनी, पतुरिया, नौची, वेश्या, नाचने वाली।
रामतुरई (सं० स्त्री०) एक तरकारी का नाम।
रामदूत (सं० पु०) तुलसी विशेष, हनुमान।
रामदोहाई (सं० स्त्री०) राम की सौगन्ध, परमेश्वर की शपथ, एक प्रकार की शपथ। [जन्म-दिन।
रामनवमी (सं० स्त्री०) चैत्र शुक्ल नवमी, रामचन्द्र का
रामभद्र (सं० पु०) श्रीराम, दशरथ के बड़े बेटे।
रामरस (सं० पु०) लवण, नमक, नून।
राम राम (अव्य०) प्रणाम, सलाम, घृणाबोधक।
रामव्रत (सं० पु०) एक तरह के वैष्णव साधु, रामानन्दी वैरागी, रामचन्द्र को ईश्वर मान कर पूजने वाले।
रामशर (सं० पु०) वृक्ष विशेष, रमशर का पेड़, रामचन्द्र का तीर।
रामा (सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, मनोहर नारी, सुघर लुगाई (वि०) सुन्दर, मनोहर, मनभावन।
रामानन्दी (सं० पु०) रामानन्द के मत को मानने वाला, वैष्णव मत के भक्त, वैरागी साधु।
रामानुज (सं० पु०) विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के एक विशिष्ट प्रचारक, शेषावतार। [कृत रामायण।
रामायण (सं० स्त्री०) राम चरित्र, राम कथा, तुलसी-
राय (सं० पु०) राजा, एक सरकारी ख़िताब, विचार, तजवीज़।
रायज (अ० सं० पु०) रीति, रस्म, रिवाज, प्रथा।
रायता (सं० पु०) एक तरह की तरकारी जो दही में कद्दू आदि के मिलाने से बनती है।

राय मानिया (सं० पु०) एक प्रकार का चावल।
रार (सं० स्त्री०) लड़ाई, झगड़ा, कलह, दंगा, फ़साद।
राल (सं० पु०) धूप, धूना, एक तरह का गोंद, सखुवा का लासा।
राव (सं० पु०) राजकुमार, राय, अमीर।
रावचाव (सं० पु०) राग रंग, आनन्द, हर्ष, भोग, विलास, प्यार, प्रीति। [बाँस, पटमण्डप।
रावटी (सं० स्त्री०) तम्बू, छोटा डेरा, छोटा छप्पर या
रावण (सं० पु०) लङ्काधिपति, लंका का राजा जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा था।
रावणारि (सं० पु०) रामचन्द्र जी।
रावणि (सं० पु०) रावण का पुत्र, मेघनाद, इन्द्रजीत।
रावत (सं० पु०) वीर, सामन्त।
रावरा (वि०) तुम्हारा, रावरो।
रावी (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम जो पंजाब में है।
राशि (सं० स्त्री०) ढेर, समूह, मेष,वृष आदि १२ राशि।
राशिचक्र (सं० पु०) ज्योतिश्चक्र, लग्नमण्डल,द्वादश भाव, कटा मण्डल।
राष्ट्र (सं० पु०) राज्य, बलाहु, आदेश, मुल्क, राज्य।
रास (सं० पु०) एक प्रकार का नाच, बागडोर, श्री कृष्ण और गोपियों का नाच, नाच की एक प्राचीन रीति।
रासधारी (सं० पु०) रास करने वाले, ये लोग कृष्ण के दास की नक़ल करते हैं, ये विशेषकर मथुरा में हैं।
रासन (सं०पु०) रसना से उत्पन्न ज्ञान, जीभ का स्वाद।
रासभ (सं० पु०) गधा, गदहा, गर्दभ।
रासभी (सं० स्त्री०) गदही, गधी।
रासी (सं० पु०) मध्यम, साधारण, साधारण स्थिति का, वे घोड़े जो न भले हों न बुरे।
राहना (क्रि० अ०) चक्की में दाँत बनाना।
राहु (सं० पु०) आठवाँ ग्रह, जो चन्द्रमा तथा सूर्य पर ग्रहण लगाता है।
राहुग्रस्त (सं०पु०) राहु से पकड़ा हुआ, सूर्य व चन्द्रमा अर्थात् चन्द्रग्रहण वा सूर्य ग्रहण।
राहुग्रास (सं० पु०) चन्द्रग्रहण, सूर्य ग्रहण, राहु का आक्रमण।
रिक्त (सं० पु०) छूछा, शून्य, ख़ाली,छिन्न भिन्न, रीता।
रिचा (सं०स्त्री०) वेद का मंत्र विशेष।
रिझवैया (सं० पु०) रीझने वाला, ख़ुश होने वाला, ख़ुश करने वाला।
रिझाना (क्रि० स०) प्रसन्न करना, मनाना, ख़ुश करना।
रितई (क्रि० वि०) ख़ाली की हुई। [करना।
रिताना (क्रि०स०) छूँछा करना, ख़ाली करना, शून्य
रितु (सं० पु०) ऋतु, समय।
रितुराज (सं० पु०) वसन्त।
रिद्धि (सं० स्त्री०) ऋद्धि, सम्पत्ति।
रिपु (सं० पु०) वैरी, शत्रु, दुश्मन, अरि।
रिपुञ्जय (सं० पु०) एक राजा का नाम (वि०) शत्रु को जीतने वाला, शत्रुञ्जय।
रिपुता (सं० स्त्री०) शत्रुता, दुश्मनी, बैर। [हन्ता।
रिपुहा (सं० पु०) शत्रु का नाश करने वाला, रिपु-
रिरिहा (सं० पु०) रर लगाकर और गिड़गिड़ा कर माँगने वाला।
रिस (सं० स्त्री०) क्रोध, गुस्सा, कोप, चिढ़।
रिसाना (क्रि० अ०) क्रोध करना, गुस्सा होना।
रींगन (क्रि० अ०) ज़मीन में सटकर धीरे धीरे चलना, साँप आदि का चलना।
रींधना (क्रि० अ०) पकाना, पानी में डालकर किसी चीज़ को पकाना, भात आदि का पकाना।
री (अव्य०) अरी, सम्बोधन।
रीछ (सं० पु०) भालू, एक जंगली जानवर जिसके समूचे शरीर पर बड़े २ काले २ बाल होते हैं।
रीझ (सं० स्त्री०) चाह, प्यार, प्रेम। [होना।
रीझना (क्रि० अ०) प्रसन्न होना, ख़ुश होना, मोहित
रीठा (सं० पु०) एक प्रकार का फल जिससे ऊनी कपड़े साफ़ किये जाते हैं।
रीठी (सं० स्त्री०) देखो "रीठा"।
रीढ़ (सं० स्त्री०) पीठ के बीच की हड्डी।
रीता (वि०) शून्य, ख़ाली, रिक्त।
रीति (सं० स्त्री०) चाल चलन, चाल ढाल, चलन, प्रचार, क़ायदा, प्रथा, क़ानून, लोकाचार।
रीरियाना (क्रि०अ०) चिचियाना।
रीस (सं० स्त्री०) क्रोध, मोह, गुस्सा, नक़ल।
रुक (सं० पु०) रोग, उदार, दाता, दीप्ति, प्रकाश, उजियाला।
रुकना (क्रि० अ०) अटकाना, बन्द होना, ठहरना।

रुकवैया (सं०पु०) अटकने वाला, रुकने वाला।
रुकाव (सं० पु०) रोक, छेक,बाधा। [विघ्न, बाधा।
रुकावट (सं० स्त्री०) अटकाव, छेकाव, घिराव, अड़चन,
रुक्म (सं० पु०) सुवर्ण, हिरण्य, राजा।
रुक्मिणी (सं० स्त्री०) लक्ष्मी का एक अवतार, कुण्डिन-पुर के राजा भीष्म की बेटी जो कृष्ण से ब्याही गई जो पहले जन्म में सीता थी।
रुक्ष (वि०) रूखा, कठोर, प्रेम रहित। [मुँह, दयादृष्टि।
रुख़ (सं० पु०) सम्मुख, सामने, संकेत, इशारा, आज्ञा,
रुखड़ा (वि०) छोटा वृक्ष, कठोर।
रुखा (वि०) कठोर, स्नेह रहित।
रुखाई (सं० स्त्री०) घुड़की, झिड़की, धमकी, सूखापन।
रुखानी (सं० स्त्री०) बढ़ई का एक अस्त्र।
रुग्ण (वि०) रोगी, टेढ़ा।
रुग्न (वि०) देखो "रुग्ण।"
रुच (सं० स्त्री०) इच्छा, रुचि।
रुचक (सं०पु०) सज्जी, खार, उत्कट, अश्वभूषण, माला, हींग, काला नोन, बोजौरा नींबू, सोंचर नोन, दक्ष, कपोत।
रुचना (क्रि० अ०) भाना, अच्छा लगना, पसन्द आना।
रुचि (सं० स्त्री०) चाह, इच्छा, अभिलाषा, स्पृहा, चाव, शौक़, खाने की इच्छा, चमक, शोभा, प्यार, अनु-राग, मनोभिलाष।
रुचिकर (वि०) प्यारा, पाचक, भूख लगाने वाला।
रुचिमान् (वि०) प्रकाशवान्, चमकीला, दीप्तिशाली।
रुचिर (वि०) सुन्दर, मीठा, सुस्वाद, मनोहर, मनभावन।
रुजा (सं० स्त्री०) रोग, बीमारी, पीड़ा, व्याधि।
रुण्ड (सं० पु०) बिना सिर का शरीर, वह देह जो सिर से रहित हो।
रुदन (सं० पु०) रोना, आँसू बहाना, रुधिर, लोई।
रुद्ध (सं० पु०) रुका हुआ, छेका हुआ, अटका हुआ, बँधा हुआ, घिरा हुआ।
रुद्र (सं० पु०) शिव, महादेव की ग्यारह मूर्ति, जिनके नाम ये हैं अजैकपाद, अहिर्बुध्न, विरूपाक्ष, सुरेश्वर, जायन्त, सावित्र, हर, रुद, ११ की संख्या।
रुद्राक्रीड़ा (सं० पु०) श्मशान, रुद्रा का विनोद-स्थान।
रुद्राक्ष (सं० पु०) एक वृक्ष, जिसके दानों की माला बनती है।
रुद्राणी (सं० स्त्री०) पार्वती, दुर्गा, शिव की शक्ति।
रुद्री (सं० स्त्री०) ११ बिल्व पत्र, ११ शीशी जल, शिव की पूजा।
रुधिर (सं० पु०) रक्त, लोहू, ख़ून, मंगल ग्रह, लाल रंग।
रुपना (क्रि०अ०) अड़ना, थमना, हटना।
रुपया (सं० पु०) देखो "रुपैया"।
रुपहरा (वि०) रुपा का बना हुआ। [बराबर होता है।
रुपैया (सं० पु०) रुपये का एक सिक्का जो १६ आने के
रुरु (सं० पु०) दैत्य, सर्प, अति क्रूर, एक प्रकार का मृग।
रुरुना (क्रि०अ०) रुष्ट होना, क्रुद्ध होना। [बुकना।
रुलना (क्रि० स०) चूर करना, लोहे से पीसना, चूर्ण करना,
रुलाई (क्रि०अ०) रोना।
रुलाना (क्रि०स०) दुखाना, पीड़ा पहुँचाना।
रुष्ट (वि०) क्रोधयुक्त, क्रुद्ध, कुपित।
रूँगटा (सं० पु०) बदन का बाल, रोंआ।
रूँघट (सं० स्त्री०) मैल, मल, मलिनता।
रूँधना (क्रि०स०) रोकना, रुकावट डालना।
रूई (सं०स्त्री०) एक प्रकार का फल, पकने पर उसके भीतर से यह निकलती है जिससे वस्त्र इत्यादि बनता है।
रूईया (सं० पु०) रूई का व्यापारी।
रूख (सं० पु०) पेड़, वृक्ष, दरख़्त।
रूखड़ (सं० पु०) योगी विशेष।
रूखड़ा (सं० पु०) छोटा पेड़, बिरवा, पेड़।
रूखा (वि०) फीका, बेरस, जो चिकना न हो, खुरखुरा, कठोर, निर्दयी।
रूज (सं० पु०) कीट विशेष।
रूझना (क्रि०अ०) रुकना।
रूझा (वि०) रोग से पीड़ित, रुग्न। [जाना।
रूठना (क्रि० अ०) अप्रसन्न होना, नाराज़ होना, बिगड़
रूढ़ (वि०) पैदा हुआ, जमा हुआ, प्रसिद्ध, कड़ा, कठिन।
रूढ़ि (सं० स्त्री०) उत्पत्ति, पैदा होना, प्रसिद्धि, एक प्रकार की संज्ञा जिसके टुकड़ों का कुछ अर्थ न हो जैसे—"गाय", "घर", परम्परा, रस्म, कुलाचार।
रूप (सं० पु०) आकार, डौल, सूरत, शोभा, स्वरूप, सुन्दरता, रीति, ढब, प्रकार, भाँति, चाल। [नाटक।
रूपक (सं० पु०) रूप, सूरत, अलंकार विशेष, दृश्य काव्य,
रूपनिधान (वि०) बहुत ही सुन्दर, अति सुन्दर, मनोहर।

रूपरस (सं० पु०) रूपा का भस्म।
रूपराशि (सं० पु०) सुन्दरता का समूह, अतिशय सुन्दर।
रूपवती (सं० स्त्री०) बड़ी सुन्दरी स्त्री, युवती स्त्री।
रूपवान (वि०) सुन्दर, सुघड़। [पर पहनती हैं।
रूपविन्दु (सं० पु०) रूपे की टिकुली जो स्त्रियाँ माथे
रूपसागर (सं० पु०) रूप का समुद्र, बहुत ही सुन्दर।
रूपहला (सं० पु०) रूपे का बना हुआ, रूपावाला।
रूपा (सं० पु०) चाँदी, रजत।
रूमटी (सं० स्त्री०) मिष, बहाना। [अँगौछा।
रूमाल (सं० पु०) मुँह पोंछने का कपड़ा, छोटी चादर,
रूरी (सं० स्त्री०) सुन्दरी, सौन्दर्यवती।
रूसना (क्रि० स०) क्रोधित होना, रिसाना, अप्रसन्न होना, नाराज़ होना रूठना, क्रोध से बोलना आदि छोड़ना।
रूसी (सं० स्त्री०) सिर का मैल।
रेंक (सं० पु०) गदहे की बोली।
रेंकना (क्रि० अ०) गदहे की बोली, गदहे का शब्द करना। [चलना, बिना पैर के जानवरों का चलना।
रेंगना (क्रि० अ०) धीरे २ चलना, ज़मीन में सट कर
रेंट (सं० पु०) टहल, मोट, चरस।
रेंटा (सं० पु०) पोंटा, सिनक, नेटा, नाक की मैल।
रेंड़ (सं० पु०) एक प्रकार का पेड़, अंडी का पेड़।
रेंड़ी (सं० स्त्री०) रेंड़ का फल जिससे तेल निकालते हैं।
रेंदा (सं० स्त्री०) छोटी ककड़ी।
रेंदी (सं० स्त्री०) छोटा ख़रबूज़ा।
रेंहट (सं०स्त्री०) नाक द्वारा निकलने वाला कफ़, बलगम।
रेंहटा (सं० पु०) चरख़ा।
रे (अव्य०) नीच के लिये सम्बोधन।
रेख (सं० स्त्री०) लकीर, चिह्न, प्रारब्ध ललाट-रेखा।
रेख निकलना (क्रि०अ०) मोंछ की रेखा निकलना, मोंछ के बालों का प्रथम प्रगट होना।
रेखा (सं० स्त्री०) लकीर, रेख, लिखना, प्रारब्ध।
मुहा०—रेखा खींचना=निश्चय करना, ठीक करना, प्रतिज्ञा करना।
रेखागणित (सं० पु०) एक प्रकार का गणित।
रेखाङ्कित (वि०) चिह्नित, चिह्न खींचा हुआ, रेखा खींची हुई जिस पर चिह्न किया गया हो।
रेघारी (सं० स्त्री०) हलकी रेखा, चिह्न।
रेचक (सं० पु०) दस्त लाने वाली दवा, जुलाब।
रेचन (सं० पु०) मल को गिराने वाला, दस्त कराना, जुलाब देना।
रेणु (सं० स्त्री०) रेत, रज, धूल, बालू।
रेणुका (सं० स्त्री०) परशुराम की माता, जमदग्नि की पत्नी, पिता की आज्ञा से परशुराम ने माता को मार डाला था, पुनः जमदग्नि के वर से ये जीवित हुईं।
रेत (सं० स्त्री०) धूल, रज, बालू, चूर, रेतन।
रेतः (सं० पु०) वीर्य, शुक्र, पारा नामक धातु।
रेतना (क्रि० स०) रेती से काटना।
रेतल (वि०) रहीला, किरकिरा।
रेता (सं० पु०) बालू, रेणु, रेत।
रेताई (सं०स्त्री०) रेतने का काम या मजूरी।
रेतियाना (क्रि० स०) रेतना, चिकनाना, तेज़ करना।
रेती (सं० स्त्री०) नदी के तीर की धूल, रेतीली धरती, बालु, सोहन, रेतने का औज़ार।
रेतीला (वि०) बलुआ, किरकिरा।
रेतुआ (सं० पु०) रेतने का काम करने वाला।
रेप (वि०) निन्दित, क्रूर, कृपण, आघात, प्रहार।
रेफ (सं० पु०) स्वर विहीन रकार, दूसरे व्यञ्जन के साथ मिलने पर जिसका रूप ऐसा "ˎ" होता है।
रेलना (क्रि० अ०) ठेलना, पेलना, ढकेलना। [कता।
रेलपेल (सं० स्त्री०) भीड़, धूम धाम, बहुतायत, अधि-
रेला (सं० पु०) बाढ़, पशुओं की श्रेणी, धक्का, ढकेल।
रेवड़ी (सं० स्त्री०) एक तरह की मिठाई।
मुहा०—रेवड़ी के फेर में पड़ना=कठिनता में फँसना।
रेवत (सं० पु०) एक राजा का नाम जो बलदेव जी के ससुर थे। [स्त्री
रेवती (सं० पु०) रेवत राजा की बेटी, बलदेव जी की
रेवती रमण (सं० पु०) बलदेव, बलराम, कृष्ण जी के बड़े भाई।
रेवा (सं० स्त्री०) नर्मदा नदी।
रेषू (सं० पु०) ईर्षा, द्वेष, दोष, क्रोध।
रेह (सं० स्त्री०) एक तरह की खारी मिट्टी जो कपड़ा धोने के काम में आती है।
रेहड़ू (सं० पु०) एक प्रकार की बैलगाड़ी, लहड़ू।
रेहला (सं० पु०) चना, बूट।
रेहूपेहू (सं० पु०) अधिकता।

रै (सं० पु०) धन, स्वर्ण, अर्थ, विभव ।
रैन (सं० स्त्री०) रात, निशा, यामिनी, रात्रि, अँधेरी रात ।
रैनचर (सं० पु०) राक्षस, निशाचर, रात्रिचर, रात में चलने वाले । [पर्वत, चौदह मनुश्रों में से एक मनु ।
रैवत (सं० पु०) द्वारका के समीप का एक पर्वत, गिरनार
रोआँ (सं० पु०) शरीर के छोटे २ बाल, ऊन, रोएँ, रोम ।
रोएं (सं० स्त्री०) रोआँ । [विद्या ।
रोगटी (सं०स्त्री०) छल से असत्य को सत्य करना, छल-
रोआना (क्रि० स०) रुलाना ।
रोआर (सं० स्त्री०) विलाप, रोना, हाहाकार ।
रोआस (सं० पु०) रुलाई ।
रोक (सं० स्त्री०) रुकाव, अटकाव ।
रोकड़ (सं० पु०) नक़द रुपैया । [रखने वाला ।
रोकड़िया (सं० पु०) ख़ज़ानची, कोठारी, रुपया आदि
रोकना (क्रि० स०) घेर लेना, बंद, करना, मना करना, निषेध करना ।
रोका (सं० पु०) रोकने वाला ।
रोग (सं० पु०) बीमारी, पीड़ा, दुःख, व्याधि ।
रोगग्रस्त (वि०) रोगी, रोग पीड़ित, व्याधि-ग्रस्त ।
रोगहा (सं० पु०) वैद्य, औषधि, रोग दूर करने वाला ।
रोगावस्था (सं० स्त्री०) बीमारी की हालत ।
रोगिया (सं० पु०) रोगी ।
रोगी (सं० पु०) बीमार, रोग पीड़ित ।
रोचक (वि०) चाह करने वाला, रुचि करने वाला, पाचक, क्षुधावर्द्धक ।
रोचन (सं० पु०) पसन्द, हल्दी, गोरोचन, यह गाय के सिर से निकलता है इसमें अच्छी सुगंध होती है, रुचिकर, मनोहर, दर्पण, केशर ।
रोचना (सं० स्त्री०) हल्दी, गोरोचन, रोरी ।
रोचिका (सं० स्त्री०) रोटी, फुलका, आटे की रोटी ।
रोज़ (सं० पु०) दिन, वार ।
रोझ (सं० पु०) नील गाय, मृग विशेष । [है ।
रोट (सं० पु०) मोटी रोटी जो हनुमान को चढ़ाई जाती
रोटी (सं० स्त्री०) आटे की बनी हुई खाने की चीज़, फुलका, फुलकी ।
रोड़ा (सं० पु०) बड़ा कंकड़, ईंट का बड़ा टुकड़ा ।
मुहा०—रोड़ा अटकाना = विघ्न डालना ।
रोड़ी (सं० स्त्री०) छोटा कंकड़, कंकड़ी ।

रोदन (सं० पु०) रोना, चीखना ।
रोध (सं० पु०) तीर, तट, रोक, घिराव, रुकावट ।
रोधन (सं० पु०) रोकाव, अटकाव ।
रोना (क्रि० अ०) आँसू बहाना, विलाप करना, बिलखना, उदास होना, नाराज़ होना, रोदन करना ।
रोपक (सं० पु०) रोपने वाला, पेड़ आदि लगाने वाला ।
रोपण (सं० पु०) स्थापन, पेड़ लगाना ।
रोपना (क्रि० स०) पेड़ आदि लगाना ।
रोम (सं० पु०) रोंआ, शरीर के बाल ।
रोमक (सं० पु०) देश विशेष, रूम देश (वि०) रोम देश के वासी, रूसी ।
रोम कूप (सं० पु०) रोएँ का छिद्र ।
रोम पाट (सं० पु०) रोम का बना वस्त्र, दुशाला, कम्बल ।
रोमहर्षण (सं०पु०) रोंए खड़े हो जाना, एक मुनि का नाम ।
रोमाञ्च (सं० पु०) रोंए खड़े हो जाना, गद्गद होना ।
रोमाञ्चित (वि०) बहुत डर या ख़ुशी से रोंए खड़े हो जाना । [तक गयी रहती है ।
रोमावली (सं० स्त्री०) रोंए की धारी जो नाभि से हृदय
रोर (सं० पु०) धूमधाम । [लगायी जाती है, कुंकुम ।
रोरी (सं० स्त्री०) लाल धूल, जो मंगल के समय सिर में
रोलना (क्रि० अ०) रन्दा करना, चिकनाना, ठेलना ।
रोला (सं० पु०) एक छन्द का नाम ।
रोली (सं० स्त्री०) रोरी, जो चावल और फिटकरी को एक में मिलाकर बुकनी बनाते हैं ।
रोष (सं० पु०) क्रोध, कोप, ग़ुस्सा ।
रोह (सं० पु०) कली, रोहण, ऊपर जाना, अंकुर ।
रोहिणी (सं० स्त्री०) चौथा नक्षत्र, चन्द्रमा की स्त्री, रोहण राजा की बेटी जो वासुदेव की स्त्री और बलदेव की माता थी, बुध की माता ।
रोहिणीपति (सं० पु०) चन्द्रमा, वसुदेव ।
रोहित (सं० पु०) एक मछली का नाम, एक राजा का नाम, इन्द्र के धनुष की सिधाई, रंग विशेष ।
रोहिताश्व (सं० पु०) अग्नि, अनल, हरिश्चन्द्र का पुत्र ।
रोहित्य (सं० पु०) मेधी । [पतली पतली लटकती है ।
रोही (सं० पु०) बरगद की जटा जो शाखाओं में से नीचे
रोहू (सं० पु०) एक प्रकार की मछली, रोहितमत्स्य ।
रौंदना (क्रि० अ०) पाँव से खूँदना, मींजना, कुचलना, मसलना ।

रौंधना (क्रि० स०) रुधना, रोकना ।
रौताई (सं० स्त्री०) लड़ाई, समर, युद्ध, स्वामिता, सरदारी।
रौद्र (सं० पु०) डरावना, क्रोध, भयानक, काव्य के एक रस का नाम, धूप ।
रौप्य (सं० पु०) चाँदी, एक धातु का नाम ।
रौर (सं०पु०) शब्द, रौला, शोर गुल, यश, नामवरी, प्रसिद्धि ।
रौरव (सं० पु०) एक नरक का नाम । [शोर गुल ।
रौला (सं० पु०) धौला, धूमधाम, बखेड़ा, गुलगपाड़ा,
रौच्य (सं० पु०) एक मनु का नाम ।
रौहिणेय (सं० पु०) बलदेव, श्री कृष्ण के बड़े भाई ।

ल

ल—हल् वर्णों में का अट्ठाइसवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है (सं० पु०) इन्द्र, मंत्र, प्रकाश, दीप्ति, आह्लाद, वायु ।
लकड़ (सं० पु०) काष्ठ, लकड़ी, लट्ठ ।
लकड़हारा (सं० पु०) लकड़ी चीरने या बेचने वाला ।
लकड़ा (सं० पु०) लकड़, बड़ा कुंदा ।
लकड़ी (सं० स्त्री०) इन्धन, जलावन, जलाने के लिये लकड़ी, सोंटा, लाठी ।
लकवा (सं० पु०) रोग विशेष, पक्षाघात ।
लकीर (सं० स्त्री०) रेखा, धाँरी, लीक, धारी ।
लकुट (सं० पु०) लाठी, डंडा।
लकुटिया (सं० स्त्री०) छोटी लाठी, जिससे गाय बैल आदि चौपाये चराये जाते हैं ।
लक्कड़ (सं० पु०) देखो "लकड़" । [निशाना, चिह्न ।
लक्ष (सं० पु०) एक लाख, सौ हज़ार, छल, बहाना,
लक्षक (सं० पु०) दर्शक, दिखाने वाला ।
लक्षण (सं० पु०) चिह्न, स्वभाव, रीति ।
लक्षणा (सं० स्त्री०) अप्रधान अर्थ जो प्रसंग से समझा जाय, अध्याहार जो ऊपर से लाया जाय, जैसे—"गंगा में अहीर रहते हैं" । यहाँ गंगा का अर्थ तीर है क्योंकि धारा में अहीरों का रहना असंभव है, शब्दार्थ विशेष ।
लक्ष्म (सं० पु०) चिह्न, अंक ।
लक्ष्मण (सं० पु०) दशरथ का पुत्र, जो सुमित्रा से उत्पन्न हुआ था । शत्रुघ्न के बड़े भाई, श्रीरामचन्द्र के छोटे भाई ।
लक्ष्मणा (सं० स्त्री०) मद्र देश के राजा की बेटी और श्रीकृष्ण की पटरानी, दुर्योधन की बेटी जो कृष्ण के बेटे से ब्याही गई थी ।
लक्ष्मी (सं० स्त्री०) विष्णु की स्त्री, जो समुद्र से निकली थी, सम्पत्ति, शोभा, सुन्दरता ।
लक्ष्मीकान्त (सं० पु०) विष्णु, भगवान, परमेश्वर ।
लक्ष्मीनाथ (सं० पु०) विष्णु, लक्ष्मीपति, नारायण ।
लक्ष्मीपति (सं० पु०) लक्ष्मीनाथ, भगवान् ।
लक्ष्मीवान् (सं० पु०) धनी, धनवान्, सम्पत्तिवान्, जिसके पास धन अधिक हो ।
लक्ष्य (सं० पु०) उद्देश्य, निशाना ।
लख (सं० पु०) माया का पसार, जिस चीज़ को देखा जा सके, प्रत्यक्ष, साक्षात्कार ।
लखनऊ (सं० पु०) एक नगर का नाम, यह नगर अवध में है । [पहिचानना ।
लखना (क्रि० स०) देखना, ताकना, जानना, समझना,
लखपति (सं० पु०) धनवान, जिस पुरुष के घर में लाख रुपये या इतने की संपत्ति हो, धनी, लखिया ।
लखलखा (सं० पु०) औषधि विशेष ।
लखलखाना (क्रि० अ०) हाँफना ।
लखलूट (वि०) खर्चीला, नंगा, अपव्ययी ।
लखा (सं० पु०) लखे, लक्षित, भाग जाना ।
लखाऊ (सं० पु०) जानने योग्य, देखने योग्य ।
लखिया (सं० पु०) देखने वाला, ताड़ने वाला, समझने वाला, जानने वाला । [चुड़िहार ।
लखेरा (सं० पु०) लाख की चूड़ी आदि बनाने वाला,
लखौरा (वि०) लाह से बना हुआ । [नज़दीक ।
लग (अव्य०) नित्य, पर्यन्त, तक, लौं, पास, समीप,
लग चलना (क्रि० अ०) साथ साथ चलना, पीछा न छोड़ना, इसी के साथ रहना ।
लगड़ (सं० पु०) पक्षी विशेष, बाज़ । [मुहब्बत ।
लगन (सं० स्त्री०) धुन, प्रीति, प्रेम, प्यार, स्नेह, लगन,

लगना (क्रि० अ०) मिलना, किसी काम को आरम्भ करना, नियुक्त होना, जुड़ना, चिपकना, सटना, फैलना, फबना, ठीक होना, सम्बन्ध रखना, लगाव रखना। [पास, निकट।

लगभग (अव्य०) अन्दाज़न, क़रीब, अनुमान से, आस-

लगातार (क्रि० वि०) बराबर, निरन्तर, एक के बाद एक, तोबड़तोड़, एक पर एक। [किराया।

लगान (सं० पु०) उतार, टिकाव, टिकाना, मालगुज़ारी,

लगाना (क्रि० स०) रोपना, बोना, सटाना, मिलाना।

लगाव (सं० पु०) एक वस्तु से दूसरी वस्तु का मिलाप, मेल, लाग, जोड़।

लगि (क्रि० वि०) तक, लग, सीमा।

लगुआ (सं० पु०) पार, उपपति, आशिक़। [का डंडा।

लगुड (सं० पु०) लाठी, सोंटा, बाँस या और किसी वस्तु

लगूँटा (वि०) मनोहर, सुन्दर।

लग्गा (सं०पु०) लाग मेल, प्यार,प्रीति,एक डंडा जिससे नाव चलाई जाती है।

मुहा०—लग्गा न खाना=बराबर न होना।

लग्गी (सं० स्त्री०) बाँस का बड़ा डंडा।

लग्न (सं० पु०) मेष आदि राशियों का उदय, मूहूर्त, सायत, आसक्त, मिला हुआ।

लग्नक (सं० पु०) जामिन, प्रतिभू।

लघिमा (सं० स्त्री०) लघुता, छोटापन, योगियों की आठ सिद्धियों में से एक सिद्ध, लाघव, छुटाई।

लघिष्ठ (वि०) छोटा, नीच, लघु।

लघु (वि०) हलका, छोटा, शीघ्र, सुन्दर, मनोहर, नीचा (सं० पु०) ह्रस्व स्वर, एक मात्रिक स्वर।

लघुकाय (सं० पु०) बकरा (वि०) छोटा शरीर वाला।

लघुता (सं०स्त्री०) छोटाई,हलकापन,जल्दी,नीच,निचाई।

लघुशङ्का (सं० पु०) पेशाब, मूत्र, प्रश्राव।

लघुहस्त (सं० पु०) छोटा हाथ।

लघ्वी (सं० स्त्री०) छोटी, अति छोटी।

लङ्क (सं० स्त्री०) कटि, कमर (वि०) ढेर, बहुत, ज़ोर।

लङ्का (सं० स्त्री०) रावण की राजधानी, एक टापू का नाम, यह टापू भारतवर्ष के दक्षिण में है आजकल इसकी राजधानी कोलम्बो है।

लङ्कापति (सं० पु०) रावण, पुलस्त्य का नाती, विभीषण।

लङ्किनी (सं०स्त्री०)राक्षसी विशेष,यह लंका की रक्षा करती थी,जब हनुमान जी गये थे तब इसने युद्ध किया था।

लङ्ग (वि०) पंगु, अपाहिज़, जिसका एक पैर ख़राब हो गया हो।

लङ्गड़ा (वि०) वह मनुष्य जिसके एक पैर हो, पंगुल, जिसका एक पैर कट गया हो या टूट गया हो।

लङ्गर (सं० पु०) जहाज़, नाव आदि को ठहराने के लिये एक बहुत बड़ा लोहा, लंगड़ा, ढीठा।

लङ्गरी (सं० स्त्री०) थाली, थरिया।

लङ्गूचा (सं० पु०) खाने की एक वस्तु।

लङ्गूर (सं० पु०) बन्दर विशेष,जिसकी पूँछ लम्बी और मुँह काला होता है। [कुश्ती लड़ते हैं।

लङ्गोट (सं० पु०) कोपीन, कछनी, जिसे पहन कर

लङ्गोटबन्द (सं० पु०) ब्रह्मचर्य्य धारण करने वाला, ब्याह न करने वाला।

लङ्गोटिया (सं० पु०) लड़कपन का साथी, बाल्यावस्था के मित्र जो एक ही साथ खेला कूदा करते थे।

लङ्गोटी (सं० स्त्री०) कछनी, भगवा, छोटा वस्त्र जिसे पहनते हैं, छोटी धोती।

लङ्घन (सं० पु०) लाँघना, पार होना, उपवास।

लङ्घना (क्रि० अ०) कूदना, फाँदना, पार उतरना।

लचक (सं० पु०) चिमड़ापन, झुकाव, वह चीज़ जो लचकीली हो।

लचकना (क्रि० स०) वह चीज़ जिसे यदि झुकाया जाय तो झुक जाय और छोड़ देने पर वह फिर वैसे ही हो जाय जैसे—बेंत, रबड़ आदि।

लचकाना (क्रि० स०) नवाना, झुकाना।

लचना (क्रि० अ०) झुकना, टेढ़ा होना।

लचर (सं० पु०) अनारी, गँवार, हुड्ड, असभ्य।[झुकना।

लचलचाना (क्रि० अ०) लचलच होना, नम्र होना,

लच्छन (सं० पु०) लक्षण, स्वभाव।

लच्छा (सं० पु०) सूत की अंटी, गोली का तागा, फेंटी।

लच्छी (सं० स्त्री०) लक्ष्मी।

लछन (सं० पु०) लक्षण, चिह्न।

लछमन (सं० पु०) देखो "लक्ष्मण"।

लछमी (सं० स्त्री०) देखो "लक्ष्मी"।

लजलजा (वि०) चिपचिपा, लसीला, लसलसा।

लजलजाना (क्रि० अ०) पिलपिला होना।

लजवाना (क्रि० स०) संकोच करवाना, शर्मिन्दा करना।

लजालू (वि०) शर्मीला, लज्जित (सं० पु०) छुईमुई की घास जिसे लजौनी भी कहते हैं, जिसमें अंगुली सटाने से पत्ते सिकुड़ जाते हैं।

लजियाना (क्रि०स०) लजवाना।

लजीला (वि०) लजवन्त, लजालू।

लज्जा (सं० स्त्री०) लाज, शर्म, संकोच।

लज्जारहित (वि०) निर्लज्ज, बेहया, बेशर्म, जिसने शर्म को त्याग दिया हो।

लज्जाशील (वि०) लजालु, लजीला।

लज्जित (वि०) लजाया हुआ, संकोची, शर्माया हुआ।

लट (सं० स्त्री०) लटूरी, उलझे हुए बाल, बालों की जटा।

लटक (सं० स्त्री०) चटक मटक, नखरा, मान, चोंचला।

लटकन (सं० पु०) झुलनी जो नथ में लटकाई जाती है, लटकने वाली चीज़, झूमक, कुण्डल, एक प्रकार का फूल जिससे कपड़े रंगे जाते हैं। [टंगना।

लटकना (क्रि० अ०) झूलना, टंगना, किसी चीज़ का

लटका (सं० पु०) मंत्र, यंत्र मंत्र, झाड़फूँक, टोना, टोटका, जादू, चुटकुला।

लटकाना (क्रि० अ०) टाँगना, झुलाना।

लटपटा (वि०) खिलाड़ी, चंचल, उलट पुलट, लपेटी हुई।

लटपटाना (क्रि० अ०) लड़खड़ाना, डिगना।

लटा (वि०) दुर्बल, दुबला, पतला, कमज़ोर, बलहीन, गुंडा, लुच्चा। [कर पतंग उड़ाते हैं।

लटाई (सं० स्त्री०) परेती, चरखी जिसमें तागा लपेट

लटूरिया (सं० स्त्री०) लट, जुल्फ़, छोटे २ उलझे बाल।

लटूरी (सं० स्त्री०) देखो "लटूरिया"।

लटोरा (सं० पु०) एक चिड़िया का नाम।

लट्टू (सं० पु०) लड़कों के खेलने का एक खिलौना जिसमें तागा लपेट कर नचाते हैं। किसी पर मोहित होना।

मुहा०—लट्टू होना=मोहित होना, आसक्त होना।

लट्ठर (वि०) ढीला, ठंढा।

लठ (सं० पु०) सोंटा, लाठी, बड़ी लाठी।

लठालठी (सं० स्त्री०) परस्पर लाठी की लड़ाई।

लठियाना (क्रि० स०) लाठी मारना। [समूह।

लड़ (सं० स्त्री०) लड़ी, पाँति, जत्था, दल, घड़ी, टोली,

लड़कपन (सं० पु०) बालपन, लड़काई।

लड़कबुद्धि (सं० स्त्री०) चित्तविलापन।

लड़का (सं० पु०) बालक, छोकरा, पुत्र, बेटा।

लड़काई (सं० स्त्री०) लड़कपन, चंचलता।

लड़का बाला (सं० पु०) बाल बच्चा, बेटा बेटी।

लड़की (सं० स्त्री०) बेटी, कन्या, तनया, कुमारी, दुहिता।

लड़खड़ाना (क्रि० अ०) हकलाना, डिगना, डगमगाना।

लड़न (सं० स्त्री०) लड़ाई करना, आपस में युद्ध करना, झगड़ा करना।

लड़बड़ (वि०) हलका, तुतला।

लड़बड़ाना (क्रि० अ०) लड़खड़ाना।

लड़बावला (वि०) झक्की, पागल।

लड़ाई (सं० स्त्री०) झगड़ा बखेड़ा, युद्ध, जंग, झंझट।

लड़ाका (वि०) लड़ने वाला, झगड़ने वाला, युद्ध करने वाला।

लड़ाना (क्रि० स०) लड़ाई कराना, झगड़ा कराना।

लड़ियाना (क्रि०स०) गूँथना, पिरोना।

लड़ी (सं० स्त्री०) मोतियों की पाँती, तार, क़तार।

लड़ैता (वि०) प्यारा, दुलारा, प्रेम करने योग्य।

लड्डू (सं० पु०) मिठाई विशेष, मोदक।

मुहा०—मन के लड्डू खाना=ऐसी बातों को मन ही मन सोचना, जो हो न सके।

लढ़ा, लढ़िया (सं० पु०) बोझा ढोने वाली गाड़ी।

लण्ठ (सं० पु०) गँवार, मूर्ख, अनपढ़।

लण्ढूरा (वि०) अनाथ, असहाय।

लत (सं० स्त्री०) बान, आदत, बुरी चाल, कुटेव, लहर।

लतना (क्रि० अ०) घोड़े का घोड़ी के साथ प्रसंग करना।

लतरी (सं० स्त्री०) पुरानी जूती।

लता (सं० स्त्री०) बेल, माधवी, फैलने वाले पौधे।

लताड़ (सं० स्त्री०) ग्लानि, अपवाद, घोड़े की लात।

लताडना (क्रि० अ०) दौड़ धूप करना, तुच्छ करना, हलका करना।

लतातरु (सं० पु०) शाल वृक्ष, नारंगी का पेड़, खजूर।

लता पनस (सं० पु०) खरबूज़ा, तरबूज़, एक प्रकार का फल जो चैत्र, वैशाख में उत्पन्न होता है।

लतिका (सं०स्त्री०) वल्लरी, बल्ली, कोमलता।

लतिया (वि०) जिसकी चाल बुरी हो।

लतियाना (क्रि० स०) लात मारना।

लत्ता (सं० पु०) पुराना कपड़ा, चिथड़ा, गुदड़ा, ज्योतिष में एक योग का नाम।

लत्ती (सं० स्त्री०) लत्ता, बास, लट्टू, नचाने की डोरी।
लथड़ना (क्रि०अ०) लदफ़द होना।
लथर-पथर (सं० पु०) लबालब, मुँह तक, ठसा-ठस।
लथेड़ना (क्रि० अ०) कीचड़ में पटक २ कर भिगा देना।
लदान (सं० पु०) बोझ, भराव, लदाव।
लदाना (क्रि० स०) बोझना, भरना, बोझ को किसी चीज़ पर लादना।
लदाव (सं० पु०) बोझ, भार।
लद्दू (वि०) लादने योग्य, लदने वाला।
लप (सं० स्त्री०) मुट्ठी, पसर, हथेली।
लपक (सं० स्त्री०) चटक, भभक, झलक, कपट।
लपकना (क्रि० अ०) लटकना, झझकना, तेज़ चलना।
लपका (सं० पु०) झपट, आक्रमण, बुरी चाल।
लपकाना (क्रि० स०) हाथ बढ़ाना, चाहना।
लपकी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली।
लपची (सं० स्त्री०) मछली।
लपझप (वि०) फुर्तीला, चंचल, झटपट। [लहर, भभक।
लपट (सं० स्त्री०) महक, बास, सुगंध, दहक, भीड़,
लपटना (क्रि० अ०) लगना, सटना, मिलना।
लपटा (सं० पु०) एक प्रकार की बास, सम्बन्ध।
लपटी (सं० स्त्री०) लुबरी, कुटनी।
लपन (सं० पु०) कथन, मुख, बचन, बदन।
लपलप (सं० पु०) झपझप, हिलने वाला, बारम्बार निकलने वाला।
लपसी (सं० स्त्री०) पतला शीरा, पतला हलवा।
लपाटिया (सं० पु०) झूठा, लबार, मिथ्यावादी।
लपाटी (सं० स्त्री०) झूठमूठ, मिथ्या।
लपानक (वि०) दुबला, सूक्ष्म, चीपा। [चुका है, कथित।
लपित (वि०) कहा हुआ, जो एक बार कहा जा
लपेट (सं० स्त्री०) पर्त्त, लपटन, लड़।
लपेटन (सं० पु०) पैरों में लपट जाने वाला तृण।
लपेटना (क्रि० अ०) बाँधना, लीपना, पोतना
लपेटवाँ (वि०) ऐंठुवा, घुमाया हुआ।
लप्पा (सं० पु०) पट्टा, गोटा, किनारी।
लबड़खन्दा (सं० पु०) नटखट।
लबड़ सबड़ (सं० पु०) झूठ साँच, इधर उधर की बातें।
लबड़ा (सं० पु०) झूठा, बकी, झकी। [बुझाते हैं।
लबनी (सं० स्त्री०) मिट्टी का वह पात्र जिसमें ताड़ी
लबर घट्टा (सं० पु०) नकचढ़ा।
लबलबा (वि०) चिपचिपा, लजलजा।
लबादा (सं० पु०) बड़ा अंगा, रूई भरा जामा।
लबार (वि०) झूठा, बकवादी, गप्पी, जो बातें बना २ कर कहता फिरता है।
लबालेस (सं० स्त्री०) चापलूसी, लल्लोपत्तो।
लबी (सं० स्त्री०) चीनी की चासनी।
लबेदा (सं० पु०) एक मोटा लकड़ा, लाठी।
लब्ध (सं० पु०) पाया हुआ, प्राप्त, उपार्जित। [भजनफल।
लब्धि (सं० स्त्री०) प्राप्ति, भाग देने पर जो मिले,
लभ्य (सं०पु०) पाने योग्य, मिलने योग्य। [गणेश, हाथी।
लमकाना (सं० पु०) शशि, खरहा, ख़रगोश, बकरा,
लमछड़ (वि०) लम्बा (सं० स्त्री०) पथरकला।
लम्पट (वि०) व्यभिचारी, कुकर्मी, रंडीबाज़, लुच्चा, झूठा, परस्त्रीगामी।
लम्ब (वि०) ऊँचा, लम्बा, बड़ा (सं० पु०) नर्त्तक, घूस, लोलुप, असक्त (सं० स्त्री०) नाप विद्या में खड़ी लकीर।
लम्बर (सं० पु०) लोमड़ी, बनैला जन्तु विशेष।
लम्बा (वि०) ऊँचा, दीर्घ, बड़ा।
लम्बाई (सं० स्त्री०) ऊँचाई, जो बहुत लम्बा हो, ऊँचापन।
मुहा०—लम्बा करना = फैलाना, पीटना, मारना।
लम्बान (सं० पु०) ऊँचाई, किसी चीज़ की लम्बाई, दीर्घपन, दीर्घता।
लम्बाना (क्रि० अ०) लम्बा करना, किसी वस्तु को खींच कर या और किसी प्रकार से बढ़ाना।
लम्बित (क्रि० वि०) लटका हुआ, टाँगा हुआ।
लम्बिया (सं० स्त्री०) उछलकूद, कलोल।
लम्बिया करना (क्रि० अ०) कलोल करना, खेलना, कुदकना, धूम मचाना।
लम्बी (सं० स्त्री०) ऊँची, बड़ी।
मुहा०—लम्बी साँस भरना = सिसक सिसक के रोना, बिलख बिलख कर रोना, फूट फूट कर रोना।
लम्बोदर (सं० पु०) गणेश जी, शिव जी के पुत्र, लम्बे उदर वाला, जिसका पेट लम्बा हो। [जानवर।
लम्भा (सं० पु०) ख़रगोश, शशक, एक प्रकार का
लय (सं०पु०) लीन, मिलना, मग्न होना, प्रलय, ढेर, ताल, स्वर, अत्यन्त, आलस, निद्रा (सं०स्त्री०) चितवन।

लय बालक (सं० पु०) गोद लिया हुआ बालक, राशि बैठा हुआ बालक।
लर्छा (सं० पु०) लच्छा, फेंटी, आँटी।
ललक (सं० स्त्री०) लहर, तरंग, मग्नता, लालसा।
ललकना (क्रि० अ०) चढ़ना, धावा मारना।
ललकाना (क्रि०स०) मोहित करना, उत्कंठित करना, लोभ देना, लड़ाना, झगड़ाना। [बढ़ावा।
ललकार (सं०पु०) हाँक, पुकार, प्रोत्साहन, वाक्य, हाँक,
ललकारना (क्रि० अ०) पुकारना, हाँकना, सामना करने के लिये अकड़ कर बुलाना।
ललगएड्डा (सं० पु०) बानर, कपि, बन्दर।
ललचना (क्रि० अ०) तरसना, किसी वस्तु को लेने के लिये तरसना, लालसा करना।
ललचाना (क्रि० स०) लुभाना, तरसाना, लहकाना।
ललन (सं० पु०) क्रीड़ा, कौतुक, कुतूहल।
ललना (सं० स्त्री०) लुगाई, नारी, स्त्री, कामिनी।
लला (वि०) प्यारा, दुलारा, लाड़ला।
ललाट (सं० पु०) सिर का अगला भाग, भाल, कपाल।
ललाम (वि०) सुन्दर, ललित, मनभावन, एक प्रकार की चेष्टा, एक रागिनी का नाम, "ललिता"।
ललित (वि०) मनोहर, सुन्दर, सुहावना, चञ्चल।
ललिता (सं० स्त्री०) एक गोपी का नाम।
ललियाना (क्रि०स०) बहलाना, फुसलाना, वश में करना।
लली (सं० स्त्री०) लड़की, कन्या, बेटी।
ललोपत्तो (सं० पु०) चापलूसी, ख़ुशामद।
लव (सं० पु०) क्षण, पल, हिसाब में भिन्न का अंश, निमेष का ६० वाँ भाग, रामचन्द्र के छोटे पुत्र, परिमाण, भेद।
लवक (सं० पु०) करने वाला, करवैया।
लवङ्ग (सं० पु०) लौंग, एक पेड़ का नाम।
लवण (सं० पु०) लोन, नमक, नोन, नून (वि०) खारा, नमकीन।
लवण समुद्र (सं० पु०) लवण सागर, खारा समुद्र, लवण सिंधु।
लवणासुर (सं० पु०) एक दैत्य का नाम, यह मधु का पुत्र था, इसकी माता का नाम कुम्भीनसी था।
लवनिमेष (सं० पु०) अल्प क्षण, थोड़ा समय।
लवमात्र (वि०) थोड़ी देर, क्षण भर।
लवलेश (सं० पु०) बहुत ही थोड़ा, अति अल्पतर, बहुत ही छोटा हिस्सा, तनिक सा।
लवा (सं० पु०) एक प्रकार का पक्षी जिसका रूप बटेर के समान होता है पर वह बटेर से कुछ बड़ा होता है, यह भी लड़ाने के लिये ही पाला जाता है।
लवाई (सं० स्त्री०) थोड़े दिन की ब्याई गाय।
लवाक (सं० पु०) हँसुआ, हँसिया, दराँती।
लवार (वि०) झूठा, झूठ बोलने वाला।
लशटम पशटम (वि०) उलटा पुलटा, गड़बड़, झंझट।
लशुन (सं० पु०) लहसुन, लस्सुन।
लषण (सं० पु०) लक्ष्मण जी। [नाम।
लषणपुर (सं० पु०) लक्ष्मणपुर, लखनऊ, एक शहर का
लषित (सं० पु०) देखा हुआ, चाहा हुआ।
लस (सं० स्त्री०) चिपचिपाहट, लसीली चीज़।
लसकन (सं० पु०) चिपचिपा।
लसकना (क्रि० अ०) लजलज होना, चिपचिपा होना, गीला होना।
लसना (क्रि० अ०) सोहना, फबना, चपकना, शोभायमान होना, सजना, चमकना।
लसलसा (वि०) चिपचिपा, गीली वस्तु जिसे छूने से चिपचिपाने लगे, लसीली, जैसे—गोंद इत्यादि।
लसा (सं० स्त्री०) हरिद्रा, हरदी, हलदी, चिपटा हुआ।
लसित (वि०) शोभित, साक्षात्।
लसियाना (क्रि० अ०) पिचपिचा होना, लसलसा होना, चिपचिपा होना।
लसी (सं० स्त्री०) लस, चिपचिपाहट।
लसीला (वि०) जिस वस्तु में लसपन हो।
लसोड़ा (सं० पु०) एक प्रकार का फल जिसमें लस होता है इसका अचार बनाया जाता है।
लस्त (सं० पु०) थका माँदा, जो चलते २ या किसी कारण विशेष से अत्यन्त थका हो, थकित, श्रमित।
लस्सी (सं० स्त्री०) लसी, दूध और पानी।
लहँगा (सं० पु०) घँघरा, जिसे स्त्रियाँ पहनती हैं।
लहक (सं० स्त्री०) चमक, दमक, तेज़, प्रभा, कान्ति, दीप्ति।
लहकना (क्रि० अ०) हिलना, झलकना, चमकना, लू का उठना, तपकना।
लहकाना (क्रि०स०) आग जलाना, गहगहाना।

लहकारना (क्रि० अ०) पेट पर हाथ फेरना, चुमकारना।
लहकावट (सं० स्त्री०) चमकाहट, प्रकाश, चमक दमक।
लहकीला (वि०) चमकीला, चमकदार, भड़कदार, भड़कीला।
लहकौर (सं० स्त्री०) खीर जो दुलहा दुलहिन खाते हैं।
लहड़ू (सं० पु०) छोटी बैलगाड़ी।
लहना (क्रि० अ०) लेना, पाना, जाना, मालूम करना (सं० पु०) ऋण, क़र्ज़ा, भाग्य, नसीब।
लहबर (सं० पु०) एक प्रकार का तोता।
लहर (सं० स्त्री०) तरंग, हिलोर, मन की लहर, मौज, साँप का जहर चढ़ने पर देह का गर्म होना। रँगने अथवा कारचोबी में निकाली हुई धारी।
लहरना (क्रि० अ०) हिलकोरना, हिलना, डोलना, जलन होना।
लहरबहर (सं० स्त्री०) सुहाग, सौभाग्य, सम्पत्ति, धन।
लहराना (क्रि० अ०) ललचाना, तरसाना, हिलकोरना, लहर उठना।
मुहा०—लहरा लगाना=टालना, उड़ानबाई करना, उकसाना, चुग़ली करना, झगड़ा लगाना।
लहरिया (सं० पु०) एक तरह का रंगा हुआ कपड़ा।
लहरी (वि०) तरंगी, चंचल, मौजी।
लहलहा (वि०) विकसित, प्रफुल्लित, हरा भरा।
लहलहाना (क्रि० अ०) खिलना, फूलना, हरा होना, हरियाना।
लहलोट (सं० पु०) जो उधार लेकर फिर न देवे।
लहसन (सं० पु०) शरीर के ऊपर जन्म से उत्पन्न चिह्न विशेष, मुहाँसा। [कन्द।
लहसुन (सं० पु०) लहसन, लस्सुन, एक प्रकार का
लहसुनिया (सं० पु०) एक तरह का बढ़िया पत्थर।
लहाछेह (सं० स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी, फ़ुर्ती।
लहास (सं० स्त्री०) नाव बाँधने की रस्सी।
लहासी (सं० स्त्री०) रस्सी, बुर्ज।
लहियत (क्रि० स०) पाता है।
लहुरा (सं० पु०) छोटा, अनुज, कनिष्ठ।
लहू (सं० पु०) ख़ून, रुधिर, रक्त।
लहूआ (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा। [हुआ।
लहूलहान (सं० पु०) ख़ून से तरबतर, ख़ून में भीगा
लाँक (सं० स्त्री०) कटि, कमर, भूसा, भूसी।
लाँघ (सं० पु०) कुलाँच, कूद, उछल।
लाँघना (क्रि० अ०) फाँदना, कूदना, पार हो जाना।
लाई (सं० स्त्री०) जनेरा, जोन्हरी, धान आदि के लावा की बनी हुई गोल मिठाई, लिये, वास्ते, आग लगाकर, जलाकर।
लाकृति (सं० स्त्री०) टेढ़ा आकार, जिस वस्तु का आकार टेढ़ा हो, रूप। [बोधक।
लाक्षण्य (सं० पु०) शुभाशुभ, लक्षण, भलाई बुराई का
लाख (सं० स्त्री०) लाह जिससे काग़ज़ पत्र आदि बन्द किये जाते हैं और जिसके रंग से महावर बनती है (सं० पु०) सौ हज़ार।
लाखी (सं० स्त्री०) लाह का रंग।
लाग (सं० स्त्री०) लगाव, वैर, द्वेष, द्रोह, मारना, चोट, ईर्षा, छोह, मोह, लागत, ख़र्च, क़सूर, चूक, भाव, मोल, नज़दीकपन, सहारा, भेद।
लागत (सं० स्त्री०) दाम, मोल, मूल्य, ख़र्च, उठान।
लागना (क्रि० अ०) विरोध करना, लिपटाना, लगना।
लागी (सं० पु०) चाँद, स्नेह, प्यार, मोह, छोह।
लागू (वि०) चाहने वाला, अंग का कपड़ा, पिछलगा, सहारा।
लाघव (सं० पु०) हलकाई, छोटापन, आरोग्य, लघुता, अपमान, क्षुद्रता, तन्दुरुस्ती, उसी समय, तत्क्षण शीघ्र, जल्दी। [जाता है।
लाङ्गल (सं० पु०) हल, जिससे खेत जोता और बोया
लाङ्गलकोटि (सं० पु०) लोहे का बना हुआ फाल, जो हल के मुँह पर लगाया जाता है।
लाङ्गली (सं० पु०) बलदेवजी जलपीपर, नारियल, करिहारी। [वानर।
लाङ्गूली (सं० पु०) कौंच का बीज, केवाँछ का बिया,
लाची (सं० स्त्री०) इलायची, यह दो प्रकार की होती है, एक बड़ी और काली होती है जिसे मसाला आदि में डालते हैं। दूसरी छोटी जो सफ़ेद होती है जिसे लोग खाते हैं।
लाज (सं० स्त्री०) शर्म, हया, संकोच, लज्जा (सं० पु०) उशीर, ख़स, लावा, लाई।
लाजवन्त (वि०) लजीला, संकोची, कुलवन्त।
लाजा (सं० पु०) धान का लावा, एक प्रकार की घास जो छूने से सिकुड़ जाती है।

लाजावर्त (सं० पु०) सायबान, छोलदारी, रावटी, एक प्रकार का काला पत्थर।

लाझा (सं० पु०) गर्भ की झिल्ली, लस जिसमें गर्भस्थ बच्चे गिरते हैं।

लाञ्छन (सं० पु०) दोष, पाप, कलंक, चिह्न, व्यर्थ दोषारोपण, दाग़।

लाञ्छना (सं० स्त्री०) निन्दा, तिरस्कार, अपमान, बुराई।

लाञ्छित (वि०) अपमानित, तिरस्कृत, निन्दित।

लाट (सं० पु०) देशान्तर, वस्त्र, पटवस्त्र (वि०) जीर्ण, प्राचीन, पुराना।

लाटी (सं० स्त्री०) फेफरी, जो होंठ और तालू के सूखने से होंठ पर पड़ जाती है।

लाठ (सं० स्त्री०) खम्भा, मीनार, सोंटा, छड़ी, कोल्हू का लाठा।

लाठी (सं० स्त्री०) लकड़ी, डंडा, सोंटा, छड़ी।

लाड़ (सं० पु०) प्यार, छोह, मोह, खेल।

मुहा०—लाड़ लड़ाना=दुलारना।

लाड़ला (सं० पु०) प्यारा, दुलारा, लड़ैता, लाल।

लाड़ली (सं० स्त्री०) प्यारी, दुलारी, लड़ैती।

लाडू (सं० पु०) लड्डू, मिठाई।

लात (सं० स्त्री०) पैर की मार, पदाघात।

लातिन (सं० स्त्री०) लैटिन भाषा विशेष।

लाद (सं० पु०) बोझ, भार, अँतड़ी, पेट, पशुओं के सानी खिलाने का बरतन, नांद।

लादना (क्रि० अ०) बोझना, बोझे से भरना।

लादिया (सं० पु०) लादने वाला।

लादी (सं० स्त्री०) धोबी के कपड़ों की गठरी, छोटी नांद

लादू (वि०) लादने योग्य।

लान (सं० पु०) गज-बन्धन, हाथी के बाँधने की रस्सी, बेड़ी।

लाना (क्रि० स०) ले आना, जनाना, उपजाना, ब्याना।

लापाक (सं० पु०) सियार, शृगाल, गीदड़।

लाफना (क्रि० अ०) फाँदना, कूदना।

लाभ (सं० पु०) फ़ायदा, फल, प्राप्ति, पाना, मिलना, नफ़ा।

लाय (सं० पु०) अग्नि, आगी।

लार (सं० स्त्री०) मुँह का पानी, थूक।

लाल (वि०) दुलारा, प्यारा, रक्तवर्ण (सं० पु०) बालक, छोटा बालक, एक प्रकार का रत्न, एक प्रकार का पक्ष (सं० स्त्री०) लार।

लालच (सं० स्त्री०) लोभ, तृष्णा, तरसना, अदेव।

लालची (वि०) लोभी, आपकाजी, ख़ुदग़र्ज़।

लालड़ी (सं० स्त्री०) मानिक, चुन्नी, एक रत्न विशेष।

लालन (सं० पु०) बालक, प्यारा (क्रि० अ०) बहुत स्नेह करना, बहुत प्यार करना, खिलाना, फुसलाना, दुलारना।

लालना (क्रि० अ०) लड़ाना, बहुत प्यार से बालक को प्यार करना, बालक पर अति स्नेह करना।

लाल बुझक्कड़ (सं० पु०) गँवार, जो अपने को सब से अधिक बुद्धिमान् समझता हो।

"यह तो बूझे लाल बुझक्कड़ और न बूझे कोय"।

लालसा (सं० स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, उत्सुकता, बहुत चाह।

लाला (सं० पु०) वैश्य और कायस्थों की पदवी, कायस्थ, पढ़ाने वाला, मास्टर, गुरु (सं० स्त्री०) मुँह की लार, पसेव।

लालाटिक (सं० पु०) प्रारब्धाधीन, भाग्य का भरोसा करने वाला, भाग्याधीन।

लालित (सं० पु०) पालित, पाला हुआ, दुलारा हुआ।

लालित्य (सं० पु०) मनोहरता, कोमलता, सुन्दरता।

लाली (सं० स्त्री०) प्यारी, दुलारी, प्यार की हुई, ललाई, सुर्ख़ी।

लाव (सं० पु०) रस्सी, लहास।

लावण्य (सं० पु०) सुन्दरता, शोभा, देह की सुन्दरता, नमकीनी, नमक का स्वाद।

लावरलाव (सं० पु०) लालच, अधीरज।

लावलाव (सं० पु०) लाभ, नफ़ा, आमद, आय।

लावा (सं० पु०) खील, फूला, एक प्रकार का पक्षी।

लाष (सं० स्त्री०) कद्दू, लौका।

लास (सं० पु०) रास, नृत्य, नाच, मोद।

लासक (सं० पु०) मयूर, मोर, नर्तक, नाचने वाला।

लासा (सं० पु०) चेप, पौधे का दूध, सेरस, लसदार, फल।

तिब्बत देश की राजधानी का नाम।

लाह (सं० स्त्री०) लाख।

लाहा (सं० पु०) लाभ, क्षेम, कुशल, लाभ, फ़ायदा, नफ़ा।

लाही (सं० स्त्री०) लाख, लोरी, सरसों, महीन कपड़ा।

लाहौर (सं० पु०) पंजाब में एक प्रसिद्ध नगर, जो पंजाब की राजधानी है।

लिखक (सं० पु०) लेखक, लिखने वाला।

लिखत (सं० पु०) लिखा हुआ काग़ज़, जैसे तमस्सुक, चिट्ठी, पत्री, टीप।

लिखना (सं० स्त्री०) लिख देना, लिखाई कर देना।

लिखनी (सं० स्त्री०) क़लम, लेखनी जिससे लिखा जाय।

लिखनीदास (सं० पु०) लेखक वा उपलेखक।
लिखन्त (सं० पु०) होनहार, भवितव्य, प्रारब्ध।
लिखा (सं० पु०) भाग, प्रारब्ध, होनी, भवितव्यता, होनहार, लिखावट, लिखा हुआ।
लिखाई (सं० स्त्री०) लिखने का दाम, लिखने का काम, लिखने की मिहनत। [का काम।
लिखावट (सं० स्त्री०) लिखी हुई चीज़, अक्षर, लिखने
लिखित (सं० पु०) लिखा हुआ, लेख, पत्र, लिपि।
लिङ्ग (सं० पु०) पुरुष-चिह्न, पुरुष का मूत्र-स्थान, शिव की मूर्ति, व्याकरण में एक प्रकार की जाति, जैसे, पुंलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग।
लिचु (सं० पु०) एक प्रकार का फल।
लिझड़ी (सं० स्त्री०) खली, खेरी, पोतड़ी।
लिटाना (क्रि० स०) सुलाना, लेटाना, पौढ़ाना।
लिट्टी (सं० स्त्री०) टिकिया, अंगाकड़ी, बाटी, छोटी रोटी जो घी डाल कर कोयले पर बनाते हैं।
लिथड़ना (क्रि० अ०) किसी चीज़ से अच्छी तरह भींग जाना, लथाड़ना। [तरह भिगा देना।
लिथाड़ना (क्रि० स०) लथेड़ना, किसी चीज़ से अच्छी
लिपटना (क्रि० स०) चिपकना, चिपटना, सटना।
लिपटाना (क्रि० स०) सटाना, लगाना, लिपटाना, साटना, चिपकाना।
लिपटाव (सं० पु०) सटाव, मिलान, चिपटाव।
लिपड़ी (सं० स्त्री०) बहुत दिन की पगड़ी। [पुतवाना।
लिपवाना (क्रि० स०) पोतवाना, गोबर आदि से
लिपाई (सं० स्त्री०) लीपने का काम या मजूरी।
लिपि (सं० पु०) हस्ताक्षर, लिखा हुआ काग़ज़, लिखित, लेख, नक़ल, हाथ का लिखा हुआ।
लिपिकर (सं० पु०) लेखक, चित्रकार, चित्र बनाने वाला, मुसव्विर। [लेसा हुआ, लीन।
लिप्त (सं० पु०) लिपा हुआ, पोता हुआ, मिला हुआ,
लिबलिबा (वि०) चिपचिपा, लबलबा।
लिब्बा (सं० पु०) धौल, चपत।
लिम (सं० पु०) कलंक, दाँसा, चिह्न, दाग़, पहिचान।
लिये (अव्य०) निमित्त, कारण, वास्ते। [करना।
लिलाना (क्रि० अ०) ललचाना, लोभ करना, इच्छा
लिलार (सं० पु०) सिर का अगला भाग, ललाट, भाग, कपाल, प्रारब्ध।
लिवाना (क्रि० स०) ग्रहण करवाना।
लिवा लाना (क्रि० स०) साथ बुला लाना।
लिहाड़ा (वि०) तुच्छ, नीच, दुराचारी, अधम।
लिहाफ़ (सं० पु०) रूई भरी हुई मोटी रजाई।
लीक (सं० स्त्री०) गाड़ी के पहिये का चिह्न, पगडण्डी, कलंक, दाग़, लकीर।
लीख (सं० स्त्री०) जूँ का अंडा, सिर में रहने वाला कीट।
लीचड़ (वि०) कृपण, कंजूस, सूम, लोभी।
लीचर (सं० स्त्री०) शिथिलता, अशक्ति।
लीची (सं० स्त्री०) एक प्रकार का फल।
लीझी (सं० स्त्री०) मल, ललछट, गाद।
लीतरा (सं० पु०) पुराना जूता, टूटा पुराना जूता।
लीद (सं० स्त्री०) घोड़े की विष्ठा। [हुआ।
लीन (सं० पु०) लय, लगा हुआ, मिला हुआ, डूबा
लीपना (क्रि० स०) पोतना, लेसना, थोपना।
लीबड़ (सं० पु०) पाँक, कीचड़, पंक।
लीम (सं० पु०) सन्धि, मेल, मिलाप।
लीमू (सं० पु०) निंबू, एक खट्टा फल।
लीर (सं० स्त्री०) धज्जी, कतरन, कपड़े का टुकड़ा।
लील (सं० स्त्री०) नील (वि०) नीला।
लीलना (क्रि० स०) निगलना, घूँटना।
लीलहि (सं० स्त्री०) बिना श्रम, बे मेहनत (क्रि० स०) निगल जाय।
लीला (सं० स्त्री०) खेल, क्रीड़ा, बिहार, विलास, श्रृंगार भाव (वि०) नीलवर्ण।
लीलावती (सं० स्त्री०) भास्कराचार्य की बेटी का नाम।
लुक (सं० पु०) गिरने वाला तारा, वह तारा जो आकाश से गिरे, लूक।
लुकना (क्रि० अ०) छिपना, गुप्त होना।
लुकन्द्रा (सं० पु०) दुराचारी, लम्पट, लुच्चा।
लुका (वि०) छिपा हुआ, गुप्त।
लुकाञ्जन (सं० पु०) एक प्रकार का अंजन जिसके लगाने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।
लुकाना (क्रि० अ०) छिपना, लुकना, गुप्त होना।
लुकाव (सं० पु०) छिपाव।
लुखरी (सं० स्त्री०) लोमड़ी, बघेरा, हुँडार।
लुगाई (सं० स्त्री०) नारी, औरत, स्त्री, तिरिया। [हैं।
लुङ्गी (सं० स्त्री०) छोटी धोती जिसे प्रायः मुसलमान पहिनते

लुच (सं० पु०) निरानग्न, नग्न, दिगम्बर ।
लुचई (सं० स्त्री०) एक प्रकार की पूड़ी, बदमाशी ।
लुचपन (सं० पु०) नष्टता, अधमाई, नीचता ।
लुचरा (सं० पु०) मकड़ा, कीट विशेष ।
लुच्चा (वि०) कुकर्मी, लुचई करने वाला ।
लुजलुजा (वि०) लजलजा, लचीला, मुड़ने वाला, कमज़ोर । [हाथ न हो ।
लुञ्जा (वि०) लूला, अपाहिज, हाथों से हीन, जिसके एक
लुटना (क्रि० स०) लूट करना, धावा मारना, डाका मारना, लुट जाना, लूट होना । [मारने वाला ।
लुटवैया (सं० पु०) लुटेरा, डाकू, लूटने वाला, डाका
लुटाना (क्रि० स०) गँवाना, उड़ाना, लूट करवाना ।
लुटिया (सं० स्त्री०) छोटा लोटा, लोटे से छोटा पात्र ।
लुटेरा (सं० पु०) लूटने वाला, डाकू, लुटवैया ।
लुट्टस (सं० पु०) लूट, बिगाड़, सत्यानाश ।
लुठन (सं० पु०) घोड़ा, गदहा आदि का श्रम दूर करने के लिये पृथ्वी पर लोटना ।
लुड़का (सं० पु०) कान का एक गहना, लुरकी ।
लुड़खना (क्रि० अ०) दुलकना, लुढ़कना ।
लुढ़क जाना (क्रि० अ०) मर जाना, मृत्यु हो जाना, स्वर्गवास हो जाना, देहान्त हो जाना ।
लुढ़कना (क्रि० अ०) ढिमलाना, निकल जाना, ढुलना, ढनमनाना ।
लुढ़ाना (क्रि० स०) गिरा देना, ढकेलना, धसोरना ।
लुढ़िया (सं० पु०) छोटा लोढ़ा, बट्टा, सिल पर पीसने का साधन ।
लुढ़ियाना (क्रि० अ०) कपड़े को खड़ा करके दूसरी बार सीना, पटियाना, बखिया करना । [हुआ ।
लुण्ठित (सं० पु०) चोरी किया हुआ, अपहृत, चोराया
लुण्डा (वि०) बाँड़ा, बिना पूँछ के, पुच्छ हीन, जिसके पूँछ न हो । [की इधर बातें कहने वाला, लुबरा ।
लुतरा (सं० पु०) बड़बड़िया, इधर की उधर और उधर
लुनाई (सं० स्त्री०) सुन्दरता, ख़ूबसूरती, सुंदराई ।
लुनिया (सं० स्त्री०) एक घास का नाम, एक जाति का नाम ।
लुपरी (सं० स्त्री०) एक तरह की लपसी, भोजन विशेष, बिना घी के लप्सी ।
लुपलुप (सं० पु०) चभड़चभड़, पतली चीज़ का हिलना, कुत्ते आदि के खाने का शब्द ।

लुप्त (सं० पु०) नष्ट, बरबाद, अदृश्य, गुप्त, छिपा हुआ ।
लुबदी (सं० स्त्री०) लेप आदि के लिये पीसी दवा ।
लुब्ध (वि०) लालची, लोभी, सतृष्ण ।
लुब्धक (सं० पु०) लोभी, लालची, शिकार, लम्पट, लुच्चा, बधिक । [तरसाना, चाहना ।
लुभाना (क्रि० अ०) ललचाना, जी लगाना, मोहना,
लुम्पक (सं० पु०) चोर, चुराने वाला, एक राजा का नाम, नाशक ।
लुरकी (सं० स्त्री०) कान में पहनने का गहना, लुढ़की ।
लुहण्डा (सं० पु०) लोहे का पात्र विशेष, लोहे का हंडा ।
लुहरा (सं० पु०) छोटा, नाटा, जो क़द में नाटा हो ।
लुहाँगी (सं० स्त्री०) वह लाठी जिसमें लोहा लगा हो ।
लुहार (सं० पु०) लोहार, लोहकार, लोहा बनाने वाला ।
लुहारिन (सं० स्त्री०) लोहार की स्त्री, लोहारिन ।
लू (सं० स्त्री०) जेठ बैशाख की गर्म हवा ।
लूआठ (वि०) अधजली लकड़ी, लूकट । [हवा ।
लूक (सं० पु०) चिनगारी, पतंगा, लपट (सं० स्त्री०) लू, गर्म
लूकट (वि०) अधजला, लूआठ ।
लूकटी (सं० स्त्री०) कुरेलनी, अधजली छोटी लकड़ी ।
लूकना (क्रि० अ०) लू से जलना ।
मुहा०—लूका लगाना = आग लगाना, झगड़ा लगाना, अभिशाप देना, गाली देना ।
लूकवाही (सं० पु०) दाह, अगवाही ।
लूका (सं० पु०) जलती हुई चिनगारी ।
लूख (सं० पु०) लूक, ज्वाला ।
लूट (सं० स्त्री०) वस्तु का बरबस छीनना, डाका मारना ।
लूटक (सं० पु०) कमरबन्द, लूटने वाला, ठग ।
लूटना (क्रि० स०) बरबस छीन लेना, उड़ाना, लगाना ।
मुहा०—लूटपाट = लूटना और मार लेना । लूट पूट = लूटना, उड़ा ले जाना । लूटालूट = लूटने का काम ।
लूता (सं० स्त्री०) मकड़ी, एक रोग का नाम ।
लून (सं० पु०) लवण, लोन, नमक, काटा गया, लुनाया ।
लूनिया (सं० पु०) लोन बनाने वाला, एक जाति का नाम विशेष । खारा, एक पौधे का नाम, बेलदार जो दूसरों के लिये रास्ता साफ़ करे ।
लूनी (सं० स्त्री०) माखन, नैनू ।
लूला (वि०) बिना हाथ का, टुंडा, लुंज ।
लूह (सं० स्त्री०) गर्मी के दिनों की गर्म हवा ।

लुहर (सं० पु०) लुकेठा, लूक, गिरा हुआ तारा।
लेंड़ी (सं० स्त्री०) मेंगनी, बकरी आदि जन्तुओं की विष्ठा जो गोल होती है (सं० पु०) एक तरह का कुत्ता (वि०) नामर्द, असमर्थ।
लेंढ़ा (सं० पु०) गेरूई, मूढ़, लंठ, बेवकूफ़, गँवार।
ले (अव्य०) तक, तलक, अवधि।
लेई (सं० स्त्री०) बिना घी और चीनी का बना हुआ हलुआ, जिससे कागज़ कपड़ा आदि चिपकाते हैं। एक प्रकार की लप्सी, अहार।
लेख (सं० पु०) लिखा हुआ कागज़, पत्र, लिपि।
लेखक (सं० पु०) लिखने वाला, मुहर्रिर, जो लेख लिखा करता हो।
लेखकी (सं० स्त्री०) लिखाई, लेखक का काम।
लेखन (सं० पु०) लिखाई लिखावट।
लेखनी (सं० स्त्री०) क़लम, लिखनी, लिखने की चीज़।
लेखपत्र (सं० पु०) ताड़ का पत्ता। [रेखा।
लेखा (सं० पु०) हिसाब, गणित (सं० स्त्री०) लकीर,
लेख्य (वि०) चिट्ठी, पत्री, चित्र, तस्वीर।
लेख्य गृह (सं०पु०) दफ़्तर, कचेहरी, आफ़िस। [छाल।
लेख्य-पत्र (सं० पु०) भोज-पत्र, एक प्रकार के पेड़ की
लेज (सं० स्त्री०) रस्सी, डोरी।
ले जाना (क्रि० स०) ढोना, ले भागना, जीतना।
लेट (सं० पु०) गच बनाने के लिये एक मसाला विशेष।
लेटना (क्रि० अ०) पौढ़ना, सोना, पड़ना, आराम करना, विश्राम करना।
ले ठगना (क्रि०स०) चोरी करना।
लेनदेन (सं० स्त्री०) व्यापार, व्यवहार।
लेना (क्रि० स०) ले लेना, ग्रहण करना, गहना, पकड़ना, स्वीकार करना, चुनना, ख़रीदना। [कर लगाई जाय।
लेप (सं० पु०) लेपन, मलहम, मरहम, वह दवा जो घोल
ले पड़ना (क्रि० अ०) संग पड़ना, मैथुन करना, अपने कलंक से दूसरे को फँसाना।
लेपन (सं० पु०) लेपने की वस्तु, मरहम, उबटन आदि।
लेपना (क्रि० अ०) लेप लगाना पोतना।
लेपालक (सं० पु०) गोद लिया हुआ पुत्र, धर्म पुत्र, पोष्य पुत्र, दत्तक पुत्र, बारह प्रकार के पुत्रों में से एक पुत्र। [बनाना।
लेपालना (क्रि० अ०) बेटा करके लेना, पोष्य पुत्र
ले मरना (क्रि० अ०) कलंक लगाना, दोष लगाना।
ले रखना (क्रि० अ०) सिद्ध करके रखना, ले कर रख छोड़ना, वादा से ले कर उपेक्षा करना, ले कर न देना।
ले रहना (क्रि० अ०) ठगना, चोरी करना।
लेरू (सं० पु०) बछड़ा, बछरू, गाय का बछड़ा।
लेला (सं० पु०) भेड़ी का बच्चा।
लेलिह (सं० पु०) साँप, सर्प, नाग।
लेलूट (सं० पु०) लूट, लहलूट।
ले लेना (क्रि० स०) ग्रहण करना, छीन लेना।
लेव (सं० पु०) भीत की पपड़ी जो गिरने योग्य हो, एक बार का फराव, धान के खेतों का कीचड़।
लेवा (सं०पु०) छोटा तालाब, लेने वाला, थन, खीरी, कई तरह के कपड़ों को सी कर बनाई हुई गुदड़ी।
लेवाई (सं० स्त्री०) लेन देन, कहा सुनी।
लेवार (सं० पु०) गीली मिट्टी जो दीवार पर लगाते हैं।
लेवास (सं० पु०) लट, जटा।
लेवैया (सं० पु०) ग्राहक, लेने वाला।
लेश (वि०) छोटा, थोड़ा, अल्प, किंचित् (सं० पु०) छोटाई, अल्पता, कण। [लगाई जाती है, लीपपोत।
लेस (सं० पु०) भूसी मिली हुई मिट्टी जो भीत में
लेसना (क्रि० स०) बालना, जलाना, लीपना, पोतना।
लेसालेस (सं० पु०) लीपपोत, लीपना, पोतना।
लेह (सं० स्त्री०) शीघ्रता, उतावली।
लेहन (क्रि० स०) चाटना।
लेहना (सं० पु०) चारा, दाना, भोजन।
लेही (सं० स्त्री०) आटे का बना चिपकाने का पदार्थ।
लेह्य (वि०) चाटने योग्य, अमृत, चाटने की चीज़, चटनी।
लैस (वि०) सिद्ध, मोल लिया हुआ (सं० पु०) तुक्का, एक प्रकार का सिक्का, तैयार कपड़े के किनारे का फ़ीता।
लों (अव्य०) तक, तलक।
लोंग (सं० स्त्री०) एक तरह का फूल जो गरम मसाले में पड़ता है।
लोंद (सं० पु०) अधिक मास, पुरुषोत्तम महीना। [गोला।
लोंदा (सं० पु०) मिट्टी का ढेला, पियडा सादे पदार्थ का
लोई (सं० स्त्री०) एक तरह का ऊनी कपड़ा, छोटा कम्बल, मुँह की चमक, लावण्य, औरत गूँधन, आटे का पेड़ा।
लोक (सं० पु०) लोग, मनुष्य, व्याकरण, यम, यश, नाम,

कीर्ति, सन्तान, भुवन, सृष्टि के विभाग। तीन लोक प्रसिद्ध हैं—१ स्वर्ग लोक, २ मर्त्यलोक, ३ पाताल लोक, कितने ग्रन्थों में लिखा है कि सात लोक हैं और बहुत का मत है कि १४ हैं सात ऊपर के और सात नीचे के। [में पकड़ लेना, गोचना।

लोकना (क्रि० स०) ऊपर से गिरती हुई वस्तु को बीच ही

लोकनाथ (सं० पु०) राजा, शिव, ब्रह्मा, विष्णु।

लोकप (सं० पु०) राजा, दिक्पाल, लोक का पालने वाला।

लोकपाल (सं० पु०) लोकप, दिक्पाल। [रमा।

लोकमाता (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, हरिप्रिया, कमला, इन्दिरा,

लोकरा (सं० पु०) फटा कपड़ा, चीथरा।

लोकलोचन (सं० पु०) सूर्य, भास्कर, सूरज, दिनकर।

लोकापवाद (सं० पु०) अपकीर्ति, लोक-निन्दा, बेइज़्ज़ती।

लोकालोक (सं० पु०) एक पहाड़ की श्रेणी जिसको लोग समझते हैं कि सातों समुद्र को घेरे हुए है और इस संसार की सीमा है।

लोखर (सं० पु०) लोहे का पुराना पात्र, हथियार, नाऊ की एक थैली जिसमें छुरा आदि रखा जाता है।

लोखरी (सं० स्त्री०) लोमड़ी, हुंडार।

लोग (सं० पु०) आदमी, मनुष्य, जन, पुरुष।

लोगाई (सं० स्त्री०) स्त्री, नारी, औरत, लुगाई, तिरिया।

लोचन (सं० पु०) आँख, नेत्र, नयन, दो की संख्या।

लोचना (सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, ख़ूबसूरत स्त्री।

लोटन (सं० पु०) पटकन, एक प्रकार का झाड़, मण्डलिया, कबूतर की एक जाति।

लोटना (क्रि० अ०) पटकना, तले ऊपर होना, तलफना, छटपटाना, फिरना, करवटें बदलना।

मुहा०—लोट पोट होना = मोहित होना, किसी की प्रीति में डूबना।

लोटा (सं० पु०) पानी रखने का पात्र, गड़वा।

लोढ़ा (सं० पु०) सिल पर का बट्टा, पत्थर का एक लम्बा पदार्थ, महाजनों की एक जाति।

लोढ़िया (सं० स्त्री०) छोटा लोढ़ा।

लोथ (सं० स्त्री०) मृतक, लास, मुर्दा का देह, मरा शरीर।

लोथरा (सं० पु०) मांस का टुकड़ा।

लोथी (सं० स्त्री०) लोह मढ़ी लाठी, लोह की लाठी।

लोदी (सं० पु०) मुसलमानों की एक जाति। [विशेष।

लोध (सं० पु०) एक जाति, वृक्ष विशेष, एक औषधि

लोधा (सं० पु०) एक जाति, किसान।

लोधिया (सं० पु०) एक जाति का नाम।

लोन (सं० पु०) लवण, नमक, नोन, नून, नोनी साग।

मुहा०—लोन मिर्चा लगाना = अपनी तरफ़ से बहुत बढ़ा के कहना।

लोना (वि०) खारा, सुन्दर, नमकीन (सं० पु०) एक प्रकार का फल, नाना जो भीत दीवार आदि से गल गल कर गिरता है।

लोनार (सं० पु०) खारी भूमि, खेलाड़ी, वह स्थान जिसमें लवण बनाते हैं, एक प्रकार की जाति।

लोप (सं० पु०) काटना, मिटाना, व्याकरण में अक्षर अथवा पद का उड़ा देना, छीलछाल, काट-कूट।

लोपड़ी (सं० स्त्री०) लोंदा, लेप विशेष।

लोपामुद्रा (सं० स्त्री०) अगस्त्य ऋषि की धर्मपत्नी।

लोप्ता (सं० पु०) नाश करने वाला, नाशकर्ता, गुप्त।

लोबान (सं० पु०) एक तरह की सुगन्धित वस्तु जिसको धूप की तरह आग में डाला जाता है।

लोबिया (सं० पु०) सेम नाम को तरकारी। [तृष्णा।

लोभ (सं० पु०) लालच, पराये धन के पाने की चाह,

लोभना (क्रि० अ०) मोहित होना, लालच करना।

लोभी (वि०) लालची, मोही, सूम, कृपण, अदाता, अदानी।

लोम (सं० पु०) देह के बाल, रोम, रुआँ, रोंगटा।

लोमड़ी (सं० स्त्री०) हुंडार, लोखर, लुखरी।

लोमश (सं० पु०) एक ऋषि का नाम, चिरंजीवी (वि०) जिसके देह में बहुत बाल हों।

लोयन (सं० पु०) आँख, नेत्र, लोचन, नयन।

लोर (सं० पु०) झुमका, लोलक, नाक वा कान में पहिनने का एक गहना, झुलनी, आँसू।

लोल (सं० पु०) चञ्चल, लोभी।

लोलक (सं० पु०) कान का एक गहना विशेष।

लोलिनी (सं० स्त्री०) नटनी, नटी, चलायमान स्त्री।

लोलुप (वि०) अत्यन्त लोभी, व्यभिचारी, झूठा, चंचल।

लोष्ट (सं० पु०) ढेला, मिट्टी, मृत्तिका।

लोह (सं० पु०) एक धातु विशेष।

लोहकार (सं० पु०) लोहार, लुहार, एक जाति विशेष।

लोहचुन (सं० पु०) लोहे का चूरा।

लोहण्डा (सं० पु०) लोहे का पात्र, कड़ाही।

लोहसार (सं० पु०) लोहे की खानि, झावाँ।

लोहा (सं० पु०) एक प्रकार की धातु, स्वनाम प्रसिद्ध धातु। [हुआ।

लोहान (क्रि० स०) लोहू से भरा, रुधिरयुक्त, लोहू सना

लोहानी (सं० पु०) पठानों की एक जाति।

लोहा बजाना (क्रि० अ०) तलवार लेकर लड़ना।

लोहार (सं० पु०) एक प्रकार की शूद्र जाति जो लोहा गढ़ते हैं।

लोहारिन (सं० स्त्री०) लोहार की स्त्री।

लोहित (वि०) लाल, लाल रंग (सं० पु०) लोहू, .खून।

लोहित पुष्पक (सं० पु०) अनार का वृक्ष और फल।

लोहिताक्ष (सं० पु०) लाल आँख, लाल आँख वाला आदमी, विष्णु, कोकिल पक्षी।

लोहिया (वि०) लोहे से बनी हुई चीज़, लोहा बेचने वाला, मारवाड़ी बनियों का एक नाम, उपनाम।

लोही (सं० स्त्री०) कम्बल, नवाला, पोह, अरुण, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

लोहू (सं० पु०) रक्त, .खून, रुधिर।

लौं (अव्य०) तलक, तक, लगि, अवधि।

लौंग (सं० पु०) एक प्रकार के फूल का नाम जो गरम मसाले में पड़ता है।

लौंगी (सं० स्त्री०) पालतू कुतिया का नाम।

लौंडा (सं० पु०) लड़का, छोकरा, दास, .गुलाम।

लौंडिया (सं० स्त्री०) लड़की, छोकरी, चेली, दासी।

लौ (सं० स्त्री०) जलती हुई बत्ती की ज्वाला।

लौकना (क्रि० अ०) चमकना, कौंधना।

लौका (सं० पु०) एक प्रकार का फल जो लम्बा २ और मोटा होता है जिसकी तरकारी और रायता बनता है, बिजली, चमक, लौकी। [दुनियावी

लौकिक (वि०) लोक-व्यवहार में आने वाला, सांसारिक,

लौकी (सं० स्त्री०) पर्वती, लौका, रामतरोई। [आना।

लौटना (क्रि० अ०) फिरना, पलटना, घूमना, वापस

लौटाना (क्रि० स०) फिराना, पलटाना, घुमाना।

लौन (सं० पु०) निमक, नोन।

लौना (क्रि० स०) काटना, कटनी करना, कम बाँट में दूसरा बाँट लगा कर उसे पूरा करना।

लौन्द (सं० पु०) मलमास, अधिक मास।

लौह (सं० पु०) लोहा।

लौहकार (सं० पु०) लोहार।

ल्यारी (सं०पु०) भेड़िया, हुंडार।

व

व—हल वर्णों का उनतीसवाँ अक्षर इसका उच्चारण दन्त और ओष्ठ से होता है (सं० पु०) हवा, राहु, कल्याण, समुद्र, बाघ, वरुण, मन्त्रणा, सलाह।

वंश (सं० पु०) कुल, सन्तान, वंशपरम्परा, परिवार, कुटुम्ब, बाँस का वृक्ष।

वंशकार (सं० पु०) बाँसफोड़, डोम, भंगी।

वंशज (सं० पु०) वंश में उत्पन्न होने वाला, बाँस से उत्पन्न होने वाला।

वंशभोज्य (सं० पु०) बाप दादों की कमाई हुई भूमि आदि सम्पदा, पितरों की सम्पत्ति, पुरखाओं से मिलने वाली जीविका।

वंशलोचन (सं० पु०) बाँस से निकलने वाला एक पदार्थ।

वंशावली (सं० स्त्री०) पीढ़ी, वंश की परिपाटी।

वंशी (सं० स्त्री०) मुरली, बाँसुरी, बाँस का बाजा।

वंशीधर (सं० पु०) श्री कृष्ण, बंशी के बजाने वाले।

वंश्य (वि०)कुलीन, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न (सं०पु०) पुत्र, सातवीं पीढ़ी से अलग। [यह बड़ा चतुर समझा जाता है।

वक (सं० पु०) बगला, मछलियों को खाने वाला पक्षी,

वकवृत्ति (सं० स्त्री०) धूर्तता, दग़ाबाज़ी, पाखण्ड, छल (वि०) धूर्त ,दग़ाबाज़।

वकहंस (सं० पु०) एक प्रकार का पक्षी, सारस पक्षी।

वकासुर (सं० पु०) एक राक्षस जिसे कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल भेजा था और यह बगले का रूप धर कर गया था।
वकी (सं० स्त्री०) बगुली, बगुला की स्त्री (वि०) बकने वाला, बकवादी। [पेड़।
वकुल (सं० पु०) मौलिश्री, मवलेसरी, एक प्रकार का
वक्तरागी (सं० पु०) सुग्गा, तोता। [आशय।
वक्तव्य (वि०) कहने योग्य, बोलने योग्य, अभिप्राय,
वक्ता (सं० पु०) बोलने वाला, व्याख्याता, व्याख्यान देने वाला, कहने वाला।
वक्तृता (सं० पु०) व्याख्यान, उपदेश, कथन।
वक्र (वि०) टेढ़ा, बाँका, कुटिला (सं० पु०) शनैश्चर, जल का भौंरा, मंगल ग्रह। [टेढ़े की चाल।
वक्रगति (सं० स्त्री०) टेढ़ी चाल, बाँके चाल, बाँके व
वक्रग्रीवा (सं० पु०) ऊँट, उष्ट्र।
वक्रोक्ति (सं० स्त्री०) टेढ़ा कहना, टेढ़ी बात, व्यंग बचन, ताना, एक अलंकार का नाम जिसमें टेढ़ी बात कही जाती है।
वक्षः स्थल (सं० पु०) छाती, हृदय, उरः स्थल
वक्षोज (सं०पु०) उरोज, स्तन, चूँची, दोनों छाती।
वङ्क (वि०) बाँका, टेढ़ा, तिरछा।
वङ्किल (वि०) टेढ़ा, मेढ़ा।
वङ्की (सं० स्त्री०) छुरी, छुरिका।
वङ्ग (सं० पु०) राँगा, एक धातु, बंगाल देश।
वङ्गसेन (सं०पु०) अगस्त्य वृक्ष।
वच (सं० पु०) औषधि विशेष, एक दवा का नाम।
वचन (सं० पु०) वाक्य, मुनिवाक्य, कथन, मर्यादा, अवधि।
मुहा०—वचन बद्ध होना = प्रतिज्ञा से बँध जाना।
वचन व्यक्ति (सं० स्त्री०) बात की सफ़ाई।
वच्छ (वि०) लाल, प्यारा (सं० पु०) बच्चा, लड़का, बछड़ा। [कड़ा, कठिन।
वज्र (सं० पु०) इन्द्र का अस्त्र, बिजली, गाज, हीरा (वि०)
वज्रक (सं० पु०) हीरा मणि।
वज्र दन्त (सं० पु०) सूअर।
वज्रधर (सं० पु०) इन्द्र, देवराज।
वज्र नामा (सं० पु०) असुर विशेष।
वज्रपाणी (सं० पु०) इन्द्र, देवराज।
वज्राघात (सं० पु०) वज्रपात, वज्र से मारना।
वञ्चक (सं० पु०) ठग, ठगने वाला, धूर्त, दग़ाबाज़, गीदड़, सियार, नेउर, नेवला।
वञ्चकता (सं० स्त्री०) धूर्त्तता, ठगई।
वञ्चना (सं० स्त्री०) किसी मनुष्य को ठगना, प्रतारण।
वञ्चित (सं० पु०) वह मनुष्य जो मीठी मीठी बातों से ठगा गया हो, ठगा हुआ, ठगा गया।
वञ्ची (सं० पु०) प्रतारक, ठग।
वट (सं० पु०) बरगद का पेड़ यह बहुत बड़ा होता है इसके फल गूलर से छोटे होते हैं उस फल के भीतर कीड़े होते हैं।
वटक (सं० पु०) बरा, एक तरह का उरद का बरा।
वटर (सं० पु०) मुर्ग़ा, चोर, पहाड़ी आसन (अंग्रे०सं०पु०) मक्खन, नैनू।
वटिका (सं० स्त्री०) देखो "वटी"।
वटी (सं० स्त्री०) बरी, पकौड़ी, दवा की गोली, रस्सी।
वटु (सं० पु०) ब्राह्मण, कुमार, ब्रह्मचारी, बालक विद्यार्थी।
वटुक (सं० पु०) बालक, एक भैरव का नाम।
वड (सं० पु०) बरगद, वट।
वडवानल (सं० पु०) समुद्र की अग्नि।
वडिश (सं० पु०) वनसी, मछली पकड़ने का काँटा।
वणिक् (सं० पु०) बनिया, एक जाति विशेष जो आटा, चावल इत्यादि बेचता है, व्यापारी।
वत् (अव्य०) तुल्य, बराबर, समान, जैसे ब्राह्मणवत् = ब्राह्मण के समान। [प्यार का शब्द।
वत्स (सं० पु०) बच्चा, बालक, लड़का, बछड़ा, छाती,
वत्सतर (वि०) अतिशय छोटा, अत्यन्त छोटा बच्चा।
वत्सर (सं० पु०) संवत, बरस, वर्ष।
वत्सरीय (वि०) वार्षिक, वत्सर सम्बन्धी।
वत्सल (वि०) प्यारा, प्रेमी, छोही, मोही, दयालु, कृपालु, रहीम।
वत्सासुर (सं० पु०) असुर विशेष, कंस का नौकर।
वदन (सं० पु०) मुँह, कथन, शरीर, जिस्म, देह।
वदरीनाथ (सं० पु०) एक तीर्थ का नाम, उस तीर्थ में रहने वाले एक प्रधान देवता, चार धामों में से एक धाम।
वदान्य (सं० पु०) दानशीलता, दाता।
वध (सं० पु०) हत्या, मार मारी, प्राणहिंसा।

वधिक (सं० पु०) हत्यारा, खेटकी, शिकारी, जो वध करता हो।
वधू (सं० स्त्री०) बहू, नई ब्याही दुलहिन, स्त्री।
वन (सं० पु०) आरण्य, जंगल, विपिन, पानी, मेघानल, स्थान, जगह।
वनचर (सं० पु०) जंगली, वनमानुष, वानर, बन्दर, मछली, कछुआ आदि जलचर।
वनज (सं० पु०) कमल, जलज।
वनपाँशुली (सं० पु०) बहेलिया।
वनप्रिया (सं० पु०) कोयल, कोइल।
वनमानुष (सं० पु०) एक प्रकार का जंगली जानवर।
वनमाला(सं०स्त्री०)तुलसी का कुन्द,मन्दार पारिजात और कमल का पैर तक लटकता हुआ माला।
वनमाली (सं० पु०) श्रीकृष्ण।
वनयात्रा (सं० स्त्री०) ब्रज के चौरासी कोस की यात्रा, वन की सैर। [करना।
वनवास (सं० पु०) वन में रहना, वन में निवास
वनस्पति (सं० स्त्री०) भूमि से उगने वाली चीज़ें जैसे— घास, पात, पेड़, पौधा।
वनिता (सं० स्त्री०) स्त्री, प्यारी, लुगाई, भार्या।
वनी (सं० स्त्री०) छोटा वन।
वनैला (वि०) वन में रहने वाला, वन के जंगली जानवर। [दयावन्त।
वन्त (अव्य०) युक्त, रखने वाला, करने वाला, जैसे—
वन्दन (सं० पु०) प्रणाम, वन्दना, अभिवादन।
वन्दना (सं० स्त्री०) स्तुति, नमस्कार, प्रणाम, सिन्दूर।
वन्दनीय (सं० पु०) सराहने योग्य, प्रणाम करने योग्य।
वन्दा (सं० पु०) आकाश लता, वृक्ष विशेष।
वन्दित (वि०) प्रणामित, प्रणाम किया हुआ।
वन्दी (सं० पु०) भाट, दसौंधी, क़ैदी, बंधुआ।
वन्दीजन (सं० पु०) भाट, दसौंधी, जो राजसभाओं में राजाओं का वर्णन कवित्त में गाते हैं। [कुटुम्ब।
वन्धु (सं० पु०) निज परिवार, अपने परिवार के लोग,
वन्य (वि०) जंगली, बनैला, बन का।
वपन (सं० पु०) बोना, बीज पाना, बीआ बोना, केश-मुंडन, बालों का मुँडवा देना, हजामत कराना।
वपनी (सं० स्त्री०) हज्जामों का अड्डा, नाऊ बाड़ा, नापितशाला।
वपुरा (वि०) तुच्छ, नीच, छोटा, ओछा।
वपुः (सं० पु०) शरीर, देह, काया।
वप्ता (सं० पु०) पिता,बीज बोने वाला।
वप्र (सं० पु०) प्राचीर, दीवार, भीत।
वबा (सं० स्त्री०) महामारी, हैज़ा।
वभ्रु (सं० पु०) यादव विशेष।
वभ्रुवाहन (सं० पु०) अर्जुन का पुत्र।
वम (सं० पु०) शिवजी की स्तुतिबोधक शब्द।
वमन (सं० पु०) कै, छाँट, उलटी, रद्द, छर्दि, उछाल।
वमनी (सं० स्त्री०) जोंक, जलौका, एक तरह का कीड़ा जो आदमी की देह का ख़ून चूसता है।
वय (सं० पु०) विहंग, निश्चय, आयु।
वयस् (सं० स्त्री०) अवस्था,आयु, उमर।
वयस्थ (वि०) वय-प्राप्त, अवस्था वाला, वालिग़।
वयस्य (सं० पु०) समान अवस्था वाला साथी, मित्र सखा।
वर (सं० पु०) आशीर्वाद, वरदान, चाही हुई वस्तु, पति, स्वामी, जँवाई, दामाद (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, बड़ा।
वरकण्टिका (सं० पु०) सतावर, छतावर, एक दवा का नाम।
वरण (सं० पु०) वेष्ठन, घेरना, पूजना, लपेटना (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम जो काशी से उत्तर बहती हुई गंगा में मिलती है।
वरद (सं० पु०) अभीष्ट दाता, वर देने वाला इष्ट देव।
वरदान (सं० पु०) आशीर्वाद देना, वर देना, दुआ देना, विवाह का दान।
वरदायक (सं० पु०) वर देने वाला।
वरदायिनी (सं० स्त्री०) वर देने वाली, वरदानी।
वरपीतक (सं० पु०) अभ्रक,अबरख।
वरलोक (सं० पु०) एक स्वर्ग का नाम।
वराक (सं० पु०) ग़रीब, बिचारा, नीच, अधरम, दमनीय।
वराटक (सं० पु०) बीज-कोष, बीज का स्थान, कमल का बीज। [एक पैसे के होती है।
वराटिका (सं० स्त्री०) कौड़ी, सोलह गंडा कौड़ी बराबर
वराणसी (सं० स्त्री०) काशी, बनारस यह नगरी वरणा और असी के बीच में है इसलिये इसका यह नाम हुआ।
वराह (सं० पु०) शूकर, सूअर, विष्णु का एक अवतार।
वरिष्ठ (वि०) बहुत अच्छा, अति श्रेष्ठ, अति उत्तम।
वरु (अव्य०) वरन, अगरचे, चाहे।

वरुण (सं० पु०) जल, जल के देवता, पश्चिम दिशा का स्वामी, सूर्य, पक्का मकान, एक वृक्ष का नाम।
वरुत्थ (सं० पु०) समूह, झुंड।
वरुत्थी (सं० स्त्री०) सेना, फ़ौज, चमू।
वरूथ (सं० पु०) रथ का परदा, समूह, झुण्ड।
वरूथिनी (सं० स्त्री०) सेना, फ़ौज, चमू।
वरे (अव्य०) इस पार, इधर, समूह।
वरेची (सं० स्त्री०) अङ्कोल का वृक्ष।
वरेषी (सं० स्त्री० एक गहने का नाम।
वरोरू (सं० स्त्री०) सुन्दर जंघा वाली, गंधनवती।
वरोह (सं० स्त्री०) बड़ में लटकने वाली जटा, सोर।
वर्क (सं० पु०) पृष्ठ, पेज, खस्सी, चाँदी सोने का पतला पत्तर।
वर्ग (सं० पु०) एक जाति का समूह, गण, दर्जा, कक्षा, एक स्थानीय अक्षर-समूह। एक अंक को उसी अंक से गुणा करने से जो फल निकले जैसे ४ का वर्ग सोलह ५ का वर्ग पच्चीस।
वर्गक्षेत्र (सं० पु०) जिस क्षेत्र की चारों भुजाएँ समान और चारों कोण समकोण हों।
वर्ग मूल (सं०पु०) वह अंक जिसका वर्ग किया गया हो।
वर्गीय (वि०) समूह का, वर्ग का।
वर्जन (सं० पु०) निषेध, त्याग, परिहार।
वर्जना (क्रि० स०) रोकना, मना करना, मनाही करना।
वर्जित (वि०) रोका हुआ, छोड़ा हुआ।
वर्ण (सं० पु०) रंग (लाल, हरा, पीला आदि), जाति, क़ौम (ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र), अक्षर, हर्फ़ (क, ख, ग आदि)।
वर्णक (वि०) प्रशंसक, स्तुति-कर्ता। [देना, लिखाई।
वर्णन (सं० पु०) बखान, प्रशंसा, तारीफ़, स्तुति, रंग
वर्णना (सं० स्त्री०) वर्णन, स्तव, स्तुति (क्रि० स०) बखानना।
वर्णमाला (सं० स्त्री०) ककहरा, स्वर, व्यञ्जन-समूह।
वर्णसंकर (सं० पु०) दोगला, जिसके बाप और माँ जुदी २ ज़ात के हों।
वर्णात्मक (वि०) अक्षर सम्बन्धी, अक्षरात्मक।
वर्णाश्रम (सं० पु०) ब्राह्मण आदि, वर्ण और ब्रह्मचर्य आदि आश्रम।
वर्णिका (सं० स्त्री०) रंग भरने की लेखनी।
वर्णित (वि०) प्रशंसित।
वर्तन (सं० पु०) पात्र, बरतन।
वर्तमान (सं० पु०) जो समय बीत रहा है, तीन काल में से एक काल (वि०) विद्यमान, मौजूद, उपस्थित।
वर्ता (सं० पु०) पटरी पर लिखने के लिये काठ की क़लम, एक क़लम विशेष।
वर्ताव (सं० पु०) व्यवहार, आचरण, रीति, आचार।
वर्ति (सं० स्त्री०) दीपक में जलाने वाली बत्ती, आँखों में सुरमा लगाने की सलाई।
वर्तुल (वि०) गोल, गोलाकार, मटर, अन्न विशेष।
वर्त्म (सं० पु०) पथ, राह, रास्ता, मार्ग।
वर्द्धन (सं० पु०) वृद्धि, बढ़ना, उन्नति।
वर्द्धमान (वि०) उन्नतिशील, भाग्यवान्, श्रीमान्।
वर्द्धा (सं० पु०) बैल, वृषभ।
वर्द्धित (वि०) बढ़ा हुआ, उन्नत। [बावरी।
वर्बर (सं० पु०) बहुत बातूनी, मूर्ख, पीला चन्दन, हींग,
वर्म (सं० पु०) कवच, लोहे का वस्त्र।
वर्मा (सं० पु०) क्षत्रियों का ऊँचा उपनाम जैसे "राम कृष्ण वर्मा" इसी तरह ब्राह्मणों में शर्मा, वैश्यों में गुप्त, शूद्रों में दास, काठ में छेद करने का हथियार।
वर्ष (सं० पु०) वृष्टि, पृथ्वी का एक खण्ड, बारह मास का समय, साल। [जन्म-तिथि का उत्सव।
वर्षगाँठ (सं० स्त्री०) बरसौंड़ी, जन्मोत्सव, सालगिरह,
वर्षण (सं० पु०) पानी पड़ना, वृष्टि बरसना।
वर्षा (सं० स्त्री०) चौमासा, पानी बरसने का समय, बरसात, वृष्टि।
वर्षा ऋतु (सं० स्त्री०) वर्षाकाल, चौमासा, बरसात।
वर्षाकाल (सं० पु०) बरसात।
वर्षान्न (सं० पु०) एक वर्ष का भोजन, वर्ष भर के लिये अन्न, वर्ष भर की जीविका, साल भर की कमाई।
वर्ही (सं० पु०) मोर, मयूर, कुश।
वल (सं० पु०) सेना, फ़ौज, बल, ताक़त।
वलकल (सं० पु०) बल्कल, छाला। [भद्र।
वलदेव (सं० पु०) श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम, बल-
वलभी (सं० स्त्री०) बरण्डा, बराम्दा, गृहचूड़ा।
वलया (सं० स्त्री०) चूड़ी, कड़ा।
वलराम (सं० पु०) बल्भद्र, बलदेव। [औषधि विशेष।
वला (सं० स्त्री०) सेना, लक्ष्मी, धरणी, बरियारा,

वलाका (सं० पु०) बकुला, बगला।
वलाहक (सं० पु०) मेघ, घटा, बादल। [कुर्बानी।
वलि (सं० स्त्री०) पूजोपहार, पूजा की सामग्री, पशुवध,
वलिष्ठ (वि०) बलवान्, मोटा ताज़ा, हट्टा कट्टा, पहलवान्।
वल्कल (सं० पु०) छाल, छिलका, वकला।
वल्गु (वि०) सुन्दर, मनोहर।
वल्मीक (सं० पु०) दीमक, दिमका, बाँमी। [कारी।
वल्लभ (वि०) प्यारा, प्रिय, प्रियतम (वि०) पति, अधि-
वल्लभा (सं० स्त्री०) प्रिया, प्रियतमा।
वल्लव (सं० पु०) अहीर, गोप, ग्वाला।
वल्ली (सं० स्त्री०) लता, बेल। [चाह।
वश (सं० पु०) अधीन, काबू, अधिकार, पराक्रम, इच्छा,
वशिष्ठ (सं० पु०) एक ऋषि जो ब्राह्मण के पुत्र और सूर्यवंशियों के गुरु थे, वे सात प्रजापतियों में एक प्रजापति भी थे। [अपने वश में रखने वाला।
वशी (सं० पु०) जितेन्द्रिय, अपनी सारी इन्द्रियों को
वशीकरण (सं० पु०) अधीन करने की रीति, एक प्रकार का तन्त्र, एक प्रकार की सिद्धि।
वशीभूत (वि०) वश में रहने वाला, तावेदार, हिलामिला।
वश्य (वि०) जो वश में हो, ताबेदार, हिलामिला।
वषट (सं० पु०) इससे देवताओं को हवि दी जाती है।
वसती (सं० स्त्री०) वास, बासा, बस्ती, आबादी।
वसन (सं० पु०) वस्त्र, छादन, कपड़ा।
वसन्त (सं० पु०) एक प्रकार का नाम (सं० स्त्री०) ऋतुराज, एक ऋतु का नाम जो चैत वैशाख में होता है, शीतला। [लता।
वसन्तदूत (सं० पु०) कोयल, आम का पेड़, माधवी-
वसन्ती (सं० पु०) पीला, एक रंग जो पीला होता है।
वसह (सं० पु०) शिव जी का वाहन, शिव जी का बैल, नाँदिया।
वसा (सं० पु०) मज्जा, चर्बी।
वसीठ (सं० पु०) दूत, हरकारा।
वसीठी (सं० स्त्री०) दूतता, दूत का काम।
वसीले (सं० पु०) ज़रिये, द्वारा।
वसु (सं० पु०) एक प्रकार के देवता जो गिनती में आठ हैं। १ धर, २ ध्रुव, ३ सोम, ४ सावित्र, ५ अनिल, ६ अनल, ७ प्रत्यूषा, ८ प्रभास। आग, किरण, एक वृक्ष, धन, सोना, रत्न, जवाहिर, पानी (वि०) मीठा, सूखा।
वसुदेव (सं० पु०) श्रीकृष्ण के पिता, आनन्द-दुन्दुभि।
वसुधा (सं० स्त्री०) धरती, पृथ्वी, ज़मीन, भूमि।
वसुन्धरा (सं० स्त्री०) देखो "वसुधा"।
वस्तव्य (सं० पु०) वास योग्य, रहने के लायक़।
वस्तु (सं० स्त्री०) द्रव्य, पदार्थ, चीज़।
वस्तुतः (अव्य०) अक्षरशः, यथार्थ से, ठीक ठीक, सचमुच।
वस्तुपाठ (सं० पु०) पदार्थ के विषय में पाठ, चीज़ों का सबक़।
वस्त्र (सं० पु०) कपड़ा, पोशाक।
वह (सर्व०) अन्य पुरुष विशेष।
वहला (सं० पु०) धावा, चढ़ाई, आक्रमण, अभियान।
वहाँ (अव्य०) उस जगह, उधर।
वहित्र (सं० पु०) जहाज़।
वहु (वि०) भूत, प्रभूत, बहुत।
वह्नि (सं० स्त्री०) आग, अग्नि।
वाँ (अव्य०) वहाँ, उस जगह, उधर।
वा (अव्य०) अथवा, वा, विकल्प, अवधारण, सादृश्य, सर्व, उसकी, पक्षान्तर, वितर्क।
वाक् (सं० स्त्री०) वाणी, भाषा, सरस्वती। [होशियारी।
वाक्चातुरी (सं० स्त्री०) कहने की चतुरता, बोलने में
वाक्पति (सं० पु०) देवगुरु, बृहस्पति।
वाक्य (सं० पु०) बोल, वाक्, वचन, वाणी, पदों का इकट्ठा होना, जुमला।
वाक्यार्थ (सं० पु०) वाक्य का अर्थ। [बोलना।
वागाडम्बर (सं० पु०) बक्की, बकवादी, बहुत बातें
वागीश (सं० पु०) ब्रह्मा, बृहस्पति, कवि (वि०) अच्छा बोलने वाला।
वाग्देवता (सं० स्त्री०) शारदा, सरस्वती, बृहस्पति।
वाग्युद्ध (सं० पु०) गाली देना, वाक्य-कलह, शास्त्रार्थ।
वाच (सं० पु०) शब्द, बचन, भाषा।
वाचक (सं० पु०) सार्थक शब्द बोलने वाला।
वाचनिक (वि०) वचन सम्बन्धी।
वाचस्पति (सं० पु०) बृहस्पति, देवताओं के गुरु।
वाचा (सं० स्त्री०) बोली, वचन, वाणी, वाक्य, सरस्वती।
वाचाट (वि०) बुरी बात कहने वाला, बदज़बान, कुत्सितभाषी।

वाचाल (सं० पु०) बातूनी, बहुत बोलने वाला, गप्पी,
वाच्य (सं० पु०) बोलने योग्य, जो कहा जाय, वाक्य, अर्थ।
वाज (सं० पु०) पक्षी विशेष।
वाजपेयी (सं० पु०) ब्राह्मणों की एक जाति।
वाजिमेध (सं० पु०) एक प्रकार के यज्ञ का नाम।
वाजिराज (सं० पु०) उत्तम घोड़ा, अच्छा घोड़ा।
वाजी (सं० पु०) घोड़ा, अश्व, घोटक, तीर, वेगयुक्त।
वाञ्छा (सं० स्त्री०) इच्छा, चाह, अभिलाषा, ख्वाहिश।
वाञ्छित (वि०) इच्छित।
वाट (सं० स्त्री०) रास्ता, मार्ग, पन्थ, जीविका-स्थान।
वाटिका (सं० स्त्री०) फुलवाड़ी, फूलों का छोटा बाग़, बैठक।
वाड़ (सं० पु०) स्थान, सान।
वाड़ी (सं० स्त्री०) बग़ीचा, उद्यान, आँगन। [नाम।
वाण (सं० पु०) शर, तीर, बान, स्वर्ग, एक दैत्य का
वाणप्रस्थ (सं० पु०) तीसरा आश्रम जिसमें स्त्री के साथ वन में रह कर तप करते हैं।
वाणासुर (सं० पु०) एक दैत्य का नाम जो राजा बलि का पुत्र था।
वाणिज्य (सं० पु०) तिजारत, व्यापार, सौदागरी।
वाणी (सं० स्त्री०) बोली, भाषा, शब्द, सरस्वती।
वात (सं० पु०) हवा, एक रोग का नाम।
वातय (सं० पु०) साँप, सर्प, हरिण, मृग, हिरन।
वातवैरी (सं० पु०) बादाम, एक फल का नाम।
वातायन (सं० पु०) झरोखा, खिड़की, झंझरी, रोशनदान।
वातायी (सं० पु०) एक दैत्य का नाम जिसको अगस्त्य जी खा गये।
वातूनी (वि०) वाचाल।
वातूल (वि०) उन्मत्त, वायुग्रस्त।
वात्सल्य (सं० पु०) प्रेम, दया, करुणा।
वाद (सं० पु०) शास्त्रार्थ, बहस, चर्चा, बातचीत, विवाद, झगड़ा, दावा, पुकार, मुक़द्दमा।
वादरायण (सं० पु०) बदरिकाश्रम वासी, व्यास मुनि।
वादानुवाद (सं० पु०) कलह, उत्तर, प्रत्युत्तर।
वादी (सं० पु०) बोलने वाला, वाद करने वाला, शास्त्रार्थ करने वाला, मुद्दई, दावा करने वाला, झगड़ालू।
वाद्य (सं० पु०) बाजा।
वाद्यकार (सं० पु०) बजाने वाला, जो बाजा बजाने में प्रवीण हो।
वान् (अव्य०) जिसके आगे यह प्रत्यय होता है उसका अर्थ रखने वाला या करने वाला होता है, जैसे—दयावान्।
वानप्रस्थ (सं० पु०) तीसरा आश्रम।
वानर (सं० पु०) कपि, बन्दर।
वानरमुख (सं० पु०) नारियल, वानर का मुँह।
वापिका (सं० स्त्री०) बावली, एक प्रकार का कुआँ जिसमें सीढ़ियों के सहारे पानी के पास पहुँचते हैं।
वापी (सं० स्त्री०) बावली, तड़ाग।
वाम (सं० पु०) महादेव, वामदेव, धन, टेढ़ा, प्रतिकूल, बायाँ, विरोधी।
वामदेव (सं० पु०) एक मुनि का नाम, शिवजी।
वामन (सं० पु०) विष्णु का पाँचवाँ अवतार, वह पुरुष जो नाप में बावन अंगुल ऊँचा हो।
वामा (सं० स्त्री०) नारी, स्त्री, पांडुर, बायाँ।
वामाङ्गी (सं० स्त्री०) पत्नी, दुलहिन।
वायन (सं० पु०) बायन, बैना, सौग़ात, न्योता।
वायव्य (सं० पु०) वायुकोण, पश्चिम उत्तर के बीच का कोना।
वायस (सं० पु०) काग, कौआ, पक्षी विशेष।
वायु (सं० पु०) हवा, पवन।
वायुपुत्र (सं० पु०) हनुमान, महावीर, पवनसुत।
वार (सं० पु०) द्वार, अवसर, शिव, क्षण, दिन, ठोकर, घाव, चोट, यज्ञ-पात्र, समय, धीरता।
वारक (सं० पु०) बाधक, निषेधक। [कवच।
वारण (सं० पु०) रोक, निषेध, अटकाव, हाथी, बक्तर,
वार देना (क्रि० अ०) न्योछावर देना, उतार देना।
वारन (सं० पु०) अर्पण, भेंट, बलि, हाथी।
वारना (क्रि० अ०) घेर लेना, अर्पण करना, भेंट चढ़ाना, उतारना, न्योछावर करना। [हद, सीमा।
वारपार (क्रि० वि०) इस पार और उस पार (सं० पु०)
वारा (सं० पु०) बचाव, न्योछावर (वि०) सस्ता, लाभ।
वाराङ्गना (सं० स्त्री०) स्वर्गीया स्त्री।
वाराणसी (सं० स्त्री०) काशी, बनारस।
वाराह (सं० पु०) शूकर, सुअर।
वारि (सं० पु०) जल, पानी।

वारिचर (सं० पु०) ग्राह, मछली आदि जन्तु ।
वारिज (सं० पु०) कमल, कँवल, पंकज, शंख, नोन ।
वारिद (सं० पु०) बादल, मेघ (वि०) पानी देने वाला ।
वारिदनाद (सं० पु०) मेघनाद, इन्द्र का बेटा ।
वारिधि (सं० पु०) समुद्र, सागर ।
वारिवाह (सं० पु०) मेघ, बादल ।
वारी (सं० स्त्री०) घेर, मकान, गृह ।
वारीश (सं० पु०) समुद्र, सागर, सिंधु ।
वारुणी (सं० स्त्री०) पश्चिम दिशा, गंगा जी का एक पर्व, वरुण की स्त्री, हाथी की चाल ।
वारे (क्रि० अ०) त्यागे, छोड़े ।
वार्ता (सं० पु०) बात, वृत्तान्त, समाचार, गप्प ।
वार्तालाप (सं० पु०) बातचीत, आपस में बात करना ।
वार्ताहारी (सं० पु०) दूत, चर ।
वार्तिक (सं० पु०) मूल ग्रंथ का पूरक वाक्य । छन्द से हीन, गद्य (वि०) बातूनी ।
वार्द्धक्य (सं० पु०) बुढ़ापा, बुढ़ौती ।
वार्षिक (वि०) सालाना, वर्ष का, बरसौंढ़ी ।
वाल (सं०पु०) लड़का, बच्चा ।
वालक (सं० पु०) लड़का, पुत्र । [हज़ार मुनि ।
वालखिल्य (सं० पु०) अंगुष्ट प्रमाण शरीर वाले साठ
वाला (सं० स्त्री०) नारी, युवती, स्त्री ।
वालिका (सं० स्त्री०) लड़की, कन्या ।
वाल्मीकि (सं० पु०) एक ऋषि का नाम जिसने वाल्मीकीय रामायण बनाई । [वक्ता ।
वावदूक (सं० पु०) अत्यन्त बोलने वाला, विख्यात
वाष्प (सं० स्त्री०) भाप, धुआँ, उष्णता, गरमी ।
वास (सं० पु०) स्थान, महक, गंध ।
वासन (सं० पु०) सुगन्धित बनाना, पात्र, बरतन, वस्त्र ।
वासना (सं० स्त्री०) इच्छा, प्रत्याशा, निवास, स्थान, महक ।
वासन्ती (सं० स्त्री०) लता विशेष, माधवी लता ।
वासर (सं० पु०) दिन ।
वासव (सं० पु०) इन्द्र, देवताओं का राजा ।
वासित (वि०) सुगन्धित ।
वासी (सं० पु०) रहने वाला, बसने वाला, निवासी ।
वासुकि (सं० पु०) एक प्रधान साँप का नाम ।
वासुदेव (सं० पु०) श्रीकृष्ण, वसुदेव का बेटा ।
वास्तव (सं० पु०) ठीक ठीक, यथार्थ, सचमुच ।
वास्तूक (सं० पु०) बथुई का साग ।
वास्तूकाकार (सं० पु०) पालकी का साग ।
वास्प (सं० पु०) वाष्प, भाफ़ ।
वाह (सं० पु०) घोड़ा, अश्व, हय, बाजी, सवारी ।
वाहिनी (सं० स्त्री०) सेना जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े, ४०५ पैदल हों, दल, कटक, नदी, फ़ौज ।
वाहु (सं० पु०) भुजा, कर, बाजू ।
वाहुमुख (सं० पु०) हाथ, हथेली, पसर ।
वाह्य (वि०) बाहर का, बाहरी । [होना, झाड़े जाना ।
वाह्यभूमि जाना (क्रि० अ०) हगने जाना, फ़राग़त
वि (अव्य०) विशेष, वियोग, निश्चय, असहन, निग्रह, ईषत, थोड़ा, शुद्ध, अवलम्बन, अभ्यास, आलस्य, ज्ञान, हेतु, पालन ।
विकङ्कृत (सं० पु०) कटाई ।
विकट (वि०) भयंकर, डरावना ।
विकराल (वि०) डरावना, भयावना, भय देने वाला, जिसके देखने से भय मालूम हो ।
विकल (वि०) विह्वल, व्याकुल, घबराया हुआ ।
विकल्प (सं० पु०) शक, भ्रान्ति, होना न होना, आगा पीछा ।
विकसन (सं० पु०) खिलना, फूलना, प्रकाश होना ।
विकसित (वि०) प्रफुल्ल, फूला हुआ, खिला हुआ ।
विकार (सं० पु०) स्वभाव का बदलना, अन्य रूप धारण करना, बीमारी ।
विकास (सं० पु०) प्रकाश, खिलना, फैलना ।
विकीरण (सं० पु०) फेंकना, फैलाना, ज्ञान विखरना ।
विकृत (वि०) विरूप, मलीन ।
विकृति (सं० स्त्री०) रूपान्तर, अवस्था-परिवर्तन ।
विक्रम (सं० पु०) पराक्रम, बल, ज़ोर, शक्ति, शूरता, वीरता, विष्णु, उज्जैन का राजा ।
विक्रमादित्य (सं० पु०) उज्जैन का एक राजा जिसने संवत् चलाया । [(सं० पु०) सिंह ।
विक्रमी (वि०) बलवान्, शूरवीर, पराक्रमी, बहादुर,
विक्रय (सं० पु०) बेचना, नीलाम करना ।
विक्रेता (सं० पु०) बेचने वाला ।

विक्षिप्त (वि०) पागल, मतिभ्रम, जिसकी मति ठीक न हो।

विक्षेप (सं० पु०) घबराहट, फेंकना, दूर करना, छोड़ना, त्यागना, अन्तर, व्याकुलता, चूक, विघ्न।

विख्यात (सं० पु०) बहुत प्रसिद्ध, नामवर, यशी, यशस्वी, कीर्तिवान्। [बिना, हीन।

विगत (सं० पु०) जो चला गया, जुदा हुआ, रहित,

विगतश्रम (वि०) थकावटरहित।

विगति (सं० स्त्री०) बिगाड़, बुराई, विरोध।

विगन्ध (सं० स्त्री०) कुवास, बदबू, सुगन्ध का उलटा।

विगर्हण (सं० पु०) तिरस्कार, निन्दा करना।

विगुण (वि०) गुणहीन, बिना गुण का।

विगोये (वि०) छिपे हुए, लुके हुए, गुप्त।

विग्रह (सं० पु०) शरीर, देह, युद्ध, शत्रुता, वैर, फैलाव, भाग, आकार, अलग अलग।

विघटन (सं० पु०) बचना, तोड़ना, बिगाड़ना, मिलाना, बन्द करना।

विघात (सं० पु०) नाश करना, नष्ट भ्रष्ट करना।

विघातक (सं० पु०) घातक, नाशक।

विघ्न (सं० पु०) रोक, रुकाव, अटकाव, बिगाड़, बाधा।

विघ्नराज (सं० पु०) श्री गणेशजी।

विचक्षण (वि०) चतुर, प्रवीण, पण्डित, बुद्धिमान्, सयाना।

विचरण (सं० पु०) भ्रमण, इधर उधर घूमना।

विचल (वि०) चलायमान, चंचल, अस्थिर।

विचलना (क्रि० अ०) तितर बितर होना, अधीर होना, मचलाना, रूठना, हिम्मत हारना।

विचार (सं० पु०) तत्त्व-निर्णय, मन का भाव, अभिप्राय, ध्यान, शोच, बूझ, अटकल, ज्ञान।

विचारक (सं० पु०) विचार करने वाला, तत्त्व निर्णय करने वाला।

विचारित (वि०) निर्णीत।

विचित्र (वि०) अद्भुत, रंग, विरंग।

विचित्रवीर्य (सं० पु०) एक राजा विशेष।

विच्छेद (सं० पु०) वियोग, निवारण, अन्तर, जुदाई।

विजन (वि०) निर्जन, जन-शून्य।

विजय (सं० स्त्री०) जीत, फ़तह, जय, विष्णु का एक पार्षद जो हिरण्यकशिपु हुआ था।

विजया (सं० स्त्री०) भंग, बूटी, दुर्गा, देवी। [सुदी १०।

विजयादशमी (सं० स्त्री०) आश्विन शुक्ल दशमी, क्वार

विजान (वि०) अजान, अज्ञान, अबूझ, मूर्ख।

विजाति (सं० स्त्री०) दूसरी जाति, दूसरी भाँति, अन्य जाति। [बुद्धिमान, विद्वान।

विज्ञ (सं० पु०) प्रवीण, चतुर, पण्डित, ज्ञानवान्,

विज्ञता (सं० स्त्री०) पंडिताई, चतुराई, जानकारी, प्रवीणता।

विज्ञान (सं० पु०) पूर्णज्ञान, शास्त्रज्ञान, शिल्पविद्या, पदार्थ-विज्ञान, रसायन शास्त्र, आश्चर्य रस।

विज्ञानी (वि०) परम ज्ञानी, ज्ञानवान्, अति चतुर, महापंडित।

विज्ञापन (सं० पु०) विशेष कर के जना देना, अच्छी तरह समझा देना, सूचित करना, बिनती, इश्तिहार, नोटिस, इत्तिला। [पत्र।

विज्ञापन पत्र (सं० पु०) सूचना-पत्र, प्रार्थना-पत्र, निवेदन-

विट् (सं० पु०) विष्ठा, मल, बीट, गुह, झाड़ा।

विटप (सं० पु०) वृक्ष, पेड़, नई डाली, नये पत्ते।

विडम्बना (सं० स्त्री०) दुःखदायक, अपनी बड़ाई का वचन, निन्दायुक्त वचन, अपमान करना।

विडम्बित (सं० पु०) अपमानित, निन्दित, तिरस्कृत, दुःखित, पतित।

विडाल (सं० पु०) बिलाव, बिलार, बिल्ली।

वितण्डा (सं० स्त्री०) मिथ्यावाद, वाक्, प्रपञ्च, पक्षपात करना। [उद्धार, ख़र्च करना।

वितरण (सं० पु०) दान, त्याग, बाँटना, ख़ैरात, निर्वाह,

वितर्क (सं० पु०) तर्क, विचार, अनुमान।

वितल (सं० पु०) एक पाताल का नाम जो दूसरा है।

वितस्ति (सं० स्त्री०) बीता, बिलांद, बित्ता।

वितान (सं० पु०) चँदवा, मंडप, यज्ञ, फैलाव।

वितृष्ण (सं० स्त्री०) निराश, वैराग्य, अरुचि।

वित्त (सं० पु०) धन, दौलत, द्रव्य, ख़ज़ाना (वि०) ख्यात, ज्ञात, विचारित, लब्ध, गति, बल।

विथकना (क्रि० अ०) अधूरा पड़ा रहना, वन्ध्या होना।

विदग्ध (सं० स्त्री०) पुंश्चली स्त्री, चतुर स्त्री।

विदर्भ (सं० पु०) बंगाल के दक्षिण पश्चिम एक ज़िला का नाम, एक शहर का नाम जिसको आज कल "बरार" कहते हैं।

विदा (सं० स्त्री०) जुदाई, रुख़सत, अलग होना।
विदाई (सं० स्त्री०) जाने की भेंट, रुख़सती नज़र, जाने के समय द्रव्य आदि का देना।
विदारना (क्रि० स०) चीरना, फाड़ना, दो टुकड़े करना।
विदित (सं० पु०) जाना हुआ, समझा हुआ, प्रगट, प्रसिद्ध।
विदिश्म (सं० स्त्री०) नारी विशेष, उपदिशा।
विदीर्ण (सं० पु०) फाड़ा हुआ, चीरा हुआ। [का भाई।
विदुर (सं० पु०) दासी पुत्र, एक विष्णु भक्त, धृतराष्ट्र
विदुला (सं० स्त्री०) सौवीर राजमहिषी, ये बीर महिला और वीर्यवती स्त्री थीं।
विदुषी (सं० स्त्री०) पंडिता, पढ़ी लिखी स्त्री।
विदूषक (सं० पु०) मसखरा, राजाओं के विलास का मुसाहब, भाँड़।
विदेश (सं० पु०) आन देश, परदेश, विलायत (वि०) विदेशी, विलायती, परदेशी।
विदेशी (वि०) परदेशी, प्रवासी।
विदेह (सं० पु०) राजा जनक, कामदेव।
विदेहजा (सं० स्त्री०) सीता जी, जानकी, जनकपुत्री, वैदेही, राम की स्त्री।
विद्यमान (वि०) वर्तमान, हाज़िर, मौजूद, उपस्थित।
विद्या (सं० स्त्री०) ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, शास्त्र का ज्ञान, दुर्गा, एक वृक्ष का नाम, १४ विद्या हैं—ब्रह्मज्ञान, रसायन, श्रुति कथा, वैद्यक, ज्योतिष, व्याकरण, धनुर्विद्या, जल में तैरना, संगीत, नाटक, अश्वारोहण, कोकशास्त्र, चोरी, चतुरता।
विद्याधर (सं० पु०) एक प्रकार के देवता, गुणी, पण्डित, कारीगर।
विद्यार्थी (सं०पु०) विद्या पढ़ने वाला छात्र, शिष्य।
विद्यालय (सं० पु०) पाठशाला, स्कूल, कालेज, मदरसा।
विद्यावान् (वि०) पण्डित, ज्ञानवान्, विद्वान।
विद्युत् (सं० स्त्री०) बिजली, दामिनी, तड़ित।
विद्रुम (सं० पु०) मूँगा, प्रवाल, रत्न विशेष।
विद्रोह (सं० पु०) वैर, दुश्मनी, उपद्रव, बलवा।
विद्रोही (सं० पु०) वैरी, दुश्मन, शत्रु।
विद्वान् (सं० पु०) पण्डित, विद्यावान्, ज्ञानी।
विद्वेष (सं० पु०) वैर, विरोध, अदावत, शत्रुता।
विध (सं० स्त्री०) प्रकार, रीति, ढब, भाँति, रूप, चाल।
विधवा (सं० स्त्री०) रांड, बेवा, पुरुष विहीन।
विधाता (सं० पु०) ब्रह्मा, सृष्टि बनाने वाला, ईश्वर, भाग्य, क़िस्मत। [क़ानून, नियम।
विधान (सं० पु०) शास्त्रोक्त व्यवहार, विधि, आचार,
विधायक (वि०) निर्णय करने वाला, विधान करने वाला।
विधि (सं० पु०) ब्रह्मा, ईश्वर, सृष्टि करने वाला, भाग, क़िस्मत (सं० स्त्री०) रीति, शास्त्र में लिखा हुआ व्यवहार, क्रम। [विधिपूर्वक।
विधिवत् (अव्य०) यथायोग्य, विहित, रीति से युक्त,
विधु (सं० पु०) चन्द्रमा, चाँद, कपूर, विष्णु, एक राक्षस, ब्रह्मा।
विधुन्तुद (सं० पु०) राहु, ग्रह विशेष।
विधुर (सं० पु०) विकल, स्त्रीहीन पुरुष।
विधुवदनी (सं० स्त्री०) चन्द्रवदनी, अति सुन्दरी, जिसका मुँह चन्द्रमा के समान हो।
विधूत (वि०) कँपाया हुआ, हिलाया गया।
विधेय (सं० पु०) करने योग्य (वि०) सधाऊ, शिष्ट, होनहार, समाचार, एक प्रकार का विशेषण
विध्वंस (सं० पु०) नाश, विनाश, विघात, तिरस्कार।
विध्वंस्त (वि०) नष्ट, विनष्ट।
विन (सं० पु०) उन, "विनसों कह्यो"=उन से कहा।
विनत (वि०) नम्र, झुका हुआ।
विनता (सं० स्त्री०) कश्यप की स्त्री, गरुड़ की माता।
विनति } (सं० स्त्री०) नम्रता, निवेदन, विनय।
विनती }
विनय (सं० पु०) शिष्टाचार, नम्रता, आदर, स्तुति, निवेदन, ख़ुशामद।
विनयी (वि०) विनयशील, शिष्टाचारी, नम्र, नीतिज्ञ।
विनष्ट (वि०) विनाश, नाश, बिगड़ा।
विनश्वर (वि०) नाश होने वाला, भंगुर।
विना (अव्य०) छोड़ा हुआ, त्याग, विहीन।
विनायक (सं० पु०) गणेश, गरुड़, बुध।
विनाश (सं० पु०) ध्वंस, नाश, लोप, मिट जाना।
विनासित (वि०) नष्ट किया हुआ, नाश किया हुआ।
विनिपात (सं० पु०) पतन, विपद, अधःपात, विषाद।
विनिमय (सं० पु०) लेन देन, अदल बदल, परिवर्तन।
विनियोग (सं० पु०) स्थिर करना, बैठाना, मुक़र्रर करना।

विनीत (वि०) नम्र, विनयी, सुशील ।
विनीता(सं०स्त्री०) उत्तमा ।
विनीतात्मा (वि०) नम्र, सुशील ।
विनेता (सं० पु०) शासक, शिक्षक, राजा ।
विनोद (सं० पु०) खेल, हँसी, ठट्ठा, कौतुक, क्रीड़ा, खुशी, हर्ष, आनन्द ।
विन्दक (वि०) लाभयुक्त, सलाभ ।
विन्दु (सं० पु०) बिन्दी, बूँद, शून्य, अनुस्वार, पानी का कण (वि०) दाता, ज्ञाता, जानने योग्य, एक राक्षस का नाम, मणि, वीर्य ।
विन्ध्य (सं० पु०) विन्ध्याचल, विन्ध्य नामक पर्वत ।
विन्ध्यगिरि (सं० पु०) विन्ध्याचल पर्वत ।
विन्ध्यवासिनी (सं० स्त्री०) दुर्गा, देवी, भगवती, योग माया ।
विन्ध्याचल (सं०पु०) एक पर्वत जो भरतखण्ड के [मध्य में है ।
विन्न (वि०) प्राप्त, ज्ञात ।
विन्यस्त (वि०) यथाक्रम रक्खा हुआ ।
विन्यास (सं० पु०) समूह, संग्रह, संग्रह का स्थान ।
विपक्ष (सं० पु०) वैरी, शत्रु ।
विपत्ति (सं० स्त्री०) आपदा, दुःख, तकलीफ़, आफ़त ।
विपथ (सं० पु०) दूर पन्थ, कुमार्ग ।
विपद (सं० पु०) दुःख, आपद ।
विपद्ग्रस्त (वि०) अभागी, दुर्गति, दुर्दशा ।
विपरीत (वि०) उलटा, विरोधी, बुराई, अपकार ।
विपर्यय (सं० पु०) व्यतिक्रम, उलटा पुलटा, विपरीत ।
विपर्यस्त (सं० पु०) व्यतिक्रान्त, विपरीत, लौट पौट करने वाला ।
विपर्यास (सं०पु०) विलोम, विपरीत, उलट पुलट ।
विपल (सं० पु०) क्षण, लहमा, बहुत छोटा समय, समय विशेष । [निपुण ।
विपश्चित् (सं० पु०) बुद्धिमान्, पंडित, विद्वान्, ज्ञाता,
विपाक (सं० पु०) कर्मभोग, फल, नतीजा ।
विपाशा (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम, पंजाब की ब्यास नदी ।
विपिन (सं० पु०) वन, अरण्य ।
विपुल (वि०) बड़ा, बहुत, अधिक, फैला हुआ, गंभीर ।
विप्र (सं० पु०) ब्राह्मण, एक वर्ग विशेष, द्विज, वेदज्ञ, ब्राह्मण ।

विप्रचरण (सं० पु०) ब्राह्मण का पैर, भृगु का पैर जो भगवान की छाती में है ।
विप्रलब्धा (सं० स्त्री०) जो स्त्री प्रिय से मिलने के लिये संकेत-स्थल में जाय और वहाँ प्रिय के न मिलने पर दुःखी हो, नायिका विशेष ।
विप्रलाप (सं० पु०) अनर्थक वाक्य, मृतक गुण-कथन, विलाप, समय की वार्ता ।
विप्लव (सं० पु०) उपद्रव, उत्पात, देशोपद्रव, राष्ट्रोपद्रव ।
विफल(वि०) निष्फल, वृथा, बेफ़ायदा ।
विबुध (सं० पु०) देवता, पण्डित, चन्द्रमा ।
विबुधनदी (सं० स्त्री०) देवताओं की नदी, श्री गंगाजी ।
विभक्त (सं० पु०) बाँटा हुआ, अलग अलग, पृथक् पृथक् ।
विभक्ति (सं० स्त्री०) अंश, टुकड़ा, हिस्सा, व्याकरण में कारकों के चिह्न, जैसे—ने, से, का आदि ।
विभञ्जक (सं० पु०) भंजन करने वाला, नाशने वाला ।
विभव (सं० पु०) संपदा, धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, प्रताप, राज्य, एक संवत् का नाम ।
विभाकर (सं० पु०) सूर्य, सूरज, दिनकर, रवि ।
विभाग (सं० पु०) भाग, टुकड़ा, बाँट, हिस्सा, अंश ।
विभाजक (सं० पु०) अंशकारी, हिस्सेदार, हक़दार, बाँटने वाला ।
विभाजित (वि०) बाँटा हुआ, भाग किया हुआ ।
विभाज्यता (सं० स्त्री०) पदार्थों का एक गुण जिसके रहने से वे किसी प्रकार का बल लगाने से टुकड़े २ किये जा सकते हैं ।
विभावना (सं० स्त्री०) काव्य का एक अलंकार, प्रसिद्ध कारण के अभाव से कार्य की उत्पत्तियुक्त लक्षण ।
विभावसु (सं० पु०) सूर्य, अग्नि, चन्द्र, मदार का पेड़, हारभेद ।
विभिन्न (सं० पु०) अलग, जुदा, फ़र्क़ ।
विभीतक (सं० पु०) बहेड़ा, एक औषधि का नाम
विभीषण (सं० पु०) रावण का छोटा भाई (वि०) डराने वाला, भयानक ।
विभीषिका (सं० स्त्री०) भय-प्रदर्शन, भय दिखलाना ।
विभु (वि०) समर्थ, प्रभु, सर्वव्यापी (सं०पु०) मालिक, ब्रह्मा, विष्णु, शिव ।
विभूति (सं० स्त्री०) यज्ञ का भस्म, राख, सम्पदा, ऐश्वर्य, धन दौलत आदि सुख, अष्ट सिद्धि ।

विभूषण (सं० पु०) गहना, अलंकार, जेवर, शोभा, आभूषण। [फबता हुआ।
विभूषित (सं० पु०) सँवारा हुआ, शोभित, शोभायमान्,
विभेद (सं० पु०) अन्तर, फूट, फ़र्क़, भेद। [वाला।
विभेदक (सं० पु०) विक्षेपक, तोड़ने वाला, अलग करने
विभ्रम (सं० पु०) दूसरे अंग में धारण करना, भ्रान्ति, भ्रमण, शोभा, चूक, भूल, धोखा, सन्देह।
विमत (सं० पु०) विरुद्ध मत।
विमर्श (सं० पु०) विचार, परामर्श, सन्दिग्धावस्था, अनिश्चयात्मक दशा।
विमर्ष (सं० पु०) मौनी, विचारी, क्रोधी, जो कि मौन धारण करे।
विमल (वि०) निर्मल, स्वच्छ।
विमात (सं० स्त्री०) विशेष बुद्धि (सं० पु०) एक भाट का नाम जो राजा जनक का दसौंधी था।
विमाता (सं० स्त्री०) सौतेली माँ, दूसरी माता।
विमान (सं० पु०) देवताओं का रथ, स्वर्ग का सिंहासन।
विमुक्त (सं० पु०) रहित, छूटा हुआ, माधवी।
विमुक्ति (वि०) मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा।
विमुख (वि०) विरोधी, उलटा, फिरा हुआ, प्रतिकूल।
विमुग्ध (वि०) अज्ञान, मूढ़, मूर्ख।
विमूढ़ (वि०) बहुत अज्ञानी, बड़ा बेवकूफ़।
विमोचन (सं० पु०) छोड़ना, मुक्त करना, दूर करने वाला, छोड़ने वाला।
विम्ब (सं० पु०) मूरत, छवि, तस्वीर, छाया, प्रतिविम्ब, सूर्य और चन्द्रमा का मण्डल, विम्बाफल।
विम्बिसार (सं० पु०) मगध देश का एक प्राचीन राजा।
विम्बुक (वि०) लाल भभूका।
वियो (वि०) दूसरा।
वियोग (सं० पु०) विरह, जुदाई, जुदा होना, बिछुड़ना।
वियोगिनी (सं० स्त्री०) बिछुड़ी हुई, प्रियविहीन स्त्री, एक छन्द का नाम। [हुआ।
वियोगी (सं० पु०) विरही, जुदा रहने वाला, बिछुड़ा
विरक्त (सं० पु०) वैरागी, उदासी, संसार-वासना-शून्य, सांसारिक विषयों पर इच्छा न रखने वाला। [करना।
विरचना (क्रि० अ०) बनाना, रचना, उपजाना, उत्पन्न
विरचित (सं० पु०) बनाया हुआ, रचा हुआ।
विरज (वि०) रजोगुण के प्रभाव से रहित।
विरजा (सं० स्त्री०) एक पौधे का नाम, एक घास का नाम, दूब, एक नदी का नाम जो गोलोक में है। एक सखी का नाम जो राधिका को प्यारी थी और कृष्ण जी भी उस पर प्रसन्न रहते थे।
विरञ्चि (सं० पु०) सृष्टि बनाने वाला, ब्रह्मा। [है।
विरत (वि०) निवृत, संगहीन, जिसने संसार छोड़ दिया
विरति (सं० स्त्री०) वैराग्य, त्याग, संसार के विषय वासनाओं को जिसने त्याग दिया है।
विरथ (वि०) रथहीन, पैदल, पैर।
विरद (सं० पु०) यश, प्रतिष्ठा, नामवरी, इज़्ज़त, हथियार, अस्त्र शस्त्र। [स्तुति युक्त।
विरदैत (वि०) वीर, सूरमा, प्रतिष्ठित, बाना वाला,
विरल (वि०) कम, सूक्ष्म, थोड़ा, ढीला, प्रसिद्ध, अलग अलग।
विरला (वि०) कोई, अनूठा, अनुपम, सूक्ष्म, ढील।
विरस (वि०) रसहीन, रस से रहित।
विरह (सं० पु०) वियोग, विछोह, जुदाई।
विरहित (वि०) बिछुड़ा हुआ, वियोगी।
विरहिनी (सं० स्त्री०) वियोगिनी, पति-विहीन, जिसका पति अलग हो।
विरही (वि०) वियोगिनी, स्त्री से अलग रहने वाला।
विराग (सं० पु०) लोभ मोह का छोड़ना, वैराग्य, मन की इच्छा का त्याग, दुःख सुख हीन।
विरागी (वि०) उदासी मनुष्य, जिसने संसार की वासनाओं को त्याग दिया हो, मन की इच्छा रोकने वाला। [स्थूल रूप।
विराज (सं० पु०) क्षत्रिय, आदि पुरुष, विष्णु का
विराजना (क्रि० अ०) शोभित होना, अच्छा मालूम होना।
विराजमान (वि०) शोभित, सजीला।
विराट (सं० पु०) एक राजा का नाम, एक देश का नाम, विष्णु की बड़ी मूर्ति।
विराध (सं० पु०) एक राक्षस का नाम।
विराम (सं० पु०) ठहराव, अन्त, विश्राम, देर, पढ़ने में ठहरने के लिये एक प्रकार का चिह्न (वि०) अस्थिर, व्याकुल, बीमार।
विरुज (वि०) रोग रहित, निरोग।
विरुद्ध (वि०) विपरीत, उलटा।
विरुद्धता (सं० स्त्री०) विपरीतता, अहिताचरण।

विरूप (वि०) कुरूप, भोंड़ा, अनसुहावना, बदसूरत।
विरूपाक्ष (सं० पु०) श्री महादेव जी, शिव जी, एक राक्षस का नाम।
विरेक (सं० पु०) रोग विशेष, अतीसार।
विरेचक (सं० पु०) दस्तावर, दस्त लाने वाला।
विरेचन (सं० पु०) जुलाब, मलनिःसारक।
विरोचन (सं० पु०) प्रह्लाद का बेटा और बालि का बाप, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि। [अदावत।
विरोध (सं० पु०) वैर, शत्रुता, दुश्मनी, झगड़ा,
विरोधक (सं० पु०) वैरी, शत्रु।
विरोधी (वि०) झगड़ालू, वैरी, विरोध करने वाला।
विरोधोक्ति (सं० स्त्री०) विपरीत कहना, उलटा कहना, अनर्थ वाचन।
विल (सं० पु०) छेद, गढ़ा।
विलक्षण (वि०) अनुपम, उत्तम, अद्भुत, श्रेष्ठ।
विलग (वि०) भिन्न, पृथक्, अलग, बुरा।
विलगावना (क्रि०स०) अलग करना, निकाल देना।
विलज्ज (वि०) निर्लज्ज, बेहया।
विलपत (वि०) रोता हुआ, रोदन करता हुआ।
विलपना (क्रि० अ०) रोना, रोदन करना।
विलम्ब (सं० पु०) देर, अबेर, टालमटाल, अर्सा।
विलम्बना (क्रि० अ०) रहना, ठहरना, देर करना, विलम्ब करना।
विलय (सं० पु०) प्रलय, जगत् का नाश, नाश।
विलाप (सं० पु०) शोक का कथन, रोना, विलपना।
विलायत (सं० पु०) परदेश, अन्य देश, दूसरा देश।
विलास (सं० पु०) विहार, खेल, क्रीड़ा, आनन्द, ऐश।
विलासिनी (सं० स्त्री०) नारी, स्त्री, युवती।
विलासी (सं० पु०) भोगी, क्रीड़ा करने वाला, कृष्ण, कामदेव, महादेव, चन्द्र, सूर्य।
विलीन (सं० पु०) विरत, नष्ट, डूबा हुआ, लुप्त।
विलुप्त (वि०) नष्ट, मिटा हुआ।
विलेप (सं० पु०) उबटन, चन्दन, चुपड़ना।
विलोकन (सं० पु०) दृष्टि, दीठ, नज़र, ताक।
विलोकना (क्रि० स०) देखना, परखना, ताकना, दृष्टि डालना, निगाह डालना।
विलोकित (सं० पु०) देखा हुआ।
विलोचन (सं० पु०) आँख, नेत्र, लोचन, नयन।
विलोड़ना (क्रि० स०) मथना, महना, हिलोना।
विलोप (सं०पु०) नाश, लुप्त, अदर्शन।
विलोम (सं० पु०) उलटा, विपरीत, प्रतिलोम।
विलोवना (क्रि० स०) मथना, महना।
विल्व (सं० पु०) बेल का पेड़, श्रीफल का वृक्ष और फल। [हरा।
विवर (सं० पु०) छेद, छिद्र, सूराख़, बिल, घर, मुह-
विवरण (सं० पु०) टीका, विस्तार, व्याख्या, व्याख्यान, हिज्जे, बहस।
विवर्ण (वि०) अधम, कुजाति, नीच, रंगहीन, रूपहीन, विश्चेष्टा। [उन्नति होना
विवर्द्धन (सं० पु०) बढ़ती, तरक़्क़ी होना, किसी की
विवर्द्धित (सं० पु०) बढ़ाया हुआ, किसी के द्वारा उन्नति कराया हुआ, चढ़ाया हुआ।
विवश (वि०) वशहीन, पराधीन, वशीभूत, जो दूसरे के वश में हो, घबराहट।
विवसा (सं० स्त्री०) वाञ्छित, इष्ट, चाहा हुआ।
विवस्त्र (वि०) वस्त्रहीन, नंगा, जिसके वस्त्र न हो।
विवाद (सं० पु०) कलह, झगड़ा, टंटा, शास्त्रार्थ करना, उलटा कहना, विरोध।
विवादी (सं०पु०) मुद्दई, शास्त्रार्थी, झगड़ा करनेवाला।
विवाह (सं० पु०) एक धार्मिक कृत्य, ब्याह, शादी, गठबंधन, सुमंगली।
विवाहित (सं०पु०) ब्याहा, जिसकी शादी हो गई हो।
विवाहिता (सं० स्त्री०) ब्याही हुई, जिस स्त्री का विवाह हो गया हो।
विविक्त (वि०) एकान्त, निर्जन, छोड़ा हुआ, पवित्र।
विविध (वि०) नाना प्रकार, अनेक तरह से, बहुरूपी।
विबुध (सं० पु०) देवता, पण्डित।
विवेक (सं० पु०) विचार, ज्ञान, समझ।
विवेकी (वि०) ज्ञानी, ज्ञानवान्, विचारवान्, विचारी, विवेकवान्।
विवेचक (सं० पु०) सत्यासत्य का विचारने वाला, भले बुरे का ज्ञान रखने वाला। [का ज्ञान।
विवेचना (सं० स्त्री०) सत्यासत्य का विचार, भले बुरे
विवेचित (सं० पु०) विचारित, विचारा हुआ, विचार करने योग्य। [साफ़, उज्ज्वल।
विशद (वि०) धौला, सफ़ेद, श्वेत, निर्मल, स्वच्छ,

विशाखदत्त (सं० पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि ।
विशाखा (सं० स्त्री०) स्त्री, राधा की एक सखी का नाम, १६ वाँ नक्षत्र ।
विशार (सं० पु०) मछली ।
विशारद (वि०) चतुर, प्राज्ञ, ज्ञाता, पण्डित (सं० पु०) मौलसिरी का वृक्ष । [दुःखरहित ।
विशाल (वि०) बड़ा, बहुत, चौड़ा, फैला हुआ, सुन्दर,
विशिख (सं० पु०) बाण, तीर (वि०) बिना चोटी का ।
विशिष्ट (सं० पु०) साथ, संयुक्त, सहित, जुटा हुआ, उत्तम, बड़ा ।
विशुद्ध (वि०) बहुत पवित्र, निर्मल, विमल, उज्ज्वल ।
विशूचिका (सं० स्त्री०) छर्दई, हुलकी, हैज़ा, कालरा, एक रोग । [जाति ।
विशेष (वि०) मुख्य, खास, निज, बहुत अधिक, भेद,
विशेषण (सं० पु०) गुण, धर्म, स्वभाव, तारीफ़, जो एक को दूसरे से अलग करे, गुणवाचक, दूसरे का गुण प्रकट करनेवाला, भेदक, धर्म । [बात ।
विशेषता (सं० स्त्री०) अधिकाई, अधिकता, कोई खास
विशेषोक्ति (सं० स्त्री०) विशेष वाक्य, एक अर्थालङ्कार का नाम ।
विशेष्य (सं० पु०) नाम, संज्ञा, प्रधान, जिसके द्वारा किसी वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, जिसकी प्रशंसा दूसरे से की जाय । [सानंद ।
विशोक (वि०) जिसको किसी बात की चिन्ता न हो,
विश्रम्भ (सं० पु०) विश्वास, निश्चय, प्रयत्न ।
विश्रान्त (वि०) चैन सहित, सुस्थिर, जिसकी थकावट मिट गई है, जिसने विश्राम कर लिया है ।
विश्रान्तघाट (सं० पु०) यमुना नदी का एक घाट जहाँ श्रीकृष्ण और बलराम ने कंस को मार कर विश्राम लिया था, यह स्थान मथुरा में है ।
विश्राम (सं० पु०) सुख, चैन, कल, आराम, ठहराव ।
विश्रुत (वि०) विख्यात, प्रसिद्ध, मशहूर । [वियोगी ।
विश्लिष्ट (सं० पु०) अयुक्त, अलग रहने वाला, शिथिल,
विश्लेष (सं० पु०) वियोग, विरह, बिछोह ।
विश्व (सं० पु०) जगत्, संसार, जग, दुनिया एक प्रकार के देवता जिसको श्राद्ध में पिण्ड और बलि देते हैं ।
विश्वकर्मा (सं० पु०) ब्रह्मा का बेटा, सूर्य, देवताओं का राजा, बढ़ई, कारीगर ।
विश्वनाथ (सं० पु०) शिव, महादेव, जिनका मन्दिर बनारस में है ।
विश्वम्भर (सं० पु०) विष्णु, भगवान्, ईश्वर ।
विश्वम्भरा (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरा, धरती ।
विश्वरूप (सं० पु०) सर्वरूप, ईश्वर, विराट् स्वरूप ।
विश्वसित (सं० पु०) विश्वासपात्र, विश्वासनीय ।
विश्वस्त (सं० पु०) विश्वासकर्ता, विश्वास योग्य ।
विश्वामित्र (सं० पु०) गाधि राजा का बेटा जो राजर्षि से ब्रह्मर्षि हुए यह धनुर्विद्या के बड़े भारी विद्वान् थे ।
विश्वास (सं० पु०) प्रतीति, भरोसा, एतबार ।
विश्वासघात (सं० पु०) विश्वास का नष्ट करना, एतबार बिगाड़ना ।
विश्वासघातक (सं० पु०) कपटी, धोखेबाज़ ।
विश्वासघाती (सं० पु०) विश्वास नष्ट करने वाला, मित्रता में छल करने वाला ।
विश्वासपात्र (सं० पु०) भरोसा करने के योग्य, जिस के ऊपर विश्वास किया जाय ।
विश्वासी (सं० पु०) प्रतीति या भरोसा रखने वाला ।
विश्वेश (सं० पु०) विश्वेश्वर, महादेव, शिव ।
विष (सं० पु०) गरज, ज़हर, माहुर ।
विषण्ण (वि०) दुःखी, विषाद युक्त ।
विषधर (सं० पु०) साँप, भुजंग ।
विषम (वि०) असमान, अतुल्य, बराबर नहीं, कठिन, कठोर, दुःखदायी, भयंकर, अयुग्म गिनती, जैसे १--३--५, एक ज्वर का नाम । [होता है ।
विषमज्वर (सं० पु०) कठिन ज्वर, यह बड़ा दुःखदायी
विषमता (सं० स्त्री०) राग, द्वेष, कठिनता, सख़्ती ।
विषम त्रिभुज (सं०पु०) जिसकी भुजायें बराबर न हों ।
विषम बाण (सं० पु०) कामदेव, मदन, कन्दर्प ।
विषय (सं० पु०) चीज़, वस्तु, पदार्थ, जो वस्तु इन्द्रियों से जानी जाय, वास्ते, लिये ।
विषयक (वि०) संसारी, जगत का, सांसारिक, विषय का ।
विषयवासना (सं० स्त्री०) भोग विलास की इच्छा ।
विषयी (सं० पु०) संसारी, जो संसार की मोह माया में फँसा हो, भोगी ।
विषवैद्य (सं० पु०) जांगलिक, गारुड़ी, जो साँप के काटे का विष उतारता है
विषहर (सं० पु०) विषनाशक ।

विषहा (वि०) विष से भरा हुआ, विषयुक्त ।
विषाण (सं० पु०) सींग, हाथी का दाँत, सुअर का दाँत ।
विषाद (सं० पु०) उदासी, दुख,थकावट ।
विषादी (सं० पु०) दुखी, उदास, थका हुआ ।
विषी (वि०) ज़हरीला, विषैला । [नाम ।
विषुव (सं० पु०) जब दिन रात बराबर हों उस दिन का
विषुवत्वृत्त (सं० पु०) भूमध्य रेखा, वह बड़ा घेरा है जिससे पृथ्वी के दो समान भाग होते हैं, वह ठीक पृथ्वी के बीचोबीच खिचा है ।
विषुवद्रेखा (सं० स्त्री०) वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी को दो बराबर भागों में उत्तर दक्षिण बाँटती है, भूमध्य रेखा ।
विषे (अव्य०) में, बीच, मध्य ।
विषैला (वि०) ज़हरीला ।
विष्टर (सं० पु०) आसन, कुशासन, कुश की चटाई ।
विष्टि (सं० स्त्री०) कुयोग, बेगार ।
विष्ठा (सं० स्त्री०) बीट, गुह, मल, झाड़ा ।
विष्णु (सं० पु०) परमेश्वर, भगवान्, सृष्टि को पालने वाला, व्यापक, साधु, मनुष्य, सूर्य, अग्नि, वसु, श्री नारायण ।
विष्णुपद (सं० पु०) आकाश, एक प्रकार का गीत, एक छन्द का नाम,भगवान् , का चरण,चिह्न जो गया जी में है ।
विष्णुपदी (सं० स्त्री०) श्री गंगा जी ।
विस (सर्व०) वह, उस ।
विसर्ग (सं० पु०) स्वर के आगे रहने वाले दो विन्दु, जैसे कः, अः, इः, उः । दान, छोड़ना ।
विसर्जन (सं० पु०) विदा, त्याग, दान, प्रेरणा, छुट्टी, भेजना, पूरा, छोड़ना, प्रतिमा आदि को जल में मिला देना ।
विसर्जित (सं० पु०) रुख़सत किया हुआ, छोड़ा हुआ, भेजा हुआ, दिया हुआ, बरख़ास्त किया हुआ ।
विसारना (क्रि० स०) भूल जाना, याद न रखना ।
विसासिनि (सं० स्त्री०) डाकिनी, सौतिनी, सौत ।
विसूचिका (सं० स्त्री०) देखो "विशूचिका" ।
विसूरना (क्रि० अ०) चिन्ता करना, शोक करना, दुविधा में पड़ना । [पीड़ा, बिछौना ।
विस्तर (सं० पु०) प्रचुर, बहुत, समूह, विस्तार, आधार,
विस्तार (सं० पु०) फैलाव, चौड़ाई, स्तम्भ, आसार ।
विस्तारित (सं० पु०) फैलाया हुआ, बढ़ाया हुआ ।
विस्तीर्ण (सं० पु०) फैला हुआ, पसरा हुआ, विस्तृत ।
विस्तृत (वि०) विशाल, बड़ा, विस्तीर्ण ।
विस्फुलिंग (सं० पु०) चिनगारी, आग का छोटा टुकड़ा । [शीतला ।
विस्फोट (सं० पु०) फोड़ा, घाव, चेचक, माता,
विस्फोटक (सं० पु०) देखो "विस्फोट"।[सन्देह, शक ।
विस्मय (सं० पु०) आश्चर्य, अचरज, अचम्भा, शोक,
विस्मरण (सं० पु०) भूलना, विसरना ।
विस्मित (सं० पु०) अचंभित, आश्चर्य-युक्त ।
विस्मृत (वि०) भूला हुआ, हेराया हुआ ।
विस्मृति (सं० स्त्री०) भूल, विसराना, विस्मरण ।
विस्वाद (सं० पु०) स्वादहीन, स्वादरहित ।
विहंग (सं० पु०) पक्षी, चिड़िया, बादल, तीर, सूर्य, चन्द्र, ग्रह ।
विहरण (सं० पु०) विहार करना, खेल करना, घूमना, सैर करना, गमन करना ।
विहसना (क्रि० अ०) हँसना, खिलना ।
विहायस (सं० पु०) पक्षी, चिड़िया, आकाश ।
विहार (सं० पु०) क्रीड़ा, खेल, विलास, आनन्द से फिरना, बौद्धों के रहने की जगह, एक देश का नाम जो पश्चिमोत्तर से पूर्व और बंगाल से पश्चिम है इसकी राजधानी पटना है ।
विहारी (सं० पु०) श्री कृष्ण, एक कवि का नाम जिन्होंने सात सौ दोहे बनाये हैं उसका नाम बिहारी की सतसई है ये शृंगार रस के अच्छे कवि समझे जाते हैं (वि०) विहार करने वाला, क्रीड़ा करने वाला, चंचल, चपल । [हुआ ।
विहित (सं० पु०) ठीक, उचित, करने योग्य, ठहराया
विहीन (सं० पु०) बिना, जुदा, रहित, छोड़ा हुआ, अति क्षीण, नीचतर ।
विह्वल (सं० पु०) व्याकुल, घबराया हुआ, चंचल ।
वीक्षण (सं० पु०) देखना, दर्शन ।
वीक्षित (वि०) विलोकित, देखा हुआ ।
वीचि (सं० स्त्री०) लहर, तरंग, मौज ।
वीज (सं० पु०) व्यथा, दाना जो बोया जाता है, मूल, कारण, अंकुर, वीर्य, मन्त्र, बीजगणित, गणित का

एक भाग जिसमें अङ्कों की जगह अक्षर लिखकर हिसाब बनाते हैं ।
वीज गणित (सं० पु०) गणित का ग्रन्थ विशेष ।
वीजपूर (सं० पु०) बिजौरा नीबू ।
वीणा (सं० स्त्री०) तन्त्री, तम्बूरा, एक प्रकार का बाजा, इसके दोनों ओर तूँबा रहता है और डंडी पर बहुत सी खूँटियाँ रहती हैं इस पर बहुत से तार लगे रहते हैं ।
वीत (वि०) गत, व्यतीत ।
वीतराग (सं० पु०) विरागयुक्त, वरागी, संन्यासी ।
वीथि (सं० स्त्री०) गली, रास्ता, पंक्ति, श्रेणी ।
वीप्सा (सं० स्त्री०) बारबार, पुनः पुनः, द्विरुक्ति ।
वीय (वि०) दो, २ ।
वीर (वि०) शूर, बहादुर, शूरमा, काव्य का एक रस जो उत्साह का बढ़ाने वाला है । [मरण ।
वीर गति (सं० स्त्री०) युद्ध-क्षेत्र में प्राण-विसर्जन,
वीरता (सं० स्त्री०) वीरत्व, बहादुरी ।
वीरप्रसू (सं० स्त्री०) वीर माता ।
वीरभद्र (सं० पु०) महादेव का प्रिय अनुचर इसने दक्ष-यज्ञ का नाश किया था, महादेव की जटा से इसकी उत्पत्ति हुई थी ।
वीरभाव (सं० पु०) सामर्थ्य, वीरता, बहादुरी ।
वीरभूमि (सं० स्त्री०) युद्ध-स्थान (सं० पु०) बंगाल के एक ज़िले का नाम ।
वीररस (सं० पु०) काव्य का एक रस, वीरता ।
वीरवृत्ति (सं० स्त्री०) शूरों का बाना, वीरों का भेष, वीरों का काम । [प्रभाव, तेज ।
वीर्य (सं० पु०) बीज, धातु, पुरुषार्थ, बल, ज़ोर, प्रताप,
वीर्यवान् (वि०) बलवान, पराक्रमी ।
वृक (सं० पु०) भेड़िया, हुँडार, ल्यारी, पपीहा पक्षी, एक दैत्य का नाम ।
वृकोदर (सं० पु०) भीमसेन, ब्रह्मा ।
वृक्ष (सं० पु०) पेड़, रूख, गाछ, तरु, दरख़्त ।
वृत्त (सं० पु०) मण्डल, घेरा, गोल ।
वृत्तखण्ड (सं० पु०) जो त्रिज्या और जीवा से घिरा हो, वृत्त का टुकड़ा । [पता ।
वृत्तान्त (सं० पु०) समाचार, हाल, बात, हक़ीक़त,
वृत्तार्द्ध (सं० पु०) गोलार्द्ध, गोला का आधा ।
वृत्ति (सं० स्त्री०) जीविका, वज़ीफ़ा, रोज़गार, रोज़ी, आचरण, स्वभाव, धन्धा, व्यवहार, सूत्र का अर्थ, टीका ।
वृत्रासुर (सं० पु०) एक दैत्य का नाम ।
वृथा (अव्य०) व्यर्थ, झूठ, निष्फल, बेमतलब, योंही ।
वृद्ध (वि०) बूढ़ा, पुराना ।
वृद्ध प्रपितामह (सं० पु०) बाप का दादा ।
वृद्धप्रपितामही (सं० स्त्री०) बाप की दादी ।
वृद्धा (सं० स्त्री०) बुड्ढी, बुढ़िया ।
वृद्धि (सं० स्त्री०) बढ़ती, उन्नति ।
वृन्द (सं० पु०) समूह, भीड़भाड़, ढेर, थोक, झुंड ।
वृन्दा (सं० स्त्री०) तुलसी, राधिका, एक देवी का नाम, जो वृन्दावन में है ।
वृन्दारक (सं० पु०) देवता, सुर ।
वृन्दावन (सं० पु०) मथुरा के समीप का एक ग्राम जहाँ कुछ दिनों तक श्रीकृष्णचन्द्र रहे थे, इसी नाम का पहले यहाँ वन था ।
वृश्चिक (सं० पु०) बिच्छू, आठवीं राशि ।
वृष (सं० पु०) बैल, दूसरी राशि, कर्ण का पुत्र, इन्द्र, कामदेव, धर्म ।
वृषकेतु (सं० पु०) श्री शिवजी, कर्ण का पुत्र, जिसकी ध्वजा में बैल का चिह्न हो ।
वृषण (सं० पु०) अण्डकोश, पोता ।
वृषदंश (सं० पु०) बिलाव, बिलार, मार्जार ।
वृषभ (सं० पु०) बैल, बर्धा ।
वृषभध्वज (सं० पु०) शिवजी, त्रिपुरारि, महादेव जी ।
वृषभानु(सं०पु०)श्री राधा जी का पिता ।[चन्द्रगुप्त नृप ।
वृषल (सं० पु०) शूद्र, गाजर, प्याज़, घोड़ा, अधार्मिक,
वृषली (सं० स्त्री०) शूद्री, जो कन्या पिता के घर में रजस्वला हुई हो । [विष्णु ।
वृषा कपि (सं० पु०) धर्म को न कँपाने वाला, महादेव,
वृषोत्सर्ग (सं० पु०) मृतक को स्वर्ग-प्राप्ति के लिये बैल को दाग़ कर छोड़ देना, साँड़ बनाना ।
वृष्टि (सं० स्त्री०) मेह, वर्षा, पानी का बरसना ।
वृह (सं० पु०) चढ़ना, बढ़ना ।
वृहत् (वि०) बड़ा, चौड़ा ।
वृहस्पति (सं० पु०) देवताओं के गुरु, पाँचवाँ ग्रह, वृहस्पति का दिन, बीफै, गुरुवार ।

वेग (सं० पु०) प्रवाह, धारा, चाल, बहाव, महाकाल, उतावली, फुर्त (अव्य०) शीघ्र,जल्द ।

वेगगामी (वि०) उतावला, शीघ्रगामी, जल्द चलने [वाला ।

वेगवान (सं० पु०) पवन, चीता पशु (वि०) जल्द चलने ।

वेगि (क्रि० वि०) शीघ्र,जल्दी ।

वेगी (वि०) शीघ्रगामी, वेगवाला ।

वेणी (सं० स्त्री०) चोटी, बालों को सँवारना, नदियों के मिलने की जगह, नदी की धारा ।

वेणु (सं० पु०) बाँस, मुरली, बाँसुरी एक राजा का [नाम ।

वेणुक (सं० पु०) वंशलोचन, बाज़ीगर, ठग, चालाक ।

वेत (सं० पु०) एक वृक्ष का नाम, आकाश ।

वेतन (सं० पु०) मासिक तनख़्वाह, मज़दूरी, जीविका ।

वेताल (सं० पु०) एक प्रकार का पिशाच, जिन ।

वेत्ता (सं० पु०) जानने वाला, पण्डित ।

वेत्र (सं० पु०) वेत, एक प्रकार का पौधा ।

वेद (सं० पु०) श्रुति, हिन्दुओं की पुरानी पुस्तक ये चार हैं ऋग्, यजु, साम, अथर्व, ज्ञान, शास्त्रज्ञान, चार की संख्या ।

वेदगर्भ (सं० पु०) ब्रह्मा,ब्राह्मण ।[एक मुनि का नाम ।

वेदगिरा (सं० स्त्री०) वेदवाणी, वेद के वाक्य (सं०पु०)

वेदन (सं० स्त्री०) पीड़ा, दुःख, दर्द ।

वेदना (सं० स्त्री०) देखो "वेदन" ।

वेदमाता (सं० स्त्री०) गायत्री ।

वेदविस्त (वि०) वेदवादी, वेदवक्ता, वेदपाठक ।

वेदव्यास (सं० पु०) एक मुनि का नाम जिन्होंने वेदों का संग्रह किया और अट्ठारहों पुराणों को बनाया ।

वेदाङ्ग (सं० पु०) वेद के अंग अथवा भाग जो छः हैं १ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ छन्द, ५ ज्योतिष, ६ निरुक्त ।

वेदान्त (सं० पु०) ईश्वर के विषय में जो बातें लिखी गई हैं उसी का संग्रह, जिसे उपनिषद् कहते हैं, ब्रह्मप्रतिपादक ग्रन्थ ।

वेदान्ती (सं० पु०) वेदान्त मत का जानने वाला, [आत्मवादी ।

वेदि (सं० स्त्री०) होम करने का चबूतरा, पीठ, पीढ़ा ।

वेदिका (सं० स्त्री०) देखो "वेदि" ।

वेध (सं० पु०) छेद, सूराख़, बिल, छिद्र, एक ग्रह पर दूसरे ग्रह का छाया पड़ना ।

वेधना (क्रि० स०) छेद करना, भेदन करना ।

वेधमुख्या (सं० स्त्री०) कस्तूरी, कपूर ।

वेधी (सं० पु०) वर्मा, छेद करने वाला, जिससे छेद किया जाय ।

वेरभयानक (सं० पु०) प्रलय की रात,मृतक की रात ।

वेला (सं० पु०) समय, काल, वक्त ।

वेश (सं० पु०) गहना, कपड़ा, भेष, भूषण, शोभा ।

वेशर (सं० स्त्री०) भूषण विशेष, नाक का गहना ।

वेश्म (सं० पु०) गृह, घर, भेष, नक़ल ।

वेश्या (सं० स्त्री०) गणिका, पतुरिया, रण्डी ।

वेष (सं० पु०) कपड़ा, गहना, स्वरूप, डौल, चाल ।

वेष्टन (सं० पु०) बेठन, लपेटना ।

वेष्टित (सं० पु०) चारों ओर से घिरा हुआ, पूरा ।

वेसन (सं० पु०) चना का आटा ।

वेंछना (क्रि०स०) छीलना, काटना, उधेड़ना, काढ़ना ।

वैकल (वि०) व्याकुल, विकल, बेवकूफ़ ।

वैकाल (सं०पु०) दोपहर के बाद का समय,चौथा पहर ।

वैकुण्ठ (सं० पु०) विष्णु, विष्णुलोक, परमपद, स्थिर ।

वैकुण्ठनाथ (सं० पु०) विष्णु, भगवान् ।

वैगन्ध (सं० पु०) गन्धक ।

वैखानस (सं० पु०) यती विशेष, बौद्ध भिक्षुक, तपस्वी, वानप्रस्थाश्रमी ।

वैचित्र्य (सं० पु०) विचित्रता, आश्चर्य का विषय,चित्र [विचित्र ।

वैजनाथ (सं० पु०) वैद्यनाथ, एक महादेव-लिंग जो बंगाल में है ।

वैजयन्तिका (सं० स्त्री०) अरणी ।

वैजयन्ती (सं० स्त्री०) पताका, झण्डा ।

वैतरणी (सं० स्त्री०) यमपुर की नदी, नरक की नदी ।

वैताल (सं० पु०) वितल, ताल, पिशाच, भाट,बन्दी ।

वैतालिक (सं० पु०) राजाओं के घर में गीत गाने वाला, गायक ।

वैदिक (सं० पु०) वेदपाठी, वेद में कहे हुए कर्मों का [करने वाला ।

वैदूर्य (सं० पु०) नीलमणि, नीलक ।

वैदेही (सं० स्त्री०) श्री सीता जी, जानकी, जनक की बेटी, पीपरी ।

वैद्य (सं० पु०) चिकित्सक, तबीब, हकीम ।

वैद्यक (सं० पु०) वैद्य विद्या की पुस्तक, दवा करने की तरकीब बताने वाली पुस्तक ।

वैद्यनाथ (सं० पु०) शिव, दिवोदास, कंशराज, धन्वन्तरि, वैजनाथ, जिनका मन्दिर, झाड़खण्ड में है। [राजा।
वैनतेय (सं० पु०) विनता का बेटा, गरुड़, पक्षियों का
वैभव (सं० पु०) राज्य, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, दौलत।
वैमनस्य (सं० पु०) उदासीनता, बिगाड़, रंज, भीतरी द्वेष, मनमुटाव। [पढ़ने वाला, व्याकरण का विद्यार्थी।
वैयाकरण (सं० पु०) व्याकरण जानने वाला, व्याकरण
वैर (सं० पु०) शत्रुता, अदावत, द्वेष, विरोध, दुश्मनी।
वैराग (सं० पु०) त्याग, संसार की वासनाओं का छोड़ना। [विरक्त, संसार-त्यागी।
वैरागी (सं० पु०) निस्पृह, वैराग धारण करने वाला,
वैराग्य (सं० पु०) देखो "वैराग"। [द्वेषी।
वैरी (सं० पु०) शत्रु, दुश्मन, रिपु, विरोधी, अरि,
वैलक्षण्य (सं० पु०) विलक्षणता, विचित्रता, भावान्तर।
वैवस्वत (सं० पु०) एक मनु का नाम, धर्मराज।
वैशाख (सं० पु०) एक महीने का नाम, दूसरा महीना।
वैशाखी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की छड़ी जिसकी जड़ में खुरपी लगी रहती है, थूनी। [हिस्सा।
वैशेषिक (सं० पु०) एक शास्त्र का नाम, न्याय का एक
वैश्य (सं० पु०) वर्ण विशेष, बनिया, तृतीय वर्ण, महाजन, कृषि और गो की रक्षा करने वाला, वाणिज्य आदि से जीविका निर्वाह करने वाला।
वैश्रवना (सं० पु०) बरगद।
वैषम्य (सं० पु०) असमता, विषमता, एकान्त।
वैष्णव (सं० पु०) विष्णु का भक्त, विष्णु के उपासक, विष्णु की उपासना करने वाला (वि०) विष्णु का पदार्थ।
(सं० स्त्री०) एक देवी का नाम जो विष्णु की शक्ति से उत्पन्न है और जिनका रूप, चाल, ढाल, पहराव सवारी आदि सभी विष्णु के समान हैं।
वैसा (वि०) उसके समान, उसी प्रकार, उसके ऐसा।
वैसे (अव्य०) सेंत, बिना मोल, मुफ़्त, निष्कारण।
वोहित (सं० पु०) जहाज़, यान, बड़ी नाव।
व्यक्त (सं० पु०) स्पष्ट, प्रगट, छाना हुआ, बुद्धिमान, स्थूल, ज्ञानी।
व्यक्ति (सं० स्त्री०) एकता, पृथगात्मा, एक शरीर, एकाई, प्रकटता, विभक्ति, जन, मनुष्य।
व्यग्र (वि०) उद्विग्न, व्याकुल, परेशान, भूला भटका, विकल।
व्यङ्ग (सं० पु०) कुटिल, टेढ़ा, कूट, अंगहीन, एक प्रकार का काव्य, एक प्रकार का वचन, जिससे उलटा अर्थ होता है।
व्यजन (सं० पु०) पंखा, बेना, तालवृन्त, बेनिया।
व्यञ्जक (सं० पु०) प्रकाशक, भावबोधक, जिससे अर्थ प्रकाशित होते हैं। [स्वरहीन वर्ण।
व्यञ्जन (सं० पु०) तरकारी, साग, खाने की अच्छी चीज़,
व्यञ्जना (सं० स्त्री०) श्लेष, शब्द शक्ति भेद, एक प्रकार का अलंकार। [पुलटा।
व्यतिक्रम (सं० पु०) डाँकना, लाँघना, विपरीत, उलटा
व्यतिरिक्त (वि०) भिन्न, जुदा जुदा, अलावा, सिवाय।
व्यतिरेक (सं० पु०) भेद, वियोग, विशेष, भिन्नता, बिना, अतिक्रम, एक अलंकार का नाम।
व्यतीत (वि०) गत, बीता, गुज़रा हुआ।
व्यतीपात (सं० पु०) एक योग का नाम, जो सत्तरहवाँ है, बड़ा भारी उपद्रव।
व्यतीहार (सं० पु०) बदला, परिवर्तन। [अतिक्रम।
व्यत्यय (सं० पु०) उलटा पुलटा, उलट फेर, विरोध,
व्यथक (सं० पु०) दुःखदाता, तकलीफ़ देने वाला।
व्यथा (सं० स्त्री०) पीड़ा, दुःख, दर्द, वेदना, क्लेश, कष्ट।
व्यथित (वि०) दुःखित, पीड़ित, क्लेशित।
व्यधन (सं० पु०) बेधन, ताड़न, पीड़न।
व्यपदेश (सं० पु०) संज्ञा, नाम, आरम्भ, मिष, छल, क़िस्सा। [गमन, निन्दित कर्म, रण्डीबाज़ी।
व्यभिचार (सं० पु०) परस्त्रीगमन, कुकर्म, पर पुरुष-
व्यभिचारिणी (सं० पु०) दुष्टा, कुलटा, स्वैरिणी, छिनाल। [कुमार्गी।
व्यभिचारी (सं० पु०) पराई स्त्री के पास जाने वाला,
व्यय (सं० पु०) ख़र्च, लागत, क्षय, नाश।
व्यर्थ (वि०) वृथा, निकम्मा, निरर्थक, बेफ़ायदा, विफल।
व्यलीक (सं० पु०) कपट, छल।
व्यवकलन (सं० पु०) घटाना, बाक़ी निकालना, अलग अलग करना। [पृथक्ता।
व्यवच्छेद (सं० पु०) भेद, भिन्नता, अलग करना,
व्यवधान (सं० पु०) आच्छादन, आड़, बीच की रोक, बीच बिचाव।

व्यवसाय (सं० पु०) उद्योग, परिश्रम, यत्न, उपाय, तदबीर ।
व्यवसायी (सं० पु०) व्यवसाय करने वाला ।
व्यवस्था (सं० स्त्री०) धर्म शास्त्र की आज्ञा, धर्म शास्त्र का वचन, दशा, रीति ।
व्यवस्थापक (सं० पु०) व्यवस्था का देने वाला, स्थिर करने वाला, नियम बनाने वाला ।
व्यवस्थित (वि०) अचल, अटल, निश्चित ।
व्यवहरिया (सं० पु०) व्यवहार करने वाला, लेन-देन करने वाला, महाजन, व्यापारी ।
व्यवहार (सं० पु०) उत्तम, काम धन्धा, लेन-देन, चाल-चलन, व्यापार, अभ्यास, झगड़ा ।
व्यवहित (सं०पु०) अन्तर, रोक, रोका गया, ढका, छिपा ।
व्यवहृत (सं० पु०) व्यवहार किया हुआ, इस्तेमाल में लाया हुआ।
व्यसन (सं० पु०) विपत्ति, दोष, बुरा कर्म, अभ्यास।
व्यसनी (सं० पु०) व्यसन करने वाला ।
व्यस्त (वि०) व्याकुल, फैला, उद्विग्न, विपरीत, हीन ।
व्याकरण (सं० पु०) शास्त्र विशेष, शब्दों की उत्पत्ति और शुद्धता बताने वाला शास्त्र ।
व्याकुल (वि०) अस्थिर चित्त, घबड़ाया हुआ, दुःखी, व्यग्र । [चंचलता ।
व्याकुलता (सं० स्त्री०) घबड़ाहट, दुःख, व्यग्रता,
व्याख्या (सं० स्त्री०) वर्णन, व्याख्यान, टीका, कथन, उपदेश ।
व्याख्यान (सं० पु०) वर्णन करना, उपदेश, वक्तृता ।
व्याघात (सं० पु०) अटकाव, रोक, एक योग का नाम ।
व्याघ्र (सं० पु०) बाघ, शेर, कंजा का पेड़ ।
व्याज (सं० पु०) बहाना, छल, कपट, सूद, रुपये का महसूल ।
व्याजक (वि०) छली, व्याजू, ऋणी ।
व्याजू (वि०) व्याज पर लिया दिया हुआ क़र्ज़ ।
व्याध (सं० पु०) बहेलिया, जानवरों को मारने वाला, पासी ।
व्याधि (सं० स्त्री०) रोग, पीड़ा, बीमारी, दुःख, सन्ताप ।
व्यान (सं० पु०) प्राण विशेष । [परमेश्वर ।
व्यापक (सं० पु०) फैलने वाला, प्रभु, सर्वव्यापी,
व्यापकता (सं० स्त्री०) फैलाव, विभुता, वैभव, ऐश्वर्य ।
व्यापना (क्रि० अ०) फैलना, सर्वत्र हो जाना ।
व्यापार (सं० पु०) काम, धंधा, ब्यौपार, सौदागरी का काम, बेचना, ख़रीदना ।
व्यापारी (सं० पु०) ब्यौपारी, सौदागर ।
व्याप्त (वि०) फैला हुआ, सब जगह रहने वाला, सर्वगत ।
व्याप्ति (सं० स्त्री०) विस्तार, लाभ, फैलाव ।
व्यामोह (सं० पु०) पीड़ा, दुःख, बेहोशी, अज्ञान ।
व्यायाम (सं० पु०) परिश्रम, थकावट, कसरत, कुश्ती करना, मल्ल कर्म । [जानवर, धूर्त ।
व्याल (सं० पु०) साँप, दुष्ट, हाथी, मारने वाला
व्याली (सं० स्त्री०) झरोखा, साँपिनि ।
व्यावहारिक (सं० पु०) मंत्री, परामर्शी, सलाहकार ।
व्यास (सं० पु०) विस्तार, फैलाव, एक मुनि का नाम जिसने अठारहों पुराण बनाये ।
व्यासगद्दी (सं० स्त्री०) बड़ा आसन, जिस पर बैठ कर पुराण की कथा कही जाय । [विस्तार ।
व्यासार्द्ध (सं० पु०) व्यास का आधा, त्रिज्या, आधा
व्याहृत (सं० पु०) एक प्रकार का अक्षर जो गायत्री और सावित्री में जोड़े जाते हैं । सप्त व्याहृत ये हैं भुः, भुवः, महः, जनः, तपः, सत्यम् ।
व्युत्क्रम (सं० पु०) उलटा पलटा, क्रमरहित ।
व्युत्पत्ति (सं० स्त्री०) शास्त्र के समझाने की शक्ति, शास्त्र का ज्ञान ।
व्युत्पन्न (वि०) दक्ष, शास्त्र में प्रवीण । [तैयार ।
व्यूढ़ (सं० पु०) विस्तृत, दीर्घ, संहति, विन्यस्त, सन्नद्ध,
व्यूह (सं० पु०) सेना की रचना, भीड़, समूह, निर्माण ।
व्यूहन (सं० पु०) सैन्य-स्थापन, क़िलाबन्दी ।
व्योम (सं० पु०) आकाश, गगन, आसमान ।
व्योमकेश (सं० पु०) शिव जी ।
व्योमचर (सं० पु०) पक्षी, देवता, ग्रह ।
व्योमयान (सं० पु०) विमान, हवाई जहाज़ ।
व्यौपार (सं० पु०) कारबार, रोज़गार ।
व्यौपारी (सं० पु०) काम काजी, व्यवसायी ।
व्रज (सं० पु०) एक प्रान्त का नाम जो मथुरा के पास है, गोस्थान ।
व्रजन (सं० पु०) पर्यटन, भ्रमण ।
व्रजवासी (सं० पु०) व्रज में रहने वाला ।
व्रजेन्द्र (सं० पु०) श्रीकृष्ण जी ।

व्रण (सं० पु०) फोड़ा, घाव। [व्रत करने वाला।
व्रत (सं० पु०) उपवास, उपास, नियम, तपव्रती (सं० पु०)
व्रात (सं० पु०) समूह, भीड़, यूथ।
व्रात्य (सं० पु०) वह ब्राह्मण जिसका सोलह बरस की उमर तक जनेऊ नहीं हुआ है।
व्रीड़ा (सं० स्त्री०) लज्जा, लाज, शर्म, हया, संकोच।
व्रीड़ित (सं० पु०) शर्माया हुआ, लज्जित।
व्रीहि (सं० पु०) अनेक प्रकार के धान।

श

श—हल् वर्ण का तीसवाँ अक्षर इसका उच्चारण तालु से होता है (सं० पु०) कल्याण, मंगल, शिव, महादेव, हृदय, शस्त्र, हथियार। [आनन्दयुक्त।
शंयु (वि०) प्रसन्न, प्रसन्नात्मा, हर्षित, आनन्दित,
शंव (वि०) पुण्यात्मा, सुकृती, धार्मिक।
शंवर (सं० पु०) शंख, जल, एक राक्षस का नाम, मायावी राक्षस, माया, विद्या का यह आचार्य था, शाम्बरी माया के नाम से इसकी माया प्रसिद्ध है, श्रीकृष्ण ने इसको मारा था।
शंसा (सं० स्त्री०) प्रशंसा, तारीफ़, गुणवर्णन, गुण-कथन, कथन, कहने की इच्छा।
शंसित (वि०) कहा हुआ, कथित, निश्चित, निर्णीत।
शंस्य (वि०) प्रशंसनीय, प्रशंसा के योग्य।
शऊर (अ० सं० पु०) अभिज्ञता, ज्ञान, तमीज़, शिष्टता।
शऊरदार (फ़ा० वि०) अभिज्ञ, सभ्य, शिष्ट।
शक (सं० पु०) एक देश का नाम, जाति विशेष, इस जाति के लोगों ने भारत पर आक्रमण किया था और कुछ दिनों तक देश के छोटे छोटे खंडों पर राज्य भी किया था। कनिष्क इसी जाति का था, जो ईसवी की पहली सदी में पेशावर का राजा था। राजा शालिवाहन का चलाया संवत्, एका, शक्ति, सामर्थ्य, बल, सन्देह, संशय।
शककर्ता (सं० पु०) शक चलाने वाला, संवत् प्रवर्तक, जो संवत् चलावें या जिनके नाम का संवत् चलाया जाय, युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, चन्द्रगुप्त, शालिवाहन आदि शककर्ता हैं।
शकट (सं० पु०) गाड़ी, छकड़ा, लढ़िया, बैलगाड़ी, रथ, बैल की सवारी, शकटाकार एक राक्षस, यह श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था।
शकटासुर (सं० पु०) एक राक्षस का नाम यह कंस की ओर से श्रीकृष्ण को मारने के लिये भेजा गया था, पर वहाँ मारा गया।
शकल (सं० पु०) खंड, टुकड़ा, भाग, चर्म, चिह्न, छिलका, वल्कल, वकला, स्वरूप, सूरत, चिह्न विशेष।
शकाब्द (सं० पु०) संवत् विशेष, शालिवाहन का चलाया संवत्। [दित्य।
शकारि (सं० पु०) शक जाति के शत्रु, राजा विक्रमा-
शकुन (सं० पु०) सगुन, शुभाशुभसूचक चिह्न, भावी शुभ अशुभ की सूचना देने वाले चिह्न, पक्षी, चिड़िया।
शकुनी (सं० पु०) पक्षी, चिड़िया, गन्धार देश के राजा का पुत्र, दुर्योधन का मामा, शकुनि बड़ा दुष्ट था, इस कारण दुष्ट के अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है।
शकुन्त (सं० पु०) पक्षी, चिड़िया।
शकुन्तला (सं० स्त्री०) ऋषिकन्या, मेनका के गर्भ से विश्वामित्र द्वारा यह उत्पन्न हुई थी, महर्षि कण्व ने इसका पालन किया था, राजा दुष्यन्त ने इसे ब्याहा था, कालिदास का बनाया नाटक।
शकुल (सं० पु०) एक प्रकार की मछली।
शकृत् (सं० पु०) विष्ठा, पुरीष, मल। [चीनी।
शक्कर (सं० स्त्री०) चीनी, एक मीठा पदार्थ, साफ़ की हुई
शक्की (वि०) सन्देही, सन्देह करने वाला, संशयी।
शक्त (वि०) समर्थ, क्षम, योग्य, कर्म-क्षम, कार्य करने की शक्ति रखने वाला, दृढ़, मज़बूत, हृष्ट पुष्ट।
शक्ति (सं० स्त्री०) बल, पराक्रम, पुरुषार्थ, ताक़त, बर्छी, साँग, देवी, लक्ष्मी, माया, इन्द्राणी, वैष्णवी, महेश्वरी, ब्राह्मी आदि आठ शक्तियाँ।

शक्तिमान् (सं० पु०) समर्थ, शक्ति रखने वाला, बलवान् शक्ति का अधिकार, जिसके अधीन शक्ति हो।

शक्तिहीन (वि०) असमर्थ, जिसके पास कोई शक्ति न हो, दुर्बल, कमज़ोर, निर्बल।

शक्तु (सं० पु०) सतुआ, भुने हुए अन्न का चूर्ण।

शक्य (वि०) होने के योग्य, शक्ति के भीतर, सम्पादित करने योग्य। [सुरपति।

शक्र (सं० पु०) इन्द्र, देवराज, देवताओं के राजा,

शक्रधनुष (सं० पु०) इन्द्र-धनुष, सूर्योदय या सूर्यास्त के समय कई रंगों की पड़ने वाली गोल रेखा।

शक्रवालि (सं० पु०) अर्जुन। [वालि, अर्जुन।

शक्रसुत (सं० पु०) इन्द्रपुत्र, इन्द्र का बेटा, जयन्त,

शक्राजित् (सं० पु०) मेघनाद, इन्द्रजीत, इन्द्र को जीतने वाला, रावण का बेटा।

शक्राणी (सं० स्त्री०) इन्द्राणी, इन्द्र की स्त्री, शची।

शक्राह्व (सं० पु०) औषध विशेष, इन्द्रजव, एक कीड़े का नाम, इन्द्रगोप।

शख़्स (अ० सं० पु०) मनुष्य, जन, प्राणी, इन्सान।

शगल (वि०) समस्त, सब स्थानों पर, सब जगह, आकार, शकल। [प्रारम्भिक उत्सव।

शगुन (सं० पु०) शकुन, भावी, शुभाशुभ की सूचना,

शगुनिया (वि०) शकुन करने वाला, शकुन बतलाने वाला, शुभाशुभ बतलाने वाला।

शङ्क (सं० पु०) भय, डर, दहशत, प्रधान सर्प, सर्पराज।

शङ्कर (सं० पु०) महादेव, शिव, कल्याणकारक।

शङ्करा (सं० स्त्री०) एक रागिनी।

शङ्कराचार्य (सं० पु०) एक धर्माचार्य, ये दक्षिण देश-वासी थे, इन्होंने बौद्धधर्म के स्थान पर वैदिक धर्म की पुनः स्थापना की, अद्वैतवाद के प्रचारक, व्यास सूत्र, दश उपनिषद् गीता आदि पर इन्होंने भाष्य बनाया है।

शङ्का (सं० स्त्री०) सन्देह, संशय, डर, भय, खटका, मल-बाधा, मलमूत्र की बाधा। [भयभीत।

शङ्कित (वि०) सन्देही, डरा हुआ, भीत, सन्दिग्ध,

शङ्कु (सं० पु०) खूँटा, ठूँठ वृक्ष, आठ अंगुल की लकड़ी, भाला, गाँसी, पाप, महादेव, अंश।

शङ्ख (सं० पु०) एक जलचर प्राणी की हड्डी, जो हिन्दू दृष्टि से पवित्र समझी जाती है, विष्णु-पूजन में इसका उपयोग होता है, संख्या विशेष (वि०) केवल बोलने वाला, निःस्सार मनुष्य, धर्म-स्मृति बनाने वाले एक आचार्य का नाम, एक स्मृति, शंख की बनाई स्मृति।

शङ्खचूड़ (सं० पु०) एक नागराज।

शङ्खपुष्पी (सं० स्त्री०) जड़ी विशेष, इसका उपयोग पौष्टिक दवाइयों में होता है। [समान था।

शङ्खासुर (सं० पु०) एक राक्षस, इसका आकार शंख के

शङ्खिनी (सं० स्त्री०) छोटा शङ्ख, काम सूत्र के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियों में से एक स्त्री, एक श्वास-वायु। [बड़ा ही क्रूर होता है।

शचान (सं० पु०) बाज, शिकरा, एक चिड़िया, जो

शची (सं० स्त्री०) इन्द्राणी, इन्द्र की स्त्री।

शचीपति (सं० पु०) इन्द्र, देवराज, सुरपति, शक्र।

शटी (सं० पु०) कबूतर का एक भेद, एक प्रकार का कबूतर।

शठ (वि०) छली, कपटी, दुष्ट, धूर्त, ठग, कृपण।

शठता (सं० स्त्री०) छल, कपट, दुष्टता, धूर्तता, ठगी, कृपणता।

शण (सं० पु०) सन, सनई, एक प्रकार का पाट।

शणसूत्र (सं० पु०) सन की बनी रस्सी, सुतली, वैश्यों का यज्ञोपवीत।

शण्ड (सं० पु०) साँड़, बैल।

शण्डी (सं० स्त्री०) साँड़िनी, उँटिनी, साँड़िया।

शण्ढ (सं० पु०) नपुंसक, हिजड़ा, साँड़, दागा हुआ बैल।

शत (वि०) संख्या विशेष, सौ।

शतक (वि०) सौ का, सौ संख्या से परिमित, सैकड़ा।

शतकोटि (सं० पु०) इन्द्र के वज्र का नाम (सं० स्त्री०) सौ करोड़, संख्या विशेष।

शतक्रतु (सं० पु०) इन्द्र, देवराज, सौ अश्वमेध यज्ञ करने से इन्द्र पद मिलता है, इस कारण इन्द्र को शतक्रतु कहते हैं। [मारी।

शतघ्नी (सं० स्त्री०) अस्त्र विशेष, तोप, भुशण्डी, महा-

शतद्रु (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम, पंजाब की पाँच नदियों में से एक नदी, सतलज, यह बहुत ही प्राचीन नदी है, ऋग्वेद में इसका नाम आया है।

शतधन्वा (सं० पु०) एक राजा का नाम, ये यदुवंशी थे।

शतपत्र (सं० पु०) शतदल, कमल, अंभोज, जलज, पद्म।

शतपदी (सं० स्त्री०) औषध विशेष, सतावर । [बाँस ।
शतपर्विका (सं० स्त्री०) जिसमें सौ गाँठें हो, दूबदुर्वा,
शतपुष्प (सं० स्त्री०) सौंफ़ ।
शतभिषा (सं० स्त्री०) एक नक्षत्र का नाम, चौबीसवाँ नक्षत्र, इसका गोल आकार है और इसके मण्डल में सौ तारे हैं ।
शतमन्यु (सं० स्त्री०) देवराज, इन्द्र, सुरपति ।
शतमारी (सं० पु०) सौ को मारने वाला, वैद्य की परिभाषा, यह वैद्यों के उपहास के लिये कही जाती है । [का नाम ।
शतमूली (सं० स्त्री०) औषध विशेष, शतावर, एक लता
शतरंज (सं० पु०) एक खेल का नाम, शतरंज की गोटियाँ ।
शतरंजी (सं० स्त्री०) दरी, मोटे सूत का बिछौना, यह बड़ा छोटा सब तरह का होता है ।
शतशः (अव्य०) बारबार, सैकड़ों, सदा, हमेशा ।
शता (सं० स्त्री०) सौंफ़ ।
शताब्द (सं० पु०) सौ वर्ष का युग, सदी ।
शताब्दी (सं० स्त्री०) सौ वर्ष का समय, शतक, सदी ।
शतावरी (सं० पु०) औषध विशेष, शतावर नाम की प्रसिद्ध औषध ।
शत्रु (सं० पु०) वैरी, दुश्मन, अरि, रिपु, द्वेषी ।
शत्रुघ्न (वि०) शत्रु को मारने वाला, शत्रुहन्ता (सं०पु०) राजा दशरथ के एक पुत्र, इनकी माता का नाम सुमित्रा था, लक्ष्मण के ये छोटे भाई थे, लवणासुर को इन्होंने मारा था ।
शत्रुता (सं० स्त्री०) दुश्मनी, द्वेष, वैर, विरोध ।
शनक (सं० स्त्री०) धुन, पागलपन, उन्माद ।
शनकी (सं० पु०) उन्मादी, पागल, धुनी ।
शनाख़ (फ़ा० सं० पु०) पहचान, परिचय, जानकारी ।
शनि (सं० पु०) ग्रह विशेष, ये सूर्य के पुत्र हैं, इनकी माता का नाम छाया है, ये क्रूर ग्रह हैं ।
शनिवार (सं० पु०) शनिश्चर का दिन, सातवाँ दिन ।
शनैः शनैः (अव्य०) धीरे धीरे, मन्द मन्द, हौले हौले ।
शनैश्चर (सं० पु०) शान्ति, सातवाँ ग्रह, सूर्यपुत्र ।
शपथ (सं० पु०) सौगन्द, सौंह, प्रतिज्ञा, शाप, सराप ।
शप्पा (सं० पु०) चन्द्रमा, बोझा, भार ।
शफ़तालु (सं० पु०) इस नाम का एक फल, वृक्ष विशेष ।
शफ़ा (सं० पु०) दवा, औषध, चिकित्सा ।
शफ़ाख़ाना (सं० पु०) दवाख़ाना, औषधालय ।
शब (फ़ा० सं० स्त्री०) रात, रात्रि, रजनी ।
शब्द (सं० पु०) ध्वनि, वर्णात्मक ध्वनि, अर्थयुक्त कान से सुनाई पड़ने वाली ध्वनि । [वाला शास्त्र ।
शब्दशास्त्र (सं० पु०) व्याकरण, शब्दों का ज्ञान कराने
शम (सं० पु०) शान्ति, विरति, चित्त की शान्ति, चञ्चलता का अभाव, वेदान्त का साधन, चतुष्पद के अन्तर्गत एक साधन ।
शमन (सं० पु०) शान्त करना, शान्त करने का उपाय, ठंढा करना, यमराज, धर्मराज ।
शमशेर (सं० पु०) तलवार, तेग़ा, खाँड़ा ।
शमा (सं० पु०) प्रकाश, चिराग़, दीपक ।
शमादान (सं० पु०) दीवट, जिस पर चिराग़ जलाया जाता है, बैठकी, मोमबत्ती, जलाने की दीवट ।
शमित (वि०) शान्त किया हुआ, बुझा हुआ, शान्त ।
शमी (सं० पु०) एक वृक्ष का नाम, विजया दशमी के दिन इसकी पूजा होती है ।
शम्बूक (सं० पु०) सीपी, घोंघा, शंख, कौड़ी, एक दैत्य का नाम, एक शूद्र तपस्वी, इसे रामचन्द्र ने मारा था ।
शम्भु (सं० पु०) महादेव, शिव ।
शयन (सं० पु०) सोना, निद्रा, नींद, बिछौना ।
शय्या (सं० स्त्री०) खाट, खटिया, पलंग, चारपाई, बिछौना, सेज । [जय, अधीन ।
शर (सं० पु०) बाण, तीर, सरकंडा, पाँच का अंक, जीत,
मुहा०— शर करना = अधीन करना, बदमाशी छुड़ाना, सीधा करना ।
शरजन्मा (सं० पु०) कार्तिकेय, षडानन ।
शरट (सं० पु०) गिरगिट, कृकलास, छिपकिली की जाति का एक जन्तु ।
शरण (सं० स्त्री०) रक्षा, बचाव, आसरा, पनाह ।
शरणागत (वि०) शरण में आया हुआ, अपनी रक्षा के लिये आया हुआ, शरणार्थी, आश्रयप्रार्थी ।
शरणागतपाल (सं० पु०) शरण में आये हुए की रक्षा करने वाला ।
शरण्य (सं० पु०) नारायण (वि०) शरणागत की रक्षा करने वाला, शरण में आये हुओं की रक्षा करने वाला ।

शरत् (सं० स्त्री०) एक ऋतु, क्वार और कार्तिक इन दो महीनों की शरत् ऋतु होती है।

शरत्पुष्प (सं० पु०) पुष्प विशेष, इसका फूल लाल रंग का होता है और यह मध्याह्न में फूलता है।

शरपुंखा (सं० पु०) एक पौधे का नाम, सरफोंका।

शरह (सं० स्त्री०) दर, भाव, प्रथा, रस्म, रीति।

शराकत (अ० सं० स्त्री०) सम्मिलित, अविभाजित, जो बटा हुआ न हो।

शराटा (सं० पु०) हवा चलने का शब्द, दौड़ने का शब्द।

शराफ़त (फ़ा० सं० स्त्री०) भलमनसाहत, सज्जनता, सभ्यता।

शराब (सं० स्त्री०) मदिरा, मद्य, महुआ आदि से बनाई हुई नशीली एक वस्तु जो पीने के काम आती है।

शराबी (वि०) शराब पीने वाला, शराब पीने का अभ्यासी।

शराबोर (वि०) भीगा हुआ, तर, तरबतर, आर्द्र।

शरारत (सं० स्त्री०) बदमाशी, दुष्टता, किसी को कष्ट पहुँचाने का उपाय। [मिट्टी का कटोरा।

शराव (सं० पु०) सकोरा, ढकना, मिट्टी का बना पात्र,

शरावती (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम।

शरासन (सं० पु०) धनुष, कमान, जिससे बाण फेंके जायँ। [वाला।

शरीक (वि०) सम्मिलित, मिला हुआ, सम्बन्ध रखने

शरीफ़ (सं० पु०) सज्जन, भला आदमी, कुलीन, उच्च कुल का। [लफंगा, गुंडा।

शरीर (सं० पु०) देह, बदन, काय (वि०) बदमाश, लुच्चा,

शरीरी (सं० पु०) आत्मा, देही, शरीरधारी।

शर्करा (सं० स्त्री०) शक्कर, चीनी, गुड़ का विकार।

शर्त (सं० स्त्री०) पण, नियम।

शर्बत (सं० पु०) पेय पदार्थ विशेष, चीनी, इलायची, गुलाब जल आदि के योग से बनाया पेय, यह कई प्रकार का होता है, जैसे अनार का शर्बत, फ़ालसे का शर्बत, संतरे का शर्बत आदि।

शर्बती (सं० स्त्री०) एक प्रकार का नींबू, रंग विशेष।

शर्म (सं० स्त्री०) लज्जा, हया, शरम।

शर्मा (सं० पु०) ब्राह्मणों की एक पदवी, जिस नाम के अन्त में शर्मा शब्द जुड़ा रहता है उससे यह मालूम होता है कि यह ब्राह्मण का नाम है।

शर्मालु (वि०) शरमाने वाला, लजार, लजाने वाला।

शर्माना (क्रि० अ०) लजाना, संकोच करना।

शर्मिन्दगी (फ़ा० सं० स्त्री०) लज्जा, शर्म, हया।

शर्मिन्दा (फ़ा० वि०) लज्जावान्, लजार, लज्जाशील, लजाने वाला।

शर्वरी (सं० स्त्री०) रात, साँझ, रजनी।

शलगम (सं० पु०) मूल विशेष, यह गोलाकार होता है और इसकी तरकारी बनायी जाती है।

शलभ (सं० पु०) पतङ्ग, टिड्डी, दीपक पर जलकर मरने वाला पतंगा। [है।

शलाका (सं० स्त्री०) सलाई, जिससे सुर्मा लगाया जाता

शलीता (सं० पु०) टाट का बोरा, टाट का थैला, बैल आदि पर लादने का बोरा, एक विशेष प्रकार का बना बोरा।

शलूक (सं० पु०) उत्तम व्यवहार, सज्जनता का व्यवहार, उपकार, लाभ पहुँचाना।

शल्य (सं० पु०) अस्त्र विशेष, बाण, गाँसी, चिकित्सा विशेष, चीर फाड़, एक राजा का नाम, ये मद्र देश के राजा थे और युधिष्ठिर के मामा थे। महाभारत के युद्ध में उन्होंने दुर्योधन का पक्ष ग्रहण किया था। कर्ण के ये सारथी थे और कर्ण के मारे जाने पर दुर्योधन की सेना के प्रधान सेनापति बनाये गये थे।

शव (सं० पु०) मुर्दा, निर्जीव शरीर, मृतक लोथ।

शबर (सं० पु०) जंगली जाति विशेष, भील जाति की एक शाखा, म्लेच्छ जाति।

शबरी (सं० स्त्री०) एक भीलिन जिसने वन जाते हुए श्री रामचन्द्र जी का स्वागत किया था।

शशक (सं० पु०) खरहा, ख़रगोश, एक चौपाये का नाम।

शशमाही (फ़ा० सं० स्त्री०) छमाही, छः महीने का।

शशा (सं० पु०) खरहा, ख़रगोश।

शशाङ्क (सं० पु०) चन्द्रमा, चन्द्र, सुधांशु, विधु, इन्दु।

शशि (सं० पु०) चन्द्रमा, शशाङ्क।

शशिकला (सं० स्त्री०) चन्द्रमा का अंश, छन्द विशेष।

शश्वत् (अव्य०) सदा, सर्वदा, बारबार, सनातन, निरन्तर, संतत। [की प्रशंसा की गई हो।

शस्त (वि०) उत्तम, प्रशंसित, प्रशंसा किया हुआ, जिस

शस्त्र (सं० पु०) आयुध, हथियार, हाथ में पकड़ कर जिससे प्रहार किया जाय, तलवार आदि ।
शस्त्र विद्या (सं० स्त्री०) अस्त्र विद्या, हथियार विद्या ।
शस्य (सं० पु०) धान, अन्न, खेत में लगा अन्न ।
शहंशाह (फ़ा० सं० पु०) बादशाह, सम्राट, चक्रवर्ती, राजाओं का राजा, महाराजा ।
शहतूत (सं० पु०) वृक्ष विशेष, फल विशेष, इसका फल पतला और लम्बा होता है, ऊपर उसके दाने दाने से होते हैं जिनमें रस भरा रहता है । रेशम के कीड़े इसी वृक्ष में पाले जाते हैं ।
शहद (सं० पु०) मधु, मक्खियों का बनाया रस विशेष, यह दवा के काम आता है ।
शहनाई (सं० स्त्री०) एक बाजा का नाम, नौबत ।
शहर (फ़ा० सं० पु०) नगर, बड़ा गाँव, जिसमें बाज़ार आदि हों ।
शहरपनाह (सं० पु०) शहर के चारों तरफ़ की चार-दीवारी, शहर की रक्षा के लिये बनाई हुई दीवार, कोट ।
शहादत (अ० सं० स्त्री०) साक्षी, गवाही ।
शहीद (अ० सं० पु०) बलिदान होने वाला, धर्म के लिये प्राण देने वाला ।
शाक (सं० पु०) साग, तरकारी, भाजी, फल मूल आदि, जो तरकारी के काम में आते हैं, एक द्वीप का नाम, शालिवाहन का चलाया संवत् ।
शाकवीज (सं० पु०) बथुआ का साग, वास्तुक ।
शाकम्भरी (सं० स्त्री०) देवी, दुर्गा देवी, इनका मन्दिर राजपूताने में साँभर नगर के पास एक पहाड़ पर है । वहाँ वालों का कहना है कि इन्हीं देवी के वर-दान से साँभर नामक झील पैदा हुई है । इन्हीं की कृपा से शाक आदि पदार्थों से पृथ्वी पूर्ण होती है।
शाकल (सं० पु०) हवन की सामग्री, तिल, जव, चावल, घी, शक्कर को मिला कर यह बनाई जाती है ।
शाकल्य (सं० पु०) हवन की सामग्री, शाकल ।
शाकवणिक् (सं० पु०) शाक बेचने वाला बनिया, मुराई, कबाड़ी, तुरहा, कुंजड़ा, कोइरी । [संवत् ।
शाका (सं० पु०) संवत् विशेष, शालिवाहन का चलाया
शाकाहारी (वि०) शाक खाने वाला, जो केवल शाक ही खाता है मांस नहीं खाता, तपस्वी ।

शाकिनी (सं० स्त्री०) एक देवी का नाम. डाकिनी की सखी ।
शाक्त (सं० पु०) शक्ति के उपासक, शक्ति के भक्त, देवी की पूजा करने वाला । [देन का विश्वास ।
शाख (सं० स्त्री०) थाप, विश्वास, व्यापार संबन्धी लेन-
शाखा (सं० स्त्री०) डाल, टहनी, पेड़ की डाली, वेद का विभाग, पठन-पाठन के भेद से वेदों के कई भेद हैं वे भेद शाखा कहे जाते हैं, प्रकार, भाँति, हिस्सा, भाग, बड़ी नदी से निकली हुई धारा ।
शाखामृग (सं० पु०) वानर, कपि, बन्दर ।
शाखी (सं० पु०) वृक्ष, पेड़, साक्षी, गवाह । [विद्यार्थी ।
शागिर्द (फ़ा० सं० पु०) शिष्य, चेला, सीखने वाला,
शागिर्दी (फ़ा० सं० स्त्री०) शिष्यत्व, चेलापन, सीखने का काम, विद्याध्ययन, कला सीखना, हुनर सीखना ।
शाटिका (सं० स्त्री०) साड़ी, स्त्रियों के पहनने का कपड़ा, कामदार या छपा हुआ वस्त्र जो स्त्रियाँ पहनती हैं ।
शाठ्य (सं० पु०) निर्दयता, ठगई, दुष्टता, मूर्खता, जाहिली, कृपणता, धूर्तता ।
शाण (सं० पु०) सान, एक प्रकार का पत्थर का चक्का, जिस पर हथियार आदि तेज़ किया जाता है ।
शाणन (सं० पु०) तेज़ करना, सान धराना, पैना करना ।
शाणित (वि०) तेज़ किया हुआ, शान धराया हुआ, पैना किया हुआ, तीक्ष्ण बनाया हुआ ।
शाण्डिल्य (सं० पु०) बेल, श्रीफल, अग्नि का एक नाम, एक मुनि, ये भक्तिशास्त्र के रचयिता हैं ।
शात (सं० पु०) सुख, कल्याण, आनन्द, मङ्गल (वि०) छिन्न, कृश, दुर्बल । [धातु ।
शातकुम्भ (सं० पु०) सुवर्ण, हिरण्य, सोना, सुवर्ण
शादी (सं० स्त्री०) ब्याह, विवाह. शास्त्र विधि के अनुसार वर बधू का पाणिग्रहण ।
शान (सं० पु०) शाण, एक प्रकार का पत्थर जिससे हथियार तेज़ किये जाते हैं (सं० स्त्री०) विलास, धाम, प्रताप ।
शानदार (फ़ा० वि०) भड़कीला, सुन्दर, चमकीला, दिखनौक, देखने में सुन्दर ।
शानयाकी (सं० स्त्री०) वृक्ष विशेष, फल विशेष, खिरहरी।
शानशौक़त (फ़ा० सं० पु०) भोगविलास, शौक़ीनी, आनन्द-मङ्गल ।

शान्त (वि०) ठंढा, स्थिर, नम्र, चुप, बन्द, मुनि, शान्ति-युक्त, चंचलतारहित, नवरसों में से एक रस।
शान्तनु (सं० पु०) एक राजा, ये चन्द्रवंशी थे, इनके पिता का नाम प्रतीप था, भीष्म पितामह इन्हीं के पुत्र थे। गङ्गा से इनका ब्याह हुआ था, योजन-गन्धा नाम की मल्लाह की कन्या से वृद्धावस्था में इन्होंने ब्याह किया था। योजनगन्धा का दूसरा नाम सत्यवती भी था।
शान्ति (सं० स्त्री०) शम, उपशम, चञ्चलता का अभाव, काम क्रोध आदि विकारों का वश में करना, सहन, ब्याह आदि से वे कर्म जो विघ्न दूर करने के लिये किये जाते हैं, स्थिरता। [दुआ।
शाप (सं० पु०) अनिष्ट चिन्तन, गाली, धिक्कार, बद-
शापित (वि०) शाप प्राप्त, जिसे शाप लगा हो।
शापोद्धार (सं० पु०) शापानुग्रह, शाप से मुक्त होने का उपाय।
शाबाश (अव्य०) धन्य, बहादुरी के समय का धन्यवाद।
शाबाशी (सं० स्त्री०) बहादुरी, वीरता, धन्यता।
शाब्दिक (वि०) शब्द सम्बन्धी, केवल शब्दों से, शब्दों द्वारा प्रकट किया जाने वाला, शब्द शास्त्रज्ञ, व्याकरण का ज्ञाता।
शाम (सं० स्त्री०) सन्ध्या, सायंकाल, सूर्यास्त का समय (वि०) काला रंग, श्याम वर्ण (सं० पु०) श्रीकृष्ण।
शामत (अ० सं० स्त्री०) बुराई, ख़राबी, दुर्भाग्य, बुरे चिह्न, बदक़िस्मती। [अन्न।
शामा (सं० स्त्री०) एक पक्षी का नाम, एक प्रकार का
शामियाना (फा० सं० पु०) चाँदनी, चँदोवा, बड़ी चाँदनी जो खम्भों के सहारे खड़ी की जाती है, वस्त्रगृह।
शामिल (अ०वि०) संयुक्त, सम्मिलित, एकत्रित, एक साथ।
शामूक (सं० पु०) शम्बूक, सीपी, घोंघा। [जादू, टोना।
शाम्बरी (सं० स्त्री०) शम्बर निर्मित, माया, इन्द्रजाल,
शाम्भव (सं० पु०) शिव का अनुयायी, शिव का भक्त, शैव सम्प्रदायी, वीर, शैव, गुग्गुल, कपूर।
शायक (सं० पु०) तीर, बाण, शर।
शायद (अ० अव्य०) सम्भवतः, अर्द्ध स्वीकारबोधक।
शायर (अ० सं० पु०) कवि, कविता करने वाला, शूर, बहादुर, वीर। [बनाना।
शायरी (अ० सं० स्त्री०) कवि-कर्म, काव्य-रचना, कविता
शायस्तगी (सं० स्त्री०) शिष्टता, सज्जनता, उत्सुकता।
शायस्ता (फ़ा० वि०) सभ्य, सज्जन, भलामानुस, शिष्टा-चारज्ञाता।
शायी (वि०) सोने वाला, शयन करने वाला, निद्रालु, यह शब्द दूसरे शब्दों के साथ मिलकर प्रयुक्त होता है, यथा शेषशायी, जलशायी आदि।
शारद (वि०) शरत् सम्बन्धी, शरद ऋतु का (सं० स्त्री०) शारदा। [देवी, वाग्देवी।
शारदा (सं० स्त्री०) सरस्वती, विद्या की अधिष्ठात्री
शारदी (वि०) शरद ऋतु में होने वाला, शरद ऋतु का (सं० स्त्री०) शरद ऋतु में होने वाली भगवान् की पूजा, पूर्णिमा, कार्तिक की पूर्णिमा।
शारदोत्सव (सं० पु०) शरद ऋतु में होने वाला उत्सव, शादी, पूर्णिमा का उत्सव।
शारिका (सं० स्त्री०) साड़ी, स्त्रियों के पहनने का कपड़ा।
शारीरिक (वि०) शरीर सम्बन्धी, शरीर से उत्पन्न होने वाला, शरीर का, सुख दुःख, पीड़ा, ग्रन्थ विशेष, वेदान्त के व्यास सूत्र का शंकराचार्य का बनाया हुआ भाष्य, आत्मा, जीव, शरीर की अधिष्ठता।
शारंग (सं० पु०) पपीहा, मृग, हाथी, भौंरा, मोर, धनुष, मधुमक्खी, दीपक।
शार्क (सं० पु०) चीनी, शर्करा (अंग्रे० सं० पु०) मत्स्य विशेष, एक तरह की मछली।
शार्ङ्ग (वि०) सींग का बना हुआ, सींग का विकार (सं० पु०) धनुष, विष्णु का धनुष, एक पक्षी।
शार्दूल (सं० पु०) व्याघ्र, सिंह, श्रेष्ठ, यह शब्द जिस संज्ञावाचक शब्द के अन्त में जुड़ता है उसकी श्रेष्ठता का बोधन करता है, नरशार्दूल आदि, एक पक्षी, यह पक्षी बहुत बड़ा होता है, हाथी के समान बड़ी चीज़ को लेकर उड़ जाना इसके लिये कोई बड़ी बात नहीं।
शाल (सं० पु०) वृक्ष विशेष, साल वृक्ष, मछली का एक भेद, चिरौंजी, काँटा, छेद, शृगाल, शोभा, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा, दुशाला, काश्मीरी शाल, घन (सं० स्त्री०) घर, मकान जैसे घुड़शाल, हाथी-शाल इत्यादि।
शालक (सं० पु०) सालने वाला, छेदने वाला, दुःख देने वाला, सताने वाला, साला, स्त्री का भाई।

शालग्राम (सं० पु०) विष्णु, विष्णु की मूर्ति, शालग्रामी नदी में निकलने वाला गोल काला पत्थर, यह विष्णु की प्रतिमा समझी जाती है और इसकी पूजा होती है ।

शालपर्णी (सं० स्त्री०) एक औषध का नाम, एक बूटी ।

शाला (सं० स्त्री०) घर, स्थान, मकान, रहने की जगह, यह शब्द दूसरे शब्दों के साथ जुड़ कर प्रयुक्त होता है, यथा धर्मशाला, पाठशाला (सं० पु०) साला, स्त्री का भाई ।

शालि (सं० पु०) धान, चावल । [दुःख देने वाली ।

शालिनी (सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम, छेदने वाली,

शालिवाहन (सं० पु०) एक राजा का नाम, इन्होंने शक नामक संवत् चलाया, ये राजा विक्रमादित्य के प्रधान शत्रु थे । एक सिक्का जिसका चलन ईसवी सन् से ७८ वर्ष पहले था ।

शाली (सं० स्त्री०) स्त्री की बहिन (वि०) सालने वाला, छेदने वाला, शोभित होने वाला, सुन्दर मालूम होने वाला, "वान् ,युक्त,वन्त" आदि शब्दों का अर्थबोधक, यथा, भाग्यशाली, प्रतिभाशाली, शोभाशाली आदि ।

शालीना (सं० पु०) सोआ का साग ।

शालमल (सं० पु०) एक द्वीप का नाम ।

शालमली (सं० पु०) वृक्ष विशेष, सेंमल का वृक्ष ।

शावक (सं० पु०) बच्चा, छोटा बच्चा, चिड़ियों का बच्चा, पशुओं का बच्चा ।

शाबर (सं० पु०) मन्त्र शास्त्र विशेष, पाप, अपराध, एक जंगली जन्तु । [सदा, सर्वदा ।

शाश्वत (क्रि० वि०) लगातार, निरन्तर, नित, हमेशा,

शासक (सं० पु०) अधिकार, स्वामी, राजा, प्रभु, शासन करने वाला, दण्डदाता, दण्ड देने वाला ।

शासन (सं० पु०) हुकूमत करना, दण्ड देना, राज्य करना, हुकूमत करना, नसीहत, शिक्षा, दण्ड, सज़ा । [करने का अधिकार-पत्र ।

शासनपत्र (सं० पु०) हुकूमत करने की आज्ञा, हुकूमत

शासनप्रणाली (सं० स्त्री०) शासन करने का ढंग, राज्य करने की रीति, राज्यव्यवस्था ।

शासनीय (वि०) शासन के योग्य, आज्ञा देने के योग्य, दण्ड देने के योग्य, अपराधी ।

शासित (वि०) शासन किया हुआ, दण्डित, दंड प्राप्त ।

शासिता (सं० पु०) शासन करने वाला, हाकिम, शिक्षक, अधिकारी ।

शास्ता (सं० पु०) अधिकार, शासन करने वाला ।

शास्ति (सं० स्त्री०) दण्ड, अपराधी का दंड, राज्य करना, व्यवस्था करना, हुकूमत करना, दंड, सज़ा ।

शास्त्र (सं० स्त्री०) पुस्तक या पुस्तकों का समूह जिनमें नियम हों या किसी सिद्धान्त का निरूपण युक्ति और प्रमाणों द्वारा किया गया हो । शास्त्र शब्द से प्रसिद्ध छः शास्त्र समझे जाते हैं, उनके नाम ये हैं, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त, मीमांसा, अन्य विषयों की पुस्तकें भी शास्त्र कही जाती हैं, यथा अर्थशास्त्र, धर्म शास्त्र, अलंकार शास्त्र आदि ।

शास्त्रज्ञ (सं० पु०) शास्त्र जानने वाला ।

शास्त्रार्थ (सं० पु०) संवाद, शास्त्रीय विवाद, बहस मुबाहसा, उत्तर प्रत्युत्तर । [ब्राह्मणों की पदवी ।

शास्त्री (सं० पु०) शास्त्र ज्ञाता, पण्डित, विद्वान् , महाराष्ट्र

शास्त्रीय (वि०) शास्त्र विहित, शास्त्रानुकूल, शास्त्र का ।

शास्त्रोक्त (सं० पु०) शास्त्र कथित, शास्त्र सम्मत ।

शाह (फ़ा० सं० पु०) बादशाह, राजा, स्वामी, प्रभु, मुसलमान फ़क़ीरों की एक उपाधि ।

शाही (वि०) शाह संबन्धी, शाह का, बादशाह का, बादशाही, राज्यासन । [चक्रवर्ती ।

शाहनशाह (सं० पु०) बादशाह, राजाधिराज, सम्राट,

शाहनशाही (सं० स्त्री०) बादशाही, राज्य, राष्ट्र, साम्राज्य ।

शिंसपा (सं० पु०) एक वृक्ष का नाम, सीसम का पेड़ ।

शिकंजा (सं० पु०) धपकल, यन्त्र विशेष, लकड़ी का बना एक यन्त्र, जिसमें जिल्दबन्द पुस्तकें रखकर कसते हैं । [जड़ का अंकुर ।

शिकड़ (सं० पु०) बाज़, गुल्का, पक्षी विशेष, मूल, जड़,

शिकन (फ़ा० सं० स्त्री०) सिकुड़न ।

शिकस्त (फ़ा० सं० पु०) पराजय, पराभव, हार, दुर्गति ।

शिकहर (सं० पु०) छींका, शिक्य ।

शिकायत (अ० सं० स्त्री०) निन्दा, दुर्नाम, दुर्देश, अपवाद, कलंक-घोषणा ।

शिकार (सं० पु०) आखेट, मृगया, पशु पक्षी आदि को लक्ष्य करना ।

मुहा०—शिकार बनाना = तंग करना, सताना ।

शिकारी (वि०) शिकार करने वाला, क्रूर, हत्यारा, जीव-हिंसक, व्याध।

शिक्य (सं० पु०) सिकहर, छींका, रस्सी की बनी एक जाली जो छत आदि में बाँध दी जाती है और उस पर चीज़ें रक्खी जाती हैं। [पक, उपदेशक, गुरु।

शिक्षक (सं० पु०) सिखाने वाला, पढ़ाने वाला, अध्या-

शिक्षा (सं० स्त्री०) सीख, उपदेश, पढ़ाई, अध्ययन, पढ़ने का काम, एक वेदाङ्ग इसमें वैदिक शब्दों के उच्चारण की विधि बतलाई गई है।

शिक्षापत्र (सं० पु०) वसीयतनामा।

शिक्षाप्रकरण (सं० पु०) शिक्षा व्यवस्थापक कार्यालय, राज्य का वह विभाग जो शिक्षा की व्यवस्था करता है। [पढ़ा लिखा।

शिक्षित (वि०) सीखा हुआ, पढ़ा हुआ, निपुण, प्रवीण,

शिखण्डी (सं० पु०) मोर, मयूर, राजा द्रुपद के एक पुत्र का नाम, यह नपुंसक था।

शिखर (सं० पु०) पर्वत की चोटी, पर्वत का ऊपरी भाग, कंगूरा, चोटी, शृंग।

शिखरी (सं० पु०) पहाड़, पर्वत, भूधर।

शिखा (सं० स्त्री०) चोटी, चुटिया, शिर पर के लंबे बाल जो धार्मिक दृष्टि से रखा जाता है, दीन, अग्नि की ज्वाला, लौ, पर्वत, शृंग। [चोटी।

शिखाचूड़ (सं० पु०) जटाजूट, केशपास, माथे पर की चोटी,

शिखावल (सं० पु०) मयूर, मोर, पक्षी विशेष।

शिखी (सं० पु०) अग्नि, आग, मोर, मयूर, वृक्ष विशेष जटाधारी, शिखाधारी, लम्बी शिखा वाला।

शिथिल (वि०) ढीला, थका, सुस्त, आलसी, धीमा, दुबला, निर्बल, कमज़ोर।

शिथिलता (सं० स्त्री०) आलस्य, ढीलापन, थकावट।

शिम्बि(सं०स्त्री०) सेम, एक लता, जिसकी छोटी छोटी फलियाँ होती हैं और उनकी तरकारी बनायी जाती है।

शिर (सं० पु०) मस्तक, माथा, सिर, कपाल।

शिरा (सं० स्त्री०) नाड़ी, नस, शरीर में रक्त वहन करने वाली नाड़ियाँ, टोपी।

शिरीष (सं० पु०) वृक्ष विशेष, सिरिस का पेड़।

शिरोधरा (सं० स्त्री०) गला, गर्दन, ग्रीवा, जो शिर को धारण करे।

शिरोमणि (सं० पु०) शिर का एक गहना (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, महान्, अपनी जाति में श्रेष्ठ।

शिरोरुह (सं० पु०) बाल, केश।

शिला (सं० स्त्री०) पत्थर, चट्टान, पत्थर की पटिया, मसाला आदि पीसने के काम में आने वाली पत्थर की पटिया।

शिलाजीत (सं० पु०) शिला-रस, शैलज, पर्वत में उत्पन्न एक प्रकार का लसीला पदार्थ जो दवा के काम आता है।

शिलायन्त्र (सं० पु०) पत्थर की कल, लीथो प्रेस, पत्थर का प्रेस जिसपर पहले ज़माने में छापने का काम होता था।

शिला-वृष्टि (सं० स्त्री०) ओले की वृष्टि।

शिलीमुख (सं० पु०) बाण, तीर, भ्रमर, भौंरा।

शिलोच्चय (सं० पु०) पर्वत, पहाड़, पत्थर का ढेर, पत्थर की राशि।

शिल्प (सं० पु०) हुनर, चित्र आदि कर्म, कारीगरी, गुण, आवश्यक सामग्रियों के निर्माण का नाम। [वाला।

शिल्पक (सं० पु०) कारीगर, शिल्पी, शिल्प जानने

शिल्पकार (सं० पु०) कारीगर, शिल्पी।

शिल्पविद्या (सं० स्त्री०) कारीगरी सम्बन्धी ज्ञान।

शिल्पशाला (सं० स्त्री०) कारख़ाना। [वाला।

शिल्पी (सं० पु०) कारीगर, कारीगरी का काम करने

शिव (सं० पु०) महादेव, महेश, तमोगुण के अधिष्ठाता देवता, प्रलय कारी देवता, मंगल, कल्याण, सुख।

शिवगिरि (सं० पु०) शिव का पर्वत, वह पर्वत जिसके स्वामी शिव हैं, कैलास पर्वत।

शिवपुरी (सं० स्त्री०) काशी, वाराणसी।

शिवरात्रि (सं० स्त्री०) प्रत्येक मास की कृष्ण चतुर्दशी, फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी, इस दिन शिव की पूजा होती है, यह शिव का जन्म-दिन है।

शिवलोक (सं० पु०) कैलास।

शिवसेनानी (सं० पु०) कार्त्तिकेय। [रिन।

शिवा (सं० स्त्री०) पार्वती, उमा, दुर्गा, श्रीगाली, सिया-

शिवालय (सं० पु०) शिव का मन्दिर, शिव का स्थान।

शिवाला (सं० पु०) शिवालय, शिव का मन्दिर।

शिवि (सं० पु०) राजा उशीनर के पुत्र, ये राजा ययाति के पौत्रिक थे और बड़े दयालु थे, एक बार इनकी

दयालुता की परीक्षा लेने के लिये इन्द्र इनके पास आये। इन्द्र ने बाज़ पक्षी का रूप धारण किया और अग्नि ने कबूतर का। कबूतर रूपधारी अग्नि ने जाकर राजा शिवि से अपनी रक्षा की प्रार्थना की बाज़ रूपधारी इन्द्र ने कहा, यह मेरा भक्ष्य है, मैं भूखा हूँ, इसे छोड़ दो, नहीं तो तुम्हें अधर्म होगा, शिवि ने कहा मैं इसे छोड़ नहीं सकता, तुम अपने भोजन का और उपाय करो। तब इन्द्र ने राजा से कहा कि इस कबूतर के बराबर अपने शरीर का मांस तुम दो। राजा शिवि अपने शरीर से मांस तौलने लगे, पर कबूतर के बराबर न हुआ। अन्त में इन्द्र प्रसन्न हुए और उन्होंने शिवि को बर दिया।

शिविका (सं० स्त्री०) पालकी, डोली, एक प्रकार की सवारी जिसे मनुष्य ले चलते हैं।

शिविर (सं० पु०) पड़ाव, उतारा, सेना के ठहरने की जगह, छावनी, सेना विशेष।

शिशिर (सं० पु०) जाड़े की ऋतु, माघ और फागुन का महीना, पाला, सर्दी, हिम।

शिशु (सं० पु०) बालक, बच्चा, छोटा बच्चा।

शिशुकाल (सं० पु०) बच्चापन, बाल्यकाल।

शिशुता (सं० स्त्री०) बालपन, लड़कई, लड़कपन, चञ्चलता, लड़कों का खेल।

शिशुपाल (सं० पु०) चेदि देश का राजा, इसके पिता का नाम दमघोष था, यह श्रीकृष्ण की बुआ सुप्रभा का लड़का था, यह स्वाभाविक दुष्ट था, श्री कृष्ण से यह बड़ी शत्रुता रखता था, इस कारण यह श्रीकृष्ण के हाथ से मारा गया।

शिशुमार (सं० पु०) जलजन्तु विशेष, मगरमच्छ, आकाश में दीख पड़ने वाला ताराओं का एक समूह, जिसे आकाश गंगा कहते हैं।

शिश्न (सं० पु०) पुरुष-चिह्न, पुरुषेन्द्रिय, लिङ्ग। [ष्ठित।

शिष्ट (वि०) सज्जन, भलामानुस, सभ्य, सदाचारी, प्रति-

शिष्टई (सं० स्त्री०) शिष्टता, सज्जनता, भलमनसाहत, सदाचारिता। [आदमियों का बर्ताव।

शिष्टता (सं० स्त्री०) सदाचार, सभ्यता, कुलीनता, अच्छे

शिष्टाचार (सं० पु०) आवभगत, सत्कार, अतिथि-सत्कार। [वाला, मन्त्र ग्रहण करने वाला।

शिष्य (सं० पु०) चेला, विद्यार्थी, छात्र, उपदेश लेने

शीकर (सं० पु०) जलकण, जलविन्दु, फुहारा, फूँही, वायु, पेड़ का पका आम।

शीघ्र (अव्य०) तुरत, जल्द, झटपट, तूर्ण। [वाला।

शीघ्रग (वि०) शीघ्र चलने वाला, वेगवान, जल्दी चलने

शीघ्रगामी (वि०) तेज़ चलने वाला, त्वरितगामी, वेग चलने वाला, दौड़कर चलने वाला।

शीघ्रता (सं० स्त्री०) जल्दी, उतावली, फुर्ती। [पाला, ठंढ।

शीत (वि०) ठंढा, सर्द, सुस्त (सं० पु०) जाड़ा, सर्दी,

शीतकटिबन्ध (सं० पु०) पृथिवी के २३½ अंश उत्तर और २३½ अंश दक्षिण का भूमिखण्ड।

शीतकर (सं० पु०) ठंढी किरणों वाला, चन्द्रमा, शीतांशु, कपूर। [ऋतु, जड़ काल।

शीतकाल (सं० पु०) जाड़े का दिन, हेमन्त और शिशिर

शीतज्वर (सं० पु०) जाड़े का बुखार, जाड़ा देकर आने वाला बुखार, जड़ैया ज्वर।

शीतल (वि०) शीत विशिष्ट, सर्द, ठंढा।

शीतलता (सं० स्त्री०) ठंढापन, सर्दी, शीत गुण।

शीतलताई (सं० स्त्री०) शीतलता, ठंढापन, सर्दी।

शीतला (सं० स्त्री०) एक देवी का नाम, एक रोग, चेचक, गोटी का निकलना, माता निकलना। इस रोग में देवी का आराधना की जाती है लोगों का विश्वास है कि यह रोग शीतला देवी के ही कारण होता है, इसके कारण वे ही देवी हैं।

शीतलाष्टमी (सं० स्त्री०) चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी, इस दिन शीतला देवी की पूजा होती है।

शीतांशु (सं० पु०) चन्द्रमा, शीतकर।

शीताङ्ग (सं० पु०) रोग विशेष, पक्षघात का रोग, अर्द्धांग वायु जनित एक रोग, इस रोग में अंग शिथिल हो जाते हैं, निकम्मे हो जाते हैं।

शीतार्त्त (वि०) जाड़े से दुःखित, शीत-पीड़ित।

शीतोष्ण (वि०) सर्द गर्म, सर्दी गर्मी, सुख दुःख, द्वन्द्व।

शीहरा (सं० पु०) हलुआ, मोहनभोग।

शीर्ण (वि०) कृश, दुर्बल, शुष्क, सूखा, प्राचीन, जीर्ण, फटा पुराना, बिलकुल निकम्मा।

शीर्णता (सं० स्त्री०) जीर्णता, दुर्बलता, निकम्मापन।

शीर्ष (सं० पु०) माथा, सिर, मस्तक, कपार, सीस।

शील (सं० पु०) अच्छा स्वभाव, अच्छा चाल-चलन, मुरौअत, सङ्कोची स्वभाव, विनयी स्वभाव।

शीलवान् (वि०) सुशील, विनयी, नम्र, मिलनसार।
शीशम (सं० पु०) एक वृक्ष का नाम, इसकी लकड़ी बड़ी मज़बूत होती है। [का शीशा जड़ा मकान।
शीशमहल (सं० पु०) शीशे का मकान, राजाओं के रहने
शीशा (सं० पु०) काँच, काँच के बर्तन, दर्पण, ऐनक, मुँह देखने का दर्पण। [आदि रखने के काम आता है।
शीशी (सं० स्त्री०) शीशे का बना छोटा पात्र जो तेल
शीस (सं० पु०) माथा, मस्तक, शिर।
शुक (सं० पु०) तोता, सुग्गा, पक्षी विशेष, रावण के एक दूत का नाम, सारण का भाई या साथी, शुकदेव मुनि, देखो "शुकदेव"।
शुकदेव (सं० पु०) एक मुनि, व्यास-पुत्र, ये बालब्रह्मज्ञानी थे। अपने पिता तथा राजा जनक से इन्होंने मोक्ष धर्म की शिक्षा प्राप्त की थी, राजा परीक्षित को इन्होंने सात दिनों में मोक्ष धर्म का उपदेश किया था।
शुकाचार्य (सं० पु०) शुकदेव, व्यास-पुत्र।
शुक्ति (सं० स्त्री०) सीपी, शंख, घोंघा, चक्षु रोग विशेष, अर्श रोग, बवासीर।
शुक्तिमुक्ता (सं० स्त्री०) सीप की मोती, मोती।
शुक्र (सं० पु०) ग्रह विशेष, छठा ग्रह, एक मुनि, जो महर्षि भृगु के पुत्र थे, ये बड़े नीति निपुण थे, शुक्र नीति नाम की एक पुस्तक इनके नाम से प्रसिद्ध है, कहा जाता है कि इनके कर्ता येही हैं। ये राक्षसों के गुरु थे। इन्हीं के उपदेश के अनुसार राक्षस देवताओं को तंग किया करते थे। अग्नि, आग, वीर्य, बीज, ज्येष्ठ मास, बल, सामर्थ्य, धन्यवाद, साधुवाद।
शुक्रगुज़ार (फ़ा० वि०) उपकृत, किसी के द्वारा जिसकी भलाई हुई हो, अधीन, धन्यवाद देने वाला।
शुक्रवार (सं० पु०) छठा दिन, शुक्रग्रह का दिन।
शुक्राचार्य (सं० पु०) शुक्र, एक मुनि का नाम।
शुक्रिया (सं० पु०) धन्यवाद, साधुवाद।
शुक्ल (सं० पु०) श्वेत, स्वच्छ, धवल, उजला, सफ़ेद, श्वेत रंग वाला, ब्राह्मणों की एक पदवी, पुण्यकर्म, स्वर्ग ले जाने वाले कर्म।
शुक्लपक्ष (सं० पु०) सुदी, उजेला पाख।
शुचि (सं० स्त्री०) पवित्रता, सफ़ाई, स्वच्छता, शुद्धता (वि०) स्वच्छ, साफ़, शुक्ल, विशद, पवित्र।
शुचिमणि (सं० पु०) स्फटिक।
शुचिस्मित (सं० पु०) मृदु हास्य।
शुण्ठी (सं० पु०) सोंठ, सूखा अदरख।
शुण्ड (सं० पु०) सूँड़, हाथी का कर, हाथी की नाक।
शुदनी (फ़ा० सं० स्त्री०) भावी, योग, योगायोग।
शुदि (सं० स्त्री०) शुक्ल पक्ष, अँजोरा पाख।
शुद्ध (वि०) पवित्र, साफ़, स्वच्छ, सफ़ेद, उज्ज्वल, निर्दोष, अशुद्धि-रहित, निर्दोष, सही, गलत नहीं, ठीक, ख़ालिस, मिलावट नहीं। [निर्दोषित, स्वच्छता।
शुद्धता (सं० स्त्री०) पवित्रता, शुद्धि, दोष रहित होना,
शुद्धि (सं० स्त्री०) शुद्ध होना, सुधार करना, सफ़ाई।
शुद्धिपत्र (सं० पु०) वह पत्र, जिसमें छपने के समय पुस्तक में रही अशुद्धियाँ बतलाई गई हों।
शुद्धोदन (सं० पु०) कपिलवस्तु के राजा का नाम, ये भगवान् बुद्ध देव के पिता थे।
शुनःशेफ (सं० पु०) महर्षि ऋचिक का पुत्र, पिता ने इसे बेच दिया था, राजा अम्बरीष ने यज्ञ में बलिदान के लिये इसे ख़रीदा था, महर्षि विश्वामित्र की दयालुता से इसके प्राण बचे थे। इसने ऋग्वेद के कई सूत्रों का आविष्कार किया है।
शुभ (सं० पु०) कल्याण, मङ्गल, सुन्दर, सुभाग, स्त्रियों के अनुकूल पति (वि०) अच्छा, भला, कल्याणकारी, मङ्गलदायक।
शुभग (वि०) सुन्दर, मनोहर।
शुभगता (सं० स्त्री०) सुन्दरता, मनोहरता।
शुभङ्कर (वि०) शुभ करने वाला, शुभकारी, मङ्गलकारी।
शुभचिन्तक (वि०) हितैषी, भलाई चाहने वाला, कल्याणेच्छु।
शुभलग्न (सं० पु०) अच्छा समय, अच्छा मुहूर्त, ब्याह का मुहूर्त। [हितैषी।
सुभकाङ्क्षा (वि०) हित-चिन्तक, शुभ चाहने वाला,
शुभ्र (सं० पु०) श्वेत, सफ़ेद, उज्ज्वल, उजला (गु०) निर्मल, चमकीला, चमकदार, श्वेत वर्ण का।
शुम्भ (सं० पु०) एक दैत्य का नाम, इसके भाई का नाम निशुम्भ था, इन दोनों को देवी ने मारा था, देखो "निशुम्भ"।
शुरू (अ० सं० पु०) प्रारम्भ, आदि।
शुल्क (सं० पु०) कर, महसूल, किराया, भाड़ा।
शुशकारना (क्रि० स०) "शूशू" कर के कुत्ते को ललकारना, पुचकारना, बढ़ावा देना, उत्तेजित करना।

शुशकारी (सं० स्त्री०) बढ़ावा देने का शब्द, शुशकारने का शब्द।

शुश्रूषक (सं० पु०) सेवा कराने वाला, सेवक, नौकर।

शुश्रूषा (सं० स्त्री०) सेवा, टहल, नौकरी, ख़ुशामद, सुनने की इच्छा।

(सं० पु०) एक वानर इसकी कन्या तारा का विवाह बालि से हुआ था ये बड़े वैद्य थे, लक्ष्मण को जब शक्ति लगी थी और वे मूर्च्छित हो गये थे उस समय इन्होंने ही उनको अच्छा किया।

शुष्क (वि०) सूखा, सूखा हुआ, नीरस, रसहीन।

शुहदा (सं० पु०) लम्पट, गुंडा, विलासी, उच्छृङ्खल, असदाचारी। [तार।

शूकर (सं० पु०) सुअर, बराह, विष्णु का तीसरा अव-

शूकरखेत (सं० पु०) शूकर-क्षेत्र, एक तीर्थ का नाम।

शूद्र (सं० पु०) चतुर्वर्ण में से एक वर्ण, चौथा वर्ण, कहार, नाऊ, बारी आदि।

शूद्री (सं० स्त्री०) शूद्र जाति की स्त्री।

शून्य (वि०) छूँछा, ख़ाली, एकान्त, निर्जन-स्थान, आकाश, विन्दु, रिक्त।

शून्यता (सं० स्त्री०) छूँछापन, ख़ाली होना, रिक्तता।

शून्यवादी (सं० पु०) नास्तिक, एक प्रकार के बौद्ध, जिनका दार्शनिक सिद्धान्त शून्यवाद है। [वाला।

शूपकार (सं० पु०) रसोइया, पाचक, रोटी बनाने

शूर (वि०) साहसी, वीर, बहादुर, सूरमा (सं० पु०) यादव-राज, शूरसेन, सिंह, सूर्य, सुअर, साल का पेड़, अन्धा।

शूरता (सं० स्त्री०) वीरता, बहादुरी, साहस।

शूरन (सं० पु०) ज़मींकन्द, मूल विशेष।

शूरवीर (वि०) योद्धा, वीर, स्वाभाविक उत्साही वीर।

शूरसेन (सं० पु०) देश विशेष, प्राचीन मथुरा प्रान्त के राजा, ये श्रीकृष्ण के दादा थे।

शूर्प (सं० पु०) सूप, सींक का बना एक प्रकार का पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है।

शूर्पनखा (सं० पु०) रावण की बहिन का नाम, यह वनवास के समय रामचन्द्र के पास आयी थी और उनसे ब्याह करने की इच्छा प्रकट की थी, रामचन्द्र की इच्छा से लक्ष्मण ने इसकी नाक काट ली थी।

शूल (सं० पु०) रोग विशेष, पेट की पीड़ा, अस्त्र विशेष, लोहे का तीखा काँटा, अग्नि के अस्त्र का नाम।

शूली (सं० पु०) शिव, महादेव (वि०) शूली रोग वाला।

शृगाल (सं० पु०) गीदड़, सियार, यह चौपायों में बड़ा चतुर और डरपोक होता है। [सिक्कड़।

शृङ्खल (सं० पु०) करधनी, साँकल, ज़ंजीर, सिकरी,

शृङ्खला (सं० स्त्री०) साँकल, सिकरी, कटिबन्धन, अग-बन्ध, करधनी, सिलसिला।

शृङ्खलित (वि०) साँकल के समान नथा हुआ।

शृङ्ग (सं० पु०) सींग, शिखर, पहाड़ की चोटी, पहाड़ के ऊपर का भाग, चिह्न, बड़ाई, प्रभुत्व, प्रधानता, कामाद्रिक, काम की उत्तेजना।

शृङ्गवेर (सं० पु०) अदरख, एक प्राचीन नगर का नाम, रामचन्द्र के मित्र गुह नामक निषाद राजा की राज-धानी।

शृङ्गार (सं० पु०) सजावट, गहना कपड़ा आदि से सजना, शरीर को साफ़ कर सजाना, नव रसों में से एक रस, प्रथम रस, आदि रस, इसमें रतिस्थायी भाव है, नायक नायिका आलम्बन भाव, चन्द्र, चन्दन, भ्रमर, झंकार आदि उद्दीपन पदार्थ, स्त्रियों का वस्त्राभूषण पहनना, शृंगार सोलह कहे जाते हैं।

शृङ्गारित (वि०) सजा हुआ, सजाया हुआ।

शृङ्गी (वि०) सींग वाला, जिसके सींग हों, औषध विशेष, एक ऋषि का नाम, इन्हीं के शाप से राजा परीक्षित को साँप ने काटा था।

शेख़चिल्ली (सं० पु०) प्रसिद्ध मसख़रा, हँसाने वाली कई कहानियाँ, शेख़चिल्ली के नाम से प्रसिद्ध हैं।

शेखर (सं० पु०) फूलों की माला, मस्तक पर धारण की जाने वाली पुष्प-माला, मुकुट, किरीट, सिर का गहना, शिखा, चोटी, मस्तक, सिर।

शेख़ी (सं० स्त्री०) अहङ्कार, अभिमान, शान।

शेयान (वि०) चतुर, चालाक, धूर्त।

शेर (सं० पु०) व्याघ्र, बाघ।

शेरिनी (सं० स्त्री०) बाघिन, व्याघ्री।

शेल (सं० पु०) एक हथियार का नाम, बर्छी, भाला।

शेलु (सं० पु०) शाक विशेष, मेथी का साग, मेथी।

शेलमुख (सं० पु०) विल्व, बेल, श्रीफल, वृक्ष विशेष, फल विशेष। [(सं० पु०) सर्प, साँप, नाग, नागराज।

शेष (वि०) बाक़ी, बचा हुआ, अवशिष्ट अंश, सीमा

शेषकाल (सं० पु०) अन्त समय।

शेषशायी (सं० पु०) विष्णु, नारायण, पुराणों में लिखा है कि प्रलयकाल में त्रिलोक को पेट में रख कर विष्णु भगवान् क्षीर समुद्र में शेष नाग पर सोते हैं।
शेषावस्था (सं० स्त्री०) अन्तिम अवस्था, वृद्धावस्था, मृत्यु, मृत्यु का समय।
शैतान (अ० सं० पु०) असुर, धर्म कर्म विरोधी, बुरी वासनायें, बुरे भाव।
शैत्य (सं० पु०) शीतल, ठंढक, सर्दी, जाड़ा, शीतलता।
शैथिल्य (सं० पु०) शिथिलता, ढील, सुस्ती, आलस्य।
शैल (सं० पु०) पर्वत, पहाड़, गिरि (वि०) पहाड़ी, पथरीला। [पर्वत-श्रेष्ठ।
शैलराज (सं० पु०) पर्वतराज, हिमालय, हिमाचल,
शैलाट (सं० पु०) सिंह, किरात, भील।
शैली (सं० स्त्री०) रीति, प्रणाली, तरीक़ा, भाँति, प्रकार।
शैव (सं० पु०) धर्म, सम्प्रदाय विशेष, शिव के उपासकों का सम्प्रदाय, शिवभक्त (वि०) शिव संबन्धी, शिव का।
शैवाल (सं० पु०) पानी की एक पतली लता, सिवार, इसकी जड़ नहीं होती, यह लता पानी में फैलती है, चीनी साफ़ करने के काम आती है।
शैवी (सं० स्त्री०) पार्वती, एक देवी (वि०) शैव, शिवोपासक, शिवभक्त।
शैव्या (सं० स्त्री०) राजा हरिश्चन्द्र की रानी, इनके पुत्र का नाम रोहिताश्व था, राजा हरिश्चन्द्र के बड़े गाढ़े समय में भी इन्होंने उनका साथ नहीं छोड़ा था।
शैशव (सं० पु०) बालकपन, शिशुता, लड़कपन, लड़काई, बाल्यावस्था। [विलाप।
शोक (सं० पु०) दुःख, सोच, चिन्ता, सन्ताप, पछतावा,
शोकाकुल (वि०) पीड़ित, शोकयुक्त।
शोकापह (वि०) शोकनाशक, दुःखनाशक।
शोकार्त्त (वि०) शोक से दुखी, शोकाकुल।
शोख़ (फ़ा० वि०) ढीठ, धृष्ट, प्रगल्भ, बच्छृङ्खल, अभिमानी।
शोख़ी (सं० स्त्री०) ढिठाई, धृष्टता, अभिमान।
शोच (सं० पु०) चिन्ता, विचार, दुःख, अफ़सोस, अन्देशा। [पश्चात्ताप करना।
शोचना (क्रि० स०) विचार करना, निर्णय करना,
शोण (सं० पु०) एक पुष्प का नाम, लाल रंग, रक्त वर्ण।

शोणभद्र (सं० पु०) एक नदी का नाम, यह पटने के पास है।
शोणित (सं० पु०) रुधिर, रक्त, लोहू, ख़ून, केसर, कुंकुम (गु०) लाल वर्ण। [तृण विशेष, मूँज।
शोथ (सं० पु०) सूजन, रोग विशेष, अंगों की फूलन,
शोध (सं० पु०) शोधन, चुकाना, ऋण चुकाना, माँगना, मलना, शुद्ध करना, बदला। [कर शुद्ध करना।
शोधन (सं० पु०) शुद्ध करना, चुकाना, अशुद्धियाँ निकाल
शोधनी (सं० स्त्री०) बढ़नी, झाड़ू, साफ़ करने वाली, शोधन करने वाली, सम्मार्जनी।
शोधा (वि०) शुद्ध किया हुआ, खोजा गया, ढूँढ़ा गया, निर्दोष किया हुआ, औषध के लिये धातु उपधातुओं का दोष निकालना।
शोधित (वि०) शोधा, शुद्ध किया हुआ।
शोभन (वि०) उत्तम, उपयोगी, देखने और काम देने में उपयोगी, श्रेष्ठ, भला, निर्दोष। [सुन्दरता, झलक।
शोभा (सं० स्त्री०) छवि, कान्ति, दीप्ति, आब, ख़ूबसूरती,
शोभायमान (वि०) सुन्दर, मनोहर।
शोभित (वि०) अलंकृत, विभूषित।
शोर (सं० पु०) हल्ला, कोलाहाल, गुलगपाड़ा।
शोरबा (फ़ा० सं० पु०) झोल, पेय पदार्थ विशेष।
शोरा (सं० पु०) द्रव्य विशेष, सोडा, क्षार पदार्थ विशेष।
शोला (सं० पु०) वृक्ष विशेष, जिसकी छाल के कपड़े बनते हैं और जो पवित्र समझे जाते हैं, आग की लपट, ज्वाला। [देने वाला, शुष्क करने वाला।
शोषक (सं० पु०) शोषणकर्ता, सोखने वाला, सुखा
शोषण (सं० पु०) सोखना, चूसना।
शोषित (वि०) सूखा हुआ।
शोहदा (वि०) विलासी, छैल, लुच्चा।
शौक्तिक (सं० पु०) मोती, सीप, शुक्ति से उत्पन्न।
शौच (सं० पु०) पवित्रता, स्नान, शुचिता, शुद्धता, पवित्राचरण, निवृत्त होना, निपटना।
शौण्डिक (सं० पु०) कलवार, शराब बेचने वाला।
शौनक (सं० पु०) एक मुनि का नाम, नैमिषारण्य में ये तपस्या करते थे। बारह वर्ष में समाप्त होने वाला एक यज्ञ भी इन्होंने नैमिषारण्य में किया था।
शौरि (सं० पु०) श्रीकृष्ण, वासुदेव।

शौर्य (सं० पु०) शूरता, पराक्रम, वीरता, वीरभाव, उत्साह ।

शौल्किक (वि०) किराया वसूल करने वाले, किराया वसूल करने का नौकर, कर लेने वाला, तहसीलदार ।

श्मशान (सं० पु०) मसान, मरघट, मुर्दा जलाने की जगह ।

श्मश्रु (सं० पु०) मूँछ, मोछ ।

श्याम (वि०) काला, नीला, काला नीला मिला हुआ, कृष्णवर्ण (सं० पु०) श्रीकृष्ण, कोकिल, कोयल, देश विशेष, यह देश कन्नौज देश के पश्चिम ओर है ।

श्यामकर्ण (सं० पु०) एक प्रकार का घोड़ा, इसके कान काले, कन्धे का बाल पीला और शरीर श्वेत होता है। यह घोड़ा बड़ा ही उत्तम समझा जाता है, पर इसका मिलना बड़ा ही कठिन है। वह घोड़ा जो यज्ञ में बलिदान के लिये नियत किया जाता है ।

श्यामता (सं० स्त्री०) कृष्णता, कालापन, साँवलापन ।

श्यामल (वि०) साँवला, कृष्ण, काला, थोड़ा काला ।

श्यामसुन्दर (सं० पु०) श्रीकृष्ण ।

श्यामा (सं० स्त्री०) एक चिड़िया का नाम, यह काली होती है और इसकी बोली बड़ी मीठी होती है। काली स्त्री, साँवली स्त्री, तरुणी, युवती स्त्री, सुन्दर स्त्री, दश महा विद्या में से एक देवी ।

श्यामाक (सं०पु०) धान्य विशेष, साँवाँ ।

श्यालक (सं० पु०) साँवाँ, स्त्री का भाई, पत्नी का भ्राता ।

श्याला (सं० पु०) साला, स्त्री का भाई ।

श्येन (सं० पु०) बाज़, पक्षी विशेष ।

श्रद्धा (सं० स्त्री०) विश्वास, भरोसा, भक्ति, गुरु और शास्त्र की बातों पर दृढ़ विश्वास, आदर, इच्छा, चाह, बल, बड़ों के प्रति प्रेम ।

श्रद्धालु (वि०) श्रद्धावान्, श्रद्धायुक्त ।

श्रद्धेय (वि०) श्रद्धा करने योग्य, पूज्य, मान्य ।

श्रम (सं० पु०) मिहनत, थकावट, श्रान्ति, दौड़ धूप, कष्ट, परिश्रम, तप, तपस्या, आयास ।

श्रमकण (सं० पु०) पसीना, पसीने की बूँद, मिहनत से निकला पसीना ।

श्रमजीवी (सं० पु०) कुली, मजूर, श्रम से जीविका चलाने वाला, मेहनत से गुज़र करने वाला ।

श्रमित (वि०) थका हुआ, थका माँदा, श्रान्त, क्लान्त, मेहनत के कारण इन्द्रियों की शिथिलता, इन्द्रियों की असमर्थता ।

श्रमी (वि०) परिश्रमी, मेहनती ।

श्रवण (सं० पु०) कान, कर्णेन्द्रिय, सुनने का साधन, नक्षत्र विशेष, बाईसवें नक्षत्र का नाम । [जाय, कान ।

श्रवणेन्द्रिय (सं० पु०) जिस इन्द्रिय से शब्द ग्रहण किया

श्राद्ध (सं० पु०) पितृयज्ञ, वह काम जो पितरों की तृप्ति के लिये श्रद्धापूर्वक किया जाय, पिण्डदान, ब्राह्मण-भोजन, तर्पण आदि । [में निमन्त्रित ब्राह्मण ।

श्राद्धदेव (सं० पु०) धर्मराज, यमराज, ब्राह्मण, श्राद्ध

श्राद्धपक्ष (सं० पु०) आश्विन मास का कृष्ण पक्ष, जिसमें तर्पण पिण्डदान आदि किया जाता है ।

श्रान्त (वि०) थकित, थका हुआ, श्रमित ।

श्रान्ति (सं० स्त्री०) श्रम, परिश्रम, मेहनत ।

श्राप (सं० पु०) शाप, बद्दुआ, अनिष्ट-चिन्तन, अमङ्गल वाक्य ।

श्रावक (सं० पु०) जैन गृहस्थ, जैन धर्मानुयायी ।

श्रावण (सं० पु०) इस नाम का एक मास, महीना, सावन ।

श्रावणी (सं० स्त्री०) श्रावण की पूर्णिमा, उस दिन होने वाला कर्म, ब्राह्मणों का पर्व विशेष ।

श्रावणीकर्म (सं० पु०) श्रावण की पूर्णिमा को किये जाने वाले कर्म ।

श्री (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, कमला, विष्णुपत्नी, सम्पत्ति, धन, दौलत, शोभा, सुन्दरता, सम्मान बोधन के लिये नाम के पहले यह जोड़ा जाता है। यथा, श्रीराम, श्रीपुरी। युत, युक्तमान्, मती आदि शब्दों के साथ जोड़ कर भी सम्मान जताने के लिये नाम के साथ लगाया जाता है, यथा श्रीमान् रामचन्द्र, श्रीमती सीता, श्रीयुत लक्ष्मण ।

श्रीकान्त (सं० पु०) विष्णु, नारायण ।

श्रीखण्ड (सं०पु०) चन्दन, हरिचन्दन, दही और दूध के योग से बनाया हुआ एक प्रकार का खाद्य-पदार्थ ।

श्रीचक्र (सं० पु०) देवी की पूजा का यंत्र ।

श्रीचूर्ण (सं०स्त्री०) रोरी, कुङ्कुम ।

श्रीदामा (सं० पु०) सुदामा, श्रीकृष्ण के एक मित्र का नाम, ये बड़े दरिद्र थे, श्रीकृष्ण ने इन्हें धनी बनाया ।

श्रीधराचार्य (सं० पु०) एक विख्यात पण्डित, इन्होंने भागवत आदि की टीका लिखी है। [राजधानी।

श्रीनगर (सं० पु०) एक नगर का नाम, काश्मीर की

श्रीनिवास (सं० पु०) विष्णु, नारायण। [विशेष।

श्रीपञ्चमी (सं० स्त्री०) माघ महीने की शुक्ला पञ्चमी, व्रत

श्रीपति (सं० पु०) लक्ष्मीपति, नारायण।

श्रीफल (सं० पु०) बेल का वृक्ष और फल।

श्रीमत (वि०) धनवान, लक्ष्मीपात्र, धनी। [शिव, कुबेर।

श्रीमान् (वि०) श्रीयुक्त, लक्ष्मीवान्, धनी (सं०पु०) विष्णु,

श्रीमुख (वि०) शोभायुक्त मुख।

श्रीयुक्त (वि०) कीर्तिमान्, यशस्वी, धनी।

श्रीयुत् (वि०) लक्ष्मीवान्। [नाम।

श्रीरङ्गपटन (सं० पु०) दक्षिण के एक प्रसिद्ध नगर का

श्रीवत्स (सं० पु०) चिह्न विशेष, विष्णु के वक्षःस्थल का चिह्न, भृगु के चरण-प्रहार का चिह्न। [के पूर्व में है।

श्रीहट्ट (सं०पु०) एक नगर का नाम, सिलहट, यह नगर ढाका

श्रीहत (वि०) शोभाहीन, लक्ष्मीहीन, निष्प्रभ।

श्रुत (सं० पु०) यश, कीर्ति, नामवरी, प्रतिष्ठा, शास्त्र (वि०) सुना हुआ, पढ़ा हुआ।

श्रुतकीर्ति (सं० स्त्री०) शत्रुघ्न की स्त्री का नाम। इनके पिता का नाम कुशध्वज जनक या कुशकेतु जनक था।

श्रुति (सं० स्त्री०) कान, श्रवण, सुनना, समाचार, वेद।

श्रुवा (सं० पु०) यज्ञ पात्र विशेष, यह खैर की लकड़ी का चम्मच के समान एक हो लम्बा बनाया जाता है, इससे अग्नि में घृताहुति दी जाती है, श्रुवा कई प्रकार के बनाये जाते हैं। [भाग, चूतड़।

(सं० स्त्री०) कटि, कमर, कमर के नीचे का

श्रेणी (सं० स्त्री०) कतार, क्रमबद्ध, पंक्ति, पाँति।

श्रेय (सं० पु०) मंगल, कल्याण, कीर्ति, शुभ।

श्रेष्ठ (वि०) अच्छा, बहुत अच्छा, उत्तम, प्रधान अपनी श्रेणी में बड़ा, कल्याण-भाजन।

श्रेष्ठता (सं० स्त्री०) उत्तमता, प्रधानता।

श्रोतः (सं० पु०) कान, नदी का वेग। [बात।

श्रोतव्य (सं० पु०) सुनने योग्य, उत्तम बात, मङ्गल-जनक

श्रोता (सं० पु०) श्रवण करने वाला, सुनने वाला, विद्यार्थी, उपदेश सुनने वाला, वक्ता की बातें सुनने वाला। [कर्ण, सुनने की शक्ति।

श्रोत्र (सं० पु०) श्रवणेन्द्रिय, सुनने की इन्द्रिय, कान,

श्रोत्रिय (सं० पु०) वैदिक, वेद पढ़ने वाला, वेदपाठी, मैथिल ब्राह्मणों का एक भेद।

श्लाघा (सं० स्त्री०) सराहना, सराह, प्रशंसा, चाह, इच्छा, बड़ाई, स्तुति, प्रशंसा।

श्लाघ्य (वि०) श्लाघा के योग्य, सराहनीय, प्रशंसनीय।

श्लेष (सं० पु०) मिलाव, संयोग, आलिंगन, अर्थालंकार विशेष, जहाँ एक शब्द के प्रस्तुत और अप्रस्तुत दो अर्थ समान रूप से होते हैं वहाँ यह अलंकार होता है, यथा:—

कीकर पाकर तार जामन फलसा आमिला।
सेव कदम कचनार, पीपल रत्ती तून तज।

इसके दो अर्थ हैं, एक तो पेड़ों के नाम आये हैं। दूसरे इसके द्वारा नवेढ़ा स्त्री के कर्तव्य की शिक्षा दी गई है। [में से एक धातु।

श्लेष्मा (सं० पु०) कफ़, खखार, वैद्यक की तीन धातुओं

श्लोक (सं० पु०) संस्कृत के एक पद्य का नाम, अनुष्टुप् छन्द, यश, कीर्ति, नामवरी, प्रतिष्ठा।

श्वपच (सं० पु०) चाण्डाल, डोम, पञ्चम वर्ण।

श्वशुर (सं० पु०) ससुर, पति का पिता, पत्नी का पिता

श्वश्रू (सं० स्त्री०) सास, पति या पत्नी की माता।

श्वसन (सं० पु०) वायु, पवन, हवा।

श्वान (सं० पु०) कुत्ता, कुक्कुर। [आने वाली हवा, दम।

श्वास (सं० पु०) साँस, प्राण-वायु, नाक के द्वारा आने

मुहा०—श्वास रहते = जीते जी, प्राण पर्यन्त।

श्वित्र (सं० पु०) रोग विशेष, सफ़ेद कोढ़।

श्वेत (सं० पु०) श्वेत वर्ण, धौला रंग, शुक्ल, सफ़ेद चीज़, श्वेत गुण-वाचक पुल्लिङ्ग है और श्वेत गुण-वान के अर्थ में विशेषण है।

श्वेतकेतु (सं० पु०) महर्षि उद्दालक के पुत्र, ये अध्यात्म तत्त्व के प्रवीण ज्ञाता थे।

श्वेतता (सं० स्त्री०) शुक्लता, श्वेत गुण, उज्ज्वलता।

श्वेतद्वीप (सं० पु०) एक द्वीप का नाम, बैकुंठ, ह्वाइट लैंड।

श्वेतसर्षप (सं० पु०) पीली सरसों।

श्वेता (सं० स्त्री०) दूब, घास, तृण विशेष, श्वेत दूब।

श्वेतार्क (सं० पु०) ऋषि विशेष, ये महर्षि उद्दालक के पुत्र थे।

श्वेतिका (सं० स्त्री०) सौंफ़।

ष

ष—यह इकतीसवाँ व्यञ्जन है, इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है इस कारण इसे मूर्द्धन्य कहते हैं (सं० पु०) केश, हृदय (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।
षट् (वि०) संख्यावाचक, छः की संख्या।
षट् ऊर्मि (सं० पु०) देखो "षडूर्मि"
षट्कर्म (सं० पु०) आडम्बर, पूजा-पाठ आदि, स्नान सन्ध्यावन्दन आदि, ब्राह्मणों के स्वाभाविक कर्म, वेद पढ़ना और पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना, दान लेना और देना, योग के नेती धोती आदि कर्म।
षट्कोण (सं० पु०) छः कोन का।
षट्चक्र (सं० पु०) शरीरस्थ छः चक्र, योगीगण जिसका भेद नहीं करते हैं। उनके नाम ये हैं, आधार, स्वधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धि, प्रज्ञा।
षट्पदा (सं० पु०) भौंरा, भ्रमर, मधुप।
षट्पदी (सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम, छप्पय छन्द।
षट्प्रयोग (सं० पु०) तन्त्र सम्बन्धी प्रयोग विशेष, इन क्रियाओं के उद्देश्य ये हैं, शान्ति, वशीकरण, स्तिम्भ, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण।
षट्रस भोजन (सं० पु०) छः रस युक्त भोजन।
षट्वदन (सं० पु०) कार्त्तिकेय, देव-सेनापति।
षट्वर्ग (सं० पु०) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर।
षट्शास्त्र (सं० पु०) इस नाम से प्रसिद्ध छः दर्शन, न्याय, वैशेषिक, योग, पातञ्जल, मीमांसा और वेदान्त, न्याय के प्रवर्तक मुख्य आचार्य गौतम हैं। इनका बनाया हुआ ग्रन्थ, गौतम दर्शन या गौतम सूत्र के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसी के टीका निबन्ध आदि के रूप में इस दर्शन का विस्तार हुआ है। वैशेषिक दर्शन के मुख्य आचार्य वैशेषिक मुनि हैं इनका दूसरा नाम कणाद है। इनका दर्शन वैशेषिक दर्शन के नाम से प्रसिद्ध है। सांख्य के आचार्य कपिल मुनि हैं। इस दर्शन का बहुत विस्तार नहीं हुआ है, योग शास्त्र के आचार्य पातञ्जलि मुनि हैं। इस दर्शन में योग के लक्षण और योग के फल आदि बतलाये गये हैं। मीमांसा के आचार्य जैमिनि मुनि हैं। वेदान्त के आचार्य व्यास हैं। शङ्कर, रामानुज, वल्लभ, निम्बार्क, मध्व आदि आचार्यों ने अपने अपने धर्म विश्वास के अनुसार इसके भाष्य बनाये हैं।
षडङ्ग (सं० पु०) शरीर के छः अंग, वेद के छः अंग, यथा, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त।
षडङ्घ्रि (सं० पु०) भ्रमर, भौंरा।
षड्विधि (सं० पु०) छः प्रकार का, छः भाँति का।
षडानन (सं० पु०) कार्तिकेय, कार्तिक स्वामी, शिवजी के बड़े पुत्र, देव-सेनापति।
षडूर्मि (सं० स्त्री०) छः प्रकार की तरंगें इनके विषय में भिन्न मत हैं, कोई किसी को षडूर्मि कहता है और कोई किसी को; यथा, १—शीत, उष्ण, सुख, दुःख, मान, अपमान २—भूख और प्यास ये दोनों प्राण की लहरियाँ है। शोक और मोह मन की तथा बुढ़ापा और मृत्यु शरीर की लहरियाँ हैं। इस प्रकार ये छः लहरियाँ हुई।
षड्ऋतु (सं० पु०) छः ऋतु, दो महीनों की एक ऋतु होती है। एक वर्ष में छः ऋतु होती हैं, उनके नाम ये हैं, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर।
षड्दर्शन (सं० पु०) देखो "षट् शास्त्र"।
षड्रस (सं० पु०) छःरस, खट्टा, मीठा, तीता, कड़ुवा, [कसैला, खार।
षड्विधि (वि०) छः प्रकार का।
षण्ड (सं० पु०) समूहार्थक, कमलवन, कमल पुष्पों [का समूह।
षण्ढ (सं० पु०) नपुंसक, हिजड़ा।
षष्टि (वि०) साठ, साठ की संख्या, साठ को पूरा करने [वाली संख्या।
षष्ठ (वि०) छठवाँ, छः को पूरा करने वाली संख्या।
षष्ठम (सं० पु०) छठवाँ, छठा।
षष्ठी (सं० स्त्री०) छठी तिथि, दुर्गाजी, कारक विशेष।
षोडश (सं० पु०) सोलह की संख्या।
षोडशकला (सं० स्त्री०) सोलह कला।
षोडशदान (सं० पु०) सोलह प्रकार के दान, यथा—पृथ्वी, आसन, पानी, कपड़ा, दीपक, अन्न, पान,

छत्र, सुगन्धित पदार्थ, पुष्पमाला, फल, शय्या, खड़ाऊँ, गाय, सोना, रूपा। [की देवी।

षोडशभुजा (सं० स्त्री०) देवी की मूर्ति, सोलह भुजा

षोडश संस्कार (सं० पु०) हिन्दू शास्त्रानुसार जन्म से होने वाले सोलह संस्कार, यथा—गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जात कर्म, नाम-करण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ा कर्म, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, समावर्त्तन, विवाह, द्विरागमन, मृतक और और्ध्व दैहिक।

षोडशी (सं० स्त्री०) श्राद्ध विशेष।

स

स—व्यञ्जन का बत्तीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है (सं० पु०) विष्णु, साँप, पक्षी, भृगु, समुच्चय, साथ, सहित, बराबर, वही, एक ही, सामने।

सई (सं० स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, बरकत।

संक्षिप्त (वि०) न्यून, थोड़ा, अल्प, कम, बहुत नहीं, संक्षेप किया हुआ। [पन, कमी।

संक्षेप (सं० पु०) न्यून, न्यूनीकरण, अल्पता, थोड़ा-

संखिया (सं० स्त्री०) उपधातु विशेष, एक प्रकार का विष।

संग (सं० पु०) साथ, मुहब्बत। [लोग रहते हैं।

संगति (सं० स्त्री०) सिक्खों का धर्म-स्थान, जहाँ महन्त

संचना (क्रि० स०) सञ्चय करना, एकत्रित करना, बटोरना, एकत्रित करके रखना।

संजात (वि०) उत्पन्न।

संजोवन (सं० पु०) संयुक्त करना।

संजोया (वि०) परोसा, सजाया।

संज्ञक (वि०) अभिधेय, नाम वाला, नामी, नामक, यह शब्द नामवाची शब्दों के अन्त में लगता है और "नामक" का अर्थ बोधन करता है, पर हिन्दी में इसका प्रयोग बहुत कम होता है।

संज्ञा (सं० स्त्री०) नाम, वस्तु का नाम, व्याकरण की संज्ञा, बुद्धि, चेतना, गायत्री, सूर्य की स्त्री का नाम।

संड़सी (सं० स्त्री०) बटुआ बटुई आदि उतारने के लिये लोहे का बना यन्त्र।

संडास (सं० पु०) पाख़ाना, यह कुएँ के समान बनाया जाता है, इसकी सफ़ाई कभी नहीं होती।

संबर }
संबल } राह खर्च, कलेवा।

सँभलना (क्रि० स०) सावधान होना, सचेत हो जाना, गिरते गिरते बचना, उबरना, उद्धार पाना।

सँभाल (सं० पु०) देख रेख, रक्षण, सावधानीपूर्वक रक्षा। [उद्धार करना।

सँभालना (क्रि० स०) रक्षा करना, बचाना, उबारना,

संयम (सं० पु०) मन की रुकावट, मन का वशीकरण, नियम, नेम, व्रत के दिन पालने योग्य नियम, इन्द्रियों को वश में करना, बन्धन, बन्धेज, परहेज़।

संयमनी (सं० स्त्री०) यमपुरी, यमराज की राजधानी।

संयमनी पति (सं० पु०) यमराज, धर्मराज।

संयमी (सं० पु०) मुनि, यती, योगी (वि०) इन्द्रियों को वश में करने वाला, नियमपूर्वक रहने वाला।

संयुक्त (वि०) साथ साथ मिला हुआ, एकत्रित, एक में मिला हुआ, संलग्न, लगा हुआ, जुड़ा हुआ।

संयुक्ता (सं० स्त्री०) पृथ्वीराज की रानी और कन्नौज के राजा जैचन्द की कन्या, इनका जन्म ११७० ई० में हुआ था।

संयुग (सं० पु०) लड़ाई, रण, युद्ध, संग्राम।

संयुत (वि०) आपस में जुड़ा हुआ, मिला हुआ, एकत्रित।

संयोग (सं० पु०) मिलान, द्रव्यों का मेल, मिलाव, संबन्ध विशेष, भिन्न वस्तुओं का एक में मिलना, दैव-योग, अवसर, इत्तिफ़ाक़।

संयोगी (सं० पु०) मिला हुआ, आपस में मिले हुए कई अक्षर, एक प्रकार के साधु संन्यासी आदि, जो वैराग्य लेने के पश्चात् गृहस्थ बन जाते हैं।

संयोजित (वि०) मिलाया गया, कृत संयोग।

संरम्भ (सं० पु०) घबड़ाहट, क्रोध, उद्वेग, कोप, वेग, अहंकार। [करना।
संराधन (सं० पु०) सेवा करना, सब प्रकार की सेवा
संराव (सं० पु०) ध्वनि, पत्ती आदि की ध्वनि।
संलग्न (सं० पु०) मिला हुआ, योग प्राप्त, घटित।
संलाप (सं० पु०) परस्पर आलाप, आपस में बातचीत, उत्तर प्रत्युत्तर। [चलाया हुआ वर्ष, सन्।
संवत् (सं० पु०) साल, वर्ष, बरस, विक्रमादित्य का
संवत्सर (सं० पु०) संवत्, साल, वर्ष।
संवत्सरी (सं० स्त्री०) वर्ष, संवत् का व्यवहार।
संवरण (सं० पु०) छिपाव, गोपन, आवरण, आच्छादन, रोक, रुकावट। [सजना, मुँह पोंछना।
संवरना (क्रि० अ०) सज्जित होना, शोभित होना,
संवर्त (सं० पु०) एक ऋषि का नाम, इन्होंने धर्मशास्त्र भी बनाया है, इनका बनाया धर्मग्रन्थ संवर्त स्मृति के नाम से प्रसिद्ध है, प्रलय, कल्पान्त, संसार का नाश।
संवाद (सं० पु०) बातचीत, उत्तर प्रत्युत्तर, प्रश्नोत्तर, कथोपकथन, विवाद, चर्चा, कथा, संदेश, ख़बर, समाचार। [करना, सुधारना, सिंगारना।
सँवारना (क्रि० स०) सजाना, सुन्दर बनाना, शृंगार
संशय (सं० पु०) सन्देह, निश्चय का अभाव, शक, शुबहा। [मानस, डाँवाडोल मन वाला।
संशयात्मा (वि०) सन्देही, सन्दिग्ध, अनिश्चयी, सन्दिग्ध
संशयापन्न (वि०) सन्दिग्ध, सन्देही, शक्की।
संशोधन (सं० पु०) अशुद्धियों को दूर करना, ग़लतियाँ हटाना, साफ़ करना, स्वच्छ करना, मल दूर करना, ढूँढ़ना, ध्यान से देखना, बदला चुकाना, ऋण चुकाना। [हुआ, मिला हुआ।
संसक्त (वि०) संलग्न, संयुक्त, मिलित, एकत्रित, लपटा
संसर्ग (सं० पु०) संबन्ध, संयोग, साथ, भेद, दर्शन, मेल, पड़ोस, संग, सुहबत, संबन्ध।
संसर्गी (वि०) संबन्धी, साथी, मेली, साथ रखने वाला।
संसत्रा (सं० स्त्री०) फिटकिरी। [गमन, जन्म, मृत्यु।
संसार (सं० पु०) जगत्, दुनिया, जग, गृहाश्रम, आवा-
संसारी (वि०) संसार संबन्धी। [मरण।
संसृति (सं० स्त्री०) संसार, जगत्, आवागमन, जन्म-
संस्कार (सं० पु०) पवित्रता, सफ़ाई, शुद्ध करने की रीति, मरम्मत, प्रारब्ध, पूर्व जन्मार्जित कर्म, स्मरण के कारण, व्यवहार, गर्भ धारण आदि षोडश संस्कार।
संस्कृत (वि०) संस्कार-सम्पन्न, जिसका संस्कार किया गया हो, संशोधित, परिष्कृत, उत्तम, पवित्र, सुधारा हुआ (सं० पु०) देव-वाणी, भारत की प्राचीन भाषा। इसका प्रयोग इस समय स्त्रीलिंग में किया जाता है।
संस्थान (सं० पु०) बनावट, निर्माण-रीति, बनाने का ढंग, सङ्गठन, चौक चौरस्ता, चतुष्पथ, संस्था, सभा, स्थान, मठ।
संस्थापक (सं० पु०) स्थापना करने वाला, निर्माण करने वाला, स्थिर करने वाला, प्रवर्तक।
संस्पर्श (सं० पु०) छुआछूत, लगाव, इन्द्रियों के विषय।
संहत (वि०) जोड़ा हुआ, मिलाया हुआ, ठोस, एकत्रित, एकट्ठा, साथ साथ, दल बद्ध, श्रेणिबद्ध। [ढेर।
संहति (सं० स्त्री०) संघ, समूह, दल, मैत्री, मेल, राशि,
संहनन (सं० पु०) एकत्रीकरण, जोड़, मिलाव, बनावट, ढाँचा तयार करना, गठन, मिलाना, जोड़ना, शरीर, देह। [होना, मरना, नष्ट होना।
संहरना (क्रि० अ०) संहार प्राप्त होना, मारा जाना, मृत
संहर्ता (सं० पु०) संहारकारक, संहार करने वाला, हरण करने वाला, छीनने वाला, भारतीय प्राचीन राज्य-व्यवस्था के अनुसार एक पदाधिकारी का नाम जिसका काम कर वसूल करना था।
संहार (सं० पु०) नाश, विनाश, हत्या, वध, बिलकुल नाश, सब प्रकार से नाश, नरक विशेष, एक भैरव का नाम। [डालना, समाप्त करना।
संहारना (क्रि० स०) संहार करना, नाश करना, मार
संहिता (सं० स्त्री०) साथ, संगृहीत, प्राचीन मुनियों के बनाये ग्रन्थ प्रायः संहिता के नाम से प्रसिद्ध हैं, वेदों का मन्त्र भाग, समय समय पर संगृहीत होने के कारण इन ग्रन्थों का नाम संहिता पड़ा।
सकत (सं० स्त्री०) सामर्थ्य, शक्ति, बल।
सकना (क्रि० अ०) समर्थ होना उपयुक्त होना, योग्य होना, किसी काम को करने की योग्यता रखना, शक्तिमान् होना।
सकरा (वि०) संकीर्ण, तंग, सकेत, छोटा, संकुचित।

सकराई (सं० स्त्री०) सङ्कीर्णता, सकेत ।
सकराना (क्रि० अ०) सकेत करना, संकुचित करना, छोटा बनाना, स्वीकार करना, मनवा देना, हुण्डी स्वीकार करना ।
सकरुण (वि०) दयालु, दयाशील, दयनीय, दयापात्र ।
सकर्मक (वि०) कर्म युक्त क्रिया, जिस क्रिया के कर्म हो वह सकर्मक है । यथा—खाना, पीना, लेना देना आदि ।
सकल (वि०) सारा, समस्त, सम्पूर्ण, सब, तमाम, कला सहित, विद्यायुक्त, कलावान्, कला-ज्ञाता ।
सकाना (क्रि० अ०) शङ्कित होना, डराना, भयभीत होना, संकुचित होना, सशंक होना, शरमाना, उदास होना ।
सकाम (वि०) कामना-सहित, कामी, अभिलाषी, चाहने वाला, फल की इच्छा से किया हुआ कर्म, स्वर्ग आदि फल देने वाले कर्म । [हुंडी सकारना ।
सकारना (क्रि० अ०) स्वीकार करना, मानना, मान लेना
सकारे (अव्य०) प्रातःकाल, प्रभात काल, सवेरे ।
सकाल (अव्य०) बहुत सवेरे, प्रातःकाल ।
सकिलना (क्रि० अ०) एकत्रित होना, समिटना, संकुचित होना, संकुचित होकर बैठना, तह देना, तहियाना ।
सकिलाना (क्रि० अ०) संकुचित होना, समिटना ।
सकुच (सं० स्त्री०) संकोच, लाज, शरम, डर, भय ।
सकुचना (क्रि० अ०) डरना, संकोच करना, लजाना, बटुरना, करना ।
सकुचा (वि०) सकेत, सङ्कीर्ण ।
सकुचाना (क्रि० अ०) लजाना, डराना ।
सकुचित (वि०) लज्जित, मुकुलित ।
सक्तू (सं० पु०) सत्तू, सतुआ ।
सकृत् (अव्य०) एक बार ।
सकेत (वि०) सकरा, तंग, छोटा (सं० स्त्री०) दुःख, आपत्ति । मुहा०—हाथ सकेत = तंग हालत, ग़रीबी । संकेत में पड़ना = दुःख में पड़ना, आपत्ति में पड़ना ।
सकेतना (क्रि० अ०) सकेत करना या होना, समेटना, बटोरना, फैली वस्तु को एकत्रित करना ।
सकेलना (क्रि० अ०) सिकुड़ना, चौपरतना, कपड़े आदि को तह कर के रखना ।
सकेला (सं० पु०) लोहे का एक भेद, एक प्रकार का लोहा । [दबाव, खिंचाव ।
सकोच (सं० पु०) सङ्कोच, लाज, शर्म, डर, भय, सहम,
सकोची (वि०) सङ्कोची, लजीला ।
सकोड़ना (क्रि० अ०) समेटना, सिकुड़ना, खींचना, फैली हुई वस्तु को समेटना । [प्याला ।
सकोरा (सं० पु०) मिट्टी का बर्तन, मिट्टी या काठ का
सकोरी (सं० स्त्री०) मिट्टी की परई, सरैया ।
सखर (वि०) खरा, चोखा, बेलौस, साफ़, शुद्ध, खर नामक राक्षस के साथ ।
सखरा (वि०) कच्ची रसोई, दाल भात रोटी आदि ।
सखरी (वि०) कच्ची, निखरी की उलटी ।
सखरीरसोई (सं० स्त्री०) रोटी, दाल, भात आदि की रसोई जो चौके में खाई जाती है ।
सखा (सं० पु०) मित्र, बन्धु, संगी, साथी, दोस्त, सुहृद् ।
सखी (सं० स्त्री०) सहेली, साथिन, दोस्तिन, दोस्त की स्त्री ।
सख्य (सं० पु०) मित्रता, प्रेम, सौहार्द ।
सगड़ (सं० पु०) सकट, गाड़ी, लढ़िया, बैलगाड़ी, एक प्रकार की छोटी गाड़ी जिसे आदमी खींचते हैं ।
सगपहिता (सं० पु०) एक खाने की वस्तु जो साग और दाल मिला कर बनाई जाती है ।
सगर (सं० पु०) अयोध्या के एक प्राचीन राजा का नाम, ये रामचन्द्र के पूर्वज थे, इनके साठ हज़ार पुत्र थे, जिन्होंने सागर बनाया (वि०) ज़हरीला, विषैला विषयुक्त ।
सगरे (वि०) समस्त, सब, सम्पूर्ण ।
सगर्भ (वि०) तात्पर्ययुक्त, साभिप्राय, मानयुक्त, अभिमानी, पेट वाला, बात पचाने वाला ।
सगर्भ्य (वि०) सगा, सहोदर भाई ।
सगलानि (वि०) ग्लानि के साथ । [बन्धु ।
सगा (वि०) अपना, सम्बन्धी, कुटुम्बी, नातेदार, भाई,
सगाई (सं० पु०) भाई चारा, नाता, अपनापन, रिश्ता, मँगनी, ब्याह की एक रीति, ब्याह का निश्चय ।
सगुन (सं० पु०) शकुन, शुभ अशुभ बतलाने वाला चिह्न, अच्छे काम का प्रारम्भ ।
सगोती (वि०) सगोत्र, एक गोत्र का, एक कुल का ।
सगोत्र (सं० पु०) समान गोत्र, एक गोत्र वाला, एक कुल का ।

सगौती (सं० स्त्री०) मांस, खाने का मांस, मांस का बना भोजन।

सघन (वि०) घना, निबिड़, सटा हुआ, एक में एक मिला हुआ। [अवस्था।

सङ्कट (सं० पु०) दुःख, कष्ट, आपद्, विपत्, दुःख की

सङ्कटा (सं० स्त्री०) दुर्दशा, एक देवी का नाम।

सङ्कर (सं० पु०) मिलावट, मेल, दूसरे पिता और दूसरी माता का पुत्र, वर्णसंकर, 'दोगला।

सकर्षण (सं० पु०) बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भाई, ये पहले देवी के गर्भ में थे, पीछे वहाँ से खींचकर रोहिणी के गर्भ में रख दिये गये थे, इसीलिये इनका यह नाम प्रसिद्ध हुआ।

सङ्कल (सं० पु०) राशि, ढेर।

संङ्कलन (सं० पु०) जोड़, जोड़ना, लेखा रखना, गिनती करना, इकट्ठा करना, योग, संग्रह, एकत्रित करना।

सङ्कलित (वि०) संगृहीत, जोड़ा हुआ, जमा, एकत्रित।

संकल्प (सं० पु०) इच्छा, चाह, मनोरथ, प्रतिज्ञा, नियम नेम, प्रण, धार्मिक कर्म करने की प्रतिज्ञा, दान का विचार, धर्म कार्य करने का विचार।

संकल्पना (क्रि० अ०) दान देना, नियम करना, निश्चित करना, प्रतिज्ञा करना।

संकल्प प्रभाव (वि०) संकल्प से उत्पन्न, संकल्पज।

सङ्कल्पित (वि०) दान किया हुआ, विचारित, प्रतिज्ञात।

सङ्कीर्ण (वि०) भीड़, संकोच, सकेत, अपर्याप्त स्थान, सकरा, छोटा, तंग। [जगह, छोटा स्थान।

सङ्कीर्णता (सं० स्त्री०) तंगई, कोताही, संकोच, थोड़ी

सङ्कीर्तन (सं० पु०) वर्णन, यश, गान, गुण का गीत गाना, बखान, भजन, भगवद्भजन, भक्ति का एक अंग। [हुआ।

सङ्कुचित (वि०) सकुच, लज्जित, मुकुलित, सिकुड़ा

सङ्कुल (वि०) भीड़, जमाव, जमावड़ा, अधिकता, ठसाठस भीड़।

सङ्केत (सं० पु०) सैन, इशारा, इङ्गित, सलाह, मशविरा, एकान्त, वचन, अवधि, पहले से निश्चित बात।

सङ्कोच (सं० पु०) लाज, शर्म, सहम, तकल्लुफ़, न्यूनता, कमी। [का सिकुड़ना।

सङ्कोचन (सं० पु०) सिमटाव, सिकुड़न, फैली हुई वस्तु

सङ्कोची (सं०पु०) लज्जालु, शर्मीला, सङ्कोच करने वाला।

सङ्क्रम (सं० पु०) संचार, गमन, दुर्गम मार्ग, विराम।

सङ्क्रमण (सं० पु०) संक्रान्ति, पर्यटन, राशियों का बदलना, एक राशि से दूसरी राशि पर सूर्य का जाना, एक अवस्था छोड़कर दूसरी अवस्था प्राप्त करने का समय, आक्रमण, चढ़ाई।

सङ्क्रान्त (सं० पु०) प्रतिबिम्बित, मिला हुआ, संबन्धी, मेल, मिलाप, बीता हुआ, समर्पित, प्रभावित।

सङ्क्रान्ति (सं० स्त्री०) वह समय, जब सूर्य या और कोई ग्रह एक राशि को छोड़कर दूसरी राशि पर जाता है।

सङ्क्रामक (वि०) संक्रमण करने वाला, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने वाला रोग विशेष, छुआछूत का रोग, कुछ रोग ऐसे होते हैं जो केवल छुआछूत से फैलते हैं।

सङ्ग (सं० पु०) साथ, मेल मिलाप, संबन्ध, संयोग।

सङ्गत (सं० स्त्री०) साथ, मैत्री, दोस्ती।

सङ्गति (सं० स्त्री०) मेल, साथ, मेल, मित्रता, दोस्ती।

सङ्गम (सं० पु०) मिलना, मेल, मिलाप, संयोग, दो नदियों का मिलना, स्त्री-प्रसंग।

सङ्गमर्मर (सं० पु०) सफ़ेद पत्थर, यह भारत में राजपुताने में उत्पन्न होता है।

सङ्गर (सं० पु०) युद्ध, लड़ाई, आपत्, विष, प्रण, छावनी, लश्कर, शर्म, वृथा।

सङ्ग्रहणी (सं० स्त्री०) रोग विशेष, अतीसार रोग इस रोग में अन्न नहीं पचता, दस्त बहुत आते हैं, यह घातक रोग है।

सङ्ग्राम (सं० पु०) युद्ध, लड़ाई, रण, जंग।

सङ्ग्राहक (सं० पु०) सङ्ग्रह करने वाला, एकत्रित कर के रखने वाला, इकट्ठा करने वाला।

सङ्गी (वि०) साथी, दोस्त, साथ वाला।

सङ्गीत (सं० पु०) गाने की विद्या।

सङ्गोपन (सं० पु०) भली प्रकार से छिपाव।

सङ्घ (सं० पु०) झुण्ड, समूह, मेला, वृन्द, दल, समाज, एक उद्देश्य रखने वाले जन-समाज का झुंड।

सङ्घट (सं० पु०) संयोग, मिलाव, रगड़, सङ्घर्ष।

सङ्घट्ट (सं० पु०) साथ, मेल, भीड़, मेला, जमाव।

सङ्घट्टक (सं० पु०) मिलाने वाला, जोड़ने वाला, योजक,

रगड़ने वाला, रगड़ कर बनाने वाला।
सङ्कर्ष (सं० पु०) रगड़ा, देखादेखी, स्पर्द्धा, ईर्ष्या।
सङ्कर्षण (सं० पु०) रगण।
सङ्घात (सं० पु०) समूह, जमाव, वृन्द, झुंड, मारना, चोट पहुँचाना, एक नरक का नाम, कठिन, सम्मिलित।
सङ्घार (सं० पु०) संहार, नाश, समाप्ति।
सङ्घारना (क्रि० स०) समाप्त करना, नाश करना।
सच (वि०) सत्य, ठीक, साँच, हाँ, निश्चय, सच्चाई (क्रि० वि०) ठीक ठीक, यथार्थ।
सचमुच (अव्य०) ठीक ठीक, यथार्थ, निश्चित।
सचराचर (सं० पु०) समस्त संसार, स्थावर, जंगम, प्राणी सहित संसार।
सचाई (सं० स्त्री०) सत्यता, ईमानदारी, खरापन, शुद्धता।
सचान (सं० पु०) एक पक्षी, यह शिकार करने वाला होता है, बाज़।
सचिव (सं० पु०) मन्त्री, दीवान, राजा को सलाह देने वाला तथा राज्य का प्रबन्ध करने वाला।
सचु (सं० पु०) आनन्द, सत्य, साँच, सत्यता, यथार्थता, सन्देह-हीनता।
सचेत (वि०) चौकस, सावधान, होशियार, चेतनायुक्त, चालाक, मुस्तैद, निरालस, आलस्य-रहित।
सचेतन (वि०) ज्ञानी, ज्ञानवान, बुद्धिमान, चेतनायुक्त, जड़ नहीं। [क्रियाशील।
सचेष्ट (वि०) चेष्टायुक्त, व्यापारसहित, उद्योगनिरत,
सचौट (सं० स्त्री०) सच्चाई, सत्यता, सच कहना, सच कहने की रीति।
सच्चरित्र (वि०) उत्तम चरित वाला, नेकचलन, अच्छे चाल-चलन वाला, सदाचारी, अच्छे आचरण वाला।
सच्चा (वि०) सच्चरित, सत्यवादी, सच बोलने वाला, ईमानदार, विश्वासी, खरा, शुद्ध, सात्विक।
सच्चिदानन्द (सं० पु०) परमात्मा, परमेश्वर, परब्रह्म, सत् चित आनन्द स्वरूप परमात्मा। [शृंगार।
सज (सं० स्त्री०) डील-डौल, क़द, ढाँचा, शोभा,
सजग (वि०) सचेत, सावधान।
सजधज (अव्य०) बनाव, तैयारी, शोभा, शृंगार।
सजन (सं० पु०) स्वजन, अपना जन, प्रिय, पति, प्रियतम।
सजना (सं० स्त्री०) प्यारी, प्रियतमा, प्रिया, स्त्री (क्रि० अ०) तैयार होना, बनना, बनाव करना, शोभित होना, शोभना, फबना, सोहना, भला मालूम होना, अच्छा दिखाई पड़ना। [स्त्री।
सजनी (सं० स्त्री०) सखी, सहेली, हितकारिणी, प्यारी
सजल (वि०) जल सहित।
सजला (सं० पु०) मझले से छोटा भाई, चार सहोदर भाइयों में से तीसरा, स्त्री, जलयुक्त, जल से भरी हुई।
सजाई (सं० स्त्री०) बनवाई, तयारी, सजाने का काम, सजावट, म्यान या परतले की बनावट, दण्ड, अपराध का दण्ड। [जाति वाले।
सजातीय (वि०) एक जाति का, समान गोत्र का, एक
सजाना (क्रि० स०) सज्जित करना, शोभित करना, तैयार करना, बनाना, सुधारना, सुन्दर बनाना।
सजाव (सं० पु०) बनाव, अलंकार।
सजावट (सं० स्त्री०) तैयारी, शोभा, बनावट।
सजीला (वि०) सुन्दर, सुडौल, मनोहर, देखने में सुन्दर, सुगठित।
सजीव (वि०) प्राणी, जीवधारी, जीवित, जीता हुआ।
सजीवनी (सं० स्त्री०) एक बूटी का नाम, औषध विशेष, प्राण देने वाली।
सज्जन (वि०) सत्पुरुष, साधु, भला आदमी, कुलीन, बड़ा आदमी, कुलवन्त (सं० पु०) प्रिय, प्रियतम।
सज्जा (वि०) सावधान, सचेत, होशियार, चौकस रहने वाला, चैतन्य, सदा सावधान रहने वाला।
सज्जी (सं० स्त्री०) खार पदार्थ विशेष, एक प्रकार की खारी मिट्टी जो कपड़े साफ़ करने के काम आती है। [वयस्क।
सज्ञान (वि०) ज्ञानी, ज्ञानवान, बुद्धिमान्, समझदार,
सझिया (वि०) साथी, साथ काम करने वाला, सम्मिलित काम करने वाला, एक में मिलकर काम करने वाले कई आदमी सझिया कहे जाते हैं। [वाला।
सझियार (सं० पु०) साझी, सझिया, साथ काम करने
सझियारा (सं० पु०) साझा, शराकत, हिस्सेदारी।
सञ्चय (सं० पु०) सङ्ग्रह, एकत्रित, समूह, बटोरकर इकट्ठा करना। [वाला, इकट्ठा करने वाला।
सञ्चयी (वि०) सञ्चय करने वाला, सङ्ग्रही, बटोरने

सञ्चार (सं० पु०) संक्रमण मार्ग, राह, बाट, चलन, निशान, गति, वृद्धि, उत्तेजना, रुधिर की गति, धीरे धीरे चलना, धर्माचार्यों को उपदेश देने के लिये यात्रा।
सञ्चारक (सं० पु०) नायक, भ्रमण करने वाला।
सञ्चारण (सं० पु०) प्रकाशन, संचालन, फैलाव, चलाना।
सञ्चारिका (सं० स्त्री०) कुटनी, जो नायक का संदेश नायिका के पास और नायिका का नायक के पास ले जाती है, स्त्री पुरुष को मिलाने वाली, बुरी स्त्री, दुराचारिणी स्त्री, घूमने-फिरने वाली स्त्री।
सञ्चालन (सं० पु०) चलाना, फैलाना, व्यवस्था करना, शासन करना, प्रबन्ध करना।
सञ्चित (वि०) सञ्चय किया हुआ, एकत्रित, बटोरा हुआ, संग्रहीत, संग्रह किया हुआ, पूर्व जन्मार्जित कर्म, धर्माधर्म, अदृष्ट विशेष, त्रिविध कर्म में से एक कर्म।
सञ्जय (सं० पु०) ये राजा धृतराष्ट्र के मंत्री थे, व्यास के आशीर्वाद से महाभारत का हाल जान कर धृतराष्ट्र को सुनाया करते थे। [में दी जाती है।
सञ्जीवनी (सं० स्त्री०) बूटी विशेष, एक बूटी जो ज्वर
सटक (सं० स्त्री०) हुक्के की नली, नरचा।
सटकना (क्रि० अ०) भागना, छिपना, धीरे से चल देना।
सटकाई (सं० स्त्री०) लुकाव, छिपाव, उतार चढ़ाव।
सटकाना (क्रि० स०) छिपाना, सङ्कोच करना।
सटना (क्रि० अ०) मिलना, चिपकना, जुड़ना।
सटपटाना (क्रि० अ०) अचम्भित होना, विस्मित होना।
सटल (सं० स्त्री०) बड़बड़, बकबक, प्रलाप।
सटा (सं० स्त्री०) घोड़े के कंधे पर का बाल, शिखा, केशर (वि०) मिला हुआ, संयुक्त।
सटाना (क्रि० स०) मिलाना, संयुक्त करना। [एक।
सटासट (सं० स्त्री०) लगातार, तर ऊपर, एक के ऊपर
सटिया (सं० स्त्री०) छड़ी, एक प्रकार की चूड़ी, जो सोने या चाँदी की बनायी जाती है, चाँदी की एक प्रकार की क़लम जिससे स्त्रियाँ सिन्दूर लगाती हैं।
सटीक (सं० पु०) टीका सहित। [कर।
सटुकि (क्रि० स०) पतली छड़ी से मार कर, धीरे से भगा
सट्टा बट्टा (सं० स्त्री०) अदला बदली, इधर उधर।

सठियाना (क्रि० स०) साठ वर्ष का होना, वृद्धा अवस्था के कारण बुद्धि का लुप्त होना, समझ का कम होना।
सठौरा (सं० पु०) सोंठ का लड्डू, प्रसूता स्त्रियों के लिये यह बनाया जाता है, सौभाग्य, शुंठि।
सड़क (सं० स्त्री०) चौड़ा रास्ता, राज-मार्ग।
सड़ना (क्रि० अ०) गलना, पचना, बिगड़ना, किसी वस्तु का पानी के कारण गलना।
सड़ांद (वि०) सड़ा हुआ, दुर्गन्धयुक्त।
सड़ा (वि०) दुर्गन्धयुक्त, गला हुआ।
सड़ाना (क्रि० स०) गलाना, नष्ट करना, बिगाड़ना।
सड़ियल (वि०) सड़ा हुआ, निर्बल, बलहीन, किसी काम का नहीं, अनुपयोगी।
सड़ैंधा (वि०) सड़ा हुआ, बदबूदार। [बुरी बास।
सड़ौंध (सं० स्त्री०) सड़ने की बास, सड़ने की गन्ध,
सण्डमुसण्डा (वि०) मोटा, ज़ोरावर, बलवान्, हृष्ट पुष्ट, मज़बूत, निश्चिन्त।
सत् (वि०) ठीक, सत्य, ब्रह्म, परमेश्वर (सं० पु०) आदर, विद्यमानता, सत्य गुण, सार, हीर, भलमनसाहत, सचाई। [सत्यगुण।
सत्त (सं० पु०) बल, सार, रस, अर्क़, सार-पदार्थ,
सत्तमासा (सं० पु०) सातवें महीने में होने वाला कार्य, वह उत्सव जो गर्भाधान के सातवें महीने में किया जाता है। [कुढ़ना, चिढ़ना।
सत्तराना (क्रि० अ०) क्रोधित होना, कोप करना,
सत्तरौती (वि०) वक्र, कुटिल, टेढ़ा, तिर्छा।
सत्तर्क (वि०) सावधान, ख़बरदार, सचेत। [अविच्छिन्न।
सतत (क्रि० वि०) सदा, सर्वदा, नित्य, लगातार,
सतलज (सं० स्त्री०) पंजाब की एक नदी का नाम।
सतलड़ी (सं० स्त्री०) सात लड़ की माला।
सतवन्त (वि०) सच्चा, सत्यवादी।
सतसई (सं० स्त्री०) सात सौ का समूह, वह पुस्तक जिसमें सात सौ छन्द हों यथा—बिहारी-सतसई, तुलसी सतसई, वृन्द-सतसई आदि।
सतसठ (वि०) संख्या विशेष, साठ और सात, सात अधिक साठ को पूर्ण करने वाली संख्या।
सतहत्तर (वि०) संख्या विशेष, सात अधिक सत्तर, सत्तर और सात।

सतानन्द (सं० पु०) एक मुनि का नाम, ये मुनि गौतम के पुत्र थे और राजा जनक के पुरोहित थे।

सताना (क्रि० स०) दुःख देना, तंग करना, छेड़ना, पीड़ा पहुँचाना।

सतिभाइ (क्रि० वि०) सीधी तरह, सरल भाव से, शुद्ध भाव से, स्वाभाविकता से, सरलता पूर्वक, सच्चे दिल से।

सती (सं० स्त्री०) पतिव्रता, धर्मव्रती स्त्री, सदाचारिणी स्त्री, पति के साथ जल जाने वाली स्त्री, शिवजी की स्त्री, ये दक्ष की कन्या थीं। दक्ष से और शिवजी से कुछ अनबन हो गयी थी इसी कारण दक्ष ने शिवजी का अपमान किया था उस अपमान को न सह कर सती ने यज्ञ-कुण्ड में जल कर शरीर त्याग किया।

सतीचौरा (सं० पु०) सती होने का स्थान।

सतीमठ (सं० पु०) जहाँ कोई सती हुई हो और उसका स्मारक बनाया गया हो।

सतीर्थ (सं० पु०) गुरु-भाई, साथ पढ़ने वाला।

सतीवाड़ (सं० पु०) सती होने की जगह, सती का स्मारक।

सतुआ (सं० पु०) सत्तू, भुँजे हुए अन्न का चूर्ण।

सत्कर्म (सं० पु०) पुण्यकार्य, उत्तम काम, पवित्र काम, सच्चा काम।

सत्कार (सं० पु०) सम्मान, आदर, ख़ातिर, आवभगत।

सत्क्रिया (सं० स्त्री०) उत्तम कर्म, सत्कार, पुण्य जनक काम।

सत्तम (वि०) श्रेष्ठ, बड़ा, सीधा, मर्यादा रखने वाला, उत्तम, साधु, अपने दल में श्रेष्ठ।

सत्तर (वि०) संख्या विशेष, सात की दहाई।

सत्तरह (वि०) संख्या विशेष, सात और दस।

सत्ता (सं० स्त्री०) बल, पराक्रम, ज़ोर, अधिकार, विद्यमानता, भलाई, उत्तमता, वर्तमानता, विद्यमानता।

सत्ताईस (वि०) संख्या विशेष, बीस और सात।

सत्तानबे (वि०) नब्बे और सात, संख्या विशेष।

सत्तावन (वि०) संख्या विशेष, पचास और सात।

सत्तासी (वि०) संख्या विशेष, अस्सी और सात।

सत्तू (सं० पु०) सतुआ, भुने अन्न का चूर्ण।

सत्पथ (सं० पु०) उत्तम मार्ग, धर्म मार्ग, सदाचार का मार्ग, सज्जनों का मार्ग। [पुत्र।

सत्पुत्र (सं० पु०) अच्छा बेटा, भला लड़का, सदाचारी

सत्य (वि०) सच, ठीक, सही, यथार्थ, निश्चय, सच्चा, खरा, ईमानदार (सं० पु०) साँच, सचाई, शपथ, ब्रह्मलोक, प्रथम युग।

सत्यता (सं० स्त्री०) सच्चाई।

सत्यभामा (सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक पटरानी का नाम, इनके पिता का नाम सत्राजीत था।

सत्ययुग (सं० पु०) चारों युगों में का एक युग, पहला युग, कृतयुग। [ब्रह्मलोक।

सत्यलोक (सं० पु०) लोक विशेष, सातवाँ लोक,

सत्यवती (सं० स्त्री०) पतिव्रता स्त्री, वेदव्यास की माता का नाम। [वादी।

सत्यवादी (वि०) सत्य बोलनेवाला, स्वभाव से सत्य-

सत्यवान् (सं० पु०) एक राजपुत्र का नाम, प्रसिद्ध पतिव्रता सावित्री इन्हीं को ब्याही गयी थी और उसके पतिव्रत के प्रभाव से इनके प्राणों की रक्षा हुई थी।

सत्यव्रता (वि०) सत्य-प्रतिज्ञ, सच्ची प्रतिज्ञा करने वाला, अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, नियम पालन करने वाला।

सत्यसन्ध (वि०) सत्यप्रतिज्ञ, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने वाला, सच्चा, कभी झूठ न बोलने वाला, अपनी बात को सत्य करने वाला। [बिगड़ना, भारी कष्ट।

सत्यानाश (सं० पु०) सर्वनाश, सर्वस्वनाश, बरबादी, मुहा०—सत्यानाश करना = बरबाद करना, बिगाड़ना, ख़राब करना, नष्ट भ्रष्ट कर देना।

सत्यानाशी (वि०) बिगाड़, बरबादी, ख़राबी, नाश।

सत्यानृत (सं० पु०) वणिजवृत्ति, वाणिज्य, व्यापार।

सत्राजित (सं० पु०) एक राजा का नाम, श्रीकृष्ण का श्वसुर।

सत्व (सं० पु०) सद्गुण, अत्यन्त बल, ज़ोर, वस्तु, सार, प्राण, व्यवसाय, उद्यम, हृदय, प्रकृति, भलाई।

सत्वगुण (सं० पु०) तीन गुणों में से एक गुण यह गुण प्रकाश-शील बतलाया गया है। [वली से।

सत्वर (क्रि० वि०) शीघ्र, जल्द, तुरंत, झटपट, उता-

सत्सङ्ग (सं० पु०) सज्जनों का साथ, भलों का साथ,

अच्छों का साथ, सदाचारियों का साथ, साधुओं का संग।

सत्सङ्गति (सं० स्त्री०) सत्सङ्ग, अच्छी संगति।

सथशव (सं० पु०) युद्ध में मारे जाने वालों का शव।

सथिया (सं० पु०) अस्त्रवैद्य, जर्राह, एक प्रकार का मङ्गल चिह्न, जिसे व्यापारी लोग अपनी बही पर लिखते हैं। [श्रेष्ठ, उत्तम।

सद (अव्य०) सद्य, तत्क्षण, उसी समय, तत्काल (वि०)

सदई (अव्य०) सदैव, हमेशा। [वासस्थान।

सदन (सं० पु०) घर, स्थान, मकान, रहने की जगह,

सदय (वि०) दयायुक्त, दयालु, कृपालु, कोमल, कोमल हृदय, मेहरबान। [निकृष्ट, सत्यासत्य।

सदसत् (वि०) अच्छा बुरा, भला बुरा, सचझूठ, उत्तम

सदस्य (वि०) सभा के मेम्बर, सभासद, सभ्य पञ्च, पंचायती काम में कमी बेशी का सुधार करने वाले, निरीक्षक, देखवैया, सभा में बैठने वाले।

सदा (अव्य०) नित्य नित्य, रोज़ रोज़, प्रतिदिन।

सदाई (अव्य०) सदा, सर्वदा, सदाही।

सदागति (सं० पु०) वायु, पवन, हवा, सदा चलने वाला, जो सदा चलता रहे।

सदाचार (सं० पु०) उत्तम आचार, श्रेष्ठ आचार, अच्छा चाल-चलन, सुलक्षण, भला चाल-चलन।

सदाव्रत (सं० पु०) अतिथियों या अनाथों को प्रतिदिन अन्न देने का नियम।

सदाशिव (सं० पु०) महादेव, शिव।

सदासुहागिनी (सं० स्त्री०) पक्षि विशेष, एक फूल का नाम, सदा स्त्री का वेष धारण करने वाला साधु, वेश्या।

सदृश (वि०) समान, तुल्य, बराबर, एक समान, एकसाँ।

सदेश (सं० पु०) समीप, पास, निकट।

सदैव (अव्य०) सदा, सर्वदा, हमेशा, नित्य।

सदोष (वि०) दोषयुक्त, अवगुणी, दोषी, अपराधी।

सद्गति (सं० स्त्री०) उत्तम गति, मोक्ष, मुक्ति, निस्तार, छुटकारा, सत्पति, नेक।

सद्गन्ध (सं० स्त्री०) उत्तम गन्ध, सुगन्ध।

सद्दल (सं० पु०) समूह, गिरोह, दल, वृन्द, झुंड।

सद्भाव (सं० पु०) प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, निष्कपटता, प्रेम भाव।

सद्म (सं० पु०) गृह, मकान, घर, वासस्थान, रहने की जगह।

सद्य (अव्य०) तुरंत, शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, उसी समय, उसी दम।

सद्वक्ता (सं० पु०) उत्तम बोलने वाला।

सद्विवेचक (सं० पु०) उत्तम निर्णय करने वाला।

सधना (क्रि० अ०) बनना, अच्छी तरह सिखाया जाना, अभ्यास होना, बुरा मालूम न पड़ना।

सधवा (सं० स्त्री०) सुहागिन, जीवत्पति की स्त्री, जिसका पति जीता हो।

सधाना (क्रि० स०) सिखाना, शिक्षा देना, बनाना, हिलाना, थामना, पूरा करना, ठहराना।

सध्यच (सं० पु०) सहचर, साथी, दोस्त, मित्र।

सन (सं० स्त्री०) एक प्रकार का पौधा, जिसकी छाल से रस्सी रस्से बनाये जाते हैं। वर्ष, अंग्रेज़ी संवत् जो क्राइस्ट के बलिदान का स्मारक है।

सनक (सं० पु०) एक मुनि का नाम, ये ब्रह्मा के पुत्र थे, ये सदा बालक रूप में रहते हैं और जन्म से ही ब्रह्म-ज्ञानी हैं (सं० स्त्री०) पागलपन, उन्माद।

सनकारे (क्रि० अ०) इशारे किये, सनकार दिये।

सनत्कुमार (सं० पु०) ये ब्रह्मा के पुत्र थे, सनक मुनि इनके भाई थे, ये सदा बालक रूप में रहते हैं ये जन्म से ही ब्रह्म-ज्ञानी हैं।

सनना (क्रि० अ०) गुँधना, आटा आदि का गूँधा जाना, भरना, गर्भिणी होना।

सनन्दन (सं० पु०) ब्रह्मपुत्र, ये मुनि सनत्कुमार के भाई हैं, बाल्यावस्था से ही ब्रह्मज्ञानी हैं।

सनसनाना (क्रि० अ०) सनसन होना, जल के बहने का शब्द होना, हवा के चलने का शब्द होना।

सनाढ्य (सं० पु०) ब्राह्मणों की एक जाति का नाम।

सनातन (सं० पु०) एक मुनि का नाम, ये ब्रह्मा के पुत्र हैं। इनके तीन भाई और थे जिनके नाम सनक, सनन्दन और सनत्कुमार हैं। ये बाल्यवास्था से ही ब्रह्मज्ञानी हैं, ब्रह्मा ने इनको मानसिक शक्ति से सृष्टि करने के लिये उत्पन्न किया था, पर ये ब्रह्म-ज्ञानी हो कर वन की ओर चले गये (वि०) नित्य, सदा, सदा रहने वाला, परम्परागत, बहुत दिनों से चला आता हुआ।

सनाथ (वि०) अनाथ नहीं, जिसके मालिक हो, जिसका कोई आश्रय हो, जिसका कोई रक्षक हो

सनाह (सं० पु०) कवच, बख़्तर, युद्ध के समय वीरों के पहनने की लोहे की बनी एक वस्तु।

सनिया (सं० पु०) सन का बना वस्त्र, यह पवित्र समझा जाता है और पूजा में यह पहना जाता है।

सनीचर (सं० पु०) शनैश्चर, सातवाँ ग्रह, एक दिन का नाम, शनिवार।

सनीचरा (वि०) अभागा, अपयशी, सनीचर का दान लेने वाला (सं०पु०) एक पर्वत यह ग्वालियर के पास है और उसपर शनैश्चर की एक मूर्ति है।

सनेह (सं० पु०) स्नेह, प्रेम, प्रीति, तेल घी आदि चिकना पदार्थ। [सेवक, ईश्वर-विश्वासी।

सन्त (सं० पु०) साधु, सत्पुरुष, सज्जन, धर्मात्मा, ईश्वर

सन्तत (क्रि० वि०) लगातार, निरन्तर, सदा, नित, नित्य, सदा। [सन्तान, वंश।

सन्तति (सं० स्त्री०) अपत्य, लड़का बाला, बेटा बेटी,

सन्तप्त (वि०) जला हुआ, तपा हुआ, क्रुद्ध, श्रान्त, थका हुआ, गर्म, दुःखी, पीड़ित, सताया हुआ।

सन्तरण (सं० पु०) तरना, तैरना, पारजाना, मुक्त होना, नदी आदि में तैरना, तैर कर पार जाना।

सन्ता (वि०) बिगड़ल, नष्ट, बुरा।

सन्तान (सं० स्त्री०) लड़के बाले, सन्तति, वंश, कुटुम्ब, लताओं की लम्बी टहनियाँ। [मानसिक ताप।

सन्ताप (सं० पु०) शोक, शोच, चिन्ता, पीड़ा, दुःख,

सन्तापक (वि०) दुःखदाता, दुःख देने वाला, पीड़क।

सन्तापित (वि०) सताया गया, पीड़ित।

सन्ती (अव्य०) बदले, लिये, ख़ातिर। [के साथ।

सन्तुष्ट (वि०) प्रसन्न, तृप्त, हर्षित, मनभरा, सन्तोष

सन्तुष्टि (सं० स्त्री०) सन्तोष, प्रसन्नता, तृप्ति, सब्र।

सन्तोष (सं० पु०) लोभ नहीं, जो मिले उसी में प्रसन्न रहने का भाव, हर्ष, सुख, तृप्ति।

सन्तोषित (वि०) सन्तुष्ट किया हुआ, हर्षित, आनन्दित, वासनारहित, शून्यता का भाव।

सन्तोषी (सं० पु०) सन्तोष रखने वाला, शान्त चित्त, धैर्य रखने वाला, धीर। [से उपदेश लेना।

सन्था (सं० स्त्री०) पाठ, सबक़, पढ़ना, अध्ययन, गुरु

सन्दर्भ (सं० पु०) रचना, प्रबन्ध, ग्रन्थ, इन्तिज़ाम, प्रबन्ध। [मुलाक़ात।

सन्दर्शन (सं० पु०) साक्षात्कार, देखादेखी, भेंट,

सन्दश (सं० पु०) सनसी, लोहे का बना एक यन्त्र जिससे बटुई आदि चूल्हे पर से उतारी जाती है। [के एक हथियार का नाम।

सन्दान (सं० पु०) घोड़े आदि बाँधने की रस्सी, सुनारों

सन्दिग्ध (वि०) सन्देहयुक्त, जिसके निरपराधी होने में सन्देह हो, ग्रन्थ का वह भाग जिसका अर्थ समझ में न आता हो।

सन्दिग्ध भूत (सं० पु०) काल विशेष, व्याकरण के अनुसार वह भूतकाल जिसके 'भूत होने में सन्देह हो जैसे—देखा होगा, गया होगा आदि।

सन्देश (सं० पु०) समाचार, हाल, ख़बर, वृत्तान्त, एक बंगाली मिठाई का नाम।

सन्देशी (सं० पु०) देखो "सन्देसा"।

सन्देसा (सं० पु०) सन्देश, समाचार, वृत्तान्त, संवाद।

सन्देसी (सं० पु०) दूत, पैग़म्बर, सन्देश पहुँचाने वाला दूत, ख़बर ले जाने वाला।

सन्देह (सं० पु०) संशय, शंका, शक, शुबहा, भ्रम।

सन्दोह (सं० पु०) झुंड, वृन्द, समूह, अधिकता, गिरोह, पूर्ण।

सन्धा (सं० स्त्री०) प्रतिज्ञा, मर्यादा, स्थिति।

सन्धान (सं० पु०) भेद लेना, खोज, अन्वेषण, पता, जोड़ना, सीना, मिलाना, युक्ति, परामर्श, कार्य-प्रवृत्ति, आचरण, लगावट, मिलान।

सन्धानना (क्रि० अ०) जोड़ना, लगाना, ताकना, जोड़ लगाना, धनुष चढ़ाना।

सन्धाना (सं० पु०) आचार।

सन्धि (सं० स्त्री०) मेल, मिलाप, विरोध-परिहार, विरोध-दूरीकरण, व्याकरण का एक कार्य, दो अक्षरों का मिलाव, यथा कुश आसन कुशासन, संयोग, मिलाप, छेद, दरार, सुलह, मेल करना, दो राजाओं का मेल होना, शरीर की हड्डियों का जोड़, गाँठ, दर।

सन्ध्या (सं० स्त्री०) सायंकाल, साँझ, शाम, उपासना विशेष, जो प्रातः मध्याह्न और सायंकाल की सन्धियों में की जाती है। [होना।

सन्नद्ध (वि०) तयार, प्रस्तुत, कहीं जाने के लिये तयार

सन्ना (क्रि० अ०) मिलना, जुड़ना, युक्त होना, सटना।

सन्नाटा (सं० पु०) जल की लहरियों का शब्द, हवा

चलने या पानी बरसने का शब्द, निःशब्दस्थान, जहाँ कुछ भी शब्द न होता हो।

सन्नाह (सं० पु०) कवच, बख़्तर, युद्ध में पहनने का लोहे का अंगरखा।

सन्निकट (सं० पु०) पास, समीप, निकट, सन्निधान।

सन्निकर्ष (सं० पु०) समीप, निकटता, इन्द्रियों और विषयों का संबंध भी सन्निकर्ष कहा जाता है, यह सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है।

सन्निधान (सं० पु०) समीप, पास, निकट।

सन्निधि (सं० स्त्री०) समीप, सन्निधान।

सन्निपात (सं० पु०) वह रोग जिसमें बात, पित और कफ़ तीनों विकृत हो जाते हैं, त्रिदोष।

सन्निहित (वि०) समीपस्थ, निकटस्थ, समीपी, पास का।

सन्मान (सं० पु०) सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा।

सन्मुख (सं० पु०) सामने, साक्षात्, प्रत्यक्ष।

सन्यास (सं० पु०) चौथा आश्रम, सांसारिक विषय-वासनाओं का त्याग।

सन्यासी (सं० पु०) चतुर्थाश्रमी, योगी, यती, सांसारिक विषय-वासनाओं से विमुख रहने वाला, त्यागी, संसार-विरागी।

सपक्ष (वि०) पक्षवाला, पक्षपाती, सहायक, सहायता देने वाला, साथी (सं० पु०) पखेरू, पक्षधारी, पक्षी, चिड़िया।

सपदि (क्रि० वि०) शीघ्र, तुरन्त, तत्काल, तत्क्षण।

सपना (सं० पु०) नींद में देखी हुई घटना, नींद में उपजने वाले ख़्यालात, नींद की बातें।

सपिण्ड (सं० पु०) वे बान्धव जो सात पुरुष के अन्तर्गत हों।

सपुत्र (सं० पु०) सुपुत्र।

सपूत (सं० पु०) अच्छा लड़का।

सपेला
सपोला } (सं० पु०) साँप का बच्चा, छोटा साँप।

सप्त (वि०) संख्या विशेष, सात की संख्या।

सप्तऋषि (सं० पु०) सात ऋषियों के नाम के सात तारे, उनके नाम ये हैं; कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि, वशिष्ठ।

सप्त चत्वारिंशत् (वि०) संख्या विशेष, सात और चालीस की संख्या।

सप्तति (वि०) सत्तर की संख्या, सात की दहाई।

सप्तदश (वि०) संख्या विशेष, सात और दश, सत्तरह।

सप्तद्वीप (सं० पु०) सात द्वीप, उनके नाम ये हैं जम्बू, प्लक्ष, कुश, क्रौंच, शक, शाल्मली और पुष्कर।

सप्त पाताल (सं० पु०) सात पाताल, उनके नाम ये हैं; अतल, वितल, सुतल, रसातल, महातल, तलातल, और पाताल।

सप्तपुरी (सं० स्त्री०) पवित्र सात नगरियाँ, प्रथम अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काँची, अवन्तिका, दारावती।

सप्तम (वि०) सातवाँ, सात को पूर्ण करने वाली संख्या।

सप्तमी (सं० स्त्री०) शुक्ल और कृष्ण पक्ष की सातवीं तिथि, सातवीं विभक्ति, अधिकरण कारक, इसके चिह्न ये हैं, "में, पै, पर"।

सप्तर्षि (सं० पु०) कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ ये सात ऋषि हैं।

सप्तविंश (वि०) सत्ताइस, बीस और सात, संख्या विशेष।

सप्तसागर (सं० पु०) सात समुद्र, उनके नाम ये हैं, लवण समुद्र, ईक्षुसमुद्र, दधि समुद्र, क्षीर समुद्र, मधु समुद्र, मदिरा समुद्र और घृत समुद्र।

सप्तस्वर (सं० पु०) गान के सात स्वर, उनके नाम ये हैं; षड्ज, गान्धार, ऋषभ, नषद, मध्यम, धैवत और पञ्चम।

सप्ताश्व (सं० पु०) सूर्य, जिनके रथ में सात घोड़े जोते जाते हैं।

सप्ताह (सं० पु०) सात दिनों का समूह, हफ़्ता, अठवारा, मास की चौथाई।

साप्ताहिक (वि०) सप्ताह सम्बन्धी।

सप्रतिभ (वि०) चतुर, बुद्धिमान।

सप्रमाण (सं० पु०) प्रमाण सहित।

सप्रीति (सं० स्त्री०) प्रीति सहित, प्रेम पूर्वक।

सप्रेम (क्रि० वि०) प्रेमपूर्वक।

सफ़र (अ० सं० पु०) यात्रा, प्रवास, मछली, मत्स्य।

सफ़री (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली, अमरूद, बिही।

सफल (वि०) फल-सहित, सिद्धपूर्ण, फल देने वाला, कृतार्थ, सार्थक, कामयाब, वाग़, लाभवान, लाभ-सहित।

सफलता (सं० स्त्री०) कामयाबी, सार्थकता, सिद्धि।

सफ़ेद (वि०) उज्ज्वल, सादा, शुक्ल वर्ण।

सब (वि०) सारा, पूरा, समूचा, सम्पूर्ण, समस्त ।
सबरस (सं० पु०) सब रसों का मूल, जल, पानी ।
सबल (वि०) बलवान्, समर्थ, ज़ोरावर, पराक्रमी, शक्तिवान् । [पराक्रम ।
सबलता (सं० स्त्री०) सबल का भाव, बल, प्रौढ़,
सबलाई (सं० स्त्री०) सबलता, बल ।
सबाद (सं० पु०) स्वाद, ज़ायका ।
सबेर (वि०) पहले, समय से पहले, विलम्ब नहीं, ठीक समय, अच्छे समय । [काल ।
सबेरा (सं० पु०) भोर, बिहान, तड़का, प्रभात, प्रातः-
सबेरे (अव्य०) प्रातःकाल, प्रभात काल, सूर्योदय का समय ।
सबोतर (अव्य०) सर्वत्र, सब जगह, सब ठौर ।
सभत्तर (अव्य०) सर्वत्र, सब स्थान पर, सब जगह ।
सभय (वि०) भययुक्त, डरने वाला, डरपोक, सशंक, भीति-युक्त, डर के साथ ।
सभा (सं० स्त्री०) समाज, मण्डली, पञ्चायत, किसी बात का विचार करने के लिये बहुत लोगों का जमाव, दरबार, राज-दरबार, जलसा, मजलिस ।
सभापति (सं० स्त्री०) सभा का स्वामी, सभा का प्रधान, मीरमजलिस ।
सभासद (सं० पु०) सभ्य, सदस्य, सभा में बैठने वाला ।
सभिक (सं० पु०) जुआ खेलाने वाला, नाल निकालने वाला ।
सभीत (वि०) भययुक्त, डरा हुआ, भयभीत ।
सभीति (वि०) भयपूर्वक, डर के साथ ।
सभ्य (सं० पु०) सदस्य, सभासद, सभा में बैठने वाला, सभा के योग्य, चतुर, बुद्धिमान्, नागरिक, सभ्यता-युक्त ।
सम (अव्य०) तुल्य, समान, बराबर, सदृश, सब, पूरा, पूर्ण, गणित विशेष, समजोड़ ।
सम कटिबन्ध (सं० पु०) शीत कटिबन्ध और मध्य रेखा के बीच ४६½ अंश का पृथिवी का भाग ।
समक्ष (वि०) सम्मुख, प्रत्यक्ष, नेत्र-गोचर, दृष्टिगोचर, सामने, आँखों के सामने ।
समगम (वि०) बराबर, तुल्य । [आद्यन्त, पूरा पूरा ।
समग्र (वि०) सब, सारा, पूरा, सम्पूर्ण, समस्त,
समग्रता (सं० स्त्री०) सम्पूर्णता ।
समचर (सं० पु०) एक समान व्यवहार करने वाला ।
समज्या (सं० स्त्री०) सभा, परिषत्, कीर्ति, यश ।
समझ (सं० स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान, बूझ, सम्मति, राय, विचार, ध्यान । [ज्ञानवान् ।
समझदार (वि०) विचारवान्, बुद्धिमान्, चतुर, ज्ञानी,
समझना (क्रि० स०) बूझना, हृदयंगम करना, विचारना, धारण करना । [बुझाना ।
समझाती (सं० स्त्री०) समझने का काम, समझाना,
समझाना (क्रि० स०) बुझाना, जनाना, बताना, सिखाना ।
समझावा (सं० पु०) समझाना बुझाना, बतलाना ।
समञ्जस (सं० पु०) योग्यता, औचित्य, योग्य ।
समता (सं० स्त्री०) बराबरी, तुल्यता, सादृश्य ।
समत्रिभुज (सं० पु०) जिस त्रिभुज की तीनों भुजाएँ बराबर हों ।
समदर्शी (वि०) बराबर देखने वाला, पक्षपात न करने वाला, तरफ़दारी न करने वाला, सब को समान दृष्टि से देखने वाला ।
समद्विबाहु (वि०) जिसकी दो भुजाएँ समान हों ।
समधिन (सं० स्त्री०) समधी की स्त्री, पति पत्नी की माताएँ आपस में समधिन होती हैं ।
समधियाना (सं० पु०) समधी का घर, समधी का गाँव, लड़का या लड़की की ससुराल ।
समधी (सं० पु०) पुत्र या पुत्री के श्वसुर (वि०) बराबर बुद्धि वाला ।
समन्त्र (सं० पु०) सेंहुड़ का पेड़ ।
समन्तात् (अव्य०) सर्वत्र, चारों ओर, सब ओर से ।
समन्वय (सं० पु०) समझौता, आपस में मेल, लक्ष्य में लक्षण का घटना ।
समन्वित (वि०) संयुक्त, समेत, साथ, सहित ।
समपृष्ठ (वि०) समतल, बराबर ।
समबल (वि०) बराबर बल वाला, समान बल, तुल्यबल ।
समभाव (सं० पु०) बराबरी, समता ।
समया (सं० पु०) काल, बेला, वक़्त, अवसर, अवकाश ।
समर (सं० पु०) लड़ाई, युद्ध, रण, जंग ।
समर्थ (वि०) पराक्रमी, बलवान्, शक्तिमान् ।
समर्थन (सं० पु०) प्रमाणित करना, सिद्ध करना, कही बात को पुष्ट करना ।

समर्थना (सं० स्त्री०) प्रार्थना, सिफ़ारिश (क्रि० स०) पुष्ट करना, प्रमाणित करना ।
समर्पण (सं० पु०) अर्पण, दान, त्याग देना, अपना अधिकार हटाकर दूसरे का अधिकार उत्पन्न करना, उपहार देना, सौंपना, थाती रखना ।
समर्पना (क्रि० स०) समर्पित करना, सौंपना, देना, अपना अधिकार हटाकर दूसरे का अधिकार उत्पन्न करना । [किया हुआ ।
समर्पित (वि०) प्रदत्त, दिया हुआ, सौंपा गया, दान
समल (वि०) मलयुक्त, मलिन, मैला, पापयुक्त ।
समवाय (सं० पु०) भीड़, समूह, मिलावट, मेल, इत्तिफ़ाक़, संबन्ध, न्यायशास्त्रानुसार एक संबन्ध का नाम ।
समवेदना (सं० स्त्री०) किसी विपत्ति में बराबर रूप से साथ देना । [या क्रिया वाला ।
समशील (वि०) तुल्य स्वभाव, समानशील, समान गुण
समस्त (वि०) कुल, बिलकुल, सब, सारा, सकल, समग्र ।
समस्या (सं० स्त्री०) संक्षिप्त अर्थ, समासार्थ, मिला हुआ अर्थ, तर्ज़, तरह, कठिन बात, छन्द का एक टुकड़ा, छन्द का अन्तिम चरण, जिसके आधार पर अन्य तीन चरण कविगण पूरा करते हैं, यथा—ह्वै के द्विजराज काम करत कसाई के ।
समा (सं० पु०) समय, वक़्त, बहुलायत, दशा, अवस्था, दिशा, मिलाव, एक ताल, एक स्वर, एक लय, शोभा, गाना जमाना ।
मुहा०—समा बँधना=राग गूँजना । [सन्तोष, धैर्य ।
समाई (सं० स्त्री०) शक्ति, सामर्थ्य, समाव, फैलाव,
समाकुल (वि०) घिरा हुआ, दुःखी, परेशान ।
समागम (सं० पु०) संयोग, मिलाव, अवाई, साथ, मिलना, भीड़भाड़, मेला, समवाय ।
समाचार (सं० पु०) संदेशा, वृत्तान्त, चर्चा, ख़बर, हाल, कुशल-मंगल ।
समाचारपत्र (सं० पु०) चिट्ठी, ख़त, अख़बार ।
समाज (सं० पु०) सभा, समूह, वृन्द, जातीय संगठन, जातीय बन्धन ।
समाजी (सं० पु०) समाज में बैठने वाला, सभासद, सभ्य, तबला सरंगी आदि बजाने वाला, भड़ुआ ।
समादर (सं० पु०) सम्मान, सत्कार, प्रतिष्ठा, अधिक आदर ।
समाधान (सं० पु०) समझौता, शंका का उत्तर, ढारस ।
समाधि (सं० स्त्री०) योग की क्रिया विशेष, मन की एकाग्र अवस्था, वाह्यविषयों से इन्द्रियों को हटाकर ध्येय विषय की ओर लगाने की अवस्था, साधुओं का अन्तिम संस्कार, साधु संन्यासियों के मृतक शरीर को जल में प्रवाह करना या ज़मीन में गाड़ना ।
समान (वि०) तुल्य, सदृश, एकसा, बराबर, पाँच प्राणों में से एक प्राण का नाम ।
समानता (सं० स्त्री०) समता, बराबरी ।
समानवर्ती (सं० पु०) धर्मराज (वि०) एक रस ।
समाना (क्रि० अ०) अटना, अमाना, भरना, पूरा, होना, घुसना ।
समानान्तर (सं० पु०) बीच, बराबर, दो रेखाओं के बीच का समान अन्तर, तुल्यान्तर, मुतवाज़ी ।
समापत (सं० पु०) समाप्त करना, सम्पूर्णता, समाप्ति, ख़तम होना ।
समाप्त (वि०) जो हो चुका हो, जो पूरा हो गया हो, पूरा, पूर्ण, सम्पूर्ण, सिद्ध, ख़तम, तमाम, अन्त, आख़िर ।
समाप्ति (सं० स्त्री०) अवसान, पूर्ति, पूर्णता, ख़ातमा ।
समारोह (सं० पु०) भीड़भाड़, धूमधाम, जमाव, मेला, तैयारी ।
समाली (सं० स्त्री०) फूलों का गुच्छा, पुष्प-स्तवक ।
समालू (सं० पु०) एक प्रकार का पौधा ।
समालोचना (सं० स्त्री०) भली भाँति देखना-भालना, अच्छी तरह विचारना ।
समाव (सं० पु०) समावेश, ठौर, स्थान । [अटना ।
समावेश (सं० पु०) प्रवेश, सङ्ग्रह, स्थान मिलना,
समास (सं० पु०) दो या दो से अधिक पदों का एक होना, संक्षेप अविग्रह, पदों का मेल, व्याकरण में समास के छः भेद हैं—तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि, अव्ययी भाव, द्वन्द्व । [मुतमैयन ।
समाहित (वि०) स्थिर, अचल, अटल, समाधिस्थ,
समाह्वान (सं० पु०) बुलाना, पुकारना, आह्वान ।
समिति (सं० स्त्री०) मिताई, मित्रता ।
समिधि (सं० स्त्री०) होम की लकड़ी, ईंधन ।

समीकरण (सं० पु०) बराबर करना, बीजगणित में एक तरह का गणित जिसमें दो राशि बराबर होती हैं। [वाला।

समीकार (सं० पु०) तुल्य करने वाला, समान करने

समीचीन (वि०) सच्चा, योग्य, ठीक, यथार्थ, उत्तम, बहुत अच्छा।

समीप (सं० पु०) निकट, पास, नज़दीक।

समीपता (सं० स्त्री०) निकटता, नज़दीकपन।

समीपी (वि०) निकटवासी, पास वाला (सं० स्त्री०) समीपता।

समीय (सं० स्त्री०) लज्जा, शर्म, अधिक चेष्टा करना।

समीर (सं० पु०) पवन, वायु, हवा।

समीरण (सं० पु०) पवन, वायु, हवा, समीर।

समीहा (सं० स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा।

समुचित (वि०) यथायोग्य, ठीक।

समुच्चय (सं० पु०) इकट्ठा, ढेर, राशि, संग्रह, समूह, वाक्यों का मेल। [मिलाप होता है।

समुच्चयार्थ (वि०) जिससे शब्दों और वाक्यों का

समुज्झित (वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ।

समुत्पाटन (सं० पु०) उखाड़ना, उपारना, जड़ खोदना।

समुदाय (सं० पु०) समूह, झुण्ड, दल, समुच्चय, संग्रह।

समुद्र (सं० पु०) सागर, निधि, पानी का बड़ा भाग।

समुद्रफल (सं० पु०) एक औषधि का नाम।

समुद्रयान (सं० पु०) जहाज़, पोत।

समुन्नत (वि०) उच्च, वृद्धयुक्त।

समुल्लास (सं० पु०) आनन्द, हर्ष।

समूचा (वि०) सारा, पूरा, सब का सब, तमाम।

समूह (सं० पु०) भीड़-भाड़, झुण्ड, थोक, समुदाय, ढेर, गिरोह, दल।

समूहानी (क्रि० स०) सामने मिली हुई।

समृद्ध (वि०) भाग्यवान्, सम्पदावाला, धनवान्, समर्थ, दौलतमंद। [तरक्की।

समृद्धि (सं० स्त्री०) बढ़ती, उन्नति, धन, विभव, ऐश्वर्य,

समे (सं० पु०) समय, वक्त, अवकाश, अवसर, मौक़ा।

समेट (सं० स्त्री०) बटोर, सिकोड़, संकोचन। [करना।

समेटना (क्रि० स०) इकट्ठा करना, बटोरना, एकत्र

समेत (अव्य०) सहित, साथ।

समों (सं० पु०) समय, वक्त।

समोना (क्रि० अ०) गर्म पानी में ठंडा पानी मिलाना।

समौ (सं० पु०) समय, समों, समें, वक्त।

सम्पत्ति (सं० स्त्री०) धन, दौलत, सुख, बढ़ती, न्यामत।

सम्पदा (सं० स्त्री०) ऐश्वर्य, धन, विभव।

सम्पन्न (वि०) युक्त, शामिल, पूरा, परिपूर्ण, सम्पूर्ण, भाग्यवान, ऐश्वर्यशाली, सम्पदा वाला, धनी, धनवान्।

सम्पर्क (सं० पु०) संसर्ग, लगाव, संबंध, संयोग।

सम्पात (सं० पु०) गिरना, स्पर्श, रेखा-गणित की वह लकीर जो चक्के के घेरे को छूने पर बढ़ाने से उसको न काटे।

सम्पाति (सं० पु०) जटायु नामक गीध का भाई, रावण के हर ले जाने पर सीता का पता हनुमान आदि बानरों को इसी ने दिया था।

सम्पादक (सं० पु०) सम्पादन करने वाला, पूरा करने वाला, निरूपक, कहने वाला, बयान करने वाला, समाचार-पत्र, पुस्तकमाला आदि को अपने लेख या दूसरों के लेख को यथास्थान रख कर निकालने वाला।

सम्पादन (सं० पु०) प्राप्ति, निरूपण करना, समाप्त करना, पूरा करना, प्रबंध करना, निरूपण, कथन।

सम्पुट (सं० पु०) जुड़ाव, बँधाव, मिलान।

सम्पुटक (सं० पु०) पिटारा, पेटी। [ख़तम।

सम्पूर्ण (वि०) पूरा, परिपूर्ण, सब, सारा, समाप्त,

सम्प्रति (अव्य०) अब, अभी, अधुना, इसी समय।

सम्प्रदान (सं० पु०) चतुर्थी विभक्ति, चौथा कारक, भली भाँति देना। [धर्म, कुल-रीति।

सम्प्रदाय (सं० पु०) परम्परा का धर्म, परिपाटी, कुल-

सम्प्रेषित (वि०) पठाया गया, भेजा हुआ, ख़ारिज हुआ।

सम्फुल्ल (वि०) फूला हुआ, खिला हुआ, विकसित।

सम्बद्ध (वि०) संयुक्त, बाँधा गया, घेरा गया।

सम्बन्ध (सं० पु०) सम्पर्क, नाता, लगाव, तुक, छठाँ कारक, षष्ठि विभक्ति। [रिश्तेदार, गोत्री।

सम्बन्धी (सं० पु०) संबन्ध रखने वाला, नातेदार,

सम्बोधन (सं० पु०) जतलाना, चिताना, चेत कराना, सामने कराना, धीरज दिलाना, पुकारना, व्याकरण में आठवाँ कारक। [हुआ, पुकारा हुआ।

सम्बोधित (वि०) संबोधन किया हुआ, जताया

सम्भलना (क्रि० अ०) थमना, सुधरना, खड़ा होना।
सम्भव (सं० पु०) उत्पत्ति, पैदा होना, हो सकना, कारण मिलना, होनहार, होने योग्य, उद्भव, उचित।
सम्भार (सं० पु०) थमाव, सुधार, रक्षा।
सम्भाल (सं० पु०) सम्भार, थमाव, सुधार, रक्षा।
सम्भालना (क्रि० स०) थामना, सुधारना, रक्षा करना।
सम्भावना (सं० स्त्री०) सम्भव होना, इच्छा, चाह, सन्देह, दुविधा, वह कार्य जिससे वर्तमान और भविष्यत् काल जाना जाय।
सम्भाषण (सं० पु०) बोलचाल, बातचीत, वार्तालाप।
सम्भूत (वि०) उत्पन्न, पैदा, उद्भव। [का शृङ्गार।
सम्भोग (सं० पु०) हर्ष, सुख, सुरति, मैथुन, एक प्रकार
सम्भोजन (सं० पु०) भोज, भण्डार।
सम्भ्रम (सं० पु०) आदर, सम्मान, खातिरदारी, उतावली, डर, डबडबाहट, घूमना।
सम्मत (सं० पु०) अनुमत, स्वीकृत, राय के मुआफ़िक़।
सम्मति (सं० स्त्री०) सलाह, विचार, राय, चाह, इच्छा, स्वीकार, समानता।
सम्मतिपत्र (सं० पु०) राज़ीनामा, सुलहनामा।
सम्मान (सं० पु०) आदर, सत्कार, मर्यादा, प्रतिष्ठा।
सम्मिलित (वि०) संयुक्त, मिला हुआ।
सम्मुख (सं० पु०) सामने, आगे, प्रत्यक्ष।
सम्यक् (क्रि० वि०) अच्छी भाँति से, भले प्रकार से, उत्तम रूप से, ठीक, योग्यता से, सब तरह से, सब भाँति से।
सम्राट (सं० पु०) भूमि का मालिक, राजसूय यज्ञ करने वाला, सार्वभौम, चक्रवर्ती, शाहनूशाह।
सय (सं० पु०) सौ, शत, १००।
सयान (वि०) अधिक अवस्था वाला।
सयाना (वि०) समझदार, चतुर, प्रवीण, निपुण, बुद्धिमान्, पक्का छली। [जल।
सर (सं० पु०) सरोवर, तालाब, झील, तीर, बाण, पानी,
सरकंडा (सं० पु०) नरकट, नरसल।
सरक (सं० पु०) शराब, शराब का खुमार। [हटना।
सरकना (क्रि० अ०) टलना, चलना, भागना, खिसकना,
सरकाना (क्रि० स०) खिसकाना, भगाना, हटाना।
सरगुण (वि०) गुण सहित, सगुण।
सरघा (सं० स्त्री०) मधुमक्खी।
सरदा (सं० पु०) ख़रबूज़ा, एक फल का नाम।
सरन (सं० पु०) आश्रय, बचाव, पनाह।
सरना (क्रि० अ०) बनना, चलना, निकलना, सड़ना, पूरा होना।
सरपट (सं० स्त्री०) बगटुट दौड़, घोड़े की बड़ी दौड़। मुहा०—सरपट फेंकना = घोड़े को ख़ूब ज़ोर से दौड़ाना।
सरपत (सं० पु०) पतली पतावर, सेंठा।
सरपोश (फ़ा० सं० पु०) ढकना, ढपना, चिलम ढाँकने की चीज़।
सरबर (सं० पु०) तालाब, झील।
सरबरी (सं० स्त्री०) बराबरी, समानता। [जल्दी।
सरय (सं० पु०) एक प्रकार का बन्दर (अव्य०) शीघ्रता,
सरयू (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम जिसको लोग घाघरा, घर्घरा, देविका या देवा भी कहते हैं। यह नदी हिमालय से निकल कर नेपाल अवध आदि स्थानों में होती हुई अयोध्या के पास गंगा में मिली है।
सरल (वि०) सीधा, सहल, सोझा, सच्चा, ईमानदार, धर्मात्मा, निष्कपट, सीधा, सादा, ऊँचा, दीर्घ।
सरवर (सं० पु०) ताल, तालाब, झील, पोखरा।
सरस (वि०) रसयुक्त, रसीला, रस वाला।
सरसाई (सं० स्त्री०) अधिकाई, बहुतायत, कसरत, उत्तमता।
सरसाना (क्रि० अ०) बढ़ना, अधिक होना, वृद्धि होना।
सरसिज (सं० पु०) कमल, पद्म, एक प्रकार का फूल जो जल में खिलता है।
सरसी (सं० स्त्री०) तालाब, छोटा पोखरा। [फूल।
सरसीरुह (सं० पु०) कमल, पद्म, पानी में उगने वाला
सरसों (सं० स्त्री०) एक तेल वाला अन्न जिससे कड़ुआ तेल निकलता है, यह राई से कुछ बड़ी होती है, यह पीली, काली और लाल रंग की भी होती है।
सरस्वती (सं० स्त्री०) एक नदी का नाम, जो कि गुप्त रूप से प्रयाग में गंगा जमुना के संगम में मिली है, वाणी, बोली, बागीसरी, शारदा, भारती।
सरा (सं० पु०) शराब, चिता।
सराई (सं० स्त्री०) ढकनी, छोटा सरा।

सराप (सं० पु०) शाप, श्राप, बददुआ।
सरापना (क्रि० अ०) शाप देना, बददुआ देना, अशुभ कामना करना, गाली देना।
सराफ़ (सं० पु०) लेन देन करने वाला, महाजन, चाँदी सोने के गहने बेचने वाला।
सराफ़ी (सं० स्त्री०) लेन देन, महाजनी।
सरावक (सं० पु०) जैनी, जैन धर्मी, जैन धर्मी गृहस्थ।
सरावगी (सं० पु०) एक जाति का नाम, जैनी, जिन धर्म को मानने वाला।
सरावन (सं० पु०) हेंगा जिससे खेत के ढेले तोड़ते हैं।
सराह (सं० स्त्री०) बड़ाई, स्तुति, प्रशंसा, तारीफ़।
सराहना (क्रि० अ०) स्तुति करना, बड़ाई करना, तारीफ़ करना।
सरिगम (सं० पु०) स्वर के आरोह, स्वर।
सरित् (सं० स्त्री०) नदी, स्रोत।
सरित्पति (सं० पु०) समुद्र, सागर।
सरित्सुत (सं० पु०) गङ्गा-पुत्र, भीष्म।
सरिता (सं० स्त्री०) नदी, दरिया।
सरिस (वि०) समान, बराबर।
सरी (सं० स्त्री०) सरकण्डा, जिस से तीर बनते हैं।
सरीखा (वि०) समान, बराबर, तुल्य।
सरीफ़ा (सं० पु०) फल विशेष।
सरीसृप (सं० पु०) साँप, बिच्छू आदि। [सुन्दरता।
सरूप (वि०) समान, बराबर (सं० पु०) छबि, शोभा,
सरेखा (सं० पु०) श्लेषा नक्षत्र। [आदि जोड़ते हैं।
सरेश (सं० पु०) एक लसलसी चीज़ जिससे लकड़ी
सरोज (सं० पु०) कमल, पद्म।
सरोजमय (सं० पु०) ब्रह्मा।
सरोता (सं० पु०) सुपारी काटने का औज़ार।
सरोरुह (सं० पु०) कमल, पद्म।
सरोवर (सं० पु०) बड़ा तालाब, झील।
सरोष (वि०) क्रोधित, कुपित।
सरोहा (सं० स्त्री०) एक प्रकार की तलवार।
सर्करा (सं० स्त्री०) खाँड़, शक्कर, बालू, धूल।
सर्ग (सं० पु०) उत्पत्ति, सृष्टि, छोड़ना, निश्चय, अध्याय, स्वभाव, मोक्ष। [ब्रह्म।
सर्गुण (वि०) सब गुणों के साथ, सगुण (सं० पु०)
सर्प (सं० पु०) साँप।
सर्पराज (सं० पु०) साँपों का राजा, वासुकी, शेष।
सर्व (वि०) सब, सारा, सकल, समस्त (सं० पु०) शिव, विष्णु।
सर्वकाल (सं० पु०) नित्य, सदा, हमेशा।
सर्वग (वि०) सब जगह जाने वाला।
सर्वगत (सं० पु०) सर्वत्र व्यापी।
सर्वज्ञ (सं० पु०) सब कुछ जानने वाला, परमेश्वर, शिव।
सर्वत्र (अव्य०) सब ठौर, सब जगह, सब स्थान में।
सर्वथा (क्रि० वि०) सब प्रकार से, सब तरह से, सब भाँति से, सब रीति से, निश्चय करके, निस्सन्देह बिनचूक, समुच्चय, अवश्य।
सर्वदा (अव्य०) सदा, हमेशा, नित्य, सब समय।
सर्वनाम (सं० पु०) वह शब्द, जिसका संज्ञा के स्थान में प्रयोग हो।
सर्वनाश (सं० पु०) सब प्रकार का नाश, सत्यानाश।
सर्वभक्षक (वि०) सब कुछ खाने वाला, धर्मच्युत।
सर्वभक्षी (वि०) देखो "सर्वभक्षक"। [भ्रष्ट।
सर्वभूत (सं० पु०) सब प्राणी, सब मनुष्य, सर्वजन,
सर्वमद (वि०) सर्वव्यापक, जो सब जगह फैला हो, सम्पूर्ण। [वर्तमान।
सर्वव्यापक (वि०) सब जगह फैला हुआ, सर्वत्र
सर्वव्यापी (वि०) सर्वव्यापक।
सर्वस (सं० पु०) सर्वस्व, सब कुछ।
सर्वस्व (सं० पु०) सब धन, सब कुछ।
सर्वाङ्ग (सं० पु०) समस्त शरीर, सब अङ्ग, सारा शरीर।
सर्वोपरि (वि०) सब से बड़ा।
सर्षप (सं० पु०) सरसों।
ससुराहट (सं० स्त्री०) खुजलाहट।
सलकी (सं० स्त्री०) कमल की डंडी।
सलज्ज (वि०) लज्जावान्, लजालू, शर्मीला।
सलना (सं० पु०) मोती, बाहु बाहु की छीमी (क्रि०अ०) छिदना, गड़ना। [क्रीड़ा।
सलभ (सं० पु०) पतंगा, दीपक पर गिरने वाला
सलसलाना (क्रि०अ०) पानी से खूब भीगना, खुजलाना।
सलाई (सं०स्त्री०) लोहे या सीसे का पतला तार, सुरमा लगाने की सलाई।
सलिता (सं० स्त्री०) नदी, सरिता, सिन्धु।
सलिल (सं० पु०) जल, पानी, आसान, सहल, सहज

सलिलाशय (सं० पु०) तालाब, जलाशय।
सलूना (वि०) देखो "सलोनो"।
सलूनो (सं० स्त्री०) देखो "सलोनो"।
सलूप (वि०) थोड़ा, बहुत थोड़ा, अत्यल्प।
सलोन (वि०) लोन सहित, नमकीन।
सलोना (वि०) नमकीन, सुस्वाद, मज़ेदार, रोचक, स्वादिष्ट, सुन्दर, साँवला, सुहावना, .खूबसूरत।
सलोनी (वि०) रोचक, रुचिकर।
सलोनो (सं० स्त्री०), श्रावणी, सावन की पूनो जिस दिन रक्षाबंधन होता है।
सल्लभ (सं० पु०) एक प्रकार का कपड़ा।
सल्लु (सं० पु०) जूता सीने का चाम।
सल्लो (वि०) भोंदली स्त्री, फूहड़ स्त्री।
सवति (सं० स्त्री०) एक पुरुष की दो स्त्रियाँ आपस में सवति लगती हैं।
मुहा०—सवतिया डाह=अत्यधिक बैर।
सवर (सं० पु०) भील, कोल।
सवरस (सं० पु०) जल, पानी।
सवरी (सं० स्त्री०) भीलनी, कोलिन।
सवर्ण (वि०) समान वर्ण, एक जाति वाला, सजातीय।
सवा (वि०) एक और चौथाई।
सवाई (सं० पु०) जयपुर की राजाओं की पदवी (वि०) सवा, एक और चौथाई।
सवाङ्ग (सं० पु०) भड़ैती, नक़ल बनाना, वेष बदलना, दूसरा रूप बनाना, खेल तमाशा।
सवाचना (क्रि० स०) जाँचना, परखना, ढूँढ़ना।
सवाद (सं० पु०) रस, मज़ा, लज़्ज़त, .खुशी।
सवाया (वि०) एक और चौथाई।
सवार (सं० पु०) असवार, घुड़चढ़ा।
सवारी (सं० स्त्री०) वाहन, चढ़ैती, असवारी।
सविता (सं० पु०) सूर्य, बारह की संख्या।
सवैया (सं० पु०) एक और चौथाई, सवा, सवा का पहाड़ा, एक प्रकार का बाँट जो एक सेर और पाव का होता है, एक छन्द का नाम।
सव्य (वि०) बायाँ, प्रतिकूल (सं० पु०) विष्णु।
सव्यसाची (सं० पु०) अर्जुन।
सशङ्क (वि०) डरा हुआ, सभय।
ससक (सं० पु०) .खरगोश, चौगड़ा।
ससा (सं० पु०) खरहा, .खरगोश।
ससापात्री (सं० स्त्री०) लजारू।
ससुर (सं० पु०) पति या पत्नी का बाप।
ससुराल (सं० स्त्री०) ससुर का घर।
सस्ता (वि०) मन्दा, जो महँगा न हो।
सस्य (सं० पु०) फल, अन्न, खेत में लगा हुआ अन्न।
सह (अव्य०) साथ, सहित (वि०) सहने योग्य।
सहकार (सं० पु०) सब से उत्तम आम, सहायता।
सहकारी (वि०) सहायक, मददगार, मदद करने वाला।
सहगामिनी (सं० स्त्री०) सती, अपने पति के मृत शरीर के साथ जलने वाली, पूर्ण पतिव्रता।
सहचर (सं० पु०) संगी, साथी, हमराही।
सहचरी (सं० पु०) साथ रहने वाली, साथिनी, संगिनी, सहेली, स्त्री, पत्नी, अपनी लुगाई।
सहज (वि०) साथ पैदा होने वाला, स्वाभाविक, प्राकृतिक, सुगम, आसान, सहल।
सहजन (सं० पु०) एक पेड़ का नाम, जिसके फल लम्बे और पतले होते हैं, मुनगा।
सहदेई (सं० स्त्री०) एक पौधे का नाम। [माद्री का पुत्र।
सहदेव (सं० पु०) पंच पाण्डवों का सब से छोटा भाई,
सहदेवी (सं० स्त्री०) देखो "सहदेव"।
सहन (सं० पु०) सहना, सहिष्णुता, गमख़्वारी, क्षमा, एक कपड़े का नाम (वि०) सन्तोषी, सहने वाला।
सहनशील (वि०) सन्तोषी, सहिष्णु, गमख़ोर, परहेज़ी।
सहनहार (वि०) सहने वाला।
सहना (क्रि० अ०) भोगना, उठाना, पाना, भुगतना, सन्तोष करना, सुन लेना, बरदाश्त करना।
सहनाई (सं० स्त्री०) एक बाजे का नाम।
सहपाठी (सं० पु०) साथ पढ़ने वाला, सतीर्थ।
सहमरण (सं० पु०) साथ मरना, सती होना।
सहयोगी (सं० पु०) साथी, संगी। [धीरे धीरे मलना।
सहराना (क्रि० अ०) थर्थराना, सहलना, चुलचुलाना,
सहरावन (सं० पु०) सुरसुरी, गुदगुदी।
सहरी (सं० स्त्री०) दूध की मलाई, एक मछली।
सहलाना (क्रि० अ०) गुदगुदाना, चुलचुलाना।
सहलाहट (सं० स्त्री०) गुदगुदाहट, चुलचुलाहट।
सहवास (सं० पु०) पड़ोस, एकत्रवास।

सहवासी (सं० पु०) पड़ोस, हमसाया।
सहवैया (वि०) सहने वाला।
सहस (वि०) हज़ार।
सहसाँखी (सं० पु०) इन्द्र, देवताओं के राजा।
सहसा (क्रि० वि०) झटपट, बिना बिचारे, एकाएकी, [उतावली से।
सहसानन (सं० पु०) शेषनाग।
सहस्र (वि०) हज़ार, दस सौ।
सहस्रनयन (सं० पु०) देवराज, इन्द्र।
सहस्रबाहु (सं० पु०) कार्त्तवीर्य, इसको परशुराम ने मारा था। [मददगार।
सहाई (सं० स्त्री०) सहायता, मदद (वि०) सहायक,
सहाऊ (वि०) सहनीय, सहन करने योग्य।
सहाङ्ग (वि०) सहने योग्य।
सहाना (सं० पु०) एक राग का नाम (क्रि० स०) निर्वाह कराना, सन्तोष कराना, बरदाश्त कराना।
सहानुभूति (सं० स्त्री०) अनुवेदना, हमदर्दी, सुख दुःख का साथी होना।
सहाय (सं० पु०) मदद, सहारा, सहाई, अनुकूलता, सहायक, मददगार। [उपकारी।
सहायक (सं० पु०) मदद देने वाला, मददगार, रक्षक,
सहायता (सं० स्त्री०) सहाय, मदद, सहारा, सहाई।
सहारा (सं० पु०) मदद, सहायता, आसरा, सहाय।
सहित (वि०) साथ, संग, समेत, संयुक्त, मेल।
सहिदानी (सं० स्त्री०) निशानी, चिह्न।
सहिय (वि०) साथ, समेत, एकत्र।
सहिराना (क्रि०स०) खुजलाना, सहराना।
सहिष्णु (वि०) सहनशील, क्षमावान्।
सहिष्णुता (सं० स्त्री०) सहनशीलता।
सही (वि०) सच, बहुत अच्छा, हाँ, निश्चय, एक प्रकार का खाता बही, हस्ताक्षर, दस्तख़त।
सहेजना (क्रि० अ०) सौंप देना, सुपुर्द करना, जाँचना, सैंतना, परखना, इकट्ठा करना, बनाना, ठहरा रखना।
सहेली (सं० स्त्री०) साथ रहने वाली, सखी, सजनी, आली, गोइयाँ, सहचरी, संगिनी।
सहोदर (वि०) एक माँ से पैदा हुआ, सगा।
सहोदर भ्राता (सं० पु०) सगा भाई, सहोदर भाई।
सहोटी (सं० स्त्री०) दरवाज़ा, चौखट।
सह्य (वि०) सहने योग्य, बरदाश्त करने योग्य, जो सहा जाय।
साँई (सं० पु०) मालिक, नाथ, स्वामी, ईश्वर, परमेश्वर, प्रभु, फ़क़ीर, हवा के धीरे धीरे चलने का शब्द।
साँऊँ (वि०) सीखने वाला, शिष्य।
साँऊगी (सं० स्त्री०) साँगी।
साँक (सं० स्त्री०) शंका, श्वास रोग विशेष।
साँकर (सं० पु०) सिंकली, करधनी, नाका, धारा, कठिनता, दुःख, झंझट, सँकड़ा, संकेत, तंग, सँकड़ी गली, गाढ़।
साँकरी (सं० स्त्री०) "देखो साँकर"।
साँकल (सं० स्त्री०) संकल, सिकली, एक गहना, ज़ंजीर।
साँखू (सं० पु०) पुल, सेत, बाँध, एक प्रकार की लकड़ी।
साँखो (सं० पु०) देखो "साँखू"।
साँग (सं० स्त्री०) बर्छी, सेल, गाड़ी में बनी हुई एक जगह जिसमें गठरी आदि रखते हैं।
साँगी (सं० स्त्री०) देखो "साँग"।
साँगुस (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली, शंक।
साँघर (सं० पु०) अगले पति का पुत्र।
साँच (वि०) सत्य, सच।
साँचा (सं० पु०) मिट्टी की एक ऐसी चीज़ जिसमें कोई चीज़ ढाली जाती है या उसका रूप बनाया जाता है (वि०) सच्चा, सत्यवक्ता।
साँझ (सं० स्त्री०) संध्या, सायंकाल, शाम।
साँझा (सं० स्त्री०) गोबर की मूरतें जिनको लड़के लड़कियाँ आश्विन कृष्ण पक्ष में भीतों पर बनाती हैं।
साँझी (सं० स्त्री०) देखो "साँझा"।
साँटा (सं० पु०) कोड़ा, एँड़।
साँटी (सं० स्त्री०) छड़ी, लग्गी।
साँटी (सं० पु०) बदला, पलटा। [लंबा लबादा।
साँठ (सं० स्त्री०) योग, संयोग, गुष्ट, अन्न पीटने के लिये
साँठ गाँठ (सं० पु०) मेल, संयोग।
साँठना (क्रि० अ०) सटाना, लगाना, जुहाना।
साँड़ (सं० पु०) अगुवा बैल, वह बैल जो दागकर छोड़ दिया जाता है।
साँड़नी (सं० स्त्री०) ऊँटनी।
साँड़ा (सं० पु०) छिपकली की तरह का एक जानवर

जिसका हकीम लोग तेल निकाल कर तिला बनाते हैं।

साँढ़ (सं० पु०) साँड़, अणुआ बैल।

साँती (अव्य०) संती, बदले।

साँप (सं० पु०) सर्प, एक विषैला लंबा जानवर।

साँपन (सं० स्त्री०) साँप की स्त्री, सर्पिणी।

साँभर (सं० पु०) एक प्रकार का नमक जो साँभर झील से निकाला जाता है।

साँवर (वि०) श्यामला, साँवला।

साँवला (वि०) श्याम वर्ण, कुछ कुछ काला।

साँवा (सं० पु०) एक अन्न का नाम।

साँस (सं० स्त्री०) श्वास, दम, प्राण।

मुहा०—साँस उलटी लेना=नाक में दम आना। साँस भरना=लम्बी साँस भरना। साँस रुकना=गला घुटना। साँस रोकना=गला घोटना।

साँसति (सं० स्त्री०) कठिन दंड, अटकाव, व्याकुलता।

साँसना (क्रि० स०) डाँटना, धमकाना, ताड़ना, कुदृष्टि से देखना।

साँसयिक (वि०) संदेहयुक्त, चिन्तायुक्त।

साँसा (सं० पु०) संदेह, शंका, डर, चिन्ता।

सांसारिक (वि०) संसार का, संसारी, दुनियावी।

सा (अव्य०) बराबर, कुछ, कुछेक, थोड़ा, कभी कभी।

साइत (सं० स्त्री०) अच्छी मुहूर्त्त।

साई (सं० स्त्री०) बयाना, किसी वस्तु के ठहराये हुए मूल्य का कुछ अंश आगे देना।

साईस (सं० पु०) घोड़े की ख़िदमत करने वाला।

साक (सं० पु०) शाक, साग।

साकय (अव्य०) सह, साथ।

साका (सं० पु०)सालिवाहन का चलाया संवत्।

साकार (वि०) आकार सहित, रूप सहित, मूर्तिमान।

साक्षात् (क्रि० अ०) सामने, प्रत्यक्ष, आँखों के आगे, प्रगट, प्रसिद्ध। [होना।

साक्षात्कार (सं० पु०) देखादेखी होना, सामना सामनी

साक्षी (सं० पु०) गवाह, जिसने अपनी आँखों देखी हो, साखी, शाहिद (सं० स्त्री०) गवाही, साख।

साख (सं० पु०) गवाही, शहादत, यश, धाक, कीर्ति, नाम, भरम, ऋतु, फ़स्ल, अनाज काटने का समय, मर्यादा, धीति, प्रतीति।

साखि (सं० स्त्री०) देखो "साख"। [गवाही, साख।

साखी (सं० पु०) गवाह, शाहिद, साक्षी (सं० स्त्री०)

साखोच्चार (सं० पु०) वंश-वर्णन।

साख्या (सं० पु०) साक्षात्कार।

साग (सं० पु०) शाक, हरी तरकारी, भाजी।

सागर (सं० पु०) समुद्र, जलनिधि।

सागू (सं० पु०) सागूदाना, साबूदाना।

सागून (सं० पु०) एक तरह की लकड़ी। [दर्शन शास्त्र।

साङ्ख्य (सं० पु०) कपिल मुनि का बनाया हुआ एक

साङ्ग (सं० पु०) समाप्त, पूर्ण, पूरा, अङ्गों के साथ।

साङ्गोपाङ्ग (वि०) सम्पूर्ण, समस्त, ज्यों का त्यों।

साज (सं० पु०) सामान, तैयारी, सरंजाम।

साजन (सं० पु०) सजन, प्यारा, पति।

साजना (क्रि० स०) तैयार करना, सजाना, सँवारना, पहनाना, साधना।

साज़िस (सं० पु०) मेल, संयोग, कपट-प्रबंध।

साजी (सं० स्त्री०) सज्जी, खार, वस्तु विशेष।

साझा (सं० पु०) व्यापारादि में कई मनुष्यों का मेल, शामिलात। [आंशिक।

साझी (सं० पु०) साथी, हिस्सादार, संगी, भागी,

साटोप (वि०) विकट, घमंडी, सगर्व। [और दस।

साठ (वि०) संख्या विशेष, छः का दस गुना, पचास

साठी (सं० पु०) एक प्रकार का बरसाती धान जो बोने के साठवें दिन पक जाता है।

साड़ी (सं० स्त्री०) औरतों के पहनने की धोती।

साढ़सातीं (सं० स्त्री०) शनैश्चर की साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली दशा।

साढ़ा (वि०) देखो "साढ़े"। [पति।

साढ़ू (सं० स्त्री०) साली का पति, स्त्री की बहिन का

साढ़े (वि०) आधा के साथ, जैसे साढ़े तीन अर्थात्,तीन और आधा।

सात (वि०) संख्या विशेष, पाँच और दो।

मुहा०—सात पाँच करना=दुविधा में पड़ना। सात समुन्दर=एक खेल का नाम।

सातू (सं० पु०) सत्तू, सतुआ। [सरल।

सात्विक (वि०) सत्वगुणी, साधु, सीधा, सच्चा,

साथ (अव्य०) संग, सहित, समेत, संगति, सोहबत।

मुहा०—साथ देना=मेल रखना, मिलना।

साथरी (सं० स्त्री०) आसनी, पत्तों का बिछौना, चटाई ।
साथ वाला (वि०) साथी, सङ्गी ।
साथिन (सं० स्त्री०) सखी, सहेली ।
साथिनी (सं० स्त्री०) संगिनी, सहेली, सखी ।
साथी (सं० पु०) संगी, मेली, मिलापी, दोस्त, मित्र ।
साद (सं० स्त्री०) इच्छा, चाह, अभिलाषा ।
सादर (क्रि० वि०) आदर से, सम्मान से, खातिर से ।
सादरा (सं० स्त्री०) एक प्रकार के गति का नाम ।
सादृश्य (सं० पु०) बराबरी, समानता, तुल्यता ।
साध (सं० पु०) सन्त, सत्पुरुष, सज्जन, भला आदमी, विरागी ।
साधक (सं० पु०) साधने वाला, अभ्यास करने वाला, मन्त्र साधने वाला, तपस्वी, साधु, मददगार ।
साधन (सं० पु०) उपाय, यत्न, काम सिद्ध करने की तदबीर, चिन्तन, परमार्थ का अनुष्ठान, बनावट, नित्य क्रिया, अभ्यास ।
साधना (क्रि० अ०) सिद्ध करना, पूरा करना, पक्का करना, ठहराना, साबित करना, बनाना, ठीक ठाक करना, अभ्यास करना, स्वभाव डालना, सीखना, हिलाना, सिखाना, सुधारना, साधना (सं० स्त्री०) अभ्यास, विवाह, बनावट, उपाय, नित्य क्रिया, उपासना, अनुष्ठान ।
साधनिका (सं० स्त्री०) साधना, उपाय, तदबीर, ठीक करने की परिपाटी, पूरा करने की रीति ।
साधनीय (वि०) सिद्ध करने के योग्य, पूरा करने के लायक़, निष्पाद्य । [समान, आम ।
साधारण (वि०) सामान्य, सीधा, सहज, बराबर,
साधारणतः (अव्य०) सामान्य रीति से, आम तौर से ।
साधारणधर्म (सं० पु०) वह धर्म जिसके पालन का सभी को अधिकार हो । [हुआ ।
साधित (वि०) निष्पादित, सिद्ध किया हुआ, पूरा किया
साधी (सं० स्त्री०) थामी हुई, ठहराई हुई ।
साधु (वि०) सन्त, सज्जन, सीधा, सच्चा, शास्त्र-विहित कर्मों को करने वाला, धन्य ।
साधुता (सं० स्त्री०) साधु का कर्म और धर्म ।
साधुसाधु (वि०) धन्य धन्य ।
साध्य (वि०) पूरा होने योग्य, सिद्ध होने योग्य, आराम होने योग्य, चंगा होने योग्य ।
साध्वी (सं० स्त्री०) पतिव्रता स्त्री, सौभाग्यवती स्त्री ।
सान (सं० स्त्री०) सिल्ली, पथरी, लोहे के हथियारों पर धार चढ़ाने का पत्थर, हथियार आदि की धार ।
मुहा०—सान बुझाना = इशारा से बात करना ।
सानना (क्रि० अ०) मिलाना, लपेटना, भिगोना, गूँधना, चोखा करना, तीखा करना, तेज़ करना, सान लगाना ।
सानन्द (वि०) आनन्द के साथ, हर्षित, ख़ुश ।
सानी (सं० स्त्री०) भूसा, खली आदि पानी में मिला हुआ जो गाय बैल आदि खाते हैं । [प्रसन्न ।
सानुकूल (वि०) कृपालु, दयालु, सहायक, मिहरबान,
सान्त्वन (सं० पु०) ढाढ़स देना, धीरज बँधाना ।
सान्ना (क्रि० स०) मिलाना, गूँधना ।
सान्निध्य (सं० पु०) सामीप्य, नज़दीकपन, निकटता ।
सापन (सं० पु०) एक रोग जिसमें सिर के बाल धीरे धीरे गिर जाते हैं ।
सापराध (वि०) अपराधयुक्त, दोषी, कलङ्की ।
साफल्य (सं० पु०) फलित होना, सफलता, कामयाब ।
साबर (सं० पु०) एक तरह का बारहसिंगा, उसका चमड़ा, सिद्ध मन्त्र, शिव-कृत-मन्त्रराज, एक मिट्टी खोदने का औज़ार ।
साबूत (वि०) बिना टूटा फूटा, समूचा, समस्त । [जाती हैं ।
साम (सं० पु०) तीसरा वेद, जिसकी ऋचाएँ गायी
सामग्री (सं० स्त्री०) समान, असबाब, चीज़, वस्तु ।
सामञ्ज (सं० पु०) समय, काल ।
सामध (सं० पु०) समधोटा, समधियों का मिलना ।
सामना (अव्य०) सनमुख, अगाड़ी, आगे ।
मुहा०—सामना करना = लड़ना, मुक़ाबिला करना ।
सामन्त (सं० पु०) वीर, बहादुर, पराक्रमी, योद्धा, मल्ल, उपराजा, राजपूताने के राजाओं के वे सरदार या ज़मींदार जिनकी आमदनी एक लाख रुपये से अधिक हो ।
सामयिक (वि०) समय पर, कालोचित, अवसर की ।
सामर (सं० पु०) लवण विशेष, साँभर नमक । [ताक़त ।
सामर्थ (सं० पु०) बल, शक्ति, पराक्रम, योग्यता,
सामर्थी (वि०) बलवान्, पराक्रमी, प्रतापी, योग्य ।
सामर्थ्य (सं० पु०) सामर्थ, बल, शक्ति, पराक्रम, योग्यता ।

सामा (सं० पु०) सामान, भोजन-सामग्री, मवबली, जमाव।

सामाजिक (सं० पु०) सभासद, सभ्य, समाज के काम में चतुर और उसकी देखरेख करने वाला व्यक्ति (वि०) समाज-संबन्धी।

सामान (सं० पु०) असबाब, अटाला, सामग्री।

सामान्य (वि०) मध्यम, साधारण, चलनसार, चलनीय, प्रचलित, आम।

सामान्यतः (क्रि० वि०) साधारणतः, आम तौर से।

सामान्या (सं० स्त्री०) साधारण नायिका, धन के लोभ से परपुरुष के साथ प्रीति करने वाली वेश्या, व्यभिचारिणी।

सामी (सं० स्त्री०) सामने, आगे, प्रत्यक्ष।

सामीप्य (सं० पु०) समीपता, समीपी, नज़दीक, निकटता, पड़ोस, एक प्रकार का मोक्ष जिसमें भक्त-जन अपने इष्ट देवता के पास रहते हैं।

सामुद्रिक (सं० पु०) एक विद्या जिसके द्वारा स्त्री पुरुष के हाथ पैर आदि अंगों के लक्षणों से भाग्य जाना जाता है, भड्डरी।

सामुहे (अव्य०) सामने, सन्मुख, आगे।

साम्ना (अव्य०) देखो "साम्ने"।

साम्ने (अव्य०) सम्मुख, आगे, अगवाड़ा।

साम्युत (अव्य०) अधुना, इदानीं, योग्य, उचित, अब।

सायङ्काल (सं० पु०) साँझ, संध्या का समय, दिन का अंत।

सायुज्य (सं० पु०) एक प्रकार का मोक्ष जिसमें भक्त अपने इष्ट देव में मिल जाता है, एक हो जाना, एकत्व, अभेद।

सार (सं० पु०) गुदा, मज्जा, हीर, सत, सत्व, रस, जल, मूल, बल, ज़ोर, मूल बात, असल मतलब, ख़ुलासा, क़ीमत, मोल, खाद, खात, लोहा, धन, लाभ, फल, वीर्य, धीरज, धर्म, वज्र, घर, व्रत, काठ का हीर, बहुत अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ (सं० स्त्री०) चौपड़ की गोटी।

सारक (सं० पु०) बाँस, मैना, चिड़िया विशेष।

सारङ्ग (सं० पु०) एक राग का नाम, मोर, साँप, बादल, मोर की बोली, हरिन, पानी, एक देश का नाम, चातक, पपीहा, हाथी, राजहंस, सिंह, कोकिल, एक पेड़ का नाम, कामदेव, कई प्रकार के रंग, भौंरा, मधुमक्खी, धनुष, स्त्री, दीपक, वस्त्र, शंख, चंदन, कपूर, कमल, आभरण, शोभा, सुवर्ण, केश, पुष्प, छत्र, रात्रि, भूमि, दीप्ति, सूर्य, घोड़ा, चन्द्रमा, आकाश, पर्वत, कुंज, मेंढक, चामर, हंस, कुच, खंजन, तालाब, विष्णु का धनुष।

सारङ्गिया (सं० पु०) सारङ्गी बजाने वाला।

सारङ्गी (सं० स्त्री०) एक बाजे का नाम, किंगरी।

सारथि (सं० पु०) रथवान्, कोचवान्, रथ के घोड़े हाँकने वाला, सूत, यन्ता।

सारना (क्रि० अ०) करना, निबाहना, निबड़ना, सुधारना, पाँसना, पूरा करना।

सारस (सं० पु०) एक पखेरू का नाम, चाँद, कमर में पहनने का एक गहना, कमल, सरोवर में उत्पन्न होने वाली वस्तु।

सारस्वत (सं० पु०) एक देश का नाम, ब्राह्मण की एक जाति, एक व्याकरण की पुस्तक का नाम (वि०) सरस्वती संबन्धी।

सारांश (सं०) निचोड़, मुख्य भाग।

सारा (वि०) पूरा, सम्पूर्ण, सब, समस्त (सं० पु०) स्त्री का भाई, साला।

सारार्थ (वि०) प्रधान अर्थ।

सारासर (वि०) सत्यासत्य, साँच झूठ, भला बुरा।

सारिका (सं० स्त्री०) मैना, एक चिड़िया।

सारी (सं० स्त्री०) साड़ी, स्त्रियों के पहनने का वस्त्र, दूध का सार, मलाई, मैना, स्त्री की बहिन।

सारू (सं० पु०) एक चिड़िया का नाम।

सारूप्य (सं० पु०) एक प्रकार का मोक्ष जिसमें भक्त अपने इष्ट देव का स्वरूप बन जाता है।

सार्थ (वि०) सार्थक, अर्थ-सहित।

सार्थक (वि०) अर्थ सहित, सफल, सिद्ध।

सार्द्धम् (अव्य०) साथ।

सार्वभौम (सं० पु०) सारी पृथ्वी का राजा, कुबेर के हाथी का नाम।

साल (सं० पु०) एक लकड़ी का नाम, काँटा, छेद, शाल, सिदार, गाँसी, शूल (सं० स्त्री०) जगह, घर, पाठशाला।

सालगिरह (सं० स्त्री०) वर्ष-गाँठ, जन्म-दिवस।

सालन (सं० पु०) तरकारी, छेदन, मांस, गोश्त।

सालना (क्रि० स०) छेदना, भेदना, पैठाना, बर्माना, पार करना, घुमाना, दुखाना, पिराना, खटकना, दुख पाना।

सालसा (सं० पु०) एक दवा का नाम, जो रक्त को साफ़ करती और बढ़ाती है। [घर।
साला (सं० पु०) स्त्री का भाई (सं० स्त्री०) जगह,
सालिग्राम (सं० पु०) विष्णु रूपी गोल और काला पत्थर जो शालग्रामी नदी में निकलता है।
साली (सं० स्त्री०) स्त्री की बहन, साले की बहन।
सालू (सं० पु०) लाल रंग का कपड़ा, मेंढक।
सालोक्य (सं० पु०) एक प्रकार का मोक्ष जिसमें भक्त अपने इष्ट देव के लोक में चला जाता है।
सालोतरी (सं० पु०) घोड़ों का वैद्य।
सावक (सं० पु०) बच्चा, बालक।
सावकरन (सं० पु०) काले कान का घोड़ा।
सावकाश (सं० पु०) अवसर, अवकाश, समय, मौक़ा, फ़ुर्सत, सुभीता, काम से छुट्टी।
सावज (सं० पु०) बनैला, जंगली जीव, मृग, अहेर।
सावन (सं० पु०) ईर्षा, डाह।
सावधान (वि०) चौकस, सचेत, होशियार, ख़बरदार, अग्रशोची, सजग।
सावधानता (सं० स्त्री०) होशियारी, चौकसी।
सावधानी (सं० स्त्री०) चौकसी, सचेती, होशियारी, ख़बरदारी, चेतौनी, अग्रशोच।
सावन (सं० पु०) वर्ष का पाँचवाँ महीना, श्रावण।
मुहा०—सावन हरे न भादों सूखे=सदा एक से, सदा के समान।
सावन्त (वि०) शूर, वीर, योद्धा, बहादुर।
सावन्ती (सं० स्त्री०) शौर्य, वीरता, बहादुरी।
सावयव (वि०) सांग, अवयव सहित। [आठवाँ मनु।
सावर्ण (सं० पु०) सूर्य संबन्धी, चौदह मनुओं में से
सावाँ (सं० पु०) अन्न विशेष, श्यामक।
सास (सं० स्त्री०) पति या पत्नी की माँ।
सासत (सं० स्त्री०) कष्ट, तकलीफ़।
सासना (क्रि० अ०) ताड़ना, डाटना, साँसना।
साह (सं० पु०) महाजन, बड़ा सौदागर, कोठीवाल, दूकानदार, भला आदमी।
साहचर्य (सं० पु०) संगति, साथ।
साहनी (सं० स्त्री०) सेना, फ़ौज।
साहस (सं० पु०) बल, ज़ोर, बेग, ढाढ़स, हिम्मत, वीरता, पराक्रम, बरबस, बलात्कार, बिना विचार।
साहसी (वि०) तेज़, प्रबल, हिम्मत वाला, निडर, पराक्रमी, वीर, ढीठ, बरबसिया।
साहाय्य (सं० पु०) मित्रता, प्रीति, सहायता, मदद।
साहित्य (सं० पु०) मेल, मिलान, सात उपकरण, विद्या विशेष, अलंकार रस, छन्द आदि।
साही (सं० स्त्री०) कंटकी, एक जानवर का नाम जिसके सारे शरीर में काँटे होते हैं।
साहु (सं० पु०) देखो "साहूकार"।
साहूकार (सं० पु०) महाजन, बैपारी, हुंडी वाला, कोठीवाल, बड़ा दूकानदार, ईमानदार, सच्चा, भला आदमी। [व्यवहार, हुंडी का काम।
साहूकारी (सं० स्त्री०) बैपार, लेनदेन, वाणिज्य,
सिंगरौर (सं० पु०) शृङ्गवेरपुर, एक ग्राम का नाम।
सिंगा (सं० पु०) तुरही, रणसिंहा, एक प्रकार का बाजा।
सिंगार (सं० पु०) शृंगार, शोभा, गहने कपड़ों की सजावट, नौ रसों में से एक रस। [करना।
सिंगारना (क्रि० स०) सजाना, सँवारना, शोभित
सिंगारिया (वि०) देवता का शृंगार करने वाला।
सिंगौरी (सं० स्त्री०) सींग से बना हुआ घोटना, बैल के सींग पर पहनाने लायक़ एक गहना।
सिंघाड़ा (सं० पु०) एक प्रकार का पानी में पैदा होने वाला फल, पानी फल।
सिंह (सं० पु०) शेर, केशरी, मृगराज, मृगेन्द्र, पशुओं का राजा, हिन्दुओं की एक पदवी, जो प्रायः क्षत्रियों में होती है। [का आकार हो।
सिंहद्वार (सं० पु०) पुरद्वार, फाटक, जिस द्वार में सिंह
सिंहनाद (सं० पु०) शेर का गरजना, लड़ाई में वीरों का शब्द, भयानक शब्द।
सिंहनी (सं० स्त्री०) शेरनी, सिंह की स्त्री।
सिंहमुखी (सं० पु०) बाँस।
सिंहल (सं० पु०) सिंहलद्वीप, लङ्का।
सिंहलक (सं० पु०) पीतल। [तख़्त।
सिंहासन (सं० पु०) देवता और राजाओं का आसन,
सिंहिका (सं० स्त्री०) राक्षसी विशेष, राहु की माता।
सिकता (सं० स्त्री०) बालू, रेत।
सिकना (क्रि० अ०) सेंका जाना, भूना जाना।
सिकरी (सं० स्त्री०) साँकल, संकल।
सिकहर (सं० पु०) सींका रस्सी के बने थैले।

सिकुड़न (सं० स्त्री०) बल, शिकन, सिमटन ।
सिक्का (सं० पु०) रुपया, पैसा । [मानने वाले ।
सिक्ख (सं० पु०) शिष्य, छात्र, नानक के मत के
सिक्त (वि०) सींचा हुआ, पटाया हुआ ।
सिखनाहट (सं० स्त्री०) शिक्षा, सीख ।
सिखर (सं० पु०) छोका, शिखर, सिकहर, पहाड़ की चोटी, मन्दिर के ऊपर का गुम्बद ।
सिखरन (सं० स्त्री०) दही, चीनी, किसमिस आदि मिली हुई खाने की एक चीज़ ।
सिखलाना (क्रि० स०) पढ़ाना, बतलाना, शिक्षा देना, उपदेश देना, डाँटना, धमकाना, दण्ड देना, ताड़ना करना ।
सिखाई (सं० स्त्री०) पढ़ाई, शिक्षा ।
सिखाना (क्रि० स०) देखो "सिखलाना" ।
सिखी (सं० पु०) मोर ।
सिगरा (वि०) सब, सारा, सम्पूर्ण, हर एक ।
सिगरौ (वि०) देखो "सिगरा" ।
सिङ्गा (सं० पु०) रणसिंगा, तुरही, वाद्य विशेष ।
सिङ्गार (सं० पु०) शृङ्गार, शोभा, सजावट । [करना ।
सिङ्गारना (सं० पु०) सजाना, शोभा बनाना, सजावट
सिङ्गारिया (सं० पु०) शृङ्गार करने वाला, पूजा करने वाला । [उनके सींग पर लगाया जाता है ।
सिङ्गौटी (सं० स्त्री०) पशुओं का आभूषण विशेष, जो
सिजाना (क्रि० स०) उबालना, रींधना । [डालना ।
सिझाना (क्रि० स०) पकाना, रींधना, उबालना, मार
सिठाई (सं० स्त्री०) फिकाई, फीकापन, मन्दता । [ज़मीन ।
सिड़ (सं० स्त्री०) बावलापन, पागलपन, उन्मत्तता, गीली
सिड़न (सं० स्त्री०) सिड़पन ।
सिड़पन (सं० पु०) बौरहापन, बावलापन ।
सिड़ी (वि०) बावला, बौरहा, पागल, उन्मत्त ।
सित (वि०) धौल, सफ़ेद, श्वेत, शुक्ल वर्ण ।
सितरी (सं० स्त्री०) स्वेद, पसीना ।
सितला (सं० स्त्री०) चेचक, माता का रोग ।
सिद्ध (सं० पु०) देवता विशेष, ऐसा मनुष्य जिस के वश में आठों सिद्धियाँ हों, योगी, ज्ञानी, तपस्वी, सन्त, ज्योतिष में एक योग का नाम (वि०) पूरा, समाप्त, पक्का, बना, तैयार, प्रसिद्ध, विख्यात, सफल, निर्णीत, निश्चित, प्रमाणित, साबित ।
सिद्धयोग (वि०) ज्योतिष का योग विशेष ।
सिद्धान्त (सं० पु०) सच, ठहराई हुई बात, सिद्ध की हुई बात, तर्क से सच ठहराई हुई बात, फल, परिणाम, नतीजा, निर्णय ।
सिद्धान्ती (सं० पु०) मीमांसक, विचारक ।
सिद्धि (सं० स्त्री०) पूर्ण मनोरथ होना, मनोवाञ्छित फल पाना, अणिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ ।
सिद्धिदाता (सं० पु०) श्रीगणेश, सिद्धि ।
सिधाना (क्रि० अ०) दौड़ना, जाना, चला जाना ।
सिधारना (क्रि० अ०) चला जाना, उठ जाना, विदा होना, रवाना होना, दुरुस्त करना, सँवारना, ठीक करना, तरतीब देना ।
सिनक (सं० पु०) नाक का मैल ।
सिनकना (क्रि० अ०) नाक झाड़ना, नाक साफ़ करना ।
सिन्दुर (सं० पु०) एक प्रकार का लाल चूर्ण जिससे स्त्रियाँ माँग भरती हैं और सौभाग्य का चिह्न समझा जाता है ।
सिन्धु (सं० पु०) समुद्र, सागर, एक नदी का नाम, एक देश का नाम, हाथी का मद, एक रागिणी का नाम ।
सिन्धुर (सं० पु०) हाथी, हस्ति, करी, गज ।
सिन्धुरगामिनी (सं० स्त्री०) सुन्दर जाति वाली स्त्री, जिसकी गति गज के समान हो ।
सिपहसालार (फ़ा० सं० पु०) सेनापति ।
सिपाह (फ़ा० सं० स्त्री०) सेना, फ़ौज ।
सिपाही (फ़ा० सं० पु०) पैदल, चपरासी ।
सिप्र (सं० पु०) निदाघ जल, पसीना, चाँद, घाम ।
सिप्रा (सं० पु०) एक नदी का नाम, महिषी, भैंस, कुटनी, रजस्वला ।
सिम (सं० पु०) मछली ।
सिमट (सं० स्त्री०) सकुच, शिकन, सिकोड़न ।
सिमटन (सं० स्त्री०) सिकुड़न, शिकन । [होना ।
सिमटना (क्रि० अ०) सिकुड़ना, बटुरना, संकुचित
सिमर (सं० स्त्री०) संकोच, सिकोड़ ।
सिमाना (सं० पु०) सिवाना, धूर ।
सिमूम (अ० सं० स्त्री०) अरब के रेगिस्तान की गर्म हवा ।
सिय (सं० स्त्री०) सीता, जानकी, श्रीरामचन्द्र की पत्नी, राजा जनक की बेटी ।
सियन (सं० स्त्री०) सीवन, सिलाई ।

सियरा (वि०) ठंडा, कच्चा।
सियान (सं० स्त्री०) सीवन।
सियाना (वि०) चतुर, प्रवीण, अभिज्ञ, दक्ष।
सियार (सं० पु०) गीदड़, शृगाल।
सिर (सं० पु०) मस्तक, माथा।
मुहा०—सिर उठाना=बग़ावत करना। सिर काढ़ना=प्रसिद्ध होना। सिर के ज़ोर से=अपने बल से। सिर खुजलाना=मार खाने को जी चाहना। सिर-चढ़ा=अभिमानी। सिर चढ़ाना=पवित्र समझना, बहुत बढ़ा देना। सिर झुकाना=प्रणाम करना। सिर धुनना=घबड़ाना। सिर तोड़ना=वश में करना। सिर धरना=अधीर होना। सिर नवाना=दीन बनना। सिर पर धूल डालना=रोना। सिर पर चढ़ाना=बहकाना। सिर पीटना=रोना। सिर फिराना=वृथा परिश्रम करना। सिर फेरना=अवज्ञा करना। सिर मारना=बहुत मिहनत उठाना। सिर मुड़ाना=सब से मेल छोड़ कर फ़क़ीर बन जाना।
सिरका (सं० पु०) आसव विशेष, किसी चीज़ को सड़ाकर बनाया हुआ पतला रस।
सिरकी (सं० पु०) खट्टी वस्तु जो मीठे से बनती है (सं० स्त्री०) सरकंडा, सेंठा का ऊपरी भाग।
सिरखप (वि०) मनचला, अपनी टेक पर अटल, प्रणी।
सिरखपाना (वि०) दिमाग़ लड़ाना, सिरपच्ची करना।
सिरखपी (सं० स्त्री०) जोखिम, ढाढ़स।
सिरचढ़ा (वि०) अहङ्कारी, घमंडी।
सिरजन (सं० पु०) रचाव, उत्पत्ति, बनाव।
सिरजनहार (सं० पु०) ईश्वर, रचने वाला।
सिरजना (क्रि० स०) रचना, उत्पन्न करना, बनाना।
सिरजा (वि०) बनाया हुआ, उपजाया हुआ।
सिरफोड़ौवल (सं० स्त्री०) झगड़ा, लड़ाई।
सिरसींग (वि०) दंगा करने वाला, उपद्रवी, बाग़ी, फ़सादी, बलवाई। [तकिया, खाट का सिरा।
सिरहाना (सं० पु०) सिर की ओर, सिर की तरफ़,
सिरा (सं० पु०) सिर, नोक, अन्त।
सिरात (वि०) ठंढा, बीता।
सिराना (क्रि० स०) ठंडा कराना, बहाना, पठाना, व्यतीत करना (क्रि० अ०) बीतना, चला जाना, बहना।
सिरिस (सं० पु०) एक पेड़ और उसके फूल का नाम।
सिल (सं० स्त्री०) पत्थर, चट्टान, साफ़ और बराबर पत्थर जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसा जाता है।
सिलपट (वि०) चौपट, बराबर, उजाड़, चौरस।
सिलबट्टा (सं० पु०) सिल लोढ़ा।
सिलवाई (सं० स्त्री०) सीने की मजदूरी।
सिलवाना (क्रि० स०) कपड़े सी कर तैयार कराना।
सिलाई (सं० स्त्री०) सिलाने का काम, सिलाने की मज़दूरी।
सिलाजीत (सं० पु०) पत्थर का पिघला हुआ रस, एक प्रकार की दवा। [कराना।
सिलाना (क्रि० स०) सिलवाना, तगाना, कपड़े तैयार
सिली (सं० स्त्री०) देखो "सिल्ली"।
सिल्ली (सं० स्त्री०) लोहे के हथियारों पर धार चढ़ाने का पत्थर, पथरी, सान। [डंडार।
सिवाना (सं० पु०) हद, सीमा, अन्त, छोर, डोंड़ा, धूरा,
सिवार (सं० पु०) हरी हरी काई सी एक घास जो तालाबों में पैदा होती है जिस से चीनी साफ़ की जाती है। [बिसूरना।
सिसकना (क्रि० अ०) सिसकी भरना, ठुनकना,
सिसकारी (सं० पु०) सिस सिस शब्द करना।
सिसकी (सं० स्त्री०) कूक, चीत्कार, सी सी शब्द।
सिहरना (क्रि० अ०) काँपना, थरथराना।
सिहरा (सं० पु०) मौर, मुकुट।
सिहराना (क्रि० अ०) थरथराना, सनसनाना, रोंवा खड़ा होना, सहलाना, चुलचुलाना, धीरे धीरे मलना, थकाना, उचारना।
सिहराव (वि०) जड़ाव।
सिहाना (क्रि० अ०) देख कर संतुष्ट होना, किसी अच्छी चीज़ को देख कर उसको पाने के लिये ललचाना, डाह करना। [बनती है।
सींक (सं० स्त्री०) एक प्रकार की घास जिसको झाड़ू
सींकुर (सं० पु०) सींक का फूल।
सींका (सं० पु०) छींका, सिकहर।
सींकिया (वि०) धारीदार, लहरिया, डोरिया।
सींग (सं० स्त्री०) पशुओं का सींग, विषाण, शृङ्ग।
सींगड़ा (सं० पु०) बारूद रखने की सींग, पुराने समय में सिपाही सींग में बारूद रखते थे।

सींगा (सं० पु०) नरसिहा, एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँक कर बजाया जाता है।
सींगिया (सं० पु०) एक प्रकार के विष का नाम।
सींगी (सं० स्त्री०) छोटा नरसिंहा, एक प्रकार की मछली, तोमड़ी।
सींच (सं० स्त्री०) पानी की चाह।
सींचना (क्रि० स०) पानी देना, पनियाना, पटाना।
सींचाई (सं० स्त्री०) सींचने का काम, सींचने की मजदूरी।
सींची (सं० स्त्री०) सींचने का समय।
सींव (सं० पु०) हद, सिवाना, सीमा।
सीकर (सं० पु०) जलकण, पानी की विंदु। [नसीहत।
सीख (सं० स्त्री०) सिखावन, उपदेश, समझ की बात,
सीखना (सं० स्त्री०) पढ़ना, विद्याभ्यास करना।
सीचना (क्रि० स०) सिंचाई करना।
सीज (सं० पु०) नागफनी, एक काँटेदार पौधा।
सीजना (क्रि० अ०) पसीजना, पसीना निकलना, उबलना, गलना, रिसना, निकलना, उफनना।
सीझना (क्रि० अ०) गलना, उबलना।
सीटना (क्रि०अ०) झूठी प्रशंसा करना, ढोंग करना।
सीटी (सं० स्त्री०) एक बाजा जिसको मुँह से बजाते हैं।
सीठना (सं० पु०) विवाह में गाया जाने वाला गाली युक्त गीत।
सीठनी (सं० स्त्री०) देखो "सीठना"।
सीठा (वि०) रस-हीन, फीका, असार, नीरस।
सीठी (वि०) फीका, असार (सं० स्त्री०) पान का उगलन, खूदर, छनन।
सीढ़ी (सं० स्त्री०) सोपान, नसेनी, ज़ीना।
सीत (सं० पु०) ओस।
सीतरस (सं० पु०) मुँह पर का रोग।
सीतलचीनी (सं० स्त्री०) एक दवा का नाम।
सीतलपाटी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की चटाई जो बेंत की बुनी होती है।
सीतला (सं० स्त्री०) माता, चेचक, गोटी।
सीता (सं० स्त्री०) विधि, क्षमा, गंगा, हल के नीचे का लोहा, जानकी, हल के नोक से उत्पन्न होने से इनका नाम सीता पड़ा।
सीतापति (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र।
सीताफल (सं० पु०) सरीफ़ा, कुम्हड़ा, लौकी, कद्दू।
सीदना (क्रि० अ०) दुःखी होना, दुःख पाना।
सीधा (वि०) सोझ, सरल, सामने, सम्मुख, सादा, भोला, निष्कपट, शुद्ध, सच्चा, साधु, खरा, साफ़ दिल, धर्मी, ईमानदार, नेक, दहिना, सूधा (सं० पु०) कोरा अन्न चावल आटा दाल आदि। [गाँठना, तुरपना।
सीना (क्रि० स०) टाँकना, टाँका लगाना, टाँका मारना,
सीप (सं० स्त्री०) एक जल-जन्तु की हड्डी जिससे मोती निकलता है, सितुहा, घोंघा, शंख, एक प्रकार का आम जिसकी गुठली सितुही के समान होती है।
सीपर (फ़ा० सं० पु०) ढाल।
सीमन्त (सं० पु०) केश-रचना, माँग काढ़ना, गर्भवती के छठें या आठवें महीने का संस्कार।
सीमन्तिनी (सं० स्त्री०) नारी, अबला, स्त्री।
सीमन्ती (सं० स्त्री०) स्त्री, औरत।
सीमा (सं० स्त्री०) हद, सिवाना, मर्यादा, अवधि।
सीय (सं० स्त्री०) जानकी, सीता, वैदेही।
सीरा (सं० पु०) मोहनभोग, हलुआ, चाशनी (वि०) ठंढा, शीतल, गीला।
सीला (वि०) गीला, भीगा हुआ, शीतल।
सीव (सं० स्त्री०) सीमा, हद, मर्यादा।
सीवन (सं० पु०) सिलाई, जोड़, मेल।
सीस (सं० पु०) मस्तक, माथा, सिर।
सीसफूल (सं० पु०) सिर के एक गहने का नाम।
सीसा (सं० पु०) एक धातु का नाम।
सीसों (सं० पु०) शीशम का पेड़।
सु (अव्य०) अच्छा, भला, सुन्दर, उत्तम, बहुत (क्रि० वि०) अच्छी तरह से, सुख से, सुन्दरता से, सुगमता से, सहज में, कभी कभी, पूजा, आदर, सम्पदा आदि अर्थों में भी इसका प्रयोग होता है।
सुँघाना (क्रि० स०) महकाना, सुवासना।
सुअन (सं० पु०) बेटा, पुत्र।
सुआर (सं० पु०) रसोइया, रोटी पकाने वाला, बावर्ची।
सुआसिन (सं० स्त्री०) सुहागिन, सौभाग्यवती, सधवा, नातेदार की स्त्री। [सिमटना।
सुकचना (क्रि० अ०) लजाना, शर्माना, डरना, बटुरना,
सुकटा (वि०) दुर्बल, दुबला, पतला।
सुकटी (सं० स्त्री०) भूखी मछली।

सुकठा (वि०) दुबला, सूखा।
सुकड़ना (क्रि० अ०) सिमटना, इकट्ठा होना।
सुकण्ठक (सं० पु०) पिण्ड, खजूर।
सुकर (वि०) सहज, करने योग्य।
सुकर्म (सं० पु०) उत्तम काम, सद्योग, विश्वकर्मा।
सुकवार (वि०) कोमल, निर्मल, नरम। [बहुतायत।
सुकाल (सं० पु०) अच्छा समय, अच्छी ऋतु, सस्तापन,
सुकुमार (सं० पु०) कोमल, मनोहर, सुन्दर, नाजुक, चम्पा, केला, गन्ना, बालक।
सुकृत (सं० पु०) पुण्य, सुकर्म, कीर्ति, अच्छा काम (वि०) पुण्यात्मा, धर्मात्मा, सुशील, भाग्यवान्।
सुकृती (वि०) पुण्यवान्, धर्मात्मा, दाता, धन्य, अच्छा काम करने वाला। [हर्ष।
सुख (सं० पु०) चैन, आनन्द, आराम, कल, शान्ति,
सुखकारी (वि०) सुख देने वाला।
सुखचैन (सं० पु०) अवकाश, अवसर, विश्राम।
सुखतल्ला (सं० पु०) जूते में ऊपर से लगा हुआ दूसरा तल्ला जिससे ढोला जूता कुछ सकेत हो जाता है।
सुखद (वि०) सुख देने वाला।
सुखदर्शन (सं० पु०) एक पौधे का नाम।
सुखदाई (वि०) सुख देने वाला।
सुखदायक (वि०) सुख देने वाला।
सुखदास (सं० पु०) एक प्रकार के धान का नाम।
सुखपाल (सं० पु०) पालकी, डोली। [कान्ति, चमक।
सुखमा (सं० स्त्री०) सुषमा, अत्यधिक सुन्दरता, शोभा,
सुखलाना (वि०) सुखाना, सूखा करना।
सुखाना (क्रि० स०) सूखा करना।
सुखारी (वि०) सुखी।
सुखाला (वि०) सहज, सरल।
सुखित (वि०) सुखी, आनन्दित।
सुखिया (वि०) सुखी।
सुखी (वि०) आनन्दयुक्त, सन्तोषी, ख़ुश, हर्षित।
सुखेन (सं० पु०) एक वैद्य जो धन्वन्तरि के पुत्र थे।
सुखेनी (सं० स्त्री०) बड़ा करौंदा।
सुख्याति (सं० स्त्री०) सुयश, नामवरी।
सुगंध (सं० स्त्री०) अच्छी वास, महक, खुशबू।
सुगंधि (सं० स्त्री०) भली वास, महक (वि०) महकीला।
सुगंधित (वि०) सुगंधवाला, ख़ुशबूदार।
सुगंधी (वि०) महक, वास, अच्छी वास।
सुगति (सं० स्त्री०) उत्तम गति, अच्छी अवस्था।
सुगम (वि०) सहज, सरल, आसान।
सुगमता (सं० स्त्री०) सरलता, आसानी।
सुगरई (सं० स्त्री०) एक रागिनी का नाम।
सुगामी (वि०) निझोल, कसा हुआ, जिसमें शिकन न हो।
सुग्रीव (सं० पु०) एक वानर का नाम जो राम का मित्र और सहायक था, विष्णु के रथ का घोड़ा। [अच्छा।
सुघड़ (वि०) सुन्दर, सुडौल, सुथरा, मनोहर, बहुत
सुघड़ई (सं० स्त्री०) सुशीलता, सुन्दरता।
सुचकना (क्रि० अ०) अचम्भित होना, विस्मित होना।
सुचरित (सं० पु०) श्रेष्ठ आचार, शुभाचरण, नेक चलन।
सुचरित्रा (सं० स्त्री०) पतिव्रता।
सुचि (वि०) निर्मल, स्वच्छ, ईमानदार, सच्चा।
सुचित (सं० पु०) सुगम, आसान, निश्चिन्त, बेफ़िक्र, चौकस, सावधान, बिना खटक।
सुचिताई (सं० स्त्री०) निश्चिन्तता, बेफ़िक्री।
सुचिन्तित (वि०) अच्छी तरह विचारा हुआ।
सुचेत (वि०) चौकस, सावधान, होशियार, सचेत।
सुजन (वि०) साधु, सज्जन, भलमानस, भला आदमी।
सुजनता (सं० स्त्री०) सज्जनता, भलमंसी, सीधापन।
सुजस (सं० पु०) सुन्दर यश, कीर्ति।
सुजान (वि०) ज्ञानवान्, चतुर, प्रवीण।
सुजाना (क्रि० अ०) फुलाना, बढ़ाना।
सुझाना (क्रि० स०) दिखाना, बताना, समझाना।
सुटकना (क्रि० स०) निगलना, पतली छड़ी से पीटना।
सुटकुन (सं० स्त्री०) पतली छड़ी, छिकुन।
सुठि (वि०) सुन्दर, उत्तम, बहुत, अत्यन्त।
सुड़की (सं० स्त्री०) पतंग की डोरी।
सुडप (सं० स्त्री०) चुसकी, घोंट।
सुड़पना (क्रि० स०) चाटना, चूसना।
सुड़ुकना (क्रि० स०) लीलना, पीना।
सुडौल (वि०) सुन्दर, सुन्दर आकार वाला, सुघड़।
सुडौस (वि०) सुघड़, सुथरा, सुन्दर, मनोहर।
सुण्डी (सं० स्त्री०) हाथी की सूँड़। [नाम।
सुण्डी (सं० स्त्री०) पीपली, पीपर, एक औषधि का
सुत (सं० पु०) बेटा, पुत्र, लड़का। [कड़ा।
सुतरा (सं० पु०) हाथ में पहनने का एक प्रकार का

सुतरी (सं० स्त्री०) सन की बनी पतली रस्सी।
सुतहार (सं० पु०) बढ़ई, खाट बीनने वाला।
सुता (सं० पु०) बेटी, कन्या, लड़की।
सुतार (सं० पु०) बढ़ई, खाती (वि०) अच्छा समय, अवकाश, घात, दाँव। [तीखे स्वभाव वाली।
सुतीखी (सं० स्त्री०) अति चोखी, बड़ी तीखी, धारदार,
सुथना (सं० पु०) पायजामा।
सुथनी (सं० स्त्री०) एक प्रकार के कंद का नाम।
सुथरा (वि०) साफ़, सुन्दर, सुडौल, सुहावना।
सुथरासाही (सं० पु०) एक प्रकार के साधु जो लकड़ी ठकठका कर और कुछ गा कर भीख माँगते हैं।
सुदक्षिना (सं० स्त्री०) राजा दिलीप की रानी, दक्षिना। [एक औषधि।
सुदर्शन (सं० पु०) विष्णु का चक्र, एक वृक्ष का नाम,
सुदामा (सं० पु०) श्रीकृष्ण के सहपाठी एक ग़रीब ब्राह्मण का नाम जो अन्त में श्रीकृष्ण की कृपा से सुखी हो गया।
सुदि (सं० पु०) शुक्ल पक्ष, उजाला पाख।
सुदिन (सं० पु०) अच्छा दिन, अच्छा समय, मंगल का समय, शुभ दिन।
सुदी (अव्य०) देखो "सुदि"।
सुदृढ़ (वि०) बहुत बली, ख़ूब मज़बूत।
सुदृश्य (वि०) उत्तम, देखने योग्य, मनभावन, मनोज्ञ।
सुध (सं० स्त्री०) चेत, याद, स्मरण, ख़बरदारी।
सुधबुध (सं० स्त्री०) समझ बूझ, चेत, शुद्ध ज्ञान।
सुधरना (क्रि० अ०) सही होना, अच्छा होना, बनना, सफल होना, सँभलना।
सुधर्मा (सं० स्त्री०) देव-सभा, सुर-समाज। [करना।
सुध लेना (क्रि० अ०) समाचार पूछना, याद करना, स्मरण
सुधांशु (सं० पु०) चंद्रमा, चाँद, कपूर।
सुधा (सं० स्त्री०) अमृत, अमी, पीयूष, रस, जल (अव्य०) समेत, सहित।
सुधाकर (सं० पु०) चन्द्रमा।
सुधाना (क्रि० स०) चिताना, स्मरण दिलाना।
सुधार (सं० स्त्री०) मरम्मत।
सुधारना (क्रि० स०) सँवारना, बनाना, अच्छा करना, सही करना, सजाना, ठीक करना, सैंतना।
सुधि (सं० स्त्री०) देखो "सुध"।
सुधी (वि०) सुबुद्धि, पण्डित, विद्वान्, बुद्धिमान्, विज्ञ।
सुन (वि०) बेहोश, मूर्च्छित, शीतांगी, ख़ाली, छूछ, सूना।
सुनकातर (सं० पु०) एक प्रकार का साँप।
सुनगुन (सं० स्त्री०) मन्द चर्चा, कानाफूसी।
सुनना (क्रि० स०) कान देना, श्रवण करना।
सुनबहरी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का कुष्ट रोग।
सुनसर (सं० पु०) एक गहने का नाम।
सुनसान (वि०) उजाड़, चुपचाप, एकान्त, निराला।
सुनहरा (वि०) सोने की बनी चीज़ें, सोने का।
सुनहला (वि०) सुनहरा।
सुनाना (क्रि० अ०) जताना, बताना, कहना, समझाना।
सुनार (सं० पु०) सोना गढ़ने वाला, सोने-चाँदी की चीज़ें बनाने वाला।
सुनारिन (सं० स्त्री०) सुनार की स्त्री। [सुन्दर स्त्री।
सुनारी (सं० स्त्री०) सुनार का काम, सुनार की विद्या,
सुनावट (सं० स्त्री०) सुनाहट, मौन, चुप।
सुनावनी (सं० स्त्री०) मरने का समाचार।
सुनीत (सं० स्त्री०) अच्छी नीति, शिष्टाचार।
सुन्दर (वि०) मनोहर, सुरूप, बहुत अच्छा, सुडौल, ख़ूबसूरत।
सुन्दरता (सं० स्त्री०) मनोहरता, शोभा, छवि।
सुन्दरी (सं० स्त्री०) रूपवती स्त्री, ख़ूबसूरत स्त्री।
सुन्धावट (सं० स्त्री०) गन्ध विशेष, सुवास।
सुन्न (सं० पु०) सन्नाटा, बिंदी।
सुन्ना (सं० पु०) सिफ़र, बिन्दी, बुन्द। [अच्छा चलन।
सुपथ (सं० पु०) अच्छा रास्ता, सुमार्ग, अच्छी राह,
सुपात्र (वि०) योग्य, भलमानस, उत्तम जन।
सुपारी (सं० स्त्री०) एक कठोर फल का नाम जिसको पान के साथ खाते हैं, पूँगीफल।
सुपास (सं० पु०) सुख, सुभीता, आराम।
सुपुत्र (सं० पु०) अच्छा बेटा, सुपूत।
सुपूत (सं० पु०) अच्छा बेटा।
सुप्त (वि०) सोया हुआ, निद्रित।
सुप्ति (सं० स्त्री०) नींद, निद्रा। [फल वाला पेड़।
सुफल (वि०) सिद्ध, फलदायक, लाभकारी (वि०) अच्छे
सुफला (सं० स्त्री०) खजूर।
सुबुद्धि (सं० स्त्री०) उत्तम बुद्धि, प्रवीणता।

सुभग (वि०) सुन्दर, मनोहर, प्यारा, सौभाग्यवान्, ऐश्वर्यशाली, प्रतापी, भाग्यवान् ।
सुभगता (सं० स्त्री०) उत्तमता, अच्छापन, भलाई ।
सुभगा (सं० स्त्री०) सौभाग्यवती, सुन्दरी, पुत्रवती, पति की प्यारी स्त्री ।
सुभट (सं० पु०) योधा, वीर, बहादुर, बलवान्, शूर ।
सुभद्रा (सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की बहन जिसका ब्याह अर्जुन से हुआ था ।
सुभागा (सं० स्त्री०) सौभाग्यवती, सधवा ।
सुभाव (सं० पु०) अच्छा भाव, उत्तमता, सुशीलता ।
सुभीता (सं० पु०) अवकाश, अवसर, फ़ुर्सत, आराम, सुख, विधा ।
सुमति (सं० स्त्री०) अच्छी बुद्धि, भलमंसाई ।
सुमन (सं० पु०) फूल, पुष्प, गेहूँ, धतूरा (वि०) शुद्ध मन वाला । [भी था ।
सुमन्त (सं० पु०) राजा दशरथ का मन्त्री जो सारथी
सुमरन (सं० पु०) याद, स्मरण, नाम लेना, चेत, सुधि, समझौती । [लेना, जपना ।
सुमरना (क्रि० स०) याद करना, स्मरण करना, नाम
सुमित्रा (सं० स्त्री०) राजा दशरथ की स्त्री, लक्ष्मण की माता ।
सुमिरनी (सं० स्त्री०) छोटी माला ।
सुमिल (वि०) चिकन, चिक्कन ।
सुमुखी (सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, सुन्दर मुँह वाली स्त्री ।
सुमेरु (सं० पु०) एक पर्वत का नाम ।
सुयश (सं० पु०) सुख्याति, नेकनामी, बड़ाई ।
सुयोग (सं० पु०) अच्छी संगति, अच्छा अवसर ।
सुरंग (सं० पु०) छेद, ईंगुर, अच्छा रंग, लाल या तेलिया रंग का घोड़ा (वि०) सुन्दर, चमकीला (सं० स्त्री०) ज़मीन के नीचे का रास्ता । [गान ।
सुर (सं० पु०) देवता, देव, ताल, तान, राग, आवाज़,
सुरगुरु (सं० पु०) वृहस्पति ।
सुरचाप (सं० पु०) इन्द्र-धनुष, बोटो ।
सुरत (सं० पु०) सुध, चेत, ख़बर, याद, ध्यान ।
सुरतरु (सं० पु०) देवताओं का वृक्ष, कल्पवृक्ष ।
सुरती (सं० स्त्री०) खाने की तमाकू, तम्बाकू ।
सुरतीला (वि०) सचेत, सावधान, चौकस, विचारवान् ।
सुरतैन (सं० स्त्री०) रखी हुई स्त्री ।

सुरनदी (सं० स्त्री०) गंगा, आकाश गंगा, मन्दाकिनी ।
सुरपति (सं० पु०) देवताओं का राजा, इन्द्र ।
सुरपुर (सं० स्त्री०) स्वर्ग, इन्द्रलोक, अमरावती ।
सुरभि (सं० पु०) सुगन्ध, सुगन्धित, वसन्त ऋतु, चैत का महीना, जायफल, सोना, मृगवेल, केला (वि०) विख्यात, अच्छा, सुन्दर, मनोहर । [धरती, ज़मीन ।
सुरभी (सं० स्त्री०) कामधेनु, एक गाय का नाम, गाय,
सुरभोग (सं० पु०) अमृत, सुधा, पीयूष । [मणि ।
सुरमणि (सं० पु०) इन्द्र, एक मणि विशेष, चिन्ता-
सुरमा (सं० पु०) सूखा काजल, एक प्रकार का चूर्ण जो आँखों में लगाया जाता है । [दायक ।
सुरम्य (वि०) सुन्दर, रमणीय, मनोहर, आनन्द-
सुरराज (सं० पु०) इन्द्र, देवताओं का राजा ।
सुरर्षि (सं० पु०) नारद ।
सुरलोक (सं०पु०) स्वर्ग,इन्द्रलोक,अमरावती । [वाला ।
सुरस (वि०) अच्छे स्वाद वाला, सुस्वादु, अच्छी लज़्ज़त
सुरसर (सं० पु०) मानसरोवर ।
सुरसरि (सं० स्त्री०) गंगा । [नाम ।
सुरसा (सं० स्त्री०) साँपों की माता, एक राक्षसी का
सुरसुराना (क्रि० अ०) गुदगुदी पैदा होना, सरसराना ।
सुरसुराहट (सं० स्त्री०) गुदगुदी, सरसरी ।
सुरसुरी (सं० स्त्री०) सरसराहट ।
सुरा (सं० पु०) मदिरा, दारू, शराब, मद्य ।
सुराई (सं० स्त्री०) बीरता, बहादुरी ।
सुराङ्गना (सं० स्त्री०) देवताओं की स्त्री, अप्सरा ।
सुरूप (वि०) सुन्दर, सुडौल, मनोहर ।
सुरैतिन (सं० स्त्री०) उपपत्नी, रखनी, रखेलिन, उढ़री ।
सुलक्षण (सं० पु०) शुभ चिह्न ।
सुलग (अव्य०) पास, समीप ।
सुलगना (क्रि० अ०) जल उठना, लहरना, बलना, धुआँ निकलना, धीरे धीरे जलना । [परचाना ।
सुलगाना (क्रि० स०) बारना, लूका लगाना, जलाना,
सुलझना (क्रि० अ०) खुलना, सुधरना ।
सुलझाना (क्रि० स०) उधेड़ना, खोलना ।
सुलभ (वि०) सहज, सरल, सुगम, आसान, अनायास पाने योग्य ।
सुलभता (सं० स्त्री०) सुगमता ।
सुलाना (क्रि० स०) शयन कराना, पौढ़ाना, बध करना ।

सुलोचना (सं० स्त्री०) रावण की पुत्रवधू, मेघनाद की स्त्री (वि०) सुन्दर नेत्र वाली, सुन्दरी।
सुवचन (सं० पु०) विशद वचन, प्रिय वाणी।
सुवन (सं० पु०) पुत्र, बेटा।
सुवर्ण (सं० पु०) सोना, हरिचंदन, गेरू मिट्टी (वि०) सुजाति, सुन्दर, चमकीला, सुरंग, अच्छे रंग का।
सुवल (सं० पु०) श्रीकृष्ण का एक सखा। [स्थान।
सुवास (सं० स्त्री०) सुगंध, ख़ुशबू (सं० पु०) अच्छा
सुवासिनी (सं० स्त्री०) सुहागिन, सधवा, अपने बाप के घर बहुत रहने वाली स्त्री।
सुवाहु (सं० पु०) एक राक्षस का नाम।
सुवेला (सं० स्त्री०) अच्छी सायत, अच्छा काल।
सुवैया (वि०) सोने वाला।
सुशिक्षित (वि०) प्रवीण, अच्छी तरह सिखलाया हुआ मनुष्य। [शिष्टाचारी।
सुशील (वि०) अच्छे चाल-चलन वाला, सीधा, साधु,
सुश्री (सं० स्त्री०) शोभा। [ख़िदमत।
सुश्रूषा (सं० स्त्री०) सेवा, टहल, आदर, सत्कार,
सुसकारना (क्रि० अ०) फनफनाना, सिसकारी मारना।
सुसङ्ग (सं० पु०) अच्छी संगत, नेक सुहबत।
सुसताना (क्रि० अ०) विश्राम करना, आराम करना, साँस लेना, ठहरना।
सुसमय (सं० पु०) अच्छा समय, बढ़ती का समय।
सुसम्बद्ध (वि०) भली भाँति रचा हुआ, ठीक ठाक किया हुआ।
सुसर (सं० पु०) पति या पत्नी का पिता।
सुसरार (सं० स्त्री०) ससुर का घर।
सुसराल (सं० स्त्री०) देखो "सुसरार"।
सुसुप्त (वि०) अच्छी तरह सोया हुआ, सोने वाला, ज्ञान-शून्य। [अवस्था का नाम।
सुसुप्ति (सं० स्त्री०) सुख नींद, अच्छी भाँति सोना, एक
सुस्त (वि०) शिथिल, दुबला, निर्बल।
सुस्थ (वि०) भला चंगा, नीरोग, सुखी, प्रसन्न, हर्षित।
सुस्थिर (वि०) अटल, अचल, निश्चल, दृढ़, ठहराऊ।
सुस्वाद (वि०) सुरस, रसीला, स्वादयुक्त, मज़ेदार, मधुर, मीठा।
सुहराना (क्रि०वि०) बदन पर धीरे धीरे हाथ फेरना। [हुई।
सुहाई (वि०) सुन्दर, शोभायमान (क्रि० अ०) शोभित
सुहाग (सं० पु०) अच्छा भाग, पति का प्यार, अहिवात।
सुहागन (सं०स्त्री०) सुहागिन। [चाँदी आदि धातु गलाते हैं।
सुहागा (सं० पु०) एक दवा का नाम जिससे सोना,
सुहागिन (सं० स्त्री०) विवाहिता स्त्री जिसका पति जीता हो, अहिवाती।
सुहाता (वि०) मनभावन, इष्ट, चाहीता।
सुहाना (क्रि० अ०) अच्छा लगना, मनभावना, फबना, रुचना, भावना।
सुहाल (सं० पु०) सुहाली।
सुहाली (सं० स्त्री०) एक प्रकार के पकवान का नाम।
सुहावना (वि०) सुन्दर, मनभावन, मनोहर, प्रिय लगने वाला। [सुजन, उपकारी
सुहृद (सं० पु०) मित्र, सखा, हितू, दोस्त, बांधव,
सूँगरा (सं० पु०) भैंस का बछड़ा, पड़वा।
सूँघना (क्रि० अ०) बास लेना, सुगंध लेना, महँकना।
सूँघनी (सं० स्त्री०) नस्य, हुलास, एक प्रकार की सुरती आदि का चूर्ण जिसे सूँघते हैं।
सूँट (सं० स्त्री०) चुप, चुप्पी, मौन।
मुहा० — सूँट भरना = चुपचाप रहना। सूँट मारना = चुप रहना। सूँट मारे जाना = चुपचाप चले जाना।
सूँड़ (सं० स्त्री०) हाथी की नाक।
सूँड़ा (सं० पु०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा।
सूँड़ा (सं० स्त्री०) घुन, अनाज का कीड़ा।
सूँतना (क्रि० अ०) लेटना, सोना। [निकालना।
सूँथना (क्रि० अ०) तोड़ना, खैंचना, म्यान से तलवार
सूँस (सं० पु०) एक प्रकार का भयंकर जल-जन्तु।
सूअर (सं० पु०) एक प्रकार का विष्ठा खाने वाला जानवर, शूकर।
सूआ (सं० पु०) तोता, सुग्गा, बहुत बड़ी सुई।
सूई (सं० स्त्री०) एक बहुत पतला और छोटा लोहे का टुकड़ा जिसमें एक ओर डोरा डालने का छेद और दूसरी ओर नोक होती है जिससे कपड़ा सिया जाता है।
सूकट (वि०) लटा, दुबला, सूखा कुआँ।
सूकर (सं० पु०) सुअर।
सूकरखेत (सं० पु०) सोरों नगर का प्राचीन नाम।
सूकी (सं० स्त्री०) चौअन्नी, रुपये का चौथा हिस्सा, चार आना।

सूक्ष्म (वि०) थोड़ा, छोटा, पतला, महीन, बारीक, पतील।
सूक्ष्मता (सं० स्त्री०) पतलापन, छोटापन।
सूक्ष्मदर्शी (वि०) चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान्, तेज़, बड़ी गहरी बात जानने वाला।
सूखलुड़ी (सं० स्त्री०) क्षयरोग।
सूखना (क्रि० अ०) शुष्क होना, कड़ा होना, ख़ुश्क होना, मरना, जलना, उड़ना, हवा होना, पचकना, टूटना, दुबला होना, बिगड़ना, गलना, ख़राब होना, कुम्हलाना, मुरझाना, बेरस होना।
सूखा (वि०) शुष्क, नीरस, गला, सड़ा।
सूग (सं० स्त्री०) दुबिधा, चिन्ता, शंका।
सूगा (सं० पु०) तोता।
सूचक (सं० पु०) जताने वाला, बताने वाला, सिखाने वाला, बोधक, पिशुन, चुगलखोर।
सूचना (सं० स्त्री०) जताना, चिताना, इत्तिला करना।
सूचना-पत्र (सं० पु०) इत्तलानामा, इश्तहार।
सूचित (वि०) जताया हुआ, कहा गया।
सूची (सं० स्त्री०) सुई, मुख्य मुख्य बातों की सूचना, विषयों की गिनती।
सूचीपत्र (सं० पु०) फ़ेहरिस्त, बीजक।
सूज (सं० स्त्री०) शोथ, फुलाव।
सूजन (सं० स्त्री०) देखो "सूज"।
सूजना (क्रि० अ०) फूलना, मोटा होना, बढ़ना।
सूजा (सं० पु०) वर्मा, बेधी, सुतारी।
सूजी (सं० पु०) दरज़ी, सीने वाला (सं० स्त्री०) सुई, मोटा आटा, दरदरा आटा।
सूझ (सं० स्त्री०) दृष्टि, नज़र।
सूझना (क्रि० स०) दीखना, नज़र आना, दीख पड़ना, दिखाई देना, मालूम होना, प्रकट होना, प्रत्यक्ष होना।
सूत (सं० पु०) धागा, तागा, सारथी, रथवान्, भाट, बढ़ई, क्षत्रिय पिता ब्राह्मणी माता से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति, व्यास के एक शिष्य का नाम जिसका दूसरा नाम लोमहर्षण था जो शौनकादि मुनियों को नैमिषारण्य में कथा सुनाया करते थे, पारा, व्यवहार, रीति, प्रीति।
सूतक (सं० पु०) अशौच, अशुद्धता, जो किसी के मरने या सन्तान होने से दस दिन तक माना जाता है।
सूतना (क्रि० अ०) सोना, नींद लेना, ताकना, उपाय करना, सूत लगाना, ताड़ना।
सूतल (सं० पु०) पाताल विशेष।
सूतली (सं० स्त्री०) सन की पतली डोरी, पतली रस्सी जिससे चारपाई बिनी जाती है।
सूतिका (सं० स्त्री०) प्रसूतिका, प्रसौती, ज़च्चा।
सूतिकागृह (सं० पु०) जिस घर में लड़का पैदा हो।
सूती (वि०) सूत से बनी वस्तु वस्त्र आदि (सं० स्त्री०) सोई हुई स्त्री।
सूतू (वि०) बहुत सोने वाला, सदा शयन करने वाला।
सूत्र (सं० पु०) सूत, डोरा, धागा, तागा, रीति, क़ायदा, ऐसा वाक्य जिसमें संक्षेप से बहुत अर्थों का ज्ञान हो।
सूत्रधार (सं० पु०) प्रधान नट, नाटक खेलने वालों में मुखिया।
सूथन (सं० पु०) सुथना, पायजामा।
सूथना (सं० पु०) सूथनी, पायजामा।
सूथनी (सं० स्त्री०) सूथना, पायजामा, जाँघिया।
सूधा (वि०) भोला, निष्कपट, शुद्ध।
सूधाई (सं० स्त्री०) सीधाई, भोलापन।
सून (वि०) सूना।
सूना (वि०) खाली, छूँछा, रीता, उजाड़, जहाँ कोई न हो।
सूनु (सं० पु०) पुत्र, बेटा, लड़का।
सूप (सं० पु०) छाज, अनाज पछोरने की चीज़।
सूपकार (सं० पु०) पाचक, रसोइयादार।
सूपकारी (सं० पु०) पाचक, रसोइयादारी।
सूपायेना (सं० पु०) एक चिड़िया का नाम।
सूबा (सं० पु०) प्रदेश, प्रान्त, देश का एक भाग।
सूम (वि०) कृपण, कंजूस, मक्खीचूस।
सूर (सं० पु०) सूर्य, इगास, वीर, सूरदास (वि०) अंधा।
सूरज (सं० पु०) सूर्य, रवि।
सूरजगहन (सं० पु०) सूर्य-ग्रहण।
सूरजमुखी (सं० पु०) एक फूल के पौदे का नाम।
सूरदास (सं० पु०) एक प्रसिद्ध हिन्दी के कवि और भगवद्भक्त, इन्होंने सूरसागर नामक ग्रंथ बनाया है।
सूरन (सं० पु०) ज़िमींकंद, ओल।
सूरमलार (सं० पु०) एक रागिनी का नाम।
सूरमा (वि०) बहादुर, वीर, सामन्त, शूरवीर।
सूरमापन (सं० पु०) बहादुरी, वीरता।

सूग (सं० पु०) देखो "सूगमा"।
सूगी (सं० स्त्री०) खपड़ी, शूज़ी।
सूर्पणखा (सं० स्त्री०) रावण की बहन।
सूर्पनखा (सं० स्त्री०) सूर्पणखा।
सूर्मा (सं० पु०) देखो "सूरमा"।
सूर्य (सं० पु०) रवि, दिन-मणि, सूरज।
सूर्यकान्त (सं० पु०) एक मणि का नाम जिसके सूर्य के ताप से आग निकलती है।
सूर्यग्रहण (सं० पु०) सूर्य पर राहु या केतु का हमला, सूर्य के बिम्ब पर पृथ्वी की छाया।
सूर्यमणि (सं० पु०) सूर्यकान्त।
सूर्यमुखी (सं० पु०) एक फूल का नाम।
सूर्यवंशी (सं० पु०) राजपूतों की एक जाति।
सूर्यास्त (सं० पु०) संध्या, सूर्य का छिपना।
सूर्योदय (सं० पु०) सूर्य का निकलना, दिन चढ़ना, सवेरा, तड़का, भोर, बिहान, प्रभात।
सूल (सं० पु०) एक प्रकार का हथियार, त्रिशूल, सेल, भाले की नोक, काँटा, बायगोला, दर्द, हाजत।
सूली (सं० स्त्री०) एक प्रकार का काँटा जिसपर अपराधी लटका कर मार डाला जाता है।
सूस (सं० पु०) सूसमार।
सूसमार (सं० पु०) एक प्रकार का जलजन्तु।
सूसी (सं० स्त्री०) एक तरह के कपड़े का नाम।
सूसुम (वि०) थोड़ा गरम, गुनगुना, कुनकुना।
सूहा (वि०) लाल, किरमची (सं० पु०) एक राग का नाम। [रचना।
सृजना (क्रि० स०) बनाना, निर्माण करना, सृष्टि
सृष्ट (वि०) रचित, निर्मित, बनाया हुआ।
सृष्टि (सं० स्त्री०) उत्पत्ति, संसार, जगत, दुनिया, स्वभाव, प्रकृति। [ब्रह्म।
सृष्टिकर्ता (सं० पु०) संसार को उत्पन्न करने वाला,
से (अव्य०) अपादान और करण कारक का चिह्न, साथ, संग।
सेंक (सं० पु०) सेंकने का काम, ततार।
सेंकना (क्रि० स०) तताना, गर्माना।
सेंगरी (सं० स्त्री०) छीमी, फली।
सेंटा (सं० पु०) पतला सरपत।
सेंठा (सं० पु०) सरकण्डा, मूँज का पौधा।
सेंठी (सं० स्त्री०) सेंठा।
सेंत (वि०) बिन मोल, मुफ़्त।
सेंतना (क्रि० अ०) सुधारना, बनाना, स्वच्छ करना।
सेंतमेंत (अव्य०) बिना दाम, योंही।
सेंद (सं० पु०) एक प्रकार का खीरा, एक फल का नाम।
सेंदुर (सं० पु०) एक प्रकार का लाल चूर्ण जिसे स्त्रियाँ अपने माँग में सुहाग के लिये लगाती हैं।
सेंध (सं० पु०) एक प्रकार का छेद जिसे चोर चोरी करने के लिये दीवार में खोदते हैं।
सेंधना (क्रि० अ०) खोदना, ढाना।
सेंधा (सं० पु०) एक प्रकार का पहाड़ी नमक, जो पवित्र समझा जाता है, लाहौरी नमक।
सेंधिया (सं० पु०) ज़हर, विष, सेंध लगाने वाला, चोर, ग्वालियर के राजाओं की पदवी।
सेंधी (सं० स्त्री०) खजूर का रस, एक तरह की ताड़ी।
सेंहुआ (सं० पु०) एक प्रकार का रोग, जिसमें शरीर पर दाग पड़ जाते हैं।
सेगुन (सं० पु०) एक प्रकार की लकड़ी।
सेचक (सं० पु०) सींचने वाला, भिगोने वाला।
सेचन (सं० पु०) छिड़काव, पराना।
सेचित (वि०) तर किया हुआ, भिगोया हुआ।
सेज (सं० पु०) पलंग, बिछौना, बिस्तर।
सेजबंद (सं० पु०) पलंग पर बिछौना बाँधने की डोरी।
सेठ (सं० पु०) साहूकार, महाजन, कोठीवाल, धनवान्।
सेत (सं० पु०) पुल, बाँध (वि०) सफ़ेद, उजला, धौल।
सेतना (क्रि० स०) जुटाना, इकट्ठा करना, सञ्चय करना।
सेतु (सं० पु०) पुल, बाँध, मर्यादा।
सेतुबंध (सं० पु०) दक्षिण का एक स्थान जहाँ पर पुल बाँध कर रामचन्द्र जी लंका गये थे, रामेश्वर।
सेतुबंध रामेश्वर (सं० पु०) वह शिव-मूर्ति जिसको लंका जाते समय सेतुबंध पर श्री रामचन्द्र ने स्थापित किया था।
सेदना (क्रि० अ०) सेंकना, ततारना।
सेन (सं० पु०) फ़ौज।
सेनप (सं० पु०) सेनापति, कप्तान, फ़ौज का अफ़सर।
सेना (सं० स्त्री०) कटक, दल, फ़ौज, लश्कर, सिपाह।
सेनानी (सं० पु०) कार्तिकेय, सेनापति, सिपहसालार।

सेनापति (सं० पु०) फौज का सरदार, सेना का मालिक, सेनानी।

सेम (सं० पु०) एक तरकारी का नाम।

सेमर (सं० पु०) एक पेड़ का नाम जिससे बड़ी नरम रूई निकलता है।

सेमल (सं० पु०) सेमर। [का होता है।

सेर (सं० पु०) एक बाट का नाम जो सोलह छटाँक

सेराना (क्रि० स०) ठंढा करना, ठंढा होना, बहाना।

सेल (सं० पु०) सेला, बर्छी, बल्लम, भाला।

सेलखड़ी (सं० स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी मिट्टी।

सेला (सं० पु०) एक प्रकार का कपड़ा, एक तरह का बाध, बर्छी।

सेलिया (सं० पु०) बिल्ली, मार्जार, सेली पहनने वाला।

सेली (सं० स्त्री०) बद्धीया, जाली जिसे फ़क़ीर गले में पहनते हैं, बर्छी, भाला।

सेव (सं० पु०) एक प्रकार का फल, एक प्रकार की मिठाई।

सेवई (सं० स्त्री०) आटे की पतली डोरी, सावनी, एक खाद्य-वस्तु जिस को घी में तल कर दूध में चुरा शक्कर मिला कर खाते हैं। [मतगार।

सेवक (सं० पु०) नौकर, चाकर, दास, पुजारी, ख़िद-

सेवकाई (सं० स्त्री०) नौकरी, चाकरी, टहल, सेवा।

सेवड़ा (सं० पु०) जैन मत का फ़क़ीर, एक तरह का साधु।

सेवती (सं० स्त्री०) एक तरह का फूल जिसकी सूरत गुलाब के फूल की सी होती है।

सेवन (सं० पु०) पालन, पोषण, रक्षण, भरण।

सेवना (क्रि० अ०) नौकरी करना, पालना, चिड़ियों का अपने अण्डे पर बैठना।

सेवरा (सं० पु०) अधपका मिट्टी का पात्र।

सेवरी (सं० स्त्री०) दलदल, नदी का रेत।

सेवा (सं० स्त्री०) नौकरी, चाकरी, टहल, सेवकाई, पूजा, सत्कार।

सेवार } (सं० पु०) एक प्रकार की घास जो नदियों में
सेवाल } जमती है, जिससे चीनी साफ़ की जाती है, शैवाल, सिवार। [हुआ।

सेवित (वि०) उपासित, सेवा किया हुआ, पूजा किया

सेवो (सं० पु०) पुजारी, नौकर, दास, चाकर।

सेव्य (वि०) सेवा के योग्य, सेवन करने योग्य, पूज्य, उपास्य।

सेव्यवीर (सं० पु०) खसखस।

सेसर (सं० पु०) ताश का खेल विशेष।

सेहथना (क्रि० अ०) चँवर डुलाना, चँवर हाँकना।

सेहरा (सं० पु०) एक प्रकार की जरी का मुकुट जो दूल्हा या वर के माथे पर बाँधा जाता है।

सेहुँवा (सं० पु०) दाद, देहु।

सैकड़ा (वि०) सौ।

सैंगर (सं० स्त्री०) शमी वृक्ष की फली, बबूल की फली।

सैंतना (क्रि० स०) होशियारी से रख छोड़ना।

सैंतालीस (वि०) संख्या विशेष, चालीस और सात।

सैंतीस (वि०) तीस और सात।

सै (वि०) सौ (सं० स्त्री०) भाग्यवानी बरकत, लहर बहर।

सैकड़ा (वि०) सौ।

सैन (सं० स्त्री०) संकेत, इशारा, चिह्न, आँख या अंगुली को चला कर कोई बात प्रकट करना, फ़ौज, कटक, सेना, सोना, नींद लेना।

सैना, सैनी (सं० पु०) इशारे से बात करना।

सैनापति (सं० पु०) सेनापति, सिपहसालार।

सैन्धव (सं० पु०) सिंधु देश का नमक।

सैन्य (सं० स्त्री०) सेना, दल, कटक। [ही समय।

सैमाँझ (अव्य०) साँझ के होते ही, संध्या के प्रारंभ

सैरन (सं० पु०) समाई, अटाव, स्थान।

सैहरनी (वि०) सटवैया।

सों (अव्य०) से, साथ।

सोंटा (सं० पु०) डंडा, गदका, छोटी लाठी, मूसल।

सोंठ (सं० स्त्री०) सूखी अदरख।

सोंठराव (सं० पु०) कंजूस, कृपण।

सोंधना (क्रि० स०) आने के लिये गीली मिट्टी से कपड़ा मलना, मरना, लगाना।

सोंधा (सं० पु०) बालों का एक मसाला, मिट्टी के नये बर्तन के भिगाने से निकली हुई गंध, भूजे से निकली हुई ख़ुशबू, सुगंधित।

सोंधाहट (सं० स्त्री०) सुगंध, सुवास।

सोंपना (क्रि० स०) दे देना, हवाले करना, सुपुर्द करना।

सोंह (सं० स्त्री०) शपथ, क़सम, किरिया।

सोंही (क्रि० वि०) सामने, आगे, सम्मुख।

सो (सर्व०) वह, वेही, पस, निदान। [होता है।
सोअर (सं० पु०) वह घर जिसमें स्त्रियों का बच्चा पैदा
सोआ (सं० पु०) एक साग का पौधा।
सोई (सर्व०) वही (क्रि० अ०) सूती।
सोखना (क्रि० अ०) खींचना, चूसना, पी लेना।
सोग (सं० पु०) चिन्ता, फ़िक्र, सोच, उदासी, दुःख।
सोच (सं० पु०) ध्यान, ख़्याल, विचार, फ़िक्र।
सोचना (क्रि० अ०) ख़्याल करना, समझना, विचारना, ध्यान करना।
सोज (सं० पु०) सूझ, समझ।
सोझ (वि०) सीधा, खड़ा, कपट-रहित, सुधा।
सोझा (वि०) सीधा, सरल, सामने।
सोडा (सं० पु०) एक क्षार पदार्थ।
सोत (सं० पु०) देखो "सोता"।
सोता (सं० पु०) धारा, चश्मा, झरना।
सोदर (सं० पु०) सहोदर, एक माँ के लड़के।
सोध (सं० स्त्री०) शुद्ध करना, शोधना, खोज, पता, भेद, ख़बर।
सोधना (क्रि० अ०) सही करना, शुद्ध करना, जाँचना, ऋण चुकाना, सुवर्ण आदि धातुओं को शुद्ध करना।
सोन (सं० पु०) एक नदी का नाम, ख़ून, रक्त, उदासी, ब्रह्मचारी।
सोनहला (वि०) सोने की बनी वस्तु, सोने का सा रंग।
सोना (सं० पु०) एक बहुमूल्य पीले रंग का खनिज पदार्थ, कनक, सुवर्ण (क्रि० अ०) नींद लेना, पौढ़ना, सूतना, मरना।
सोनामाखी (सं० स्त्री०) औषध विशेष।
सोनार (सं० पु०) स्वर्णकार, एक जाति जो सोने चाँदी का गहना बनाती है। [न्यारिया।
सोनिया (सं० पु०) राख में से सोना अलगाने वाला,
सोपान (सं० पु०) सीढ़ी, ज़ीना, नसेनी।
सोभना (क्रि० अ०) सोहना, अच्छा दिखाई देना।
सोम (सं० पु०) चन्द्रमा, अमृत, कुवेर, हवा, यमराज, कपूर, सोमलता नाम की जड़ी का रस, शिव, महादेव, सुग्रीव, आकाश।
सोमनाथ (सं० पु०) शिव की एक मूर्ति का नाम जो गुजरात में है, एक गाँव का नाम जो बनारस के पास है जहाँ बुद्ध की मूर्तियाँ मिली हैं।
सोमवार (सं० पु०) चन्द्रवार, एक दिन का नाम।
सोमवारी (सं० स्त्री०) सोमवती अमावस्या।
सोरठ (सं० स्त्री०) एक रागिनी का नाम।
सोरठा (सं० पु०) एक छन्द का नाम।
सोरह (वि०) दस और छः।
सोलह (वि०) सोरह।
सोहं (सं० पु०) वेदान्तियों का प्रधान मन्त्र।
सोहन (वि०) शोभा देने वाला, प्यारा, चाहता (सं० पु०) सज्जन, रेती (सं० स्त्री०) एक मिठाई का नाम। [देना, फबना, भला दीखना।
सोहना (क्रि० अ०) सजना, शोभा देना, अच्छा दिखाई
सोहनी (सं० स्त्री०) रागिनी विशेष। [निराना।
सोहनी करना (वि०) बोये हुए खेत से घास निकालना,
सोहर (सं० पु०) राग विशेष, वह गीत जो बच्चा पैदा होने पर गाया जाता है। [गलाने के काम आता है।
सोहागा (सं० पु०) एक पदार्थ जो सोना चाँदी आदि
सोहारी (सं० पु०) पूरी, लुचई।
सोहिल (सं० पु०) एक राग का नाम।
सौं (सं० पु०) शपथ, सौंह, सौगंध (अव्य०) से।
सौंकरी (सं० स्त्री०) बराही, वेद।
सौंचना (क्रि० अ०) झाड़ा फिरकर जल से गुदा धोना।
सौंधा (वि०) रुचिकर, अच्छी।
सौंप (सं० स्त्री०) धरोहर, थाती, सुपुर्दगी। [रखना।
सौंपना (क्रि० अ०) पहुँचना, सुपुर्द करना, धरना,
सौंफ़ (सं० पु०) एक पौधे का नाम और उसका फल।
सौंरा (सं० पु०) कालख, काजल (वि०) साँवला।
सौंरि (सं० स्त्री०) जनना, शौच, बालक उत्पन्न होने वाला शूतक।
सौंरी (सं० स्त्री०) ज़च्चा, प्रसूति।
सौंह (सं० पु०) शपथ, सौगंद, किरिया, क़सम।
सौ (सं० पु०) संख्या विशेष, दस दहाई।
सौख्य (सं० पु०) सुख, आराम।
सौगंद (सं० स्त्री०) शपथ, किरिया, सौंह।
सौच (सं० पु०) शौच, शुद्धि, शुद्धता।
सौजन्य (सं० पु०) सुजनता, भलमनसाहत, साधुपन, सुशीलता, शराफ़त।
सौजन्यता (सं० स्त्री०) भलमनसाहत, शराफ़त।
सौत (सं० स्त्री०) सौतन।

सौतन (सं० स्त्री०) सौति।
सौति (सं० स्त्री०) सौतिन।
सौतिन (सं० स्त्री०) सवत, एक पति की एक से अधिक स्त्रियाँ आपस में सवति लगती हैं।
सौतियाडाह (सं० पु०) सौतियों का आपस में द्वेष।
सौतेला (वि०) विमाता से उत्पन्न, सौत संबंधी।
सौतेली (वि०) सौत सम्बन्धी।
सौतेली माता (सं० स्त्री०) विमाता, दूसरी माँ।
सौदामिनी (सं० स्त्री०) बिजली। [कोठा।
सौध (सं० पु०) महल, प्रासाद, राजमन्दिर, देव-मन्दिर,
सौनिक (सं० पु०) व्याध, बधिक, बहेलिया, हिंसक, कसाई। [रंग-रूप।
सौन्दर्य (सं० पु०) सुन्दरता, ख़ूबसूरती, चमक-दमक,
सौभद्र (सं० पु०) सुभद्रा का पुत्र, अभिमन्यु।
सौभाग्य (सं० पु०) सुभाग्य, अच्छा भाग, ज्योतिष में चौथा योग। [पति जीता हो।
सौभाग्यवती (सं० स्त्री०) सुहागिन, सधवा, जिसका
सौमित्र (सं० पु०) लक्ष्मण, शत्रुघ्न। [प्रिय-दर्शन।
सौम्य (सं० पु०) बुध (वि०) सुशील, सुन्दर, मनोहर,
सौम्यता (सं० स्त्री०) सुशीलता, सीधापन, संजीदगी।
सौर (सं० पु०) सूर्य-संबन्धी। [पेड़।
सौरभ (सं० पु०) सुगंध, ख़ुशबू, महक, केशर, आम का
सौरमास (सं० पु०) सूर्य का एक राशि में रहने वाला काल, एक संक्रान्ति से दूसरे संक्रान्ति तक।
सौरवर्ष (सं० पु०) बारह संक्रान्तियों का साल।
सौराष्ट्र (सं० पु०) देश विशेष। [है।
सौरि, सौरी (सं० स्त्री०) वह घर जिसमें बच्चा पैदा होता
सौवर्चल (सं० पु०) काला नमक।
सौहार्द (सं० पु०) मित्रता, दोस्ती।
स्कन्द (सं० पु०) पारा, समूह। [निकलती है।
स्कन्ध (सं० पु०) कंधा, पेड़ का धड़ जहाँ से शाखा
स्खलन (सं० पु०) पतन, गिरना।
स्खलित (वि०) गिरा हुआ, फिसला हुआ।
स्तन (सं० पु०) कुच, उरोज, थन, चूँची, छाती।
स्तनपायी (वि०) दूध पीने वाला।
स्तब्ध (वि०) चुप, सूखा।
स्तब्धत्व (सं० पु०) अदब, दबाव, जकड़न।
स्तमिति (वि०) अचल, स्थिर, अटल।
स्तम्भ (सं० पु०) खंभा, थंभा, थंभ, थूनी, रुकाव, अटकाव।
स्तम्भन (सं० पु०) रोकना, जकड़ना, रुकाव, थँभाव, रोक टोक, कामशास्त्र की एक क्रिया।
स्तम्भित (वि०) रुका हुआ, थमा हुआ।
स्तव (सं० पु०) स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा, तारीफ़, सराहना।
स्तवक (सं० पु०) फूल का गुच्छा, गुलदस्ता।
स्तवन (सं० पु०) स्तुति, प्रशंसा।
स्तावक (वि०) स्तुति करने वाला।
स्तुति (सं० स्त्री०) तारीफ़, प्रशंसा।
स्तुत्य (वि०) प्रशंसा करने योग्य, तारीफ़ के योग्य।
स्तेय (सं० पु०) चौर-कर्म, चोरी।
स्तोत्र (सं० पु०) सराह, बड़ाई, स्तुति, देव आदि की प्रशंसा की पुस्तक का नाम।
स्त्री (सं० पु०) लुगाई, नारी, औरत।
स्त्रीधन (सं० पु०) दहेज, किसी प्रकार का रुपया, गहना, वस्त्र आदि जो स्त्री को दिया गया हो।
स्त्रीपुष्प (सं० पु०) रजोधर्म, मासिक धर्म।
स्त्रीलिङ्ग (सं० पु०) स्त्री चिह्न, स्त्रीवाची।
स्त्रैण (क्रि० स०) स्त्री के वश में रहने वाला, स्त्री के समान स्वभाव रखने वाला, मेहरा।
स्थगित (वि०) थका हुआ, छिपा हुआ, रोका हुआ।
स्थपति (सं० पु०) शिल्पी, बढ़ई।
स्थल (सं० पु०) सूखी ज़मीन, ख़ुश्क ज़मीन, स्थान।
स्थाणु (सं० पु०) ठूँठा वृक्ष, शिव, महादेव।
स्थान (सं० पु०) जगह, घर, ठौर, ठाँव, ठिकाना।
स्थानापन्न (सं० पु०) प्रतिनिधि, दूसरे की जगह पर काम करने वाला, एवज़ी, क़ायममुक़ाम।
स्थापन (सं० पु०) रखना, धरना, बैठाना, ठहराना, जमाना। [करना।
स्थापना (सं० स्त्री०) प्रतिष्ठा, देव आदि को स्थापना
स्थापित (वि०) बैठाया हुआ, ठहराया हुआ, जमाया हुआ, स्थापन किया हुआ।
स्थाल (सं० पु०) थाल, थारी।
स्थाली (सं० स्त्री०) बटलोही, पाकपात्र, हाँडी।
स्थावर (वि०) अचल, अटल, ठहरा हुआ।
स्थित (वि०) ठहरा हुआ।
स्थिति (सं० स्त्री०) ठहराव, टिकाव, वास, रहना, पालन, आसन, मर्यादा, सीमा।

स्थिर (वि०) ठहरा हुआ, अचल, अटल, दृढ़, शान्त, ठंडा, कोमल ।
स्थिरता (सं० स्त्री०) शान्ति, धीमापन, अचलता ।
स्थिरपूँजी (सं० स्त्री०) स्थिर धन, जायदाद, ग़ैर मन्कूला ।
स्थूणा (सं० पु०) खंभा, खूँटी ।
स्थूल (वि०) मोटा, फूला हुआ, बड़ा भारी ।
स्थूलता (सं० स्त्री०) मोटापन, पुष्टता ।
स्थैर्य (सं० पु०) स्थिरता, अचलता ।
स्थौल्य (सं० पु०) स्थूलता, मोटापन । [स्नानकारी ।
स्नातक (सं० पु०) ब्रह्मचारी, गृहस्थ ब्राह्मण, व्रती,
स्नान (सं० पु०) नहाना, पानी से सारे शरीर को धोना।
स्नायी (वि०) स्नान करने वाला, नहाने वाला ।
स्नायु (सं० पु०) नस, रग ।
स्निग्ध (वि०) चिकना, चिक्कन, मेहरबान, दयालु ।
स्नेह (सं० पु०) प्यार, छोह, मोह, प्रेम, नेह, मिताई, तेल आदि चिकनी चीज़, चिकनाई ।
स्पन्द (सं० पु०) कम्प, चञ्चलता ।
स्पर्द्धा (सं० स्त्री०) डाह, जलन, द्वेष, विरोध, वैर, ईर्ष्या ।
स्पर्श (सं० पु०) छूना, छू जाना, छुवावट, परसन, छूत की एक बीमारी ।
स्पर्शेन्द्रिय (सं० स्त्री०) त्वचा, चमड़ा, छूने का शरीर ।
स्पष्ट (वि०) खुला, साफ़, शुद्ध, सही, प्रकाशित, प्रगट, ज़ाहिर ।
स्पष्टीकरण (सं० पु०) स्पष्ट करना, खोल कर कहना ।
स्पृश्य (वि०) छूने योग्य ।
स्पृहा (सं० स्त्री०) चाह, इच्छा, वाञ्छा, अभिलाषा ।
स्पृही (सं० पु०) इच्छायुक्त, ग्राहिशमन्द ।
स्फटिक (सं० पु०) बिल्लौर पत्थर ।
स्फुट (वि०) खिला, खुला, व्यक्त, प्रकट ।
स्फुटन (सं० पु०) खिलना, फूटना ।
स्फुटित (वि०) विकसित, प्रफुल्लित । [धड़ाहट ।
स्फूर्ति (सं० स्त्री०) स्फुटन, हिलाव, चञ्चलता, धड़-
स्फोटक (सं० पु०) फोड़ा, चेचक ।
स्मर (सं० पु०) कामदेव, महादेव । [अध्ययन ।
स्मरण (सं० पु०) चिन्तन, याद, सुध, चेत, स्मृति,
स्मरणशक्ति (सं० स्त्री०) याद करने का बल ।
स्मरहर (सं० पु०) शिव, महादेव ।
स्मारक (सं० पु०) स्मरण कराने वाला, याद दिलाने वाला ।
स्मार्त (वि०) धर्म शास्त्रों का जानने वाला ।
स्मित (सं० पु०) थोड़ा हँसना, मुसकाना, मंद मुस्कान (वि०) विकसित ।
स्मृति (सं० स्त्री०) याद, सुमिरण, स्मरण, धर्म-शास्त्र ।
स्याना (वि०) चतुर, चालाक, धूर्त ।
स्यानापन (सं० पु०) बुद्धिमानी, चतुराई, धूर्तता ।
स्यार (सं० पु०) गीदड़, शृगाल ।
स्रक् (सं० स्त्री०) माला, पुष्पमाला ।
स्रवना (क्रि० अ०) चूना, बहना, गिरना ।
स्रोत (सं० पु०) सोता, बहाव धारा, नाला ।
स्व (सर्व०) अपना, आप, ख़ुद (सं० पु०) धन, जाति ।
स्वकीय (सं० पु०) अपना, सगा ।
स्वकीया (सं० स्त्री०) अपनी ब्याही स्त्री ।
स्वच्छ (वि०) निर्मल, शुद्ध, उज्ज्वल, साफ़ । [सफ़ाई ।
स्वच्छता (सं० स्त्री०) निर्मलता, शुद्धता, उज्ज्वलता,
स्वच्छन्द (वि०) अपनी चाह के अनुसार चलने वाला, स्वाधीन, इच्छानुसार ।
स्वच्छन्दता (सं० स्त्री०) स्वतन्त्रता, स्वेच्छाचारिता ।
स्वजन (सं० पु०) अपने लोग, नतैत ।
स्वजाति (सं० स्त्री०) निज वर्ण, अपनी जाति का ।
स्वजातीय (सं० पु०) एक वर्ण का, निज गोत्री । [से ।
स्वतः (अव्य०) अपने से, आप से आप, आपही, स्वभाव
स्वतन्त्र (वि०) स्वाधीन, अपने वश ।
स्वतन्त्रता (सं० स्त्री०) स्वाधीनता, अपने वश में रहना ।
स्वत्व (सं० पु०) अधिकार, दख़ल ।
स्वत्वापहरण (सं० पु०) अधिकार उठा देना, बेदख़ली ।
स्वधर्म (सं० पु०) अपना धर्म, स्वभाव ।
स्वधा (सं० पु०) पितरों को जल पिण्ड दानादि में इसका उच्चारण किया जाता है (सं० स्त्री०) दुर्गा, देवी, माया, अग्नि की स्त्री ।
स्वप्न (सं० पु०) सपना, नींद में दिखाई पड़ने वाला दृश्य ।
स्वप्नवत् (वि०) मिथ्या, अवान्तर ।
स्वभाव (सं० पु०) चरित्र, प्रकृति, आदत, टेव, बान ।
स्वयं (अव्य०) आप, अपना, आप से ।
स्वयंबर (सं० पु०) स्त्री का आप ही आप अपने ब्याह के लिये पति चुनना ।

स्वयंभू (सं० पु०) ब्रह्मा, शिव, आप से आप पैदा होने वाला।

स्वयं सिद्ध (वि०) जिसकी सचाई के लिये किसी प्रमाण की आवश्यकता न हो।

स्वर (सं० पु०) शब्द, आवाज़, गान-विद्या में एक प्रकार की ध्वनि, बिना किसी के सहायता के उच्चारण होने वाले वर्ण, जैसे अ, आ, इ, ई आदि।

स्वरित (वि०) उदात्त और अनुदात्त दोनों युक्त स्वर, स्वरों का समान वा मध्यम स्वर से उच्चारण।

स्वरूप (सं० पु०) अपना रूप, छवि, शोभा, सुन्दरता, समानता, व्यक्ति देह, मुँह।

स्वर्ग (सं० पु०) बैकुण्ठ, आकाश। [ऊपर तनी होती हैं।

स्वर्ग पताली (सं० स्त्री०) ऐंचाताना, जिसकी आँखें नीचे

स्वर्गवास (सं० पु०) मृत्यु, मरण, मौत, स्वर्ग में रहना।

स्वर्गीय (वि०) स्वर्ग-सम्बन्धी, स्वर्ग का।

स्वर्ण (सं० पु०) सोना, कंचन, हेम, कनक।

स्वर्णकार (सं० पु०) सोनार, वह जाति जो सोने चाँदी का गहना बनाने का काम करती है।

स्वर्ण मुद्रा (सं० स्त्री०) अशर्फ़ी, मोहर।

स्वल्प (वि०) बहुत थोड़ा, बहुत छोटा, किंचित्, ज़रा।

स्ववश (वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्र। [ऐसा ही हो, तथास्तु।

स्वस्ति (अव्य०) कल्याण, मंगल, अच्छा हो, भला हो,

स्वस्तिवाचक (सं० पु०) मंगल पाठ करने वाला।

स्वस्तिवाचन (सं० पु०) किसी शुभ कार्य में विघ्न का नाश करने के लिये देवताओं का आशीर्वाद पाने के लिये ब्राह्मणों से वेद मन्त्र द्वारा मंगल पाठ कराना, शान्ति, मंगलाचार।

स्वस्त्ययन (सं० पु०) मंगल पाठ, शुभ स्थान।

स्वस्थ (वि०) सुख से रहने वाला, सावधान, निरोगी।

स्वांग (सं० पु०) भड़ैती, रूप बदलना।

स्वांगी (सं० पु०) भाँड़, कौतुकी।

स्वागत (सं० पु०) आदर, सम्मान, सत्कार, कुशलक्षेम।

स्वाती (सं० स्त्री०) चन्द्रमा की प्यारी स्त्री, पन्द्रहवाँ नक्षत्र।

स्वाद (सं० पु०) रस, ज़ायका, चाह, लज़्ज़त, मिठास, प्यार।

स्वादयुक्त (वि०) ज़ायकेदार, मज़ेदार, सरस।

स्वादिष्ट (वि०) मज़ेदार, ज़ायकेदार, मीठा, रसीला, सुरस, चाहा हुआ। [मुख़्तार।

स्वाधीन (वि०) स्वतन्त्र, अपने वश में रहने वाला, ख़ुद

स्वाधीनता (सं० स्त्री०) अपने वश में रहना, स्वतन्त्रता।

स्वाभाविक (वि०) जो स्वभाव से हो, आप से आप होने वाला।

स्वामित्व (सं० पु०) अधिकार, प्रभुता, मालिकपन।

स्वामी (सं० पु०) मालिक, धनी, प्रभु, भर्ता, पति, राजा, गुरु, परमहंस। [लाभ की चाह।

स्वार्थ (सं० पु०) अपना मतलब, अपना काम, अपने

स्वार्थी (वि०) अपना मतलब चाहने वाला, ख़ुदग़रज़।

स्वावस (सं० पु०) श्वास, प्राण-वायु।

स्वास (सं० पु०) शरीर के भीतर से मुख व नाक से निकलने वाली वायु।

स्वास्थ्य (सं० पु०) आरोग्य, तन्दुरुस्ती, सन्तोष, सुख।

स्वाहा (अव्य०) होम के समय उच्चारण किये जाने वाला शब्द।

स्वीकार (सं० पु०) अङ्गीकार, मानना, मंजूर, क़बूल।

स्वीकृत (सं० पु०) स्वीकार किया हुआ मंजूर किया हुआ।

स्वीकृति (सं० स्त्री०) अङ्गीकार, मंजूरी, क़बूली।

स्वेच्छा (सं० स्त्री०) अपनी चाह, अपनी आधीनता।

स्वेद (सं० पु०) पसीना, पसेव, प्रस्वेद, ताप, गर्मी।

स्वेदज (सं० पु०) पसीना भाफ या गर्मी से उत्पन्न होने वाला जीव, चीलर, जुईं, जूँ।

स्वेदन (सं० पु०) पसीना, स्वेद, धर्म। [स्वच्छन्द।

स्वैर (सं० पु०) अपनी इच्छा से चलने वाला, स्वतन्त्र,

स्वैरिणी (सं० स्त्री०) कुलटा, स्वेच्छाचारिणी, बदचलन।

स्वैरी (वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारिणी।

ह

ह—देव नागरी वर्णमाला के हल वर्णों में का तैंतीसवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है।

(सं० पु०) शिव, आकाश, पानी, स्वर्ग, मंगल, लोहू, विस्मयबोधक—हाय, हो, हाहा।

हँकाना (क्रि० स०) निकालना, चलाना, हाँकना ।
हँकार (सं० पु०) पुकार, हाँक, चिल्लाहट ।
हँकारना (क्रि० स०) हाँकना, पुकारना, पाल चढ़ाना ।
हंडा (सं० पु०) ताँबे या पीतल का बहुत बड़ा पात्र, मिट्टी का बहुत बड़ा बरतन ।
मुहा०—हंडा फोड़ना = भेद खोलना ।
हँफैल (वि०) हाँफने वाला, दुर्बल, साँस-रोगी ।
हंस (सं० पु०) एक पक्षी विशेष, आत्मा, जीव, परमात्मा, ब्रह्म, नृप, योगी, तुरंग, श्वेत, सफ़ेद ।
हंसक (सं० पु०) एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियाँ पैरों में पहनती हैं, बिछिया ।
हंसगमनी (सं० स्त्री०) हंस के समान चाल चलने वाली स्त्री । [वाली ।
हंसगामिनी (वि०) हंस बावनी, हंस के समान चलने
हंसध्वज (सं० पु०) एक राजा का नाम, ब्रह्मा (वि०) जिसकी ध्वजा पर हंस का चित्र बना हो ।
हँसना (क्रि० अ०) हँसी करना, ठट्ठा करना, मुस्कुराना । [हो ।
हँसमुख (वि०) हँसोड़, मगन, जिसके मुख पर हँसी
हँसा (सं० पु०) हँसी, हास्य, मुस्कुराना ।
हँसाई (सं० स्त्री०) हँसी,ठठोली,निन्दा,बुराई । [कराना ।
हँसाना (क्रि० स०) हास्य करना, रिझाना, निन्दा
हंसिनी (सं० स्त्री०) हंस की स्त्री, हंस की मादा ।
हँसिया (सं० स्त्री०) हँसुआ, दराँती, दाँत ।
हँसी (सं० स्त्री०) हास्य, खुशी,खेल,विनोद,हंस की स्त्री ।
हँसुआ (सं० पु०) देखो "हँसिया" । [का स्वभाव ।
हँसोड़ (वि०) हँसमुख, ठठोले बाज़ (सं० पु०) हँसने
हँसोड़ा (वि०) हँसमुख दिल्लगी करने वाला ।
हँसौआ (सं० पु०) ठठोली, हँसोड़पन ।
हकबकाना (क्रि० अ०) व्याकुल होना, घबराना ।
हकरावा (क्रि० स०) बुलवाया । [बोलने वाला ।
हकला (वि०) रुक रुक कर बोलने वाला, अटक २ कर
हकलाना (क्रि० अ०) तुतलाना, अटक २ कर बोलना ।
हकलाहा (वि०) देखो "हकला" ।
हकाना (क्रि० स०) हटाना, भगाना ।
हकारना (क्रि० स०) खदेड़ना, दौड़ाना, भगाना ।
हक्रिया (वि०) कटहा, कटखना ।
हक्काबक्का (वि०) व्याकुल, परेशान, चिन्तित, विस्मय में, अचम्भित, आश्चर्यित । [फिरना ।
हगना (क्रि० अ०) पाखाने जाने, जंगल जाना, झाड़ा
हगनौटी (सं० स्त्री०) हगने की इन्द्रिय, गुदा, हगने की स्थान । [इच्छा ।
हगास (सं० स्त्री०) हगने की इच्छा, पाखाने जाने को
हचका (सं० पु०) धक्का, झोंका, टक्कर । [सोच-विचार ।
हचर मचर (सं० पु०) वादविवाद, झूठा झगड़ा,
हट (सं० स्त्री०) हठ, ज़िद, टेक ।
हटक (सं० स्त्री०) रोक, मनाही, रुकावट ।
हटकना (क्रि० स०) रोकना, मना करना । [चले जाना ।
हटना (क्रि० अ०) अलग होना, आगे या पीछे बढ़ना,
हटवा (सं० पु०) तौलने वाला, दूकानदार ।
हटवाई (सं० स्त्री०) हाट का काम ।
हटवाना (क्रि० स०) अलग करना, दूर भगाना ।
हटाना (क्रि० स०) टाल देना, रोक देना ।
हटाल (सं० स्त्री०) बहुत अँधेरा होने के कारण दुकान का काम-काज बन्द करना, दुकान बढ़ाना ।
हटिया (सं० स्त्री०) हाट, बाज़ार ।
हट्ट (सं० पु०) हाट, बाज़ार । [पुष्ट ।
हट्टाकट्टा (वि०) मोटा, मज़बूत, तन्दुरुस्त, मुस्टण्ड, हृष्ट
हठ (सं० पु०) मगराई, मचलाई, अड़, ज़िद, टेक ।
हठ करना (क्रि० अ०) हठ की टेक पर होना ।
हठधर्मी (वि०) ज़िद्दी, हठीला ।
हठना (क्रि० अ०) ज़िद करना, हठीला होना ।
हठात् (अव्य०) बलात्, ज़िद से ।
हठी (वि०) चिड़चिड़ा, मगरा ।
हड़ (सं० स्त्री०) हरें, एक फल का नाम (सं० पु०) काठ ।
हड़कन (सं० पु०) एक पौधा का नाम ।
हड़गिल्ला (सं० पु०) एक पक्षी का नाम जिसकी ऊँचाई ५ फीट होती है और उसके पंख फैलने पर १५ फ़ीट के क़रीब होता है । [छोड़ देना ।
हड़ताल (सं० स्त्री०) बाज़ार बंद कर देना, सब काम
हड़पना (क्रि०स०) खा जाना, बेईमानी करना ।
हड़फूटन (सं० पु०) हड्डियों में दर्द होना ।
हड़बड़ (सं० पु०) खड़बड़ । [जल्दी करना ।
हड़बड़ाना (क्रि० अ०) घबराना, व्याकुल होना,
हड़बड़िया (वि०) जल्दबाज़, चंचल ।
हड़बड़ी (सं० स्त्री०) खलबली, हुल्लड़, हौरा ।

हड़हड़ाना (क्रि० अ०) काँपना, थरथराना, खड़खड़ाना।
हड़हड़ाहट (सं० स्त्री०) खड़खड़ाहट, आवाज़।
हड़हड़ी (सं० स्त्री०) टंकार, टंकोर।
हड़ा (सं० पु०) अनार, बान विशेष।
हड़ाकुड़ी (स० स्त्री०) धींगाधींगी, कोलाहल।
हड़ाना (क्रि० स०) चिड़िया उड़ाना।
हड्डा (सं० पु०) हाड़ा, मोथरा, बर्रे।
हड्डी (सं० स्त्री०) हाड़, अस्थि।
हड्डीला (वि०) हाड़ वाला, दृढ़ हड्डैला।
हण्डा (सं० पु०) ताँबा वा पीतल का बड़ा पात्र।
हण्डाना (क्रि० अ०) देश वा नगर से निकालना, मुँह काला करके गधे पर चढ़ा कर घुमाना।
हण्डिका (सं० स्त्री०) हाँड़ी, मिट्टी का गोल बरतन।
हण्डिनी (सं० स्त्री०) बदचलन स्त्री, कुलटा।
हत् (अव्य०) विस्मय, आश्चर्य और तिरस्कार, यह शब्द डपटने के लिये आता है।
हत (वि०) मारा हुआ, नष्ट।
हतक (सं० पु०) अभागा, नीच लोग।
हत-ज्ञान (वि०) ज्ञान-शून्य।
हतना (क्रि० स०) बध करना, मार डालना।
हत-भाग्य (वि०) अभागा।
हत-मनोरथ (सं० पु०) असफल, मनोरथ की हानि।
हतलफ़ (सं० पु०) चोर, ठग, उठाईगीर।
हतादर (सं० पु०) सम्मान-हीन, निरादर।
हताश (वि०) जिसकी आशा नष्ट हो गई हो, नाउम्मेद।
हति (सं० स्त्री०) मारना, हनना।
हती (क्रि० अ०) थी, रही (सं० स्त्री०) मारी गई।
हत्तुन (अव्य०) इच्छा-पूर्वक, यथासाध्य।
हत्थ (सं० पु०) हाथ, कर, भुजा।
हत्था (सं० पु०) हथकंडा।
हत्या (सं० स्त्री०) मारना, हिंसा, पाप, मारने का पाप।
हत्यारा (वि०) हिंसक, हत्या करने वाला।
हथ (सं० पु०) देखो "हत्थ"—कड़ा (सं० पु०) हाथ से पकड़ने की वस्तु।
हथकड़ी (सं० स्त्री०) हाथ की बेड़ी, जो क़ैदियों को पहनाई जाती है।
हथकण्डा (सं० पु०) ढब, टेव, करतब, चाल, हथौटी।
हथचपुआ (सं० पु०) भाग, अंश।
हथछुट (वि०) पीटने वाला, मारने वाला।
हथझोला (सं० पु०) एक प्रकार की झोली।
हथनाल (सं० स्त्री०) हाथी पर की छोटी तोप।
हथनी (सं० स्त्री०) हस्तिनी, हाथी की स्त्री।
हथफेर (सं० पु०) क़र्ज़ लेना, उधार लेना, ख़राब रुपया को चालाकी से अच्छे रुपये से बदल लेना, अदली-बदली।
हथरस (सं० पु०) चूमाचाटी, मेल-मिलाप।
हथरी (सं० स्त्री०) रहट का हथकड़ा।
हथलेवा (सं० पु०) ब्याह में दुलहा-दुलहिन का हाथ मिला देना, ब्याह को एक रीति।
हथवान (सं० पु०) महावत।
हथवासना (क्रि० अ०) हाथ में लेना, हाथ से पकड़ना।
हथवासे (क्रि० वि०) हाथ में, अपने अधिकार में।
हथा (सं० पु०) बेंट, क़ब्ज़ा, खादनी, चक्की का हथकड़ा।
हथिनी (सं० स्त्री०) हाथी की स्त्री, करिणी, हस्तिनी।
हथिया (सं० पु०) नक्षत्र विशेष, तेरहवाँ नक्षत्र।
हथियाना (क्रि० स०) पकड़ना, ग्रहण करना, अधिकार में करना।
हथियार (सं० पु०) शस्त्र, औज़ार।
हथी (सं० स्त्री०) बालों को बनी हुई घोड़े को मलने के लिये एक वस्तु।
हथेला (सं० पु०) चोर, हाथ का, हाथ में का, हाथ के पास रहने वाला।
हथेली (सं० स्त्री०) हाथ के बीच का स्थान, एक गहने का नाम।
हथौटी (सं० स्त्री०) चतुराई, प्रवीणता, होशियारी, हाथ का धन।
हथौड़ा (सं० पु०) घन, बड़ा मार्तोल, चाँदी, सोना, लोहा आदि पीटने का एक औज़ार।
हथौड़ी (सं० स्त्री०) छोटा हथौड़ा।
हदियाना (क्रि० अ०) घबराना, व्याकुल होना, भयभीत होना।
हदियाहा (वि०) भोला, मुँहचोर, घबराया।
हन (सं० पु०) प्राण-हरण का भार।
हनन (सं० पु०) मारना, घात, हिंसा।
हनना (क्रि० स०) मारना, बध करना।
हननीय (सं० पु०) मारने योग्य।
हनी (सं० स्त्री०) देखो "हती"।
हनु (सं० पु०) हड्डी, चिबुक, डाढ़ी।
हनुमान (सं० पु०) वायुपुत्र, राम के सेवक, महावीर, अंजनिसुत।
हनूमान (सं० पु०) देखो "हनुमान"।
हन्तक (सं० पु०) बधकारी, मारने वाला।

हन्तव्य (वि०) मारने योग्य ।
हन्ता (सं० पु०) वधिक ।
हन्यमान (सं० पु०) मारा जाता हुआ ।
हप (सं० पु०) झट से मुँह में डाल कर निगलना, हपहप की आवाज़ ।
हपझप (वि०) फुर्तीला (अव्य०) झटपट ।
हपहपाना (क्रि० अ०) हाँफना, ज़ोर २ से साँस लेना ।
हबड़ा (वि०) फूहड़ ।
हबिला (वि०) जिसके आगे वाले दाँत बड़े २ हों ।
हम (सं० पु०) मैं का बहुवचन, हमलोग ।
हमारा, हमड़ारा (सर्व०) हम लोगों का ।
हमेव (सं० पु०) अहंकार, घमयड ।
हय (सं० पु०) अश्व, तुरंग, घोड़ा ।
हयगृह (सं० स्त्री०) घुड़साल, अस्तबल ।
हर (सं० पु०) शिव, महादेव, अग्नि, गणित विद्या में भाजक, भिन्न गणित में वह अंक जो बतलाता है कि एक पूर्ण संख्या के कितने भाग किये गये हैं ।
हरकारा (सं० पु०) संदेशा पहुँचाने वाला, दौड़ने वाला ।
हरख (सं० पु०) आनन्द, ख़ुशी प्रसन्नता ।
हरगिरि (सं० पु०) महादेव का पर्वत ।
हर गुणी (वि०) अनेक गुणों का ज्ञाता, गुणवान् ।
हरजोता (सं० पु०) किसान ।
हरण (सं० पु०) चोरी, लूट ।
हरणीय (सं० पु०) चुराने के लायक़ ।
हरता (सं० पु०) चोर, लुटेरा, हरने वाला ।
हरताल (सं० स्त्री०) काम का बंद रहना ।
हरद (सं० पु०) हल्दी, तालाब, पोखरा ।
हरना (क्रि० अ०) बरबस ले लेना, चोरी करना ।
हरनौटा (सं० पु०) हरिण का बच्चा ।
हरमुष्टा (वि०) बली, हट्टाकट्टा, बलवान् ।
हरवीर्य (सं० पु०) पारा ।
हरसिंगार (सं० पु०) एक फूल का नाम ।
हरहमेश (अव्य०) सदा, सतत, सदैव ।
हरहार (सं० पु०) साँप, शिव जी की माला ।
हरा (वि०) सब्ज़ रंग, नया, ताज़ा ।
हराना (क्रि० स०) जीत लेना, विजय प्राप्त करना ।
हराम (वि०) शास्त्र-विरुद्ध, निषेध, सुअर ।
हरारत (अ० सं० स्त्री०) थकावट, थकान, हलका बुख़ार, ज्वर की गर्मी ।
हरावल (सं० स्त्री०) मुहाना, सेना के आगे का भाग (सं० पु०) मुहरा, अगाई ।
हरास (सं० पु०) ह्रास, क्षति, हानि, दुःख, शोक ।
हरास् (सं० पु०) दुःख, शोक, नाउम्मेदी ।
हरि (सं० पु०) विष्णु, इन्द्र, सर्प, मेंढक, घोड़ा, सिंह, सूर्य, चन्द्रमा, तोता, बानर, यमराज, वायु, ब्रह्मा, शिव, मोर, कोयल, हंस, अग्नि, धनुष, पर्वत, गज, कामदेव, पानी, मार्ग, घन, आकाश, मनु, हरिण, पपीहा, प्राण, मोती, भौंरा, अमृत, कमल, सोना ।
हरिअरी (सं० स्त्री०) हरियाली, सब्ज़ी ।
हरिअरे (वि०) हराहरा, हरि को शत्रु समझना, अच्छा अच्छा ।
हरिचन्दन (सं० पु०) देववृक्ष, गोरोचन, मलयागिरि चन्दन ।
हरिचन्द्र (सं० पु०) सूर्यवंशी एक राजा ।
हरिजन (सं० पु०) वैष्णव साधु, सन्त, विष्णु भक्त ।
हरिण (सं० पु०) मृग, हरिन ।
हरिणी (सं० स्त्री०) हरिनी, मृगी ।
हरित (वि०) हरा, डहडहा, चुराया गया ।
हरिताल (सं० पु०) एक धातु विशेष ।
हरितालिक (सं० स्त्री०) भादों सुदी तीज के दिन होने वाला व्रत ।
हरिद्रा (सं० स्त्री०) हरदी, हल्दी ।
हरिद्वार (सं० पु०) एक तीर्थ का नाम जो गंगा के तट पर है ।
हरिपैड़ी (सं० स्त्री०) विष्णु-घाट ।
हरिप्रिया (सं० स्त्री०) लक्ष्मी, तुलसी, द्वादशी ।
हरिभक्त (सं० पु०) वैष्णव, विष्णु का उपासक ।
हरिभजन (सं० पु०) विष्णु का भजन, सेवा और ध्यान करना ।
हरिय (क्रि० अ०) हर लेना चाहिये, झटक लेना चाहिये, छीन लेना चाहिये ।
हरियल (सं० पु०) हरा कबूतर ।
हरियान (सं० पु०) गरुड़, वैनतेय ।
हरियाना (क्रि० अ०) डहडहा होना, बढ़ना, जमना ।
हरियाली (सं० स्त्री०) हरिअरी, सब्ज़ी ।
हरिवंश (सं० पु०) ग्रन्थ विशेष, श्री कृष्ण का वंश ।
हरिवालुक (सं० पु०) मुसब्बर ।
हरिवास (सं० पु०) पीपल वृक्ष ।
हरिवासर (सं० पु०) एकादशी, जन्माष्टमी, रामनवमी,

वामनद्वादशी, नृसिंह चतुर्दशी आदि विष्णु-व्रत की तिथियाँ हैं।

हरिवाहन (सं० पु०) गरुड़।

हरिश्चन्द्र (सं० पु०) एक सूर्यवंशी राजा का नाम जिसकी राजधानी अयोध्या थी। वह बड़ा भारी दानी और सत्यवादी था। उसकी कथा पुराणों में लिखी है। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने आप के विषय में "सत्य हरिश्चन्द्र" नामक एक नाटक लिखा है।

हरिहित (सं० स्त्री०) बीर बहूटी।

हरीतकी (सं० स्त्री०) हरड़, हर्रे।

हरीना (सं० पु०) एक पक्षी विशेष।

हरीरा (सं० पु०) एक प्रकार का हलुआ जिसे खाने से बड़ा बल होता है।

हरीवा (सं० पु०) एक प्रकार का तोता।

हरीश (सं० पु०) सुग्रीव, बानरों का राजा।

हरु (वि०) हलका।

हरुआई (सं० स्त्री०) हलकाई, हलकापन।

हरुए (अव्य०) धीरे धीरे, हौले हौले।

हरौटी (सं० स्त्री०) छड़ी, बेंत, हल चलाने का समय।

हर्तव्य (सं० पु०) लेने योग्य।

हर्त्ता (सं० पु०) लेने वाला, हरने वाला, चोर।

हर्म्य (सं० पु०) अटारी, अट्टालिका, छज्जा, धनियों की अटारी।

हर्म्यावली (सं० स्त्री०) अट्टालिका समूह।

हर्रा (सं० पु०) देखो "हरीतकी"।

हर्रे (सं० पु०) हर्रा, हरीतकी।

हर्ष (सं० पु०) आनन्द, सुख, प्रसन्न।

हर्षण (सं० पु०) योग विशेष, सुख भाव।

हर्षना (क्रि० अ०) हर्षित होना।

हर्षित (वि०) आनन्दित, प्रसन्न, मग्न।

हल (सं० पु०) हर, एक चीज़ का नाम, जिससे किसान खेत जोतते हैं, व्यञ्जन वर्ण।

हलका (वि०) फुलका, छिछोरा, ओछा, पोला, भारी का उलटा।

हलकाना (क्रि० स०) धक्का देना, पहरा देना, उमकाना। मुहा०—हलका करना = बोझ उतारना, घटाना, कम करना, बेइज़्ज़त करना। हलका जानना = तुच्छ समझना। हलकाना = सहारा देना, उकसाना।

हलकोरना (क्रि० स०) बटोरना, समेटना, हलोरना।

हलचल (सं० पु०) खलबली, घबराहट, रौरा, अंधेर।

हलचल मचाना (क्रि० अ०) शोर करना, गुल करना।

हलदिया (सं० पु०) कँवल या पाण्डु रोग जिसमें सारा शरीर पीला और दुबला हो जाता है (वि०) पीला रंग, हरदी का सा रंग।

हलदी (सं० स्त्री०) हरदी, हल्दी।

हलधर (सं० पु०) बलदेव जी, किसान।

हलन्त (वि०) जिस शब्द के अन्त में व्यञ्जन हो।

हलफना (क्रि०) तड़फड़ाना, व्याकुल होना।

हलफन (सं० स्त्री०) शिष्टाचार, सम्मान, आदर।

हलरा (सं० पु०) तरंग, लहर, हिलोरा।

हलराई (क्रि० स०) झोंका देकर।

हलरावना (क्रि० स०) बहलावना, विनोदन करना।

हलवा (सं० पु०) हलुआ, मोहनभोग, शीरा।

हलवाहा (सं० पु०) हरवाहा, हल जोतने वाला।

हलवाही (सं० स्त्री०) हलवाह को मजूरी, जोतार खेत।

हलहलाना (क्रि० अ०) ज्वर से काँपना, हिलाना, कँपाना। [थरथराहट।

हलहलाहट (सं० स्त्री०) ज्वर आदि से काँपना,

हलहलिया (सं० पु०) ज़हर, विष।

हलहली (सं० स्त्री०) रोग, व्याधि, जूड़ी।

हलाई (सं० स्त्री०) जोताई।

हलाहल (सं० पु०) महा विष, माहुर।

हलिया (सं० पु०) बैलों का समूह।

हलियाना (क्रि० अ०) जी मचलाना, उबकाई आना।

हली (सं० पु०) बलराम जी, कृष्ण जी के बड़े भाई।

हलुआ (सं० पु०) शीरा, मोहनभोग।

हलोरना (क्रि० स०) पछोड़ना, साफ़ करना, बटोरना।

हलोरा (सं० पु०) लहर, तरंग।

हलोरे (क्रि० स०) बटोरे, समेटे, लहराय।

हल्लक (सं० पु०) लाल कमल।

हल्ला (सं० पु०) शोर गुल, रौरा, हल्ला।

हल्लागुल्ला (सं० पु०) शोर गुल।

हवन (सं० पु०) होम, यज्ञ आहुति।

हवस (सं० स्त्री०) हौंस, डाह, स्पर्द्धा, लालसा, इच्छा।

हवा (सं० स्त्री०) वायु, पवन।

हवाल (सं० पु०) अहवाल, हाल, समाचार।
हवालात (सं० पु०) जेलख़ाना, कड़ी निगरानी।
हवालात में होना (क्रि० स०) पुलिस के पहरे में पड़ना।
हविः (सं० पु०) हवन की सामग्री।
हविर्भुज (सं०पु०) देवता, अग्नि। [अन्न।
हविष्यान्न (सं० पु०) तिल, चावल, घृत आदि पवित्र
हव्य (सं० पु०) देवताओं को भेंट, नैवेद्य, बलि।
हव्य-वाहन (सं० पु०) अग्नि।
हस्त (सं० पु०) हाथ, हाथी की सूँड़, तेरहवाँ नक्षत्र, केहुनी से लेकर बीच की अँगुली के सिरे तक का भाग। [वशवर्ती।
हस्तगत (सं० पु०) हाथ में आया हुआ, आधीन,
हस्तलिपि (सं० स्त्री०) हाथ का लिखा हुआ।
हस्ताक्षर (सं० पु०) हाथ का लिखा, दस्तख़त।
हस्तामलक (सं० पु०) आँवला, सहज, सुगम, बेमिहनत।
हस्तिदन्त (सं० पु०) हाथी का दाँत।
हस्तिदन्तक (सं० पु०) मूली, मुरई।
हस्तिनापुर (सं० पु०) पुरानी दिल्ली, जिसको हस्तिन नामक राजा ने बसाया था और जो युधिष्ठिर की राजधानी थी। दिल्ली से ५७ मील ईशान कोण में गंगा की पुरानी नहर पर अब तक उसके चिह्न पाये जाते हैं। [एक प्रकार की स्त्री का नाम।
हस्तिनी (सं० स्त्री०) हथिनी, स्त्रीरा, काम शास्त्र में
हस्तिपक (सं० पु०) महावत, हाथीवान।
हस्तिपाल (सं० पु०) हाथीवान्, फीलवान, पिलवान।
हस्ती (सं० पु०) हाथी, गज, मतंग, मृगराज।
हस्र (वि०) मूर्ख, अज्ञानी।
हस्ली, हसली (सं० स्त्री०) गले की हड्डी, गले में पहनने के योग्य सोना या चाँदी का एक गहना।
हहरना (क्रि० अ०) घबड़ाना, चौंकना।
हाँ (अव्य०) अंगीकार करना, स्वीकार करना, मान लेना।
हाँक (सं० स्त्री०) ज़ोर से पुकारना, चिल्लाना, किलकारी, गूँज।
हाँकना (क्रि० स०) निकालना, पुकारना, ललकारना।
मुहा०—हाँक मारना = ज़ोर से पुकारना, ललकारना।
हाँकी (सं० स्त्री०) एक तरह का बरतन जिस पर सेवई बनाई जाती है।
हाँगर (सं०पु०) मगरमच्छ, भयंकर जल-जन्तु।
हाँड़ना (क्रि०अ०) भटका फिरना।
हाँड़ी (सं०स्त्री०) मिट्टी का पात्र विशेष।
हाँपना (क्रि० स०) हपहपाना।
हाँफना (क्रि० अ०) ज़ोर २ से साँस लेना, हफहफाना।
हाँस (सं० पु०) हंस, बतक।
हाँसी (सं० स्त्री०) हँसी, मसख़रापन, ठट्ठा।
हाँही (अव्य०) हाँ, ठीक, सच, सही।
हाँ हूँ (अव्य०) देखो "हाँ ही"।
हा (अव्य०) दुःख का प्रगट करने वाला शब्द।
हाईकोर्ट (अं० सं० स्त्री०) सब से बड़ी अदालत, बड़ा न्यायालय। [वाला।
हाकिम (सं० पु०) शासन करने वाला, हुकूमत करने
हाट (सं० स्त्री०) दूकान, लेन देन की जगह, चौक, कटरा, बाज़ार। [हुआ।
हाटक (सं० पु०) सोना, कंचन, धतूरा, सोना का बना
हाटकपुर (सं० पु०) लंका, सोने का नगर।
हाटकलोचन (सं० पु०) हिरण्याक्ष नाम का दैत्य, प्रह्लाद का चाचा।
हाटू (सं० पु०) बाज़ार में बेचने और ख़रीदने वाला।
हाड़ (सं० पु०) अस्थि, हड्डी।
हाता (सं० पु०) प्रान्त, भाग (जैसे बम्बई हाता)।
हाथ (सं० पु०) शरीर का एक अंग, हस्त, कर, अधिकार, वश, क़ब्ज़ा।
मुहा०—हाथ आना = अपने अधिकार में आना, हाथ लगना। हाथ उठाना = छोड़ देना, भीख देना। हाथ कमर पर रखना = बहुत निर्बल हो जाना। हाथ कानों पर रखना = अचम्भे में होना, झटपट इन्कार कर जाना। हाथ खींचना = छोड़ देना, मुँह फेरना। हाथ चाटना = स्वादयुक्त भोजन को बड़ी चाव से खाना। हाथ जोड़ना = बिनती करना। हाथ डालना = दख़ल करना, दबाना। हाथ धोना = निराश होना। हाथ पड़ना = क़ब्ज़े में आना। हाथ पसारना = माँगना। हाथ पाँव फूल जाना = घबरा जाना। हाथ पाँव मारना = मिहनत करना। हाथ फेंकना = मुफ़्त का माल लेना। हाथ फेरना = प्यार करना। हाथ बन्द होना = काम में बहुत लगा रहना। हाथ बढ़ाना = किसी

वस्तु को पाने के लिये प्रयत्न करना । हाथ बाँधना = हाथ जोड़ना । हाथ बैठाना = जमना । हाथ भरना = हाथ थक जाना । हाथ मलना = पछताना । हाथ मारना = छीन लेना । हाथ में रखना = वश में करना । हाथ लगना = हाथ आना । हाथ लगाना = किसी काम में लगना । हाथ समेटना = देने से हाथ रोकना । हाथापाई करना = धक्कमधक्का करना । हाथोंहाथ करना = सब मिल के करना । हाथोंहाथ = तुरंत । हाथोंहाथ ले जाना = झटपट ले जाना ।

हाथा (सं० पु०) हाथ, अधिकार, वश ।

हाथी (सं० पु०) देखो "हस्ती" ।

हाथीदाँत (सं० पु०) देखो "हस्तिदन्त" ।

हाथीवान (सं० पु०) देखो "हस्तिपाल" ।

हानि (सं० स्त्री०) घटी, टोटा, नुक़सान ।

हाय (अव्य०) आह, ओह (सं० स्त्री०) दुःख, पछतावा, अचम्भा ।

मुहा०—हाय मारना = दुःख करना । हाय हाय करना = रोना-पीटना ।

हायन (सं० पु०) वर्ष, वत्सर ।

हार (सं० पु०) मोती आदि रत्नों की वा जूही आदि फूलों की माला, चरने की जगह, चरागाह ।

हारक (सं० पु०) हरनेवाला, भाजकाङ्क, चोर ।

हारजीत (सं० पु०) जूआ ।

हारना (क्रि० अ०) थकना, पराजित होना ।

मुहा०—हार मानना / हार मान लेना } निराश होके छोड़ देना ।

हारा (सं० पु०) वाला, यह जिस शब्द के अन्त में आता है उसका अर्थ "रखने वाला, करने वाला" होता है ।

हारित (वि०) हर गया, छीना गया ।

हारी (सं० पु०) ठग, चोर ।

हारीत (सं० पु०) धर्मशास्त्र की एक पुस्तक, मुनि विशेष ।

हारु (सं० पु०) हरवैया, पराजित ।

हार्द (सं० पु०) स्नेह, छोह, माया ।

हार्दिक (सं० पु०) हृदय में होने वाला, हृदय का प्रेम ।

हार्य (सं० पु०) हर्तव्य, बहेड़ा, चुराने लायक ।

हाल (सं० पु०) समाचार, सम्वाद (वि०) उतावला, फुर्तीला ।

हालत (सं० स्त्री०) दशा, हालत ।

हालना (क्रि० अ०) हिलना, डुलना ।

हाला (सं० स्त्री०) शराब, मदिरा ।

हालाडोला (सं० पु०) हिलाव, भूचाल, भूकम्प ।

हालि (सं० स्त्री०) पतवार ।

हाव (सं० पु०) विलास की चेष्टा, नखरा, चोंचला ।

हावभाव (सं० पु०) प्यार, चोंचला, रङ्ग, रस, आकर्ष ।

हास, हास्य (सं० पु०) हँसी, ख़ुशी, कौतुक, खेल, ठट्ठा ।

हास्यरस (सं० पु०) कविता के नौरसों में से एक रस, गप्प, ठठोलबाज़ी ।

हाहा (अव्य०) हाय हाय, आर्तनाद, दुःख-सूचक शब्द, हाहाकार (सं० पु०) हाय २ करना ।

हाहाकार (सं० पु०) शोक, त्राहि त्राहि, हाय हाय ।

हाहाखाना (क्रि० अ०) गिड़गिड़ाना, घिघियाना, दुःख का नाद करना ।

हाहाहीही (सं० स्त्री०) हँसी, हँसना, ठठोली ।

हिंगु (सं० पु०) हींग ।

हिंगुल (सं० पु०) शिंगरफ़ ।

हिंडोल (सं० स्त्री०) एक राग विशेष ।

हिंडोला (सं० पु०) पलना, झूलना

हिंसक (सं० पु०) मारने वाला, घातक, दुर्जन, दुष्ट ।

हिंसन (सं० स्त्री०) बध करना, मारना ।

हिंसा (सं० स्त्री०) मारना, बध, घात ।

हिंस्र (सं० पु०) बधिक, हिंसक ।

हिंस्रक (सं० पु०) हिंसा करने वाला ।

हि (अव्य०) हेतु, निश्चय, अवधारण, निकालना, शोक, उपदेश, निन्दा, अवश्य ।

हिकरना (क्रि० अ०) पीड़ा से कहरना ।

हिक्का (सं० स्त्री०) हिचकी, एक रोग विशेष ।

हिचकना (क्रि० अ०) रुकना, दबना, झझकना ।

हिचकाना (क्रि० स०) धक्का देना, झोंका देना, हटना, ठिठकना । [रहना ।

हिचकिचाना (क्रि० अ०) संदेह में पड़ना, सन्दिग्ध

हिचकी (सं० पु०) हिक्का, एक रोग विशेष ।

हिजड़ा (सं० पु०) नपुंसक, नामर्द ।

हित (सं० पु०) प्यार, मित्रता, उपकार, भलाई ।

हितकारक (सं० पु०) मित्र, उपकारी, हितू ।

हितकारी (सं० पु०) हितैषी, उपकारी ।

हितू (सं० पु०) मित्र, हितकारी, हितू।
हितैषी (सं० पु०) परोपकारी, दूसरे का भला चाहने वाला।
हितोपदेश (सं० पु०) भली शिक्षा, अच्छी सीख, संस्कृत में विष्णु शर्मा की बनाई हुई एक पुस्तक।
हिनहिनाना (क्रि० अ०) घोड़े की बोली।
हिनौता (सं० स्त्री०) विनती, अधीनता।
हिन्द (सं०पु०) यह शब्द "सिंध" से निकला है क्योंकि पश्चिम देश के लोग "स" को "ह" कहते हैं, यूनान वाले आज तक "इन्द" कहते हैं, भारतखण्ड, भारतवर्ष। [स्तान की बोली।
हिन्दी (वि०) हिन्दुस्तानी, भारत का (सं०स्त्री०) हिन्दु-
हिन्दुस्थान (सं० पु०) एक देश का नाम जो उत्तर छः अंश से पैंतीस अक्षांश तक और पूर्व पश्चिम में ६७ अक्षांश से ९३ तक फैला है। भरतखण्ड, भारतवर्ष।
हिन्दू (सं० पु०) हिन्दुस्तान के रहने वाले जो वेद को मानते हैं। [हुआ।
हिम (सं० पु०) पाला, बर्फ, तुषार (वि०) ठण्डा, जमा
हिमकर (सं० पु०) चन्द्रमा कपूर।
हिमकूट (सं० पु०) जाड़ा, शिशिर ऋतु।
हिमगिरि (सं० पु०) हिमालय।
हिमरोम (सं० पु०) देखो "हिमकर"।
हिमाचल (सं० पु०) एक पहाड़ का नाम जिस पर बहुत बर्फ पड़ती है। यह भारत के उत्तर में स्थित है और यह भारत में सब से बड़ा पर्वत है।
हिमायत (सं० स्त्री०) पक्षपात, समर्थना।
हिमायती (वि०) पक्षपाती।
हिमालय (सं० पु०) हिमगिरि, हिमाद्रि, हिमाचल।
हिम्मत (सं० स्त्री०) साहस।
हिया (सं० पु०) हृदय, कलेजा।
हियाव (सं० पु०) शूरमापन, शूरवीरता, हिम्मत, साहस।
हियो (सं० पु०) गौ को बुलाने का शब्द।
हिरण (सं० पु०) सोना, पृथ्वी के नवखंड में एक खंड का नाम, मृग।
हिरण्य (सं० पु०) सुवर्ण, सोना, रजत।
हिरण्यकशिपु (सं० पु०) प्रह्लाद का पिता जिसको नृसिंह भगवान् ने मारा था।
हिरण्यगर्भ (सं० पु०) जिसके पेट में सोना हो, ब्रह्मा, शालिग्राम की मूर्ति।
हिरण्याक्ष (सं० पु०) प्रह्लाद का चाचा जो दूसरे जन्म में कुंभकर्ण और तीसरे जन्म में दन्तवक्र हुआ था।
हिरद (सं० पु०) हृदय, दिल।
हिरदा (सं० पु०) हृदय, मन, अन्तःकरण।
हिरन (सं० पु०) मृग, हिरण, हरिन।
हिरनौटा (सं० पु०) हरिन का बच्चा।
हिरमिजी (सं० पु०) एक प्रकार का गेरुआ रंग।
हिराना (क्रि० स०) खोना, भुलाना।
हिर्की (सं० स्त्री०) घाई, झाँवली, उपाय।
हिर्स (सं० स्त्री०) ईर्ष्या, डाह।
हिलकना (वि०) दर्द से ऐंठना, मड़ोरना।
हिलकार (सं० पु०) लहर, तरंग, मौज, पानी की तरंग उठने का शब्द।
हिलकोरना (क्रि० अ०) लहराना, हिलाना।
हिलकोरा (सं० स्त्री०) लहर, तरंग।
हिलगना (क्रि० अ०) लटकना, उलझना।
हिलगाना (क्रि० स०) लटकाना, उलझाना।
हिलना (क्रि० अ०) डोलना, टलना, काँपना।
हिला (वि०) पाला पोसा, मिला हुआ, परचा हुआ।
हिलाना (क्रि० स०) डुलाना, अपने बश में करना।
हिला मिला (वि०) मिला जुला।
हिलोर (सं० पु०) लहर, तरंग। [कोरना।
हिलोरना (क्रि० स०) लहराना, मौज मारना, हिल-
हिल्सा (सं० स्त्री०) मछली विशेष।
हिश्त (अव्य०) चुप २, दुत।
हिसका (सं० पु०) बराबरी, देखादेखी।
हिसाब (सं० पु०) गणित, लेखा।
हींग (सं० स्त्री०) एक प्रकार का मसाला जिसे घी में भूँज कर दाल में मिलाते हैं।
हींग हगना (सं० स्त्री०) इच्छा के बिना हगना, बिना हाजत के झाड़े फिरना, दुःख भोगना।
हींसना (क्रि० अ०) हिनहिनाना। [हृदय।
ही (अव्य०) दुःख-बोधक, निश्चयक-बोधक (सं० पु०)
हीक (सं० स्त्री०) उबकाई, मतलाई, घृणा, दुर्गन्ध।
हीके (सं० पु०) हृदय को।
हीतल (सं० पु०) हृदय।

हीन (वि०) बिना, रहित, कम, नीच, अधम, ग़रीब, दीन।
हीन जाति (सं० पु०) अधम जाति।
हीनता (सं० स्त्री०) न्यूनता, घटी, नीचता।
हीनवर्ण (वि०) नीच जाति का, अधम।
हीर (सं०पु०) वज्र, हीरा, गूदा, शिव, साँप, हार, सिंह। [थी।
हीर (सं० स्त्री०) एक स्त्री का नाम जो राँझा को बहुत प्यारी
हीरक (सं० पु०) रत्न विशेष।
हीरा (सं० पु०) एक रत्न का नाम। [का छोटा साँप।
हीरामन (सं० पु०) एक तरह का तोता, एक तरह
हीला (सं० स्त्री०) चहला, कीचड़, पंक।
हीही (सं० स्त्री०) हँसने का शब्द। [कहना।
हुँकार (सं० पु०) पुकार, डराने के लिये हूँ शब्द का
हुकुम (सं० पु०) आज्ञा, अनुशासन।
हुकुमनामा (सं० पु०) आज्ञा-पत्र, अनुशासन-पत्र।
हुडुक (सं० पु०) एक प्रकार का बाजा जिसे पूरब में गोंड़, भड़भूँजा, कान्दू और डोम बजाते हैं।
हुड़का (सं० पु०) अर्गल, भूरना।
हुड़दङ्गा (सं० पु०) डकैत, गुण्डा, उपद्रवी।
हुड़हुड़ाना (क्रि० स०) टंकोरना, हुड़हुड़ी करना।
हुड़हुड़ी (सं० स्त्री०) टंकार, भीड़भाड़।
हुण्डाभाड़ा (सं० पु०) बीमा, पहुँचावन।
हुण्डार (सं० पु०) भेड़िया।
हुण्डावन (सं० पु०) हुण्डी का बट्टा।
हुण्डी (सं० स्त्री०) जिस पत्र से परदेश से रुपया मँगाया जाय। [व्यवहार होता हो।
हुण्डीवाल (सं० पु०) कोठीवाल, जिसके घर हुंडी का
हुत (सं० पु०) होमने की वस्तु जैसे घृत आदि।
हुतना (क्रि० अ०) होम करना।
हुतभुक (सं० पु०) अग्नि-देवता।
हुताशन (सं० पु०) अग्नि।
हुति (अव्य०) पलटे, बदले, ओर से।
हुती (क्रि० अ०) हुआ, हुई, थी, था, रही।
हुनर (सं० पु०) गुन, कारीगरी, कारुकार्य।
हुमकना (क्रि० अ०) कूदना, उछलना।
हुरकि (क्रि० स०) ठोकर मारकर।
हुरगुण्डा (सं० पु०) शाक विशेष।
हुरमई (सं० स्त्री०) एक प्रकार का नाच।
हुरुकनी (सं० स्त्री०) वेश्या, नटिनी।
हुर्रा (सं० पु०) फूट, फटक, कोलाहल।
हुर्सा (सं० पु०) चन्दन घिसने के लिये एक गोल पत्थर।
हुलकारना (क्रि० स०) उभाड़ना, उकसाना।
हुलसना (क्रि० अ०) प्रसन्न होना।
हुलसाना (क्रि० स०) प्रसन्न करना, आनन्दित करना। [नाम।
हुलसी (सं० स्त्री०) सुखी, ख़ुशी, तुलसीदास की माता का
हुलास (सं० पु०) आनन्द, हर्ष, ख़ुशी, सुँघनी।
हुल्लड़ (सं० पु०) रोला, झगड़ा-टण्टा।
हूँ (अव्य०) हाँ, भी, सही, भला, ठीक, अच्छा।
हूँठ (सं० पु०) ३½, साढ़े तीन।
हूँड़ाहूँड़ा (सं० पु०) धींगाधींगी।
हूँण (सं० पु०) हूँण देश का वासी, कठोर मनुष्य।
हूँहाँ (सं० पु०) धूमधाम, हुल्लड़। [की पीड़ा।
हूक (सं० स्त्री०) ठसक, पीड़ा, शोक, दुःख, कमर
हूकना (क्रि० अ०) चूकना, भूलना।
हूठना (क्रि० अ०) धक्का देना।
हूण (सं० पु०) कठोर मनुष्य, विदेशी एक जाति।
हून (सं० पु०) मद्रास का सोने का सिक्का।
हूल (सं० स्त्री०) झोंक, खोंचा।
हूलना (क्रि० स०) पेलना, धक्का देना, ढकेलना।
हूहा (सं० पु०) चर्चा, आँधी, धूमधाम।
हृत (सं० पु०) लिया हुआ।
हृत्पिण्ड (सं० पु०) हृदय का गोल भाग, रक्तपिण्ड।
हृदय (सं० पु०) वक्षःस्थल, छाती, अन्तःकरण।
हृदयनिकेतन (सं० पु०) कामदेव।
हृषीकेश (सं० पु०) श्रीकृष्ण भगवान्, विष्णु भगवान्।
हृष्ट (वि०) प्रसन्न, आनन्दित, आह्लादित, हर्षित।
हृष्टपुष्ट (वि०) मोटा ताज़ा, मुटकड़, प्रसन्न। [किया जाता है।
हेंगा (सं०पु०) एक तरह की मोटी लकड़ी जिससे खेत बराबर
हे (अव्य०) सम्बोधन का चिह्न।
हेठ (सं० पु०) नीचे, तले।
हेठा (वि०) आलसी, डरपोक।
हेठापन (सं० पु०) नपुंसकता, निचाई, नीचता।
हेत (सं० पु०) प्रेम, प्रीति।
हेतवाद (सं० पु०) तर्क।
हेति (वि०) हाय यह, हाय इतना।
हेती (वि०) प्रेमी, हितकारी, मित्र।
हेतु (सं० पु०) कारण, सबब, अर्थ, अभिप्राय।

हेम (सं० पु०) स्वर्ण, सोना, कंचन ।
हेमनिधि (सं० पु०) पारद, पारा, सोने की खानि ।
हेमन्त (सं० पु०) जाड़े की ऋतु, अगहन और पूस में होने वाला मौसम ।
हेममाली (सं० पु०) सूर्य, स्वर्णमाली ।
हेमलता (सं० स्त्री०) सोन, जूही, पुष्प विशेष ।
हेमवृना (सं० स्त्री०) बच नामक एक औषधि विशेष ।
हेमाचल (सं० पु०) सुमेर पर्वत ।
हेय (सं० पु०) छोड़ने योग्य ।
हेरना (क्रि० स०) ढूँढ़ना, देखना, खदेड़ना ।
हेरफेर (सं० पु०) परिवर्तन, उलट फेर ।
हेरम्ब (सं० पु०) गणेश, गजानन, विनायक ।
हेरी (सं० स्त्री०) एक राग विशेष ।
हेलना (क्रि० अ०) पैरना, तैरना, धक्का देना, हटाना ।
हेला (सं० स्त्री०) अवज्ञा, अनादर, प्रवाह, खेल, क्रीड़ा ।
हेला मारना (क्रि० स०) ढकेलना, ठेलना, पुकारना ।
है (क्रि० अ०) इसके साथ कृदन्त संज्ञाएँ मिलाकर क्रियायें बनाई जाती हैं, जैसे, बोलता है, चलता है, फिरता है, घूमता है ।
हैज़ा (सं० पु०) विशूचिका, रोग विशेष ।
हैहय (सं० पु०) क्षत्रिय विशेष ।
हैहय-पति (सं० पु०) कार्त्तवीर्य ।
हाँकना (क्रि० अ०) हाँपना, ऊँची साँस लेना ।
हो (अव्य०) सम्बोधन का चिह्न ।
हो आना (क्रि० अ०) लौट कर आ जाना ।
होके (अव्य०) द्वारा, से ।
होठ (सं० पु०) ओठ, अधर ।
होड़ (सं० स्त्री०) प्रण, वचन, दाँव, पेंच, शर्त । [हारना ।
मुहा०—होड़ बदना = शर्त लगाना । होड़ हारना = बाजी
होड़ल (सं० पु०) अभ्रक, अबरख । [विचारते हैं ।
होड़ाचक्र (सं० पु०) जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि
होन (सं० स्त्री०) वश, शक्ति, सामर्थ्य, पहुँच ।
होतव्य (सं० पु०) भाग, प्रारब्ध । [भवितव्यता ।
होतव्यता (सं० स्त्री०) होनहार, संयोग, भाग्य, प्रारब्ध,
होता (सं० पु०) होम करने वाला ।
होते (क्रि० अ०) रहते, में, सम्ते ।
होनहार (सं० पु०) जो हो सके, भवितव्य, उन्नतिशील ।
होना (क्रि० अ०) रहना, विद्यमान, वर्तमान ।
मुहा०—हो आना = जाके चला आना । हो चुकना = पूरा होना । हो जाना = आ पड़ना, संयोग बनना । होते होते = धीरे धीरे । [डालना ।
होम (सं० पु०) हवन, घी, आदि वस्तुओं को अग्नि में
होम-कुण्ड (सं० पु०) हवन करने का कुण्ड ।
होमना (क्रि० अ०) होम करना । [की नाव ।
होला (सं० पु०) आग में सेंके हुए चने, बूँट, एक तरह
होलाष्टक (सं० पु०) होली के पहले के आठ दिन ।
होलिका (सं० स्त्री०) होली, फगुआ, फागुन का आख़िरी सप्ताह । [प्रतिपदा ।
होली (सं० स्त्री०) फागुन की पूर्णमासी और चैत की
होहल्ला (सं० पु०) हुल्लड़ ।
हौंस (सं० स्त्री०) इच्छा, चाह, अभिलाषा ।
हौंसला (सं० स्त्री०) चाह, इच्छा, उमंग ।
हौ (क्रि० अ०) हूँ (सर्व०) मैं, हम । [झड़ी ।
हौका (सं० स्त्री०) लोभ, लालच, हवा के साथ पानी की
हौद (सं० पु०) कुण्ड, चहबच्चा ।
हौदा (सं० पु०) हाथी की पीठ पर कसने वाला हौदा ।
हौली (सं० स्त्री०) कलवरिया, मदिरा की दूकान ।
हौले (अव्य०) धीरे, धीरे शनैः शनैः । [भूत ।
हौवा (सं० पु०) बालकों को डराने के लिये एक कल्पित
ह्यस् (अव्य०) गत दिन ।
ह्रद (सं० पु०) बड़ा जलाशय, झील ।
ह्रदिनी (सं० स्त्री०) नदी ।
ह्रस्व (सं० पु०) एक मात्रा का स्वर, नाटा, छोटा ।
ह्रस्वमूल (सं० पु०) ईख, गन्ना, पौंढ़ा, ऊख ।
ह्रास (सं० पु०) घटी, हानि, क्षति ।
ह्री (सं० स्त्री०) लज्जा, हया ।
ह्रीत (वि०) शर्माया हुआ, लज्जित ।
ह्लाद (सं० पु०) आनन्द, हर्ष ।
ह्लादित (वि०) आनन्दित, हर्षित । [आनन्द-युक्त ।
ह्लादिनी (सं० स्त्री०) बिजली, वज्र, ईश्वरी शक्ति (वि०)
ह्वतन (सं० पु०) चलना, महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश (सं० स्त्री०) सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी ।
ह्वै (क्रि० अ०) होकर ।
ह्वैहै (क्रि० अ०) होगा ।

——:*:——

Printed by K. B. Agarwala at the Shanti Press, Allahabad.